☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

पंजवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ ततकरा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान	पन्ना नंः
०१ चेत २०१२ बिक्रमी	हरि भगत द्वार तों हर प्रवार नूं शब्द भेज्जया		००१
०१ चेत २०१२ बिक्रमी	संत रणधीर सिँघ नूं लुध्याणे शब्द भेज्जया ते उत्तर मंगया		००८
०१ चेत २०१२ बिक्रमी	संत कृपाल सिँघ नूं दिल्ली सावण आशर्म विच शब्द भेज्जया		००६
०१ चेत २०१२ बिक्रमी	दयाल पंडत फ़कीर चंद हुशयारपुर नूं शब्द भेज्जया		०११
१४ चेत २०१२ बिक्रमी	संत मेहर सिँघ दे डेरे जलंधर माडल टाउन शब्द भेज्जया		०१३
१४ चेत २०१२ बिक्रमी	संत ईशर सिँघ ढैपई वाले नूं कोटकपूरे शब्द भेज्जया		०१६
१५ चेत २०१२ बिक्रमी	भारत दे वड्डे जज्ज नूं शब्द भेज्जया हरि भगत द्वार		०१६
१५ चेत २०१२ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	०२०
१५ चेत २०१२ बिक्रमी	संत रणधीर सिँघ नूं लुध्याणे शब्द दूजी वार भेज्जया		०२४
१६ विसाख २०१२ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	०२५
०१ जेठ २०१२ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	०२८
०१ जेठ २०१२ बिक्रमी	पाकिस्तान दे गवरनर जनरल नूं शब्द भेज्जया		०२६
०१ जेठ २०१२ बिक्रमी	शाह ईरान नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल अमृतसर	०३१
०५ जेठ २०१२ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	०३३
०५ जेठ २०१२ बिक्रमी	संत रणधीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल अमृतसर	०३५
०६ जेठ २०१२ बिक्रमी	पलँघ साहिब नूं शब्द सिँघासण करके रक्खया	पहाढ़ गंज दिल्ली	०३६
०६ जेठ २०१२ बिक्रमी	राष्ट्रपती डाः राजिंदर प्रसाद नूं शब्द भेज्जया	दिल्ली	०४१

०६ जेठ २०१२ बिक्रमी लछमण सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह दिल्ली ०४२
१० जेठ २०१२ बिक्रमी अवतार सिँघ निरंकारी नूं मिल के शब्द उचारया दिल्ली ०४६
१० जेठ २०१२ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ०४६
११ जेठ २०१२ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ०५५
१२ जेठ २०१२ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ०६६
१३ जेठ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह जेठूवाल अमृतसर ०८४
०१ हाढ़ २०१२ बिक्रमी निशान साहिब वासते शब्द उचारया जेठूवाल ०८६
१६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे नवित हरि भगत द्वार विच १०८
१७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी संगत दी चुरासी कटी ते निरविगन लंगर चलाया
हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ११३
१७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ११४
१७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी निशान साहिब चड़्हान समें शब्द दी रहिमत कीती ११५
१८ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर १४२
१६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर १५६
१६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी पं: जवाहर लाल नेहरू नूं शब्द भेज्जया कि बवंजा
राजयां नूं ख़बर दे दे कि जोत सरूप ने सृष्टी नूं खै करना है १५७
महाराज पूरन सिँघ अंदर परवेश ""पूरन जोत"" धार परथाए लिखत होई १५६
२८ हाढ़ २०१२ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रजीवाल फिरोज़पुर १८४
३० हाढ़ २०१२ बिक्रमी नाजर सिँघ दे गृह नाथेवाल फिरोज़पुर २०३
३० हाढ़ २०१२ बिक्रमी संत ईशर सिँघ कलेरां वाले नूं शब्द भेज्जया २१०
३१ हाढ़ २०१२ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह नाथेवाल फिरोज़पुर २१६
१२ भादरों २०१२ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर अमृतसर २४३

2 ०५

2 ०५

3

०५

१२ भादरों २०१२ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ नूं लुध्याणे शब्द भेज्जया			२५६
१३ भादरों २०१२ बिक्रमी अनंदपुर अक्खर ते शब्द उचारया			२५६
१३ भादरों २०१२ बिक्रमी ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	२६५
१३ भादरों २०१२ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	२६८
१४ भादरों २०१२ बिक्रमी मस्सा सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	२७६
२५ भादरों २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार	जेठूवाल		२८२
०१ अस्सू २०१२ बिक्रमी राष्ट्रपती डाः राजिंदर प्रसाद नूं शब्द भेज्जया			२६६
०२ अस्सू २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार जेठूवाल			३०२
०३ अस्सू २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार	जेठूवाल		३०६
०१ कत्तक २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	३०६
१० कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार	जेठूवाल		३२१
११ कत्तक २०१२ बिक्रमी अजीत सिँघ दे	बटाला	गुरदासपुर	३२५
११ कत्तक २०१२ बिक्रमी कैपटन बंता सिँघ पंज	गराईआं	गुरदासपुर	३२६
१२ कत्तक २०१२ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	३४५
१२ कत्तक २०१२ बिक्रमी बख़शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	३५०
२० कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३५५
२६ कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३६६
०१ मग्घर २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	३६६
०२ मग्घर २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार सालां दी वंड जगत काज जेठूवाल			३८०
१६ मग्घर २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	३६०
२२ मग्घर २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे नवित हरि भगत द्वार जेठूवाल			३६५
०१ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	३६७

3

०५

०१ पोह २०१२ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ जी दिल्ली वालयां नूं शब्द भेज्जया ४०५
०६ पोह २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार जेठूवाल ४२६
२४ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ४३६
२५ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार सोहँ सो जाप इक्क सौ ग्यारां दिन दी
समापती समें शब्द उचारया जेठूवाल अमृतसर ४४३
२६ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ४५१
२६ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार पंजां प्यारयां दे नवित जेठूवाल ४७६
२७ पोह २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ५००
२८ पोह २०१२ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे गृह बलोवाल गुरदासपुर ५०७
०१ माघ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर नवित हरि भगत द्वार जेठूवाल ५२५
०४ माघ २०१२ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ नाल बचन होए हरि भगत द्वार जेठूवाल ५३७
१० माघ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरि भगत द्वार जेठूवाल ५४१
०१ फग्गण २०१२ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ५५०
०१ फग्गण २०१२ महाराजयां अते संतां नूं शब्द संदेस भेज्जया कि पहली चेत
तों आप दे पास शब्दी लिखत मुताबक आउणा है जेठूवाल ५५५
०२ फग्गण २०१२ बिक्रमी राए नसीब सिँघ बोपाराए अमृतसर ५५८
१६ फग्गण २०१२ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह जेठूवाल अमृतसर ५७१
२३ फग्गण २०१२ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह जेठूवाल अमृतसर ५७६
३० फग्गण २०१२ बिक्रमी (महाराजयां अते संतां दे पास जाण तों पहले विहार
होया अते एह चीजां नाल लईआं : १) दस्तारां ४, २) कूजा मिशरी,
३) केसर ५ रत्ती, ४) भसम १० रत्ती, ५) नलेर १) ५७७
०१ चेत २०१३ बिक्रमी महाराजा संगरूर दे घर जा के शब्द उचारन कीता ५७६

4 ०५

०१ चेत २०१३ बिक्रमी सः चंनण सिँघ महाराज साहिब दे
हाऊस हेलडर दे नवित शब्द उचारया गया संगरूर ५८०
०२ चेत २०१३ बिक्रमी महाराजा यादविंदर सिँघ पटियाला मोती महल
विच शब्द उचारन कीता गया ५८०
०३ चेत २०१३ बिक्रमी फरीद कोट दे राजे नूं किले अंदर जा के
इक्क दस्तार बख़शिश कीती अते शब्द उचारया गया ५८२
०४ चेत २०१३ बिक्रमी संत ईशर सिँघ पास जा के शब्द उचारया
गुरूद्वारा नानकसर लुध्याणा ५८४
०५ चेत २०१३ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ दी कोठी शब्द
उचारया गया पुराणा माडल टाऊन लुध्याणा ५८६
०६ चेत २०१३ बिक्रमी मेहर सिँघ दे डेरे शब्द उचारया परंतू उहनां अन्दरों
कुण्डे मार लए ते अन्दर ना वड़न दिता नवां माडल टाऊन जलंधर ५८६
०७ चेत २०१३ बिक्रमी कपूरथले दे राजे दे महलां विच जा के शब्द उचारया
अते इक्क दस्तार सिरोपाओ दिता ५८८
महाराजा कपूरथला दे सैकटरी मेजर कृपाल सिँघ नवित शब्द उचारया ५८८
०८ चेत २०१३ बिक्रमी सतिसंग घर डेरा बाबा जैमल सिँघ,
चरन सिँघ दे नाल शब्द उचारया ब्यास ५८६
०६ चेत २०१३ बिक्रमी संत तेजा सिँघ दे पास जा के शब्द उचारया सैदपुर ५६६
०६ चेत २०१३ बिक्रमी संत लाभ सिँघ दे पास जा के शब्द उचारया सैदपुर ६०३
१० चेत २०१३ बिक्रमी संत हरनाम सिँघ नाम धारीए दे पास जा के शब्द
उचारया प्रन्तू उह अंदरों कुण्डा मार के बहि गया
मजा सिँघ नुशहिरा अमृतसर ६०६

5 ०५

१०	चेत	२०१३	बिक्रमी अजीत सिंघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	६१०
११	चेत	२०१३	बिक्रमी अजीत सिंघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	६१८
११	चेत	२०१३	बिक्रमी हरि भगत द्वार विच टूर तों वापस आ के पंज रत्ती केसर, दस रत्ती दी खाक, ग्यारां मिस्सरी कूजे अते इक नरेल संगत नूं भेट कीता, किसे संत महातमा नूं नहीं दिता	जेठूवाल	अमृतसर	६२१
१२	चेत	२०१३	बिक्रमी संत हरभजन सिंघ तोपखाना लाईन पटियाला			६२३
१३	चेत	२०१२	बिक्रमी गुरदयाल सिंघ	नाथेवाल	फिरोज़पुर	६३०
१४	चेत	२०१३	निरंजण सिंघ दे गृह सवेरे पंज वजे	अजितवाल	फिरोज़पुर	६४१
१५	चेत	२०१३	बिक्रमी निरंजण सिंघ दे गृह	बदोवाल	लुध्याणा	६४६
१५	चेत	२०१३	करतार सिंघ दे गृह		लुध्याणा	६४६
१६	चेत	२०१३	बिक्रमी सरूप सिंघ दे गृह	मुध	जलंधर	६४८
१७	चेत	२०१३	बिक्रमी जसवंत सिंघ दे गृह करतारपुर	महल्ला चरखड़ी	जलंधर	६५२
१७	चेत	२०१३	बिक्रमी तारा सिंघ दे गृह	चम्बल	अमृतसर	६६१
१७	चेत	२०१३	बिक्रमी तारा सिंघ दे गृह	चम्बल	अमृतसर	६६१
१८	चेत	२०१३	बिक्रमी हीरा नंद दे गृह	चम्बल	अमृतसर	६८२
१८	चेत	२०१३	बिक्रमी इन्द्र सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६८४
०१	जेठ	२०१३	बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	६६०
०२	जेठ	२०१३	बिक्रमी आत्मा सिंघ दे गृह	मल्लूवाल	अमृतसर	७०२
२८	जेठ	२०१३	बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	७०७
११	हाढ़	२०१३	बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	७१६
१६	हाढ़	२०१३	बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	७१७

6 ०५

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ७२०

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जोत सरूप दर्शन दे के
दर्शन सिँघ दिल्ली वाले तों कृपान मंगाई ७३२

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी अकाल तख़त अमृतसर वासते शब्द लिखाया ७३६

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी डा० राजिंदरा प्रसाद वासते शब्द लिखाया ७४२

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ दिल्ली वाले नूं शब्द भेज्जया
जेठूवाल तों ७४३

१७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ७४३

१८ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार निशान साहिब दे पास
सत्तरंगा चवी हत्थ उचा है विहार होया ७४६

१६ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार विच
चाह दे वास्ते शब्द उचारया जेठूवाल अमृतसर ७७६

२० हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरभजन सिँघ दे गृह मैहणीआं अमृतसर ७८६

7 ०५

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ पहली चेत २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार हरिसंगत दे नवित्त शब्द उचारया
ते हर परिवार नूं इक्क इक्क शब्द भेज्जया ★

हरि पुरख अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। हड्ड मास नाड़ी पिंजर ना कोई चमड़ा, जोती नूर इक्क अकार। माल धन धन माल ना कोई पल्ले दमड़ा, शब्द वस्त इक्क अपर अपार। गुरमुखां भारी करे कराए पलड़ा, सिर रक्खे हथ्थ समरथ करतार। लोकमात दर दुआरे अग्गे खलड़ा, बीस इक्कीसा हरि जगदीशा चौवीआं अवतार। एका घर साचा सर पुरख अबिनाशी मलड़ा, निहकलंक नरायण नर चिट्टे अस्व शब्द घोड़े हो अस्वार। शब्द घोड़ा हरि दातार। जुड़या जोड़ा जोती निरँकार। लोकमात आए दौड़ा, वेख वखाणे मिट्ठा कौड़ा, राज राजान शाह सुल्तान सच दरबार। पवण स्वासी घनकपुर वासी शाहो शाबाशी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नर हरि सच्ची सरकार। नर हरि नरायण नर निरँकारया। भगत भगवन्त साध संत आदि अन्त जुगा जुगन्त बणाए बणत विच संसारया। मिले मेल प्रभ साचे कन्त, देवे दरस अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख हरि संत सुहेले, इक्क इकेले शब्द डोरी नाल बंधा रिहा। शब्द डोरी बन्न करतार। लोकमात करे चोरी, कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, गुरमुखां करे ख़बरदार। आप आपणे संग जाए तोरी, शब्द चाढ़े साची घोड़ी, पूर्ब कर्म रिहा विचार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां, पहली चेत भाग लगाए, मन्दिर अन्दर काया खेत सच्चा वेड़ा कर त्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी फंद कटाए, अन्तिम जोती मेल मिलाए, मानस जन्म ना आए हार। पहली चेत चेतन चित। गुर संगत मेल मिलाए, पुरख अबिनाशी साचा मित। सोहँ शब्द तेल चढ़ाए, चौथे जुग वेख वखाए साची थित्त। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे इक्क वर, आदि अन्त नित नवित्त। नित नवित्त चाल निराली। गुरमुख साचे संत जनां मानस देही लई जित्त, मिल्या

नर हरि सच्चा प्रितपाली। आपे मात आपे पित दिवस रैण मधरा बैणा, कँवल नैणा घर साचे बहिणा, करे सदा रख्वार साचा माली। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत साचा साक सज्जण सैणा भाई भैणां, खोल्हे बन्द किवाड़ी सतारां हाढ़ी, दरस दिखाए तीजे नैणा, पहली चेत कर त्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे तेरी मात उपजाए, गुर संगत सच्ची फुलवाड़ी। गुर संगत साचा फूल गया फुल। प्रभ आप चुकाए अगला पिछला मूल, भाग लगाए साची कुल। एका ओट रखाए कन्त कन्तूहल, पूरे तोल गई तुल। सोहँ शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, सच दुआरा गया खुल्ह। सच सिँघासण हरि बिराजे, ना कोई पावा ना कोई चूल, लोकमात ना कोई लाए मुल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत लेखा आप लिखाया, भरम भुलेखा दूर कराया। हरिजन लोकमात ना जाए रुल।

ना कोई सीस ना कोई ताज। कवण रक्खे कलि अन्तिम लाज। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल पुरख अबिनाश, शब्द सरूपी तेरा राज। सच सिँघासण इक्क अटल अचल अचल्ल अथल मातलोकी आप कराए आपणा काज। लक्ख चुरासी वल छल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवान भेख भगत अधार भगत भेख मस्तक रेख। आपे करे मात अपार। आपे मेटे आपे लिखे रेखे, गुणवन्ता हरि गुण विचार। नर नरायण नेत्र आपे पेखे, सुरत शब्द हरि बन्न्हे धार। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आर पार अन्दर बाहर। विष्नूं वेस रसन विकारी। पुरख अबिनाशी खेल न्यारी। गुर पीर औलीए साध संत, कलिजुग अन्तिम गए हारी। आपे जाणे बणाई आपणी बणत, आत्म दर दर घर घर वेखे, जोती शब्द खेल अपारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। सिँघ सिँघासण हरि बिराज। शब्द सरूपी पहने ताज। सोहँ साजणा रिहा साज। दोअँ दोआ मिटे पाज। सोहँ ओअँ एका होया, लक्ख चुरासी लोकमात करया काज। जन भगतां देवे साचा ढोया, धुर दरगाही साचा दाज। ना कदे जन्मे ना कदे मोया, ना कोई मारे ग़रीब निवाज़। अठ्ठे पहर कदे ना सोया, दिवस रैण कदे ना रोया, मौत लाड़ी नेड़ ना आए, माया डस्सणी ना डस्से नाग। गुरमुख साचा आपे मैल दागां धोया, जोती जोत सरूप हरि, मिल्या मेल कन्त सुहाग। शेर शेरा हरि दलेरा। शब्द सरूपी चारों कुन्ट पाए घेरा। आपे ढाहे अन्दर वड़ भरमां डेरा। गुरमुख साचा पुरख अबिनाशी लड़ लए फड़, आप चुकाए मेरा तेरा। साचे पौड़े जाए चढ़, पंजां चोरां मुक्के झेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात इक्क लगाए अन्तिम अन्त अन्त उखेड़ा। मम्मा

माधव जन वैराग। रसन अराधो मन सोया जाए जाग। आत्म बुझे तृष्ना आग। जोती दीपक जगे चिराग। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्वी लोआं पुरीआं हथ्थ आपणे पकड़े वाग। हाहा हारे सर्ब संसारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। पुरख अबिनाशी साची धारा। लोकमात चलाए सतारां हाढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, राउ रंक रंक राजानां शाह सुल्तानां धुर दरगाही जगत मलाही इक्क बणाए सच अखाड़ा। रारा राज जोग दरबान। नर हरि साचा करे इक्क ध्यान। शब्द मारे इक्क तमाचा, आप उठाए वड बली बलवान। जीव पिण्ड सभ दीसे काचा, अन्तिम वेले आई हाण। एका जगत पित जगदीशर साचा, सोहँ जामा जगत महान। नेड़ ना आए तीनो तापा, अदि अन्त ना कोई पापा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समान। जज्जा जगत विछोड़ा देणा तज। धुर दरगाही आया दौड़ा, आपे परखे मिट्ठा कौड़ा, जन भगतां पड़दे रिहा कज्ज। एका सच्चा राह वखाए, ना कोई दीसे लम्मा चौड़ा, गुरमुख साचा आत्म दर सच सिँघासण साची सेजा चढ़े भज्ज। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म साचा जाम प्याए, गुरमुख साचा पीवे रज्ज। कलि कला कल धार बन बनवारीआ। फड़ी शब्द हथ्थ कटार, कलिजुग वेखे चार चुफेरया। तिक्खी रक्खे प्रभ साचा धार, मारी जाए वड हँकारीआं। गुणवन्ता हरि गुण विचार, जन भगतां कराए तन सच शृंगारया। जोती जामा खेल अपार, निहकलंक नरायण नर अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड जोधा सूर शब्द जैकारया। शब्द जैकारा देवे ला। लोकमात प्रभ बन्ने धारा, एका मार्ग जगत चला। शब्द घोड़े हो अस्वारा, वेख वखाए थांउँ थाँ। गुरमुखां करे सद प्यार, साचे घर पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी तोड़े आत्म सर्ब हँकार, दर दर घर घर आप उडाए झूठे कां। तुटे माण ताण जगत हंकारया। पुरख पुरखोतम जोत पछाण, तीजे नैण नैण मुंधाणया। शब्द वज्जे आत्म बाण, खिच्चे रसना हरि कमानया। एका झुल्ले शब्द निशान, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। इक्क निशान जाए झुल। गुरमुख साचे फुल फुलवाड़ी, लोकमात उपजाए साचे फुल्ल। ब्रह्म ज्ञाना चरन ध्याना। आत्म जोती नाड़ नाड़ी देवे माण गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां खोल्हे इक्क दर, सोहँ बन्ने हथ्थीं गाना। दर दुआरा एका रक्ख। जोत सरूपी प्रगट होवे लोकमात प्रतक्ख। गुर पीर औलीआ घर घर वरोले किसे पल्ले ना छड्डे कक्ख। गुरमुख साचा गुर चरन प्रीती अमृत धार आत्म रस मुख चोवे, अन्तिम वेले लए रक्ख। साची काया झूठी मैल प्रभ दर धोवे, पल्ले बन्ने एका नाउँ ना कोई मुल्ल चुकाए करोड़ लक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपे वेखे कर विचार, किशना सुखला दोवें पक्ख।

वेख विचार चन्द सूरज बन्ने धार। सीतल अग्नी कर विचार। गुरमुखां आत्म जोती साची जगणी, काया लाहे जूठा झूठा माया मोह वड हँकार। बेमुखां तन लाए अग्नी, आत्म चले इक्क विकार। सोहँ शब्द साचा सगणी, गुरमुखां मुख लगाए आप निरँकार। तत्ती वा एका वगणी, साड़ी जाए उजाड़ पहाड़। करे खेल हरि पताल गगनी, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां चरन दुआरे एका घर बाहरे, मिले मेल हरि करतार। एका जोत हरि जगईआ। सिँघ शेर हो दलेर शब्द चलाई साची नईआ। ना कोई वेखे धड़ी सेर, सृष्ट सबाई आप तुलईआ। लक्ख चुरासी आपे झाड़े कलिजुग जिउँ जूठे झूठे बेर, शब्द डण्डा हथ्थ उठईआ। अन्तिम ढहि ढहि होणे ढेर, धरत मात हरि गोद सवईआ। जन भगत तारे कर कर मेहर, चरन प्रीती जोड़ जुड़ईआ। प्रगट होए कलिजुग तेरी अन्तिम वेर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पकड़े आपणी बईआ। सगल सृष्ट सगल पसारा। एका इष्ट इक्क ओंकारा। आपे खोल्हे दृष्ट, आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा। आपे बणे गुर वशिष्ट, आपे बणे दर भिखारा। लक्ख चुरासी लोआं पुरीआं मिट जाए सर्ब सृष्ट, जगदी रहे जोत एका एक इक्क ओंकारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्हे इक्क दुआरा। खोल्हे इक्क द्वार बंक सुहांयदा। भरे सच भण्डार अतोट अतुट्टा आप अख्वांयदा। दिसदा इक्क अपार, कोटन कोट शब्द चोटा आत्म लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गुरूआं बणत बणांयदा। धरी जोत इक्क इकागर। वेख वखाणे जीव जन्त साध संत, हरि काया गागर। भेव ना पाए कोई आदि अन्त, आपणा कर्म हरि करे उजागर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी दर दुआरे आप कराए सोहँ नाम सौदागर। एका जोती इक्क इकेला। गुरमुख साचे संत जनां बणा गोती, चरन कँवल कँवल चरन हरि मल्लण इक्क महल्ला। काया मैल जाए धोती, फल लगाए साचे डाल्हा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, द्वार बंक राज राजानां मार्ग पाए, फड़या शब्द सोहँ साचा भाला। एका एक नर निरँकार। शब्द रखाए साची टेक आदि अन्त बन्ने धार। हरिजन जन हरि करे बुध बिबेक, भाणा मन्ने हरि दातार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत करे कराए आपणा इक्क अकार। सच्चा फ़रमाण हरि बलकार। धुर दी बाण सच्ची सरकार। झुलणा इक्क निशान विच संसार। मदिरा रस तजणा पीण खाण, सोहण बंक द्वार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत आप बणाए साचा देवे मात सहार। हरि घर वस्त अमोल, अमोल अमोल्लया। हरि घर वस्त अमोल, अतोल अतोल्लया। हरि घर वस्त अमोल, शब्द भण्डारा एका खोल्ल्हया। हरि घर वस्त अमोल, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जैकारा एका बोल्लया। हरि घर वस्त अमोल, शब्द जणाईआ। हरि घर वस्त अमोल, लोकमात मार झात, देवण आया सच सुगात, पुरख अबिनाशी धुर दरगाहीआ। हरि घर वस्त अमोल, जन भगतां देवे कमलापत किरपानिध, पुरख बिधाता कारज करे सिद्ध, मिटाए अन्धेरी रात, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाईआ। हरि घर वस्त अमोल, नेड़ ना दूर है। हरि घर वस्त अमोल, आपे गुर आपे चेरन, साचे मन्दिर अन्दर हरि हजूर है। हरि घर वस्त अमोल, आपे वज्जा तोड़े जन्दर, इक्क वखाए सच दर मेल मिलावा कन्त कन्तूहल है। जोती जोत सरूप हरि, ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी रही भूल है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे सरनी पड़, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल है। शब्द भण्डार रिहा खोल्ह, आवे जावे वारो वारया। चार वरन करे इक्क सरन, बोले सच जैकारया। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान विच जहान एका धाम बहाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। शब्द फड़े हथ्थ कमान, प्रगट होए वड बली बलवान, पकड़ पछाए वडे वडे बेईमान, मारे खण्डा हरि दो धारया। साचा झुल्ले इक्क निशान, शब्द उडाए इक्क बिबाण, चारे कुन्टां वेख विचारे राजे राणे वारो वारया। जोत सरूपी जामा धारे, निहकलंक नरायण नर, करे भेख कलिजुग तेरा अन्तिम मेट मिटाए औलीए पीर गौंस कुतब वड मजौरया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे ठग्ग चोरया। शब्द सरूपी पसर पसारा। प्रगट होए हरि वड्डा शाहो भूपी विच संसारा। ना कोई जाणे सति सरूपी, माया ममता वध्या जगत विकारा। इक्क रखाए दया कमाए, सोहँ शब्द नाम अहूती, ना कोई जाणे दूजी धारा। रंगण नाम सच भबूती, मंगण जाए ना बण भिखारा। शब्द रखाए साची धोती, गुरसिख उठाए दया कमाए, घर घर जाए वारो वारा। एका धागा सूतो सूती, रक्खे डोर हथ्थ करतारा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द चढ़ाए साचा तेल अगम्म अपारा। हरि का रूप अगम्म, भेव अवल्लड़ा। ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्म होवे इक्क इकल्लड़ा। ना लए पवण स्वासी दम, एका एक करे खेल सदा सदा अवल्लड़ा। ना कोई गगन पताली रक्खया थम्म्ह आपणा बेड़ा आपे बन्न्हया, ना कदे रोवे छम्म छम्म, नेत्र नीर नैणी डिग्गण ना मुखड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त लोकमात जन भगतां करे खेल अपर अपारड़ा। काया नगर अमृत पीता। साचा जाम सदा जीता। मधुर रस आत्म वस पुरख अबिनाशी भर पुर लीता। आत्म विकारी जाए नस्स, शब्द उडारी जाए दस्स, गुर चरन प्यारी हरि निरँकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वर किरपा कर, साची जोत आत्म प्रकाशी कोट रवि ससि। आत्म प्रकाश मिटे अन्धेरा। प्रभ अबिनाशी दासन दास, ना कोई दीसे सञ्झ सवेरा। शब्द चलाए स्वास स्वास, आपे तारे

कर कर मेहरा। हरिजन प्रभ मिलण दी साची आस, मेल मिलाए दर घर साचे नेरन नेरा। सच मण्डल दी साची रास आत्म जोती नूर प्रकाश, शब्द सरूपी पाए घेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा देवे नाम धना, साचा राग सुणाए कन्नां, भरमां ढाहे आत्म डेरा। आत्म डेरा देवे ढाह। हेरा फेरा जगत मुका। ना लाए देरा लक्ख चुरासी कटे फाह। प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेरा, ना कोई पिता कोई माँ। बेमुख भुलाए कर कर हेरा फेरा, सच टिकाणा हरि निधाना लोकमात दिसे ना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द डंक इक्क वजाए, राज राजन छत्र सीस किसे दिसे ना। किसे ना दिसे छत्र सीस। करे खेल हरि जगदीस। मेट मिटाए पीर फ़कीर बीस इक्कीस। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साचा पीसण रिहा पीस। कलिजुग काली धार कला कल धारया। लक्ख चुरासी कर विचार। जोती जामा खेल अपारया। साधां संतां पावे सार, साचा रंग रंगे करतारया। आदिन अन्ता जोत अधार, ना कोई जाणे जीव गंवारया। पूरन भगवन्ता शब्द उडार, त्रैलोआं वसे बाहरया। गुरमुखां मेल मिल्या साचे कन्ता, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़या। मिले वड्याई विच जीव जन्ता, मानस जन्म रिहा संवारया। बेमुखां माया पाए बेअन्ता, भरम भुलेखे आप भुला रिहा। जन भगतां बणाए साची बणता, साचे लेखे आप लिखा रिहा। पुरख अबिनाशी महिंमा जगत अगणता, दिस किसे ना आए निरगुण सरगुण रूप साचा खेल रचा रिहा। मेट मिटाए राग छतीसे, इक्क पढ़ाए शब्द हदीसे, रसना गायण जीव जन्त बतीसे, साचा मार्ग ला रिहा। मेट मिटाए मूसा ईसे, अञ्जील कुरान जूठी झूठी चक्की पीसे, शब्द तीर इक्क चला रिहा। एका जोत जगत जगदीसे, एका छत्र झुला रिहा। करे खेल बीस इक्कीसे, लिखणहारा वड बलकारा, लेखा लेख लिखा रिहा। कवण करे प्रभ तेरी रीसे, आवण जावण पतित पावण रूप रंग वटा रिहा। गुरमुखां आत्म अमृत मेघ बरसाए जिउँ बरसे सावण, निझर झिरना आप झिरा रिहा। नेड़ ना आए कामनी कामन, सच्चा हरि जी पकड़े दामन, धुर दरगाही बणे जामन, लड़ आपणा इक्क फड़ा रिहा। मेट मिटाए दुष्ट दुराचार जिउँ रामा रावण, शब्द खण्डा आपणे हथ्थ उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंड, सत्तां दीपां चण्ड प्रचण्ड, वेखे खेल विच वरभण्ड, इन्द इन्द्रासण सिँघ सिँघासण तज करोड़ तेतीसा माण गंवा रिहा। शिव शंकर पड़दे रिहा कज्ज, चरन दुआरे रिहा सज, अन्तिम वेले बहे सज, जगत जगदीसा दया कमा रिहा। ब्रह्मा वेखे वेख वखाणे ब्रह्माद। आपणी रचना आपे जाणे, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आदि जुगादि। गगन गगनंतर सदा निहकामी, शब्द वजाए साचा नाद। लोकमात धराए सोहँ शब्द सच्चा गुर मन्त्र मेट मिटाए वाद विवाद। बेमुखां लग्गे कलिजुग माया इक्क बसंतर, ना कोई धोवे जूठा झूठा

दाग़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मिल्या एका कन्त सुहाग। हरि एका कन्त सुहाग, लक्ख चुरासी जगत प्रनाईआ। हथ्थ आपणे पकड़े वाग, शब्द घोड़े तंग कसाईआ। नाल रलाया सोहँ राग, साचे आसण हरि सिँघासण डेरा लाईआ। गुरमुख हँस बणाए काग, आपे धोए काया दाग़, पूरन होए वड वडभाग, जन साची सरन सरनाईआ। कलिजुग वेले अन्तिम जायण जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आपणी दया कमाईआ। सो जन जागे, जिस जन जगांयदा। भांडा भरम भउ भाजे, जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखांयदा। इक्क सुणाए गीत सुहागे, जगत विछोड़ा आप मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती शब्द जोड़ जोड़ा, एथे ओथे दो जहानी आपणा संग निभांयदा। आप आपणा संग निभाए। गुरमुख मंगे साची मंग, आत्म रंग इक्क चढ़ाए। सच दुआरा जाए लँघ, आत्म जोती दीप जगाए। मानस देही ना होए भंग, लक्ख चुरासी फंद कटाए। आपे कटे भुक्ख नंग, शब्द दात वड करामात, सच वस्त हरि झोली पाए। चार वरन बणाए इक्क जमात, मेट मिटाए अन्धेरी रात, आपे बण पिता मात, दूसर कोई दिस ना आए। वेख वखाए कमलापात, सुणे पुकार धरत मात, मेट मिटाए ज़ात पात, ऊँच नीच भेव चुकाए। करे खेल नौ खण्ड पृथ्वी दीप सात, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे, लोकमात साचे चन्द चढ़ाए। गुरमुख साचे संत हरि दुलारया। आप बणाए साची बणत, एका देवे नाम सहारया। सच सिँघासण आत्म सेजा मेल मिलावा साचे कन्त, ना होए विछोड़ा दूजी वारया। मूर्ख मुग्ध गंवार, ना कोई जाणे जीव जन्त, आत्म भरया इक्क हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उधारे गुरमुख साचे संत, आत्म दित्ता नूर उजागर, साचे शब्द करे वणजारया। साचा नाम जगत वणजारा। पूर कराए आत्म काम, इक्क वखाए साची धारा। सुक्का हरया करे चाम, दूई द्वैती मेट मिटाए आत्म तन जगत अफारा। आपे खेवट खेटा लोकमात अख्वाए, इक्क दिसाए पार किनारा। गुरमुख साचा साचा बेटा, पिता पूत पूत सपूता आपे आप बण जाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। आए चरन द्वार चरन भरवास्सया। किरपा कर हरि करतार, देवे वस्त इक्क अपार, सदा सद बलि बलि जास्सया। तन मन्दिर अन्दरे अन्दर भरे भण्डार, करे खेल नर निरँकार ना आवे पासा हारया। जोती नूर कर अकार, चार कुन्ट दहि दिशा वेखे वेख विचार, भरम भउ जगत भुलेखा अन्तिम लेखा दर साचे आप मुका रिहा। मेट मिटाए धुर दरगाही लेख लिखाईआ। नेत्र नैण लोचण पुरख अबिनाश लैणा वेख, कटे जम की फाहीआ। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख, साध संत देण दुहाईआ। जोती जामा धरया भेख, लक्ख चुरासी रिहा वेख, मन्दिर अन्दर तोड़े जन्दर

अलख अलखणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लज पति पति लज विच मात रक्खणी साची सरन रिहा लगाईआ। साची सरन लगाए सच सरनाईआ। आपणी करनी जगत भरनी रिहा छुडाए, साची तारी तरनी एका मार्ग रिहा तजाईआ। नर निरँजण जोत निरँकारी एका वरनी, आप चुकाए मरनी डरनी, वरन अवरनी आप अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची सरनी रिहा आप लगाईआ।

★ पहली चेत २०१२ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया गया ते उत्तर दी मंग कीती गई लुध्याणा ★

कवण तिलक कवण लिलाट। कवण मस्तक कवण कपाट। कवण असतक कवण तीर्थ कवण घाट। जोती जोत सरूप हरि, कवण रस काया वस पवण रस रिहा चाट। कवण पवण पवण हुलार। कवण शब्द शब्द धुन्कार। कवण जोत जोत अकार। कवण सोत दुरमति मैल प्रभ साचा धोत, निरगुण सरगुण एका धार। जोती जोत सरूप हरि, कवण दुआरा खेल अपारा, रंग रूप न्यारा लिखणा भेत तमाम। कवण रंग रंग रंगीला। कवण मंगे साची मंग, हरि दर दुआरे कर कर हीला। कवण घोड़े कसे तंग, चार कुन्ट वजाए शब्द मृदंग, जोती अग्नी लाए तीला। कवण दाता सूरा सरबंग, कवण पुरख बिधाता कटे भुक्ख नंग, अमृत धार किस द्वार गुरमुख साचे पी पी जी ला। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग कल अन्तिम वार, चिट्टे अस्व हो अस्वार, कवण दर कवण घर, कवण दुआरा करे खेल छैल छबीला। छैल छबीला सुरत ध्यान। कुरान अंज़ील किसे हथ्थ ना आए खाणी बाणी वेद पुराण। शब्द रक्खे एका कानी, नूर निरँजण जोत प्रकाश पुरख अबिनाश कोटन भानी, नर हरि हरि नर चतुर सुजान। वेख वखाणे संत असंत वड विद्वानी, आत्म ध्यानी ब्रह्म ज्ञानी, किस दर झुल्ले शब्द निशान। जोती नूर खेल महान। पारब्रह्म दी दस्स निशानी, कवण नाम गुण निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द खण्डा इक्क रखाया। सोहँ डण्डा नाम लगाया। गुरूआं पीरां पाए वंडां, वेख वखाणे आत्म रंडां, साचा डण्डा हथ्थ उठाया। आए शब्द घर महल्ल। उत्तर देणा ना करना वल छल। नेत्र नैणा भाणा सहिणा साक सज्जण सैणा वेखे घड़ी घड़ी पल पल। दर दुआरे साचे बहिणा, कलिजुग अन्तिम भाणा सहिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल। उत्तर देणा छेती मोड़। तिन्न पंज सत्त नौ दस अठारां बवंजा अक्खरी कर जोड़। पुरख अबिनाशी धार चले वक्खरी, साचे शब्द चढ़या घोड़। कलिजुग जीव भेव खुल्लाउँणा पैंतीस अक्खरी, ऊड़ा ओंकार ड़ाड़ा ड़ाड़, मिटाए कवण चढ़े तोड़। जोती जोत सरूप हरि, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर सर्ब घट जाणे दो जहानी

८ ०५

हरि वडा शाह सुल्तानी इक्क लगाए बैठा पौड़। देणा उत्तर चेत्र चार। चारे दिशा मात विचार। काया मन्दिर केहड़ा हिस्सा, पुरख अबिनाशी किस वसे द्वार। शब्द झुल्ले साचा सीसा, देवे पवण हुलार। करे खेल हरि जगदीसा, वेख वखाणे बैठ सच सच्चे दरबार। आपे जाणे राग छत्तीसा, दन्द बत्तीसा रिहा विचार। कवण मिटाए मूसा ईसा, कवण मिटाए मुहम्मदी यार। किस बिध चले चलाए चीना रूसा, भारत खण्डी केहड़ी धार। कवण शब्द नौ खण्ड पृथ्वी इक्क हदीसा, सत्तां दीपां जै जै जैकार। एका छत्र झुले पुरख अबिनाशी नर नरायण साचे सीसा, निहकलंक नरायण नर, केहड़ी कूटे लए अवतार। हरि पुरख अपार जोत अधारया। जोती नूर शब्द जैकार विच संसारया। वेख वखाणे सर्ब द्वार, पूर्ब कार करा रिहा। मानस जन्म पैज संवार, साचा शब्द कन्न सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, धरत मात सोए पूत जगा रिहा। धरत मात सुत दुलार। दर्शन पेख नेत्र नैण हरि अचुत, काया कर ठंडी ठार। काया मन्दिर अन्दर सुहाउँणी सच्ची रुत्त, जोत जगे अपर अपारा। जूठा झूठा खाली पिंजर दिसे बुत्त, एका करन वणज वापार। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, आत्म भरे भण्डार। नाम भण्डारा हरि दातारा। सोहँ शब्द जगत जैकारा। भगत अधारा विच संसारा। मानस देही जन्म अपारा। वेले अन्त ना जाए हारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, मंगणा दर इक्क सच्चा दुआरा। सच्चा द्वार सच घर आपणा देवे नाम अधार पुरख सुजानया। साचा शब्द ब्रह्म ज्ञान, चरन ध्यान श्री भगवानया। अमृत आत्म रस पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटानया। धर्म जैकारा इक्क निशान वाली दो जहानया। मात बन्ने साची धारा, वेख वखाणे राजे राणयां। माया राणी आई हारा, उट्ठे शाह हरि सच्चा सुल्तानया। जोती जोत सरूप हरि, सच्चा देवे नाम वर, काया भरे अतुट्ट खजानया। नाम वर शब्द भरपूर। वेखे दर हाजर हजूर। जगत कारज जायण सर, आत्म सहिंसा होए दूर। भरम भुलेखा चुक्के डर, एका जोती दर्शन नूर। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे नाम वर, सर्ब घटां आपे भरपूर। माया मन वैराग जगत उदासीआ। एका दर घर हरि त्याग, ना मिल्या मेल हरि कन्त सुहागीआ। कवण पकड़े कलि तेरी वाग, कवण धोए झूठे दाग़, जगत ना बुझे तृष्ना आग, बंस सरबंस कागीआ। हरि सरन चरन चरन सरन प्रभ साचे, जोती जोत सरूप हरि, इक्क सुणाए सोहँ शब्द सच्चा रागीआ।

★ पहली चेत २०१२ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ सावण आश्रम रुहानी सतिसंग नूं शब्द भेज्जया दिल्ली ★

कवण कृपाल किरपा करे। कवण दयाल सिर हथ्थ धरे। कवण रखवाल देवे नाम वरे। जोती जोत सरूप हरि, कवण

मारे शब्द उछाल, गुरमुख माणक मोती वेखे खोटे खरे। कवण कृपाल किरपा निध दाता। कवण कृपाल आत्म विध तीर
कटार शब्द इक्क चलाता। कवण बिध कर तन शृंगार, नाता तुट्टे मात पित भैण भ्राता। कवण पाए गल फूलनहार, कवण
जाम कवण नाम कवण दाम सच सुगाता। कवण राम, जोती जोत सरूप हरि, मेट मिटाए ज़ाता पाता। कृपाल करनी
थित्त विचार। कवण दुआरे खोल्हे हरन फरन धरनी धरत हरि निरँकार। कवण घर बाहरे वेखे लोचन नैण नेत्र जोती पुरख
भतारा साची नार। कवण संसारा चुक्के मरनी डरनी, कवण प्यारा शब्द अधार। कवण अस्वारा, जोती जोत सरूप हरि,
निहकलंक नरायण नर, चारों कुन्ट वारो वार। कवण सागर कवण ताल। कवण काया कवण गागर कवण रत्न कवण रत्नागर
एका लाल। कवण उजागर शब्द सुदागर, फल लगाए काया डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, कवण दुआरे जोत अकारे,
कवण घर वसे काल अकाल। कवण घर अकाल अकाला। कवण दर काल महांकाला। कवण हरि तोड़े जगत जंजाला।
कवण नुहाए साचे सर, लक्ख चुरासी तुट्टे मात जंजाला। कवण नर ना जन्मे ना जाए मर, जोती जोत सरूप हरि, कवण
दुआरे काया मन्दिर तन उसारे, करे करे सदा प्रितपाला। कवण राज सिँघासण सिर छत्र जगदीस। कवण साज बाज साजन
अनहद धुन धुना धुन नाद, एका रस राग छतीस। कवण सुन्न मुन समाधन बोध अगाधण, भेव चुकाउँणा बीस इक्कीस।
१० कवण मोहण माधो माधन, कवण रस रसन रसायणी अराधन, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द मंगे १०
०५ इक्क वर, भेव खुल्हाउँणा, शब्द लेख लिखाउँणा। साचा शब्द धुर फ़रमाण। साचे संत सुणना कान। अट्ठे पहर दिवस ०५
रैण हरि चरन ध्यान। काया मन्दिर वसे शहर, नेड़ ना आयण पंजे चोर ऐर गैर, एका फड़े शब्द बिबाण। कलिजुग कलि
कलन्दर अन्दरे अन्दर वरते कहर, एका नाम सच्चा जाम अमृत मध पीण खाण। एका वज्जे शब्द नाद, जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगे एका नाम वर, सोहँ शब्द रखाए साची आन। चार कुन्ट दहि दिश विचार। पुरख
अबिनाशी बन्न्हे धार। सोहँ शब्द त्रैलोआं जै जै जैकार। मात पताल अकाश अकाशन दोए जोड़ जोड़ हरि चरन सरन निमस्कार।
प्रगट होए प्रभ शाहो शबासन, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व हो अस्वार। सच मण्डल हरि साची रासन, फड़े शब्द सच्ची समरथ
हथ्थ तलवार। बेमुख जीव अन्त विनासन, मदिरा मासन करन आहार। गुरमुख साचे संत जन, रसना गायण स्वास स्वासन,
निहकलंक नरायण नर करे कराए ख़बरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, शब्द खण्डा हथ्थ
उठाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार।

★ पहली चेत २०१२ बिक्रमी दयाल पंडत फकीर चन्द फकीर नूं शब्द भेज्जया हुस्सयारपुर ★

फ़कीर फ़कीरी कवण मात। शब्द ज़ंजीरी कवण नात। नाम अमीरी कवण सुगात। रसना सीरी मेट मिटाए अन्ध अन्धेरी रात। बजर कपाटी किस घर साचे चीरी, कवण रूप कवण रंग कवण रेख लोकमात भेख कमलापात। कवण वखाणे वेला वक्त अखीरी, कवण जणाए जाणे भैण भ्राणे पित मात। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण दुआरे जोत निरँकारे, शब्द जैकारे पवण अस्वारे, बैठा रहे इक्क इकांत। जगत फ़कीर शब्द मलाह। कवण कटे हउमे पीड़, कवण जोती मेल दए मिला। कलिजुग अन्तिम लथ्थे चीर, कवण सुहेला इक्क इकेला शब्द पल्लू दए फड़ा। कवण गुर कवण चेला, कलिजुग अन्तिम आया वेला, बेड़ा बन्ने दए ला। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कवण कूटे पवण झूटे, शब्द पंघूड़ा दीपक जोती रिहा जगा। दीपक जोती कलि उज्यार। हरि आप उठाए आत्म सोती, हरिजन साचा वेख विचार। धुर दरगाही एका वरन एका गोती, एका मीत राखो चीत मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क सुणाए सोहँ शब्द सुहागी गीत, चन्द फ़कीर उत्तर देणा पहली वार।

११

०५

आत्म मध मधुर रस मीत मुरार संत। दर घर साचे सच दुआरे जोत निरँजण पुरख अबिनाशी मीत मुरार। अनहद वज्जे वजाए शब्द नद, सुणे सुणाए सच पुकार। तन शृंगार विच संसार। काम कामनी विच्चों मार। शब्द अधारा तन अस्वारा, जोती जोत सरूप हरि, एका एक करे साची जोत धरे, वरन गोत हरे मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। आत्म जोत हरि प्रकाश, वरन गोत मिटे अन्धेर सञ्झ सवेर। एका मण्डल एका रास, आप कराए हेर फेर। शब्द सरूपी जोत निरँजण ना लाए देर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तारे पैज संवारे, कर कर आपणी मेहर। नौ दुआरे करे बन्द। मेट मिटाए जगत अन्ध। एका धार गाए बत्ती दन्द। शब्द घोड़े हो अस्वार, दरस दिखाए हरस मिटाए परमानंद। सतारां हाढ़ी खुशी मनाए, भगत भगवाना एका रंग रंगाना, लोकमात चढ़ाए साचे चन्द। धुर दरगाही जगत मलाही बेपरवाही, शब्द जैकारा इक्क लगाउँणा। हरि संत उठाए थांउँ थाँईं, ठंडी छाँईं आप रखाउँणा। आपे पकड़े अन्तिम बाहीं, सज्जण सुहेला मीत मुरारा इक्क ओंकारा आप अख्वाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चुरासी कलीआं तन शृंगार, सत्तां दीपां लेख लिखार, सोहणा चोला तन छुहाउँणा। चुरासी कलीआं चिट्टां बाणा। वलीआ छलीआ बण वखाए

बवन्जा अक्खरी बवन्जा राणा। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जलीआ थलीआ, कलिजुग जूठा झूठा चोला होया पुराना। निहचल धाम नौ खण्ड पृथ्वी चार कुन्ट दहि दिश इक्क वखाए सच सिँघासण हरि अटलीआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी गुर संगत साचा माण दवाणा। सूरज चन्द चन्द सितार। शब्दी कंध अपर अपार। नाम बंध अध विचकार। जोती जोत सरूप हरि, गगन पतालां पावे सार। चन्द सूरज सूरज चन्द। आपे जाणे वेख वखाणे, पुरख अबिनाशी परमानंद। सर्ब घटां घट रिहा पछाणे, अट्ठे पहर खुल्हे रक्खे ना होए बन्द। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर इक्क कर, शब्द डोरी रिहा बंध, सूरज चन्द चांद चांदना। शब्द धार प्रभ साचे बांधा। इक्क अकार विच संसार, लोआं पुरीआं बन्ने धार, शब्द उडार श्री भगवाना। ना कोई जाणे साची कार, हरि सरकार पवण हुलारा, कलिजुग कलि कर्म विचारा, जोती जामा भेख अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। चन्द सूरज सूरज चन्द बलोए। करे खेल हरि त्रै त्रै लोए। आपे जाणे जाण पछाणे, गिण गिण लेख जाणे ना कोए। लोकमाती सुघड़ स्याणे हरि आप भुलाए तुट्टे माण रहे ना कोए। गुरमुखां आत्म हरि हुक्म सुणाए, शब्द नाद धुन वजाए। एका झुल्ले धर्म निशाने, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूरज चन्द आपे रिहा लटकाए। सूरज चन्द चन्द अन्तकाल। कलिजुग काला कुड़यारा, किसे ना धोया काला दाग़। दर घर साचे आए रोया, आप आपणी सुरत संभाल। कर्म बीज जो आपणा बोया, फल ना दिसे किसे डाल्ह। सोहँ शब्द हल साचा जोया, अकाल अकाला दीन दयाल। गुरमुख सोया रहे ना कोया, बांहों पकड़ लए उठाल। निझर धार अमृत रिहा चोया, आत्म ताल मारे उछाल। ना जन्मे ना कदे मोया, सदा सदा हरि रखवाल। दुरमति मैल रिहा धोया, निर्मल करे काया खाल। गुरमुख साचा कदे ना रोया, नेड़ ना आए जम जम काल। आत्म दर दुआरे नर नरायण हरि जी सदा सहाई होया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग चले अवल्लड़ी चाल। प्रभ बन्ने धीर। कलिजुग वेला अन्त अख़ीर। ना कोई चेला घर घर संत, ना कोई दिसे पीर फकीर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा धर, शब्द मारे सुरत ज़ंजीर। सूरज चन्द हरि द्वार। मंगण मंग रंग अपार। मिल्या मेल संग विच संसार। अन्तिम कलि पार जाए लँघ, दर द्वार सच्चे दरबार। शब्द घोड़े कस्सया तंग, जोत सरूपी हरि अस्वार। अन्तिम कटे भुक्ख नंग, मंगण मंग सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेल आप आपणी दस्से धार। सूरज सूर्या खेत्र। खुल्हे करे हरि पछान चेत चेतन्न साचे चेत्र। रंग रंगीला रंग साचा माणे, नित नवित्त नाम लोचन साचे नेत्र। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणे

भाणे अगेत पछेतर। सूरज सूर्या साचा तेज। शब्द सुनेहड़ा प्रभ साचा रिहा भेज। आप आपणे काज संवारे, कलिजुग अन्तिम पार उतारे, अग्नी धरती नौ नौं नेज। पारब्रह्म प्रभ पाए सारे, एका सोहण असथिल चुबारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे एका जोती आप रखाए साचा तेज।

★ १४ चेत २०१२ बिक्रमी संत मेहर सिँघ दे डेरे माडल टाउन जलँधर ★

काया कोट कोट गढ़। प्रभ अबिनाशी आपे वेखे अन्दरे अन्दर उप्पर चढ़। सहिज सुभाए साचा मन्दिर, आपे जाणे घर साचे वड़। वज्जा वेखे एका जन्दर, दूजा कोई ना सके घड़। जोती जोत सरूप हरि, आपणी बिध आपे जाणे, साध संत ना कोई पछाणे, ना कोई सीस ना कोई धड़। ना कोई सीस ना कोई सीसा। जोत निरँजण हरि जगदीसा। दर्द दु:ख भय भंजन, आपे जाणे भेव बीस इक्कीसा। संत जनां हरि साचा साक सैण सज्जण, बेमुखां जूठा झूठा पीसण पीसा। आत्म सर सरोवर साचा मजन, जोती जोत सर एका खोल्हे सच दर, बणत बणाए विच इक्कीसा। सच दुआरा हरि करतार।
१३ लक्ख चुरासी पावे सार। साधां संतां पावे सार। बेमुखां माया पाए बेअन्ता, आत्म भरया इक्क हँकार। गुरमुख विरले मेल १३
मिलावा साचे कन्ता, साची सेजा सुत्ते पुरख अबिनाशी नर नरायणा दोए पैर पसार। हरि संत सुहेल दर घर साचे वेखे मेला,
०५ तीजे नैणा रंग अपार। चौदां चेत्र शब्द कहिणा, झूठे वहण सर्ब वहणा, शब्द ना पाए तन गहणा, प्रभ का भाणा सिर ते ०५
सहणा पैणा, लोकमाती पुरख बिधाती कर विचार। हरि संत सुहेले गुर संगत साची मिल के बहिणा, हउमे दूई द्वैती रोग निवार। काया माटी झूठी चाटी, अजे ना पाटी बजर कपाटी, साचे तीर्थ सर सरोवर धर्म निशाना ब्रह्म ज्ञाना जोत निधाना नेड़ ना दीसे पुरख अबिनाशी वाटी। पारब्रह्म ना जोत पछाणा। शब्द राग ना जाणे काना। धुनी नाद इक्क सुहाना। सुरती शब्दी मेल मिलाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समाना। सच दर दरबार हरि निरंकारया। वेखे खेल अपार विच संसारया। गुरमुखां शब्द सरूपी चाढ़े तेल, बेमुखां वेखे बन्द कवाड़या। ना कोई कटे धर्म राए दी जेल्ह, अग्न लग्गे ना तत्ती हाढ़या। ना कोई सज्जण सुहेल, ना कोई फिरे पिछे अगाड़या। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे इक्क वर, बेमुखां मगर लगाए पंच पंचायणी झूठी धाड़या। पंच पंचायणी पंजे चोर। पुरख अबिनाशी हथ्थ पकड़ी डोर। काया रैण अन्धेरी, आत्म अन्ध घोर। गुर पूरे घर साचे बहिणा एका दूई द्वैती ना पावे शोर। दर्शन पेखे तीजे नैणा, अवर ना दीसे हरि बिन होर। जोती जोत सरूप हरि, एका एक चढ़या शब्द साचे घोड़। शब्द घोड़ा हरि दुड़ाया। तिन्नां लोआं पौड़ा

इक्क लगाया। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, साध संत चढ़ चढ़ थक्के, आदि अन्त किसे हथ्थ ना आया। ना कोई जाणे ब्राह्मण गौड़ा, जोत निरँजण निहकलंक नरायण नर हरि रघुराया। आपे वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, चौदां चेत्र शहर जलँधर दर घर साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जगत भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखाया। साचे संत संत गुरदेव। रसना गाए हरि हरि जेहव। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आत्म जोत सच्ची प्रकाशी, आपे जाणे अगली पिछली सेव। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख अलख अलख निरँजण अभेद अभेव। अभेव अछल अछेदा। ना कोई जाणे चारे वेदा। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग एका संग एका मंग एका तंग, लोआं पुरीआं रिहा लँघ, वड वड वड निवेदा। मेहर सिँघ ना मन आई मेहर। घर साचे ना बण बैठो दलेर। जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी रिहा घेर। वडा वड हरि शाहो भूपी, ना कोई रंग ना कोई रूपी, सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, आप चुकाए मेर तेर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगण हरिभगत रंगाए, जगत चुकाए सञ्झ सवेर। सञ्झ सवेर दिवस रैण इक्क रंग राता। पूरन पुरख भगत भगवन्ता। संत जनां हरि साचा कन्ता। धुर दरगाही

१४ जगत मलाही एका रंग रंगाता। आदि अन्त गऊ गरीब निमाणयां, शब्द देवे वंञ मुहाणया, लक्ख चुरासी फंद कटाता। १४

०५ इक्क बिठाए नाम बिबाणया, महल्ल अटल अचल्ल अखल्ल साचे धाम आप सुहाता। जोती जोत सरूप हरि, इक्क इकल्ला ०५

सच महल्ला वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थला बैठा रहे इक्क इकांता। पुरख अबिनाशी भए दयाला। करे खेल इक्क अकाला। वेख वखाणे गुर चेल, अग्नी जोती हथ्थ फड़ ज्वाला। हरि संत संत हरि घर साचे मिले मेल गुर गोपाला। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग काया वेखे परखे नाम फल किस लगा डाल्ह। हरिसंगत सोहे हरि चरन द्वार। संत सुहेला वस्सया बाहर। गुर संगत कलि उधरी पार। हरि दर एका होई मंगत, मिली वस्त नाम अपार। काया चढ़े साची रंगत, हउमे रोग दए निवार। मानस देही ना होए भंगत, मिल्या मेल नर हरि निरँकार। हरि जगत भगत सहाई जिउँ नानक अंगद देवे शब्द इक्क सहार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। मन मूल शब्द त्रसूल। हथ्थ फड़ाए पुरख अबिनाशी कन्त कन्तूहल। दया कमाए हरि रघुराए, हरि जी जाए ना मात भूल। सच सिँघासण हरि बिराजे, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल। रंगण रंग नाम रंगाए, साचा रंग इक्क चलूल। दूसर दर ना मंगण जाए, मिले मेल हरि दूल्हन दूल्ह। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए अगला पिछला मूल। शब्द डोर हथ्थ करतार, करे प्रकाश अन्ध घोर। जोती नूर कर अकार, मेट मिटाए पंज चोर। शब्द कराए तन

श्रृंगार, एका धुन सच्ची घनघोर। दिवस रैण एका धार, आप चुकाए मोर तोर। तोर मोर मेट मिटाए अन्ध घोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीत आत्म नात। मिले मेल पुरख बिधात। काया ठंडी ठार कराए, अमृत प्याए बूंद स्वांत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपे पित आपे मात। मात पित पूत सपूत दए हित। नित नवित्त गुरमुख रक्खे उत्तम ज़ात, अमृत काया दए सित। फल लगाए साचे पात, मानस देही लैणी जित। मिले मेल पुरख कमलापात, ना कोई वार ना कोई थित्त। सञ्झ सवेर ना कोई दिवस ना कोई रात, पुरख अबिनाशी राखो चित। भैण भाई सखा सुहेला पुच्छे वात, प्रगट होए नित नवित्त। इक्क इकेला, जन भगतां देवे नाम सुगात। दरगाह साची साचा मेला, गुरमुख साचे सच बरात। शब्द सरूपी चाढ़े तेला, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम धन धन नाम पल्ले बन्ने दात। नाम धन पल्ले गंढु। पुरख अबिनाशी रिहा वंड। एका शब्द धार वहाए, अट्ठे पहर रिहा चलाए विच ब्रह्मण्ड। गुरमुख साचा रसना गाए गुण निधान गुण गुणवन्ता पूरन भगवन्ता देवे कदे ना कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क फड़ाए सच शब्द, हत्थ नाम चण्ड प्रचण्ड। शब्द चण्ड हत्थ फड़। साचे पौड़े जाणा चढ़। पुरख अबिनाशी आपे फड़े, साचे अन्दर आत्म वड़। काया डूंघी कन्दर मूल ना डरे, आपे तोड़े किल्ह़ा हँकारी गढ़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन फड़ाए आपणा लड़। साचा लड़ फड़या हत्थ। मिले मेल हरि समरथ। नाम देवे साची वथ। सगल वसूरे जायण लथ। सोहँ चढ़ाए साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण नर निरँकार महिंमा जगत अकथना अकथ। अकथ कथा कथी ना जाए। पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क अकाला दीन दयाला आपणे रंग आप समाए। गुरमुखां मेल गुर गोपाला सर्ब रखवाला, अंग संग संग अंग आप हो जाए। धुर दरगाही सच दलाला, शब्द पाए गल सच्ची माला, फड़ फड़ बांहों पार कराए। आदि अन्त ना होए कंगाला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर सर्ब भरपूर, एका एक एका रंग समाए। ब्रह्मण्ड खोज शब्द वैराग। शब्द जोग तन संवारे काज। आत्म रस साचा भोग, शब्द धुन मारे अवाज़। हरि दरस इक्क अमोघ, शाह शहाना सिर सच्चा ताज। लक्ख चुरासी होया विजोग, कवण साजणा रिहा साज। हउमे माया लग्गे जगत विजोग, कोए ना धोए पापां दाग़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्ड खण्ड हत्थ आपणे पकड़े वाग। गुर पूरा साचा सूरा, रंगण नाम मजीठ चढ़ाए। आत्म जोती बख्शे नूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा नर निरँकारा साचा मेल मिलाए।

★ १४ चेत २०१२ बिक्रमी संत ईश्र सिँघ ढैपई पिण्ड वाले नूं शब्द भेज्जया कोटकपूरा ★

गुर गोबिन्द हरि मात उपजाया। तन मन्दिर लथ्थी सगली चिन्द, शब्द दात हरि झोली पाया। जोती नूर हरि मृगिन्द सागर सिन्ध, अमृत धार रिहा वहाया। आपे जाणे आपणी बिन्द लोकमात किसे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, सच सिँघासण डेरा लाया। सच घर इक्क द्वार। मिले वर जोत निरँकार। साचा सर आत्म खोल्हे बन्द किवाड़। दर घर जाए तर, नेड़ ना आए मौत लाड़। शब्द भण्डारे रिहा भर, जोती नूर बहत्तर नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मेट मिटाए पंचम धाड़। शब्द बाण बाण अकाश। गुरमुख माण रस रसन स्वास। ना कोई जाणे पीण खाणा, आत्म मध मधुर रस स्वास। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, काया मण्डल डेरा लाए वेख वखाणे चौदां हट्ट प्रभास। आत्म धार इक्क अवल्ली। जोत निरँजण नर अकार, निरवैर अलख एका एक सच्ची सरकार, शब्द धार लोकमात चली। चार वरनां इक्क प्यार, सोहँ शब्द जगत जैकार गली गली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख वेखे साचे घर जगत जगदीस ना सीस दीसे किसे तली। गुर द्वार गुर मंत, मन शब्द जैकारा। भाण्डा भरम देवे भन्न जोत निरँकारा। साचा राग सुणाए कन्न, पूरा हरि नर कर दरस अपारा। हउमे निकले मात जन, प्रगट होए चवीआं अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा उठाए कंध, बाणी अकाश ना जाणे विच प्रभास, शब्द अभ्यास मात निधाना। मन बैरागी रहे उदास, काया खेड़ा सुंञे मसाणी। नर हरि सच घर ना होया दास, मिटे अन्धेर ना अन्ध अंध्यानी। दसवें घर ना पवण स्वास, सुन्न मुन ना कोई जाणी। सच मण्डल हरि साची रास, जोत निरँजण पूरन भगवानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल गुर गोबिन्दा सर्ब बख्शिंदा वाली दो जहानी।

हरि शब्द गुर मन्त्र, जुगा जुगन्तर साची गीत। तन बुझाए लग्गी बसंतर, एका बख्शे चरन प्रीत। साध संत जीव जन्त प्रभ जाणे अन्तर काया मन्दिर काअबा दोआबा सच मसीत। जोत जगे अन्दरे अन्दर अन्धेरी काया डूंघी कन्दर, सच सिँघासण हरि मेल मिलावा, हरि साचा आपे तोड़े वज्जा जन्दर, अट्ठे पहर दिवस रैण साक सज्जण सैणा परखे नीत। बेमुख माया भुल्ले बाहर भौंदे बन्दर, कलिजुग औध गई बीत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना, सोहँ सुणाए शब्द सुहागी गीत। सोहँ शब्द शब्द गुर दात। भेव चुकाउँणा एका दोअँ, मेल मिलाए इक्क

इकांत। आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त, एका धार विच संसार देवे हरि पुरख अबिनाश साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जिया दान, किरपा कर हरि श्री भगवान, मानस देही जाणा जीत। मानस देही जगत हट्ट। शब्द वणजारा साचा पट्ट। सच सरोवर इक्क किनारा, दूसर नाही कोई तट्ट। मिले मेल अगम्म अपारा, जोती भानन करे प्रकाश, जोत उज्यारा घट घट। साचा शब्द सुणे सुणाए सच्ची धुन्कारा, एका धार जोत लट लट। आत्म दर दुआरे साचे निरवैर निरँकार बहिणा, दुरमति मैल रिहा कट्ट। शब्द पहनाए तन साचा गहणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी दिसे खेल जिउँ बाजीगर नट। नटूआ नाट नाट कलधारी। वेख वखाणे साचे हाट, कवण संत मात पसारी। अन्तिम नेड़ आई वाट, गुरूआं पीरां घर दर एका शब्द आई घाट, आत्म माण जगत हँकारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द हथ्थ उठाए इक्क कटारी। चरन द्वार हरि जगदीस। एका घर सच्चा घर बाहर, मिटे भेव राग छतीस। शब्द धुन सच्ची धुन्कार, दूसर ना पढ़े होर हदीस। सच्चा शब्द आर पार विच संसार, छत्र झुल्ले एका सीस। मानस देही लक्ख चुरासी आई हार, कलिजुग चक्की रहे पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सोहँ शब्द सच वस्त फड़ाए दस्त चुक्के भेव इक्कीस। कवण बिध हरि साचा पाईए। कवण करे कारज सिद्ध,
१७ दिवस रैण सद दर्शन पाईए। कवण उपजाए काया अन्दर नौ निध, कवण जोती नूर शब्द तूर घर साचे जाईए। कवण १७
०५ मन तन आत्म दए विध, जोत निरँजण दर्द दु:ख भय भंजन आत्म साचा मेल मिलाईए। जोती जोत सरूप हरि, दिस ना ०५
आए किसे घर, कवण दुआरा सच घर बाहरा अलख निरँजण एका पुरख सच भतारा, साची नारी एका सेजा रंग रंगीला माधो कन्त हंढाईए। आत्म ध्यान हरि भगवान। कलिजुग माया हथ्थ ना आए, एका शब्द ब्रह्म ज्ञान। साचे रथ ना कोई चढ़ाए, कलिजुग जीव जूठे झूठे पाजी बेईमान। पंजां चोरां ना कोई मथ वखाए, शब्द फड़ाए रसना तीर कमान। हरि हथ्थ ना कोए उठाया, आत्म जोती जगे महान। साची वस्त नाम वथ ना कोई झोली पाए, ना कोई मेटे अन्ध अज्ञान। सीआ साढे तिन्न हथ्थ वक्ख रखाई, मानस देही बीआबान। पुरख अबिनाशी अकथना अकथ, कवण वखाए मेल मिलाए श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना सोहँ शब्द विच जहान। सोहँ शब्द साचा राग। गुरमुख सोया जाए जाग। आत्म धोए दूई द्वैती दाग़। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर हथ्थ आपणे पकड़े वाग। मिले मेल पुरख अबिनाशी, साचा मेला कन्त सुहाग। हरि रस रसना रसन स्वासी, जगत बुझाए तृष्ना आग। अट्ठे पहर रहे उदासी, हँस बणाए गुरमुख काग। धर्म राए दर कटे फाँसी, इक्क सुणाए शब्द

राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रकाशी गुरमुख सोया जाए जाग। ब्रह्मण्ड खोज हरि बनवारया। हरि शब्द जोग गुरमुख साचे संत संत दुलारया। आत्म जोती दरस अमोघ कटे हउमे रोग, धुर संजोग मिला रिहा। लोकमात ना होए विजोग, आत्म रस रसना साचा भोग, तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती मेला सज्जण सुहेला इक्क इकेला पारब्रह्म सच धर्म एका कर्म मात चला रिहा। साचा धर्म धर्म धर्मात्म। एका एक पुरख अबिनाशी, सर्ब जीआं बिध जाणे आत्म। प्रगट जोत घनकपुर वासी, सोहँ देवे साचा बीआ मेट मिटाए ज़ात पातम। जोत निरँजण लक्ख चुरासी एका लीआ, एका धर्म सति सनातन। चार वरन एका हीआ, ना कोई करे कलिजुग ख़ातम। सतिजुग रखाए साची नीआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दरस दिखाए जोती नूर बातन। बातन नूर जोत उजाला। आत्म मिटे अन्धेरी रातन, शब्द पहनाए तन साची माला। मिले मेल हरि कमलापातन, दरस दिखाए गुर गोपाला। होए सहाए मात पित पित मातन, गुरमुखां फल लगाए काया साचे डाला। वेले अन्तिम पुच्छे वातन, निहकलंक नरायण नर, दिवस रैणा दर घर साचे बहिणा होए सदा रखवाला। सदा रखवाल जुगा जुगन्तया। हरिभगत करे रखवाल पूरन भगवन्तया। दीपक जोती आत्म रिहा बाल। देवे माण वड वड साधन सन्तया। जोत प्रकाश गगन सच थाल, मस्तक नूर आदिन अन्तया। गुरमुख विरले अनमुल्लड़े लाल पाल मेल मिलाए साचे कन्तया। देवे शब्द सच्चा धन्न माल, ना पिंजर ना कोई खाल, जोत निरँजण गगन गगनन्तया। लक्ख चुरासी खाए काल, हरि जोत निरँजण मात पताल अकाश आदि अन्त जुगा जुगन्त रहन्तया। गुरमुख पूरी घालन रहे घाल, सतारां हाढ़ी तोड़े जगत जंजाल, काया रंगण इक्क रंगाए, होए बाहर सदा बसन्तया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि संत सुहेले दर घर साचे मेले, आप कराए बणाए साची बणतया। बणत बणाए हरि द्वार। गुरमुख साचे संत अपार। वेख वखाणे लक्ख चुरासी जीव जन्त ऊँच नीच जल थल पार किनार। बेमुखां माया पाए बेअन्त, गुरमुखां आत्म जोती कर उज्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जन हरि साचे संत खोल्हे बन्द किवाड़। खोल्हे बन्द किवाड़ जोत जगाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, अट्ठे पहर जोत सवाईआ। होए प्रकाश बहत्तर नाड़, धुनी नाद नाद शब्द धुन एका डंक वजाईआ। बजर कपाटी देवे पाड़, अमृत झिरना निझर रिहा झिराईआ। गुरमुख बणाए साचे लाड़, लाड़ी मौत नेड़ ना आईआ। मेट मिटाए पंजां धाड़, शब्द वाड़ हरि कराईआ। धरत मात तेरा बणे अखाड़, नौ खण्ड पृथ्वी भेड़ भिड़ाईआ। भेव खुल्हाए सतारां हाढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका बाण शाह सुल्तान विच जहान, हरि बलवान शब्द डण्डे रिहा जगाईआ। हरि बलवान शब्द कटारीआ।

अट्ठे पहर नौजवान ना आवे पासा हारीआ। आपे करे जाण पछाण, चार कुन्ट दहि दिश वारे वारीआ। सोहँ चलाए एका बाण, लोआं पुरीआं आप चला रिहा। लक्ख चुरासी लहू मिझ घाण, धरत मात खुशी मना रिहा। धर्म राए ना आई हान, कलिजुग अन्तिम हरि करे खेल महानया। लाड़ी मौत मंगया दान, बेमुखां झोली हरि भरा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, माण ताण विच जहान, राउ रंक रंक राजान एका एक करा रिहा। एका हरि राज राजाना। ना कोई दीसे दूजा दर शाह शहाना। गुरमुख विरला प्रभ अबिनाशी लए वर, जोती नूर वड सुखाना। ना जन्मे ना जाए मर, शब्द शब्दी बन्ने गाना। आप चुकाए जम का डर, धर्म राए हरि फंद कटाना। इक्क वखाए साचा घर, अटल अचल्ल अथल श्री भगवाना। आपणी करनी रिहा कर, शब्द तूरत नाम मूर्त पवण मध सुरत ज्ञाना। बेमुखां दिसे सदा दूरत, लक्ख चुरासी दिसे कूड़त, गुरमुखां आत्म राम पछाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा शब्द तीर चलाए, रसना खिच्चे इक्क कमाना। रसन कमान हरि उठाईआ। सोहँ चिल्ला रिहा चढ़ाईआ। मेट मिटाए बूरा कक्खा बिल्ला, उच्चा टिल्ला आपे ढाहीआ। घर घर कढ्ढुण सारे शिला, गुर पीर औलीए शेख़ गौंस कुतब मज़ौर साध संत दए हिलाईआ। वेखे परखे मिठे कौड़, शब्द घोड़ा चुक्के पौड़, धुर दरगाही आया दौड़, ना कोई सके मात मोड़, अचरज खेल हरि वरताईआ। गुरमुखां अन्तिम वेले पए बौहड़, त्रैलोकी नाथी सच घट निवासी लोआं पुरीआं दर दुआरा इक्क खुलाईआ। भेव खुलाए हरि ब्रह्मण गौड़, कलिजुग अन्तिम होणा चौड़, सम्बल देसा प्रभ जोत प्रवेशा, गुर गोबिन्दे लेख भविख्ते पूर कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी पंज तत्ती चोर, जोत निरँजण हथ्थ पकड़ी डोर, साध संत किसे दिस ना आईआ।

★ १५ चेत २०१२ बिक्रमी भारत दे वड्डे जज्ज नूं शब्द भेज्जया ★

जगत वकील कवण भगत दलील। काया बूंदी बूंदी रक्त, मानस देही छैल छबील। आत्म जोती किस टिकाई साची शक्त, धुर दरगाह कवण सुणे अपील। कवण राग जगत त्याग कवण सुणाए कवण कंठ बसन बनवारी, कवण जाति पाती भील। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण सु वेला लोकमात करे अखीर। जगत वकील वेख विचार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, कवण बन्ने सतिजुग धार। बेमुख जीवां किस बिध देवे अन्तिम फाँसी, गुरमुखां देवे शब्द हुलार। मेट मिटाए मदिरा मासी, कवण हुक्म चलाए विच संसार। कवण

जोत मात प्रकाशी, आत्म खोल्हे वेख बन्द किवाड़। लोआं पुरीआं जिस चरन दासी, खोल्हे भेव सतारां हाढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ा चारे कुन्ट दौड़ाए, धरत मात तेरा वेखे इक्क अखाड़। जगत वकील आत्म ध्यान। पंजे चोर घर घर शैतान। नौ खण्ड पृथ्वी कवण चुकाए मोर तोर, कवण दिवाए नाम ध्यान। सत्तां दीपां अन्ध घोर, साचा दीपक ना कोई जगाए राज राजान। लोकमात किस आत्म पकड़ी तेरी डोर, एका कर आत्म दर ध्यान। कवण सरकार वढ्ढी खोर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कवण पछाणे चबाए आपणी दाढ़े जीव जन्त हराम खोर।

★ १५ चेत २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

गुर मन्त्र शब्द निधान, आत्म लाध्या अन्तर। लोकमात करे पछाण, तन बुझाए पंजां बसन्तर। अमृत धार इक्क महान, जोती नूर गगन गगनन्तर। चतुर्भुज हरि बलवान, हरिजन बणाए साची बणतर। जिस जन होए आप मेहरवान, काया मन्दिर सच धाम रहन्तर। साची मध प्याए अमृत जाम, एका तोड़े हँकारी जन्दर। मेट मिटाए अन्ध अन्धेरी शाम, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचे कोई ना लाए दाम। ना कोई मंगे दान, ना धन खज़ीना। किसे दिस ना आए हड्ड मास नाड़ी चाम, जोती नूर हरि प्रबीना। जोत निरँजण जोती राम, गुरूआं पीरा दाना बीना। दर्द दुःख भय भंजन, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत सुहेला लक्ख चुरासी विच्चों वख कीना। आत्म बोध शब्द अगाधा। हिरदा सोध धुन अनाद अनादा। पुरख अबिनाशी वड जोधन जोध आदि जुगादा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वडा माधव माधा। आत्म चढ़ सच द्वार। हथ्थ फड़ शब्द कटार। पंजां तत्तां नाल लड़, मानस देही ना आए हार। दर घर साचे एका वड़, सोलां कलीआं तन श्रृंगार। साचा लड़ एका फड़, जोत निरँजण हरि निरँकार। गुर नानक गुर गोबिन्द जन भाण्डा मात ल्या घड़, आदिन अन्ता एका धार। सिँघ पूरन विच बैठा वड़, शब्द रक्खे तिक्खी धार। करे उज्यार बहत्तर नाड़, नाथ त्रिलोकी मात पताल अकाश पुरीआं लोआं पावे सार। सृष्ट सबाई रिहा झोकी, राजे राणयां वड जरवाणयां गुरूआं पीरां साधां संतां पावे सार। कलिजुग बेड़ा अन्तिम अन्त बेमुहाणया। माता बाल ना किसे पछाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, दरस अमोघ इक्क वखाए, धुर संजोग मेल मिलाए, देवे शब्द सोहँ साची वस्त दस्त अस्त निरंकारया। एका जोती नूर अकाला।

२१ ०५

ना कोई वरन ना कोई गोती, नर हरि हरि नर गोपाला। गुरमुख वेखे प्रभ साचे माणक मोती, काया मन्दिर अन्दर वेखे सच धर्मसाला। दुरमति मैल जाए धोती, आप उठाए आत्म काया सोती, जोती अग्नी इक्क ज्वाला। हउमे कढ्ढे वासना खोटी, गुरमुख विरला चढ़े सच महल्ले उप्पर चोटी। बेमुखां मुख रखाए जूठी झूठी बोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, सोहँ डण्डा संग रलाया, बेमुख जीव पकड़ पछाड़े कलिजुग कोटन कोटी। कवण धाम हरि बिराजे। कवण राम कलि साजन साजे। कवण काया चाम, कवण रखाए मात लाजे। कवण राम रमईआ शाम, कवण वखाणे खेल कल कि आजे। जूठे झूठे भैणां भईआ मईआ राम, वेले अन्त ना रक्खे कोई लाजे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां पूरन करे काम, वेले अन्त मारे अवाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुनेहड़ा साचा देवे सतारां हाढ़ी फुल फुलवाड़ी, लोकमात साचा साजन साजे। राज जोग हरि शब्द ध्यान। मिटे काम क्रोध लोभ अभिमान। प्रगट होए हरि जोधन जोध, शब्द जणाए हरि बोध अगाध, हरि जोती साचा मेल मिलान। एका नाद धुन उपजाए, सुन्न मुन हरि बूझ बुझान। गुरमुख साचे संत सुहेले चुण वखाए, अन्तिम कलि मात कर पछान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम निधान। नाम निधान अनमुल्ल गुणवन्तया। आपे देवे भाग लगावे साची कुल साचे संतया। लोकमात बणावे साची बणतर, साचा करे तन शृंगार हरि भगवन्तया। लक्ख चुरासी वेख विचारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप बणाए साची बणतया। लोआं पुरीआं वसे बाहर, जोत अकालीआ। एका जोती शब्द उडार, वेख वखाणे कलिजुग तेरी घटा कालीआ। लक्ख चुरासी गई हार, पूरन ब्रह्म ना करे विचार, ना कोई पाए तन शब्द वड दुशालीआ। जोती जामा हरि निरँकार, कृष्ना शामा खेल अपार, ना हरि पुरख ना हरि नार, एका रंग महानया। शब्द सरूपी साची धार। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचे सोहँ देवे सच्ची वस्त अपार मात निशानीआ। सतिजुग साचे काज रचाया। प्रभ अबिनाशी देवे दाज, सोहँ शब्द संग रलाया। प्रगट होए देस माझ, वेद व्यासा भेव खुल्हाया। चार वरनां एका सांझ, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। चारों कुन्ट पैणी भाज, देवी देव ना होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जोत धर, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई जाणे जीव जन्त साध संत, पुरख अबिनाशी खेल अपारया। गुरमुख साचे संत सुहेले मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म सेजा साचा रंग साचे घर सुहा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े कस तंग, लक्ख चुरासी करे भंग, गुरमुख काया साची चोली अन्दर मन्दिर इक्क रंगा रिहा। काया चोली रंग गुलाल। गुरमुख डोली हरि रखवाल। आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, संत सुहेले

साचे भाल। सोहँ शब्द सुणाए एका बोली, लोकमात ना होए कंगाल। हरिजन बणाए दर घर साचे एका गोली, सदा करे प्रितपाल। शब्दी जोती काया मौली, चढ़या रंग इक्क गुलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, सोहँ देवे शब्द दुशाल। सोहँ शब्द दुशाल, नाम दस्तारया। आत्म झोली करे माला माल, बणे आप वरतारया। गुरमुखां रिहा सुरत संभाल, फल लगाए साचे डालया। एका मारे सच उछाल, रत्न अमोलक हीरा नाम काया गागर वड वड सागर आप उपा रिहा। जोती जगे काया खाल, दीपक साचा रिहा बाल, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। मस्तक नूरी साचा थाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका राग जगत त्याग सुरत वैराग, शब्द डोरी नाल बंधा रिहा। शब्द डोरी बन्न करतार। वेख वखाणे काया मन्दिर अन्ध घोरी, अन्दरे अन्दर पावे सार। पंजां फड़े चोरी चोरी, शब्द घोड़े हो अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे वस्त अपार। साची वस्त नाम वणजारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। हरि आप भुलाए साध संत, आत्म भरया इक्क हँकारा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, जूठी झूठी वैहन्दी धारा। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, निर्मल जोती जोत अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, आत्म खोल्ह बन्द किवाड़ा। खोल्हे बन्द किवाड़, जोत नुरानीआ। माया पड़दा देवे पाड़, मारे शब्द तीर निशानीआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़, सोहँ गाए साची बाणीआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, दिवस रैण रैण रैणानीआ। काया मन्दिर अन्दर लग्गा सच्चा अखाड़, वेखे खेल हरि भगवानीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाउँ करे न्याउँ वड वड दानीआ। वड दाता दाता सूर। गुरमुख विरले मात पछाता, हउमे रोग कीता दूर। आत्म बंधा शब्द गाना, मिल्या हरि सर्ब भरपूर। एका सुणया नाम तराना, जोती नूरा सति सरूर। पुरख अबिनाशी इक्क पछाना, सदा सुहेला हाजर हजूर। आत्म जोती नूर उजाला कोटन भाना, काया अन्धेरा होया दूर। आत्म सर सरोवर सच इशनाना, दुरमति मैल उतरे कूड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका बख्शे मस्तक साची चरन धूढ़। मस्तक चरन धूढ़ जोत लिलाटयां। चतुर बणाए मूर्ख मूढ़, पूर कराए पिछला घाटयां। रंगण रंग चढ़ाए एका गूढ़, नेड़े आई कलिजुग वाटयां। राजे राणयां पाए जूड़, वेख वखाणे तीर्थ ताटयां। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए, आप कटाए गेड़ा आन बाटयां। पर्‍हा पसंती हरि नाम प्यार। अगम्म निगम आत्म धार। पूरन ब्रह्म हरि विचार। मेट मिटाए अंदेसा भरम, पूर्ब कर्म रिहा विचार। दूसर ना कोई जाणे वरन, सच दुआरे सच पुकार। सच उपजाई मानस

देही सच्चा जन्म, सुन्न समाधी सहिज सुख धार। भगत सुनेहड़ा पड़ा पसंती करे विचार। सुरसती हथ्थ ना मानस देही, करे कराए इक्क विचार। जोती जोत सरूप हरि, अन्दरे अन्दर साचे मन्दिर सुन्न समाधी बोध अगाधी शब्द अनादी पावे साची सार। पड़ा प्रीतम प्रेम उप्पर सुन्नी शब्द उपजे धुन, ना कोई गणे सुणे सुणार। आपे रवया आपणे गुणी, ना कोई वेखे करे वपार। सच पुकारा रिहा सुण, अन्दरे अन्दर कर प्यार। कवण जाणे हरि तेरे गुण, जोती नूर खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पड़ा प्रेमी रिहा पाए सार। इक्क इकेला हरि निरंकारया। दूजा रक्खे शब्द चेला वड संसारया। तीजे पवण स्वासी इक्क फड़ाए साचा पल्ला, पुरीआं लोआं पाए सारया। चौथा घर पुरख अबिनाश एका मल्ला, गुरूआं पीरां महल्ल उसारया। पंजवें वसे निहचल धाम अटला, ना कोई जाणे जन्त गंवारया। छेवें दर दुआरे साचे खल्ला, गुरमुखां दरस दिखाए अगम्म अपारया। सत्तवें जोती शब्द रला, दीपक इक्क साचा बला, मिटाए अन्ध अंध्यारया। अठवें अट्ठां तत्ता मारे खल्ला, इक्क महल्ल हरि उसारया। नौवें नावें दर वेख वखाणे जल थला, पुरख अबिनाशी ना पाए सारया। दसवें दर साचा हरि आपणा आप मला, संत असंत चढ़ चढ़ थक्के किसे हथ्थ ना आए मदीने मक्के, ना कोई वेखे सच महल्ल अटल मुनारया। दस इक्क ग्यारा शब्द धारा, आवे जावे वारो वारया। दस दो बारां जोती अकारा, बारां कँवलां खेल अपारया। दस तिन्न तेरां गुरसिक्खां दिसे नेरन नेरा, दूई द्वैती पड़दा लाह रिहा। दस चार चौदां वसे काया हट, जिउँ खेल बाजीगर नट, आपे जाणे घटां घट, चौदां लोक हरि मँझधारा। दस पंज पन्दरां, पुरख अबिनाशी तोड़े वज्जा हँकारी जन्दरा, सच खुलाए दर महल्ल इक्क अपारा। दस छे सोलां, पुरख अबिनाशी जोत सरूपी पहरे चोला, चारों कुन्ट कराए जै जै जैकारया। दस सत्त सतारां, प्रभ अबिनाशी एका भतारा, सृष्ट सबाई संसारी नारया। दस अट्ठ अठारां, ना कोई दीसे पंजां धाड़ा, जगे जोत बहत्तर नाड़ा, सञ्झ सवेर इक्क रिहा। दस नौ उन्नी, सोहँ देवे पंजां चोरां सिर चुन्नी, साचा हरि खोल्हे दर वेख नर, ना कोई जाणे वड ज्ञानी गुणी। दस दस बीस, दस दुआरे ना देव लोक पछानण, कवण घर जाईए कन्त सुहेला पाईए, मिले मेल हरि जोती जगदीस। बीस इक्क इक्की, निहकलंक नरायण नर, सोहँ धार रक्खे तिक्खी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका छत्र झुलाए लोकमात मार झात, गुरमुख बणा सच जमात, अन्तिम कलि साचे सीस। कवण मति हरि मन्दिर द्वार। कवण तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, शब्द उडार। कवण रत जोत जगाए अन्दरे अन्दर, कवण नाड़ी हरि पसार। कवण पित ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट मिले मेल पुरख भतार। कवण वेखे भरमां वट, शब्द मारे खण्डा दो धार। कवण रस निज्झर लईए चट्ट,, जगत

तृष्ना उतरे तन बुखार। कवण दिसे घट घट, रूप रंग रेख भेख ना कोई विच संसार। कवण जोती काया मट जगे लट लट, कवण दुआरे शब्द धुन सुन्न मुन ना कोए सुनार। कवण जिह्वा कवण नाम जगत रट, आत्म खुल्हे बन्द किवाड़। फ़कीर फ़कीरी केहड़े हट्ट, चौदां लोकां केहड़ा पट्ट, काया करे तन श्रृंगार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, इक्क करे कराए सोहँ शब्द सच्चा वणज वपार। इक्क इकेला इक्क इकांत। अन्दरे अन्दर साचा मेला, पीवे प्याए अमृत बूंद स्वांत। आपे गुर आपे चेला, शब्द जोती एका नात। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कवण दुआरे आवे जावे विच मात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सोहँ शब्द चलाया साची गाथ। चन्द फ़कीर शब्द चोट। सोहँ वज्जे सच्चा तीर, हउमे कढ्ढे काया खोट। साधां संतां आत्म भेड़, कलिजुग डिगे आल्हणिओ बोट। तन मन्दिर अन्दर लग्गी हउमे पीड़, शब्द नगारा ना तन लाए चोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, गुरमुख उधारे विच संसारे विच्चों कोटी कोट।

★ १५ चेत २०१२ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया लेख दूजा ★

२४ ०५

बहत्तर नाड़ी उब्बल रत। शब्द पछाणे एका एक सच्चा तत्त। आपा आप विच मात जानणा, कवण रखावे जगत पत। शब्द पंघूड़ा एका जानणा, मानस देही चढ़ना साचे रथ। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम वेले पकड़ ल्यावणा, मिले सीआं साढे तिन्न हथ्थ। सिँघ रणधीर काया रण जित। वेख वखाण पुरख अबिनाशी, प्रगट होए विच मात केहड़ी थित्त। गुर पीर पैर पसार सोए, करे कराए प्रभ साचा हित। पंच पंचायण जाणे कोए, जिस मिल्या मेल साचे पित। लाड़ी मौत खाए डैण, आत्म हँकारी नित नवित्त। हरिजन पेखे दरस तीजे नैण, चार वरनां मिले एका साचा मित। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां शब्द कराए साचा हित। पंचम कटार कर्म कुचील। गुर गोबिन्द क्यों पहने बस्त्र नील। कवण उपजाए बणाए साची बिन्द, कवण तन श्रृंगार कराए छैल छबील। जोती जोत सरूप हरि, मात गर्भ नौ अठारां दस मास रखाए, ना कोई जाणे सिक्ख भील। कवण अमृत पीए दर। सदा जीईए ना जाईए मर। मिले मेल एक हीईए, पुरख अबिनाशी साचे हरि। शब्द बीज साचा बीईए, लक्ख चुरासी चुक्के डर। ना कोई पुत्तर ना कोई धीईए, मात पित ना दीसे घर। काया मन्दिर कवण रखाए नींए, जगत महल्ल ल्या उसर। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम वर, अमृत देणा साचे सर। साचे सर अमृत ताल। कवण सु वेला वज्जे उछाल। भाण्डा भरम भज्जे, ज़ात पाती

तुटे जगत जंजाल। शब्द चोट नगारे एका वज्जे, ना कोई शाह ना कंगाल। केसाधारी गुरसिख सजे, फल लगे काया डाल्। दूई द्वैती भाडां भज्जे, गुरमुख अवल्लड़ी चले चाल। जोती जोत सरूप हरि, सच भगौती मंगे वर, कवण दुआरे देवे हरि, देणा भेव खुल्। कक्का किरपान हथ्थ फड़ाउँणी। लुहार तरखाण ना किसे बणाउँणी। शब्द बिबाण विच रखाउँणी। काया कल्याण जिस कराउँणी। मार ध्यान केहड़ी कूटे हरि जोत जगाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे सच वर, सच भगौती हथ्थ फड़ाउँणी। कवण बस्त्र तन देवे कज्ज। कवण कक्का जग रक्खे लज। कलिजुग फल अन्तिम पक्का, किसे लाउँण ना देवे अज्ज पज्ज। अन्तिम वेले पुरख अबिनाशी मारे एका धक्का, भरम भाण्डा कलि जाए भज्ज। ना कोई मदीना ना कोई मक्का, ना कोई हाजी करे हज्ज। ना कोई बूरा ना कोई कक्का, तख्त ताज देण तज। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे सच वर, जगत भगत रक्खे लज।

★ १६ विसाख २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

२५ जन्म अनमोल, मानस देही रास। पुरख अबिनाशी तोले पूरे तोल, सर्ब घटां घट रक्खे वास। शब्द जैकारा सोहँ बोल, मात पताल पताल आकाश। अनहद धुनी नादी ढोल, रसना जिह्वा स्वास स्वास। दूई द्वैती पड़दे रिहा खोल्, जिन घर आत्म रखे वास। गुरमुख विरला उतरे पूरे तोल, लक्ख चुरासी होई विनास। हरिजन जन हरि वसे साचे कोल, गेड़ चुकाए गर्भवास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सदा सुहेला दासन दास। दासन दास दास गुर अन्तर, सच आत्म घर निवास। आप बुझाए तन लग्गी पंजां बसंतर, भाग लगाए काया प्रभास। वेखे खेल गगन गगनंतर, सच मण्डल साची रास। लोकमात पुरख बिधाती, जुगा जुगन्तर वेखे खेल गगन गगनंतर, सच मण्डल हरि साची रास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे सदा आस पास पास आस। काया सोहणी रंगण रंग चलूल। दुरमति मैल प्रभ धोणी, प्रभ अबिनाशी ना जाए भूल। सोई सुरती मात उठाउँणी, मिले मेल कन्त कन्तूहल। अकाल मूर्ति दर दर्शन पाउँणी, आप चुकाए अगला पिछला मूल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द पंघूड़ा एका देवे गुरमुख साचा सच दुलारा घर साचे रिहा झूल। आए दर बण भिखारी। मंगे वस्त नाम अपारी। शब्द हस्त सच अस्वारी। तन बस्त सोहँ शब्द श्रृंगारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट दहि दिश एका धार कर विचार, वेख वखाणे वारो वारी। सच दुआरा ल्या मल। पुरख भतारा जल

थल। गुरमुख साचा साची नारा, दीसे निहचल धाम अटल। एका दीसे दर दुआरा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल। सोहँ शब्द जगत सहारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल रचाए घड़ी घड़ी पल पल। शब्द दलाला गुरमुख उधार। गुर गुर गोपाला, कलि पावे सार। दीन दयाला करे प्रितपाला, मानस देही पूर्ब कर्म विचार। दिवस रैण कँवल नैणा दर घर साचे बहिणा, अट्ठे पहर रहे ख़बरदार। आप चुकाए लहिणा देणा, शब्द पहनाए तन गहिणा, नाम रंगण इक्क अपार। झूठे वहिण जीव ना वहिणा, दरस दिखाए तीजे नैणा, आत्म खोल्ह बन्द किवाड़। नाता तुटे भाई भैणां, मिल्या मेल साक सज्जण सैणा, लेखा चुक्के सतारां हाढ़। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, गुरमुख साचे सदा मात ते रहणा, जोती नूर जगे बहत्तर नाड़। प्रभ का भाणा सहिणा पैणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे देवे वाड़। भाणा प्रभ बलवान। आपणी करनी रिहा कर, अट्ठे पहर नौजवान। ना जन्मे ना जाए मर, नेड़ ना आयण पंज शैतान। गुरमुख खोल्ह आत्म दर, राम रहीम रहीम रहिमान। इक्क वखाए सच घर, जोती नूर शब्द निशान। गुरमुख विरला आप चुकाए जम का डर, धर्म राए हरि फंद कटान। गुरमुख साचा साची तरनी जाए तर, मिले मेल श्री भगवान। मानस देही ना जाए हर, लेखा चुक्के विच जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट दहि दिश नौ खण्ड पृथ्वी मात पताल पताल अकाश वरभण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भज सेत्ज इक्क रखाए आण। शब्द आण विच संसार। सोहँ बाण तिक्खी धार। साचा शब्द सुणाए कान। मुन रिक्ख ना करे पछान। देवे वस्त हरि गुण गुण निधान। हरिजन साचा दिवस रैण अट्ठे पहर रहे मस्त, झुलदा रहे नाम निशान। शब्द चढ़ाए साचे हस्त, पुरीआं लोआं इक्क उडान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा मात धर, वेखे खेल जीव जन्त जहान। हरि का खेल अगम्म, भरम भव सागरा। ना कोई जाणे हरि कर्म, निर्मल नूर उजागरा। ना कोई जाणे मानस देही झूठी माटी चरम, सच वणज ना कोए करे सुदागरा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साची जोत इक्क जगाए, काया माटी साची गागरा। जोती दीपक कर उज्यार। पुरख अबिनाशी पाए सार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। रंग रंगीला हरि दातार। कर कर वेस माझे देस सूहा पीला, जोती नार एका धार। एका धार गुरमुख विरले अमृत जाम शब्द प्याला प्रभ दर पी, आत्म खुल्ह बन्द किवाड़। जोती अग्नी साची ला ला, वा ना लगे तत्ती हाढ़। एका नाम सच्चा बीज बिजा ला, फल फुल फुलवाड़ी पिछे अगाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए दया कमाए बहत्तर नाड़। अलक्ख अगम्म अपार हरि बेअन्तया। शब्द रक्खे तिक्खी धार, देवे कर पार साधन संतया। आदि अन्त एका कार, पुरख अबिनाशी ना कोई

नर ना कोई नार, भेखाधारी जुगा जुगन्तया। जन भगतां साचा सज्जण मीत मुरार, एका बन्ने चरन प्यार, मेल मिलावा साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे जीव जन्तया। जीव जन्त हरि कर ध्यान। साध संत असंत पछाण। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भुल्ले रुल्ले जीव जहान। जोती जोत सरूप हरि, एका एक जन भगतां टेक, सोहँ शब्द रखाए साची आण। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कारा। दस्म दुआरी वसे बाहरा। तन मण्डल भेव न्यारा। गुरमुख साचे माणक मोती मात चुण, दया कमाए सतारां हाढ़ा। कवण जाणे हरि तेरे गुण, जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। साध संत लोकमात छाण पुण, लाए सच्चा एका एक अखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, परे हटाए दया कमाए पंचम लग्गी मगर झूठी धाड़ा। पंच पंचायण गुरमुखां खाए लाड़ी मौत डैण। सच्चा फल फुले फुलवाड़ी, दरस दिखाए तीजे नैण। आपे होए पिछे अगाड़ी, नाता तुट्टा साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण। गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाई दाढ़ी, बेमुख जूठे झूठे अन्तिम कलि झूठे वहिण वहिण। गुरमुखां तोड़े आत्म दूई द्वैती जन्दर, अन्त चुकाए लहिण देण। लक्ख चुरासी दर दर भौंदे बन्दर, बेमुखां रात अन्धेरी कलिजुग रैण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, प्रगट होए नर नरायण। नर नरायण नर निरंकारया। घर घर खेल अपर अपारया। सतिजुग साचे वधी वेल, सोहँ शब्द चढ़या तेल, मिले मेल भगत बनवारया। अचरज खेल हरि सज्जण सुहेल, लोकमात करदा आए वारो वारया। आपे कटे कटाए धर्म राए दी जेल्, लक्ख चुरासी जम की फाँसी गुरमुखां गलों कटा रिहा। सदा वसे रंग नवेल, जोती नूर इक्क अकाल, शब्दी तूर सर्बकला भरपूर, दिस किसे ना आ रिहा। भगत जनां हरि आसा मनसा पूर, दिवस रैण अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर, दीपक जोती इक्क जगा रिहा। मस्तक देवे साची धूढ़ा, चतुर सुजान बणाए अञ्याण मूढ़ा, साचा राह इक्क वखा रिहा। राजे राणयां पाए जूड़ा, शब्द डोरी इक्क रखा रिहा। लक्ख चुरासी छाणे कूड़ा, पुरख अबिनाशी साचा लाल किसे हथ्थ ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी लोकमात मार झात इक्क इकांत, सोहँ साचा हट्ट खुल्हा रिहा। सोहँ साचा हट्ट खुल्हाए। एका दात सच वस्त हरि झोली पाए। ना कोई शब्द घोड़ तीर अस्त दस्त कमान, ना कोई काया नगर खेड़ा पंजां झेड़ा, पुरख अबिनाशी धाम अवल्ले बस्त, गुरमुखां अमृत आत्म साचा सीर प्याए। अट्ठे पहर रक्खे मस्त, शब्द घोड़े हरि चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग दिन रहि गए थोड़े, सतारां हाढ़ी भेव खुल्हाए। कलिजुग वेला अन्तिम गया मुक्क। सतिजुग वेला नेड़े आया, वक्त सुहेला गया ढुक। बेमुखां प्रभ दए सजाया, प्रभ का भाणा ना जाए रुक। साचा राह किसे हथ्थ ना आया,

जूठ झूठ मुख पवाए एका थुक्क। जोती जोत सरूप हरि, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, अन्तिम वेले दए वड्डिआया, कलिजुग जीआं काया पिंजर गया सुक्क, ना होए कोए सहाया। अजपा जाप जपे जाप, कोटन कोट उतरे पाप। नेड़ ना आयण तीनो ताप। हरिजन पछाणे आपणा आप। ना कोई जाणे भैणां भाई मात बापे, कलिजुग पाप रिहा कांप। गुरमुख साचे संत सुहेले मेले वड प्रताप। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए। काया वस्त लए उठाई, साची चोली रंग रंगाए। नौ उंगल दर द्वार आपे नाचे, काया चोली रंग रंगण, जोती मेला हरि प्रबीन। शब्द चेला होए अधीन। पवण स्वासी मेला तीन। घनकपुर वासी रसना चीन। शाहो शाबाशी करे ठांडा सीन। दिवस रैण ना रहे उदासी, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी एका ईन। काया मण्डल झूठी रासी, सच वस्त हरि वक्खर कीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच वर, मिले मेल हरि नव नव रंग रंगीन। नव नव नौ दुआरे। पुरख अबिनाशी वसे बाहरे। आत्म घर साचा दर, अमृत सर झिरना झिरे अपर अपारे। हरिजन साचा लए वर, चुक्के डर ना जाए मर, मिले मेल कन्त कन्तूहला, साची तरनी जाए तर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोध अगाध शब्द नादा, अनहद मारे एका अवाजे। गुरमुख साचा सर सरोवर एका रिहा भर, किसे हथ्थ ना आए राजन राजे। निशअक्खर सद हरि वक्खर, पड़्रा पसंती अन्तिम कन्ती, अजपा जाप अजापन जापे। जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण नाम रंग अनमोल, शब्द तोले पूरे तोल, होए सहाई माई बापे। दस्म दुआर दहि दिश घाटी। शब्द सवार हरि खेल बाजीगर नाटी। जोत निरँकार एका एक लिलाटी। अमृत रस निझर धार, शब्द खुल्ले साची हाटी। पवण उनन्जा वेख विचार, ना कोई दिसे तीर्थ ताटी। सोहँ शब्द वगे धार, दूर नेड़े नेड़ ना दूर एका वाटी। जोती साया रंग अपार, आपे खेवण आपे खेटी। जन भगतां बेड़ा पार किनार, ओंकार खोल्ले ताकी। एका नर हरि सच्ची सरकार, धर्म राए ना मंगे बाकी। जगे जोत अगम्म अपार, ना कोई बन्दा दिसे ख़ाकी। गुरमुख साचे संत जन तेरे द्वार, पंच पंचायण कोई ना रहे आकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाए, दस्म दुआरी खोल्ले ताकी।

२८ ०५

★ पहली जेठ २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जोती जामा हरि रघुराईआ। पूर कराए आपणा कामा, ना कोई दूसर संग रलाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चामा, काया अन्दर मन्दिर ना दए कोई वखाईआ। कलिजुग होई अन्धेरी राती, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत अचरज खेल

वरताईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत रिहा आप बणाईआ। आपणी बणत हरि आप बणांयदा। गुरमुख साचे संत जगांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, दुरमति मैल संग रलांयदा। भरम भुलाए जीव जन्त, भेद अभेदा अछल अछेदा, किसे हथ्थ ना आए चार वेदा खाणी बाणी कलिजुग राणी अन्तिम वेले पछोताणी। अञ्जील कुरानी जीव निधानी, सोहँ शब्द सच्चा तीर हरि मारे कानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगण रंग चढ़ाए, चार वरनां रिहा सुणाए, राज राजानां शाह सुल्तानां कोई भुल्ल ना जाए, प्रगट होए वाली दो जहानी। पहली जेठ हरि लेख लिखईआ। वाली हिन्द उठ जाग, प्रभ आप चढ़ाए साची नईआ। लोकमात धोवण आया पिछले दाग़, डोर आपणे हथ्थ रखईआ। मानस देही होई काग, मोती हँस ना कोई चोग चुगईआ। साचा सुणना एका राग, सुरती सुरत अकाल मूर्त ना कोई भेख रखईआ। छत्ती राग ना जानण तूरत, कवण देस जोत प्रवेश, कवण नगारा हरि वजईआ। कलिजुग अवल्लड़ा धारे भेस, खुल्ह्ड़े केस वेस रखईआ। लोआं पुरीआं देस प्रदेस, खण्ड ब्रह्मण्ड एका धार चलईआ। शब्द फड़ाए हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, लक्ख चुरासी वढ्ढे कंड, बेमुखां करे खण्ड खण्ड, तिक्खी धार विच संसार एका आप रखईआ। जन भगतां आत्म दर दुआरे चोबदार, शब्द घोड़े हो अस्वार। गुर गोबिन्दा वाली हिन्दा सर्ब बख्शिंदा, लक्ख चुरासी करे निबेड़ा, गुरसिख जोती जोत अधार। शब्द जोती मेल मिलांयदा। वरन गोती भेव चुकांयदा। वाली हिन्द हरि सुणांयदा। अन्तिम वेले रहे ना चिन्द, निहकलंक कलि जामा पांयदा। प्रगट होया विच हिन्द, नौ सत्त सत्त नौ साचा भाणा आपणा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम वरते भाणा, ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, ज्ञानी ध्यानी वेद पुराणी, पंडत पांधे ना कोई भेव खुल्हांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका झण्डा सोहँ खण्डा शब्द डण्डा, सतारां हाढ़ी लोकमात लगांयदा। वाली हिन्द उठ हो ख़बरदार। गुरमुखां रक्खे साया हेठ, करे इक्क प्यार। कलिजुग जीव भन्ने कौड़े रेठ, पकड़ ल्याए घेर घार। प्रगट होए पंचम जेठ, आप संवारे आपणे काज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

★ पहली जेठ २०१२ बिक्रमी पाकिस्तान दे गवर्नर जनरल नूं शब्द भेज्जया ★

पाकिस्तानी पाकी पाक। नबी रसूलां खुल्हे ताक। साचा हज्ज प्रभ अबिनाशी इक्क दर कबूला, आप चुकाउँणा भेव एका दूजा, नाता तुट्टे जूठा झूठा मात पित भाई भैण साक। भेव ना रहे लोकमात गूझा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द इक्क रखाया साचा राक। साचा राकी हरि सुल्ताना, चुकाउँण आया नबी रसूलां बाकी। सिध्धा रक्खे इक्क निशाना,

कोई ना अड़े बन्दा ख़ाकी। झुल्ले झुलाए नाम निशाना, जोत निरँजण पाकन पाकी। एका एक सच बिबाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्वी आप वखाणे एका एक टेक शब्द साकी।

सतिजुग साचे प्रभ साचा तेरी करे चट्ठ। जीव जन्त साध संत ना कोई झूठा नाचे, वेख वखाणे भाण्डे काचे, सतारां हाढ़ी कर इक्ट्ठ। एका लाए अग्न तमाचे, उलटी गेड़े गिड़ाए साची लट्ठ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर साचो साचे, सोहँ शब्द बणाए साचा मट्ठ। साचा मट्ठ कर त्यार। साधां संतां करे प्यार। आदिन अन्ता विच संसार। जीआं जन्तां दए अधार। बणाए बणता सतिजुग तेरी बन्न धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए ख़बरदार। संत सुहेले आवण दर। दर घर साचे मिले एका वर। करनी कीरत करता कादर रिहा कर। हउमे कढ्ढे दूई द्वैती पीड़त, अग्नी मट्ठ अग्गे खड़। बेमुखां अन्तिम दिसी भीड़त, अग्न अंगयारे जायण झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म हँकारी जगत विकारी दर दरबार बांहों लए फड़। फड़ बांह करे उज्यार। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई होए सहार। ना कोई देवे ठंडी छाँ, ना कोई छुडाए मीत मुरार। अग्गों किसे ना निकले नांह, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे आपणी धार। आपणी धार आप बणाउँणी। जोत ज्वाला इक्क जगाउँणी। इक्क अकाला दीन दयाला सर्ब प्रितपाला अहूती नाम चढ़ाउँणी। साध संत सभ मारन छालां, अचरज खेल सतारां हाढ़ी प्रभ आप कराउँणी। फल दिसे केहड़े सच्चे डाल्ह, अग्नी तन नेड़ ना आउँणी। गुरमुख मस्तक लालो लाला, मिल्या हरि गुर गोपाला, साची रंगण जिस तन चढ़ाउँणी। दूजे दर ना मंगे कोई जाए बण कंगाला, निहकलंकी साधां संतां कढ्ढे विवाद, अग्नी भेंट काया माटी आप चढ़ाउँणी। सुंञा दिसे काया खेत, जूठा झूठा जगत हित बेमुख बणन गुर संगत अन्दर जिन प्रेत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सिख्या इक्क दवाउँणी। शब्द भण्डार अतुट हरि वरतांयदा। पंजां चोरां कुट्ट बहांयदा। तिक्खा तीर इक्क रखांयदा। अमृत आत्म प्याए एका घुट्ट, सोहँ धार वहांयदा। त्रैकुटी सुखमन जाए छुट्ट, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। दर घर साचे कदे ना आवे तोट, कोटन कोट दर द्वार हरि तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाली भाण्डा हरि भरांयदा। शब्द धुनी नाद अनादा। ना कोई जाणे रिखी मुनी, धार अपार बोध अगाधा। गुरमुखां आत्म छाणी पुणी, रसना गाए माधव माधा। हरि पुकार घर साचे सुणी, शब्द देवे घर साची दादा। वड दाता सूरा हरि गुण गुणी, हरिजन साचे मात लाधा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका राग आप सुणाए दया कमाए, अनहत अनाहद नादा। साचा

राग रंग रंगीन। जगत त्याग वड वडभाग, रसना रस एका चीन। सोई आत्म जाए जाग, आत्म तुट्टे हँकारी बीन। प्रभ अबिनाशी हथ्थ पकड़े वाग, जोत उज्यारी शब्द भण्डारी धुन न्यारी ठांडा सीन। पूरे गुर किरपा धारी। काया मट चार द्वारी। अन्दरे अन्दर वस्त अपारी। बेमुख भौंदे बाहर बन्दर, मानस देही बाजी हारी। कोई ना तोड़े वज्जा हँकारी जन्दर, शब्द डण्डा देवे मारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया डूंघी कन्दर सुणाए राग धुनी, नाद आदि अपर अपारी। आदि नाद वज्जे जुगादि। संत साध रहे लाध। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच वस्त वस्त असत देवे दात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका रस रसन रसायण आत्म स्वाद। आत्म रस मधुर मध। गुर पूरा होए वस, अन्दरे अन्दर लैणा सद्द। पंच पंचायण जाए नस्स, शब्द वज्जे साचा नद। गुरमुखां मेल मिलाए हस्स, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लँघाए हद्द बेहद्द।

★ पहली जेठ २०१२ बिक्रमी शाह ईरान नूं शब्द भेज्जया ★

नूर अलाही हरि रहिमान। जगत अलाही बेऐब मेहरवान। वेख वखाणे थांउँ थांईं, हुक्म सुणाए शाह ईरान। कोई ना पकड़े अन्तिम बांहीं, मुलां शेख़ सर्ब मिट जाण। खुदी खुदाए कोई दीसे नाही, एका झुल्ले शब्द निशान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, रसना फड़ तीर कमान। शाह अरब अरबानीआ। प्रभ अबिनाशी वेख वेख वखाणे, मुलां काज़ी मणके तसबी गानीआं। साची साजन रिहा साजी, हुक्म सुणावे शाह दुरानीआ। ऐली शाह एका ताजी, अहिमद मुहम्मद आए हानीआ। आपे आए बण के मक्के हाजी, काला भेस दर दरवेश जोत नूरानीआ। जोती जोत सरूप हरि, खुल्ह्ड़े रक्खे केस, अन्तिम वेले एह निशानीआ। नूरी अलाही अल्ला नूर। इक्क इकल्ला शब्द तूर। लहिंदी दिशा वेखे सच महल्ला, शब्द फड़े तिक्खा भल्ला, जोती जगे कोहतूर। रसन कमानी चढ़े चिल्ह्ला, नाल हिलाए बूरा कक्का बिला, प्रगट होए वड दाता सूर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलि जोत धर, मुलां काज़ी शेख़ सारे वेखे, वेले अन्त केहड़ा फ़ाँसी चढ़े मन्सूर। मक्का काजी हक्क जलाल। वेख वखाणे दूर दुराडे निमाजी, शब्द ताजी एका छाल। सोहँ शब्द भेजे भाजी, सतारां हाढ़ी सुरत संभाल। जोती जोत सरूप हरि, एका बणे साचा हाजी, जगत अवल्लड़ी चले चाल। शाह सुल्तानां शाह रकाब। एका हुक्म हरि जनाब। मिले वर दो दोआब। चारों कुन्ट आउँणा डर, कोई ना झल्ले मात ताब। इक्क खुल्ह्ाउँणा साचा दर, आप प्याए आबे हयात। ना जन्मे ना जाए मर, ना दिवस ना होए रात। जोती जोत सरूप हरि,

३२ ०५

जोती जामा भेख धर, बैठा रहे इक्क इकांत। वेखे खेल दिशा लहिंदी। प्रगट होए अमाम मैहन्दी। कुरान अञ्जील इक्ट्ठी हो हो बहिंदी। प्रभ अबिनाशी तन बस्त्र नील, प्रगट होए छैल छबील, अल्ला राणी दर दर घर घर बहि बहि कहिंदी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका भाणा जगत वरताणा, सृष्ट सबाई लोकमात एह सहिंदी। पुरख निरँजण सच विहार। लोकमात मार झात, इक्क बणाए दर दरबार। मेट मिटाए कलिजुग अन्धेरी रात। शब्द बख्शे साची दात, चरन प्रीती एका नात। अमृत आत्म साची धार, लेखा चुक्के ज़ात पात। होए सहाई पुरख अबिनाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल रचाईआ। मात पित हरि जगदीसा। नित नवित्त जन भगतां मित, करे हित्त बीस इक्कीसा। गुरमुख आत्म रिहा सित, भेव चुकाए मूसा ईसा। नौ जेठ वेख वखाणे साची थित्त। मोर मुकट सिर छत्र झुलाए, नर निरँकार हरि जगदीसा। हरिजन मानस देही लैणी जित्त, सोहँ रसना गाए इक्क हदीसा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रसना भाग लगाए, नाल रलाए दन्द बतीसा। बत्ती धार हरि इक्कीसा। बीस अपार राग छतीसा। आई हार कुरान हदीसा। होए ख्वार मूसा ईसा। डाढी मार माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा। नौ दरवाजे दर दरबार काया मन्दिर मानस देही भगत सनेही कवण करे कलि तेरी रीसा। महल्ल अटल रिहा उसार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिखे लिखाए लेखा दर घर सच्चे दरबार। दिल्ली दरबार दर दरबारे। पुरख अबिनाशी किरपा धार, करे कराए ख़बरदारे। शब्द फड़े तीर कटार, दर दुरकाए चोबदारे। जोत सरूपी शब्द उडार, जोती जामा खेल अपारे। एका नाम भगत अधार, वेख वखाणे वारो वारे। आपे जाणे आपणी सार, जीव जन्त कलि होए गंवारे। पुरख अबिनाशी ना कोई नर ना कोई नार, रूप रंग ना कोई अपारे। पीत पितम्बर सच दरबार, असथिल सोहण हरि चुबारे। ईसा लेख लिखाया ऐतवार, निहकलंकी जामा धारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्तर पावे सारे। आपे जाणे सर्ब घट वस्सया। जुगां जुगन्तर एका कार, गुरूआं पीरां राह साचा एका दस्सया। नित्त नवित्ता साची धार, ना कदे रोवे ना कदे हस्सया। सुत्ता रहे चरन पसार, लच्छमी चरन कँवल एका झस्सया। मंगदी रहे चरन प्यार, लाल श्रृंगार एका रस रस्सया। सोलां इच्छया पाई भिच्छया शब्द फूलन साचा हार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर निराला जोत अकाला दीन दयाला लोकमात हरि कस्सया। कसे तीर शब्द अनरंगा। लक्ख चुरासी रिहा चीर, हरि दाता सूरा सरबंगा। शब्द डोरी दस्तगीर, सोहँ नाम जगत मृदंगा। पकड़ उठाए शाह हकीर, आपे परखे माड़ा चंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सदा सदा सदा अंग संगा।

★ ५ जेठ २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

पंचम जेठ पुरख सुजाना। गुरमुखां रक्खे साया हेठ, चारों कुन्ट मार ध्याना। बेमुख जीव कौड़े रेठ, मेट मिटाए जगत निशाना। पकड़ पछाड़े वड वड सेठ, धुर दरगाही बेईमाना। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, हरि सच्चा शाह सुल्ताना। राज राजान पंचम जेठा हरि बिठा रिहा। गुरमुख साचे संत उधारे, बीस इक्कीस इक्कीस बीस खेल अपारया। मेट मिटाए राग छतीस, सोहँ आए मात वारया। एका शब्द मात हदीस, चार वरनां इक्क जैकारया। एका छत्र साचे सीस, राज राजानां माण गंवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द डंक इक्क वजा रिहा। शब्द डंक हरि दातार। राउ रंक दर दुआरे करे ख़बरदार। गुरमुखां सुहाए द्वार बंक, दर दर घर घर पावे सार। प्रगट जोत बार अनक, जोती जामा भेख न्यार। प्रभ अबिनाशी वासी पुरी घनक, देवे दरस अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठा नित नवित्ता साची धार। रुत बसंता फल फुलवाड़ी। मिले मेल प्रभ साचे कन्ता, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। देवे वड्याई विच जीव जन्ता, शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी। जगत सुहेला आदिन अन्ता, दर घर साचे रिहा वाड़ी। आप बणाए साची बणता, गुर संगत भाग लगाए दया कमाए सतारां हाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लक्ख चुरासी फंद कटाए, जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। बहत्तर नाड़ी हरि प्रकाश। आपे होए पिछे अगाड़ी, शब्द सरूपी पाए रास। मस्तक भाग गुर चरन छुहाई दाढ़ी, हउमे हँगता कर विनास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, काया मन्दिर अन्दर भाग लगाए सच बसंती रुत्त प्रभात। आत्म रती रुत्त बहार। आप उठाए काया सोती, शब्द पहनाए गल साचा हार। गुरमुख उपजाए माणक मोती, पहली चेत्र कर त्यार। आप जगाए अन्दरे अन्दर साची जोती, शब्दी पवणी खेल अपार। भउ चुकाए वरन गोती, एका रंगण रंग चढ़ाए सोहँ शब्द अपर अपार। दुरमति मैल जाए धोती, हरिजन आए दर सच्चे दरबार। लक्ख चुरासी अन्तिम कलि रहे रोती, वेले अन्तिम आई हार। गुरमुख साचे संत उधारे विच्चों कोटन कोटी, एका बख्शे चरन प्यार। गुरसिख प्यारा गुरमुख दस्म दुआरे चढ़े आत्म चोटी, जोती नूर कर अकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सोहँ शब्द सच्चा सेहरा, नाम निरँजण सिर दस्तार। शब्द दस्तार सिर पहनाए। खण्डा दो धार संग रलाए। रंगण रंग इक्क अपार, सोहँ भट्ठी रिहा चढ़ाए। शब्द घोड़े कस तंग, चारों कुन्ट रिहा दौड़ाए। शब्द सरूपी करे जंगा, साधां संतां रिहा हिलाए। गुरमुखां सदा सद अंग संगा, नेड़ ना आए तत्ती वाए। सोहँ वज्जे जगत मृदंगा, राज राजानां शाह बुलाए। कलिजुग वेला अन्तिम लँघा, जूठा झूठा

भुक्खा नंगा कोई ना होए सहाए। सतिजुग साचे वर साचा मंगा, पुरख अबिनाशी दया कमाए। प्रगट होए वड दाता सूरा सरबंगा, सच वस्त दात हरि झोली पाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म बेड़ा बन्न वखाए। पंचम जेठा दया कमाए। गुरमुख सोए, अवर ना जाणे कोए, घर घर जगाए। दुरमति मैल कलिजुग धोए, नाम रंगण रिहा रंगाए। आत्म बीज साचा बोए, शब्द कंगण तन पहनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान झुलाए सच्चा इक्क निशान, चार वरनां एका आण, शाह सुल्तान सर्ब मिट जाण, साचा लेखा रिहा लिखाए। लेखा लिखे हरि बनवारी। कलिजुग अन्तिम हरि जी वेखा, चारों कुन्ट आई हारी। जूठा झूठा धरया भेखा, भरम भुलाए जीव गंवारी। नेत्र खोलृ किसे ना वेखा, जोत निरँजण वड बलकारी। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़ा, कुरान अंजीला रहे विचारी। कवण मिटाए बिधना लिखी रेखा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि करे खेल अपर अपारी। पंचम जेठा हरि रघुराईआ। गुरमुखां देवे माण, सुख सहिजे सहिज समाईआ। सोहँ शब्द सच निशान, सच सिँघासण संग रलाईआ। आपे बैठ सच्चे बिबाण, गुरमुख साचे रिहा चढ़ाईआ। अट्ठे पहर मार ध्यान, पूर्ब लेखा रिहा चुकाईआ। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, सोहँ तीर तिक्खा लाईआ। आपे गोपी आपे काहन, माया पड़दा रिहा गवाईआ। दर घर साचे देवे माण, धुर दरगाही जगत मलाहीआ। आपे बख्शे पीण खाण, चरन नाता हरि बनृाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संत सुहेला इक्क इकेला, दोहां साचा मेल मिलाईआ। पंचम जेठ कर विचार, गुर संगत घर लिआईआ। शब्द मारे इक्क उडार, दर दर अलख जगाईआ। गुरमुखां खोलृे बन्द किवाड़, सोहँ सद हरि सुणाईआ। लेखा चुकाउँणा सतारां हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जगत जुगत हरिभगत रिहा बणाईआ। जोग जुगत हरि बणाए। शब्द भोग रसना रस, अन्तिम मुक्त आप कराए। हरि हरि हरि जन होए वस, एका शक्त नाम धराए। लोकमात मार झात, राह साचा जाए दस, बूंद रक्त प्रभ लेखे लाए। आपे जाणे आपणा वक्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई भेव ना पाए। अवर ना कोई पाए भेव, ना जगत पछाणया। करोड़ तेतीस लग्गे सेव, सुरपति राजा इन्द होए निमाणया। शिव शंकर गाए रसना जिहव, कलि वरते हरि हरि भाणया। ब्रह्मा चारे मुख उठाए गाए अलख अभेव, साची सेव कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच समाया।

३५ ०५

★ ५ जेठ २०१२ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया गया पिण्ड जेठूवाल ★

कवण कक्का कर हथ्थ श्रृंगार। कलिजुग फल एका पक्का, मंगण ना जाईए दर द्वार। कवण देवे दो जहानी पार धक्का, अट्ठे पहर करे रख्वार। कवण कक्का मात पित भैण भाई सका, हथ्थ फड़े गुर चरन वस्त अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंगे हथ्थ कड़ा, ना कोई सीस ना कोई धड़ा, दोवें भुजां दए संवार। दोवें भुज धुर दरगाह। सच दुआरा जाए सुझ, भरम भुले जगत ना। अन्दरे अन्दर भेव गुझ, बन्द किवाड़ी खुल्ले ना। पुरख अबिनाशी लैणा बुझ, दिवस सतारां हाढ़ी भुल्ले ना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म एका पीईए आदि अन्त कदे डुल्ले ना। कवण केस सीस जगदीस। कवण देस कवण भेस, कवण पीसण रिहा पीस। कवण नर कवण नरायण, कवण पढ़ाए शब्द हदीस। कवण केस सीस रिहा धर, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण दुआरे रहे प्रवेश। आत्म ध्यान कर विचार। कवण निशान हरि पुरख अपार। कवण इशनान कवण दान। कवण माण कवण अभिमान। कवण जिया कवण दान। कवण अमृत मधु पिया, कवण चढ़या इक्क बिबाण। कवण जोती जगे दीआ, आपे वेखे कर कर हीआ, केसाधारी ना कोई निशान। अन्तिम अन्त कलिजुग साढे तिन्न हथ्थ सीआं, संत रणधीर सिँघ मिट जाए जगत निशान। कवण कंघा बत्ती धार। कवण बाडी करे विचार। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी, नाड़ बहत्तर ख़बरदार। दुरमति मैल रिहा काढी, करे खेल वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, एका कंगा दर साचे मंगा, नाम रंगा सदा अंग संगा बणया सदा रहे प्यार। सच सहारा बणे दलाल। पंच उधारा होए रखवाल। शब्द उडारा सुहाए ताल। रूप रंग कलि वसे बाहरा, जूठी झूठी ना दिसे तन माया खाल। एका चलाए सोहँ शब्द साचा नाहरा, दर घर साचे एका ताल। चार वरनां इक्क दुआरा, भरया रहे सद भण्डारा, फल लगाए काया डाल्ह। सतारां हाढ़ी दिवस विचारा, मंगण आउँणा बण भिखारा, मिले नाम अपर अपारा, दीपक जोती देवे बाल। जोत निरँजण मात पसारा, नेत्र अंजन सच विहारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े जगत जंजाल। जगत जंजाला तोड़, दया कमांयदा। चरन प्रीती नाता जोड़, साची डोरी हरि बनाँयदा। आप चढ़ाए शब्द घोड़, जोती जोत निरंतर मेल मिलांयदा। चारों कुन्ट रिहा दौड़, पल्लू कोए ना हथ्थ फड़ांयदा। ना कोई जाणे ब्रह्मण गौड़, सम्बल देस वेस हरि समझांयदा। धुर दरगाही एका लाया पौड़, सोहँ डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। ना कोई लम्भा ना कोई चौड़, दस्म दुआरी बाहर करांयदा। चरन सरन कलि आउँणा दौड़, जोत निरँकारी मेल मिलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत सुहेले साचे

घर साचे दर बहांयदा। अमृत देणा आत्म धार। तीजा खुल्हे बन्द नैणा, दीपक जोती कर उज्यार। पंच सुहाउँणा शब्द गहणा, सोहणा कर तन शृंगार। दर दुआरे साचे बहिणा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मंगे काया रंगे मूल ना मंगे, दस्म दुआरी देणी ठंडी धार।

★ ६ जेठ २०१२ बिक्रमी पलँघ साहिब शब्द सिँघासण कर के रक्खया पहाड़ गंज दिल्ली ★

आलमीन अल्ला आला उल पाक। इक्क इकल्ला सच महल्ला, नूरी जोत ना देही ना खाक। नबी रसूलां पाए तरथल्ला, कोई ना दीसे आकी आक। सोहँ शब्द फड़ प्रभ साचा भल्ला, चारों कुन्ट रिहा झाक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत पीर फ़कीरां खोल्हे बन्द ताक। नूर अलाही रमज रमजान। बेपरवाही ना कोई दीसे जगत निशान। जगत मलाही राम रहीम रहीम रहिमान। वेख वखाणे सभनीं थांईं शाह सुल्तान तन बेईमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चिल्ला रसना खिच्चे तीर कमान। मुलां शेख़ मुसायक दस्तगीरिआं। अन्तिम अन्त दिसण खाक, शब्द पाए साचा घेरया। सोहँ डोर हरि पाए नाक, ना करे कराए कोई हेरा फेरया। एका जोत निरँजण पाकी पाक, बन्दा खाकी होए ढहि ढहि ढेरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पावे सार मुहम्मद तेरी कलिजुग अन्तिम वेरया। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुरमुख गुरमुख गुरमुख द्वार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुर संगत, प्रभ अबिनाशी पहरेदार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ बन्न्हण आया शब्द डोरी पंजे यार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुर संगत, जुगां जुगां दा लहिणा देणा देणा लहिणा प्रभ रिहा करज उतार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुर संगत, सच सच्ची सरकार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक बंधाए चरन प्यार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुर द्वार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार नर हरि सच्ची सरकार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार ना जन्मे ना जाए मर, आदि अन्त एका धार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार आपणी करनी रिहा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार साचा तख्त ताज मात रिहा धर, जोत सरूपी भेख न्यार। निमस्कार निमस्कार निमस्कार जगत शाही चुक्के डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण कर त्यार। शब्द सिँघासण प्रभ रचन रचाया। जोती आसण पुरख अबिनाशण लाया। गुर संगत होई दासी दासन, पंच विकारां झोली पावण आया। सोहँ जाप जपाए स्वास स्वासन मात पताल पृथ्वी अकाशन एका रंगण रंग नाम रंगावण आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धाम सच दुआरा आप सुहाया। गुर

का धाम गुरमुख जाति। गुर का नाम निर्मल बाती। गुर का थाम उत्तम जाति। गुर का नाम तृष्ना भुक्ख मिटाती। गुर पूरा मिले पल्ले बन्ने सच्चा दाम, तोट ना आवे दिवस राती। जगी जोत रमईआ राम, निहकलंकी पुरख बिधाती। सुक्का हरया करे चाम, मिले मेल कमलापाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वणज करावण आया, पंचां लड़ आप फड़ाया, शब्द बख्शे साची दाती। पंचां लड़ हरि फड़ाया। पंचां अन्दर रिहा लड़, पंचम खेल आप रचाया। पंच पंचाइती रिहा फड़, शब्द डोरी नाल बंधाया। साचे घाड़न रिहा घड़, शब्द घोड़ा इक्क रखाया। आपे अन्दर जाए वड़, दूर दुराडा दिस ना आया। वेख वखाणे बहत्तर नड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी भेव ना राया। सच दुआरे जाए चढ़, गुर काया आत्म कुण्डा आपे लाहया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अबिनाशी आप जगाया। सच दुआरे गया वड़, धुनी नाद नाद धुन रागन राग आप समाया। सच महल्ले अग्गे खड़, गुरमुख साचे मेल मिलाया। एका अक्खर जाणा पढ़, जगत वक्खर हरि रखाया। कोए ना सके अग्गे अड़, हाकन डाकन रिद्ध सिद्ध प्रभ दए दुरकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मन्दिर अन्दरे अन्दर शब्द सिँघासण जोती आसण डेरा लाया। ब्रह्मा धाम अटल, उच्च मुनारया। आपे वेखे जल थल, ना कोई जाणे जीव गंवारया। दीपक जोती गया बल, मेट मिटाए धुँदूकारया। भाग लग्गे काया खल, साची बणत हरि बणा रिहा। गुर संगत मिलया साचा फल, सोहँ रसना भोग लगा रिहा। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल, वाली हिन्द जगा रिहा। एका वसे निहचल धाम अटल, लोआं पुरीआं दिस ना आ रिहा। लोकमात वड छल, जोती जामा भेख वटा रिहा। चारों तरफ पाए तरथल्ल, साचा समां हरि सुहा रिहा। गुरमुख साचा संत सुहेला सच सिँघासण दर घर साचा लए मल्ल, प्रभ अबिनाशी सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक सच सिँघासण निमस्कार निमस्कार निमस्कार दिल्ली दरबारया। इक्क इकल्ला मीत जोत निरंकारया। दूजी बन्ने शब्द प्रीत, सचखण्ड खेल अपारया। तीजे तीआ किया वेस साचे देस, ओंकारा रंग अपारया। चौथे घर सदा आदेस, मिले मेल कन्त प्यारया। पंचम पंचम किया हरि वेस, पंचम तत्ती तन उसारया। छेवें घर दर दरवेश, रहे हमेश पहरेदारया। सत्तवें सुत्ता उठया नर नरेश, पहली जेठ लेख लिखा रिहा। अठवें वेख वखाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, इन्द इन्द्रासण सिँघ सिँघासण शिव शंकर गगन मण्डल चन्द सूरज तारया। नौवें नौ नौं जेठ गुरमुख रखे साया हेठ, नौ खण्ड पृथ्वी वंड वंडा रिहा। वाली हिन्द नाल उठाउँणा। बिरला सेठ, भाण्डा भज्जे कौड़ा रेठ, ना होए कोई सहारया। प्रगट होए जेठा जेठ, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण नींह रखा रिहा। सच सिँघासण पाई वंड। प्रभ अबिनाशी नौ जेठ पकड़ उठाए राजे राणे वड वड सेठ विच

ब्रह्मण्ड। गुरमुख चलाए आपणे भाणे, तन काया रक्खे सदा ठंड। हरिजन हरि रंग साचा माणे, होए सहाई ना देवे कंड। एका झुल्ले शब्द निशाने, सोहँ खण्डा शब्द सचखण्ड। लक्ख चुरासी झूठी ताणी, आत्म अन्धी होई रंड। तख्त ताज प्रभ आप सुहाने, वेख वखाणे उत्भज सेत्ज जेरज अंड। गुरमुखां पहनाए चिट्टे बाणे, इक्क इक्क कराई साची वंड। आपणी करनी आपे जाणे, मेट मिटाए भेख पखण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड। शब्द सिँघासण हरि सुहाया। जोती जोत जोत प्रकाशन, नौ अठारां दहि दस मास, गर्भ ना डेरा लाया। जोती जोत जोत अबिनाशण, सुरत मन ना किसे बन्न्हाया। आपे वसे अकाश अकाशन, धरत रूप रंग वेख ना राया। आपे जपे जपाए स्वास स्वासन, जीव जन्त कलि दिस ना आया। आपे जाणे आपणी रास रासन, नाम उदासण तीर चलाया। आपे रक्खे घट घट वासन, प्रभासन अन्दर डेरा लाया। गुर संगत हरि हरि दास दासन, साची सेवा करदा आया। रसन तजाए मदिरा मासन, अमृत मेवा नाम खवाया। इक्क सुणाए साचा भाषन, सोहँ जै जै जैकर कराया। मुकंद मनोहर हरि जी दासन, नैणां बैणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप सुहाया। दर दरबार तख्त सुल्तान। जोती नूर इक्क अकाल श्री भगवान। सोहँ शब्द सीस दस्तार नौजवान। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारे, वड जोधा बली बलवान। राज राजानां करे ख्वार मारे मार। शब्दी खेल अपर अपार। गुरमुखां बेड़ा कर त्यार। विच संसार चले कलि अवल्लड़ी चाल। आपे चुक्के बण कुहार पहली वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण कर त्यार। तख्त ताज जगत जगदीसा। रक्खे लाज गुर चरन मस्तक लग्गा साचा सीसा। आप संवारे आपणा काज शब्द जगाए चीना रूसा। करे खेल देस माझ, फड़ हिलाए ईसा मूसा। चार वरनां एका सांझ, सोहँ शब्द सच हदीसा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण जोत बिराजे, नाम छत्र झुल्ले सीसा। नाम छत्र झुल्ले अपार। ना कोई लाए हरि जी मुल्ले, गुरमुख कलीआं बसंत बहार। प्रगट होया वलीआ छलीआ, जोधा बलीआ भेख न्यार। नर नरायण अटल अटलीआ, शब्द सुनेहड़ा गली गलीआ, गुरमुखां करे ख़बरदार। ना कोई जाणे शाह सुल्तान ऐली अलीआ, अहिमद मुहम्मद सुत्ते पैर पसार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण आप बिराजे, जोती नूर नूरों कर अकार। नूरों कर अकार नूर नुरानया। किया शब्द विहार विच जहानया। चिट्टा अस्व दर दरबार, हरि सुल्तानया। चारे कुन्टां रिहा विचार, हथ्थीं बन्न्हे मौली गानया। गुरमुखां आप उठाए प्रभ साचा यार, खाली हथ्थ हरि समरथ वाली दो जहानया। फड़ फड़ बाहों जाए तार, पैज संवार, लक्ख चुरासी फंद कटानया। नौ अठारां वक्त विचार बन्न्हे धार, हरि जोती मेल मिलानया।

समरथ पुरख सदा निमस्कार निमस्कार निमस्कार, जिस जन भेव चुकाया आवण जानया। सोलां इच्छया सोलां धार। प्रभ मंगे साची भिच्छया, गुरमुख साचे कर त्यार। मात करन आया रच्छया, शब्द बन्न सच्ची दस्तार। दिल्ली दरबार साची सिख्या, गुर मन्त्र नाम इक्क अधार। धुर दरगाही लेख साचा लिख्या, लोकमात बन्ने साची धार। लक्ख चुरासी दिसे मिथ्या, अन्तिम जाए बाजी हार। नौ जेठ साची वार थितया, सत्त दीप नौ खण्ड नौ सत्त सोलां प्रभ कर विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरे दर दुआरे बणया रहे नाम भिखार। नौ सत्त काया घट जूठे चौदां हट। दसवें घर तीर्थ तट्ट। साचा सर जोती लट। मिले हरि ढाए वट्ट। आपणी करनी रिहा कर, गुरमुख लाहा लैणा खट्ट। साची तरनी जायण तर, निझर रस साचा चट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां कलीआं तन शृंगारे, सोला इच्छया पार किनारे, दोए हथ्थीं मेटे फट्ट। सोलां सोलां सोलवीं धार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, पूर्ब कर्म रिहा विचार। जोती जामा भेख अपार, रचन रचाए विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द प्रसादि प्रसादि शब्द कलि कर त्यार। शब्द प्रसादि हरि बणाउँणा। आदि जुगादि जुगादि आदि संगत साध संग रलाउँणा। विच ब्रह्माद अनाथ सिर दे कर हाथ आप बचाउँणा। मस्तक लेख लिख लिख माथ, सिँघ बलीआ नाल रलाउँणा। आप चढ़ाए शब्द राथ, सगला साथ आप निभाउँणा।
३६ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगल वसूरे जायण लाथ, जोती जामा दर्शन पाउँणा। सोलां कला कला प्रभ धारे। गुरमुख ३६
०५ साचे संत जनां, एका देवे शब्द हुलारे। साचा देवे नाम धन्ना, अन्दरे अन्दर जै जै जैकारे। जाग जाग त्याग सुण कन्नां, ०५
सिंङी नाद ना कोई विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगे मंग तन काया अंग करे खेल विच संसारे। पारब्रह्म जन पार किनारा, ना कोई वेख वखाणदा। जुगा जुगन्तर धर्म न्यारा, एका एक सरूप जाणदा। मानस देही सच कर्म विचारा, मारे शब्द तीर सच्चा ब्रह्म ज्ञान दा। पुरी घनक लए अवतारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल वाली दो जहान दा। वाली दो जहान हक्क जलालया। चार वरनां सच्चा राह रिहा तक्क, सोहँ शब्द फड़ निशानया। माया राणी फल गया पक्क, भुल्ले रुले जगत निधानया। राजन राज शाह सुल्तानां शब्द नकेल पाए नक्क, हरि कलन्दर खेल महानया। आपे ऐली शाह मौलाना हक्क, नूर नुरानी हरि मौलानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणे भाणया। ऐनल हक्क हक्क हकूक। चार यारी गई थक्क, जगत मलाह ना सुणे कोई कूक। कलिजुग फल गया पक्क, ना कोई जाणे शाह तबरूक। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द एका मारे साची फूक। शाह ईराना मस्त दीवाना। नूर अलाही बन्ने गाना। वेख वखाणे थांउँ थांईं, इक्क रखाए नाम निशाना। जोती जोत सरूप

हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल वाली दो जहानां। ईरान शाह अन्तिम होणा मात वैरान, जबराईल गल पाए फाह। नाता तुटे पीण खाण, ना कोई सहाई पिता माँ। एका झुल्ले जगत निशान, दूसर कोई दिसे ना। सतारां हाढ़ी लेख महान, प्रभ पाए साचे हिस्से, पीर फ़कीर फ़कीर पीर कोई भुल्ले ना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चारों कुन्ट बेमुख जीवां दिसे ना। शाह ईरान संग अराकानी। पकड़ उठाए हरि दुरानी। सोहँ सच्चा तीर चलाए, शब्द मारे तिक्खी कानी। पीर फ़कीर वहीर कराए, वेख वखाए हरि दिल दानी। जूठे झूठे चीर लुहाए हथ्थ ना किसे आवे पाणी। एका रंग अख़ीर वखाए, सोहँ शब्द मात कुरबानी। नीले बस्त्र तन छुहाए, नबी रसूलां सच्चा बानी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खलक खुदाए ख़लक वखाए सर्ब बानी। जगत खाणी फनाहउल फिले, एका चले साची बानी। सोहँ शब्द रसना चाढ़े चिल्ले, पावे सार विच बैरानी। गुरमुखां वखाए तीजा तिले, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी खेल महानी। सति पुरख सतिवाद सति सति सतवन्तया। पूरन ब्रह्म अनाद पूरन भगवन्तया। जोत निरँजण जुगादि आदि आदिन अन्तया। शब्द चलाए बोध

४० अगाध अन्त गणन्तया। हरिजन रसना लए अराध, मिले माण विच जीव जन्तया। दर घर साचे एका ब्रह्म ज्ञान, चरन ४०

प्रीती हरि भगवन्तया। मस्तक धूढ़ी कलि इशनान, काया गूढ़ी चाढ़े रंगण वाली दो जहान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

०५ मेल मिलावा साचे कन्तया। कन्त सुहागी नार पुरख सुजानया। शब्द पहनाए तन कटार, अस्त्र शस्त्र आप सजानया। दर ०५

दरवाजे एका पहरेदार, दिवस रैण रैण दिवस साचा हुक्म सुणानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा एका एक वखानया। एका एक वखाण इक्क अकालया। गुरमुख साचे नेत्र लैणा वेख, जोत जवाल्या। अन्तिम मिटणे जाण औलीए पीर शेख़, राजे राणयां कढ्ढे दवाल्या। आपे लिखणहारा धुर दरगाही साचे लेख, ना कोई जाणे शाह कंगालया। मस्तक लाए साची मेख, दीपक जोती साची बालीआ। जोती जामा धरया भेख, सोहँ रक्खया शब्द सुखालया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची घालण आपे घालया। साची घालन रिहा घाल। गुरमुख वणजारा साची मालन, शब्द पहनाए साचा हार। धुर दरगाही हरि दलालन, एका देवे नाम अपार। मिले मेल जोत अकालन, शब्द सवालन गुरमुख विचार। दो जहानी आपे पालण, एका वज्जे सच्चा तालण, छत्ती रागां वसे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार।

★ ६ जेठ २०१२ बिक्रमी डा. राजिन्दर प्रसाद राष्ट्रपती लई शब्द लिखाया दिल्ली ★

शब्द ताज जगदीस छत्र झुलारया। रंगण रंग बीस इक्कीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, सोहँ साचा जै जैकारया। मिटदी जाए कुरान हदीस, ना कोई गाए राग छतीस, वेद पुराणी आई हारया। कवण करे प्रभ तेरी रीस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण तख्त बिराज साजन साज कल कि आज आपणी बणत बणा रिहा। साजन साज साजे सगल रघुनाथ। आपे जाणे तख्त ताजे, कवण राज कवण राजे, कवण निभाए साचा साथ। कवण पित रक्खे लाजे, कवण मस्तक लेख लिखे मात। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रखाए साथ। राज जोग जोग तपीशर। दरस अमोघ हरि रखीशर। हउमे रोग जगत मुनीशर। धुर संजोग एका ईश्र। माया लगा कर्म विजोग, जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, आत्म खोल्हणा बन्द दर, राज राजाने शाह भबीख्ण। शाह भबीखण बल बुध धार। कवण रामा कवण रावण कवण बध करे संसार। कवण जोती कवण जामा कवण कँवल किया अकार। कवण माणक मोती तन कराए श्रृंगार। कवण उठाए काया सोती, कवण पहनाए तन शब्द हार। कवण जगाए आत्म जोती, कवण मेल मिलाए सीता राम राम अवतार। कवण नाम कवण जगे जोती, कवण भिबूती विच संसार। कवण समग्री विच काया नगरी कवण होए पहरेदार। कवण धार विच मात उजगरी, कवण प्रीत नगर प्रभ चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मेल मिलाए विछड़े यार। त्रेता जुग तीआ वेस। प्रभ अबिनाशी धारे भेस। रूप रंग ना कोई वखाए, मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस। आपणा संग आप निभाए जोत निरँजण माझे देस। गुरमुख सोए आप जगाए, नाड़ बहत्तर हो प्रवेश। आप आपणे रंग रंगाए, कोई ना जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश। दर दरबारा इक्क रखाए चार वरनां देवे माणे गऊ गरीबां सद हमेश। सोए उठाए राजे राणे, भुल्ले नाम गुण निधाने, मिटदी जाए आत्म रेख। इक्क चढ़ाए शब्द बिबाणे सोहँ देवे पीणे खाणे, सति पुरख हरि सदा आदेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आपे नर आपे दर दरवेश। दर दरवेश दूर दुरानया। धर धर आया काला भेख, वेख वखाणे शाह सुल्तानया। आपे जाणे आपणी रेख, ना कोई करे पछानया। पंडत पांधे रहे वेख, प्राग कांशी मार ध्यानया। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरानया। हरिभगत सुहेला लए वेख, नेत्र खोल्हे अन्ध अंध्यानया। जोती जामा धारया भेख, निहकलंक श्री भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले मेल वाली हिन्द हरि सर्ब बख्शिंद, देवे विच जहान चतुर सुघड़ स्याणया। चतुर सुघड़ स्याण हरि सुरजीतया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क मैदान, अचरज चले मात रीतया। सोहँ झुलाए शब्द निशान, चार वरनां एका रीतया। बैठा रहे शब्द

बबाण, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर गुरदुआरे मसीतया। उडदा रहे नाम उडान, लक्ख चुरासी हरि हरि जीतया। आपे जाणे आपणी आण, अमृत मधु एका रसन पीतया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अक्खर अक्ख वखाए, याद कराए वेला बीतया। रक्खणा याद सुणी फरयाद, धुर दरबार सच्ची सरकारया। एका जोती साची दाद, लहिणा देणा वारो वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आत्म वेख सच घर सच दुआरे लैणा लाध्या। शब्द वस्त नाम अनमोल, एका मंगण कीड़ा हसत, दिवस रैण रक्खे मस्त, सोहँ अक्खर लैणा बोल। आपे देवे साचे घर आत्म दस्त, गुरमुख उतरे पूरे तोल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी जै, सदा सद वसे कोल। रसना बोल शब्द जैकारा। रसना करना सच्चा घोल, मदिरा मास आत्म विकारा। वज्जे मृदंग सच्चा ढोल, काया तन इक्क नगारा। प्रभ अबिनाशी पड़दे देवे खोल्ह, बणया रहे सद लिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक मंगणा नर हरि सच्चा दुआरा। रसना रस शब्द गुण गीत। भाग लग्गे काया माटी जगत मसीत। मिले वस्त साची हाटी, नर नरायणा राखो चीत। दुरमति मैल रोग सोग रिहा काटी, आपे करे पतित पुनीत। गुर चरन सरन एका एक तीर्थ ताटी, काया रक्खे ठंडी सीत। लोकमात मानस देही चढ़ना औखी घाटी, अचरज चलाई हरि जी रीत। अमृत पीणा काया बाटी, लोकमात रहणा सदा सुरजीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा गाउँणा एका एक सुहागी गीत। माया ममता रिहा भज्ज। सतारां हाढ़ी सभ दे पड़दे देवे कज्ज। शब्द सिँघासण हरि बिराजे, जोती जामा पहने सज्ज। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया मध करे दज्ज। शब्द दान गुरू गुर मंत। मिले मेल लिख्या धुर, गुरमुख साचे साचे संत। चरन कँवल जन जाए जुड़, पंच पंचायण होए भस्मंत। आप चढ़ाए साचे घोड़, रीत अवल्लड़ी आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलावा साचे कन्त।

★ ६ जेठ २०१२ बिक्रमी लछमण सिँघ दर्शन सिँघ दे गृह पहाड़ गंज नवीं दिल्ली ★

आदि शब्द गुर मन्त्र, जप तप अभ्यास्सया। सर्ब जीआं हरि जाणे अन्तर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास्सया। सर्ब जीआं हरि जाणे अन्तर, मात पताल अकास्सया। साचे धाम काया मन्दिर जोत निरँजण, दीपक जोती इक्क प्रकाशया। हरिजन मेल मिलावा जुगा जुगन्तर, पुरख अबिनाशी दासन दास्सया। मानस देही बणाए साची बणतर, पवण चलाए स्वास स्वास्सया। काया मण्डल सच गगनंतर, वेख वखाणे पृथ्वी अकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप

बणाए साची रास्सया। साची बणत राम राम रहीमा। जीव जन्त साध संत ना पावे अन्त गुणी गनीमा। लक्ख चुरासी माया पाई कलि बेअन्त, करे मेल रूसा चीना। ना कोई जाणे देव दंत, हरि साचा कन्त जामा धारी जोत प्रबीना। गुरमुख काया रंग बसंत, मिले मेल प्रभ ठांडा सीना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा संत सुहेला इक्क अकेला लक्ख चुरासी वक्ख कीना। लक्ख चुरासी कीना वक्खर। सोहँ जाप जपाया एका साचा अक्खर। हउमे काया ताप गंवाया, बजर कपाटी पाड़ी पत्थर। नाम निशाना इक्क लगाया, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए रोड़ी सक्खर। रोड़ी सक्खर नूर जलाल। प्रभ अबिनाशी किरपा करे आपे वेखे हक्क हलाल। नूर नुरंतर एका कर, जल्वा जोती सच जलाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा माणक मोती, निर्मल काया जगे जोती, भाग लगाए खाणी खाण। सुल्तान शाह शाह सुल्तान रहिमान। प्रगट होए बेपरवाह वाली दो जहान। दूसर कोई दिसे ना जूठे झूठे घर घर बैठ दर दुआरे पढ़न कुरान। होया अन्त ना कोई पुत्तर ना कोई माँ, पंजे लग्गे मगर शैतान। कोई ना देवे ठंडी छाँ, शाह नवाबा जगत बेईमान। धुर दरगाही इक्क खताबा, आबे हयात देवे दोआबा, वेख वखाणे इक्क निशान। सति सति ना झल्ले ताबा, होई वैरानी बे बे आबा, किसे ना दिसे मक्का काअबा,
४३ ०५ ना कोई जाणे जीव जहान। नूर अलाही हक्क जनाबा, बेपरवाही नाम रबाबा, सोहँ वजाए पवण मसाण। शब्द घोड़े चरन ४३ ०५
रकाबा, जोती जोड़े देस माझा, भगत जनां हरि रक्खे लाजा, प्रगट होए विच मैदान। आप आपणा साजन साजा, नौ खण्ड पृथ्वी संवारे काजा, सत्तां दीपां वंड वंडान। छत्र सोहे सीस ताजा, बीस इक्कीस जन रक्खे लाजा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विष्नूं भगवान। साचा मुल्लां सच मसीत। काया कुला चेतन्न नीत। आबे हयाती अमृत डुल्हा, ना कोई जाणे शाह हकीक। वणज वपारा जूठा झूठा तोल तुल्ला, ना कोई दिसे धुर दरगाही सच रफ़ीक। शेख़ मुलाणा रिहा भुल्ला, नूर अलाही कवण तौफीक। दर दरबारा एका खुल्हा, अमाम मैहन्दी रक्ख उडीक। नूर अलाही साचा मुल्ला, कलिजुग अन्तिम इक्क तारीक। जूठा झूठा काया कुला, पंजे चोर लड़न शरीक। शब्द निशान एका झुल्ला, सोहँ अक्खर ना दिसे बरीक। दर दर घर घर पावे मुल्ला, काया मन्दिर हरि वसनीक। गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घुल्ला, आपे परखे हरि जी नीत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कन्त कन्तूहल काया मन्दिर अन्दर वेखे काअबा कवण मसीत। कवण काअबा करे ध्यान। कवण दोआबा मेट मिटाए पंज शैतान। कवण जनाबा दरस दिखाए सच हदीसा इक्क कुरान। कवण रबाबा तन वजाए, साचा शब्द कन्न सुनाण। कवण पुन पाप सवाबा, जगत खुदाए

मेल मिलाए रहीम रहिमान। कवण नवाब सिर ताज रखाए, नूर अलाही कवण पछाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत महान। सच मसीती हक्क मसल्ला। नाम रीती तत्त महल्ला। पतित पुनीती माटी खाकी काया कन्दर सदी चौधवी अन्तिम बीती, मेट मिटाए हरि बिसमिल्ला। सतिजुग चले साची रीती सोहँ चढ़ना शब्द चिल्ला। चार वरनां इक्क प्रीती, ना कोई दिसे अहिमद मुहम्मद ईसा मूसा बूरा कक्का बिला। हिन्दू सिक्ख ईसाई भाई एका, दर एका घर ऊँचा टिल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वरन अवरना मेट मिटाए। वेद पुराणा अन्त कराए। वेद व्यासा गया लिखाए। जगत भरवासा गया दवाए। कलिजुग तेरा अन्त तमासा पुरख अबिनाशी वेखण आए। दर दर घर घर मदिरा मासी, पूरन आसा गुरमुख विरला मात कराए। चरन कँवल कँवल चरन हरि सच भरवासा, शब्द डोरी नाल बंधाए। हरि जन जन हरि जिउँ कंचन पासा, नाम सुहागा उप्पर लाए। आपे धोए काया दाग़ा, संत मनी सिँघ लड़ फड़ाए। खेल कराए कोल वागा, सतारां हाढ़ी भेव चुकाए। जगत लगाए तृष्ना आगा, कलिजुग जीव ना कोए बुझाए। पुरख अबिनाशी सोया जागा, गुरमुख साचे लए जगाए। इक्क सुणाए साचा रागा, सोहँ अक्खर हरि रघुराए। आपणे हथ्थ रक्खे वागां, कलिजुग रथ रिहा चलाए। हरिजन साचे वड वडभागा, दर दुआरे दर्शन पाए। सोहँ बन्ने तन साचा धागा, आदि अन्त जीव जन्त कदे तुट ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा वड देवी देवा अलक्ख अभेवा जोत निरँजण दर्द दुःख भंजन आपणी सेवा आप लगाए। करोड़ तेतीसा देवी देव। रसना गायन हरि बतीसा, दिवस रैण अमृत फल साचा खायण साचा मेव। गण गंधरब ना जाणे राग छतीसा, बीस इक्कीसा अभेद अभेव। ना कोई जाणे मूसा ईसा, कोई ना कथे रसना जिहव। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणा भेव। करोड़ तेतीसा इन्द इन्द्रासन। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे वेखे मार ध्यान। साची जोत मात प्रकाशी, पुरीआं लोआं इक्क बबाण। ना कोई जाणे जीव अभिनाशी, साची करनी हरि करान। आपे लाहे तन उदासी, शब्द मारे सच्चा बाण। पकड़ उठाए पंडत कांशी, चार वेदां कर वखान। गुरमुख साचे मानस देही होई रहिरासी आपे करे हरि पछाण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सोहँ शब्द सच्चा जिया दान। जोग राज राज जोग दिल्ली दरबारया। पुरख अबिनाशी लैणा खोज, वड वड वड विच संसारया। काया मन्दिर अन्दर भेव गोझ, हरिजन विरला पावे सारया। चार वरनां सच्चा बोझ, मात चुकणा बण सहारया। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेखा आप लिखा रिहा। दिल्ली दरबार दिल्ली दलील। सच्ची सरकार जगत

वकील। कर विचार हरि छैल छबील। बन्ने धार पहर बस्त्र नील। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दरगाह साची अन्तिम अन्त सुणे अपील। जोग राज हरि फ़रमाण। जगत त्याग कर हरि ध्यान। चरन कँवल कँवल चरन प्रभ साचे लाग, आप बिठाए शब्द बबाण। सोई आत्म जाए जाग, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। माया डस्सणी कलिजुग नाग, शाह सुल्तान विच जहान अन्तिम ख़ाक मिल जाण। हँस बणाए हरि जी काग, माणक मोती सोहँ चोग हरि दर साचे खाण। पुरख अबिनाशी हथ्थ आपणे पकड़े वाग, भरम भुलेखे जगत लेखे तन मन्दिर सर्ब मिट जाण। आपे वेखे बिधना लिखी रेखे, पूर्ब कर्मा मार ध्यान। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़े, पढ़ पढ़ थक्के जगत कुरान। जोती जामा धारे भेखे, पुराण अठारां करन ज्ञान। सृष्ट सबाई आपे वेखे, वेद पुकारन हरि मेहरवान। आपे जाणे आपणे लेखे, खाणी बाणी होए हैरान। गुरमुख साचा लोचन भगत नैण नेत्र तीजे वेखे, सुरत सुरती अकाल मूर्ति एका एक धर्म निशान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। राज जोग दिल्ली दरबारा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, जोती नूर साचा धर, आपे वेखे अन्दर बाहर गुप्त जाहिरा। सच भण्डारे रिहा भर, चार वरन सुणाए एका नाअरा। जगत खुल्हाए साचा दर, ऊँचां नीचां एका धारा। साची करनी रिहा कर, पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वसे घर साचे हस्से, एका राह सृष्ट सबाई दस्से, जोत निरँजण कर उज्यारा। राशटरपति पति परमेश्वर जान। जोग राज राज जोग जगत तत्त कर ध्यान। आपे दे समझावे मति, मिले मेल कमलापात, लेखा लिखे श्री भगवान। मानस देही साचा राथ, आप चढ़ाए हरि समरथ, शब्द सरूपी पकड़े नत्थ, उडे उडाए विच बिबाण। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, करे खेल बली बलवान। राज इन्द्र प्रसादि हरि द्वार। शब्द दाद कर प्यार। मिले मेल मोहण माधव माध हरि कृष्न मुरार। लाज रक्खदा आया आदि जुगादि, जिउँ भबीखन राम अवतार। अन्तिम वेला लैणा साध, प्रगट होए चवीआं अवतार। जुग त्रेता रक्खणा याद साचा किया कौल इकरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाउँणा साची थित्त वक्त विचार। मिले मेल हरि निरंकारया। शब्द जोती चाढ़े तेल, नार सुहागण कन्त प्यारया। अचरज वेख पारब्रह्म कलि खेल, सोहँ खण्डा पाए वंडा नव खण्डां अपर अपारया। विच ब्रह्मण्डां मेट मिटाए जगत पखण्डा, गुरमुखां रक्खे सीना ठंडा, अमृत बख्शे साची धारया। चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्डा, ना कोई दीसे जीव घमंडा, राजा राणा शाह सुल्ताना हथ्थी बन्ने मौत गाना, चारों कुन्टां जगत हंकारया। एका झुल्ले जगत निशाना, रसना खिच्चे तीर कमाना, सोहँ चिल्ला

हरि चढ़ा रिहा। करे खेल वाली दो जहानां, आपे वरते आपणा भाणा, तख्त ताज साज बाज झूठी शाही बेपरवाही जगत
मलाही जगत फंद कटा रिहा। अन्दर मन्दिर काया कन्दर लैणा वेख। माया ममता वज्जा जन्दर, भरम भुलाया जगत भुलेख।
उच्चा टिल्ला गोरख मच्छन्दर, मूंड मुंडानया ना मिटी रेख। आपे जाणे हरि सुगरीव बानर बन्दर, नेत्र लोइण लैणा वेख।
जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे अवल्लड़ा वेस। माया मध तन त्याग। पुरख अबिनाशी अन्दरे
अन्दर लैणा सद्द, काया मन्दिर लाउँणा भाग। इक्क वजाउँणा साचा नाद, जगत बुझाए तृष्ना अग्ग, कूड़ी माया होई हद,
माया ममता मोह लग्गा दाग़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले मेला कन्त सुहाग।
ना कोई सेठ ना जगत सठाणीआ। लाड़ी मौत भन्ने कौड़े रेठ, ना कोई जाणे वडा शाह बाणीआ। गुरमुखां रखे प्रभ साया
हेठ, रक्खे नाम गुणवन्त हरि गुण निधानया। लेख लिखाए नव जेठ, काया मन्दिर आप वरोले, सोहँ शब्द फड़ आप मधाणीआ।
उठ उठ उठ जाग बिरले सेठ, छडणे पैणे अन्तिम हाणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क
सुणाए सोहँ सच्चा शब्द धुर दरगाही साची बाणीआ। भारत खण्ड हरि माण दवाउँणा। साची करे आप वंड, धर्म निशान
४६ आप बनाउँणा। सत्तां रंगां देवे गंढ, सत्तां दीपां लेख लिखाउँणा। सोहँ शब्द फड़ खण्डा, साची वंड वंडाउँणा। महाराज ४६
०५ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी दिवस सुहाउँणा। रंग सत्त सति निशान। वाली हिन्द कर ध्यान। प्रभ आप मिटाए ०५
सगली चिन्द, शब्द बिठाए विच बिबाण। हरिजन साचे साची बिन्द अमृत आत्म कर इशनान। सरन सरनाए हरि मृगिन्द,
धर्म रखाए एका तान। सृष्ट सबाई मेटे सगली चिन्द, शब्द बिठाए विच बिबाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण
नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा झण्डा हरि रंगांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढ़ा, पार किनारा आप वखांयदा।
आप उठाए साध संत, साह शहाना हुक्म सुणांयदा। कवण जगाए जीव जन्त, मायाधारी भरम भुलांयदा। धार अवल्लड़ी
आदि अन्त, साची कार कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म निशाना इक्क बिबाण
चार वरनां इक्क ध्याना, साची बणत बणांयदा। शब्द बिबाणे गया चढ़। सत्तां रंगां रंगे लड़। गुरमुखां सदा अंग संगे
साचे घाड़न रिहा घड़। दर दुआरा ना कोई मंगे, शाह सुल्ताना लए फड़। काया चोली नाम रंगे, कोट किल्ले उत्ते चढ़।
शब्द घोड़े कसे तंगे, पार किनारा वहिंदे हड़्ह। प्रगट होया वड दाता सूरा सरबंगे, जूठे झूठे लक्ख चुरासी लए फड़। मानस
देही ना होए भंगे, गुरमुख साचा संत जन सोहँ अक्खर जगत वखर जाए पढ़। नाम झण्डा सोहँ डण्डा कर ध्यान। आपे
वेखे जेरज अंडां, करे कराए सच पछान। भाणा वरते विच वरभण्ड, सोहँ झुल्ले सच निशान। नाम निरँजण एका खण्डा,

कदे ना रक्खे विच म्यान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा देवे कर, सतारां हाढ़ी खेल महान। निरगुण रूप अपार सच घर वास्सया। निरगुण रूप अगम्म अपार, वेख वखाणे सच मण्डल साची रास्सया। निरगुण रूप अगम्म, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, आवे जावे ना विच गर्भास्सया। निरगुण रूप अगम्म, करे कराए आपणा काम, हरि साजन साचा शाहो शाबास्सया। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर कर प्रकाश, गुरमुख काया मन्दिर अन्दर करे वास्सया। निरगुण रूप अगम्म, ना कोई नेत्र नीर वहाए छम्म छम्म, हरख़ सोग सोग हरख़ कदे ना आसीआ। ना मरे ना जाए जम्म, ना कोई माता गोद उठासीआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, आप आपणे विच समासीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मन्दिर अन्दर हरि साचा डेरा रिहा लगासीआ। निरगुण रूप अगम्म, हरि बलवानया। निरगुण रूप अगम्म जीव निधानया। निरगुण रूप अगम्म, सच धुर फ़रमाणया। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आणया। एका आण जगत रखाईआ। गुरमुखां कर पछाण, सोई काया आप जगाईआ। अस्सू तिन्न मार ध्यान, जोती मेल हरि मिलाईआ। शब्द फड़ाए इक्क निशान, चार वरनां इक्क जणाईआ। सोहँ साचा ब्रह्म ज्ञान, एका दूजा भउ मिटाईआ। आत्म तेज कोटन भान, मस्तक जोती इक्क रखाईआ। नाम निरँजण पीण खाण, तृष्ना भुक्ख जगत मिटाईआ। दर घर साचे मिले माण, नर नरायण सरन रखाईआ। सर्ब घटा घट जाणी जाण, आप आपणी बणत बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, सतारां हाढ़ी फल फुलवाड़ी मात सच्ची लगाईआ। फल फुलवाड़ी मात लगाए। सतारां हाढ़ी दया कमाए। राजे राणयां रिहा ताड़ी, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। बेमुखां किस्मत आई माड़ी, भाडां भरम भन्न वखाए। गुरमुखां शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी, दर दुआरे बंक सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक अंक चलाए। एका अंक अंक अकारा। द्वार बंक हरि पुरख अपारा। ना कोई जाणे राउ रंक, शाह सुल्तान रहे पुकारा। जोत सरूपी लाए तनक, अस्सू तिन्न खेल न्यारा। मिले वड्याई राजे जनक, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरे पावे सारा। दर दुआरा देवे छान। नर निरँकारा मार ध्यान। जोत उज्यारा विच संसारा, साचा देवे जिया दान। दस तीस वक्त विचारा, बीस इक्कीस छत्र झुलारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। तीस दस दस तीस राज जुगीशर मिलणा हस्स। जगत तपीशर होए वस। जगत विकारा आत्म हँकारा, दर दुआरे देणा रस। शब्द वपारा कर प्यारा पहली वारा, साचे पौड़े चढ़ना हस्स, मिले मेल पुरख भतारा, बणे गुरमुख साची नारा, सच सिँघासण रिहा दस्स। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा मात धर, रंक राजाना करे वस। बीस दस दस दस बीसा। करे खेल हरि जगदीसा। दोहां धिरां एका मेल शब्द जपाए संग बतीसा। धर्म राए दी कटे जेल्ह, अन्तिम खेल बीस इक्कीसा। आपे वसे रंग नवेल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई करे मात रीसा। मिले मेल साचे मेहरबान। झेड़ा चुक्के अवण गवण। अमृत मेघ बरसे सवण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए अमृत आत्म ठंडी पवण। संत मनी सिँघ तेरी मति। पुरख अबिनाशी रक्खे पत। काया बीज बीजे सति। बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत। गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाई दाढ़ी, आपे बख्शे धीरज यति। दूई द्वैती पड़दा पाड़ी, आत्म तीर्थ खोल्हे साचा हट। किसे हथ्थ ना आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, पुरख अबिनाशी मेल मिलाया, मन्दिर अन्दर काया मट्ट। साचा कंगण तन पहनाया, जोत निरँजण लट लट। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं बिध आपे जाणे सदा वसे घट घट। संत मनी सिँघ संत सुहेला। जुगां जुगां दे विछड़े कलि आप मिलाया आपणा मेला। गुरमुखां उज्जल करे मुखड़े, धर्म राए दी छुट्टे जेल्हा। उज्जल कराए मात मुखड़े गुरमुखां होए वक्त सुहेला। मेट मिटाए तृष्ना भुक्खड़े, आप सुहाया साचा वेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सतिगुर साचे शब्द चढ़ाया गुर साचे तेला। संत मनी सिँघ बद्धी डोर। लोकमात अन्धेर घोर। दिन दिहाड़े लुट्टी जायण बेमुखां अन्दर पंजे चोर। मूंह दे भार सुटी जांदे, वढण कंडा हराम खोर। गुरमुख अमृत आत्म रस चट्टी जांदे, प्रभ आप चुकाए मोर तोर। साचा लाहा दर साचे खटी जादे, संग सुहेला गुर संगत संग रिहा तोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई हरि रघुराई वेले अन्त अन्ध घोर। संत मनी सिँघ रखे लाज। शब्द पहनाया दया कमाया सिर सच्चा ताज। लिख्या लेखा लेखे लाया, भरम भुलेखा दूर कराया, शब्द सरूपी मारे अवाज। साची मेख मस्तक लाया, जोती भेख दया कमाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द विचोला इक्क रखाया, गुरमुखां संवारे आपे काज। आत्म अन्दर साचे मन्दिर, मिल्या मेल कमलापात। जगत तरनी गए तर, लेखा चुक्के आदि जुगादि। मानस देही मिले वर, सोहँ शब्द साची दात। संत मनी सिँघ सुहाए दर, इक्क वजाए साचा नाद। चरन सरन जन जाए पढ़, पुरख अबिनाशी जाए लाध। वेला अन्त अन्त संत प्रभ लए बांहों फड़, शब्द जणाए बोध अगाध। साचे पौड़े जाणा चढ़, मिले मेल माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रसन रसायणी लैणा अराध। रसना गाओ गुण गुणवन्ता। दर्शन पाउँणा दुःख रोग गंवाउँणा पूरन भगवन्ता। काया रंगण रंग रंगाउँणा, आत्म काया सेज बहाउँणा, मिले

वड्याई जीव जन्ता। चन्द नौचन्दा आप चढ़ाउँणा, बंधन बन्दी तोड़ दर दर्शन पाउँणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द लड़ इक्क फड़ाउँणा। शब्द पल्लू लड़ फड़ाए। आत्म दर दुआरे अग्गे खड़, संत मनी सिँघ संग रलाए। साचे अन्दर जाए वड़, जोत सरूपी डगमगाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर घर घर साचे, हरि हरि हरि हिरदे वाचे, साचो साचे दरस दिखाए।

★ १० जेठ २०१२ बिक्रमी अवतार सिँघ निरँकारी नूं मिले ते निरँकार दी पुच्छ कीती पर अगों कोई उत्तर ना मिल्या दिल्ली ★

निरँकार निरँकार निरँकार किस वसे टिकाणा। निरँकार निरँकार निरँकार कवण रक्खे बिबाणा। निरँकार निरँकार निरँकार कवण जोती हवण कराना। निरँकार निरँकार निरँकार कवण वरन कवण गोती, कवण पारब्रह्म कवण सर्ब समाणा। निरँकार निरँकार निरँकार कवण सच घर कवण धाम कवण पहने तन बाणा। निरँकार निरँकार निरँकार कवण कर्म कवण अहार पीणा खाणा। निरँकार निरँकार निरँकार कवण हड्ड मास नाड़ी चरम कवण बोले बोल शब्द महाना। निरँकार निरँकार निरँकार कर अकार वेख संसार जोत अधार शब्द गुंजार पवण अस्वार त्रैलोआं वरते आपणा भाणा। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर कवण निरँकार मात पछाणा।

★ १० जेठ २०१२ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ★

नव जेठ नौ सति मेल। अट्ठ नौ प्रभ साचा खेल। सति हरि रंग नवेल। एका दर मिले वर, प्रभ अबिनाशी सज्जण सुहेल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थान सुहाया बैठ अकेल। थान सुहाया धाम इकल्ला। आप सुहाए साचा घर इक्क महल्ला। शब्द मिले आत्म वर, आप फड़ाए एका पल्ला। भरम भुलेखा चुक्के डर, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत चले चाल अवल्ला। नौ सत्त सति द्वार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। शब्द सिँघासण कर विचार। आसण लाए बैठ दातार। लक्ख चुरासी दास दासन, मंगे भिख्या वारो वार। हरिजन मेल शाहो शाबासन, आपणी किरपा रिहा धार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा कर त्यार। सच सिँघासण राज दरबाना। पुरख अबिनाशी खेल महाना। घनकपुर वासी जोत टिकाना। जगत प्रकाशी हरि होए मेहरवाना।

जन भगतां लाहे मन उदासी, नूरी नूर नूर उपाना। पकड़ उठाए मदिरा मासी, वाली हिन्द आप समझाना। धर्म राए गल पाए फाँसी, वेले अन्त ना किसे छुडाना। लक्ख चुरासी करदी हासी, दासन दासी ना कोई वखाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सच द्वार दर द्वारया। नौ सत्त वेखे वारो वार खेल अपर अपारया। धीरज मति रखावे तन, एका मति साचा सति सर्ब संसारया। शब्द सिँघासण इक्क बणाया रथ, लक्ख चुरासी जाए मथ, राज राजाना पाए नथ, बैठ हरि सच्ची सरकारया। लेखा आपणा जाणे अकथ, एका रक्खे शब्द वत्थ, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति करे वरतारया। नौ सत्त सतिगुर भाए। सत्त नौ हरि दया कमाए। नौ सत्त हरि खेल रचाए। सत्त नौ हरि जोत डगमगाए। नौ सत्त एका रत एका तत्त एका शब्द धार रखाए। सत्त नौ एका पुच्छे नाम वत्त, वक्खर अखर इक्क रखाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण इक्क सुहाए। नौ सत्त सतिगुर दीना। सत्त नौ हरि प्रबीना। नौ सत्त करे कराए आप अधीना। सत्त नौ वेख वखाणे रूसा चीना। नौ सत्त सच सिँघासण शाह सुल्तानां छीना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे दाना बीना। नौ सत्त सतिगुर ओट। सत्त नौ वज्जे सोहँ शब्द साची चोट। नौ सत्त चारों कुन्ट रहे रो, हउमे लगा काया खोट। नौ सत्त इक्क वखाए एका थांउँ, जोत प्रकाश पुरख अबिनाश वेख वखाणे दया कमाए, करे कराए सच न्याउँ। नौ सत्त सच्ची सरकार। नौ सत्त बन्ने एका एक सच्ची धार। सत्त नौ लैणा वेख, वाली हिन्द कर विचार। नौ सत्त जोती जामा धारे भेख, शब्द फड़ हथ्थ कटार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण इक्क सुहाए, नौ सत्त संग रलाए, अट्ठ नौ रंग चढ़ाए, सति सतिवादी आप वखाए, करे खेल अपर अपार। कवण मुल्ल कवण तन्द। कवण कुल चढ़े चन्द। कवण तोल जाए तुल, खुशी होए बन्द बन्द। कवण हरि काया जाए मवल, मिटे अन्धेर आत्म अन्ध। कवण धाम मिले वड्याई उप्पर धवल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सदा बख्शिंद। कवण कूट कवण दुआरा। शब्द तीर रिहा छूट, सच सिँघासण हरि अवतारा। कवण पंघूड़ा रिहा झूट, नर नरायण विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ सत्त सत्त नौ शब्द चलाए तिक्खा आरा। हरि तख्त अपार आप बिराज्जया। आप बैठ सच्ची सरकार, लोआं पुरीआं करे काज्जया। शब्द रक्खे चोबदार वाजां मारे लक्ख चुरासी साचा साजण साज्जया। जन भगतां करे ख़बरदार, प्रगट होए हरि निरँकार, साचे घोड़े हो अस्वार चिट्टे ताज्जया। दीपां खण्डां वेखे वारो वार, पाए वंडां कर ख्वार, मक्का काअबा वेखे हाजन हाज्जया।

५१ ०५

वेद पुराणां रिहा विचार, ब्रह्म ज्ञाना केहड़ी धार, शब्द निशान कवण संसार कवण रखाए भगत लाज्जया। खाणी बाणी करे पुकार, अञ्जील कुरानी हाहाकार, सोहँ बाणी अपर अपार, सतिजुग साचे मिल्या दाज्जया। भरम भुल्ला सर्ब संसार, अमृत डुल्ला निझर धार, बेमुख रुला अन्ध अंध्यार, सोया मात अन्त ना जागया। निहकलंक लए अवतार, वाली हिन्द सच्ची सरकार, मिलणा मेल साचे यार, करे वेस देस माज्झया। करया वेस देस हरि माझ। गुरमुख साचे विच प्रवेश, जुगा जुगन्तर रक्खे सांझ। तिस साहिब को सदा आदेस, लोकमात मार झात, चार कुन्ट कराए भाज। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी घर घर दिसे, बेमुख जीव नार दुहागण होई बांझ। साचा हुक्म धुर फ़रमाण। लोकमात चुक्के बाकी, वेखे परखे आपे आण। भगत दुआरा खुल्हे ताकी, कोए ना दिसे अगे आकी, मिटदे जाण बन्दे खाकी, ना कोई दीसे जन्त शैतान। एका एक पाकन पाकी, लिखाए लेख भविख्त वाकी, नाता तुटे मध साकी, शब्द रखाए साची आण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचे दर्शन कर, भरम भुलेखे सर्ब मिट जाण। साचा हुक्म हरि सुणाए। गुरमुख सोया मात जगाए। दुरमति मैल तन मन्दिर अन्दर धोया, सुरत शब्द शब्द सुरत मेल मिलाए। हरि बिन अवर ना जाणे कोया, साचा सज्जण सुहेल आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रंग रंगाए। प्रभ अबिनाशी चतुर सुजाना। घट घट वासी खेल महाना। घनकपुर वासी लोकमात देवण आया शब्द सच्चा निशाना। मेले मेल शाहो शाबाशी, वाली हिन्द श्री भगवाना। कलिजुग मिटे ज़ात पाती, ऊँचां नीचां इक्क ज्ञाना। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इक्क बिध नाती, धर्म झण्डा इक्क रखाना। दूई द्वैती मिटे कलिजुग रैण अन्धेरी राती, दीपक जोत इक्क साचा चन्द चढ़ाना। सोहँ देवे अमृत बूंद स्वांती, दूई द्वैती हउमे रोग गंवाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना एका रंगण रंग रंगाना। चार वरनां हरि दया कमाए। वरन बरन कोई रहण ना पाए। एका सरन हरि रघुराए जूठे झूठे मानस देही हरन, अन्तिम अन्त कोई सार ना पाए। माया लूठे अन्तिम डरन, कलिजुग अन्धेरा रिहा छाए। बेमुखां हथ्थ फड़े ठूठे, नाम भिख ना कोई पाए। गुरमुख मानस रंग अनूठे, पुरख अबिनाशी साचा तुट्ठे, सतारां हाढ़ी दया कमाए। लुक्या रहण ना देवे कोई गुट्ठे, आप बन्हाए एका मुट्ठे, धर्म राए घर बेमुख टंगे पुट्ठे, बांहों फड़ फड़ आपे कुट्ठे, अन्तिम अन्त ना कोई छुडाए। हरिजन साचे जुगां जुगन्तर गए रुठे, वेले अन्तिम मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी दया कमाए। चार वरनां एका राह। साची सरना हरि जगत मलाह। आप चुकाए मरना डरना, शब्द फड़ाए साची बांह। साची तरनी

हरिजन तरना, दरगाह साची देवे थाँ। आप आपणे जिहा करना, अन्तिम जोती जोत मिला। पुरख अबिनाशी साची सरना, होए सहाई बणे पिता माँ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जपाए साचा नां। साचा नां नौ द्वार। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। साध संत वेख वखाणे राजे राणे ठग्ग चोर यार। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, आप उठाए पहरेदार। एका देवे नाम निधाने, सति सरोवर कर प्यार। साचे मन्दिर धाम बहाने। किरपा करे अपर अपार। नाम रंगीला बन्ने गाने, हथ्थीं मैहन्दी प्रेम प्यार। झुलदे रहण मात निशाने, जुगां जुगन्तर वारो वार। करे खेल हरि महाने, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। आपे चले चलाए आपणे भाणे, ना कोई जाणे जन्त गंवार। वेख वखाणे तख्त शाह सुल्ताने, घर घर पैंदी दिसे मार। एका सरन निहकलंक बली बलवाने, जोती जामा भेख न्यार। सोहँ मारे तीर निशाने, वेख वखाणे दिल्ली दरबार। गुरमुख विरला हरि रंग साचा माणे, बेमुख सोए पैर पसार। प्रगट होए वाली दो जहाने, शब्द खण्डा साचा डंडा रक्खे तिक्खी धार। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, आपे पाए हरि जी वंडा ना कोई जाणे नर नार। गुरमुखां रक्खे सीना ठंडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बरखे अन्दरे अन्दर निझर धार। चार वरनां कर प्यार। साची

५२ सरना हरि द्वार। एका एक हरि साचे करना, ऊँचां नीचां भेव निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण ५२
०५ नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। एका एक कराए शब्द जणाईआ। करे खेल आप रघुराए, साची बणत रिहा बणाईआ। ०५

चार वरनां राज राजानां शाह सुल्ताना रिहा माण गवाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, साचा लेखा लेख लिखाणा, सतारां हाढ़ी दिवस सुहाईआ। नौवां सत्तां भेव खुल्हाउँणा, अट्ठां नौवां देणा ब्रह्म ज्ञाना, सत्तां रंगण रंगाईआ। करे खेल श्री भगवाना, जोती नूर पहने बाणा, काया मन्दिर देह तजाईआ। सच झुलाए इक्क निशाना, भारत खण्डी वंड कराना, साची डण्डी मात चलाना, साचा मार्ग रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरा रिहा खुल्हाईआ। सच दुआरा जाणा खुल्ह। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रभ अबिनाशी पाए साचा मुल्ल। वेख वखाणे जीव जन्त साध संत दुहागण नार, गुरमुख भाग लगाए केहड़ी कुल। कवण सर साजन मीत मुरार, कवण तन पहनाए शब्द साचे सोहणे फुल्ल। कवण करे घर साचे शब्द शृंगार विच संसार पहली वार, देवे नाम वस्त इक्क अनमुल्ल। सच भण्डारा रिहा खुल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा खण्डा हथ्थ उठा सोहँ डण्डा उप्पर ला, गुरमुख साचे पूरे तोल जाणा तुल। पूरा तोल तोलण आया। सोहँ बोला छन्द लिखाया। गुर संगत तेरा बणया गोला, जोती जामा भेख वटाया। धुर दरगाही साचा माही गुर संगत तेरा सच विचोला, पुरख अबिनाशी बण के आया। जूठा झूठा छड्डया काया चोला, रंगण

रंग कोई दिस ना आया। इक्क द्वार साचा खोल्ह, नौ द्वार बन्द कराया। दसवें अन्दर घर साचे मन्दिर सोहँ कुण्डा आपे लाहया। आपे वेखे नेत्र पेखे लाए हार श्रृंगार तन कलीआं सोलां, सोलां सिक्खां माण दवाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिल्ली दरबार कर त्यार, सच सिँघासण डेरा लाया। नौ जेठ नौ दर दुआरे, प्रभ अबिनाशी साचे वेख किरपा धारे, चिट्टे अस्व चढ़े ताजे। चारों कुन्ट रिहा भाजे। दर दर घर घर आए जाए भगत जनां हरि रक्खे लाजे। थान बंक द्वार सुहाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, गुरमुख साचे मात उठाए रक्खण आया लाजे। सोलां इच्छया पूर कराए, साची भिच्छया झोली पाए, अन्तिम रच्छया आप कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दूसर कोए ना करे काजे। साची भिच्छया पाए बणत बणांयदा। पूरन इच्छया आप कराए, साची सिख्या मात दवांयदा। लेखा लिख्या लेखे लाए, मानस जन्म सुफल करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आपे आप बणांयदा। साची बणत आप बणाउँणी। सतारां हाढ़ी खुशी मनाउँणी। साची चोली इक्क रंगाउँणी। चुरासी कलीआं नाल सवाउँणी। साची धारा आप बनाउँणी। नौ दस लेख लिखाउँणी। ग्यारां करे वख, आपे जाणे जगत अड़ाउँणी। बीस इक्कीसा हरि प्रतक्ख, धार अवल्लड़ी इक्क चलाउँणी। शब्द हदीसा ना कोई दए लक्ख, वक्खर वक्खर चाल चलाउँणी। चारे कुन्टां लए रक्ख, वेख वखाणे हरि प्रतक्ख, पूर्ब पच्छिम उत्तर दक्खण साची सेवा आप कमाउँणी। चुरासी कलीआं तन श्रृंगार। आपे कटे जम की फाँसी, धर्म राए ना मारे मार। करे खेल घनकपुर वासी, संत मनी सिँघ लेख लिखाया अपर अपार। भगत जनां होए दासन दासी, मंगदा रहे बण भिखार। निरगुण सरगुण शाहो शाबाशी, किसे हथ्थ ना आए विच संसार। गुरमुख साचे संत जनां मानस जन्म करे रहिरासी, पूर्ब कर्म रिहा विचार। दर दुरकारे मदिरा मासी, शब्द खण्डा मारे मार। पकड़ उठाए पंडत काशी, मगर लगाए डण्डा भार। प्राग अयुध्या होए उदासी, जोत निरँजण कलि उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी बेड़ा बन्न्हे, गुरमुख विरला चढ़े साचा चन्ने, किरपा कर साचा हरि, अन्तिम कलि बेड़ा करे पार। दर दुआरा एक है थान सुहाया। नर निरँकारा एक है भगत जन टेक माण रखाया। करे कराए बुध बिबेक, कलिजुग माया ना लाए सेक, निर्मल काया आप रखाया। साचे मन्दिर बैठा रिहा वेख, जोती जामा धरया भेख, नूर निरँजण इक्क रघुराया। आपे लिखे साचे लेख, मिटदी जाए बिधना रेख, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रंग कर कर साचा संग रिहा चढ़ाया। साचा रंग चाढ़े तन, सोहँ भट्ठी हरि चढ़ाईआ। गुरसिख कदे ना डुले मन, यती हठी आप रखाईआ। धर्म राए ना देवे डन्न,

कलिजुग भाण्डा देवे भन्न, गुर संगत सारी कर इक्ठी, साची बणत रिहा बणाईआ। जोती अग्नी लाए मठ्ठी, लक्ख चुरासी एका भट्ठी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम धर्म राए तेरी गोली झूठी चोली अन्तिम रिहा भराईआ। बेहंग सरबंग रंग चढ़ानया। मृदंग तंग अंग संग साचा आप रखानया। भुक्ख नंग मिटे मात, दर दुआरा सतिगुर साचे सतिजुग एका मंगया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर, लोआं पुरीआं पार किनारा लोकमात आया लँघया। पार किनारा दस्से राह। गुर दस्मेश लिखारा साचे नां। सम्बल देस खेल अपारा, कलिजुग जीवां दिसे ना। जोत निरँजण कर पसारा, आए किसे हिसे ना। पुरख अबिनाशी साची धारा, दूसर उत्ते विसे ना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, झूठे पीसण पीसे ना। सम्बल देस सतिगुर भाए। सस्सा सहिजे सहिज समाए। वलीआ वल छल कराए, अछल अछलीआ भेव ना राए। जोत लिलाटी दिस ना आए। औखी घाटी सर्ब भुलाए। काया माटी खेल रचाए। चौदां लोकां एका हाटी, एका वस्त नाम टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल वासा सद रखाए। सस्सा सुरती सुरत ज्ञाना। अट्ठे पहर रक्खे वास, चतुर्भुज श्री भगवाना। गुरमुख विरले मात लाधा, किरपा करे जिस महाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर दस्मेश सम्बल देस आप आपणा वास रखाना। सम्बल देस नगर अपार, ना कोई जाणे दीप लो। खण्ड मण्डल पताल, हरि बिन अवर ना जाणे को। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी पढ़ पढ़ थक्के भाल, सम्बल देस प्रभ निरँजण सो। जोती रक्खे साचे थाल, बबा बस्त्र पहरे, ना सके कोई धो। ना कोई जाणे नीला सूहा पीला भूशन लाल, लक्ख चुरासी अन्तिम कलि रही रो। किसे ना दिसे धुर दरगाही सच दलाल, गुरमुखां दुरमति मैल रिहा धो। अमृत नुहाए साचे ताल, सोहँ रस रिहा चो। दस्म दुआरी मार उछाल, सुन अगम्म ना जाणे को। कवण सु वेला वज्जे ताल, तुरीआ देस वेस प्रभ आए हो। निशअक्खर वखर ओंकारा, आपणी धारा आपे रिहा परो। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दुआरा सति पुरख अनादा, लक्ख चुरासी एका बीज रिहा बो। गुरमुख साचा सच सरनाए सरन सरन सरन हरि साची लागा। मिले मात दात इक्क वड्याए, सिर मस्तक मस्तक सिर चरन धूढ़ी साची पागा। लोकमात हरि लाज रखाए, लेखे लाए कच्चा तागा। शब्द डोरी बंध बंधाए, मिल्या मेल हरि कन्त सुहागा। दो जहानी विछड़ कदे ना जाए, हथ्थ आपणे रक्खे वागां। चारों कुन्टां रिहा फिराए, चरन सरनाई साची लागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द दस्तार कर त्यार कर प्यार जगत विहार ग्यारां जेठ सीस धराए। सीस सोहे दस्तार हरि मेहरबानया। नाम तोड़ा कर शृंगार, करे खेल विच जहानया। जोती जोड़ा नर निरँकार,

तुटे माण अभिमानया। जोती कल्गी तिक्खी धार, दर साचे होए परवानया। मरे ना जन्मे जन्मे ना मरे वारो वार, मिले मेल श्री भगवानया। लक्ख चुरासी उतरे पारे सदा सोहे बंक द्वार, किरपा करे साचे हरे दर दरे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया।

★ ११ जेठ २०१२ बिक्रमी केअर सिँघ दे गृह मेरठ छाउँणी ★

पारब्रह्म सरनाए कर्म निवारया। पारब्रह्म सरनाए धर्म अपारया। पारब्रह्म सरनाए भरम विचारया। पारब्रह्म सरनाए जन्म संवारया। पारब्रह्म सरनाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अगम्म अपारया। पारब्रह्म सरनाए भरम भउ कटयां। पारब्रह्म सरनाए इक्क सुहाए साचा थांउँ, चरन प्रीती रसना रस साचा चट्टया। पारब्रह्म सरनाए मिले मेल अगम्म अथाहो, लाहा लोकमात कलि खट्टया। पारब्रह्म सरनाए होए सहाई बेपरवाहो, जोती देवे काया साचा हट्टया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द पहनाए तन साचा पटयां। पारब्रह्म सरनाए हरि रख्खारया। पारब्रह्म सरनाए लहिणा देणा मात चुका रिहा। पारब्रह्म सरनाए शब्द गहणा तन पहना रिहा। पारब्रह्म सरनाए साचे नैणा दरस दिखा रिहा। पारब्रह्म सरनाए झूठे वहिणा फंद कटा रिहा। पारब्रह्म सरनाए दरगाह साची धाम बहिणा, एका राह वखा रिहा। पारब्रह्म सरनाए जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे बेड़े आप चढ़ा रिहा। पारब्रह्म सरनाए शब्द जणाईआ। पारब्रह्म सरनाए साचे मार्ग लाईआ। पारब्रह्म सरनाए काया गागर कर उजागर साची माटी खोल्हे हाटी जोत लिलाटी इक्क जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण इक्क चढ़ाईआ। पारब्रह्म सरनाए हउमे रोग निवारया। पारब्रह्म सरनाए सोहँ शब्द साची चोग, रसना भोग लगा रिहा। पारब्रह्म सरनाए कलिजुग कटे जगत विजोग, धुर संजोगी मेल मिला रिहा। पारब्रह्म सरनाए एका बख्शे दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग समा रिहा। पारब्रह्म सरनाए भगत उधारया। पारब्रह्म सरनाए सभनीं थांई कलि कलिजुग अन्तिम वारया। ना कोई पिता ना कोई माए, भैण भ्राए झूठ पसारया। होए सहाई सभनीं थाई, नर निरँजण नर निरंकारया। सदा देवे ठंडी छाँईं, मानस देही सुफल करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ बांहों पार करा रिहा। पारब्रह्म सरनाए मेल मिलाया। पारब्रह्म सरनाए सोहँ साचा तेल चढ़ाया। पारब्रह्म सरनाए दरस दिखाए इक्क अकेल वेख वखाणे रंग नवन्नया। पारब्रह्म सरनाए लक्ख चुरासी कटे जेल्ह, भाण्डा भरम भउ भन्नया। पारब्रह्म सरनाए जोती जोत सरूप

हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग जीवां दिस ना आए नेत्र हीण आत्म अन्नया। पारब्रह्म सरनाए चोज वडानया। पारब्रह्म सरनाए सृष्ट सबाई खोज गुरमुख भाले सुघड़ स्याणया। पारब्रह्म सरनाए आत्म भेव चुकाए गूझे, चले चलाए आपणे भाणया। पारब्रह्म सरनाए राज राजानया। पारब्रह्म सरनाए मिले वड्याई दो जहानया। पारब्रह्म सरनाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बन्ने शब्द हथ्थीं गानया। पारब्रह्म सरनाई दूसर ना कोई दिसे ऐर गैरया। पारब्रह्म सरनाई गुरमुख साचे संत जनां होए सहाई अट्ठे पहरया। पारब्रह्म सरनाई साचा देवे नाम धना, आत्म जोती साची खैरया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत उधारे, कर कर आपणी मिहरया। मेहरवान मेहरवान हरि भगवानया। जिया दान जिया दान साधन संतया। गुण निधान गुण निधान कर पछाण देवे माण गुरमुख साचे सति सतवन्तया। आप कटाए आवण जाण, विच बिठाए शब्द बिबाण, थाउँ थाईं माण रखन्तया। जोती जोत सरूप हरि, झुलदा रहे नाम निशान, आपे जाणे आपणी आण, जुगां जुगन्तया। नाता तुटे पीण खाण, गुरमुख साचे कर पछाण, लक्ख चुरासी आई हान, हरिजन मेल मिलाए आत्म साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म रंगण रंग रंगाए, सदा रक्खे रुत्त बसंतया। रुत्त बसंती रंग चलूल। मिले मेल प्रभ साचे कन्ती, हरिजन मात ना जाए भूल। ना होए विछोड़ा आदिन अन्ती, साचा शब्द चढ़ाए काया मन्दिर अन्दर फूल। आप बणाए साची बणती, किरपा कर साचा हरि, मेल मिलावा कन्त कन्तूहल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लहिणा देणा पिछला मूल। पिछला मूल चुकाए दया कमांयदा। गुरमुख सोए लए जगाए चरन लगांयदा। आत्म भिच्छया एका पाए, दूसर किसे दिस ना आंयदा। पूरन सिख्या इक्क रखाए, जगत इच्छया भरम चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाही लिख्या लेखा लोकमात पूर करांयदा। लिख्या लेख धुर दरगाह निरंकारया। लोकमात गुरसिख वेखे, दर दर घर घर आए पुकारया। कलिजुग अन्तिम मिटे रेख, कूड़ो कुड़यारा धुँदूकारया। हरिजन नेत्र ल्या वेख, चारों कुन्ट होए ख्वारया। जोती जामा धरया भेख, जन भगतां होए सहारया। सच फुलवाड़ी रिहा वेख, सतारां हाढ़ी फल लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी तोड़े बंधन भरमां कंध आपे आप मिटा रिहा। सुरती सुरत ज्ञान, सुरत जणाईआ। सुरती सुरत ज्ञान, आपणा आप दवाईआ। अकाल मूर्त मार ध्यान, अन्दरे अन्दर खेल रचाईआ। साची कर हरि पछाण, साचे मार्ग फड़ के लाईआ। अजपा जप नाम निधान, आपणा आपे रिहा जपाईआ। त्रैकुटी वेखे खेल महान, काली धार हरि रघुराईआ। निरगुण निरगुण कर विचार, पंच धारे राह वखाईआ। किरपा कर अपर अपार, सुखमन

नाड़ी पूरा कर्म कमाए ईड़ा पिंगला पहरेदार, तीजा नैण सेव कमाईआ। आपे करे आपणी कार, सुरती सीरत सुरत टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अवण गवण माया भवण आपे पार कराईआ। आपे करे पार दर्द निवारया। शब्दी बख्शे साची धार, अमृत देवे ठंडी धारया। काया नाता तुट्टे अध विचकार, मिले मेल दस्म दुआरया। पुरख अबिनाशी हो त्यार, गुरमुखां करे मेल साचे सच घर बाहरया। हरि सच्चा मीत मुरार, गुरमुख नारी कन्त भतारया। सच सुहागण इक्क प्यार, माणे रंग सहिज सुख धारया। जोती नूर कर अकार, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, साचा नाउँ इक्क उपा रिहा। ना कोई दीसे पंचम यार, ना कोई करे सुरत ख्वार, एका एक जोती जोत सरूप हरि, आपणा आप वखा रिहा। दस्म दुआरा एका एक। सच घर बाहरा हरि वसेख। जोत निरँकारा भगतन टेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर अन्दर किया बिबेक। दसवां दर शब्द धुन्कारा, खोजे खोज बोध अगाधा साची धार इक्क अपार निकले बाहर। दस्म दुआरी गुरमुख विरले लाधा, सुंन मण्डल हरि पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे आपे रेखे आपे पेखे, ना कोई पुरख ना कोई नार। सुन्न मण्डल अगम्म अगाध। जीव जन्त ना कोई जाणे साध। एका एक इक्क बेअन्त, कोटन कोट निश अक्खर प्रभ रहे अराध। जोती शब्दी होए वक्खर, लोकमात मिले साची दाद। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आपणे घर, गुरमुख विरला लए लाध। सुन्न मण्डल हरि खेल न्यारा। शब्दी जोती दोए धारा। शब्द थल्ले वहिन्दी धार डूंघी गारा। जोती उप्पर कर उज्यार ओंकार तुरीआ देस करे वेस, आपे आपणा कर पसारा। आपे आपणे विच प्रवेश। आपे जाणे साचा देस। गुणवन्त गुणवन्त गुणवन्त सहिज सुख धारा, साचे घर नर नरेश। अट्ठे पहर रहे हमेश। ना कोई दीसे दर दरवेश। मुच्छ दाढ़ी ना कोई दिसे केस। ना कोई काया तन मन, ना कोई दिसे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश। ना कोई छपरी ना कोई छन्न, ना कोई नेत्र ना कोई अन्न्, ना कोई मुख ना कोई कन्न, ना कोई करे किसे आदेस। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई मण्डल तारा करे धन्न धन्न, ना कोई बेड़ा रिहा बन्न, ना कोई दिसे नर नरेश। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, खुल्ा रक्खे सच दर, वड वड वड केशव केश। सतिगुर पुरख सुजान साचा मीतड़ा। सतिगुर पुरख सुजान देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान, काया धोवे काला चीथड़ा। सतिगुर चतुर सुजान एका देवे नाम निशान, काया चोला रक्खे ठंडा सीतड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां कलि मिल्या साचा मीतड़ा। मिल्या मीत हरि दातार। काया ठंडी सीत, प्रभ चरन द्वार। मानस देही लैणी जीत, लक्ख चुरासी उतरी पार। अचरज चले कलिजुग रीत, भुल्ले रुले जीव गंवार। ना कोई मन्दिर गुरुदुआरा मसीत, जोती जामा भेख न्यार। आपे परखे साची नीत, गुरमुखां

वेखे कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार। हरि शब्द हिरदे तत्त, भगत जन जाणया। बहत्तर नाड़ी उब्बल रत, फिरे नाम मधाणया। एका कढ्ढे सच तत्त, जोती नूर हरि महानया। प्रगट होए कमलापात, नेत्र लोचण नैण मुँधानया। अन्तिम रक्खे मात पत, आपे होए सुघड़ स्याणया। शब्द अधारा धीरज धीर यति, ना कोई जाणे खाणी बाणीआ। पुरख अबिनाशी हरिजन जन हरि दे समझावे मति, राग छतीसा दन्द बत्तीसा ना कोई जाणे वेद पुराणीआ। सोहँ शब्द साचा रथ, कलि तेरी अन्त निशानीआ। नर नरायणा रिहा मथ, जूठे झूठे जीव नादानया। कलिजुग माया होई सत्थ, घर घर पावण वैण सवाणीआ। शब्द मधाणा रिहा मथ, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वेख वखाणे राजे राणीआ। राज राजानां पावे सार, जोत जगांयदा। शब्द रखे तिक्खी धार, विच संसार खेल रचांयदा। आपे सूरबीर सरदार, जोधा बलीआ आप अख्वांयदा। अस्त्र शस्त्र ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी वलीआ छलीआ, वसे निहचल धाम अटलीआ, गुरमुखां अमृत आत्म सीर पिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका तीर चार कुन्ट आप चलांयदा। शब्द निराला तीर हरि चलांयदा। कोई ना देवे किसे धीर, पीर फ़कीर मुख छुपांयदा। माया राणी झूठे पहने बस्त्र चीर, दुरमति मैल ना कोई गंवांयदा। अट्ठे पहर हउमे लग्गी रहे पीड़, अमृत जाम ना कोई मुख चुआंयदा। कलिजुग अन्तिम आई भीड़, होए सहाई ना कोई छुडांयदा। धर्म राए रिहा अन्त पीड़, लाड़ी मौत मगर लगांयदा। ना कोई वेखे हस्त कीड़, ऊँचां नीचां राज राजानां शाह सुल्तानां हरि भगवाना विच जहानां एका धार वहांयदा। आपे जाणे आपणी आणा, जोत सरूपी पहरे बाणा, इक्क चढ़ाए सच निशाना, साची रंगण रंग रंगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेस कर, हरि दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वेस निरालीआ। गुरमुख साचे विच प्रवेश, जोत निरँजण इक्क अकालीआ। प्रगट होए माझे देस, गुर गोबिन्दा लेख लिखा ल्या। आपे बणे नर नरेश, सम्बल देस भाग लगा ल्या। जोती जामा श्री दस्मेस, ना कोई जाणे शिव शंकर गणेश, ब्रह्मा इन्द्र दर बहा ल्या। तिस साहिब को सदा आदेस, जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती लोकमात एका बालया। एका जोती कर प्रकाश, अन्धेरा कटया। जन भगतां करे बन्द खुलास, सोहँ शब्द पहनाए तन साचा पटयां। आपे वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, रक्खे घट घट वास, दूई द्वैती मेटे फटयां। आदि अन्त ना होए विनास, पुरख अबिनाशी सद अबिनाश, भाग लगाए काया चोले साचे मट्टया। भगत जनां सद होया दास, निज घर आत्म रखे वास, शब्द चलाए स्वास स्वास, आत्म सर सच सरोवर इक्क इशनान कराए साचे तीर्थ तटयां। सच मण्डल हरि साची

रास, आपे वसे आस पास ना होए उदास, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना नाउँ जिस जन रटयां। रसना नाउँ गहर गम्भीरा। होए सहाई सभनी थांउँ, ठंडा करे मात सरीरा। गुरमुख बणाए हँस काउँ, अमृत देवे ठंडा नीरा। आपे पिता आपे माउँ, ना कोई दीसे भाई भैण वीरा। दर घर साचे मेल पुरख अबिनाशी अगम्म अथाहो वेले अन्त कटे भीड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सोहँ शब्द सीस बन्ने चीरा। सोहँ सच्चा चीर तन श्रृंगारया। काया माटी भाण्डा कच्चा, ना कोई जाणे जीव गंवारया। आपे ढाले साचा संचा, अभेद अभेदा भेव निवारया। कलिजुग माया अग्नी एका मच्चा, एका भुल्ला हरि निरंकारया। दर दर घर घर जूठे झूठे नच्चा, काया होए ना ठंडी ठारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे सोहँ नाम अपर अपारया। सोहँ शब्द नाम अमोला। पुरख अबिनाशी अन्तिम कलि आपे बणया मात तोला। ना कोई करे वल छल, चार वरन सुणाए एका ढोला। प्रभ का भाणा ना जाए टल, सच दुआरा एका खोल्हा। ना जन्मे ना जाए मर, ना कोई पड़दा ना कोई उहला। हरिजन हरि सरनाई जाए पड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मन्दिर अन्दर साचे चोला। काया मन्दिर अन्दर चोला, रंग रंगानया। पुरख अबिनाशी अन्दरे अन्दर पड़दा खोल्हा, करे खेल दाना बीनया। शब्द सरूपी निरगुण बोला, सरगुण होए मसकीनया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत धर, सच वस्त इक्क दात दर साचे देनया। देवे वस्त अमोल नाम अपारया। सदा सदा सद वसे कोल, इक्क कराए साचा वणज वपारया। दूई द्वैती पड़दे रिहा खोल्ह, आप सुहाए बंक द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाद धुन धुन नाद एका एक वजा रिहा। नाद धुन धुन नाद वज्जे तन अन्दर। आपे तोड़े मुन सुन्न, काम क्रोध हँकारी जिन्दर। गुरमुख साचे लए चुण, बेमुख भौंदे दर दर घर घर बन्दर। धुर दरगाही पुकार रिहा सुण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख उधारे किरपा धारे दरस दिखाए अन्दरे अन्दर। अन्दरे अन्दर हरि निवासा। काया मन्दिर पुरख अबिनाशा। गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराए आपणे मेले, चरन कँवल उप्पर धवल दए भरवासा। जोती शब्दी रिहा तोल, आप उलटाए नाभ कँवल अमृत बूंद मुख चुआए, आप मिटाए तृष्ना आगा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, निझर रस रिहा चुआए, हिरदे वस जोत जगाए, आदि अन्त ना कदे विनासा। वरन गोत हरि भेव मिटाए। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहाए। आपे वेखे मात तमाशा, एका सच्चा नाम जपाए। जोत सरूपी डगमगाए। कलिजुग जीवां आत्म तृष्ना अग्ग बुझाए। सोहँ शब्द साचा तग

पकड़ शाह रग तन छुहाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड दाता सूरा सरबग, आप आपणी दया कमाए। वड सूरा सरबग हरिजन मीत मुरारया। गुरमुख साचे तेरे लेखे लाए पग, चल आए गुर चरन द्वारया। सोहँ शब्द मुख लगाए साचा सग, खुशी मनाए सौ सौ वारया। चरन कँवल प्रीती जाए लग, आवण जावण गेड़ कटा रिहा। जोत लिलाटी जाए मघ, काया माटी औखी घाटी आप चढ़ा रिहा। सोहँ चोग चुगाए, गुरमुख हँस बणाए कग, साचे धाम आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम आपणा आप करा रिहा। पूरन करे काम वड संसारया। इक्क जपाए साचा नाम, चार वरनां दए उधारया। मानस देही सच्चा धाम, सोहँ शब्द एका धारे आ रिहा। सुक्का हरया करे चाम, मेल मिलाए साचे राम, जोती दीपक इक्क टिका। मेट मिटाए अन्धेरी शाम, अमृत प्याए साचा जाम, आत्म सेजा हरि सुहा रिहा। ना कोई लाए मात दाम, पुरख अबिनाशी एका धाम साचे पौड़े आप चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त साध संत जुगा जुगन्त हरि भगवन्त दर घर साचे मेले आप मिला रिहा। मिले मेल हरि भगवान, जोत निरंकारया। एका बणे सज्जण सुहेल, नर हरि हरि नर सच्ची सरकारया। ना कोई जाणे प्रभ का खेल, कवण कूटे लए झूटे, शब्द निराला तीर छूटे, जोती नूर कर अकारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे वेखे सच घर, गुरमुख मंगे नाम वर, देंदा रहे वारो वारया। मंगे नाम वर भगत उधारया। आत्म खोल्हे बन्द दर, पुरख अबिनाशी पैज संवारया। इक्क नुहाए सच सर, अमृत ताल हरि सुहा रिहा। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ सच्ची जल धारा, निझर आप वहा रिहा। दीपक जोती आत्म जाए बल, काया अन्धेर मिटा रिहा। मानस देही साचा फल, सोहँ मेव इक्क खवा रिहा। आपे वेखे जल थल, उजाड़ पहाड़ बूझ बुझा रिहा। ना कोई वेखे घड़ी पल, अज्ज कल खेल रचा रिहा। दूई द्वैती मेटे सल, साचा मार्ग इक्क चला रिहा। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत मेघ आप बरसा रिहा। आपे वसे निहचल धाम अटल, दिस किसे ना आ रिहा। जगत भुलाए कर कर वल छल, गुरमुख सोए मात जगा रिहा। हरिजन सच दुआरा लैणा मल्ल, पुरख अबिनाशी दरस दिखा रिहा। सच सुनेहड़ा रिहा घल्ल, सोहँ अक्खर वखर जगत रखा रिहा। ना कोई वेखे डूंघी डल्ल, काया मन्दिर हरि सुहा रिहा। सच दुआरे आउँणा चल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माणक मोती, जगदी रहे मात जोती, दुरमति मैल काया धोती, इक्क इकलौती जोती नार मिला रिहा। इक्क इकलौती जोती नार। गुरमुख साचे संत सुहेले आप बणाए सच भतार। आपणा खेल आपे खेले, सोलां करे तन श्रृंगार। आपे गुर आपे चेले, शब्द सरूपी वाजां रिहा मार। सोहँ चढ़ाए दया कमाए

साचा तेले, नाम मैहन्दी अपर अपार। धर्म पाए साची वेले, धरत मात कर विहार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। आपे जाणे आपणी सार, सर्ब घट वस्सया। जन भगतां पाए सार, कर विचार हरि दातार, नर निरँकार राह एका साचा दस्सया। कलिजुग जीव ठग्ग चोर यार, मानस देही आई हार, पंचां मेटे मीत मुरार, मन विकारा तीर कस्सया। हरिजन होया ख़बरदार, मिल्या हरि सच्चा सरदार, तन पहनाए नाम कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जन हरि हिरदे वस्सया। शब्द कटार तन पहनाई, पुरख अबिनाशी रक्खे तिक्खी धार। पंच चोर देण दुहाई, ना कोई होए मीत मुरार। अग्गे हो ना कोई छुडाई, सोहँ शब्द पहरेदार। आपे जागे रिहा जगाई, मिले मेल सच्ची सरकार। बन्द किवाड़ा आप खुल्हाई, जोती जगे इक्क निरँकार। दस्म दुआरी वेख विचार। सच सिँघासण हरि रघुराई, ना कोई पुरख ना कोई नार। रूप रंग रेख भेख अपार। ना कोई औलीआ पीर शेख़, ना कोई दिसे संत मीत यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे दस्से एका राह, मिले मेल हरि कन्त भतार। दस्म दुआरी खोल्ह बूझ बुझांयदा। पुरख अबिनाशी जोती कुँआरी, गुरमुख विरला मात प्रनांयदा। जिया जन्तां साधां संतां मानस देही बाजी हारी, साचा धाम ना कोई सुहांयदा। चारों कुन्ट झूठी यारी, गुरमुख विरला जिस मिल्या कन्त भतारी, साची सेजा आप बहांयदा। बेमुख दर दर होए ख्वारी, हरि हरि साचा रिहा दुरकारी, नाम भिच्छया कोई ना पांयदा। गुरमुखां करे प्यारे मेल मिलाए वारो वारी, प्रगट होए वड संसारी, साची दया कमांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड जोधा बलकारी, आदि अन्त ना जाए हारी, साची धार आप चलांयदा। हरि मूर्त अपार, हरि उपजाईआ। हरि मूर्त अपार, दिस किसे ना आईआ। हरि मूर्त अपार, वेख विचार साचा नाद रिहा वजाईआ। आसा मनसा पूर आप, सदा सदा होए सहाईआ। कलिजुग पाप रिहा कांप, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। कोई ना जपे साचा जाप, ठग्गी यारी गई आपणा भेख वटाईआ। ना कोई मारे तीनो ताप, कलिजुग माया अग्नी एका लाईआ। पुरख अबिनाशी वड प्रताप, धर्म राए लेखा पुच्छे कढ्ढ के वहीआ। ना कोई सहाई होए माई बाप, ना कोई लाए पार किनारे काया डोले झूठी नईआ। गुरमुखां उतरे जगत संताप, एका जपया साचा जाप, सोहँ नाम हरि दवईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जगत टेक सच रक्खी सच्ची सरनाईआ। सच सच्ची सरनाए चरन गुर पूरया। मिले मात वड्याई, आसा मनसा प्रभ साचा पूरया। साचे घर वज्जे वधाई, पंजे गायण चांईं चांईं, एका वजे शब्द साची तूरया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे, सर्बकला भरपूरया। सर्बकला भरपूर जोत जगाईआ।

पंचां शब्दां एका नूर, एका डोरी पंच बंधाईआ। एका जोती हरि हज़ूर, काया सोती जिस उठाईआ। जगत नाता दिसे कूड़ो कूड़, अन्त होए ना कोई सहाईआ। गुर पूरे चरन मस्तक साची धूढ़, कलिजुग लाहे कालख छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग चढ़ाए गूढ़, उत्तर कदे ना जाईआ। साचा रंग चढ़ाए भट्ठी चाढ़या। दूसर दर मंगण ना जाए, पुरख अबिनाशी गुर संगत करे इक्ठी सतारां हाड़या। आप बहाए साचे थांईं, दूर दुराडी आई नठ्ठी, आत्म हट्टी इक्क रखाईआ। कलिजुग उलटी गेड़े लट्टी, शब्द वेलणे रिहा पिड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, माण गंवाए अट्ठ सट्ठी, साचा जाम इक्क पिलाईआ। अट्ठ सट्ठ सट्ठ अट्ठ जगत इशनाना। गुरमुख दर घर साचे आए नठ्ठ, मिले नाम इक्क बिबाणा। मानस देही ना होए भट्ठ, शब्द बन्ने तन साचा गाना। काया मन्दिर साचा मट्ठ, जोती जगे इक्क भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खे सोहँ सच्चा तीर निशान। मिले नाम अपार हरि भण्डारया। देवण आया विच संसार कर्म विचार, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। चारे कुन्टां आई हार, धरत मात करे पुकार, ईसा मूसा भुल्ले मुहम्मदी यार, ग्रन्थी पन्थी देण दुहाईआ। पंडत पांधे होए ख्वार, आत्म अन्धे भरे हँकार, कलिजुग जीव जायण बांधे, धर्म राए मारे डाहढी मार, ना होए कोई सहारया। दिवस रैण पछताउँदे पा पा वैण धरत मात प्यारी आप सुणाउँदे, ना कोई करे पार किनारया। कलिजुग जीव थक्के मांदे, गुरमुख अट्ठे पहर दिवस रैण ध्याउँदे, सिर रक्ख हथ्थ करतारया। अवण गवण आउँदे जांदे, त्रैभवण वेस वटाउँदे, लक्ख चुरासी गेड़ अपारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात कलि जोत धर, बण नाम सच वरतारया। नाम भण्डारा खोल्ह, हरि वरतांयदा। सोहँ शब्द जैकार बोल, ढोल वजांयदा। चार वरनां तोले एका तोल, ज़ात पाती भेव चुकांयदा। मिले वस्त नाम अनमोल, पड़दा काया खोल्ह वखांयदा। जगाए जोत काया चोल, दरस आप वखांयदा। सदा सदा हरि वसे कोल, माया पड़दा आपे पांयदा। पूत सपूता करे सच्चे चोल्ह, साची गोद आप उठांयदा। कलिजुग काल काला वड अवधूता, काला वेस तन रखांयदा। ना कोई ताणा ना कोई सूता, कलिजुग माया पाए पेटा, झूठा जाल विछांयदा। ना कोई पिता ना कोई बेटा, ना कोई खेवट ना कोई खेटा, बेड़ा कोई ना पार करांयदा। गुरमुख साचा पुरख अबिनाशी शब्द दुशाले सच लपेटा, साची दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सच्चा नाम इक्क वणजारा, भगत अधारा आपे आप रखांयदा। नाम वरतारा वंड गंढु बनाँयदा। गुरमुखां आत्म पाए ठंड, साचा धाम सुहांयदा। दो जहानी ना देवे कंड, शब्द हथ्थ चण्ड प्रचण्ड फड़ांयदा। कलिजुग मेटे भेख पखण्ड, जूठे झूठे डन्न लगांयदा। गुरमुख विरला नार सुहागण लक्ख चुरासी दिसे रंड, आत्म सेजा मीत मुरारा नर निरँकारा

ना कोई बहांयदा। कलिजुग मेट भेख पखण्ड, जूठे झूठे डन्न लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द वरतारा विच संसारा आपे आप अखवांयदा। दर्शन मिले अनमोल सेज सुहावणी। प्रभ वसे सदा कोल, नैण मुंधावणी। दरस दिखाए तीजे लोइण, पूर कराए भावनी। गुरमुख लोकमात ना सोइण, सुरती सुरत आप जगावणी। तन मन बीज साचा बोइण, सद पक्की रहे हाढ़ी सावणी। दुरमति मैल पापां धोइण, रसना गायण राम रामनी। एका हल साचा जोइण, धर्म सति बैल बनावणी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म घर साचे दर किरपा कर दीपक जोती बिन वरन गोती आपणी आप जगावणी। होए दरस अमोल दर अमोघिआ। आत्म कुण्डा रिहा खोल्ह, मिल्या मेल लिख्या लेख धुर संजोगया। शब्द तराना रिहा बोल, रसना रस होया वस एका बोल साचा बोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, दरस दिखाए दया कमाए, काया मन्दिर साचे चोल्लया। मिले दरस अपार, रुत्त सुहंदड़ी। मिटे हरस संसार, हरि बख्शंदड़ी। रंग माणे सच भतार, सोभावन्ती नार खेल खिलंदड़ी। निर्मल जोती कर अकार, आपे वेखे जिया धार, कवण सुत्ता पैर पसार, आत्म सेजा इक्क अवल्लड़ी। जोती जामा हरि निरँकार, लोआं पुरीआं एका धार, गुरमुखां पाए घर घर सार, जोत अकालण जगत दलालण इक्क इकल्लड़ी। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, बण के आया साची मालण, जन भगतां करे रक्खवालण, सोहँ शब्द फड़ हथ्थ साची तक्कड़ी। कवण घर किस मिलीए द्वार। कवण दर मिले पुरख भतार। कवण तरनी जाए तर, कलिजुग बेड़ा उतरे पार। हरि सरनी जाए पड़, ना जन्मे ना जाए मर, एका वसे सच घर दर नर सच्चे दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले, लोकमात इक्क अकेले, धुरदरगाही साचे मेले, फड़ फड़ बांहों लाए पार। आए दर सच दरवाजे। जोती जामा गरीब निवाजे। रमईआ रामा आपणे साजन आपे साजे। काहना कृष्ना घनईआ शामा जुगा जुगन्ता हरि भगवन्ता भगत जनां हरि रक्खे लाजे। साचा रक्खे नाम दमामा, पूरन करे आपणा कामा, गरीब निमाणयां पड़दे काजे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होए देस माझे। माझे देस सद दुआरा। वेद व्यास बणे लिखारा। निहकलंकी ल्ए अवतारा। शब्द डंकी अपर अपारा। चार वरनां करे प्यारा। वेद पुराणां पावे सारा। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी हाहाकारा। जीव शैतानी वड विद्वानी ब्रह्म ज्ञानी आत्म अन्धे मदिरा मासी गन्दे, जूठे झूठे लग्गे धन्दे, विसरया नर हरि हरि नर सच्ची सरकारा। गुरमुख साचे चन्द नौचन्दे, खुशी कराए बन्द बन्दे, आप उठाए आपणे कंधे, भवजल बेड़ा पार उतारा। सदा सदा सद

बख्शिंदे, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए बीस इक्कीसा हरि जगदीसा छत्र सीसा चवीआं अवतारा। जगत जगदीस छत्र झुल्ले एका सीस। राग छतीस मेट मिटाए कुरान हदीस। लक्ख चुरासी जाए पीस। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा जाप जपाए, सोहँ शब्द दन्द बतीस। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, भरे भण्डारया। मंगण आए दर द्वार सच्ची सरकार, मानस देही ना आए हारया। लक्ख चुरासी करे पार, धर्म राए दी तुट्टे फाँसी शब्द पहनाए सच्चा हार, किरपा कर दर्द निवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भुल्ले रुल्ले जन्त गंवारया। आए बण भिखार नर नर नारया। प्रभ अबिनाशी पाए सार, बिरध बाल जवान एका धारया। अमृत मुख चुआए महान, शब्द वजे तीर निशान, सच्चा देवे पीण खाण, एका नाउँ नर निरंकारया। हरिजन साचे रसना गान, अमरापद मात कलि पाण, मिले मेल गुण निधान, जोती दीपक कर उज्यारया। लक्ख चुरासी पुण छान, शब्द बैठ सच बिबाण, लोआं पुरीआं इक्क उडान, साचे धाम हरि सुहा रिहा। आप चुकाए जम की कान, दरगाह साची माण ताण, रसना राग एका गान, मिले मेल श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मुख चुआए, एका सुख मात उपजाए, बिरध बाल जवानया। बिरध बाल जवान बत्ती धारया। देवे नाम एका रती, लग्गे वा मात ना तत्ती, आपे दे समझावे मती, सोहँ शब्द पैज संवारया। मेल मिलाना साचे पती, दीपक जोती जगे बत्ती, आत्म सेजा सुत्ता जती, सोहणे कुण्डल नैण मुकट मधुर बैन भेख वटा रिहा। आपे जाणे मित गती, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लेखा लेख लिखाए, जगत भुलेखा आप गंवा रिहा। जगत भुलेखा जाए चुक्क, घर साचा इक्क वखांयदा। आप निवारे तृष्ना भुक्ख, उलटा रुख गर्भवास कटांयदा। तन मन्दिर कटे हउमे दुःख, इक्क उपजाए साचा सुख, शब्द साची चोग चुगांयदा। मानस देही सच मनुख, घर घर धूंए रहे धुख, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, कवण कूटे जोत जगांयदा। गुरमुखां सुफल कराए मात कुक्ख, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत जाम रसना भोग इक्क लवांयदा। अमृत आत्म चरन प्यार। अन्तिम वेला मोख द्वार। सज्जण सुहेला हरि निरँकार। इक्क इकेला फिरे दुहेला विच संसार। आपे वेखे गुरमुख चेला, शब्दी जोती पहरेदार। साचे अन्दर साचा मेला, मेल मिलावा सच भतार। अचरज खेल प्रभ कलि खेला, कलिजुग रैण अन्ध अंध्यार। हरिजन सुहाया साचा वेला, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़। आत्म खुल्हे किवाड़, शब्द धुन्कारया। गुरमुखां करे ख़बरदार, नेड़े आए सतारां हाढ़या। राजे राणे रहे विचार, कवण उठाए अगम्मी धाड़या। साध

संत हाहाकार, मगर लगाए मौत लाड़या। गुरमुख साचे शब्द घोड़ी चाढ़, खिच ल्याए चरन द्वारया। आपे होए पिछे अगाड़, अट्ठे पहर रहे ख़बरदारया। होए सहाई बहत्तर नाड़, पुरख अबिनाशी साजण मीत मुरारया। दर घर साचे देवे वाड़, सिँघ जगदीसा महल्ल उसारया। प्रभ घाड़न घड़े अपार, नौ दुआरे वेख वखा रिहा। दसवां रक्खे बन्द किवाड़, गुरूआं पीरां आप हिला रिहा। गुरमुखां चढ़ना तेल सतारां हाढ़, जोती नारी लाड़ी हरि शृंगारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार चुफेरे पाए घेरे, पहली वेरे ना लाए देरे, राज राजानां शाह सुल्तानां शब्द खण्डा सोहँ डण्डा पाए वंडां विच वरभण्डां, लोआं पुरीआं रिहा ललकारया। लोआं पुरीआं रिहा ललकार। प्रभ अबिनाशी अन्तिम पाए मात सार। प्रगट होए घनकपुर वासी, ब्रह्मे वेद वखाणे चार। आपे जाणे आपणा भेद, भेव अभेद सच्ची सरकार। करे अछल अछल्ल अछेदा, कलि कलन्दर तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं अकार। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड वरभण्ड कर अकार दए सुधार नौ सत्त सत्त नौ खण्ड खण्ड तेज प्रचण्ड अंड डण्ड बेहंढु वढ्ढे कंड ठग्ग चोर यारया। गुरमुखां पल्ले बन्ने नाम गंढु, दस्म दुआरी रक्खे ठंड, कलिजुग औध गई हंढ, सतिजुग साचा कर उज्यारया। ना कोई दीसे भेख पखण्ड, ना कोई रोवे रंड, ना कोई पूजे करीर जंड, वेख वखाणे जेरज उत्भुज सेत्ज अंड, सोहँ शब्द चलाए साची बाणीआ। नौ खण्ड पृथ्वी सतिजुग कराई साची वंड, लक्ख चुरासी भरे पाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आपे जाणे करे कराए चले चलाए विच वरभण्ड। वरभण्ड खेल अपार हरि सिर ताज्जया। मेट मिटाए भेख पखण्ड, चिट्टे अस्व चढ़े ताज्जया। चरन छुहाया पहाड़ गंज, शब्द लिखाया दिल्ली राज्जया। वेखणा खेल साल पंज, ना कोई मुहाणा ना कोई वंञ, ना कोई पड़दा काज्जया। लक्ख चुरासी नार बंझ, जगत नाता तुटे ना कोई दिसे सांज्झया। नेत्र नीर वरोले अंझ, ना कोई सवेर ना कोई सञ्झ, ना कोई दीसे साज बाज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, प्रगट होए देस माज्झया। माझा देस वड बलकारया। गुरमुख साचे विच प्रवेश, सदा सदा कर आदेश, वलीआ छलीआ खेल अपारया। आपे नर आपे नरेश, आपे जोती आपे गुर आपे शब्द श्री दशमेश वड बलकारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, वेखे खेल कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। कलिजुग वेला अन्त पछाण। प्रगट होए हरि भगवन्त, इक्क झुलाए शब्द निशान। खिच्च ल्याए साध संत, भुल्ले बैठे बेईमान। कलिजुग माया पाए बेअन्त, शाह सुल्तान होए हैरान। गुरमुखां मेल मिलाया साचे कन्त, किरपा कर महान। आत्म जोती नूर सवाया, भाण्डा भरम हरि भन्नाया, एका दीआ साचा दान।

काया चोला रंग वखाया, साचा गोला दर बहाया, शब्द चोला इक्क दवाया, आप उठाया नाम बिबाण। पड़दा उहला दूर कराया। सर्बकला भरपूर, हरि हज़ूर नेरन नेर कर कर मेहर, गुरमुखां हरि आप तराया। शब्द डोरी बन्ने घेर, कलिजुग अन्तिम करे चोरी सिँघ शेर, शेर दलेर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे विच समाया। गुरमुख साचे विच समाए, भेव छुपांयदा। निर्मल जोती इक्क जगाए, दिस किसे ना आंयदा। ज्ञान बिबेकी बुध कराए एका एकी, भगतां टेकी साची बणत बणांयदा। तन ना लगे माया सेकी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर अन्दर साचा आसण पुरख अबिनाशण शाहो शाबाशण आपे आप लगांयदा। साचा आसण धाम न्यारा। ना कोई जाणे जीव गंवारा। जोती ज़ाता दीप उज्यारा। कमलापाती पुरख निरँकारा। अन्दर अन्दर मारे झाती, लहिणा देणा चुक्के बाकी, ना कोई मात अधारा। एका चढ़या शब्द राकी, ना कोई जाणे बन्दा खाकी, गुरमुखां मिल्या साचा साकी, अमृत देवे साची धारा। बन्द दुआरे खोल्ले ताकी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे दरस रूप अगम्म अपारा। रूप अगम्म अपार ना कोई जणांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना कोई दीसे चाम, पंज तत्त ना कोई धरांयदा। ना मरे ना पए जम्म, ना नीर वहाए छम्म छम्म, माता गोद ना कोई सुहांयदा। ना कोई पवण स्वासी लए दम, ना कोई हथ्थीं करे कम्म, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्न, शब्द वसाए साचे तन, एका कन्न सुणांयदा। भाण्डा भरम प्रभ दए भन्न, धर्म राए ना लाए डन्न गुरमुख साचा साचा चन्न लोकमात चढ़ांयदा। कलिजुग जीव आत्म अन्नू, जूठा झूठा माल धन, पंजे चोर लायण सन्नू, बांहों पकड़ ना कोई हटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां जोत जगाए साचे तन, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। अन्ध अज्ञान मिटे निशाना। चरन ध्यान श्री भगवाना। देवे माण वाली दो जहानां। शब्द आण इक्क रखाना। सोहँ बन्ने साचा गाना। झुलदा रहे जगत निशाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड राजन राज शाह सुल्ताना।

★ १२ जेठ २०१२ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउँणी ★

मनमति जगत वपार, सृष्ट सबाईआ। मनमति बेमुहार, दिस किसे ना आईआ। मनमति ना कोई सके विचार, उलटी धारा इक्क रखाईआ। मनमति तन मन्दिर करे ख्वार, भरम भुलेखे रही भुलाईआ। मनमति कलिजुग वासा अन्दरे अन्दर,

कूड़ भरवासा रही दवाईआ। मनमति करे अन्धेर काया कन्दर, झूठा जंदा रही लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अचरज माया कल वरताईआ। मनमति मति प्रधान। किसे ना रक्खे कोई पत, चारों कुन्ट जीव शैतान। आत्म धीरज तुटा सति, दिवस रैण बेईमान। जूठी झूठी उब्बल रत, माया झूठा पीण खाण। सृष्ट सबाई लथ्थी सथ, जूठा झूठा पवण मसाण। पंच पंचायणी रिहा मथ, लोभ हँकारा फड़ वदान। गुरमुख विरला चढ़े साचे रथ, जिस किरपा करे आप भगवान। जगत वसूरे जायण लथ, दर घर साचे दर्शन पाण। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, अन्तिम अन्त ना फेर पछताण। जोती जामा हरि समरथ, आपे गोपी आपे काहन। आप चलाए आपणी रथ, सोहँ शब्द सच निशान। प्रगट होए जिउँ रामा घर दसरथ, शब्द फड़े तीर कमान। राज राजानां पाए नथ, बली बलवाना विच मैदान। एका सोहँ सुरती भथ्थ, रसना चिल्ला तीर कमान। पुरख अबिनाशी अकथना अकथ, प्रगट होए वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग दित्ता इक्क वर, मनमति होई जगत प्रधान। मनमति वड गंवारन, बेमुखां कलि प्रनाईआ। ना कोई जाणे साची धारन, जूठा झूठा वणज कराईआ। ना कोई सके पैज संवारन, आत्म हँकारन इक्क रखाईआ। आपे जाणे आपणी कारन, कलिजुग काला वेस वटाईआ। चारों कुन्ट शाह सवारन, भौंदी फिरदी वाहो दाहीआ। गुरमुख साचे दर दुरकारन, दर दुआरा लँघ ना पाईआ। दूरों जोड़ करे निमस्कारन, प्रभ शब्द खण्डा रिहा वखाईआ। आपे मारे साची मारन, तीर निशाना इक्क लगाईआ। सोहँ शब्द जै जैकारन, गुरसिख काया मन्दिर भाग लगाईआ। इक्क वखाए पार किनारन, शब्द बेड़े रिहा चढ़ाईआ। जोती नूर कर उज्यारन, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। मनमति जगत ललकारन, नौजवानया। आपे वेखे शाह सवारन, जीव जन्त जन्त निधानया। घर घर बैठे सर्ब विचारन, दर दुआरा किसे ना साचा माणया। वेले अन्तिम आए हारन, ना कोई किसे छुडाणया। गुरमति होए मात उज्यारन, वड झुलाए नाम निशानया। भगत सुहेला पाए सारन, साचा मेला वाली दो जहानया। ना कोई करे मात उधारन, अमृत बरखे साचा सावण, धार ठंडी ठार रखानया। नेड़ ना आए कामनी कामन, पुरख अबिनाशी धुर दरगाही सच्चा जामन, ठंडी छाएं एका राह सच वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सच सुनेहड़ा आपे देवे गुरमति करे परधानया। गुरमति कर परवान, निमस्कारदी। प्रभ अबिनाशी दीआ जिया दान, जन भगतां वाजां मारदी। प्रगट होया नौजवान, पुरख अबिनाशी विच जहान, गुरमुखां तन बस्त्र अस्त्र शब्द श्रृंगारदी। वेखण आए बण के काहन, संग रखाए धर्म निशान, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, करे खेल अपर अपारदी। हरि सरन सच्ची दरगाह, सच टिकाणया। हरि सरन तुट्टे जम का

६८
०५

फाह, मिले शब्द सच्चा बबाणया। हरि सरन गुरमुख विरले मिलदा थाँ, बंधन बन्दी बन्द कटानया। हरि सरन गुरमुख बणाए हँस कां, शब्द साची चोग चुगा रिहा। हरि सरन दरगहि साची देवे थाँ, आवण जावण गेड़ कटा रिहा। हरि सरन पुरख अबिनाशी पकड़े बांह, त्रैभवन पार करा रिहा। हरि सरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर मेल मिला रिहा। गुरमति गुर दर होए परधानया। कलिजुग मिटे अन्धेरी शामन, जोती चमके गुरसिख दामन, करे प्रकाश कोटन भानया। वेखे नाम निरँजण इक्क निशानण, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमति गुरमुख धार। सच कराए वणज वपार। सोलां कलीआं तन शृंगार। लक्ख चुरासी उतरे पार, नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। शब्द तीर निराला छुटे, पंजां चोरां फड़ फड़ कुटे, साचे अन्दरो कढ्ढे बाहर। तन नगारे शब्द लगाए एका चोटे, आपे परखे खरे खोटे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। दरगाह साची सच सच्चे दरबारया। गुरमति गुर की रीत, चरन प्यारया। ना कोई मन्दिर ना मसीत, अन्दरे अन्दर जन निमस्कारया। अचरज चले चलाए मात रीत, अक्खर वक्खर बणत बणा रिहा। मानस देही रक्खे ठंडी सीत, रसना जिह्वा जिह्वा रसना एका गीत सुहा रिहा। आपे परखे घर घर नीत, भरम भुलेखा दूर करा रिहा। गुरमुख साचा संत सुहेला मानस देही जाए जीत, कलिजुग बेड़ा पार करा रिहा। मिले मेल हरि साचा मीत, लक्ख चुरासी गेड़ आप कटा रिहा। कलिजुग औध रही बीत, सतिजुग साचे जन्म दवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरदुआरा गुर गुर अन्दर जोती नूरा डूंघी कन्दर काया मन्दिर आप सुहा रिहा। गुरमति गुर दर आई, हरि हरि मेहरवानया। गुरमति रिहा समझाई, गुरमुख वेखण विच जहानया। दर घर जायण चांईं चांईं, बैठ शब्द विच बिबाणया। पकड़ उठाए फड़ के बांहीं, नाम जपाए श्री भगवानया। सदा रखाए ठंडी छाँईं, एका राह सच वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा आपे देवे गुरमुख करे परवानया। हरिजन अपार विच संसारया। मानस जन्म पैज संवार, पार उतारया। खुल्ल्हे बन्द किवाड़, सहिजे सहिज साचे शब्द तन शृंगारया। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, शिव शंकर ब्रह्मा इन्द्र आप जगा रिहा। जोती जामा चमके तेज, शब्द सिँघासण डेरा ला रिहा। सोहँ फड़या साचा नेज, अष्टभुज एह समझा रिहा। धरत मात बणाउँणी साची सेज, लक्ख चुरासी गोदी विच बिठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी बणत बणा रिहा। हरि चरन सरनाए मन बैरागया। मिल्या मेल हरि हरि राए, सोया मोया तन उठ जागया। होया मेला साचे थाई, एका सुणया साचा रागया। ना कोई दीसे पिता माई, चरन कँवल कँवल चरन हरि साचे लागया। ना कुछ पीए ना कुछ खाए, मिल्या मेल कन्त सुहागया। इक्क जपाया साचा

६८
०५

नांए, ना कदे सोए सदा जागया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन सरन चरन हरि जन आए भागया। हरि चरन सरनाई, मिले मात वड्याई, लिख्या लेख धुर संजोगया। बेमुख करे क्या चतुराई, प्रभ लाया हउमे रोगया। ना कोई जाणे जीव गुसांई, कवण देवे दरस अमोघिआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साचा मेला इक्क अकेला वक्त सुहेला, आपे गुर आपे चेला, साचा रस आत्म घर बैठ हरि आपणा आप भोगया। साचा भोग शब्द हुलास। निज घर आत्म साचा वास। पूर कराए आपणा कामा, होए प्रकाश विच प्रभास। सोहँ वज्जे इक्क दमामा, काया मण्डल सोहणी रास। चार कुन्ट हड्ड मास नाड़ी चामा, ना कोई जाणे कवण दुआरे वसे पवण स्वास। कवण घर वसेरा साचे रामा, कवण तन दए बनवास। कवण कूटे शब्द घेरा, मन वैराग ना होए उदास। कवण सु वेला सञ्झ सवेरा, अज्ञान अन्धेरा जाए विनास। कवण चुकाए मेरा तेरा, इक्क वखाए पृथ्वी अकाश। कवण ढाहे भरमां डेरा, पंजां चोरां करे नास। कवण गुर कवण चेरा, कवण होया रहे दास। कवण वसाए काया खेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां होया रहे सद दासन दास। हरि चरन सरनाई जन्म सुहेलया। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, मेला मेलया। पूर्ब लहिणा देणा रिहा चुकाई, कलिजुग आया अन्तिम वेलया। दर दुआरे कट्टण आया जम की फाही, अचरज खेल प्रभू कलि खेलया। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांहीं, वसाए धाम इक्क नवेलया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती सच ध्याना। शब्दी जोती मेल भगवाना, वरन गोती ना कोई निशाना, साचे दर रिहा सुहाई। हरि चरन सरनाई पुरख अगम्मया। भेव रहे ना राई, दे मति रिहा समझाई, कलिजुग जीवां अन्नूयां। जाति पाती भेव चुकाई, पुरख बिधाती दया कमाई, अमृत बूंद स्वांती इक्क प्याई, भाण्डा भरम प्रभ भन्नया। ना कोई जाणे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई। ज़ात कुजाति कलिजुग तेरी अन्धेरी राती, धरत माती रिहा मिटाई। एका बन्ने चरन नाती, रक्खे पति कमलापाती, एका घर एका जिया, एका दीआ एका हीआ, एका नीआ एका बीआ, लक्ख चुरासी रिहा उपाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत सुहेले चरन सरन सरन गुर चरन इक्क रखाई। हरि चरन सरनाई भरम चुकाया। मिल्या मेल साचे माही, धर्म धराया। ज़ात पात कोई दीसे नाही, वरन अवरनां नज़री आया। कलिजुग धोण आया छाही, अमृत जल इक्क रखाया। लेखा लिखे फड़ फड़ बांहीं, धर्म राए दर बहाया। देवे वर बेपरवाही, तख्त सिँघासण डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा साचा राणा सर्ब थाईं रिहा वरताया। हरि चरन सरनाई धर्म द्वारया। पूर्ब कर्म विचार, बणत बणा रिहा। दर घर साचे पाए सार, धर्म राए

करे ख़बरदार, चित्रगुप्त संग रखा रिहा। लेखा लिखणा सच दरबार, लहिणा देणा ना कोई करना मात उधार, साचा हुक्म सुणा रिहा। लक्ख चुरासी, आपणा भार आप उठाउँणा। कूड़ कुटम्बा नाता तुट्टे, शब्द निराला तीर छुट्टे, अग्गे हो ना किसे बचाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरनाई इक्क रखाई, दर दरबारा इक्क खुल्हाउँणा। हरि चरन सरनाई सच दरबारया। आपणी करनी रिहा कर, जुगा जुगन्तर वारो वारया। ना जन्मे ना जाए मर, जोती जामा भेख न्यारया। ना कोई तीर्थ तट्ट बणाए साचा सर, शब्द राग ना कोई गा रिहा। डण्डे पौड़े ना जाए चढ़, शब्द घोड़ा इक्क रखा रिहा। जन भगत दुआरे अग्गे खड़्ह, स्वच्छ सरूपी दरस दिखा रिहा। दस्म दुआरी वेख वखाणे काया कोट किल्हा गढ़्ह, जूठे झूठे पहरेदारी करे अकारया। जोती जगे अन्दरे अन्दर, शब्द नाद इक्क वजा रिहा। आपे वसे पिच्छे अगाड़ी, ना कोई मास ना कोई नाड़ी, जोत निरँजण कर अकारा, हरि वरतारा सरूप सरूपा वडा भूपा एका भेख वटा रिहा। होए प्रकाश काया अन्ध कूपा, ना कोई जोत सुगंधी ना कोई वखाए दीप धूप, एका एक एक आपणी जोती डगमगा रिहा। चारों कुन्ट ना लगे सेक, सीतल धार हरि करतार निझर धार आपणी आप बहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन चरन चरन सरन गुरमुखां चुकाए मरन डरन डरन मरन ताल तलवाड़ा बहत्तर नाड़ा राग छतीस दन्द बतीस ना कोई सुणा रिहा। ना कोई गाए राग रागनी, मिले मेल हरि कन्त सुहागणी। साची सूरत शब्द तूरत अकाल मूर्त जोत निरँजण सदा जागणी। ना कोई दीसे अन्ध अंध्यार जूठ झूठ ना कूड़ कूड़त, एका रंग प्रभ साचा संग पतित पावनी। सच दुआरा जाए लँघ, वज्जे नाम शब्द इक्क मृदंग, अग्गे दीसे घर सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगे जोत दमक दामनी। दस्म दुआरा पार कराईआ। सोहँ धारा इक्क वखाईआ। आपे वेखे वेख वखाणे शब्द अस्वारा, दूसर कोई दिस ना आईआ। अक्खर वक्खर निशअक्खर, अगणत गणी ना जाईआ। सति पुरख निरँजण जोती धारा शब्द किया बाहरा वक्खर सोहँ नाम रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच सुगात वड करामात, लोकमात मार झात सतिजुग साचे तेरी झोली पाईआ। सोहँ वसे घर न्यार। जीव जन्त ना पाए सार। जोत निरँजण इक्क अकार। सुन्न मण्डल पसर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वहाए दस्म दुआरी साची धार। ईश्र जोती पूत सपूता जाप सोहँ सच रखाया। सो पिता हँ पूत अख्वाया। नाम धार एका दूत, इक्क दूजे दा लड़ फड़ाया। ना कोई दिसे दिशा कूट, इक्क हुलारा रिहा झूट, प्रभ अबिनाशी रिहा झुलाया। जोती खिटा गया फूट, सोहँ प्रगट बाहर आया। दस्म दुआरी पड़दा गया छूट, काया मन्दिर डेरा लाया। हाटी माटी पंज भूत, निरगुण

रूप हरि समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे अन्दर साचे दर आप आपणा राग सुणाया। किरत कर्म प्रभ कट्ट चरन द्वारया। दुक्खां रोगां चिन्ता सोगां जड़ पट्ट, कर तन शृंगारया। काया मन्दिर खोल्ह साचा हट्ट, मिले वस्त इक्क अपारया। सदा वसे घट घट, जोती जगे लट लट, झूठा मेटे अन्ध अंध्यारया। हउमे रोग मेटे फट, साचा लाहा लईए खट्ट, रसना रस आत्म चट्ट,, सोमा वगे निझर धारया। भाग लगे काया मट, पंजे चोर झूठे भट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस देही मिले साचा सर, गुरमुख तारी इक्क लगा रिहा। आए दर द्वार बण भिखारया। किरपा कर हरि निरँकार काया रोग चिन्ता सोग रसना भोग लगा रिहा। चरन प्रीती धर प्यार विच संसार मिले जोत शब्द अपारया। एका रस लईए भोग, झूठा मिटे जगत विजोग, लिख्या हरि सच्चा संजोग कर्म जरम जरम कर्म साचे लेखे ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगण आए इक्क दर, ना कोई दूसर होर अख्वा रिहा। आए दर दर सवाली। जोत निरंतर आप बुझाए तन बसंतर, दिवस रैण करे रखवाली। आत्म जोती नूर नुरंतर, आपे जाणे आत्म अन्तर, कलिजुग घटा रैण काली। काया मन्दिर गगन गगनंतर, आप सुहाए थान थनंतर, दीपक जोती इक्क ज्वाली। दरगाह साची हरिजन बणाए साची बणतर, सोहँ शब्द जग साचा मन्त्र, देवे हरि किरपा कर वाली दो जहानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, एका एक हरि हरि नाम निशानी। गुर संगत बणे मात बरात। एका मंगे वस्त दस्त नाम दात। दिवस रैण तीजे नैण रहण मस्त, साचा नाता पुरख अबिनाशी पुरख बिधात। सोहँ घोड़ा साचा हसत, ना कोई दीसे तन बस्त, अट्ठे पहर मारे झात। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां हउमे काया रोग गंवाए, तन मन्दिर करे ठंडा सांत। सांतक सांत सति सरूरा। दर घर आया दया कमाए, आसा मनसा हरि जी पूरा। चरन सरन सरनाए, जगत रोगा होए दूरा। चले चलाए आपणे भाणे जगत विछोड़ा दूर कराए, रंगण रंग चढ़ाए गूढ़ा। साचा कंगण तन पहनाए, आपणी रंगण आप वखाए, लाल दुशाला सोहँ कंगण शब्द साचा चूड़ा। गुर गोपाला दीन दयाला सद रखवाला गुरमुख साचे चतुर सुजान बणाए, मनमुख मूगध मूढ़ा। एका तीर निशान रखाए, बजर कपाटी पार कराए, साची हाटी मात वखाए, जोत लिलाटी दीप जगाए, औखी घाटी आप चढ़ाए, काया माटी होए रुशनाए, जगत विकारा दिसे कूड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत हरि दर भिखार, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, देवे वर नाम निरँजण साचा अंजन गुर चरन प्रीती मस्तक साची धूढ़ा। हरि भाणा सदा अटल, गुरमुख विचारया। एका रहे आप अचल, वसे जल थल अन्त ना पारावारया। शब्द सुनेहड़ा अन्दरे

अन्दर रिहा घल्ल, काया माटी सच महल्ल एका हरि उसारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां साचे मार्ग आप चला रिहा। सच बेनन्ती गुर चरन द्वार। गुरमुख काया भागांवन्ती, सुणे पुकार हरि दातार। एका धार जीव जन्ती साध संती, नाम बसंती रंग अपार। जोती जोत सरूप हरि, जगत पिता दाता जगदीशर आपे बन्ने साची धार। साची धार प्रभ मात बणाउँणी। कलिजुग भरम अन्धेरी रात, झूठी माया अन्त मिटाउँणी। चरन कँवल कँवल चरन हरि हिरदे साचा नात, साची बणत आप बणाउँणी। ना कोई वार ना कोई थित्त, ना कोई दिवस ना कोई रात, एका कार आप कराउँणी। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जगत रीती आप अतीती एका एक रखाउँणी। काया मन्दिर सच टिकाणा। दूसर ना कोई मात पछाणा। हड मास नाड़ी पिंजर लहू मिझ गार बनाणा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, साची सेजा आसण लाणा। आत्म सेजा सच सिँघासण कर त्यार पुरख अबिनाशी सच्चा सुनेहड़ा एका भेजा, साचा भाणा दर प्रवाणा विच संसार। लहिणा देणा आप चुकाए जिउँ लेखे लाए जन जन मेजा, धर्मी धार इक्क रखाए। आपे जाणे लहिजा फहिजा, भख भोज एका रंग रंगाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण एका बैठ, शब्द भोग रसन रस लाए। शब्द भोग रसन रस स्वाद। हरि हरिजन साची कार आदि जुगादि। जगत मन्दिर झूठा जूठा प्यार, काया अन्दर वेख ब्रह्माद। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले मेल घर साचे माधव माध। घर साचे हरि बिराज्जया। सेवक सेवा पूरन कर, करे कराए साचे काज्जया। जगत विकारा गुर अग्गे धर, दर दुआरा साचा साजण साज्जया। शब्द भण्डारा देवे भर, जोत निरँजण रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया घर साचे दर, देवे वर चुक्के डर, धुर दरगाही आए भाज्जया। काया मन्दिर हरि वसेरा। ना कोई दिसे दूजा अन्दर, प्रभ अबिनाशी नेरन नेरा। तीजा खोल्हे माया जन्दर, चौथे करे हक्क निबेड़ा। पंचम जोत प्रकाश करे डूंघी कन्दर, मेट मिटाए अन्ध अन्धेरा। सत्तवें सति सरूप सति प्रकाश, आत्म घर साचे दर, आपे तारे कर प्यारे गुर घर साचे कर कर मेहरां। आत्म दर खोल्हे ताकी। प्रभ अबिनाशी बैठा साकी। लहिणा देणा आप चुकाए, मानस देही रहिंदी बाकी। अमृत साचा जाम प्याए, करे काया पाकी। सोहँ साचा जाप जपाए, नेड़ ना आए हाकन डाकी। कलि कलन्दर दूर कराए, प्रगट होए दरस दिखाए, शब्द चढ़ाए साचे राकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, ना कोई जाणे बन्दा खाकी। जगत पित जगदीशर हरि ब्रहमादया। जोगी जपी तपी तपीशर, मुन रिषी ना करे पहिचानया। जोती मिल्या प्रभ एका एक टेक वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन मेला जगत अकेला, दर

घर साचे दर साचा मेला आप करानया। मिले मेल पुरख निरँजण, भरम भउ चुक्कया। नेत्र नूर निराला नाम अंजन, जूठा झूठा फल काया सुक्कया। अमृत आत्म धार निझर गुरमुख पी, भण्डारा नाम कदे ना मुक्कया। भगत जगत दुआरे सोहँ शब्द सिख्या, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा भाणा रिहा कर, हरिजन सुहेला देवे वर, ना रोके किसे रोकया। नौ दुआरे दर दर वेख। कवण दुआरे पुरख अबिनाशी नौ अठारे दहि दस मासे लिखे लेख। कवन करे जोत प्रकाशे आत्म लाहे चिन्ता उदासी, संत सुहेला लगाए साची मेख। काया माटी अमृत रस चाटी, सच मण्डल हरि साची रास। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, जोती जामा धरया भेख। साचा शब्द स्वास स्वास, धर्म राए देवे फाँसी, मेट मिटाए बिधना लिखी रेख। जोती जोत सरूप हरि, साचे नेत्र काया खेत्र अन्दरे अन्दर रिहा वेख। अन्दरे अन्दर हरि वखाना। जोत सरूपी खेल महाना। एका शब्द सच तराना। एका नाम गुण निधाना। एका काम श्री भगवाना। एका जाम अमरापद आत्म अमृत साची धार सच प्याना। हरिजन जन हरि दुआरे सद साचा बन्ने गाना। इक्क उपजाए तूरत नाद, अनाद अनाहद संग रलाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगण शब्द कंगण साचा तन्दन तन बंधाना। शब्द तन्द बंध करतार। काया मन्दिर अन्दर झूठा अन्ध, नौ चन्द ना जाणे जीव गंवार। मदिरा मास लाए गन्द, रसना ना गाए बत्ती दन्द, नर नारी हरि साचा पुरख भतार। भरम भुलेखा दूई द्वैती भाण्डा भन्न अध विचकार। माण मोह भरम हँकारी वज्जा जन्दर, ना कोई खोल्हे बन्द किवाड़। पुरख अबिनाशी सदा सद बख्शिंदा, हरिजन साचे दर घर साचे देवे वाड़। इक्क उपजाए परमानंद, शब्द घोड़े देवे चाढ़। जगत वखाए झूठा अन्ध, अन्तिम वेले मौत लाड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां पंच पंचायण आप चबाए आपणी दाढ़। पंच पंचायण चुक्के डर। आत्म वेखे साचा घर। ना जन्मे ना जाए मर। ताल सुहावा अमृतसर। तीर्थ वरे पूरे तोले साचा झिरना रिहा झिर। गुरमुख पूरा कदे ना डोल्लया, पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द धार कर प्यार अन्दरे अन्दर आपे बोले। सति पुरख निरँजण खेल अपार। मेल मिलावा हरिजन साचा मीत मुरार, भाग लगाए काया चोले। हउमे रोग रिहा निवार, साचा बख्शे नाम अधार, भरे रहण सद भण्डार, दर दुआरा नर निरँकारा एका खोल्हे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त जुगा जुगन्त देवे मति सदा रिहा समझा, गुरमुख सदा मात ना डोले। हरि का शब्द बिबाण, जगत उडानया। चारों कुन्टां करे ध्यान, श्री भगवानया। मेट जाए झूठ निशान, छप्पर छन्नया। करे खेल श्री भगवान, विच जहानया। इक्क उपजाए नाम निधान, नौ खण्डीं खेल करानया। सच झुलाए हरि निशान, रंगे रंग नवनया। लेखा लिखे

आप मेहरवान, सत्तां दीपां भेव खुल्हानया। सोहँ खण्डा रसना तीर कमान, आप चढ़ाए वाली दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां दिस ना आए, कलिजुग आत्म अन्न्हया। हरि शब्द अपार, जगत पसारया। प्रभ अबिनाशी जाणे सार, विच संसारया। लक्ख चुरासी कर्म विचार, जोत निरंकारया। भरमे भुल्ला जीव गंवार, माया राणी पैर पसारया। ना मिल्या मीत मुरार, मानस देही पासा आया हारया। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्यान, आत्म जोती देवे नूर अकारया। अमृत बख्शे ठंडी धार, सोहँ जाम पया रिहा। मरे ना जम्मे वारो वार, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। भगत सुहेला उतरे पार, चरन प्रीती इक्क बंधा रिहा। धुर दरगाही साचा मेला, आपणा रंग आप रंगा रिहा। आपणा खेल प्रभ आपे खेला, नौ सत्ती बणत बणा रिहा। आपे गुर आपे चेला, आपे नार साचा पती कन्त सुहागी साचा गीत सुणा रिहा। सोहँ शब्द चढ़ाए साचा तेला धर्म राए दी कटे जेल्हा, साचा रथ हरि समरथ जगत अकथ इक्क चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ा जोती जोड़ा, चारों कुन्ट आप दुड़ा रिहा। हरि हरि शब्द बिबाण जगत जैकारया। दर दर घर घर, वेखे राज राजान, शाह सुल्तान मात हंकारया। पकड़ उठाए नौजवान बेईमान, मारे तेज नाम कटारया। एका रक्खे सोहँ आण, मेट मिटाए पीण खाण, अञ्जील कुरानां वक्त चुका रिहा। आपे जाणे आपणी आण, ना कोई जाणे वेद पुराण, पंडत पांधे आत्म आंधे भरमे हरि भुला रिहा। इक्क झुलाए सच निशान, लेखा लिखे आप भगवान, चार वरनां एका सरना ऊँच नीच भेव चुका रिहा। प्रगट होए वाली दो जहान, जन भगतां करे मात पछाण, शब्द दात वड करामात आत्म झोली हरि भरा रिहा। हरिजन तेरी उत्तम ज़ात, चरन प्रीती साचा नात, कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सोहँ साचा चन्द, मस्तक दीपक आप जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे गगन रहे मग्न जोत निरँजण नर नरायण एका नैण खुल्हा रिहा। हरि हरि शब्द बिबाण गुरमुख प्यारया। दर घर साचे पावे सार, प्रभ अबिनाशी बख्शे नाम अधारया। एका देवे वस्त अपार, पंजां चोरां करे ख्वार, बेड़ा दिसे पार किनारया। मानस देही ना आए हार, साचा शब्द तन शृंगार, कंगण रंगण इक्क चढ़ा रिहा। पुरख बिधाता गुरमुख साची नार, माणे रंग सच भतार, सोलां कलीआं आत्म सेजा हरि विछा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि शब्द बिबाणा विच जहाना, एका एक बणा रिहा। हरि हरि शब्द बिबाण इक्क बणांयदा। जन भगतां देवे साचा माण विच जहान, चरन ध्यान इक्क रखांयदा। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, कलिजुग भुल्ले जीव निधान, गुरमुख साचे हरि जगांयदा। अमृत आत्म देवे पीण खाण, दर घर साचा एका रंगण रंग चढ़ांयदा। दर दुआरे साचा माण, झुल्लदा रहे नाम निशान,

साचा लेखा आप लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीशे तेरे सीसे इक्क निशान रखांयदा। इक्क निशाना देवे रक्ख। पुरख अबिनाशी अलक्खणा अलक्ख। गुरमुख साचा संत सुहेला लक्ख चुरासी विच्चों कीना वक्ख। पुरी शिव घर साचा मेला, मेल मिलाए हरि प्रतक्ख। वधाई जाए मात वेला, प्रभ अबिनाशी लए पति रख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे गुर आपे चेला, दूसर किसे ना आए हथ्थ। जगत जगदीशे कर जगत ध्यान। छत्र झुलाए प्रभ साचे सीसे, शब्द बिठाए विच बिबाण। वेख वखाणे मूसा ईसे, राज राजानां शाह सुल्तान। ना कोई पढ़ाए कुरान हदीसे, ग्रन्थी पन्थी सर्ब मिट जाण। कलिजुग जूठी झूठी चक्की पीसण पीसे, जूठे झूठे जीव शैतान। चुक्के भेव बीस इक्कीसे, करे खेल श्री भगवान। धरीं नींह जगत जगत जगदीशे, नौ दर सच्चे दरबान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तां नौवां नौवां सत्तां आप झुलाए सोहँ शब्द इक्क निशान। सच निशाना हरि झुलाउँणा। कर ध्यान हरि मेहरवान, साचा लेखा मात लिखाउँणा। ना कोई जाणे जीव जन्त निधान, साध संत ना करन पछाण, रंगण रंग सति रगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीस इक्कीस जगत जगदीस एका ऊँचा राह वखाउँणा। उच्चा भेव बीस इक्कीस। ना कोई दीसे हड्ड मास नाड़ी चम्मा, छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस। ना कोई पवण स्वास लए दमां, ना कोई करे मात रीस। मात पित ना किसे जम्मा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई रखाए नेत्र मुख काया सुख दन्द बतीस। बीस इक्कीस हरि निशान। राग छतीस मेट मिटान। इक्क इक्क इक्क इक्कीस, राम राज राज राम मेट मिटाए शाह अबलीस। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाड़ी मौत आप उठाए, मगर लगाए संग मुहम्मद चार यार ऐली शाह जिन्न खवीस। ऐली शाह अली उलमान। साचा राम रहीम रहिमान। बेपरवाह आलमुन आलमान। ऐली शाह जिन्न खवीस सभनी थाँ झुल्ले झुलाए इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सति पुरख निरँजण धन्न, शब्द अमोल्लया। सति पुरख निरँजण धन्न, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। सति पुरख निरँजण धन्न, एका घर साचे दर सच जैकारा बोल्लया। सति पुरख अपार आपे करे जगत विहारा, दर दुआरा एका खोल्लया। सति पुरख अपार लोआं पुरीआं धार रिहा बन्नृ, पूरे तोल तोलणहारा एका तोल साचा तोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणी करनी आपे कर, भेव छुपाए काया चोल्लया। सति पुरख निरँजण धन्न, अगम्म अपारा। सति पुरख अपार ना मरे ना जाए जम्म, रूप रंग ना किसे विचारा। सति पुरख अपारा हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, ना दिसे कोट उसारया। सति पुरख अपार ना दिसे किसे छप्परी छन्न, मन्दिर महल

ना कोई उसारया। सति पुरख अपार कलिजुग जीव भुल्ले निधान, अवण गवण ना कोई कटा रिहा। सति पुरख अपार खण्ड वरभण्ड ब्रह्मण्ड एका धार बधी, एका रंग रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वेख वखाणे राजे राणे शाह सुल्ताने बणत बणा रिहा। बणत बणाए हरि भगवाना। करे खेल मात महाना। जोती नूर इक्क रखाना। शब्द तीर इक्क उठाना। रसना चिल्ले आप चढ़ाना। वेख वखाए उच्चे टिल्ले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां बेमुख चबाए आपणी दाढ़, मगर लगाए मौत लाड़, ना कोई जाणे अगम्मी धाड़, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाना। धर्म राए खोल्हे बन्द किवाड़, बेमुख जीवां देवे वाड़, दर दुआरा इक्क वखाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाना। मगर लगाए मौत लाड़, ना कोई जाणे अगम्मी धाड़, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाना। धर्म राए खोल्हे बन्द किवाड़, बेमुख जीवां देवे वाड़, दर दुआरा इक्क वखाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाना। निरगुण रूप अपार, नूर नुरानया। सरगुण खेल करतार, भेखा भेख विच जहानया। निरगुण रूप अपार, नर नरायण ना किसे पछानया। निरगुण रूप अपार, काया जोती जगे इक्क भगवानया। निरगुण रूप अपार, आपे जाणे आपणी सार, आदि अन्त ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार शब्द मिले वस्त अपार, देवे हरि किरपा कर वाली दो जहानया। दोहां घरां इक्क प्यार, आपे नारी पुरख भतार, साची सेजा पैर पसार, सुत्ता रहे गुण निधानया। निरगुण रूप अपार, भगत अमोल्लया। सरगुण रूप अपार, पुरख अबिनाशी अन्दरे अन्दर बोल्लया। निरगुण रूप अपार, भेव किसे ना खोल्ह्लया। सरगुण रूप अपार जोती जगे अपर अपार, दस्म दुआरी पड़दा खोल्ह्लया। निरगुण रूप अपार, सरगुण बन्न्हे साची धार, शब्द जोती विच टिकाए, आप आपणी दया कमाए, दूसर किसे दिस ना आए, गुरमुखां पड़दा आपे खोल्ह्लया। निरगुण रूप अपार सदा निरवैरया। ना कोई जाणे जन्त गंवार, ना कोई करे संत अधार, झूठे वहिण जगत वहा रिहा। नर नरायण पावे सार, दर घर साचे एका बहिण, मिले मेल कन्त भतार। दरस वेखे तीजे नैणा, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़, नाता तुटे भाई भैणां, तत्ती वा ना लगे हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द तन पहनाए, नेड़ ना आए मौत लाड़। साचा शब्द तन श्रृंगार। मिले धन वस्त अपार। मिटे जन विच संसार। कोए ना लाए मात संन्ह, ना कोई लुट्टे चोर यार। धर्म राए ना लाए डन्न, मिले मेल पुरख भतार। सुक्का हरया होए तन, जोती नूर इक्क उज्यार। बेमुख जीव होए अन्न्ह, दर घर साचे ना पायण सार। आत्म होई खन खन, प्रगट होए निहकलंक अवतार। गुरमुख रसना कहे धन्न धन्न, सोहँ शब्द चार वरनां इक्क जैकार। हरिजन आत्म जाए मन्न, भरम भुलेखा दए निवार।

७६
०५

भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, शब्द हथौड़ा एका मार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द घोड़े हो अस्वार। शब्द घोड़ा हरि निरंकारया। मिल्या जोती जोड़ा खेल अपारया। धुर दरगाही एका पौड़ा, पुरीआं लोआं बाहर रखा रिहा। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, गिणती गणत ना कोई गिणा रिहा। ना कोई अमृत आत्म रस मिट्ठा कौड़ा दस्म दुआरी बन्द रखा रिहा। भगत जनां तन लग्गी औड़ा, पुरख अबिनाशी साचा बौहड़ा, भेव खुल्हाए ब्राह्मण गौड़ा, अमृत मेघ बरसा रिहा। धुर दरगाही आया दौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंड, शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड हथ्थ करतारया। लक्ख चुरासी पाए वंड, संत सुहेले करे ख़बरदार। रंक राजानां वढ्ढे कंड, तिक्खी रक्खे हरि जी धार। वेले अन्त वढ्ढे कंल, मदिरा मासी करे ख्वार। करे खेल विच वरभण्ड, जोत निरँजण नर निरँकार। कलिजुग औध गई हंढ, कर्म धर्म प्रभ रिहा विचार। घर घर दीसे नार रंड, ना कोई सुहागण कन्त भतार। मेट मिटाए भेख पखण्ड, साचा खोल्हे इक्क द्वार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपे जाणे आपणी सार। जाणे आपणी सार सहिज सुखदाया। कलिजुग कर्म विचार, भेव किसे ना पाया। बेमुख जीव कन्त विभचार, नारी हरि भुलाया। चारों कुन्ट दुष्ट दुराचार, मदिरा मास रसन आहार, शब्द श्रृंगार ना तन कराया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, लोकमात लए अवतार, साची बन्न्हे एका धार, एका राह दए वखाया। साची बन्न्हे धार जगत वड्डियाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम वखाईआ। हउमे हँगता रोग निवार, आत्म भरे शब्द भण्डार, सच दुआरा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां बन्द कुआड़ी आपे आप खुल्हाईआ। खुल्हे बन्द कुआड़ जोत प्रकाशया। जगे जोत बहत्तर नाड़, मिटे उदासीआ। दर घर साचे देवे वाड़, हरि साचा शाहो शाबासीआ। बजर कपाटी देवे पाड़, किरपा करे पुरख अबिनाशीआ। कलिजुग माया देवे साड़, गलों कटे जम की फाँसीआ। शब्द घोड़ी देवे चाढ़, हथ्थ फड़े आपणे रास्सया। नेड़ ना आए पंच धाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे बन्द खुल्हास्सया। कर बन्द खुलास भगत भगवानया। मानस जन्म रहिरास, पुरीआं लोआं वेख वखाणे पृथ्वी अकास्सया। पृथ्वी अकास विच प्रभास आदिन अन्ता गुरमुख साचे विच स्वास शब्द प्यास, प्रभ आत्म तृखा बुझानया। जगत भुलेखा करे विनास, मिलाए मेल साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे वेख वखाणे गऊ ग़रीब राजे राणे शाह सुल्ताने विच जहाने शब्द उडान साचे धाम विच वसन्नया। सच धाम अस्थूल हरि बनवारया। ना कोई पावा ना कोई चूल, शब्द सिँघासण डेरा ला रिहा। ना कोई आदि

अन्त जाए भूल, दीपक जोती इक्क जगा रिहा। करनी करे कन्त कन्तूहल, दूसर होर ना कोई रखा रिहा। लक्ख चुरासी गई भूल, प्रभ जोती भेख वटा रिहा। कलिजुग कुकर्म गया फूल, जूठा झूठा महक महिका रिहा। सोहँ शब्द फड़ त्रिसूल, पत्त डाल्ही आप तुड़ा रिहा। आपे वसे धाम असथूल, शब्द जोती खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे संत सुहेले साचे मेले आपणे आप करा रिहा। शब्द खोज ब्रह्माद ब्रह्मण्ड अपारया। आपे जाणे आदि जुगादि, जुगा जुगन्त खेल अपारया। साध संत वजायण नाद, इक्क सहारा हरि रखा ल्या। करनी करे माधव माध, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखा ल्या। साचा शब्द रक्खणा याद, नौ खण्ड वंड विच वरभण्ड हरि करा रिहा। धरत मात मंगे साची दाद, पुरख अबिनाशी लए लाध, साचा धर्म कवण सुहा रिहा। चले कथा बोध अगाध ना कोई रसना सके अराध, निशअक्खर वक्खर साचा धाम सुहा रिहा। कोई इट्ट ना लाए पत्थर, छत्त मुनारा चार दुआरा उच्च अटल महल्ल ना कोई बणा रिहा। ना कोई लाए प्रेम गारा, राज राजानां ना करे विचारा, शाह सुल्तानां चुक्कया भारा, हौला भार ना कोई करा रिहा। वेला अन्त ना कोई सहारा, ना कोई सहाई, संग मुहम्मद चार यारा, ईसा मूसा मुख छुपा रिहा। खाणी बाणी करे उधारा, वेद पुराणां चुक्के नाअरा, कुरान अञ्जीला जोती तीला छैल छबीला इक्क लगा रिहा। आल वरलड ना कोई मन्दिर ना कोई टीला, गॉड खुदाई इक्क वसीला, साचा धाम सुहा रिहा। ना कोई रंगण रंगाए सूहा पीला लाल काला चिट्टा नीला, सति सवरनी रंग करा रिहा। आपे करे आपणा मेला, पुरख अबिनाशी रंग रंगीला, जोती जोत सरूप हरि, एक धाम लेखा लिख्त, साचे लेखे आप लिखा रिहा। साचा मन्दिर सच द्वार। जोती जगे अन्दरे अन्दर, साचे शब्द रहे धुन्कार। जूठे झूठे भौंदे बन्दर, नर हरि ना वेखण सच्ची सरकार। नैण लोचण लोइण दरस ना पेखण, अन्दर मन्दिर धूँआंधार। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़न, पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी ना पायण सार। धर्म मन्दिर प्रभ लाए मेखन, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क द्वार। आप लिखाए साचे लेखन, विच वरभण्डी खेल अपार। जोती जामा धारे भेखन, एका नगरी सच समग्री साचा भूप सति सरूप नर हरि सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी मिटाए अन्ध अन्धयारा अन्ध कूप, दीपक जोती कर उज्यार। ना कोई रंग ना कोई रूप, जोती जोत सरूप हरि, साचा मन्दिर लोकमात मार झात, इक्क इकांत करे सच त्यार। साचा हाल इक्क बणाउँणा। अमृत ताल विच रखाउँणा। प्रेम जाल चौगिर्द वखाउँणा। शाह कंगाल इक्क दर बहाउँणा। आपे तोड़े जगत जंजाल, साचा मार्ग इक्क रखाउँणा। दीपक जोती मस्तक थाल, गगन गगनंतर बणत बणाउँणा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, जै हिन्द भेव किसे ना पाउँणा। साचा वंडे धन माल, पल्ल गंढु इक्क रखाउँणा।

फ़ल लगाए साचे डाल्, शाह सुल्तान सीस झुकाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे वेखे सच घर, सच टिकाणा विच मात बणाउँणा। सच टिकाणा विच मात बणाए। शब्द कनात चार कुंट लगाए। चार वरनां इक्क जमाइत, ऊँच नीच प्रभ भेव चुकाए। साचा नाता भैण भ्रात, दूई द्वैती रोग गंवाए। ना कोई पुच्छे मात वात, शाह फ़कीर इक्क थाँ रहाए। आपे बणे पिता मात, शब्द साचा सीर प्याए। बैठा दिसे इक्क इकांत, सच सिँघासण डेरा लाए। लोआं पुरीआं वेखे मार झात, दिस किसे ना आए। आपणे रंग सद वसे कमलापात, पति पतिवन्ता साची करनी रिहा कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम आप सुहाए। साचा धाम शब्द तत्त। राज राजानां शाह सुल्तानां दे समझावे मति। ग़रीब निमाणा गले लगाए, बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत। नाम रंगण इक्क चढ़ाए, आत्म रक्खे धीरज यति। साचा धाम हरि सुहाए, लोकमात चलावे साचे रथ। बेमुख जूठे झूठे बन्ह्ण दाअवे, अन्तिम सीआं आवे साढे तिन्न हथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी गथ। जुग जुग धारे भेख, वेस वटांयदा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, साचे लेखे आप लिखांयदा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी काया मन्दिर आपणा आप टिकांयदा। काया मन्दिर हरि उज्यार। अन्दरे अन्दर खेल अपार। दर दर घर घर भौंदे बन्दर, नर निरँजण ना पायण सार। ना कोई तोड़े आत्म वज्जा हँकारी जन्दर, हरि शब्द ना जाणे सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्त आदि अन्त साध संत पूरन भगवन्त करे कराए जै जैकार। जै जैकार हरि रघुनाथ। सच विहारा भगतां साथ। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, शब्द चढ़ाए साचे राथ। खेल अगम्म ना पाए सार, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, चलाए सोहँ साची गाथ। सोहँ शब्द जगत वरतंत। रसना गाए भगत पूरन संत। आत्म रस एका पाए, हस्स हस्स प्रभ दर्शन पाए, जिह्वा गुण एका गाए, मेल मिलावा साचे कन्त। निथांउँ निथावयां माण रखाए, फड़ फड़ बांहों पार लगाए, साची कार आदि अन्त। चरन प्यार दिसाए, साची रीत चलाए, लक्ख चुरासी परखे नीत सच सुनेहड़ा इक्क सुणाए, सोए उठाए जीव जन्त। जोती जामा भेख वटाए, रमईआ रामा हरि रघुराए, आप बणाए आपणी बणत। जुग जुग वटाए भेख ग़रीब निवाज्जया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, साचा साजन साज्जया। आप लिखाए लेख अलखणा लेख, करे वेस देस कलि माज्झया। जोती जामा हरि प्रवेश, शब्द घोड़ा रक्खे साचा ताज्जया। सद पुरख सदा आदेस, वड वड शाहो राजन राज्जया। नर हरि हरि नर वड्डा नर नरेश, त्रैलोआं संवारे काज्जया। भगत भगवन्त वड मृगेश, देवे शब्द सच्चा सीस ताज्जया। वेख वखाणे ब्रह्मा विष्न महेष, शिव शंकर कल्ल कि आज्जया। सुरपति राजा

इन्द करोड़ तेतीस, बीस इक्कीसा रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे करे कराए आपणा काज्जया। बीस इक्कीसा हरि जगदीसा, अचरज कल कला कलि धारया। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, वड छल करे विच संसारया। माया जूठा झूठा पीसण पीसा, हथ्थ फड़ी जूठ झूठ बुहारीआ। तुटे माण कुरान हदीसा, ना कोई जाणे अञ्जीला वेद पुराणा चुक्के भेव राग छतीसा, दन्द बत्तीसा ना कोई वखाणया। एका शब्द जगत हदीसा, चार वरनां सोहँ सच्ची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, पकड़ उठाए राजन राज शाह सुल्तान बलकानया। शब्द अवाज़ इक्क लगाए। सीस ताज किसे रहण ना पाए। चारों कुन्ट पैणी भाज, वेले अन्त ना कोई सहाए। पुरख अबिनाशी दर दुआरे एका शात, वेले अन्त पूरन संत लए बचाए। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखाए। हरि करतार सर्बकला समरथ, वरते वरतावे विच संसार। राज राजानां पाए नथ, शब्द डोरी इक्क अपार। बेमुखां फड़ के रिहा मथ, कलिजुग अन्तिम करन विचार। गुरमुखां सगल वसूरे जायण लथ, कर दरस हरि निरँकार। प्रभ शब्द चढ़ाए साचे रथ, सतिजुग साचे बन्ही धार। देवे नाम वस्त अनमोल वत्थ, बरन अठारां जै जैकार। महिंमा जगत सदा अकथ, गुर गोपाला दीन दयाला सर्ब रखवाला करे कराए आपणी कार। जोती जोत सरूप हरि, धुर दरगाही सच दलाला इक्क कराए लोकमात मार झात पुरख बिधात शब्द साचा वणज वपार। साचा वणज नाम वपारा। जन भगतां करे नाम प्यारा। आदिन अन्त विच संसार जुगा जुगन्त विच संसार आप बणाए साची बणता, पुरख पुरखोतम अलख निरँजण दिवस रैण इक्क सहारा। ना कोई जाणे जीव जन्त, करे खेल साचा कन्त, नौ खण्ड पृथ्वी एका धारा। हउमे रोग करे भस्मंत, धुर संजोग निभाए अन्त, सोहँ भोग लगाए आत्म साचा तत्त धुनी जै जैकारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, शब्द रक्खे इक्क बिबाणा। शब्द धुनी जै जैकार। सच दुआरे आपे सुणी, आपे खोल्हे बन्द किवाड़। आप उठाए रिखी मुनी, मेट मिटाए धूँआंधार। संत सुहेले जाए चुणी, दस्म दुआरे कर प्यार। शब्द पहनाए सिर साची चुन्नी, रक्खे पति विच संसार। पुरख बिधाता वड गुण गुणी, सुणे सुणाए शब्द अपार। बेमुखां चोटी जाए मुंनी, कलिजुग अन्तिम कर ख्वार। ना कोई दीसे ईसा मूसा मुहम्मदी सुन्नी, पंडत पाधे एका धार। ग्रन्थी पन्थी जाए भुन्नी, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। लक्ख चुरासी वसे जूनी, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संत सुहेले कराए मेले आप बणाए सच सच्ची सरकार। नर हरि सच्ची सरकार सच दरबारया। आदि अन्त ना जाए हार, जन भगतां रक्खे साचा प्यार, ना कोई पहने बस्त्र शस्त्र तेज़

कटार, शब्द खण्डा अपर अपारया। दूसर रक्खे ना कोई पहरेदार, चार कुन्ट दहि दिशा वेख वखा रिहा। एका एक जन भगतां रक्खे मीत मुरार, शब्द सुनेहड़ा इक्क दवा रिहा। वक्त चुकाए संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा भरम भुला रिहा। कोई ना जाणे नर नार, सच हदीसा ना कोई पढ़ा रिहा। वरन अवरनां करन विचार, इक्क जगदीसा जोत जगा रिहा। धरनी धरनां वड बलकार, छत्र सीसा इक्क झुला रिहा। सोहँ खण्डा तिक्खी धार, प्रभ आपणे हथ्थ उठा रिहा। वेख वखाणे बंक राज द्वार, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़बरदार करा रिहा। भाणा मन्नणा अन्त करतार, नेत्र नैणा हरि वखा रिहा। जूठा झूठा चुक्कणा पए भार, धर्म राए राह तका रिहा। कोई ना होए अग्गे सहार, माया धन्दा भरम भुला रिहा। भैण भाई ना दीसे कोई भतार, मात पिता ना कोई छुडा रिहा। बेमुखां अन्तिम पैंदी मार, जम राजा लेख चुका रिहा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, साचा मार्ग इक्क वखा रिहा। साचा नाम जगत जैकार शब्द निशान इक्क झुला रिहा। वेख वखाणे वारो वार, अन्तिम मेला हरि मिला रिहा। जमन किनारा सच करतार, जोती मन्दिर हरि बणा रिहा। प्रगट होए विच संसार, सत्तां दीपां राह वखा रिहा। मान सरोवर इक्क जल धार, अमृत धारा हरि वहा रिहा। जोती जोत सरूप

८१
०५

हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे गुर आपे चेले, धुर दरगाही मात मेले, वसे धाम इक्क इकेले, साचा रंग रंगा रिहा। हरि का खेल अगम्म, वड संसारया। हरि का खेल अगम्म, भेव कोई ना पा रिहा। लोकमात एका सच धर्म, साचा झण्डा आप झुला रिहा। ना कोई लाए उत्ते दम, सोहँ डण्डा उप्पर लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लेखा लिखे हरि, नव खण्ड वेख वखाणे चतुर्भुज विच ब्रह्मण्डां, उत्भज सेत्ज जेरज अंडां, पड़दा उहला ना कोई रखा रिहा। कलिजुग काला अन्तिम कन्ढा, शब्द सरूपी फड़या खण्डा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, एका एक करा रिहा। शब्द खण्डा हरि दो धार। मेट मिटाए जगत पखण्डां, तोड़े माण सर्ब हँकार। वढ्ढी जाए सभ दीआं कंडां, ना कोई मात अटका रिहा। आत्म होई सर्ब घमंडां, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम डण्डा, ना कोई किसे छुडा रिहा। जीव अलनेक कमच खेल खुदाया। ना कोई जाणे शाह तबरेज़, शमस सबराया। शब्द सुनेहड़ा नूर मुहम्मद रिहा जगाया। वेख वखाणे शाह अंग्रेज़, नंगी फरंगी पिठ्ठ कराया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, भारत खण्ड विच ब्रह्मण्ड नौ खण्ड धाम सुहाया। धाम सुहाया नूर अलाही, अल्ला नूर। जगत मलाही हरि भरपूर। दर घर साचे इक्क मलाही, ग़रीब निवाज़ा हाज़र हज़ूर। वेख वखाणे सभनीं थाँईं, ना कोई जाणे नेड़े दूर। जूठी झूठी मिटणी शाही, आपे करे चूरो चूर। चारे यारां पाए फाही, शब्द सरूपी रिहा घूर, जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम रस, रस नाम हयात आब, आब हयात

सति सरूर।हक्क हलाल विच जहान। जल्वा जलाल हरि रहिमान। सच हदीसा शब्द कुरान। एका मन्दिर एका अन्दर, एका दीपक एका जोती एका थान। एका हाज़ी एका काअबा। प्रगट होए दो दोआबा। कोई ना झल्ले मात ताबा। काला वेस मुख नकाबा। चिट्टे अस्व चरन रकाबा। जोती जोत सरूप हरि, एका राग आप सुणाए, जगत सुणाए साचा रागा। नूर नुरंतर नूर जहान। शब्द बसंतर जगत बेईमान। वेख वखाए गगन गगनंतर, सच हदीसा अंज़ील कुरान। हक्क हकीका शाह रफ़ीका, कवण मन्त्र जगत तौफीका कर ध्यान। आपे पाकन पाकी पीका, रसना रस माया फीका, महिबान बीदो मेहर मेहरबान। जोत सरूपी नीकन नीका, शब्द कराए इक्क वसनीका, रहिमत रहीम रहिमान। आपे जाणे भेव जी का, जोती जोत सरूप हरि, साचे मन्दिर कर ध्यान। जोत अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणा राह, सृष्ट सबाई बणे मलाह, सच दुआरा रिहा खुल्हाईआ। चार वरनां एका थाँ, पुरख अबिनाशी एका नाम बेऐब परवरदिगरा, लोकमात बणे सहारा, दूसर कोई दिस ना आईआ। एका एक जगत जैकारा, शब्द भगत मोख दुआरा, दूसर होर ना कोई सहारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, खुदी खुदाई, झूठे बन्दे आत्म अन्धे कर्म विजोगी अनरस भोगी, भरम भुलेखा रिहा मिटाईआ। भरम भुलेखा चुक्के चरन द्वारया। जोती तीर एका छुट्टे, शब्द वज्जे काड़ काड़या। लक्ख चुरासी चोग निखुट्टे, वगे वाह तत्ती हाढ़या। बेमुखां जड़्ह आपे पुट्टे, धरत मात बणे अखाड़या। शब्द सरूपी फड़ फड़ कुट्टे, मौत घोड़ी रिहा चाढ़या। धर्म राए दर अन्तिम सुटे, आप चबाए आपणी दाढ़या। जन भगतां प्याए अमृत एका घुट्टे, लक्ख चुरासी नाता छुट्टे, दर घर साचे देवे वाड़या। शब्द पंघूड़ा साचा झूटे, सच हुलारा इक्क दवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सच सिंघासण तख्त बिराजे, जोत सरूपी करे काजे, भगत जनां कलि रक्खे लाजे, सरगुण निरगुण दोवें भेख वखा रिहा। निरगुण सरगुण जगत भेख अवल्लड़ा। गुरमुखां विरला नेत्र लए वेख, जोत सरूप हरि इकल्लड़ा। आत्म दर दुआरे लग्गी साची मेख, नाम जोती दीपक एका बलड़ा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, गुरमखां आत्म दर दुआरे अगे खलड़ा। कलिजुग जीव रहे वेख, चारों कुन्ट पए तरथल्लड़ा। पकड़ पछाड़े फड़ फड़ वड औलीए पीर शेख़, शब्द अन्धेर एका झुलड़ा। ना कोई दीसे वड सेठ कौड़ा रेठ, मायाधारी कर ख्वारी वेले अन्तिम हरन दंमड़ा। मिटदी जाए चार यारी, पंचम तेज़ सच्ची सरदारी, धुनी नाद नाद धुन अगम्म अपारी। एका राग हरि सुणाए, जगत त्याग राह वखाए, संत सुहेले आप जगाए, आप कराए आपणे मेले, शब्द फड़ाए साचा पलड़ा। शब्द पला हथ्थ फड़ांयदा। इक्क इकला आपे खेले, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल सर्ब थाँई आप समांयदा। जोती खेल घड़ी घड़ी पल पला, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक सचखण्डी बणत बणांयदा। पुरीआं

८३ ०५

लोआं इक्क कर्म, सत्तां दीपां सति धर्म, उच्च मुनारा शब्द जैकारा, हरि गिरधारा विच संसारा पहली वारा लोकमात उपजांयदा। मेट मिटाए धुँदूकारा, दीपक जोती कर उज्यारा, शब्द जैकारा इक्क लगांयदा। जन भगतां दस्से राह न्यारा, ढोल मृदंग ना कोई रखांयदा। करे खेल अपर अपारा, वरनां बरनां वसे बाहरा, करे कराए सिरजणहारा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साचा धाम नौ दुआरा पसर पसार, जूठा झूठा मोह चुकांयदा। चुक्के मोह जगत जंज़ाल। माया राणी झूठा धरोह, जीव जन्त होए कंगाल। दर दर घर घर बैठे रहे रो, ना कोई करे मात संभाल। करे विहारा छब्बी पोह, कलिजुग अन्तिम अन्त इक्क सुहाए, अमृत आत्म काया साचा ताल। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन जन हरि संत प्यारे फ़ल लगाए काया डाल्। काया डाल् फुल फुलवाड़ी। लग्गणा फल सतारां हाढ़ी। जगे जोत बहत्तर नाड़ी। शब्द घोड़े साचे चाढ़ी। सदा रहे पिछे अगाड़ी। बजर कपाटी रिहा पाड़ी। नेड़ ना आए मौत लाड़ी। पंजां चोरां रिहा साड़ी। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर भाग लगाए, अन्दरे अन्दर जोत जगाए, शब्द सरूपी डंक वजाए, होए सहाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। नाम कपड़ अपर अपार। आपे माई आपे बप्पड़, पुरख बिधाता मति मुरार। कोटन कोट तारे पप्पड़, जोत जगाए नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धार। साचा सूत्र साचा तन्द। जोती जामा शब्द अनन्द। पूरन करे कामा अन्तिम कलिजुग वजाए शब्द दमामा, बेमुखां भरमां ढाहे कंध। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख वेखे मात सच्चे चन्द। सूरज चन्द चन्द प्रकाश। सर्ब ब्रह्मण्ड हरि मृगिन्द जगत गुणतास। जगत मिटाए जूठी झूठी कंध, सच ब्रह्म सगल रहिरास। शब्द सरूपी पाए फंद, पकड़ पकड़ पकड़ उठाए हड्ड नाड़ी तन मास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे बन्द खुलास। शब्द सूत्र नाम तार। पुरख अबिनाशी खिच्चे मात, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमखां बन्न्हे साचा नात, देवे गंढ अपर अपार। आत्म रक्खे जगत ज़ात, सदा सुहेला रखे ठंड। मेट मिटाए अन्धेरी रात, आप कराए साची वंड। कलिजुग अन्तिम पुच्छे वात, मेट मिटाए भेख पखण्ड। करे खेल नौ सात, दीपां लोआं पाए वंड, चन्द मण्डल हरि सच बरात। वेख वखाए खण्ड खण्ड जोती जामा खेल बिधात। बेमुखां देवे अन्तिम दंड, गुरमुखां अमृत बूंद स्वांत। मिले वड्याई विच वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे वेख वखाणे, उत्भज सेत्ज जेरज अंड। साचा सूत्र रंग रंगीला। जोती नूरा छैल छबीला। आपे जाणे लाल सुनिहरी सूहा चिट्टा पीला नीला काला। धार लहरी वेख वखाणे उच्चा टीला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सुवरनी एका करना चार वरनां एका एक साचा सूत्र साची तन्दी।

कलिजुग अन्तिम अन्त जन भगतां कटाए बन्द बन्दी। वेख वखाणे साध संत, कवण दुआरे चन्द नौचन्दी। लोकमात बणाए आपणी बणत, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई होई अन्धी। साचा सूत्र धारी सति। पुरख अबिनाशी कर्म विचारी, दे समझावे मति। लक्ख चुरासी जावे हारी, कोई ना जाणे मित गति। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यारी, ना कोई जाणे धीरज यति। माया राणी हैंस्सयारी, रहण ना देवे किसे पति। ना कोई पुरख ना कोई नारी, एका भुल्ला कमलापत। भरमे भुले जीव गंवारी, जूठी झूठी उब्बल रत। जन भगत सोहण चरन द्वारी, आप चढ़ाए साचे रथ। पूर्ब कर्म रिहा विचारी, जगत जंजाला मात मथ। दर घर साचे पैज संवारी, सोहँ पाई साची नत्थ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत जुग अकथ। साचा तन्दन बंधे डोर। लक्ख चुरासी तुटे फंदन, आपे पकड़े पंजे चोर। निझर रस इक्क परमानंदन, काया अमृत अन्धेर घोर। पुरख अबिनाशी सदा बख्शंदन, हरिजन चुकाए मोर तोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सूत्र साचा वट, आपे देवे घट घट, दूसर नाही दिसे होर।

★ १३ जेठ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

८४ ०५

शब्द जोग अपार विच जहानया। शब्द जोग अपार, पुरख सुजानया। शब्द जोग अपार, जीव निधानया। शब्द जोग अपार, हउमे रोग मेट मिटानया। शब्द जोग अपार, मिटे जगत विजोग श्री भगवानया। शब्द जोग अपार, जन भगतां मिले लिख्या धुर संजोग, ना कोई दूसर वंड वंडानया। शब्द जोग अपार, हरिजन जन हरि रसना चुगे साची चोग, हँस काग काग हँस प्रभ आप बणानया। शब्द जोग अपार, विच संसार जुगो जुग पुरख अबिनाशी बन्न्हे धार, पारब्रह्म खेल महानया। शब्द जोग अपार, गुणां गुणवन्तया। शब्द जोग अपार, एका मेल पूरन भगवन्तया। शब्द जोग अपार, पुरख अबिनाशी देवे कर प्यार, गुरमुख साचे मन्नया। शब्द जोग अपार, एका वहे साची धार, रूप रंग ना कोई वखानया। शब्द जोग अपार, पंजां चोरां रिहा मार, एका खण्डा हथ्थ रखानया। शब्द जोग अपार, कूड़ कुड़यारा कढ्ढे बाहर, साची जोती कर अकार, निर्मल बाती दस्म दुआर, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, वेख वखाणे राजे राणे, सुघड़ स्याणे हरि भगवाने, ना कोई जाणे जीव जन्त गंवार अन्न्हया। शब्द जोग अपार, नाम रंगंतया। शब्द जोग अपार, पूरन करे काम, इक्क बहाए साचे धाम, साची खोज खुजन्तया। शब्द जोग अपार, सुक्का हरया करे चाम, ना कोई लाए मात दाम, पूरन बूझ बुझन्तया। शब्द जोग अपार, एका एक हरि का नाम, मेट मिटाए अन्धेरी शाम,

सच प्रकाश मात पताल अकाश आप करन्तया। शब्द जोग अपार, आपे रखे आपणी धार, जुगा जुगन्तर वारो वार, भाणा राणा आपणे हथ्थ रखन्तया। शब्द जोग अपार, धुनी धुन्कारया। शब्द जोग अपार, गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन हरि साचा कन्न सुणन्तया। शब्द जोग अपार, माया ममता रिहा मार, भाण्डा भरम रिहा निवार, एका दर द्वार आप दसंतया। शब्द जोग अपार, तिक्खी रक्खे हरि जी धार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, कर्म धर्म धर्म कर्म लक्ख चुरासी रिहा विचार। शब्द जोग अपार, हरिजन पाया। शब्द जोग अपार, हरिजन ना लाए डन्न, प्रभ अबिनाशी बेड़ा रिहा बन्न, तन मन्दिर अन्दर आप टिकाया। शब्द जोग अपार, अन्दरे अन्दर ना कोई वेखे कलिजुग जीव काया डूंघी कन्दर, लक्ख चुरासी भौंदी फिरदी बन्दर, नाम अमोला हरि निरोला साचे धाम टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां भेव अभेदा अछल अछेदा वड देवी देव आपणा आप वखाया। शब्द जोग अपार, जोग निरालया। गुरमुख विरोले कर विचार, कलिजुग काले विच्चों पा ल्या। अमृत आत्म पीए साची धर, साचा धाम सुहा ल्या। शब्द विचोला मीत मुरार, दोहां मेला आप मिला रिहा। जोत निरँजण कर अकार, मुखड़ा साचा आप वखा ल्या। शब्द खुशी करे अपार, घर साचे दीपक बालया। ना कोई दीसे ठग्ग चोर यार, एका एक मेल पुरख बिधाता, ना कोई दीसे होर प्यारा, एका धारा आप वहा रिहा। ना कोई दीसे मीत मुरार, हरिजन हरि हरि विच समा ल्या। ना कोई दीसे अन्दर बाहर, नूरो नूर इक्क उजालया। ना कोई दिसे पार किनार, आर पार ना कोई वखा ल्या। ना कोई दीसे महल्ल मुनार अचल अटल धाम आप सुहा ल्या। रूप रंग ना करे कोई विचार, सति सरूपी सति समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी देवे जम की फाँसी, गुरमुख विरला मात बचा ल्या। शब्द जोग अपार सच घर वसंदड़ा। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन नाउँ हरि साचा आप बख़ंदड़ा। पूर्ब कर्म कर विचार, हरि दातार शब्द जोग बाणा तन पहनंदड़ा। रंगण रंगे रंग अपार, पहली वार ना दाग़ कोई रखंदड़ा। आपे रिहा पैज संवार, ना कोई जाणे नर नार, सरन चरन चरन सरन रखंदड़ा। धर्म राए ना मारे मार, लक्ख चुरासी उतरे पार, एका दिसे दर द्वार, साचा धाम आप सुहंदड़ा। दरस अमोघा हरि दातार आवण जावण कटे रोगा, मिले मेल धुर संजोगा, आत्म सेज साचा रस एका भोगा, गुरमुख साचे संत जन एका दर आप सुहाए तन मन्दिर अन्दर डेरा लाए, दीपक जोती इक्क जगाए, साची कार करंदड़ा। शब्द जोग अपार वस्त अमोल्लया। गुरमुख देवे आत्म वस्त, साचा कुण्डा आपे खोल्लया। अट्ठे पहर रहे मस्त, सदा सदा हरि वसे कोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख

साचे संत जनां भाग लगाए काया चोल्लया। काया चोली रंग करतार। चुक्के डोली विच संसार। दर घर साचे शब्द गोली, अन्दरे अन्दर आत्म जोती तन मन्दिर खिड़ी सच गुलज़ार। आप उलटाए नाभ कँवली, ना कोई जाणे धार सँवली, दस्म दुआरा आत्म बवली, एका दिसे साची धार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका टेक करे बुध्ध बिबेक, कलिजुग माया ना लाए सेक, साचा बख्शे चरन प्यार। मंमा मात बणत बणाई। साचे संत दया कमाई। आदि अन्त जुगा जुगन्त रीती नीती आप चलाई। आपे जाणे अगली पिछली बीती, साची बणत बणदी आई। मंमे मुक्ती साची रीती, जोती जोत सरूप हरि, अचरज लील्ा मात वरताई। मंमा मिल्या पुरख सुजान। पाणा नाम गुण निधान। साचा जाम पीण खाण। साचा धाम पूरन काम। हरिजन ध्यान आपे जाणे जाणी जाण कर पछाण विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मम्मा मुक्ता मूर्त भगवान। मंमा मात देवे मति। सस्सा सतिगुर रखे पति। साहिब सच्चे एका मति। काया माटी झूठी कच। अन्तिम वेले जाए मच। जूठे झूठे पंजे चोर रहे नच्च। पुरख अबिनाशी सच्चो सच्च। जोती जोत सरूप हरि, शब्द अभेदा आपे बोले, शब्द अभेद आपे खोल्हे, साध संत जायण मच्च। लग्गे अग्ग काया चोले। पुरख अबिनाशी करे खेल हौले हौले। शब्द जोती जोती शब्द अन्दरे अन्दर जाए रच, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सति सतिगुर साजण मीता परखे नीता, वेख वखाणे सच तोले। तत्ता तुरीआ वज्जा नाद। तूरत तूरा बोध अगाध। वड दाता सूरा रक्खणा याद। सुण सुणे फरयाद, प्रभ बख्शे साची दाद। मिले मेल माधव माध। संत सुहेले रहे अराध। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप लए लाध। सुत्तो सति सति वखाना। पुरख अबिनाशी बीना दाना। आपे जाणे आप पछाणे पीणा खाणा। राज राजान शाह सुल्तान विच जहान ना करे पछाणा। असंत संत अन्दरे अन्दर जगत ज्ञाना। आपे जाणे पुरख अबिनाशी साचा कन्त कवण बिध कवण रिध्ध, साची देग़ आप चढ़ाना। जेठ अट्ठ कारज सिद्ध, दासी रहे नौ निध, पुरख अबिनाशी खेल महाना। जन भगतां आत्म रिहा विध, साचा तीर इक्क चलाणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाण पछाणे, कवण पकवान हरि पकवाना। मस्तूआणे लग्गी मेख। चरनी डिग्गे राजा राणा, धुर दरगाही लिख्या लेख। चार वरनां चरन ध्याना इक्क बिबाणा, ना कोई दीसे औलीआ पीर शेख। आपे तणे साचा ताणा, जूठा झूठा विच फसाना, कलिजुग मिटाए अन्तिम रेख। जोती दीपक इक्क जगाणा, नाम पकवान हरि पकवाना, गुरमुखां देवे जिया दान। आत्म ब्रह्म कर ध्यान, सच्चा जोग पीण खाण। धीरज यति आत्म सति दे मति आप समझाणा, बहत्तर

नाड़ी ना उब्बल रत, मिले मेल कमलापति, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जाणी जाण। रंग सत सति अपार। पारब्रह्म ब्रह्म पार जोती अकार। सच कर्म जगत धर्म रिहा पैज संवार। ना कोई वेख वखाणे वरन बरन, एका एक दर द्वार। एका रंग करे एका सरन, पुरख अबिनाशी साची कार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण रंग रंगाए चलूला नाम अपार। नाम रंगण रंग रंगीला। शब्द कंगण तन पहनाए, जोती नूरा छैल छबीला। प्रेम मैहन्दी हथ्थीं लाए, अमाम मैहन्दी नाँ रखाए, तन छुहाए चोला नीला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम निधाना अमृत रस गुरमुख साचे मुख चुआए। आत्म मदि साचा रस, दर घर साचे साची कार। नाम रंग रंग अपार। सतिजुग साचे मंगी मंग, सति सतिवादी मंगी धार। कलिजुग औध गई लँघ, जोत सरूपी कर विचार। लक्ख चुरासी भुक्ख नंग, अन्तिम दब्बे पापां भार। शब्द घोड़े कस तंग, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। बेमुख़ भज्जण काची वंग, गुरमुख साचे उतरे पार। होए सहाई अंग संग, रंगण रंग इक्क अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तां दीपां एका संग एका रंग नर हरि सच्ची सरकार। साचा रंग हरि विचारे। दस्म दुआरी पार लँघ, सुन अगम्म पाए सारे। शब्द घोड़े कस तंग, ओंकार वेख विचारे। ओंकारा धारा जाए लँघ, सचखण्ड जोत अकारे। ना कोई वज्जे शब्द ताल मृदंग, राग रागनी ना कोई पुकारे। ना कोई दूजा दिसे संग, अलख निरँजण अगम्म अपारे। आपे वसे आपणे रंग, रंग अनूपा नर हरि सच्ची सरकारे। आपे जाणे आपणा संग, लोकमात मार झात पुरख अबिनाशी पावे सारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगण रंग इक्क अपारे। रंग राग राग घर सुल्तान। गुर गुरमुख सोया जाए जाग। शब्द बन्न्हे तन साचा ताग। मिले मेल कन्त सुहाग, साचा बख़्शे जिया दान। मेट मिटाए तृष्ना आग, हथ्थ रक्खे आपणे वाग, हरिजन साचे वड वडभाग, चरन धूढ़ धूढ़ चरन बख़्श सच्चा इशनान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगण रंग सति रंगाए, लोकमात झुलाए सच्चा इक्क निशान। झुल्ले निशाना रंग सत्त। सत्तां दीपां देवे मति। गुरमुखां बंधाए चरन प्रीतां, तन मन्दिर अन्दर ना उब्बल रत। इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ शब्द धीरज यति। चरन प्रीती बन्न्हे नात, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण रंग रंगाए, पच बंधाए एका तत्त। साचा रंग नाम मजीठी। पुरख अबिनाशी किया संग, जोती अग्नी दए मट्ठी। वड दाता सूरा सरबंग, हरिजन विरला मात वेखे आत्म हठी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग इक्क चढ़ाए, आप आपणी दया कमाए, सतारां हाढ़ी फुल फुलवाड़ी गुर संगत कर इक्ठी। रंग रंगीला रंग जगदीस।

सूहा पीला लाल जोत प्रवेश। आपे जाणे आपणा हीला, दस्म दुआरी वसे देस प्रदेस। शब्दी जोती धारी नीला, नर निरँजण वड नरेश। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग इक्क रंगाए, करे खेल माझे देस। रंग सत्त सति निशाना। धर्म रथ श्री भगवाना। सत्तां दीपां पाए नत्थ, लक्ख चुरासी जाए मथ वाली दो जहानां। जगत महिंमा चले चलाए आप अकथ, ना कोई जाणे जीव निधाना। सर्बकला आपे समरथ। आप बणाए लोआं पुरीआं इक्क बिबाणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म श्री भगवाना। सत्त रंग शब्द धार। लिखे लेख हरि दातार। नौ खण्ड पृथ्वी एका नेत्र वेख, काया दीपक कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगे रंग निरगुण गुण निरधार। शब्द रंग नौ द्वार। नौ द्वार जगत भिखार। जगत भिखार जीव गंवार। जीव गंवार अन्ध अंध्यार। अन्ध अंध्यार एका एक विसरया हरि निरँकार। हरि निरँकार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग आप रंगाए, साची बन्ने मात धार। रंग सति आपे वटयां। आपे जाणे आपणी सार, प्रभ घट घट खेले खेल अपर अपार, जिउँ खेल बाजीगर नट नटयां। शब्द निशाना कर त्यारा, करे खेल जगत झट्ट पटयां। राजा राणा रहे ख़बरदार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क खुल्लाए साचा हट्टया। रंगण रंग नाम अनमोल। श्री भगवान कर ध्यान, लोकमात तोले पूरे तोल। ना कोई जाणे चतुर सुघड़ स्याण, दस्म दुआरी प्रभ अबिनाशी वसे कोल। जन भगतां रखे मात माणा। आपे वरते आपणा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चार कुन्ट दहि दिशा इक्क वजाए साचा ढोल। शब्द नगारा ढोल अन्त कलि वज्जया। जोती नूर अकारा हरि निरँकारा, लोकमात कलि गज्जया। शब्द फड़ तेज़ कटारा, चिट्टे अस्व हो अस्वारा, बस्त्र तन छुहाए केसरी, दर दुआरे साचे सजया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, आपे पड़दा कज्जया। आए दर द्वार दर परवानया। किरपा कर हरि निरँकार, देवे माण विच जहानया। साचा शब्द तन शृंगार, अमृत सीर साचा पीणा खाणया। फड़ फड़ बांहों रिहा तार, आपे जाणे आपणा भाणया। मानस जन्म ना जाए हार, लेखा लिखे गुण निधानया। सतारां हाढ़ी कारज दए संवार, गुर संगत वाली दो जहानया। लक्ख चुरासी उतरे पार, मिले मेल जोत भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे आप करे पछानया। हरि नगर अपार शब्द द्वारया। आपणा आप रिहा उसार, ना कोई रखे संग मीत मुरारया। आपे बन्ने आपणी धार, साची जोती आप सुहा रिहा। दहि दिशा पैज संवार, दृष्ट आपणी विच समा रिहा। आपे आप हरि निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आपणी बणत बणा रिहा।

आपणी बणत बणाए आप अमोल्लया। ना कोई जाणे साध संत, सच दुआरा केहड़ा खोल्लया। आपे बणे आपणा कन्त, नार सुहागण आपे आपा तोल्लया। आपे जाणे आपणा घर, निश अक्खर वक्खर परा पसंती आपे आप बोल्लया। सच सुगंधी शब्द झकोल्लया। आपे वड़े आपणी बन्दी किसे हथ्थ ना आए फोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी काया मन्दिर अन्दर आपे बोल्लया। गुरमुख चरन द्वार, जन्म सुहेलया। गुरमुख चरन द्वार, बेड़ा करे पार काल कालंदया। गुरमुख चरन द्वार, आपे दिसाए आपणी धार, हरि आपे खोज खुजन्तया। गुरमुख चरन द्वार, आपे अन्दर आपे बाहर, प्रभ आपे सुन आपे बोल बुलन्तया। गुरमुख चरन द्वार, मिले मेल हरि मीत मुरार, गुर पूरे चित चितवन्तया। गुरमुख चरन द्वार, प्रभ करे तन श्रृंगार, मानस जन्म ना आए हार, लक्ख चुरासी पार करन्तया। गुरमुख चरन द्वार, ना कोई ठग चोर यार, पंचां तत्तां रिहा दुरकार, शब्द खण्डा इक्क रखन्तया। गुरमुख साचा चरन द्वार, प्रभ अबिनाशी पाए सार, घट वासी ब्रह्म विचार, आप कटाए जम की फाँसी, जूठे झूठे फंद कटन्तया। गुरमुख साचा चरन द्वार, पुरख अबिनाशी बख्शे इक्क प्यार, साचा मेला सच द्वार, हरि लाधा ढूंड ढूंडतया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत सुहेले आपे मेले, पूरन जोत भगत भगवन्तया।

★ पहली हाढ़ २०१२ बिक्रमी निशान साहिब वास्ते लिख्त होई जेठूवाल ★

बरस मास दिवस रैण वार थित्त। घड़ी पल जल थल हरि अटल, वेख वखाणे नित नवित्त। वल छल कलि प्रबल, चार कुन्टां वेख वखाणे सृष्ट सबाई रिहा जित्त। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणी थित्त। वार थित्त थित्त वार दिहाड़ा। पुरख अबिनाशी आप लिखाए, कलिजुग लेखा पहली हाढ़ा। रंक राजानां कढ्ढे भुलेखा, शब्द सिँघासण सच अखाड़ा। जीव जन्त साध संत रहे वेखी वेखा, आपे वेखे बहत्तर नाड़ा। शब्द सिँघासण लोकमात लाई साची मेखा, ज़िमी अस्मानी तुट्टे पाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवे मात वड्याई। शब्द सिँघासण तेरी साची बणत बणाई। छब्बी पोह शब्द म्यानो खण्डा धू सच किरपान हथ्थ उठाई। लक्ख चुरासी रही रो, गुरमुखां दुरमति मैल रिहा धो, पहली हाढ़ खुशी मनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी साची भेंटा, जगत जगदीसा साचा बेटा रिहा भेंट चढ़ाई। चढ़या भेंटा हीरा लाल। साध संगत तेरा ताणा पेटा, एका हरि बणया मात दलाल। सच सिँघासण खेवट खेटा, इक्क सुहाया अमृत ताल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे

संत जनां होए सदा रखवाल। शब्द सिँघासण कर त्यार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। पहली हाढ़ खेल अपार। गुरमुखां करे शब्द वाड़ी, चारों कुन्टां लावे पार। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, चारों कुन्टां शब्द अस्वार। आपे होए पिछे अगाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका करे मात वपार। शब्द सिँघासण हरि हरि धामा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पूर कराए आपणा कामा। मानस देही जगत विनासण, अन्तिम कलि कोई ना दामा। एका जोत पुरख अबिनाशण, जूठा झूठा चामा। आपे वेखे वेख वखाणे पृथ्वी अकाशन, कवण दुआरे वज्जे सच दमामा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका एक एक निहकामा। शब्द सिँघासण मात अपार। करे कराए हरि रघुराए पहली वार। सतिजुग त्रेता दिस ना आए, द्वापर लेखा ना कोई लिखाए, कलिजुग बन्ने साची धार। वेद अथर्बण पाए भुलेखा, कवण गुर वरते विच संसार। कुरान अञ्जीलां मिटया औलीआ पीर शेख़ा, वेले अन्तिम आए हार। ग्रन्थी पन्थी उलटी रेखा, जोती भेखा हरि निरँकार। पंडत पांधे रहे वेखी वेखा, तट्ट किनारे रहे ध्यान मार। धरत मात तेरी लिखी रेखा, पुरख अबिनाशी पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर लए अवतार। लोकमात लए अवतारा, बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी साची धारा, साची गणत रिहा गिणाईआ। ना कोई करे मात अधारा, धरत मात दर कुरलाईआ। कलिजुग झूठ पसारा, अन्तिम वार लक्ख चुरासी मदिरा मासी दए दुहाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई मीत ना मुरारा, ना कोई साजण ना कोई प्यारा, नाता तुटे भैणां भाईआ। ना कोई मन्दिर ना दुआरा, ना कोई दिसे शाह अस्वारा, ना कोई होए सहाईआ। ना कोई अन्दर तोड़े जन्दर, दीपक जोत ना कोई जगाईआ। कलिजुग वहिण डूंघी कन्दर, भरमे भुल्ली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, धरत मात रही कुरलाईआ। धरत मात दए दुहाई, दर भगवन्तया। वेले अन्तिम हो सहाई, लाज रखाए जुगा जुगन्तया। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, जूठे झूठे जीव जन्तया। कोई ना पकड़े किसे बांहीं, मेल मिलावा साचे कन्तया। दर आई चांईं चांईं, मेरी पूरन आस कराई पूरन भगवन्तया। सदा रक्खी ठंडीआँ छाँईं, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दासन दास सर्ब अखवन्तया। आई दर करे पुकार, मात धरत दए दुहाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार कर विचार, कलिजुग तिक्खी धार रखाईआ। बेमुख भुल्ले जीव गंवार, जूठा झूठा चुक्कया भार, साचा राह ना कोई वखाईआ। एका मार हरि वदान, रंक राजान जीव शैतान वड गुमराहीआ। नाम फड़ तेज़ कटार, मारी जाईं वारो वार, शब्द घोड़े हो अस्वार, दहि दिशा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग कर्म गया

हर, धरत मात रही कुरलाईआ। धरत मात दर पुकार, धाहां मारदी। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सत्त सागरां होई पार, डूंघी लहर ना कोई तारदी। ना कोई वेखे गहर गम्भीर, साची खेल सच्चे करतार दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण जल जल कवण समरथ रथ रथ समरथ खेल अपर अपार दी। दया निध निध दया दाती। आपे जाणे आपणी बिध श्री भगवान बवन्जा करोड़ सृष्ट जो जन रचाई कर कर सिद्ध। कलिजुग बल धारे किरपा आप करे, आपे करे आप पछाण। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्त जोत धर, भेखा भेखी भेख धर। सच सिँघासण सच दुआरा। सच घर दरस पुरख अगम्म अगम्म अपारा। जन भगतां सदा दासन दास, आवे जावे वारो वारा। वरते वरतावे पृथ्वी अकाश, मात पताल साची धारा। शब्द चलाए इक्क स्वास, मेट मिटाए धुँदूकारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण जगत अपारा। शब्द सिँघासण हरि निरँकार। चारों कुन्ट शब्द सरूपी इक्क द्वार। आपे वेखे वेख वखाणे सच सुल्ताना हरि मेहरबाना सच घर कवण दरबार। जोती नूर इक्क महाना। शब्द ताज सच सुहाणा। नाम निरँजण पहरेदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेखे घर, आपे जाणे आपणी कार। सच सिँघासण सहिज सुख भरया। जोती जामा शब्द दमामा, आप आपणा कारज करया। लक्ख चुरासी एका तामा, सच भण्डारा हरि जी भरया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप मिटाए लक्ख चुरासी डरया। शब्द सिँघासण माण रखाए। लोकमात मार झात, हरि दए वड्याए। चार वरनां इक्क जमात, ना कोई जाणे ज़ात पात, एका दिवस एका रात, एका नाम हरि सुणाए। एका पित एका मात, एका शब्द एका दात, एका कन्त प्रभ साचा जीव जन्त, नर हरि हरि नर आप अखवाए। जोती जामा भेख बेअन्त, वेख वखाणे साध संत, दूसर कोई भेव ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण डेरा लाए। शब्द सिँघासण डेरा हरि सुल्तानया। गुरमुखां मिल्या मेल विच जहानया। आप चुकाए मेर तेर, सतारां हाढ़ी महानया। शब्द सरूपी पाए घेरा, चारों कुन्ट राजानया। खिची आए चेला गुर गुर चेला गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण एका एक महानया। सच सिँघासण हरि सुहाए, तख्त बिराज्जया। दूसर कोई ना दीसे थाएँ, जोत जगाए देस माज्झया। घर घर उडदे दिसण कांएँ, माण गंवाए राजन राज्जया। शब्द डोरी पाए फाहे, वेखे खेल कल कि आज्जया। आपे लेखा लिखे साचा नाएं, साचे साजन रिहा साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण जोत बिराज्जया। जोत बिराजे शब्द उडान। देस माझे हरि भगवान। धरत मात तेरा रच्चया काजे, कन्त सुहागी वाली

दो जहान। आपे रक्खे मात लाजे, अट्ठे पहर ध्यान। शब्द घोड़े चिट्टे ताजे, सोलां कलीआं पाए पलान। सत्तां दीपां साजन साजे, इक्क झुलाए सच निशान। नौ खण्ड पृथ्वी राज राजान, पुरीआं लोआं बंध बंधान। मात पताल अकाश अकाशे, खण्ड ब्रह्मण्ड एका आण। आप आपणा साजन साजे, एका रक्खे जगत माण। जन भगतां मारे आत्म अवाजे, शब्द जोती खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए त्रैलोकी माण। सच सिँघासण हरि भगवाना। जोती जामा खेल महाना। शब्द दमामा इक्क वजाना। राज राजानां शाह सुल्तानां इक्क टिकाना। नाम निधाना चतुर सुजाना सृष्ट सबाई वंड वंडाना। लोआं पुरीआं मार ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणा खेल महाना। लोआं पुरीआं मार ध्यान, बणत बणांयदा। ब्रह्मे छड्डुणी पई दुकान, जन भगत उपजांयदा। शिव शंकर होए हैरान, पुरख अबिनाशी भेख वटांयदा। इन्द इन्द्रासण करे पछाण, करोड़ तेतीसा मुख भवांयदा। शब्द सिँघासण हरि मेहरबान, लोकमात चिखा बणांयदा। गुरमुखां देवे जीआं दान, बेमुखां अग्नी भेंट चढ़ांयदा। पहली हाढ़ दिवस महान, लेखा लेख लेख चुकांयदा। आप बणाए धर्म निशान, वाली दो जहान दया कमांयदा। भरमे भुल्ले राज राजान, शाह सुल्तान भेव ना पांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, एका एक शब्द बिबाण, चारों कुन्टां सद उडान, दिस किसे ना आंयदा। काया रथ इक्क महान, विच समरथ बेपछाण, पकड़े नत्थ जीव निधान, दहि दिशा आप फिरांयदा। कलिजुग सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कर दरस सगल वसूरे जायण लथ, सिँघ मनजीत सदा अतीत इक्क निशान अटल रखांयदा। जगत जगदीश महिंमा अकथ, राज राजानां जाए मथ, सृष्ट सबाई होई सथ , ना कोई किसे छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सिँघासण जोत धर, साची रचना आप रचांयदा। रचन रचाए आत्म मूल। गुरमुख मात ना जाए भूल। शब्द दात प्रभ साची दए, सोहँ नाम इक्क त्रिसूल। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, वेख वखाणे प्रभ विछड़े गुरमुख साचे कन्त कन्तूहल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगण रंग चढ़ाए, शब्द निशाना मात बणाए, साचा रंग हरि चलूल। रंगण रंग रंग अपारी। धुर दरगाही आप ललारी। कलिजुग तेरा वेख भेख, करे खेल प्रभ वड संसारी। साचे लोचण लैणा वेख, कवण कल वरते उप्पर धरते, कवण करे खेल न्यारी। करे खेल प्रभ वड संसारी। साचे लोचन रिहा वेख, कवण करते खेल प्यारी। आप लिखाए साचा लेख, कलिजुग तेरी उखड़े मेख, धरत मात दर आए पुकारी। जोती जामा धरया भेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व, साचे दर करे त्यारी। साचा दर पहला घर। पुरख अबिनाशी देवे वर। जोत निरँजण पार उतारे, लछमी फूलन बरखा कर। चरन कँवल सरनाई पड़। साचा राह एका

फड़। दूजे घर जाए वाड़े, शब्द उठाए साची धाड़। जोत निरँजण लाए जड़। आप आपणे अग्गे खड़। जोती जोत सरूप हरि, तीजे दुआरे हरि निरँकारे शब्द पसारे आपे आप जाए वड़। तीजा दर दर दरवेश। पवण पुकारे सच प्रवेश। शब्द हुलारे वेस अनेक। ठंडी ठारे सद बिबेक। ओंकारे एका एक सुन अगम्म ना लावे सेक। जोती शब्दी पए जम्म, एका माता पिता हरि वसेख। दस्म दुआरी धार भन्न, चौथे घर रक्खे टेक। कोई ना लाए चोर सन्न, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, चौथे घर आपे वड़, सृष्ट सबाई रिहा वेख। चौथे घर बन्द किवाड़। आपे वेखे पहली हाढ़। गुरमुख साचे संत सुहेले शब्द डण्डे रिहा ताड़। मानस देही एका वर, मैले काया चोले देवे पाड़। लेखा चुक्के गुर चेले, जूठी झूठी मुक्के धाड़। होए सहाई अन्तिम वेले, दरस दिखाए सतारां हाढ़। अचरज खेल हरि जी खेले, बेमुखां साड़े नाड़ नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत सुहेले दर घर साचे देवे वाड़। दर घर साचा सच टिकाणा। पंचम कर दरस, आपे चतुर सुघड़ स्याणा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए सच घर, छेवें घर रहे वक्खर, रेख भेख कोई दिस ना आणा। अक्खर वक्खर हरि निरँकार। साचा लेखा लिखे काया मन्दिर साचे पत्थर, बजर कपाट देवे पाड़। लक्ख चुरासी लथ्थी सथ्थर, लेख चुक्के कलिजुग मुक्के सतारां हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे अटल मुनारे हरिजन प्यारे देवे वाड़। सच दुआरा सति सतिवादी। पुरख अपारा बोध अगाधी। शब्द धारा माधव माधी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगे रंग छैल छबीला, आपे जाणे आपणा हीला, पवणी शब्दी शब्दी पवणी नादी। पवण शब्द पवण नाद सुन। बोध अगाध अगाध बोध, वेख वखाए रिख मुन। वड जोधन जोध हिरदा सोध, गुरमुख साचे मात चुण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा धाम सुहाए, दूसर किसे दिस ना आए, संत सुहेले भुल्ले रुल्ले विच अगम्म सुंन। पहली हाढ़ शब्द निशान। हरि आप झुलाए विच जहान। नौ खण्ड पृथ्वी गुण निधान। सत्तां दीपां हरि मेहरवान। आपे जोत निरँजण आप अकारया। आपे जगत मजन आपे वड संसारया। आप दुःख भय भंजन, सगल पसारया। आपे आप पड़दे कज्जण, आपे अन्दर आपे बाहरया। आपे आप साचा सज्जण, आपे गुप्त आपे जाहरया। जोती जोत सरूप हरि, अक्खर वक्खर खेल अपारया। आपे गोबिन्द दाता राम, आपे भेख वटन्तया। हरि आपे जगत भगत साचा नाम, हरि आपे खोज खुजन्तया। हरि आपे अमृत आत्म मध, हरि आपे साचा रस पिअन्तया। हरि आपे पवणी शब्दी नद, हरि आपे नाद अनाहद साचा राग सुणन्तया। आपे बोध अगाध अगाध बोध, हरि आपे जोत जगन्तया। हरि आपे सृष्ट सबाई सोधन सोध, शब्द

निशाना इक्क रखन्तया। हरि आपे गुणीआ वड वड बोध, भेव अभेद आप अखवन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना कोई जाणे साधन संतया। आपे राम रहीम, बेऐब परवरदिगारया। आपे गुणी गनीम वड नसीम, नुक्ता मीम ना किसे विचारया। लक्ख चुरासी तेरी तरमीम, आप कराए जिउँ अर्जन भीम, खेल कराए जिउँ कृष्न मुरारया। रचन रचे रूसा चीनी, आपे भन्ने हँकारी बीनी, युरापीनी वड हंकारया। वेख वखाणे मुहम्मदी दीनी, नूर अलाही एका ईनी, बेपरवाही खेल मचा रिहा। नाता छुट्टे खाण पीणी, मुहम्मद रसूलां होए अधीनी, काला वेस दर दरवेस आपणा आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साची रंगण रंग रंगा रिहा। आपे रघुपति रघुनाथया। सृष्ट सबाई सगला पत, आपे जाणे अगली पिछली गाथया। राज राजानां शाह सुल्तानां दे समझावे मति, वेला आए फेर ना मातया। ना कोई देवे धीरज जत, आत्म जोती साचा सति, शब्द मिले ना साचा राथया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम वखाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ। आपे आप आप परवाना। धुर दरगाही शब्द निशाना। जगत चलाए तीर भगवाना। दूसर कोई रहण ना पाए, मेट मिटाए पुरख सुजाना। साची बणत रिहा बणाए, लेख लिखे नाम महाना। चार वरनां इक्क थाँ बहाए, शब्द निशान इक्क रखाना। वरन अवरनां आप हो जाए, वेद पुराणां दिस ना आना। जोती जामा भेख वटाए, खाणी बाणी होई हैराना। निहकलंकी जामा पाए, कुरान अञ्जील खेल शैताना। सोहँ साचा डंक वजाए, सत्तां दीपां वंड वंडाना। लेखा लेख भविख्त लिखाए, आप आपणे संग समाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच निशान इक्क झुलाना। सच निशान हरि बनवारया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क बिबाण, उडाए शब्द साची उडारया। रंक रजानां एका आण, करे खेल अपर अपारया। नौ दर वेखे सर्ब तज जाण, मदिरा मास ना करे कोई अहारया। भाण्डे हँकारी सर्ब भज्ज जाण, वज्जे शब्द चोट नगारया। राज ताज शाह तज जाण, ना कोई करे तन शृंगारया। दर द्वार बंक सर्ब छड्ड जाण, ना कोई वेखे पिच्छा अगाड़या। गुरमुख साचे संत सुहेले सच सरनाई गुर चरन दुआरे सज जाण, रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेत्र पेखे लोकमात वेखे गुर संगत सतारां हाढ़ी फुल फुलवाड़ीआ। शब्द निशाना रंग आलमीन। वेख वखाणे हरि हरि अलाही या-मबीन। एकला एक सच्चा दर द्वार, रहीम करीम शाह नसीम जांनशीम। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सच निशाना हरि मेहरबाना इक्क चलाए जगत प्रबीन। जगत निशाना आलमुल उल्मा भगत भगवानया। रंगन रंग रंगाना। सच सति सति सति मेहरवान, आपे जाणे चवीआं तत्त जोती वक्खर शब्द पछाना। त्रैगुण माया बहत्तर वख, त्रै त्रै वेस अनेक महाना। जोती जोत सरूप हरि,

लक्ख चुरासी जोत धर, आपे रहे बेपछाणा। आपे बेपछाण सर्ब पछाणदा। गुणवन्ता गुण निधान, सर्ब जीआं घट आपे जाणदा। करे खेल मात महाना, साचा रंग कलिजुग तेरे अंग संग वेख तरंग निगाहवान दा। लक्ख चुरासी अन्त कुरंग, सोहँ वजे नाम मृदंग, मानस देही होए भंग, कलिजुग जीव भुल्ले माया रुल्ले, भुल्लया राह ब्रह्म ज्ञान दा। सच दुआरा एका खुल्ह्रे ना कोई लाए मुले, जो मिले गऊ ग़रीब निमाणा शाह सुल्ताना एका कंडे तुले, करे खेल धुर दरगाही जगत मलाही ऊँच नीच ना कोई पछाणदा। निहकलंक नरायण नर लोकमात हरि जोत धर, साचा रंग सदा अभंग ना कोई वखाणदा। सच दुआरा खोल्ह् शब्द जणाईआ। शब्द वजाए ढोल, रंक राजानां दए सुणाईआ। पड़दे देवे खोल्ह्, बजर कपाटी चीर वखाईआ। आपे पूरे तोल रिहा तोल, सतारां हाढ़ी नेड़े आईआ। साचा भाणा वज्जणा ढोल, पैणा घोल हरि रसना रिहा बोल, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जणाईआ। झूठी माया काया चोल, लक्ख चुरासी आत्म रिहा फोल, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां वसे सदा कोल, पड़दा उहला ना कोई रखाईआ। देवे नाम शब्द अनमोल, अन्तिम तुल्या पूरे तोल, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाईआ। सच दुआरा ल्या खोल्ह्, सच सिँघासण रिहा बोल, नौ दुआरे हरि निरँकारे, बेमुखां राह वखाईआ। दसवां घर अटल मुनारे, जोती जगे इक्क निरँकारे, सतारां हाढ़ी वेख अपारे, राज राजानां शाह सुल्तानां बण भिखारे, निहकलंक जोत प्रगटाईआ। बणाए इक्क निशान अपारे, लेख लिखे सच्ची सरकारे, झण्डा चढ़े विच संसारे, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। गुरमुख बणाए साचे लाड़े, लक्ख चुरासी चबाए आपणी दाढ़े, मगर लगाए शब्द धाड़े, तीर कमान ना कोई रखाईआ। नाम गोला काड़ काड़े, लुकया रहे ना कोई झाड़े, अन्दर बैठ ना मुख छुपाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम बोली, धरत मात दर होए गोली, लाड़ी मौत उठाए डोली, चारे जुग कहार बणाईआ। चारे जुग बणे कहारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। ना कोई देवे किसे सहारा। चारों कुंट चार द्वार पाया घेरा, ना कोई मीत ना मुरारा। धर्म दुआरा खोल्ह् शब्द जैकारया। नौ दुआरे मानस देही झूठा भोग, त्रैगुण तिन्ने दिशा वेख वखा रिहा। दसवें घर वज्जे ढोल, शब्द मृदंग ना कोई रखा रिहा। आपे कुण्डा रिहा खोल्ह्, साची सेजा आप विछा रिहा। आपे आप रिहा बोल, सुरत सुहागण नार प्यार साचा मेल मिला रिहा। ब्रह्मादी सद करे चोल्ह् शब्द विचोला इक्क रखा रिहा। भेद अभेदा पड़दे खोल्ह्, जोती मुखड़ा नूर वखा ल्या। हस्स हस्स मुखों कहे बोल, सच सुहागण गुरमुख नारी गुर पूरा कन्त मिला रिहा। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, साचे तीर्थ आप नुहा रिहा। राग अरागां साची बाणी, एका एक सुणा रिहा। बणया रहे सदा पाली, बिरध बाल ना कोई वखा रिहा। आपे करे जाण पछाणी, दे हलूणा आप जगा रिहा। जोती जोत

सरूप हरि, आपे वसे सच घर, नौ दुआरे बन्द कवाड़या। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, बेमुखां वखाए सतारां हाढ़। गुरमुखां वखाए एका राह जगत मलाह, दर घर साचे देवे वाड़। कोई ना अगे करे धर्म राए ना पुच्छे मुख उग्घाड़। जम राज ना पकड़े बांहीं, गुरमुख साचे साचे लाड़। पकड़ उठाए थांउँ थाँईं, साचे घड़े घाड़न घाड़। आपे बणे पिता माँ, अमृत हरि मुख चुआए नाड़ नाड़। हँस बणाए गुरमुख कां, परे हटाए पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस विचार सतारां हाढ़। नौ दुआरे दर खोल्हे। अन्दर बाहर गुप्त जाहर आपे बोले। मानस देही नेत्र वेखे, कवण रंग काया चोले। जीव जन्त भरम भुलेखे, धरत मईआ कलिजुग नईआ अन्तिम डोले। पुरख अबिनाशी साचा वेखे, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रंग शब्द संग एका रक्खया। नौ दुआरे जगत दुकाना। रसना रस मुख थुक्क फीक फिकाना। अन्तिम वेला गया ढुक, आपणा भार लैणा चुक्क, मिले नाम ना शब्द बिबाणा। कलिजुग औध गई मुक्क, प्रभ का भाणा ना सके रुक, करे खेल वाली दो जहाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा शब्द जणाए जगत चलाए एका एक नाम निशाना। नाम निशान इक्क रखाउँणा। भगत भगवान धर्म सुहाउँणा। शब्द बाण मार ध्यान नाल रखाउँणा। जगत उडान कर पछाण, चार कुन्ट प्रभ आप कराउँणा। सत्तां दीपां वंड वंडान, सोहँ अक्खर कर कर वक्खर साचा लेखा आप लिखाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण आप सुहाउँणा। सच सिँघासण हरि दातार। शब्द निशाना अपर अपार। लेखा लिखे वारो वार। सति सतिवादी सत्त रंग सति पुरख निरँजण साची धार। लोआं पुरीआं रिहा लँघ, धरत मात तेरी सुण पुकार। गरीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, लोकमात लए अवतार। चिट्टे अस्व कसे तंग, हरि सूरबीर सच्चा सरदार। लक्ख चुरासी भन्ने काची वंग, राज राजानां करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा एका घल्ले, चार यारी सच महल्ले, अन्तिम रहणा ख़बरदार। शब्द सुनेहड़ा देवे तोर। प्रभ अबिनाशी किरपा कर साचा हरि, सोहँ बन्न्हे साची डोर। वेख वखाणे उच्चे घर, जगत महल्ला लग्गे चोर। वेले अन्तिम जाण हर, कलि अन्धेरा अन्ध घोर। कलिजुग अन्तिम आउँणा डर, चार कुन्टां हराम खोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए मोर तोर। शब्द सुनेहड़ा मुहम्मदी यार। अन्तिम वेला कर विचार। चार यारी होए ख्वारी, अन्तिम पैणी डाहढी मार। अहिमद मुहम्मद खेल अपार। दर दर घर घर होए ख्वार। बिरध बाल ना पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, संग मुहम्मद भेख कर, वेख वखाणे शाह सुल्तान दर सरकार। संग मुहम्मद सगला साथा। अहिमद नूर हरी रघुनाथा।

शब्द भरपूर अनहद तूर वसे दूर अकथना काथा। सर्ब घटा आपे भरपूर, सज्जण सुहेला हाज़र हज़ूर, जन भगत चढ़ाए साचे राथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वेखे खेल जगत तमाशा। संग मुहम्मदी होए हैरानी। शब्द निशाना तीर, पए वहीर अञ्जील कुरानी। बालक माता छुट्टे सीर, वेला अन्त अन्त अख़ीर, सच हदीस ना कोई पढ़ानी। अस्त्र बस्त्र लथ्थे चीर, ना कोई शस्त्र शाह फ़कीर, रुलदे फिरदे बीर दुरानी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ अक्खर जगत वक्खर दीप खण्ड ब्रह्मण्ड इक्क चलाए सोहँ बाणी। सोहँ शब्द शब्द भगवानया। आप बणाए आपणी जुगत भुगत मुक्त विच जहानया। धर्म रखाए साची शक्त, आए वक्त बेमुहानया। लक्ख चुरासी बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी ना करे कोई पछाणया। इक्क वड्याई नाम भगत, जिह्वा जगत रसना वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क बणाए धर्म निशानया। धर्म निशाना पाए वंड। नाम निधाना सचखण्ड। विच जहाना पाई ठंड। वाली दो जहानां खेल ब्रह्मण्ड। आपे होए बेपछाना, सद वेखे खण्ड खण्ड। सिँघ जगदीशे बन्ने गाना, वेख वखाणे उत्भज सेत्ज जेरज अंड। चार वरन होए प्रधाना, सोहँ शब्द चण्ड प्रचण्ड। जोती जोत सरूप हरि, राम रहीम इक्क निशाना। सच निशाना हरि दातार। सगल समग्री रिहा कर, पहली गढ़ी कर त्यार। निर्मल काया इक्क इकग्री, लेखे लग्गी पहली वार। जोती जोत जोत उजगरी, नाम रत्न रत्नगरी, चारों कुन्ट होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, जगत जगदीशा धर्म बणाए, शब्द निशान कर त्यार। जगत जगदीश तेरी रत। लक्ख चुरासी जूठे झूठे पीसण रही पीस, कलिजुग अन्तिम दे समझावे मति। एका शब्द साचा सोहे सीस, चार वरनां जताउँणा एका तत्त। लेखा चुक्के बीस इक्कीस, आप लिखाए तेरा सति। जोती जोत सरूप हरि, शब्द निशाना मात धर, आप झुलाए दीप सत्त। दीप सत्त हरि बलकारया। आपे दे समझावे मति, शब्द जगा रिहा। प्रगट होए कमलापत, गुरमुख साचे बणत बणा रिहा। बाल अवस्था धीरज जत, साची रत लेखे ला रिहा। पूर्ब लहिणा मिल्या रथ, गुर गोबिन्दे तेरी वथ, वाली हिन्दे सर्ब समरथ, लहिणा देणा आप चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द निशाना इक्क बणा रिहा। शब्द निशाना कर त्यार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी पाए सार। धरत मात दए हुलार, पुरख अबिनाशी पाए सार। चार कुन्टां एका वार। दहि दिशा ख़बरदार। चन्द सूरज निमस्कार। गगन मण्डल नाल सितार। पुरीआं लोआं बन्ने धार। सदी चौधवीं वेख विचार। शब्द सुनेहड़ा रंग अपार। लक्ख चुरासी तेरा खेड़ा, लोकमात रिहा विचार। जाति पाती वडा झेड़ा, ना कोई वसे नगर खेड़ा, धरत मात तेरा खुल्ह्हा वेहड़ा, अन्तिम हौला होए भार। जन भगतां बन्ने बेड़ा, बेमुखां लाए शब्द उखेड़ा, अन्तिम

मारे कर ख्वार। करे कराए हक्क निबेड़ा, एथे ओथे ना कोई हुदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना कर त्यार। शब्द निशान उठ ललकार, निहकलंक कलि जामा पाया । जन भगतां होए पहरेदार, रंगण रंग नाम दवाया। लाल चोला तन छुहाया। साचा किया आप शृंगार, लछमी तेरा प्रेम वखाया। कँवल फूल हथ्थ लटकाया। बध्धी साची धार, साचा वेस रंग वटाया। घर में घर सति समाया। लालन लाल दिस ना आया। दीन दयाल हरि गोपाल, साचा लाल लेखे लाया। झुलदा रहे इक्क निशान, उच्चा लम्बा नौजवान, छत्ती जुग छत्ती रागां भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सत्तां दीपां एका साचा धर्म रखाया। छत्ती जुग राग छतीस, खेल अपारया। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीसण रही पीस, प्रगट होए हरि रघुराया। राज राजानां छत्र किसे ना दिसे सीस, लेखा लिखे वेख वखाणे सतारां हाढ़ी दर द्वारया। राजे बवन्जा आप जगाणा। हरि गोबिन्दा भेव चुकाणा। करया खेल विच ग्वालियर, आप आपणे लड़ बंधाना। शब्द सरूपी फड़ उठाए, पंडत नेहरू कर ध्याना। प्रभ करे खेल अपर अपारया, इक्क झुलाए धर्म निशाने, जगत जगदीशे खेल महाने, साचा धाम आप सुहाना। साचा धाम आप सुहाए, नौ दर दरवाज्जया। गुरमुखां पूरन काम कराए, गरीब निवाज्जया। सुक्का हरया चाम कराए, जो जन आए दर दर भाज्जया। साचा नाम झोली पाए, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया। कलिजुग अन्धेरी रात मिटाए, आत्म जोत इक्क जगाए, सीस पहनाए साचा ताज्जया। नौ खण्ड पृथ्वी सरन लगाए, सत्तां दीपां वंड वंडाए, लोआं पुरीआं साजन साज्जया। शब्द हथ्थ चण्ड प्रचण्ड उठाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत कर कर वेस देसन देस माज्झया। माझा देस इक्क इकल्ला । नौ दरवाजे सच महल्ला। दसवें घर साजन साजे, भाण्डा भरम भउ भाजे, इक्क वखाए दया कमाए, निहचल धाम अटला। इक्क संवारे आपणे काजे, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पला। जोत निरँजण कर अकार, बणत बणाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, लोकमात कर कर आया धाईआ। पहली हाढ़ दरस अपार, सिँघ मनजीता तेरी नींह रखाईआ। सच महल्ला कर त्यार, लक्ख चुरासी रिहा वखाईआ। राज राजानां झूठे दिसण दर दरबार, जूठी झूठी वंड वंडाईआ। हरिजन मिले साचा शब्द उडार, नाम बिबाणा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा धाम रिहा सुहाईआ। साचा धाम सुहाए नौ द्वारया। गुरमुखां जोत जगाए, सति पुरख अपारया। वरन गोत भेव मिटाए, वरनां बरनां एका राह वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण रंग अपारा, एका रंग रंगा रिहा। लाल रंग रंग अमोला। पुरख अबिनाशी पड़दा

खोल्हा। भाग लगाया काया चोला। जोत निरँजण गुप्ती बोला। ओंकारा पड़दा ओहला। धार सवरनी जगत विचोला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना कर ध्याना आप बणाए दया कमाए सम्पूरन कला सोलां। शब्द निशान रंग अमोला। हरि भगवान जगत विचोला। जगत दुआरा एका खोल्हा। गुरमुखां बणया आपे गोला। शब्द सुणाया साचा ढोला। रंग रंगाया नीला चोला। नीला चोला सत्त सवरनी संग रलाया, विच दिसाया पड़दा उहला। अगम्म अगम्मी भेव खुल्हाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणया आला भोला। चिट्टा रंग रंग अनूप। दस्म दुआरी सति सरूप। साचा चोला हरि वडा शाहो भूप। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, ना कोई दिसे रंग रूप। सूहा रंग सवगरी धार। सति पुरख निरँजण आपणी करे कार। तन छुहाया पीला चोला, साचा राणा सच्ची सरकार। अजप्पा जाप दिस ना आया, अक्खर वक्खर धाम न्यार। सूहा वेस कलि वखाया, भेखाधारी भेख अपार। आप आपणा रंग वखाया, लोकमात कर विचार। अन्दरे अन्दर जोत जगाया, जोती रंग अपर अपार। काला वेस हरि रघुराया, दर दरवेस पहरेदार। त्रैकुटी देस वास रखाया, सरगुण निरगुण पहरेदार। ब्रह्मा विष्न महेष दिस ना आया, कलिजुग माया अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगण रंग अपार। आदि नीला शब्द संग छैल छबीला। साचा बस्त्र आप छुहाए, तन मन पीला। अस्त्र घोड़ा नाम रखाए, सोहँ दए साचा टीला। भूषन बस्त्र आप सुहाए, चुरासी कलीआं कर कर हीला। लक्ख चुरासी फंद कटाए, छे घर वेस अनेक रंग रंगीला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंग सत्त कराए लाल काला चिट्टा नीला, शब्द सुनहिरी सूहा पीला। कर कर रंग सत्त सत्त अपारी। शब्द चण्ड फड़े कर त्यारी। नौ खण्ड पृथ्वी आई वंड, सत्तां दीपां पसर पसारी। मेट मिटाउँणा भेख पखण्ड, जूठी झूठी चोर यारी। बेमुखां देणी अन्तिम कंड, गुरमुखां करना ख़बरदारी। पल्ले बन्न्हे नाम गंढु, उच्चा चढ़ना विच संसारी। बेमुखां लाए कलिजुग दंड, सोहँ खण्डा फड़ कटारी। राज राजानां वढ्ढी कंड, आत्म होए वड हँकारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीस शब्द निशान इक्क झुलाए कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। शब्द निशाना हरि की धारी। पारब्रह्म ब्रह्मपार जोत गोत वरन अपारी। सच कर्म जगत धर्म खेले खेल भगतन मेल जोधा सूर वड बलकारी। सोहँ शब्द चढ़ना तेल, धर्म राए दी कट्टी जेल, गुरमुख आयण चरन द्वारी। इक्क वखाउँणा रंग नवेल, सदा रिहा सज्जण सुहेल, मीत मुरारा पुरख अपारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा सोहँ झण्डा पाए वंडा, पहली हाढ़ी कर त्यारी। शब्द झण्डे चढ़या चाअ। पुरख अबिनाशी पाए वंडे, सत्तां दीपां बण मलाह। आपे लाए

पार कन्ढे, ऊँचां नीचां भेव चुका। निशान झुलाए विच ब्रह्मण्डे, सदा रक्खे ठंडी छाँ, दूई द्वैती अग्न मिटा। झुलदा रहे विच वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा बणा। झुल्ले मात निशान शब्द हुलारया। चार वरनां एका आण, इक्क दुआरा वड संसारा आप वखा रिहा। गऊ गरीबां रक्खे माण, मेट मिटाए जीव शैतान, रंक राजानां शाह सुल्तानां साचा हुक्म सुणा रिहा। अन्तिम छड्डणा पए जहान, कलिजुग माया होई प्रधान, ना कोई देवे जिया दान, जूठा झूठा वणज करा रिहा। कलिजुग कूड़ा कर्म पछाण, दीपां लोआं मार ध्यान, पुरख अबिनाशी चतुर सुजान, शब्द झण्डा इक्क चढ़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे जगत पछाण, एका एक इक्क इकल्ला सच महल्ला साचा धाम सुहा रिहा। शब्द बिबाणा जाए चढ़। नाम निशाना अगे खड़। जगत बिबाणा हरि मेहरबाना, आपणी हथ्थीं लए फड़। करे प्रकाश कोटन भाना, चवी हथ्थ उच्च टिकाना चवीआं तत्तां रिहा लड़। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाना, धर्म कर्म इक्क राह वखाना, सच धर्म दी लाए जड़्। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रंग रंगाना। दीप सत्त सत्त हरि रंग। सत्तां रंगां वंड वंडाए। चौथा घर साचा दर चिट्टा रंग दए अपर, जम्बु दीप मात वड्याए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपां सत्तां सत्तां रंगां साचा लेखा आप लिखाए। साचा लेखा लिखे लिखाए करतार। खण्डां ब्रह्मण्डां वरभण्डां जाणे जणाए आपणी कार। धारी भेखा भेख पखण्डा, सुरत असुरती वसे बाहर। लक्ख चुरासी सुत्ती दे कर कंडा, गुरमुख सुहाए चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए साची वंडा, रंगण रंग सति करतार। सत्त रंग सतिगुर सूरा। मंगे मंग वड वड गुण भरपूरा। आपे चाढ़े नाम रंग नादी तूरी तूरी नाद साची तूरा। बोध अगाध शब्द धुन हरि ब्रह्मादी सदा विस्मादी हरि विस्माद। शब्द डोरी लक्ख चुरासी बांदी, खेले खेल आदि जुगादि। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत रंगीला शब्द अनीला मोहण माधव माध। चार कुन्ट चार दिवार। चारे दिशा वेख विचार। साची मारे हरि लकार। ढाई हथ्थ एका धार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा बन्ने बेड़ा दस ग्यारां वार अपार। ढाई हथ्थ चार दिवार। साचा रथ विच संसार। नत्थ खसम हथ्थ, खिची जाए वारो वार। पुरीआं लोआं जाए मथ, सतिजुग तेरी पैज संवार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना कर त्यार। शब्द निशाना कूके पुकारे। चवी हथ्थ अटल मुनारे। सोहँ शब्द जै जैकारे। वरन अवरना धरनी धरना, आपे वसे निहचल धाम अटल अचल्ल उच्च मुनारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल विच संसारे। निहचल धाम अटल, शब्द

रुशनाईआ। ना कोई वेखे डूंघा जल थल, जोती नूर सर्ब घट सर्ब थाँईंआ। कलिजुग अन्तिम वरते कल, कलि कलन्दर रिहा शोर मचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना जगत बिबाणा उच्चा सुच्चा सत्तां दीपां रिहा इक्क चढ़ाईआ। नाम निशान शब्द बिबाण। पुरख अबिनाशी एका एक रखाए वाली दो जहान। लेखा लेख लिख्त भविख्त कराए, लोकमाती चतुर सुजान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दीपक जोती मात जगाए। दीपक जोती मात प्रकाश, मिटे अन्धेरया। आपे जाणे घट घट वास, दहि दिश दस मास आवण जावण फेरया। पुरीआं लोआं पाए हिस्से, नादी पवणी शब्दी अन्ध घोरया। कलिजुग माया लक्ख चुरासी आत्म लाई एका विसे, हउमे रोग जगत वधा रिहा। साचा ताज ना दिसे किसे सीसे, जूठा झूठा शाह सुल्तान सर्ब अख्वा रिहा। प्रगट होए अवतार चौबीसे, जोत जगाए जगत जगदीसे, शब्द खण्डा साचा डण्डा हथ्थ उठा रिहा। भेख चुकाए मूसे ईसे ना कोई शरअ कुरान हदीसे, वेद पुराणां ना कोई सुणा रिहा। माया राणी कलिजुग दानी जूठा झूठा पीसण पीसे, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, भाण्डा भउ सर्ब भन्ना रिहा। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, राजे राणयां देवे डन्न, गुरमुख साचे संत दुलारिआं एका शब्द सुणाए कन्न, कराए वणज सच्चा वपारया। सोहँ नाम सच्चा माल धन्न, कलिजुग जीव अन्त
१०१ हंकारया। कलिजुग माया अग्नी लग्गी तन, आए अन्तिम पासा हारया। ना कोई दिसे छप्परी छन्न, साचा शब्द निशान १०१
०५ इक्क उठा रिहा। ना कोई जाणे गंधरब गन, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सीस झुका रिहा। प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्नॣ, ०५
शिव शंकर राह तका रिहा। जगत जगदीसा नूरी जोत मात चढ़ाया चन्न, बजर कपाटी खोलॣ वखा रिहा। काया माटी साची हाटी एका तन, साचे तीर्थ इशनान करा रिहा। सति सरोवर अमृत आत्म अन्नॣ, साचा थान आप सुहा रिहा। दहि दिशा भरमे झूठा मन, अलख निरँजण जोत जगा रिहा। पंजे चोर ना लायण सन्नॣ, दरस अमोघ धुर संजोग इक्क वखा रिहा। गुरमुखां बेड़ा रिहा बन्न, सोहँ साची चोग चुगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा आत्म कढ्ढे जन, हँस काग बणाए चरन द्वारया। दुरमति मैल काया धो वखाए, अमृत पाए ठंडा ठारया। निझर रस होए वस एका एक मुख चुआए, शांतक सीतल धार आप वहा रिहा। भगत जनां राह साचा दस्स, दूर दुराडा आए नस्स, शब्द पल्ला हथ्थ फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना, आत्म झोली आप भरा रिहा। जोती देवे साचा नूर। साचा शब्द एका तूर। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्दरे अन्दर साचे मन्दिर काया वज्जा तोड़े जन्दर, एका बख्शे सति सरूर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका वसे दसवें घर, सर्ब घटां आपे भरपूर। दसवां दर हरि का द्वार। जोती नूर इक्क अपार। शब्द चले तिक्खी धार। गुरमुख विरला शब्द अटल महल्ल एका मल्ले काया मन्दिर उच्च मुनार। आपे वेखे जले थले घड़ी घड़ी पले पले, निर्मल कर्म कर उज्यार। आपे उप्पर आपे थल्ले, जोती जामा भेख न्यार। दीपक जोती साची बले, शब्द सुनेहड़ा एका घल्ले, ना कोई जाणे जीव गंवार। आपे वसे सच महल्ले, निहचल धाम पुरख अगोचर अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां खोल्ह्रे आत्म बन्द किवाड़। खोल्ह्रे बन्द किवाड़, दया कमांयदा। मिले वड्याई सतारां हाढ़, लोकमात जोत जगांयदा। आपे वेखे चंगे माड़, राज राजान शाह सुल्तान हरि भगवान, लेखा लेख लिख्त भविख्त आप लिखांयदा। गुरमुखां बन्न्हे हत्थीं गाना, झुलदा रहे जगत निशाना, सत्तां दीपां वंड वंडांयदा। आपे गोपी आपे काहना, आपे बीना आपे दाना, आपे रूसा आपे चीना, आपे मक्के हक्क मदीना, दिस किसे ना आंयदा। आपे रक्खे रंग पीना, आपे रक्खे लक्ख चुरासी अक्खर वक्खर दूजा सीना, ब्रह्मा विष्न महेष तीना गणत ना गिणांयदा। आपे जल आपे मीना, जोती जामा हरि प्रबीना, वेख वखाणे मुहम्मदी दीना, आपणी खेल आपे आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत निशाना धुर फ़रमाणा लोकमात मार ज्ञात पुरख
१०२ बिधात एका वंड वंडांयदा। पुरख अबिनाशी वंडे वंड। कलिजुग औध गई हंढ। एका एक शब्द चलाए, खोज खुजाए १०२
०५ विच ब्रह्मण्ड। दूसर कोई दिस ना आए, राज राजानां देवे दंड। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती ०५
जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चण्ड वखाए चण्ड प्रचण्ड। शब्द चण्डी हत्थ दातार। पावे वंडी विच संसार। साध संत होए घमंडी, जगत पखण्डी करे कराए ख़बरदार। कलिजुग जीआं आत्म होई रंडी, किसे ना मिल्या कन्त सुहागी, कोई ना दीसे साची नार। मात पतालां पाई वंडी, सच्ची रंगण कोई ना रंगे, रंग चलूला अपर अपार। पुरख अबिनाशी सोहँ शब्द खोल्ह्रे गंढी, दस्म दुआरे पाए वंडी, साची वस्त अपर अपार। सरगुण निरगुण एका डण्डी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द निशाना इक्क झुलाए, सतारां हाढ़ी कर त्यार। चरन दुआरा सच धन्न, मिले मात वड्डियाईआ। पुरख अबिनाशी बेड़ा रिहा बन्न, साची बणत इक्क बणाईआ। लेखे लाए काया माटी साचा चम्म, झूठी माटी देह तजाईआ। पवण स्वासे दान पूर कराए हरि जी कम्म, ना मरे ना जाए जम्म, जोती जोत सरूप हरि, आपे गगन आपे थम्म, दिवस रैण रहे मग्न, गुरमुख साचा साची ओट इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन नगारे लगाए चोट, कलिजुग माया खोट दए गंवाईआ। आपे दर परवान

चरन द्वारया। माण निमाणयां देवे माण, शब्द बिबाण विच बहा रिहा। झुलदा रहे जगत निशान, शाह सुल्तानां ख़ाक मिला रिहा। मिल्या मेल गुण निधान, काया माटी लेखे ला रिहा। सोहँ देवे धुर फ़रमाण, अट्ठ सट्ठ तीर्थ मेट मिटा रिहा। पवणी शब्दी हरि मेहरबान, अवणी गवणी पूरन भवनी आप करा रिहा। अमृत आत्म मेघ बरसे सवनी, सति संतोखी धार आप वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ गरीब निमाणयां फड़ फड़ बांहों चरन लगा रिहा। फड़ फड़ चरन लगाए, बन्ने मात नात। पुरख अबिनाशी दया कमाए, ना कोई जाणे ज़ात पात। एका रंगण नाम रंगाए, नर नरायण कमलापात। साचा संग आप निभाए, मेट मिटाए कलिजुग अन्धेरी रात। जन भगतां भुक्ख नंग कटाए, आप निभाए सगला साथ। एका नाम शब्द मृदंग वजाए, सोहँ शब्द सच्ची गाथ। वड दाता सूरा सरबंग कहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाथ अनाथा त्रैलोकी नाथ। दयाल पाल गुर लाल शब्द अधारया। सुरत मन बुध करे रखवाल, जोत निरंकारया। आवे जावे जगत अवल्लड़ी चाल, पारब्रह्म ब्रह्मपार खेल न्यारया। काया मण्डल गगन मस्तक दीपक सच्चा थाल, जोत निरँजण सर्ब अकारया। गुरमुख साचे माणक मोती लोकमात प्रभ लए भाल, देवे शब्द वस्त दस्त अपर अपारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साचा करे कराए वणज वपारया। साचा वणज नाम अनमोलया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, शब्द भण्डारा एका खोल्या। त्रैगुण माया कर्म विचार, चवीआं तत्तां अन्दर बोलया। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश आत्म पड़दा फोलया। इन्द इन्द्रासण दर द्वार, सिँघ सिँघासण हरि निरँकार, सच दुआरे कुण्डा खोल्या। जगी जोत अगम्म अपार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रगट होए विच संसार, पूरा तोल हरि जी तोलया। लोकमात बन्ने धार, पूर्ब कर्म इक्क विचार, बाल अञ्याणे पार उतार, आदि अन्त कदे ना डोलया। कवण जाणे प्रभ तेरी सार, शब्दी पवण जोत अधार, लोआं पुरीआं खण्ड मंडल वरभण्ड ब्रह्मण्ड दीपां खण्डां आपे जाणे पड़दा उहलया। लक्ख चुरासी पाए वंडां, कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, सोहँ शब्द सुणाए एका सच्चा ढोलया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जोत धर, कलिजुग काला वेस दर दरवेश गल छुहाए काला चोलया। काली चोली रंग गुलाल। धर्म राए तेरी साची डोली, आप चुकाए दया कमाए लक्ख चुरासी फल ना दिसे किसे डाल। चार कुन्टां दए दुहाए, जोत सरूपी दिस ना आए, माया राणी होए बेहाल। राजे राणे रहे कुरलाए, शाह सुल्तान सार ना पाए, आत्म होई सर्ब कंगाल। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, एका बख्शे चरन ध्याने, धुर दरगाही हरि दलाल। इक्क चढ़ाए शब्द बिबाणे, लोआं पुरीआं पार कराए, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप उपाए साचे लाल। साचा

लाल लाल अमोल, अमुल अमुला संसारया। पुरख अबिनाशी एका दर एका घर एका सर एका वर एका घर रिहा खोल्। आत्म जोती शब्द गोती गुरमुख साचे माणक मोती, आपणा तोल रिहा तोल। आप उठाए काया सोती, दुरमति मैल जाए धोती, हरि निरँकारा शब्द जैकारा जो जन आए रसना कहे बोल। सोहँ दस्त जगत असत सदा मस्त, बजर कपाटी काया हाटी तीर्थ ताटी दूई द्वैती पड़दा देवे खोल्। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे मात उपजाए, धरत मात तेरी गोद बिठाए जिउँ सागर सागर कँवल कँवल कँवल फुल। हरि मन्दिर धाम न्यारा। नौ दुआरे विच संसारा। जोत निरँजण आसण लाए, शब्द सिँघासण इक्क बणाए, पुरख अबिनाशी जोत जगाए, कलिजुग वेख वखाणे धुन्दूकारा। मात पताल पताल अकाशन अकाश अकाशा, विच प्रभास डंक शब्द विश्वास हरि गुणतास रसन स्वास इक्क चलाए चौथे घर चार कुन्ट चार दिवारा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस कर कर वेस, खोले् भेव नौ खंड नौ दर दुआरा। खोले् भेव भेव अभेदा। हरि मन्दिर हरि आप बिराजे करे खेल अछल अछेदा। राजे राणे दिस ना आए, पढ़ पढ़ थक्के पंडत वेदा। ग्रन्थी पन्थी होए हलकाए, कोई ना दस्से राह सिध्धा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख विरले आत्म विधा। नौ दुआरे दर दरबार। काया मण्डल खेल अपार। दसवां दर साचा घर बन्द किवाड़। कलिजुग माया रही साड़। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, गुरमुख साचे संत जनां, साचा राह इक्क वखाए दया कमाए सतारां हाढ़। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, नौंवें घर भेड़ भिड़ाए, आप चवाए आपणी दाढ़। एका खुल्ा वेहड़ कराए, जगत निबेड़ आप चुकाए, गुरमुख साचे संत सुहेले शब्द घोड़ी देवे चाढ़्। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाही साचा धाम, जन हरि साचे देवे वाड़। सच दुआरा खोल्, नौ दरवाजया। शब्द सरूपी रिहा बोल, लक्ख चुरासी जो जन साजया। धर्म राए दर जाए फड़या, वेले अन्तिम सारा भज्जया। गुरमुख साचा प्रभ आप चरन दुआरे दर घर साचे वड़या, पंजां चोरां नाल लड़या। जगत विकारा मात हँकारा, एका एक सच्चा दरस दिखाए शाह अस्वारा, जोत निरँकारा पारब्रह्म प्रभ जोत सहारा, वेले अन्तिम रक्खे लज्जया। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, भगत वछल सदा निहकामी, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वेले अन्तिम सच दुआरे आए भज्जया। हरि रूप अगम्म अपार, ना किसे विचारया। हरि रूप अगम्म अपार, लक्ख चुरासी विच पसारया। हरि रूप अगम्म अपार, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म रंग अपर अपारया। हरि का रूप अगम्म, एका नाम सच धर्म धरनी धर आप अखवा रिहा। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे विच समा रिहा। हरि का रूप अगम्म, शब्द जणाईआ।

हरि का रूप अगम्म, ब्रह्म विद्या ब्रह्मा एका पाईआ। हरि का रूप अगम्म, हड मास नाड़ी ना कोई चम्म, आदि जुगादि वसे सर्ब थाँईंआ। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पवण स्वासी दम, ना कोई खाए पीए तम, इक्क अधारा हरि रखाईआ। हरि का रूप अगम्म, ना नीर वहाए छम्म छम्म, अमृत धार इक्क वहाईआ। हरि का रूप अगम्म, ना मरे ना पए जम्म, पुरख अबिनाशी घट घट वासी सृष्ट सबाई सर्ब पित माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपे जाणे आपणी वड्डियाईआ। हरि का रूप अगम्म, आप उपन्नया। हरि का रूप अगम्म, गुरमुख विरले मात मन्नया। हरि का रूप अगम्म, तारा मण्डल ना जाणे सूरज चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, दर दुआरे गुरमुख साचा एका एक बन्नया। हरि का रूप अगम्म, दरस अनेकया। हरि का रूप अगम्म, शिव शंकर रक्खे टेकया। हरि का रूप अगम्म, ईड़ा पिंगल ऐड़ा अंकर निरगुण सरगुण करे बुध बिबेकया। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, नेत्र नैण लोचन गुरसिख विरले मात वेख्या। हरि का रूप अगम्म, रंग चलूलया। हरि का रूप अगम्म, वड दाता दूल्हो दूल्हिआ। हरि का रूप अगम्म, जन भगतां बंधाए चरन नाता आदि अन्त कदे ना भूलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई रक्खे ज़ात पाता, शब्द रक्खे नाम तिसूलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पिता ना कोई माता, ऊँचो ऊँच कन्त कन्तूहलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई सञ्झ सवेर अन्धेरी रात, आपे फलया आपे फूलया। हरि का रूप अगम्म, सदा वसे इक्क इकांता, आपे झूले सच सिँघासण साचे झूलया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे अमृत आत्म बूंद स्वांता, सोहँ शब्द दर दुआरे जो जन आए बोल्लया। आए दर दर परवान। वेख वखाए आत्म घर हरिजन साची कर पछान। अमृत नुहाए साचे सर, सच सरोवर तीर्थ इशनान। साची करनी रिहा कर, आत्म बख्शे ब्रह्म ज्ञान। साचे संत जनां दरगाह साची देवे माण। दर घर पूरन आस, शब्द वैरागया। जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्धेरा भागया। घट घट रक्खे वास, गुरमुख सोया मात जागया। अट्ठे पहर ना होए उदास, सरन चरन चरन सरन गुर पूरे लागया। रसना गाए स्वास स्वास, कलिजुग कालख धोए काला दाग़िआ। लेखे लाए काया पिंजर झूठा मास, पुरख अबिनाशी हत्थ पकड़े आपणे वागया। काया मण्डल साची रास, मिले मेल हरि कन्त सुहागया। शब्द विचोला सर्ब गुणतास, मेट मिटाए बुझाए तृष्ना आग्ज्ञा। सोहँ बोला कर प्रभास, एका शब्द राग अनरागया। मेल मिलाए पृथ्वी अकाश, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, हँस बणाए कागया। पुंनी आस जगत विछोड़या। इक्क वखाया साचा घर, चरन प्रीती नाता जोड़या। इक्क वखाया साचा घर, धर्म राए कलि चुक्के डर, वेले अन्त गुर पूरा मात बहुड़या। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, धुर

दरगाही जगत मलाही बेपरवाही तिन्नां लोकां लाए एका पौढ़या। तिन्नां लोकां एका पौड़ा। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा। प्रगट होए ब्रह्मण गौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम अन्त काल हरिजन साचे मात बौहड़ा। जल तरंग तरंग संसार। जगत उमंग मंग विवहार। काया संग रंग तन शृंगार। सदा अंग संग संग निरँकार। हरि दुआरा आया लँघ, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। जगत तृष्ना कटे भुक्ख नंग, एका नाम रसन अधार। वड दाता सूरा सरबंग, आपे बख्शे आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार। सच सिँघासण बैठ तख्त बिराज्जया। ना कोई जाणे शूद्र वैश, छत्री ब्राह्मण एका साजन साज्जया। आपे जाणे देस वेस वेस प्रवेश, हरिजन कारन काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, सरन सरनाई आपे रक्खे लाजन लाज्जया। चक्रवर्ती हरि वरत हरि चित वित मन ठगोरया। रक्खण आया कलि लज पति, कल अवर ना जाणे औरया। दीन दयाला सरनपत, जाणे मित गत शब्द सरूपी चढ़या साचे घोड़या। चरन प्रीती बन्ने नात, दे मति समझावे दया कमाए इक्क चढ़ाए साचे रथ, धुरदरगाही आया दौड़या। रक्खे लाज सीआं साढे तिन्न हथ्थ, जगत महिंमा कथा अकथ ब्राह्मण गौड़या। सगल वसूरे जायण लथ, नेत्र नीर ना चले अथ, मिले मेल पुरख समरथ, जोड़ जुड़या साचे जोड़या। महिंमा जगत अकथना अकथ, जोती जोत सरूप

१०६ ०५ हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अनेक जन भगतन साचा बौहड़या। सच मण्डल रास हरि शाह सुल्तानया। १०६ ०५

वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, सद वसे आस पास खेल महानया। पवण जोती रसना शब्द स्वास, अक्खर वक्खर सोहँ साची बाणीआ। काया माटी झूठी चाटी अन्तिम होणी नास, नर हरि हरि नर करे कोई पछानया। लेखे लग्गे दस मास, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म देवे एका अमृत धार ठंडा पाणीआ। कूड़ क्रिया कर्म विचार मन बौरानया। धृग जीवन संसार, मानस देही आई हार, पकड़ी डोर पंज शैतानया। नेत्र नैण वहिंदी धार, ना कोई दीसे वंञ मुहाणया। चरन प्रीती इक्क प्यार, मानस देही शब्द अधार, मुक्के रसना पीणा खाणया। कूड़ा कपट मन विकार, तीर्थ तट्ट ना भुल्ल गंवार, काया रस मीठा मझार, वसे नेत नेत श्री भगवानया। साचा लाहा प्रभ दर खट, शब्द सिँघासण साचा पट, जोती नूर ओजाला लट लट, भाण्डा भरम भउ भन्नाणया। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, ना कोई शिवदवाला मट्ठ, कलिजुग उलटी चली लट्ठ, सृष्ट सबाई होई भट्ठ, भवजल कोए ना पार करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी करनी कर, शब्द निशाना इक्क झुला रिहा। शब्द निशाना झुल्ले दर गोबिन्दया। जगत बिबाणा चले वाली हिंदया। सोहँ चढ़या साचे चिले, रसन कमानी गुणी गहिंदया। आपे वेखे बूरे कक्के बिले, मेट मिटाए सगली

चिन्दया। जगत सिँघासण सारे हिले, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तराए दया कमाए आप बणाए साची बिन्दया। सलल सलानी पुरख अगणतया। जिउँ जगत जुगत संत भगत भगत भगवन्तया। मति तत्त सति यति पति पतिवन्तया। जोती जोत सरूप हरि, साचा वर एका हरि, धुर घर सुणे सुणाए मात बेनन्तीआ। मात बेनन्ती परम पुरख संजोग। काया रंग इक्क बसंती, धुर दरगाही साचा जोग। मिले मेल हरि साचा कन्ती, हउमे चुक्के काया रोग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस दर अमोघ। अमोघ अमोघा हरि बलवाना। एका रस हरिजन भोगा, जगत चुकाए जम की काणा। मिटे विछोड़ा जगत विजोगा, मिले मेला हरि मेहरवाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुनेहड़ा एका देवे धुर दरगाही सच निशाना। सच निशाना धर्म सपूत। हथ्थीं गाना चारे कूट। सोहँ पंघूड़ा एका झूट। वेखे परखे राजा राणा, सोहँ तीर रिहा छूट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे अन्दर आपे बाहर, आपे मन्दिर काया खेड़ा, आपे वेखे त्रै त्रैकूट। त्रैकूट त्रैलोकी नाथ। सगल समग्री मस्तक माथे, जोत इकग्री हरि रघुनाथ। हरिजन दिसे काया नगरी, मिलया मेल प्रभ साजन साथ। निर्मल कर्म जगत उजगरी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क बिठाए साचे राथ। जम काल जम तरास वड बलकारया। दिवस रैण नेत्र खोल्ह, वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, कवण हुलारा कवण जैकारा विच संसारया। कवण वसे रसे काया मण्डल उच्च मुनारया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समा रिहा। जगत अवल्लड़ी चाल जगत धरांयदा। पल्ले वस्त नाम धन्न माल, खाली हथ्थ जगत वखांयदा। आदि अन्त ना होए कंगाल, प्रभ सर्ब संग रखांयदा। अमृत आत्म नुहाए साचे ताल, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ दूर करांयदा। साचा शब्द सुणे धुन्कार, अकाल अकाला रसन सुणांयदा। जोती जगे काया खाल, मस्तक प्रगटे दीपक सच्चे थाल, सरवण नेत्र एका धार बनाँयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, भाण्डा भरम जगत भनांयदा। जगत अवल्लड़ी मस्त मस्त मतवाल्या। चुणे शब्द साचे हसत, जगे जोत जोत जवाल्या। आत्म दस्त एका वस्त, असत बस्त तन रखवाल्या। नेत्र नैणां तीर कटार कसत, रसन कमाना इक्क उठा ल्या। सोहँ शब्द साचा ससत, तोड़े मात जगत जंजालया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्क वर, फल लग्गे काया डालया। जन भगत अवल्लड़ी चाल, मन बैरागया। एका होए प्रितपाल, हरि सगल संसारा तयाग्या। चरन प्रीती निभे नाल, गुरमुख विरला सोया जागया। नेड़ ना आए धर्म राए जम काल, तन बन्न्हे पुरख अबिनाश साचा तागया। नूर निरँजण जोत मिसाल, अन्ध अन्धेरा सारा भागया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे इक्क वर,

हथ्थ पकड़े आपणे वागया। हरिभगत अवल्लड़ी चाल, शब्द संतोखिआ। साची घालन रिहा घाल, एका एक शब्द दलाल, आत्म देवे साची वत्थया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका राह जगत मलाह आपणा आप वखाए दया कमाए, अक्खर वक्खर सूखम सूखिआ। सुरत मति मन बुध सर्ब संसारया। कवण जाणे गुणवन्ते गुण, ना कोई जेवड तुध, लक्ख चुरासी पसर पसारया। मानस जन्म ना कोई करे कराए सुध, साध संत बेअन्त थक्के वड बलकारया। पंचां दूतां लग्गा युद्ध, काम क्रोध मोह लोभ हंकारया। प्रभ कंचन काया करन आया सुध, शब्द कुठाली कर तयारया। तन मन्दिर अन्दर आप उपजाए नौ निध, अठारां सिद्धां खेल खिला रिहा। साचा शब्द पीण खाण साची रिद्ध, आपे आप होए सहारया। अन्तिम कारज करे सिद्ध, थित्त वार जगत विचारया। कलिजुग मेल मिलावा अन्तिम साची बिध, सतारां हाढ़ी जोत निरंकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी तोड़े फाँसी, शब्द स्वासी एका राह इक्क वखा रिहा। लक्ख चुरासी तोड़ चरन जुड़नया। चढ़या रहे शब्द घोड़, चारों कुन्ट सद दुड़नया। गुरमुखां वागां रिहा मोड़, अन्दरे अन्दर हरि वसंदया। ना कोई जाणे रस मीठा फीका कौड़, जन भगतां हरि आप बख्शंदया। चरन सरन सरन गुर नैण लोचन लोचन नैण दोए जोड़, अन्तिम तोड़े वज्जा जंदया। वेले अन्तिम पए बौहड़, आत्म ढाहे भरमां कंध्या। प्रगट होए ब्रह्मण गौड़, शब्द नगारा इक्क रखंदया। सम्बल देस लम्बा चौड़, लेखा लिखे हरि लिखंदया। धुर दरगाही आए दौड़, गुरमुखां घट घट वास आदि अबिनाश हरि रखंदया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कटे जम जमांतर फन्दया।

★ १६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

हरि सेवक सेवादार, सेव कमांयदा। हरि सेवक सेवादार, गुरमुखां धर्म धरांयदा। हरि सेवक सेवादार, पूर्ब कर्म आप विचार, लेखा आप लिखांयदा। हरि सेवक सेवादार, लक्ख चुरासी पावे सार, दिवस रैण नेत्र नैण ना कोई भवांयदा। हरि सेवक सेवादार, जुगा जुगन्तर लोकमात मार झात, आपणी सेवा आपे लांयदा। हरि सेवक सेवादार, चाकर चाकया। हरि सेवक सेवादार, गुरमुखां लहिणा देणा चुकावण आया अन्तिम वेले बाकया। सदा सद सद जोत सरूपी जामा धार, गुरमुख साचे विच पसार, दिस ना आए काया माटी झूठी खाकया। सोलां करे तन श्रृंगार, सोलां हाढ़ी कर विचार, प्रगट होए शब्द अधार, दर घर खोल्हे ताकीआ। पवण उनन्जा सिर झुलार, छत्र बवन्जा लेख लिखार, लेखा लिखे आप इकवंजा, गुर नानक तेरा बणया साकीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, एका एक पाकन पाकीआ। हरि सेवक

सेवादार, जगत बणांयदा। हरि सेवक सेवादार, गुरमुखां देवे साची मुक्त, एका राह वखांयदा। हरि सेवक सेवादार, आप आपणी बख्शे शक्त, पूरन भगत एका रैण एका दिवस पूरे पूर करांयदा। लेखे लाए बूंद रक्त, पिता पूत पित माता हरि लेखे लांयदा। हरि सेवक सेवादार, गुरमुखां होए पहरेदार, इक्क अकेला छैल छबीला खिच ल्याए चरन दुआरे, साचा वेला आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, भगतन सेवा मंगे वर, शब्द डण्डा हथ्थ उठांयदा। हरि सेवक सेवादार ख़बरदार मिले गुरमुखां करे प्यार, नेड़ ना आवण पंजे ठग्ग चोर यार, मिले चरन प्रीती दस्से साची धार, कलिजुग वेला अन्तिम घोर। प्रगट होए विच संसार, लक्ख चुरासी पकड़े आपणे हथ्थ डोर। आपे पुरख आपे नार, पुरख अबिनाशी खेल अपार जोत निरँजण खेल न्यार है। हरि सेवक सेवादार, पूरन करे आपणी कार, सतारां हाढ़ी सच विहार, गुर संगत तेरे चार चुफेर है। हरि सेवक सेवादार, सदा सद जागया। गुरमुखां देवे शब्द अधार, आत्म लाहे तृष्ना आग्ना। भिन्नड़ी रैण शब्द कटार, मारी जाए वारो वार, गुरमुखां धोए पिछले दागया। सति पुरख निरँजण एका गुरमुख साची धार सुहागण नार, चरन सरन जो जन लागया। मिले मेल कन्त भतार, ना कोई दूसर मीत मुरार, एका एक हँस बणाए कागया। सतारां हाढ़ी दिवस विचार, गुरमुख साचे दर घर साचे जाए वाड़ी। नौ दुआरे खोल्ह द्वार जिमीं अस्मानां तुट्टे पाड़, दसवें दिसे हरि निरँकार, कलिजुग तेरी कटे हाढ़ी। फड़ फड़ाए शब्द कटार, गुरमुख सुहेले शब्द घोड़े जाए चाढ़ी। नौ दुआरे रक्खे बाहर। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी। जोत सरूपी नर निरँकार, नेड़ ना आए मौत लाड़ी। लक्ख चुरासी उतरे पार, लग्गया फल गुर संगत वाड़ी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंगे सति नाम नाम सति सतारां हाढ़ी। एका लाल कँवल कँवल अमोल्लया। दूसर नाही उप्पर धवल, लोकमात किसे ना तोल्लया। श्याम रंग ना जादे सँवल, अष्टभुज भेव किसे ना खोल्ल्या। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, जोत निरँजण कलि प्रकाशी, हरिजन साचे संत सुहेले तेरे अन्दरे अन्दर आपे बोल्लया। हरि सेवक सेवादार, सुरत संभालया। नित नवित्ता साचा प्यार, शब्द तोड़े जगत जंजालया। आपे जाणे आपणी कार, आपे होए जगत दलालया। पंजां चोरां रिहा मार, फल लगाए काया डाल्हिआ। हउमे हँगता रोग निवार, शब्द पहनाए तन दुशालया। जोत सरूपी कर उज्यार, दीपक साचा एका बालया। साचा मेल पुरख भतार, साची सेजा कन्त बहालया। अट्ठे पहर सुत्ता रहे पैर पसार, बेमुखां नाल कदे ना बोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे मन्दिर तेरे अन्दर दर घर साचे आपे आप बोल्लया। हरि सेवक सेवादार, काया गढ़ है। हरि सेवक सेवादार, उच्च महल्ल अटल आपे वेखे उप्पर चढ़ है। साचा दर इक्क द्वार, निर्मल जल ना दिसे उप्पर थल है। ना

कोई करे वल छल, ना कोई जाणे घड़ी पल, एका दीपक रिहा बल, जंगल जूह ना कोई उजाड़ है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेटे दूई सल, एका दसे साची धार है। जीउ पिण्ड तन साज, सेव कमांयदा। त्रैगुण माया रक्खे लाज, साची साजण आपे साज बणत बणांयदा। मन मति बुध देवे सच्चा दाज, काया काज आप रचांयदा। निरगुण जोती रक्खे लाज, शब्द मोती तन पहनांयदा। सरगुण सच्चा शब्द ताज, निरगुण अनहद साची अवाज इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सरगुण भेख कर मनमुखां मार खपांयदा। जीउ पिण्ड तन साज अग्न उधारया। अप तेज़ वाए पृथ्वी अकाश, सर्ब पसारया। निरगुण जोती रक्खे वास, सरगुण उधारया। पवण चलाए इक्क स्वास, दमां दम खेल अपारया। निज मन्दिर अन्दर रक्खे वास, प्रीती नीती अपर अपारया। आपे होया रहे दास, पंचां देवे कलि सरदारया। काया सुंञी जगत प्रभास, एका होया अन्ध अंध्यारया। जन भगतां मानस देही करे रास, गगन अकाश खेल अपारया। सत्तां लोकां रक्खे वास, सत्तां चरना हेठ लताड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत जगाए नाड़ी नाड़या। जीउ पिण्ड तन खेत, मन बौरानया। कलिजुग माया लगा हेत, जीव शैतानया। गुरमुखां लिख्या लेख हरि महीने चेत, आपे आप कर पछानया। साढे तिन्न हथ्थ रक्खे नींह, सोहँ नाम सच पैमानया। कलिजुग चढ़ी दुपहर जेठ, साया हेठ ना कोई रखानया। माया भुल्ले राजे राणे वड वड सेठ, नर हरि ना किसे पछानया। अन्तिम भन्ने कौड़े रेठ, बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, जीउ पिण्ड जिस पछानया। जीउ पिण्ड जल धार, कँवल प्रकाशया। मानस देही पैज संवार, रसना जपया हरि स्वास्सया। लक्ख चुरासी आर पार, गेड़ा मुक्के गर्भ वास्सया। नौ दर दरवाजे रक्खे बाहर, हरिजन मिल्या शाहो शाबास्सया। दसवें खोल्हे बन्द किवाड़, साचा मण्डल साची रास्सया। सतारां हाढ़ी दिवस अपार, पुरख अबिनाशी गुर संगत तेरा होए दासन दास्सया। नाता तुटे जूठे झूठे मीत मुरार यार, एका एक नाता होए सहाई पृथ्वी अकास्सया। एका पुरख एका नार, सृष्ट सबाई होए ख्वार, ना कोई जाणे पुरख बिधातया। हरिजन जन हरि अन्तिम कलि उतरे पार, पारब्रह्म जिस मात पछानया। जीउ पिण्ड तन साज, मन्दिर उसारया। कलिजुग रक्खण आया लाज, जोती जामा भेख अपारया। प्रगट होए देस माझ, चार वरनां रक्खे सांझ, जाति पाती कमलापाती आप गुआ रिहा। दर दर मंगे हरि भिखार, चरन प्रीती वस्त अपार, सतिजुग साचे तेरी धार, करे खेल अलक्खना लाखिआ। सतारां हाढ़ी शब्द उडार, लोआं पुरीआं होए बाहर, जन भगतां करे कराए बन्द खुलास्सया। नौ दुआरे सच दरबार, शब्द सिँघासण कर त्यार, आसण लाए जोत प्रकाशया।

काया मन्दिर महल्ल अपार, चौदां लोक रिहा उसार, जीव जन्त ना पाए सार, ना कोई जाणे आस पास्सया। अतल वितल शतल सरकार, साचा देस बल द्वार, बावन जामा पुरख अबिनाशया। तलातल महातल बन्ने धार, रसातल गुण आप विचार, लोक पताल रक्खे वास्सया। बाशक सेजा हरि निरँकार, सहँसर मुख छत्र झुलार, दोए सहँसर जिह्वा विचार, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत करे प्रकाशया। गुर गुर संगत चरन द्वार, मन बौरानया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, चित वित कर सर्ब ध्यानया। गुर मन्त्र शब्द अपर अपार, सोहँ रसना रस वखानया। गुर चरन प्रीती साचा जन्तर, चरन धूढ़ जगत अशनानया। मानस देही आप बणाए साची बणतर, काली कूट ना दिशा वखानया। वेख वखाए गगन गगनंतर, सर्ब घटां घट जाणी जाणया। सर्ब धाम प्रभ सदा रहंतर, गुरमुख विरले मात पछानया। रसना जिह्वा जिह्वा जप गुर मन्त्र, कथना कथ कथी वखानया। बेमुख भौंदे देस देसंतर, मन्दिर अन्दर श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत रोग सोग गंवाए, जगत विजोग अन्त चुकाए, तन मन बन्ने शब्द साचा गानया। तन मन बन्ने शब्द गाना। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, साचा राग कन्न सुणाना। देवे वस्त नाम माल धन्न, ठग्ग चोर ना किसे उठाना। कलिजुग जीव माया अन्न, ब्रह्मपार ना किसे पछाना। जूठा झूठा भार ल्या बन्न, वेले अन्त ना कोए उठाना। धर्म राए दर देवे डंन, कुम्भी नर्क निवास रखाना। गुरमुख साचे साचा जन, चरन कँवल कँवल चरन गुर कर ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म इच्छया पूर कराए, हउमे हँगता रोग मिटाए, किरपा कर श्री भगवाना। आदि पुरख अनाद अनाहद बाणीआ। लेखा लिखिअ आदि जुगादि, हरि वडा शाह शाहानीआ। वेख वखाणे सर्ब ब्रह्माद, ब्रह्मा विष्न महेष अंडज जेरज उत्भज सेत्ज चारे खाणीआ। पुरीआं लोआं लए लाध, दीपां खण्डां वंड वंडाणया। अगम्म अगम्मड़ा माधव माध, आपे जाणे आपणी बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग चुकाए तेरी अन्तिम काणीआं। आदि पुरख अगम्म, बोध अगाध्या। माता कुक्ख ना पए जम्म, पवण स्वासी लए ना दम, ना करे किसे अराध्या। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, आपणा आप आपे साध्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द चलाए शब्द लिखाए खुल्हे भेव बोध अगाध्या। हरि पुरख अपार, दया वन्तया। पूरन ब्रह्म रिहा विचार, हरिजन साचे साधन संतया। मानस देही कर्म विचार, मिलाए मेल नर हरि कन्तया। जूठा झूठा धवले भार, मात धरत करे बेनन्तीआ। कलिजुग तप्पया अन्नयार, झूठा डौरू इक्क वजन्तया। प्रगट हो विच संसार, लक्ख चुरासी खोज खुजन्तया। जन भगतां खोल्हे बन्द किवाड़, जगत विकारी ताला इक्क जुड़न्तया। लोकमाती आई हार, सतारां हाढ़ी भेख धार गुणी गुणवन्तया। जीआं

जन्तां सुण पुकार, सच दर सच्ची सरकार, आप आपणी बूझ बुझन्तया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चले चलाए आपणी चालन्तया। चढ़या दिवस सुभाग, संत सिक्ख गुर जागया। प्रभ अबिनाशी हथ्थ आपणे पकड़े वाग, सरन सरनाई जो जन लागया। आप बुझाए आत्म तृष्ना आग, जगत विकारा जाए भागया। सतारां हाढ़ी मेल कन्त सुहाग, धोवण आया काया दाग़िआ। सोहँ सुणना साचा राग, सुन अगम्मो आया भाग, जोती साया विच ब्रह्माद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोया मात जागया। चढ़या दिवस सुभाग, हरि जन साकीआ। पुरख अबिनाशी जामा धारे, लोकमात चुकाए लहिणा देणा बाकीआ। शब्द सुनेहड़ा देवे वर, कदे ना जन्मे ना जाए मर, साचा जाम प्याए बण बण साचा साकीआ। अक्खर वक्खर नाम जपाए, बजर कपाटी तोड़े पत्थर शब्द सथ्थर हथ्थ उठाए, बन्द किवाड़ी खोल्हे ताकीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, एका एक रखाए शब्द साचा राकीआ। शब्द राकी हरि सुल्तान। लक्ख चुरासी जून खाकी, आत्म जोती हरि भगवान। कोए ना दिसे मात आकी, हरि जोधा सूरा वड बलवान। एक एक पाकन पाकी, लक्ख चुरासी जन्त शब्द आण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन हरि हरि जन साचे रसना गाण। सचखण्ड प्रधान सच स्वामी। एका एक हरि निशान, सदा सदा सदा निहकामी। शब्द उडे नाम उडाण। घट घट घट अन्तरजामी। कोई ना सुझे पीण खाण, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रहे आपणा हाणी। सचखण्ड सिक्दार हरि निरवैरया। आपे जाणे आपणी धार, चित वित गुप्त गहर गंभीरया। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार, सुन अगम्म कराए चेरीआ। पल्ले नाम धन्न ना कोई दंम, इक्क सुहाए मन्दिर अचल अटल सोहँ सच्चा देस सुनहरिया। ना कोई मात वल छल, कलिजुग वहिण झूठा वहि रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे जल थल चार कुट्टां जूठा झूठा वरते कहरया। सचखण्ड सच धार शब्द परवानया। ना कोई दिसे ठग्ग यार, ना कोई जन्त जीव बेमुहानया। ना कोई दीसे पिता पूत संग माँ, ना कोई दिसे हाणी हाणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे भेव सर्ब प्राणीआं। सचखण्ड सच भूम हरि उपजाया। पुरख अबिनाशी रिहा झूम, एका सेजा आप विछाया। लछमी चरन रही चूम, लाल भूशन रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साचे मण्डल साची रास बणाया। सचखण्ड जोत जोत अमोल्लया। सचखण्ड प्रभ जोत वरन गोत ना कोए बोल्लया। सचखण्ड सगल समग्री एका आहार, दूसर फोलण नाही फोल्लया। सचखण्ड अगम्मड़ी जोत, ना कोई राग दिसे ढोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, सच दुआरा एका खोल्ल्हया। सचखण्ड सच सलाह हरि रघुनाथया। साची पुरी भगत मलाह,

धुर दरगाह दित्ता सच्चा साथया। इक्क वखाए साचा राह, गलों कटे चुरासी फाह, लेखा लिखे मस्तक माथया। गुरमुख साचे दए बहा, वेख वखाणे थांउँ थाँ, त्रैलोकी नाथया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लेखा आपे जाणे, लेख लिखाए मस्तक साचे माथया।

★ १७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी गुर संगत दी चुरासी कट्टी अते निरविघन लंगर चलाया गया। सारे राजे महाराजयां अते जगत गुरूआं संतां नूं शब्द भाजी फेर के सद्दया गया मगर इस दिन उत्ते ना आए। केवल संत लाभ सिँघ, भगवान सिँघ सैदपुरों आए बाकी सारी हरिसंगत सी।

सत्त रंग दा निशान साहिब दा झण्डा चढ़ाया। जिस दे उत्ते सत्तां दीपां दे नाम लिखे होए हन। जो सत्त रंग जोत दे प्रकाश नूं दस्सदे हन। झण्डा साढे तिन्न तिन्न हथ्थ चारों तरफ है। निशान साहिब चवीं हथ्थ उच्चा है। एह काका जगदीश सिँघ दी संस्कार वाली जग्हा बणाया है।

११३ ०५

हरिसंगत सतारां हाढ़ नूं इक्ठी सी ते विहार कीता गया सी।
निहकलंक नरायण नर जोत सरूपी खेल कर रिहा है जी।
शब्द दी धारा नाल सर्ब जगा रिहा है। शब्द दी धार नाल सर्ब मिटा रिहा है।
शब्द दे अधार नाल पार करा रिहा है। गुरमुख विच जोत प्रवेश है।
आपे गोबिन्द दस दस्मेश है। भेखाधारी दर दरवेश है।
शब्द सिँघासण हरि हमेश है। हरिसंगत वड्याई मात।
नौं दरवाजे दा जगत द्वार बणाया है। दसवें आपणा डेरा आपे लाया है।
लिख लेख सर्ब सुणाया है। प्रभ जोती खेल रचाया है।
कलिजुग दी माया अते हँकार ने किसे गुर गद्दीदार अते साध संत नूं सुरत नहीं आउँण दित्ती। ★

★ १७ हाढ़ नूं एहनां नूं शब्द भेज के सदया गया सी, परन्तु आए नहीं सन। उन्हां दे नाम एह हन :—
डा: राजिन्दर प्रसाद, प्रधान मंत्री पंडत जहावर लाल नेहरू,
महाराजा : पटियांला; फरीदकोट; संगरूर; कपूरथला; बिरला सेठ, चीफ जज्ज, संत कृपाल सिँघ दिल्ली, स्वामी महिता जी आगरा, गुरचरन सिँघ सतिसंग ब्यास, संत मेहर सिँघ जलँधर, लाभ सिँघ फ़कीर चन्द हुशयारपुर, संत रणधीर सिँघ लुध्याणा, गुरबख्श सिँघ एडीटर प्रीत लड़ी। ★

★ १७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

दयावान दयाधार, दयाधार दया कमांयदा। पूरन जोत हरि भगवान, मात जगांयदा। इक्क झुलाए धर्म निशान, साची रंगण रंग रंगांयदा। सत्तां दीपां एका आण, साचे संत हरि बणांयदा। गुर संगत मंगण आया दान, बाल निधाने मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतारां हाढ़ी गुर संगत मात फुल फुलवाड़ी आपणी हथ्थीं मात लगांयदा। गुर संगत फुल फुलवाड़ी, मात उपाईआ। शब्द करे वाड़ी, चारे कुन्टां व्याहवण आया मौत लाड़ी, गुर संगत लाड़ा इक्क रखाईआ। शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी, डोर आपणे हथ्थ रिहा उठाईआ। दरगाह साची रिहा वाड़ी, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, दर दरवेशा हरि रघुराईआ। लक्ख चुरासी मात ख्वारी, पुरीआं लोआं खेल रचाईआ। ब्रह्मा चारे मुख रिहा उग्घाड़ी, वेख वखाणे जंगल जूह पहाड़ी, लोकमात केहड़ी कूट होए रुशनाईआ। सिँघ पाल पकड़ उठाए फड़ के दाढ़ी, निहकलंक कलि जोत जगाईआ। गुर संगत देण आया वर, साची बणत आप बणाईआ। धर्म राए तेरा चुक्के डर, प्रभ आपणे लड़ बंधाईआ। शब्द सिँघासण ऊपर खड़, सचखण्ड दरवाजा रिहा खुल्हाईआ। नौ दुआरे करे बन्द, गुरमुखां दसवें बूझ बुझाईआ। इक्क नुहाउँणा प्रभ आत्म साचे सर, अन्दर मन्दिर मैल गंवाईआ। सिँघ मनजीता गया तर, साचा दर आप सुहाईआ। जगत जगदीसे मिले वर, शब्द निशाना रिहा झुलाईआ। गुर संगत ना जन्मे ना जाए मर, सतारां हाढ़ी मिली वड्डिआईआ। आत्म झोली सभ दी रिहा भर, आत्म जोत इक्क जगाईआ। साची करनी रिहा कर, दूसर बणे ना कोई सहाईआ। साध संगत जाए तर, जो सरनी आए सीस झुकाईआ। जगत विकारी शब्द डण्डा रिहा छड़, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ उठाईआ। अन्दरे अन्दर पंजां तत्तां नाल रिहा लड़, आपे बूझ बुझाईआ। तोड़न आया किल्हा हँकारी गढ़, सच महल्ल उप्पर चढ़, आपे कुण्डा लाहीआ। दर दरवेश अग्गे खड़, नर नरेशा बांहों

फड़, ब्रह्मा विष्न महेषा रहे सीस झुकाईआ। सोहँ अक्खर जाणा पढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, दस्म दुआरी बाहर रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तन चाढ़े रंगत, हरि बनवारी वणज वपारी भेख भिखारी भेख वटाईआ। काया चोली रंग चलूल हरि चढ़ाया। लेखा चुकाए अगला पिछला मूल, साचा संग आप निभांयदा। आपे कन्त हरि कन्तूहल, सोहँ फुल भेंट चढ़ांयदा। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, हरि साचा आप झुलांयदा। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत निशाना धुर दरगाही इक्क बिबाणा लोकमात आप चढ़ांयदा। शब्द बिबाणा कर त्यार। पुरख अबिनाशी बन्ने धार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सतिजुग साचा ख़बरदार। दर दुआरे आए साचे, जोत सरूपी जामा धार। वेख वखाणे भाण्डा काचा, लक्ख चुरासी हरि ठठयार। हरिजन साचा साजण साजा, मंगण आया दर भिखार। एका अक्खर हिरदे वाचा, मिल्या मेल हरि निरँकार। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप चुकाए बैठ सच सच्चे दरबार।

★ १७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी निशान साहिब चढ़ान समें हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

निरवैर निरवैर निरवैर निरवैरया। निरवैर निरवैर निरवैर जोत निरँजण इक्क पसर पसारया। निरवैर निरवैर निरवैर चार वरनां देवे एका मजन, भेव चुक्के ऐर गैरया। निरवैर निरवैर निरवैर साचा एका सज्जण, जगत चुकाए मेर तेरया। निरवैर निरवैर निरवैर जन भगतां पड़दे आया कज्जण, कलि कर कर आपणी मिहरया। निहकलंक नरायण नर, एका धार शब्द अपार विच संसार बहा रिहा। निहकलंक निहकलंक निहकलंक पुरख अकालया। शब्द डंक राउ रंक बणे मात दुलालया। आप सुहाए थान बंक, जोत जगाए अञ्याणे बालया। मिले मेल वड्याई जिउँ भगत जनक, साची रंगण रंग रंगा रिहा। आत्म जोती लाए तनक, गुर संगत मेल मिला रिहा। हरि करे निमस्कार बार अनक, गुर संगत पूरा हरि दर घर साचे पा ल्या। दूजे दर ना होए मंगत, साध संत गुर पीर मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा शिवदवाला होए खालीआ। एका एक पुरख अपारा, शब्द सरूपी रंग अपारा, दो जहानी होए दलालया। जन भगतां बणे मात सहारा, सोहँ देवे शब्द नगारा, तन मन्दिर विच टिका ल्या। वजदा रहे वारो वार, चारो दिशा ना कोई विचारा, अनहद डण्डा हरि उठा ल्या। सति सरंगी सतया तारां, छत्ती रागां वसे बाहरा, वेद पुराणां भेव ना पा ल्या। वेला चुकया चार यारा, ईसा मूसा एका रंग रंगा रिहा। खिड़ी रहे मात गुलज़ारा, अमृत बरखे निझर धारा, सुरपति राजा इन्द प्रभ साची सेवा ला ल्या। साचा किया भेंट दुलारा,

लहू मिझ बणाया गारा, साढे तिन्न हथ्थ महल्ल उसारा, गुर संगत सेव कमा रिहा। प्रभ बन्ने आपणी धारा, निहकलंकी खेल अपारा, गुर गोबिन्द जो लिखा ल्या। जन भगतां बणे सहारा, खिच ल्याए चरन दुआरा, ना कोई नर ना कोई नारा, एका रंगण हरि रंगा रिहा। चोबदार सच्ची सरकारा, अट्ठे पहर देवे पहरा, शब्द डण्डा हथ्थ उठा ल्या। लोकमात लए अवतारा, लक्ख चुरासी होई ख्वारा, रथ रथवाही राह न्यारा, प्रभ साचा हुक्म सुणा रिहा। आप सुहाए द्वार बंका, जोत जगाए बार अनका, शब्द वजाए साचा डंका, साधां संतां आप हिला रिहा। करे खेल बार अनका, बेमुख मूर्ख मुग्ध तारे जिउँ दुआरे गनका, गुर संगत साची रंगत इक्क चढ़ा रिहा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा नाम इक्क निरँजण, साची अलख जगा रिहा। अलख निरँजण आप दातार। दाता दर्द दुःख भय भंजन, सृष्ट सबाई मीत मुरार। गुरमुख साचे दर बहाए दया कमाए अमृत धार इक्क प्याए, लक्ख चुरासी कीनी बाहर। दर घर साचे मेल कराए, आत्म सर इशनान कराए, दुरमति मैल मात गंवाए, भवजल बेड़ा कर जाए पार। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा कर त्यार। साचा बेड़ा कर त्यार, कंध उठांयदा। कलिजुग डिगा मूंह दे भार, सरगुण कोई ना पकड़ उठांयदा। निरगुण रूप हरि करतार, जोती जामा भेख वटांयदा। तिन्नां लोकां नर सच्ची सरकार, पुरीआं लोआं भार उठांयदा। जन भगतां साचा मीत मुरार, जगत निशाना इक्क उठांयदा। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, पूर्ब लहिणा मात चुकांयदा। सोलां करे कराए तन श्रृंगार, प्रेम मैहन्दी हथ्थ रंगांयदा। शब्द वटणा अपर अपार, गीत सुहागी सोहँ गांयदा। आपे पुरख आपे नार, गुरमुख लाड़ा इक्क त्यार करांयदा। सतारां हाढ़ी दिवस विचार, चिट्ठी कुली भाग लगांयदा। मानस जन्म ना आए हार, सिँघ मनजीता राह वखांयदा। सोलां मग्घर हो त्यार, गुर संगत आपणा लड़ फड़ांयदा। पिच्छे आउँणा वारो वार, ना करना कोई हुदार, साचा धाम इक्क वखांयदा। मिल्या मेल पुरख भतार, आत्म होई ठंडी ठार, साचे सोमे तारी लांयदा। किरपा करे नर निरँकार, देवे वर सगल पसार, पुरी इन्द्र राह वखांयदा। शब्द सिँघासण कर त्यार, एका जोत मात प्रकाश भेख पखण्डा दए निवार, साची धार बनाँयदा। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा कर्म आपे आप करांयदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ा, जगत अगम्मड़ी कार। ना कोई मात पित ना कोई पिता माई अम्मड़ा, जोत निरँजण इक्क अकार। हड्ड मास ना कोई चम्मड़ा, आप आपणा रिहा उसार। जोती जोत सरूप हरि, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी एका एक इक्क अकार। एका एक अकालया। दूजी ना कोई रक्खे टेक, साचा शब्द नाल उठा ल्या। तीजे कदे ना लगे सेक, पवण स्वास सेवा ला ल्या। चौथे घर

सदा बिबेक, पीणा खाणा हरि चुका ल्या। पंचम आपे रिहा वेख, दूसर संग ना कोई वखा ल्या। छेवें छप्पर माया टेक, गगन पतालां सर्ब उठा ल्या। सत्तवें सति पुरख निरँजण सदा आदेस, ना मरे ना कदे जिवा ल्या। सति पुरख निरँजण सति सति सतिवादया। जुगा जुगन्तर जीव जन्त बणाए बणत, दे मति शब्द सिक्खा ल्या। नाड़ी बहत्तर ना उब्बल रत, साचे वत नाम बिजा ल्या। वेले अन्तिम रक्खे पति, सिर आपणा हथ्थ रखा ल्या। आपे जाणे मित गत, कलिजुग काले कर्म कमा ल्या। शब्द बणाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वा ल्या। सत्तां दीपां पकड़े नत्थ, शब्द डोरी हथ्थ रखा ल्या। प्रभ देवण आया वट, सोहँ वटना अग्गे ला ल्या। आपे जाणे घट घट, भेव किसे ना पा ल्या। लक्ख चुरासी भौंदी तीर्थ तट्ट, काया मट ना जोत जवाल्या। सतारां हाढ़ी खुल्हाए साचा हट्ट, काया मन्दिर इक्क खुल्हा ल्या। ना कोई खेल बाजीगर नट, जोत निरँजण जामा पा ल्या। गुरमुखां तन पहनाए एका पट, गुरमुखां मेल हरि द्वारया। साचा लाहा जाण खट्ट, लक्ख चुरासी फंद कटा ल्या। तन नगारे इक्क लगाए सोहँ शब्द साची सट्ट, साचा ताल इक्क वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत साची देवे वर, दर आए दर्शन पा ल्या। दर दुआरे आए दर्शन पाया। काया मन्दिर सोहे चुबारे, नर हरि साचा विच वसाया। माया जंदे लाहे भारे, सोहँ डण्डा हथ्थ रखाया। जोती जगे अगम्म अपारे, मदिरा मास जिस तजाया। सतारां हाढ़ी दिवस विचारे, निहकलंक डंक वजाया। मन तन हँकारे, दुरमति मैल दए गंवाया। प्रगट होए विच संसारे, पड़दा उहला आप चुकाए गुर गोबिन्दा बणया लिखारे, सम्बल देस डेरा लाया। जीव जन्त ना पाए सारे, हरि मन्दिर पढ़ पढ़ थक्के भरम भुलाया। आपे डोबे आपे तारे, जुगा जुगन्तर खेल अपारे, जन भगतां देवे नाम सहारे, साचा वंञ नाम लगाया। कलिजुग बेड़ा अन्त किनारे, प्रभ अबिनाशी डोबे मंञधारे, उलटा गेड़ा रिहा दवाया। गुर संगत सौणा पैर पसारे, पुरख अबिनाशी पहरेदार, धर्म राए ना आए द्वार, लक्ख चुरासी सेहरा लाया। जगे जोत अगम्म अपारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाया। गुर पूरा कर्म कमाए करे विचारया। जन भगतां दया कमाए, मिले वड्डिआई विच संसारया। साचा मार्ग रिहा वखाए, मानस देही अपर अपारया। लक्ख चुरासी हथ्थ ना आए, लेखा लिखे वारो वारया। गुरमुखां मेल हरि रघुराए, जम का जेड़ा आप कटा रिहा। वेले अन्त होए सहाए, साचे बेड़े फड़ चढ़ा रिहा। दरस दिखाए थाउँ थाएँ, दूर नेड़ा ना कोई वखा रिहा। फड़ फड़ बांहों राहे पाए, लोआं पुरीआं पैरां हेठ झसा रिहा। दरगाह साची माण दवाए, सच सिँघासण डेरा लाए, जोत निरँजण इक्क रघुराए, गुरमुख साचे माणक मोती साचा हार बणा रिहा। कलिजुग अन्तिम जगे जोती, ना कोई वरन ना कोई गोती, गुरमुखां उठाए काया सोती, शब्द

डण्डा मगर लगा रिहा। दुरमति मैल गई धोती, बाती जोत इक्क इकलौती, इन्द इन्द्रासण सेव कमा रया। करोड़ छिआनवें सतारां हाढ़ी रोती, छड्ड सिँघासण इन्द्र मुख भुवा रिहा। लोकमात कलिजुग जोती, लोआं पुरीआं धार बन्ह्‌ा रिहा। लोआं पुरीआं बन्हे धार, वड संसारया। ब्रह्मे कर्म विचार, पुरख अबिनाशी पाए सार, अन्तिम आया पार किनारया। वेद वखाणे मुखड़े चार, कलिजुग सहिणे पए दुखड़े, छड्डणी पई सच्ची सिक्दार, ना देवे कोई सहारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साचा कर्म आप कमा रिहा। साचा कर्म कमाए, सहिज सुख वास्सया। कलिजुग गया धर्म गंवाए, गुरमुखां मन रहे उदासीआ। ठग्ग चोर यार चारों कुन्ट फिरन हलकाए, गुर मन्दिर अन्दर मदिरा मासीआ। साचा नाउँ ना दिसे किसे थाएँ, एका भुल्लया पुरख अबिनाशीआ। ना कोई पिता ना कोई माए, ना कोई जाणे शाह शाबासीआ। जन भगतां देवे ठंडी छाए, करे बन्द खुलासीआ। वेले अन्तिम होए सहाए, मानस जन्म करे रहिरासीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोत जगाए मात पताल पृथ्वी अकाशया। मात पताल अकाश, सर्ब वयाप्या। नौ अठारां मात गर्भ दस दस मास, आपे जाणे आपणा जाप्या। मानस देही पवण सुवास, रसना गाए हरि स्वासया। कलिजुग माया करे नास, प्रगट होए घनकपुर वासीआ। सच मण्डल घर साची रास, मिले मेल शाहो शाबास्सया। पूरन करे हरि जी आस, हउमे रोग चिन्त गुवास्सया। सद वसे आस पास, नर नरायणा रहे दास्सया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, पवण उनन्जा छत्र झुलास्सया। साचा छत्र झुलाए हरि जगदीशरा। कलिजुग तेरी औध विहाए, ना कोई जाणे तपी तपीशरा। साध संत सर्ब भुलाए, भेव ना पाए मुन रिख रिखीशरा। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए, आदि अन्त हरि साचा ईश्रा। वेस अनेका डेरा लाए, जोत सरूपी हरि भेव ना पाए, ब्रह्मा विष्न महेषरा। ब्रह्मा विष्न महेष जगत ना जाणया। आपे वसे आपणे देस, गुरमुख विरले मात पछानया। जुगा जुगन्तर धारे भेस, निरगुण सरगुण खेल अपारया। प्रगट होए माझे देस, गुर गोबिन्दा लेख लिखा रिहा। काया नगरी सम्बल देस, हरि सुहा ल्या। ना कोई जाणे रिखी रखेश, लिख्या लेखा पूर करा रिहा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, शब्द डण्डा हथ्थ उठा रिहा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, हरि आपणा आप छुपा रिहा। गुरमुख विरले तीजे नेत्र लैण वेख, जिस बजर कपाटी खुल्ह‌ा रिहा। मेट मिटाए बिधना लिखी रेख, सतारां हाढ़ी हठ कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल देस मुख छुपा रिहा। सम्बल साचा देस सतिगुर जाणया। सस्सा सहिज सुभाए, पूरन हरि पछाणया। दूसर किसे ना थाएँ, कलिजुग भुले जीव अञ्याणया। जोत निरँजण इक्क रघुराए, साचे मन्दिर रिहा जगाए, अटल महल्ल अचल्ल आपे वसे सच टिकाणया।

निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस कर, करे खेल महानया। सम्बल देस तेरी वंड, प्रभ आप कराई भारत खण्ड। सदी चौधवीं देवे दंड। लक्ख चुरासी टट्टी गंढु। शब्द फड़ी हथ्थ चण्ड प्रचण्ड। बेमुख जीव नार दुहागण, चारों कुन्ट दिसे रंड। गुरमुख साचे नार सुभागण, पुरख अबिनाशी साचा नाम रिहा वंड। कलिजुग रैण अन्धेर घोर, गुरमुख साचे संत सुहेले जागण, प्रभ आप उठाए लक्ख चुरासी बन्न्ही पंड। पुरख अबिनाशी चरनी लागण, बाल जुवानी ना जाए हंढ। पूरन होइण मात भागण, पल्ले बन्न्हण नाम गंढु। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, शब्द खण्डा हथ्थ फड़, मेट मिटाए भेख पखण्ड। भेख पखण्ड हरि मिटावणा। राजा राणा पकड़ उठावणा। साचा शब्द इक्क चलावणा। चारे वरनां राह वखावणा। एका साची सरना आप समझावणा। आपे चुक्के मरना डरना, प्रभ समरथ सिर हथ्थ टिकावणा। आपे जाणे करनी करना, दूसर भेव किसे ना पावणा। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस जोत धर, शब्द डंक वजावणा। सम्बल देस तेरी हद्द। काया मन्दिर वज्जे नद। गुरमुख साचे संत रिहा सद। बेमुख घर घर पींदे मध। दयावान दया निध दाता भाग लगाए दया कमाए विष्नूं वंसी वड सरबंसी, भगत जनां साची देवे वड्याई विच सहँसी, बेमुख मिटाए जिउँ काहना कंसी, शब्द डोरी बन्न्हाए बंध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल देस वेस कर, गुरमुखां वखाए चौथा पद। सम्बल नगर अपार, चार दुआरया। निर्मल जोती इक्क अकाला, वेख ना सके कोई संसारया। साचा भरया अमृत सागर डूंघी गागर, दसवें महल्ल आप टिका रिहा। वेखे रंग रती रत्नागर, निर्मल होए कर्म उजागर, दर दुआरे दर्शन पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस जोत धर, जोती जामा भेख वटा रिहा। सम्बल देस सुरत संभाल। गुरमुख लभ्भे साचे लाल। बेमुखां पैरां हेठ दब्बे, शब्द घोड़ा मारे छाल। लक्ख चुरासी नाल फबे, आपे शाह आपे कंगाल। गुरमुख साचे माणक मोती लभ्भे, लक्ख चुरासी विचों भाल। प्रगट होए दरस दिखाए झब्बे, धुर दरगाही सच दलाल। अमृत चोए काया नभ्भे, खिड़े फुल इक्क गुलाल। गुर संगत पार लँघाई पुरख अबिनाशी सतारां हाढ़ी, रंग रंगाया इक्को लाल। साचा रंग लाल रंगाया। एका साचा लाल भेंट चढ़ाया। सिँघ मनजीता अग्गे लाया। गुर संगत तेरा राह बणाया। आपे आया बण के मंगत, फड़ के बांहों अग्गे लाया। जन भगतां कटे भुक्ख नंगत, सच वस्त हरि झोली पाया। धन्न कमाई धन्न रंगण, गुर संगत साचा खेड़ा आप वसाया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल देस वेस हरि रंगण लाल हरि रंगाया। रंगण लाल रंग अमोला। पुरख अबिनाशी साचा तोल तोला। सोहँ रक्खे साचा बोला। लोआं पुरीआं कुण्डा खोल्हा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, जोत सरूपी पाया चोला। सोहँ शब्द खण्डा दो धारया। कलिजुग उठया नौजवान, चारों कुन्टां रिहा ललकारया। फड़ फड़ मारे बेईमान, निहकलंकी जामा धारया। ना कोई दिसे जीव शैतान, मानस देही जगत हंकारया। जूठी झूठी करे बन्द दुकान, काया मन्दिर खोल्हे इक्क मकान, दीपक जोती सच टिका रिहा। कलिजुग तेरी लाहुण आया मकाण, सोहँ बणया इक्क निशान, हरि साचा आप बणा रिहा। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, लाल रंग हरि रंगा रिहा। रंग रंग रंगीन, रंग अपारया। आपे जाणे हरि प्रबीन, लोक तीन खेल रचा रिहा। अन्तिम सीआं हथ्थ साढे तीन, माया झूठा भरम भुला रिहा। सृष्ट सबाई भन्ने हँकारी बीन, मुहम्मदी दीन आप जगा रिहा। लोआं पुरीआं रिहा छीन, ब्रह्मा शिव सीस झुका रिहा। करे खेल बरस हरि तीन, साचे घोड़े जीन कसा रिहा। साचा मार्ग जगत महीन, गुरमुख विरला सुरत चढ़ा रिहा। पाए दर्शन हरि प्रबीन, अन्दरे अन्दर जो ध्या रिहा। लक्ख चुरासी विच्चों हरि हरि आपे वक्खर कीन, जोती सिक्ख हरि भिखारया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सोहँ अक्खर वक्खर मात पढ़ा रिहा। सोहँ अक्खर पढ़, माण वड्डियाईआ। धुर दरगाहे लाउँणी जड़्ह, झूठा झेड़ा मात गवाईआ। साचे पौड़े जाणा चढ़, उच्चे डण्डे हथ्थ रखाईआ। पंजां चोरां नाल लड़, दर दुआरे दए दुरकाईआ। सच दुआरे अग्गे खड़, दोए जोड़ भुल्ल बख्शाईआ। जगे जोत बहत्तर नाड़, मदिरा मास जो दए तजाईआ। झूठया तत्तां रिहा फड़, शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सम्बल देस डेरा लाईआ। जन भगतां दर दुआरे अग्गे खड़, साची सेवा रिहा कमाईआ। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, चार वरनां इक्क दर, साचा मात खुल्हाईआ। खुल्हे साचा दर, मात निरंकारया। आपे वेखे मार झात, बेमुख भुल्ले नौ द्वारया। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, माया राणी पसर पसारया। कोई ना पुच्छे अन्तिम वात, चारों कुन्ट पासा हारया। गुर पूरा देवे शब्द दात, आपे बणे पिता मात, गुर संगत तेरा मात सहारया। गुर चरन प्रीती निभे साचा नात, गुर संगत साची इक्क जमाइत, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ा रिहा। मिले मेल कमलापात, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे संत जनां आपणी गोद उठा रिहा। आपणी गोद उठाए, दया कमांयदा। अमृत साचा सीर प्याए, हउमे रोग गंवांयदा। नेत्र नीर ना कोए वहाए, झूठी माटी काया हाटी, झूठा नाता जगत तुड़ांयदा। सोहँ शब्द तन चीर पहनाए, आप आपणी दया कमाए, साचा राह वखांयदा। कलिजुग वेला अन्त अख़ीर, एका सोहँ शब्द तीर चलाए, चारों कुन्ट वहीर कराए, ना आए कोई किसे बचांयदा। भगत जनां प्रभ होए सहाए, आप आपणी सरन लगाए, सतारां हाढ़ी खुशी मनाए, रीत आपणी आप चलांयदा।

१२१

०५

जगत नीती भगत रीतया। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीती, वेला साचा बीतया। गुरमुख विरले मानस देही जीती, काया करे ठंडी सीती, अमृत जाम एका पीतया। लोकमात रहे अतीती, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, काया करे पतित पुनीतया। देवे वर दरबाना, दर द्वारया। होए आप मेहरबान, नर हरि सच्ची सरकारया। एका शब्द निशान, ना कोई दूसर मात लटका रिहा। सतारां हाढ़ी बणे बिबाण, पुरख अबिनाशी करे ध्यान, सतिजुग तेरी बणे शान, साचा समां आप सुहा रिहा। आपे गोपी आपे काहन, आपे राम रहीमा आप रहिमान, आपे दीन आपे इस्लाम, भरम भुलेखा सर्ब चुका रिहा। पूरन करे आपणे काम, ना कोई लाए हरि जी दाम, साची रीती जगत वखा रिहा। नौ द्वार इक्क मकान। पुरख अबिनाशी साजन साजे, पंज बिठाए विच शैतान। भगत जनां दर साचा जागे, पहरा देवे श्री भगवान। कलिजुग वेला अन्तिम पड़दा काजे, होए सहाई रक्खे लाजे, सोहँ देवे साचा दान। लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा पुरख अबिनाशी करे निबेड़ा, प्रगट जोत देस माझे, आप आपणा साजन साजे, भरम भुलेखे सर्ब भुलाईआ। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल देस वेस कर, साचा धाम आप सुहाईआ । साचा धाम सुहाए, जोत प्रकाशया। एका साचा नाम वखाए, वरन अवरनां बणत बणाए, आदि पुरख अबिनाशया। साची करनी किरत कमाए, अमृत साचा सीरत प्याए, नेत्र नीर प्रेम वहानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, रंगण रंग लाल रंगानया। लाल रंग कर त्यार। भगत जनां प्रभ पावे सार। दर घर साचे साची नार, साची सेवा अमृत मेवा, रसना जिह्वा गुण विचार। कौस्तक मणीआ साचा थेवा, ब्रह्म पारब्रह्म मेल भतार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणी कार। लाल रंग हरि रंग रतया। जन भगतां निभाए साचा संग, इक्क रखाए साचा नतया। होए सहाई अंग संग, चरन प्रीत निभाए नतया। दूजा दर ना लैणा मंग, शब्द धीरज देवे जतया। शब्द घोड़े कसे तंग, सोहँ चलाए साचा रथया। लोआं पुरीआं रिहा लँघ, लक्ख चुरासी कलिजुग मथया । वड दाता सूरा सरबंग, महिंमा जगत अकथना कथया। जन भगतां अमृत आत्म देवे गंग, लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, रंग लाल अपार साची वत्थया। रंग लाल अपार धाम असथूल है। असुते आदि प्रकाश, ना कोई जाणे मूल है। एका एक पुरख अबिनाश, जीव जन्त ना जाए भूल है। ना कोई जाणे पृथ्वी अकाश, लेखे गिणे ना धरत धवल धूल है। रंगण लाल रंग करे आपे कन्त कन्तूहल है। लाल रंग अपार, लखन लख्या। शब्द घोड़े हरि अस्वार, दहि दिशा किसे ना दिस्सया। लक्ख चुरासी खाली होए भण्डार, काया भाण्डे होए सक्खया।

काया मन्दिर रिहा विचार, चित्रगुप्ती लेखा लिख्या। पताल आकासी इक्क उडार, सत्तां दीपां पाए हिस्सया। लक्खण दीप तेरी धार, जूठा झूठा पीसण पीस्सया। कलिजुग काया गई हार, माया लग्गी तन विस्सया। पुरख अबिनाशी जामा धार, मेट मिटाए कुरान हदीस्सया। शब्द चलाए अपर अपार, साचा धर्म बीस इकीस्सया। साचा शब्द छत्र झुलार, एका एक जगत जगदीस्सया। राउ रंकां करे ख़बरदार, आए हार विच उनीस्सया। कोई ना दिसे मीत मुरार, सम्मत अठारां पीसण पीस्सया। नारी छड्डे कन्त भतार, सम्मत सतारां खाली खीस्सया। सोलां करे खेल अपारा, उठे शाह जगत अबनूसीआ। पन्दरवें पन्दरां कर्मां धार, चौदां लोक किसे ना दिस्सया। सम्बल देस वेस अपार, जोती जामा हरि जगदीस्सया। चौदां तबकां रिहा विचार, संग मुहम्मद चार यार, ना कोई करे कराए मात रीस्सया। तेरां मेल साचे यार, संत भबीखन विच संसार, राज इन्द्र हरि जगा रिहा। जाए दर दरबार, करे खेल अपर अपार, वाली हिन्द आप सुणा रिहा। चार वरनां एका प्यार, निहकलंकी खेल अपार, साचा डंक इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साल बार्वें बारां वेस माझे देस बारां बीस हरि जगदीस राग छतीस आपणा भेव छुपा रिहा। भेव छुपाए हरि जगदीशा। शब्द गाए राग छतीसा। सोहँ ध्याए दन्द बतीसा। शक्त वखाए बीस इक्कीसा। बूंद रक्त जन लेखे लाए, शब्द सरूपी ईसा मूसा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे साचा रस एका। साल बारवां बीस बारां। गुर संगत मिल्या मीत मुरारा। साची चाढ़े नाम रंगत, होए सहाई अंगद इक्क वखाए सच दुआरा। मानस देही ना होए भंगत, दर घर माणी साची संगत, मिल्या दरस पुरख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साल बार्वें खेल कर, बारां बारां भरम निवारा। बारां बारां चौबीस, हरि जगदीसा। छत्र झुल्ले जगदीस, बीस इक्कीसा। सृष्ट सबाई रिहा पीस, किसे ना दीसा। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, करे कराए आपणी रीसा। लक्खण दीप लेखा लिख, लिख लिख लेख पुचाईआ। साची सिख्या लैणी सिक्ख, धर्म युध हरि रघुराईआ। सच दुआरे मिलदी भिख, नाम वस्त इक्क रखाईआ। जगत तृष्ना मिटे तृख, आत्म भुक्ख गंवाईआ। किसे हथ्थ ना आवे मुन रिख, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां डेरा लाईआ। जन भगतां लेखा रिहा लिख, सतारां हाढ़ी मेल मिलाईआ। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी फंदन फंद कटाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटाए। लक्ख चार मानस देही आप आपणे कंठ लगाए। नौ लक्ख प्रभ कीने वक्ख, अन्दर जल रिहा डुबाए। दस लक्ख प्रभ रिहा रक्ख, जेरज खाणी आप टिकाए। ग्यारां लक्ख हरि प्रतक्ख, ढिड भार रिहा रिड़ाए। बीस लक्ख बनास्पत पत, अबिनाश हरि रिहा लगाए। तीस लक्ख

लेखा लिख, चार पाए उप्पर टिकाए। लक्ख चुरासी देवे सिक्ख, जोत निरँजण विच समाए। कलिजुग मंगण आया भिख, जोत सरूपी जामा पाए। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, दर दुआरा इक्क वखाए। इक्क दुआरा दर, सच दरबारया। नौ दुआरे वर, शब्द श्रृंगारया। दसवें साचा सर, पर्दा उहला आप हटा रिहा। भरम भुलेखा दूर कर, जोत निरँजण डगमगा रिहा। इक्क वखाए साचा घर, आत्म सेजा आसण ला रिहा। मिले मेल हरि नारी नर, सुहागी कन्त आप अख्वा रिहा। ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी बणत बणा रिहा। निहकलंक नरायण नर, जन भबीखण देवे साचा वर, लक्ख चुरासी जम की फाँसी धर्म राए भार उठा रिहा। धर्म राए कलि करे विचार। कवण करे कलि ख़बरदार। सम्बल देस आवे डर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। गुर संगत देवे वर, सतारां हाढ़ी दिवस विचार। साचे पौड़े जाणे चढ़। दस्म दुआरी मल्ल द्वार। पुरख अबिनाशी अगे खड़, एका देवे शब्द हुलार। गुर संगत लड़ ल्या फड़, लक्ख कलीआं रंग करतार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अमृत बरखे किरपा धार। लाल रंग रंग लाल। भगत ख़ज़ीना धुर दरगाही सच दलाल। आपे आप आप प्रबीना, एका नाम वस्त धन्न माल। चोर ठग्ग किसे ना छीना, तोड़े अन्तिम जगत जंजाल। ना कोई वेखे मज़्हब दीनां, कलिजुग चले अवल्लड़ी चाल। गुरमुख होए ना किसे अधीना, गगन मस्तक दीपक जोती साचे थाल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, रंगण लाल वेस कर, शब्द निशाना उत्ते कीना चढ़े शब्द बिबाण। चढ़े शब्द बिबाण विच अकास्सया। साढे तिन्न हथ्थ कलिजुग तेरा इक्क निशान, आप उठाए पुरख अबिनाशया। गुरमुख साचे संतां करे पछाण, तिन्नां लोआं रक्खे वास्सया। उत्तों वेखे मार ध्यान, सत्तवें घर सहिज सुभास्सया। सत्तवां रंग हरि भगवान, लच्छमी भूशन लाल गुलास्सया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लक्खण दीप करे उदास्सया। शब्द निशाना करया, तीर उठांयदा। गुरमुख विरला तरया, सरनी पड़या सीस निवांयदा। साचा घाड़न हरि जी घड़या, साध संत किसे ना फड़या। राजा राणा कोई ना लड़या, चारों कुन्ट कलिजुग पापी दड़या, निहकलंक खण्डा उठांयदा। जूठा झूठा पाप सड़या, कलिजुग तेरा मूधा ठूठा, दर दरबारों गया रूठा, तेरा लड़ किसे ना फड़या। धर्म राए दर टंग्गया पुट्ठा, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, सच निशाना एका फड़या। शब्द निशान धन्न, शब्द संदेसड़ा। रंक राजानां लैणा मन्न, पुरख अबिनाशी साचा वेसड़ा। शाह सुल्तानां देवे डन्न, भाण्डा भरम देवे भन्न, सोहँ साचा फड़या तेसड़ा। गुर संगत सुण लै कन्न, सोहँ अक्खर मन देवे बन्ऩ, ओअँ सोहँ एका एक नेत्र वेखड़ा। हरया काया करे तन, सतिजुग चढ़े साचा चन्न, बेमुखां कढ्ढे भरम भुलेखड़ा। गुरमुख तेरी कमाई, धन्न तेरी वड्याई। धन्न

१२३ ०५

जन भगत तेरी वड्याई। धन्न हरि संत हरि संत हरि संत तेरी सेव कमाई। धन्न दर दुआरे अगे खड़, निहकलंक जोत जगाई। लोकमात करे रुशनाई। दे मति रिहा समझाई। इन्द इन्द्रासण गया तजाई। शिव शंकर पाए दुहाई। ब्रह्मा रिहा सीस झुकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना रिहा वखाई। शब्द निशाना दूर उच्च मुनारया। सर्ब गुणां भरपूर, चढ़या विच संसारया। सत्त रंगण जोती नूर, काया मन्दिर महल्ल मुनारया। अट्ठे पहर इक्क सरूर, जन भगत सच दुलारया। कलिजुग माया कीनी दूर, एका एक चरन प्यारया। प्रभ साचा हाजर हज़ूर, गुर संगत तेरे दर द्वारया। आसा मनसा रिहा पूर लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। बेमुखां कलि दिसे दूर, मदिरा मास जाम पया रिहा। हरिजन सुणाए शब्द तूर, अनहद राग इक्क वखा रिहा। जोती जगे नूर नुरंतर काया मन्दिर होए उजाला जिउँ कोहतूर, भेद अभेदा भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, कलिजुग काला वेस कर, जन भगतां दर दरवेश अलख अलख अलख, गुरमुख तेरी अलख जगा रिहा। अलख जगाए अलखणा लेख हरि जगदीस। गुरमुख साचा कीना वख, चारों कुन्ट भौंदे लक्ख, छत्र ना झुल्ले किसे सीस। काया भाण्डे होए सख, कोए सके ना कलिजुग रक्ख, जूठा झूठा पीसण पीस। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे खेल बीस

इक्कीस। शब्द निशाना जगत हरि, खुल्ले भगत द्वारया। गुरमुखां मिले नाम वर, प्रभ भरे शब्द भण्डारया। सच समग्री मात धर, करे कराए वणज वपारया। जोत इक्ग्री नर हरि, आपे सुणे पुकारया। लक्ख चुरासी चुक्के डर, साची तरनी जाए तर, गुरमुख साचा सरनी सीस झुका रिहा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुर संगत तेरा एका भार आपणे सीस उठा रिहा। गुर संगत तेरा भार, आपणे सीस उठाया। गुर संगत कलिजुग वेला अन्तिम अन्त सदा रहणा त्यार, सच सुनेहड़ा रिहा पुजाया। जूठा झूठा कलिजुग जीव, मीत मुरार कोई दिस ना आया। भैण भाई झूठा हित, पुरख अबिनाशी राखो चित, सदा सुहेला होए सहाया। ना कोई मात ना कोई पित, माया ममता जगत बंधाया। काया अमृत आत्म तन, सोहँ साचा बीज बिजाया। लग्गे फल सतारां हाढ़ी, साची बणत अमृत मेवा हरि लगाया। लेख लिखाया महीने चेत, इक्क रखाया काया खेत, साचा हल्ल हरि चलाया। पुरख अबिनाशी चेतन्न चेत, जन भगतां करे साचा हेत, बेमुख जानण जिन्न प्रेत, सिँघ पूरन दे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द सुनेहड़ा साचा घल्ल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जल थल सर्ब रिहा जगाया। सिँघ पूरन प्रवेश जगत दस्मेशया। पुरख निरँजण करो आदेस, सद वसे काया देस, गुरमुख विरले वेख्या। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, आदि पुरख रहे हमेश, निरगुण रूप

सर्ब समा रिहा। कलिजुग काया काला वेस, गुर दस्मेस उच्च पीर आप कहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, अन्त निबेड़ा जगत झेड़ा धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा, आपणी हथ्थीं आप करा रिहा। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा, हरि साचा आप करांयदा। कलिजुग तेरा अन्त निबेड़ा, काया खेड़ा सर्ब ढाहिंदा। पंजां तत्तां चुक्के झेड़ा, माया बेड़ा आप डुबांयदा। सोहँ लाए इक्क उखेड़ा, लोआं पुरीआं जड़्ह उखड़ांयदा। आपे देवे उलटा गेड़ा, लक्ख चुरासी भेड़ भेड़ा, साची सुध ना किसे रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आप आपणी बणत बणांयदा। बणी बणत बलकार, हरि भगवानया। उठया हो त्यार, सतारां हाढ़ी दिवस विचार, चारों कुंट करे ध्यानया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, जन भगतां पहरेदार, राजे राणे करे ख़बरदार, साध संत पछाणे गुण निधानया। कवण जिह्वा कवण मंत, कवण सुहेला साचा संत, कवण दर मेला जीव जन्त, गुण अवगुण रिहा विचारया। लक्ख चुरासी भुल्ली जीव जन्त, किसे ना मेला साचे कन्त, जूठा झूठा माया लूठा, कलिजुग जीव भरे हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, साचा वेस गुर दस्मेस करे खेल अपारया। नीला घोड़ा हरि शृंगार, शब्द असमानया। कलिजुग जीव लभ्भण गुवार, विच जहानया। पुरख अगम्म अगम्मड़ा नीली छत्त आया पाड़, वाली दो जहानया। धुर दरगाही साचा लाड़, धरत मात तेरा वेखे इक्क अखाड़, सत्तां दीपां वंड वंडाणया। लुकया रहे ना कोई झाड़, आप चबाए आपणी दाढ़, शब्द सरूपी ल्याए धाड़, ना कोई वेखे पठाणीआ। नाम गोला काड़ काड़, बजर कपाटी रिहा पाड़, जोती अग्नी रिहा साड़, मेट मिटाए जगत निशानया। ख़ुशी मनाए सतारां हाढ़, जगी जोत बहत्तर नाड़, गुरमुख साचे संत जनां साची बणत बणानया। बणत बणाए मात, सगला साथया। मिल्या मेल हरि कमलापात, चढ़े चढ़ाए शब्द साचे राथया। चरन प्रीती बन्न्हे नात, मस्तक तिलक सोहँ माथया। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, त्रैलोकी नाथ हरि रघुनाथया। सगल सहाई एका साथ, आपे रक्खे दे कर हाथ, हरिजन साचा आप पछानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्रह्मण गौड़ उत्तम रक्खे जातया। गौड़ ब्रह्मण ब्रह्मण गौड़, गौड़ी गौड़ किसे ना जानया। सर्ब सहाई रिहा दौड़, वेद व्यासा हुक्म किसे ना जाणया। कलिजुग माया लग्गी कौड़, ज्ञानी ध्यानी होए निधानया। ना कोई वेखे साचा पौड़, पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणया। कलिजुग रीठा दिसे कौड़, किसे हथ्थ ना आए अंजील कुरानया। प्रगट होए ब्रह्मण गौड़, साचा ब्रह्म पारब्रह्म निशानया। साचा ब्रह्म पूरन जाण। पारब्रह्म कर मात ध्यान। साचा धर्म जगत निशान। मिटे वरम बेईमान। पूरन कर्म इक्क भगवान। मानस देही

साचा चर्म, लेखे लाउँणा विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्रह्मण भेख धरा ल्या। हाटी एका सौदा विच दुकान। एका हट इक्क दुकान इक्क मकानया। एका पट शब्द निशान, झुलदा रहे विच जहान, हरि भगवान एका तीर्थ एका तट्ट एका निर्मल साचा मट, काया अन्दर हरि भगवानया। दुरमति मैल रिहा कट्ट, दूई द्वैती मेटे फट, शब्द पट्टी बन्ने झट्ट, गौड़ ब्रह्मण हरि मेहरबानया। जोती जामा खेल बाजीगर नट, कलिजुग जीव किसे ना पछानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आपे पहरे आपणा बाणया। गौड़ ब्रह्मण गौड़, गुरमति विचारया। रसना किसे ना दस्से लम्भा चौड़, ना कोई पावे सारया। रसना रस फीका दिसे कौड़, पूरन ब्रह्म ना कोई विचारया। जन भगतां अन्दर लग्गी औड़, पारब्रह्म किरपा कलि धारया। जोती जामा आया दौड़, सम्बल नगरी आसण ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आपे पहरे आपणा बाणया। सच समग्री साची रास। गौड़ ब्रह्मण रक्खे पास। पारब्रह्म पुरख अबिनाश। एका ब्रह्म हरि होया दास। साचा धर्म जगत साबास। पूरन कर्म मण्डल हरि रास। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्रह्मण भेख धर, आपे वसे आस पास। गौड़ ब्रह्मण गुणी गहीरा। पारब्रह्म सति सरीरा। किसे दिस ना आए नाड़ी चरम, आपे दस्से धीरज धीरा। आपे जाणे आपणा कर्म, आपे जाणे आदि अन्त अखीरा। लक्ख चुरासी भुल्ली भरम, केहड़ी कूटे चुक्के बीड़ा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, चारे वरन इक्क कराए आपे जाणे हस्त कीड़ा। हस्त कीड़ प्रभ जाण उच्च समेरया। जन भगतां बन्ने बीड़, ना लाए देर, कलि कट्टण आया भीड़या। सिँघ शेर हरि हरि शेर दलेरया। लक्ख चुरासी पई भीड़, हरि आप भुलाए कर कर हेरा फेरया। धर्म राए दर रिहा पीड़, जूठे झूठे दर दर घेरया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग करे अन्त निबेड़या। गौड़ ब्रह्मण साचा गाओ। काया मन्दिर तिन्न सौ सठ्ठ हाडी, कलिजुग खेती वढुण आया बणके साचा बाढ़ी। गुरमुखां लाड लडावण आया, साची गोद उठावण आया, लक्ख चुरासी विच्चों रिहा काढी। सच सिँघासण डेरा लावण आया, पुरख अबिनाशी चार वरनां चारों कुन्टां एका घेरा पावण आया, लक्ख चुरासी रही फाडी। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गौड़ ब्रह्मण वेस कर, अन्त निबेड़ा इक्क कराया। गौड़ ब्रह्मण उत्तम गोत। धुर दरगाही साचा जामन, पुरख अबिनाशी निर्मल जोत। नेड़ ना आए कामनी कामन, दुरमति मैल रिहा धोत। कलिजुग तेरी अन्धेरी शामन, गुरमुख उठाए दया कमाए, सतारां हाढ़ी कोई ना जाणे सोत। निहकलंक कलि जामा पाए, लक्ख चुरासी फंद कटाए, शब्द सेहरा सीस गुंदाए, बीस इक्कीस दया कमाए, राग छतीस ना कोई गाए, कुरान अंजीलां

१२७ ०५

वक्त चुकाए, वेद पुराणां कोई ना थाएँ, साचा हुक्म सुणांयदा। होया वक्त अख़ीर, पीर फ़कीरया। कलिजुग लथ्था चीर, ना देवे कोई धीरया। हउमे लग्गी कलिजुग पीड़, अट्ठे पहर तन पीड़या। गुरमुख विरला बन्ने बीड़, आए दर घत वहीरया। एका रंगन हस्त कीड़, अमृत देवे साचा सीरया। जन भगतां कट्टण आया भीड़, कर कर आपणी मिहरया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी लाहे चीरया। लक्ख चुरासी लथ्थे चीर, दए दुहाईआ। भैण भ्रावां तुटे नात, ना होए कोई सहाईआ। बालक माता छुट्टे सीर, दुध्धां थनी वहाईआ। कलिजुग तेरा वक्त अखीर, ना कोई जाणे शाह फ़कीर, शाह सुल्तानां विच जहानां, राज राजानां दिस ना आईआ। राज राजान सोए पैर पसारया। प्रगट होए वाली दो जहान, जोती जामा भेख न्यारया। शब्द चढ़ाए इक्क निशान, सत्तां रंगां अपर अपारया। सत्तां दीपां पाए वंड, वेख वखाणे नौ खण्ड, विच वरभण्ड जोत निरंकारया। सोहँ फड़े चण्ड प्रचण्ड, आपे करे खण्ड खण्ड, चारों कुन्ट नार रंड, सुहागी कन्त ना कोई हंढा रिहा। कलिजुग मिटे भेख पखण्ड, अन्तिम औध गई हंढ, प्रभ अबिनाशी साचा झण्डा आप झुला रिहा। साचे झण्डे जगत निशाने। गुरमुखां बन्ने नाम गाने। मिल्या मेल गुण निधाने, सोहँ शब्द धुर परवाने, लेख लिखाया घर बहाने, पहली चेत श्री भगवाने, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। आप आपणे संग समाने, दूसर कोई भेव ना जाणे, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, गौड़ ब्राह्मण वेस कर, साचा खेड़ा आप वसाया। इन्द्र आया द्वार बण सवालीआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, इन्द्रलोक कर रखवालीआ। हरिजन साचे शाहो शाबास, लोआं पुरीआं बणया पालीआ। मंगणा एका दर द्वार, दो जहानी नर हरि वालीआ। तख्त सिँघासण इक्क त्यार, ओथे दिसे करना खालीआ। दर दुआरे रोवे धाहां मार, भुल्ल गईआं अपच्छरां नित नवालीआ। वेला अन्तिम आए हार, बणे जग कालख कालीआ। करोड़ तेतीसा सुणे पुकार, देवे वर शब्द सुखालीआ। सोहँ रसना लैणा उचार, मिले मेल सच्चे बनवालीआ। आउँणा मात सच्चे दरबार, बीस इक्कीस जोत निरालीआ। झुल्ले छत्र सच्ची सरकार, कौस्तक मणीआ साची डाल्हीआ। सोहँ खिड़े सच्ची गुलज़ार, चाढ़े रंग लाल गुलालीआ। हरिजन भरया रहे भण्डार, साची वस्त ना होए खालीआ। शब्द तूरत इक्क अपार, मूर्त नूरत इक्क अकालीआ। अगाध बोध शब्द अधार, साचा तोल आपे तोलीआ। करना वणज सच्चा वपार, चरन प्रीती घोल घोलीआ। इन्द इन्द्रासण वेख विचार, पुरी इन्द्र अन्तिम डोलीआ। सतारां हाढ़ी दए हुलार, मेघ माला लए झकोलीआ। बरसे मेघ किरपा धार, कलिजुग माया हरि जी तोलीआ। गुरमुख धूढ़ ना मिले दुष्ट दुराचार, निहकलंक मारे बोलीआ। गुर संगत साची उतरी पार, आए दर रंगण चोलीआ। मानस देही पैज संवार, काया कुण्डा आपे खोल्ल्या। छोटा मुंडा

कर त्यार, शब्द पाया साची डोलीआ। सिँघ मनजीता नर निरँकार, चरन बहाए साची गोलीआ। पुरी इन्द्र बणे सिक्दार, करे खुशी अमुल अमोलीआ। शब्द मिल्या अपर अपार, करोड़ तेतीसा रिहा बोलीआ। निहकलंक लए अवतार, सम्बल देस काया चोलीआ। गौड़ ब्राह्मण ख़बरदार, पारब्रह्म विच वचोल्लया। लोकमात साचा यार, आप उठावण आया हरिजन डोलीआ। आपे बण सच्ची सरकार, आपणा तोल आपे तोल्लया। चरन उठाए पहली वार, इन्द इन्द्रासण अन्तिम डोल्लया। वेखे नेत्र खोल्ह उग्घाड़, पुरख अबिनाशी कला सोल्लया। चारे कुन्टां दए उजाड़, गुरमुख विरला गाए सोहँ सच्चा ढोल्लया। प्रगट होए उप्पर पहाड़, साचा पत्थर उच्च उठोल्लया। गौड़ ब्राह्मण हरि निरँकार, समेरू पर्बत रिहा पाड़, बजर कपाट काया चढ़ खोल्ल्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मन्दिर साचे हरि जी बोल्लया। इन्द इन्द्रासण बण भिखार, चरन निमस्कारया। मंगण आए हरि द्वार, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। पाई भिच्छया अपर अपार, नाम झोली हरि भरा रिहा। देवी देवा कर्म विचार, सुरपति साचा चरन लगा रिहा। अलख अभेव जोत निरँकार, अमृत मेवा खवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साची सेवा आप लगा रिहा। साची सेवा आप लगाए, इन्द्र राज्जया। गुरमुख वेख थांउँ थाएँ, आप संवारे आपणे काज्जया। सदा रक्खे ठंडी छाएं, सतारां हाढ़ी रक्खे लाज्जया। अमृत तीर्थ हरि नुहाए, कलिजुग काया भाण्डा भाज्जया। नर हरि सच्ची सरनाए, पुरी इन्द्र आए भाज्जया। साची सेवा लाए मेघ बरसांयदा। गुरसिक्खां मिले अमृत मेवा, देवी देवा आप अख्वांयदा। साची मणी मस्तक थेवा, रवि ससि प्रकाश मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचे देवा सेवा लांयदा। देवत सेवा दर परवान। किरपा करे हरि भगवान। अमृत मेघ धर्म निशान। शब्द तेग नौजवान। लक्ख चुरासी एका आण। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गौड़ ब्राह्मण पुरख सुजान। गौड़ ब्राह्मण रंग गूढ़ा। लाड़ी मौत हथ्थीं पाए एका चूड़ा। गुरमुख तेरे दर ना आए, दिवस रैणी मंगे धूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सर्बकला आपे भरपूरा। सर्बकला भरपूर, ब्राह्मण ब्राह्मया। आपे जोती नूर सच कर्मया। आपे शब्द अनहद तूर, आपे शब्द स्वासा दमया। आपे पवण सति संतोखी तूर। काया मन्दिर अन्दर झूठे चंमिआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस जोत धर, गौड़ ब्राह्मण आपे आप जंम्मया। गौड़ ब्राह्मण पया जम्म। गगन पतालां हिले थम्म। इन्द्र रोवे छम्म छम्म। पूर कराए प्रभ आपणे कम्म। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, शब्द सरूपी लाए दम। शब्द सरूप दम कलि स्वास्सया। आपे वसे काया चम्म, वेख वखाणे पृथ्वी अकास्सया। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, रोणा धोणा ना कोई हास्सया। ना प्रभ रोवे

छम्म छम्म, ना होए वैरागी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास्सया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, ब्राह्मण गौड़ा लेख लिखास्सया। काया मन्दिर पुरख सुजान। दीपक जगया डूंघी कन्दर, प्रगट होया हरि भगवान। हरि जू आया हरि हरि मन्दिर, आपे करे सच पछान। कलिजुग माया तोड़े जन्दर, अट्ठे पहर मार ध्यान। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, भेव ना पाए श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस जोत धर, गौड़ ब्रह्मण इक्क निशान। गौड़ ब्रह्मण इक्क निशाना। जोत सरूपी हरि भगवाना। वडा शाहो भूपी, ना कोई रंग ना कोई रूपी, जोत निरंतर सति सरूपी, आपे करे भगत पछाना। लक्ख चुरासी अन्ध कूपी, जूठा झूठा पवण धूपी, सच संग ना कोई रखाना। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गौड़ ब्रह्मण वेस कर, गुरमुखां बन्न्ह्ण आया गाना। गुरमुखां बन्न्हे गाना नाम निशाना। मिले मेल श्री भगवाना। मिटे आवण जाणा, साचा मिले नाम दाना। धुर दरगाही सोहँ बाणीआ। सतिजुग झुल्ले सति निशानया। सत्तां दीपां रंग रंगाए, तख्तों लाहे राजे राणया। प्रगट होए बेपरवाहे जगत मलाहे, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, इक्क उठाए तीर कमानया। रसन उठाए कमान, सोहँ चिल्ला हरि चढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी नौजवान, उच्च टिल्ला जगत तुलांयदा। लोआं पुरीआं मार ध्यान, शिव शंकर पकड़ जगांयदा। कलिजुग झुलया इक्क निशान, सच हुलारा हरि निरँकारा आपणा आप दवांयदा। सोहँ चले इक्क जैकारा, चार वरनां इक्क अधारा, एका पल्ला हरि फड़ांयदा। कलिजुग भुल्ल ना जीव गंवारा, माया रुल ना बण हँकारा, अन्तिम छड्डणा पए संसारा, जूठा झूठा मोह विकारा, ना कोई पुरख ना कोई नारा, एका साजण मीत मुरारा, नर निरँकारा आप अख्वांयदा। काया मन्दिर सच दुआरा, अन्दरे अन्दर खेल अपारा, चौदां हट्टां वणज वणजारा, नाम दाम एका वणज करांयदा। अन्तिम करे पल्ला भारा, शब्द भल्ला होए रख्वारा, कलिजुग पाए डूंघी डल्ला, सतिजुग सुट्टे मूंह दे भारा, ना कोई मात उठांयदा। धरत मात करे पुकारा, कलिजुग पूत होया हैंस्सयारा, पुरख अबिनाशी भुल्लया तेरा इक्क दुआरा, जूठा झूठा वणज करांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सारा, जोत सरूपी जामा धारा, सम्बल देस हरि विचारा, पूरन खेड़ा हरि वसांयदा। वस्सया काया नगर खेड़ा, नगर द्वारका। जन भगतां बन्न्हे बेड़ा, वेला नर हरि सच्ची सरकार दा। कलिजुग लाए इक्क उखेड़ा, बेड़ा डोबे पाप अपराध दा। पंज पंजाइनी चुक्के झेड़ा, अन्तिम करे हक नबेड़ा, साचा हुक्म सच्ची सरकार दा। लक्ख चुरासी उलटा गेड़ा, धरत मात तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, हरि साचा खेल खिलारदा। हरि साची खेले खेल, चार कुन्ट दहि दिशा रास्सया। जन भगतां करे मेल, घनकपुर वास्सया। सोहँ शब्द चढ़ाए तेल, मानस जन्म करे कलि रास्सया। जोती जामा रंग नवेल, वेख वखाणे

अकास अकास्सया। आपे गुर आपे चेल, आपे सज्जण हरि सुहेल, आपे करे बन्द खुल्लास्सया। आपे मीता आपे चीता आपे प्रीता सज्जण सुहेला आपे कुरान आपे गीता, आपे खाणी आपे बाणी इक्क चलाए जगत रीता, आपे जाणे वेद पुराणया। आपे अमृत आत्म मध पीता, आपे करे ठंडी सीता, साचा राह इक्क वखानया। लक्ख चुरासी परखण आया नीता, सोहँ फड़ी हथ्थ मधाणीआ। नाम लाए बत्ती इक्क पलीता, कलिजुग वेला अन्तिम बीता, घर घर रोंदी दिसे सवाणीआ। कलिजुग माया होए विछोड़ा जिउँ रामा सीता, शब्द बीड़ा हनुमंत उठानया। मिले मेल रघुवंस कन्त, चारों कुन्ट साची शब्द सुणाए बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस जोत धर, गौड़ ब्रह्मण करे पछाणया। गौड़ ब्रह्मण लैणा लभ्भ। अमृत चोणा कँवल नभ। कलिजुग माया देणी दब्ब। पुरख अबिनाशी साची साया, अट्ठे पहर नज़री आया, भरम भुलेखा दूर कराया, पर्दा उहला बाहर कढाया, प्रगट होए दरस दिखाया, अन्दरे अन्दर जोत निरँजण इक्क जगाया, अमृत प्याला इक्क प्याया, गुरमुख साचे एका मध। अट्ठे पहर इक्क रखाया, साचा शब्द तुरीआ तूरत उपजे नद। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे नाम दाज। आई मात दात, जोत निरंकारया। सोहँ शब्द वड करामात, वजाए डंक अपर अपारया। आप चलाए साची गाथ, लोक परलोक रंग अपारया। सच सिँघासण हरि रघुनाथ, करनी इक्क करा रिहा। शब्द घोड़ा रक्खया साथ, नीला जोड़ा जोड़ जुड़ा रिहा। सतिजुग टिका सोहँ माथ, नाम तूरा आप वजा रिहा। प्रेमी जोड़ा अकथन अकाथ, साचे चरन आप छुहा रिहा। ब्रह्मण गौड़ सगला साथ, साचा पौड़ा इक्क लगा रिहा। लक्ख चुरासी किसे ना आवे हाथ, आदि अन्त ना कोई बता रिहा। हरिजन चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। कलिजुग वागां पकड़े हाथ, सतिजुग पौड़ा आप चढ़ा रिहा। सगल वसूरे जायण लाथ, रीठा कौड़ा हरि भन्ना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, नीली छत्ते पौड़ा ला रिहा। नीली छत्ते लाए सन्न, हरि रघुवंस्सया। नीला घोड़ा कसे तंग, मंगे मंग सर्ब सरबंस्सया। माया रीठे देवे भन्न, कोटन कोट मात सहंस्सया। गुरमुखां सीतल करे तन, अमृत ल्याए साचा कास्सया। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, आपे जाणे आपणा सरबंस्सया। सम्बल देस कर त्यारी, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द घोड़ा हरि न्यारी, सोलां कलीआं आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारी, नीली धारी इक्क रंगांयदा। कंचन वेस रंग मदारी, रंगण रंग हरि रंगांयदा। वेखे रंग कबेर भण्डारी, भाणा हरि वरतांयदा। कलिजुग माया हैंस्सयारी, जीआं जन्तां तिक्खी आरी, मन तन सच रिहा पाड़ी, धर्म धीर ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, नीले घोड़े तंग कसांयदा। पंचम जेठ खेल रचाई। शब्द घोड़े मंग मंगाई।

चित्ता अस्व नाउँ रखाई। लोआं पुरीआं रिहा जगाई। सतारां हाढ़ी जगत बरात, नीला घोड़ा वेखण आई चाईं चाईं। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, कोई ना देवे बूंद स्वांत, साध संत रोंदे थांउँ थाँईं। पुरख अबिनाशी साचा नात, हरिजन मेला कमलापात, वेले अन्तिम पकड़े बाहीं। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, साची सेजा रिहा विछाई। साची सेजा आसण लांयदा। प्रेम जोड़ा पैरीं पाउँणा। आदि नीला संग रखाउँणा। जुगादि पीला तन छुहाउँणा। कमर कस दंग वखाउँणा। चुरासी लक्ख हथ्थ वखाउँणा। राजा राणा फड़ फड़ ढाउँणा। सुघड़ स्याणा दिस ना आउँणा। जूठयां झुठयां भन्न वखाउँणा। ईसा मूसा भेड़ भिड़ाउँणा। मंग मुहम्मद संग रलाउँणा। रूसा चीना नाल नचाउँणा। दे मति आप समझाउँणा। सर्बकला आपे बख्शिंद, आपे मारे कढ्ढे जिंद, आप पछाणे साची बिन्द, भगत जनां हरि साचा माण दवाउँणा। लक्ख चुरासी करे निन्द, गुरमुख साचे वगे अमृत धार सागर सिन्ध, सतारां हाढ़ी साचे तीर्थ सर सरोवर इक्क इशनान कराउँणा। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी धर्म राए दी देवे फाँसी, गुरमुखां फंद आप कटाउँणा। धर्म राए प्रभ देवे मति, लेखा इक्क लिखांयदा। संत जनां दा धीरज यति, आपणी हथ्थीं आप रखांयदा। सोहँ देवे साचा तत्त, पंजां तत्तां नष्ट करांयदा। रसना चरखा लैणा कत्त, साचा सूत्र सर्ब वटांयदा। शब्द विचोले पाउँणी नत्थ, हरि समरथ आप समझांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन आए दर्शन पांयदा। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थ, रंक राजाना शाह सुल्ताना सिँघ मनजीता सदा अतीता, दे मति मात समझांयदा। मात पित कलि छड्डणा नाता, एका मिल्या पुरख बिधाता, उत्तम वेखे हरि जन ज़ाता, नाम धन धन नाम जिस सच घर उपजाता। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वंडण आया सोहँ शब्द सच सुगाता। सोहँ शब्द प्रभ वंडे, वरभण्ड समाया। काया अन्दर सर्ब ब्रह्मण्डे, चौदां लोक भेव ना राया। दस्म दुआरी साचे झण्डे, अमृत पौहल ना कोई खण्डे, दूसर वंड ना कोई रखाया। अग्गे हो कोई ना वंडे, ना कोई जाणे सति सरोवर दे कन्ढे, डूंघा ताल दिस किसे ना आया। गुरमुख विरला मारे छाल, पुरख अबिनाशी जिस दा होए दलाल, तीर्थ नुहाउँणा साचे ताल, प्रगट होए गौड़ ब्राह्मण, भगत जनां दा साचा जामन, साचे मन्दिर हरि सुहाया। निहकलंक नरायण नर, सूहा वेस मात कर, ओंकार साचा देस वसाया। हरि हरि वस्सया देस ओंकारया। तुरीआ हरि का वेस, ना कोई लिखे लेख लिखारया। आपे धारे आपणा भेस, रूप रंग ना कोई विचारया। दीपक लोअ कर्म विसेख, जोत निरँजण हरि प्रवेश, माझे देस खेल अपारया। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेष, गणपति देवे शब्द इक्क हुलारया। पारब्रह्म सदा आदेस, नमो नमो नमो निमस्कारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत

धर, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्राह्मण नाम उचारया। जगत तृष्ना भेख हरि मिटांयदा। दर दुआरे एका सिक्ख, अमृत आत्म जाम पिआंयदा। उज्जल करे मात कुक्ख, साचा सुख इक्क वखांयदा। झूठी काया ना लग्गे दुःख, हरिजन रसना जो गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सूहा वेस नर नरेश आपणा आप वटांयदा। ओंकारा इक्क अकाला। सूहा वेस सच महल्ला। सुन अगम्म अगम्म सुन आपे जाणे थल थला। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दर दुआरा एका महल्ला। जगत सवाली दर मंगे भिख्या। काया मन्दिर खाली, घर लेखा साचा किसे ना लिख्या। सच दुआरे आवे डर, जगत लग्गी तृष्ना तिंखिआ। मंगे जगत जगयासू वर, पुरख अबिनाशी पाए साची भिख्या। जोती जोत सरूप हरि, लेखा लिख्त आपे लिख्या। मंगण वर दर बण सवालीआ। दूजा दिसे ना कोई संग, दर घर साचा दिसे खालीआ। बाल जवानी रही लँघ, अन्त बुढेपा मारे तालीआ। माया ममता वहिण गंग, काया रंग जगत दर मालीआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, जगत जगयासू दर जाए ना खालीआ। साची सिक सिक्ख गुर आस। आपे लेखा रिहा लिख, मात पताल पृथ्वी अकाश। दर दुआरे मंगी भिख, हड्ड नाड़ी पिंजर मास। तृष्ना ममता लग्गी विस रसन स्वास। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, काया खेड़ा होया नास। काया खेड़ा महल्ल मुनारा। अन्तिम बन्ने बेड़ा, हरिजन आए चल दुआरा। बख्शे दात चुक्के झेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, किशना सुखला करे विचारा। किशना सुखला पख प्रधान। किशना वेखे मार ध्यान। अन्ध अन्धेरा सुंञ मसाण। दर दुआरे पाया फेरा, आसा पुन्नी विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे साचा वर, साचा बंधन बंध बंधान। बंधे नाता जगत बिधात। सति सपूता बख्शे दात, आपे वेखे वेख वखाणे दहि दिश चारे कूट उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिवस रात। नाम लगाए एका झूटा ना कोई सवेर ना कोई सञ्झ, ना कोई जाणे कल प्रभात। लोकमात लग्गे बूटा, हरि जी बख्शे साची दात। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच वर, जगत जगयासू पुच्छे वात। काया बूटा लग्गे फल। सच दुआरे आए चल। किरपा कर हरि गिरधारे रक्त बूंदी मार उछल। हड्ड मास नाड़ी कर उज्यारे, करे प्रकाश काया डूंघी डल। नौ अठारां धाम अटल। आपे वेखे काया खल। दसवें मात पूत अपारे, जगत सुरत हिलया नाल। माया राणी पैर पसारे, आपणा मूल गंवाया कल। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, जोती जोत कर उज्यारे। पूत सपूता उपजे लक्ख। नौ अठारां उलटा रुख। शब्द अधारा उज्जल मुख। जीव गंवारा जगत सुख। पारब्रह्म जन पाए सारा, मानस देही उज्जल मुख। भरम भुल्ला जगत गंवारा, घर घर धूंए रहे धुख। दर दर मंगे जगत दुआरा, जगत बूटा रिहा सुक्क। अमृत फल लग्गे काया डाला,

१३२ ०५

जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, इक्क अकोतर उपजे कुक्ख। मात सुलक्खणी कुक्ख मात। पुरख अबिनाश ना खाली रक्खणी, साची देवे वस्त दात। लेखा लिखे अलख अलखणी, ना कोई पुच्छे ज़ात पात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नाता मात बंधाए, पूत सपूता बख्शे दात। इक्क अकोतर इक्क अकाल। नाम देवे साचा सोतर, नेत्र खोल्ह दीन दयाल। सदा सुहेला अगम्म अगोचर, पारब्रह्म पुरख कृपाल। जोती जोत सरूप हरि, एका एक एका बख्शे लाल। एका एक एका धारी। हरिजन मंगे साची टेक, उज्जल मुख वड संसारी। काया सुलखणी बुध बिबेक, शब्द सरूपी फेरे आरी। कलिजुग माया ना लग्गे सेक, हउमे रोग रिहा निवारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कुक्ख मात कराए, हउमे दुखड़ा रोग निवारी। खाली कुक्ख दु:ख मिटे संताप। आप मिटाए जगत तृष्ना भुक्ख, हरिजन बणाए माई बाप। साची सिख्या रहे सिख, हरि किरपा करे आपे आप। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आप बणाए वडा वड प्रताप। मिल्या नाम पूत अति दान। कलिजुग माया ममता मध, कलिजुग भरम ना भुल्ल जीव निधान। पुरख अबिनाशी दर घर साचे सद्द, मंगे दान हो हैरान। धुन शब्द नाद ना वज्जे नद, ना सुन मण्डल होए वैरान। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, संत सुहेले कर पछान। गुरमुख उठ

१३३ उठ जाग, हरि जगांयदा। कलि काया धो दाग़, प्रभ अमृत जल लिआंयदा। हरिजन साचा सुण राग, कलिजुग माया १३३

०५ मात त्याग, पूरन होए वड वडभाग, मानस देही लेखे लांयदा। गुरमुख उठ उठ जाग वेला, वक्त सुहेला मिलणा कन्त ०५

सुहाग। आपे गुर आपे चेला, कलि तेरा सुहाया बाग। दरगाह साची साचा मेला, आपे वसे इक्क अकेला, दिवस रैण रिहा जाग। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां आप बुझावण आया कलिजुग तृष्ना आग। कलिजुग तृष्ना अग्ग जगत जलाया। गुरमुख साचे जाग, आप बणाए हँस काग, सोहँ चोग सच रखाया। बाशक सेजा सोहे नाग, लछमी मन होए वैराग, सीतल शब्द आया। रंग रंगीला मोहण माधव माध, साची सेवा आप सवाया। काया रंगण सूहा पीला आदि, पुरख अनादी जुगा जुगन्तर बणत बणाया। अमृत जाम आत्म रस पी ला, हउमे देवे रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, वरन अवरना आप अख्वाया। वरन अवरना आप रंग राता। सृष्ट सबाई एका सरना, एका जोत पुरख बिधाता। आपे जाणे जम्मण मरना, कलिजुग जीव ना किसे पछाता। प्रगट होए धरनी धरना, तरनी तरना उत्तम ज़ाता। निहकलंक साची सरना, चार वरनां बणाए इक्क जमाता। चार वरन इक्क द्वार। सच दुआरे आपे पाए हरि जी सार, लोकमात ख़बरदारया। नौ दुआरे वेखे मार झात, माया राणी पसर पसारया। कलिजुग

जीव अन्धेरी रात, माया ममता तन जला रिहा। शब्द मिले ना साची दात, सच दुआरा बन्द रखा रिहा। जन भगतां पुच्छण आया वात, शब्द हथौड़ा नाल उठा रिहा। नर नरायण कमलापात, अन्दरे अन्दर मारे झात, त्रै धातां कुफल तुड़ा रिहा। हरिजन मिले त्रैलोकी नाथ, जोत निरँजण साची मात, सोहँ शब्द तिलक लगा रिहा। सतिजुग चले साची गाथ, एका शब्द साचा राथ, गुरमुख साचे आप चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लेखा लिख लिख जाणे भविख्त वाक्, साचा लेखा आप लिखा रिहा। वडभागी वडभाग भरम भउ चुक्कया। सोई आत्म गई जाग, हरया होया तन काया सुक्कया। कलिजुग काला रिहा भाग, दाणा पाणी मात मुक्कया। सतिजुग साचा रिहा जाग, वेला सुहेला आए ढुकया। गुरमुख हँस बणाए काग, बेमुख खपाए धरत मात भार चुक्कया। जोती जोत सरूप हरि, दोहां मेला इक्क घर, लेखा चुक्के खाणा पीणा पाणी हुक्कया। कलिजुग काली धार दए दुहाईआ। सतिजुग साचा हो त्यार, दूर दुराडा रिहा तकाईआ। कलिजुग काला कर्म विचार, चारे कुंटां काली छाहीआ। सतिजुग साचा दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ सतिजुग साची दया कमाईआ। दोहां विचोला हरि निरँकार, परपंच खेल वखाईआ। धरत मात दब्बी भार, दिवस रैण दए दुहाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, दुखी माँ तेरी कुरलाईआ। गोदी करनी ठंडी ठार, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। हरि किरपा करे अपार, सोहँ वस्त झोली पाईआ। गुरमुखां कर तन शृंगार, सोलां कलीआं नाल गुंदाईआ। आप करे आपणी कार, वेखण जाए थांउँ थाँईंआ। पकड़ उठाए नर नार, बिरध जवानां दे मति रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी होए पहरेदार, अट्ठे पहर तेरा सिक्दार, लोकमात बणे सच्ची सरकार, सद सद शब्द ताज सिर रखाईआ। संत सुहेले करने ख़बरदार, फूलन बरखा हरि जी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा सच दुलारा शब्द हलूणे रिहा जगाईआ। शब्द हलूणा मार हरि जगांयदा। कलिजुग भार वध्या दूणा, ना कोए सिर उठांयदा। जगत भाण्डा होया ऊणा, शब्द दात ना कोई भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा वेखे घर, कवण नारी कवण नर, कवण सिँघासण तन सुहांयदा। कलिजुग सच्चा वेख विचारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। मन्दिर महल्ल अचल्ल अटल मुनारे। आपे वेखे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़े। जूठे झूठे माया लूठे जामाधारी भेखाधारी गुरदुआरे मन्दिर अन्दर हाहाकारे। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साची बन्ने मात धारे। कलिजुग काला मुख, लग्गी छाहीआ। लक्ख चुरासी लग्गा दुःख, ना कोई दए मिटाईआ। सतिजुग साचा सुखणा रिहा सुक्ख, प्रभ अबिनाशी दया कमाईआ। जन भगतां करे उज्जल मुख, सोहँ साचा जाम प्याईआ। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, सतारां हाढ़ी खुशी मनाईआ।

१३४ ०५

लक्ख चुरासी मिटी तृष्ना भुक्ख, सच दुआरे रिहा बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे इक्क वर, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। कलिजुग कूड़ी रेख भेख्या। पुरख अबिनाशी रिहा वेख, जोती जामा धरया भेस्सया। सतिजुग साचा मंगे टेक, पुरख अबिनाशी करे बुध बिबेक, लोकमात लग्गे ना कोई सेकया। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे इक्क वर, एकँकार हरि निरँकार जोत निरँजण इक्क अकारा, आदिन अन्ता एकम एकया। सतिजुग साचा इक, इक्क इकल्ला है। कलिजुग काला वेस, चारों कुन्ट पया तरथल्ला है। सतिजुग साचे साची टेक, प्रभ मिल्या इक्क महल्ला है। कलिजुग पापी रिहा वेख, चार चुफेरे वला छला है। जोती जोत सरूप हरि, दोहां देवे इक्क वर, सोहँ शब्द साचा जला थला है। सोहँ शब्द भल्ला हरि निरंकारया। ना कोई जाणे जीव गंवारया। सतिजुग मेटे दूई द्वैती सला, कलिजुग झूठे सीना पाड़या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दोहां देवे इक्क वर, सच दुआरे सतारां हाढ़या। कलिजुग कलि मिले वर, होए अन्त जुदाईआ। चारों कुन्ट आउँणा डर, रैण अन्धेरी छाईआ। लक्ख चुरासी जाणी मर, प्रभ साचा भेड़ भिड़ाईआ। गुरमुख विरला जाए तर, जिस आपणा लड़ फड़ाईआ। अमृत नुहाए साचे सर, साचा ताल हरि सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जन कागों हँस बणाईआ। गुरमुख साचे माणक मोती। एका लेखा रिहा लिखाए,
१३५ ना कोई वरन ना कोई गोती। आत्म घर दीपक इक्क जगाए, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जो दर १३५
०५ मंगे नाम वर, दुरमति मैल जाए धोती। सतिजुग साचे खुशी मनाई। प्रभ अबिनाशी भिच्छया पाई। सोहँ शब्द वज्जी वधाई। ०५
राग रागां रिहा सुणाई। अनहद नादा धुन उपजाई। रसना शब्द एका गाई। मिल्या शब्द बोध अगाधा, लोआं पुरीआं करे रुशनाई। किरपा करे आप रघुराई माधव माधा, भिन्नड़ी रैण नाल रलाई। हरिजन हरि साधन साधा, लोकमात साची करन आया कुड़माई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे तेरी आत्म जोती पुरख निरँजण एका आप व्याही। गुरमुख जोती आत्म नारी, प्रभ साचे आप व्याहीआ। सोहँ देवे शब्द श्रृंगारी, साचा गहणा तन पहनाईआ। धर्म राए दी धी कवारी, लाड़ी मौत दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी वेखे नैण उग्घाड़ी, साचा लाड़ा दिस ना आईआ। गुरमुखां हरि फिरे पिच्छे अगाड़ी, सीस सेहरा साचा लाईआ। चारों कुन्ट करे वाड़ी, पहरेदार इक्क अख्वाईआ। जगे जोत बहत्तर नाड़ी, काया मन्दिर उज्यार कराईआ। किरपा करे सतारां हाढ़ी, गुर संगत मिले वधाईआ। खिड़या फुल सच्ची फुलवाड़ी, रक्खे लाज गुर चरन छुहाई दाढ़ी, कलिजुग साचा माण दवाईआ। गुरमुख चाढ़े साची घोड़ी, आत्म डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे घर रिहा वाड़ी, पंचम कुण्डा आपे लाहीआ। छेवें घर शब्द अपारी, धुनी साचा राग सुणाईआ। सत्तवें घर जोत निरँकारी, सच सिँघासण

आप सुहाईआ। अचरज खेल हरि अपारी, दूसर कोए दिस ना आईआ। लोआं पुरीआं कर उसारी, चौदां हट जाल बणाईआ। ब्रह्मा देवे जोत निरँकारी, चारे मुखड़े नाल लगाईआ। साचे वेदां रिहा उचारी, चारे जुगां धार बणाईआ। नारद सुत करे प्यारी, धर्म राए दी धी कवारी, वेले अन्तिम दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, एका बख्श फूलन साची खारी, हरि आपणे सीस उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर देवे वर, बेमुखां वारो वारी तेरी गोद दए बिठाईआ। निहकलंक कलि जामा पाया। एका साचा राह वखाया। लाड़ी मौत नाल रलाया। जूठे झूठे माया लूठे राजे राणे शाह सुल्ताने हथ्थीं बन्ने गाने, पापां मैहन्दी आप रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे देवे सर्ब वर, आप आपणा दरस दिखाया। लाड़ी मौत करे सलाह। कलिजुग केहड़ा बणे मलाह। झूठा चपू देवे ला। वंञ मुहाणा इक्क बणा। राजा राणा लए बन्ना। सुघड़ स्याणा दए भुला। मुल्लां शेख़ शेख़ मुलाणा मुच्छां दाढ़ी दए कटा। आपे वेखे अन्धा काणा, नेत्र दोवें बन्द करा। कलिजुग तेरा साचा घाण एका पाणा, लक्ख चुरासी बणत बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाड़ी मौत देवे वर, सतारां हाढ़ी हुक्म सुणा। लाड़ी मौत तूं मुटयांर। पहले वेख मुहम्मदी यार। साचा संग कर त्यार। मंगी मंग दर न्यार। रंगी रंग शब्द कटार। संगी संग बीर बेताले, लक्ख इक्क अस्सी हज़ार। कलि कालका खप्पर उठाए, खुशी मनाए वारो वार। जगे जोत इक्क ज्वाले, अष्टभुज सिँघ अस्वार। सिँघ सिँघासण ईसे मूसे होए ख्वार। आपे तोड़े जगत जंजाले, प्रगट होए सच्ची सरकार। गुरमुख वेखे जगत कंगाले, रसना नाउँ रिहा विचार। करे कराए आप प्रितपाले, अट्ठे पहर सदा चले नाले। चले चलाए अवल्लड़ी चाले। साचा देवे शब्द दुशाल, नेड़ ना आए काल महांकाल, साचे घर आप वसा ले। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां दस्से राह सुखाले। जगत वखाए राह, भगत भगवानया। हरि दाता बेपरवाह, कलि चतुर सुघड़ स्याणया। लक्ख चुरासी पाए फाह, तोड़े माण सर्ब अभिमानया। अग्गे कोई ना करे ना, सोहँ फड़या तीर कमानया। गऊ गरीबां पकड़े बांह, तख्तों लाहे राजे राणया। संत सुहेला रक्खे ठंडी छाँ, दर घर साचे देवे माणया। आपे पिता आपे माँ, गुणवन्ता गुण निधानया। घर घर कलिजुग आप उडाए कां, नर हरि ना किसे पछाणया। बेमुख थांउँ थाँ, बेड़ा डोबे बेमुहाणया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां साचा देवे नाम निशानया। साचा देवे नाम निशान, जगत निशानया। किरपा करे आप भगवान, देवे दान वड वड दानया। झुल्लणा एका मात निशान, सत्तां दीपां पुरख सुजानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा रिहा कर, ना कोई जाणे भेव वड

वड दानया। सतिजुग सच निशान, धर्म जैकारया। सृष्ट सबाई इक्क बिबाण, प्रभ साचा आप उडा रिहा। चारे कुन्टां मार ध्यान, शब्द एका इक्क दवा रिहा। आप रखाए एका आण, दूसर होर ना कोई तका रिहा। साचा शब्द देवे पीण खाण, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। सर्ब घटां घट जाणी जाण, घट मन्दिर हरि समा रिहा। इक्क द्वार इक्क भगवान, इक्क हुलारा सच जहान, पीण खाण ना कोई वखा रिहा। धुन नाद अनाहद बान, दस्म दुआरी आप चला रिहा। सरगुण निरगुण इक्क वखाण, त्रैकुटी देस वेस इक्क करा रिहा। आपे जाणे नर नरेश, अजप्पा जाप ना कोई करा रिहा। हिरदे कोल हरि प्रवेश, अठीं तत्तीं फल लगा रिहा। अट्ठे पहर अट्ठे वेस, साचा भेख आप छुपा रिहा। ना कोई जाणे नर नरेश, अन्दरे अन्दर लेख लिखा रिहा। आपे ब्रह्मा विष्न गणेश, विष्न भिखारी आप अख्वा रिहा। आपे धारे रामा भेस, काहना कृष्ना जोत जगा रिहा। कलिजुग भुल्ले जीव दस्मेश, दर दुआरे केहड़े समा रिहा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, सत्तवें घर साचा हरि जोती जोत डगमगा रिहा। आपे नर आपे नरेश, आपे जाणे आपणा वेस, बस्त्र भूशन ना कोई पहना रिहा। साची सेजा हरि प्रवेश, शब्द सिँघासण डेरा ला रिहा। तारा मण्डल करे आदेस, सप्त रिखी संग सुहा रिहा। ध्रू दरबाना दरवेश, सति सवरनी रंग एका चढ़ा रिहा। सच दुआरे आप प्रवेश, महिंमा अगणत ना कोई गिणा रिहा। आपे रिखी रिखेशर रेख, लेखा लिख्त ना कोई रखा रिहा। निरगुण धारे जोती भेख, सरगुण भरम भुलेखे भुला रिहा। गुरमुख विरले नेत्र नैण लैणा वेख, साची दिशा जिस खुल्हा रिहा। मस्तक लिखे साचे लेख, जोत निरँजण देस वसा रिहा। जपलोक रिहा हरि वसेख, तप तपीसा इक्क करा रिहा। सतिलोक जोत हमेश, वरभण्ड ब्रह्मण्ड भेव ना पा रिहा। जोती नूर वंडे खण्ड खण्ड, लोकमात तेरी वंड, सोलां कला वंड वंडा रिहा। नवां सत्तां भेख पंड, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। सुन अगम्मी चण्ड प्रचण्ड, शब्द सार जोती धार, सोहँ खण्डा आप प्रगटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणी वंड आप वंडा रिहा। वेद व्यासे पाई वंड, निहकलंक कलि जामा धारया। बेमुख जीवां आउदी कंड, जन भगतां होए आप सहारया। धरे जगत भेख पखण्ड, जीव जन्त सद गंवारया। आत्म होई सर्ब रंड, मानस देही जन हंकारया। प्रभ अबिनाशी तोड़े सर्ब घमंड, राज राजानां विच दरबारया। कलिजुग औध गई हंढ, करे खेल हरि गिरधारया। गुरमुखां पल्ले बन्न्हे नाम गंढु, सच कराए आप वणज वपारया। आपे वसे उत्भज सेत्ज जेरज अंड, खाणी बाणी सर्ब हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरा कर्म विचारया। कवण कूट कवण दुआरा, हरि जोती जोत जगा रिहा। कवण तन शब्द नगारा, हरि एका चोट लगईआ है। कवण मन तन अफारा, हरि भाण्डा भज्जया। कवण जन

मंगे मंग दर दुआरा, पूरन इच्छया आप करईआ है। कवण धन पल्ले बन्न, हरिजन उतरे पार किनारा है। लोकमात ना लग्गे संन्, दरगाह साची दए सहारा है। लक्ख चुरासी देवे डन्न, प्रगट होए हरि दातारा है। गुरमुखां बेड़ा रिहा बन्न, कलि बणया आप लिखारा है। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्द, सोहँ झण्डा अपर अपारा है। सत्तां दीपां डोरी रिहा बन्न, लक्खण करौच पुष्कर जम्बु खेल न्यारा है। जोती जोत सरूप हरि, आपे वरते विच संसारा है। जम्बु दीप जोत जगईआ। सात समुन्दर इक्क चलाए, हरि जू साची नईआ। सतबरत जिउँ दया कमाए, महांपरलो वेख वखईआ। कलिजुग नईआ डगमगाए, ना कोई पार लँघईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम धक्का इक्क लगईआ। कलिजुग बेड़ा होए त्यार, अन्तिम कलि कल वारया। लक्ख चुरासी चुकया भार, ना मिले कोई सहारया। अन्तिम डुब्बणा विच अन्धकार, किसे ना दिसे पार किनारया। जूठे झूठे मीत मुरार, जगत नाता जीव संसारया। अन्तिम होणा पए ख्वार, जूए बाजी मानस हारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आपे देवे नाम अपारया। नाम अपारा अमोल, हरि अमोल्लया। बजर कपाटी पड़दे रिहा खोल्, पूरा तोल हरि जी तोल्लया। अट्ठे पहर करे कलोल, वसे काया सच्चे ढोल, बेमुखां नाल कदे ना बोल्लया। गुरमुख आत्म अन्दर लैणा फोल, साचा लाल क्यों रोल वरोल्लया। शब्द नगारा वज्जे ढोल, हरि जी वसे सदा कोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां दिसे इक्क घर, ना कोई रक्खे पड़दा उहलया। इक्क दुआरा हरि निरँकारा वस्त अपारया। हरिजन मंगे बण भिखारा, देवे वर सच्ची सरकारया। आत्म जोत कर उज्यारा, सद बख्शे साची धारया। आप वखाए पार किनारा, दरगाह साची सच महल्ल मुनारया। जोत निरँजण खेल अपारा, आपे बणे सर्ब सहारा, ना कोई जाणे जन्त गंवारा, मिल्या मेल कन्त भतारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साचा मीत मुरारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम भेख धर, सच निशान इक्क वखा रिहा। सच निशाना जाए झुल्ल, हरि साचा आप झुलांयदा। कलिजुग तेरा पैणा मुल्ल, वेख वखाणे सारी कुल, साचा लेखा आप लिखांयदा। बेमुखां अमृत आत्म गया डुल्ल, किसे हथ्थ ना आए पाणी चुल, दर दुआरे आप फिरांयदा। जगत अन्धेर जाणा झुल्ल, जूठे झूठे जाणे रुल, इक्क उखेड़ा हरि लगांयदा। गुरमुख विरले संत सुहेले साचे तोल जाणा तुल, सोहँ कंडा हरि लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां बेड़ा पार करांयदा। आदि नमो आदि नमो आदि नमो जगत गुरदेव स्वामी आदि नमो। पारब्रह्म सर्ब तनो। ज्ञानवान गुणवन्त सोभा तन श्रृंगार कनो। भरया मात नाम भण्डार, वणज कराए हरिजनो। वेस अनेक हरि दातार, बेड़ा आपणा आप बन्न्हो। रैण सबाई मंगलाचार, लग्गा

भाग काया तन तनो। सच दुआरा चरन भिखार, साचा नाता पुरख बिधाता, धर्म राए दा तोड़ डन्नो। नर हरि साचा सच पछाता, उत्तम वेखी ज़ाता पाता, हरि दुआरे दोए पाल चोबदार सच गनो। आदि नमो अनभेव देव स्वामीआ। कथनी कथ ना रसना सेवया। हरिजन पूरन घाल साची घाली, दरगाह साची मिले धाम बिसरामिआ। अमृत आत्म साचा मेव, फल खवाए आप बदामिआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द उज्यारा आप कर, पवण हुलारा सर्ब पछानया। आदि शब्द सुनेहड़ा देवे साधन संतया। आपे नर सच्चा नरेश, कन्त कन्तूला साचा कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां साचा रंगण रंग रंगाए, मात वखाए एका बसंतया। साचा रंग बसंत, हरि इक्क चढ़ाईआ। कलिजुग भुल्ले माया रुले जीव जन्त, नौ दुआरे होए हलकाईआ। गुर दर मन्दिर सच अपारा, एका वस्सया हरि निरँकारा, बेमुखां पड़दा दए खुल्ह़ाईआ। दसवें घर जोत उज्यारा, नौ दुआरे खोल्ह़े बारा, पहला तत्त आप विचारा। दूजी मति सर्ब सुख नारा। तीजे रत अग्नी धारा। चौथे वत पुरख अपारा। पंजवे सति पुरख निरँजण, वेखे विगसे कर विचारा। जोती जोत सरूप हरि, भगत जनां दस्से वसे घर, बेमुखां करे बन्द किवाड़ा। आदि गुर आदि गुर आदि गुर गुर मन्त्र गुर नाउँ। मेल मिलाए पारब्रह्म सच थांउँ। लिख्या लेख हरिजन धुर, चरन प्रीती जाए जुड़, बेड़ा पार कराए फड़ फड़ बांहों। आप चढ़ाए शब्द घोड़ा पुरख अबिनाशी आत्म रथ, जोती जोत सरूप हरि, सर्ब गतां गत आपे जाणे वड दाता बेपरवाहो। शब्द मौलाना मौलाणया। शब्द सिँघासण साचा थांउँ, लोकमात आप पछानया। गुरमुख साचा संत दुलारा आप बिठाए विच गुड़गाउं, देवे शब्द नाम निशानया। करन आया ठंडी छांउँ, एका एक हरि भगवानया। गुर गोबिन्दा तेरा नाउँ, प्रगट होए विच जहानया। चाली मुक्ते आप उपाए, जगत साचा हरि करे पछानया। निहकलंक नरायण नर, आपणे भाणे सद समानया। गुर गोबिन्द गुर लेख लिखाया। लिख्या लेख सर्ब मिटाया। सरसा तेरी किया भेंट, कलिजुग जीआं हथ्थ ना आया। निहकलंक खेवट खेट, आपे बेड़ा लए तराया। कलिजुग कहर वरते उप्पर धरते, सवा पहर महीना जेठ लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा लिख्या लिख्त भविक्खतां आपे रिहा वखाया। लिख्या लेख लेख कुरान, सिँघ सावण कीती आप पछाण, सच महल्ले इक्क टिकाया। कर ध्यान वेले अन्त निहकलंक जामा पाया। हाकन डाकन सिर मुंडवाया। वेख वखाणे मार ध्यान, चौथी कूटे आप दबाया। सोहँ अक्खर विच लिखाया। सिँघ जैमल जो आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साल सतारवें दया कमाए, आपणी हथ्थीं दए कढाया। साल सतारवें लेख सतारा। कोटन विच्चों इक्क हजारा। इक्क हजारा हरि दुआरा। वेख वखाणे ब्यास किनारा। साचा झण्डा आप उठाए, सोहँ डण्डा नाल लगाए, वरभण्डी वरभण्ड

समाए, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपणी रचना रिहा चलाए। गुर गोबिन्द लेख लिखाया। दिन घड़ी एह समझाया। भाणा मन्नणा सिर ते आया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आत्म अन्दर डेरा लाया। पुरी अनन्द होए उदासी, नगर खेड़ा भेव ना पाया। प्रगट होए घनकपुर वासी, सम्बल देस आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणा लेखा आपे आप लिखाया, साचा लेख लिखईआ। संगत बताई नंद जी, पुच्छे रीत। कवण गुरू है गुर गोबिन्दे, कवण बणाया साचा मीत। कवण प्रगट होए विच साची हिन्दे, कवण सुणाए साचा गीत। कवण काया कवण सेज, कवण काअबा आसण लाया, कवण अल्ला हक्क जनाबा, कवण वजाए तन रबाबा, कवण परखे साची नीत। जोती जोत सरूप हरि, कवण जोत होए महिताबा, काया करे ठंडी सीत। नंद चन्द चन्द सुत दुलारे। गुर गोबिन्दा बचन उचारे। जोती जामा भेख न्यारे। छड्डुणा देस काया पिण्ड, प्रगट होणा विच घविंड, झण्डा झुल्ले विच संसारे। गुरमुखां भाग लगाए, जोती नूर कर अकारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सरसा तेरी भेंट कराए, आप चल्लया पार किनारे। सरसा तेरी भेंट चढ़ाई। गुर गोबिन्दे लिख्त कराई। निहकलंक लए प्रगटाई। साचा शब्द जोती लए लिखाई। बीस इक्कीसा भेव खुल्हाई। लिख्या लेख लए वखाई। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, चारे कुन्टां रिहा सुणाई। सम्बल देस साचा राज। साची पुरी साचा ताज। सोहँ शब्द मारे अवाज़। कलिजुग अन्तिम रच्चया काज। साचा साजन रिहा साज। चारों कुन्ट कराए भाज। जन भगतां रक्खण आया लाज। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दो जहानां साचा वाली एका आपणी रक्खे सांझ। गुर गोबिन्द ख़ुशी मनाई। एका चोला रंग बसंती, वेले अन्तिम तन छुहाई। प्रगट होए जोत भगवन्ती, भेसा वेसा दए खुल्हाई। आपे काहना आपे कन्ती, जगत बणाए सगल बणती, जोगी जुगता साची भुगता आपणी आपे आप बणाई। निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, निर्मल जोती रिहा जगाई। सम्बल देस साजन साज्जया। गौड़ ब्रह्मण मारे अवाज़, पुरख अबिनाशी गरीब निवाज्जया। दर घर साचे आउँणा भाज, सिर रखौणा साचा ताज्जया। जन भगतां रक्खणी मात लाज, आप संवारे आपणा काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए देस माज्झया। सम्बल देस सच समाया। काया कच्च किसे दिस ना आया। जोत निरँजण रही मच्च, लोकमात हरि खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द सिँघासण जोत सरूपी डेरा लाया। सम्बल देस साचा डेरा। गुरमुखां तन पाए घेरा। कदे ना होए अन्धेरी रैण, अट्ठे पहर सञ्झ सवेरा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, पुरख अबिनाशी पाया फेरा। पुरख अबिनाशी रसना किसे ना सके कहण, बेमुखां भुलाया कर कर हेरा फेरा। लक्ख

चुरासी डुब्बी वहिण, कलिजुग माया पाया घेरा। जन भगतां चुकाए लैण देण, आपे तारे कर कर मेहरा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस वेस कर, जगत भुलाए कर कर हेरा फेरा। सम्बल देस सम्बल दर। सम्बल दर नर नरेश। नर हरि नरायण अवल्लड़ा भेस। अवल्लड़ा देस अवल्लड़ा भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे गुर गुर दस्मेस। सम्बल देस साफ मैदानया। जूठा झूठा ना कोई दिसे रुख, माया लूठा बालक नाही कुक्ख, एका जोत श्री भगवानया । दिस ना आए उज्जल मुख, ना कोई जाणे पंच शैतानया। गुरमुख साचे सुखणा रहे सुख, कलिजुग वसूरा उतरे दुःख, प्रगट होए वाली दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा देस आप पछानया। सम्बल देस साढे तिन्न हत्थ, जोत निरँजण आप जगाईआ। जगत चलाया साचा रथ, शब्द घोड़ा रिहा जुआईआ। हत्थ आपणे रक्खे नत्थ, लोआं पुरीआं रिहा दौड़ाईआ। पताल अकाश चढ़ना नठ्ठ, जीवां जन्तां दिस ना आईआ। आपणी लखणी रिहा लक्ख, जोती जोत सरूप हरि, सर्बकला आपे समरथ, सम्बल देस चार दुआरे साढे तिन्न हत्थ सीआं आप दिखाईआ। सम्बल देस साढे तिन्न हत्थ सीआं, आप रखाई हरि जी नीहां, ना कोई जाणे जन्त गंवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गौड़ ब्रह्मण कर प्यार। गौड़ ब्रह्मण हरि मिलाया। काया मन्दिर विच समाया। शब्द सिँघासण डेरा लाया। फड़ के बांहों आप सवाया। सुरती शब्दी शब्दी सुरती एका मेला आप मिलाया। ज्ञान बोध बोध अगाधा, पुरख अबिनाशी साचा नादा, एका शब्द हत्थ फड़ाया। भेव खुल्हाए हरि ब्रह्मादा, एका देवे साची दादा, साचा भेव रिहा खुल्हाया। आपे पिता आपे दादा, मात पित ना कोई अख्वाया। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्रह्मण एह समझाया। गौड़ ब्राह्मण ब्रह्म पछान। पारब्रह्म कर वेख ध्यान। साचा धर्म धर्म निशान। दूई द्वैती मिटे भरम, इक्क उठाउँणी तीर कमान। कलिजुग जीवां वेखे कर्म, थांउँ थाँईं बेईमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, प्रगट होए श्री भगवान। ब्राह्मण गौड़ा शब्द कटार। साढे तिन्न हत्थ लम्बा चौड़ा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार उच्च मुनार लोआं पुरीआं पावे सार । चारों कुन्ट रिहा दौड़ा, अन्दर गुप्त जाहर। आपे वेखे मिठ्ठा कौड़ा, करे कराए ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा कर त्यार। शब्द खण्डा कर त्यार, हरि साची बणत बणांयदा। चारों कुन्टां वेख वखाण, दिस किसे ना आंयदा। साचे घर सच्ची सरकार, आपणा लेखा आप गिणांयदा। कलिजुग वेखे ठग्ग चोर यार, तिक्खी धार आप वहांयदा। निहकलंक नरायण नर अवतार, पार किनारा पहली वारा एका एक वखांयदा। कलिजुग तेरा पार किनारा। हरि जी साचे आप विचारा। सम्बल देस कर उतारा।

साची नगरी विच मृदंग ढोल एका सच नगारा। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारा। सम्बल देस उच्च मुनारा। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, किया खेल अपर अपारा। आप आपणा विच टिकाया, लोआं पुरीआं वसे बाहरा। नौ दरवाजे बन्द रखाया, दसवें भेद अपर अपारा। बेमुख जीवां जूठयां झूठयां, माया राणी झूठे धन्दे लाया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्रह्मण एका नाम जोड़ जुड़ाया। गौड़ ब्राह्मण जुड़या जोड़ा। पुरख अबिनाशी इक्क ल्याया शब्द घोड़ा। फड़ फड़ बाहों रिहा चढ़ाया, जगत मलाही आपे दर द्वार बौहड़ा। निहकलंक नरायण नर, आपे परखे मिट्ठा कौड़ा। सम्बल देस सुरत संभालीआ। पुरख अबिनाशी दया कमाए, आप जगाए जोत अकालीआ। गुरमुख साचे संत जनां दे मति समझाए, कलिजुग रैण घटा कालीआ। फड़ फड़ बाहों मार्ग पाए, धू बालक अनाथ समझाए, चलदा रहे अवल्लड़ी चालीआ। प्रगट होए दरस दिखाए, मन अन्तर मन्त्र शब्द जणाए, हरि दस्से राह सुखालीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, फल लगाए काया साची डालीआ। लग्गा फल काया डाल्ह। पुरख अबिनाशी जगत दलाल। घनकपुर वासी जोत विसाल। गुरमुख साचे लभ्भे लाल। जोत निरँजण मात प्रकाशी, रक्खे दीपक साचे थाल। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी वेख वखाणे आपे चले नाल नाल।
१४२ लक्ख चुरासी हरि समाया। कलिजुग जीवां दिस ना आया। शब्द सरूपी डंक वजाया। आप उठाए राउ रंक, शब्द सुनेहड़ा १४२
०५ आप पुजाया। प्रगट होए वासी पुरी घनक, पड़दा उहला रहे ना राया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द दे मति रिहा समझाया। वाली हिन्द कर ध्यान। शब्द झण्डा विच मैदान। नौ खण्डां करे आप पछान। राज राजानां वढ्ढे कंडां, हरि हरि वाली दो जहान। करे खेल विच वरभण्डा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सच भगत भगवान आप पछानया। राज राजानां एका आण, देवे माण माण निमाणया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणया। ०५

★ १८ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

गुरमुख साचा पारज़ात, उत्तम ज़ात रखांयदा। प्रगट होए विच मात, माता पिता मोह चुकांयदा। शब्द मंगे नाम दात, एका झोली अग्गे डाहिंदा। चरन प्रीती साचा नात, पुरख बिधाता वर मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलार, साचे मेवे अमृत फल, लोकमात आप उपजांयदा। पारज़ात प्रभ पाए मुल्ल, साचे हट्ट वणज वणजारया। शब्द कंडे जाए तुल्ल, कदे ना पासा आवे हारया। उप्पर चोटी साचा फुल्ल, खिले कँवल गुलज़ारया। भाग लग्गे साची

कुल, प्रगट होए विच संसारया। शब्द भण्डारा रिहा खुल्ह, बणे आप हरि वरतारया। कलिजुग माया रही रुल्ल, चारों कुन्ट हाहाकारया। दीपक साचा होया गुल्ल, दहि दिशा धुन्कारया। अमृत आत्म मिले ना चुल्ल, अट्ठ सट्ठ तीर्थ रहे पुकारया। लक्ख चुरासी रही भुल्ल, अभुल्ल हरि ना पावे सारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे मात उपा रिहा। गुरमुख उपजे मात, शब्द जणाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, जिस जन साची बणत बणाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सवेर सञ्झ रखाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांत, सच्चा दर नाल इक्क वखाईआ। मानस देही उत्तम ज़ात, अन्तिम वेले लेखे लाईआ। लक्ख चुरासी तुट्टे नात, वेले अन्तिम ना पुच्छे वात, आप आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जन, एका मात रिहा उपजाईआ। गुरमुख साचा हरि दुलारया। मिल्या मेल पुरख अबिनाशी, कराए वणज साचा वणजारया। आप बणाए मात शब्द पक्का टिल्ला हरि न्यारया। वेख वखाणे जीव जन्त, साध संत करे विचारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए विच संसारया। पुरीआं लोआं अद्ध विचकारया।
१४३ उप्पर थल्ले ना कोए वखा रिहा। नौवां खण्डां करे विचार, जम्बु दीप वेख वखा रिहा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, शब्द घेरा एका पा रिहा। शब्द घेरा डोर बंधाईआ। ना कोई छड्डे गुर चेरा, अंडज जेरज वेख वखाईआ। १४३
०५ आप चुकाए तेरा मेरा, ना लाए देरा खेल रचाईआ। प्रगट होए सिँघ शेर दलेरा, लोकमात वज्जे वधाईआ। निहकलंक नरायण नर, सोहँ फाही इक्क लगाईआ। सोहँ फाही फस्सया फास। गुरमुख साचे संत सुहेले, हरि हरि साचा होया दास। ०५
सच दुआरे साचे मेले, एका घर पृथ्वी अकाश। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे शब्द स्वास। साचा घर शब्द ढंडोरया। मिल्या वर गुरमुख साचा जाए तर, सर सरोवर दूसर तरे ना कोई होरया। आपणी करनी जाए कर, प्रभ अबिनाशी खेल अपर कर कर आपणी मिहरया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, दर घर साचे शब्द सरूपी लाए साचा डेरया। साचा डेरा हरि अस्थान है। नौ दुआरे हरि मकान है। कलिजुग जीव आप वसाए, लोकमात करी पछाण है। दसवें कुण्डा बैठा लाहे, साध संत होए हैरान है। छोटा मुंडा रिहा जगाए, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले सभ अस्थान है। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे साचा राह दस्से, हरि हरि सच्चा मेहरबान है। नौ दुआरे दर दरवाजा, लक्ख चुरासी तेरा हरि साजन ल्या साज। धर्म राए हत्थ फड़े फ़ाँसी, करदा फिरे आपणा काज। अन्त मिटणे मदिरा मासी, सिर ना दिसे किसे ताज। आप बचाए शब्द स्वासी, प्रगट होए देस माझ। मानस जन्म करे रहिरासी, हरिजन साचे रक्खे लाज। निहकलंक नरायण नर, शब्द सरूपी साचे मन्दिर, एका मारे आपणी अवाज़। सच महल्ल अटल नौ

द्वारया। कलिजुग माया होई प्रबल, प्रभ का भाणा ना जाए टल, चारों कुन्ट वेख विचारया। आपे वेखे जल थल घड़ी घड़ी पल पल, सागर सिन्ध डूंघी कार है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सत्तां दीपां बणत बणा रिहा। सत्तां दीपां हरि जणाईआ। लक्खण लेखा रिहा चुकाईआ। करोच सुणाया आप रघुराई है। पुष्कर रोए दए दुहाईआ। जम्बु दीप अद्धविचकारी है। सान सुरती सर्ब भवाई है। सलमल मनमुख सर्ब गंवाई है। कुशा दीप नग्न उठ धाई है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, त्रै त्रै वेसा ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा दर दरवेसा रिहा बुलाईआ। वेख वखाणे हरि दीप लोअ पतालया। सत्त पताला खोल्हे दर, अतल वितल सितल तेरी घालया। राजे बल मंगया बल, सितल देस होए परवानया। तलातल चढ़े तेल अपार, मात वज्जे डंक अपार, रसातल धूंआधार महानया। सत्तवें करे आप विचार, लोक पताली करे चाली बाशक सेजा होई त्यार, सहँसर मुखड़े आप धुआ रिहा। सांगोपांगी लाल दुशाली, चार योजन खेल निराली, सच सिँघासण आप संवारया। लच्छमी प्रेम रक्खे फल डाल्ही, हरि जी रक्खे हथ्थीं खाली, असत बस्त शसत, ना तीर कोई उठा रिहा। धरत मात दी करे दलाली, कलिजुग बण के आए हाली, हरि साचा हल्ल बणा रिहा। कलिजुग सतिजुग बैल बणा ली। शब्द हल्ल इक्क उठा ली, सोहँ फाला तिक्खा ला रिहा। पहली रहिल आप मिला ली, मक्का मदीना करे खाली, पिच्छों ललकारा एका ला रिहा। फल ना दिसे किसे डाल्ही, चारे कुन्टां होईआ खाली, जगे जोत इक्क अकाली, नूर अलाही भेख वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सत्त पतालां वेख वखा रिहा। सत्ते लोक मारे ध्यान। भू लोक आप भगवान। साचे खण्ड कवण अस्थान। दूवरलोक वेखे शब्द बिबाण। स्वर्गलोक हरि मेहरवान। महिरलोक धर्म निशान। जवलोक अकल कल धार। तपलोक सप्तम वेखे सति पुरख दा सच निशान। सतिलोक जोत महान। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, लाल गुलाला रंग महान। दूसर किसे ना दिसे रेखे, भरमे भुल्ले जीव निधान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, चौदां लोकां साचे अन्दर इक्क वखाए शब्द निशान। शब्द निशाना नाम डोरी, पुरख अबिनाशी पाईआ। लक्ख चुरासी कोलों करे चोरी, कलिजुग रैण अन्धेर घोरी दिस किसे ना आईआ। चढ़या फिरे शब्द घोड़ी, चारों कुन्ट रिहा दौड़ी, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाईआ। पुरीआं लोआं लाए पौड़ी, धुर दरगाही साची पुरी, इन्द्र ब्रह्मा शिव रिहा जगाईआ। बवन्जा करोड़ जोजन पृथ्वी लम्बी चौड़ी, चारों कुन्ट घेरा पुरख अबिनाशी रिहा पाईआ। कलिजुग अन्तिम करे निबेड़ा, भरमां ढाहे कलिजुग डेरा, गुरमुख वसाए काया खेड़ा, दीपक जोती इक्क जगाईआ। नौ दरवाजे खुल्हा वेहड़ा, कवण करे हक्क निबेड़ा, दसवें दर ना बूझ बुझाईआ। पंजां तत्तां रहे झेड़ा, अट्ठे पहर महल्ल अन्धेरा, डूंघी कन्दर काया

मन्दिर साचा राह ना कोई वखाईआ। शब्द हथौड़ा तोड़े जन्दर, जोत निरामल अन्दरे अन्दर साचा दीपक डगमगाईआ। आप सुहाए साचा मन्दिर, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत करे रुशनाईआ। साची जोत होए प्रकाश, अन्धेर विनास्सया। हरिजन मिल्या पुरख अबिनाश, दर घर साचे होए दासन दास्सया। माया ममता कीनी नास, अमृत धारा मुख चुआस्सया। आप बणाए काया रास, साचा मण्डल पृथ्वी अकास्सया। शब्द उपजाए पवण स्वास, निज्ज घर आत्म रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, साचे मन्दिर जोत धर, आपे वेखे जगत तमाशया। जगत तमाशा वेख, हरि बणत बणाईआ। घर घर दर दर दिसे भेख, साचा लेख ना कोई लिखाईआ। जूठे झूठे पंडत पांधे मस्तक लाउँदे रेख, तीजे लोचन दर दुआरा ना ल्या वेख, दिबदृष्ट ना किसे खुल्हाईआ। बगल कुरानी मुल्लां शेख, जूठे झूठे वणज कराईआ। उच्चे मन्दिर चढ़ चढ़ रहे वेख, वज्जे टल होए धुनकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे करे वल छल, पंडत पांधे रिहा भुलाईआ। पंडत पांधे भुल्ले वड मौलाणया। कलिजुग माया रुल्ले नर हरि ना किसे पछानया। लग्गी अग्ग काया कुले, अट्ठे पहर होए हलकानया। गुरमुख विरले पूरे तोल तुले, दर साचे होए निमाणया। सतारां हाढ़ी आए दर दुआरे साचे भुल्ले, दरगाह साची करे हरि परवानया। शब्द भण्डारा साचा खुल्हे, देवे दरस श्री भगवानया। कोए ना लाए हरि जी मुले, हरिजन आपणा आप पछानया। कलिजुग बूटे काया हुल्ले, फल ना दिसे किसे डाल्हया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचा संत सुहेला सुघड़ स्याणा आप वखाए आपणा भाणया। आपे जाणे आपणा भाणा, कवण भेख वटाईआ। भरम भुलेखे राजा राणा, संत अभ्यासी सार ना पाईआ। चार यारी बेमुहाणा, साची हदीस हरि जगदीस ना कोई किसे पढ़ाईआ। एका सुझे पीणा खाणा, माया ममता होई हलकाईआ। गुरमुख साचा संत सुहेला साचे धाम सहाउँणा, साची ओट इक्क रखाईआ। होए सहाई माण निमाना, शब्द नगारे चोट लगाईआ। गया वेला अन्त पछताणा, निहकलंक रिहा जगाईआ। आपे करे पुण छाणा, लक्ख चुरासी सोहँ कंडे उत्ते रिहा तुलाईआ। फड़ फड़ वेखे अन्न्हा काणा, पाए नाम सच्चा मधाणा, रिड़के छाछ हरि रघुराईआ। आपे वरते आपणा भाणा, किसे हथ्थ ना आए दाणा, पीणा खाणा आप चुकाईआ। कलिजुग वरते आपणा भाणा, किसे हथ्थ ना आए नाम निशाना, चल्लया तीर बेमुहाणा, शब्द निशाना हरि लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां लोकमात दए वड्डियाईआ। धन्न कमाई संत जन, सद वसे द्वारया। धन्न कमाई भगत जन, मन मन्ने विच संसारया। धन्न कमाई संत जन, शब्द डोरी काया बन्न्हे, पंचां चोरां खेल अपारया। धन्न कमाई भगत जन, आप कढाए झूठे जने, वेखे खेल सच्ची सरकारया। धन्न

कमाई संत जन, साचा शब्द सुण कन्ने, साचा राग गा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, आपे तोड़े मनमाणे, बजर कपाटी भेव खुल्ला रिहा। धन्न कमाई संत जन, धन्न कमाई भगत जन, दोहां अन्दर साचे मन्दिर आपणी जोत जगा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोत निरालीआ। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या मेल हरि भगवानया। धन्न कमाई संत जन, दीपक जोती कर उज्यार, मस्तक गगन जोत निरालीआ। धन्न कमाई भगत जन, दोहां करे कराए हरि रख्वालीआ। धन्न कमाई संत जन, शब्द परान है। धन्न कमाई भगत जन, आत्म ब्रह्म ज्ञान है। धन्न कमाई संत जन, साचा रखे इक्क निशान है। धन्न कमाई भगत जन, दोहां मेल हरि भगवान है। धन्न कमाई संत जन, मिले नाम वस्त अमोल्लया। धन्न कमाई भगत जन, साचा तोल मात तोल्लया। धन्न कमाई संत जन, काया मन्दिर कुण्डा खोल्लया। धन्न कमाई भगत जन, दोहां वेस आपे कर, वेख वखाणे काया चोल्लया। काया चोला रंग अपारा, आपे रक्खे शब्द विचोला, दोहां धिरां मेल मिला रिहा। बजर कपाटी पड़दा खोल्ला, तीजे नैण दरस दिखा रिहा। आपे बणया भोला भाला, गुरमुख साचे संत सुहेले, चारों कुन्ट कराए मेले, आप आपणी बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, साची रंगण नाम चढ़ा रिहा। हरि घट निरँजण एक सर्ब पसारया। पारब्रह्म जन साची टेक, सच्चा धर्म इक्क वखा रिहा। काया निर्मल बुध बिबेक, माया सेक दूर करा रिहा। अट्ठे पहर रिहा वेख, जोती जामा भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, सच टिकाणा शब्द बिबाणा आपणा आप रखा रिहा। शब्द बिबाणे चाढ़ दया कमांयदा। आपे वेखे राजे राणे, गऊ गरीब निमाणे गले लगांयदा। हरिजन साचे सुघड़ स्याणे, बेमुख जीव बेमुहाणे, पल्लू नाम ना कोई फड़ांयदा। दरगाह साची देवे माणे, चले चलाए आपणे भाणे, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा भेख न्यारया। प्रगट होए रमईआ रामा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। इक्क वजाए शब्द दमामा, चारों कुन्टां आप सुणा रिहा। लक्ख चुरासी आपे वेखे काया चामा, साचा धाम वेख वखा रिहा। गुरमुख पल्ले बद्धा नाम दामा, धर्म राए फंद कटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, दूसर किसे दिस ना आ रिहा। वसे साचे घर, सच टिकाणया। आपणी करनी रिहा कर, बैठा रहे शब्द बिबाणया। हरिजन सरनी जाए पढ़, किसे दिस ना आए सुघड़ स्याणया। ना कोई सीस ना कोई धड़, बाली बुध ना नौजवानया। साचे मन्दिर बैठा चढ़, जोत निरँजण डगमगानया। काया तोड़े किल्ला हँकारी गढ़, सोहँ फड़ तीर कमानया। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, अट्ठे पहर मार ध्यानया। गुरमुख साचे संत सुहेले काया वक्खर जोत दिवानया। जगे जोत बहत्तर नाड़, मिटे अन्धेर सर्ब किछ जानया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, नर हरि श्री भगवानया। नर हरि श्री भगवान, सर्ब समरथ है। जन भगतां देवे जिया दान, हरि रखे दे कर हथ्थ है। अमृत सर सरोवर कराए आत्म इक्क इशनान है। सगल वसूरे जायण लथ है। आप बिठाए शब्द बिबाण, सोहँ चलाए साचा रथ है। लोआं पुरीआं इक्क उडान, लक्ख चुरासी पाए नत्थ है। करोड़ तेतीस चतुर सुजान, सुरपति राजा रिहा मथ है। लेखे मुक्के अन्त जहान, कलिजुग सीआं साढे तिन्न हथ्थ है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, महिंमा जगत अकथना अकथ है। महिंमा अकथ अकथ अकथ कहाणीआ। सृष्ट सबाई रिहा मथ, राज महल्ला उच्च अटला, राजे छड्डुण राणीआं। प्रगट होए जिउँ रामा घर दसरथ, हँकारी रावण मारे कानीआ। एका एक चलाए साची गथ, सतिजुग साचे तेरी साची बाणीआ। जन भगतां देवे आत्म घर साची वत्थ, अमृत मधु एका रस पाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, ना कोई जाणे वेद पुराणीआ। जीव जन्त ना पाए सार, माया भरम भुलाया। कलिजुग भुल्ले नाम अधार, झूठी तृष्ना मोह वधाया। दर दर घर घर भौंदे फिरदे दुष्ट दुराचार, प्रभ अबिनाशी सार ना पाया। गुरमुख विरला जाणे नर हरि सच्ची सरकार, आत्म सेजा डेरा लाया। एका बैठे मल द्वार, पहरेदार सदा

१४७ अख्वाया। जोत निरँजण कर अकार, शब्द धारा आप चलाया। अमृत बरखे निज्झर धार, शब्द घोड़े हो अस्वार, चौदां १४७

०५ लोकां हट्ट खुल्ह्हाया। आपे बन्न्हे आपणी धार, दूसर ना कोई संग रलाया। निहकलंकी जामा धार, शब्द डंक रिहा वजाया। ०५

चारों कुन्टां करे ख़बरदार, शाह सुल्तान रिहा जगाया। कलिजुग अन्तिम पैणी मार, ना होए कोई सहाया। जूठी झूठी माया धार, कलिजुग भुले नारी नार, जगत विकारा मोह वधाया। मात पित भैण भाई साक सज्जण कोई ना पाए सार, वेले अन्तिम मुख छुपाया। आपे होए सहाए दया कमाए मीत मुरार, गुरमुख साचे साचा पल्लू आपणा हथ्थ फड़ाया। कलिजुग घोर अन्धेर घलू, काली रैण वेख डैण, लाड़ी मौत राह वखाया। बेमुख जीआं आप चुकाए लैण देण, चारों कुन्ट झूठे वहण, साचा वणज वपार ना किसे कराया। नाता छुटे भाई भैण, ना कोई दीसे साक सैण, दूर नेड़ा दिस किसे ना आया। पंजां तत्तां रिहा छड़, अन्तिम उजड़े काया खेड़ा, साचा गेड़ा ना किसे कटाया। पुरख अबिनाशी करे निबेड़ा, भगत जनां हरि बन्न्हे बेड़ा, दर दुआरे दया कमाया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, भगत सुहेला आप अख्वाया। निरगुण रूप अगम्म, भेव अपारया। सरगुण रूप मात पए जम्म, किरपा करे आप गिरधारया। निरगुण रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास ना नाड़ी चम्म, आपणा आप करे अकारया। सरगुण रूप रक्खे सहारा दम, पवण स्वासी विच टिका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण खेल कर, आपणी रचना आप रचा रिहा। निरगुण निराहार सदा निरवैरया। सरगुण पाए

सार, काया मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर आपे बहि रिहा। बाहर लाए तीजा जन्दर, ना कुफल कोई खुल्ला रिहा। उच्चे टिल्ले फिर फिर थक्के लभ्भदे फिरन गोरख मच्छन्दर, साचा राह ना किसे वखा ल्या। निरगुण जोत जगे निरालम, संत सुहेले साचे तेरे अन्दर दीप निराला आप जगा रिहा। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, नर हरि श्री निज घर साचे किसे ना पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा वेस कर, गुरमुख साचे संत जनां आत्म अन्दर साची सेजा आपणा डेरा ला ल्या। साची सेजा हरि बणाईआ। निरगुण रचना आप रचाईआ। सरगुण रूप दिस ना आईआ। निरगुण निराहार साची सेजा आपे सुत्ता, दोवें भुजा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख कर आपणा भेव रिहा छुपाईआ। निरगुण सरगुण भेख कर आपणा भेव रिहा छुपाईआ। निरगुण सच मकान चतर्भुज श्री भगवान। आपणा भेव रक्खे गुज्झ नौ दुआरे झूठ मकान हरि दुआरा जाए सुझ, अक्खर वक्खर कर पछान। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, गुरमुख विरला संत जन निशअक्खर पावे साची खान। निशअक्खर हरि का द्वारया। आपे वसे सद वक्खर, दिस किसे ना आ रिहा। बज़र कपाटी वडा पत्थर, सरगुण किसे मात ना पाड़या। तीजे नेत्र अमृत धार ना वगे अत्थर, साचा सीर ना कोई पया रिहा। लक्ख चुरासी लथ्थी सथ्थर, कलिजुग गूढ़ी नींद सवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना, सोहँ शब्द सिखा रिहा। सोहँ अक्खर लैणा पढ़। कलिजुग जंजाला होए वक्खर, साचे पौड़े जाणा चढ़। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, अन्दरे अन्दर साचे मन्दिर धुर दरगाही बांहों लए फड़। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण जोती वेस कर, ना कोई दिसाए सीस ना कोई धड़, ना कोई सीसा, जोत निरँजण हरि जगदीसा। ना कोई गाए राग छतीसा। ना कोई रखाए दन्द बतीसा। ना कोई पढ़े पढ़ाए कुरान हदीसा। ना कोई जाणे ईसा मूसा। जोत निरजंण दीन दयाला सदा कृपाला, शब्द वखाए साचा सीसा। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, अमृत आत्म खोल्ले साचा दर, दूसर कोए ना करे रीसा। सोहँ शब्द धार वहांयदा। बजर कपाटी जाए पाड़, तीर्थ ताटी पार करांयदा। काया अन्दर खोल्ले साची हाटी, चौदां हट्टां राह वखांयदा। दुरमति मैल रिहा काटी, गुरमुख काया आपणे हथ्थीं आप धवांयदा। बेमुखां खेल दिसे बाजीगर नाटी, नाटक नटूआ खेवट खेटा, आपणी आप कार करांयदा। भगत जनां हरि माँ पिउ बेटा, साचे सूत्र तन लपेटा, शब्द दुशाला इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच्चा नाम धन, आदि जुगादि ना होए कंगाला जगत माया परे हटांयदा। सोहँ अक्खर साची धार, सुन अगम्मो आई पार, प्रभ अबिनाशी आप टिकाए दस्म दुआरी किरपा धार डगमगाए, धुनी नाद अनाहद धारा रंग सफेदी इक्क रखाए। अमृत सुहाए साचा ताल,

गुरमुख साचे संत जनां बांहों पकड़ दया कमाए। आप लवाए आपणी छाती, झूठी काया होणी काग, हरि ना मिल्या कन्त सुहाग, दुरमति मैल ना कोए धवाए। भगत जनां हरि पकड़े वाग, माया राणी लाहे दाग़, सति पुरख निरँजण दया कमाए। शब्द जणाए अजपा जाप, रहे विस्माद रसना मुख ना कोई हिलाए। आप उपजाए साचा नाद, वेख वखाणे हरि ब्रह्माद, सोहँ देवे साचा वर, सति पुरख निरँजण मेल मिलाए। आदि पुरख अपरम्पर आदि, आप जगाए संत साध, शब्द हलूणा रिहा लगाए। सोहँ सुरती सुरत ध्यान, अकाल मूर्ति इक्क ज्ञान, नाद तूरती सच निशान, भगत जनां हरि आसा पूरती, शब्द निशाना ब्रह्म ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ अक्खर दस्से वक्खर दस्म दुआरी बाहर उडान। सोहँ अक्खर हरि उपजाया ए। जोती साया इक्क रखाया ए। साची धारा आप वहाया ए। दस्म दुआरी डेरा लाया ए। चौथा पद राह वखाया ए। गुरमुख साचे संत सुहेले, सद साचा थान आप सुहाया ए। शब्द वज्जे अनाहद नद ना सिंङी नाद सुणाया ए। अमृत आत्म मिले मध, सुहावां ताल भराया ए। पुरख अबिनाशी दिस ना आए लम्भा चौड़ा उच्चा कद्द, अन्दरे अन्दर समाया ए। पंजे चोरां रिहा बध, साचा खण्डा हथ्थ उठाया ए। दस्म दुआरी साची हद, नौ दुआरे बाहर रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां एका अक्खर साचा नाउँ अगम्म अथाहो बेपरवाहो साचा राह वखाया ए। साचा नाउँ हरि भगवान। सदा रखे ठंडी छाँ, जीव जन्त विच जहान। आपे होए पिता माँ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान। हँस बणाए गुरमुख कां, शब्द उडाए इक्क उडान। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ हँसा हँस सरबंसा, माणक मोती चोग चुगान। माणक मोती चोग न्यारी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, संत जनां दे ल्याए द्वारी। आप आपणा देवे वर, पंच पंचायण करे ख़बरदारी। साची तरनी जाए तर, मिले मेल नर हरि सच्ची सरकार, ना जन्मे ना जाए मर, आदि अन्त एका एक एकँकारी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचा संत जनां, सच दुआरे रिहा पुकारी। सच दुआरे रिहा पुकार, हरिभगत आप जगांयदा। शब्द सिँघासण हरि दातार, आलस निन्दरा ना कोई रखांयदा। जोत सरूपी सति अकार, दस अन्दरे वेख वखांयदा। शब्द खण्डा फड़ कटार, पंचम सीस हरि जगदीस आप कटांयदा। पंचां तन शृंगार करांयदा। विच बैठ सच्ची सरकार, ना कोई ठग्ग ना कोई चोर यार, ना कोई भेखाधारी विचार सच न्याउँ आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां स्वच्छ सरूपी प्रगट होए दरस दिखांयदा। सति सरूप साची सेजा आप सुहाई। ना कोई रंग ना कोई रूप, शब्द डंक रिहा वजाई। किसे दिस ना आए काया मन्दिर अन्ध कूप, कवण नगारा रिहा वजाई। जूठा झूठा दर दर घर घर मन्दिर देवे धूप, सच सुगंधी आत्म रस किसे हथ्थ ना आई। चारों कुन्ट वा गन्दी, बेमुख जीवां

आत्म अन्धी, बेमुख जीवां आत्म होई हलकाईआ। जूठे झूठे काया माया लूठे, ना कोई तोड़े काया बंधी, ना होए कोई सहाईआ। गुरमुख साचा संत सुहेला चढ़या चन्द नौ चन्दी, विच अकाशां रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आपे कटे दस दस मास लेखा आप चुकाईआ। कलिजुग मिल्या अन्त हरि आप, माया पाप रिहा कांप, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, आप वखाए आपणा आप। सोहँ गाउँणा दिवस रैण, चढ़दे मुख लोइण नैण, उतरे भुख मिटे काया दुःख, सगल वसूरे जायण लथ, नाता तुटे मात कुक्ख, उलटा होए ना फेर रुख़, लाड़ी मौत ना खाए डैण। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, दरस दिखाए साचे नैण। सोहँ रसना रस सहिज सुभाया। पंचम पहर गाउँणा हस्स, कलिजुग वेला अज्जे बकाया। साचा राह रिहा दस, पंचम लेखा आपणा आप मुकाया। दुष्ट दूत सभ जायण नस, नौ अठारां दए दुरकाया। साचा तीर एका कस, दर दुआरा दए खुल्हाया। सति पुरख निरँजण अन्दर वस, साचा दरस दए दिखाया। मिटे रैण अन्धेरी मस, साची रास हरि वखाया। जोती जोत सरूप हरि, सवा पहर करे मेहर ना लाए देर, दीपक जोती दए जगाया। सवा पहर जपणा जप। चढ़दे मुख रखणा आप। मार मुकाए दया कमाए तीनो तप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मगरों लाहे माया नागन डस्सणी सप्प। सवा पहर रसना गाउँणा। पंचम पहर सिँघासण लाउँणा। शब्द स्वास नाल चलाउँणा। मैं तूं हरि भेव चुकाउँणा। तूं मैं इक्क थाँ वसाउँणा। मैं तूं तूं मैं एका धाम जोत निरँजण सच सिँघासण साचे अन्दर मन्दिर बिसराम सवा पहर एका लहर, काया मन्दिर साचे शहर, दीपक जोती इक्क जगाउँणा। जगत माया ना व्यापे कहर, प्रभ अबिनाशी आपे वरते आपणी मेहर, होए सहाई संग बणावणा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे सच वर, साचा मार्ग मात वखाउँणा। सवा पहर सदा सुखदाया। उज्जल करे मात कुक्ख, हरिजन साचे रसना गाया। अन्दरे धूंएँ रहे धुख, जोत प्रकाश ना कोए कराया। गुरमुख साचे साची सिक्खना लैणी सिक्ख, मन तन काया भेंट चढ़ाया। पुरख अबिनाशी इक्क वखाल उत्तम मुख आत्म सेजा कर त्यार, उत्ते फूलन रक्खे हार, दोए जोड़ करे निमस्कार, मैं नार तूं कन्त भतार सिर ते देणा इक्क प्यार, साची सेजा चरन छुहाया। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे जाहर, जोत निरँजण अलख अलख घर साचे रिहा जगाया। लक्ख चुरासी विच्चों कीना वक्ख, वेले अन्त होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कँवल नाभी लए फड़, अमृत धार मुख चुआया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, एका देवे वड्डिआया। आपे सुरती आप ज्ञान। आपे आप अकाल मूर्ति चतुर्भुज श्री भगवान। आपे नाद अनाहद तूरती, आपे खाणी आपे बाणी आपे चार वेद पुराण।

१५०
०५

आपे कुरान अञ्जील कुरानी, आपे राजा आपे राणी, आप सुहेला साचा हाणी, आपे दाता आपे दानी, आपे होए ठंडा पाणी, आपे होए मनुआ मानी, आपे ताणा रिहा विछाईआ। देंदा रहे डन्ना, आपे बणे जाणी जाण, आप राग सुनाए कन्ना, आपे होए पछोताणी। आपे भाण्डा भरम देवे भन्न, आपे जोत साची बाणी। साचे मन्दिर आप जगाणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, दूर ना जाणे कोई निशानी। आपे माता आपे पिता, आपे पुरख बिधाता। आपे करे साचा हिता। नित नवित्ता ना कोई वेखे परखे ज़ाता पाता। आपे जाणे गति मिता। आपे जाणे लहिणा देणा धुर दरगाही जो जन दित्ता। आपे देवे शब्द श्रृंगार, आपे काया मन्दिर खेत सिता। बहत्तर नाड़ी आप चलाए झूठी रता। आपे हल्ल चलाया ए, आपे धीआ आपे पुता। आपे पंखी पंछी आपे कीट हस्त समाता। जोती जोत सरूप हरि, आपे दिवस आपे रैण, आपे नेत्र आपे नैण, आपे भाई आपे भैण, आपे कन्त आपे नारी एका रक्खे साचा नाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, बैठा रहे इक्क इकांत है। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा है। एका वसे सच महल्ला, जोती नूर करे उज्यारा है। निरगुण खेल अपर अपारा, आपे जाणे आपणी धारा, सज्जण सुहेला वसे निहचल धाम अटला है। अगम्म अगोचर अलख अपारा, लक्ख चुरासी जोत अधारा, सृष्ट सबाई हरि पसारा, लोआं पुरीआं दए सहारा है। आपे जाणे पार किनारा, सत्त सागरां
१५१
पाणी खारा, आपे पर्बत वड समेरू आपे दए हुलारा है। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण आप बिराजे ना कोई रक्खे
०५
चोबदारा है। सच सिँघासण हरि सरकार। ना कोई रक्खे चोबदार। लोआं पुरीआं पसर पसार। खण्ड ब्रह्मण्ड रक्खे वासा, शब्द उडारी इक्क उडार। जोती जोत सरूप हरि, दीपां खण्डां पाए वंडां कलिजुग तेरी अन्तिम वार। शब्द उठाए चण्ड प्रचण्डां, बेमुख जीवां वढ्ढे कंडां पाए वंडां, राज राजानां करे ख़बरदार। मेट मिटाए भेख पखण्डा, सोहँ फड़या हथ्थ विच डण्डा, चारों कुन्टां मारे वारो वार। सृष्ट सबाई सदा सुहेला, कदे ना होवे रंड, गुरमुख साचा सोभावन्ती नार। गुरमुख साचे संत जनां एका देवे शब्द नाम नाम शब्द जगत विहार। शब्द विहार जन कमाईआ। प्रगट कर सच्ची सरकार, साचा हुक्म आपणा आप सुणाईआ। ना कोई रक्खणा चोबदार, जोत सरूप पहरेदार बणाई जा। नेड़ ना आए ठग्ग चोर यार, शब्द डण्डा नाल रखाई जा। काम कामनी दए दुरकार, लोभ ममता परे हटाई जा। हँकार विकारा करे ख्वार, चण्ड प्रचण्डा आप चलाई जा। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, दुसर आस सभ तजाई जा। जगत आसा देणी तज। शब्द सिँघासण चढ़ना भज्ज। अमृत भर कटोरा पीणा रज। कलिजुग रैण अन्धेरी घोर, दर दुआरे बहिणा सज। शब्द सरूपी पाए डोर, प्रभ पड़दे रिहा कज्ज। जगत चुकाए मोर तोर, जन भगतां रक्खण आया लज। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग

अन्तिम वेखे घर घर, बेमुख जीवां लाउँण ना देवे अज पज। साध संत फिरन हलकाए, भरम भुलाए जीव जन्त, साचा राह ना किसे वखाया। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म सेजा जिस सवाया। मिल्या मेल पूरन भगवन्त, कलिजुग तृष्ना दए मिटाया। धन्न कमाई तेरी संत, साचा राह इक्क पुछाया। मिले वड्याई विच जीव जन्त, लक्ख चुरासी फंद कटाया। चढ़या रंग तन बसंत, खिड़ी गुलज़ार तन महिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूलन बरखा रिहा लाया। फूलन बरखा हरि बरसांयदा। गुरमुख साचे संत जनां साचे मार्ग लांयदा। एका देवे माल धन्ना, सोहँ सुणना राग कन्ना, आलस निन्दरा सारी लांहयदा। जोत जगाए हरि जना, आत्म जिन्दरा आप तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, आत्म भण्डारा नर निरँकारा गुरमुख प्यारा आप भरांयदा। दए भण्डारा भर, हरि भरपूरया। दर घर साचे साचा वर, आसा मनसा पूरया। इक्क वखाए साचा घर, अगे खड़ा हाजर हजूरया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कलि दिसे दूरया। सुरत शब्द ज्ञान ध्यान भगवानया। जोगी जुगत निशान, साचा नाम गुण निधानया। पूरन ब्रह्म साची खाण, वेद वखाण श्री भगवानया। आपे ताण काया माण, देवणहार चतुर सुजानया। उप्पर धवले मार ध्यान, संत सतिगुर आप पछानया। चार वरनां वेद वखाण, ज्ञान बोध गुरू कर मानया। एका उठे नाम तरान, वजे नाद धुनी धुनकानया। हरिजन साचे रसना गान, पारब्रह्म सद सद मानया। दर घर साचे इक्क पछाण, जोती जोत सरूप हरि, रंग नवेल आप वखानया। वसे रंग नवेल कोट ब्रहमंडया। सृष्ट सबाई एका टेक, दीपां लोआं वड वड खंडया। आपे आप रिहा वेख, तट्ट ब्यासा आर पार दोवें कंढिआ। कवण बिधाता लिखे रेख, कवण नाता जोड़े टुट्टी गंढिआ। कवण नेत्र रिहा पेख, कवण चढ़या हरि साचे डंडया। कवण धारी बैठा भेख, जूठा झूठा फड़या हथ्थ विच झंडया। कवण रक्खे बुध विसेख, कवण होया आत्म अंध्या। जोती जोत सरूप हरि, शब्द निशाना रिहा वेख, चारों कुन्ट दहि दिश विच वरभण्डया। आर पार ब्यास किनारया। कवण पृथ्वी कवण अकाश, कवण देवे मात सहारया। कवण सुहेला साचा मेला दासन दास, कवण गुर चेला कवण मीत मुरारया। कवण चढ़ाए शब्द सरूपी काया साचा तोला, कवण नारी पुरख भतारया। आपे जाणे आपणा खेला, कलिजुग होया वक्त दुहेला, सति पुरख निरँजण घट घट सर्ब पसारया। तट्ट किनारा इक्क ब्यास। काया मन्दिर विच प्रभास। अन्दरे अन्दर साची रास। डूंघी कन्दर जोत अबिनाश। इक्क हँकारी वज्जा जन्दर, काल कूट ना होए रास। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे शब्द स्वास। शब्द स्वासा कवण महल्ल, कवण सुहाए सच मुनारया। कवण वसे निहचल धाम अटल, कवण वेखे धाम न्यारया। कवण करे कराए वल छल,

दीपक जोती रिहा बल, आदि अन्त ना कदे हारया। काया मन्दिर वल छल, दूई द्वैती अन्दर सल, माया वरते कलिजुग कल, एका पड़दा हरि रखा रिहा। अमृत सोमा साचा जल, शब्द सरूपी वगे हल्ल, इक्क लगाए नाम फल, साचा बीज आप बिजा रिहा। चार वरनां जाणा रल, सच दुआरा लैणा मल, शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, निहकलंकी डंक वज्जा रिहा। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, ना कोई जाणे अज कल, द्वार बंक इक्क सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका अंक आप चला रिहा। शब्द सुनेहड़ा घल, जगत जगांयदा। प्रभ का भाणा ना जाए टल, राज राजानां आप हिलांयदा। शब्द डण्डा लाहे खल्ल, लक्ख चुरासी सुरत भवांयदा। प्रगट होए कलि, कल आपणी आप वरतांयदा। सच दुआरा लैणा मल्ल, जोती दीपक इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, संत सुहेले कर कर मेले इक्क इकेले धाम बहांयदा। होया मेल मेल भगवानया। चतुर्भुज राज बंक बंक राज साचा मन्दिर आप सुहाना। रंगे रंग साची धार विच संसार पहली वार खेल रचाना। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्याना। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, अट्ठे पहर ख़बरदार, वेख वखाणे मीत मुरार, ठग्ग चोर केहड़ी धार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाना। आपे पुरख आपे नार, आपे कन्त सुहागी साचा यार, साची सेजा आसण लाणा। कलिजुग भुल्ल ना जीव गंवार, प्रगट होया हरि करतार, सोलां कलीआं कर श्रृंगार, निहकलंक बली बलवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप झुलाए शब्द सरूपी जगत निशाना। झुल्ले शब्द जगत निशान, प्रगट होए हरि भगवान, जन भगतां देवे नाम दान, साची भिच्छया आपे पांयदा। शब्द सुणाए साचा कान, आपे वेखे मार ध्यान, राज राजानां शाह सुल्तान वेख वखांयदा। वाली हिन्द उठ नौजवाना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझांयदा। भारत खण्ड सच दुलारे नेत्र वेख नैण खोलॄ, मस्तक लेखा अपर अपारे। प्रभ अबिनाशी रिहा बोल, केहड़ी कूटे लए झूटे, पारब्रह्म जोत निरँकारे। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि इक्क अधारे। इक्क अधारा इक्क अकालया। सच पसारा सर्ब समा ल्या। वड संसारा खेल निरालया। उच्च चबारा इक्क बणा ल्या। नौ दुआरा हरि रखा ल्या। सिँघ जगदीसा भेंट चढ़ा ल्या। साची सेवा हरि जी ला ल्या। साधां संतां पड़दा उहला, साचा कन्ता विच समा ल्या। दस्म दुआरी आसण ला ल्या। निहकलंक नरायण नर, रंग रंगीला खेल रचा ल्या। नौ दुआरे खोलॄ, रचन रचांयदा। दसवें रिहा बोल, ढोल वजांयदा। जन भगतां तोले पूरे तोल, शब्द कंडा हथ्थ उठांयदा। कलिजुग करन आया चोहल, देवे वस्त नाम अनमोल, धुर दरगाही आप लिआंयदा। गुरूआं पीरां प्या घोल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए दलाला कलिजुग रखवाला, अकाल अकाला दीन दयाला,

१५३ ०५

जगत झेड़ा करे निबेड़ा, सच न्याउँ सभनीं थांउँ आपणा आप करांयदा। करे सच न्याउँ शब्द अधारया। पुरख अबिनाशी अगम्म अथाहो, वेख वखाणे कवण दुआरे ठंडी छाउँ, साचा दरस पछानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे जाण पछाणे, संत जनां दा पीणा खाणया। संत जनां हरि बिरध रखाया। अट्ठे पहर इक्क अधार, एका अक्खर नाम पढ़ाया। जीआं जन्तां उधार, दर दुआरे एह समझाया। आपे रिहा पैज संवार, दिस किसे ना आया। शब्द सिँघासण जगत मझार, जोत निरँजण डेरा लाया। इक्क अकाला ओंकार, दूजा कोई ना यार बणाया। साचे शब्द रक्खे प्यार, साची दात मात दवाया। पवण घोड़े कर अस्वार, सिध्धा राह इक्क वखाया। नाम लाया डण्डा भार, पुरीआं लोआं आप मिटाया। कलिजुग काला अन्ध अंध्यार, काला वेस मात वटाया। जोती जामा धरया भेस, काया मन्दिर हरि आपणा आप छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच दर, भेव किसे ना राया। शब्द घोड़ा कर त्यार, लोकमात दुड़ांयदा। जोत निरँजण हो अस्वार, चारे कुन्टां पावे सार, दूर दुराडा लडाए लाडा, जन भगतां बेड़ा आप उठांयदा। लक्ख चुरासी साचा वाचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा बेड़ा मात बनाँयदा। बेड़ा करे पार, पुरख अबिनाशी किरपा धार, सोहँ चप्पू नाम लगाए, खिच्ची जाए वारो वार। हद्द ब्यासा आप टपाए, साचे सागर डूंघी धार। हरिजन साचे संत सरनाए, आपे बख्शे कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। आप उठाए साचे संत, चोट रिहा लगाईआ। वेख वखाणे जीव जन्त, भरम भुलेखा दूर कराईआ। कवण दुआरे रंग बसंत, फूलन बरखा किस दर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साल पन्दरवें करे खेल, जमन किनारा साचा मेल, सोई सुरती आत्म ज्ञानी बण ध्यानी जोगी अभ्यासी जपी तपी सारे लए उठाईआ। जप जप आदि जुगादि। एका तप बोध अगाध। सोहँ छड्डे साचा सप्प, शब्द वजाए साचा नाद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, गुरमुख विरला मात लाध। साल पन्दरवें सुरत ज्ञान सर्ब भुलांयदा। साचा झुल्ले शब्द निशान हरि भगवान दे ज्ञान साचा संत समझांयदा। अन्तिम छड्डुणी पए दुकान, एका राह धुर दरगाह जगत मलाह आप अख्वांयदा। पकड़ उठाए थांउँ थाँ, कोई ना अगों करे ना, साचा हुक्म सुणांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपणा मेल मिलांयदा। ब्यास किनारा तुट्टे तट्ट। शब्द तीर एका छुट्टे, दुरमति मैल रिहा कट। बेमुखां जड़़ आपे पुटे, गुरमुखां तन पहनाए शब्द साचा पट। जोती जोत सरूप हरि, चार वरनां खुल्ह़ाए साचा हट्ट। साचा हट्ट वणज वपारया। मंगण आउँणा चल द्वारया। आपे जाणे घट घट, राज राजानां शाह सुल्तानां वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे, भेद अभेदा आपणा मुख छुपा रिहा। ना कोई गाए चारे

वेदा, पुराण अठारां अछल अछेदा, चार लक्ख हजार सतारां शलोक लिखाए, आप सुणाए नारद मुन रिहा समझाए, निहकलंक कलि जामा पाए पुरख अबिनाशी माधव माधा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं कलि देवे दादा। लथ्थण तन चीर, राजे राणया। किसे मन आए धीर, किसे सुघड़ स्याणया। फिरन जंगल वांग फ़कीर, छड्डणे पैणे हाणी हाणीआ। किसे मिले ना अमृत नीर, लक्ख चुरासी बेमुहाणया। कलिजुग अन्तिम पैणी भीड़, लेखा मंगे नर हरि सच्चा बाणीआ। शब्द वेलणे रिहा पीड़, लक्ख चुरासी पाए घाण घाणीआ। आपे बन्ने आपणी बीड़, वेद पुराणी खाणी बाणीआ। ना कोई जाणे हस्त कीड़, मुच्छ दाढ़ी ना कोई पछाणीआ। निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम रिड़कण आया सोहँ शब्द रखाए मधाणीआ। सोहँ शब्द सच मधाणी। आपे रिड़के चारे खाणी चारे बाणी। गुरमुख साचे संत वरोले, उप्पर मक्खण छाछ निमाणी। पूरे तोल हरि जी तोले, अमृत पाए ठंडा पाणी। सच दुआरा एका खोल्हे, चार वरनां सच्चा शाह बेपरवाह, सृष्ट सबाई एका राणी। निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा मात धर, सोहँ अक्खर कर कर वक्खर दे मति समझाए साची बाणी। सतिजुग साचा मात धरया, सोहँ शब्द चलांयदा। आप आपणा आपे वरया, दूसर राह ना कोई वखांयदा। शब्द घोड़ी हरि जी चढ़या, सोहँ सेहरा आप रखांयदा। आपे जाणे घाड़न घड़या, जोती जोत सरूप हरि, एका रस साचा भोग, गुरमुख साची आत्म

करया। साचा भोग रसन रसायण, गुरमुख साचे साचे घर कर आपणा वेसा मिटाए चिन्ता सोग। हउमे चुक्के जगत विजोग। एका रस आत्म तृष्ना दए मिटाया, हउमे कटे धुर संजोग। आपणा मेल आप मिलाया। मिल्या मेल नर हरि सरबन्गया, वड दाते जोधे बलकारया। दुष्ट सँघारे किरपा धारे जिउँ काहना कंसा, मारे वड वड हंकारया। आप प्रगटाए विच सहँसा, बेमुखां करे मात ख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख न्यारया। जोती जामा जगत दलाला। करे खेल गुर गोपाला। भगत जनां दा सज्जण सुहेला, धर्म राए दी कटे जेल्हा, अट्ठे पहर होए रखवाला। पारब्रह्म अचरज खेल दीपक जोती करे उजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी चाढ़े फाँसी, कढ्ढण आया मात दवाला। मातलोक मति एक आप बणांयदा। गुरमुख विरला जाणे सति, सत्त लोक सति सरूपी हरि समांयदा। जगत वखाणे सुण सुण गाए जगत शलोक, दर दुआरा कोई सहांयदा। काल अकाला सृष्ट सबाई रिहा झोक, होए रखवाल ना कोई छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सच दलाला आप अख्वांयदा। कलिजुग कलि हो त्यार, प्रभ दर सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दर दुआरा मंगण आया। जूठा झूठा कलि विहार, मूंह थुक्कां नाल भराया। कोई ना दीसे सज्जण मीत मुरार, चार यारी मुख भवाया। नाता तुट्टे कन्त भतार, सति धर्म दिस ना आया। आपे वेखे

कर विचार, चारों कुन्ट कलि हलकाया। धरत मात रोवे धाहां मार, पूत कपूता काहनूं जाया। प्रभ अबिनाशी सुण पुकार, पापां भार ना जाए उठाया। कलिजुग करनी किरत रिहा विचार, वेला अन्तिम नेड़े आया। आए दर सच्चे दरबार, निहकलंक सुण फरयाद गल आपणे पल्लू पाया। वेला आपणा रक्खणा याद, साची वस्त जां झोली पाया। संग मुहम्मद नाल दित्ती दाद, चौधवीं सदी तिलक लगाया। भेव खोल्ह बोध अगाध, वेला अन्तिम तेरा आया। शब्द सच्चा सोहँ नाद, जगत भुलेखा दए कढाया। जन भगतां देवे नाम दाद, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा लेखा रिहा लिखाया। कलिजुग आए दर दए दुहाईआ। प्रभ अबिनाशी दे जा वर, काली कमली होई शाहीआ। चारों कुन्ट आउँणा डर, धर्म राए पाए गल विच फाहीआ। गुरमुख विरला जाए तर, जिस तेरी ओट रखाईआ। आपणी करनी रिहा कर, सोलां कला जोत रघुराईआ। लक्ख चुरासी पावण आया नत्थ, अन्तिम आपे जाए मथ, ना होए कोई सहाईआ। सदी चौधवीं होई सथ, गुरमुख चढ़या सोहँ रथ प्रभ आप चढ़ाईआ। सगल वसूरे जायण लथ, दरस दिखाए हरि समरथ, मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जन भगतां देवे नाम वथ, आत्म जोत जगाईआ। महिंमा जगत सदा अकथ, वेद पुराणां सार ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख धर, साची जोत मात प्रगटाईआ।

०५ ०५

★ १६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

कलिजुग सालस आप प्रभ, साचा हुक्म सुणांयदा। कलिजुग सालस आप प्रभ, लेखा लेख घर घर वेख, आपे आप लिखांयदा। कलिजुग सालस आप प्रभ, जूठा झूठा भेख पर्दा ओहला ना कोई रखांयदा। कलिजुग सालस आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म धुर फ़रमाण सच दरबारे आप सुणांयदा। सच फ़रमाण धुर सुणा रिहा। लक्ख चुरासी पावे आण विच संसारया। अन्तिम झुल्लणा इक्क निशान, हरि निरंकारया। लोआं पुरीआं इक्क उडान, आवे जावे वारो वारया। जगत जगदीस हरि मेहरवान, अट्ठे पहर नौजवान मारी जाए राजे राणया। हथ्थ फड़े फड़ाए तीर कमान, उनी हाढ़ी वड बलवान, शब्द तीर तेज कटार गुण निधानया। खाली कदी ना जावे वार, सदी चौधवीं चौथे सिँघासण आसण कर, आप आपणा खेल रचा ल्या। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी लै के आया। लोकमात मार ध्यान, गुर संगत बहि समझावण आया। फड़ फड़ बांहों राहे पावण आया। इक्क वखाए नाम बिबाण, कलिजुग माया जूठी झूठी छाया गलों कफ्फणी काली लाहवण आया। नाम रंगण रंग रंगाया। मोहण माधो जोत निरँजण साचा रंग रंगावण

आया। झूठी देही काया माटी, कच्चा चम्मा रंग कसुंबड़ा हरि अचमड़ा, ना कोई लाए पैसा दमड़ा, आपणी हथ्थीं आप चढ़ावण आया। ना कोई माई पित अंमड़ा, जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक नरायण नर, इक्क अकेला सज्जण सुहेला, सृष्ट सबाई करया मेला, साचा खेल खिलावण आया। सच्चा हुक्म सच्ची सरकार, प्रभ अबिनाशी वंडण आया। अमृत साचा जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म धुर फ़रमाण, गुर संगत तेरा लेखा आप लिखाया। आया धुर फ़रमाण हरि सुणांयदा। सोलां कला हरि जुआन, सत्तां वंड वंडांयदा। आपे करे आप पछाण, ना कोई जाणे जीव अञ्याण, साधां संतां भेव छुपांयदा। आपे जाणे जाणी जाण, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा नाम निशान, काला वेस झूठ दुकान, पैरां हेठ दबांयदा। उप्पर मार ध्यान, चढ़या लाल रंग महान, सतिजुग साचे तेरी आण, जन भगतां आप सुणांयदा। आपे देवे जिया दान, किरपा कर श्री भगवान, मस्तक धूढ़ी इक्क लगांयदा। जन भगतां आसा मनसा पूरी, आपे खड़ा हाज़र हज़ूरी, दूसर कोई दिस ना आंयदा। जोत निरँजण एका नूरी। काया मन्दिर पर्बत कोहतूरी, साचा दीपक आपणी हथ्थीं हरि समरथी उच्चे टिल्ले आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। साचे पौड़े जाणा चढ़। प्रभ अबिनाशी साचे घाड़न रिहा घड़। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं रिहा लड़। शब्द निशाना कर त्यार, धरत मात उत्ते रखाया ए। सोहँ शब्द बिबाण विच संसार, प्रभ साचे आप चढ़ाया ए। कृष्ना काहना रिहा फड़, जोत निरँजण कर उज्यार, द्वार बंक सुहाया ए। राज राजानां करे ख़बरदार, एका शब्द सच्चा जैकार, जगत भुलेखा रिहा मिटाया ए। ओंकारा इक्क अकार, जोत निरँजण साची धार, सोहँ शब्द इक्क अपार, चार वरनां नात बनाया ए। हउमे रिहा रोग निवार, चिन्ता सोग दर दुरकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग चढ़ाया ए।

★ १६ हाढ़ २०१२ बिक्रमी पंडत जवाहर लाल नेहरू नूं शब्द भेज्जया कि बवन्जा राजयां नूं ख़बर दे दे कि जोत सरूप ते शब्द दी धार दे हुक्म नाल सृष्टी नूं खै करना है ★

गुर मन्त्र प्रधान प्रधान प्रधानया। काया मन्दिर मार ध्यान, कवण सिँघासण हरि भगवानया। धर्म दुआरे कवण निशान, कवण झुलाए विच जहानया। कवण रखाए आपणी आण, करे खेल विच जहानया। कवण देवे जिया दान, मेहरबान मेहरबान मेहरबानया। कवण दाता पुरख बिधाता लक्ख चुरासी फंद कटान, राज जोग जोग राज जिस पछानया। जोती जोत सरूप

हरि, लोकमात हरि जोत धर, शब्द सुनेहड़ा घल, नेत्र खोल्ह मात पढ़ना कलिजुग जीव जगत निधानया। शब्द सुनेहड़ा हरि दातार। लेखा लिखे सच्ची सरकार। पंडत नेहरू होणा मात ख़बरदार। पुरख अबिनाशी जामा पाया, विच विचोला पंत रखाया, डण्डा लाया अद्धविचकार। देस बवन्जा लेख लिखाया। साचा हुक्म रिहा सुणाया। जोती जामा धरया भेख, सम्बल देस हरि समाया। गौड़ ब्रह्मण लैणा वेख, प्रगट होए डंक वजाया। साचा पतर धुर दरगाही लेख, मति बुध किसे सार ना पाया। आपे जाणे आपणी टेक, बुध बिबेक कोई दिस ना आया। राज राजानां शाह सुल्तानां अन्तिम तुटी रेख, सीस ताज किसे रहण ना पाया। नेत्र नैण लैणा वेख, अठ्ठ अठ्ठ त्रै रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सच दुआरे रिहा घलाया। शब्द मन्त्र नाम प्रधान। प्रधान मन्त्री इक्क ध्यान। एका ओट पुरख अबिनाशी चरन ध्यान। शब्द नगारे वज्जे चोट, उठे नर हरि बली बलवान। लशकर फौजां होण अस्वार कोटन कोट, झुल्ले सच्चा इक्क निशान। नाम प्याला पीणा अन्दर आत्म घोट, दर घर साचे लैणा दान। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, कलिजुग सौणा ना बण निधान। शब्द मन्त्र जगत प्रधान। पारब्रह्म दर सच ज्ञान। नौ खण्ड पृथ्वी दीसे कच्च, सत्तां दीपां झूठ दुकान। माया माटी पुतले रहे नच्च, कोई शाह कोई कंगाल। इक्क दुआरा साचो साच, पुरख
१५८ अबिनाशी धुर दलाल। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, जगत अवल्लड़ी चले चाल। शब्द जवान विच जहान १५८
०५ सदा बलकारया। आपे उठे वेखे मार ध्यान, चारों कुन्टां सर्ब हंकारया। फड़े शब्द तीर कमान, चिले तीर एका चाड़्या। ०५
सत्तां दीपां इक्क निशान, आप उठाए श्री भगवान, धुर दरगाही साचा लाड़या। पुरीआं लोआं रक्खे आण, दरगाह साची एका माण, आपे वेखे मात अखाड़या। चवी हथ्थ विच जहान, साचा रथ इक्क निधान, लक्ख चुरासी तोड़े माण, करे खेल आप भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, दूसर भेव किसे ना जाणया। आए लेख धुर फ़रमाण, अन्त विचारना। माया भुल ना बण नादान, दूसर दिसे ना कोए सवारना। चतुर्भुज गुण निधान, काली छत्तीं पाड़ा लावणा। देवे जोत एका रती, विच्चों आत्म कढ्ढे वासना तत्ती, आप फड़ाए आपणा दामना। जोती जोत सरूप हरि, धार बवन्जा वेख कर, सच विचोला आप बनावणा। जगत विचोला आप बनावणा। जगत विचोला आप बणाया। पंडत नहिरू देवी देव, साची सेवा हरि जी लाया। रसना जिह्वा लिख लिख , लेखा हुक्म सुणाया। प्रगट होए अलक्ख निरँजण आपे आप अभेव, साचा अंजन नेत्र पाया। मुख लगाया साचा शब्द एका मेव, किल्ह्ला कोट गढ़ बंक द्वार उच्चा टिल्ला आपे ढाहया। शब्द कराया इक्क जैकार, नाम दरवाजा चार वरनां विच संसारा एका लाया। ऊँचां नीचां भेव निवार, गरीब निवाजा मात

आया। जिस जन तेरा साजन साजा, सम्बल देस डेरा लाया। गौड़ ब्राह्मण रक्खया नाउँ, गुरमुख साचे विच समाया। उच्चा टिल्ला वड पहाड़ा, काया पर्बत बजर कपाटी आपे पाटी, साची चोटी आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग माया नाल रलाई, लक्ख चुरासी मात बणाई, झूठा सीर प्यावण आया। गुरमुखां देवे अमृत रस धुर दरगाही साचा माही, सोहँ मुम्मा नाल ल्याया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सच सुनेहड़ा शब्द सुणाया। पंडत पांधे लैणे सद्द। कवण दुआरा वेख वखायण, किस घर साचे वज्जे नद। गौड़ ब्राह्मण कवण पछाणे, कवण सुणाए वाजा राग अनहद। राजे राणे दर बुलाणे, खोल्हे भेव भेद अभेदा केहड़ी प्रगट होया यद्द। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, गौड़ ब्राह्मण पीवे मध। गौड़ ब्राह्मण सदा मतवाला है। लोकमात रक्खण आया धर्म, सृष्ट सबाई आप रखवाला है। ब्रह्म पारब्रह्म सदा मतवाला है। राजे राणयां वेखे कर्म, कलिजुग कढ्ढे अन्त दवाला है। जूठा झूठा दिसे माटी चर्म, काया भाण्डा सभ दा खाली है। ना कोई जाणे साचे वरम, ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधे झूठी लैंदे रहे दलाली है। गौड़ ब्राह्मण प्रगट होए सम्बल देस, हरि जी सोया कलिजुग रैण घटा काली है। कलिजुग घटा काली, राज राजानया। एका एक जोत ज्वाली, अष्टभुज सर्ब रखवाली, दूतां दुष्टां आप सँघारया। आपे होए हथ्थीं खाली, गदा चक्र संख तीर कटार कच्छ ना कोई उठाई, चले चाल निरालीआ। उठना जाग जाग जाग वड वड वड सरदार कच्छ मच्छ प्रभ आप वजाए लोकमात साची तालीआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द घोड़े उप्पर चढ़, वेखण आया कवण दुआरे अमृत फल लग्गा साची डाल्ही है। साची सेवा हरि लगाई, आत्म ब्रह्म विचारना। बवन्जा देस लेख लिखाई, प्रगट होए हरि रघुराई, साचा डंक इक्क वजावणा। सम्बल देस भेव खुल्हाई, गौड़ ब्राह्मण वज्जे वधाई, दे मति सर्ब समझावणा। ना कोई जाणे ऊँचा नीचा हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धार वहावणा। चारों यार दए दुहाई, पंचम होया सहिज सुभाई, पूर्ब कर्मां कलि विचारना। आपे वेखे वेख विचारे सुघड़ स्याणे राजे राणे थांउँ थाँईं, भेद अभेद भेव अपारना। गऊ गरीबां देवे छाँईं, निहकलंक नरायण नर, आपे करे आपणी कारना। नेत्र खोल्ह पढ़ना अक्खर, लिख्या धुर दरगाही उप्पर पत्थर, लक्ख चुरासी वेले अन्तिम होणी सथ्थर, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानना।

१५६ ०५

★ महाराज पूरन सिँघ अन्दर प्रवेश ""पूरन जोत"" धार पृथाए लिख्त होई ★

पप्पा पुरख सुजान पुरी बणाईआ। पौड़ा लाए कर ध्यान, उच्च महल्ल इक्क रखाईआ। पोह ना सके कदे काल,

आदि अन्त होए रुशनाईआ। पंजां तत्तां छुट्टे जगत जंजाल, सच सिँघासण सदा सुहाईआ। पिता मात नां जाए कदे बाल, ना कोई गोद उठाईआ। पीत पीतम्बर सोहे साचा लाल, साची छहिबर आप लगाईआ। पंडत पांधे करन ध्यान, नेत्र नैण ना किसे दिसाईआ। पंच पंचायणा वसे बाहर, अवल्लड़ी चाल सदा रघुराईआ। पुरख निरँजण जोत अकार, लक्ख चुरासी विच समाईआ। पावण आया अन्तिम सार, करे वेस हरि रघुराईआ। पप्पा पूरन पुरख सुजान, पूरी मिली मात वड्डियाईआ। रारा राम रहीम करीम सदा उजालया। ना कोई कढ्ढे सवाल ना कोई पढ़े मात ताअलीम, शब्द अक्खर ना किसे सिखा ल्या। ना कोई नाड़ी फड़े हकीम, बत्ती धारा भेव निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी चालया। रारा रमईआ राम रहीमा, देवे रिजक सबाईआ। आपे वेखे हो हो नीवां, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम लेखा मुक्के वंड वंडाए साढे तिन्न हथ्थ सीआं, राजे राणयां रिहा सुणाईआ। माया राणी वड जरवाणी भरम भुलेखा पाया, खाणी बाणी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात हरि जोत धर, साचा राह रिहा वखाईआ। दस्से राह जगत महानया। मिलणा मेल बेपरवाह, मात चुक्के आवण जाणया। इक्क बहाए साचे थाँ, दरगाह साची देवे माणया। ना कोई पिता ना कोई माँ, आप आपणे रंग समाणया। सदा रक्खे ठंडी छाँ, गुरमुख साचे बाल अञ्याणया। अमृत रूपी साची गां, प्यावे सीर हरि भगवानया। रारा रेख मिटाए थाँ थाँ, वेख वखाणे राज रजानया। घर घर अन्तिम उडदे कां, बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणया। पुरख अबिनाशी एका भुल्लया तेरा नां, सृष्ट सबाई वहिण वहे बेमुहाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए गुण निधानया। नाम निरँजण नर निरंकारया। जन भगतां नेत्र पावण आया अंजन, सोहँ शब्द अपर अपारया। काया माटी झूठी देही आप बणाए साचा कंचन, शब्द कुठाली रिहा चाढ़या। जोती जोत सरूप हरि, लेखा लिखे नौ दर दरबारया। नौ दर वेख काज रचाया। लक्ख चुरासी तेरा साजन साज, सच दुआरा मात खुल्हाया। भगत जनां हरि रक्खे लाज, नौ दर पेखे दे मति रिहा समझाया। आप आपणे संवारे काज, अन्दरे अन्दर दस्म दुआरे कुण्डा देवे लाहया। जगत जगदीसा छत्र झुले सीसा, छोटा मुंडा अग्गे लाया। कोई भेव ना पावे राग छतीसा, रिख मुन गावण नाल अजेबा, भेद अभेदा शाम सफेदा दिस किसे ना आया। युजर विचारे आप क्तेबा, वेद अथर्बण रिहा घबराया। पुराण अठारां अछल अछेदा, गौड़ ब्राह्मण किसे ब्रह्म चित ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, सम्बल नगरी वास रखाया। पूरन पुरख सुजान, भगत उजागरा। पुरख अबिनाशी धुर दरगाही लोकमात मारे ध्यान, कवण करे नाम सुदागरा। सिँघ पूरन दर परवान, प्रभ आसण लाया आण, लक्ख चुरासी चुक्के काण, इक्क वसाया दस

उंगल साची गिरा आगरा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, करे खेल हरि रती रत्नागरा। पूरन पूरन ताल हरि सुहाया। हरिजन पहली मारे छाल, सच सरोवर इक्क अशनान कराया। अकाल काल शब्द सागरा, मस्तक दीपक जगे जोत निरँजण हरि रघुराईआ। कदे ना खाए जमकाल, धर्म राए दुहाया। गुरमुख साचे चरन प्रीती निभे नाल, प्रभ साचा मेवा दए खवाया। आपे चले नाल नाल, अट्ठे पहर हरि रखवाल, अन्दर बाहर दिस किसे ना आया। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी वास रखाया। सम्बल देस अपार सुरत भुलांयदा। जोती नूर इक्क अकार, दिस ना आंयदा। माया भुला सर्ब संसार, गुर गोबिन्दा भेख वटांयदा। प्रगट होए आप करतार, वाली हिन्द दया कमांयदा। सोला करे तन श्रृंगार, चिट्टा अस्व नाल ल्यांअदा। साचे घोड़े हो अस्वार, चारों कुन्टां आप दुड़ांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, साधां संतां आप उठांयदा। प्रगट होया सच्चा यार, भरम भुलेखा दूर करांयदा। ना कोई वेखे मुहम्मदी बेमुहार, माया पड़दा एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल साचा वेस कर, आपणा भेव आप छुपांयदा। सस्सा सगल पसार सगल अकारया। आपे जाणे आपणी सार, विच संसारया। करे कराए सच विहार, धर्म जैकारया। पवण उनन्जा छत्र झुलार, अट्ठे पहर झुलारया। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, अट्ठे पहर करन आदेस, जुगा जुगन्तर पावे सार, आवे मात वारो वारया। पुरीआं लोआं दए प्यार, रक्ख हथ्थ समरथ पार उतारया। आपे वसे सभ तों बाहर, साचा भेव खेल न्यार, साचे भाणे आप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्बल साचा वेस कर, साचे घर बहा रिहा। बब्बा बुध बिबेक आप विचारया। कलिजुग जीव ना आए सुध, अन्तिम बेमुहारया। भेखाधारी लब्भदे फिरदे दर दर घर घर नौ निध, भेख पखण्डा जगत वधा रिहा। धर्म ना करे कोई युद्ध, शब्द खण्डा ना कोई फड़ा रिहा पुरख अबिनाशी प्रगट जोत लक्ख चुरासी करन आया सुध, एका नाम सबक सिखा रिहा। चिट्टे अस्व मार छाल बहे कुद्द, दिस किसे ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, बुध बिबेक आप करा रिहा। बब्बा बलि बलि धार बली बलवानया। वेख वखाणे राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहानया। चारों कुन्ट दिसण बेईमान, शब्द गाना नाम तराना, किसे ना मात पछाणया। झूठा दिसे खाणा पीणा, मातलोक दा झूठ टिकाणा, दर घर साचा इक्क टिकाणया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आपणे भाणया। लल्ला लंगर लवाए लाल अमोल्लया। गुर संगत रिहा खवाए, पूरा तोल आपे तोल्लया। लक्ख चुरासी रिहा कटाए, ना रक्खे रोल घचोल्लया। धर्म राए रिहा दुरकाए, लाड़ी मौत रक्खे पड़दा उहलया। प्रगट होए सच्ची सरनाई, गुरमुख तेरे अन्दरे अन्दर बोल्लया। होए सहाई सभनीं थाँई, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ किल्हे कोट आपे

कुण्डा खोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। लल्ला लई सुरत संभाल, हरि सिरजनहारया। गुरमुखां देवे सच्चा धन माल, करे वणज वपारया। तोड़े जगत जंजाल, जम की फाँसी दूर करा रिहा। साध संत ना होए कंगाल, साची झोली नाम भरा रिहा। फल लगाए काया डाल्ह, कलिजुग जूठे झूठे सिम्मल रुक्खड़े आप वखा रिहा। गुरमुख साचे संत सुहेले गुर चरन प्रीती निभे नाल, आपे मालण आपे पालण, कौस्तक मणीआ मस्तक आप वखा रिहा। मस्तक टिका गुण निधान। सोहँ सच्चा सिक्का चले दो जहान। पुरख अबिनाशी आपे होए सभ तों निक्का, अन्दर बैठा करे ध्यान। कलिजुग जीव रसन विकारी, जूठा झूठा फल खाए फिका, अमृत ना जाणे गुण निधान। काया माटी चिट्टे चमड़े उत्ते विका, काला दाग़ दिसणा रहे मात निशान। गुरमुख साचा संत सुहेला अट्ठे पहर प्रभ अबिनाशी तेरे मिलण दी रक्खे सिक्का, देणा दरस हो मेहरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर ल्या पछाण। सम्बल देस हरि प्रवेशया। कलिजुग पया कलेश, घर घर वेखे काला वेस, ना कोई नर ना नरेश, ना कोई ब्रह्मा विष्न

१६२ महेष, शिव शंकर फिरे प्रदेश, घर घर मन्नदे पए गणेश, ना कोई दिसे खुल्हे केस, चारों कुन्ट लभ्भदे फिरदे उच्चे नीवें हो हो श्री दस्मेस, घर साचा दर मात किसे ना वेख्या। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सम्बल वेखे साचा घर, आए आप प्रदेस। सम्बल देस कल्कि अवतारा। नीला घोड़ा आप शृंगारा। नीली छत्ते लाया पाड़ा। बेमुखां लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा। चारों कुन्ट लभ्भदे फिरदे, जोत सरूपी प्रगट होया केहड़ी कूटे सच्चा लाडा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, धरत मात तेरा वेखण आया कलिजुग अन्तिम वाड़ा। इक्क अकारी सम्बल नगरी अपर अपारी। पुरख अबिनाशी लग्गी प्यारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। मारी शब्द छाल उडारी। काया मन्दिर विच पसारी। अन्दर कुण्डा बैठा मारी। गुरमुखां करे ख़बरदारी। बेमुख रोंदे धाहां मारी। नार दुहागण जीव विभचारी। खुल्हे केस दर भिखारी। दिस ना आए श्री दस्मेस, जोत निरँजण खेल अपारी। दर खड़े शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष, साचा जन्म देवे सच्ची सरदारी। सति पुरख को सदा आदेस, आपे जाणे आपणी कारी। सौ साखी घर घर बैठे रहे वेख, सौ चार ना पावण सारी। गुर गोबिन्दे धारया भेख, सरसे तेरी वहिंदी धारी। आपे लिखण आया लेख, सृष्ट सबाई तेरा दूजी वारी। मेट मिटाए कलिजुग जीवां काली रेख, रक्खे हथ्थ शब्द आरी। ना कोई दिसे औलीआ पीर शेख़, ना झूठा दिसे हट्ट बजारी। गुरमुख साचा संत बणाया वेख, जोती जोत सरूप हरि, गौड़ ब्रह्मण नाल तेरे लाई सच्ची यारी। सति ब्रह्म हरि समझांयदा। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म कवण अख्वांयदा। ना कोई जाणे साचे धर्म, कर्म लेखा कवण लिखांयदा। कवण मिटाए माटी चर्म, पंजां तत्तां

१६३
०५

कवण रखांयदा। कवण लगाए उत्ते मरम, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोत जगांयदा। कवण मिटाए अन्दर भरम, किला कोट कवण बणाए, कवण अन्तिम ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, सम्बल नगरी सच समग्री आपणी आप रखांयदा। सच समग्री हरि दातार। सोहँ नगरी अपर अपार। जोत उजज्री विच संसार। गुरमुख विरले चरन प्रीती लगरी, मिल्या मेल हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, आप बणाए सच दरबार। सच दरबारा इक्क सुहाया। सिँघ सिँघासण डेरा लाया। नौ दुआरे पड़दा लाहया। बन्द कवाड़ा इक्क रखाया। सतारां हाढ़ी दया कमाया। बेमुखां आत्म तृष्ना अग्न रिहा साड़ी, अमृत साचा मेघ बरसाया। शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी, साचा तिलक आप लगाया। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, पुरीआं लोआं रिहा फिराया। दर घर साचे जाए वाड़ी, जोत निरँजण विच समाया। जगे जोत बहत्तर नाड़ी, पुरख अबिनाशी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, जगत जगदीश तेरा महल्ल अटल, लोकमात हरि इक्क सुहाया। सच महल्ल अपार नौ द्वारया। कलिजुग लग्गा झूठा सल, ना दीसे कोई सहारया। रंक राजानां करे वल छल, जूठी झूठी सच्ची सरकारया। जोती जोत सरूप हरि, चारों कुन्ट वेख वखाणे इक्क हँकारा जगत विकारा लोकमात पसारया। कलिजुग पसारा एका वड हंकारया। कलिजुग जीवां काया रहे सेक, करे ख्वारया। कोई ना करे कम्म नेक, जूठा झूठा सर्ब विहारया। हरिजन विरले संत सुहेले पुरख अबिनाशी तेरी टेक, रखे इक्क सहारया। साचे नेत्र रहे वेख, देवे दरस अगम्म अपारया। लक्ख चुरासी मिटे लेख, गर्भवास ना होए दूजी वारया। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण आप बिराजे, शब्द घोड़े चिट्टे ताजे, लक्ख चुरासी साजन साजे, आपे वसे बाहरया। हरिसंगत सेवादार, सेव कमांयदा। रातीं सुत्या पहरेदार, चोर यार आप दुरकांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, निन्दरा आलस मगरों लांहयदा। सदा करदा रहे प्यार, ना रखे कोई अधार, दो दहानी दया कमांयदा। चलदा रहे मात भण्डार, निहकलंकी खेल अपार, गुर संगत तेरा मीत मुरार, साचा दर खुलांयदा। साचे विकणा हट्ट बजार, एका करना वणज वपार, नाम वस्त साची दस्त फड़ांयदा। ना कोई दूसर विच संसार, मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण झूठे यार, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। सोहँ शब्द फूलनहार, साचा करे तन शृंगार गल लटकांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, बैठ सच सच्चे दरबार, नौ दरवाजे बन्द किवाड़, दसवां वेखे इक्क द्वार, साची सेजा आसण लांयदा। खुशी मनाई सतारां हाढ़ी, नेड़ ना आए मौत लाड़ी, दर घर साचे देवे वाड़ी, शब्द घोड़े जाए चाढ़ी, आवण जावण गेड़ कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत तेरा सेवादार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, पहरेदार अख्वांयदा। होए सेवादार चाकर चाकरा। सदा सुहेला करे कराए ख़बरदार, पाकी

पाक आपे पाकरा। हउमे रोग दए निवार, ना कोई दिसे अग्गे आकी आकरा। ना कोई गुर ना कोई चेल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी दया कमाए, मानस देही मेल मिलाए, कर्म करे उजागरा। मानस देही लेखे लाए। शब्द गहणा तन पहनाए। भाणा सहिणा हुक्म सुणाए। झूठे वहिण मात ना वहिणा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाए। दरस दिखाए नेत्र नैणा, बन्द किवाड़ी आप खुल्हाए। पुरख अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची मिल के बहिणा, साचा हुक्म सुणाए। गुर संगत तेरा साचा नाता। चार वरन भैण भ्राता। उत्तम रक्खी हरि जी ज़ाता। नेड़ ना आए दूई द्वैती वड कमज़ाता। गुरमुखां मेल पुरख बिधाता, काया मन्दिर अन्दर मसीत गुरदुआरा एका जाता। बेमुख जीवां काया अन्दर एका दिसे अन्धेरी राता। वेले अन्त बणत बणाई, साध संत रिहा जगाई, बैठा रहे इक्क इकांता। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे इक्क वर, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम पुच्छे वाता। गुर संगत साचा माण धुर दरगाही एका मिले नाम बिबाण, हरि साचा विच मलाह। झुलदा जाए नाम निशान, वेख वखाणे थांउँ थाँ। आप रखाए आपणी आण, वेले अन्त होए सहाए, पकड़ उठाए फड़ के बांह। गुरमुख तेरी वध्धदी जाए शान, मिल्या पुरख अगम्मड़ा आपे पिता आपे माँ। ना कोई पल्ले रखे दमड़ा, धुर दरगाही हरि मलाह सदा सुहेला इक्क अकेला रक्खे ठंडी छाँ। निहकलंक नरायण नर, गुर संगत देवे इक्क वर, रसना ध्याउँणा हरि हरि साचा नाँ। हरि हरि सच्चा नाम ध्यावणा। आत्म घर इक्क वसावणा। दर दरवाजा बन्द खुल्हावणा। गरीब निवाजा विच बहावणा। जिस जन तेरा साजन साजा, दर घर साचे दर्शन पावणा। लाड़ी मौत मारे वाजां, अज कल भेव किसे ना पावणा। चारों कुन्ट पैण भाजां, होए सहाई ना किसे छुडावणा। राजे राणया सीस लथ्थे ताजा, दर दरबान ना कोई रखावणा। प्रगटे जोत सम्बल देस देस माझा, काया नगरी आसण लावणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द वाजा धुनी नाद अनाहद धारा इक्क वजावणा। अमृत बरखे ठंडी धार। दस्म दुआरी ताल सुहावा, झिरे झिरना अपर अपार। वेखे कँवल मुख उग्घाड़, कवण कपाटी देवे पाड़। साचा तीर्थ साची ताटी, काया मन्दिर चार द्वार। नौ दरवाजे खुल्ही हाटी, कलिजुग काला वणज वपार। दस्म दुआरे सच पाटी, शब्द श्रृंगारा तन श्रृंगार। अमृत रस गुरमुख विरला रिहा चाटी, चरन सरन सरन गुर चरन कर निमस्कार। दुरमति मैल रिहा काटी, अमृत बरखे किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग बेड़ा लाए पार। अमृत आत्म धार आप वहांयदा। गुरमुखां कर विचार, दया कमांयदा। मानस देही जन्म संवार, लक्ख चुरासी पार करांयदा। आदि अन्त ना जाए हार, सच्ची सरकार साचे मार्ग आपे पांयदा। काया करे ठंडी ठार, विच संसार

तन बुखार हउमे रोग गवांयदा। अमृत भरया हरि भण्डार, गुर संगत बणया आप वरतार, साचे मुखड़े आप चुआंयदा। गुरमुखां लाहे दुखड़े, सिरों भारे लहंदा। निर्मल करे मात मुखड़े, चरन दुलारे सुफल कुक्खड़े उलटा बिरछ ना कोई उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अमृत धार विच संसार, गुर संगत इक्क वखांयदा। अमृत धारी जिया नूर। भगत जनां घर सति सरूर। सर्ब जीआं प्रभ आसा पूरे, बेमुखां हरि दिसे दूर। गुरमुख साचे संत जनां, आपे हाजर हज़ूर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साची धार वहाए, गुर संगत साची दया कमाए, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। कूड़ कुड़यारी सृष्ट झूठ प्रधानया। इक्क इकल्ला साचा इष्ट, जोत निरँजण श्री भगवानया। आप खुल्हाए कूट दृष्ट दयावान दयावानया। संत मण्डली सोभा पाए जिउँ वशिष्ट, मिले आण दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अमृत देवे आत्म दान, किरपा कर पुरख सुजानया। अमृत फल अमृत मेवा, हरिजन लाए दर घर साचे साची जिह्वा। अमृत आत्म सर साचे नुहाए, पूरन घाल होई सेवा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, नाम लगाए मस्तक थेवा। रंगण रंग इक्क चढ़ाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सतिगुर सुरत ज्ञान आप दवाईआ। मिल्या चरन ध्यान, बिठाए विच बिबाण, पूरन बूझ बुझाईआ। मिले मेल श्री भगवान, वाह वाह गुर जिस बणत बणाईआ। लिख्या लेखा धुर मस्तक, लेख रिहा लिखाईआ। सच दुआरे प्रीती गई जुड़, गुर गोबिन्दा रिहा ध्याईआ। लोकमात ना रहे थुड़, मनमुख निन्दा दए तजाईआ। दोहा धिरां दा एका पुड़, बेमुख जीवां रहे पिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साची रचना आप रचाईआ। वाह वाह गुर, वाह वाह गुरद्वारया। आपे फड़े पंजे चोर, हथ्थ फड़ शब्द कटारया। कलिजुग काया रैण घोर, दीपक करे आप उज्यारया। पंज पूत ना पायण शोर, आपे होए पहरेदारया। साचे सूत्र बन्ने डोर, सुरती खिच्चे दस्म दुआरया। हरिजन अवर ना दीसे होर, जो जन परसे चरन कमलारया। आप चुकाए मोर तोर, गुर गोबिन्दा साची रीत वखा रिहा। गुर गोबिन्द नाम निशान, जगत वड्डियाईआ। आप झुलाए हरि मेहरबान, साची रिहा बणत बणाईआ। माया सुत्ते हो निधान, साची सार किसे ना पाईआ। साल बारवें नौजवान, कमर कसे आप कराईआ। तेरवें तोले हरि मेहरबान, नानक साची रीत चलाईआ। वाली हिन्दा उठ बलवान, प्रभ साचा मेल रिहा मिलाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, केहड़ी काया कन्दर अन्दर विच टिकाईआ। अन्तिम मिटे जगत निशान, राज दरबार ना कोई संग निभाईआ। एका एक पुरख करतार, सभ दी रिहा पैज संवार, रक्खे सदा सरनाईआ। मानस देही ना आए हार, प्रगट हो चवींआं अवतार, लक्ख चुरासी वेख विचार, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। आपे करे आपणी कार, ना कोई दस्से होर विहार, सत्तां दीपां बन्ने धार, सच सिँघासण डेरा लाईआ।

१६५ ०५

सोलां कलीआं कर त्यार, उत्ते आसण लाए अपार, शब्द घोड़ा नाम दुलार, साचा पौड़ा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, आप आपणा भेख धर, भाणा आपणे हत्थ रखाईआ। नेत्र खोल्हे नैण मुधाणा है। अन्दरे अन्दर आपे बोले, आपे सुघड़ स्याणा है। भगत जनां दा कुण्डा खोल्हे, आप विछाए साची सेजा, नाम प्यारा लेफ तलाई सर्हाणा है। आदि अन्त ना कदे डोले, सद जीउँदा बेप्राणा है। आपे वसे पड़दे ओहले, माया पड़दा इक्क रखाना है। गुरमुखां हरि सद वसे कोले, काया मन्दिर साचा मौले, होए रुत सुहाना है। मिले वड्याई उप्पर धवले, बाशक नागां करे भार आपे हौले, जाति जुल्म मिटाना है। गुरमुखां घर आए कोले, अमृत धार बरसाना है। जोती जोत सरूप हरि, वेखे खेल वाली दो जहाना है। आत्म रंग गूढ़ा, लाल दुलारया। जन भगतां हत्थीं पावण आया चूड़ा, हरि जी बणया जगत दलालया। नाल ल्याया इक्क पंघूड़ा, सोहँ पाए उत्ते दुशालया। पंजां तत्तां नाता कूड़ा, एका दस्से राह सुखालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम निधान, धुर दरगाह ना होए कंगालया। सति फिरकी हरि चलाईआ। नाम सूई सच्ची लगाईआ। काया पाटी झूठी चोली, आपणी हत्थीं रिहा सवाईआ। धर्म राए दी ना होए गोली, वेले अन्त रिहा छुडाईआ। कलिजुग जीव मारन बोली, निहकलंक किथे जोत जगाईआ। हौली हौली सभ दे पड़दे जाए खोल्ही, अचरज खेल रचाईआ। पूरे तोल जाए तोली, साचा कंडा धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां देवे मात सच्ची वड्डियाईआ। मन धागा हरि बन्हाया ए। उत्ते लाया शब्द सुहागा, वाहवा कंचन रंग चढ़ाया ए। आपे सोया मात जागा, गुर साचे नाल जगाया ए। पुरख अबिनाशी चरनी लागा, मस्तक लेख रिहा लिखाया ए। हँस बणावे हरि जी कागा, लक्ख चुरासी फंद कटाया ए। हत्थ आपणे पकड़े वागा, धुर दरगाही राह वखाया ए। चारे कुन्ट फिरे सुहागा, दिस किसे ना आया ए। लहिंदी कूटे वेख वागा, लकों तागा आपणी हत्थीं आप तुड़ाया ए। काली नाग काला नागा, डस्सण आप आया ए। कलिजुग रैण अन्धेरी मस्स, कोई ना जावे किसे पासे नस्स, प्रभ साचे घेरा पाया ए। भगत जनां राह रिहा दस्स, मस्तूआणा धाम सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत आपे धर, सम्बल देस फेरा पाया ए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आपणा लेख आप छुपाया ए। कोई ना जाणे ग्रन्थी पन्थी पढ़ पढ़ थक्के, गुर गोबिन्दे तेरा भेव ना पाया ए। किसे हत्थ ना आए मदीने मक्के, बूरे कक्के सारे निउँ निउँ सीस झुकाया ए। चारों कुन्ट पैण धक्के, लाड़ी मौत आपे हक्के, धर्म राए ने हुक्म सुणाया ए। नाता तुट्टे भाई भैण सके, ना कोई किसे सहाया ए। गुरमुखां प्रभ आपणी गोद आपे चुक्के, साचा पल्लू अग्गे डाहया ए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

१६७
०५

निहकलंक नरायण नर, सतारां हाढ़ी फुल फुलवाड़ी साचा बाग लगाया ए। लग्गा बाग मात बगीचा। ना कोई वेखे ऊँचा नीचा। एका एक सूचो सूचा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लगाए एका शब्द पलीता ए। गुर चरन दुआरे सीर पाईए। जन होए निमाणा। प्रभ नेत नेतन नेत नेत दरसाईए। चुक्के पीणा खाणा। काया खेत खेत खेत मेघ अमृत बरसाईए, नाम बीजे साचा दाणा। एथे ओथे फिर क्यों तरसाईए, जे मेल मिले भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं दा बीना दाना। काया खेत अपार, सदा हरयावला। प्रभ रुत्त सहाई महीना चेत, बणाया ताल सच्चा बउला। अमृत बरखे साचा मेघ, धार आपणी आप बहावला। जोती जोत सरूप हरि, साचा रंगण आपे रंगे, कर कर वेस सदा पीला साँवला। काया खेत घेरा पाई जा। आपे वेख सञ्झ सवेरा, साचा मन आप समझाई जा। गुरमुख साचे हो दलेरा, भरमा डेरा आपे ढाही जा। मानस जन्म ना आए दूजी वेरा, सच निबेड़ा दर घर साचे आप कराई जा। साचा मन्दिर खुल्ह्हा वेहड़ा, रसना हल्ल चलाई जा। आपे बन्न्हे हरि जी बेड़ा, अमृत ताल टिकाई जा। वसदा रहे काया नगर खेड़ा, हरि हिरदे जोत जगाई जा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, प्रेम सुहागा उत्ते लाई जा। प्रेम सुहागा ला के जाणा। साचा बीज आपे मौले, दर घर साचे बहि के खाणा। अमृत बरखे साचे कँवले, साची धारा मुख चुआ के जाणा। प्रभ अबिनाशी कर्म विचार, आप आपणे रंग सुहाणा। मानस देही कूड़ कुड़यार, शब्द स्नेही दर्शन पाणा। अन्तिम ढहिणी चार दिवार, सच मकान ना किसे बणाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम धन गुणवन्त गुण गुण निधाना। घट साजन प्रभ आपणा, बाहर वथ ना कोए। घट साजन प्रभ आपणा, हथ्थ पैर ना दिसे कोए। घट साजन प्रभ आपणा, उच्चा लम्मा किछ ना होए। घट साजन प्रभ आपणा, हरि जन पावे सोए। सभ घट मारे तीनो तापना, दु:ख दर्द रहे ना कोए। सद रक्खे वड वड प्रतापना, अलक्खना लक्ख ना सके कोए। जोती जोत सरूप हरि, सभ घट में रिहा सोए। सभ घट सोया आप प्रभ, दोवें भुजा पसार। बेमुख दर दर फिरदा रोया, मिले ना मेल हरि करतार। अमृत मेघ किसे ना चोया, सुंञी काया होए वैरान। ना जन्मे ना कदे मोया, बैठा रहे सद मैदान। जोती जोत सरूप हरि, सभ घट आपणा वास कर, आप कराए आपणी पछान। सभ घटा हरि पसारा है। काया मट्टां खेल न्यारा है। शब्द पहनाए साचा पटा, कलिजुग माया दर दुरकारा है। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठा, काया मन्दिर सच्चा गुरदुआरा है। जोती जगे साचे मट्ठा, अग्नी लम्बू लग्गा भारा है। अमृत आत्म होए इक्ट्ठा, दस्म दुआरी चार दुआरा है। सम्पट देवे हरि समरथा, धुँदूकारा खेल न्यारा है। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर जोत धर, रक्खे लाल इक्क अन्गयारा

है। काया मट्ठ भट्ठ तपाया। आपे गेड़े उलटी लट्ठ, जीआं जन्तां हट्ठ गंवाया। हरिजन साचा आए नठ्ठ, जिस पूर्ब लेख लिखाया। दर दुआरे सदा इक्ठ्ठ, गुर मन्त्र नाम ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर जोत धर, दीपक साचा इक्क टिकाया। दीपक जोत जगे निराला। उत्ते चानण हेठा काला। पंजां चोरां रक्खे नालन, काया हाडी हरि गुलाला। भगत जनां करे प्रितपालन, दस्से राह इक्क सुखाला। शब्द सरूपी साचा मालण, तन पहनाए साची माला। नाम उठाए फूलन खारी, शब्द लपेटे चिट्टे रुमाला। आपे खोले काया मन्दिर चौथे पद निक्की बारी, हउमे हँगता तोड़े ताला। साची जोत जोत निरँजण इक्क अकारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर कराए गुरमुख घाला। सभ घट वस्सया राम रामा, राम रमईआ सभ थाँई। काया माटी झूठा चामा, बेमुख जाणे नाही। सच दुआरे इक्क दमामा, वज्जे नाद अगम्म अथाही। सोना रूपा ना कोई दिसे तांबा, ना कोई दिसे चांदी, नाम वस्त घर साचे माहीं। पूर कराए आपणा कामा, भगत जनां हरि पार कराए अन्तिम फड़ फड़ बाहीं। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी शामा, जोत जगाए थांउँ थाँईं। हरया होवे हरि हरि नामा, साचा फल रिहा लगाई। हरि जन उधारे जिउँ भगत सुदामा, गऊ गरीब निमाणयां सद देवे ठंडीआं छाँईं। हर घट में हरि हरि वसे, कलि दिसे किसे नाही। हर घट वासा राम रूप। गुरमुख साचे सच भरवासा, मिल्या मेल साचा भूप। अट्ठे पहर दए दिलासा, कलिजुग काला अन्ध कूप। शब्द सरूपी करे हासा, पट लपेटे साचे सूत। लेखे लाए नौ अठारां दस दस मासा, हरि जन सच्चा सच सपूत। हत्थ फड़ाए सोहँ साचा कासा, नेड़ ना आए जिन्न भूत। मानस जन्म करे रहिरासा, होए सहाई चारों कूट। आदि अन्त ना कदे विनासा, शब्द पंघूड़ा रिहा झूट। हर घट में हरि वसे, बेमुख कोई ना जाणे कलिजुग जीव माया ऊत। तख्त ताज दरबार सच्ची सरकारया। जगत संवारे काज, भगत रखाए लाज, सच सुल्ताना नर निरंकारया। गऊ गरीबां रखे लाज, होए सहाई गरीब निवाज, चारे वरनां इक्क प्यारया। एका धाम वखाए दया कमाए मक्का काअबा हाजन हाज गिरवर हरि गिरधारया। मन्दिर मठ शिवदवाला साची साजण रिहा साज, हरि चरन द्वार सच्ची सरकारया। गुरदुआरा मन्दिर कन्दर आप वखाए काया महल्ल अटल उच्च मुनारया। सच सिँघासण डेरा लाए, कलिजुग जीवां दिस ना आए, आत्म सेजा आप सुत्ता पैर पसारया। दीपक जोती रिहा जगाए, अज्ञान अन्धेर रिहा मिटाए, होए आप मात उज्यारया। अमृत साचा जाम प्याए, आप आपणी दया कमाए, निझर धार हरि वहा रिहा। कँवल नाभी फुल खिड़ाए, पकड़ शताबी आप उलटाए, बूंदा बूंदी आप करा रिहा। साचे लोचन अंजन पाए, जोत निरँजण आप जगाए, पुरख अबिनाशी दरस दिखा रिहा। साचा सज्जण आप हो जाए, एका मजन चरन रघुराए, जगत भुलेखा

आप मिटा रिहा। शब्द ताल घर साचे वज्जण, मिले भगत जन सज्जण, दर घर साचे मेल मिला रिहा। भरमी भाण्डे सारे भज्जण, पंज तत्त ना लाए पजन, प्रभ अबिनाशी पड़दे कज्जण, जन भगतां दया कमा रिहा। अमृत पी पी दर ते रज्जण, जोती जोत सरूप हरि, घट घट रक्खे वास, प्यास आस गुरमुख साचे तेरी आप बुझा रिहा। मिटे प्यास तृष्ना अग्ग, हउमे रोग जलाईआ। माया ममता ना जाए दग, हँस बणाए हरि जी कग, सच सरोवर इक्क इशनान कराईआ। वड दाता सूरा सरबग, गुरमुख लगाए आपणे पग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सभ घट रक्खे वास, दिस ना आईआ। काम क्रोध चण्डाल, हँकार विकारया। फल ना दिसे किसे डाल्, कलिजुग वेला जीव गंवारया। धर्म राए दी चले चक्की, पीसे दाल दो फाड़या। ना होए कोई सहारया। कलिजुग वाड़ी अन्तिम पक्की, मानस देही जामा गालया। शब्द शृंगार ना तन कराया, मानस जन्म ना मात संभालया। लाड़ी मौत रही तक्की, जोती जोत सरूप हरि, केहड़ी कूटे काया बूटे आपणी हथ्थीं आप उठा रिहा। नर निरँकार आप खेल रचांयदा। जुगा जुगन्तर वारो वारा भेख वटांयदा। आपे बणे सनक सनंदन सनातन संत कुमारा, नाम वस्त रक्खी दस्त, बराह रूप हरि जी धारा, हरन कश्प मार आप सँघारा, धरती चुक्क हरि दातार उप्पर जल टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका आपणा नाम जपांयदा। यज्ञ पुरश आप अख्वाया।
साचा यज्ञ आप रचाया। पुरख अबिनाशी अग्गे लग्ग, आपणा काम आप सुहाया। सृष्ट सबाई रही दग, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, निहकलंक नरायण नर, दिस किसे ना आया। ना कोई जाणे नारी नर, निहकलंक अवतार अन्तिम अन्तया। करे कराए आपणा भेस, माझे देस पूरन भगवन्तया। ना कोई जाणे नर नरेश, ना जाणे साधन संतया। जोती जोत सरूप हरि, आप बणाए आपणी बणतया। साची बणत हरि बणाईआ। लच्छमी सुत्ती आप जगाईआ। सिर ते लई लाल चुन्नी, नेत्र नीर रही वहाईआ। बेमुखां चोटी मुन्नी, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। गुरमुख साचे छाणी पुणी, वड वड दाते दोवें जोड़ रहे कुरलाईआ। ना कोई वेखे ज़ाता पाता ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सुत्ती लछमी इक्क जगाईआ। उठ्ठी लछमी आलस लाहया। पुरख अबिनाशी इक्क बहाया। चरन कँवल विच बहि बहि साजन आपणा आप मनाया। शब्द घोड़ा कस ताजन, साचा हुक्म सुणाया। वेख वखाणे राज राजन, रंग लाल गूढ़ा इक्क रंगाया। प्रगट होए देस माझन, आप आपणा भेव खुल्राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, दिस किसे ना आया। उत्ते हरि जी लए दुपट्टा, खेल निरालीआ। लक्ख चुरासी भन्ने काया मटा, चले अवल्लड़ी चालया। गुरमुख साचे नित उधारे जिउँ भगत जटेटा, बणया रहे आपे हालीआ। ना कोई दिसे तीर्थ

तट्टा, गुरद्वार दर मस्जिद मन्दिर सारे होए खालीआ। हरि जी वसे घट घटा, गुरमुख वेखे मात कवण दुआरे सच रघुराईआ। दूर दुराडा मार झात, बैठा रहे इक्क इकांत, कलिजुग रैण अन्धेर घटा कालीआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, रंगे रंग इक्क गुलालीआ। रंगण रंग लाल रंगाया ए। लच्छमी पड़दा हरि जी पाया ए। आप बणाए दर दर बरदा, चरन प्रीती सेवा लाया ए। किछ बिध सृष्टी मात धरदा, आपणी दृष्टी खेल रचाया ए। ब्रह्मा देवे एका इष्टी, कँवल नाभी फुल्ल खिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, मुख चारे कर विचारे, चहुं जुगां भेव खुल्हाया ए। चौथे जुग भेव खुल्हाया ए। ब्रह्मे लिख्या वेद अथर्बन, वेद व्यासा फेर दुहराया ए। आपे वेखे पृथ्वी अकाशे, अल्हो अल्ला नूर अखवाया ए। संग मुहम्मद होया दासे, चार यारा मता पकाया ए। पुरख अबिनाशी घट घट वासे, साचा राह रिहा तकाया ए। संग मुहम्मद चार यार करन विचार, दर दरबारया। नूर अलाही किरपा धार, जगत मलाही पर उतार, साचा बेड़ा करे त्यारया। देवणहार सच्ची सरकार, दो जहानी पहरेदार, करे कराए ख़बरदारया। साचा चोली कर त्यार, अल्ला राणी होई मुटयांर, साची डोली आप बणा रिहा। इक्क रलाई साची गोली, जूठी झूठी इक्को बोली, लोकमात आप टिका रिहा। पूरे तोल रिहा तोली, सच दुआरा आपे खोल्ही, वाधा घाटा ना कोई रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणा रिहा। साचा डोला कर त्यार, प्रभ किरपा आप कराईआ। असराईल ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील होए हुशयार, आपणी कंधी रहे उठाईआ। सच दरवाजिओ आए बाहर, लोकमात करी धाईआ। मक्का काअबा कर विचार, मिले मेल जिथ्थे दोआबा, साचा क्रिया कर्म कराईआ। पिच्छे छड्डुया हरि जनाबा, ना कोई पुंन ना सवाबा, करे खेल आपणी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संग मुहम्मद अल्ला राणी इक्क प्रनाईआ। अल्ला राणी नौजवान। अट्ठे पहर करे ध्यान। कवण गाए तीस बतीस हदीस कुरान। कवण उपजाए शाह अबलीस जीव शैतान। कवण झुलाए छत्र सीस, मंगे वर श्री भगवान। लेखा चुक्के बीस इक्कीस, साचा दित्ता हरि जी दान। जूठा झूठा पीसण लैणा पीस, निहकलंक नरायण नर, तेरा आण चुकावे माण ताण बली बलवान। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा वस्सया घर, अट्ठे पहर करे ध्यान। अल्ला राणी चक्की चलाईआ। पुरख अबिनाशी सेवा लाईआ। काला डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। मगर लगाया साचा खण्डा, चारों कुन्टां रिहा भवाईआ। पीण ना देवे पाणी ठंडा, जलां थलां फिरे हलकाईआ। आपे खोल्हे आत्म गंढां, घुट्ट घुट्ट बंधीआं सृष्ट सबाईआ। हथ्थ उठाए इक्क प्रचण्डा, सोहँ नाम रखाईआ। पुरख अबिनाशी पाई वंडा, आपणी खेल आप रचाईआ। अल्ला राणी पीसण पीसे, साची सेव कमाउँदीआ। उम्मत नबी रसूलां इक्क पढ़ाए

कुरान हदीसे, आप आपणा भेव छुपाउँदीआ। छत्र ना रहणा किसे सीसे, कलि कालख शाही लाउँदीआ। मिलणा मेल मुसे ईसे, दोहां रंग वखाउँदीआ। काला रंग खाली खीसे, हथ्थ चिटयां अगे डाउँहदीआ। मिटणा भेव बीस इक्कीसे, दिन दिहाड़े रो रो पई सुणाउँदीआ। अल्ला राणी रो रो धाहां मारदी। वेला अन्तिम नेड़े आया, मिटे यारी संग मुहम्मद साचे यार दी। साची कूटे होए ख्वारी, कलिजुग तेरी पहली वारी, लाड़ी मौत फड़ी बुहारी, पहला फेरा मारदी। कोई ना छड्डे नर नारी, उच्चे किले चार द्वारी जंगल जूहां अन्दर ताड़दी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे सारे घर, खुशी मनाई दया कमाई, थित्त वार वखाई उनीं हाढ़ दी। उनीं हाढ़ी लेख लिखाया। कलिजुग तेरा मुक्के गेड़, झूठा झेड़ा रिहा चुकाया। अन्तिम लेखा दए निबेड़, साचा फतवा इक्को लाया। कोई ना दीसे नगर खेड़, शब्द चिल्ला इक्क चढ़ाया। आपे मारे भेड़ भेड़, भरम भुलेखे आप भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग काला वेस कर, आप आपणा मुख छुपाया। आप छुपाए मुख हरि निरंकारया। अल्ला राणी होए दुःख, डिगे मूंह दे भारया। सदी चौधवीं बूटा जाए सुक्क, हरी दिसे ना कोई क्यारीआ। दाणा पाणी जाणा मुक्क, ना देवे कोई हुदारया। चारे कुन्ट मूंह विच पैणा थुक्क, होए बेमुहारया। वेला अन्तिम आया ढुक्क, प्रगट होए हरि निरंकारया। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, चारों कुंट पासा हारया। कलिजुग पैंडा गया मुक्क, अग्गे दिसे डूंघी गारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, जोत सरूपी भेख धर, आपणा आप छुपा रिहा। छुप्या मुख चन्द सतारया। वेले अन्तिम आई हारया। संग मुहम्मद नाता तुट्टा, एका तीर रसन कमानो छुट्टा, होए ख्वारी चार यारया। कोई ना देवे आबे हयात, दुआबा एका डिठ्ठा सागर गहर ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी वेखे मेहर, कलिजुग तेरा वरते कहर, काला वेस हरि वटा ल्या। काला वेस दर दरवेस शाह फ़कीरया। किसे ना चले अग्गे पेश, आप मिटाए नर नरेश, शाह सुल्तान होए हकीरया। जोती जामा धरया भेस अल्ला राणी रही वेख, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, माझे देस पावे फेरया। माझे देस पाया फेरा, राणी अल्ला मात घबराईआ। सम्बल देस लाया डेरा, हाणीआ पाणी पाणी हाणीआ ना देवे कोई पिलाईआ। चले तीर पद इक्क निरबानी, साची रैण इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, माझे देस वेस कर, काली कफ्नी मुख छुपाईआ। कलि कलन्दर वेस कलिजुग धारया। वेख वखाणे दर दरवेश, मक्का काअबा दो दोआबा, साल अठरवें पैणा दाबा, प्रगट होए हरि ज़नाबा, इक्क वजाए शब्द रबाबा, सोहँ नगारे साचा गाणया। नूर अलाही नूर इक्क महिताबा, आपे आप जाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, मेट मिटाए तहिसीलां थांणयां। कलिजुग काला वेस प्रभ दर मंगया। संग मुहम्मद एका एक रंग काला मात रंगया। जोती जामा धरया भेस, पुरख अबिनाशी मात ना संगया। दर दुआरे रिहा वेख, अल्ला नूर केहड़ी किली टंगया। पुणे छाणे पीर फ़कीर औलीए शेख़, शब्द घोड़े कस्सया तंगया। काली धार जाए लँघ, वज्जे नाम शब्द मृदन्गया। जोती जामा श्री भगवाना प्रगट होए गहर गम्भीर सागर सिन्ध सांत सरीरा वड दाता सूरा सरबन्गया। लाला रंग अपार जोत जुवाल्या। करे वणज वपार, बणे मात दलालया। सूहा नाल श्रृंगार, साचा रंगण रंग रंगा ल्या। अल्ला राणी होई मुटियार, साचा वटणा आप मला ल्या। बीर बेताले कर त्यार, काली मात हुक्म सुणा ल्या। चौसठ जोजन चुक्कणा भार, पहला मता एह पका ल्या। मगर लगाए रूसा धाड़, अग्गा पिछा ना किसे वखा ल्या। तीर तुफंगा चले काड़ काड़, धरत मात काला वेस छड्ड दरवेस, लाल रंग रंगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत बणा रिहा। धरत मात खुशी मनाउँदी। अट्ठे पहर प्रभ ध्याउँदी। गिण गिण गिटीआं वक्त लँघाउँदी। अट्ठे पहर रहे शरमाउँदी। कलिजुग जीव बेमुख बेमुहाणे, लज्जया मात ना आउँदी। राजे राणे अन्न्हे काणे, सच सरकार ना कोई अख्वाउँदी। जीव जन्त साध संत बेमुहाणे, माया भरम भुलेखा पाउँदी। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, निउँ निउँ सीस झुकाउँदी। सर्ब घटा घट आपे जाणे,

१७२ ०५ निहकलंक नरायण नर, मंगण आई तेरे दर, काला वेस आपणा कर, नेत्र मुखड़ा दोवें छुपाउँदी। नेत्र मुखड़ा दोवें गए छप्प। दर दुआरे अग्गे खलोती अल्ला राणी चुप्प। चारों कुन्ट अन्धेरा होया, ना कोई धीआ ना कोई पुत्त। जूठा झूठा झेड़ा होया, ना कोई पिता मात ना पुत्त। जोती जोत सरूप हरि, मंगण आया इक्क वर, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, इक्क उपजाए साचा सुत्त, काली कफणी मुख छुपाया ए। अल्ला राणी पड़दा पाया ए। मायाधारी चारों कुन्ट वेखे रुट्ठे कूड़े सेठ, गऊ गरीबां जिन्हां सताया ए। पुरख अबिनाशी रक्खीं साया हेठ, कलिजुग तेरी अग्नी तन तपाया। लग्गी धुप्प महीना जेठ, ना होए कोई सहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, दर दुआरा इक्क खुल्हाया ए। आई चरन द्वार भुजा पसारदी। पुरख अबिनाशी किरपा धार, हो सहाई अरज गुजारदी। बेमुखां पाया डाहढा भार, धरत मात ना अन्त सहारदी। मैं पुच्छ के आई चार यार, वेखी सरदारी संग मुहम्मद चार यार दी। घर घर दिसे नर नारी, दुक्खां रोगां पाए फेरा, होए पुकार हाहाकार दी। जोती जोत सरूप हरि, मंगण आई इक्क वर, दर दुआरे जोड़ दोए सरन तेरी निमस्कारदी। चरन निमस्कार गुर मेहरबानया। मैं मंगण आई बण भिखार, दे मस्ती शाह मस्तानया। जीव जन्त होए दुष्ट दुराचार, विभचार नार सवाणीआं। किसे ना मिल्या कन्त भतार, चारे कुन्टां पुणीआं छाणीआं। कोई ना

दिसे सुहागण नार, आत्म रंडी बेमुहाणया। कलिजुग विच वरभण्ड, घर घर पई भंडी, वड़या विच हँकार शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, मंगण आई इक्क वर, आपणी किरपा देणी कर, सदी चौधवीं होई हैरानया। इक्क मंगया हरि दुआरा है। जिस किया सगल पसारा है। आदि पुरख निरजंण अगम्म अगम्मा करे कराए आपणी कारा है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अल्ला राणी दे सहारा है। अल्ला राणी होश संभाल, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साल उनीसे करे तेरी संभाल। इक्क सुणाइ `शब्द हदीसे, सोहँ तेरी गोद बिठाए इक्क सच्चा लाल। फल लगाए बीस इक्कीसे, बणे आप दलाल। छत्र झुल्ले इक्क जगदीसे, सृष्ट सबाई होए कंगाल। ख़ाली होणे सभ दे खीसे, राजे राणे होइण बेहाल। जूठा झूठा पीसण पीसे, पल्ले कोई ना दिसे धन माल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे सच्चा वर, उठ सवाणी सुरत संभाल। अल्ला राणी उठ सवाणी, नेत्र नैण उग्घाड़दी। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, संग मुहम्मद ना कोई दिसे चार यार सच्चा हाणी, निहकलंक तेरे चरनां एका धाड़ धाड़दी। केहड़ी कूटे मिलणा पाणी, केहड़ी पढ़नी अन्तिम बाणी, केहड़ी रहणी हरि जी खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज सारे वेख वखाणदी। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच्चा घर, जोड़ हथ्थां अरज गुजारदी। पुरख अबिनाशी दए दिलासा। हथ्थ फड़ाए प्रेम कासा। अचरज खेल इक्क रचाउँणी, मेट मिटाए मदिरा मासा। सृष्ट सबाई बणत बणाउँणी, सम्मत पन्दरां सोलां, सतारां अठारां वेख तमाशा। साल उनीवें देवे चुन्नी। कवार कन्यां कदे ना आवे हार पासा, राजे राणया चोटी मुन्नी, ना कोई जाणे गुण गुणी। लाए अग्ग साधां संतां कोई ना जाणे सुन सुनी। निहकलंक नरायण नर, एका देवे नाम वर, सच पुकार हरि जी सुणी। मिल्या वर सच्ची सरकार। खुशी होई नार मुटयांर। करे तन सच्चा शृंगार। मिले मेल पुरख भतार। सदी चौधवीं जाए हार। बीस इक्कीसा नर निरँकार। आए चरन द्वार। साची सेवा आप लगाए, जोती जोत सरूप हरि, सच सुलक्खणी एका नार। साची सेवा इक्क लगाउँणी। चार कुन्ट दहि दिशा, सोहँ तार आप हिलाउँणी। सत्तां दीपां पाए वंडा, नौवा खण्डां खेड रचाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा काला वेस आपे कर, दर दरवेश झूठी चुन्नी मुख तों लौहणी। कलिजुग काला वेस आप उतारया। प्रगट होए माझे देस, साचा तन आप शृंगारया। जो लिख्या गुर दस्मेस, सदा अटल रहे हमेश, हरि सुणे सच्ची पुकारया। हरि जी खुल्ड़े रक्खे केस, आपे सद्दे दर बुलाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, सुरपति राजा इन्द दर दुआरे सीस झुका ल्या। प्रगट होए हरि मृगिन्द, जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद समा रिहा। साचा रंगण हरि रंगाया। सम्बल देस भेस वटाया। गौड़ ब्राह्मण संग रलाया। दूजे दर ना जाए मंगण, आपे होए आपणे अंगण,

आप आपणी गोद उठाया। शब्द घोड़े कसे तंगन, वेखण आया हरि जी जंगन, नाम मृदंग इक्क वजाया। जन भगतां पाए हथ्थीं कंगण, नाम मैहन्दी साची रंगण, मानस देही ना होए भंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, साचा चोला इक्क रंगाया। साचा चोला तन शृंगारदा। गुरमुखां नूं अवाजां मारदा। शब्द घोड़ा सच्ची सरकार दा। कल्गी तोड़ा नर हरि निरँकार दा। जुड़या जोड़ा गुर संगत तेरे चरन प्यार दा। धुर दरगाही आया दौड़ा, सभ कुछ उत्तों वारदा। सिँघ मनजीता जगत जगदीशा साचा लाड़ा घोड़ी चाढ़दा। धरत मात तेरा वेखे अखाड़ा, दिन दिहाड़े डाका मारदा। मंगण ना जाए कोई भाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, लक्ख चुरासी तीजे नेत्र ताड़दा। साचा घोड़ा छैल छबीला है। पुरख अबिनाशी इक्क रखाया, साचा रंगण रंग नील नीला है। कलिजुग जीवां दिस ना आया, चार पांओ ना कोई वसीला है। सृष्ट सबाई उप्पर छाया, पुरख अबिनाशी सच सिँघासण उप्पर डाहया, जोत निरँजण लोकमात बणे वकीला है। सत्तवें आसण चरन उठाया। दक्खण दिशा कदम टिकाया। चिट्टा अस्व नाल रलाया। शब्द घोड़ा इक्क समझाया। दोहां धिरां दा जुड़या जोड़ा, पंजवें घर लए बहाया। भगत जनां हरि साचा बौहड़ा, चौथे पद बाहर रखाया। धुर दरगाही इक्क लगाया सच्चा पौडा, सोहँ डण्डा नाम रखाया। सच वड्याई तेरी ब्राह्मण गौड़ा, सम्बल देस डेरा लाया। ना कोई जाणे लभ्मा चौड़ा, साढे तिन्न हथ्थ साचा नाप कराया। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, अमृत फल आत्म अन्दर प्रभ अबिनाशी ढेर कराया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचा रंग इक्क रंगाया। काला रंग अपर अपारा है। जगे जोत अगम्म अपारा है। चुरासी कलीआं नाल शृंगारा है। विच लुकया हरि निरँकारा है। लक्ख चुरासी विच पसारा है। सिँघ पूरन दर भिखारा है। सच तख्त सच्ची सरकारा है। सृष्ट सबाई परखणहारा है। कोई ना जाणे जीव लोकाई, माया राणी अन्ध अन्धयारा है। वैर वरोध घर घर रिहा वधाई, पंडत पांधे ज्ञानी ध्यानी वेद पुराणी करदे हाहाकारा है। पुरख अबिनाशी साचे मन्दिर इक्क रखाए साची बाणी, ओंकार ओंकार ओंकार सोहँ साची धारा है। वेद कराया वेस ब्रह्मा विष्न महेष जुग विचारया। दर घर साचे हरि प्रवेश, आपे नर नरायण नरेश, आपे प्रजा आपे शाहुकारया। आपे आपणा धारे भेस, जोती जामा खेल न्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे वर, अमृत साची धार प्या रिहा। हरि अमृत आप बणांयदा। विच समाए सोहँ जाप, आदि अन्त बाहर ना जांयदा। मारन आया तीनो ताप, कलिजुग पाप रिहा कांप, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। गुर संगत तेरा मिटे सराप, धर्म राए दा टुट्टे फंदा, लक्ख चुरासी विच्चों वड प्रताप, सतारां हाढ़ी जो जन आए दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, दरगाह साची साचा फल अमृत मेवा आप खुवांयदा। साचा अमृत सच द्वारया। प्रभ अबिनाशी आप चुआए, जन खोले बन्द कवाड़या। दुरमति मैल रिहा लाहे। बजर कपाटी सीना पाड़या। धर्म राए दी कटे फाहे, साचे घोड़े शब्द चाढ़या होए सहाई सभनीं थाँईं, जंगल जूह पहाड़ उजाड़या। आपे पिता आपे माई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन निमस्कारया। प्रभ साची इक्क सवाणी ए। सोहँ फड़ी हत्थ मधाणी ए। रिड़कण आया कलिजुग बाणी ए। झिड़कण आया लक्ख चुरासी बेमुहाणी ए। जोती जोत सरूप हरि, हरि अकथ कथा कहाणी ए। सच मधाणा नाम कुड़। दोहां प्रीती गई जुड़। प्रभ अबिनाशी रिड़कण आया, शब्द साचे चढ़, घोड़। लक्ख चुरासी वेखण आया, अमृत आत्म आई थुड़। गुरमुख साचे परखण आया, वेले अन्तिम पई लोड़। निहकलंक जामा पाया, बीस इक्कीसा विच समाया, कलिजुग सतिजुग तेरा पुड़। शब्द मधाणी छाछ वरोलदी। मुखों रो रो एहो बोलदी। बेमुखां दे पड़दे खोलदी। गुरमुखां दे उत्तों आपणा आप घोलदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरे तोल मात तोलदी। साचा गेड़ा आप दवाया ए। जगत झेड़ा रिहा मिटाया ए। खिच नेत्रा हत्थीं पाया महीने चेत लेख लिखाया ए। लक्ख चुरासी काया खेत्र सभ छाण वखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका अमृत आप बणाया ए। अमृत साचा आप बणाए, नाउँ रखाए सीरा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, गुरमुखां कट्टण आया भीड़ा। आप आपणा विच टिकाए, मार मुकाए हँकारी कीड़ा। शब्द दृष्टी विच समाए, जोत उठाए साचा बीड़ा। जोती जोत सरूप हरि, चार वरनां इक्क कराए साचा हरि, ना कोई हस्त ना कोई कीड़ा। साचा अमृत आप बणाया ए। गुर संगत सद बहाया ए। मातलोक बण के आया मंगत, पल्लू आपणा अग्गे डाहया ए। नाम भिच्छया एका पाउँणी, सतारां हाढ़ी बणत बणाउँणी, साचा हुक्म सुणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अमृत आत्म साचा सीर चिट्टा दुध्ध रखाया ए। चिट्टा दुध्ध आत्म ताल। भगत जनां करे आत्म सुध, कलिजुग माया तोड़ जंजाल। शब्द घोड़े बहिणा कुद्द, गुर संगत मारे इक्को छाल। पंजां नाल हरि जी करे युद्ध, सोहँ रक्खे साची ढाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां अमृत साचा मुख चुआए, दर घर साचे साचे लाल। साचे लाल चरन द्वारया। मिले नाम सच्चा धन माल, अमृत धारया। देवण आया हरि आपे शाह आपे कंगाल, गुरमुख साचे खिच बहाए चरन द्वारया। भरया रहे सरोवर ताल, झिरना झिरे अपर अपारया। आपे होए विच दलाल, कँवल नाभी आप भवा रिहा। गुरमुख साचे संत जनां आपे रिहा सुरत संभाल, बेमुखां दर दुरका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, दे मति आप समझा रिहा। हरि अमृत गुर की धारा। गुर अमृत जगत प्यारा।

हरि हरि देवणहार दातारा। गुर वरते मात भण्डारा। शब्द भाण्डा कलस अपारा। कलिजुग माटी काया कच्चा आवा, विच धरे आप गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दए अधारा। अमृत पी पी कलिजुग जीणा, प्रभ साचे आप बणाया। जूठा झूठा पीणा खाणा, वेले अन्तिम कम्म ना आया। एका अमृत साचा वरना, धुर दरगाही लै के आया। दरगाह साची देवे माणा, जिस जन रसना मुख रखाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं रिहा वरताया। अमृत होए त्यार, भरे भण्डारया। गुरमुख जागे सोए, प्रभ साचा पावे सारया। अवर ना जाणे कोए, कलिजुग जीव होए हंकारया। दुरमति मैल पापां धोए, जो जन आए चरन द्वारया। अमृत मेघ साचा चोए, काया करे ठंडी ठारया। गुर गोबिन्दा एका धाम इक्ट्ठे होए, गुण अवगुण ना किसे विचारया। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुर संगत करे एका प्यारया। उनी हाढ़ी खुशी मनाईआ। वीह सौ बारां बिक्रमी साचा लेख रिहा लिखाईआ। बेमुख जीवां भरम भुलेखा, वेखी वेखा जन्म गंवाईआ। भगत जनां दी लिखे रेखा, एका रसना कलम चलाईआ। नेत्र नैण जिस जन वेखा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अमृत आत्म देवे भर, अतुट भण्डार रखाईआ। गुरमुखां देवे अमृत धार, हरि निरँकार कर प्यार हरि करतारया। मदिरा मासी करन विचार, मानस देही आई हार, वेले अन्तिम होण ख्वारया। पुरख अबिनाशी बणया आप वरतार, गुरमुखां करे नाम प्यार, देंदा जाए वारो वारया। निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारया। गुरमुखां अमृत आत्म चोए, कँवल उग्घाड़या। दुरमति मैल कलिजुग धोए, उप्पर धवल माया राणी रिहा साड़या। साचा अमृत रिहा मवल, दस्म दुआरी पड़दा पाड़या। खुल्ह्या रहे नाभ कँवल, अमृत आत्म साची मध आप प्याए अमृत सति सरूरया। गुरमुख साचे सद भाए, सर्बकला भरपूरया। सोहँ साचा नाद वजाए, नाद अनादा साची तूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे साचा वर, आसा मनसा सर्ब दी पूरया। आसा मनसा दए वड्डियाईआ। हउमे दुखड़ा होए दूर, मिले रघुराईआ। दीपक जगे जोती नूर, होए रुशनाईआ। वज्जे नाद अनाहद तूर, साचा राग रिहा सुणाईआ। भरया रहे ताल भरपूर, अमृत साचा विच टिकाईआ। बेमुख जानण नेड़े दूर, गुरमुखां विच समझाईआ। प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूर, गुर संगत तेरी साची सेवा रिहा कमाईआ। साची सेव कमाए, नंगे पैरया। देवी देवत करोड़ तेतीस जगाए जोत, मात पाए फेरया। शिव शंकर रसन ध्याए, दोए जोड़ मंगण कर कर मिहरया। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उठाए, अमृत धार किथों आए, मिले एका सति सरूरया। गुरमुखां रिहा कर्म विचार, आपणी किरपा धार, गुरमुख साचे संत जनां देवे वर, आत्म दर साचे घर, अमृत सर सच्चा भरपूरया। मदिरा मास जो रसन

लगाए। अमृत अग्गे हथ्थ ना डाहे। नेत्र दोवें बन्द कराए। प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। दोवें सरवण लए छुपाए। सोहँ राग ना सुणन पाए। दस्म दुआरी मुख भवाए। नौ द्वारया राह वखाए। चारों कुंट फिरन हलकाए। मदिरा मास जिस रसन आहारा। दस्म दुआरी वसे बाहरा। नौ दुआरे करे प्यार, कामी क्रोधी लोभी कुष्टी भरया तन हँकारा। दीर्घ रोग लग्गा दृष्टी, विसरया करतारा। भगत जनां हरि साचा इष्टी, मिल्या मेल धुर संजोग, नर हरि सच्ची सरकारा। आदि अन्त ना होए विजोग, अट्ठे पहर आत्म रस लैण भोग, प्रभ आप वखाए दरस अमोघ, चतुर्भुज सच्ची सरकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई इक्क रखाए सच सच्चा दुआरा। मदिरा मास किया प्यार, जन्म गंवाया। नाता तुट्टा पुरख भतार, नार दुहागण जीव गंवारया। काया झूठी वज्जे सितार, साचा राग ना कोई अलाया। तन मन वसे काम क्रोध हँकार, प्रभ अबिनाशी ना रसना गाया। अन्तिम वेले देवे दर दुरकार, धर्म राए पल्लू गल विच पाया। खिची जाए वारो वार, जम राज कुण्डा लाहया। अग्गे वेखे इक्क दरबार। चित्रगुप्त लेख लिखाया। ओथे पैणी कर्मां मार, मात पित भैण भाई सज्जण सैण ना होए कोई सहाया। लक्ख चुरासी जांदी वेख साचे नैण, फड़ बाहों ना किसे मात उठाया। गुरमुखां चुकाए लहिणा देण, निहकलंक नरायण नर, अमृत आत्म एका सच्चा जाम प्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध संत पूरन भगवन्त होए सदा सहाई, आप करे रखवाल्या। आपे माई आपे बाप, आपे करे कराए प्रितपालया। आपे अक्खर आपे वक्खर आपे सोहँ सच्चा जाप, आपे रक्खे काया भाण्डा खालीआ। आपे ताप आपे सराफ, आपे चले चाल निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत मध आप प्याए, सोहँ भरी इक्क प्यालीआ। सोहँ प्याली पी पी जाणा। सदा जीणा नाम लिखाणा। प्रभ अबिनाशी दाना बीना, आप आपणा संग निभाणा। होए सहाई लोका तीना, दरगाह साची माण दवाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे जिया दान, वेले अन्तिम होए सहाई, दर घर साचे आप बहाणा। गुर पूरा भोग लगांयदा। गुरमुखां चुगाए चोग, काग हँस बणांयदा। कलि देवे दरस अमोघ, आपणी दया कमांयदा। लिख्या धुर संजोग, लहिणा देणा मात चुकांयदा। कदे ना होए अन्त विजोग, साचा नाता चरन जुड़ांयदा। बेमुख जीव रहे सोत, प्रभ माया पड़दा पांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, गुर संगत साची आप बणांयदा। एका एक निरँजण जोत, घट भीतर आप समांयदा। वरन गोत ना करे विचारया। साचा मार्ग इक्क वखा रिहा। चार वरनां एका धाम एका नाम एका अमृत एका जाम, आपणी हथ्थीं आप पया रिहा। कलिजुग मेट मिटाए अन्धेरी शाम, आप सुणाया साचा नाम, कलिजुग मेटे भेख तमाम, फड़ डंक

इक्क वजा रिहा। शब्द रक्खे इक्क दमाम, राउ रंकां हरि सुणा रिहा। निहकलंक नरायण नर, गुर संगत आपणी किरपा कर, गुर प्रसादी गुर गुर पूरा शब्द प्रसादि आप वरता रिहा। सतिगुर पूरा जाणीए, कलि सुरत संभाले। सतिगुर पूरा जाणीए, दिवस रैण होए रखवाले। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम सच्चा धन माले। सतिगुर पूरा जाणीए, खाली भाण्डे भरे प्याले। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग रंगाले। साची रंगण रंगण आया, बण के आप ललारी। भगत जनां हरि भुक्ख नंग कट्टण आया, बणया वड भण्डारी। सोहँ नाम रसन स्वासी जपावण आया, बणया आप लिखारी। काया माटी निर्मल जोती साचे मन्दिर रक्खण आया, जोत निरँजण कर विचारी। बेमुख जीव भाण्डे काचे कलिजुग अन्तिम भन्नण आया, शब्द हथौड़ा फड़या भारी। गुरमुख लभ्भण आया, पुरख अबिनाशी परउपकारी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा धारी। त्रैगुण माया वेस मात उपजाईआ। आप उपाया ब्रह्मा शिव, विष्नूं संग रलाईआ। चवीआं तत्तां आपे गणा, ब्रह्मे दे मति रिहा समझाईआ। लक्ख चुरासी करनी उत्पत, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मे देवे इक्क वड्डिआईआ। ब्रह्मे आपणा आप विचार, सर्ब कुछ पछाणया। जिस किया मेरा अकार, नर हरि श्री भगवानया। दित्ती वस्त इक्क अपार, त्रैगुण वस्त सर्ब कुछ जाणया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेव आप छुपानया। ब्रह्मे किया इक्क अकारा। माया रूपी सगल पसारा। चवी तत्त कर इक्क्ठे, इक्क बणाया पुतला भारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे सभ तों बाहरा। चवी तत्तां करी त्यारीआ। खाली बुत्त मूंह दे भारीआ। किरपा करे आप अचुत, पारब्रह्म खेल न्यारीआ। उपजे जल ना साचा सुत्त, ब्रह्मा कर कर थक्का कारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा एका देवे, करे आप हुशयारीआ। ब्रह्मे बुत्त बणाया, ना मात जवा ल्या। आपणा माण गंवाया, पुरख अबिनाशी इक्क ध्या ल्या। पुरख अबिनाशी दया कमाया, पंझीवां तत्त जोती दीपक इक्क जगा ल्या। हड्ड नाड़ उबली रत, वाह वाह संपट सोहणी ला ल्या। विच रखाई मन मति, बुद्धी तीजा साथ रखा ल्या। सिर मूंह नक्क हथ्थ, कन्नां पैरां नाल सजा ल्या। साची वस्त इक्क टिकाई हरि समरथ, काया मन्दिर इक्क सुहा ल्या। प्रभ का भेव सदा अकथ, जुगा जुगन्तर भेव किसे ना पा ल्या। आपे रिहा सभ नूं मथ, आपे मारे आप जवा ल्या। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस जन हिरदे आप वसा ल्या। शब्द चढ़ाए साचे रथ, साचा डोला इक्क सजा ल्या। पंजां चोरां पकड़े नत्थ, वागां अन्दरे अन्दर भवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत बणा ल्या। ब्रह्मे बणत बणाई, जोत उपाईआ। ना कोई दिसे थाँईं विच जिमीं अकासे जिथ्थे दए बहाई, उप्पर जल दे

रिहा टिकाई, कँवल फुल ना भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दोवें जोड़ रिहा धिआईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, माया आप पसारीआ। धरत मात जल उप्पर धर, लाई इक्क क्यारीआ। जुगा जुगन्तर भेख धर, आपे पावे आपणी सारया। जीआं जन्तां वेख हरि, जिया दान अन्न उभारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सर्ब पसारया। ब्रह्मे सेवा लाई ब्रह्म समाया। सृष्ट सबाई उत्पत आप कराई, विच आपणा आप टिकाया। विष्नूं रचना इक्क रचाई, देवणहार दात अख्वाया। शिव शंकर वड्याई, अन्तिम सभ दा लेख मिटाया। अट्ठे पहर कबेर रिहा ध्याई, प्रभ साची सेवा लाया। अन्न भण्डारा दए दातारा, सिर आपणा हथ्थ रखाया। वंडदा रहे वारो वारा, जुगा जुगन्तर रचना आप रचाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, पुरख अबिनाशी किरपा धारी खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड वरभण्ड लोआं पुरीआं रिहा उलटाईआ। ब्रह्मपुरी ब्रह्म निवास, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जुग चौथड़े होणा नास, गुरमुख साचा संत जगाया। शब्द चलाया इक्क स्वास, साची पुरी धाम बहाया। किरपा करी आप रघुनाथ, बीस इक्कीसे भेव चुकाया। आप निभाए आपणा साथ, निहकलंक नरायण नर, एका साचा शब्द चलाया, लोआं पुरीआं रिहा वखाया। सोहँ साचा रथ, साची खेल रचाया। साची खेल हरि करतार, जुगां जुगन्त वेस्सया। शिव शंकर वेखे जाए द्वार, जटा जूट धारी खुल्हे केस्सया। बाशक तशकां गल विच हार, एका सूत्र तेड़ लंगोटयां। पूर्ब कर्म रिहा विचार, कलिजुग वेला अन्तिम आया खोटयां। गुरमुख साचा कर त्यार, आप चढ़ाए उच्चे पर्बत सच समेरू चोटीआ। निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जगाए, विच्चों कोटन कोटयां। सुरपति राजा इन्द होए हैरानया। पुरख अबिनाशी इक्क उपजाए साची बिन्द, लोकमात सच महानया। करोड़ तेतीसा करे निन्द गुणवन्त ना जाणे गुणी गहिंद, अट्ठे पहर रहे मस्तानया। हरिजन साचा साची बिन्द, जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम आप सुहानया। साचे धाम सुहाए आप बहांयदा। करोड़ तेतीसा हुक्म चलाए, सोहँ साचा जाप जपाए, सुरपति राजा इन्द एका राह वखाए, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, भेख वटांयदा। जा के सरनी जाणा पड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती खेल रचांयदा। सृष्ट सबाई नाल रिहा लड़, उच्च महल्ले अन्दर चढ़, काया मन्दिर आपे ढाहिंदा। भगत जनां दर दुआरे खड़, जोत सरूपी किरपा कर, साचा राह वखांयदा। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं एका डंक वजांयदा। एका वज्जे डंक, शब्द सुणाईआ। सोहँ सच्चा द्वार बंक, गुर पूरे खुशी मनाईआ। ना कोई राउ ना कोई रंक, ना कोई शाह ना कोई सुल्तान, राज राजानां एका धाम हरि बहाईआ। गरीब निमाणया देवे माण, पल्ला आपणा आप फड़ाईआ। कलिजुग मिटणा निशान, सत्तां दीपां रंग रंगाईआ।

सृष्ट सबाई होई वेख हैरान, ना कोई पिता पूत ना माईआ। एका मिल्या तीर निशान, रसना खिच्च वखाईआ। सोहँ वज्जे मस्तक बाण, गुरमुखां रिहा जोत जगाईआ। आपे बख्शे पीण खाण, गुर संगत तेरा भण्डार रिहा वरताईआ। आप चुकाए जम की कान, धर्म राए दर दुरकाईआ। संत सुहेले मात पछाण, आपणी गोद रिहा उठाईआ। गुर पूरा मिल्या मेहरवान, आपे करे सच पछाण, भैणां भाईआ नात जुड़ाईआ। निहकलंक नरायण नर लोआं पुरीआं मार ध्यान, एका राह वखाईआ। गुर संगत तेरा भण्डार, शब्द खजानया। कदे ना मुक्के विच संसार, वधदा जाए अन्त जहानया। बैठी हरि सच्ची सरकार, जन भगतां वेखे खेल प्रधानया। चित्रगुप्त करे पुकार, बख्शीं हरि साचे दर, आवे डर मैं रहां दूर दुरानया। गुर संगत तेरा वसदा रहे घर, शब्द झुल्लदा रहे निशानया। हरिजन साचा कदे ना जाए मर, अमृत आत्म रस पछानया। आपणी करनी रिहा कर, गुर संगत देवण आया वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण नर हरि साचा खेल गुणी गुणकारया। गुर संगत लाई सेवा सो प्यारया। काया लग्गा सच्चा मेवा, नौ अठारां जिस विचारया। लेखा मुक्का विच बारां, साल बाहृवें खुशी मना रिहा। ना कोई किया मात अधारा, जुगां जुगां दे विछड़े अन्तिम मेल मिला रिहा। आपे परखे परखणहारा, नाम घसवटी इक्क लगा रिहा। शब्द जौहरी नाम दलाला, दीना बंधू गुर गोपाला, साचे हीरे आप चमका रिहा। अग्नी जोती इक्क ज्वाला, ना कोई वरन ना कोई, सर्ब जीआं करे पितपाला, पालनहार हरि दातार, सर्ब जीआं रिजक सबा रिहा। कलिजुग जीव माया रुल्ले आत्म भुले होए गंवार, दर दुआरा इक्क खुल्हा रिहा। निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, काया झोली आप भरा रिहा। गुर संगत तेरा भण्डार, मोख द्वारया। बणे आपे आप वरतार, जन भगतां काज संवारया। मानस देही कदे ना आए हार, दर घर घर दर साचे आप सुहा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची आप खवाए, बीस इक्कीसा खेल रचा ल्या। प्रभ भत्ता आप उठाया ए। ना कोई वेखे ठंडा तत्ता, मात धरत रही शरमाया ए। भगत जनां बन्हृण चल्लया धीरज जता, साचा नाता आप बंधाया ए। आपे दे समझावे मतां, गुर संगत तेरा इक्क भण्डार सांझा आप उठाया ए। गुर संगत सेवा लाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, सच खारी सिर उठाईआ। गुर संगत करदा प्यारी, आपे बणया रहे भिखारी, अचरज रीत चलाईआ। भत्ता लै के जाए सवाणी, गुरमुख वेखे साचे हाणी, अमृत पाणी नाल उठाईआ। लक्ख चुरासी पुणी छाणी, गुरमुख साचे मात पछाणी, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। प्रभ अबिनाशी आप उठाया गुर संगत तेरा तोसा। अमृत ल्या साचा जल नाल दुध्ध ल्या कोसा, सच भण्डारा भरने आया। आप चुकाया पिछला रोसा, साचा मेला मेल मिलावण आया। साचा खेल खिलावण

आया। निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत साची राह वखाया। पंच पंचाइनी वेख विचार। विच बवन्जा बन्ने धार। कलिजुग खेल रिहा विचार। लक्ख चुरासी कट्टणहारा, जोत निरँजण कर अकार। सोहँ देवे शब्द अपार। किसे हथ्थ ना आए रिक्खी मुनी, लक्ख चुरासी होणी मात ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुर संगत किया इक्क प्यार। सच भण्डारा आप वरता रिहा, आपे दाना आपे बीना। आपे पीणा आपे खाणा। आपे देवे नाम निधाना। आप झुलाए जगत निशाना। आपे वेखे बीआबाना। आप सुणाए राज राजानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत दया कमाए बिरध बाल जवाना। आपे बिरध बाल अञ्याणा। आपे चतुर सुघड़ स्याणा। आपे जोधा सूरा राणा। आपे होए गरीब निमाणा। आपे चतुर्भुज अख्वाना। आपे भेव खुल्हाए गुज्झ, सोहँ अक्खर इक्क महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत सेव करे महाना। हरि साचा मेल मिलाया। गुर चेला एका धाम बहाया। आपे आप बणया सज्जण, ऊँचो नीच कर बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण रिहा चढ़ाया। गुर संगत गुरमति प्रभ दर पाईआ। शब्द संतोख नाम धीरज, प्रेम जति आपे आप रखाईआ। कर्म तत्त शब्द मति दे आप रिहा समझाईआ। पंचम नथ हरि समरथ साची डोरी रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत मेला इक्क मिलाईआ। धर्म कोट द्वार, हरि चन्दन नाम बालया। शब्द चोट नगार, काया मन्दिर अन्दर रक्खे वास्सया। तत्त काल होए जै जैकार, मात पताल अकास्सया। अमृत सोमा मेघ अपार, देवे हरि दासन दास्सया। काया होई ठंडी ठार, जिस जन तजाया मदिरा मास्सया। हरिजन भवजल उतरे पार, लेखे लाया रसन स्वास्सया। कूड़ पतंग कुरंग रंग चढ़ाया। कलिजुग काला रंग, टुट्टे अंग अंग ना होए कोई सहाया। चारों कुन्ट भुक्ख नंग, प्रभ अबिनाशी दिसे नाही संग, माया पड़दा हरि जी पाया। गुर संगत साची आत्म इक्क उमंग, चिट्टे अस्व कसे तंग, जगत दरवाजा जाए लँघ, प्रगट होए दरस दिखाया। सति गुण विचार सति संतोखिआ। जन भगतां सुण पुकार, आवे मात मिटावे दोखिआ। साचा गहणा तन श्रृंगार, साचा मार्ग राह सौखिआ। देणा दरस हरि करतार, होए सहाई वेले औखिआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे अन्तिम मोखिआ। मोख मुक्त जग रीत आप चलांयदा। आपे दाता करता शक्त भुगत, आपे जोग कमांयदा। आपे साधू तन बैरागी आत्म रहे विकृत आपे मोह जंजाला तोड़ वखांयदा। आप अमोला आपे तोला, पुरख अबिनाशी साचे जगत, ना दूसर कोई रहांयदा। हरिजन लेखे लाए बूंद रक्त, काया पिंजर नाड़ी चाम आपे लेखे लांयदा। जन भगतां कटे भुक्ख नंगत, साचा मेला साध

१८९
०५

संगत, सतिगुर साखी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रंगत आप चढ़ांयदा। सुरत सवाणी भरे पाणी, मन पहरेदार बणाया ए। माया राणी लभ्भे हाणी, साचा दर ना नज़री आया ए। जन भगतां देवे साची बाणी, साची खाणी आप समाया ए। जोत निरँजण करे पछाणी, चरन ध्यानी लए बचाया ए। कलिजुग सुहञ्जणी रैण सुहाणी, सति पुरख निरँजण दरस दिखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा रंग रंगाया ए। वटयां रंग भेस कलि धारे। आपे होए अंग संग, आपे पक्खा फेरे पवण चलाए सच चुबारे। एका नाम वजाए सच्चा मृदंग, सुणे सुणाए उप्पर धवलारे। साकी सज्जण साचा संग, पारब्रह्म अवतारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम अधारे। देवे नाम अधार संतोख, जत धीरज साचा थाप्या। वेले अन्तिम होए मोख, रक्खे पति नाथ अनाथया। होए सहाई वेले औख, पंजां तत्तां सगला साथया। लक्ख चुरासी गई औंत, मिल्या मेल ना हरि रघुनाथया। गुरमुख नारी पाए साचा खौंत, मस्तक टिका चढ़े शब्द साचे राथया। घर साचे जगे निरालम जोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप निभाए आपणा साथया। संगी साथी सगल पसारा, कूड़ी रैण स्वाणीए। अस्त्र शस्त्र घोड़े हाथी तन बस्त्र ना कोई जाणे जीव परानीए। शब्द गुर गुरू गुर मन्त्र, होए सहाई वेले अन्तिम, अन्तर बुध सतो गुण मधाणीए। तत्त विरोले शब्द विचोले वसे सर्ब घटा घट अन्दर, घट भीतर खेल निरालीए। आदि अन्त ना कदे डोले, काया मन्दिर कुंडा खोल्हे जगे जोत अगम्म निरालीए। हरिजन काया साची मौले, जोती जोत सरूप हरि, काया रंगण रंग रंगाया ए। रंगे रंग काया चोली, शब्द रत्न जुड़ाउ। नाम बणाए साची डोली, प्रेम लगाए बाहू। आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, आत्म रामा वेख वखाणे थाउँ थाउँ। सच दुआरे एका गोली, ना कोई रोके कथाहू। सप्त रिखी आ मारे बोली, भगत ध्रूआ वेख्या थाउँ। पूरे तोल रिहा तोली, जोती जोत सरूप हरि, दूसर को नाही। सप्त सुरिख रिखी रख्वारे। साचे मण्डल लेखा लिख, वेखे खेल हरि अपारे। वशिष्ट कस्यप अत्री साचा थापन थापे। गोतम रक्खे साची छत्री, शब्द अजपा जापे। भारद्वाज मित्र मतलबी, करे खेल काली राते। जगभद्र आपे नाचे। जोत जुगत जुगत जोत आत्म रक्खे दाते। जोती जोत सरूप हरि, गोतम गवरा वेखे अवरा कर्म कांड कलि साचे। कर्म कांड कलि आया लिखण, सर्ब लोक त्रैगुणीआ। जन भगतां आया लाज रक्खण, सच पुकार आप सुणईआ। कलिजुग छाछ वरोलण आया मक्खण, वड दाता हरि गुणगईआ। चारों कुन्ट अन्यायारे भखण, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे आप चुणईआ। गुरमुख साचे चुण चुण मोती, शब्द हार बणाया ए। आपे वेखे साची जोती, प्रेम शृंगार कराया ए। सुरत सुवाणी उठ सोती, रंग रंगीला

साचा पीहढ़ा नज़र ना आया ए। चारों कुन्ट भज्जदी फिरदी, गुरू दर द्वार ना किसे वखाया ए। नैण विहुणी कलि कल रोती, नेत्र नीर वहाया ए। की करां मैं इक्क इकलौती, कलि कलन्दर घेरा पाया ए। दुरमति मैल ना गई धोती, नर हरि ना दर्शन पाया ए। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुर मन्त्र बणाए बणतर, साचा नाम धराया ए। गुर मन्त्र नाम ध्यान, शब्द उजाग्रा। अमृत जाम प्याए शाम, सुरत राम सुदागरा। पूरन देवे नाम, करे काम काया गागरा। अमृत देवे जाम ताम, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रती रत्नागरा। नाम रती रत्न अपारया। देवे शब्द गुर गुरमती, धीरज जती आप दवा रिहा। चरन प्रीती नीती मात सती, सति पुरख निरँजण साचा राह वखा रिहा। कलिजुग वा ना लग्गे तत्ती, साची बत्ती इक्क जगा रिहा। एका नर कमलापाती, मिती गती आपे आप जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, नाम तराना हरि सुणाना, शब्द गाना विच जहाना आपणी हथ्थीं आप बन्ना रिहा। बन्ने डोरी नाम करतार। लोकमात कलि करे चोरी, भगत जनां दा मीत मुरार। ना कोई जाणे आत्म घोरी, कवण कराए हरि जी कार। डूंघी सागर रहे दौड़ी, जगत विचोला चुभ्भी मार। हथ्थ ना आए साची पौड़ी, उप्पर नीचे ना अद्धविचकार।ना कोई जाणे राग गौरी, ना कोई जाणे दीपक मल्लार। माया ममता किन्नी लम्मी चौड़ी, कलिजुग लिख ना सके कोई किसे डार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बेड़ा बन्न, वखाया विच संसार। गुर संगत गुर काज रचाया, बणया विचोला। शब्द सुनेहड़ा देवण आया, बजर कपाटी पड़दा खोल्ला। हउमे पीड़ जगत गंवावण आया साचा तोला। गुर संगत बेड़ा आप उठावण आया, दर दुआरे होया गोला। दरगाह साची साचा धाम सुहावण आया, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करया खेल उप्पर धवला। उप्पर धरती धर्म दी जड़, प्रभ साचे मात लगाईआ। गुर साचे घर घर फड़, चरन दुआरे इक्क रखाईआ। काया तोड़ हँकारी किल्ला गढ़, चोट इक्क नगारे लाईआ। उच्च महल्ले उत्ते चढ़, शब्द जैकारा इक्क सुणाईआ। सच दुआरे जाए वड़, कलिजुग वेला अन्तिम दए दुहाईआ। प्रभ अबिनाशी बांह लए फड़, जिस जन साची सेव कमाईआ। सोहँ अक्खर जाणा पढ़, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। काया माटी झूठा धड़, चरन प्रीत सद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा कलिजुग भार आपे रिहा उठाईआ। उठाए भार दया कमांयदा। होए सुवाणी सीस उठाए दिस ना आंयदा। जन भगतां देवे अमृत आत्म साचा पाणी, अतुट भण्डार इक्क रखांयदा। आपे कटे जम की काणी, खाणी बाणी भेद छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गुर गुर किरपा कर, हरि मन्त्र नाम जपांयदा। सच समग्री साची रास। सद पुरख

सद रखे वास। पूरन ब्रह्म पारब्रह्म अबिनाश। सच कर्म धर्म जगत जज्ञास। मानस जन्म भरम कटे जम की फास। लेखे लग्गे काया चरम, जपत जपत स्वास स्वास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत कीनी बन्द खुलास। बन्दी तोड़ बन्द कटवाया। चरन प्रीती जोड़ धर्म धराया। धुर दरगाही वागां मोड़, घोड़ शब्द चढ़ाया। कलिजुग अन्तिम गया बौहड़, दे मति आप समझाया। काया भज्जणा रीठा कौड़, ना होए कोई सहाया। गुप्ती गुप्ता ब्रह्मण गौड़, गऊ गरीबां गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख वटाया। सुवांगी भेखी वैराग अतीतया। नूर नुरंतर अन्तर वेखा, सच समग्री अचरज रीता। जगत भिखारी दर द्वारी लिख्या लेखा। आसा कीनी वड गुण गुणी होया पतित पुनीता। सुणी शब्द नाद धुनी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द रखाए माण अठारां ध्याए गीता। गुण गावत पावत नर हरि धर्म कुण्ड कुंडयाला। आत्म दर आप समझावत, कलिजुग काया खेल निराला। सरोवर सति सति सरोवर गुरमुख विरला नहावत, तोड़े जगत जंजाला। पारब्रह्म दर साचा पावत, गुण गावत गुणी रसाला। हरि रसना सद ध्यावत, चतुर्भुज होए रखवाला। गुरमुख सोए आप जगावत दीनां बंधू दीन दयाला। मोर मुकट सिर नाम सजावट, घूंगट रखे काला। त्रैबैणी तीर्थ चरन गुर नहावत, काया साची धर्मसाला। पारब्रह्म पद साचा पावत, गोबिन्द गुर गोपाला। तूर अनादी धुन नाद वजावत, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत होए आप दलाला। गुर संगत गुण विचार, कर्म कमाया। साचा धर्म विच संसार, गुर चरन सीस निवाया। भाण्डा भरम भउ निवार, जगत जगदीस आप समझाया। लक्ख चुरासी उतरी पार, सतारां हाढ़ी जिस जन दर्शन पाया। आप उठाया आपणा भार, ना कोई उधार कराया। साचा न्याउँ सच्ची सरकार, सच दरबारे आप कराया। बणया आप मात भिखार, गुरमुख काया अन्दर सच्चा धन माल सुहाया। कीरत करनी करी विचार, पूर्ब लहिणा कर्म चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग किरपा कर, विहार गुर संगत विदा कराया।

★ २८ हाढ़ २०१२ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह पिण्ड रजीवाल ★

कलिजुग काला रूप, भेख वटाया। पुरख निरँजण सति सरूप, दिस किसे ना आया। लोकमात महिंमा अनूप, भेव अभेदा किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण भेख धर, कलिजुग काला वेस, मात कराया। कलिजुग काला वेस दूर दुरानया। पुरख अबिनाशी दर दरवेश, ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, ना कोई जाणे वेद पुराणया। पुरख अबिनाशी दर दरवेश, ना कोई जाणे हरि जी भेस, जोती जामा खेल महानया। आपे नर आपे नरेश, आपे गुर हरि

१८४
०५

दस्मेस, आप उठाए शाह सुल्तानया। आपे लज्जन रक्खे केस, बाल जुवानी इक्क वरेस, छत्र साचा सीस इक्क झुल्ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, अगाध बोध बोध अगाध संग रलाया, धुनी नाद साचा राग इक्क अलाया। साचा राग इक्क अनाद धुन जैकारया। आपे होए रहे विस्माद, जन भगतां देवे साची दाद, आत्म जोती नूर जगा रिहा। दिवस रैण रसना रहे अराध, जुगा जुगन्तर जोत निधान। मात रखीशर कर ध्यान। भगत तपीश्र शब्द निशान। मुन मुनीश्र कवण ज्ञान। आत्म गृह कवण दर कवण घर कवण हरि कवण वसे किस मकान। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए शब्द निशान। जोग राज जगत दर बाज। कवण रक्खे मात लाज। कलिजुग वेला अन्तिम कल कि आज। जूठे झूठे माया लूठे साजन साज। काया मन्दिर रंग अनूठे, शब्द अवल्लड़ी वज्जे अवाज। पुरख अबिनाशी साचा तुट्ठे, चरन उठाए देस माझ। जोती जोत सरूप हरि, आप संवारे आपणे काज। राज जोग तख्त सुल्तान। शब्द विजोग गुण निधान। हउमे रोग चिन्ता सोग अन्ध अंध्यान। एका एक हरि दरस अमोघ, मिले मेल धुर संजोग, चरन कँवल कँवल चरन साची सरन ब्रह्म ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आत्म देवे जिया दान। राज जोग जगत अधार। रसना रस भोग नाम अपार। एका एक इक्क संजोग, नर नरायण पति पतिवन्त संत सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे कराए ख़बरदार। राज प्रमुख नेत्र खोल्ह। कवण लग्गा काया दुःख, जगत लग्गी तृष्ना भुक्ख, अन्तिम मिल्या ना राज सुख, साचा तोल ना ल्या तोल। मात गर्भ उलटा रुख, सुफल ना होई मात कुक्ख, माया राणी जूठा झूठा घोल। मानस देही मिली मानुख, मन मन्दिर अन्दर सच टिकाणा, नाम बिबाणा पुरख अबिनाशी घट घट वासी मिल्या मेल ना कला सोल्ह। जूठा झूठा शाह साहाना, ना कोई दीसे राजा राणा, एका एक श्री भगवाना, लोचन नेत्र रिहा खोल्ह। शब्द वज्जे इक्क निशाना, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, पूरे तोलन रिहा तोल। राज जोग पट पटियाल। पारब्रह्म वेख दीन दयाल। सच धर्म जगत कर्म भगत रखवाल। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जगत अवल्लड़ी चले चाल। जोती जामा भेख न्यार। लक्ख चुरासी वेखे लेख, भगत वछल वछल भगत हरि गिरधार। जोती शब्द पवण स्वास, आत्म वेख तन श्रृंगार सच्ची सरकार। लोचन नेत्र खोल्ह लैणा वेख, कवण दुआरा भेख भिखार। अन्तिम मिटणे औलीए पीर शेख़, दस दस्मेश केहड़ी धार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, राज राजानां करे ख़बरदार। राज राजान शाह सुल्तान वड सिक्दारया। अन्तिम होणा मात वैरान, जगत मिटे झूठ निशान, करे खेल हरि निरंकारया। शब्द चले तीर कमान, उठे हरि बली बलवान, नाम फड़े तेज कटारया। जोती जोत सरूप हरि, राज जोग कर विचार,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए विच संसारया। शब्द नाम अपार जग जगत अमोल्लया। देवणहार दातार विच संसार, शब्द भण्डारा एका खोल्ल्या। गुरमुखां देवे वारो वार कर प्यार, आपे बणे धुर दरगाही सच विचोल्लया। फड़ फड़ बांहों जाए तार, अन्दरे अन्दर आपे बोल्लया। आपे खोल्हे बन्द कवाड़, वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, शब्द घोड़े देवे चाढ़ आदि अन्त कदे ना डोल्लया। दरगाह साची देवे वाड़, बजर कपाटी देवे पाड़, दस्म दुआरा हरि निरँकार, सच दुआरा एका खोल्ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, आप चुकाए अगला पिछला मूलया। शब्द दात अपार वंड वंडांयदा। आप आपणी किरपा धार, गुर साचे वेख विचार, साची वस्त नाम वंडया, पल्ले गंढु बनाँयदा। शब्द फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, पंजां चोरां वढ्ढे कंड, शब्द निशाना हरि भगवाना एका एक फड़ांयदा। आप बिठाए नाम बिबाणा, लोआं पुरीआं इक्क उडाना, ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, जगत पखण्डा आपे मेट मिटांयदा। शब्द नाम अडोल सदा अडोल्लया। जन भगतां वसे कोल, काया मन्दिर साचे चोल्लया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी धुनी नाद नाद धुन रिहा बोल, भेव आपणा आपे खोल्ल्या। आपे कराए तन शृंगार सँवल, जोत निरँजण रही मवल, एका देवे शब्द झकोल्लया। उलटा करे नाभी कँवल,
१८६ मिले वड्याई उप्पर धवल, अमृत बूंद स्वांती आपे आप चवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन १८६
०५ भगतां देवे नाम वर, सिर हथ्थ समरथ आपणा आप रखा रिहा। नाम वन्त गुणवन्त गुणी निधाणया। गुरमुख विरला होए ०५
मात चतुर सुघड़ स्याणया। मिले वड्याई विच जीव जन्त, चन्दन वास निम्म महिकानया। मेल मिलावा साचे कन्त, नार सुहागण हरि पछानया। ना होए विछोड़ा आदि अन्त, मिल्या मेल पारब्रह्म पुरख सुजानया। शब्द चढ़ाया साचा तेल, आपे गोपी आपे काहनया। आपे वसे सद नवेल, खेले खेल ज़िमीं असमानया। जन भगतां कटे धर्म राए दी जेल्ह, ना कोई फंद फसानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सर्ब सरबंस विष्नूं भगवानया। शब्द डोरी नाम करतार। कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, बेमुख सुत्ते पैर पसार। गुरमुख साचे करन चोरी, रसना नाम रहे उचार। एका मिली नाम घोड़ी, अट्ठे पहर होए अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, हरि जनां हरि सच्चा पहरेदार। नाम रंग रंग अनमोल। लोकमात कटे भुख नंग, आप निभाए आपणा संग, दरस दान जन ल्ए मंग, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां होए सहाई सदा सुहेला अंग संग। नाम रत्न साचा लाल। गुरमुख विरला मात उपाए, पुरख अबिनाशी दया कमाए, आपे होए विच दलाल। परखणहारा हरि निरँकारा, अन्दर बाहर

गुप्त जाहर जगत अवल्लड़ी चले चाल। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, मस्तक दीपक गगन जोती साचा थाल। हरि जोती नूर अपार शब्द अधारया। कलिजुग करे खेल अपार विच संसारया। हरि जोती नूर अपार, लोकमात ना किसे विचारया। कलिजुग करे खेल अपार, शब्द डंक इक्क वजा रिहा। पकड़ उठाए शाह सुल्तान राउ रंक वाली दो जहानां, इक्क दुआरा बंक वखा रिहा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं नाम गाना, अक्खर वक्खर इक्क निशाना, चार कुन्ट हरि झुल्ला रिहा। लिखे लेख रोड़ी सक्खर, प्रगट होए बजर कपाटी साचे पत्थर, आप आपणा आप अख्वा रिहा। लक्ख चुरासी लथ्थी सथ्थर, बिन रंग रूपा हरि सति सरूपा साची बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महिंमा अगणत साध संत सोए मात जगा रिहा। साध संत जगाए दया कमाए, शब्द उठांयदा। सुरती सुरत ज्ञान दवाए, अकाल मूर्त ध्यान रखाए, फड़ फड़ बाहों आप हिलांयदा। आप आपणा भेव छुपाए, कलिजुग अन्तिम दिस ना आए, भरम भुलेखे आप रखांयदा। चारों कुन्ट दहि दिशा वखाए, नौ खण्ड पृथ्वी हिस्सा पाए, साचा भाणा हरि हरि राणा आपणा आप वरतांयदा। जन भगतां पूरन इच्छया आप कराए, साची भाजी नाम पाए, शब्द निशाना तीर चलांयदा। दूई द्वैती आत्म लाहे विसा, सच महल्ल उच्च अटारी दस्म दुआरी पुरख अगम्मा दिसा, दीपक जोती इक्क जगांयदा। जोती

१८७ जोत सरूप हरि, शब्द पवण जोत अधारी पारब्रह्म खेल अपारी, सच धर्म वड संसारी, पूर्ब कर्म प्रभ चरन द्वारी, आत्म १८७

०५ दुक्खां आपे लांहयदा। मानस देही पैज संवारी, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, दर दर घर घर आपे ०५

आप सुहांयदा। शब्द महल्ल उच्च टिकाणा। नाम अटल विच जहाना। आपे वेखे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबाना। प्रभ का भाणा ना जाए टल, लक्ख चुरासी आप भुलाई कर कर वल छल। साध संत शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, एका ओट हरि सरनाई होए सहाई। अन्तिम कलि पकड़ उठाए थांउँ थाँईं। जोत सरूपी जल थल, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे इक्क वर, सदा सुहेला ठंडी छाँईं। शब्द सुहेला पवण अस्वार। इक्क इकेला विच संसार। आपे गुर आपे चेला, भरम भुलेखा विच संसार। कलिजुग अन्तिम वक्त दुहेला, संत असंत राज राजान होए बेमुहान। अचरज खेल हरि जी खेला, माया राणी वड जरवाणी चारों कुन्ट करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, जोती जामा भेख धर, कलि कलन्दर वेख विचार। संत सुहेले साजण मीत, पकड़ उठाए शब्द जणाए, वड निशाना इक्क वखाए, पारब्रह्म पुरख सुजाना, सदा सदा मन राखे चीत। मेल मिलावा हरि भगवाना, काया करे ठंडी सीत। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, अवल्लड़ी कलि चले रीत। तन मन्दिर मसीत गुरद्वार,

विच संसारया। गुरमुख विरला करे मात विचार, जिस जन मिल्या हरि भतारया। मिल्या मेल दरस अमोघ धुर संजोग, हउमे गया विच्चों रोग, पुन्न पाप लथ्था भारा। शब्द मिल्या साचा जोग, आत्म रस रसना भोग, चुक्के मोह जगत विकारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां वखाए इक्क दुआरा। इक्क दुआरा हरि निरँकारा। चार वरन साची सरन, खुल्हे हरन फरन, चुक्के मरन डरन, अट्ठे पहर ख़बरदारा। हरि जन साचे साची तरनी तरन, पूरे गुर सरनी पड़न, मिले मेल मीत मुरारा। जोती जामा धरनी धरन, आप अवरना वरनी वरन, नर हरि सच्ची सरकारा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, पारब्रह्म पुरख परखोतम अलक्ख निरँजण अगम्म अगोचर, वेस अवेसा नर नरेशा जोत प्रवेशा, गुणी गुणवन्ता हरि भगवन्ता आपे जाणे आपणी धारा। आपे जाणे आपणी धार। धीरन धीरा हरि प्रगट होया विच संसार। कलिजुग लाहे काले चीर, शब्द तीर इक्क चलांयदा। लेखा चुक्के पीर हकीर फ़कीर, शाह हकीर ना कोई नज़री आंयदा। बालक माता छुट्टे सीर, किसे हथ्थ ना आए नीर, एका भीड़ आपणी आपे पांयदा। ना कोई हस्त ना कोई कीड़, लक्ख चुरासी बन्न्हे बीड़, दूसर ना कोई भुजा उठांयदा। शब्द वेलणे देवे पीड़, बेमुखां लग्गी हउमे पीड़, झूठा रोग ना कोई गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस कर, सम्बल देस भाग लगांयदा।
सम्बल देस जोत उज्यारी। पारब्रह्म नर निरँकारी। करे खेल अपर अपारी। ब्रह्म पार पारब्रह्म ब्रह्म देस वेस गणेश दर दरवेश ब्रह्मा विष्न सच्ची सरकारी। पुरख निरँजण सदा आदेस, काल महांकाला शब्द प्रवेश, दीन दयाला गोबिन्द गोबिन्द गुर गोपाला, आप लाए मात सच्ची फुलवाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, जगे जोत बहत्तर नाड़ी जोत जगाईआ। मेट मिटाए झूठी धाड़ी, शब्द धाड़ इक्क उठाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, दहि दिशा चारों कुन्ट वड्डियाईआ। जन भगतां रक्खे लाज, चरन प्रीती गई जुड़, पूरन जोती ना कोई वरन ना कोई गोती, ब्रह्म ब्रह्म रूप समाईआ। हरिजन उठाए काया सोती, दुरमति मैल जाए धोती, जीआं अंजन नेत्र सोहँ शब्द पाईआ। लक्ख चुरासी रही रोती, गुरमुख विरला कोटन कोट कोट ब्रह्मण्ड काया गढ़ उप्पर चढ़, सच महल्ल अटल वेखे जन रुशनाईआ। शब्द सरूपी अन्दर वड़, भगत जनां रिहा फड़, दर दुआरे अग्गे खड्ड, दूर नेड़े नेड़े दूर कोई रखाईआ। काया कोट किल्ला गढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई मढ्ढ ना कोई मड़्ह, ना कोई अक्खर सके पढ़, निशअक्खर वक्खर साचे धाम डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम वर, पारज़ात कमलापात अमृत फल साचा मेवा, रसना दए खुवाईआ। पारज़ात उत्तम ज़ात, जन भगतां मिटे अन्धेरी रात, आपणे भाणे दया कमाए आपणा साथ।

साचा शब्द मात ल्याए, लोकमात कलिजुग टिकाए, गुरमुख चढ़ाए साचे राथ। कलिजुग बेड़ा आप उठाए, दूसर ना कोई संग रलाए, तट्ट तीर्थ मेट मिटाए, लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ गंगा गोदावरी होए हलकाए, शब्द तीर इक्क चलाए, कलिजुग वेला अन्त वखाए, ना कोई जाणे पूजा पाठ। ज्ञानी ध्यानी भरम भुलाए, वेद पुराणी सार ना पाए, अञ्जील कुरानी हाहाकार मचाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस कर, गणपत गणेश ब्रह्मा महेष शिव शंकर ना कोई सीस झुकाए। एका सीस दर परवान। जगत जगदीस वड मेहरवान। छत्र झुल्ले साचे सीस, बीस इक्कीस धर्म निशान। मुक्के चुक्के राग छतीस, नारद मुन सुंञ मसाण। ना कोई जाणे दन्द बतीस, काया मन्दिर इक्क वैरान। ना कोई कुरान ना हदीस, जीव जन्त जन्त शैतान। जूठी झूठी माया चक्की रहे पीस, भरमे भुल्ले जीव निधान। कवण करे प्रभ तेरी रीस, आदि अन्त इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप रखाए लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड एका आण। एका आण हरि निरँकार, विच ब्रहमंडया। शब्द झुलाए सच निशान विच नव खंडया। पुरीआं लोआं वंड वंडान, उत्भज सेत्ज जेरज अंडया। सुरपति राजा इन्द होए हैरान, करोड़ तेतीसा कलिजुग अन्तिम आया कंढुया। शिव शंकर करे मात ध्यान, जगत जगदीसा किस कलि वंडया। ब्रह्मा नेत्र खोल्ले चार मुखड़े बोले, चार वरनां इक्क ज्ञान। भगत सुहेला केहड़ी टुट्टी गंढे, पुरख अबिनाशी चतुर सुजान। घट घट वासी करे पछाण, आप आपणे रंग समाण, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस दर दरवेश ना सके कोई पछाण। ब्रह्मा ब्रह्म ज्ञान, मन वैरागया। नेत्र खोल्ले मार ध्यान, कवण सोया मात जागया। सोहँ फड़या कस निशान, साची पुरी आवे भागया। गुरमुख साचा नौजवान, पढ़के आया साचा रागया। निहकलंक बली बलवान, जिस धोया मात दाग़िआ। इक्क उठाए रसना तीर कमान, चौथे जुग हथ्थ आपणे पकड़े वागया। पुरीआं लोआं सुंञ मसाण, गुरमुख हँस बणाए कागया। धर्म राए दर शरमाण, चित्रगुप्त जाए भागया। गुरमुख जोधा वड बली बलवान, मिल्या मेल कन्त सुहागया। आपे जाणे जाणी जाण, जिस जन धोए दुरमति दागया। आत्म ब्रह्म करे पछाण, हँस बणाए कागया। आप चुकाए जम की कान, साची सरनी जो जन लागया। दर घर साचे देवे माण, धुर दरगाही आवे भागया। मिले मेल जोत श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, ब्रह्मा ब्रह्मलोक आपे आप जागया। शिव शंकर सुरत जणाई, शब्द धुन्कारया। साचे दर वज्जी वधाई, प्रभ करे खेल अपारया। गुरमुख उठाए चांईं चांईं, साचा लाड़ा आप शृंगारया। शब्द घोड़े चाढ़े फड़ के बाहीं, धुर दरगाही सच दुलारया। आप बहाए थांउँ थाँईं, वेख वखाणे पार आर आर पार किनारया। देंदा रहे ठंडीआं छाँईं, शब्द

सहारा वड संसारया। दूसर किसे दीसे नाहीं, जोत निरँजण नूर अकारया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे इक्क वर, साची पुरी आप बहा रिहा। साची पुरी माण रखाया, जन भगतां नाम बिबाणा है। आप आपणा संग निभाया, दीपक जोती आप जगाना है। साची रंगण रंग रंगाया, काल महांकाल आदि अन्त ना कदे खाणा है। शब्द घोड़े तंग कसाया, गुरमुख साचा पकड़ बहाया, आप उडाए इक्क उडाना है। शिव शंकर साचा हुक्म सुणाया, निहकलंकी जामा पाया, द्वार बंक इक्क सुहाया, गुणवन्ती गुण निधाना है। गुरमुख साचा साचे मार्ग लाया, साचे दर घर आप बहाया, धर्म झुल्लाया इक्क निशाना है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, पूरन जोत शब्द बिबाण है। पूरन जोत बली बलकार, विच जहानया। करोड़ तेतीसा कर विचार, सुरपति राजा इन्द वड मृगिन्द आप जगानया। जन भगत उपजाए साची बिन्द, अमृत देवे सागर सिन्ध, नूरी मस्तक जोत महानया। सदा सहाई आप बख्शिंद, दर घर घर दर साचे करे परवानया। प्रगट होए गुणी गहिंद, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सिँघासण साचे तख्त आप सुहानया। शब्द तख्त सुल्तान, हरि बिराज्जया। सदा सदा मेहरवान, हरिजन स्वारे काज्जया। जन भगतां देवे जिया दान, प्रगट जोत प्रभ देस माज्झया। अट्ठे पहर बली बलवान, वड शाहो राजन राज्जया। चारे कुन्टां इक्क बिबाण, पूरन जोती हरि भगवान, सोहँ शब्द साचे ताज्जया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आप आपणा साजन साज्जया। आपे साजन साज जोत जगाईआ। शब्द रक्खे सीस ताज, जोत रघुराईआ। जन भगतां रक्खण आया लाज, सोहँ उडाए साचा बाज, दिस किसे ना आईआ। आप संवारे आपणा काज, नाम तोड़ा कल कि आज, शब्द घोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपे मक्का हाजन हाजा, आपे काअबा दो दो आबा, नर हरि सच्ची जनाबा, करे खेल वड वड वड्डियाईआ। आपे मक्का आपे मदीना, आपे दाना आपे बीना, आपे खेल रचांयदा। आपे रूसा आपे चीना, आपे होए उम्मत नबी रसूला, आपे दीना आपे अल्ला, आपे वसे इक्क महल्ला अटल अटल्ला दिस किसे ना आंयदा। आपे वसे जलां थलां, शब्द फड़ाए साचा भल्ला, सदा रहे अटल अटला, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वड छल छल वड माया भरम भुलांयदा। आपे अल्ला आपे नूर। आपे शब्द शाह सति सरूर। आपे हरि जगत मलाह, आपे बेड़ा भरया पूर। आपे देवे सच्चा नाँ वर, सति सरूर। आपे वेखे थांउँ थाँ, जोती नूर कोहतूर। आपे पिता आपे माँ, सदा सदा हाज़र हज़ूर। आप उडाए घर घर कां, आपे नेड़े आपे दूर। आपे होए अमृत रूपी सच्ची गां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, आपे बेड़ा आपे

पूर। आपे वेद पाठ पुराणा। आपे अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ इशनाना। आपे वसे घट घट, सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा। गुरमुखां वसे काया हट्ट, चौदां लोक साचा पट्ट, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आप बिठाए शब्द बिबाणा। शब्द बिबाणा हरि निरँकार इक्क रखाईआ। गुरमुख साचे हो अस्वार, पहली वार पार उतार दया कमाईआ। जागरत जोत जोत प्रभ गुरमुख साचे रिहा मात जगाईआ। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, दर दर घर घर झूठे नाचे, मिल्या मेल ना साचो साचे, साचा राह ना कोई वखाईआ। माया लाए अग्न तमाचे, रसना रसक होई हलकाईआ। गुरमुख ढाले साचे ढांचे, हिरदे अन्तर शब्द वाचे, वाजे अनहद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, हरिभगत दुआरा बण वणजारा, रिहा अलख जगाईआ। हरिभगत द्वार अपार, अलख जगांयदा। मिले वस्त नाम अपार, दिस किसे ना आंयदा। जगत रीती खेल न्यार, काया सीतल सीती धर्म जैकार, साचा शब्द इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, काया मन्दिर गुरुदुआरा, सच मसीत बैठा रहे पतित पुनीत, अठ्ठे पहर राखो चीत, गुरमुख विरला रक्खे चीत, मानस देही लए जित्त, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। गुर मन्दिर तन सच द्वारया। अन्दरे अन्दर भेव न्यारया। लग्गे भाग काया डूंघी कन्दर शब्द धुन्कारया। आपे तोड़े वज्जा जन्दर, किरपा कर साचा हरि, गुरमुख साचा पार उतारया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, मिले मेल ना नर हरि सच्ची सरकारया। उच्चे टिल्ले सारे हिल्ले गोरख मच्छन्दर, जटा जूट अवधूत फिरे हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे करे सर्ब पसारया। गुर संगत गुर दर आई, बहु बहु रंगीआ। आत्म तृष्ना किसे वधाई, काया रोग रिहा सताई, दुखी भुक्खी आत्म नंगीआ। गुरमुख विरले आत्म वज्जे वधाई, प्रभ देवे इक्क सरनाईआ। मिले वस्त दस्त मूंहों मंगी, हरिजन गाए चांईं चांईआ। होए सहाई सभनीं थाँईं, प्रभ देवे इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सदा सुहेला संग संगीआ। तन रोग सोग दुखदाया ए। रसना रस झूठा भोग, पुरख निरँजण ना रसना गाया ए। माया राणी कर्म विजोग, शब्द ना चुगी साची चोग, मुख मदिरा मास लगाया ए। कवण कटे हउमे रोग, नाता तुटा धुर संजोग, दरस अमोघ किसे ना पाया ए। ममता लग्गा जगत विजोग, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी अगाध बोधा निर्भय निरवैर घर साचे सद ना किसे बहाया ए। झूठी पीणी जगत मध, रसन विकार चलाया ए। दस्म दुआरी औखी हद्द, बाहों फड़ ना पार किसे कराया ए। गुरमुख विरला उपजे साची यद्द, जिस सर्ब कुटम्ब तराया ए। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया ए। काया रोग जगत संताप। धुर दरगाही सदा विजोग, मन बौराना वध्या पाप। सच रस रसन रसायणी ना ल्या भोग, अजप अजपा

ना जपया जाप। कलिजुग वेला अन्तिम आया, जोत निरँजण भेख वटाया, दुःख दर्द भय भंजन आप अख्वाया, आप कटाए वंड संताप। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे आपणा आप। हड्ड नाड़ी मास तन दुःख। दर घर घर दर होया वास, अट्ठे पहर रहे सुख। शब्द चले रसन स्वास, सुफल होए साचा मुख। काया अन्दर पृथ्वी आकाश, मात गर्भ उलटा रुख। सुंञा मन्दिर इक्क प्रभास, मानस देही वेख मानुक्ख। गुरमुख विरला जाणे सच मण्डल दी साची रास, जूठे झूठे धूएँ रहे धुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क वर, आप चुकाए सगले दुःख। दुःख रोग प्रभ कट्ट दया कमांयदा। शब्द रखाए हट्ट, काया तन विकांयदा। नाम लपेटे एके पट, बेड़ा बन्न वखांयदा। रसना रस हरिजन लैणा चट्ट, बहत्तर नाड़ी दया कमांयदा। साचा लाहा लैणा खट्ट, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ांयदा। आपे वेखे घट घट, पर्दा उहला ना कोई रखांयदा। बेमुख जानण खेल बाजीगर नट, भरम भुलेखे आप भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी दया कमांयदा। किसे दिक किसे ताप। किसे सिक्क किसे मिले प्रभ आप। नीकन नीक अजप्पा जाप। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा वड प्रताप। आपे क्रोध पवण सुवास्सया। आपे पीण खाण, आपे पवण पाणी धराप्या। आपे वेखे मार ध्यान, अंग अंग संग संग रंग अनूप्या। आपे उडे उडाए विच बिबाण, हरि आपे शाहो वड वड भूप्या। आपे जाणे आत्म ब्रह्म ज्ञान, काया अन्धेर अन्ध अन्ध कूप्या। आपे चतुर्भुज भगवान, आपे होए बिन रंग रूप रेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, सोहँ शब्द सच्चा धूप्या। तन मन, हिरदे रोग दुःख दाया ए। मानस देही लग्गा डन्न, अट्ठे पहर सुख ना आया ए। भाण्डा भरम ना ल्या भन्न, शब्द ना सुणया साचा कन्न, मन हँकार वसाया ए। तन ना चढ़या साचा चन्न, रसन ना गाए धन्न धन्न, हउमे रोग शब्द जलाया ए। गुरमुख विरले आपणा बेड़ा लैणा बन्न, भरम भुलेखा कढ्ढे जन, चरन टेक एका एक रघुराया ए। पंज चोर ना लायण संन्न, सच्चा मिले नाम धन्न, साचे मन्दिर काया अन्दर आप टिकाया ए। पुरख अबिनाशी आपे बेड़ा रिहा बन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माया जिन्दर जिस तुड़ाया ए। बाशक सेजा हरि सुहाईआ। सांगो पांग सेज विछाईआ। नैण मुँधार सुत्ता रघुराईआ। साची भुजा हरि फैलाईआ। लच्छमी चरन झस्सण आईआ। आलस निन्दरा खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी माया आप वरताईआ। लच्छमी कर मन विचारया। लाल भूशन तन शृंगार, बैठी दर सच्ची सरकारया। भुजां वेख अपर अपार, बल परखे केहड़ी धारया। पुरख निरँजण सर्ब पसार, करनहार आप अख्वा रिहा। सनक सनंदन सनातन संत कुमार, पूत सपूते आप जगा रिहा। साचा

देवे इक्क ज्ञान, एका संग मिला रिहा। आए दर दरबान, पारख अग्गे हो अटका रिहा। रसना चले तीर कमान, संत कुमार एह सुणा रिहा। प्रगट होए विच जहान, सच दुआरे जो अटका रिहा। मातलोकी पीण खाण, धरत मात गोद उठा रिहा। करे खेल आप भगवान, दूसर भेव ना कोई पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणा रिहा। आप आपणी बणत बणाईआ। दोए पारख मात उपजाईआ। लच्छमी दस्से खेल हरि रघुराईआ। ब्रह्मे तुट्टे माण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साची कार कराईआ। साचा पारख पुरख बलवाना। धरत मात मात धरत आप दबाई दिस ना आई विच जहान, अतल वितल सुतल लोक चरनां हेठ दबाईआ। तलातल रसतल महातल पाताल लोक दए दुहाईआ। हरन कशप हरन माण ताण, सर्ब जहान देवे माण गंवाईआ। ब्रह्मा करे इक्क ध्यान, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, बवन्जा करोड़ योजन पृथ्वी हरन कशप लै गया उठाईआ। प्रभ अबिनाशी दयाधार, बराह रूप विच संसार, वेख वखाए हँकारी विकारी दुष्ट दुराचार। सत्त पतालां वेख विचारे, डूंघे सागर केहड़ी गार। हरन कशप नारद ललकारे। कवण मारे विच संसारे। नारद मुन आख पुकारे, प्रगट होया हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी कार। बराह रूप हरि वटाया। लोक पताल रक्खया एका राह, सतवें अन्दर डेरा ला, जगत उठाई धरती माँ, जले जल उप्पर आप ल्याया। हरि हरनाख़श पकड़े बांह, हँकार विकारा युद्ध कराया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी दुष्ट हँकारी मारे थाँ, आपणा बिरद रखाया। जोती जोत सरूप हरि, दूजा पारख आप उपाया। दूजा पारख कर हरनाख़श, बुध अपर अपार। प्रहलाद सुत धर्म जैकार। सुहाई रुत्त विच संसार। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, होया पहरेदार। पकड़ पछाड़े मार कुट्ट, नर सिँघ रूप अपर अपार। जन भगतां देवे अमृत घुट, बेड़ा करया मात पार। मानस देही गई छुट्ट, सतिजुग ना दीसे कोई सहार। सतिजुग चोग गई निखुट्ट, त्रेते मिल्या इक्क अधार। रावण कुम्भ बैठे रुठ, राम रामा हरि करतार। वेले अन्तिम गया तुठ, मार मिटाए खण्डा दो धार। दूजे जामे गए रुठ्ठ, तीजे मिले मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, विच द्वापर खेल अपार। भगत वछल गिरवर गिरधार पारब्रह्म रूप अपारा। आप जाणे आपणा मेल, भगत वछल सच्ची सरकारा। अछल अछल्ल खेल न्यार, आपे जाणे आपणी धार, आपे अन्दर आपे बाहर, आपे होए सर्ब सहार, आपे मार जुवाले रखणहारा। आपे नारी आपे नर, जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्तर जोत धर, जगत अवल्लड़ा भेस कर, तोड़े मात सर्ब हँकारा। माण हँकार सर्ब गवांयदा। इक्क कराए आपणे नाम जैकार, दूसर होर ना कोई अख्वांयदा। आपे आप सज्जण यार, सच सिँघासण डेरा लांयदा। जन भगत चोबदार, छत्र सीस जगदीस इक्क झुलांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मायाधारी दुर्योध्न हँकारी जगत विकारी एका घांयदा। दुर्योध्न हँकार मन वधाया। मंगण गया इक्क वर, भिच्छया इच्छया पूर कराया। शब्द घोड़े कस तंग, नाम रबाबा वज्जे मृदंग, साची रचना आप रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, कौरो पांडो भेड़ भिड़ाया। जुग द्वापर कर त्यारी। करे खेल कृष्न मुरारी। भाई भाईआं नाता तुट्टा, छुट्टा साक मीत मुरारी। शब्द तीर रसना छुट्टा, चारों कुन्ट आई हारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल वड प्रबल बलकारी। उद्वे योधे वड बलवान, विच बिबाणया। वेखे खेल श्री भगवान, वाली दो जहानया। अर्जन होया मन गुमान, कवण मारां तीर निशान, एका कुल दिस दिसानया। हथ्थों सुट्टे तीर कमान, प्रभ अबिनाशी चरनी डिगा आण, सर्ब घटां घट जाणी जाण, दर दुआरे डिग्गा आण, पूत सपूते एका माण, धृतराश्ट्र पूत सुजान, दूसर होर ना कोई जाणया। दरोनाचारज गुरू मेहरवान, जिसने दीआ ब्रह्म ज्ञान, अस्अस्थामा नाल बलवान, साचा भाई बीर बलवानया। करन योधा मार ध्यान, अन्तिम मिटे नाम निशान, किरपा कर गुण निधान, हो मेहरवान मेहरवानया। आप बोले श्री भगवान, अर्जन सुण जीव नादान, वेले अन्तिम काहूं डोल्लया। हरि अर्जन आप समझांयदा। प्रभ साचे रचन रचाईआ। भरम भुलेखे आप भुलांयदा। माया पड़दा इक्क रखाईआ, जो वेखे दिस ना आंयदा। वेले अन्त सर्ब मिट जाईआ, आपे जाणे आपणे लेखे, आपे गणत गिणांयदा। आपे धारया हरि जी भेखे, तीर कमान ना कोई उठांयदा। आप मिटाए सृष्ट सबाई रेखे, वड रथवाही रथ चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणे वेसे, आपणे भाणे आप समांयदा। आप आपणा करे अकार, आप उपांयदा। आपे वरते विच संसार, आपे बणत बणांयदा। आपे माया रिहा पसर पसार, जोधा बीर आप अख्वांयदा। आपे रथ घोड़ा पवण अस्वार, सर्ब थाँईं आप समझांयदा। चौदां लोकां वणज वपार, लोआं पुरीआं पसर पसार, आप बणाए आपे ढांयदा। आपे तीर तेज़ कटार, शस्त्र अस्त्र आप अख्वांयदा। गुण अवगुण रिहा विचार, साचे भगत हो हुशयार, प्रभ माया भरम चुकांयदा। नेत्र खोल्ह बन्द किवाड़, सृष्ट सबाई चबाई दाढ़, हरि आपणा भेख वटांयदा। किसे ना दीसे पिच्छा अगाड़, ना कोई पुरी लोअ अकाश मण्डल धरत ख़ाक, सागर सिन्ध कोई दिस ना आंयदा। ना कोई महल्ल अटल उच्च ताक, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पर्बत नौ खण्ड पृथ्वी विच समांयदा। ना कोई हस्त घोड़ा ना कोई शाह राक, तीर तुफंग अंग अंग ना संग कोई समांयदा। नगार धौंसा ना कोई मृदंग, लक्ख चुरासी कच्ची वंग, प्रभ आपणे विच वखांयदा। अमृत वहे धारा गंग, करोड़ तेतीसा इन्द्र संग, शिव शंकर मंगे साची मंग, ब्रह्मा सीस निवांयदा। लोआं पुरीआं होईआं भंग, हरि जी वरते आपणा रंग, होर कोई दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, चौदां लोकां वेस कर, सत्तां सत्तां वंड करांयदा।

सत्त लोक अकाश सत्त पातालया। अर्जन देवे हरि धरवास, जीव जिवाल्या। आपे होए पृथ्वी अकाश, आपे होए घट घट वास, चतर्भुज आप अख्वा ल्या। आपे होए दस दस मास, आपे होए घट घट वास, आदि अन्त ना जाए विनास, आपे लेखा शब्द स्वास, चन्द सूरज अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, त्रैगुण माया वेस कर, हरि हरि भुगत जुगत साचा राह वखा रिहा। गुरदुआरा इक्क निशान है। ना कोई मन्दिर ना कोई मकान है। आत्म धर्म ब्रह्म ज्ञान है। गुर पूरे दा साचा जन्म, जिथ्थे उपजे नाम निधान है। मानस देही पूरन कर्म, जिस मिल्या ब्रह्म ज्ञान है। दूई द्वैती झूठा भरम, आपे राम रहीम रहिमान है। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे देवे जरम, झुल्ले फेर सच्चा निशान है। शब्द किरपान तेज़ खण्डा। विच जहान उच्चा डण्डा। नाम निरबाण पाई वंडा। गुण निधान विच ब्रह्मण्डा। पूरन भगवान आप मेट मिटाए भेख पखण्डा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, इक्क उठाए नाम चण्ड प्रचण्डा। शब्द खण्डा जिस जन हथ्थ उठाया ए। आत्म होए मात ना रंडा, आत्म घमंडा दूर कराया ए। सीतल काया पाए ठंडा, मिले नाम विच वरभण्डा, ब्रह्मण्ड खोज खुजाया ए। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, एका शब्द खण्डा वड्डिआया ए। शब्द खण्डा हथ्थ दातार, जन भगत तरांयदा। बेमुखां कर ख्वार, लक्ख चुरासी गेड़ भवांयदा। गुरमुख साचे शब्द वणजार, एका दस्से सच प्यार, जाति पाती वरन गोती भेव चुकांयदा। ब्रह्म रूप हरि करतार। साचा धर्म विच संसार। पुरख बिधाती साचा नाती, अमृत देवे बूंद स्वांती, दस्म दुआरी धार वहांयदा। हरिजन मेला इक्क इकांती, मिटे रैण अन्धेरी राती, दीप उजाला गुर गोपाला एका एक करांयदा। अमृत खण्डा बहु बहु भांती, कलिजुग पाड़े अन्तिम छाती, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, तुठ मुठ आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि किरपान इक्क बणाई है। तिक्खी धार आप रखाई है। लुहार तरखाण ना किसे घड़ाई है। गुरमुख विरला नौजवान, जिस गुर चरन प्रीती साची कर तन आपणे नाल छुहाई है। धुर दरगाही साचा दान, देवणहार हरि भगवान, साची किरपान जिस प्रनाई है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, तुठ्ठ मुठ्ठ आपणे हथ्थ रखाई है। सर अमृत सरोवर मान बन्द रखाया। सर अमृत आप बणाई माया कंध, साचा राह किसे हथ्थ ना आया। मनमुख मूर्ख ना जानण अन्ध, सच दुआरे आप टिकाया। सर अमृत साचा सर, आप टिकाए आपणे घर, दर शब्दी बन्द कराया। गुरमुख विरले किरपा कर, पुरख अबिनाशी साचा हरि, जोती जोत सरूप हरि, आत्म कुण्डा देवे लाहया। सर अमृत ताल सुहाए, गहर गुण सागरा। साचे धाम आप रखाए, दिस ना आए काया गागरा। मनमुख जीव फिरन हलकाए, निर्मल कर्म ना होए उजागरा। गुरमुखां

मेला सहिज सुभाए, करया वणज सच्चा सुदागरा। बन्द किवाड़ी आप खुल्हाए, देवे दरस रती रत्नागरा। जोती जोत सरूप हरि, साचा ताल इक्क वखाए, गुरमुख नहावण तीर्थ जाए, दुरमति मैल मात चुकाए साचे सागरा। सर अमृत सुरत संभाल धार अपारया। आप टिकाई मस्तक साचे थाल, जोत निरंकारया। अट्ठे पहर अवल्लड़ी चाल, काया माटी झूठी खाल, लक्ख चुरासी खाए काल, गुरमुख सोहे सच द्वारया। हरिजन परखे साचे लाल, धुर दरगाही आप दलाल, काया फल एक शब्द साचे डाल्ह, कराए वणज सच्चा वपारया। आपे चले नाल नाल, भगतन हित करे संभाल, नित्त नवित्ता करे प्रितपाल, आदि अन्त होए अधारया। गुरमुख होण ना मात कंगाल, आपे तोड़े जगत जंजाल, काया मन्दिर इक्क वखाए साचा गुर सच्ची धर्मसाल, देवे दरस अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती इक्क जगाए, गुरमुख साचे आप उठाए, दयानिध दयावान साची भिच्छया झोली पाए, देवे दान वड वड दानया। सर अमृत सति संतोख सर्ब भरपूरया। हरिजन विरले अन्तिम मोख, बेमुखां दर दुआरा दिसे दूरया। अट्ठे पहर आत्म तृष्ना लग्गी भुक्ख, हउमे लग्गा रोग जगत वसूरया। गुरमुख विरले साचे घर एका मोख, प्रभ अबिनाशी घनकपुर वासी दिसे हाज़र हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द नाद, अनाहद साची तूरया। अमृत आत्म रस आत्म मध मत्या। गुरमुख विरला लेवे हस्स, जिस प्याए कमलापात्या। तन विकारा जाए

१६६ ०५ नस्स, हरिजन होए आत्म रास्या। राह साचा जाए दस्स, पुरख अबिनाशी लोकमात्या। काया नगर खेड़ा जाए वस, मिटे १६६ ०५

रैण अन्धेरी रात्या। बेमुख दर तों जाए नस्स, कुलखक्णी नार वड कमजात्या। नर हरि हरि हिरदे जाए वस, पारब्रह्म सहिज सुख वास्या। रसन प्याए अमृत रूपी बूंद इक्क सवांत्या। शब्द तीर मारे कस, चरन बंधाए साचा नात्या। लक्ख चुरासी रिहा मथ, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, ना कोई जाणे जाति पात्या। अमृत आत्म धार वहांयदा। सर अमृत कर विचार, गुरमुख विरला तीर्थ साचे मात नुहांयदा। पूर्ब कर्मा रिहा विचार, जोती जामा भेख न्यार, कल्गी तोड़ा नाम दातार, शब्द घोड़ा विच संसार, जुड़या जोड़ा पहली वार, बेमुख जीव भेव ना पांयदा। आत्म चल्लया इक्क विकार, हउमे लग्गा सर्ब हँकार, दस्म दुआरे वसे बाहर, नौ दुआरे खेल रचांयदा। गुरमुख साचे संत दुलार, देवे दरस अगम्म अपार, भरम भउ निवार, दस्म दुआरी भेव चुकांयदा। जोती नूर गुर मन्त्र इक्क अपार, पवण जोती शब्द बसंतर, जगदी रहे दस्म दुआर। इक्क बणाए आपणी बणत, शब्द सिँघासण सुत्ता पैर पसार। सर्ब जीआं शब्द जाणे अन्तर, एका पुरख सबाई नार। वेखे वेख वखाणे सृष्ट सबाई मात पताल अकाश गगन गगनंतर, लोआं पुरीआं पावे सार। आवे जावे जुगा जुगन्तर, ना कोई जाणे जन्त गंवार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आप आपणी किरपा कर,

लक्ख चुरासी जोत धर, सर्ब घट काया मन्दिर अन्दर कीट हस्त पावे सार। अमृत आत्म सर ठंडी धारया। गुरमुख विरला पीवे सीर, जिस देवे हरि निरंकारया। मनमुखां लथ्थे काया चीर, कोई ना देवे मात धीर, ब्रह्म रूप ना किसे विचारया। जोती जोत सरूप हरि, अमृत आत्म देवे सर, हरिजन साचे संत सुहेले घर अकेले आपे आप मुख चवा रिहा। सर अमृत सर्ब ज्ञान, बूझ बुझाईआ। तीजे नैणां मार ध्यान, काया माटी हट खुल्ाईआ। साचा वज्जे तीर निशान, रसना चिले रिहा चढ़ाईआ। एका एक सरोवर मान, दस्म दुआरी बूझ बुझाईआ। भगत जनां दी साची खाण, आदि अन्त तोट ना आईआ। आपे मध आपे रसीआ आपे पीण खाण, आपे धारा रिहा वहाईआ। आपे शब्द आपे संत सुहेले साचे सद जगत जगदीसा राग छतीसा सुन मण्डल अगाध बोधा ओंकारा रिहा समझाईआ। पारब्रह्म पुरख उनीसा, छत्र झुल्ले साचा सीसा, दूसर कोई भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अमृत आत्म साचे सर, एका हरि सद रखाईआ। सर सरोवर आत्म धार। गुर पूरा करे सर्ब विचार। हरिजन हरि हरि साचा सूरा, मंगे मंग बण भिखार। देवे वर सर्ब गुण भरपूरा, भरया रहे दर भण्डार। आत्म जोती साचा नूरा, शब्द सिँघासण कर त्यार। बेमुखां कलि दिसे दूरा, गुरमुख सोए साचे घर आत्म दर द्वार। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण भेख कर, लक्ख चुरासी वेख हरि, आपे करे आपणी कार। अमृत आत्म रंग रंग अमोल्लया। गुरमुख विरला जाए लँघ, बेमुख माया भुल्लया। शब्द डोरी नाम पतंग, आप निभाए आपणा संग, नर हरि सच्चा कन्तूहलया। इक्क वजाए नाम मृदंग, अमृत वहाए साची गंग, शब्द झुलाए सच पंघूड़ा, गुरमुख विरले मात झूलया। सोहँ पाए हथ्थीं चूड़ा, काया रंग चढ़ाए गूढ़ा, चतुर सुजान बणाए मूर्ख मूढ़ा, पुरख अबिनाशी दूल्ो दूलया। गुरमुख विरला पाए दया कमाए चरन लगाए मस्तक धूढ़ा, सृष्ट सबाई नाता दिसे कूड़ो कूड़ा, हरिजन हरि दुआरे एका फलया फूलया। जोती जोत सरूप हरि, भगत जनां सद वसे दर, अमृत आत्म साचे सर, आप प्याए भर भर साची चूलीआ। अमृत आत्म घर दस्म दुआरया। नौ दुआरे आवे डर, मनमुख मुग्ध गंवारया। मानस देही रही हर, पुरख अबिनाशी ना तन विचारया। झूठी करनी रिहा कर, मिली वस्त दस्त काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। गुरमुख विरला गुर चरन सरन जन जाए पड़, तन मन अन्दर मन्दिर खोल्े बन्द किवाड़या। साची तरनी जाए तर, लाड़ी मौत चबाए आपणी दाढ़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वसाए साचे घर, साचे पौड़े आपे चाढ़या। अमृत सर सरोवर सच महल्लया। पुरख अबिनाशी आप टिकाए ऊँचो ऊँच अटल्लया। बेमुख जीवां दिस ना आए, निहचल धाम अटल्लया। गुरमुख विरला सहिज सुभाए पाए, सच दुआरा एका मल्लया। निझर धार आप वहाए, देवे सच उछलया। कँवल नाभी प्रभ उलटाए, अमृत बूंद मुख चुआए, आपे

फलया आपे फूलया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, भाग लगाए साची कुलया। सर अमृत सहिज सुख दानया। गुरमुखां घर जोत निरँजण आत्म दर शब्द कराए ब्रह्म ज्ञानया। इक्क वखाए साचा सर, आप आपणी किरपा कर, धुर दरगाही नाम निशानया। ना जन्मे ना जाए मर, जोती जोत सरूप हरि, वड दाता जोधा सूरबीर वड बणया दाना दानया। दाना बीना हरि दातार, दया निध अख्वांयदा। हरि जन साचे कर प्यार कारज करे सिद्ध, आत्म विध तीर चलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पार आदि पुरख अपरम्पर अकाल मूर्त मूर्त अकाल दीन दयाल विच संसार, कारज सिद्ध नौ निध घर उपजांयदा। पुरख निरँजण अगम्म अपार, साचा मजन चरन द्वार, नेत्र अंजन शब्द अपार, आत्म सूखम साचा मार्ग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप करे आपणी बिध, विछड़यां मेल मिलांयदा। सच दुआरा मान, जले जल थलया। सति सरोवर आण, बली बल बलया। काया मन्दिर सुञ्ञ मसाण, आप वखाए वल छलया। हरिजन साचे मार ध्यान, खेल कराए उच्च अटलया। साचे घर सच्चा इशनाना, सति सरोवर एका मल्लया। अमृत वेला गुर इशनान, देवे दरस घड़ी घड़ी पल पलया। काया कोट गढ़ हरि चढ़, आपे वेखे सीस धड़, सीर प्याए बहत्तर नाड़, आपे जाणी जाणया। गुरमुख साचे रिहा फड़, अन्दरे अन्दर हरि जी वड़, कूड़ कुटम्ब जगत निशानया। माया राणी वहे हढ़, गुरमुख विरला एका अक्खर जाए पढ़, मिले मेल पुरख सुजानया। साचे घाड़न रिहा घड़, गुरमुखां दर दुआरे अग्गे खड़्, ना कोई जाणे मात विद्वानया। हउमे रोग रहे सड़, जोती जोत सरूप हरि, एका मारे शब्द तीर कानीआ। मारे शब्द तीर निशान, बेमुख बेमुहाणया। हरिजन बख्शे चरन ध्यान, दर दुआरा इक्क पछानया। बेमुख रोड़े विच जहान, चुक्के मात पीणा खाणया। गुरमुख झुलदा रहे निशान, मिले मेल वाली दो जहान, तुट्टे माण साचे राणया। गुणवन्त गुणी निधान, आदिन अन्ता पुरख सुजान, पूरन भगवन्ता हरि भगवान, आपे जाणे आपणे भाणया। कलिजुग माया पाए बेअन्ता, जगत सदाए साधन संता, नर हरि ना करे पछानया। दर दुआरा दूर नौ दरवाज्जया। गुरमुख विरला जाणे सूर, जिस जन दया कमाए गरीब निवाज्जया। दीपक जोती नूर उजाला काया पर्बत सच कोहतूर साचा साजन साज्जया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, भगत जनां सद हाज़र हज़ूर, एका मात मार झात, बैठ इकांत कुलवन्त रक्खण आया लाज्जया। अमृत देवे बूंद स्वांत, आपे पिता आपे मात, एका बख्शे चरन शब्द दात, ना कोई वेख ज़ात पात, आप संवारे आपणे काज्जया। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, जोती जोत सरूप हरि, जन भगत सुहाए साचे दर, वेखे खेल कल कि आज्जया। हरिभगत सुहेला मीत तन वसेरया। सतिजुग चलाए साची रीत, कलिजुग ढाहे भरमां डेरया। कलिजुग परखण आया नीत, आपे

वेखे सञ्झ सवेरया। सदा सुहेला राखो चीत, आप चुकाए मेरा तेरया। कलिजुग औध रही बीत, लक्ख चुरासी भय भीत, गुरमुख विरले मानस देही जाणी जीत, आपे गुर आपे चेरया। आप कराए काया ठंडी सीत, आत्म जोती सदा अतीत, इक्क कराए चरन प्रीत, शब्द सरूपी पाए घेरया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां सदा दिसे दर, बेमुख भुलाए कर कर हेरा फेरया। बेमुखां भुलाए आप गुर मन्त्र जाप हउमे दुःख लगाए वड्डा ताप, नौ दुआरे रिहा फेरया। पुरख अबिनाशी दिस ना आए, भरमां लाए डेरया। रसना रस फिरन हलकाए, कामी कुष्टी होए चेरया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे सच वर, लक्ख चुरासी विच्चों आप उठाए, शब्द जणाए कर कर आपणी मेहरया। शब्द सुहावा ताल, दर सुहानया। नेड़ ना आए जम जम काल, दया करे हरि दया वानया। लक्ख चुरासी तोड़े जगत जंजाल, मिलाए मेल जोत भगवानया। मस्तक दीपक साचा थाल, जोती नूर सति सरूर, हरि भरपूर साचा घर हरि सुहानया। साचा शब्द गुरमुख विरले फल लग्गा काया डाहण, एका मेवा देवी देवा अलख अभेवा, दर साचे आप खवानया। पुरख अबिनाशी साची सेवा, रसना काया साची जिह्वा, फीका रस मूल ना भानया। कौस्तक मणीआ लाए थेवा, जोती जोत सरूप हरि, साची देवे शब्द निशानीआ। शब्द निशाना हरि भगवान, आत्म दर वखांयदा। झुल्लदा रहे विच जहान, बेमुखां दिस ना आंयदा। गुरमुखां वखाए आप भगवान, सिर हथ्थ समरथ टिकांयदा। पवण उनन्जा हथ्थ बन्ने गाना, सच प्रकाश कोटन भाना, चन्द सूरज सूरज चन्द सीस झुकांयदा। गुरमुख साचा विच चढ़े शब्द बिबाणा, पुरीआं लोआं इक्क उडाना, धर्म राए मुख भवांयदा। काल महांकाल ना पाए आना, तोड़ जंजाल पुरख सुजाना, भगत रखवाल वाली दो जहानां, दरगाह साची धाम बहांयदा। चतुर्भुज गुण निधाना, भेव गुज्झ आप खुल्लाना, सच दुआरा जाए सुज्झ दरस अमोघ जन दखाना, एका रंग सरबंग संग अंग आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, भगत सुहेला देवे वर, गुरुदुआरे पार लँघ, दस्म दुआरी आप खुल्लांयदा। दस्म दुआरा देवे खोल्ह, वड वडी वड्डियाईआ। शब्द सरूपी रिहा बोल, सार किसे ना पाईआ। धुनी नाद अनाहद ढोल, दिवस रैण रिहा वजाईआ। दिवस रैण करे चोहल, काया मन्दिर रिहा मौल, साचा राग रिहा सुणाईआ। अमृत चुआए नाभ कँवल, मिले वड्याई उप्पर धवल, सुन्न समाधी रिहा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां दिसे साचे घर, आपे रिहा भेव खुल्लाईआ। अमृत आत्म रस, शब्द प्रताप्या। हरि हिरदे जाए वस, एका जाप सोहँ जप जाप्या। आप मिटाए तीनो तप, कलिजुग वेला अन्तिम सुहा रिहा। माया डसे ना नागनी सप्प, हरिजन साचा थापन थाप्या। कोटन कोट उतारे पप्प, आपे माई आपे बप्प, जो जन पछाणे आपन आप्या। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, सोहँ शब्द सहिज सुख जाप्या। सोहँ अक्खर कर विचार।

सति पुरख निरँजण जोती धार। शब्द दुआरा वड भण्डार। हरिजन मंगे वारो वार। देवणहार सच्ची सरकार। दोए जोड़ करे निमस्कार। हउमे हँगता रोग निवार। रसना गाए गुण निरँकार। रसन रसायणी कर्म उधारया, ब्रह्म रूप अपारा नेत्र नैणी दरस अपार। गुरमुख गुर संगत साचा बहिण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप कराए बेड़ा पार। काया कूड़ा कोट महल्ल उसारया। गुरमुख विरले वज्जे शब्द चोट, साचे तन नगारया। जूठा झूठा कढ्ढे खोट, नर नरायण जिस उचारया। कलिजुग जीव आलूणिओ डिग्गे बोट, ना दूसर कोई उठा रिहा। माया राणी भरी ना पोट, तृष्ना अग्ग जगत जला रिहा। हरिजन साचे एका एक हरि ओट, थांउँ थाँईं आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां वसे आत्म दर, दुरमति मैल रोग गंवा रिहा। काया मन्दिर धाम हरि अवल्लड़ा। हरिजन साचा वेखे सद्द, पुरख अबिनाशी इक्क इकल्लड़ा। आउँणा जाणा चुक्के डर, वसे निहचल धाम इकल्लड़ा। साची तरनी जाए तर, दर दुआरा जिस जन मल्लड़ा। मानस देही ना आए हार, लेखे लाए काया माटी झूठी खलड़ा। पारब्रह्म प्रभ सरनी पड़, शब्द फड़ाए साचा पलड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, सोहँ दस्से राह सुखल्लड़ा। एका राह जगत मलाह, हरि वखांयदा। बेपरवाह अगम्म अथाह, शब्द हथ्थ फड़ांयदा। होए सहाई सभनीं थाँ, पड़दा उहला ना कोई रखांयदा। अमृत रूपी देवे साची गां, अमृत सीर आप प्यांअदा। दो जहानी ठंडी छाँ, पारजात फल खवांयदा। बेमुख जीव काया सुंञा मन्दिर घर काम क्रोधी उडदे कां, साचा घर ना कोई दिसांयदा। गुरमुखां मिल्या एका नाँ, दरगाह साची साचा थाँ, आपे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम सोहँ अक्खर, जगत बजर कपाटी वेखे पत्थर, आपे पार करांयदा। बजर कपाटी पत्थर पाड़। काया हाटी शब्द धार। जोत सरूपी हरि उज्यार। इक्क रखाए तीर्थ ताटी, काया मन्दिर औखी घाटी, पारब्रह्म पार किनार। दुरमति मैल रिहा काटी, हरिजन हरि रस रिहा चाटी, दर दुआरे लाहा खाटी, मानस जन्म मात संवार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे आत्म वर, सोहँ शब्द अपर अपार। सोहँ शब्द शब्द गुण दाता। काया मन्दिर अन्दर रैण अन्धेरी गुणवन्त अन्त ना किसे पछाता। जूठा झूठा नाता पछाण, मात पित साक सज्जण सैण, एका एक भगत टेक करे बुध बिबेक, पुरख अबिनाशी सच बिधाता। कलिजुग माया ना लग्गे सेक, तीजे नेत्र लैणा वेख, ग्रन्थी पन्थी मिट्टी रेख, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां वसे आत्म दर, इक्क नुहाए साचे सर, सच सरोवर हरि इशनान मार ध्यान आप करांयदा। सच कराए इशनान, दया कमाईआ। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, ना होए मात जुदाईआ। जोती जगे नूर महान, करे आप सच्ची रुशनाईआ। शब्द तोड़ा जगत महान,

चीर साचे तन पहनाईआ। साचा घोड़ा हरि मेहरवान, आपणी हथ्थीं वाग गुंदाईआ। कलिजुग वक्त रहि गया थोड़ा, बेमुखां रिहा समझाईआ। गुरमुखां हरि जी आपे बौहड़ा, शब्द गोदी रिहा उठाईआ। वेखण आया मिट्ठा कौड़ा, शब्द हथौड़ा नाल लिआईआ। धुर दरगाही एका पौड़, ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, ज्ञानी ध्यानी सुन्न समाधी वेख वेख बैठे ध्यान लगाईआ। आपे प्रगट होया ब्रह्मण गौड़ा, सम्बल देस डेरा लाईआ। सो पुरख लगाया सस्से इक्को होड़ा, सस्सा काया किल्हा कोट आप वखाईआ। आदि पुरख आया दौड़ा, ओंकार देस समाईआ। ओंकारे किया अकारा, सुन्न मञ्झारा जोत टिकाईआ। सुन अगम्मी साची धारा, सोहँ साया जोती आप वखाईआ। सोहँ उपजे नर निरँकारा, दस्म दुआरा धुन उपजाईआ। दस्म दुआरी बन्द कवाड़ा, हरि आपे आप खुल्हाईआ। त्रैकुटी देस सच बिजवाड़ा, निरगुण सरगुण बणत बणाईआ। अजपा जप बहत्तर नाड़ा, छत्ती राग भेव ना पाईआ। हिरदे कवण नाम अखाड़ा, उप्पर धवल मिले वड्डिआईआ। जिमीं अस्माना तुटा पाड़ा, निहकलंकी डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां वसे साचे घर, बंक दुआरा आप सुहाईआ। आप सुहाए द्वार बंक, राउ रंक ना करे विचार। आत्म सहिंसा हउमे रोग निवार। जोती देवे एका कणक, दरस दिखाए बार अनक करे किरपा हरि गिरधार। चरन प्रीती साची तणक, खिच्ची रक्खे सच द्वार। आप फिराए मन का मणक, बेमुख भुल्ले जीव गंवार। मिले वड्याई जिउँ भगत जनक, दया कमाए दर दातार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां दस्से सच घर, खुल्हा रहे सदा कवाड़। जो जन जाणे राम रमईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। कलिजुग बेड़ा पार करईआ। साचा राह इक्क वखईआ। चार वरनां एका सरना भैणां भईआ। साचा नाता हरि जुड़ईआ। मिले मेल पुरख बिधाता, उत्तम ज़ाता मेट मिटाए अन्धेरी राता, अन्ध अंध्यान दूर करईआ। ना कोई वेखे ज़ाता पाता, अमृत देवे बूंद स्वांता, दीपक जोती नाम जगईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, रोग सोग जगत विजोग, रसना रस भोग दूर करईआ। गुर संगत गुर साचा पाए। रंगत नाम इक्क चढ़ाए। दूजे दर ना होए मंगत, साचा संग आप निभाए। मानस देही ना होए भंगत, काया नगर खेड़ा आप वसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी चुक्के गेड़ा, धर्म राए दर फंद कटाए। सतिगुर सुरती सुरत भवांयदा। दे मति आप समझांयदा। शब्द चलाए साचा रथ, सर्बकला समरथ, हरिजन साचा आप चढ़ांयदा। हथ्थ पकड़े आपणे नत्थ, महिंमा जगत अकथ, भेव कोई ना पांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जगत तृष्ना रिहा मथ, एका राह वखांयदा। सतिगुर पूरा जिस जन रक्खे दे कर हथ्थ, मानस जन्म लेखे लांयदा। आपे मति आपे ज्ञाना। आपे देवे धीरज जति, एका दस्से

राह निशाना। आपे काया मन्दिर सच मलाह इक्क वखाना। सतिगुर पूरा सति सतिवादी, आप आपणे रंग समाना। देवे मति सुरत संभाले, हरिजन चले नाल नाल, सर्ब जीआं करे प्रितपाला, रसना किसे ना सके कहण। गुणवन्ता गुण आपे जाणे, मात पित साक सज्जण भाई भैण। आपे तोड़े जगत जंजाले। आपे खाए लाड़ी मौत बण बण डैण, आपे सुरत संभाले। आप वहाए वैहिंदे वहिण, आप आपणी गोद उठा ले। आपे आप दरस दिखाए तीजे नैण, आपे आप मुख भवा ले। सतिगुर साचा सति पुरख है, जीव जन्त साध संत सद सुरत संभाले। शब्द सुहेला मंगलाचार। धुर दरगाही साचा मेला विच संसार। आपे वसे इक्क इकेला, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर। आपे गुर आपे चेला, मिटे भेव दरस दुआर। अचरज खेल हरि जी खेला, पारब्रह्म रूप न्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे इक्क वर, सोहँ शब्द प्रभ सच्ची दस्तार। सच शब्द दस्तार हरि पहनांयदा। कलिजुग अन्तिम कर प्यार, सतिजुग साची धार रखांयदा। आपे नारी आपे नार, करनहार दातार आपे आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, रूप अगम्मा भेव न्यार, हड्ड मास नाड़ी चम्मा दिस ना आंयदा। आपे होए पवण स्वासी दमा, आपे शब्द सरूपी जम्मा, जोती धारा आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम भेख कर आपणा भाणा हरि जरवाणा आपणे हत्थ रखांयदा। भाणा हत्थ समरथ करतार। शब्द चलाए साचा रथ, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सृष्ट सबाई रिहा मथ, शब्द खण्डा हत्थ दो धार। राज राजानां शाह सुल्तानां सीआं दिसे साढे तिन्न हत्थ, जूठा झूठा पसर पसार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आदि अन्त जुगा जुगन्त सदा पाउँदा रहे सार। आपे पाए सार सुरत संभालीआ। पूर्ब कर्मा रिहा विचार, जोत निरँजण इक्क अकालीआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, ना कोई मिल्या शाह दलालीआ। काली घटा रैण अंध्यार, छुपे चन्द सति सतिवादीआ। नाता तुटा संग मुहम्मद चार यार, जगत दुआरा होए खालीआ। पंच पंचाइना भेव अपार, चले जगत अवल्लड़ी चालीआ। गुरमुख साचे दरस दिखाए साचे नैणा, दोहां हत्थां दिसे खालीआ। सोहँ शब्द साचा गहिणा, धुर दरगाही साचा वालीआ। आप चुकाए लहिणा देणा, गुर गोबिन्दा लेख लिखाईआ। जगत जगदीसा एका रहणा, सृष्ट सबाई साचा पालीआ। मनमुक्खां झूठा देण देणा, फल दिसे ना किसे डालीआ। हरिजन साचे लाहा लैणा, प्रभ तोड़े जगत जंजालीआ। गुर संगत साची मिल मिल बहिणा, मिले मेल पुरख बनवालीआ। प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सृष्ट सबाई हाली पालीआ। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, आपे जाणया।

आपे मथन रिहा मथ, आपे करे सर्ब पछाणया। आपे देवे मन मति बुध साची वथ, आपे बुध भवानया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द चलाए साचा रथ, साची बिध करे भगवानया। साची बिध हरि बणाईआ। आपे करे कारज सिद्ध, गुरमुख साचे लए जगाईआ। नाम निधाना नौ निध, सरगुण सुरती इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा अंगण एका रंगण दे मति रिहा समझाईआ।

★ ३० हाढ़ २०१२ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ★

राग नाद अभेद शब्द जणाईआ। शब्द जणाई चारे वेद, भेव ना राईआ। पुराण अठारां इक्क क्तेब, रसना जिह्वा रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अलख निरँजण दिस किसे ना आईआ। वेद पुराण रसना गाए। पारब्रह्म ब्रह्म पार दिस ना आए। वेख वखाणे मानस देही सच जन्म, लक्ख चुरासी विच समाए। जगत भुल्ला माया भरम, कर्म धर्म ना कोई वखाए। हउमे लग्गा रोग जगत वरम, साची सरन इक्क रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण घट घट वास, निज आत्म रिहा समाए। वेद पुराण क्तेब जगत वखाणया। अञ्जील कुरान हरि पछाण, हरि रंग साचा किसे ना माणया। सोनी मोनी कर ध्यान, जगत जगदीशर विच जहान, डुब्बे होए बेमुहाणया। भगत भगवन्ती सच निशान, जिया जन्ती इक्क निशान, पूरन जोत श्री भगवान, पुरख पुरखोतम ना कलि पछानया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण मात धर, वेखे खेल श्री भगवानया। अञ्जील कुरान कुरान अंजीलया। काजी शेख़ मुसायक मार ध्यान, एका रंग ना हरि पछाना, सूहा पीला लाल कालया। संग मुहम्मद चार यार, तिक्खी रेख वेख भेख, नेत्र वेख शब्द तंग कसा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण भेख धर, कलिजुग काला वेस दर दरवेश इक्क अकालया। कलिजुग काली रैण अञ्जील कुरानया। नाता तुट्टा भाई भैण, नर नरायण ना किसे पछाणया। सृष्टी डुब्बी डूंघे वहिण, ना कोई चुकाए लहिण देण, वेले अन्त सर्ब पछतानया। लाड़ी मौत खाए डैण, ना कोई दिसे साक सैण, रसना किसे ना सके कहिण, जगे जोत इक्क भगवानया। गुरमुख साचे संत सुहेले लाहा दर घर साचे लैण, पुरख अबिनाशी घट घट वासी प्रगट होए दरस दिखाए तीजे नैण, दर घर साचे करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण मात धर, बोध अगाध अगाध बोध, ना कोई रंग ना कोई रूप, आपे जाणे दाना बीनया। अञ्जील कुरान कुरान अंजीलया, साची सार ना पाईआ। संग मुहम्मद यार चार कर ख्वार, अन्तिम वार चारे कुन्टा दए दुहाईआ। प्रगट होया हरि निरँकार विच संसार शब्द फड़ हथ्थ कटार, तिक्खी रक्खे हरि दातार, मारी जाए वारो वार, जीआं जन्तां साधां संतां दिस ना आईआ। लक्ख चुरासी करे पार, धर्म राए दर

खोले बार, लाड़ी मौत करे शृंगार, बेमुखां लए अन्त प्रनाईआ। पुरख अबिनाशी गुरमुख साचा संत अपार। कँवल चरन चरन कँवल सरन चरन देवे कर प्यार, बख्शे हरि सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण भेख कर, कलिजुग अन्तिम वेख रेख, रचना रिहा रचाईआ। खाणी बाणी हरि विचारया। जगत राणी शब्द अधारया। भगत जनां दर भरे पाणी, पारब्रह्म पसर पसारया। एका पद नर निरबाणी, कँवल धवल अपर अपारया। चारों कुन्ट ब्रह्म ज्ञानी, शब्द ज्ञान ना किसे विचारया। तख्त सुल्ताना राज राजाना वाली दो जहानी, आपे आप भुला रिहा। शब्द मारे तीर निशानी, माया ममता रोग वधा रिहा। बेमुख जीवां मात आए अन्तिम हानी, कलिजुग काल अन्धेरा छा रिहा। किसे हथ्थ ना आए चारों कुन्ट पाणी, पुरख अबिनाशी खेल वरता रिहा। अन्तिम छडणे पैणे हाणीआं हाणी, सदी बीसवीं भरम भउ गंवा रिहा। माया जाल लोकमात माया राणी, लक्ख चुरासी आप पसारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका राह जगत वखा रिहा। एका राह हरि निरँकार, सच्ची सरकारया। चार वरनां कर प्यार, विच संसार साची धारा आप बन्ना रिहा। ऊँचां नीचां भेव निवार, राज राजानां कर भिखार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिला रिहा। शब्द डंक अपर अपार, राउ रंक इक्क द्वार, दर दुआरा इक्क वखा रिहा। मंगदे रहण वारो वार, वेहन्दा रहे कर विचार, आपणे भाणे आप समा रिहा। आपे पुरख आपे नार, आपे भगत भगवन्ता साचा यार, मीत मुरार आप अख्वा रिहा। आपे संत कन्त सहिज सुख धार, साची बणत आप बणा रिहा। जीव जन्तां नाम अधार, इक्क इकन्ता नाम सहारया। सोहँ शब्द अपार, प्रगट होए विच संसार, सतिजुग साची धार आप बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जामा रामा आपणा आप वटा रिहा। सोहँ डंक अपर अपारया। पुरख अबिनाशी आपणा आप उपा रिहा। शब्द सिँघासण डेरा लाया। बाल जवानी अलड़्ह वरेस, शब्द खण्डा हथ्थ उठा ल्या। आदि अन्त सद हमेश, कलिजुग अन्तिम तेरा कन्ढा, सोहँ लाया साचा डण्डा, नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंडा, राज राजानां तोड़ घमंडा, चण्ड प्रचण्डा इक्क चला रिहा। वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्डा, कलिजुग झूठा भेख पंखडा, मानस देही आत्म रंडा, कन्त सुहाग वड वडभाग पुरख अबिनाशी किसे ना पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, भगत जनां तन पाए ठंडा, दरस अमोघा हरि संजोगा हरि आपणा दरस दिखा ल्या। सम्बल देस सुरत संभाली, जोत जगाईआ। आपे शाह आपे कंगाली, दिस किसे ना आईआ। शब्द सरूपी वज्जे ताल, रागां नादां रिहा भुलाईआ। जोत सरूपी गगन थाल, दीपक जोती इक्क जगाईआ। जगत अवल्लड़ी चले चाल, भगत जनां करे प्रितपाल, देवे नाम सच्चा धन माल, आदि अन्त निखुट्ट ना जाईआ। आपे रिहा सुरत संभाल, फल लगाए काया डाल्ह, धुर दरगाही सच दलाल,

दरगाह साची मेल मिलाईआ। अन्तकाल ना खाए जम काल, तोड़े हरि हरि जगत जंजाल, दिवस रैण चले नाल नाल, मधुर बैणा सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस दर दरवेस इक्क इकेला सज्जण सुहेला साचे धाम रिहा सुहाईआ। साचा धाम अवल्लड़ा, इक्क न्यारा है। पुरख अबिनाशी एका मलड़ा, ना कोई जाणे पार किनारा है। भगत जनां दर दुआरे अगे खलड़ा, बणया रहे भेख भिखारा है। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, तिन्नां लोआं वसे बाहरा है। एका देवे नाम दंमड़ा, सोहँ साचा शब्द हुलारा है। लेखे लाए काया माटी चम्मड़ा, दसम दुआरी पड़दा पाड़ा है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, देवे खोल्ह शब्द बोल बन्द किवाड़ा ए। खोल्हे बन्द किवाड़ शब्द धुन नादया। माया ममता पड़दे पाए, जाप जपाए बोध अगाध्या। परे हटाए पंचम धाड़, नर नरायण रसन जिस अराध्या। दर घर साचे देवे वाड़, सुरती शब्द शब्द मन बाध्या। आपे होए पिछा अगाड़, गुर पूरा दाता सूरा जिस जन लोकमात अराध्या। जोत जगाए बहत्तर नाड़, शब्द तीर काड़ काड़, आपे घड़े साचे घाड़, दरस दिखाए खण्ड ब्रह्मण्ड हरि ब्रहमादया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे वेस जुग जुगादया। जुगा जुगन्तर भेख निरँकार, सृष्ट सबाई रिहा वेख, आदि अन्त एकँकारया। आपे लेखा लिखे लिखाए रेख, सृष्ट सबाई मेट मिटा रिहा। जोती जामा धरया भेख, शब्द डंक इक्क रक्खा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख हरि गुरमुख साचे मात जगा रिहा। गुरमुख धन्न कमाई, धर्म पछाणया। पारब्रह्म सच सरनाई, दर घर साचे मिले माणया। होए सहाई सभनीं थाँईं, गा रहे वेद पुराणया। भगत सुहेला पकड़े बाहीं, आप चलाए आपणे भाणया। दरगाह साची ठंडी छाँईं, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत अन्त आपे करे मात पछाणया। धन्न कमाई गुरमुख वज्जी मन वधाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, शब्द जोती मेल मिलाईआ। जगत तृष्ना मिटी तृख, भुक्ख रोग सोग गंवाईआ। साचा लेखा रिहा लिख, धुर संजोग मिलाईआ। दुई दुवैती लाहे विक्ख, रंगण रंग नाम चढ़ाईआ। किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भवाईआ। अन्दरे अन्दर पावे भिक्ख, निशअक्खर वक्खर जो जन रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां राग जगत त्याग एका एक सुणाईआ। धन्न कमाई गुरसिख जाणे गुर मन्त्र। मिले वड्याई विच मात, होए सहाई आदि अन्तर। साचे दर वज्जे वधाई, तन बुझाए पंचां बसंतर। पुरख अबिनाशी सच सरनाई, पार कराए गगन गगनंतर। दरगाह साची साचे थाँईं, आप बणाए साची बणतर। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरिजन जपाए एका मन्त्र। एका मन्त्र ओअँ आदि। सोहँ शब्द सच विस्माद। पारब्रह्म बोध अगाध।

साचा धर्म सुण शब्द धुन नाद। लेखे लग्गे मानस जन्म, मिले मेल माधव माध। पूरन होए मात कर्म, रसन रसायण ल्या अराध। लेखे लाए माटी चरम, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मेट मिटाए वाद विवाद। धन्न कमाई गुरसिख गुर चरन प्यासा। एका देवे हरि सरनाई, आपे वेखे नौ दर तमाशा। दस्म दुआरी बूझ बुझाई, काया मन्दिर पृथ्वी अकाशा। बजर कपाटी खोल्ह वखाई, सच सिँघासण हरि बिराजे। सच मण्डल दी साचा रासा, साचा शब्द सीस ताजे। निज्ज घर साचे रक्खे वासा, साचा शब्द अनाहद वाजे। पवण सरूपी मारे अवाजे, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भगत जनां कलि रखे लाजे। धन्न कमाई गुरसिख दर दुआरा एका बूज्जया। धन्न कमाई गुरसिख, पुरख पुरखोतम एका सूज्जया। धन्न कमाई गुरसिख, पंचम तत्ती जाए जूज्झया। भउ चुकाए एका दूज्जया। धन्न कमाई गुरसिख, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भेव खुल्हाए अन्दर मन्दिर गूज्झया। अन्दर मन्दिर भेव न्यारा, जोत अकालीआ। साचा मन्दिर गुरुदुआरा, दीपक जोती बेमिसालीआ। रूप अगम्मा अपर अपारा, आपे करे खेल निरालीआ। शब्द धुन अनाहद धारा, आप वजाए ताल खड़तालीआ। अमृत बरखे ठंडी धारा, कँवल नाभी मुख चवालीआ। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सारा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मेट मिटाए अन्दरे अन्दर घटा कालीआ। साचे मन्दिर घटा काली, रैण अन्धेरया। दीपक जोती किसे ना बाली, ना कोई जाणे सञ्झ सवेरया। ना कोई बणया सच्चा हाली, साचा बीज किसे ना केरया। भगत जना प्रभ साचा पाली, होए सहाई अन्तिम वेलया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चारे कुन्टां वेखे खाली, फल दिसे ना किसे डाल्ही, शब्द सरूपी पाए घेरया। शब्द सरूपी पाए घेरा, हरि बंधन बंध बंधाया ए। सृष्ट सबाई आप भुलाए कर कर हेरा फेरा, धर्म राए रिहा समझाया ए। लक्ख चुरासी होए प्रभासे डेरा, कलिजुग वेला अन्तिम आया ए। ना कोई दिसे गुर चेरा, पंजां झेड़ा एका लाया ए। आपे करे हक्क निबेड़ा, ना कोई नगर ना कोई खेड़ा, भरमां डेरा आपे ढाहया ए। भगत जनां प्रभ बन्न्हे बेड़ा, इक्क वखाए खुल्ल्हा वेहड़ा, दरगाह साची धाम सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, रूप रंग आपणा आप वटाया ए। करे निबेड़ा हक्क नूर जलालया। कलिजुग फल गया पक्क, आपे झाड़े उच्चे डालया। चार यारां संग मुहम्मद गया थक्क, सदी चौधवीं होए बेहालया। कलिजुग काला कढ्ढे हक्क, पिच्छे लग्गे साचा पालीआ। शब्द पाए नकेल नक्क, ना कोई वेखे शाह जलालीआ। लाड़ी मौत राह रही तक्क, केहड़ी कूट होवे खालीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे वेखे शाह कंगालीआ। शाह कंगाल सुल्तान वड जरवाणया। कलिजुग करे अन्त बेहाल, भुन्ने जिउँ भठयाले दाणया। पल्ले किसे ना दिसे धन माल, जूठे झूठे राजे

राणया। वेले अन्तिम खाए काल, जीव जन्त साध संत बेमुहाणया। भगत जनां करे प्रितपाल, सुरती शब्द रिहा संभाल, देवे नाम सच्चा पीणा खाणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जन दर दुआरे एका माणया। दर दुआरे एका माण, शब्द बिबाणया। चरन प्रीती इक्क ध्यान, साचा नाम जगत उडानया। साचा वज्जे तीर निशान, तुट्टे माण भगत अभिमानया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, सति पुरख निरँजण जिस पछाणया। दर दुआरे होए परवान, रसना गाए गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचा वेख नर, दर घर घर दर इक्क दुआरा हरि निरँकारा विच संसारा करे दर परवानया। उठ जीव जाग, तन मन्दिर लग्गे भाग, कलिजुग अन्तिम वेलया। उठ जीव जाग, सुण शब्द साचा राग, हउमे रोग जाए भाग, गुर संगत मेल साचा मेलया। उठ जीव जाग, धो कलिजुग काला दाग़, मिले मेल कन्त सुहाग, सच दुआरा एका खोल्ल्या। उठ जीव जाग हँस बण काग, पुरख अबिनाशी पकड़े वाग, सुणाए राग सच्चा ढोल्लया। उठ जीव जाग, सरन सरनाई साची लाग, तन बन्न्णा शब्द ताग मिले नाम भगत विचोल्लया। उठ जीव जाग, होण मात वड वडभाग, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। उठ जीव जाग, मस्त दीवानया। कुल आपणी ला भाग, जग दीवानया। माया डस्सणी झूठा नाग, भरमे भुल्ला लोभ लुभानया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, गुर संगत साचा मेल मिलानया। गुर संगत साचा मेल, चरन द्वारया। शब्द चढ़ाए साचा तेल, बन्न्हे गाना नाम अपारया। कटे धर्म राए दी जेल्ह, झुल्ले नाम निशाना विच संसारया। आपे गुर आपे चेल, जोती पवणी शब्द उडारया। सदा रहे रंग नवेल, करे खेल दूसर वारया। दरगाह साची धाम अकेल, जोत निरँजण पसर पसारया। लक्ख चुरासी मात उपाई एका वेल, दित्ती दात वड करामात गिरवर हरि गिरधारया। उत्तम रक्खी एका ज़ात, मिले मेल कमलापात, वणज शब्द साची दात वड बलकारया। धुर दरगाही साचा नाउँ जगत मलाही पुच्छे वात, बेपरवाही आपे देवे बूंद स्वांत, काया करे ठंडी ठारया। मेट मिटाए अन्धेरी रात, ना कोई पुच्छे ज़ात पात, चार वरनां एका राह वखा रिहा। शब्द चलाए साची गाथ, सोहँ शब्द साचा राथ, प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, अकथनी अकथ कथा सुणा रिहा। सगल वसूरे जायण लाथ, चरन धूढ़े साचे माथ, दीपक जोती इक्क जगा रिहा। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हाथ, राज राजानां शाह सुल्तानां आख सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणा भाणा आपे आप वरता रिहा। साचा भाणा हरि बलवान, आपणे हथ्थ रखाया ए। सोहँ फड़या शब्द निशान, नौवां खण्डां वेख वखाया ए। आपे पाए सभ दी वंडा, कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, पार किनारा किसे दिस ना आया ए। लक्ख चुरासी आत्म रंडा, आत्म

भरया इक्क घमंडा, सिर उठाई पापां पंडा, ना भार जाए उठाया ए। आपे करे खण्ड खण्डा, इक्क चलाए चण्ड प्रचण्डा, मेट मिटाए भेख पखण्डा, जोती जामा हरि जी पाया ए। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, माझे देस वेस हरि, सम्बल देस भेस वटाया ए। सम्बल रुत सुहाई शब्द जरवाणया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, आप उठाए राजे राणया। गुरमुख उपजाए साचे सुत, चढ़ाए शब्द सच बिबाणया। बेमुख जीवां खाली दिसण बुत्त, भुले नर हरि श्री भगवानया। चारों कुन्ट पया मुख थुक्क, वेले अन्त सर्ब पछतानया। कलिजुग दाणा पाणी गया मुक्क, दर घर साचे ना होए परवानया। वेला अन्तिम आया ढुक्क, लथ्थे ताज राजे राणया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस जोत धर, प्रगट होए विच मैदानया। प्रगट होए वाली दो जहान, शब्द नगारया। शब्द फड़े तीर कमान, खिच्ची जाए वारो वारया। आप उठाए राज राजान, जोत सरूपी नौजवान, चिट्टे अस्व कसे तंग, धरत मात रंगे रंग, करे खेल अपर अपारया। चारों कुन्ट होई नंग, कोई ना दीसे अंग संग, इक्क मुहम्मद मंगी मंग, सदी चौधवीं भेद चुका रिहा। गुर गोबिन्दा अंग संग, नाम वजाए इक्क मृदंग, जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, साचा संग निभा रिहा। सम्बल देस धाम सुहाया ए। काया नगरी जोती जामा पाया ए। गुर गोबिन्दा वाली दो जहानां, शाह सुल्तानां वेस अवेसा कर कर आया ए। आप मिटाए सगली चिन्दा, वाली हिन्दा रिहा उठाया ए। आत्म तोड़े वज्जा जिंदा, तिक्खा तीर हथ्थ उठाया ए। गुरमुख उपजाए साची बिन्दा, दरस अमोघा इक्क कराया ए। लक्ख चुरासी करनी निन्दा, भेव किसे ना पाया ए। वड दाता गुणी गहिंदा, सर्ब जीआं आप बख्शिंदा, आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता, सर्ब जीआं एका रघुराया ए। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल देस वेस कर, शब्द नगारा इक्क रखाया ए। शब्द नगारा हरि वजांयदा। चरन टिकाया ब्यास पार किनारा, देस मालवा आप सुहांयदा। वेखण जाए वारो वारा, राणा संगरूर हरि जगांयदा। चारों कुन्टां आउँणी हारा, ना कोई दीसे मीत मुरारा, ना कोई नारी ना कोई नारा, साचा संग ना कोई निभांयदा। प्रगट होए निहकलंक बली बलकारा, तिक्खी रक्खे हरि जी धारा, आपे वेखे जमन किनारा, वाली हिन्द आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, साची जोत जगांयदा। जगी जोत निरँकार, भगत रुशनाईआ। घर घर होए विचार, कोई ना पावे सार, ज्ञानी ध्यानी पढ़ पढ़ थक्के गए हार, साचा लेख ना कोई लिखाईआ। पवण घोड़ा शब्द अस्वार, जोती जामा भेख न्यार, लोआं पुरीआं वसे बाहर, नौ दुआरे गुप्त जाहर, दसवें सदा रहे समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करया वेस साचे देस नर नरेश आपणा आप सुहाईआ। आप सुहाया देस वणज वणजारया। वेख वखाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश सच

दुआरे बंक अंक इक्क वखा रिहा। जोती जामा हरि दस्मेश, नेत्र नैण लोचन लैणा पेख, साची रचना हरि रचा रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म प्रवेश, रूप अगम्मा अगम्म नरेश, सच सिँघासण डेरा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणा भेव आपे आप छुपा रिहा। कवण फकीर शाह हकीर कवण वजा तन जंजीर। कवण दुआरे रिहा भज्जा, अमृत ना मिले साचा सीर। काया पड़दा ना किसे कज्जा, दरस ना पाया गहर गम्भीर। भाण्डा भरम जगत ना भज्जा, होया शांत ना तन सरीर। सच सिँघासण बैठ ना सजा, मिल्या मेल ना आत्म सेजा साचे पीर। दूई द्वैती जिंदा वज्जा, हउमे लग्गी काया पीड़। अमृत धार ना तन मन सिंचा, वेले अन्त ना कटे कोई भीड़। तृष्ना अग्नी जगत दझा, आपे वेखे हस्त कीड़। नेत्र किसे ना खुल्ह तीजा, ना कोई चढ़या चोटी इक्क अख़ीर। गुरमुख विरले तन मन प्रभ शब्द विधा, वेले अन्तिम बन्न्हे बीड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क वर, तन शब्द साचे चीर। कवण फकीर शाह मौलाणा। कवण वेखे साचा नीर, कवण जोती मैहन्दी हथ्थीं बन्न्हे गाना। कवण रसना खिच्चे तीर, मारे पंचां इक्क निशाना। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, जोत सरूपी डगमगाना। जगत फकीर अल्ला नूर। तन वेखे चीर, हरि दिसे दूर। कवण घर जोत उजाला, चौदां हट्टां कोहतूर। चौदीं तबकीं होए उजाला, आप कराए वड वड सूर। भगत जनां सद होए रखवाला, आसा मनसा हरि जी पूर। मन काजी तन शेख़ मौलाना। कवण दुआरे बणया हाजी, मक्का काअबा किस टिकाना। शब्द घोड़ा केहड़ा मिल्या ताजी, दहि दिशा जिस भवाणा। पंजे चोर मगर लग्गे निमाजी, वेले अन्त खाक रुलाणा। गुरमुख विरले संत जन प्रभ साजन साची साजी, देवे दरस श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे जिया दाना। शेख़ पीर मुसायक नूर अलाहीआ। सृष्ट सबाई एका नायक, जगत मलाहीआ। नूर अलाही पाकी पाक, लक्ख चुरासी माटी ख़ाक अन्त खाक मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, सच फकीरी इक्क घर, दूजा ना कोए मंगे वर, मिले दर रघुपत रघुराईआ। शब्द सुरत जन मेल, भरम भउ कटयां। सुरत शब्द जन मेल, वखाए खेल चौदां हटयां। सुरत शब्द जन मेल, नुहाए अमृत आत्म साचे सर तीर्थ तट्टया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आपे आप लपेटे साचे पटयां। सुरत शब्द जन मेल, सच वखाणया। सुरत शब्द जन मेल, पवण बिबाण आप उडाणया। सुरत शब्द जन मेल, सुरती सुरत बंध बंधानया। सुरत शब्द जन मेल, भरमां कंध आत्म अन्ध दूर करानया। सुरत शब्द जन मेल, पंचां कटे फंद देवे दान साचा दानया। सुरत शब्द जन मेल, सोहँ बन्न्हे कच्चा तन्द, जोती मेल श्री भगवानया। सुरत शब्द जन मेल, जोत जगाए बन्द बन्द, बहत्तर नाड़ी इक्क टिकाणया। सुरत

शब्द जन मेल, गुरमुख चढ़या साचा चन्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। सुरत शब्द जन मेल, निज घर वास्सया। सुरत शब्द जन मेल, देवणहार इक्क भरवास्सया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे खेले खेल जगत तमाशया। अमृत धार धार हरि वहांयदा। किरपा कर कर विचार, हउमे रोग गंवांयदा। काया भाण्डा कर उज्यार, माटी चाटी पोच पुचांयदा। शब्द रक्खे अपर अपार, साची वस्त इक्क टिकांयदा। अमृत देवे कर प्यार, जो जन आए दर द्वार, काया रोग जगत सोग सर्ब मिटांयदा। एका बख्शे दरस अमोघ, शब्द चुगणी साची चोग, काग हँस बणांयदा। लेखा लेख धुर संजोग, रसन रस लैण भोग, कलिजुग विजोग मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाली भण्डारे रिहा भर, जो जन इक्क ध्यान लगांयदा। खाली भरे भण्डार, हरि भगवन्तया। खोल्हे सच द्वार, आदिन अन्तया। दुखड़े रोग रिहा निवार, काया करे ठंडी ठार, जन करे दोए जोड़ बेनन्तीआ। मिल्या मेल सच भतार, वेखे बैठ सच्ची सरकार, चार वरनां इक्क सरदार, आपे बणाए साची बणतया। काग बणाए हँस उडार, धोए दाग अमृत धार, ना कोई जाणे नर नार, मिले वड्याई जीव जन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, साचा धाम आप सुहन्तया। साचा धाम सुहाए धर्म निशानया। जोती राम जगाए श्री भगवानया। पूरन काम कराए देवे दानया। सुक्का हरया करे चाम, बख्शे जिया दानया। गुरमुखां मिटे आत्म रैण अन्धेरी शाम, दीपक जोती इक्क जगानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम निशानया। अमृत मुख चुआए, रोग मिटांयदा। एका सुख उपजाए, सोग गंवांयदा। होए सहाई सभनीं थाँईं, दिवस रैण सेव कमांयदा। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, दूर नेड़े आप समांयदा। आपे पिता आपे माई, बालक सीर आप पिआंयदा। आपे हँस बणाए काए, माणक मोती चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया रोग चिन्ता सोग रसना रस भोग आपे आप मिटांयदा।

★ ३० हाढ़ २०१२ बिक्रमी संत ईश्र सिँघ कलेरां वालयां नूं शब्द भेज्जया गया ते शब्द विच उत्तर दी मंग कीती ★

गुर गद्दी गुर गद्दीदार। तन मन काया माया बद्धी, होणा ख़बरदार। कलिजुग वहिणी एका नदी, बीतदी जाए चौधवीं सदी, ना कोई मिले मीत मुरार। आपे वेखे सुदी वदी, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा विचार। जोती जोत सरूप हरि, सति सुहेले आया रक्खण, गुरमुख वरोले छाछ मक्खण, अन्तिम पाए साची सार। नंद चन्द सुत दुलार। अन्ध बंध कंध

विच संसार। माया भुल्ले जगत धन्द, नाम निरँजण इक्क वपार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, रक्खण आया संत असंत जीव जन्त मूर्ख मुग्ध गंवार। सिँघ ईशर ईशर रक्ख वास। जगत जगदीशर किस होवे पास। तपी तपीशर क्यों होए उदास। रिखी रिखीशर कलि बे बेआस। पंडत पांधे मुनी मुनीशर, मनमुख तन रही प्यास। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे वेख वखाणे अप तेज़ वाए पृथ्वी अकास। साचे संत सुत दुलार। कवण दुआरे वसे कन्त, नेत्र खोलृ वेख बन्द किवाड़। झूठी वड्याई जीव जन्त, माया अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़। ना कोई बणाए अन्तिम बणत, बहत्तर नाड़ी रिहा साड़। झूठी माटी खेल बाजीगर नाटी होए भस्मंत, शब्द घोड़े ना कोई देवे चाढ़, एका एक जन भगत टेक आदि अन्त, दर घर साचे देवे वाड़। बारां तीस रुत्त बसंत, मिले मेल साचे कन्त, जोती जोत सरूप हरि, इक्क दिसाए साचा लाड़। साचा मन्दिर कवण श्रृंगार। शब्द अखाड़ा विच संसार। पंचम धाड़ा ख़बरदार। आपे वेखे घाड़न घाड़ा, दस्म दुआरा चार दिवार। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण दुआरे वसे लाड़ी लाड़। तन मन्दिर धाम अपारा है। एका पुरख एका नारी, एका सेजा सुत्ता पैर पसारा है। आप वेखे वारो वारी, आपे वसे बाहरा है। सिँघ ईशर फोल तन क्यारी, फल लग्गा केहड़े डालृ है। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे साचा घर, कवण शाह कवण कंगाला है। कवण शाह कवण कंगाल। कवण मलाह जगत दलाल। कवण राह प्रभ दए वखाल। कवण थाँ नर हरि हरि नर रिहा सुरत संभाल। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे साचा घर, कवण घोड़ा कवण जोड़ा, चुक्की रक्खे चौथा पौड़ा, चौथे जुग चले अवल्लड़ी चाल। चौथे जुग चौथा पौड़ा। चिट्टा अस्व चुक्के पौड़ा। शाह अस्वारा हरि निरँकारा। लोकमात वेखण आया मिट्ठा कौड़ा। शब्द अपारा खण्डा दो धारा, अस्त्र शस्त्र बस्त्र कर प्यार, वेख वखाणे एका थाँ लम्बा चौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, सम्बल देस केहड़ा वेस, प्रगट होए किस घर ब्रह्मण गौड़ा। उत्तर देणा कर विचार। लेखा लेख आए सच दरबार। जूठा झूठा भेख दए निवार। खाली दिसे माया ठूठा, शब्द भरया रहे भण्डार। दस्म दुआरे रंग अनूठा, अमृत बरखे निझर धार। कँवल नाभी होए पुट्ठा, झिरना झिरे वारो वार। पुरख अबिनाशी साचा तुट्ठा, करे कराए ख़बरदार। लुकया रहण ना देवे कोई गुट्ठा, शब्द हलूणा रिहा मार। आप कराए एका मुट्ठा, चरन टिकाया ब्यास पार किनार। संत सुहेला कोई रहण ना देवे रुट्ठा, जुगां जुगां दा विछड़या यार। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण गुर सच्ची सरकार। उत्तर देणा सुरत सलाह। अकाल मूर्त विच मलाह। शब्द तूरत दस्से राह। जोती नूरत वेखे थाँ। माया राणी रही झूरत, कलिजुग अन्त ना पकड़े कोई बांह। बेमुखां दर दिसे दूरत, गुरमुखां जपाए आपणा

नाँ। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण पिता कवण माँ। कवण मात पित पूत जन जाया। कवण धागा साचा सूत, साचा तन किस उँणाया। कवण मन्दिर अन्ध कूप, कवण जोती हवन कराया। कवण नूर सति सरूप, पवण वाजा किस वजाया। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण सिँघासण डेरा लाया। कवण सिँघासण हरि निरँकार। जोत सरूपी आप बिराजे, शब्द सरूपी पहरेदार। पवण सरूपी मारे अवाजे, लोकमात रहणा ख़बरदार। आप आपणा साजन साजे, जोती जामा भेख न्यार। तख़्तों लाहे राजन राजे, शाह सुल्तानां करे भिखार। जन भगतां देवे एका नाम साचा दाजे। आत्म झोली भरे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण दुआरे जोत निरँकारे, लक्ख चुरासी पसर पसार। जोत निरँकारा इक्क अकारया। दूजा वसे इक्क महल्ले शब्द उडारया। तीजे पवण सुनेहा घल्ले, आवे जावे वारो वारया। चौथे घर मिले वरे, संत सुहेले बैठे रहण इकल्ले, आपे पावे सारया। पंचम शब्द चुकावे डरे, ना जन्मे ना मरे, आपे वेखे खोटे खरे, नाम घसवटी इक्क रखा रिहा। छेवें वेखे साचे घर, सति पुरख निरँजण जोती हरे, रूप अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा आप अख्वा रिहा। सत्तवें सतिवादी पारब्रह्म बोध अगाधी शब्द नादी, धुनी नाद राग धुन, सुन्न मुन आप खुल्ला रिहा। अठवें जोत निरँजण लाधी, अट्ठां तत्तां आपे बाधी, मिले मेल माधव माधी, भाण्डा भरम भउ भना रिहा। नावें दर गए हर, आपणी करनी रहे भर, सति वस्त गुरमुख विरले लाधी। दस्म दुआर सच सर, गुरमुख तरनी जाणा तर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं आपे बणया पान्धी। फूलन हार तन शृंगारे। रसना नाउँ हरि हरि उचारे। तिन्न सौ सट्ठ हाडी रोग निवारे। शब्द बणे साचा गाडी, कलिजुग बेड़ा पार उतारे। पवण सरूपी पाए वाडी, रोगां सोगां पावे सारे। आप लडाए साचे लाडी, इक्क बहाए दर दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस कर तरस, अगम्म अगम्म अगम्म अपारे। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, लेखा लिख्त आप लिखांयदा। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, साची पाए नाम भिख, रोगां सोगां वंड वंडांयदा। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, दर घर साचे कंड रंड ना कोए वढांयदा। आप चलाए काया रथ, सति सरूप आप समांयदा। जगत वसूरे जायण लथ, जो जन आए दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन आप आपणा दरस दिखांयदा। नौ दुआरे नौ खण्ड वंडे वड संसारया। आपे पाई मात वंड, वेख वखाणे वारो वारया। पहले दूजे आई कंड, तीजे सति पसर पसारया। चौथे पंजवें लाए डण्डा, छेवें पासा हारया। सतवें आत्म होई रंडा, अठवें डिगे मूंह दे भारया। नावे होए खण्ड खण्डा, ना दीसे कोई सहारया। दस्म दुआरा इक्क ब्रह्मण्डा, जोत सरूपी विच पसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारया।

नौ दुआरे दर दुआरे। जीव जन्त भुल्ले मात गंवारे। रसन हलकाए हाहाकार, माया ममता लोभ लुभारे। मदिरा मास इक्क अहार, पारब्रह्म ना पाए सारे। मोख मुक्त जगत भव सागर तार, निर्मल जोत कर अकारे। गुर मन्त्र अन्तर शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी एका देवे साची धारे। साची धार शब्द संगीत। विच संसार चरन कँवल हरि साची प्रीत। मानस देही सुफल जन्म, जगत रासी साची नीत। वेख वखाणे पूर्ब कर्म, हरिजन साचा साचा मीत। एका एक साचा ब्रह्म, एका गुर काया मन्दिर अन्दर गुरुदुआरा मसीत। जोती जोत सरूप हरि, सदा सुहेला राखो चीत। राखो चीत चित चितवन्तया। सोहँ गाओ सुहागी गीत, गुरदेव सेव चरन बेनन्तीआ। काया रहे सदा अतीत, चेतन्न चेत करे हित्त, नित नवित्त ना कोई वेखे वार थित्त, साची रुत्त सदा सुहंतीआ। मानस देही लैणी जित्त, लेखे लाउँणी बूंद रक्त, मिले मेल साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण विच जहान, शब्द आण इक्क रखन्तया। एका आण दर दरबारया। चार वरनां ब्रह्म ज्ञान, शब्द भण्डारया। अठारां बरनां मार ध्यान, इक्क करा रिहा। सोहँ शब्द जोग ध्यान, अठारां ध्याए गीता राग सुणा रिहा। चरन कँवल हरि भगवान, मान ताण आप बन्न्हा रिहा। एका झुल्ले शब्द निशान, सत्तां रंगां आप रंगा रिहा। लक्खण दीप वड बलवान, करोच पुश्कर नाल रला रिहा। जम्बु दीप कर पछाण, साचा धर्म आप धरा रिहा। सान श्वेत कर इशनान, सलमल साची बणत बणा रिहा। कुशा दिशा रिहा वेख, सत्तां दीपां लेख लिख, धर्म झण्डा इक्क बणा रिहा। धर्म झण्डा हरि बलकार। सोहँ डण्डा नाउँ निरँकार। झुलदा रहे विच नव खण्डा, ब्रह्मण्ड रहे पवण हुलार। आपे पाए हरि जी वंडां, शाह सुल्तानां करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द सिँघासण आप बिराजे, सोहँ रक्खे सीस ताजे, छत्र झुल्ले देस माझे, आपे सोहे सच दरबार। साचा झण्डा धर्म रंगाया। सत्तां रंगां वंडे वंड, लाल गुलाल इक्क चढ़ाया। आदि पुरख असुत्ते प्रकाश, लाल भूशन इक्क रखाया। आप आपणा दासन दासा, आप आपणे विच समाया। आप आपणी बणाए रासा, जोत सुनहिरी रंग उपाया। आपे वेखे सच तमाशा, ओंकारा देस सुहाया। तीजे घर पाए रासा, जोत सरूपी वेस वटाया। साचा वेस एका पासा, सुन्न अगम्मा सुन्न समाया। गगन पताली ना कोई दीसे थम्म्हा, सत्तां चौदां आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती साया हरि रघुराया, साचा शब्द इक्क उपाया। शब्द उपजी साची धार। सुन्न अगम्मों होई पार। चिट्टा रंग साचा संग हरि करतार। सच दुआरा आई लँघ, दस्म दुआरी पसर पसार। दस्म दुआरी मंगी मंग, चारों कुन्ट बन्द किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आपे बैठा साचा लाड़। दस्म दुआरी हरि टिकाणा। शब्द

जोत पवण मसाणा। वरन गोत ना कोई वखाणा। सति सरोवर कर इशनाना। हँस चोग चोग हँस शब्द मोती जोत जोती इक्क भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, दस्म दुआरी सच घर, आप आपणा बन्द रखाना। रक्खे बन्द बन्द किवाड़। शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व, परे हटाए पंचम धाड़। जोती खेल द्वार दस्म, हड्ड मास ना कोई नाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए अन्दर बाहर। आए बाहर तन अटारी। जोत निरँजण कर पसारी। जीव जन्त साध संत फिर फिर थक्के, वैद हकीमां हथ्थ ना आई सच्ची नाड़ी। गौंस मुहम्मद पीर फ़कीर औलीए भौंदे फिरे मदीन मक्के, ना कोई वखाए पिच्छा अगाड़ी। माया पड़दा ना कोई चुक्के, ना कोई चढ़ाए शब्द घोड़ी। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण वेस कर, आपे आप आए बौहड़ी। निरगुण रूप अगम्म किसे ना जाणया। सरगुण साचा पए जम्म, सतिगुर साचा मात वखाणया। निरगुण रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्म, नूरो नूर करे अकारया। सरगुण रूप मानस देही एका तम, पवण स्वासी लए दम, पंज तत्ती बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख कर, काया चोला माया उहला आपणा भेव छुपा रिहा। काया चोली हरि बणाईआ। शब्द डोली नाल रखाईआ। आपे बणया साची गोली, जोती नारी जिस प्रनाईआ। काया कप्पड़ पड़दे रिहा खोली, झूठा भार जो उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख धर, जन भगत उधारे वारो वारे थांउँ थाँईआ। सरगुण साची धार, शब्द अधारया। निरगुण रूप अपार सर्ब पसारया। जोती जामा भेख न्यार, दोहां दिसे सदा बाहरया। जन भगतां मीत मुरार, प्रगट होए दस्म दुआरया। खड़ा रहे पहरेदार, शब्द फड़ तेज कटारया। नेड़ ना आए ठग्ग चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, साधन संता पाए सार, साचा दर आप सुहा रिहा। बेमुख जीव माया पाए बेअन्ता, भरम भुलेखे जगत भुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सरगुण निरगुण भेख कर, गुरमुख सोया मात जगा रिहा। गुर पूरा जागे, गुरमुख जगांयदा। जगत गुर जागे, जगत तृष्ना माया अग्न जगत लग्न झूठा सगन मुख दुःख गवांयदा। लक्ख चुरासी भौंदी नग्न, गुरमुख साचे संत जन अट्ठे पहर रहण मग्न, दीपक साचा साचे घर, जोत नूरी एका जगण, साचा धाम सुहांयदा। आप सुहाए आपणे अंगण, दूजा दर ना जाए मंगण, शब्द पहनाए साचा कंगण, गीत राग इक्क सुणांयदा। शब्द घोड़े कसे तंगन, नाम वजाए इक्क मृदंगन, मानस देही ना होए भंगण, लक्ख चुरासी पार करांयदा। सदा सहाई अंग संगन, नाम चढ़ाए साची रंगन, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दरगाह साची साचे धाम आप बहांयदा। दरगाह साची धाम न्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म आप सुहाया। जोती नूर कर उज्यारा, चन्द सूरज कोई दिस ना आया। तारा मण्डल पार किनारा, शिव शंकर ना कोई

बणाया। ब्रह्मा वेद ना कोई सुणाया। राग छतीस ना कोई अधारा, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा चरन हेठ झसाया। देवी देवा करे निमस्कारा, जगत जगदीसा बीस इक्कीसा हरि सुहाया सच मुनारा, छतर झुलाए एका सीसा, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क हदीसा, वरन अवरनी जाति पाती भेव चुकाया। नर नरायण साची सरन, चार कुन्ट पाणी भरन, जोती जोत सरूप हरि, एका अक्खर जगत वक्खर सोहँ शब्द रिहा पढ़ाया। सोहँ अक्खर हरि पढ़ाए। सतिजुग साची दया कमाए। कलिजुग कूड़ा रहण ना पाए। मूर्ख मुग्ध मनमुख मूढ़ा, वेले अन्त सर्ब मिट जाए। लाड़ी मौत पाए चूड़ा, लक्ख चुरासी अन्त व्याहे। धरत मात चढ़ाए रंग गूढ़ा, लाल मैहन्दी हथ्थीं लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे वर चारों कुन्टां होए खालीआ। जगत अन्धेरा चुक्के डर, जूठे झूठे जाण मर, आपणी करनी लैण भर, ना कोई दीसे बाल जवानया। गुरमुख साचे संत जन साची सरन जायण पढ़, दर घर साचे जायण वड़, इक्क फड़ाए हरि जी लड़, अट्ठे पहर रक्खे मस्तानया। काया तोड़े किल्ह़ा हँकारी गढ़, दस्म दुआरी उप्पर चढ़, पंजां चोरां लए फड़, दर दुआरे देवे माणा, गुरमुख एका अक्खर जाए पढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, दरस दिखाए अग्गे खड़, नर हरि श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मेट मिटाए जगत जीव शैतानया। गुर संगत गुर धाम सुहाया। बण के आई साची मंगत, रंगत नाम इक्क चढ़ाया। आपे कटे भुक्ख नंगत, होए सहाई जिउँ नानक अंगद, धुर दरगाही लेखा लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दर दुआरा इक्क सुहाया। गुर संगत हरि शब्द भण्डार। मंगे मंग वारो वार। देवणहार दातार सच्ची सरकार। साची भिख्या प्रभ दर पाईए, नाउँ निरँजण रसना गाईए, आदि अन्त ना आए हार। अमरापद अमर हो जाईए, काया मन्दिर साचे अन्दर, पुरख अबिनाशी सद गीत सुहागी साचे गाईए। धुनी नाद वजाए नद, अनहद राग सदा रस पाईए। अमृत प्याए साची मध, दिवस रैण मस्ती मस्त हो जाईए। गुरमुख विरला प्रगट होए साची यद्द, कुल कुलवन्ता भाग लगाईए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणे रंग रंगाईए। साची कुल लग्गे भाग। गुरमुख उपजे जोत चिराग। चरन सरन सरन चरन गुर जाए लाग। खुल्ह़ा रहे हरन फरन, आप आपणी पकड़े वाग। जगत चुक्के लहिणा देणा, मिले मेल कन्त सुहाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धोवण आया काया दाग़। धोए काया दाग़, आए द्वारया। शब्द सुणाए साचा राग, भरम निवारया। दया कमाए पहली माघ, राग छत्तीसा दन्द बतीसा ना कोई सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप मिटाए तृष्ना आग, अमृत जाम इक्क पया रिहा। अमृत जाम प्याए ठंडी ठारया। कोई ना लाए दाम, हरि निरंकारया। काया माटी हरया चाम, देवे दरस अगम्म अपारया। एका

एक हरि हरि नाम, दूसर कर्म ना किसे काम, अन्तिम आए पासा हारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, बण बण आए दर भिखारया। बणया दर भिखार, खेल अपारया। मंगे मंग अपार, पहली वारया। झोली पाउँणा नाम प्यार, भरया रहे सदा भण्डारया। फल लग्गे काया डालृ, जोती नूर होए उज्यारया। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, दर घर आए पैज संवारया। शब्द सरूपी रिहा वाजां मार, दिस ना आए अन्दर बाहरया। आपे रिहा काज संवार, कदे गुप्त कदे जाहरया। साची कुल हरि विचार, कलिजुग अन्तिम कलिजुग अन्तिम पाए मुल्ल, दूजी वार डल्ला झल्ला भाग लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे इक्क इकल्ला बाग बागीचा जलां थलां पारजाति बूटा आप उगा रिहा। झल्ला डल्ला गया डुल्लृ। कलिजुग माया वड जरवाणी, जूठे धन्दे गया रुल्ल। गुर गोबिन्दे शब्द निशानी, अन्तिम पाए साचा मुल्ल। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी, विद्वानी गए माया भुल्ल। गुरमुख तेरी सच निशानी, भाग लगाया साची कुल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, पावण आया साचा मुल। साचा पाए मुल्ल साचे लालना। चरन प्रीती गई घुल, लाए फल साचे डालना। अमृत आत्म ना गई डुल्लृ, आप सुहाए साचे तालना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे कराए सर्ब प्रितपालना। करे प्रितपाल मार जिवालदा। आपे होए प्रितपाल सर्ब घट पालदा। जुगा जुगन्तर जगत दलाल, साची घालन घालदा। जन भगतां चले नाल नाल, सदा सदा सद सुरत संभालदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, देवे खजाना नाम धन धन नाम सच धन माल दा। कटे रोग संताप, जगत वयाप्या। भुल्लया आपणा आप, चढ़या तीनो ताप्या। हरि हरि जपणा साचा जाप, सोहँ शब्द वड परताप्या। होए सहाई माई बाप, कलि कलेश मिटाए दुःख स्यापया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे आप सर्ब प्रकाशया। बारां तीस कर विचार। हड्ड नाड़ नाड़ी रही पीस, ना पावे कोई सार। जोड़ जोड़ा रहे चीस, रोग रोगां एका धार। शब्द पढ़नी इक्क हदीस, इक्क लक्ख अस्सी हज़ार देवे मार। सोहँ शब्द धरना सीस, दर घर साचे देवे वाड़। देवे दरस हरि जगदीस, जगे जोत बहत्तर नाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्त मिटाए, सिरों उठाए सोग पहाड़। किशना सुखला पख वैरान। ना कोई सके मात रक्ख, काया अन्दर बीआबान। चारों कुन्टां लाउँदे भक्ख, ना कोई वेखे मार ध्यान। कुक्ख सुलक्खणी दिसे सक्ख, ना कोई गोद बाल निधान। पुरख अबिनाशी लए रक्ख, सोहँ गाउँणा इक्क निशान। पूत सपूता होए प्रतक्ख, जगत हित जड़ृ इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा देवे कर, रसना गाए नर हरि बली बलवान। मदिरा मास जगत तजाउँणा। गर्भवास हरि भाग लगाउँणा। आस पास हरि हरि वास,

शब्द रास इक्क वखाउँणा। अप तेज़ वाए पृथ्वी अकास, पंचां तत्तां मेट मिटाउँणा। लिखे लेख दस दस मास, नौ अठारां ध्यान लगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, निज घर आत्म रक्खे वास, पारब्रह्म ब्रह्म पार एका आस पूर कराउँणा। गुरमुख रंग अनूप, मन बैरागया। मंगे मंग सति सरूप, मन सोया मात जागया। मेल मिलावा शाहो भूप, शब्द सुणाए साचा रागया। होए रुशनाई अन्ध कूप, अन्ध अन्धेरा जाए भागया। ना कोई रेख ना कोई रूप, मिले मेल कन्त सुहागया। जोती जोत सरूप हरि, चरन प्रीती देवे वर, सरन सरनाई जो जन लागया। सोहँ शब्द अजप्पा जाप। हउमे मारे विच्चों ताप। कोटन कोट उतारे पाप। लोकमात वड प्रताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए आपे आप। दर दुआरे दर्शन पाउँणा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अबिनाशी घट घट वासी सोहँ साचा जाप जपाउँणा। मानस जन्म करे रहिरास, शब्द चलाए स्वास स्वास, पवण स्वासी होए वास, रसना रसक रसक गुण गाउँणा। किसे हथ्थ ना आए पंडत कांसी, जोती जोत सरूप हरि, अलख निरँजण अभेद अभेदा, चार वेदा अछल अछेदा आप आपणा दरस दिखाउँणा। आत्म ख़ुशी जगत जहान। साचा नाउँ सभनीं थांउँ, काया दिसे बन्द मकान। रसना गाओ अगम्म अथाहो, बेपरवाहो दर दुआरे देवे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मात कुक्ख साचा सुख, उलटे रुख़ जगत मनुख, एका बख़्शे चरन ध्यान। चरन ध्यान हरि मेहरवान दया दातारया। आत्म करे कारज सिद्ध, रसना नाउँ जिन हरि उचारया। शब्द तीर निराला आत्म रिहा विध, होए पार किनारया। प्रभ मिलण दी साची बिध, साचा नाउँ रसन उचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरया रक्खे सद भण्डारया। अड्ड त्रै लग्गा दुःख। त्रै अड्ड तृष्ना भुक्ख। दर दुआरा हरि निरँकारा साची सुखणा आत्म सुख। गुप्त जाहरा भर भण्डारा, जगत मिटे तृष्ना भुक्ख। पारब्रह्म कर विचारा, साचा लेखा देणा लिख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भिखारी पाए साची भिख। मन मति चित्त जग मीत। बहत्तर नाड़ी उब्बल रत, कवण रक्खे मात पति, काया करे ठंडी सीत। जगत नाता बज्झे नत, जगत बीज बीजे साचे वत, मानस देही जाए जीत। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, दर दुआरा रिहा भर, रसन गाउँणा सुख सहिज समाउँणा, सोहँ शब्द सुहागी गीत। हरि चरन अपार, गुरमुख जाणया। मिले वड्याई विच संसार, धर्म राज इक्क वखानया। आपे दिसे आर पार, आपे चले चलाए आपणे भाणया। शब्द लगाए इक्क उडार, दर दुआरा हरि निरँकारा एका एक वखानया। शब्द दस्से साची धारा, सोहँ करना वणज वपारा, मानस देही ना आए हारा, दर दुआरे होए प्रवानया। कूट कुटम्ब जगत पसारा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी एका एक मीत मुरारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देवे साचा वर, सच दुआरा जिस जन पछानया। नाम रसना मस्तक धूढ़। प्रभ अबिनाशी हिरदे वसणा, लक्ख चुरासी कटे जूड़। एका राह साचा दस्सणा, चतुर सुघड़ स्याण बणाए, जो जन दर आए मूढ़। तीर निराला एका कसणा, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। दरगाह साची बहि बहि हस्सणा, काया चढ़े रंग, प्रभ दर मंगी मंग, लाल गुलाली गूढ़ो गूढ़। जोती जोत सरूप हरि, सदा वसे अंग संग, एका बख्शे चरन धूढ़। काया हट्ट विकार जीव प्रानीआ। कूड़ कुड़यारा मारे मार, अट्ठे पहर पंच शैतानया। पूर्ब कर्मां आई हार, आदि आदि ना किसे पछाणया। कोए ना पाए मात सार, वैद हकीम मुख भवानया। पुरख अबिनाशी पावे सार, शब्द देवे इक्क अधार, रसना गाए गुण निरँकार, जूठा झूठा फंद कटानया। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सीस धड़, जोत सरूपी अन्दर वड़, कीड़ कीड़ां लए फड़, हड्ड मास नाड़ी जो छुपानया। शब्द रत्न अमोल, हरिजन मंगया। प्रभ तोले पूरे तोल, दर दुआरे मूल ना सन्गया। शब्द मृदंग अनाहद वज्जे साचा ढोल, जगत दुआरा जाए लँघया। हरिजन हरि हरि पड़दे देवे खोल्ह, अमृत आत्म साची धार वहाए गन्गया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, मानस देही ना होए भन्गया। नाम विचोला जगत बणाउँणा। सोहँ ढोला साचा गाउँणा। पुरख अबिनाशी वसे कोला, अन्दर बैठ दर्शन पाउँणा। भाग लगाए काया चोला, सद सुहेला रिहा मवला, गीत गोबिन्दा रसना गाउँणा। भगत वड्याई उप्पर धवला, खिड़या रहे फुल कँवला, निझर झिरना इक्क झिराउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, नेत्र अंजन नाम निरँजण दर दुआरे साचे पाउँणा। घर घर धूंए रहे धुख, मानस देही ना मिले सुख, आवण जावण पतित पावन ना हरि पछाना। मानस देही मिटया सुख, चले चलाए आपणा भाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, जगत मिटाए तृष्ना भुक्ख। मंगो मंग दर सवाली। सच दुआरा ना जाए खाली। लग्गे फल साची डाल्ही। काया खेत साचा हाली। चेतन चेत नेतन नेत, मित हित सर्ब प्रितपाली। करे खेल नित नवित्त, ना कोई वेखे वार थित्त, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ गरीब निमाणयां दर दुआरे देवे माणया, तोड़े जगत जंजाली। गुण अवगुण प्रभ दए कट्ट। दूई द्वैती मेटे फट्ट। शब्द पहनाए साचा पट। काया मन्दिर इक्क वखाए खुल्हा हट्ट। गुरमुख साचा रसना गाए, जोत जगाए घट घट। प्रगट होए दरस दिखाए, जोती जगे लट लट। बंक दुआरा इक्क सुहाए, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी काया साचे मट। चरन प्रीती हरि जोड़ जुड़ांयदा। आप चढ़ाए शब्द घोड़, डोर आपणे हथ्थ रखांयदा। दो जहानी रहे दौड़, शब्द सरूपी लाए पौड़, आपे वेखे मिट्ठा कौड़, दिस किसे ना आंयदा। वेले

अन्तिम जाए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जन, आपणी गोद उठांयदा। नौ दर फीके रस जान। पुरख अबिनाशी नीकन नीके, साचे घर कर पछाण। करे प्रितपाल सर्ब जन जीअ के, आप सुहाए साचा ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दात वड करामात, शब्द स्वास आस पास, पृथ्वी अकास काया डाल्ह। पवण स्वासी दए हुलारा। अन्दरे अन्दर थिड़कन भारा। पंजां तत्तां पाया रिड़कण, घेरी रक्खण वारो वारा। दस्म दुआरे पई झिलकन, काया लथ्था दुखड़ा भारा। अमृत मेघ हरि जी आया छिड़कण, काया सीतल ठंडी ठारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दया कमाए इक्क वखाए पारब्रह्म रूप अगम्म, प्रगट होए विच संसारा। अमृत आत्म एका घुट्ट। रोगां सोगां नाता जाए छुट्ट। दस गिरहा डूंघी जड़्ह रिहा पुट्ट। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे आत्म धार कर प्यार, भगत सुहेला साचा तुठ। सतिगुर पूरा जाणीए, सति पुरख मिलाए। पूरन ब्रह्म पछानीए, एका रंग समाए। गुणवन्त हरि गुण निधानीए, संग सहिज सुभाए। पाणी छाछ मूल ना छाणीए, कुछ हथ्थ ना आए। सोहँ पाउँणी तन मधाणीए, वस्त वख कर वखाए। रसना गाए एका बाणीए, बजर कपाटी पत्थर तुड़ाए। मिले मेल साचे हाणीए, जगत विछोड़ा दए चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े रिहा चढ़ाए। गुर मन्त्र गुर की आण। गुरमुख साचा सति पुरख निरँजण मात पछाण। नैण लोचन पाउँणा अंजन, साचा मजन गुर चरन ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, काया वसे सच घर, इक्क जपाए साचा नाम। जपाणा नाम रंग मजीठ। कलिजुग माया विच ना तपणा, दर दुआरा नेत्र डीठ। आप उतारे पिछला पपना, जूठा झूठा भन्ने कौड़ा रीठ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका टेक हरि हरि बसीठ।

★ ३१ हाढ़ २०१२ बिक्रमी बूड़ सिंघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ★

हरि शब्द जैकार, मात पसारया। इक्क इकल्ला रक्खे धार, सच महल्ला वेख विचारया। वसे जल थला, घड़ी घड़ी पल पला, आपे जाणे आर पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग काला वेस आप आपणा धारया। कलिजुग काली धार जगत चलाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, माया पड़दा इक्क रखाईआ। मानस देही दिवस रैणी पैणी मार, वेले अन्त ना कोई छुडाईआ। चारों कुन्ट आवे हार, राज राजानां शाह सुल्तानां कोई ना पावे सार, चारों कुन्ट देण दुहाईआ। सुरती शब्द तन कटार, हरि निरँकार आप उठाईआ। जन भगतां खिच्ची रक्खे दस्म दुआर,

२१६
०५

नौ दुआरे बन्द कराईआ। मनमुख चारों कुन्ट रहे झक्ख मार, साची वस्त हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरा इक्क खुल्हाईआ। सच दुआरा खोल्ह, जोत जगांयदा। शब्द सुहागी बोल, गीत सुणांयदा। अन्तिम तोले पूरे तोल, चीत प्रीत रखांयदा। राज राजानां पड़दे खोल्ह, मन्दिर मसीत ना अतीत कोई वखांयदा। भाग लग्गे काया चोल, शब्द सरूपी रिहा बोल, जोती जोत सरूप हरि, आपे घड़े आपे ढांहयदा। आपे ढाहे महल्ल उसार। लक्ख चुरासी गाहे, शब्द सुहागा मार। बेमुख भुल्ले झूठे राहे, अन्तिम आए पासा हार। प्रगट होए बेपरवाहे, पुरख सुजाना सर्ब प्यार। ना कुछ खाए ना कुछ पीए ना दीसे किसे थाएँ, आदि अन्त एका कार। ना कोई पिता ना कोई माए, भैण भ्राता नाता छुट्टा विच संसार। वेख वखाणे सभनीं थाएँ, पुरीआं लोआं इक्क उडार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, चरन टिकाया ब्यास किनार। ब्यास किनार मिली वड्याई। पुरख अबिनाशी दया कमाई। चरन छुहाया हरि रघुराई। दर्शन परसन नेत्र लोचन नैण, वेखण दर घर साचे आया, पूर्ब कर्मां कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख घर, गुर गोबिन्दा बणाया आप लिखार। गुर गोबिन्द बण लिखारी, लिखे लेख अपर अपारी। भेव ना पाए जीव संसारी। आप रुढ़ाए सरसा धारी। दो सद पचास आस, आपे वेखे परखे कर विचारी। प्रगट होए जोत बलोए, दिस ना आए दस दस मास, करे कराए ख़बरदारी। जून अजूनी होए नास, गुरमुख विरले इक्क प्यास, पारब्रह्म हरि जोत निरँकारी। प्रगट होए विच प्रभास, सम्बल देस रक्खे वास, उच्च महल्ल अटल अटारी। पंजां तत्तां करे नास, शब्द रक्खे सदा पास, खण्डा तेज़ दो दो धारी। उडदा रहे विच अकाश, पवण स्वासी जोत प्रकाश, शब्द सिँघासण कर निवास, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, काल कूट वेख हरि, आपे पाए साची रास। गुर गोबिन्दे कर्म कमाया। सर्ब बख्शिंदे सेवा लाया। गुणी गहिंदे राह वखाया। साची बिन्दे सुत उपजाया। आत्म मिटाए सगली चिन्दे, आत्म जिंदे दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस राह वखाया। गुर गोबिन्दा लेख लिखंता। जोती जामा भेख वटंता। रमईआ राम घनईआ शामा, शब्द दमामा इक्क वजन्ता। सद पूर करे कामा, दूर नूर एका तामा, करे खेल आदिन अन्ता। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, जोगी जुग जुगा जुगता। सम्बल देस सति पुरख निरँजण जागया। आपे नर आपे नरेस, हथ्थ आपणे पकड़े वागया। आपे रक्खे खुल्हड़े केस, छड्डे अन्तिम माझा देस, पार ब्यासों आए भागया। बाल अवस्था अल्हड़ वरेस, साल बाह्रवें रिहा वेख, कौण सोया कवण जागया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सदी चौधवीं वेख हरि, छेड़ छिड़ाए खेल रचाए

कोल वागया। कोल वागा दए सुहागा, एका राह वखाईआ। काल अकाला तुट्टे तागा, दीन दयाला एका जागा, नाता तुट्टा भैणां भाईआ। गुरमुख विरला मिले मेल कन्त सुहागा, शब्द उपजे साचा रागा, दस पंज पंज दस आपे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अन्दर मन्दिर सारे रिहा ढाहीआ। अन्दर मन्दिर मस्जिद मसीत शिवदवाले जाणे ढठ्ठ। सतिजुग चलाए अचरज रीत, काल कुड़यारा जाए नठ्ठ। पुरख अबिनाशी एका रहे चरन प्रीत, तुट्टे माण अट्ठ सट्ठ। गंगा गोदावरी होए सीत, ना दीसे कोई तट्ट। इक्क इकल्ला सच महल्ला बैठ परखे नीत, आप गिढ़ाए उलटी लट्ठ। शब्द गाउँणा सुहागी गीत, सोहँ अक्खर जगत वक्खर, चार वरनां करे इक्क इक्ठ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, मस्तूआणे आए नठ्ठ। मस्तूआणा धाम सुहाउँणा। शब्द तीर इक्क चलाउँणा। राजा राणा पकड़ उठाउँणा। गरीब निमाणा गले लगाउँणा। तख्त ताज इक्क वखाउँणा। शब्द बाज इक्क उडाउँणा। नाम तोड़ा सीस लगाउँणा। कल्गी जोड़ा जोत जगत वखाउँणा। नीला घोड़ा चिट्टा अस्व कलिजुग चौथा पौड़ा आप वखाउँणा धुर दरगाही आया दौड़ा, अछल अछल्ल कार कराउँणा। सम्बल देस कर कर वेस, गौड़ ब्रह्मण सुत उपजाउँणा। आपे धारे आपणा भेस, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउँणा। चरन लगाए नर नरेश, माण ताण सर्ब गंवाउँणा। शब्द वेखे धारी केस, साची रंगन रंग रंगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क खुल्हाउँणा। मस्तूआणा धाम सुहाए, छोहे चरन हरि रघुराईआ। जोती रामा राम जगाए, आप आपणी दया कमाईआ। चार वरनां एका थाँ बहाए, ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां माण गंवाए, तख्त ताज किसे दिस ना आईआ। राणा संगरूर रिहा जगाए, शब्द सरूपी अन्दरे अन्दर रिहा उठाईआ। जोती जामा रिहा घूर, काया मन्दिर भय भयानक रूप वटाईआ। माया तोड़े विकारी वज्जा जन्दर, शब्द हथौड़ा इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। मस्तूआणा धाम सुहाणा, देवे मात वड्याईआ। जोती जामा हरि जी पाए, राज राजानां रिहा सुणाईआ। आप आपणा काम करे, दस सतारां सति पुरख निरँजण साची जोत जगाईआ। आपे वेखे खेल अठारां, चारों कुन्ट आए हारा, पासा भारा ना कोई वखाईआ। ना कोई दीसे नारी नारा, ना कोई दीसे मीत मुरारा, ईसा मूसा वहिंदी धारा, संग मुहम्मद चार यारा, अञ्जील कुराना दए दुहाईआ। वेद पुराणा धक्का भारा, मदीना मक्का मूंह दे भारा। बूरा कक्का होए ख्वारा, एका राह हरि जी तक्का, चार वरनां इक्क दुआरा। साचा शब्द जणाए भाई भैण सका, गुरमुख मंगे बण भिखारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप सुहाए दर सच्चा दरबारा। दर सच्चा दरबार, आप सुहावणा।

चार वरनां कर प्यार, एका राह वखावणा। शब्द रक्खे तिक्खी धार, फड़े हथ्थ सच्ची सरकार, चारों कुन्ट आप झुला रिहा। रसना खिच्चे तीर कमान, मेट मिटाए बेईमान, कलिजुग अन्त जीव शैतान, जूठा झूठा फंद कटान, एका झुल्ले धर्म निशान। अक्खर वक्खर विच जहान। नौ दुआरे अन्दर वड़, काया मन्दिर गढ़ मकान। गुरमुख विरला जाए चढ़, पुरख अबिनाशी बांह लए फड़, आप बिठाए विच बिबाण। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस कर, उडे उडावे इक्क उडान। मस्तूआणा मस्त मस्तान हरि रखाया। प्रगट होए श्री भगवान, दिस किसे ना आया। जोती जगे इक्क महान, शब्द बिबाण नाल ल्याया। पुरख पुरखोतम कर पछाण, गुर मन्त्र गुरमुखां कन्न सुणाया। चतुर्भुज भेव खुल्ल्हाए आत्म गुझ, सच दुआरा जाए सुझ, जिस जन दया कमाया। लक्ख चुरासी रही भुज, माया अग्नी लम्बू लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां एका राह रिहा वखाया। एका राह धुर दरगाह जगत मलाहीआ। आप वखाए बेपरवाह, होए सहाई सभनी थाँ, घट घट रिहा समाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्याणयां पकड़े बांह, शब्द गोदी रिहा उठाईआ। शब्द सुहेला देवे ठंडी छाँ, साची शब्द चोग चुगाईआ। हँस बणाए कां, सति सरोवर इक्क इशनान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आप रिहा बणाईआ। आपणी बणत आप बणाए इक्क इकल्ला है। दूसर ना कोई पाए सार, ना कोई वेखे सच महल्ला है। पारब्रह्म खेल अपार, वसे निहचल धाम अटल्ला है। जोत निरँजण कर अकार, लोकमात पाए तरथल्ला है। शब्द फड़े हथ्थ कटार, सोहँ एका तिक्खा भल्ला है। लोआं पुरीआं मारी जाए वारो वार, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड सुट्टे डूंघी डल्ला है। लक्ख चुरासी वेखे दगे कर विचार, करे खेल घड़ी घड़ी पल पला है। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणी कार, सर्ब थाँई पसर पसारा है। करे कराए आप बणत बणांयदा। जुगो जुग लए अवतार, भेख वटांयदा। सतिजुग साचे बन्न्हे धार, पारब्रह्म रूप अपार, खेले खेल विच संसार, जोती जामा आपे पांयदा। कलिजुग काला कूड़ कुड़यार, जूठे झूठे जीव गंवार, दर दर घर घर रहे झक्ख मार, साचा वर कोई ना पांयदा। माया राणी पसर पसार, वध्या काम क्रोध हँकार, दस्म दुआरी चार दिवार, दर दुआरा ना कोई खुल्ल्हांयदा। संत सुहेले गए हार, दरस ना पायण सच दरबार, आपे गुर आपे चेले, घर घर बहि बहि करन विचार। कवण कराए घर साचे मेले, माया राणी तन श्रृंगार। भगत जनां हरि आपे मेले, कर्म जरम मात विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बन्न्हे आपणी धार। बन्न्हे आपणी धार बणत बणाईआ। गुरमुख जगाए साचे संत, सिर छत्र रिहा झुलाईआ। आपे

जाणे जीव जन्त, साचा हरि कन्त आप अख्वाईआ। शब्द जिह्वा मणीआ मंत, काया रुत्त इक्क बसंत नाम बहार इक्क वखाईआ। पंजां तत्तां कर भस्मंत, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस हरि, कूड़ कुड़यारा दए मिटाईआ। कलिजुग काला वेख रूप वटाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ धरया भेख, कोटन कोट चोटी रहे मुनाईआ। चारों कुन्ट ओलीए पीर शेख़, बगल कुरान रहे उठाईआ। वेद पुराणां रहे वेख, गीता ज्ञान गोझ ना पाईआ। खाणी बाणी साचा लेख, कलिजुग जीवां सुरत भवाईआ। प्रभ अबिनाशी साचे नेत्र रिहा वेख, गुरमुख विरले रिहा जगाईआ। तन मन लाए साची मेख, एका शब्द हथ्थ रखाईआ। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, जिस जन दया कमाईआ। दर दुआरे होए दरवेस, पहरेदार आप हो जाईआ। साचे तख्त नर नरेश, आत्म सेजा बैठा रहे बेपरवाहीआ। कलिजुग काला धरया भेस, मनमुख जीव सच दुआरा दिस ना आईआ। कलिजुग माया जाण ना देवे किसे पेश, ज्ञानी ध्यानी देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेस कर, आपणी बणत बणाईआ। बणत बणाई आप हरि वाली दो जहानया। आपणी करनी रिहा कर, ना करे कोई पछानया। इक्क खुल्हाए साचा सर, चार वरनां ब्रह्म ज्ञानया। हरिजन साची तरनी जाए तर, एका मंगे नाम वर, भरया रहे तन खजानया। ना जन्मे ना जाए मर, सरन सरनाई जाए पड़, इक्क वखाए साचा घर, नौ दुआरे बन्द करानया। दस्म दुआरा अपर अपार, अमृत धार साचा सर, गुरमुख जाए आपणे घर, आवण जावण फंद कटानया। लक्ख चुरासी चुक्के डर, धर्म राए ना लए फड़, चित्रगुप्त जाए दड़, मिले मेल पुरख अबिनाशी शब्द सरूपी बाहों लए फड़, नर हरि दुआरे अग्गे खड़, दरगाह साची देवे माणया। साचे पौड़े जाणा चढ़, सच दुआरे जाणा वड़, फड़या लड़ श्री भगवानया। ना कोई गोर ना कोई मढ़, एका अक्खर जाणा पढ़, पंजां तत्तां नाल लड़, अन्तिम अन्त ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती नूर जोत पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख धर, आपे होए ब्रह्म गयानया। आपे होए ब्रह्म ज्ञानी, आपे होए सन्यासीआ। आपे करे सर्ब ध्यान, आपे करे बन्द खुल्हासीआ। आपे चतुर्भुज भगवान, आपे रूप भेख वटासीआ। आपे शब्द तीर निशान, आपे पुरीआं लोआं वासीआ। आपे गोपी आपे काहन, आपे सीता आपे राम, आपे जोती आपे जाम, शब्द धार इक्क वखासीआ। आपे करे आपणा काम, पल्ले कोई ना रक्खे दाम, एका शब्द सच्चा नाम, चार वरन शब्द स्वासीआ। आपे राम रहीमा राम, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, पूरे कराए आप आपणी आस्सया। पूर कराए आपणी आस, आप सहारया। आपे होए आपणा दास, आपे करे खेल अपारया। आपे लक्ख चुरासी करे नास, आपे आप उपा रिहा। आपे लच्छमी करे चरन दास, आपे माया

पड़दा पा रिहा। आपे जोत पुरख अबिनाश, सरगुण रूप आप वटा रिहा। आपे शाह सच्चा शाबास, आपे रंकां विच समा रिहा। आपे वेखे पंडत काशी, वेद पुराणां ध्यान लगा रिहा। आपे करे बन्द खुलासी, गीता अर्जन ज्ञान दवा रिहा। आपे कटे दहि दस मासी, गर्भवास फंद कटा रिहा। आपे मेट मिटाए मदिरा मासी, कलिजुग वेला अन्त सुहा रिहा। धर्म राए दी पावे फाँसी, लाड़ी मौत होवे दासी, साचा हुक्म आप सुणा रिहा। जन भगतां मानस जन्म करे रहिरासी, शब्द स्वासी आप बचा रिहा। प्रगट होए घनकपुर वासी, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, अलख निरँजण अलख अलख एका नाउँ अलक्ख जगा रिहा। एका नाउँ अलख जगदीश। सृष्ट सबाई जाए पीस। मेट मिटाए कुरान अञ्जील हदीस। ना कोई गाए राग छतीस। जिह्वा कथे ना दन्द बतीस। बेमुख जीव अन्न दाणा पाणी मुक्के, करे खेल बीस इक्कीस। पाणी ना किसे हुक्के, राज राजानां खाली खीस। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत निरँजण, छत्र झुल्लाए पुरख अबिनाशी साचे सीस हरि शब्द अपार जगत मौलाणया। देंदा आए वारो वार, श्री भगवानया। आप आपणी कल धार, करे खेल विच जहानया। साचे शब्द कर शृंगार, झुलाए इक्क सति निशानया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, जोती जोत सरूप हरि, सोहँ बन्ने साचा गानया। सोहँ बन्ने गाना नाम निशाना वड संसारया। झुल्ले विच जहाना, ना कोई दीसे राज राजानां वड बलकारया। आपे वरते आपणा भाणा, ना कोई सुघड़ ना कोई स्याणा, आपे अन्तिम आए हारया। ना कोई राग ना कोई गाणा, ना कोई पीणा ना कोई खाणा, एका जोत जगत अधारया। जोती जामा पहरे बाणा, आपे पवण शब्द मसाणा, लक्ख चुरासी पसर पसारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आवे जावे वारो वारया। आवे जावे वारो वार, वड संसारया। सतिजुग साचे कर प्यार, कलिजुग मिटे काली धार, सति सफेदी रंग रंगा रिहा। सोहँ रक्खे तिक्खी धार, दस्म दुआरी बाहर रखा रिहा। ना कोई जाणे जन्त गंवार, साधां संतां आई हार, एका भुल्लया कन्त मुरार, झूठे धन्दे आप लगा रिहा। गुरमुख विरले खोल्हे बन्द कुआड़, शब्द घोड़े देवे चाढ़, जगे जोत बहत्तर नाड़, इक्क वखाए दर द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखण आया धरत मात तेरा अखाड़या। धरत मात तेरा अखाड़ा आप वखांयदा। रंग लाल चाढ़े गाढ़ा, साची खेल रचांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां, मन्दिर अन्दर टिल्ले हिल्ले, आपे अन्तिम ढाहिंदा। आप चबाए आपणी दाढ़ा, आप उपाए आपे आप मिटांयदा। सतारां हाढ़ी लग्गे इक्क अखाड़ा, चारों कुन्ट एका उठे शब्द सरूपी अगम्मी धाड़ा, रूसा चीना मेल मिलांयदा। मक्का मदीना होए उजाड़ा, वेखण

२२४
०५

आया साचा लाड़ा, लाड़ी मौत नाल लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, धरत मात रेख हरि, आपे आप मेट मिटांयदा। धरत मात ना होए कोई सहाईआ। चारों कुन्ट पैणी मार, राजे राणे रहे पछताईआ। लक्ख चुरासी गई हार, एका भुल्लया हरि रघुराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंड, बेमुख जीवां आत्म रंड, अन्तिम देवण आया कंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिजुग साचे हो त्यार, प्रभ साचा हुक्म सुणांयदा। कलिजुग मिटे चार यार, पंचम बाणा हरि पहनांयदा। पंजां तत्तां छड्ड प्यार, एका धार हरि वहांयदा। सोहँ अक्खर अपर अपार, जगत वक्खर इक्क वखांयदा। पकड़ उठाए रोड़ी सक्खर, लेखा आपणा आप लिखांयदा। आपे पाड़े बजर कपाटी पत्थर, आपणी दया कमांयदा। लक्ख चुरासी होणी सक्खर, कोई दिस ना आंयदा। मावां पुतर छड्डण रो रो अत्थर, ना कोई किसे बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी बणत बणांयदा। मालवा माल हरि उपाया ए। गुर गोबिन्दे एह लिखाया ए। वेले अन्तिम होए सहाया ए। आपणा लेखा आपणी हत्थीं लिखाया ए। आपे आप सरसे विच अन्त रुढ़ाया ए। ना कोई मिले कलि निशानी, रो रो थक्के भौं भौं अक्के, साचा राह दिस ना आया ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल देस नगर सुहाया ए। साचा नगर आप सुहाया। जोत सरूपी आसण लाया। शब्द वज्जे साची चोटे, लक्ख चुरासी कढ्ढे खोटे, साचा लेखा रिहा मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आपणा आप रिहा छुपाया। गुर गोबिन्द बाग लगाया ए। अन्तिम वेखण आपे आया ए। करे खेल खेल कलि खेला, मिल्या मेल गुरू चेला, सज्जण सुहेला आप अख्वाया ए। आप सुहाए अन्तिम वेला, शब्द सरूपी चाढ़े सच्चा तेला, नाम मैहन्दी रंगण रंग रंगाया ए। चारों कुन्ट उम्मत नबी रसूल दी, इक्क दूजे दे नाल खहन्दी, कुरान अञ्जील इकट्ठी हो हो बहिंदी, बूरे कक्के मता पकाया ए। करे खेल दिशा लहिंदी, साचा हुक्म हरि सुणाया ए। माझा देस करे वेस, जोती जामा धरया भेस, दिस किसे ना आया ए। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, हरि जन साचे विच समाया ए। दिशा लहिंदी खेल कराए। उम्मत नबी रसूल दी, एका गाहे गहिंदी, शब्द गेड़ा आप दवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेखे घर, दिस किसे ना आए। ना दिसे कलि पाए हिस्से, साची वंड वंडांयदा। माझे देस पीसण पीसे, मण्डप माड़ी कोई दिस ना आंयदा। बेमुख जीवां लाहे आत्म विस्से, काया भाण्डा भन्न हँकार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चरन पार ब्यासों आप उठांयदा। माझा देस होए वैरान। नेत्र खोल्ह गुरमुख वेखे मार ध्यान। शब्द सरूपी आपे बोले, कोई ना दिसे इक्क निशान, पूरे तोल हरि जी तोले, उरार ब्यासा बीआबान।

गुरमुख साचा कदे ना डोले, एका मिले शब्द निशान। भाग लग्गे काया चोले, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। पुरख अबिनाशी दया कमाए आप बिठाए शब्द डोले, इक्क उडाए सच उडान। गुरमुख चलाए हौले हौले, बणया रहे काहनी काहन। जोत सरूपी आत्म मौले, शब्द सरूपी पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे करे जगत पछान। माझे देस टुटे नाता। करे खेल पुरख बिधाता। गुरमुख साचे साचा मेल, इक्क किनारा ब्यास विखाता। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, ना कोई वेखे ज़ाता पाता। माझा देस देणा तज। मक्के मदीने मुक्के हज्ज। दिशा लहिंदी लाउँण ना देवे किसे अज्ज पज्ज। गुरमुख विरले संत सुहेले दर दर पड़दे लए कज। ब्यास किनारा करे मेले अन्तिम वेले रखे लज। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विकारा देवे तज। चरन पार ब्यासा हरि टिकाउँणा ए। दो दोआबा करे बन्द खुलासा, तीजे आबेहयात प्याउँणा ए। चौथे दर सच जणाया काया कासा, मक्का काअबा आप वखाउँणा ए। छत्ती रागां इक्क रबाबा, सोहँ तार वजाउँणा ए। शब्द सिँघासण आप बिराजे शाह नवाबा, राज राजानां सीस झुकाउँणा ए। चिट्टा अस्व रक्खे ताजा, चौथा पौड़ा जिस उठाउँणा ए। सज्जा चरन दए रकाबा, शाह अस्वार आप अख्वाउँणा ए। वेख वखाणे हरि दोआबा, मालक मालवा आप अख्वाउँणा ए। पहला चरन छुहाए आए नाभा, राणा संगरूर फेर उठाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे भाग लगाउँणा ए। मस्तूआणे लग्गे भाग, वज्जे जगत वधाईआ। मनमुख जीवां लगे आग, गुरमुखां शब्द जणाईआ। जोती दीपक जगे चिराग, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। राज राजाने आवण भाग, दर दुआरे भुल्ल रहे बख्शाईआ। वक्त सुहाए अठारां माघ, जोती भेव हरि खुल्लाईआ। आप आपणे हथ्थ पकड़े वाग, सृष्ट सबाई रिहा भवाईआ। भगत जनां तन धोवे दाग़, अमृत आत्म मेघ बरखाईआ। दर दुआरे हँस बणाए काग, शब्द चोग इक्क चुगाईआ। हरिजन विरला चरनी जाए लाग, मनमुखां गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा भेख धर, आपणी रचन रचाईआ। साची रचन रचाए, रंग अपारया। राजे राणयां बचन सुणाए, नाल कराए रंग न्यारया। गुर संगत संग रलाए, जाए जमन किनारया। पार किनारा डेरा लाए, शब्द सरूपी खेल रचाए, वाली हिन्द आप उठाए देवे दरस अगम्म अपारया। भज्जा आवे वाहो दाही निहकलंकी दर पछाने, जोत सरूपी दिस ना आए, मानस देही दिसे पासा हारया। गल पल्लू एका पाए, रो रो नेत्र नीर वहाए, काया खेत्र कवण दिसाए, कवण करे साची कारया। महीना चेत्र बणत बणाए, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे शब्द उडारया। महीने चेत

दए चितार। जोत सरूपी शब्द भूपी, अनहद वजाए साची तार। होए प्रकाश काया कोट अन्ध कूपी, दर्शन पाए पुरख निरँजण जोत अकार। नज़री आए सति सरूपी, इक्क इकल्ला हरि द्वार। तुट्टे माण शाहो भूपी, दर दुआरे बणे भिखार। खाली दिसण चार कूटी, काया मन्दिर ना कोई भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द हलूणा देवे मार। शब्द हलूणा इक्क लगाउँणा ए। वाली हिन्द आप जगाउँणा ए। अन्दर वड़ शब्द सरूपी हरि जी फड़, एका राह वखाउँणा ए। वाली हिन्द आप जगाउँणा ए। काया किले कोट उप्पर चढ़, भाण्डा भरम हँकार भन्नाउँणा ए। दस्म दुआरी अग्गे खड़, जोती दरस दिखाउँणा ए। पंजां तत्तां नाल लड़, एका अक्खर शब्द पढ़ाउँणा ए। साचा तन मन लए फड़, सोहँ सो पुरख निरँजण एका एक वखाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लिख्या लेख धुर फ़रमाण हथ्थीं इक्क फड़ाउँणा ए। लिख्या धुर फ़रमाण, दो जहानया। सप्त रंगां इक्क निशान, लेखा लिखे नैण मुँधानया। दीपां लोआं एका आण, नौआं खण्डां बूझ बुझानया। नौ दुआरे वेख दरवाज्जया। कलिजुग काली रेख, जोती धारे वेस देस माज्झया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आप संवारे आपणा काज्जया। नर निरँजण अवल्लड़ा भेस, शब्द घोड़े चिट्टे ताज्जया। सर्ब सुनेहड़े रिहा भेज, शब्द सरूपी मारे अवाज्जया। एका हरि विछाई साची सेज, गुरमुख संत सुहेला आए भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां रक्खे लाज्जया। नौ दुआरे वेख मन डुलांयदा। कलिजुग मिटदी जाए रेख, सर्ब सुहांयदा। ना कोई जाणे धारी केस, भरम भुलांयदा। भुल्ले वड वड नर नरेश, गणपत गणेश ना कोई मन्नांयदा। शाह सुल्तानां कोई ना चले पेश, दर दरवेश आप अख्वांयदा। अट्ठे पहर हरि हमेश, आदि अन्त सदा रहांयदा। किसे हथ्थ ना आए गुर दस्मेश, नौ दुआरे धक्के खांयदा। आपे जाणे आपणा वेस, साचे घर आसण लांयदा। बाल अवस्था अल्लृड़ वरेस, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ दुआरे दर दरवाज्जया। गुरमुखां वखाए एका घर, लोकमात साजन साज्जया। लक्ख चुरासी चुक्के डर, लिख्या लेख हरि जी माज्झया। बेमुख दर तों जायण डर, ना कोई हाजी ना कोई हाजिया। एका देवे अमृत आत्म साचा सर, जन भगतां पड़दा काज्जया। ना जन्मे ना जाए मर, सदा सहाई रक्खे लाज्जया। अन्दरे अन्दर बैठा वड़, इक्क कराए आप वखाए काया हाज्जया। पंजां चोरां रिहा फड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई पुन्न ना कोई स्वाब्या। उच्च महल्ले बैठा चढ़, ना कोई नाड़ी ना कोई नड़, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचे अन्दर मन्दिर विच्चों भाज्जया।

बलवन्त कन्त दर हाल सुणाया। दस्म दुआरी चार दर उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा मुख रखाया। भगतन छाछ वरोले मक्खण, कलिजुग अन्तिम आया रक्खण, साचा भेव रिहा खुल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंगण रंग रंगाया। दक्खण दिशा कवण द्वार। कवण दिसे पहरेदार। लोकमात जिस आए हिस्से, आवे जावे अन्दर बाहर। होर किसे जगत ना दिसे, डूंघी भवरी अन्ध अंध्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दक्खण दिशा पहला हिसा, एका बुझे सच द्वार। उत्तर उत्तर देणा मोड़। कवण दुआरे शब्द घोड़। नर निरँकारे चरन प्रीती निभे तोड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्तर पुच्छे सच घर, कवण जुड़ाए साचा जोड़। पूर्ब पूर्ब कर विचार। तीजे दर कवण वसे हरि, किस वेले खोल्हे बन्द किवाड़। गुरमुख तरनी रिहा तर, अग्न ना लगे तत्ती हाढ़। ना जन्मे ना जाए मर, नेड़ ना आए मौत लाड़। कवण सरूप हरि शाहो भूप, गुरमुखां फड़े साचा लड़। पच्छिम दिशा पुष्कर बाण। अन्दरे अन्दर मार ध्यान। काया दिसे अन्धेरी कन्दर, कवण झुल्ले सच निशान। नर्क सुरग सुरग नर्क केहड़ी कूटे होण गर्क, धूँआंधार पवण मसाण। कवण जाए सिध्धी सड़क, गुरमुख आत्म ना जाए अड़क, बैठी रही विच बिबाण। उत्तर देणा हो निधड़क, शब्द खोजी निकले रड़क, कवण सुणे शब्द ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, चार दुआरे खेल अपारे, चारे दिशा वेख विचारे, उप्पर नीचे सुंञ मसाण। चार दिशा चार दिवारी। सच महल्ला रिहा उसारी। आपे वसे इक्क इकल्ला, सुत्ता रहे चरन पसारी। अन्दरे अन्दर जला थला जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। शब्द बोले साचा हल्ला, जगे जोत बहत्तर नाड़ी। कवण फड़ाए हरि जी पल्ला, आपे फिरे पिछे अगाड़ी। दीपक जोती कैसे बला, पक्की फसल हाढ़ी। माया परछावां कैसे ढला, माया ममता अग्नी साड़ी। सच दुआरा एका मल्ला, चेतन्न सत्ता नाल रल्ला, पर्दे हटाई पंचम धाड़ी। उतरे पार डूंघी डल्ला, लगे भाग काया कुला, शब्द सुनेहड़ा घल्ला, तीजा लोइण मात उग्घाड़ी। दूई द्वैती मेटे सला, वसे निहचल धाम अचल्ला, आप अपरम्पर अछल अछल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आपे पुच्छे सच दर, गुरमुख किरपा देणी कर, सच दुआरा हरि निरँकारा अन्दर बाहर गुप्त जाहिर आप आपणी चाल चला। चेतन्न सत्ता की रंग वटाए। कवण दे समझाए मत्ता, कवण शब्द जणाए। कवण खुवाए एका भत्ता, कवण जल मुख लगाए। कवण एका देवे ताम तत्ता, बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रता, कवण काम आप कराए। कवण दीसे साची छत्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, कवण दुआरे हरि निरँकारे चेतन्न सत्ता सीस निवाए। अग्नी सरूप ना अग्नी तत्त। हरि वड्डा शाहो भूप सीतल सति। आपे जाणे रंग रूप, आपे जाणे आपणा नत। चेतन्न सत्ता फेरे अन्धकूप, ना कोई समझाए दे दे मत्ता। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणे वसे घर, ब्रह्मण्ड खण्ड सदा समरथा। दस्म दुआरा डूंघा ताल। कवण दुआरे वज्जे छाल। गुरमुख विरोले केहड़ा लाल। पिछला चुक्के जगत झेड़ा, अग्गे मिले इक्क दलाल। नाता तुट्टे काया खेड़ा, दीपक जोती जगे थाल। कवण दुआरे दिसे खुल्ह्रा वेहड़ा, चेतन्न सत्ह्रा लए भाल। दस्म दुआरी होए निबेड़ा, ना कोई काल ना महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, दस्म दुआरी हरि निरँकारी घर बाहरी केहड़ी चले अवल्लड़ी चाल। अवल्लड़ी चाल कवण रखाईआ। शब्द सरूपी मारे छाल, दस्म दुआरी बाहर हो जाईआ। कवण लए गोद उठाल, मात पित कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कवण धाम सच सिँघासण आसण डेरा लाईआ। कवण मोरी दस्म दुआर। कवण साजण मीत मुरार। कवण घर मिले भुजा पसार। लहिणा देणा जाए चुक्क। नौ दुआरे जायण रुक। दस्म दुआरे लै जाणा चुक्क। काया डाल्ह्र जाए सुक्क। अमृत मारे इक्क उछाल, चरन चुम्मे नीचे झुक। जोती जोत सरूप हरि, राह विच ना जाए रुक। आप आपणी गोद उठाउँणा। दरगाह साची धाम बहाउँणा। काया लेखे चाम लगाउँणा। अमृत आत्म साचा जाम प्याउँणा। पूरन होए मात कर्म, कलिजुग काला भेस मिटाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, एक मंगे सच वर, सुन अगम्मी पार कराउँणा। सुन अगम्मी कर विचार। काया दिसे मात निकम्मी, मरे जीवे मर मर जम्मी, मात गर्भ होए दुख्यार। गगन पताली हिल्ले थम्म्ही, धरत मात करी पुकार। आपे बणना साची अम्मी, आत्म सीर देणा ठंडा ठार। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे सच वर, सदा खुल्ह्रा रहे बन्द किवाड़। मंगी मंग अपर अपारी, किरपा कर गुरमुख प्यारया। लोकमात ना आए हारी, मिटे दुःख सर्ब संसारया। निर्मल जोत कर अकारी, तृष्ना भुक्ख जाए, मिले नाम शब्द अधारया। पंजां मिटे चोर यारी, शब्द मिले इक्क उडारी, लोआं पुरीआं करे बाहरया। लेख लिखाउँणा पहली वारी, मंगे वर हरि निरँकारी, निभे नाल सच्ची यारी, उठाए इक्क सच्ची उडारीआ। कवण वाहिगुरू कवण अकाल। कवण गुरू जगत दलाल। बलवन्त अन्त अन्त अन्त भस्मंत, फल ना दिसे डाल्ह्र। शब्द लिखाउँणा साचा छंत, लोकमात ना बण कंगाल। महिंमा गणत सदा अगणत, हित्त चित्त नित्त नवित्त दीना बंधू दीन दयाल कृपाल। आप बणाउँणा आपणा मित, वेख वखाउँणी वार थित्त, आप आपणी सुरत संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, ना कोई खाए काल जंजाल महांकाल। आपे जोत आप अकाला। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीनां नाथ दीन दयाला। ना कोई दोध ना कोई पोत, जुगा जुगन्त सदा रक्खवाला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे गुर आपे गोपाला। गर्ज़ फर्ज विच ना संसार। इक्को गर्ज़ नाम करतार। ना कोई जाणे जगत तर्ज़, छत्ती राग ना रहे उचार। ना कदे होए हर्ज मर्ज, तन ना चढ़े मात बुखार। आप

आपणा समझीं फर्ज, उत्तर देणा हो ख़बरदार। सिर चढ़या रहे ना तेरे कर्ज़, मंगे मंग इक्क दातार। वेखे खेल इक्क असचरज, जोती जगे अगम्म अपार। चेतन्न सत्ता ना रही वरज, किस घर वसे नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंगे दर प्यार। इक्क खज़ाना देणा नाम। शब्द निशाना ठंडी छाँ। दो जहानां पिता माँ। गुण निधाना पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम वर, साचे घर ना झूठे उडणे कां। कवण बख्शे बख्शणहार। कवण मेल मिले कन्त भतार। कवण गुर कवण चेले, कवण करे तन शृंगार। कवण खेल आपणी खेले, पारब्रह्म रूप अपार। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम वर, देणा मात कर प्यार। सच दुआरा किस दर पाईए। साचा करे वणज वपारा, कवण दलाल विच रखाईए। सिँघ बलवन्त अज्जे कुँवारा, पुरख अबिनाशी जोत ना अजे व्याहीए। नावें दर हाहाकारा, दसवें धूँआंधार रखाईए। मिले मेल हरि कन्त प्यारा, आप आपणा दर्शन पाईए। गुरमुख साचे संत साध एका धारा, आत्म वज्जे इक्क वधाईए। पुरख अबिनाशी मंगे बण भिखार, सच वस्तू झोली पाईए। साचा सच किस धाम सुहाए, कवण सच तन मन काया जाए रच, कवण जिह्वा आख सुणाईए। कवण दुआरे रिहा नच्च, बाहों पकड़ कोल बहाईए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंगे सच वस्त, सति संतोखी धीर धराईए। साचे सच की वड्याई, काया भाण्डा दीसे कच्च, अन्तिम वेले भन्न वखाईए। पंजां तत्तां रिहा मच्च, तृष्ना अग्न इक्क लगाईए। वस्त पाउँणी नाम सच्च, पूरी एका आस कराईए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना माया भरम भुलाईए। सतिगुर सावण सति धाम सुहाया। बहत्तर नाड़ी ना उबली रत, जोती नूर ना किसे वखाया। गरीब निमाणयां घर घर बैठयां रक्खे पति, अन्दर मन्दिर जिस ध्याया। साध संत किसे ना आया हत्थ, आप आपणे रंग समाया। शब्द दात ना दित्ती किसे वत्थ, काया रंग ना किसे चढ़ाया। माया राणी पाए नत्थ, वेले अन्तिम बचन सुणाया। कथनी सभ दी रिहा कथ्थ, आत्म भरम भउ गुवाया। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण विच समाया। संत सुहेले रहे पुकार। सावण सावण कहिंदे यार। जैमल गया भेख धर, जिउँ बावन मिले ना किसे मीत मुरार। आपणी हत्थीं ना आप फड़ाया किसे दामन, घर घर बैठे करन विचार। गरीब निमाणयां सदा जामन, रसना गायण करन पुकार। मेट मिटाए अन्धेरी शामन, अट्ठे पहर ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, सतिगुर सावण पतित पावन जोती नूर जोत निरँकार। हरि धर्म जैकार विच संसारया। एका देवे शब्द अधार, साची वस्त अपर अपारया। पूर्ब कर्मा रिहा विचार, सतिजुग दोए जोड़ करे निमस्कारया। कलिजुग काले पैणी मार, चारों कुन्ट जन्त हंकारया। गुरमुख

साचे पार उतार, बेड़ा बन्ने बन्नणहार आप अख्वा रिहा। आपे मेल मीत मुरार, संग सुहेला आप अख्वा रिहा। मानस देही झूठा यार। नार भतार कन्त सुहागी इक्क मिला रिहा। बेमुख जीवां बाजी अन्तिम जाणी हार, शब्द सार ना कोई पा रिहा। एका देणी शब्द धार, बेमुहाणा जगत रुढ़ा रिहा। गुरमुख बख्शे चरन प्यार, बिधाता नाता आप जुड़ा रिहा। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, हँकारी घोड़ा इक्क दुड़ा रिहा। हरिजन साचे लए उभार, सोहँ पल्लू आप फड़ा रिहा। दरगाह साची शब्द उडार, दर दुआरे आप बहा रिहा। गुण गुणवन्ता कर श्रृंगार, चोली नाम तन पहना रिहा। शब्द बख्शे फूलनहार, सोहँ सेहरा सीस गुंदा रिहा। शब्द घोड़ा कर त्यार, वाग आपणे हथ्थ रखा रिहा। गुरमुख साचे ख़बरदार, सच सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा। आप चढ़ाए वारो वार, इक्क इकल्ला खेल रचा रिहा। दरगाह साची धाम न्यार, सच महल्ला आप वसा रिहा। कोई ना दीसे पंचम यार, एका धार प्रेम वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साची बणत बणा रिहा। सतिजुग साचे जाग, सुण सुखमन रागया। जन भगतां आत्म लग्गे भाग, बुझे माया अग्नी आगया। मिले मेल हरि कन्त सुहाग, आपे धोए पिच्छले दागया। दर दुआरे हँस बणाए काग, दीपक जोती जगे चिरागया। चरन कँवल प्रभ जाणा लाग, धुर दरगाही आया भागया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे इक्क सुणाए सोहँ सच्चा रागया। सतिजुग साचे सच हरि पुकारया। देही भाण्डे काचन कच्च, आपे घड़े हरि ठठयारया। माटी पुतले रहे नच्च, नौ दुआरे जगत गंवारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धर, करे खेल वारो वारया। सतिजुग पाई सार सुरत संभालीआ। प्रभ अबिनाशी बख्शे चरन प्यार, कलिजुग रैण घटा कालीआ। अमृत देवे ठंडी धार, धुर दरगाही सच दलालीआ। बजर कपाटी जाए पाड़, फल लगाए काया डाल्हीआ। पंजां चोरां देवे झाड़, शब्द वज्जे काड़ काड़ तीर गुलालीआ। हउमे ममता देवे साड़, अट्ठे पहर करे रखवालीआ। जगे जोत बहत्तर नाड़, दीपक जोती सच दवालीआ। साचे घर धर्म अखाड़, लग्गा रहे दिवस रैणालीआ। गुरमुख साचे संत सुहेले कर कर मेले शब्द घोड़े रिहा चाढ़, जो जन आए सवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा पाली, अट्ठे पहर करे रखवाली, बणया रहे सच्चा हालीआ। सतिजुग साचे सुत्त, उठ बलवानया। आप उठाए पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, करे खेल विच जहानया। कलिजुग बदल गई रुत्त, मिटदी जाए घटा कालीआ। जूठे झूठे मिटणे बुत्त, माता गोद ना कोई उठालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा बणया आप दलालीआ। बणे आप दलाल गरीब निवाज्जया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, नौ दुआरे साजन साज्जया।

शब्द मारे इक्क उछाल, पवणी मात पताल अकाश गाज्जया। आप सुहाए अमृत सच्चा ताल, अनाहद धुन मारे अवाज्जया। गुरमुख साचा मारे छाल, ना जाणे वेला कल कि आज्जया। नाम मोती मिले अनमुल्लड़े लाल, आप आपे पड़दा काज्जया। काया मन्दिर दीपक जोती जगे मस्तक थाल, अट्ठे पहर रखावे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धराए, प्रगट होए देस माज्झया। सतिजुग नाउँ सति सति सतवन्तया। जन भगतां दे समझावे मति, बेमुखां माया पाए बेअन्तया। ना कोई लाए अज पज, शब्द डोरी जाणा बज्झ, वड वड साधन संतया। जन भगतां पड़दे रिहा कज्ज, अमृत आत्म प्याए रज्ज, आप बणाए साची बणतया। एका काअबा एका हज, एका ताल रिहा वज्ज, गाए राग वार मल्हार बसंतया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे वड्याई वड वडा जीव जन्तया। हरि साचा नाम सति उपजाया। आपे रक्खे जगत पति, दे मति रिहा समझाया। लक्ख चुरासी लथ्थी सत्थ, राह हथ्थ किसे ना आया। जम की फाँसी काया पत्थर, जगत मलाह ना कोई बणाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाया। सच सुनेहड़ा ताल शब्द वजन्तया। आपे बन्ने मात बेड़ा, मिटदा जाए जगत झेड़ा, प्रभ साचा खोज खुजन्तया। आपे करे सच निबेड़ा, काया वसे नगर खेड़ा, मिले मेल आदिन अन्तया। खुल्ला वखाए हरि जी वेहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रखे पति पतित पतवन्तया। सति संतोख धर्म ज्ञान। धर्म ज्ञान विच जहान। विच जहान भगत भगवान। भगत भगवान इक्क निशान। इक्क निशान वाली दो जहान। वाली दो जहान धर्म खण्ड कर्म खण्ड गऊ गरीबां आया गले लगान। आपे पाए आपणी वंड, सोहँ फूलन बरखा आनपान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति संतोख गुरमुखां दीआ ब्रह्म ज्ञान। सति संतोख शब्द श्रृंगारया। चरन दासी मुक्ती मोख, फूलनहार तन पहना रिहा। कलिजुग मेटण आया दोख, गुरमुख साचे आप जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग काया उच्चा कन्ढा, नीवें ढाह आप वखा रिहा। उच्चा कन्ढा उच्च दिवार। वेले अन्तिम अन्त पाए वंडा, आपे ढाहे वारो वार। निथावयां थाउँ विच ब्रह्मण्डा, उप्पर छप्पर प्रेम प्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ गरीब निमाणयां एका बख्शे चरन प्यार। मूंह काला पंज याररया। पंचम होए ख्वार दर द्वारया। मिल्या मेल मीत मुरार, किरपा करी अपर अपारया। काया सीत ठांडे दरबार, रसना चीत नाउँ निरंकारया। इक्क वसाए सच्चे घर बाहर, उच्च महल्ल शब्द अटारीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग काला मुख, तन मन उतरे झूठा दुःख, इक्क उपजाए आत्म सुख,

हरि रंग गुरमुख साचा माणया। मुख काला कालख छाहीआ। पंजां चोरां आपे लाई सन्नृ, सच सुल्ताना बेपरवाहीआ। धर्म राए दी कटे फाही, आपे तारे पकड़ बांहीआ। दूसर कोई जाणे नाही, अचरज खेल कलि वरताईआ। होए सहाई सभनी थाँईं शब्द हलूणे रिहा जगाईआ। पंजे रोवण मान धाही, प्रभ साची किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आपे आप बणाईआ। मन सवाए सुरती जागे। सुरती जागे पंचन चोर भाजे। पंचन चोर भागे, एका उपजे रागे। एका उपजे राग प्रभ चरनी लागे। प्रभ चरन लाग धोए दागे, धोए दाग हरि कन्त सुहागे। कन्त सुहाग सदा सुहेला गुरमुख उठाए सोए, सदा सदा सद आपे जागे। हरिजन अवर ना जाणे कोए, लोकमात कवण हँस कवण कागे। दीपक जोती किस दर बलोए, गुरमुख बन्नृे शब्द डोरी तागे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीआ दान दातार अकारा रूप अगम्मा शब्द उडार, आप आपणे हथ्थ रक्खे वागे। सतिजुग सुरत संभाल मात उपानया। फल लग्गे तेरे डालृ, गुरमुखां बेड़ा बन्नया। एका मारे नाम उछाल, मेट मिटाए दूई द्वैती बन्नृया। ना कोई शाह ना कोई कंगाल, देवे धन नाम वड धन धनया। जन भगतां सदा सदा दलाल, बेमुखां दिस ना आए आत्म अन्नृया। अट्ठे पहर करे रखवाल, पंचां पंचां आपे डंनया। जोती जगे काया माटी साचे थाल, सुणे सुणाए राग साचा कन्नया।
२३३ आपे चले अवल्लड़ी चाल, गुरमुख विरला मात मन्नया। काया काअबा दो दोआबा इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, दूजा ना २३३
०५ कोई दीसे छप्पर छन्नया। हरि हरि संत सुहेले रिहा भाल, आपे पिता आपे मात आपे जणनी जनया। आदि अन्त ना खाए ०५
काल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी करे हंनया बन्नृया। सतिजुग सुरत संभाल, नाम उपाया। फल लगे काया डालृ, गुरमुखां दे हरि ख्वाया। चरन प्रीती निभे नाल, मात रीती रिहा चलाया। मानस देही लक्ख चुरासी विच्चों जीती, भाण्डा भरम भउ भनाया। काया रहे सदा अतीती, गुणवन्ता हरि हरि रसना गाया। लेखा चुक्के मन्दिर मसीती, गुरदुआरा कोई नज़र ना आया। सदी चौधवीं अन्तिम बीती, जोती जामा हरि जी पाया। बेमुख भरन आपणी कीती, वेला आपणा आप गंवाया। गुरमुख गाए सुहागी गीती, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। अट्ठे पहर परखे नीती, दिस किसे ना आया। मानस देही गुरमुख साचे जीती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसन रसायणी जिस ध्याया। सतिजुग साचे सांत सति वरताया। प्रभ अबिनाशी बैठ इक्क इकांत, राह आपणा आप चलाया। दीपां लोआं मारे झात, पुच्छे वात हरि रघुराया। लोकमाती देवे दात, सोहँ साचा जाप जपाया। बरन अठारां भैण भ्रात, चारे वरनां इक्क कराया। उत्तम रक्खी हरि जी ज़ात, चरन प्रीती रिहा सिखाया। आपे बख्शे कमलापात, अन्दरे अन्दर सर्ब समाया। ना कोई पुच्छे ज़ात

पात, एका रंगण रिहा रंगाया। ना कोई वेला दस्से प्रभात, अट्ठे पहर दूण सवाया। रैण दिवस पुच्छे वात, आलस निन्दरा मगरों लाहया। मेट मिटाए अन्धेरी रात, हँकारी जिंदा आप तुड़ाया। अमृत देवे बूंद स्वांत, काया ठंडी ठार रखाया। आपे पिता आपे मात, जगदीसर जगत जोग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साचा धर्म रिहा चलाया। सतिजुग तेरा साचा ताम, प्रभ साचा आप पकांयदा। लक्ख चुरासी लेखे लग्गे झूठा चाम, कम्म किसे ना आंयदा। कोई ना पए वेले अन्तिम दाम, साचे हट्ट ना कोई विकांयदा। गुरमुख विरला पीवे अमृत आत्म साचा जाम, साचा लाहा खट्ट जगत सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन लपेटे शब्द पट्ट, दूई द्वैती मेटे फट्ट, दुरमति मैल देवे कट्ट, शब्द दुशाला इक्क पहनांयदा। सतिजुग सखी सुल्तान, तख्त सुहाया। प्रभ दाता मेहरवान, दया कमाया। हथ्थ फड़ाए धर्म निशान, सोहँ डण्डा सच्चा लाया। करे खेल गोपी काहन, मण्डल रास ब्रह्मण्ड कराया। जोती जगे कोट भान, भेव किसे ना पाया। गुरमुख विरला करे चरन धूढ़ इशनान, दुरमति मैल रिहा गंवाया। हरिजन मिले गुण निधान, पल्लू नाम रिहा फड़ाया। लक्ख चुरासी पीण खाण, जन हरि सोया आप जगाया। इक्क झुलाए धर्म निशान, जै जैकार कराया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूरी जोत कर अकार, एका रंग रिहा चढ़ाया। सतिजुग साचा राज राज राजानया। शब्द सीस साचा ताज, आपे बन्न्हे हरि भगवानया। करे खेल देस माझ, वेस भेस किसे ना जाणया। चार वरनां बन्न्हे सांझ, दर दरवेश आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्ता गुण निधानया। सतिजुग साची जोत जगत निरालीआ। मिट जाए वरन गोत, एका दिसे राह सुखालीआ। लक्ख चुरासी रिहा झोक, कलिजुग रैण घटा कालीआ। गुरमुखां सुणाए एका शब्द शलोक, सर्ब तट्टां होए बेहालीआ। हरि का भाणा कोई ना सके रोक, ना कोई जाणे शाह कंगालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण एका एक जोत अकालीआ। सतिजुग साचे शब्द मात उग्घाड़या। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, बेमुख चबाए आपणी दाढ़या। भगत जनां हरि हिरदे वाचे, दरस दिखाए साचो साचे, घोड़े आपे चाढ़या। जूठ झूठ ना प्रभ दर नाचे, नेड़ ना आए पंचम धाड़या। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात वेखे इक्क अखाड़या। सतिजुग साचा हो त्यार, लोकमाती चरन टिकांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, कलिजुग लेखा बाकी आप लिखांयदा। माया राणी वड जरवाणी होए ख्वार, रिखी नार ना कोए पावे मात सार, हाहाकार करांयदा। भरमे भुल्ले जन्त गंवार, दर दर घर घर विभचार, साची सार ना कोई पांयदा। शब्द सरूपी मारे मार, ना कोई वेखे नर नार, बेमुख

जीवां बेड़ा आप रुढ़ांयदा। गुरमुख साचे सच प्यार, साची गली मीत मुरार, सिध्धा राह इक्क वखांयदा। एका दिसे दर दरबार, खिड़ खिड़ हस्से सच्ची सरकार, शब्द निराले अन्दर वसे ना कोई दूसर पहरेदार, साचे धाम आप सुहांयदा। गुरमुख चढ़े वारो वार, बांह फड़े कन्त भतार, कोई ना अड़े संत दुलार, साचा राह आप वखांयदा। अमृत आत्म बख्शे साची धार, बजर कपाटी आर पार। तीर्थ ताटी वड संसार, औखी घाटी पार करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म भरम निवार, पूर्ब कर्म मात विचार, साची धार इक्क बनाँयदा। सतिजुग साची धार आप रखाईआ। गुर शब्द मन्त्र प्यार, साची रीत रिहा चलाईआ। नाता तुट्टे वेद चार, पुराण अठारां कोई ना गाईआ। ना कोई दीसे संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा दए दुहाईआ। खाणी बाणी होई त्यार, कलिजुग काली दिसे धार, एका राह अन्तिम पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सति पुरख निरँजण आप आपणी कार कमाईआ। सतिजुग साची मति बुध बिबेकया। आपे देवे धीरज मति, तन काया ना लग्गे सेक्या। शब्द सरूपी बन्ने यति, हरि आपे वेखी वेख्या। जन भगतां जाणे मित गति, एका एक एकम एकया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुकाए अगला पिछला लेखिआ। सतिजुग मिली दात सर्ब सिक्दारीआ। आपे पुच्छे अन्तिम वात, कलिजुग अन्तिम रिहा कुरलाया। सतिजुग साचे मारे झात, साची रंगण रिहा चढ़ाया। कलिजुग वेखे

२३५

०५

काली रात, साचा चन्द कोई दिस ना आया। सतिजुग साचा बैठ इकांत, जन भगतां रिहा जगाया। कलिजुग काले तुट्टा नात, भैण भ्राता रिहा तजाया। सतिजुग साचा अमृत बख्शे बूंद स्वात, जन भगतां निझर धार रिहा चुआया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साचा ताज मार अवाज़ देस माझ, आपणी हथ्थीं रिहा पहनाया। सतिजुग साचा ताज सीस रखंदड़ा। प्रभ अबिनाशी रक्खे लाज, सद बख्शिंदड़ा। सोहँ देवे सच्चा दाज गुणी गहिंदड़ा। कलिजुग काले खुल्हा पाज, चारे कुन्टां होए निन्दड़ा। जगत कुरीती मुक्के राज, ना कोई जाणे जीव जहंदड़ा। आपणा साजन रिहा साज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नित नवित्ता कवण जाणे वार थित्ता, आपणे रंग शब्द संग सदा सदा वसंदड़ा। शब्द बाज हरि उडाया ए। आपे बख्शे आपणा ताज, सीस जगदीस आप पहनाया ए। साचे साजन रिहा साज, शब्द सरूपी मेल मिलाया ए। जन हरि रक्खण आया लाज, ना भेव मात रखाया ए। आप कराए आपणा काज, संगी साथी ना कोई अख्वाया ए। शब्द सरूपी मारे अवाज़, भगतन हिता रिहा जगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समाया ए। शब्द उडारी बाज आप लगांयदा। काया मन्दिर उच्च पटारी, चारे कुन्टां आप वखांयदा। दहि दिशा वेखे वारो वारी, ना कोई दूसर धाम वखांयदा। जन भगतां करे नाम वणज वपारी, एका वस्तू झोली पांयदा। मनमति भौंदी

जाए ख्वारी, गुरमति साची इक्क धरांयदा। दुरमति करे हाहाकारी, हरिजन कोई ना लागे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समांयदा। हरि बाज उडार आप लगाईआ। माया रूपी पसर पसार, शाहो भूप दिस ना आया। लक्ख चुरासी रिहा विचार, जम की फाँसी मात लगाईआ। ना कोई दीसे नर नार, जगत जगदीशे रचन रचाईआ। ईसा मूसा आई हार, संग मुहम्मद दए दुहाईआ। कलिजुग काली रैण अंध्यार, दीपक जोती ना कोए जगाया। मनमुख रोंदे धाहां मार, धर्म राए दए सजाईआ। गुरमुख साचे उतरे पार, चरन दुआरे रिहा बहाईआ। देवे वस्त नाम अपार, आत्म झोली हरि भराईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द साची धार, शब्द बाज इक्क रघुराईआ। करे खेल आपणी वार, संत असंत भेव ना राईआ। चढ़े चन्द विच संसार, नौ चन्दी खुशी मनाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी आर पार, सत्तां दीपां रिहा हिलाईआ। पुरीआं लोआं कर पसार, देवी देवत रिहा जगाईआ। करोड़ तेतीसा कर त्यार, सुरपति राजे इंद दए हिलाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, तख्त ताज़ रिहा दवाईआ। मारे आप शब्द उडार, शिव शंकर रिहा जगाईआ। शिव शंकर ख़बरदार, प्रभ पूरे दया कमाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, कलिजुग माया मगरों लाहीआ। आउँणा जाणा वारो वार, भीतर कोई रहण ना पाईआ। कलिजुग औध गई हार, ना होए कोई सहाईआ। प्रगट होए नर अवतार, साची रचना आप रचाईआ। सिँघ जगदीसा कर प्यार, जुगती जुगत आप बणाईआ। नौ दुआरे धर्म दरबार, नौ दर वेखे हरि रघुराईआ। दसवें सुत्ता पैर पसार, दिस किसे ना आईआ। अट्ठे पहर रहे त्यार, गुरमुखां गोद उठाईआ। साची पुरी लए उसार, एका धार शब्द बंधाईआ। जगे जोत इक्क निरँकार, जगत अकारा रिहा कराईआ। राज रजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा उठाईआ। चारों कुन्टां पैणी मार, दूसर सार कोई ना पाईआ। इक्क वखाए सच्चा घर बाहर, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। चारे कुन्टां हरि विचार, दहि दिशा रिहा तकाईआ। आप अपरम्पर मीत मुरार, पीतम्बर रिहा सुहाईआ। गुणवन्ता गुण विचार, पूरन भगवन्ता खेल रचाईआ। वेख वखाणे शिव द्वार, शिव शक्ती आप टिकाईआ। आप उठाए कर प्यार, वेला अन्तिम दए सुहाईआ। दूसर कोई ना दिसे यार, मीत मुरार ना कोई अख्वाईआ। आप उठाए भुजा पसार, चतुर्भुज हरि रघुराईआ। साचा करे मात विहार, कलिजुग कल रिहा वरताईआ। गुरमुख साचे कर दीदार, उतरे पार खुशी मनाईआ। जगत माया होई ख्वार, पाई सार देर ना लाईआ। एका देवे नाम अधार, सोहँ अक्खर आप पढ़ाईआ। सोहँ पढ़या विच संसार, पौड़े चढ़या अपर अपार, सिँघ पाल खुशी मनाईआ। प्रभ अबिनाशी हो दयाल, आपे परखे आपणे लाल, फल लगाए साचे डाल्, पुरी ब्रह्म रिहा सुहाईआ। पुरी ब्रह्म पूर कर्म, ना मरे ना जाए जम्म, नेत्र नीर ना डिगे छम्म,

एका शब्द अधार रखाईआ। नाता तुट्टा हड्ड मास नाड़ी चम्म, घनकपुर वासी साची बणत बणाईआ। दया कमाई हरि रघुराई ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म रूप सद समाईआ। गगन पताली हिल्ले थम्म्, पुरीआं लोआं रिहा उठाईआ। जोती शब्द प्या जम्म, पवणी झूला रिहा झुलाईआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, साचा भाणा इक्क वखाईआ। आपे जाणे आपणा कर्म, ना कोई भेव ना कोई भरम, आपणे रंग सद रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे, किरपा कर उतरे पारे, लोकमात दए वड्याईआ। देवे लोकमात वड्याई, पुरी ब्रह्म भाग लगाईआ। साची वज्जी जगत वधाई, लोआं पुरीआं पुरीआं लोआं मंगलाचार कराईआ। दर घर साचे ना होए कदे जुदाई, वाहवा साची सेव कमाईआ। मिल्या मेल साचे माही, विछड़ कदे ना जाईआ। एका एक हरि रघुराई, वेख वखाणे सभनीं थाँईंआ। दूसर कोई दीसे नाही, आपे पकड़ उठाए बाहींआ। ना कोई भैणा ना कोई भाई, मात पित ना कोई अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अगम्मा आपणी रचन रिहा रचाईआ। कलिजुग काली धार भरम संसारया। मानस देही झूठा चर्म, कलिजुग जीव ना किसे विचारया। सति संतोख ना कोई जाणे साचा धर्म, माया रुल्ले आत्म हंकारया। ना कोई जाणे पूर्ब कर्म, दर दुआरा हरि निरँकारा कोई ना पाए सारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जाणे आपणी धारया। साची धारा हरि बणाईआ। लक्ख चुरासी गई हर, प्रभ अबिनाशी सार ना पाईआ। कोई ना दीसे साचा घर, मदिरा मासी देण दुहाईआ। अमृत आत्म किसे ना मिले साचे सर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पति गुवाईआ। साचा नाम ना देवे कोई वर, साधां संतां मति ना राईआ। बेमुख जीवां आपणा कीता लैणा भर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर, लोकमात वज्जी वधाईआ। हरिजन जाए सरनी पड़, पंजां चोरां नाल लड़, पुरख अबिनाशी लए फड़, एका अक्खर जगत वक्खर रिहा पढ़ाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुरमुख वेखे अन्दर वड़, जोती खेल हरि रघुराईआ। दस्म दुआरी बैठा चढ़, कोई ना सके मात फड़, नौ दुआरे सर्ब हलकाईआ। साचे घाड़न रिहा घड़, बेमुख जीव जाण झड़, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी लए फड़, अग्न जोत जाण सड़, कलिजुग कालख मथ्थो लाईआ। गुरमुख साचे संत सुहेल, दरगाह साची साचे मेले, साची बणत हरि बणाईआ। अचरज खेल हरि जी खेले, आपे गुर आपे चेले, धर्म राए दी कटे जेले, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भेव रिहा छुपाईआ। आपणा भेव आप छुपाया। देवी देव किसे दिस ना आया। हरिजन विरला लाए सेव, आप आपणी दया कमाया। गुरमुख विरला गाए रसना जिहव, सोहँ साचा शब्द पढ़ाया। अमृत आत्म फल खवाए

साचा मेव, पुरीआं लोआं किसे हथ्थ ना आया। पुरख अबिनाशी अलख अभेव, घट घट वासा जोत प्रकाशा इक्क कराया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा संग निभाया। कलिजुग काले संग आप निभांयदा। इक्क चले अवल्लड़ी चाले, शब्द घोड़े तंग कसांयदा। फल दिसे ना किसे डाल्हे, उच्चे मन्दिर हरि जी ढाहिंदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाले, आप आपणी गोद उठांयदा। चरन प्रीती निभे नाले, दीपक जोती तन जगांयदा। काया मन्दिर इक्क वखाले, सच्चा धर्म अनहद शब्द धुन उपजांयदा। तन पहनाए साचा शब्द साची माले, धुर दरगाही गुंद लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, तीन लोक जगत धुंद अन्ध अंध्यार कर पसार विच संसार, आपणा पड़दा पांयदा। माया पड़दा पाए हरि बलवानया। ना कोई जाणे जीव नादान, भरमे भुल्ले जीव नादानया। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, घट घट वेखे वेख वखाणया। गुरमुख साचे वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी ना मात पछानया। आप बिठाए शब्द बिबाण, उडे उडावे वाली दो जहानया। हथ्थ फड़ाए धर्म निशान, चार कुन्ट दहि दिशा वेख वखानया। पुरीआं लोआं इक्क ज्ञान, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा होए हैरानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, छोटे बाले कर त्यार, नर हरि सच्ची सरकार, देवे माण भगत भगवान, आप मिटावे आवण जाणया। आवण जावण कट, भरम निवारया। दूई द्वैती मेटे फट, कर्म विचारया। जोती जगे काया मट्ट, वसे घट घट हरि निरंकारया। जगे दीपक घट घट, खुल्हे धर्म साचा हट्ट, सच्चा करे वणज वपारया। एका नाम रसना चट्ट,, तन पहनाए शब्द साचा पट्ट, गुरमुख लैण लाहा खट्ट, एका मिल्या तीर्थ तट्ट, सच सरोवर दस्म दुआरया। लक्ख चुरासी होई भठ, कलिजुग काया मीठा मट्ठ, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गए नठ, गंगा गोदावरी माण गंवा रिहा। आप गिड़ाए उलटी लठ्ठ, सतिजुग साचे तेरी चठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात मार झात बैठ इकांत आपे आप करा रिहा। बैठा इक्क इकांत खेल रचाईआ। हरिजन देवे अमृत बूंद स्वांत, काया ठंडी ठार कराईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, चिट्टे अस्व तंग कसाईआ। कलिजुग वेखे अन्धेरी रात, सोहँ बत्ती इक्क जगाईआ। प्रगट होए विच मात, झूठे जुग मिले वड्याईआ। करे खेल बहु बहु भांत, गुर गोबिन्दा लेख लिखाईआ। मेट मिटाए ज़ात पात, ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। एका शब्द पिलाए सीरथ, वेद पुराण दए दुहाईआ। नाम निरँजण साचा राथ, गुरमुख साचे रिहा चढ़ाईआ। कलिजुग काला टिक्का मस्तक माथ, खाणी बाणी मात कुरलाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद ना देवे साथ, चार यारां वक्त चुकाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, अञ्जील कुरानां पाए फाहीआ। जन भगत निभाए सगला साथ, सज्जण सुहेला आप अख्वाईआ। सतिजुग साचे तेरी गाथ, सोहँ शब्द मिले वड्याईआ। भाणा रक्खे

आपणे हाथ, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा हिलाईआ। अन्तिम सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, सिँघ मनजीते वंड वंडाईआ। जोती जामा घर दसरथ, कृष्ना काहना खेल रचाईआ। सगल वसूरे जाण लाथ, सति पुरख निरँजण जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साध संत रिहा जगाईआ। साध संत दया कमाए आप जगांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भरमे भरम भुलांयदा। ना कोई जाणे जीव जन्त, शब्द डंक ना कोई वजांयदा। भुल्ले रुल्ले राउ रंक, प्रगट होए वासी पुरी घनक, शब्द दमामा इक्क वजांयदा। हरिभगत वड्याई जिउँ जन जनक, द्वार बंक मात प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणे भाणे आप रहांयदा। आपणे भाणे आप समाए समरथया। साची रचना रिहा रचाए, बीस इक्कीसा हरि रघुराए, लक्ख चुरासी मथन मथया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, पूरन कामा आप कराए राज राजानां पाए नत्थया। शब्द घोड़ा इक्क रखाए, जुड़या जोड़ा हरि सरनाए, महिंमा अकथ कथन अकथया। कलिजुग वक्त रहि गया थोड़ा, माया राणी दए दुहाए धुर दरगाही आया दौड़ा, निहकलंकी जोत प्रगटाए। गगन पताली एका गेड़ा, ना कोई जाणे लम्बा चौड़ा, दिस किसे ना आए। प्रगट होया ब्राह्मण गौड़ा, कलिजुग वेले अन्तिम बौहड़ा, वेद व्यासा गया लिखाए। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग काया कौड़ा रीठा, अन्तिम भन्न वखाए। कलिजुग काली धार, मन बौरानया। मूर्ख मुग्ध गंवार जीव पछानया। पंज तत्तां करन प्यार, एका मिल्या पुरख सुजानया। ना कोई दे समझावे मता, पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणया। ना कोई धीरज ना कोई जता, ग्रन्थी पन्थी बेमुहानया। अल्ला राणी सिर उठाया पापां भत्ता, भुक्खी होई अञ्जील कुरानया। चारों कुन्ट पाणी तत्ता, कलिजुग कहर अन्त वरतानया। प्रगट होए कमलापाता, जोती जामा श्री भगवानया। लक्ख चुरासी सथ्थर लत्था, मारे तीर शब्द निशानया। लाड़ी मौत उठाए कंधी भथ्था, विंन्ही जाए राज राजानया। प्रभ अबिनाशी फड़ फड़ पाए नत्था, वड वडे शाह सुल्तानया। दूसर कोई ना दिसे पता, दहि दिशा होए वैरानया। एका शब्द चले साची कत्था, राग छतीस वक्त चुकानया। गुरदुआरा मन्दिर ना कोई टेके मत्था, आत्म हीण बेईमानीआ। प्रगट होए हरि समरथा, नर नरायण बली बलवानया। शब्द कटार फड़े हथ्था, मारे वारो वारी दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग काला वेस कर, तोड़े माण जगत अभिमानया। कलिजुग काला वेस कालख रंगया। जोती जामा माझे देस, मेट मिटाए शाह फिरंगीआ। आपे नर हरि नरेश, आपे घोड़े कसे तन्गाया। चार वरनां दर दरवेश, बण भिखारा नाम दान एका मंगया। आपे रक्खे खुल्हे केस, खड़े दर ब्रह्मा महेष विष्नूं गणेश, सोहँ वज्जे ढोल मृदन्गया। किसे ना चले कोई पेश,

दर दुआरा कोई ना लँघया। ना कोई मनाए गणपत गणेश, शिवदवाले भुक्ख नम्गया। जोती जामा हरि प्रवेश, देवे दरस दान मूंहों मंगया। बाल अवस्था अलड़ वरेस, वड दाता सूरा सरबंगया। जोती जगदी रहे हमेश, अमृत धार वहाए आत्म साची गंगया। आपे वेखे जीउ पिण्ड साचा देस, दस्म दुआरे मूल ना सन्गया। कलिजुग जीव लभ्भदे फिरन श्री दस्मेश, बण अकाली कोई निहन्गया। सति पुरख को सदा आदेस, प्रगट होए माझे देस, होए सहाई अंग सन्गया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे वेखे परखे माड़े चन्गया। आपे परखे हरि दलाल, गुरमुख साचे साचे लाल। बेमुख जीव भाण्डे काचे, पंजां तत्तां झूठी खाल। मानस देही बन्दर नाचे, शब्द ना वज्जे सच्चा ताल। आत्म तृष्ना लग्गी आंचे, अट्ठे पहर रहण कंगाल। हरि हरि नाम साचो साचे, ना मंगे कोई कर सवाल। पुरख अगम्मा ना कोई वाचे, फल ना दिसे किसे डाल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, एका मारे शब्द उछाल। शब्द उछल हरि भगवानया। आपे वेखे शाह कंगाल, विच जहानया। कवण दुआरे वज्जे ताल, अनहद धुनी नाद धुनकानया। लेखे लग्गे काया माटी खाल, हरि नर जिस पछानया। अमृत आत्म मारे छाल, दुरमति मैल दूर करानया। नाम अनमुल्लड़ा लए भाल, जगे जोत जगत महानया। दीपक जोती मस्तक साचे थाल, मिले मेल साचे श्री भगवानया। एका मिले नाम दलाल, साचा मेल मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दरगाह साची साचे घर गुरमुख साचे आपे आप बहानया। दरगाह साची सच द्वार। दरगाह साची अट्ठे पहर एका लहर सदा सुहेला ख़बरदार। ना कोई आए ऐर गैर, सति सतिवादी वसे शहर, मिले मेल मीत मुरार। जगे जोती गहर गम्भीर ना कोई पुरख ना कोई नार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल कलिजुग अन्तिम वार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, करे खेल हरि निरंकारया। जोती जामा भेख अपार, गुरमुखां करे प्यारया। लक्ख चुरासी पाए सार, अन्दरे अन्दर वेख वखा रिहा। लेखा लिखे हरि द्वार, काया मन्दिर अन्दर जन्दर आप तुड़ा रिहा। शब्द सरूपी महल्ल उसार, आत्म सेजा इक्क सुहा रिहा। सुत्ता रहे पैर पसार, दिवस रैण दिस किसे ना आ रिहा। नौ दुआरे वसे बाहर, कलिजुग जीव भरम आप भुला रिहा। दसवें मेला मीत मुरार, इक्क इकेला धाम सुहा रिहा। पुरख अबिनाशी साची कार, गुरमुख साची नार आप बणा रिहा। नार भतारा कर प्यार, शब्द शृंगारा तन करा रिहा। साचा पाए फूलन हार, गण गंधरब बरखा ला रिहा। पवण उनन्जा छत्र झुलार, हरि जगदीसा बीस इक्कीसा सीस सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, माया भरम जग भुला रिहा। माया भरम भुलाए, विच जहानया। मानस देही जन्म गंवाए, शाह

सुल्तानया। साधां संतां दए सजाए, होए अभिमानया। जूठे झूठे दए मिटाए वेले अन्त मेटे निशानया। खाली हथ्थ फड़ाए ठूठे, दर मंगण सेठ सिठाणया। गुरमुख आप मनाए रूठे, देवे शब्द ब्रह्म ज्ञानया। आत्म रस सदा सुख अनूठे, उपजे धुन अनाहद बानीआ। माता कुक्ख ना लटके पुट्ठे, लक्ख चुरासी फंद कटानया। पुरख अबिनाशी साचा तुट्ठे, जगे जोत विच जहानया। हरि संत मेले एका मुट्ठे, देवे माण चरन ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखानया। तन तीर्थ आत्म इशनान। हरि शब्द सीरथ ब्रह्म ज्ञान। प्रेम नीरथ गुर मेल मिलान। ना कोई वेखे शाह हकीरथ, ऊँच नीच ना राज राजान। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत वाली दो जहान। शब्द सीस ताज श्रृंगार। जगत जगदीस विच संसार। माया राणी रही पीस, लक्ख चुरासी होई विभचार। ना कोई कुरान ना कोई हदीस, वेद पुराण पैंदी मार। कवण करे प्रभ तेरी रीस, खाणी बाणी गई हार। एका छत्र झुल्ले हरि जगदीस, पवण उनन्जा छत्र झुलार। लेखा चुक्के बीस इक्कीस, अवतार चौबीस निहकलंक नरायण नर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग वसे, पुरीआं लोआं एका राह दस्से, नौ खण्ड वंड ब्रह्मण्ड पाए सार। पाए सार सर्ब घट वासीआ। जुगा जुगन्तर कर विचार, धरे जोत पुरख अबिनाशीआ। आवे जावे वारो वार, वड शाहो शाह शाबासीआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जगे घनकपुर वासीआ। निर्मल जोत कर अकार, जन भगतां करे बन्द खुलासीआ। देवे शब्द अपर अपार, सोहँ धीर हरि धरासीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, चरन सरन इक्क रखाए, वरन बरन आप हो जाए, जन भगतां करे मानस देही रहिरासीआ। मानस जन्म संवार, शब्द जणाईआ। कोटन कोट भरम निवार, आत्म तृखा हरि बुझाईआ। शब्द चोट काया तन नगार, अनहद ताल इक्क रखाईआ। तीजे लोचन वेख विचार, देवे दरस आप रघुराईआ। नौवें करे बन्द किवाड़, दसवें जोती इक्क जगाईआ। दसवें वेख महल्ल अपार, पारब्रह्म पुरख पसार, साची सेजा इक्क सुहाईआ। गुरमुख सुहागी साची नार, कन्त कन्तूहला शब्द झूला एका एक मात हंढाईआ। आप चुकाए अगला पिछला मूला, लक्ख चुरासी पार कराईआ। नाम शब्द सच त्रिसूला, शिव शंकर हथ्थ फड़ाईआ। प्रगट होए दूलो दूला, डंक अंक इक्क लगाईआ। दर दुआरे आए जो जन भूला, दरगाह साची मेल मिलाईआ। हरिजन लोकमात फलया फूला, फुल्ल फुलवाड़ी सतारां हाढ़ी आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कँवल फुल्ल आप मवल उप्पर धवल कृष्ना सँवल रंग वटाईआ। लाल रंग रंग मुरार। कलिजुग मंगी साची मंग, प्रगट होए विच संसार। शब्द घोड़े कस तंग, सोहँ पहने तेज़ कटार। चिट्टा अस्व मंगे मंग, नर नरायण

ख़बरदार। धर्म जैकारा इक्क मृदंग, चारों कुन्ट वज्जे वारो वार। आप निभाए आपणा संग, हरिजन बख़्शे चरन प्यार। गऊ गरीबां कटे भुक्ख नंग, आत्म दर दुआरे भरे इक्क भण्डार। वेख वखाणे शाह सुल्ताने जीव महाने शाह फरंग, रूसा चीना मेल भतार। कलिजुग औध गई लँघ, मात पताली हाहाकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, करे खेल विष्नूं भगवानया, लक्ख चुरासी रिहा विचार। विष्नूं भगवान भरम भुलाईआ। लक्ख चुरासी होई हैरान, कवण जामा कवण रामा, कवण शामा कवण दमामा रिहा वजाईआ। विष्नूं अंस ना आवण जाण, ना कोई जाणे पीण खाण, अचरज खेल हरि रचाईआ। लक्ख चुरासी पाए एका आण, कलिजुग माया नौ निध अठारां सिद्ध दए दुहाईआ। नौ अठारां भेव मिट जाण, सरन सरनाई इक्क भगवान, वेद अथर्बण सार ना पाईआ। कलिजुग काला इक्क निशान, बरन अठारां करे पछान, गुरमुख साचे संत सुहेले कवण कूटे हरि रखाईआ। हरिजन जन हरि सरनी डिग्गे आण, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा रिहा मात बन्ह्‌ाईआ। साचा बेड़ा कर त्यार, हरि कंधे आप उठाया ए। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पंजां चोरां घेरा पाया ए। ना कोई नारी ना कोई नार, ना कोई कन्त ना कोई भतार, हरि दातार नज़र किसे ना आया ए। जूठे झूठे जीव गंवार, माया लूठे विच संसार, काया भाण्डा खाली ठूठ्ठे खैर बन्दगी किसे ना पाया ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा काला वेस, जन भगतां दुआरे दर दरवेश, आपे नर आप नरेश, दस दस्मेश जोती रिहा जगाया ए। दस्मेश दहि दिश धाम। चारों कुन्ट रिहा नस्स, दिवस रैण रामा राम। अठ्ठे पहर रिहा झस, काया माटी झूठा चाम। गुरमुखां रिहा हिरदे वस, सोहँ जपाए साचा नाम। पंच पंचायण जाए नस्स, माया राणी एका ताम। शब्द मारे तीर कस, कोई ना लाए हरि जी दाम। आत्म प्याए अमृत निझर रस्स, मेट मिटाए अन्धेरी शाम। जोत प्रकाश कोट रवि ससि, एका एक हरी हरि नाम। दरस दिखाए प्रगट होए सरूप स्वच्छ। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरूप स्वच्छ। सरूप स्वच्छ स्वच्छ सरूपा। भेव जाणे मच्छ कच्छ, शाह सुल्तान वड वड भूपा। गुरमुख जगाए नस्स नस्स, बेमुखां दिस ना आए, ना कोई रंग ना कोई रूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत निरँजण पुरख अबिनाशी सति सरूपा। सति सरूप सर्ब घट मन्दिर। पवणी धूप जोत उजाला गुर गोपाला अन्दरे अन्दर। अमृत सीर तीजा नेत्र, अमृत जल धार डूंघी कन्दर। जन भगतां खोल्ह्‌े आत्म सोत, लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर। चुक्के भेव वरन गोत, मिले मेल निरँजण जोत, आत्म तुट्टे वज्जा हँकारी जन्दर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं

दे वसे अन्दर। मन चरन लग्न हरी द्वार। गुर वरनन भूपा दातार। जन जन जनण देवणहार सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त साध संत शब्द रक्खे भेव गुझ, उठाए श्री भगवानया। गुरमुख सुहेला इक्क इकेला चरन प्रीती गया लुझ, आत्म तृष्ना गई बुझ, मिल्या मेल हरि सज्जण सुहेल विच जहानया। जीव जन्त अग्न माया रहे भुज्ज, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात मार झात बैठ इकांत साध संत ना किसे पछाणया। साध संत ना करे विचार। माया पाई प्रभ बेअन्त, माया राणी चुकया भार। शब्द ना पाया साचा छंत, मिल्या मेल ना कन्त भतार। वेले अन्त अन्त भस्मंत, उडदी फिरे शार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाम धना, एका राग सुणाए कन्नां, तन पहनाए दया कमाए, आप आपणा सोहँ अक्खर जगत वक्खर, भगतन माला फूलन हार। भगतन माला हरि गुंदाईआ। लोआं पुरीआं वेख विचार, सोहणे सच्चे फुल्ल लै आईआ। मालण बणे हरि करतार, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश शिव शंकर बूटे लाईआ। आपे जाणे नर नरेश, लच्छमी चरन खुल्हे केस, लाल भूष्न फुल्ल कँवला हथ्थ उठाईआ। सुरपति राजा इन्द करे आदेस, करोड़ तेतीसा सेवा लाईआ। बाली बाला गुर दस्मेश, जगत रखवाला भगत प्रवेश, साची बणत रिहा बणाईआ। फुल फलवाड़ी गुर दस्मेश, जगत झण्डा शब्द डण्डा सिँघ जगदीशे रहे हमेश, प्रभ पाई वंडा भेव रहे ना राईआ। गुर संगत मात धर्म फुलवाड़ी कोई ना दीसे कंडा, प्रभ साची आप बणाईआ। सोहँ फड़या हथ्थ साचा कन्ढा, पूरे तोल रिहा तुलाईआ। गुरमुख बेमुख पायण वंडा, फूलन खारी नज़री आईआ। शब्द लपेटयां हरि जी खण्डा, नाम डण्डा दिस ना आईआ। बेमुखां वढ्ढे अन्तिम कंडां, गुरमुखां रिहा जगाईआ। वेखे खेल विच वरभण्डा, ब्रह्मण्डां रिहा हिलाईआ। गुर संगत भार वंडाया साची वंडां, सिँघ मनजीते सिर भार चुकाईआ। कलिजुग मेटे भेख पखण्डा, ज़ेरज़ अंडां वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां फूलन सेहरा सीस गुंदाईआ।

★ १२ भाद्रों २०१२ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाईपुर ज़िला अमृतसर ★

गुर मन्त्र कर प्यार मात पसारया। जपया जाप अजापा जप गुरू गुर जाप, गुर मन्त्र भेव न्यारया। जाणे जणाए आपे आप, अक्खर वक्खर इक्क सिखा रिहा। जोती जामा शब्द प्रताप, पाप पुन्न ना कोई वखा रिहा। लक्ख चुरासी रही कांप, कलिजुग काला वेस वटा रिहा। माया राणी चढ़या तैनूं ताप, साचा जाप जगत भुला रिहा। ना कोई माई ना कोई बाप, पुत्तर धी ना कोई अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साध

संत हरि जगा रिहा। साध संत हरि जणाईआ। जोती जामा भेख वटाईआ। ना कोई रूप ना कोई रेख, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी भुल्ली भरम भुलेख, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख, ज्ञानी ध्यानी पंडत पांधे, प्रभ अबिनाशी सार ना पाईआ। माया राणी आत्म अन्धे, पंजां चोरां तन मन बांधे, साचा शब्द ना कोई जणाईआ। गुर गोबिन्दा वेख वखांदे, कलिजुग अन्तिम थक्के मांदे, आत्म दर ना कोई सहाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख साचे संत सुहेले इक्क इकेले नर नरायण दर दुआरे साचे बहिणा, रसना गाए आत्म जोती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा रिहा लिखाईआ। कलिजुग काली रैण वक्त दुहागया। माया राणी वड वड डैण, गुरमुख विरला सोया जागया। दरस पेखे तीजे नैण, आत्म बुझाए तृष्ना आग्ना। रसना किसे ना सके कहण, दर दुआरा एका छुट्टा, नौ दुआरे फिरे भागया। आप वहाए वहिंदे वहिण, चरन कँवल कँवल चरन हरि सरन ना कोई जन लागया। ना कोई मात पित ना भाई भैण, माया नागनी डस्से डैण, ना कोई मेल मिलाए कन्त सुहागया। कलिजुग अन्तिम चुकाए लहिण देण, मेट मिटाए अन्धेरी रैण, धरत मात तेरा साचा पूत सतिजुग सोया जागया। पुरख अबिनाशी आप परोए साचे सूत, वेख वखाणे चारे कूट, दहि दिश सुणाए एका सच्चा रागया। हरिजन जन हरि लक्ख चुरासी जाए छूट, पंजां चोरां कढ्ढे कूट, सरन सरनाई इक्क रघुराई, आत्म दर वज्जी वधाई, पवण सुनेहड़ा चांईं चांईं, जो जन जगत पित जगदीशर सरनाई लागया। सतिजुग साचा उठ वेख वखानया। पुरख अबिनाशी पया तुट्ठ, जगाए गुरमुख बाल अञ्याणया। लक्ख चुरासी रिहा कुट्ठ, तख्तों लाहे राजे राणयां। किसे हथ्थ ना आए नाम मुट्ठ, मेट मिटाए वेद पुराणया। बेमुख जीव रहे रुट्ठ, एका भुल्लया हरि भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेट मिटाए शाह सुल्तान वड बलवान विच जहान वाली दो जहानया। वाली दो जहान खेल निरंकारया। आपे जाणे आपणी आण, ना कोई सके मात पछाण, आवण जावण खेल अपारया। भेखाधारी बावन बाम, जोती जामा रमईआ राम, पूरन करे आपणे काम, कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, जोती नूर गुण निधानया। गुरमुखां लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चाम, अमृत प्याए एका जाम, बेमुख भुंने जिउँ भठयाले दाणया। लक्ख चुरासी लाड़ी मौत एका ताम, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेख रेख हरि, दिस ना आए वड सुघड़ स्याणया। वड वड सुघड़ स्याणे भरम भुलाया। ज्ञानी ध्यानी करन ध्यान, पुरख अबिनाशी खुशी मनाया। मुल्लां काज़ी पढ़ पढ़ थक्के अंजील कुरान, ईसा मूसा लेख लिखाया। खाणी बाणी करे हैरान, भरमे भुल्ले माया रुल्ले, पाणी प्या काया चुल्हे अमृत आत्म सभ दे डुल्हे, दर दरवेशा आदि पुरख अपरम्पर

स्वामी काल कलेशा नज़री आया। शब्द रक्खे तीर निशान, पावे सार वेद पुराण, करे खेल दो जहान, पुरीआं लोआं रिहा हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा करे तेज, शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, गुरमुख आत्म विछाई फूला सेज, पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत प्रकाशी साचे धाम एका आसण सच सिँघासण दास दासण लाया। दासी दास दरस दर द्वारया। हर घट रक्खे वास, खेल अपारया। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, अमृत धारा काया मट, दस्म दुआरी धाम सुहा रिहा। गुरमुख विरला रसना रस लए चट्ट,, जोती जगे लट लट, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। शब्द वखाए साचा पट, दूई द्वैती मेटे फट, अन्दर मन्दिर नाम हट्ट, गुरमुख वणजारा आप करा रिहा। लक्ख चुरासी पैणी भट्ठ, उलटी गिड़ी कलिजुग लट्ठ, मिट मिट जाणे अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी माण गंवा रिहा। हरि दुआरे इक्क इक्ट्ठ, पल्ले बन्ने नाम गट्ठ, कलिजुग अन्तिम तेरी चट्ठ, सतिजुग साचा मात धरा रिहा। गुरमुख विरले आयण नठ्ठ, मिले मेल हरि समरथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, शब्द पाए नक्क साची नत्थ, डोरी आपणी हथ्थ रखा रिहा। जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, महिंमा हरि अकथ, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, जोत जगाए इक्क बस्त्र, पृथ्वी अकाश गगन गगनंतर, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला वेस दर दरवेश आपणा आप वटा रिहा। कलिजुग काला वेस काल वखाईआ। जोती जामा माझे देस, वेस अनेकां हरि रघुराईआ। ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष, शिव शंकर सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा सार ना पाईआ। आवे मात हमेश, मुच्छ दाढ़ी ना रक्खे केस, जोती नूर शब्द वड्याईआ। उज्जल तन हरि प्रवेश, मिटदे जाण दर दरवेश, तन कलन्दर आप अख्वाईआ। आप भुलाए नर नरेश, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेख रिहा वटाईआ। गुर गोबिन्दे भेख वटाया ए। जन भगतां मिटाए सगली चिन्दे, आत्म जोती दरस दिखाया ए। आप उपजाए साची बिन्दे, रक्त बूंद तन लेखे लाया ए। दर दर घर घर करन निन्दे, आत्म वज्जे हँकारी जिंदे, प्रभ आपणा भेव छुपाया ए। प्रगट होए हरि मृगिन्दे, भाग लगाए भारत हिन्दे, राज राजानां रिहा सुणाया ए। हरिभगत मिटाए आत्म चिन्दे, सर्ब जीआं आपे बख्शिंदे, एका दूजा भेव चुकाया ए। चार वरन रक्खे सरन वड दाता हरि गुणी गहिंदे, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रंगण रंग नाम रंगाया ए। रंगण रंग अपार, काया चोली प्रभ रंगाईआ। गुरमुखां करे प्यार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। आत्म जोती कर अकार, दूजी देवे शब्द धार, तीजे पवण स्वासे रिहा जपाईआ। चौथे वेख वखाणे सच दरबार, संत सुहेले एका वर, पंचम घर सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। ना मरे ना जम्मे विच संसार, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, ना कोई पवण

स्वासी वसे ब्रह्मण्ड, खण्ड वरभण्ड शब्द अधारा इक्क रखाईआ। लोआं पुरीआं पावे वंडे, कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, गुरमुखां आत्म रखे ठंडे, अमृत साचा जाम प्याईआ। धर्म झुलाए एका झण्डे, मेट मिटाए भेख पखण्डे, आत्म हँकारी जीव रंडे, चारों कुंट दिस ना आईआ। आप चढ़ाए साचे डण्डे, दस्म दुआरी काया पिण्ड सच ब्रह्मण्डे, साचा धाम इक्क सुहाईआ। वेख वखाणे उत्भज सेत्ज जेरज अंडे, आदि अन्त हरि वड्याईआ। आप उठाए शब्द खण्डे, चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्डे, लाड़ी मौत हरि उठाईआ। कलिजुग औध अन्तिम हंढे, बेमुखां भार उठाए पंडे, काम क्रोध लोभ मोह हँकार चारों कुन्ट दए दुहाईआ। नाम निधाना कोई ना वंडे, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात मार झात इक्क इकांत हरि इकल्ला सच महल्ला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थला, पुरीआं लोआं मात पताल अकाश गगन, जोती नूर एका लग्न, जन भगतां मुख लगाए शब्द सगन, कलिजुग काया लगी अग्न, लक्ख चुरासी मात दगन, अचरज खेल रिहा वरताईआ। अचरज खेल हरि हरि अपारया। गुरमुख विरले जोती मेल, आत्म दर इक्क खुल्हा रिहा। शब्द बणाए सज्जण सुहेल, साचा वेला आप सुहा रिहा। दरस दिखाए इक्क अकेल, रंग नवेल दिस ना आ रिहा। आपे गुर आपे चेल, गुर गोबिन्दा भेख वटा रिहा। कलिजुग बेड़ा रिहा ठेल, शौह दरया धक्का ला रिहा। पारब्रह्म प्रभ अचरज खेल, आपणे भाणे आप समा रिहा। जन भगतां कटे धर्म राए दी जेल्ह, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। शब्द चढ़ाए साचा तेल, नाम वटना इक्क लगा रिहा। लाड़ी जोती होणा मेल, आत्म सेजा इक्क विछा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणे भाणे आप समा रिहा। आत्म सेजा कर विचार, प्रभ साचे मात विछाईआ। गुरमुख साचे हो त्यार, प्रभ साचा राह वखाईआ। अमृत बरखे किरपा धार, निझर रस मुख चुआईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, सुन्न अगम्मो बाहर रखाईआ। शब्द घोड़ा पवण उडार, उनन्जा पवण संग रलाईआ। पवण पती प्रभ पाए सार, साचा शब्द इक्क जणाईआ। साचा शब्द अगम्म अपार, दिस किसे ना आईआ। करनी करे करनहार करतार, दस्म दुआरी आप खुल्हाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, मिटाए अग्नी हाढ़, तत्ती वा ना कोई रखाईआ। पंचां चोरां देवे झाड़, आप चबाए आपणी दाढ़, नेड़ ना आए मौत लाड़, गुरमुख साचे धाम सुहाईआ। आप फिरे पिच्छे अगाड़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, दर दुआरे देवे वाड़, पहरेदार आप अख्वाईआ। साची सेजा कर त्यार, पुरख अबिनाशी अन्ध अंध्यार, दीपक जोती इक्क उज्यार, शब्द मोती फूलनहार, ना कोई वरन ना कोई गोती, मिले मेल हरि मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म सेजा शब्द सिँघासण आपे रिहा सवाईआ। शब्द

सिँघासण देवे लोरी। साध संत जीव जन्त ना कोई जाणे अन्ध घोरी। माया पाए हरि बेअन्त, किसे दिस ना आए साचा कन्त, तन मन सुरत ना बन्ने शब्द डोरी। आपे जाणे आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त साजन साज देस माझ आप करे आपणा काज, बेमुखां कोलों करे चोरी। बेमुख निन्दक दुष्ट दुराचार, आत्म हंकारया। जोत निरँजण ना पाए सार, कवण जोती कवण गोती कवण वसे दर द्वारया। वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास्सया। निज घर रक्खे वास, भगत जनां हरि दासन दास, आदि अन्त ना होए विनास, साचा कर्म मात धर्म जगत भरम माया वरम तन एका एक लगा रिहा। गुरमुखां खोल्हे हरन फरन, इक्क रखाए साची सरन, पुरख अबिनाशी तरनी तरन, आप चुकाए मरन डरन, नर नरायण दरस दिखाए तीजे नैणां, स्वच्छ सरूपा वड वड भूपा, करे प्रकाश अन्ध अन्धकूपा, निर्मल जोती इक्क इकलौती आपणी आप जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण जोत बिराजे, चढ़या रहे शब्द घोड़े चिट्टे अस्व चिट्टे ताजे, राजन राज आपे आप अख्वा रिहा। चार वरन दर यात्रा, हरि हरि चरन द्वार। शब्द पाए तन साचा गात्रा, अट्ठे पहर पहरेदार। नाम लाए साची मात्रा, मीत मुरारा आप सच्ची सरकार। वसे बाहर वेद शास्त्रां, कथनी कथ ना सके विच संसार। करे खेल बहु बहु भातरां, रथ समरथ अपर अपार। हरि जन जन हरि इक्क बन्न्हाए चरनी नातरा, आदि आदि आदि पुरख अन्त अन्त अन्त सहार। चार वरन गलवकड़ी, चरन कँवल हरि मीत। शब्द फड़े हथ्थ तक्कड़ी, सदी बीसवीं रही बीत। बेमुख जीवां काया आत्म अक्कड़ी, अट्ठे पहर अपुट्ठी नीत। माया राणी शब्द जंजीरी जकड़ी, ना कोई जाणे वेला प्रभात। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां वेखे मार झात। चार वरन जग मीत, नर निरंकारया। सतिजुग अवल्लड़ी रीत, ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत ना गुरूद्वारया। नर नरायण आत्म चीत, सच लहिणा मेल भतारया। सदा सुहेला काया रक्खे ठंडी सीत, काया सोहे अस्थिल इक्क चुबारया। मानस देही लैणी जीत, रसना नांउँ हरि हरि उचारया। एका गाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर भगत उधारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां वेखे साचे घर दर द्वारया। चार वरन चार कुन्ट चार चुफेरया। प्रभ अबिनाशी उठ उठ रिहा वेख, जोती जामा धरया भेख, आपे लेख मात लिखारा आप आप अख्वा रिहा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, साध संत रहे वेख, कवण कूटे पुरख अबिनाशी जोत जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस कर, काली शाही मस्तक टिक्का बेमुखां तन ला रिहा। मस्तक टिक्का काली रेख, हरि साचे आप लगाईआ। आत्म दर कोई ना सके वेख, हउमे हँगता अग्न तन जलाईआ। ना कोई

वेखे आपणा लेख, पूरन बूझ ना कोई बुझाईआ। गुरमुख साचे संत जनां आप लिखाई धुर दरगाही एका रेख, वेले अन्तिम मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। एका इक्क भगवान, दो जहानया। एका एक निशाना खेल महानया। एका एक बीना दाना, वड वड दानया। एका एक पीणा खाणा, रसना रस इक्क वखानया। एका एक आदि अन्त टेक, आपे रहे सदा बुध बिबेक, जीव जन्त ना दिसे कोई निशानया। एका एक इक्क निशानी। एका एक वड विद्वानी। एका एक चतुर्भुज आत्म दाता शब्द ज्ञानी। एका एक भेव रखाए गुज्झ, जुगा जुगन्तर खेल नूरानी। एका एक लक्ख चुरासी रिहा बुज्झ, पारब्रह्म पुरख सुल्तानी। जोती जोत सरूप हरि, एका नाउँ सर्ब थांउँ जाणे बूझ ब्रह्म ज्ञानी। एका एक इक्क अकारा। शब्द टेक जगत जैकारा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आपे वसे धुँदूकारा। लक्ख चुरासी लिखे रेख, ना कोई जाणे लेख लिखारा। मस्तक साची लाए मेख, दीपक जोती कर उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे धाम न्यारा। एका एक इक्क हरि द्वारया। सृष्ट सबाई मंगे भिक्ख, फूलनहार सर्ब संसारया। ना कोई जाणे मुन रिख, ब्रह्मा वेद ना पाए भेद, पारब्रह्म ब्रह्म पार ना पाए सारया। आपे लेख रिहा लिख, अक्खर वक्खर ना कोई जाणे, खाणी बाणी दो जहानी जुगो जुग आपणी आप सुणा रिहा। हरि शब्द बुझाए आत्म तृख, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका एक रंग अनेक कर कर भेस आप वखा रिहा। एका एक आत्म धार, शब्द जैकार हरि जणाईआ। जोती नूर कर अकार, खुल्हे भेव दस्म दुआर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। निर्मल नीर अमृत धार, साचा शब्द कर प्यार, गुरमुखां मुख चुआईआ। पंजां तत्तां वसे बाहर, धीरज जता सति संतोख आत्म मोख धर्म गाणा जगत निशाना एका हथ्थ बन्न्हाईआ। आपे आप मेहरबाना, करे खेल दो जहाना, तिन्नां लोआं एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग आपे रिहा भवाईआ। इक्क इकल्ला बहु रंग रूप्या। लक्ख चुरासी वसे संग, दिस ना आए शाहो भूप्या। शब्द सरूपी जीव जन्त पतंग, रक्खे हथ्थ विच अन्ध कूप्या। माया राणी करे मंग, घर घर धुखदे पए धूप्या। गुरमुख विरले आत्म दर वज्जे मृदंग, मिले मेल शब्द सति सरूप्या। साध संत होए नंग, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका धागा जगत परोए, ना कोई वेखे साचा सूतया। साचा सूत्र तन मन वट्ट। साध संत जीव जन्त हर हर जाणे घट घट। कवण दुआरे कन्त, कवण जिह्वा मणीआ मंत, कवण तन रंग बसंत, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, लक्ख चुरासी धर्म राए दी देवे फाँसी, मेट मिटाए मदिरा मासी, चार कुन्ट दहि दिशा इक्क चलाए सोहँ शब्द सुहागी गीत। सोहँ सुहागी छंत आप जणाया। सतिजुग बणाए साची बणत,

२४८ ०५

भेख वटाया। कलिजुग तेरा आप कराए अन्त, शाह सुल्ताना रिहा भुलाया। हरिजन मिलाए साचे कन्त, आप आपणा मेल रिहा कराया। काया खिड़े सच्ची बसंत, साची रुत्तड़ी आप सुहाया। महिंमा जगत गणत अगणत, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, साध संत रिहा जगाया। साध संत कलि जाणा जाग। एका वज्जा हँकारी जन्दर, आत्म जोती बुझी चिराग। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, कलिजुग काले लौहण आया दाग। साचे संत शब्द जणाईआ। कलि माया पाई बेअन्त, वाग पंजां हथ्थ फड़ाईआ। वेला नेड़े आया अन्त, क्यों मस्तक लाई छाहीआ। अन्त विछोड़ा इक्क भगवन्त, युग चौथे रहे जुदाईआ। ना कोई बणाए मात बणत, सुरती घोड़े रिहा दुड़ाईआ। भरम भुलाया जीव जन्त, कथनी कथा कथ कथ रिहा सुणाईआ। कवण दुआरे वसे साचा संत, कवण दुआरे मेल अन्त, हरि जोती जोत रिहा मेल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द हलूणा इक्को मार, संत सुहेले रिहा जगाईआ। हरि शब्द अडोल, गुर जणाईआ। गुर शब्द अनमोल, सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई रिहा तोल, वडी वड्याईआ। गुरमुखां सद वसे कोल, बेमुखां दिस ना आईआ। भाग लगाए काया चोल, धुनी नाद इक्क वजाईआ। नाम मृदंगा साचा ढोल, नाद अनाहत आप वजाईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, सुन्न मुन आप तुड़ाईआ। दस्म दुआरी पड़दे खोल्ह, अन्ध अंध्यारी मेट मिटाईआ। हरिजन मिले नाम हरि अनमोल, वस्त दस्त इक्क रघुराईआ। गुरमुख साचे लाल विरोल, हरि साचा वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्द मेल कर, भुगत भगत आप जणाईआ। हरि शब्द अथाह बेपरवाहीआ। गुर शब्द जगत मलाह, भेव ना राईआ। होए सहाई सभनी थाँ, एका धार आप वहाईआ। ना कोई जाणे पिता माँ, पुत्तर धीआं ना कोई जणाईआ। गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँ, दिवस रैण अमृत धार प्याईआ। अमृत दर दुआरा साचे थाँ, बजर कपाटी पाड़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्द मेल कर, भगत भगवन्त संत असंत जीव जन्त बाहर रखाईआ। हरि शब्द अलक्ख, अलक्खना लख्या। गुर का शब्द प्रतक्ख, गुरमुख साचे रसना चख्या। वेले अन्तिम लए रक्ख, देवे हथ्थ सिर समरथ्या। पंचम चोरां पाए नत्थ, अन्दरे अन्दर आपे आप मथ्या। पुरख अबिनाशी महिंमा अकथ, कथनी कथ ना किसे कथ्या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जोती शब्द मेल हरि, जगत चलाए एका रथ्या। हरि शब्द अपार गुरद्वारया। गुर शब्द अपार, जगत अधारया। गुरमुख उधरे पार, जिस रसना नाउँ उचारया। जुगा जुगन्तर साची कार, आदि अन्त ना पारावारया। आपे बन्न्हे आपणी धार, ना कोई मंगे होर सहारया। आपे पुरख आपे नार, आपे जोती शब्द अधार, आपे पवण स्वासी

होई उडारया। आपे लक्ख चुरासी जन्म रहिरासी करे बन्द खुलासी, काल महांकाल ना आए दर द्वारया। जगे जोत पृथ्वी अकाशी, चौदां हट्टां तीर्थ तट्टां कर वणजारया। भगत जनां हरि दासन दासी, चार कुन्ट दहि दिश हरि रसन स्वासी, जोती नूर अपर अपारया। किसे हथ्थ ना आए पंडत कांशी, फिर फिर थक्के मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर वेख विचारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जोती शब्द मेल हरि, आपे वणज आपे वणजारया। हरि शब्द अपार रूप अगम्मड़ा। ना कोई जाणे जन्त गंवार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साधां संतां आई हार, माया राणी होई त्यार, चारों कुन्ट फिर फिर थक्के ना कोई सज्जण मीत मुरार। वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्के, मुल्ला काजी विच मक्के अञ्जील कुरानां पैंदी मार। धरत मात दिवस रैण दूर दुराडा एका राह पुरख अबिनाशी तक्के जोत निरँजण तेरा अंजन शब्द सुनेहड़ा आपे कटे कलिजुग जेड़ा, वेले अन्तिम किरपा धार। हक्को हक्क निबेड़ा, लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा, जूठा झूठा काया नगर खेड़ा, ना कोई करे जीव गंवार। दिवस रैण एका झेड़ा दन्द बतीसा भेड़ भेड़ा, राग छतीसा लाए उखेड़ा, बीस इक्कीस खुल्ह्रा वेहड़ा, करे खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जोती शब्द मेल कर, शब्द घोड़ा कर त्यार। शब्द घोड़ा हरि रखांयदा। चिट्टा अस्व चिट्टा घोड़ा चिट्टा जोड़ा, धुर दरगाही आया दौड़ा, वेख वखाणे मिट्ठा कौड़ा, राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहान बेईमान, पहला पौड़ा आप उठांयदा। करे खेल अन्त महान, मिटदे जाण कलि निशान, ना कोई पढ़े हदीस कुरान, वेद पुराण ना कोई रसना गांयदा। खाणी बाणी होई हैरान, चारों कुन्ट मारे ध्यान, गुर गोबिन्दा जोत महान, आत्म शक्ती खेल महान, पूरन भगती गुरमुख विरला पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जोती शब्द मेल हरि, साची बणत बणांयदा। गुर गोबिन्दे भेख वटाया ए। प्रगट होए हरि मृगिन्दे, दिस किसे ना आया ए। आत्म वज्जे घर घर जिंदे, ना किसे दर खुल्ह्राया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, सम्बल देस वसाया ए। सम्बल देस नगर अपारा ए। साचा वजे शब्द नगारा ए। दिवस रैण जोती नूर कर उज्यार, भरया शब्द भण्डारा ए। अट्ठे पहर पवण घोड़े चिट्टे अस्व हरि अस्वार, चार कुन्ट दहि दिशे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए दरस दिखाए। साची नगरी डेरा लाया, हरि साची रचन रचाईआ। गुर गोबिन्दे लेख लिखाया, गौड़ ब्राह्मण दिस ना आया, वेद व्यासा गया लिखाईआ। धुर दरगाही आया जामन, शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, जिस जन दया कमाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी शामन, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया ए। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, पुरख अबिनाशी जामा पाया ए। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस हरि आपणा

आप कराया ए। सम्बल देस हरि उज्यारा ए। छेवें जो जन पार किनारा ए। आपे खाए काया भोजन, आपे देवे शब्द अधारा है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां इक्क वखाए साचा सच दुआरा है। सच द्वार वखांयदा। नावें दर बन्द करांयदा। प्रगट होए साचे घर, जोती नूर इक्क कर, ना जन्मे ना जाए मर, आप आपणे विच समांयदा। लक्ख चुरासी गई हर, ना कोई नारी ना कोई नर, बेमुख भौंदे घर घर बन्दर, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां चुकाए जम का डर, चरन सरन जन जाए तर, एका एक रिहा कर, चार वरन अठारां बरन, वरन अवरनां एका रंग रंगांयदा। गुर मन्त्र अमोल शब्द जणाईआ। गुर मन्त्र अतोल, ना सके कोई तुलाईआ। गुर मन्त्र अडोल, ना कोए मात डुलाईआ। गुर मन्त्र अनभोल, असुत्ते प्रकाश कराईआ। गुर मन्त्र सद वसे कोल, अस्त्र शस्त्र ना कोई रखाईआ। गुर मन्त्र दिवस रैण वजाए सच्चा ढोल, जगत मृदंग ना कोई रखाईआ। गुर शब्द सद्द वसे कोल, साचा राह वखाईआ। गुर मन्त्र वखाए काया चोलृ, रंगण इक्क मजीठ चढ़ाईआ। गुर मन्त्र बहत्तर नाड़ी तिन्न सौ सट्ठ हाडी रिहा विरोल, गुरमुख साचे माणक मोती आत्म सोई उठाईआ। गुर मन्त्र दुआरा दूई द्वैती देवे पड़दे खोलृ, एका दर रिहा वखाईआ। गुर मन्त्र बणाए बणतर जुगा जुगन्तर गुरमुख साचे संत जनां जोती मेल मिलाईआ। गुर मन्त्र अपार, सर्ब घट वास्सया। गुर मन्त्र अपार, गुरमुख चलाए रसना रसन स्वास स्वास्सया। गुर मन्त्र गुर कीरत धार, आत्म लाहे जगत उदासीआ। गुर मन्त्र आत्म सीरत इक्क अपार मानस जन्म करे रहिरासीआ। गुर मन्त्र कढ्ढे हउमे पीड़त, उडे उडाए विच अकास्सया। गुर मन्त्र गुर शब्द अधार, जोती मेल हरि करतार, लक्ख चुरासी कटे फाँसी, फंद कटाए गर्भ वासीआ। गुर मन्त्र गुर धार आप जणांयदा। गुरमुखां कर्म विचार, हरि आपे चरनी लांयदा। मानस देही पैज संवार, शब्द तीर बजर कपाटी चीर, एका वार पार करांयदा। अमृत आत्म देवे साचा नीर, आप चढ़ाए एका चोटी सिखर अख़ीर, पल्लू नाम इक्क फड़ांयदा। अन्दर मन्दिर कटे भीड़, आपे आप बन्न्हे बीड़, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। ना कोई जाणे हस्त कीड़, शब्द वेलणे रिहा पीड़, पंचम पंजां नष्ट करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग क्रिया कर्म कमांयदा। गुर मन्त्र गुर दीन घट घट वास्सया। चार वरन एका ईण, सांतक सांत ठांडा सीन, मेल मिलाए पुरख अबिनाशया। गुर मन्त्र चले रूसा चीन, गगन पताली भन्ने हँकारी बीन, वेख वखाणे पृथ्वी अकास्सया। गुर मन्त्र लक्ख चुरासी सदा अधीन, गुरमुख विरोले आत्म रस रसना पीण, बेमुखां दर दर घर घर होए हास्सया। मनमुख होए नेत्र हीण, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे सगली रास्सया। गुर मन्त्र गुर जोत जगत धराईआ। मेट मिटाए वरन गोत, चारे वरनां रिहा सुणाईआ। दुरमति मैल

रिहा धोत, काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। शब्द भण्डारा रक्खे अतोट, दिवस रैण रिहा वरताईआ। तन नगारे वज्जे चोट, शब्द डण्डा रिहा उठाईआ। हउमे कढ्ढे काया खोट, भाण्डा भरम रिहा भंनाईआ। कलिजुग जीव आलृणिओ डिग्गे बोट, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलि कलन्दर आप अख्वाईआ। कलिजुग काला रंग काला सूस्सया। चारों कुन्ट भुक्ख नंग, मेट मिटाए ईसा मूस्सया। शब्द डोरी लक्ख चुरासी चढ़ी पतंग, वेख वखाणे अन्ध कूप्या। दहि दिश कराए अन्तिम भंग, मेल मिलाए चीना रूस्सया। माया राणी वेखे जंग, अष्टभुज फुरके अंग, आप उठाए शाह अबनूस्सया। शब्द घोड़े कस तंग, सोहँ वजाए इक्क मृदंग, उलटी वहे मात गंग, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस हरि, तन छुहाए काला सूस्सया। कलिजुग काली रैण दए दुहाईआ। माया राणी खाए डैण, साधां संतां जीआं जन्तां सार ना पाईआ। नाता तुट्टे भाई भैण, ना कोई साक सज्जण सैण, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। जन भगत चुकाए लहिण देण, दरस दिखाए तीजे नैण, स्वच्छ सरूपी हरि रघुराईआ। बेमुख वहाए वहिंदे वहिण, एका धक्का रिहा लगाईआ। रसना किसे ना सके कहण, मदीना मक्का पहले ढाहीआ। चारों कुन्ट पैण वैण, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस हरि, कालख टिक्का रिहा लगाईआ। कलिजुग काली धार, कल कुलवन्तया। चारों कुन्ट हाहाकार, ना कोई पावे किसे सार, माया भुल्ले जीव जन्तया। वेले अन्तिम पावे सार, ना कोई पती ना कोई नार, ना कोई दिसे साचा कन्तया। लक्ख चुरासी होई विभचार, नौ दुआरे रही झक्ख मार, दस्म प्रतक्ख हरि निरँकार, ना जाणे कोई परीख्या। कवण जोती शब्द श्रृंगार, गुरमुख साचे माणक मोती हरि द्वार, हरि शब्द सुणाए साची सीख्या। मिले मेल कन्त भतार, आत्म सेजा पैर पसार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग रगन्तया। कलिजुग काला रंग, कर्म विचारया। अन्तिम वेले होए नंग, ना कोई धर्म सुहा रिहा। जूठा झूठा मात कुटम्ब, भरमे भुल्ले माया रुल्ले, आत्म दर साचा हरि ना किसे विचारया। शब्द भण्डारे हरि दर खुल्ल्हे, गुरमुख विरले लैण अनमुल्ले, करे कराए वणज सच्चा वपारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेखे रेख हरि, कवण दुआरे शब्द जैकारया। शब्द जैकारा कवण द्वार। कवण दुआरा शब्द अधार। कवण घर बाहरा विच संसार। अमृत मेघ बरसे सवण, पवण चले ठंडी ठार। भेखाधारी भेख बवन, वल छल अपर अपार। ना कोई जाणे देव यमन, शब्द खण्डा हथ्थ दातार। नाम दामनी चमके दमन, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। मेट मिटाए कामनी कामन, शब्द कराए तन श्रृंगार। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, आप आपणी कर विचार। करे खेल घनईआ शामन, दो दो धार वहिंदी

२५२
०५

धार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, जोती नूर कर अकार। जोती नूर हरि निरँकार, कलिजुग वेख वखाणया। शब्द घोड़ा कर त्यार, पकड़ उठाए राजे राणया। सोहँ डण्डा हरि दातार, पाए वंडा विच संसार वड जरवाणया। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, वेख वखाणे नौ नौं खण्डां, ब्रह्मण्डां जाण पछाणया। पाए वंडां विच वरभण्डां, सत्तां दीपां वंड वंडाणया। ना कोई पूजे करीर जंडा, मेट मिटाए भेख पखण्डा, एका एक श्री भगवानया। आपे जाणे जेरज अंडा, सेत्ज उत्भज खाणी बाणीआ। चार कुन्ट चलाए चण्ड प्रचण्डा, बेमुखां वढ्ढे अन्तिम गंढ्ढा, साचा राह कोई ना वेखे मुगल पठाणीआ। लक्ख चुरासी देवण आया दंडा, मेट मिटाए अञ्जील कुरानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आपे जाणे आपणी बाणीआ। नौ खण्ड पाए वंड, हरि भगवानया। शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड, दो जहानया। बेमुख जीव नार रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढानया। आत्म भरया इक्क घमंड, पंज लग्गे मगर शैतानया। गुरमुख विरले आत्म ठंड, कोटन इक्क विच ब्रह्मण्ड, जिस आपणा आप पछानया। कलिजुग औध गई हंढ, ना कोई पावे भेद वेद पुराणी जगत ज्ञानीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेख वखाणे राज राजान विच जहान, मेट मिटाए शाह सुल्तानया। ना कोई शाह ना सुल्तान, तख्त ताज ना कोई रखांयदा। वेख वखाणे वाली दो जहान, शब्द बाज इक्क उडांयदा। कलिजुग तेरी कोई ना रक्खे लाज, लूल्ला लंगढ़ा अन्त अपाहज, शब्द डण्डा ना कोए हथ्थ फड़ांयदा। लक्ख चुरासी पैणी भाज, राज राजानां लत्थे ताज, करे खेल देस माझ, दिस किसे ना आंयदा। आपे साजन रिहा साज, शब्द सरूपी मारे अवाज़, गुरमुखां अन्तिम रक्खे लाज, शब्द पल्ला हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, आप आपणा काज रचांयदा। कलिजुग रच्चया काज, हरि रचाया। वेखे खेल कल कि आज, लाड़ी मौत रिहा उठाया। शब्द सेहरा रक्खे सीस ताज, साचा हुक्म रिहा सुणाया। गुरमुखां रक्खणी मात लाज, दर दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेख रेख हरि, कलिजुग बेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग रचया काज, लाड़ी मौत नाल कुड़माईआ। राज राजानां लाहे ताज, छत्र सीस ना कोई झुलाईआ। ना कोई पकड़े किसे वाग, चार वरन रहे कुरलाईआ। माया राणी लग्गे दाग, वेले अन्त ना कोई धवाईआ। होए विछोड़ा कन्त सुहाग, रंडप रंड सर्ब अख्वाईआ। अट्ठे पहर ममता आग, दिवस रैण रही सताईआ। आत्म जोती बुझे चिराग, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख विरला जाए जाग, प्रभ अबिनाशी पकड़े वाग, साचा मन्त्र शब्द जणाईआ। हँस बणाए हरि हरि काग, आपे धोए पिछले दाग, इक्क उपजाए साचा राग, धुनी नाद अनहद रिहा

वजाईआ। भगत वणजारा हरि निरँकारा सच पुकार रिहा सुण, लक्ख चुरासी विच्चों चुण, गुण अवगुण आपणी बणत बणाईआ। आपे करे छाण पुण, साचे कंडे रिहा चढ़ाईआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, कलिजुग अन्तिम पावे वंडे, गुरमुख विरला चौथे डण्डे नौ निधां अठारां सिद्धां भरमे रही भुलाईआ। मायाधारी भेख पखण्डे, होए विचारी जेरज अंडे, पिण्ड ब्रह्मण्डे खोज ना राईआ। शब्द भण्डारा ना कोई वंडे, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग रेख वेख हरि, सच दुआरा इक्क खुल्हाईआ। कलिजुग कल कुड़माई, अन्त करन्नया। लक्ख चुरासी मिले वधाई, बेमुख आत्म अन्न्हयां। धर्म राए दर जाणा चांईं चांईं, होए वसेरा छप्पर छन्नया। यमराज उठाए फड़ फड़ बाहीं, कोई ना देवे ठंडीआं छाँईं, धर्म राए अन्तिम डंनया। नाता तुट्टा भैणां भाई, पिता मात ना कोई सहाई, आपे पीड़े हस्त कीड़े, मिले नाम ना कोई धन धन्नया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेख रेख हरि, गुरमुखां कन्न सुणाए, एका सच्चा शब्द हरिजन आत्म मन्नया। धर्म राए दर सच पुकार, लक्ख चुरासी तेरी अन्तिम वार, आप भुलाए कर कर वल छल्लया। प्रगट होए विच संसार। वेख वखाणे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़। गुरमुखां दुआरा ल्या मल्ल, जोत जगाए बहत्तर नाड़, बेमुखां मन रिहा साड़। लग्गी अग्ग तत्ती हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख दए दिलासा मौत लाड़। मौत लाड़ी दए दिलासा। पुरख अबिनाशी वेख तमाशा। दर दुआरा इक्क सुहाउँणा। लक्ख चुरासी भेव चुकाउँणा। मदिरा मासी मेट मिटाउँणा। साचा देवे धुर फ़रमाणा। राजा राणा तख्तों लाहुणा। सुघड़ स्याणा बेमुहाणा मूंह दे भार सुटाउँणा। माया राणी तणया ताणा। भरमे भुल्लया जीव नादाना। एका भुल्लया हरि भगवाना। वेले अन्त ना किसे छुडाणा। गुरमुख साचा जोत जगाणा। हथ्थीं बन्न्हे नाम गाना। मिले मेल श्री भगवाना। साचा हुक्म इक्क सुणाउँणा। झुल्लदा रहे नाम निशाना। सोहँ झण्डा विच जहाना। विच नवखण्डा इक्क तराना। साचा गीत रसना गाणा। दर दर घर घर पाए वंडां, आपे करे खण्ड खण्डा, सच समग्री विच ब्रह्मण्डां, नाम अधारी वंड वंडाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, अन्तिम अन्त साचा सगन इक्क मनाउँणा। कलिजुग काल कुड़माई, खुशी मनाईआ। करे खेल हरि रघुराई, लाड़ी मौत नाल रलाईआ। आप उठाए फड़ फड़ बांहीं, लोकमाती राह वखाईआ। वेख वखाए थांउँ थाँईं, एका झाती रिहा लगाईआ। दूसर किसे दिसे नाही, बैठ इकांती लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, दर दुआरे खुशी मनाईआ। कलिजुग काले चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, फड़ के बांहों राहे पा। आप चुकाई आपणा डर, सदा सुहेला इक्क इकेला सद्द रक्खे ठंडी छाँ।

धर्म राए दर लग्गे मेला, लक्ख चुरासी बणे चेला, ना कोई होवे जगत मलाह। गुरमुख साचा सज्जण सुहेला, दर घर वसे इक्क इकेला, शब्द पल्लू दए फड़ा। धर्म राए दी कटे जेला, अट्ठां तत्तां मेली मेला, आप आपणे विच समा। बेमुखां होए वक्त दुहेला, ना कोई गुर ना कोई चेला, कवण पकड़े आपणी बांह। अचरज खेल हरि जी खेला, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग रेख वेख हरि, आप चढ़ाए अन्तिम तेला। कलिजुग चढ़या तेल, हथ्थ बन्न गानया। धर्म राए दी कटे जेल्ह, पकड़ उठाए राजे राणयां। बेमुखां बेड़ा रिहा ठेल, ना सके कोई छुडानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, एका देवे मात निशानया। कलिजुग कलि निशान हरि रखांयदा। ना कोई दीसे विच जहान, बेईमान सर्ब मिटांयदा। पूरन जोत जगे भगवान, पकड़ उठाए राज राजान, अट्ठे पहर नौजवान, शब्द खण्डा तीर कमान, रसना चिले आप चढ़ांयदा। करे खेल विच वरभण्डां, बूरे कक्के बिल्ले आपे आप मेट मिटांयदा। गगन पताल थम्म्ह अगम्मड़े, कोई ना दीसे चिट्टे चम्मड़े, मदीने मक्के आपे ढाहिंदा। करे खेल अगम्म अगम्मड़े, ना कोई पित मात ना अम्बड़े, पूत पित ना कोई अख्वांयदा। पल्ले कोई ना रक्खे दमड़े, नित्त नवित्त करे हित्त, चित्त वित्त काया मित भगत अख्वांयदा। ना कोई जाणे वार थित्त, मानस देही गुरमुख विरला रिहा जित, मनमुख भरमे आप भुलांयदा। कलिजुग वेखे हड्ड मास नाड़ी रित, बूंद रक्त भगत शक्त जोग जगत जुगत इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग रेख वेख हरि, काल जाल कलिजुग हथ्थ फड़ांयदा। कलिजुग फड़या काल, कलि कलन्दरा। पहली मारे इक्को छाल, बेमुख फड़े जीव बन्दरा। दूजी वस्त नाम उछाल, गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल आत्म जन्दरा। गुरमुख वेख अनमुल्लड़े लाल। मिले मिलाए अन्दरे अन्दर साचा शब्द जगत दलाल, जोत जगाए काया मन्दिर डूंघी कन्दरा। हरि जन साची घालन रिहा घाल, भगत अवल्लड़ी चले चाल, फल लग्गे काया डाल्ह, मिले मेल दीन दयाल, हथ्थ ना आया गोरख मच्छन्दरा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेख रेख हरि, आप मिटाए शब्द सारे ढाहे उच्चे सुच्चे मन्दिरां। मन्दिर मसीतां जाणे ढहि। एका चले साची रीता, पुरख अबिनाशी जाए रहि। माण चुकाए अठारां ध्याए गीता, कलिजुग बेड़ा रिहा वहि। खाणी बाणी सीतल सीता, शब्द चले साची नैं। अञ्जीलां कुरानां वक्त बीता, ईसा मूसा होणे खै। कलिजुग तेरी वेखे नीता, पुरख अबिनाशी साचे मन्दिर बहि। लक्ख चुरासी परखे नीता। कवण रसना हरि गुण कहि। गुरमुख विरले मानस देही जन्म जीता, नाम निधान अमृत पीता, चरन कँवल हरि एका रहि। सतिजुग तेरी चले साची रीता, वरन चार एका कीता, गुर गोबिन्द लेख लिखारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, लिख लिख साचे कहि। प्रगट होए निहकलंक नरायण

नर अवतारा, सम्बल नगर देस मझारा, भेव चुकाए तूं तूं मैं। दीपक जोती कर उज्यारा, शब्द रक्खे तिक्खी धारा, चारों कुन्ट इक्क उडारा, राज राजानां करे खहि। जगत जगदीस आप अख्वाना। लक्ख चुरासी जाए पीस, ना कोई राग छतीस, नारद मुन मुख सुहाना। चार मुख दन्द बतीस, ब्रह्मा वेद जगत हदीस, चारे जुग साया सीस, कलिजुग अन्तिम अन्त कराना। एका झुल्ले छत्र हरि नर साचे सीस, जोती जोत सरूप हरि, शब्द झण्डा विच नव खण्डा, एका नाम धुर गुर काम आपणा आप झुलाउँणा।

★ १२ भाद्रों २०१२ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया गया ★

पृथ्वी अकाश अप तेज़ वाए। संत गुर किस दर होए पास, दे मति संत समझाए। कवण मण्डल कवण रास, कवण पवण शब्द स्वास, कवण जोती रिहा जगाए। कवण मन रहे उदास, कवण तन होए नास, कवण जन हरि वसे पास, आदि मध भेव खुल्हाए। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, पंच प्रधाने नौजवाने विच जहाने, सच निशाने धर्म झुलाए। संत रणधीर उठ सुरत संभाल। कवण शाह कवण फकीर, कवण दिसे मात कंगाल। कवण बस्त्र तन पहने चीर, कवण वेखे अनमुल्लणा लाल। कवण अमृत आत्म मिले सच्चा सीर, कवण दुआरे ल्या भाल। कवण चोटी चढ़या अखीर कवण दस्म दुआरी वज्जे केहड़ा ताल। कलिजुग अन्तिम पई भीड़, ना कोई बन्न्हे मात बीड़, फल ना दिसे किसे डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम वर, संत सुहेले बणना मात दलाल। सिँघ रणधीर रण लैणा जित। गुरमुखां वेले अन्त अख़ीर लेख लिखाउँणा वार थित्त। कवण दाता सूरबीर करे खेल नित्त नवित्त। कवण मारे शब्द तीर, पार कराए काया खेत। कवण देवे अमृत सीर, पुरख अबिनाशी वसे चित्त। वेले अन्तिम कटे भीड़, लक्ख चुरासी लईए जित। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, कलिजुग आपणा कर कर हित। दस्म दुआरी पड़दा खोल्ह। जोत निरँकारी लैणी तोल। निश अक्खर वक्खर शब्द पवणी बोल। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका मंगे नाम वर, आत्म पड़दे देणे खोल्ह। गुर गोबिन्द पंच प्रधान। मिटे चिन्द विच जहान। इक्क उपजाउँणी नर हरि साची बिन्द, चतुर्भुज श्री भगवान। सर्ब जीआं कवण दुआरे बणे बख्शिंद, चौथा घर कवण कूटे खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे नाम वर, पंचम देणा वड प्रधान। पंचम प्रधान कवण अख्वाया। कवण पवण कवण समाण, पंजां तत्तां विच समाया। कवण पीण कवण खाण, कवण राग कवण जाग, कवण मेल कन्त सुहाग, कवण धार पहली वार दस्म दुआरी मुख चुआया। कवण यार मीत मुरार, पंजे कक्के कर त्यार, पंजां चोरां बाहर हक्के, अट्ठे पहर ख़बरदार। अन्दर मन्दिर राह केहड़ा तक्के, कवण

दुआरे जोत अकार। काया बूटे फल अन्तिम पक्के, ढहि ढहि ढेरी होणे छार। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, उत्तर देणा तीजे नैणा दस्म दुआरी हरि निरँकारी जोत निरँजण वेख विचार। उत्तर देणा काया मट्ट। पुरख अबिनाशी आपे जाणे घट घट। पुरख अबिनाशी एका पुच्छे अमृत ताल, कवण किनारा कवण तट्ट। कवण दिशा वज्जे छाल, प्रगट होए झट्ट पट्ट। पुरख अबिनाशी लईए भाल, काया मन्दिर चौदां हट्ट। एका बणना जगत दलाल। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, आप आपणे जिहा कर, ना कदे शाह ना कंगाल। उत्तर देणा छेती मोड़। शब्द चढ़ना साचे घोड़। इक्की भाद्रों आउँणा दौड़। पुर भलाई होए जोड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख हरि, वेखे परखे मिट्ठे कौड़। विच रखाउँणी कंध। अन्दर बाहर आत्म अन्ध। शब्द स्वासी साचे चन्द। मदिरा मासी बत्ती दन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख हरि, वेख वखाणे परमानंद। जोती नूर मुख छुपाउँणा। शब्द तूर इक्क रखाउँणा। हाज़र हज़ूर भेव चुकाउँणा। जो जन दीसे दूरन दूर, नेड़न नेड़ आप वखाउँणा। वड दाता जोधा सूर, शब्द अखाड़ा इक्क लगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाउँणा। साचा शब्द रसन उचार। गुर गुर मन्त्र कर प्यार। बणे बणत बणाए बणतर, अन्तर अन्तर दस्म दुआर। मण्डल मण्डप गगन गगनंतर, जगत जोत भगत अकार। नौ दुआरे इक्क बसंतर, ना कोई पावे जीव सार। जोती जोत सरूप हरि, एका एक टेक नर निरँकार। चौदां हट्ट चौदां पहर। शब्द चले एका लहर। कोई ना बोले विच ऐर गैर। काया वसे आत्म हस्से, भाग लग्गे जोती दीपक जगे, हरि हरि मन्दिर तन शहर। जोती जोत सरूप हरि, एका एक वसे घर, लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड करे कराए शब्द सैर। सच दुआरे आउँणा चल। जगत वणजारे धर्म अटल। पवण उडारे जल थल। नौ दुआरे कलिजुग कल। दसवें जोती जाए बल। मिले मेल शाह प्रबल। पाए धाम रमईआ राम, उच्च महल्ल अचल अटल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा घल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संत करे पछाण, प्रगट वाली दो जहान ना कोई करे वल छल। वल छल ना कोई कराना। दीपक जोती रही बल, जगत अन्धेर मेट मिटाना। काया माटी अमृत फल, साचा मेवा जगत खुआउँणा। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले मंगे वर, इक्क इकेले सोहीए दर, साचा घर इक्क वसाउँणा।

काया कूड़ कूड़ कुड़यारी। अट्ठे पहर पंचां बद्दी, दिवस रैण पापां लद्दी, चुक्कया जाए ना भार भारी। रसना रस

पी पी लद्दी, शब्द खुल्लाए साची गद्दी, हउमे वधी तन विकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, तन मन दुखड़ा लथे भारी। हड्ड जोड़ तन नाड़ी मास। रोग सोग जायण छोड़, मिल्या मेल पुरख अबिनाश। आदि अन्त ना होए विजोग, रसना गाउँणा स्वास स्वास। मिल्या मेल धुर संजोग, पूरन करे प्रभ साचा आस। रसना रस लैणा भोग, उलटा गर्भ ना होवे वास दस मास। सोहँ चुगणी साची चोग, किसे हथ्थ ना आए पृथ्वी अकाश। जोती जोत सरूप हरि, सद वसे आस पास। मंगी मंग बण भिखारी। आत्म जीआं दे अधारी। कोई ना दीसे मात पीआ, साचा नात पुतर धीआं बणे रहे जगत प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख लिखाउँणा दूजी वारी। साचा लेखा आप लिखाउँणा। बिधना लिखी रेख, कर्म मात मिटाउँणा। सच दुआरा आई वेख, दे हथ्थ समरथ आप बचाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान झोली पाउँणा। पुरख अबिनाशी कर ध्यान। घट घट वासी विच जहान। काया बणाए साची रासी, मिले वत्थ विच जहान। रसना गाउँणा स्वास स्वास, उपजे जोत ब्रह्म ज्ञान। रसन तजाउँणा मदिरा मास, चरन कँवल हरि इक्क ध्यान। बेमुख करदे दर दर हासी, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच वर, जिया जोती जगत जहान। माया राणी गई छड्ड। दुखी होया हड हड। कवण लडाए साचा लड्ड। दूई द्वैती रिहा वढ्ढ। धूंआँ धुखे काया खड्ड। भरम भुलेखा देणा कढ्ढ। मुक्के लेखा वड वड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुखी कराए हड्ड हड्ड। माया राणी कर प्यार। सुघड़ स्याणी हो त्यार। आवे जावे वारो वार। सोलां करे तन शृंगार। साचे दर गुरमुख घर पाए फेरा बण भिखार। दुक्खां दर्दां ढाहे डेरा, तन मन्दिर अन्दर एका कीड़ा, चिन्ता सोग दए निवार। भाग लगाए काया नगर खेड़ा, आपे बन्ने हरि जी बेड़ा। फड़ फड़ बाहों जाए तार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी गऊ गरीब निमाणयां पावे मात सार। एका दरस दरस अमोघ। हरि हरि शब्द साचा जोग। गुर गुर शब्द रसना भोग। लिख्या लेख पुरख अबिनाशी धुर जोत सरूपी सच संजोग। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपणी किरपा देवे कर, दो जहान ना होए विजोग। देवे दरस रंग करतार। अमृत मेघ देवे बरस, काया करे ठंडी ठार। सदा सुहेला करे तरस, आत्म अतीती चरन प्यार। जगत तृष्ना मेटे हरस, जूठा झूठा लाहे बुखार। तीजे लोचन लैणा परस, दर दुआरे नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अट्ठे पहर दिवस रैण बणया रहे पहरेदार। तिन्न सौं सट्ठ जुड़या जोड़, पुरख अबिनाशी करया इक्ट्ठ, हड्ड मास नाड़ी तन काया लोड़। अन्त वेले होए भट्ठ, उलटी गिड़े काया लट्ठ, ना कोई चढ़या शब्द घोड़। काया अग्नी आत्म मट्ठ, हरि जन

२५८
०५

साचे शब्द हड्ड, दर दुआरे आए दौड़। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला जाए बौहड़।

★ अनन्दपुर दे अक्खर उत्ते शब्द उचारया गया ★

ऐड़ा अक्खर आत्म अकार। काया मन्दिर चार दिवार। दहि दिशा पाए हिस्सा, वेख वखाणे अन्दर बाहर गुप्त जाहर। ऐड़ा आत्म किसे ना दिसे, लक्ख चुरासी होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा सच महल्ला रिहा उसार। ऐड़ा अन्दर आत्म जोत। जोत निरँजण ना कोई वरन ना कोई गोत। दुःख दर्द भय भगवन्त भंजन, आपे जाणे कोटन कोट। काया माटी साचा सज्जण, इक्क लगाए आत्म चोट, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा खाए ताम। ऐड़ा अन्तर आत्म ध्यान। आदि पुरख इक्क भगवान। सति सरूप धर्म निशान, वड शाहो भूप, आवण जावण खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त साध संत करे पछान। ऐड़ा अल्ला आस रखाई। एका वसे सच महल्ला, धर्म मुहम्मद गया लिखाई। शब्द जणाया हरि जी डल्ला, गुर गोबिन्दा दे मति समझाई। वसे निहचल धाम अचल्ला, कलिजुग वेला दए सुहाई। दिस ना आए जल थला, गुरदुआरे मन्दिर मस्जिद किसे थाँईं। आपे होए अछल अछल्ला, वल छल जगत भुलाई। शब्द फड़े हथ्थ विच भल्ला, चारों कुन्ट दए दुहाई। इक्क सुनेहड़ा एके घला, ओअँ सोहँ जाप जपाई। दूई द्वैती मेटे सल्ला, चारों वरनां इक्क सरनाई। दर वारा दए वखाई। जोती जोत सरूप हरि, ऐड़ा अक्खर कर कर वक्खर, साची रचना रिहा रचाई। ऐड़ा अमृत आत्म नीर। पंच शब्द पंच गुरमंत पंज संत हरि भगवन्त, तन बसंतर पहने साचे चीर। मिले मेल हरि साचे कन्त, काया रंग चढ़े बसंत, लोकमात बणे बणत, वेखे खेल अन्त अखीर। बैठा रहे इक्क इकन्त, फिर फिर थक्के जीव जन्त, माया पाए हरि बेअन्त, ना कोई जाणे संत फकीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, जन भगतां देवे आत्म धीर। नंन्ना निरगुण रूप हरि निरंकारया। शब्द सरूपी रखे धुन, चारे कुन्ट जै जैकारया। सर्ब पुकार रिहा सुण, दिस किसे ना आ रिहा। आपे जाणे आपणे गुण, लक्ख चुरासी विच समा रिहा। सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख सोए आप जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नैण नेत्र काया खेत्र विच उपजा रिहा। नन्ना निराधार, नर हरि निरवैरया। आपे जाणे आपणी सार, ना कोई सके जीव विचार। साधां संतां आई हार, पुरख अबिनाशी वसे बाहरया। गुरमुख विरले मेला कन्त भतार, एका सेजा सुत्ते पैर पसार, आपे गुर आपे चेल्लया।

वरभण्डी होए ख्वार कलिजुग तेरी टेडी डण्डी, वेले अन्तिम आई हार। चारों कुन्ट भेख पखण्डी, कथनी कथ हाहाकार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नाम निरँजण करे इक्क जैकार। नन्ना नाम निधान हरि उपाया। झुल्ले सच्चा शब्द निशान, जगत सुहाया। आपे वेखे वाली दो जहान, दिस किसे ना आया। सत्तां रंगां रंग रंगान, सत्तां दीपां वंड वंडाया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, सोहँ अक्खर वखर इक्क लिखाया। इक्क उपजाए ब्रह्म ज्ञान, शब्द सुनेहड़ा पवण सुणाया। दीपक जोती जगे महान, अन्ध अन्धेरा दए मिटाया। मिटदे जाण मात निशान, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। गुणवन्ता हरि गुण निधान, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख नर, नन्ना निरगुण वेस कर, नौ दुआरे बन्द कराया। नंना नौ द्वार जगत भुलनया। तन मन्दिर होए ख्वार, लोकमात ना बेड़ा बन्नया। भरमां भुले जीव गंवार, पंच पंचायणी लाए सन्नया। ना कोई देवे नाम अधार, भाण्डा भरम ना किसे भन्नया। गुर मन्त्र एका शब्द प्यार, जोत जगाए नेत्र अन्नया। सच दुआरे साचा वणज वपार, साचा बेड़ा हरि हरि बन्नया। लिखे लेख गुर अपार, वरभण्ड खण्ड होए खन खन्नया। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरी धार, पारब्रह्म प्रभ पाए सार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जनणी जन ना किसे जणया। नंना निरगुण वेखे रूप अपार सरगुण तेरी साची धार, गुर पीर साध संत दिसण किस द्वार, कवण दुआरे होए प्रकाश, रवि ससि सूरज चंन्नया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ दुआरे वेख हरि, लोकमात देवे डंनया। निरगुण निर अकार इक्क अकाल्लया। जोती नूर सर्ब पसार, नेड़ ना आए काल काल्लया। अवण गवण कर विचार, हरि जन तोड़े जगत जंजाल्लया। त्रैभवण पावे सार, लोआं पुरीआं हथ्थ रखा ल्या। ब्रह्मा शिव रहे पुकार, दर साचे सीस झुका ल्या। करोड़ तेतीसा चरन द्वार, सुरपति राजा इन्द सगला संग रला ल्या। कलिजुग अन्तिम रोंदे धाहां मार, लुटयां धन्न होए कंगाल्लया। प्रगट होए हरि निरँकार, जोती जामा भेख वटा ल्या। शब्द रखे तिक्खी धार, लोआं पुरीआं कढ्ढे दवाल्या। निरगुण रूप अगम्म अपार, आपणी सुरत आपे रिहा संभाल्लया। ना कोई दूसर मीत मुरार, जोत अग्नी जवाल्या। सृष्ट सबाई साचा यार, जोती जोत सरूप हरि, निरगुण साचा वेस कर, करे खेल एका इक्क अकाल्लया। दर द्वार इक्क बनावणा। गुर मन्त्र शब्द अपार, जगत जपावणा। गुरमुख साचे कर त्यार, साचा धर्म चलावणा। नौ खण्ड पृथ्वी एका डण्डा हथ्थ रखावणा। दीपां लोआं एका धार, वरभण्डी राह बनावणा। राज राजान कर ख्वार, शाह सुल्तानां दर भवावणा। साधां संतां मारे मार, दस्म दुआरी पड़दा लाहवणा। पूर्ब कर्म हरि विचार, जिन हरि साचा आप जगावणा। अमृत बख्शे साची धार, निझर रस मुख चवावणा। प्रगट होए विच संसार, पुरी घनक नाम सुहावणा।

गुर गोबिन्दा लेख लिखार, हरि बख्शिंदा आप अख्वावणा। साची पैज रिहा संवार। शब्द घोड़े हो अस्वार दिस किसे ना आवणा। ग्रन्थी पन्थी धुँदूकार, माया राणी पसर पसार, साचा राह ना किसे दिसावणा। प्रगट होवे हरि दातार, सम्बल नगरी खेल अपार, दीपक जोती इक्क जगावणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दद्दा दुरमति मैल हरि काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठा मोह चुकावणा। दद्दा दर द्वार भगत भगवन्तया। कलि कारज रिहा संवार, ना कोई जाणे जीव जन्तया। शब्द सरूपी पवण उडार, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आदिन अन्तया। नूर उजाला कर उज्यार, दीन दयाला हरि करतार, सर्ब रखवाला इक्क अखवन्तया। कोटन कोट खड़े द्वार, शब्द चोट तन नगार, गुरमुख विरले साज वजन्तया। धुनी नाद अपर अपार, मुनी साध हाहाकार, ना होए मेल पूरन भगवन्तया। वजे वधाई विच संसार, निहकलंक सच सरनाई, चारों कुन्टां जै जैकार, जन हरि हरि जन दोए जोड़ करे बेनन्तया। जोती जोत सरूप हरि, नौ दुआरे वेख दर, इक्क सुणाए शब्द सच्चा छन्तया। दर दरबारा इक्क सुहाया, लिख्या लेख अपर अपारा नेत्र लोचन नैण वेख, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़ा। आपे धारे आपणा भेख, पंडत पांधे रहे वेख, कवण कूटे ब्रह्मण गौड़ सच्चा यारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती
२६१ जामा भेख धर, नौ दुआरे वेख हरि, दसवें घर आप पसारा। हरि दस्म जोत जगाईआ। दहि दिशा होए रुशनाईआ। २६१
०५ गुरमुखां आत्म लाहे विसा, मनमति जगत गंवाईआ। बेमुखां अन्तिम पाया हिसा, निन्दक निन्दया मुख रखाईआ। जगत ०५
जगदीसा किसे ना दिसा, गुर गोबिन्द वाहवा गया साचा लेख लिखाईआ। माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, हरि मन्दिर अन्दर दए दुहाईआ। कथना कथे दन्द बतीसा, भेव अभेदा वड देवी देव ना जाणे राईआ। सुण सुणाए राग छतीसा, नाद धुन ना कोई उपजाईआ। एका छत्र झुले प्रभ साचे सीसा, कूड़ अडम्बर जगत रचन रचाईआ। वेखे खेल बीस इक्कीसा, भरम भुलेखे रिहा भुलाईआ। इक्क चलाए जगत हदीसा, वरन गोत कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, नौ दुआरे वेख हरि, दसवें बूझ बुझाईआ। दसवें दस दस अस्थान। जोती नूर हरि भगवान। मानस देही वेखे कर्म, संत असंत कर पछाण। आप कढाए भरमी भरम, शब्द उठाए तीर कमान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ दुआरे वेख हरि, देवे वर इक्क ध्यान। दर दुआरा इक्क रखाया ए। पुरख अबिनाशी कर त्यारा, लोकमात लै अवतारा, जोती जामा भेख वटाया ए। निरगुण रूप निर अकारा, सरगुण साचे कर प्यारा, शब्द धारा रिहा वहाया ए। जीव जन्त भरम गंवारा, साध संत होए अवारा, दर दर आपणा राह चलाया ए। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, इक्क कराए जगत जैकारा, चार वरनां रिहा सुणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, नौ दुआरे वेख हरि, आपणा राह इक्क वखाया ए। ऐड़ा

अक्खर आप बणाया। आत्म ब्रह्म विच समाया। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। नंन्ना निरगुण रूप अपारा इक्क जणाया। निर अकार किसे दिस ना आया। दद्दा द्वार आप खुल्हाया। दसवें अन्दर डेरा लाया। दसवें गुर बचन लिखाया। अनन्द अनन्द अनन्द त्रैगुण पोह ना सके माया। इक्क अनन्द हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा, बन्द चार दिवारी इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनन्द चन्द सुत दुलार, पूत सपूता रिहा उपजाया। पप्पा पूरी पूरन आस। पूरन पुरख होए प्रभ दास। सर्ब घट कामी नेह निहकामी आदि अन्त ना जाए विनास। सर्ब जीआं प्रभ अन्तरजामी, जोत निरँजण इक्क अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, पप्पा पूरी आस कर, होया रहे दासन दास। पप्पा पुरी हरि सुहाईआ। पूरन जोत हरि टिकाईआ। वरन गोत ना कोई रखाईआ। कलिजुग माया आत्म धोत, निर्मल नीर रखाईआ। अट्ठे पहर खुल्हे सोत, दस्म दुआरी मुख खुल्हाईआ। आवे जावे निरँजण जोत, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, पप्पा पूरी आस कर, आप आपणे रंग समाईआ। पप्पा प्रीतम चीत चित्त चितारया। सदा सुहेला साचा मीत परवरदिगारया। चले चलाए अचरज रीत, भरम भुलेखे आपे पा रिहा। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, पंडत काजी आप सुणा रिहा। गुरदुआरे परखे नीत, ग्रन्थी पन्थी वेख वखा रिहा। हरिजन मानस देही जाए जीत, काया मन्दिर हरि सुहा रिहा। जुगा जुगन्तर साची रीत, आपणा आप हरि उपा रिहा। आप सुणाए शब्द सुहागी सच्चा गीत, धुर दरगाही इक्क सुनेहड़ा चार वरनां आप जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पूरन आस मात करा रिहा। रारा राज जोग सुल्तान। राम नाम श्री भगवान। रिड़कण आया सर्ब जहान। झिड़कण आया बेईमान। जोती जोत सरूप हरि, आप बणाए दया कमाए, शब्द सरूपी इक्क मकान। रारा रूप वटाया ए। रूप रंग किसे दिस ना आया ए। सृष्ट सबाई रिहा वेख, जोती जामा खेल रचाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपणे रंग समाया ए। रारा रेख सर्ब मिटांयदा। गुर गोबिन्दे लिख्या लेख, अक्खर अक्खर लैणा वेख, केहड़ी कूटे भेख वटांयदा। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़, संग मुहम्मद चार यार, ना कोई वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, गुर गोबिन्दे बणत बणांयदा। अनन्दपुर अनन्द मकान। पूरन जोत श्री भगवान। वरन चार चार दिवार, पंचम मेला मीत मुरार, चार कुन्ट कुन्ट चार शब्द रक्खे साची धार, ऊँच नीच रंक राजान। सच तख्त हरि सुल्तान। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़, कोठे मण्डप माड़ी मन्दिर वेख वखाणे अन्दर बाहर डूंघी कन्दर जल थल जगत अस्गाह, आपे जाणे बेपरवाह, अंडज जेरज कर ध्यान। सेत्ज उत्भज विच ध्यान। खाणी बाणी करे पछाण। शब्द सरूपी इक्क उडान। जोती जोत सरूप हरि,

२६२
०५

जोती जामा भेख धर, पुरी अनन्द चढ़े चन्द, काया मन्दिर सच मकान। पुरी अनन्द हरि सुहाईआ। नौ दुआरे कढ़ुया गन्द, दसवें जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई चढ़या चन्द, सीतल धार शब्द वहाईआ। जन भगतां खुशी कराए बन्द बन्द, मनमुखां दए सजाईआ। अट्ठे पहर परमानंद, ब्रह्म रूप ब्रह्म समाईआ। जन हरि गाए बत्ती दन्द, आत्म जोती मेल मिलाईआ। भरमां ढाहे झूठी कंध, शब्द धक्का इक्क लगाईआ। इक्क चढ़ाए नौ चन्दी चन्द, मदीना मक्का काअबा कुरान नौ दुआरे दए वखाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्दा, साचा अक्खर रिहा पढ़ाईआ। मनमुख जीव भाग मन्दा, मदिरा मास रसन हलकाईआ। दिवस रैण खायण गन्द, अमृत जाम ना कोई पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पुरी अनन्द देवे साचा धाम आप सुहाईआ। अनन्दपुर हरि सुहाया ए। आप लिखाया लेखा धुर, भेव किसे ना पाया ए। ब्रह्म पारब्रह्म दोवें गए जुड़, शब्द विचोला इक्क रखाया ए। आपे चढ़या साचे घोड़, नीली धार हो अस्वार नीला नाम रखाया ए। जुड़या जोड़ा विच संसार, चुक्कया पौड़ा पहली वार, साधां संतां रिहा जगाया ए। धुर दरगाही आया दौड़ा, आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, राज राजानां रिहा हिलाया ए। आपे होए ब्राह्मण गौड़, मात पित किसे ना जाया ए। सम्बल नगरी जाए बौहड़, गुरमुखां आत्म लग्गी औड़, अमृत मेघ रिहा

२६३ बरसाया ए। आपे वेखे मिट्ठे कौड़, शब्द सरूपी लाए पौड़, उच्चा डण्डा हरि ब्रह्मण्डां एका एक लगाया ए। कलिजुग २६३

०५ तेरा अन्तिम कन्ढा, चारों कुन्ट भेख पखण्डा, जीव जहानी पायण वंडां, हरि भाणा भेव ना राया ए। जोती जोत सरूप ०५

हरि, पुरी अनन्द वेख दर, दसवें जोती नूर कर, नौवें बन्द कराया ए। नौवें बन्द द्वार, दस्म खुल्हांयदा। गुर तेग बहादर तेरी धार, लाहया सीस दिल्ली दरबार, अन्तिम मुल्ल पवांयदा। खिड़े मात सच्ची गुलज़ार, आई रुत्त शब्द बहार, फुल्ल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। मानस देही जन्म अपार, मिली जोत शब्द निरँकार, लोआं पुरीआं पसर पसार, दिस किसे ना आंयदा। देवे माण सच्ची सरकार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, ब्रह्म रूप ब्रह्म पसार, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण खेल अगम्म अपार, सरगुण तेरे कर्म विचार, गुर तेग बहादर मीत मुरार, चिट्टी चादर आप बणांयदा। इक्क उडाए शब्द उडार, प्रभ अबिनाशी कर त्यार, साचा धाम आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अंसा बंसा जगत सहँसा आपे आप अख्वांयदा। अंस बंस पूत सपूत जगत कलि धारया। एका धागा एका सूत, आपे जाणे खेल करतारया। शब्द सरूपी साचा धूप, पवण सरूपी हवन करा रिहा। ना कोई जाणे रंग रूप, कवण गुर शाहो भूप, कवण मात उपजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भगत सुहेला आप अख्वा रिहा। शब्द चढ़या साचे घोड़, दुष्ट दमन सेव कमाईआ। वेखे खेल किनार जमन, कलिजुग अन्तिम रैण विहाईआ। साध संत भुले भरमे, ना दीसे हरि रघुराईआ। आवे

जावे ना जन्मे ना मरे, मिटणा माण ब्रह्म ब्रह्मे, एका जोती एका वरने दूसर गोती दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणी रचन रचाईआ। गुर गोबिन्दे शब्द जणाया ए। गुणी गहिंदे एका राह वखाया ए। सर्ब जीआं आपे बख्शिंदे, आदि अन्त जुगां जुगन्त आपणे रंग समाया ए। जगत बणाए साची बणता, भाणा आपणे हथ्थ रखाया ए। हरि जन विरले मेल मिलावा साचे कन्ते, जिस जन आपे दया कमाया ए। पुरख अबिनाशी पूरन भगवन्ते, साचा दर इक्क सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पुरी अनन्द अनन्द पुर अनन्द अनन्द अनन्द परमानंद समाया ए। पंचम अक्खर अंक रचाया ए। पंचम अक्खर आप वसाया ए। ना कोई जाणे बजर कपाटी पत्थर, काया सथ्थर किस विछाया ए। नेत्र नीर विरोले अत्थर, भेव कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप जाणे पंचम अक्खर पंचम देस वसाया। पंचम अक्खर पंच प्रधान। पंच दुआरे हरि भगवान। जोत निरँकारे पवण मसाण। इक्क उडाए सर्ब जहान। नाता तुटे पीण खाणे, अवण गवण होए हैरान। जोती जोत सरूप हरि, पंचम पंचां मेल दर, पंचम शब्द दर परवान। पंचम पांच पूज तन माटी। आपे वेख वखाणे शब्द दुआरा औखी घाटी। नाम पाए सच मधाणी, काया मन्दिर डूंघी चाटी। मक्खण वरोले दूध पाणी, वेखे खेल बाजीगर नाटी। सृष्ट सबाई पुणी छाणी, पंचम मिले ना किसे हाटी। रसना गाए सभ दी बाणी, गुरमुख विरला लाहा खाटी। पंचम रहे तन शैतानी, दिस ना आयण बाटी। ना कोई वेखे जेरज खाणी, दीपक जोत कवण लिलाटी। अमृत आत्म केहड़ा पाणी, भर प्याला पीणा बाटी। साचे मन्दिर कर पछाणी, दर दुआरे लाहा खाटी। अन्तिम चुक्के जम की काणी, रसना रस एका चाटी। पंचम पंच दर परवानी, मिले मेल शब्द निशानी, आदि जोत श्री भगवानी, दुरमति मैल जाए काटी। पंचम तत्त पंचम उपजाया। पंचम देवे हरि हरि मति, शब्द सुनेहड़ा रिहा सुणाया। पंचम बणया साचा दूत, साचा मेल रिहा मिलाया। पंचम जोड़े एका नत, बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत, धीरज सति इक्क उपजाया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, तुटे नाता साढे तिन्न हथ्थ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, पंचम मेला हरि मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम मेला इक्क कर, छेवें शब्द जणाया। छेवें शब्द जणाई, मन वधाईआ। मिले मात वड्याई, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। बेमुख आए अग्गे नाहीं किसे थाँई, गुरमुखां राह वखाईआ। आपे पकड़े अन्तिम बाहीं, पंज दस दस पंज आप रिहा समझाईआ। शब्द सुहेला रक्खी ठंडी छाँईं, सीतल धारा इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम परम पुरख प्रधान, पंचां पंचां संग मिलाईआ। पंचां पंचम संग मिलाया। काया माटी होए कंचन, सोहँ पारस नाम छुहाया। इक्क कराए साचा मजन, साक सज्जण बण बण आया। आपे मक्का काअबा हाजी हज्जन, गुरदुआरा मन्दिर

मस्जिद दो दो आबा डेरा लाया। जोती जगे साचे अन्दर, शब्द गीत गोबिन्दा गाया। नाम हथौड़ा तोड़े जन्दर, राग छतीसा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम जोती मेल दर पंचम पुरी अनन्द सुहाया। अनन्दपुर पंच प्रधान। पुर अनन्द शब्द निशान। पुरी घनक विच जहान। पंचम होए वड बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आत्म जोती मेल हरि, पंचम रंगण रंग रंगान। पंचम रंग महान, राजन रंकया। करे खेल महान, लोकमात वार अनकया। पंचम जोती जी जहान, धरे धराए पुरी घनकया। प्रगट होए वाली दो जहान, पंचम अक्खर निहकलंकया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सोहँ शब्द पंच वजाए डंकया। सोहँ शब्द पंच परबोध। शब्द जणाए बोध अगाध बोध। मिले वड्याई जगत वधाई, गुरमुख साचा वड जोधन जोध। चतुर्भुज हरि दरस दिखाई, पंचम भेद रहे ना राई, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भेख चुकाए एका दूज। जीव जन्त अधार दयावानया। आपे देवे जगत भण्डार, भरे रहण सद खजानया। गुरमुख साचे कर त्यार, आत्म दरस दरस महानया। देवणहार इक्क दातार, गुरमुख विरले मात पछानया। मनमुखां आत्म हाहाकार, घर हुन्दा जाए वैरानया। ना कोई जाणे जिया जान अधार, जिस दित्ता पीणा खाणया। आपणे रंग रवे करतार, सर्ब सृष्टी पावे सार, वड दाता बीना दानया। गुरू गुरमुख सद त्यार, जन भगत आत्म धर्म जैकार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, देवे माण दो जहानया। भगत पकवान दर दर परोस्सया। रसना रस रसन वखान, लेखे लाए अन्न दाणा तोसन तोस्सया। काया माटी अग्नी बाण, विच वसे जल कोसन कोस्सया। धर्म झण्डा कर्म निशान, पार कराए निरगुण निर्दोषया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भण्डारे रिहा भर, ना आवे कदे तोट तोटया।

★ १३ भाद्रों २०१२ बिक्रमी ऊधम सिंघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

हरि दरस गुरमुख अधार। गुरमुख भगत हरि नाउँ रसना उचार। शब्द चोग साची जुगत, भगत मुक्त अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, जोत ब्रह्म ब्रह्म जोत एका धार। एका धार जोत निरालीआ। पवण उडार शब्द सवालीआ। करे कराए वणज वपार, देवे नाम धन धन सच्चा धन मालीआ। लोकमाती काज संवार, फल लगाए काया डाल्हीआ। आदि अन्त ना पारावार, चले चाल जगत निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अकल अकालीआ। अकल कला भरपूर, आप अकालीआ। आसा मनसा पूर, सदा रखवालीआ। धर्म दुआरे हाज़र हज़ूर, रखे चाल अवल्लड़ी

नित्त नवित्त निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संत सुहेला आपे भालीआ। करे भाल ढूंडे जग। कवण दुआरे गुरमुख जोती रही जग। आपे खोल्हे बन्द कवाड़ी, जगत तृष्ना बुझे अग्ग। दर घर साचे साचे लाड़े, शब्द सरूपी हथ्थीं तग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस दाता सूरा सरबग। वड सूरा सरबग, चतुर सुजानया। उप्पर वसे शाह रग, वेखे खेल ब्रह्मण्ड महानया। कलिजुग वा रही वग, जीउ पिण्ड भुन्ने भठयाले दाणया। गुरमुख साचा संत सुहेला चरन सरन जन कलि जाए लग्ग, चले चलाए आपणे भाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण जगत निधानया। कलिजुग कलि निधान वेख विचारया। ना कोई तोड़े जगत जंजाल, चार दिवारी दिसे पासा हारया। एका वस्त नाम धन माल, सदा शाह ना होए कंगाल, मंगे वर ना दूजी वारया। लगे फल काया डाल्ह, सोहँ अमृत साचा ताल, अमृत धारा इक्क वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आवे जापवे पावे सारया। पावे सार सुरत संभाल, सर्बकला कलवन्तया। लाल अनमुल्लड़े लए भाल, शब्द सरूपी बण दलाल, करे खेल भगवन्तया। एका मारे कर्म उछाल, शब्द गोदी लए उठाल, शब्द पहनाई तन साची माल, हरिजन आत्म आपे मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भाण्डा भरम भरम भाण्डा आपे घड़या आपे भंनया। घड़न भन्नणहार हरि समरथया। उतरन चढ़न पार किनार, वेख वखाणे साढे तिन्न तिन्न हथ्थया। कलिजुग माया सड़न जीव गंवार, कलिजुग कामी पाई नथया। भरे सुख सर्ब संसार, झूठी मथन मथया। गुरमुख विरला पैज संवार, मंगे मंग चरन द्वार, शब्द चाढ़े साचे रथया। दर सवाली बण भिखार, बणे पाली हरि दातार, करे रखवाली पहरेदार, कथना कथ किसे ना कथया। एथे ओथे चोबदार, जुगा जुगन्तर बन्न्हे धार, तन बसंतर होवे सार, देवे दरस अगम्म अपार, सगल वसूरा तन मन मथया। जोती नूर कर अकार, शब्द कराए जै जैकार, एका ओट नर निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी आप कराए सथर सथया। गुरसिख गुरमुख मात गुर वड्याईआ। गुर मेला कमलापात, गुरमुख वज्जे मन वधाईआ। गुरमुख मेला आदि जुगादि गुरसिख साचे रिहा जगाईआ। गुरसिख साचे लगा भाग, गुर सतिगुर दर्शन पाईआ। सतिगुर साचा कन्त सुहाग, गुरमुख साची नार सुहाईआ। गुरमुख सुणाए साचा राग, गुरमुख त्रैभवण बूझ बुझाईआ। गुरमुख आत्म होए वैराग, गुर मन्त्र जाप जपाईआ। गुर मन्त्र मारे तीनो ताप, गुरमुखां ठंड वरताईआ। ठंडी धारा वड प्रताप, गुरमुखां संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका धाम आपणा आप सुहाईआ। गुर शब्द वैराग जन वैरागया। गुरमुख आत्म बुझे तृष्ना आग, सरन सरनाई साची लागया। गुरमुख पकड़े तेरी वाग, शब्द सरूपी आए भागया।

गुर गुरमुख एका सुणे सुणाए राग, गुरमुख धोए काया दागया। गुरमुख आत्म जोती जगे चिराग, गुर पूरा धोवे दागया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे सोया आपे जागया। गुर रंग उमंग गुरसिख रंगया। गुरसिख शब्द डोर पतंग, चढ़े अकाश मात ना सन्गया। गुरमुखां कटे भुक्ख नंग, गुर दरबार एका मंगया। गुरमुख जन्म ना होए भंग, आत्म धार वहे गन्गया। जोती जोत सरूप हरि, गुरसिख गुरसिख मेल दर, वजाए नाम शब्द मृदंगया। गुर पूरा कलिजुग घाट वड चढ़ाईआ। गुरमुख नहावे तीर्थ ताट, तन मन मैल रिहा गंवाईआ। गुरसिख शब्द जणाए साचा पाठ, दूसर चीज ना कोई वखाईआ। गुर मन्त्र खोल्हे साचा हाट, एका शब्द हरि उपजाईआ। प्रगट करे काया माट, गुरमुख वणजारा करे वपारा, लोकमाती राह जणाईआ। गुरमुख साचे दए अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मलाह आप अख्वाईआ। गुर शब्द कलि मूल, गुरसिख परवानया। गुरमुख मात ना जाए भूल, अट्ठे पहर शब्द मस्तानया। गुर शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, बैठे गुरसिख चतुर सुजानया। मातलोक जन साचे फूल, देवे माण श्री भगवानया। मिले मेल कन्त कन्तूहल, टुट्टे गेड़ा आवण जाणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, देवे नाम निधान गुणवन्त गुण निधानया। गुरमुख साची रीत आप चलाईआ। गुरमुख बन्न्हे चरन प्रीत, साजण साचा रिहा सुणाईआ। गुर पूरा सद राखो चीत, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख काया वसेरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला नाम जणाईआ। गुरमुख काया रहे सीत, हरि मन्दिर इक्क रघुराईआ। गुर पूरा जन राखो चीत, चरन कँवल कँवल चरन एका दर सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख बूझे कर विचार। भउ चुक्के एका दूजे, गुरमुख देवे नाम अधार। गुरदुआरा एका सूझे, पारब्रह्म प्रभ पाए सार। चरन प्रीती हरिजन झूजे, लक्ख चुरासी उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल अपर अपार। गुरसिक्खी गुणी निधान, शब्द गुण जाणया। गुरमुख होए दर परवान, चले चलाए आपणे भाणया। गुर पूरा सद मेहरवान, देवे नाम साचा दानया। गुरसिख साचे साची आण, पाए वाली दो जहानया। गुरमुख देवे साचा दान, शब्द उडान बिबाणया। गुर पूरा कर ध्यान, आत्म भरे नाम खजानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, देवे वड्याई विच जहानया। जन राखे हरि दीन दयाल। तन भाखे दर सुरत संभाल। लिखे लेख मस्तक माथ, जोत सरूपी बेमिसाल। शब्द चढ़ाए साचे राथे, इक्क चलाए अवल्लड़ी चाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल लगाए काया डाल्ह।

★ १३ भाद्रों २०१२ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ★

सति पुरख निरँजण एक, सर्ब सुखदाया। सर्ब घटा घट रिहा वेख, दिस किसे ना आया। सृष्ट सबाई लिखे लेख, लेख लेखा ना किसे जणाया। जोती धर धर जामा भेख, लोकमाती फेरा पाया। ना कोई जाणे नर नरेश, शिव गणेश सार ना राया। ब्रह्म विष्न दर दरवेश, खुल्हड़े केस होए हलकाया। करोड़ तेतीसा रिहा वेख, करे खेल हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण वेस कर, आप आपणे रंग समाया। आदि पुरख अनाद जुगा जुगन्तरा। करे खेल विच ब्रह्माद, सभ घट जाणे अन्तरा। सृष्ट सबाई माधव माध, कलिजुग लाए इक्क बसंतरा। हरिभगतन देवे साची दात, अजपा जाप सोहँ गुर मन्त्रा। संत सुहेले साचे लाध, आप बणाए साची बणतरा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखे खेल इक्क इकन्तरा। गुणवन्त गुण निधान नर निरंकारया। लक्ख चुरासी करे पछाण, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। ज्ञानी ध्यानी होए हैरान, पंडत पांधे विच जहान, मुल्लां काज़ी शेख़ नादान, हरि हरि वसे भेव न्यारया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, रसना गायण अञ्जील कुरान, खाणी बाणी होए हैरानया। प्रगट होए हरि बलवान, जोती जामा खेल महान, शब्द रखे तीर कमान, चिल्ह्रा चाढ़े दो जहानया। वेख वखाणे शाह सुल्तान राज राजान जीव अञ्याण बेईमान भरम शैतान, चले चलाए आपणे भाणया। जोधा सूरा नौजवान सर्बकला कलि आपे पूरा, भगत जनां कलि करे पछान। देवे शब्द नाम तन साची तूरा, इक्क बिठाए शब्द बिबाण। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, आपे जाणे आपणी आण। एका एक एक अस्थूल्लया। सृष्ट सबाई साची टेक, मनमुखां आत्म भूल्लया। गुरमुखां करे बुध बिबेक, अन्दरे अन्दर रिहा वेख, शब्द सरूपी लिखे लेख, साचा कन्त हरि कन्तूहल्लया। साचा मस्तक एका रेख, लक्ख चुरासी भरम भुलेखिआ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, एका एक द्वार हरि निरंकारया। दूजी शब्द रखे टेक सर्ब संसारया। पवण स्वास घट घट वास, शाहो शाबास तन ना लाए सेक, शब्द घोड़े हो अस्वारया। चौथे दर साची रेख, संत सुहेले रहे वेख, लोइण तीजे नेत्र वेख, बन्द कुआड़ी कवण खुल्हा रिहा। कवण जोती जामा धारी भेख, कवण रामा सद वसेख, कवण कामा एकँकारया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, करे खेल अपर अपारया। कलिजुग काला रंग काल वटाया। ना कोई दीसे साचा संग, लक्ख चुरासी भरम भुलाया। माया राणी कीने नंग, आत्म होए सर्ब हलकाया। मनमुखां मानस देही होई भंग, नर हरि हरि नर ना रसना गाया। झूठे वहिण वहे गंग, अमृत धार ना कोई वहाया। पंजां चोरां अठ्ठे पहर रहे जंग, होए विचोला ना किसे छुडाया। मदिरा मास लाया

गन्द, बत्ती दन्द धार वहाया। गुरमुख विरला चढ़या साचा चन्द, मिल्या मेल पुरख अबिनाशी लक्ख चुरासी कटे फंद, धर्म राए नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, आप आपणे विच समाया। आप उपाए आप आप उपाया। आपे जाणा आपणा जाप, भेव किसे ना आया। पवणी शब्दी वड प्रताप, जोती जामा भेख वटाया। ना कोई जाणे सति पुरख निरँजण, कवण दुआरे वेख पुन्न पाप, तीनो ताप जगत हलकाया। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत एका धागा एका सूत, कवण कूट रिहा झूट, कवण दिशा पाए हिसा, दहि दिशा शब्द सरूपी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, काली धार रिहा वहाया। कलिजुग काली धार विच संसारया। जीव जन्त होणे ख्वार, आत्म भरे सर्ब हंकारया। ना कोई जाणे मीत मुरार, एका भुल्लया दर द्वारया। चारों कुन्ट चार दिवार मनमुख रोंदे धाहां मार, बन्द किवाड़ी तन मन्दिर वाड़ी साचा आप सुहा रिहा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, एका जोती अग्नी आहूती आपणी आप करा रिहा। रसना शब्द लैणा बोल। आत्म पड़दा लैणा खोल्ह। कवण दुआरे धुनी नाद अनाहद वज्जे साचा ढोल। कवण जणाए अगाध बोध, शब्द सरूपी वसे कोल। कवण दुआरे मिले हरि सूरा दाता जोधन जोध, अट्ठे पहर करे चोल्ह। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे साचे घर, कवण दस्त गुरसिख तेरे कोल। गुरसिख उठ कर ध्यान। आत्म दर वेख विचार, रसना मुख कर ब्यान। अजपा जाप केहड़ा सुख, देवे साचा ब्रह्म ज्ञान। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटान। उज्जल होए मात कुक्ख, मिले मेल नर हरि श्री भगवान। गुरमुख साचे संत सुहेले, अन्दरे अन्दर साचे मेले, आत्म जोती शब्द ध्यान। कवण द्वार शब्द सुणाईआ। कवण द्वार मेल रघुराईआ। कवण द्वार ढोल मृदंग रिहा वजाईआ। कवण द्वार कर प्यार, सिंगी नाद हरि रिहा सुणाईआ। कवण दुआरे देवे अमृत धारा, मेघ रिहा बरसाईआ। कवण दुआरे जोत अकार, आत्म दीपक रिहा जगाईआ। कवण दुआरे कन्त भतार, आत्म सेजा रिहा विछाईआ। फूलन सेजा कर त्यार, गुरमुख साचे रिहा बहाईआ। गुरमुख साचे खोल्ह कुआड़, तत्ती वा नेड़ ना आईआ। परे हटाए पंचम धाड़, बहत्तर नाड़ होए रुशनाईआ। आपे फिरे पिछे अगाड़, पहरेदार हरि अख्वाईआ। शब्द घोड़े प्रभ साचा चाढ़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे घोड़े कर अस्वार, गुरमुख साचे केहड़ी कूटे हरि लै जाईआ। पवण उडे इक्क उडार, शब्द वसे साची धार, जोती नूर इक्क उज्यार, सिध्धा राह कवण वखाईआ। दस्म दुआरी भेव अपार, साचे घर कर प्यार, साची नारी कन्त भतार, कवण सेजा आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण दुआरे हरि निरँकारे, मिले मेल सच्ची सरकारे, आवण जावण पतित पावन, आप फड़ाए आपणा दामन, दिस

किसे ना आईआ। रसना कुण्डा देणा खोल्ह। पंचम शब्द साचा बोल। पंजां तत्तां तत्त विरोल। चेतन्न सत्ता वसे कोल। बुध मति दे समझावे मता। मन पंखेरू करे चोल्ह। बहत्तर नाड़ी उब्बल रता, नाम मृदंगा वजे ढोल। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण दुआरे तुले साचा तोल। आत्म जोती शब्द ज्ञान। गुरमुख साचे नौजवान। काया माटी भाण्डे काचे, अन्दर मन्दिर खेल महान। जोत निरँजण साचो साचे, कौस्तक मणीआं तिलक लगान। पंचम दूत दर झूठे नाचे, अट्ठे पहर बेईमान। गुरमुख विरला हरि हिरदे आत्म वाचे, मिले नाम पद निर निरबाण। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, सच दुआरे कवण निशान कवण पहचान। सच घर कवण पला। ना जन्मे ना जाए मर, वसे निहचल धाम अचल्ला। एका मिले सच दर, दो जहानी खेल खेला। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, शब्द परछावां केहड़ी कूटे पहली वार ढला। हरि शब्द अपार गुर अधारया। गुर शब्द अधार विच संसारया। विच संसार पावे सार, जोत निरंकारया। जोत सरूपी खेल अपार, लक्ख चुरासी विच समा रिहा। लक्ख चुरासी कर्म विचार, लहिणा देणा मात चुका रिहा। लहिणा देणा जीव गंवार, धर्म राए हत्थ फड़ा रिहा। धर्म राए कर्म विचार, चित्रगुप्त संग रला रिहा। वरभण्डी रक्खे एका धार, लहिणेदार सर्ब बणा रिहा। लहिणा देणा आपणा करज उतार, लोकमात जो चढ़ा रिहा। वेले अन्तिम आई हार, साचा शब्द ना किसे पढ़ा ल्या। चारों कुन्ट हाहाकार, मात पित भाई भैण ना किसे छुडा ल्या। अन्तिम रोंदे धाहां मार, धर्म राए सुण पुकार, ना होए कोई सहार, मानस देही जन्म गंवा रिहा। गुरमुख साचे उतरे पार, एका किया चरन प्यार, गुर पूरे राह वखा रिहा। गुर मन्त्र शब्द अपार, उतरे पार नारी नार, बिरध बाल जवान एका राह वखा रिहा। आपे रिहा पैज संवार, गुरमुख साचे संत दुलार, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा। दो जहानां मीत मुरार, हत्थीं बन्न्हे शब्द गाना, अन्तिम वार साची डोली विच बहा रिहा। आप लै जाए सच द्वार, दर घर साचे खोल्हे बन्द किवाड़, दरगाह साची साचे धाम हरि सुहा रिहा। दर घर साचे देवे वाड़, गुरमुख साचे साचे लाड़, अन्तिम अन्त जोती मेल मिला रिहा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, गुरमुख साचे उतरे पार, दोवें धार विच संसार आपे आप चला रिहा। गुरमुख गूढ़ा रंग हरि चढ़ाया। प्रभ मंगी साची मंग, लड़ फड़ाया। कलिजुग माया कट्टी भुक्ख नंग, नाम मृदंग इक्क वजाया। नौ दुआरे जाए लँघ, गुर पूरे राह वखाया। आपे चाढ़े आपणा रंग, दूसर किसे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां इक्क सुहेला जगत इकेला, अट्ठे पहर नज़री आया। अट्ठे पहर पहरेदार। गुरमुख साचे संत दुलार। आप चुकाए दया कमाए, मुख चुआए अमृत धार। उलटी नाभी नीर वहाए, माया दब्बी भारा लाहे, प्रगट जोत नर हरि पोह छब्बी प्रकाश

इक्क कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत उठाए। उठ उठ जाग गुरमुख वणजारया। तन काया लग्गे भाग, कर साचा वणज वपारया। तन मन्दिर सुण साचा राग, छत्ती रागां वसे बाहरया। आत्म जोती इक्क चिराग, मेट मिटाए अन्ध अंध्यारया। गुर पूरे चरनी लाग, खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी देवे पाड़या। दुरमति मैल धोवे दाग, पंजां चोरां रिहा ताड़या। हत्थ पकड़े आपणे वाग, शब्द घोड़े साचे चाढ़या। नौ अठारां डसनी नाग, शब्द डण्डे आपे झाड़या। आपे हँस बणाए काग, सति सरोवर अन्दर वाड़या। मिले मेल कन्त सुहाग, वेखे सच्चा घर धुर दरबार धर्म अखाड़या। एका हरि दरबार, दर दरवाज्जया। गुरमुख साचे कर त्यार, वेख वखाणे राजन राज्जया। अमृत बरखे ठंडी धार, आपणा साजन आपे साज्जया। नौ दुआरे बन्द किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे वेख, दर घर साचे रक्खे लाज्जया। दर घर साचा इक्क सुहाया। जीउ पिण्ड जीव भाण्डा काचा, लाड़ी मौत भन्न वखाया। माटी पुतला दर दर नाचा, भेव ना जाणे राया। पुरख अबिनाशी साचो साचा, दिस किसे ना आया। गुरमुख विरले हिरदे वाचा, ब्रह्म पारब्रह्म एका मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे देवे वर, काया मन्दिर साचे अन्दर डूंघी कन्दर एका एक करे रुशनाया। काया मन्दिर डूंघी गार। औखी घाटी गुरमुख साचे कर विचार। अमृत रस निज्झर चाटी, पवण उनन्जा छत्र झुलार। मिले नाम साची हाटी, चौदां हटां कर विचार। चौदां लोक खोल्ह कपाटी, नौ दुआरे वसे बाहर। एका तीर्थ साचा ताटी, अमृत भरया रहे भण्डार। कँवल नाभी अन बाटी, झिरना झिरे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, दुरमति मैल रिहा काटी। दुरमति मैल कट्ट तन संवारया। दूई द्वैती मेटे फट, देवे इक्क शब्द सहारया। करे वास घट घट जोती जगे लट लट, गुरमुख लाहा लैणा खट, आए दर सच्चे दरबारया। शब्द लपेटे साचे पट्ट, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, गुरमुख साचे जायण तर, मिले नाम शब्द वड भण्डारया। शब्द नाम अतोल जगत तुलाया। गुरमुख अन्दर रिहा बोल, दिस किसे ना आया। साचे पड़दे रिहा खोल्ह, राग रागनी ना किसे अल्हाया। सच्चे दुआरे वज्जे ढोल, इक्क सुरंग हत्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे वेख दर, साची रंगण रिहा चढ़ाया। साचा रंग चलूल तन चढ़ांयदा। हरिजन ना जाए भूल, दर समझांयदा। आप चुकाए अगला पिछला मूल, कन्त कन्तूहल मेल मिलांयदा। देवे नाम शब्द त्रिसूल, त्रैगुण माया परे हटांयदा। पुरख अबिनाशी दूलो दूल्ह, पंच पंचायणी मार मिटांयदा। गुरमुख उपजाए मात कँवल फूल, धरत मात उप्पर टिकांयदा। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, प्रभ आपणे हत्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे वेख दर, पूरन इच्छया मात करांयदा। पूरन इच्छया आत्म

शांत, सोहँ पाए साची भिच्छया। अमृत देवे बूंद स्वांत, एका अक्खर जगत वक्खर गुरमुख साचे सिख्या। बैठा रहे इक्क इकांत, मिले मेल धुर दरगाही लिख्या। दरस दिखाए दया कमाए मेट मिटाए अन्धेरी रात, तन मन लाहे झूठी विख्या। ना कोई जाणे लिखी रेख्या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, आप मिटाए तृष्ना र्तिखिआ। तृष्ना तृख आत्म दूर। पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूर। आत्म जोती साचा नूर। शब्द वजाए साची तूर। अनहद बाणी अनाहद सूर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे वेख दर, एका देवे नाम वर, सर्बकला आपे भरपूर। सर्बकला भरपूर हरि समरथया। गुरमुख आसा मनसा पूर, सिर रक्खे दे कर हथ्थया। बेमुखां दर दिसे दूर, कलिजुग माया मथन मथया। गुरमुख साचे आत्म जोती एका नूर, शब्द चाढ़े साचे रथया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, रसना कथनी मात किसे ना कथया। देवे दरस अनूप, हरि रघुराया। स्वच्छ सरूपी वडा भूप, सद हिरदे रहे समाया। ना कोई रंग ना कोई रूप, जोती नूर इक्क सवाया। करे प्रकाश अन्ध कूप, गुरमुख साचे दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती साचा नाता, इक्क बंधाए पुरख बिधाता, उत्तम रक्खे मात ज़ाता, गुरमुख नाम साचे रंग रंगाया। होए दरस आत्म प्रकाश, अमृत मेघ देवे बरस, शब्द रसन स्वास स्वास। सज्जण सुहेला करे तरस। कलिजुग माया बन्द खलास। आप मिटाए तृषा हरस, आत्म निज्ज घर रक्खे वास। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा दरस दिखाए, काया जंगल जूह उजाड़ वडी वड प्रभास। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ काया टिल्लया। आपे वेखे बहत्तर नाड़, शब्द चढ़ाए तीर सचा चिल्लया। परे हटाए पंचम धाड़, तोड़े गढ़ कोट वड किल्हिआ। दर घर साचे देवे वाड़, पुरख अबिनाशी साचा मेल मिल्या। प्रभ पकड़े हथ्थ आपणे नत्थ, दहि दिशा रिहा फिराया। पंजां चोरां रिहा मथ, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर दुआरे जिस जन दर्शन पाया। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग अन्तिम रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आप आपणा मेल मिलाया। हरि शब्द अपार, गुर उधारया। गुर पूरा पावे सार, कर्म विचारया। जन्म कर्म हथ्थ दातार, पंजां तत्तां आप उपा रिहा। पंजां तत्तां कर प्यार, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ा रिहा। जोत सरूपी कर अकार, शब्द सरूप विच समा रिहा। पवण सरूपी देवे धार, वाजा पवण इक्क वजा रिहा। आपे वसे अन्दर बाहर, दिस किसे ना आ रिहा। गुर पूरा कर त्यार, सुफली कुक्ख मात करा रिहा। किरपा कर सच्ची सरकार, गर्भवास फंद कटा रिहा। नूरी जोत कर अकार, मानस देही आप सुहा रिहा। उत्पत होए विच संसार, लोकमात नाम रक्खा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर

पूरे बणत बणा रिहा। हरि शब्द अधार गुर जणाईआ। गुर पूरा करे विचार, हरि सच्ची सरनाईआ। हरि साचा देवे तार, अट्ठे पहर शब्द जणाईआ। गुर पूरा चरन द्वार दिवस रैण सेव कमाईआ। हरि हरि पावे साची सार, सिर हथ्थ समरथ टिकाईआ। गुर पूरा बणे भिखार, मंगे मंग भिच्छया इच्छया पूर कराईआ। वड दाता हरि सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर पूरे गोद उठाईआ। हरि शब्द अपार, गुर ख़ज़ानया। गुर पूरा बणे वरतार, देवणहार विच जहानया। भरे अतुट हरि भण्डार, आदि अन्त बीना दानया। हरि गुर गुर हरि एका सच्ची धार, आपे जाणे जाणी जाणया। गुरमुख साचे कर प्यार, अमृत आत्म देवे धार, शब्द खण्डा तन शृंगार, प्रभ साचा मात करानया। पंचां चोरां करे ख़बरदार, नेड़ ना आए झूठी धाड़, वडी वड करे कुरबानया। तिक्खी रक्खे तेज कटार, बजर कपाटी आर पार, औखी घाटी इक्क चढ़ानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर इक्क कर, गुरमुख साची जोत जगानया। हरि शब्द जन टेक, विच जहानया। गुर शब्द करे बुध बिबेक, आत्म उपजे ब्रह्म गयानया। हरि शब्द एका एक गुर गुर गुरमुख आवे जावे देवे हरि महानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमाती जोत धर, देवे दान वड वड दानया। दानी दुनियांदार आप अख्वांयदा। एका जोत भगत भगवानी, भगवान लोआं पुरीआं विच समांयदा। जुगो जुग अन्त निशानी, भेखाधरी भेख वटांयदा। शब्द रक्खे तीर कानी, आपणी हथ्थीं आप चलांयदा। लक्ख चुरासी पुणी छाणी, आपे वेखे ब्रह्म ज्ञानी चरन ध्यानी, गुरमुख सोए आप जगांयदा। अमृत आत्म देवे पाणी, एका अक्खर साची बाणी, जगत वखर आप करांयदा। जोती तेज़ कोटन भानी, चरन धूढ़ सच्चा इशनान, मस्तक टिक्का आप लगांयदा। दरगाह साची साची बाणी, दिसे शब्द इक्क निशानी, दूसर वस्त ना कोए संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमाती जोत धर, गुर गुरमुख साचा मन्त्र नाम जपांयदा। गुर मन्त्र नाम बिबाण इक्क रखाया। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, दिस किसे ना आया। करे खेल जुगा जुगन्तर, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। आप बणाए साची बणतर, साचा धर्म रिहा चलाया। लोआं पुरीआं वेख गगनंतर, साची रचना रिहा रचाया। दीपक जोती इक्क बसंतर, घट मन्दिर रिहा लगाया। हरिजन तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, शब्द डण्डा हथ्थ रखाया। पकड़ उठाए पंज चोर सुत्ते डूंघी कन्दर, भय भयानक अचन अचानक रूप अगम्मा प्रगट होए दरस दिखाया। ना कदे मरे ना कदे जम्मा, मात पित ना कदे गोद उठाया। आपे वसे गगन पताली थम्म्हां, इन्द इन्द्रासण सिँघ सिँघासण मुनी मुनीश्र जोग जुगीशर रिखी रिखीशर शिव शंकर अंकर कंकर मृदंग रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर कर, सर्बकला भरपूर हरि, लेखा लेख सच दर, नौ दुआरे भेव चुकाया। नौ दुआरे खोल्ह द्वार, अचरज खेल वरताईआ। दसवें वजे

सच्चा ढोल, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां आत्म पड़दे रिहा खोल्, आपे कुंढा लाहीआ। कलिजुग पूरे तोल रिहा तोल, छोटा मुंडा अग्गे लाईआ। लक्ख चुरासी जूठे झूठे फोलन रिहा फोल, सोहँ खण्डा हथ्थ रखाईआ। गुरमुख साचे लए विरोल, नाम मधाणा रिहा चलाईआ। सच वस्त जन तेरे कोल, साचा हट्ट रिहा खुल्हाईआ। जोत सरूपी रिहा मौल, सच समग्री इक्क रखाईआ। करे खेल उप्पर धवल, धरत खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे फूल कँवल, साचे बूटे रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर आपणा भेख रिहा वटाईआ। हरि शब्द अपार विच ब्रहमादया। गुर शब्द साची धार, देवे आदि जुगादया। मिले मेल माधव माध, दर दुआरा एका लाध, रसना रस रिहा अराध, साचे दर इक्क स्वाद, शब्द वज्जे सच्चा नादया। चले शब्द बोध अगाध, जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर कर, गुरमुख साचे संत ल्याए दर, दया कमाए आत्म जोती शब्द डोरी अन्दरे अन्दर बांध्या। अन्दरे अन्दर बन्न, डोरी पाईआ। गुरमुख आत्म जाए मन्न, झूठा जन हरि कढाईआ। भाग लग्गे काया तन, हरि शब्द इक्क जणाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, सोहँ शब्द मिले वड्याईआ। देवे नाम सच्चा धन, चोर यार लुट्ट कोई ना जाईआ। शब्द सुणाए सच्चा कन्न, छत्ती रागां बन्द कराईआ। धर्म राए ना देवे डन्न, लक्ख चुरासी भेव मिटाईआ। पुरख अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्, नित नवित्ता होए सहाईआ। गुरमुख साचा रसना कहे धन धन, गुर गोबिन्दे मेल मिलाईआ। आप वसाए साचे घर, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, शब्द महल्ल इक्क अटल रखाईआ। जगे जोत घड़ी घड़ी पल पल, गुरमुख साचे जाए बल, दीपक जोती डगमगाईआ। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल, सर्ब रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर कर, अकल कला भरपूर एका बख्शे चरन सरनाईआ। अकल कला भरपूर, हरि वरतन्तया। बेमुखां दिसे दूर, पूरन भगवन्तया। गुरमुखां हाज़र हज़ूर, साजन साचे संतया। हउमे दुखड़ा करे दूर, देवे माण विच जीव जन्तया। दीपक जोत जगे कोहतूर, काया चढ़े रंगण रंग बसंतया। शब्द साचा सति सरूर, सुणे सुणाए हरि बेनन्तया। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर कर, साचे धाम हरि जू वसंतया। हरि वसंदड़ो सच धाम, गुर गोबिन्द वड नाउँ। सद बख्शिंदड़ो पूरन काम, निन्द चिन्द ना जाणे ठाउँ। गुणी गहिंदड़ो नाम दाम, देवे सच सवाओ। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती नूर कर, चले चलाए आपणे भाओ। पल्ले बन्न गंढु नाम अपारया। दूजे दर ना देणी वंड, ना आए पासा हारया। दर घर साचे जाए पाई डण्ड, गुरमुख प्यारया। सिर उठाईं ना दूजी पंड, अन्तिम लग्गे डण्डा भारया। नंगी होए ना मात कंड, दूजे दर ना निमस्कारया। बाल जुवानी गई हंढ, वेला अन्तिम नेड़े आ रिहा। तन आपणे रक्खी ठंड, निहकलंक चरन द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, दे मति आप समझा

रिहा। ना कोई पिता ना कोई पूत। गुरमुख परोए एका धागे साचे सूत। दूजे दर ना दीसे कोए, उठ उठ वेखे चारे कूट। दुरमति मैल जन जनणी आपे धोए, आप आपणा जाए छूट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द हलूणा, गुरमुख साचा लेवे झूट, एका गुर इक्क सरकार। चरन प्रीती जाए जुड़, मिले वर दर द्वार। मानस देही ना जाए रुढ़, पवण पाणी होए अधार। साचा नाउँ ना जाए थुड़, मंगी मंग बण भिखार। भरम भुलेखे ना जाए रुढ़, जोती जोत सरूप हरि, एका दसे सच विहार। मन सिमरत तन वेद पुराण। गुर अमृत वड बाणी बाण। दर द्वार नर निरँकार, इक्क विचार धुर दी बाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी करे पछाण। आत्म आई दर द्वार। रो रो करे इक्क पुकार। पुरख अबिनाशी किरपा कर, इक्क वखा सच घर, नाता तुट्टे पंचम यार। एथे ओथे चुक्के डर, एका वसीए साचे घर, अमृत मिले ठंडा ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम अन्त खोल्ह बन्द किवाड़। दर निमाणी कूक कूक पुकारया। माया राणी चुक्के चूक, मिले मेल कन्त अपारया। तन जूठा झूठा जाए सूक, जोती जगे अगम्म अपारया। लोक माती मिटे रूप, सति सरूप जोत अपारया। मेला मिले शाहो भूप, एका मँगीए मंग हरि द्वारया। लेखा लिखे अन्ध कूप, जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती कर उज्यारया। दीपक जोती काया मन्दिर दिसे साचे थाल। वरन गोती मिटे कन्दर, चरन प्रीती निभे नाल। माया तुट्टे वज्जा जन्दर, आत्म मारे इक्क उछाल। दस्म दुआरी दिसे मन्दिर, लाल अनमुल्लड़ा मिले दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए दर दुआरा सच्ची धर्मसाल। धर्मसाल हरि द्वार। हरि द्वार काया मझार। काया मँझार शब्द अपार। शब्द अपार जोत अधार। जोत अधार एकँकार। एकँकार आप पसार। आप पसार सर्ब वरतार। सर्ब वरतार शब्द जै जैकार। जै जैकार पवण अस्वार। पवण अस्वार जोती जोत सरूप हरि, आपे अन्दर जोत धर। साचा सच कर अकार। पवण रूप शब्द उडार। शब्द भूप हरि दातार। सति सरूप नर निरँकार। रूप रंग अंग संग सदा सदा वेख विचार। शब्द घोड़े कस तंग, नाम फड़े हथ्थ मृदंग, दो जहानां इक्क उडार। नित नवित्ता करे जंग, पंजां चोरां करे भंग, अन्दरे अन्दर मारे मार। वड दाता सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले आप मिलाए आपणी किरपा धार। आपणी किरपा धार आप मिलाया। पूर्ब कर्म विचार, जोत जगाया। एका बख्शे चरन प्यार, नाता बिधाता आपणा आप जुड़ाया। एका दसे साची कार, बैठा रहे इक्क इकांत, दिस किसे ना आया। सोहँ शब्द अपर अपार, अमृत देवे बूंद स्वांत, ठंडी धार वहाया। आपे पिता आपे माता, वरन गोत इक्क पछाता, साचा राह रिहा वखाया। करे खेल बहु बहु भांता, कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, जोत निरँजण कर प्रकाश,

लोकमात मार झात आपणा आप कराया। लोकमात मारी झाकी। गुरमुखां देवण आया बाकी। आत्म खोल्हे एका ताकी। अमृत भरया इक्क प्याला, दर दुआरे बणया साकी। प्रगट होए दीन दयाला, ना कोई जाणे बन्द ताकी। अट्ठे पहर सद रखवाला, दिवस रैण करे राखी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे जोत धर, कोई रहण ना देवे मात आकी। ना कोई दीसे शाह सुल्तान। वेख वखाणे नौ खण्ड पृथ्वी आकाश विच जहान। दीप सत्त होए हैरान, प्रभ अबिनाशी करे ध्यान। ब्रह्मे मिटदी जाए दुकान। शिव शंकर रिहा कर पछान। इन्द इन्द्रासण करोड़ तेतीसा आप कराए जाण पछाण। बत्ती दन्द गाए राग छतीसा, ना कोई जाणे चतुर सुजान। कुरान अंजील पढ़न हदीसा, वेद पुराणां वगी बान। करे खेल बीस इक्कीसा, छत्र झुल्ले इक्क जहान। मेट मिटाए मूसा ईसा, खाणी बाणी होए हैरान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म जोत ब्रह्म पछाणया। आप आपणी लभ्भी गोत, गुरमुख साचा राह वखानया। बन्द कुआड़ी खुल्हे सोत, उपजे धुन धुनी धुनकानया। सुरती सुरत मन ल्या मोहत, मिल्या नाम श्री भगवानया। मिले मेल निरँजण जोत, दीपक जगे दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ अक्खर जगत वक्खर, गुरमुखां देवे दान सच्चा दानया। देवे दान दान निधान। हथ्थ ना आवे पवण पाणी मसाण। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण। पंडत पांधे थक्के मांदे आत्म आंधे, मिल्या मेल ना हरि भगवान। माया बांधे भरम भुलांदे, आउँदे जांदे उठदे वेखण कर ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां मेल मिलावा आपे जापे करे आण।

★ १४ भाद्रों २०१२ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

सागर तन अपार वड समुन्दरा। मन फिरे अद्ध विचकार, वडी कुन्दरा। तन होए चार दिवार, बणे उच्चा सुच्चा मन्दिरा। साची जोत हरि पसार। करे खेल सर्ब मन्दिरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पाए शब्द तन श्रृंगार साची मुन्दरा। सागर काया ताल वस्त अमोल्लया। अमृत गागर रक्खी भाल, विच अडोल्लया। आपे रिहा सुरत संभाल, साजन साचा आपे बोल्लया। आपे शाह आपे कंगाल, दर दुआरा साचा खोल्ल्हया। देवणहार सच्चा धन माल, पूरा तोल हरि जन तोल्लया। आपे लभ्भे अनमुल्लड़े लाल, काया सागर तन विरोल्लया। कवण प्यारा मारे उछाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाग लगाए काया चोल्लया। तन काया काया तन, रती रत उपाया। मनुआ मन

दित्ता बन्न, अद्धविचकार टिकाया। बुद्धि मति रिहा डन्न, भरमां खेल रचाया। आप दिसाए अन्दर अन्ध, किसे दिस ना आया। हड्ड मास नाड़ी किया बन्द, लहू मिज्झ पड़दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना रिहा रचाया। काया सागर सिन्ध, वहिण वहंनया। आप उपजाई साची बिन्द, साचा खेल आप करंनया। जोती धारी हरि मृगिन्द, घड़े घड़ाए भाण्डे वन सुवंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आपणे नाल मन्नया। आपणा आप गया मन्न। भाग लगाए काया तन। जोत टिकाए लाए संऩ। शब्द सुणाए राग कन्न। कन्न जणाए आत्म मन। आत्म मन भरम गंवाए, बेड़ा अन्दर देवे बन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द चढ़ाए साचा चन्न। जोत धर कर प्रकाश। अन्दर वड़ साचे गढ़, उप्पर चढ़ रहे उदास। आप आपणा फड़ लड़, रक्खे वास नाड़ी नाड़। आवे जावे चले चलावे स्वास स्वास, माया अग्नी गई रुढ़। दिस ना आया सीस धड़, साचे मन्दिर बैठा वड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रंगण रिहा रंगाया। अन्दर वड़ करया उहला। कोई ना सके जीव फड़, वेख वखाणे काया चोला। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना डुलाए पवण झकोला। सच दुआरे रिहा खड़, शब्द सुणाए साचा बोला। दस्म दुआरी बैठा चढ़, आदि अन्त कदे ना डोला। आप आपणा ल्या घड़, जोती जोत सरूप हरि, निर्मल जोती नूर कर, आप आपणे वसे कोला। वसे कोल करे कल्याण। हरिजन पड़दे देवे खोल, इक्क चढ़ाए शब्द बिबाण। मनमुख सुत्ते पैर पसार, माया सुझा पीण खाण। गुरमुख नाम रहे विरोल, जोती जोत सरूप हरि, निर्मल जोती मार कर, मेल मिलाए गुण निधान। मन चतुर जगत सुजान। जगत जुगत जीव जहान। गुरमुख विरला पावे मुक्त, चरन कँवल प्रभ कर ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर मात कर, आपे देवे जिया दान। जिया दान गुरदेवा। पीण खाण नाम रस अमृत मेवा। आवण जावण कट्ट फट्ट हरि दर्शन सेवा। जोती खेल घट घट वेख, वखाणे काया मट्ट, गाए रसना साची जिह्वा। दर दुआरा तीर्थ तट्ट, शब्द वणजारा वेखे हट्ट, कौस्तक मणीआ बण वणजारा। आत्म रस लईए चट्ट,, जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर मात धर, इक्क कराए वणज वपारा। वणज वपार हरि कराया। कर कर मात विचार, गुरमुख सेवा लाया। गुरमुख साचा सेवादार, दर घर साचे आप सुहाया। दर घर सोहे सच दरबार, दरगाह साची नाउँ धराया। दर घर साची जोती निरँकार, आप आपणा मेल मिलाया। मिले मेल पुरख अपार, आवण जावण गेड़ कटाया। मानस जन्म ना आई हार, बेड़ा आपणा बन्न वखाया। मिल्या मेल सच्ची सरकार, साचे राम विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, निर्मल जोती मात धर, कर्मी आपणा कर्म कमाया। कर्म करावणहार, काज रचाया। पतित पावन पार उतारनहार, साजन

आप अख्वाया। साचा शब्द उचारनहार, सोहँ अक्खर रिहा पढ़ाया। जोती जिया जन्त अधार, दीपक जोती रिहा जगाया। साधां संतां कर विचार, गुरसिक्खां रिहा वड्आया। देवे नाम अपर अपार, दो जहानी संग निभाया। मेल मिलावा मीत मुरार, सदा सद रक्खे ठंडी छाया। करया वणज सच्चा वपार, गीत गोबिन्दा रसना गाया। मानस देही लाहया भार, साचे बंसा विच समाया। माया राणी तुटा बुखार, हउमे हँगता रोग गंवाया। धर्म राए ना मंगे उधार, लोकमात करज चढ़ाया। मिल्या वर सच्चे दरबार, गुर पूरे सरनी लाया। आप उठाए भुजा पसार, दरगाह साची दए वखाया। जोत जगाए इक्क निरँकार, साचा मन्दिर रिहा सुहाया। सच सिँघासण बैठ दातार, गुरमुख पूरे रिहा समझाया। अवण गवण होया बाहर, अन्तिम जोती मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, निर्मल जोत मात धर, पताल अकाश, अकाश अकाशां आपे बाहर रहाया। अगम्म रूप अथाह बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणा नाँ, दिस किसे ना आईआ। आपे चले चलाए आपणे राह, आपणी रिहा बणत बणाईआ। दो जहानी एका थाँ, आवण जावण खेल रचाईआ। लोकमात जन भगतां पकड़े बांह, आदि अन्त होए सहाईआ। सद सुहेला रखे ठंडी छाँ, शब्द पड़दा उत्ते पाईआ। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे विच समाईआ। आप आपणे विच समाया। साचा मन्दिर कसे दिस ना आया। अन्दरे अन्दर डूंघी कन्दर, शब्द सिँघासण इक्क लगाया। जीव जन्त भौंदे बन्दर, पुरख अबिनाशी किसे हथ्थ ना आया। गुरमुख विरले तोड़े जन्दर, शब्द हथौड़ा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। रंग समाए राग, भेव ना जाणया। राग रंग ना धोए दाग़, सुघड़ स्याणया। सुघड़ स्याणा जाए जाग, मिले शब्द हरि महानया। हरि शब्द उडाए काग, हँस बणाए जीव नादानया। जीव निधाने पकड़े वाग, जिस होए हरि मेहरबानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचा आप पछानया। गुरमुख संत पछाण, दया कमांयदा। सर्ब जीआं घट जाणी जाण, साचे रंग समांयदा। एका रक्खे शब्द बिबाण, चारे कुन्टां आप उडांयदा। अट्ठे पहर मार ध्यान, हरि जन सोए आप उठांयदा। आप चुकाए जम की कान, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। एका देवे नाम निधान, रसना जिह्वा गुण गुणांयदा। चले शब्द सच्चा निशान, आदि अन्त जुगा जुगन्त रंग महल्ल इक्क वखांयदा। भगत भगवन्ते धुर दी बाण। मिले मेल साचे कन्ते, दरस दिखाए दर घर आण। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समान। आप समाया सच रंग, ना वेखे रंगा। शब्द घोड़े कस तंग, शब्द फड़ हथ्थ मृदंगा। गुरमुखां अन्दर वेखे भुक्ख नंग, एका आस प्यास दर मंगा। पंजां चोरां करे भंग, भन्न वखाए काची वंगा। आप निभाए आपणा

संग, वड दाता सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंगण रंगा। शब्द घोड़े कस तंग, आप आपणे रंगण रंगा। रंगण रंग मजीठ, तन चढ़ांयदा। गुरमुख विरला लए डीठ, नेत्र लोचन तीजा आप खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी झूठा पीसण रही पीठ, नर नरायण दिस ना आंयदा। आपे वेखे परखे मिट्ठे कौड़े रीठ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक शब्द डंक राउ रंक एका घर आपणा आप वजांयदा। राउ रंक सुल्तान राज राजानया। जीव जन्त जहान साध संत निधान ना किसे पछानया। गुरमुख विरला चतुर सुजान वड बलवान, मिले मेल श्री भगवानया। आत्म जोती जगे महान, शब्द उडाए सच उडान, किरपा कर वाली दो जहानया। देवे नाम पीण खाण, रसन स्वामी एका गान, साचा शब्द इक्क वखानया। लक्ख चुरासी चुक्के कान, मिले घर सच्चा मकान, दरगाह साची धाम सुहानया। दर दुआरे देवे माण, भगत वछल आप भगवान, दर दुआरे कर परवानया। शब्द झुलाए इक निशान, दीपां लोआं हरि हरि मेहरवान, नौवां खण्डां खेल महानया। आपे गोपी आपे काहन, आपे विष्नूं बंसी श्री भगवान, चतर्भुज आप अख्वानया। आपे ब्रह्मा खोल्ह दुकान, आपे शिव शंकर करे ध्यान, सुरपति राजा इन्द इन्द इन्द्रासण वेख करे पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल मात महानया। लोकमात मात अवतारा। धरत मात हरि सुण पुकारा। कलिजुग होए अन्धेरी रात, चारों कुन्ट धुँदूकारा। कोई ना पुच्छे किसे वात, गऊ गरीबां हाहाकारा। ना कोई पिता ना कोई मात, पुत्तर धी ना कोई प्यारा। एका झगड़ा ज़ात पात, दर दर घर घर होए ख्वारा। कोई ना जाणे साची गाथ, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। कोई ना मिले साचा राथ, तुर तुर थक्के जीव जन्त गंवारा। कोई ना लिखे साचे लेख मस्तक माथ, हरिजन रोवे कर कर प्यारा। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हाथ, ना कोई दीसे शाहदारा। गुरमुख विरले सगल वसूरे जायण लाथ, अन्तर मुख नर निरँकारा। मिले मेल त्रैलोकी नाथ, हरि हरि साजन मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, भगत कराए एका नाम वणज वपारा। हरि वणजारा, आप वणज करांयदा। गुरमुखां कर प्यारा, झोली पांयदा। आत्म जोती नूर कर उज्यारा, दीपक जोती इक्क जगांयदा। दूई द्वैती मेटे धुँदूकारा, सच प्रकाश अकाश करांयदा। नाता तुटे पंचम यारां, दर दुआरा खोल्ह वखांयदा। पवण देवे ठंडी ठारा, शब्द स्वासी इक्क चलांयदा। साचा शब्द दए हुलारा, साचे दर आप बहांयदा। साचा वर सच्ची सरकारा, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटांयदा। अस्थिल दिसे इक्क चुबारा, चार दिवारा कोई नज़र ना आंयदा। जोती जगे अगम्म अपारा, रूप सरूप कोई दिस ना आंयदा। सुणे पुकार सर्ब संसारा, साचा भूप विच समांयदा। उपजे धुन सच्ची धुन्कारा, शब्द अनाहद इक्क वजांयदा। राग छतीसा पार

२७६
०५

किनारा, भेव कोए ना पांयदा। सुन्न अगम्मो दिसे बाहरा, एकँकारा देस सुहांयदा। ओंकारा साची धारा, आपणी रचना आप रचांयदा। आपे आपणा कर पसारा, आपणा आप विच टिकांयदा। जोती निर्मल कर उज्यारा, सूरज चन्द कोई दिस ना आंयदा। आप अपरम्पर अपर अपारा, पारब्रह्म हरि अख्वांयदा। कोए ना जाणे हरि किनारा, कवण दुआरा आप अपरम्पर खेल रचांयदा। आपणा आप लए अवतारा, आप आपणे विच समांयदा। लोकमात खेल न्यारा, गुर पीर पीर गुर जगत धरांयदा। शब्द देवे हत्थ तीर, वारो वार चलांयदा। आप बैठा रहे अख़ीर, धीर इक्क धरांयदा। लोआं पुरीआं आपे चीर, अट्ठे पहर वहीर पांयदा। जुग जुग करे अन्त अख़ीर, भेखाधारी भेख वटांयदा। कलिजुग तेरे लथ्थे चीर, निहकलंकी डंक वजांयदा। बेमुखां कढ्ढे आत्म हउमे पीड़, शब्द बीड़ा इक्क उठांयदा। जन भगतां कटे अन्तिम भीड़, अमृत सीर मुख चुआंयदा। ना कोई जाणे शाह हकीर, दस्तगीर सर्ब अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, आपणा भाणा आपणे हत्थ रखांयदा। गुरमुख रत सति उबाल। पंचम तत्त छुट्टे जंजाल। गुरमति गुरमति गुरमति निभे नाल। धीरज जत धरत मात आपे लए संभाल। वेले अन्तिम रखे पति, चरन प्रीती बन्न्हे नत, धुर दरगाही शब्द दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप जगाए, वेख वखाणे अनमुल्लड़े लाल। लाल अनमुल्लड़ा हरि हरि भाल। आपे बणे दर दर दलाल। बणया रहे सदा सदा शाह कंगाल। जुगो जुग जगत पित नित्त नवित्त भगतन हित्त चले चलाए अवल्लड़ी चाल। मानस देही लैणी जित, ना कोई वार कोई थित्त, दीपक जोती जगे मस्तक साचे थाल। अमृत आत्म लैणा सित, हरया होवे काया खेत, सोहँ बीज साचा लगे फल काया डाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े काल जंजाल। हत्थ समरथ सिर दातार। शब्द चढ़ना साचे रथ, आप आपणी कर विचार। सगल वसूरे जायण लथ, मिले मेल नर निरँकार। पंजां चोरां रिहा मथ, शब्द फड़ हत्थ कटार। एका मिले साची वथ, सोहँ शब्द रसन जैकार। कलिजुग कथा अकथना अकथ, गुरमुख विरला पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन प्यार। मति मन बुध तत्त समाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंजे करन युद्ध, काया अखाड़ा इक्क रचाया। आपे वेखे शब्द घोड़े चढ़ कुद्द, उच्चा आसण लाया। मनमुख जीवां लैण ना देवे सुध, माया पड़दा पाया। गुरमुख वरोले पाणी दुध्ध, दसवें घर वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ रथवाही आप अख्वाया। पंज तत्त तन अपारया। मन मति बुध करे प्यारया। हरि का शब्द करे सुध्ध, जिउँ कंचन सुहागा डारया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे नेत्र पेखे, बैठ सच सच्चे दरबारया। सच दुआरे हरि समाया। आपणा महल्ल

आप उपाया। आपे रक्खे सदा अटल जीव जन्त ना सके ढाहया। गुरमुख साचा जाए बलि बलि, जिस जन साची दया कमाया। काया अन्दर जल थल, थल जल पार कराया। आप चलाए रसना हल, रसन स्वासी नाम जपाया। दीपक जोती जाए बल, नाम रती विच टिकाया। नूरी जोत मार उछल, अकाश प्रकाश इक्क कराया। अमृत मिल्या साचा फल, साचे तन बाग सुहाया। गुरमुख चढ़या उच्चे डालृ, इक्क हलूणा हत्थीं लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां अमृत आत्म मुख चुआया। उच्चे फल लग्गे डालृे। गुरमुख विरला मारे छाले। आप वखाए दया कमाए, पूर्ब दिशा अमृत ताले। अमृत ताले पाए हिस्से, एका मिले शब्द लाले। शब्द लाल गुरसिख दलाल, मेल मिलाए गुर गोपाले। गुर गोपाल जोत अकाल आपे रक्खे नाल नाल, काया मन्दिर धर्मसाले। धर्मसाल बेमिसाल, शब्द वज्जे सच्चा ताल, सार सुरंगे बे बेताले। जोती जोत सरूप हरि, एका जोती नूर कर, आपे वेखे चार दवाले। चार दवाले चार दिवार। चौखट सेजा हरि भतार। नेत्र खोलृे हरिजन तीजा, शब्द सिँघासण वेख अपार। आत्म ब्रह्म सच पतीजा। पारब्रह्म वेख अकार। पारब्रह्म खड़े दहिलीजा, गुरमुख साचा वेख विचार। गुरमुख साचे मन पतीजा, मिल्या मेल हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका एक शब्द धार। शब्द धार गुरमुख अवल्ली। कर विचार उतरे दुःख, होए सहाई जल थली। इक्क उडार उलटे रुख, गर्भ निवासी फली फुल्ली। शब्द सरूपी शाहो भूपी आत्म सेजा देवे सुख, करे कराए सच शृंगार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे देवे वर, एका नारी पुरख भतार। दोवें वसे साचे घर, आत्म सेजा हरि द्वार। तन मन ना डोले चित्त। पारब्रह्म मिले नित्त नित्त नित्त। लेखे लग्गे काया चम्म, अट्ठे पहर रहे जित्त जित्त जित्त। हरि द्वार सुहेले साचे दम, मिले मेल साचे हित्त हित्त हित्त। ना मरे ना जाए जम्म, नाता तुट्टे काया खित खित खित। नेत्र नीर ना रोए कोई छम्म छम्म, अमृत आत्म देवे सित सित सित। ना ख़ुशी ना कदे ग़म, नर निरँकारा सच्चा हित्त हित्त हित्त। आपे पिता अम्मड़ी अंम, आप लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी रित रित रित। मिले मेल पारब्रह्म सरूप ब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे नाम वर, मानस जन्म गए जित्त जित्त जित्त। मानस जन्म संवार आपा वारया। मिल्या सच्चा बापा, दुःख निवारया। मिटे तीनो तापा, भरम गंवा रिहा। इक्क जपाया साचा जापा, कर्म विचारया। ना कोई पुन्न ना कोई पापा, धर्म द्वारया। लोकमात वड प्रतापा, गुर पूरा आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे नाम वर, धीरज सति संतोख दे मति आप समझा रिहा। मन डोले ना डोले नईआ। कलि पूरे तोल तोले, अन्तिम पकड़े बहीआ। काया मन्दिर तन साचे बोले, आपे बणे

साचा सईआ। चुक्की फिरे काया डोले, नाम कुहारा आप अख्वईआ। देवे नाम शब्द अनमोले, नैण नेत्र दरस करईआ। पंज तत्त रहे तन गोले, शब्द ताज सीस पहनईआ। जाप जपाए हौले हौले, साचा राग इक्क सुणईआ। उलटा करे नाभ कँवले, अमृत आत्म मुख चवईआ। मिले माण धरत धवले, गुरमुख साचा जिस धाम सेज वछईआ। धरत सुहाई अन्तिम मौले, निर्मल जोती हरि जगईआ। एका नूर आदि अवल्ले, अन्त संत निशान मात रहि गईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेल शब्द तेल एका एक चढ़ईआ।

★ २५ भाद्रों २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल हरिभगत द्वार ★

रूप अगम्म अपार जोत नुरानया। जोती नूर हरि करतार, शब्द धार इक्क वखानया। शब्द धार नर निरँकार, पवण अस्वार विच जहानया। पवण अस्वार सृष्ट सबाई रिहा पसार, लक्ख चुरासी जीव जन्त देवे इक्क निशानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल वाली दो जहानया। वाली दो जहान खेल अपारा। शब्द झुलाए इक्क निशान, वडा वड विच संसारा। लोआं पुरीआं पावे आण, एका एक डंक वजा रिहा। चारे खाणी कर विचार, राउ रंक हरि समझा रिहा। रसना खिच्चे तीर कमान, शाह सुल्ताना वहीर करा रिहा। दिवस रैण अट्ठे पहर नौजवान, जोत सरूपी दिस ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, बेमुख जीवां काला टिक्का शाही मस्तक ला रिहा। मस्तक शाही काली रेख, आपे लाहे बेपरवाही जोती जामा धारे भेख। कलिजुग जीवां दिसे नाही, आप मिटाए औलीए पीर शेख़। गुरमुख तारे पकड़े बाहीं, मस्तक लाए साची मेख, सदा देवे ठंडीआं छाँईं, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता नर नरेश। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा काला बाणा, आपे वेखे गोपी काहना, ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश। ब्रह्मा विष्न महेष कलि जणाईआ। शिव शंकर करे आदेस, प्रभ कलिजुग वेस वटाईआ। करोड़ तेतीसा वेखे सुरपति राजा इन्द कवण दुआरे जोती जोत प्रवेश, अलख निरँजण एका अलख जगाईआ। आदिन अन्ता ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, रूप रंग रेख भेख कवण रिहा उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा वेस दस दस्मेश अनेक, साची धार जगत कार आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे हथ्थ रक्ख करतार, लक्ख चुरासी पाए नत्थ विच वरभण्ड सर्ब संसार। शब्द चलाए साचा रथ, गुरमुख चढ़ाए किरपा धार। आत्म देवे साची वत्थ, सोहँ अक्खर जगत वक्खर, नौ दुआरे वसे बाहर। आपे पाड़े बजर कपाटी पत्थर, दस्म दुआरी कर उज्यार। नेत्र लोचन लोइण केहड़ा अथ्थर, सथ्थर लथ्थे विच

बजार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत उधारे, आप आपणी किरपा धार। किरपा धार जोत जगाईआ। पवण घोड़े हो अस्वार, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। शब्द पहर तेज कटार, पहरेदार आप अख्वाईआ। जोती नूर कर उज्यार, साचा राह रिहा वखाईआ। नौ दुआरे बन्द किवाड़, दसवें धर्म बूझ बुझाईआ। कलिजुग माया ना जाए साड़, अमृत आत्म साचा मुख चुआईआ। होए उज्यार नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ी डगमगाईआ। शब्द वज्जे काड़ काड़, हँकारी गढ़ तोड़ वखाईआ। गुरमुखां फिरे पिछे अगाड़, चरन प्रीती तोड़ निभाईआ। साची घोड़ी देवे चाढ़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। दरगाह साची देवे वाड़, धर्म राए ना डन्न लगाईआ। आपे परखे चंगे माड़, कलिजुग अन्त आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत सुहेले आप कराए आपणे मेले, बंक दुआरा इक्क घर बाहरा कलिजुग बूझ बुझाईआ। इक्क दुआरा दर दरबार। पुरख अपारा खेल अपार। खेल न्यारा विच संसार। शब्द अस्वारा पवण अधार। लोआं पुरीआं एका धारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड कराए आपणी कार। शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड, लोआं पुरीआं रिहा वंड, नौ खण्ड पृथ्वी पाए सार। वेखे खेल हरि वरभण्ड, लक्ख चुरासी नार रंड, सुहागी कन्त ना कोई हंढा रिहा। दर दर घर घर भेख पखंड, साधां संतां आत्म होई घमंड, माया झण्डा कलि झुल्ला रिहा। प्रभ अबिनाशी वढ्ढे गंढु, अन्तिम करे खण्ड खण्ड, धर्म राए दर देवे वंड, कुम्भी नर्क पवा रिहा। कलिजुग औध गई हंढु, वेले अन्तिम पाई वंड, भरम भुलेखे सर्ब भुला रिहा। पुरख अबिनाशी पाए वंड, वेख वखाणे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज आपे पड़दा लाह रिहा। बेमुखां कलिजुग नंगी कंड, गुरमुख साचे संत जनां आपणा लड़ फड़ा रिहा। शब्द दात वड करामात कलि रिहा वंड, सोहँ शब्द सुहागी गीत एका कन्न सुणा रिहा। बेमुखां उठाई पापां पंड, अन्तिम अन्त ना कोई भार वंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे विच समा रिहा। आप आपणे विच समीप। वेख वखाणे नौ खण्ड पृथ्वी सत्त दीप। राजे राणे भरम भुलाणे, गुरमुख विरले बख्शे चरन प्रीत। बेमुख जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे, आपे परखे नीत अतीत। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, एका गायण सुहागी गीत, चले चलाए आपणे भाणे, किसे दिस ना आए गुरुदुआरे मन्दिर मसीत। काया मन्दिर सच टिकाणे, नर हरि साचा राखो चीत। अट्ठे पहर पवण बिबाणे, अमृत धारा सीतल सीत। बिन गुर पूरे कवण पछाणे, जीव जन्त होए निधाने, कलिजुग उलटी चली रीत। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, राजे राणे वेख दर, गुरमुख आत्म वसे घर, मानस देही रिहा जीत। दस्म दुआरी ताक खोल्ह, साचा हट्ट खुल्हांयदा। शब्द सरूपी आत्म अन्दरे अन्दर बोल, साचा वाक शब्द सुणांयदा। पंजां चोरां हरि रोक, नौ दुआरे बन्द करांयदा। तन

नगारे वजे चोट, नाम मृदंगा इक्क लगांयदा। बहत्तर नाड़ी कढ्ढे खोट, अमृत सीर मुख चुआंयदा। गुरमुख विरला विच्चों कोटी कोट, काया हउमे दुःख गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम अन्ध अंञान अन्धेर मिटांयदा। दस्म दुआरी ताकी आपे लांहयदा। गुरमुखां चुकाए लहिणा देणा बाकी, धुर दरगाही सच मलाहीआ। चिट्टे अस्व चढ़या साचे राकी, चारों कुन्ट रिहा भुवाईआ। ना कोई जाणे बन्दा मात खाकी, आदम हवा दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी पाकन पाकी, पीरन पीरा इक्क अख्वाईआ। अमृत प्याए साचा साकी, ताल सुहावा इक्क सुहाईआ। इक्क सुणाए भविख्त वाकी्, कलिजुग काला वेस वटाईआ। गुरमुखां कराए अन्दरे अन्दर झाकी, दीपक जोती इक्क जगाईआ। नेड़ ना आए हाकन डाकन डाकी, माई गौरजां दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे, दस्म दुआरे बूझ बुझाईआ। आत्म दर खोलॄ दुआरा, सच महल्ल वखाईआ। जोत निरँजण कर अकार साचा दीपक इक्क उज्यारा, दहि दिशा होए रुशनाईआ। ना कोई दीसे चार दिवारा, महल्ल अटल इक्क अपारा, शब्द शृंगारा नर हरि गिरधारा, साचा आसण साची सेज विछाईआ। धुनी नाद अपर अपारा, छत्ती राग ना दए सहारा, वेद पुराणां वसे बाहरा, अंज़ील कुरान दूर किनारा, खाणी बाणी सार ना पाईआ। आदि पुरख अपरम्पर धारा, जुगा जुगन्तर साची कारा, कर कर वेस
२८४ जोती भेस लोकमात खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, आत्म सच २८४
०५ सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। दस्म दुआरा हरि खुलॄाया ए। पार किनारा इक्क वखाया ए। अमृत धार मुख चुआया ए। ०५
ना कोई दीसे ठग्ग चोर यार, साचा घर इक्क वखाया ए। अट्ठे पहर जोत अकार, अन्ध अन्धेरा सर्ब मिटाया ए। पवण उडारी ठंडी ठार, तत्ती वाउ लग्गे ना राया ए। नेड़ ना आए मौत लाड़, धर्म राए दए दुहाया ए। गुरमुख शब्द घोड़े चाढ़, आपणा जोड़ जुड़ाया ए। दरगाह साची देवे वाड़, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ ए। झूठी देही लोकमात जाए साड़, सतारां हाढ़ी लेख लिखाया ए। आपे वेखे चंगे माड़, भाणा आपणे हथ्थ रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चित्रगुप्त दे मति कलि समझाया ए। आत्म खोलॄ दर द्वार, दया कमाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, हरि जोत जगाईआ। निर्मल जोत कर अकार, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। काया करे ठंडी ठार, सीतल धार इक्क वहाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, निरगुण खेल हरि रघुराईआ। शब्द कराए तन शृंगार, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। आपे होए पहरेदार, दर दरबान आप अख्वाईआ। चिट्टे अस्व हरि अस्वार, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। गुरमुख रहणा ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा रिहा पुजाईआ। वेला चुक्के चार यार, संग मुहम्मद दए दुहाईआ। ईसा मूसा होए ख्वार, ना दीसे कोई सहाईआ। कलिजुग

काला सूसा कर त्यार, काली चोली तन छुहाईआ। ना कोई सुणाए कुरान हदीसा, राग छतीसा मेट मिटाईआ। खेले खेल बीस इक्कीसा, छत्र जगत जगदीसा इक्क झुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां चरनां हेठ झसाईआ। चरनां हेठ झस्से हरि निरंकारया। लाड़ी मौत वेख खिड़ खिड़ हस्से, कलिजुग खेल अपारया। बेमुखां राह एका दसे, धर्म राए खोल्हे, बन्द कवाड़या। गुरमुख साचे दर द्वार आयण नस्से, प्रभ आपणी गोद उठा रिहा। शब्द तीर एका कसे, लक्ख चुरासी पार करा रिहा। गुरमुखां मिटाए अन्धेर जगत जग मसे, दीपक जोती आत्म साचा चन्द चढ़ा रिहा। नगर खेड़ा एका वसे, निहकलंक डंक जिस धाम वजा रिहा। जीव जन्त साध संत जूठी झूठी माया फाँसी फसे, ना कोई अन्त छुडा रिहा। भगत जनां हरि हिरदे वसे, साचा लेखा इक्क लिखा रिहा। अमृत आत्म मध पीणा साचा रसे, निर्मल धार मुख चुआ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समा रिहा। आपणे भाणे हरि आप समाया, दिस किसे ना आया, भुल्ली कलि लोकाईआ। शब्द ताल इक्क वजाया। रोग सोग दए गंवाया। बेमुखां गूढ़ी नींद रिहा सवाया। गुरमुख विरले काया डाल्ह फल लगाया। सोहँ साचा मेल मिलाया। घर घर मेल हरि ना मिले दलेर, काया जंगल जूह उजाड़ बीआबानया। ना कोई तोले धड़ी सेर, कवण करे अन्तिम मेहर, हथ्थ बन्न्हे शब्द गानया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे सच घर, दर दुआरा जिस पछानया। नंना : नार सुहाग ना कन्त हंढ्ढाईआ। ना होया जगत त्याग, भरमे भुल्ले जीव लोकाईआ। काया मन्दिर ना लग्गे भाग, दीपक जोत ना अजे जगाईआ। दस्म दुआरी ना सुणया राग, धुनी नाद ना कोई वजाईआ। होया मजन ना साचे माघ, चरन धूढ़ इशनान ना कोई कराईआ। काया सोई ना गई जाग, हउमे बुझी ना तृष्ना आग, अमृत धार ना इक्क वहाईआ। अज्जे हँस ना होया काग, सच सरोवर ना कोई नुहाईआ। किस हथ्थ पकड़ी तेरी वाग, शब्द घोड़ा रिहा वखाईआ। कवण लेखा लिखे मस्तक भाग, जोत लिलाटी दए जगाईआ। कवण धोवे काया दाग, मन बैराग इक्क उपजाईआ। रसना आया ना अजे स्वाद, सिदक सबूरी भेव ना राईआ। काया पिण्ड पुछानया ना जाणया सच हरी, कवण महल्ल अटल रहाईआ। मिले मेल माधव माध, सच भूमिका धाम अस्थूल कन्त कन्तूहल दर दुआरा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, चौह अक्खर वक्खर लेखा आप लिखाईआ। सस्सा : सतिगुर सूर हरि बलवानया। घग्गा : घोड़ा दिसे दूर नौजवानया। सस्सा : सुरती साची नूर, नूरो नूर नूर नुरानया। घर बैठा जाणे दूर, लोकमात ना किसे पछानया। गुर मन्त्र शब्द सर्ब भरपूर, गुरमुख साचे रसन वखानया। गुर पूरा साचा आसा मनसा पूर, देवे नाम जगत निशानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख

साचे संत प्यारे, तेरा मुख मुख वाक करे दर परवानया। दर परवान आया परवाना। वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे, जोती जामा श्री भगवाना। चले चलाए आपणे भाणे, भरम भुलाए सुघड़ स्याणे, वेख वखाणे राजे राणे, ज्ञान ध्यान ना कोई वखाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वाली दो जहाना। आप आपणा मात उपाया ए। जोत निरँजण नाम धराया ए। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, साचा सज्जण आप अख्वाया ए। जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, कलिजुग वेला अन्त सुहाया ए। संत सुहेले आया ठग्गण, भेखाधारी भेख वटाया ए। गुरमुख साचे चरन दुआरे साचे लग्गण, जिस सिर हथ्थ समरथ रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराए आपणे मेले, दूई द्वैती पड़दा लाहया ए। निहकलंक निहकलंक निहकलंक नर निरंकारया। निहकलंक निहकलंक निहकलंक, शब्द डंक राउ रंक चार दिवारया। निहकलंक निहकलंक निहकलंक, बार अनक जोती जामा भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक आपे आप अख्वा रिहा। निहकलंक आप अख्वांयदा। शब्द डंक इक्क वजांयदा। जन भगत उपजाए जिउँ राजा जनक, लाए तनक कर्म कमांयदा। भेखाधारी वासी पुरी घनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। सति पुरख निरँजण साची धार, सर्ब घटा घट वासा है। लोआं पुरीआं बन्ह्रे धार, वेख वखाणे पृथ्वी अकाशा है। लक्ख चुरासी पावे सार, आपे वेखे जगत तमाशा है। जन भगतां खोल्ह्रे बन्द किवाड़, बेमुखां करे नासा है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्ब घटा आपे प्रकाशा है। आप आपणा कर प्रकाश, साची बणत बणांयदा। शब्द उडारी इक्क अकाश, दहि दिशा वेख वखांयदा। आदि अन्त ना होए विनास, स्वास स्वास हरि समांयदा। लक्ख चुरासी वसे पास, दिस किसे ना आंयदा। होए सहाई दस दस दस मास, अन्ध अंध्यार कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर प्रकाश लोकमात जोत जगांयदा। लोकमात जगी जोत, वज्जे कलि वधाईआ। मेट मिटाए वरन गोत, शब्द धार इक्क रखाईआ। कलिजुग जीव रहे सोत, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुरमुखां मैल रिहा धोत, उज्जल मुख मात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ खण्ड पृथ्वी आपे वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी शब्द उडार। आपे वेखे अन्दर बाहर। लोआं पुरीआं पावे सार। जोती शब्द एका धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे आपणी कार। चारों कुन्ट चार चुफेर। जोत सरूपी लए घेर। लक्ख चुरासी आपे वेखे, आपे पाए भरम भुलेखे जगत भुलेखे कर कर हेर फेर। गुरमुखां लिखाए साचे लेखे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे तारे चरन दुआरे कर कर आपणी मेहर। काया पिण्ड वड संसार है। हरिजन साचे माण, नौ खण्ड पृथ्वी सच्चा

इक्क मकान है। विच वसे पंज शैतान, दिवस रैण अट्ठे पहर पावण शोर, अन्ध घोर विकारा हँकार उठाइन चण्ड प्रचण्ड पायण वंड नौजवान है। बुध मति वढुण कंड, मनुआ फिरे विच ब्रह्मण्ड होया फिरे प्रधान है। जोती जोत सरूप हरि, आपे पाए साची वंड, साचे संत सुणना ला कान है। काया मन्दिर कोट गढ़, एका कलि विचारना। कवण ढाहे उप्पर चढ़, किस महल्ल उजाड़ना। कवण वेखे दूर खड़, कवण वंडाए भारना। कवण घाड़न रिहा घड़, कवण नव खण्ड वंड कर साड़ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ फड़ शब्द चण्ड प्रचण्ड, हरिजन साचे करे ताड़ना। काया मन्दिर इक्क ध्यान। अन्दरे अन्दर सुंञ मसाण। नौ दुआरे दर दर मन भौंदा बन्दर, नाल वसे पंज शैतान। डूंघी काया अन्धेरी कन्दर, चारों कुन्ट बीआबान। जोती जोत सरूप हरि, वेखे लेख दर दर, गुर गुरसिख बणना जगत प्रधान। निरगुण रूप अपार, अथाह है। निरगुण रूप अपार, सर्ब बेपरवाह है। निरगुण रूप अपार, आपे आप सलाह है। कलि एका रक्खे सच मलाह है। निरगुण रूप अपार, आपे आप अतुल अडुल अटल अथाह है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया वेस कर, ब्रह्मा सुत इक्क उपाया। ब्रह्मा सुत सुत उपजाए। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, आप आपणी बणत बणाए। करे खेल कमलापति, साची धारा इक्क चलाए। आप सुहाए आपणी रुत, मात पताल अकाश आपे आप
२८७ लए उपजाए। जोत सरूपी कर प्रकाश, सति सतिवादी डेरा लाए। सति पुरख निरँजण इक्क अबिनाश, आपणा फुरना २८७
०५ रिहा जणाए। साचा फुरना शब्द शाबाश, पुरीआं लोआं रचन रचाए। आप आपणा करे दास, पारब्रह्म शब्द प्रकाश, जोती ०५
साचा मेल मिलाए। सच मण्डल बणाए शब्द रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं बणत बणाए। त्रैगुण माया तत्त, हरि विचारया। आपे पाए आपणी रत, करे खेल कँवल उज्यारया। विच भरया धीरज जत, साचा बीज नाम घत्त, चरन नत्त आप उपजा रिहा। आपे दे समझावे मति, लोकमात बनाउँणा नत्त, पुरी पताला इक्क बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे नाल मिला रिहा। आप आपणा जोड़ जुड़ाया। शब्द घोड़ा इक्क वखाया। चढ़या घोड़, दर दुआरे आया। प्रभ अबिनाशी गया बौहड़, आप आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख आपे जाणे लम्मा चौड़ा, भेद अभेदा भेव किसे ना पाया। ब्रह्मा मंगे बण भिखार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। एका देवे वस्त अपार। शब्द तीर सच विहार। एका वरखे अमृत मींह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्शे चरन प्यार, साचा चरन प्यार, आप वड्आया। आपे वसे आपणी धार, कर्म कमाया। इन्दलोक वड हरि जी हस्से, शब्द तीर निराला कसे, साचा राह रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप

आपणा रंग वखाया। ब्रह्म रूप ब्रह्मा उपाया ए। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया ए। मिल्या मेल साचे हरि, ब्रह्म पारब्रह्म समाया ए। पारब्रह्म करया कर्म, ब्रह्मा लेख लिखाया ए। लिख्या लेख सच ब्रह्म, पारब्रह्म जो फ़रमाया ए। पारब्रह्म साचा धर्म, आपणा आप जणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक शब्द जणाया ए। ब्रह्मे शब्द जणाई आप कराईआ। आत्म घर वज्जी वधाई, बन्द बन्द खुशी कराईआ। रसना चली वाहो दाही, खिच कमान हरि वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। हरि साचा लेख लिखाए, भेव ना राया। ब्रह्मा चार मुख रिहा गाए, चारे वेदां आख सुणाया। आपे जाणे सभनीं थाँईं, अछल अछेदा रंग वटाया। जोती जोत सरूप हरि, साम रिग युजर अथर्बण नाल रलाया। चारे वेद कर उचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। ब्रह्मे दए चार सुत्त, सनक सनंदन सनातन संत कुमार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर नर हरि सच्ची सरकार। देवे वर हरी हरि हरि निरंकारया। सृष्ट सबाई धरनी धर, लक्ख चुरासी वरनी वरन, करे खेल अपर अपारया। आपणी करनी आपे कर, धरत मात मात धर, देवे जल आप सहारया। वसे उच महल्ल अटल, जल थल खेल रचा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ सत्त दे वर, नौ सत्त हरि उपजा रिहा। नौ सत्त आप उपाया ए। ब्रह्मे साचा कर्म कमाया ए। नार सुरसती संग रलाया ए। नारद मुन जिस जन जाया ए। छत्ती रागां मात अल्लाया ए। पुरख अबिनाशी दया कमाया ए। चारों कुन्ट रिहा वड्आया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग निभाया ए। आपणा संग आप निभांयदा। चारे वेद हरि लिखांयदा। साची वंडन वंड करांयदा। चारे जुगां हिसे पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चौथा नाल रलांयदा। त्रिताली लक्ख बीस हजार करे गेड़ा, एका चहु अक्खर नाम रखांयदा। जुगा जुगन्तर आपे करे हक्क निबेड़ा, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग सतिजुग द्वापर त्रेता प्रभ अबिनाशी आप बणाए, एका खेड़ा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचा वेख हरि, वार अठारां वेख विचारा आपणा भेख वटांयदा। सतिजुग भेख वटाए, वार अठारया। त्रेता ल्या वेख, दोए दोए लोचन राम अवतारया। द्वापर आपे मिटी रेख, वेद व्यासा कृष्न मुरारया। ऐड़ा अथर्बण लिख्या लेख, कलिजुग काला वेस वटा ल्या। दर घर साचे बणयां दर दरवेश, घर साचे जाए पुकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, कलिजुग मंगे इक्क वर, बणया दर हरि भिखारया। कलिजुग मंगया वर, आप पुकारया। लोकमात आवे डर, एका देदे साचा वर, चरन सरन हरि निमस्कारया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आत्म झोली देवे भर, संग रलाए लोभ मोह हंकारया। नर नरायण सरनी पड़, एका लड़ ल्या फड़, धरत मात उप्पर

बैठ चढ़, चारों कुन्ट रिहा ललकारया। किले कोट अन्दर बैठा वड़, नौ खण्ड पृथ्वी एका गढ़, सत्त दीप चार दिवारया। गुर पीर औलीआ साध संत ना सके फड़, ना कोई देवे मात हारया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग साचे दित्ता वर, भरया इक्क इक्क भण्डारया। कलिजुग आया दर, खुशी मनाईआ। धरत मात आया डर, लोकमात कर्म रिहा उपाईआ। आप भुलाए नारी नर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। पंचां चोरां फिरनां घर घर, झूठा डंक रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग काले दित्ता वर, लक्ख चुरासी अन्तिम अन्त करी जिस कुड़माईआ। कलिजुग काली धार आप चलाईआ। प्रगट होए बोध अवतार, साचा राह रिहा जणाईआ। जीव जन्त साध संत हउमे ममता मार, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग खेल करे अपार, आपे आप सर्ब रिहा भुलाईआ। वरते वरतावे विच संसार, भाणा आपणा हथ्थ रखाईआ। कलिजुग दित्ता इक्क प्यार, प्रभ अबिनाशी दया कमाईआ। धरत मात रोवे धाहां मार, जन भगतां होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रचना आप रचाईआ। आपणा कर्म कर्म कमाया। बोध अबोध भरम गंवाया। ईसा मूसा मात उपाया। खाली होया शब्द खीसा, कलिजुग काल सन्नृ लगाया। संग रलाए एका दूजा, काला सूसा तन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काले दित्ता वर, इक्क भण्डारा आप

२८६ ०५ भराया। ईस मूसा गए हार। जीवां जन्तां कर सुधार। आदिन अन्ता करे विचार। पूरन भगवन्ता खेल अपार। जोती २८६ ०५

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सद्दया दर द्वार। कलिजुग सद्द द्वार हरि समझांयदा। ना कोई छड्डणा पीर फकीर साध संत यार चार कुन्ट आप हिलांयदा। चार कुन्ट अन्ध अंध्यार, साचा संग ना कोई रखांयदा। कलिजुग रोवे धाहां मार, गुर पीर औलीआ कोई ना पावे सार, आपणा राह मात चलांयदा। एका वेंहदा मीत मुरार, शब्द सरूपी साचा यार, लोकमात धार बनौंयदा। पुरख अबिनाशी कर विचार, कूड़ कुड़यारा करे ख़बरदार, त्रैगुण वेस हरि गिरधार, पंज तत्त अप्प तेज वाए पृथ्वी अकाश बणाए काया रास करे ख़बरदार, त्रैगुण वेस हरि गिरधार, पंज तत्त अप तेज़ वाए पृथ्वी अकाश विच चलाए पवण स्वास, शब्द टिकाए हड नाड़ी मास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कर्म कमांयदा। पंजां तत्तां तन बणाया। आप आपणी रित टिकाया। चरन प्रीती नत वखाया। शब्द फड़ाए साचा रथ, बाहों फड़ रिहा चढ़ाया। सृष्ट सबाई रिहा मथ, कलिजुग काला रिहा कुरलाया। सगल वसूरे गए लथ, दर दुआरा इक्क सुहाया। लेखा लिखे साचे हथ्थ, इक्क मुहम्मद संग उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग काले मेल मिलाया। इक्क मुहम्मद दर द्वार। प्रभ अबिनाशी करे कराए आपणी कार। साची जोत इक्क प्रकाशी, मातलोक

दी लाहे उदासी, चौदां तबकां चौदां लोक करे ख़बरदार। पंडत पांधे मेट मिटाउँणे फड़ कांशी, चारों कुन्ट हाहाकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता नाम अधार। साची दात हरि दर पाई। कलिजुग करे अन्धेरी रात, काला लेखा मस्तक शाही। इक्क बणाए जगत जमाइत, चार यारां संग रलाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, लोकमात जाणा चांई चांई। इक्क मुहम्मद करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। लोकमात मार झात इक्क इकांत, अन्तिम अन्त कवण दिशा पाए हिसा वेला वक्त आप विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संग मुहम्मद दित्ता वर चार यार। चौदां लोक चौदां हट्ट। चौदां तबकां वेख घट घट। जोती नूर इक्क प्रकाश, एका जगे लट लट। सदी चौधवीं होए विनास, चौदां सद काया मट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुरमति मैल रिहा कट्ट। दर द्वार दर पुकारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, वेले अन्तिम होए अधार, देवे दरस अगम्म अपार, कवण मेटे चार यार, नबी रसूलां करे ख्वार, दर दर घर घर पावे सार, चारों कुंट दिसे हारया। जोत सरूपी शब्द धार, पुरख अबिनाशी आप सुनार, मुहम्मद अहिमद ख़बरदार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे मारे शब्द मारया। शब्द मार हरि कराउँणी। जोती नूर नूर जगाउँणी। शब्द तूर सर्ब भरपूर कलि कुलवन्ते आप रखाउँणी। लक्ख चुरासी दिसे दूरन दूर, सर्ब घट वासी बणत बणाउँणी। धर्म राए दी फड़े फाँसी, असराईल जबराईल मेकाईल असराफील साची रंगण आप चढ़ाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम जोत धर, सदी चौधवीं सति सतिवादी बोध अगाधी ब्रह्म अनादी आपे मेट मिटाउँणी। ऐड़ा अथर्बण अलाही नूर। नूरी अल्ला शब्द तूर। शब्द दस्से सच मुहम्मद गौंस पीरां हाजर हजूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आपे करे चूरो चूर। इक्क मुहम्मद चढ़या चाअ। दर दुआरे खुशी मना। प्रभ अबिनाशी वेखे थाँ। कलिजुग अन्तिम बण मलाह। पीर पैगम्बर औलीए कोई दीसे ना। ना कोई फड़ाए किसे बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका छत्र झुलाए सीस। मुहम्मद अहिमद वक्त चुकाया ए। निरगुण निराधार अकार आप कराया ए। सुरती वेखे खेल अपार, साची धारा शब्द रखाया ए। लोकमात कर उज्यार, नानक निरँकारा आत्म दर दुआरा सुहाया ए। मिल्या मेल पुरख भतारा, होई सुलक्खणी साची नारा, साची सेजा कन्त बहाया ए। मिल्या मेल पहली वारा, चढ़या तेल विच संसारा, आपे गुर आपे चेल, आपे अन्दर आपे बाहरा, साचे रंग समाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डोरी नाल बंधाया ए। शब्द डोरी हत्थ रखाईआ। गुर सतिगुर आप फड़ाईआ। मिल्या मेल लिख्या धुर, ना जाणे जीव लोकाईआ। चरन प्रीती गई जुड़,

२६१ ०५

गया हरि सच्ची सरनाईआ। लोकमात ना रही थुड़, देवणहार आप रघुराईआ। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। इक्क वखाया साचा पौड़, दर दुआरे आप बहाईआ। जोत सरूप सति सतिवादी साचे मन्दिर बाहर आया दौड़, गुर नानक दरस दिखाईआ। गुर नानक आत्म लग्गी औड़, अमृत मेघ हरि बरसाईआ। दोहां धिरां घर साचे होया जोड़, दोहां धिरां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक दित्ता इक्क वर, सति नाम नाम सति गुर नानक झोली पाईआ। सति नाम हरि झोली पाया ए। गुर नानक दरस दिखाया ए। जगत तृष्ना मिट्टी हरस, अमृत मेघ रिहा बरस, पवण उनन्जा छत्र सीस झुलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किया तरस, रंग नवेला इक्क इकेला आपणे रंग समाया ए। गुर नानक गुर कर विचार। वेखे दर सच्ची सरकार। जोत सरूपा जोत मिलाया, सति सरूपा हरि हरि वडा शाहो भूपा, एका एका इक्क अकार। ना कोई पवण ना कोई धूपा, ना कोई माया तन श्रृंगार। ना कोई सोना ना कोई रूपा, ना कोई दीसे सुलक्खणी नार। चारों कुन्ट कोई ना दीसे अन्ध अन्ध कूपा, जोत निरालम इक्क अकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक भण्डारा दित्ता भर, कर दर सच्ची विचार। गुर नानक खुशी मनाईआ। रसना रस हरि हरि गाईआ। साची आरती इक्क बणाईआ। गगन मण्डल हरि रिहा सुहाईआ। दीपक जोती साचे जगन, अट्ठे पहर रहणा मग्न, एका लिव एका लग्न, ना देवे कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका वेख सच घर, गुर नानक मिल्या सच वर, दोए जोड़ चढ़या शब्द घोड़, लोकमात आया सीस निवाईआ। लोकमात चरन टिकाया। प्रभ अबिनाशी वेखे मार झात, गगन मण्डल उप्पर डेरा लाया। बैठा दिसे इक्क इकांत, सञ्झ सवेर ना कोई रखाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, गुर मन्त्र अन्तर सतिनाम नाम सति कलिजुग जीवां रिहा जपाया। सतिनाम सति पुरख जपाया। चार कुन्ट चार दिशा जग जपाया। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दर दर घर घर वेखे जा के। कलिजुग तेरे काले लच्छण, कलिजुग जीआं गया सुणा के। सतिगुर साचा आया रक्खण, माया ममता परे हटा के। आप विरोले छाछ मक्खण, नाम मधाणी साची पा के। जीआं जन्तां काया भाण्डे सक्खण, कलिजुग गया अग्नी ला के। जोती जोत सरूप हरि, गुर नानक दित्ता इक्क वर, लोकमात जग जोत धर, लक्ख चुरासी दे मति समझा के। गुर नानक कलि समझाया ए। कलिजुग काला वेस वटाया ए। गुर पूरा फिरे देस प्रदेस, शब्द डंका रिहा वजाया ए। लोआं पुरीआं वेख ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, रहे चारों कुन्ट सीस निवाया ए। बाल जुवानी गई वरेस, अन्त बुड़ेपा आया ए। भाग लगाया माझे देस, गुर नानक गुर नानक गुर नानक आप लिखवाया ए। जोती जोत सरूप हरि, गुर नानक दित्ता इक्क वर, नाम सति सति नाम जिस रसना

२६१ ०५

जाप जपाया ए। रसना जाप जपाए हरि निरंकारया। तीनो ताप मिटाए विच संसारया। जो जन आपणा आप मेटे हंकारया। लोकमात वड प्रताप, पंचम पंचम पंचम आप अख्वा रिहा। कलिजुग पापी वध्या पाप, गल पापां हार परा रिहा। आपे जपे अजपा जाप, सोहँ धारा सच वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुर नानक दित्ता इक्क वर, कलिजुग जीवां चुक्के डर, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा। कलिजुग जीव जगत निधान, गुर नानक नाम प्याया ए। माया रुल्ले बण शैतान, मध माते मध ललचाया ए। पंच विकारी बेईमान, मन का मनुआ आप भुवाया ए। जोती जोत सरूप हरि, गुर नानक दित्ता इक्क वर, कुरान अञ्जील हदीस जगदीश, एका शब्द पढ़ाया ए। एका सबक हरि पढ़ाया। गुर नानक खुशी मनाईआ। मदीना मक्का बूरा कक्का पैरां हेठ ढाहया , आपे रिहा फिराईआ। चार वरन भाई भैण सका इक्क बणाया। वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दित्ता इक्क वर, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। शब्द सुनेहड़ा नर निरँकार। गुर नानक करनी मात विचार। नाम जपाउँणा साची धार। कलिजुग वेला अन्तिम सुहाउँणा, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। गुरमुख विरला संत जगाउँणा, एका देवे शब्द हुलार। ईसा मूसा मेट मिटाउँणा, संग मुहम्मद चार यार। काला सूसा तन छुहाउँणा, सोलां कलीआं कर शृंगार। शब्द हदीसा इक्क पढ़ाउँणा, सोहँ शब्द जै जैकार। निहकलंकी जामा पाउँणा, जोत सरूपी कर अकार। शब्द डंक इक्क वजाउँणा, चिट्टे अस्व हो अस्वार। राउ रंक आप उठाउँणा, शाह शाह सुल्तान करे ख़बरदार। संत सुहेला फड़ फड़ राहे पाउँणा, जोती नूर कर अकार। दूई द्वैती पड़दा लौहणा, सदी बीसवीं जामा पाउँणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे, नौ खण्ड पृथ्वी पाए सार। गुर नानक ओट रखाईआ। शब्द चोट जिस तन लगाईआ। लक्ख चुरासी कढ्ढे खोट, कलिजुग वेला लए सुहाईआ। लक्ख चुरासी आलणिओं डिगे बोट, गुर पीर ना सके कोई उठाईआ। मायाधारी गुरदुआरे मन्दिर मस्जिद माया राणी भरी पोट, आत्म तृष्ना रहे हलकाईआ। गुरमुख विरला विच्चों कोटन कोट, प्रभ अबिनाशी शब्द सुरत सुरत शब्द मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक रखे नाउँ, ना कोई पिता ना कोई माउँ, नाता तुट्टे भैण भ्रा। साक सज्जण कोई दीसे ना, किसे कोल ना मंगी ठंडी छाँ, ना फड़ाए किसे आपणी बांह। एथे ओथे दो जहानी आपे वेखे थाँ थाँ। शब्द रक्खे तीर निशानी, चारों कुन्टां एका कानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दूसर कोई जाणे ना। गुर नानक शब्द जणाईआ। गुर पूरे खुशी मनाईआ। सतिगुर साचा रिहा सुणाईआ। सति पुरख निरँजण सदा आदेस करे वेस भेव

ना राईआ। आपणी जोत कर प्रवेश, गुरमुख रंग रंगाईआ। आपे सच्चा नर नरेश, सच सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। किसे ना चले कोई पेश, शब्द धारा निरगुण रिहा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द भण्डारा रिहा भर, गुर अंगद संग समाईआ। गुर अंगद अंग समाया ए। अमरदासा दर्शन पाया ए। एका देवे नाम भरवासा, साचा जाप जपाया ए। भेव चुकाए मात पताल अकाशा, नूरी जोत प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर मिटाया ए। आपे आया वेखण जगत तमाशा, गुर अर्जन धीर धराया ए। गुर अर्जन रंग माणे कर कर हासा, भाणा हरि हरि वरताया ए। हरि गोबिन्दे बलि बलि जासा, जग तेजी तेज धराया ए। हरि राए मिल्या पुरख अबिनाशा, रंगण रंग इक्क चढ़ाया ए। हरि कृष्न ध्याए स्वास स्वासा, बाल अवस्था जोत मिलाया ए। गुर तेग बहादर सच भरवासा, एका ओट हरि रघुराया ए। काया माटी झूठा कासा, कलिजुग जीवां हो हो नीवां आप भन्नाया ए। दस्म जोत जोत प्रकाशा, आपे वेखे दस दस मासा, गर्भवासा नूर उपाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल्गी तोड़ा नाम जोड़ा, साचा सीस सुहाया ए। कल्गी तोड़ा लाए सीस। इक्क सुणाए हरि हदीस। दुष्ट दमन धर्म जैकारा एका थम्मन, ना कोई कराए तेरी रीस। धुर दरगाही आपे जामन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरे दित्ता साचा वर, छत्र झुल्ले कलि साचे सीस। गुर गोबिन्दे कलि कुड़माईआ। माया राणी जिस प्रनाईआ। अन्तिम छड्डुणे पैणे हाणीआं हाणी, ना कोई किसे सके पछानी, अचरज कल रिहा वरताईआ। आपे जाणे आपणी बाणी, भरमे भुल्ली चारे खाणी, लोक लोकांत ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे वाली हिन्दे सर्ब बख्शिंदे साचा शब्द रिहा उपजाईआ। साचा शब्द हरि उपजाए, साचा हुक्म सुणांयदा। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आप आपणा रंग वखाए, ना दूसर कोई जणांयदा। कलिजुग साचा संग निभाए, शब्द नाम मृदंग वजाए, संग अंग अंग संग आप अखवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुर शब्दी साचा मेल कर, आप आपणा भेव चुकांयदा। गुर गोबिन्दे हरि सुणाया ए। वाली हिन्दे गुणी गहिंदे, वड मृगिन्दे आपणा रंग वखाया ए। पुत्तर धीआं सगली चिन्दे, मानस देही झूठी बिन्दे, रहण कोई ना पाया ए। दर दुआरा इक्क सुहिंदे, शब्द अनाहद गीत गविंदे, अनहद धुन रिहा वजाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाण कर ध्यान गुर पूरे आप सुणाया ए। हरि पूरा शब्द जणांयदा। गुर पूरा बूझ बुझांयदा। हरि साची सेवा लांयदा। गुर पूरा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, गुर सतिगुर साचे दे दे वर, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता आपणा कर्म कमांयदा। हरि साचा सच फ़रमाण, गुरमुख वाकीआ। करे खेल वाली दो जहान, चढ़े शब्द साचे घोड़ साचे राकीआ। आप झुलाए

धर्म निशान, वेला रहे अजे बाकीआ। नौ खण्ड पृथ्वी पाए आण, अमृत जाम प्याए साचा साकीआ। अट्ठे पहर नौजवान, लोआं पुरीआं दहि दिशा चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, रहण ना देवे कोई आकीआ। आपे पाए भरम भुलेखे, सृष्ट सबाई आपे वेखे, ना कोई जाणे जीव खाकीआ। प्रगट होए नर नरेशे, करे वेस सम्बल देसे, पुरी घनक घनकपुर वासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जाणे रंग शाहो शाबासीआ। सम्बल देस हरि जणाया ए। गुर दस्मेश लेख लिखाया ए। करे वेस हरि रघुराया ए। नर नरेश भेव ना पाया ए। बाल जवानी अल्लड़ वरेस, बारां बारां संग रलाया ए। आपे वेखे ब्रह्मा ब्रह्म दरवेस, दर दरबाना खेल रचाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस रुत्त सुहाया ए। हरि साचे शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्दा रिहा लिखाईआ। मनमुखां मारे आत्म हँकारी जिंदा, ना कोई किसे तुड़ाईआ। गुरमुख उपजाए साची बिन्दा, मनमुख मलेश नाउँ रखाईआ। चारों कुन्ट होए निन्दा, जगत जगदीसा दिस ना आईआ। भगत जनां आपे बख्शिंदा, आत्म जोती मेल मिलाईआ। वड दाता गुणी गहिंदा, सभ थाँईं होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर गोबिन्दे गुण रसना गाया। अक्खर अक्खर कर कर वक्खर, सृष्ट सबाई वेख वखाया। बेमुखां ना पाटे बजर कपाटी पत्थर, माया सथ्थर हेठ विछाया। नेत्र नीर ना वरोले कोई अत्थर, बिरहों नीर ना किसे चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरे दित्ता शब्द वर, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। शब्द सुनेहड़ा शब्द जणाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तिम कटे गेड़ा, प्रगट होए आप रघुराईआ। आपे करे हथ्थ निबेड़ा, घर घर वेखे काया नगर खेड़ा, लक्ख चुरासी खेल रचाईआ। गुरूआं पीरां भेड़ भेड़ा, संत असंतां खुल्ह्हा वेहड़ा, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। लक्ख चुरासी एका गेड़ा, धर्म राए गल पाए जेड़ा, लाड़ी मौत एका राह रही तकाईआ। गुरमुख विरला साचा संत हरि सुनेहड़ा, आप आपणा बन्न्हया बेड़ा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। गुर गोबिन्दे खुशी मनाई। अन्तिम अन्त आउँणा चांईं चांईं। चारों कुन्ट वेख वखाणे थांउँ थाँईं। कलिजुग जीव बेमुहाणे अन्धे काणे, कोई ना पकड़े किसे बाहीं। तख्तों लाहे राजे राणे, दर दरबान आप कराए, कोई ना देवे ठंडीआ छाँईं। वेख वेख नौजवाने, मन्दिर अन्दर बेईमाने, शब्द मारे तीर निशाने, दीसे किसे नाही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, प्रगट होए अवर ना जाणे कोए, धुर दरगाही साचा माही। प्रगट होए हरि दातार। निहकलंक कलिंक अंक बार। शब्द डंक सर्ब संसार। राउ रंक दर भिखार। चार वरन रखाए एका अंक, साचा शब्द जै जैकार। आप सुहाए द्वार बंक, सम्बल नगर अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट

होए विच संसार। निहकलंक कलि जामा पाउँणा ए। आप आपणा भेव छुपाउँणा ए। करोड़ तेतीसा देवी देव, सुरपति राजा इन्द दिस ना आवणा ए। उठ उठ वेखण नर नरेश केहड़ी कूटे लाए बूटे, शब्द सरूपी चन्द चाढ़उँणा ए। आपे करे वेस प्रगट होए माझे देस, छे छे योजन गेड़ रखाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास तेरा वेखे घर, दासराम आप हो आउँणा ए। ना कोई दीवा ना कोई बाती, आपणी हथ्थीं गुर जगाया ए। चारों कुन्ट अन्धेरी राती, माया गद्दी भरम भुलाया ए। घर घर बैठे दर दर वेखण आत्म मार झाती, गुर पूरा दिस ना आया ए। रसना कहण खुल्ही ताकी, दस्म दुआरी ना किसे चढ़ अन्दर वड़ आपणा माही पाया ए। साचे सर सरोवर ना मिल्या साचा साकी, अमृत जाम आपणे हथ्थीं ना किसे प्याया ए। आपे बैठे बण बण आकी, आप आपणा राह चलाया ए। गुर पूरा प्रगट होए अन्त मिटाए लहिणा देणा बाकी, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया ए। आपे चढ़े शब्द घोड़े सच्चे राकी, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाया ए। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सच घर, सतिगुर सावण सावण मेघ ना आपणा आप बरसाया ए। सावण सावण रसन उचारे, चारों कुन्ट फिरी दुहाईआ। ना कोई बहाए काया महल्ल मुनारे, साचे लोचन बूझ ना किसे बुझाईआ। नेत्र वेखण दर दर पेखण नौ दुआरे कूक पुकारे, अन्तिम पई गल विच फाहीआ। गुरमुख विरला आत्म वेखे सच विरोले सुरती बन्न्हे शब्द धारे, खिच्ची जाए दस्म दुआरे, अगों मिलदा पार कराए फड़ के बाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, गुर पूरे सतिगुर सूरे, किसे ना दित्ता इक्क वर, साची जोत चढ़या तेल पूरे, शब्द ना होई किसे कुड़माईआ। पूरा शब्द किसे ना वरया। आपे आपणी राही लग्गे, इक्क दूजे तों आवे डरया। माया राणी वा तत्ती लगे, गुरमुख विरले काया बूटे होए हरया। अन्तिम बणे हँस कगे, बैठे पहन बस्त्र बग्गे, गुर गुर भाणा किसे ना जरया। काया तुट्टे झूठे तगे, दीपक जोती किसे ना जगे, कोई ना फड़े बांह अगे, गुर पूरा जिस मनो भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, गुर सतिगुर सावण इक्क कर, गरीब निमाणा मंगे वर, कर किरपा दर्शन दए दिखाया। हरि जोत अपार घट रुशनाईआ। हरि जोत अपार, काया मट हरि रखाईआ। हरि जोत अपार, किसे हथ्थ ना आए, अट्ठ सट्ठ तीर्थ फिरे लोकाईआ। हरि जोत अपार दिस ना आए मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ, दिवस रैण टल्लीआं रहे खड़काईआ। हरि जोत अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच समाईआ। हरि जोत अपार सर्ब पसारया। हरि जोत अपार लक्ख चुरासी देवे एका एक अधारया। हरि जोत अपार, गुरमुख वेखे शब्द सुवासी, आत्म रहे नाम खुमार। हरि जोत अपार कलिजुग अन्तिम वेखे मदिरा मासी, चारों कुन्ट करे ख़बरदार। हरि जोत अपार, पकड़ उठाए पंडत काशी, वेद पुराणा करन विचार। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, कलिजुग क्रिया कर्म रिहा विचार। हरि जोत अपार जुगा जुगन्तया। हरि जोत अपार पूरन भगवन्तया। हरि जोत अपार मिले मेल साधन संतया। हरि जोत अपार गुरमुख साचे जाए तार, एका देवे नाम अधार, साचा राग कन्न सुणन्तया। हरि जोत अपार दीपक जोती कर उज्यार, बजर कपाटी देवे पाड़, तत्ती वा ना लगे हाढ़, पंजां तत्तां देवे साड़, एका चाढ़े रंग बसंतया। हरि जोत अपार गुरमुख बणाए साचे लाड़, दर घर साचे देवे वाड़, आपे होए पिच्छे अगाड़, आत्म जोती मेल मिलन्तया। हरि जोत अपार गुरमुख माया देवे साड़, शब्द वज्जे काड़ काड़, लाड़ी मौत चबाए दाढ़, ना कोई सहाए जीव जन्तया। हरि जोत अपार जुगा जुगन्तर एका धार, कलिजुग वेखे अन्त अखाड़, साचा अखाड़ा इक्क रचन्तया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग आप वसंदड़ा। वसे रंग अपार, रंग चलूलया। भगत वछल हरि गिरधार, साचा कन्त हरि कन्तूहलया। दो जहानां रिहा पैज संवार, जो जन दर आए भूलया। मानस देही रंग अपार, शब्द झुलाए साचा झूलया। पवण स्वासी इक्क अधार, वखाए धाम इक्क अस्थूलया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, आप बणाए सूली सूलया।

★ पहली अस्सू २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल राष्ट्रपती राजिन्दर प्रसाद नूं शब्द भेज्जया गया ★

२६६ ०५

तख्त ताज सुल्तान, सुल्तान तख्त ताज्जया। प्रगट होए वाली दो जहान, वेख वखाणे राजन राज्जया। शब्द उठाए तीर कमान, अस्त्र शस्त्र साचा साजन साज्जया। नर नरेशा नौजवान, दर दरवेसा देस माज्झया। करे खेल मात महान, मेट मिटाए अञ्जील कुरान, मक्का काअबा हाजन हाज्जया। गुणवन्ता हरि गुण निधान, छाणे पुणे वेद पुराण, आप संवारे आपणे काज्जया। वरन बरन मेट मिटान, खाणी बाणी वेख निशान, इक्क चलाए नाम जहाज्जया। धर्म झुल्लाए इक्क निशान, आप उठाए श्री भगवान, मेट मिटाए मुल्लां काजया। पूरन जोत इक्क महान, साध संत करे पछाण, गुर पीर मार ध्यान, जूठे झूठे नाजन नाजिया। आपे गोपी आपे काहन, आपे राम रमईआ राम, आपे काया माटी चाम, आपे मध साची हाटी पीए जाम, आपे शब्द खाए साचा ताम, जोती नूर लाटन लाटीआ। आपे दिवस आपे शाम, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम वेख दर, वेखे खेल बाजीगर नाटीआ। राज जोग जोग राज, रसना रस भोग जगत तृष्ना लग्गी आग। मिले मेल धुर संजोग, हरिजन विच्चों चुक्के रोग, आप बणाए हँस काग। देवे दरस दर अमोघ, आत्म रस लैणा भोग, माया डस्से ना डस्सणी नाग। सोहँ शब्द साचा जोग, लक्ख चुरासी होए विजोग, आत्म बख्शे इक्क वैराग। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी देवे वर, वाली हिन्द जाणा जाग। वाली हिन्द जाग सुरत संभालीआ। प्रभ अबिनाशी लाया भाग, आपे शाह आपे कंगालीआ। जगत तृष्ना बुझे आग, मिले नाम शब्द दलालीआ। शब्द बन्हणा तन साचा ताग, मिले मेल कन्त सुहाग, जोत जगे इक्क अकालीआ। आप आपणे हथ्थ रखे वाग, दुरमति मैल धोए काया दाग़, दर घर साचे बणना नाम सवालीआ। दीपक जोती जगे चिराग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फल लगाए काया साची डालीआ। जगत जुगीशर राज द्वार। पुरख अबिनाशी आप जगाए, लोकमात रहणा ख़बरदार। शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाए, मेल मिलाए हरि मीत मुरार। निहचल धाम अटल वखाए, जल थल आप समाए, घड़ी घड़ी पल पल नूरी जोत कर अकार। शब्द उछाल इक्क लगाए, वल छल जगत भुलाए, दीपक जोती रही बल, अज्ञान अन्धेर कलि मिटाए, मिटे घटा कालीआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, आप आपणा हुक्म सुणा ल्या। हरि हरि हरि फ़रमाण, शब्द जणाईआ। जगत शाह एका आण, धुर दरगाही रिहा पाईआ। अस्सू तिन्न दिवस वखान, सद बीस तेरां बिक्रमी वेला वक्त रिहा लिखाईआ। चल के आए जोत सरूपी हरि भगवान, दिल्ली तख्त दर द्वार सुहाईआ। शब्द झुल्ले इक्क निशान, दहि दिशा रिहा झुलाईआ। आपे जाणे जाणी जाण, सत्तां दीपां वंड वंडाईआ। नौवां खण्डां रंग महान, चण्ड प्रचण्डा संग रलाईआ। रूसा चीना वेख जपान, इंग्लिस्ताना शाह हलकाईआ। चढ़े घोड़े नौजवान, सोहँ फड़े तीर कमान, लहिंदी दिशा पाए हिसा, आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वाली हिन्द होश कर, गुर शब्द हलूणा एका लाईआ। शब्द हलूणा लग्गे तन, मन सोया मात जगाउँणा। साचा शब्द सुणना कन्न, पुरख अबिनाशी आपणा आप सुणाउँणा। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, दर दुआरे चरन छुहाउँणा। सतिजुग साचा चढ़या चन्न, कलिजुग काला भेख मिटाउँणा। गुरमुखां बेड़ा रिहा बंन, राजा राणा तख्तों लौहणा। एका वस्त रक्खे सच्चा नाम धन लोकमात साची वंड वंडाउँणा। बेमुखां अन्तिम देवण आया डन्न, मदिरा मासी कोई दिस ना आउँणा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, वाली हिन्द जाणा तर, सरन सरनाई एका पड़, दूसर किसे ना सीस झुकाउँणा। शब्द तीर हरि तुरंग। घट घट वेखे मस्तक लेखे, लिखे रेखे चिट्टे अस्व कस तंग। रंक राजान शाह सुल्तान रहे भरम भुलेखे, साधां संतां माया राणी कीता नंग। गुरमुख विरला तीजे नेत्र नैण पेखे, शब्द जैकारा वज्जे मृदंग। मेट मिटाए औलीए पीर शेखे, लाड़ी मौत मंगे मंग। धर्म राए दूर दुराडा वेखे, प्रभ अबिनाशी किरपा कर कलिजुग अन्त निभाए साचा संग। मेटण आया बिधना लिखी रेखे, लक्ख चुरासी होणी भंग। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी देवे वर, भगत भगवन्त जाए तर, आप चुकाए

अगले पिछले लेखे। राज इन्द्र इन्द्र प्रशाद। शब्द देवे प्रभ साची दाद। हरिजन साचा हरि दर लेवे, दिवस रैण रसन अराध। सोहँ शब्द अलख अभेवे, मेल मिलावे माधव माध। अमृत आत्म रस साचे मेवे, होए जणाई बोध अगाध। कौस्तक मणीआ मस्तक थेवे, खोजे जूह पिण्ड ब्रह्माद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेले देवे वर, पुरख अबिनाशी लैणा लाध। पुरख अबिनाशी जोत जगाई। निहकलंका नाउँ रखाई। पुरी घनका धाम सुहाई। बार अनका जोत प्रगटाई। भरम भुलेखा शंक मिटाई। राउ रंकां रिहा समझाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख सुहाए इक्क दर, बंक दुआरा मिले वड्याई। मिले वड्याई जगत वड्याईआ। एका हरि सरनाई, ना दूजा कोई सहाईआ। चारों कुन्ट पए दुहाईआ। प्रभ साची वंड वंडाईआ। माझे देस होई कुड़माईआ। जोत निरँजण तेल चढ़ाईआ। नैण कज्जल शब्द पाईआ। गुरमुख साचे संग रलाईआ। साची बणत रिहा बणाईआ। साधां संतां रिहा हलाईआ। राज राजानां रिहा जगाईआ। शाह सुल्ताना रिहा बुलाईआ। शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। सोहँ बन्ने शब्द गाना, चिट्टे घोड़े वाग गुंदाईआ। चौथा पौड़ा रिहा उठाईआ। हो अस्वार साचे माही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, हरि भगवन्त संत भरम भुलेखा रहे नाहीआ। भरम भुलेखा खोले, आए द्वारया। शब्द चौह अक्खर एका बोले, कलिजुग तेरी धारया। निहकलंक कदे ना डोले, सृष्ट सबाई आपे तोले, तोलणहार सर्ब संसारया। गुरमुख साचे अन्दर बोले, भाग लग्गा काया चोले, चार वरनां दिस ना आ रिहा। शब्द सुणाए सोहँ साचे सोहले, काया धरती सभ दी मौले, उलटी नाभी खिड़े कँवले, होए बसंत बहारया। जोती जोत सरूप हरि, अस्सू तिन्न वेख दर, लेख लिखाए गिण गिण वाली हिन्द मिटाए चिन्द, सुहाए एका बंक द्वारया। वाली हिन्द खुशी मनाउँणी। प्रभ अबिनाशी जोत जगाउँणी। घनकपुर वासी रचन रचाउँणी। आदि शक्त आदि भवानी, जोत निरँजण इक्क निशानी, दिवस रैण डगमगाउँणी। मारे तीर शब्द कानी, सोहँ साची बाणी बजर कपाटी चीर वखाणी। नेड़ ना आयण पंज शैतानी, सञ्झ सवेर इक्क कराउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म घर खोले दर, मिले वर नर हरि, आत्म मारे इक्को छाल, दीन दयाल सुहावे ताल आपणी आप लगाउँणी। काया माटी हट्ट जगत वणजारया। साचा लाहा लैणा खट्ट, विच संसारया। जोत निरालम आप लपेटी मन्दिर साचे मट्ट, डूंघी कन्दर अन्ध अंध्यारया। दस्म वसेरा घट घट, जोती जगे लट लट, दिस किसे ना आ रिहा। एका माया पाई वट, दूई द्वैती लाया फट्ट, साचा तट्ट ना कोई वखा रिहा। गुरमुख विरला संत सुहेला आत्म रस सच दुआरे रिहा चट्ट,। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, हिरदे जाए वस। जोत निरँजण कर प्रकाश, राह साचा जाए दस्स। पवण चलाए शब्द स्वास, अमृत

आत्म ताल सुहाए तीर्थ साचा तट्ट। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी भेख धर, गुरमुख साचे संत सुहेले इक्क इकेले आप आपणे दर बहाए दया कमाए बेमुखां दीसे खेल बाजीगर नट। काया मन्दिर भगत द्वार। भगत द्वार अमृत भण्डार। अमृत भण्डारी दस्म दुवार। दस्म दुआरी जोत निरँकार। जोत निरँकारी शब्द धार। शब्द धारी पवण अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़। गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़, अन्धेर विनास्सया। परे हटाए पंचम धाड़, शब्द स्वास्सया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, करे प्रकास्सया। आपे फिरे पिछे अगाड़, निज्ज घर वास्सया। साचे पौड़े देवे चाढ़, अकाश अकाशया। दर घर साचे देवे वाड़, ना कदे विनास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम, होया रहे दासन दास्सया। काया माटी साचा हट, रत्न अमोल्लया। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, साचा तोल हरि जी तोल्लया। प्रगट होए झट्ट पट्ट, अन्दरे अन्दर आत्म बोल्लया। आपे आप रिहा रट्ट, लग्गे भाग काया मट, बन्द दुआरा एका खोल्ल्हया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रहे अडोल कदे ना डोल्लया। आपे आप सदा अभुल्ल, आदि अन्त कदे ना भुल्लया। लक्ख चुरासी रही रुल, पाणी पया काया चुल्हिआ। गुरमुख विरला हरि उपजाए साची कुल, शब्द लगाए तन पहनाए साचे फुलया। आप आपणा दरस दिखाए, आत्म तृष्ना हरस मिटाए, अमृत मेघ बरस वखाए, हरिजन चरन प्रीती घोल घुलया। जोती जोत सरूप हरि, काया माटी जोत धर, देवे नाम शब्द दात अनमुलया। शब्द दात अनमोल गुर भण्डारया। देवणहार सर्ब संसार, आपे आप वरता रिहा। गुरमुख विरला लेवे कर प्यार, आए दर सच्चे द्वारया। शब्द देवे तिक्खी धार, आप कराए आर पारया। सोहँ फड़ तेज कटार, पंजां मारे वारो वारया। दर दुआरे रक्खे बाहर, अट्ठे पहर देवे पहरया। गुरमुख होणा ख़बरदार, मन मति बुध आप जगा रिहा। झूठा नाता काया धार, पुरख बिधाता दरस दिखा रिहा। मानस देही कर्म विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर अन्दर बोल्लया। हरि हरि हरि निरवैरया। हरि हरि एका घर, ना होए कदे कहरया। हरि हरि एका देवे सच्चा वर, ना कोई जाणे ऐर गैरया। हरि हरि आपणी तरनी रिहा तर, आवे जावे वसे हस्से काया शहरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण साचे आसण आपे आप बहि रिहा। निन्दक निन्दया ना करे विचार। वडी वड्याई हरि दर द्वार। मन मति बुद्ध जिस जीव उपजाई, संग रलाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। पंज तत्तां बणत बणाई, इक्क कराया तन श्रृंगार। कलिजुग माया पाई फाही, चारों कुन्ट धूँआंधार। जगत जगदीसा दिसे नाही, सर्ब जीआं दा साचा यार। जोती जोत सरूप हरि, उस्तत्त निन्दया इक्क कर, आपे वसे आपणे बंक द्वार। नौ दुआरे जगत विकार, प्रभ साचा आप रखांयदा।

दस्म वसेरा हरि करतार, आप आपणे विच समांयदा। शब्द घेरा पहरेदार, अट्ठे पहर सद्द जगांयदा। पवण स्वासी दए हुलार, इक्क हलूणा नाम लगांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, अन्ध अज्ञान आप मिटांयदा। एका खोल्हे सच दुकान, नाम वस्त इक्क टिकांयदा। तोला बण हरि भगवान, आपे साचा तोल तुलांयदा। एका दूजा तीजा बोला नेत्र खोल्हा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। गुर गुरसिख आत्म मन तन पतीजा, मिल्या मेल गुण निधान दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे इक्क निशान। शब्द देवे धुर दरगाह। सृष्ट सबाई इक्क मलाह। चारों कुन्ट रिहा वंडाई, कलिजुग अन्तिम हिसे पा। वेखे खलक खुदाई, आप किसे दिसे ना। ईसे मूसे पए जुदाई, छत्र किसे सीसे झुल्ले ना। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, रूसा चीना भुले ना। राजे राणया पाए फाही, भाग लग्गे किसे काया कुले ना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सदा अडोल अन्त कलि डुल्ले ना। कलिजुग अन्ध अज्ञान मचिआ। ना कोई जाणे चतुर सुजान, ब्रह्म ज्ञान कवण सच्चया। माया राणी होई प्रधान, नौ दुआरे बहि बहि नचिआ। प्रगट होए वाली दो जहान, चारों कुन्ट हाहाकार मच्चया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग भन्ने कच्चा, भाण्डा फल अन्तिम वेले पक्कया। कलिजुग काला वेस पुरख अगम्मया। प्रगट होए माझे देस, माता पिता किसे ना जंम्मया। पकड़ उठाए नर नरेश, शब्द सरूपी लाहे चम्मया। ना कोई बोले शिव शंकर गणेश, गगन पताली हिलाए थम्म्हया। जोत सरूपी कर वेस, करे खेल अगम्म अगंमिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे कुन्टां वेख हरि, आप आपणे अन्दर रमिआ। आप आपणे रंग समाया। कलिजुग काला मंगे मंग, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। अष्टभुज होई संग, शब्द सिँघासण आसण लाया। हरि दुआरे मंगे मंग, प्रभ अबिनाशी कस तंग, शब्द घोड़ा इक्क मंगाया। लेखा चुक्के गोदावरी गंग, अट्ठ सट्ठ तीर्थ होए भंग, जीव जन्त भुक्ख नंग, साध संत होए हलकाया। शब्द चाढ़े एका कंग, सोहँ वज्जे शब्द मृदंग, राउ रंक रिहा सुणाया। आपे ढाहे भरमां कंध, नाम चढ़ाए साचा चन्द, कलिजुग अन्धेर दए मिटाया। मदिरा मास लाया बत्ती दन्द, बेमुखां गंवाया परमानंद, हँकार विकार तन वसाया। जन भगतां खुशी करे बन्द बन्द, शब्द सुणाए एका छन्द, धुन नाद अनाहद आपणी आप रिहा उपजाया। उपजे धुन अनाहद नाद, सर्ब घट उपानया। शब्द बोध अगाध, ना कोए जाणे वेद पुराणया। गुरमुख विरले मिले साची दाद, हरि हरि नाउँ ब्रह्म ज्ञानया। आत्म वज्जे साचा नाद, दस्म दुआरी इक्क निशानया। मिले मेल माधव माध, जोती नूर हाज़र हज़ूर श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दो जहानया। दो जहानां खेल हरि रचांयदा। आप आपणा कर कर मेल, जन भगत मात जगांयदा। आपे

करे आपणी खेल, संग सुहेल आप अख्वांयदा। आपे गुर आपे चेल, शब्द जोती मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरीआं लोआं कर अकार, इक्क जैकारा शब्द बुलांयदा। शब्द जैकारा हरि सुणाया ए। ब्रह्मा पुरी ब्रह्म तजाया ए। गुरमुख साचा कर्म प्रभ अबिनाशी आप बणाया ए। गुर तेग बहादर मिल्या जन्म, साचे साचा धाम सुहाया ए। सृष्ट सबाई मेटे वरम, लक्ख चुरासी कर्म आपणे हथ्थ रखाया ए। कलिजुग माया जीव भुल्ले भरम, भरम भुलेखा झूठा लेखा वेखी वेखा मात वधाया ए। गुरमुख साचा नेत्र पेखे, आप लिखाई आपणी रेखे, पुरख अबिनाशी धरया भेखे, आपणा साचा धाम सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाया ए। ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाए। हरि हरि जोती मेल मिलाए। शिव शंकर कर ध्यान, जटा जूट धारी सीस झुकाए। प्रभ अबिनाशी चतुर सुजाना आपे वेखे मार ध्यान। चारे कुन्टां वेख वखाणे, अन्तिम मिटदा जाए निशान। कलिजुग काले आई हान। झूठी दिसे ना कोई दुकान। जीउ पिण्ड भाण्डा काचा, जगत मकान। पुरख अबिनाशी साचो साचा, एका एक श्री भगवान। शिव शंकर दर दुआरे आए नाचा, किरपा कर हरि भगवान। कलिजुग अन्तिम हरि हरि वाचा, एका लग्गे शब्द तमाचा, होए विछोड़ा दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं वेख हरि, इक्क झुलाए शब्द निशान। शिव शंकर जोत मिलाए। अंकर कंकर द्वार बंकर एका डंक वजाए। वेखे खेल हरि भिअंकर, भाणा आपणे हथ्थ रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा भउ चुकाए। साची पुरी मार ध्यान। हर घट राम कर पछान। इन्द इन्द्रासण आप तजाया, पुरख अबिनाशी तीर चलाया, रसना खिच इक्क कमान। करोड़ तेतीसा दए दुहाया। बीस इक्कीसा हरि जगदीसा, करे खेल आप रघुराया। शब्द पढ़ाए सच हदीसा, सोहँ झण्डा रिहा झुलाया ए। मेट मिटाए मूसा ईसा, कुरान अञ्जील दिस ना आया ए। भाणा वेखे हरि उनीसा, अठारां ध्याए गाए गीता, ना कोई राम ना कोई सीता, ना कोई साजण ना कोई मीता, आपणे रंग समाया ए। आप होए पतित पुनीता, गुरमुखां करे सीतल सीता, साची रीता रिहा चलाया ए। वेद पुराणां वक्त बीता, खाणी बाणी परखे नीता, ना कोई दुआरे दिसे चीता, कवण सिँघासण डेरा लाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वरभण्ड ब्रह्मण्ड आपणा खेल रचाया ए। राजा इन्द करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मिटदे जाण मीत मुरार। करोड़ तेतीसा वहिंदी धार। बीस इक्कीसा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। ब्रह्मा शिव पार कराए। देवी देव लए जगाए। सुरपति राजा इन्द लाए सेव, आप आपणी दया कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी वेख

हरि, वरभण्डी साचा खेल खिलाए। वरभण्डी हरि पाए भंडी, साची वंड वंडाईआ। पहली दिशा चण्ड चण्डी, मिटदे जाण जीव घमंडी, चौदां नौ खेल रचाईआ। आपे वढ्ढे बेमुखां कंडी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्ला शब्द मेल रिहा मिलाईआ। इक्क इकल्ला हरि इक्क दयालया। दूजी रक्खे शब्द भिक्ख, गुरमुखां देवे हरि किरपालया। तीजे नैण लैणा पेख, सर्ब घटां होए रखवाल्या। चौथे घर साचा लेखा लैण लिख, संत सुहेले शब्द मतवाल्या। पंचम आपे रिहा वेख, पंचम देस हरि वसा ल्या। छेवें शब्द लाए मेख, अक्खर वक्खर हरि उपा ल्या। सतवें सति सतिवादी इक, जोत सरूपी डगमगा रिहा। अठवें अट्ठां तत्तां मिटाए तृख, अमृत बूंद मुख चुआ रिहा। नौ दुआरे लक्ख चुरासी मंगे भिक्ख, दसवें गुरमुख बूझ बुझा रिहा। इक्क ग्यारां लेखा रिहा लिख, सदी बीस संग समा ल्या। धर्म राए मंगे भिक्ख, बारां बारां रसना गा ल्या। आपे लेखा देवे लिख, तेरा रंग वटा ल्या। ना कोई हिन्दू मुस्लिम सिक्ख, शब्द घेरा एका पा ल्या। चौदां चौदां हट्टां रिहा वेख, सम्मत बिक्रमी बीस नाल रला ल्या। राजे राणया मंगी ना मिले भिख, पन्द्रां अन्दरे अन्दर खाली करा रिहा। सौलवें दर दुआरे भौंदे फिरन रिछ, साध संत गुर पीर ना कोई सके सुरत संभालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग आपे जाणे, गुर पूरा सूरा गुर गोपालया। दस सत्त सतारां सतर लिखाईआ। मुगल पठाणी चढ़े लक्ख सत्तर, पाउँदी आवे सर्ब दुहाईआ। संत सुहेले करे इकत्तर, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। नाम बीजे काया वत्तर, सोहँ बीज रिहा बिजाईआ। ना कोई जाणे आपणा नशत्तर, साची रेख किस लिखाईआ। जीव जन्त होए सथ्थर, धरत मात सेज विछाईआ। आपे पाड़े उच्चे टिल्ले वड वड पत्थर, अगम्म अगम्मी पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काले मिले वर, बेमुखां होए कुड़माईआ। सति सतारां उडे सति। कोई ना देवे धीरज यति। पुत्तर मावां तुटा नत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे मित गत। अट्ठ तत्त तत्त वखाणे। तख्तों लाहे राजे राणे। छत्र ना दीसे विच जहाने। चले चलाए आपणे भाणे। मेट मिटाए वेद पुराणे। अंज़ील कुरान लाहे मुकाणे। खाणी बाणी होई हैराने। निहकलंक जोत जगाई, फड़या हथ्थ शब्द निशाने। गुरमुखां आत्म वज्जे वधाई, बेमुखां हथ्थीं बन्न्हे गाने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे खेल श्री भगवाने।

★ २ अस्सू २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल हरिभगत द्वार ★

चरन कँवल गुर मीत, हरि उपकारया। चरन कँवल गुर मीत, गुरमुख निमस्कारया। चरन कँवल गुर मीत, सदा

सद बलिहारया। चरन कँवल गुर मीत, जोती जोत सरूप हरि, साचा मार्ग इक्क वखा रिहा। चरन कँवल गुर मीत, कटे चुरासीआ। चरन कँवल गुर मीत, तुटे जम की फाँसीआ। चरन कँवल गुर मीत, मिले मेल पुरख अबिनाशीआ। चरन कँवल गुर मीत, रसन जाप स्वास स्वासीआ। चरन कँवल गुर मीत, आप बुझाए तृष्ना अग्न, झूठी लाहे जगत उदासीआ। चरन कँवल गुर मीत, दीपक जोती साचे जगण, काया मण्डप विच अकास्या। चरन कँवल गुर मीत, काया रंगे नाम रंगण, देवे माण धुर दरगाही नर नरेशया। चरन कँवल गुर मीत, गुरमुख साचे कर पछाण, मानस जन्म करे रहिरास्या। चरन कँवल गुर मीत, एका एक जगत आण, हरिजन साचा ना कदे विनास्या। चरन कँवल गुर मीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, मेट मिटाए मदिरा मासीआ। चरन कँवल गुर मीत, सच खंडया। चरन कँवल गुर मीत, मिले माण विच वरभण्डया। चरन कँवल गुर मीत, कटे खाणी जेरज अंडया। चरन कँवल गुर मीत, धर्म राए ना देवे दंडया। चरन कँवल गुर मीत, मिले वड्याई आत्म वधाई विच ब्रहिमंडया। चरन कँवल गुर मीत, आप आपणी दया कमाए, शब्द फड़ाए हथ्थ चण्ड प्रचण्डया। चरन कँवल गुर मीत, अट्ठे पहर वेखे नीत, काया करे ठंडी सीत, हरिजन साचे रक्खे चीत, साचा नाम धुर दरगाही एका वंडया। चरन कँवल गुर मीत, आप चलाए आपणी रीत, ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, सदी चौधवीं रही बीत, मेट मिटाए भेख पखण्डया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, बेमुखां वंढे कंडया। चरन कँवल गुर मीत, भगत जगांयदा। चरन कँवल गुर मीत, साची सेवा इक्क वखांयदा। चरन कँवल गुर मीत, अमृत मेवा आत्म रस रसना भोग करांयदा। चरन कँवल गुर मीत, लोकमात राह साचा दस्स, फड़ फड़ बांहों राहे पांयदा। चरन कँवल गुर मीत, हरिभगत दुआरे रिहा वस, दूसर दर दिस ना आंयदा। चरन कँवल गुर मीत, गुरमुख मेला हस्स हस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, माया ममता मोह चुकांयदा। चरन कँवल गुर मीत, मन बैरागया। गुरमुखां काया पतित पुनीत, कलिजुग सोया मात जागया। अट्ठे पहर ठांडा सीत, बुझे आत्म तृष्ना आग्ना। एका गाए सुहागी गीत, शब्द गुर गुर रसना साची लागया। मिल्या मेल साचे मीत, हथ्थ पकड़े आपणे वागया। नर नरायण वेखे नीत, कवण हँस कवण कागया। साध संत कवण अतीत, कवण सोया कवण जागया। जोती भेख अवल्लड़ी रीत, धुर दरगाही आया भागया। काया मन्दिर सच मसीत, साचा रागी रागन रागया। लक्ख चुरासी भय भीत, शब्द गोला एका दागया। सृष्ट सबाई रिहा जीत, आपे पिछे आपे आग्ना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां साचा मेल दर, मिल्या मेल कन्त सुहागया। चरन कँवल गुर मीत, साचे

३०३ ०५

मन्दिरा। चरन कँवल गुर मीत, चार दिवारी काया अन्दरा। चरन कँवल गुर मीत, ना होए मात ख्वारी, आत्म तोड़े वज्जा जन्दरा। चरन कँवल गुर मीत, नाता तोड़े पंचम यारी, भाग लगाए डूंघी कन्दरा। चरन कँवल गुर मीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, बेमुखां दर दर फराए बन्दरा। चरन कँवल गुर मीत, आपे देवे नर नरेशया। चरन कँवल गुर मीत, करे वेस माझे देस्सया। चरन कँवल गुर मीत, जोती जामा रमईआ रामा अवल्लड़ा भेस। चरन कँवल गुर मीत, इक्क रखाए शब्द दमामा, शब्द सुनेहड़ा देस प्रदेस। चरन कँवल गुर मीत, आप कराए आपणा कामा, वड दाता हरि हरि मृगेश। चरन कँवल गुर मीत, ना कोई मंगे दामा, चरन सरन सरन चरन गुरू गुर दस दस्मेश। चरन कँवल गुर मीत, एका देवे नाम नामा, सुक्का हरया करे चामा, अमृत प्याए आत्म जामा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात हरि वेख दर, आप आपणा पहरे बाना। हरि मरयादा जग रीत, सगल संसारया। हरि मरयादा जग रीत, चरन द्वार देहुरा मन्दिर मसीत, साचे दर सच्चे घर बाहरया। पारब्रह्म कलि रीत, गुरमुख साचे मानस देही जाणा जीत, मिले मोख चरन द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ राग सच्चा संगीत, काया तन सुरंगा अनहद साची तार वजा रिहा। सच्चा तन तन रबाब, प्रभ साचा कंध उठाईआ। शब्द घोड़े चरन दे रकाब, प्रगट होए हरि हाजर हजूरा हक्क जनाब, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। पुन्न पाप ना कोई सवाब, जल नीर ना कोई दोआब, बस्त्र चीर ना कोई पोशाक, प्रभ साचा तन छुहाईआ। शब्द जणाई भविक्ख वाक्, गुर वड्याई खोल्हे ताक, भगत वधाई होए पाकी पाक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचन रचाईआ। तन सुरंगा नाम अमोला। शब्द तरंगा सोहँ ढोला। दर दुआरा एका मंगा, नाम रंगीला पाया चोला। जै जैकार वज्जे मृदंगा, दर दुआरा साचा खोल्हा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जंगा, लाड़ी मौत उठाए डोला। वड दाता हरि सूरा सरबंगा, गुरमुख साचा आला भोला। शब्द सरूपी अंग संगा, जोत सरूपी तोल तोला। अमृत आत्म वहाए गंगा, गुरमुख वेखे भुक्खा नंगा, देवे नाम आप बहुरंगा, लोकमात व्याहे झूठा बोला। पंचम यारी संग कुसंगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दर बणया गोला। दर भगत भिखार, हरि बनवारया। मंगे मंग प्यार, वड संसारया। नाम चाढ़े साचा रंग, रंगण रंग मजीठ ललारया। मानस देही ना होए भंग, लक्ख चुरासी उतरे पारया। आप सुहाए दो दोअँ, साची भुजा हरि पसारया। सच चढ़ाए नाम कंग, साचा वहिण इक्क वहा रिहा। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, शब्द पलाणा आसण ला रिहा। नाम डोरी जगत पतंग, पुरीआं अकाशां विच उडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समा रिहा। साचे रंग समाए

सहिज धन्नवन्तीआ। गुरमुखां मेल मिलाए सुण सुण बेनन्तीआ। शब्द सरूपी तेल चढ़ाए, वटणा लाए इक्क बसंतीआ। सईआं मंगल साचे गाए, गीत सुहागी इक्क गुणवन्तया। हथ्थीं मैहन्दी नाम रंगाए, मिले वड्याई जीव जन्तया। नाम निधाना गाना बन्न वखाए, रीती कर कर हरि भगवन्तया। शब्द निशाना तीर चलाए, वेखे खेल जुगा जुगन्तीआ। रसन कमाना खिच्च वखाए, आदिन अन्तीआ। गुरमुख लाड़ा आप सजाए, वाग गुंदाए भिन्नड़ी रैण साची भैण सर्ब सुखवन्तीआ। साची वाग हथ्थ फड़ाए, बरखा फूलन नाम लाए, जांञी लाड़े सद्द ल्याए, प्रभ जोती नाल व्याहे, मिले वर सुहागण साचे कन्तीआ। आत्म सेजा इक्क विछाए, सोलां तन शृंगार कराए, मन विकारी नेड़ ना आए, शब्द भण्डार सेव कमाए, पाणी वारे धरत मात साची रीत इक्क इक्क इक्क इकवन्तीआ। जोती जोत सरूप हरि, पाए घेरे चार चुफेरे, शब्द सरूपी कर कर मेहरे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चेतन्न सत्ता एका खाए ना भत्ता, अमृत नीर साचा सीर सदा सदा चवन्तीआ। सदा सुहागी नार दर दरबारया। गुर पूरे चरन प्यार, गुरमती शब्द अधारया। प्रभ करे कराए आप शृंगार, धीरज यती आत्म सती नाम रती कज्जल पा रिहा। कलिजुग माया वा ना लग्गे तत्ती, किरपा करे हरि समरथी, आपणी हथ्थीं मींढी सीस गुंदा रिहा। आपे जाणे मित गती, दीपक धरे जोती बत्ती, मिटाए अन्ध अंध्यारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे कर प्यार,
३०५ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नारी पवण अस्वारी, नाम बेड़ा शब्द सालू चिट्टा लीड़ा आपणी हथ्थीं आप दवा रिहा। ३०५
०५ चिट्टा लीड़ा चिट्टी चादर, हरि आप दवांयदा। दर घर सच्चे कर कर आदर, किरपा करे करता कादर, मुख नेत्र नैण ०५
सुहांयदा। देवे सच्ची नाम सरूपी दाद, दर दर नाई नैण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे जोती नारी कर प्यारी एका रंग समांयदा। एका रंग समाए सहिज सुभागया। काया जोती रंग रंगाए, अट्ठे पहर रहे विच आज्ञा। साची डोली आप बहाए, जगत तृष्ना झूठी माया जगत तयाज्ञा। प्रेम गोली नाल रलाए, माया डस्से ना डस्सणी नागया। चार कुहारा आप अख्वाए, पंचम सोया उठ उठ जागया। साचे राहे आपे पाए, देवे लाग लागण लागया। सोहँ शब्द वंडाए वंड, गुरमुखां हिस्से साचे पाए, बणाए हँस कागया। साचे दर हरि बहाए, आलस निन्दरा पड़दा लाहे, अट्ठे पहर मन बैरागया। नर नरेशा दर्शन पाए, लोचन साचा खोलृ, वखाए बुझी रहे तृष्ना आज्ञा। दोवें हथ्थीं सेव कमाए, हरि समरथी संग रलाए, मिले मजन साचे सज्जण विच माघ माघिआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पड़दे आया कज्जण, बेमुख जीव भाण्डे भज्जण, दोवें ताल मात वज्जण, कोई ना किसे रक्खे लाज्जया।

ओंकार ओंकार ओंकार आप निरंकारया। सोहँ जाप सोहँ जाप सोहँ जाप अजपा जाप, मात धरा रिहा। दोअँ आप दोअँ आप दोअँ आप, एका दूजा भउ चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वखा रिहा। अस्सू तिन्न जगत वैराग। प्रभ अबिनाशी दर घर साचे आप सुहाए, तृष्ना बुझाए ममता आग। सत्तां दीपां जोत जगाए, नौ खण्ड पृथ्वी एक चिराग। आपे आप डगमगाए, आपे गाए बण बण शब्द सरूपी साचा राग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रखे वाग। नौ खण्ड नौ दर विच वरभण्डया। नौ खण्ड नौ दर प्रभ साचे वंडन वंडया। नौ खण्ड नौ दर, प्रभ देवे चार कुन्ट दंडया। नौ खण्ड नौ दर वेख अन्तिम मात हंढिआ। नौ खण्ड नौ दर प्रभ देवे साचा वर, चारों कुन्ट वंडया। नौ खण्ड नौ दर अन्तिम होवे मात रंडया। नौ खण्ड नौ दर वेख वखाणे हरि वरभण्डया। नौ खण्ड नौ दर माया झूठे भरे घमंडया। नौ खण्ड नौ दर आपे वेखे साचा हरि, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम आया कन्ढया। सत्त दीप सत्त लोअ, सत्त अकास्या। सत्त दीप सभ जीअ को, आप बणाए मण्डल रास्सया। सत्त दीप प्रभ प्रगट हो, अजप्पा जाप कराए जाप्या। सत्त दीप प्रभ अवगुण जूठी झूठी माया खोह, मेट मिटाए काया पाप्या। सत्त दीप नाम वस्त प्रभ बीज साचा बो, करे कराए वड परताप्या। सत्त दीप प्रभ शब्द चलाए एका सोहँ सो, बुझाए आपणा आप्या। सत्त दीप प्रभ अमृत चो, जोती जोत सरूप हरि, मेट मिटाए तीनो ताप्या। पंज तत्त प्रधान तन उपाया। पंचम पंज शैतान संग रलाया। पंजां लाए एका बाण, एका अंक ध्यान रखाया। आप बहाए इक्क मकान, काया मन्दिर इक्क सुहाया। जूठी झूठी खोल्ही बैठा दुकान, जगत वणजारा सर्ब कराया। कलिजुग करे खेल महान, जीव जन्त सर्ब भुलाया। आपणा कीता आपे पाण, कलिजुग वेला अन्तिम आया। एका झुल्लणा मात निशान, सोहँ अक्खर वक्खर लेख लिखाया। गुरमुख प्रगट विच जहान, पंचम नाता मोह तुड़ाया। प्रभ अबिनाशी देवे जिया दान, चौदां हट्टां हट्ट भराया। चरन धूढ़ सच्चा इशनान, काया गूढ़ रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम पंचां मेल दर, तन मुनारा इक्क सुहाया। पंचम तत्त पंचम गुण पंच परवानया। तेज धार शब्द धुन शब्द खोल्हे साची सुन्न, पंचम वज्जे शब्द महानया। पंचम खेल जाणे कवण गुण, नाद अनाद ना किसे वखानया। गुरमुख साचे चतुर चुण, प्रभ पंचम बन्न्हे साचा गानया। लक्ख चुरासी छाण पुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा आप पछानया। त्रैगुण माया धात, धरत उपाईआ। त्रैगुण बद्धा नात, सृष्ट सबाईआ। त्रैगुण माया एका छाया दिवस रात, सूरज चन्द सर्ब उपजाईआ। त्रैगुण माया खेल

कमलापात, चन्द सितार चमकाईआ। त्रैगुण माया सर्ब प्रकाश, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। त्रैगुण माया सर्ब घट वास, दिस किसे ना आईआ। त्रैगुण माया आप उठाए पृथ्वी अकाश, गगन पताली धंम कोई दिस ना आईआ। त्रैगुण माया धवले अन्दर रखे वास, जल धारा उप्पर धराईआ। त्रैगुण माया साची रास, मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड उपजाईआ। त्रैगुण माया थापन थाप, नौ खण्ड पृथ्वी रचन रचाईआ। त्रैगुण माया हरि प्रताप, शिव ब्रह्मा विष्न सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, त्रैगुण माया आप कर, सृष्ट सबाई बणत बणाईआ। तिन्न गुण बन्ने धार तत्त विरोल्लया। सतो गुण सर्ब विचार, सति संतोखी धर्मसालया। रजो राज जोग दरबार, साचे धाम आप सुहा ल्या। तामस तृष्ना अग्न पसार, जीव जन्त आप वसा ल्या। त्रैगुण तत्तां विच सरदार, पंझी प्रकृती संग रला ल्या। करी खेल सच्ची सरकार, आप आपणी रचन रचा ल्या। आपे वसे अन्दर बाहर, आप आपणा आप छुपा ल्या। दस्म दुआरी महल्ल अपार, अन्दरे अन्दर आप बणा ल्या। काया मन्दिर जगत शृंगार, दसवें दीपक जोती बालया। नौ दुआरे कर त्यार, काया पिंजर आप चला ल्या। दस्म दुआरी बन्द कुआड़ शब्द सिँघासण आप विछा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, त्रैगुण साचा वेस कर, लक्ख चुरासी आप उपा ल्या। पंज तत्त परवानया अट्ठ अठारया। दस अट्ठ प्रधान विच संसारया। पंज पंज पंज काया अन्दर वसा, अन्दरे अन्दर नाम उचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर इक्क सुहा ल्या। काया मन्दिर हरि उपाया। आत्म मनुआ इक्क टिकाया। ममता तृष्ना संग साची आसा नाल ल्याया। आपे वेखे बैठ तमाशा, अन्दर बाहर पृथ्वी अकाशा, दर दरबान आप अख्वाया। आपे बणे चतुर सुजान, पंच रलाए नौजवान, करे खेल आप महान, चारों कुन्टां रिहा फिराया। मति बुध नाल रकान, बैठी काया मन्दिर मकान, आप आपणा मुख छुपाया। हौली हौली हिले ज़बान, आपे दस्से आपणी आण, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। मन चंचल होया विच प्रधान, रोक ना सके कोई राया। कलिजुग अन्तिम अन्त आपणा ताणा रिहा ताण, लक्ख चुरासी लए फसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां लेखा रिहा लिखाया। गुरमुखां लेख लिखाए दया कमांयदा। इक्क सद ग्यारां दिवस वेख, दहि दिशा कर्म कमांयदा। हरिजन जन हरि मेला मीत मुरार, नर निरँकारा दरस दिखांयदा। नौ सत्त सत्त नौ करे विहारा, सोलां कला आप अख्वांयदा। सोलां कला कलिजुग धारा, काली रैण अन्धेर मिटांयदा। जन भगतां दस्से मात विहारा, सोहँ धारा अन्दर वहांयदा। उपजे धुन शब्द जैकारा, साचा राह वखांयदा। मिटे अन्धेर धुँदूकारा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। दीपक जोत कर उज्यारा, अनहद साचा राग सुणांयदा। दरस दिखाए अगम्म अपारा, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। शब्द सिँघासण इक्क अपारा, जोत सरूपी डगमगांयदा। ना कोई ठग्ग चोर

ना यारा, साची नगरी इक्क वखांयदा। अमृत झिरना झिरे ठंडी ठारा, धारा इक्क वहांयदा। भैण भाई ना दीसे कोई मीत मुरारा, सगला संग तजांयदा। गुरमुख साचा दर घर साचे करे प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धाम सुहांयदा। गुर कृपाल दयाल हरि भगवानया। गुरमुख साचे परखे लाल, देवे जगत नाम निशानया। फल लगाए काया डालृ, हरि हरि वाली दो जहानया। आपे तोड़े जगत जंजाल, सतिजुग साचा राह वखानया। सोहँ शब्द मात दलाल, मेल मिलाए श्री भगवानया। मिले नाम सच्चा धन्न माल, आत्म जोती नूर महानया। अमृत सुहाए साचा ताल, हरि सच इशनान करानया। एका दस्से राह सुखाल, योग अभ्यास ना कोई वखानया। जोती जगे दीपक मस्तक साचे थाल, नर निरँजण नूर नुरानया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, हरिजन साचा आप पछानया। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, शब्द बन्नृे हथ्थीं गानया। दर घर साचे देवे माण, झुल्लदा रहे मात निशान, आदि अन्त ना होए कंगाल, मिले मेल श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचे करे परवानया। सतिजुग साची रीत सखी सुहाया। ना कोई देहुरा दीसे मन्दिर मसीत, गुरदुआरा ना कोई सजाया। सोहँ शब्द रखाए चीत, राग ताल ना कोई अलृाया। धुर दरगाही सुहागी गीत, आप आपणा आप सुणाया। लक्ख चुरासी लैणी जीत, जन भगतां प्रभ रिहा सुणाया। सवा पहर रहणा अतीत, दर द्वार मात लिखाया। दिवस सोलां जायण बीत, सोलां कला जोत जगाया। गुर चरन प्रीती साची रीत, इक्क ध्यान लगाया। कलिजुग चली अवल्लड़ी रीत, सोहँ जाप साचा आप जपाया। जोती जोत सरूप हरि, सोलां सोलां वेख हरि, आपणा बिरद धराया। सत्त दीप नौ खण्ड सोलां अकारया। पुरख अबिनाशी पाए वंड, दिवस इक्क सौ ग्यारया। जन भगतां बन्नृे पल्ले नाम गंढु, दिवस सोलवें आए वारया। सत्ते वारां रक्खे ठंड, इक्क इक्क छड्डुणा वारो वारया। आपे करे आपणी वंड, सवा पहर देवे पहरया। फड़े हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, नौ दुआरे आपे मार कटारया। हरि शब्द सुहागी गीत पुरख अबिनाशी वंड, गुरमुख साचे लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा काज सुवारया। अस्सू तिन्न भगत कुड़माई। अन्दर मन्दिर देवे राम नाम वधाई। काया कोट डूंघी कन्दर, दीपक जोती करे रुशनाई। हथ्थीं खोलृे वज्जा जन्दर, आपे ल्या लगाई। भाग लगाए काया मन्दिर, नौ दुआरे बन्द कराई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरा बूझ बुझाई। खोलृे दस्म दुआर दरस दरसानया। रसना शब्द चलाए सवा पहर, सोहँ सो मात महानया। आपे जाणे अन्दर बाहर निकले नौ दुआरे हउ हो, तोड़े माण ताण आत्म अभिमानया। दुरमति मैल कढ्ढे धो, जपाए जाप शब्द रुहानया। अमृत आत्म देवे चो, सोहँ जाप जप साची बाणीआ। इक्क दुआरा साचा

३०८ ०५

मोह, पुरख अबिनाशी घट घट वासी देवे नाम निशानीआं। लक्ख चुरासी रही रो, ना पल्लू कोई फड़ानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां किरपा करे महानया। अस्सू तिन्न अमृत वेला। पुरख अबिनाशी आपे फिरे इक्क इकेला। दर दर घर घर जाए वेखे, गुरूद्वार गुरू गुर चेला। आपणी हथ्थीं लिखदा जाए लेखे, आपे करे वक्त सुहेला। नाम मस्तक लाउँदा जाए मेखे, आप आपणा मिलाए मेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुहेला साचा वेला। गुर आसण हरि बिसराम। शब्द सिँघासण साचा नाम। पुरख अबिनाशण घनकपुर वासण करे आपणा काम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे आगरा निवासन हड्ड मास नाड़ी चाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पल्ले रक्खे नाम दाम। अस्सू तिन्न चाढ़े तेल, अचरज रचन रचाईआ। अट्ठे पहर सुरत शब्द मेल, हरि दर्शन नैण बिगसाईआ। सिँघ पूरन हरि सज्जण सुहेल, बाहर रहे ना राईआ। आपे गुर आपे चेल, एका जोती आपणी आप उपाईआ। कलिजुग होया अन्तिम मेल, हरि घोली हउँ विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, काया रंगण रंगी चोली, आप आपणा भेव मिटाईआ। मिट्टी खेह ना होए डोली, नाड़ी चलदी रहे सुवाईआ। बुध शब्द देवे सच बोली, सच सुनारा आप अख्वाईआ। छब्बी पोह जोती होली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर सिँघ पूरन विच दए रखाईआ। अट्ठे पहर दए रक्ख। दिवस रैण ना होवे वक्ख। सौ ग्यारां वेख प्रतक्ख। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा आप लिखाए, साची हथ्थीं बणत बणाए, विच मालवे हो प्रतक्ख।

★ पहली कत्तक २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

नौं सत्त प्रभ धार नव नव रंगया। लक्ख चुरासी वेखे धीरज यता, दर दुआरा घर घर मंगया। अट्ठ सट्ठ वेखे तीर्थ तट्टा, गुर मन्दिर अन्दर भुक्खा नग्गया। मंगे बण भिखार, दर सुवालीआ। कलिजुग तेरी काली धार, बेमुख सुत्ते पैर पसार, चारों कुन्ट अन्ध अंध्यार, ना कोई दीसे मीत मुरार, देवे नाम सच्चा धन मालया। शब्द वणजारा वेखे हट्ट, चार वरनां एको दुआरा मंगया। काया भन्न अपार पट्ट, हरि दाता सूरा सरबन्गया। बेमुखां वेखे दूई द्वैती फट्ट, मानस देही हुन्दी भन्गया। गुरमुखां दीसे घट घट, सदा सुहेला अंग सन्गया। अमृत आत्म रस लैणा चट्ट,, वज्जे शब्द मृदंग जगे जोत काया मट, जोती मेल रंग तरंगया। कलिजुग माया खेल बाजीगर नट, चारों कुन्ट दीसे तन्गया। जोती जोत सरूप

हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क दुआरा हरिजन प्यारा बण भिखारा मात मंगया। शब्द खण्डा सच किरपान, आपे वेखे मार ध्यान, मेट मिटाए ज़िमी अस्मान, चौदां तबकां आई हान, करे खेल मात महान हरि जगदीशरा। सोहँ फड़या शब्द निशान, ना कोई जाणे तपी तपीशरा। माया राणी विच मैदान, तोड़े यति रिक्खी रिखीशरा। हरिजन मंग अपार, दर सुवालीआ। गुर मन्त्र शब्द अधार, जोत अकालीआ। जन भगतां देवे कर प्यार, चले चाल जगत निरालीआ। अट्ठे पहर पहरेदार, सद रक्खे हथ्थां खालीआ। शब्द खण्डां हरि दातार, सदा सदा करे प्रितपालीआ। हरिजन मंगे बण भिखार, काया रंगण रंग अपार लाल गुलालीआ। हउमे तृष्ना दए निवार, दर घर साचे बणे दलालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, मेट मिटाए अन्ध अन्धेर रैण घटा कालीआ। हरिभगत अधार, सर्बकल पूरया। मानस देही पैज संवार, आसा मनसा पूरया। निर्मल जोत करे अकार, शब्द धुनी अनाहद तूरया। देवे दरस अगम्म अपार, हरि हरि दाता वड वड सूरया। मिले मेल मीत मुरार, पंजां तत्तां करे चूरो चूरया। काया रंगण बसंत बहार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नेरन नेर दूरन दूरया। हरिभगत अधार शब्द जणाईआ। गुर शब्द मीत मुरार होए सहाईआ। लक्ख चुरासी उतरे पार, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सद ग्यारां सच विहार करा रिहा। इक्क सद ग्यारां हरि विहारया। जन भगतां वज्जे आत्म नद, उपजे धुन सच्ची सरकारया। अमृत आत्म प्याए मध, अट्ठे पहर रहे खुमारया। पंजां चोरां देवे बद्ध, हरि शब्द मार दो धारया। आपे जाणे आपणी हद्द, आर पार पार आर किनारया। भाग लगाए गुरमुख यद, सोहँ नाम जिस उचारया। मिले वड्याई विच ब्रह्मद, लोआं पुरीआं भेड़ भिड़ा रिहा। लक्ख चुरासी गई वध, धर्म राए रोए दर पुकारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धारया। जोती जमा भेख अवल्लड़ा। लक्ख चुरासी लिखे लेख, बैठा रहे इक्क इकल्लड़ा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दर दुआरा एका मल्लड़ा। जोती जामा धारे भेख अवल्लड़ा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्लड़ा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, सोहँ फड़े हथ्थ विच भल्लड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन हरि हरि जन दर दुआरे अगे खलड़ा। गुरमुख तेरा रंग अपर अपारा। मंगे साची मंग विच संसारा। काया चोली चाढ़े रंग, उत्तर ना जाए दूजी वारा। लक्ख चुरासी पार लँघ, मिले मेल हरि निरँकारा। पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी शब्द घोड़े कस तंग, लोकमात आया अन्तिम वारा। जन भगतां कटे भुक्ख नंग, अमृत देवे हरि अपारा। दर दुआरा इक्को लैणा मंग, मिले मेल पुरख भतारा। दिवस रैण रहे संग, दिस किसे ना आ रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जंग, सत्तां दीपां खेल रचा रिहा। सोहँ

शब्द वहाए साची गंग, बेमुखां एका धार वहा रिहा। गुरमुखां मंगी साची मंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखा रिहा। गुरमुखां निर्मल नीर हरि वरतारा। जन भगतां कट्टण आया भीड़, बेमुखां लाए हउमे पीड़, कलिजुग डोबे अद्धविचकारा। माया राणी मारे जंजीर, हउमे वज्जा आत्म तीर, दूई द्वैती पड़दा पाड़या। ना कोई चोटी चढ़े अखीर, बजर कपाटी साची हाटी ना कोई पार कर रिहा। गुरमुख विरले साचा लाहा प्रभ दर खाटी, रोग सोग जगत विजोग आपणी झोली पा रिहा। आपे देवे दरस अमोघ, अमृत सर घर साचे दया कमा रिहा। शब्द चुगावे साची चोग, काग हँस आप बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जाप अजपा जाप आप जपा रिहा। राज जोग सुल्तान तख्त बिराज्जया। कलिजुग काया होए विजोग, ना कोई रखाए अन्तिम लाज्जया। गुरमुख विरला हरि भेव खुल्हाए गोझ, आप आपणा साजन सज्जया। जोत सरूपी करे चोज, शब्द सरूपी मारे अवाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व सोहे साचे ताज्जया। चिट्टा अस्व हरि सुल्ताना, शाह सुल्तानया। बैठे आप श्री भगवाना, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यानया। चतुर्भुज नौजवाना, गुणवन्त गुण निधानया। भेव चुकाए एका दूज, दहि दिशा खेल महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम निधानया। चतुर्भुज बलवान हरि निरंकारया। प्रगट होए विच संसार, खेल अपारया। शब्द फड़ तेज कटार, मन हंकारया। मारी जाए वारो वार, चारे कुन्टां ललकारया। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां हुक्म सुणा रिहा। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, झुलाए जगत सच्चा निशाना, आप आपणी बणत बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां मेल मिलाए, साचे संत सोए मात जगा रिहा। गुरमुख सोया जाग, हरि जगांयदा। तन मन्दिर लग्गे भाग रंग रंगांयदा। अन्दरे अन्दर जोत वखांयदा। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, प्रभ अबिनाशी दिस ना आंयदा। आत्म वज्जा हँकारी जन्दर, ना कोई किसे तुड़ांयदा। काया अन्धेरी डूंघी कन्दर, भरम भुलेखे सर्ब भुलांयदा। गुरमुख सोहे सुहाए काया मन्दिर, सर्ब घट वास पुरख अबिनाश, प्रगट होए दुरमति मैल धोए, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। स्वच्छ सरूप दरस अपार वखांयदा। वडा शाहो भूप शब्द सिँघासण आसण लांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, रंग रंगीला मोहण माधव आपे आप अख्वांयदा। सोहँ धागा साचा सूत, गुरमुख साचे पुरांयदा। आप उठाए सच सपूत, माया राणी पड़दा लांहयदा। वेख वखाए चारे कूट, राजा राणा भरम भुलांयदा। शब्द निशाना तीर रिहा छूट, बेमुखां पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत सुहेले साचे मार्ग लांयदा। हरि साचा राह वखाया। गलों कटे चुरासी फाह, एका अक्खर नाम पढ़ाया। धुर दरगाही आप मलाह, दूसर कोई ना संग रलाया। आपे पिता आपे माँ,

गुरमुख साचा आपणी गोद उठाया। चारों कुन्ट उडाए घर घर कां, कलिजुग विछोड़ा पाया। जन भगतां देवे ठंडी छाँ, शब्द पड़दा उप्पर पाया। वेले अन्तिम पकड़े बांह, लहिणा देणा मात चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला वेस दर दरवेस, गुरमुख साचे विच प्रवेश, दिस किसे ना आया। हरि जोती जगत जगाईआ। गुरमुख साचे साची शक्त, आत्म शक्ती लेखे लाए बूंद रक्त, कलिजुग वेला वक्त सुहाईआ। आप भुलाए लक्ख चुरासी, सतिजुग आपणी नईआ हरि चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डोर बन्ने पंज चोर, काया अन्धेर घोर, आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द डोरी बन्न करतार। लक्ख चुरासी करे चोरी, गुरमुखां करे ख़बरदार। आप आपणे संग जाए तोरी, दिवस रैण पहरेदार। शब्द चाढ़े साची घोड़ी, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। हरि सुरती शब्द मिलाईआ। अकाल मूर्ति नज़री आईआ। नाद तूरती इक्क वजाईआ। संत सुहेले आसा पूरती, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। जगत माया दूर दूरती, शब्द डण्डे रिहा डराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी कूड़ो कूड़ती, दर घर अन्दर मन्दिर महल्ल रंग रंगाईआ। गुरमुख तेरी काया कल, आत्म जोती इक्क जगाईआ। सच दुआरा लैणा मल्ल, बजर कपाटी पड़दा लाहीआ। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, दस्म दुआरी भेव चुकाईआ। शब्द सरूपी आप चलाए सोहँ सच्चा हल, पंजां देवे जड़ उखड़ाईआ। भाणा वरते वेखो कल्ल, निहकलंकी साचा नाता पुरख बिधाता, जोती शब्दी सुरत बंधाईआ। आपे आप रहे इक्क इकाता, अमृत देवे बूंद स्वांता, गुरमुखां पुच्छे घर घर वातां, दिवस रैण सेव कमाईआ। बेमुख दुहागण नार ना कन्त पछाता, नर हरि हरि नर सार ना पाईआ। जन भगतां देवे सच सुगाता, मेट मिटाए अन्धेरी राता, मेल मिलावा कमलापाता, नार सुहागण गुरमुख बैरागण साचा कन्त मिलाईआ। पंचम कत्तक उठ उठ जागण, माया डस्से ना डसणी नागन, हँस बणाए फड़ फड़ कागन, सोहँ साची चोग चुगाईआ। इक्क सुणाए साचा रागन, काया धोए झूठे दागण, गुरमुख साचे चरनी लागन, दे मति रिहा समझाईआ। धुन नाद अनाहद वाजन, मारे वाज आप गरीब निवाजन, जन भगतां रक्खे मात लाजन, नित्त नवित्त बणत बणाईआ। आप आपणे करे काजन, भगत जनां दा सच्चा साजन, प्रगट होए देस माझन, सम्बल देस मिले वड्याईआ। आपे बणे मुलां काज़ी शेख़े मक्का हाजी हाजन, वेख वखाणे बूरा कक्का शब्द घोड़े चाढ़े ताजन, राज राजानां रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, दर दरवेशा भगत दुआरा हरि निरँकारा एका एक आपणा आप वखाईआ। अलक्ख निरँजण अलख जगाए। गुरमुख साचे साचा साजण फड़ फड़ बांहों आप उठाए। चरन धूढ़ करे साचा मजन, दुरमति मैल मात

गुवाए। दर दुआरे आया पड़दे कज्जण, लहिणा देणा मोह चुकाए काया भाण्डे अन्तिम भज्जण, लाड़ी मौत ख़ुशी मनाए। धर्म राए दर ताल वज्जण, जम राजा तेल चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर निरँकारा शब्द अधार जोत विहारा इक्क कराए। हरि जोती जगत विहार मनाईआ। मेट मिटाए वरन गोती, दुरमति मैल जाए धोती, साचा शब्द इक्क पढ़ाईआ। हरिजन उठाए काया सोती, सोहँ शब्द लगाए सोटी, पंजां तत्तां रिहा दुरकाईआ। पंझी पोह चढ़ाए चोटी, नौ दुआरे वाशना खोटी, सच दुआरे जोत जगाईआ। सुरती सुरत ना कोई जाणे वडी छोटी, शब्द डोरी नाल बंनाईआ। चढ़ चढ़ थक्के कोटन कोटी, इक्क कबीरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत दुलारे अलख निरँजण अलख जगाईआ। आप जगाए अलख अलखणा लेख्या। गुरमुख साचे लए रक्ख, चारों कुन्ट भौंदे भक्ख, काया सुक्के सड़ने कक्ख, ना सके कोई रक्ख, अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थया। शब्द मधाणी रिहा मथ, पुरख अबिनाशी हरि समरथ, सोहँ शब्द अकथना कथया। गुर नानक मिली साची वथ, सगल वसूरे गए लथ, मानस देही पाई नत्थ, जगत चलाया साचा रथ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, जूठा झूठा सृष्ट सबाई मथन मथया। हरि समरथ अपार जगत अडोल्लया। शब्द चलाए अकथना अकथ, आपे बोल्लया।

३१३ सृष्ट सबाई रिहा मथ, पूरा तोल किसे ना तोल्लया। जन भगतां देवे साची वथ, भाग लगाए काया चोल्लया। जगत वसूरे ३१३

०५ जायण लथ, सोहँ गाया साचा ढोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त कदे ना ०५

डोल्लया। चरन कँवल कलि प्रीत, तन मन जागया। साचा मेल मिलाए आत्म मीत, बुझी तृष्ना अग्न बुझाए आग्गा। गाया इक्क सुहागी गीत, हउमे काया दुखड़ा भागया। काया मन्दिर सच मसीत, वेखे दस्म दरवाज्जया। अचरज कीती हरि जी रीत, गुरमुख साचे साचा कज्जल नेत्र पाज्जया। अजप्पा जाप जप जप अतीत, अनाहद धारा मारे वाज्जया। बाल जुवानी गई बीत, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया। मानस देही लैणी जीत, आप संवारे आपणा काज्जया। भगत सुहेला साचा मीत, धुर दरगाही आए भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, शब्द चढ़ाए साचे ताज्जया। शब्द घोड़ा हरि रखांयदा। गुरमुख साचा आप चढ़ांयदा। काया देही भाण्डा काचा, नौ दुआरे रंग वखांयदा। दस्म दुआरे साजन साचा, जोत सरूपी डगमगांयदा। एका मारे शब्द तमाचा, राह साचा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, दर घर इक्क सुहांयदा। दर घर द्वार, हरि सुहाया। गुरमुख साचे कर प्यार, दया कमाया। दीपक जोती कर उज्ज्यार, अन्धेर मिटाया। देवे शब्द नाम अपार, दूई द्वैती पड़दा लाहया।

हउमे देवे रोग निवार, माया ममता मोह चुकाया। मिले मेल पुरख भतार, साची सेजा रिहा वखाया। शब्द सिँघासण हरि निरँकार, अन्दर मन्दिर हरि विछाया। फूलन बरखा अपर अपार, अमृत धारा रिहा बरसाया। गुरमुख शब्द सुहागण नार, फड़ बाहों उप्पर बिठाया। किया कौल सच्चा इकरार, दस्म दुआरी कुण्डा लाहया। जगे जोत अगम्म अपार, आर पार पार आर दिस किसे ना आया। शब्द सरूपी साची धार, रागां नादां बाहर रखाया। सुन्न अगम्मी वेख अपार, साची रंगन रंग वखाया। ओंकारा देस अपार, शब्द प्रवेश विच समाया। जोती धारा हरि निरँकारा ना कोई मन्दिर चार दिवारा, आप आपणी बणत बणाया। निर्मल नूर कर उज्यारा, शब्द तूर अपर अपारा। पवण सरूप सर्ब सहारा। दस्म दुआरी महल्ल उसारा। जम्बु दीप पार किनारा। अमृत जल ठंडी ठारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे नाम वर, दरस दिखाए अगम्म अपारा। आप अगम्म अपार अगाध बोध्या। ना मरे ना पए जम्म, बत्ती दन्द ना होए दोध्या। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, ना रोए छम्म छम्म, आपे जाणे आपणा कम्म, पवण स्वासी लए दम, काया सोध ना कदे सोध्या। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, वड दाता जोधा सूरबीर जोधन जोध्या। सूरबीर सुल्तान हरि भगवानया। गुरमुख वेखे मार ध्यान, विच जहानया। आपे करे मात पछाण, ना कोई जाणे जीव निधानया। शब्द बिठाए विच बिबाण, पुरीआं लोआं पार उडानया। शब्द फड़ाए तीर कमान, सोहँ चढ़ाए तीर निशानया। आपे जाणे आपणी आण, ना कोई सके मात पछाण, ना कोई जाणे जीव निधानया। खाणी बाणी आई हाण, अञ्जील कुरानां लग्गा बाण, नाता तुट्टा पीण खाण, मगर लग्गे पंज शैतानया। उठे नर हरि बली बलवान, शब्द सरूपी खेल महान, वज्जे तीर निशाना साची कानीआ। ना कोई जाणे ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान, पंडत पांधे बेईमान, मुल्ला काजी शेख़ शैतान ना कोई जाणे साची बाणीआ। छत्ती रागां तुटे माण, नारद मुन होया हैरान, सुरसती भन्ने बीन निधान, ब्रह्मा मारे उच्च ध्यानया। प्रगट होए वाली दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जेती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जाणे आपणी आणया। ब्रह्मे ब्रह्म विचार मन उदास्या। कलि कर्म विचार, पुरख अबिनाशी साचा धर्म करे जैकार, आदि अन्त ना कदे विनास्या। सोहँ खण्डा तेज कटार, मेट मिटाए मदिरा मास्या। जन भगतां कराए एका वणज वपार, मानस जन्म करे रहिरास्या। निरँजण जोत कर अकार, देवे वस्त शब्द अपार, लाहे तन जगत उदास्या। गुरमुखां देवे साची धार, नौ सत्त वेख विचार, सोलां कल सच्ची सरकार, जपाए जाप स्वास सवास्या। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां करे कराए बन्द खुलास्या। हरि साचा जाप जपाए, जपत गुर साखीआ। कलिजुग तीनो ताप गंवाए, अमृत

३१५

०५

आत्म जाम प्याए, बण बण सज्जण साचा साकीआ। आपे आप दरस दिखाए गुरमुख साचे तरस कमाए, साची बाणी धुर फ़रमाणी रसन वखाणी आपे भाखीआ। दो जहानी सच्ची राणी, आप चुकाए जम की काणी, मेट मिटाए अंडज जेरज उतभज सेत्ज चारे खाणी, साचा धाम इक्क वखासीआ। आत्म सर सरोवर देवे ठंडा पाणी, निशअक्खर वक्खर परा पसंती सच्ची बाणी, जपे जपाए सच घर वास्या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाणे सर्ब घट जाणे पृथ्वी अकास्या। हरि मन्दिर घर अपर अपार, उच्च अटारीआ। त्रैगुण माया ल्या उसार, पंचां संग समा ल्या। अट्ठां वेखे रंग अपार, नौआ दरां आप खुल्हा ल्या। दसवें शब्द सिँघासण कर त्यार, साची सेजा आसण ला ल्या। पवण उनन्जा छत्र झुलार, हरि साची सेवा इक्क रखा ल्या। कौस्तक मणीआं साची धार, नूर उजाला इक्क करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर सच घर साची बणत बणा ल्या। काया मन्दिर नौ द्वार, साजन साज्जया। निरगुण करे खेल अपार, सरगुण बन्ह्ने साची धार, आपे आप गरीब निवाज्जया। पवण जोती शब्द अपार, आपे साचा साजन साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साचा काज्जया। उच्च महल्ल अटल अपर अपारा। काया दिसे डूंघी डल, अन्ध अंध्यार सर्ब संसारया। गुरमुख विरला वेखे सच धाम अटल, पुरख अबिनाशी आप वखा रिहा। बेमुख भुलाए कर कर वल छल, झूठा धन्दा मोह जंज़ालया। गुरमुखां अमृत आत्म प्याए साचा जल, सर सरोवर इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख धर, एका दस्से राह सुखालया। सच्चा दसे राह बेपरवाहीआ। आपे फड़े हरिजन बांह, कलिजुग बेड़ा बन्ह्ने लाईआ। वेख वखाणे थाओ थाँ, दूर नेड़े भेव ना राईआ। साची बणता रिहा बणा, पूत सपूत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगवन्त भगती रिहा जणाईआ। हरिभगत भगवान शब्द जणाया। अस्सू तिन्न मार ध्यान, सोलां सोलां वंड कराया। सोहँ फड़ हथ्थ निशान, चारे कुन्टां रिहा वखाया। मनमुख डोबे बेईमान, गुरमुख साचे रिहा तराया। आपे करे मात पछाण, जिया दान झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहला लेखा काला वेखा, उन्नी अस्सू लेख लिखाया। उनी अस्सू आस रक्ख, गुरमुख साचे चोट लगाईआ। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, कोटन कोट रहे बिललाईआ। हरिजन साचे कीने वख, एका ओट प्रभ रखाईआ। आपे वेखे किशना पक्ख, शब्द पक्ख सार ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, सगल वसूरे जायण लथ्थ, पंजां चोरां पावे नत्थ, सोहँ अक्खर जगत वक्खर एका एक पढ़ाईआ। सोहँ सो साचा नाउँ। कलिजुग जीव ना जाणे को, पुरख अबिनाशी अगम्म

अथाहो। दर दर घर घर जूठे झूठे रहे रो, ना कोई पार कराए फड़ फड़ बांहो। गुरमुख मानण रंग अनूठे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्ला सच महल्ला, अस्सू उनी गुरमुखां देवे शब्द चुन्नी, बेमुखां ना दीसे कोई थांउं। एका अक्खर एका एक। उन्नी अस्सू रिहा वेख। पंचम कतक लगे मेख। बिधना लिक्खी मिटे रेख। नेत्र नैण लोचन गुरमुख साचे लैणा वेख। हरि शब्द सहाई जिउँ बाल सपूता होए बलोचन आपे धारे आपणा भेख। गुरमुखां खोल्ह बन्द दर, पंजां चोरां चुक्के डर, मस्तक लाए शब्द साची मेख। लग्गे मेख मस्तक माथ। शब्द सरूपी मिले राथ। आप चढ़ाए त्रैलोकी नाथ। सतिजुग चलाई साची गाथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कत्तक इकी खेल करे इक्को निक्की, झूठी काया दिसे फिकी, आत्म खोल्ह बन्द ताक। इकी कत्तक शब्द विहारा। ना कोई दीसे शाह दारा। ना कोई साजण मीत मुरार। ना कोई राजन राज दरबारा। ना कोई शब्द घोड़ शाह अस्वारा। ना कोई जोड़ा अपर अपारा। पुरख अबिनाशी आपे आप जाए दया कमाए खोल्ह बन्द किवाड़ा। खोल्ह बन्द कवाड़, नौ द्वारया। पर्‍हे हटाए पंचम धाड़, भुजा संवारया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अग्नी तेज ना तत्ती हाढ़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर विच संसारया। गुरमति रीत गुरमुख विचार हरि साची बणत बणांयदा। गुर संगत सच प्रीत, अधर्म विकार मनमुख कोई दिस ना आंयदा। काया होए ठंडी सीत, मन शब्द फूलनहार रोग सोग चिन्त मिटांयदा। देवे नाम अपर अपार, कलिजुग बेड़ा करे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। गुरमुख गुरमुख गुरमती हरि समझाया। गुर संगत नाता मेल पुरख बिधाता, धीरज यति इक्क रखाया। उत्तम होए मात ज़ाता, ना कोई वेखे भैण भ्राता, साची सेव कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड देवी देव आपे आप सदा निहकेव सद आपणे विच समाया। बेआब बेताब कर्म विजोगया। काया रोग कँवली नाभ, जगत विजोगया। लेखा चुक्के चुकाए आप शताब, वक्त वेला ढुकया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे हरा सुक्का रुखिआ। पवण स्वासी दम, थम्म्हण थम्म्हया। काया रोग झूठे चम्म, लोकमाती मात जंम्मया। नेत्र नीर वहाए छम्म छम्म, बेडा किसे ना मात बन्न्हया। सोहँ शब्द आए कम्म, कलिजुग जीआं आत्म अन्नया। रोगां सोगां देवे डन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम आपे भन्नया। रसना गाउँणा शब्द स्वास। नाभी रसना होए बन्द खुलास। लेखे लग्गे नौ अठारां दस दस मास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सोहँ शब्द सच्ची रास। काया मन्दिर लग्गा दुःख। अन्दरे अन्दर धूंए रहे धुक्ख। रोगां सोगां जगत विजोगां लाया जन्दर, जगत तृष्ना एका भुक्ख।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुफल कराए जगत कुक्ख। हड्ड मास नाड़ी रोग। आप चबाए आपणी दाढ़ीं, रसना रस शब्द भोग। सदा रहे पिछे अगाड़ी, सोहँ चुगाए साची चोग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे नाम वर, काया चिन्ता मिट्टे सोग। काया रोग संताप सगल वसूरया। मन तन साचा रिहा कांप, हड्ड हड्ड होवे चूरया। एका जपणा साचा जाप, दरस देवे हाज़र हज़ूरया। नेड़ ना आयण तीनो ताप, माई बाप आसा मनसा पूरया। होए मात वड प्रताप, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जिया दान सर्बकला भरपूरया। काया मन्दिर चार दिवार। अन्दरे अन्दर धूँआंधार। जोत निरँजण वेख विचार। दु:ख दर्द भय भंजन, शब्द देवे साचा अंजन, नेत्र नैण खोल्ह उग्घाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग मिटाए बहत्तर नाड़। रोग सोग मन उदासी। आप मिटाए पुरख अबिनाशी। नाम जपाए शब्द स्वासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द चलाए दया कमाए निज घर आत्म रक्खे वासी। तन स्वास ना रक्खे दम। पंच विनास दुखड़ा काया चम्म। काया अन्दर पृथ्वी अकाश अप तेज़ वाए रिहा बन्न। जोती जोत सरूप हरि, होए सहाए सभनीं थाँईं, घट घट अन्दर रिहा रम। गुण गाउँणा गहर गम्भीर। मन ठांडा शांत सरीर। आपे देवे आत्म धीर। जोती जोत सरूप हरि,
३१७ आप आपणी किरपा कर, मुख चुआए अमृत साचा सीर। सोहँ जपया रोगां सोगां वज्जे तीर, मारे आपे आप्या। मारे नाम ३१७
०५ सच्चा जंज़ीर, पंजां तत्तां थापण थाप्या। आपे कटे काया भीड़, जोती जोत सरूप हरि, बणे माई बाप्या। पंज तत्त प्रभ ०५
हथ्थ, बणत बणाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत, जोड़ जुड़ाईआ। वेख वखाणे साचा वत, शब्द बीज इक्क बिजाईआ। रसना रस रिहा चट, काया मट खुशी मनाईआ। जोती जगे लट लट, दिस किसे ना आईआ। आपे वसे घट घट, वेख वखाणे सर्ब लोकाईआ। रोगां सोगां मेटे फट्ट, शब्द पट्ट तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। माया राणी मंगे वर, होई जगत प्रधान। आपणी किरपा देणी कर, मिले मेल पंच शैतान। सच दुआरे आवे डर, नेड़ ना आए वड रकान, जन दर मंगे इक्क वर, मात ना चले जगत दुकान। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आपे बख्शे साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माया राणी देवे वर, आप आपणा कर ध्यान। चरन कँवल कलि कर ध्यान। उप्पर धवल मिले माण। काया फुलवाड़ी जाए मवल, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। उलटा होए नाभ कँवल बूंद स्वांती मुख चुआन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द हथ्थ फड़ाए तीर कमान। देवे शब्द अपार तन शृंगारया। हथ्थ मैहन्दी नाम अपार, अमृत पाणी वारया। सौहरे पेइए होए उधार, प्रभ साचे काज

सुवारया। आपे वेखे कर विचार, गरीब निवाजे पार उतारया। फड़े बांह सच्ची सरकार, आपे बणे वंञ मुहाणया। अतुट भण्डारा भरे भण्डार, आपे जाणे पीणा खाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए वक्त सुहाणया। होए वक्त सुहेला मीत मितया। दोहां धिरां साचा मेला, चितवित चितया। आपे चाढ़े नाम तेला, वेख वखाणे वार थितया। ना होए वक्त दुहेला, गुरमुख साचे वेला जितया। लेखा लिखणहार हरि सुल्तानया। गुण अवगुण रिहा विचार श्री भगवानया। आपे करे छाण पुण, घट घट अन्दर वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम निधानया। एका नाम दर दुआरे पावणा। हरया होए काया चाम, सुफल कुक्ख आप करावणा। कोई ना लाए हरि जी दाम, सोहँ साचा जाप जपावणा। सुक्का हरया होए चाम, किशना पक्ख अन्धेर मिटावणा। अमृत पीणा साचा जाम, सांतक सीतल सति करावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुकाए डर गुण निधानणा मदिरा मास रसन तजावणा। वेखे पवण मसाण शब्द मधाणया। बीर बैताले आई हान, माई गौरजां मार ध्यान, आपे वेखे घर सुहानया। अंचन कंचन नार शैतान, हाकन डाकन होए वैरान, वजे तीर साची कानीआ। रोग सोग सर्ब मिट जान, रसना भोग शब्द भगवान, देवे दान साचा दानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुकाए डर गुण निधानया। कलि कुलवन्त गुरमुख लाल। मिले मेल हरि भगवन्त, लोकमात बणे दलाल। आप बणाए साची बणत, फ़ल लगाए काया डाल। हरि वड्याई साचे संत, नेड़ ना आए काल जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए जगत दलाल। कवण जागे, कवण जगाए। कवण सुणाए शब्द रागे, खेल रचाए कवण वागे, जन भगतां धोवे पिछले दागे, बेमुख डूंघे वहिण वहाए। आपे मेटे फेर सुहागे, मन्दिर माड़ी कोई दिस ना आए। अट्ठे पहर आपे जागे, मनमुख गूढ़ी नींद सुवाए। संत सुहेले दर द्वार आए भागे, सोहँ पल्लू लड़ फड़ाए। अट्ठे पहर आपे जागे, गुरमुख साचे आप जगाए। आप बुझाए तृष्ना आगे, काया मन्दिर अन्दर चढ़ निझर धारा मेघ बरसाए। दस्म दुआरी अगे खड़, सुरती शब्द लए फड़, अगम्म अगम्मा नज़री आए। ना कोई सीस ना कोई धड़, अन्दर बाहर ना दिसे जड़, सर्ब घटा घट रिहा समाए। ना कोई अक्खर रिहा पढ़, शब्द सरूपी रिहा लड़, लोआं पुरीआं रिहा हिलाए। शब्द कटारा हत्थीं फड़, दो धारा वढ्ढे धड़या धड़, पार किनारा दिस ना आए। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा छड़, सत्तां दीपां घाड़न दए घड़ाए। करोड़ तेतीसा रिहा डर, कोई ना पीवे बत्ती दन्दीं नड़, जूठे झूठे जायण झड़, मदिरा मासी मात खपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संत सुहेले आप कराए आपणे मेले, जगत विचोला ना कोई रखाए। जगत विचोला आप

धुर दरगाहीआ। एका शब्द सुणाए साचा बोला, पूरा तोल किसे ना तोला, आप जाणे बेपरवाहीआ। शब्द भण्डारा एका खोल्हा, प्रगट होए कला सोला, साची वंडन रिहा वंडाईआ। भाग लग्गे काया चोला, बजर कपाटी पड़दा खोल्हा, साचा रंगन रंग रंगाईआ। आप मिटाए पड़दा उहला, शब्द सरूपी साचा होला, जोत सरूपी रिहा खिलाईआ। बेमुख धर्म राए दा गोला, लाड़ी मौत चुक्के डोला, दर दुआरे दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त संत भगवन्त रिहा जगाईआ। भगवन्त संत गुरमीत, पुरख प्रधानया। काया करे ठंडी सीत, धुर दरगाही देवे नाम निशानया। बैठा रहे सद अतीत, ना कोई गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, आपे जाणे आपणी काया चरन कँवल कँवल चरन साची प्रीत, सतिजुग तेरी साची रीत, कलिजुग मिट्टे अन्त निशानीआ। एका एक परखे अट्ठे पहर नीत, सदी चौधवीं रही बीत, वेख वखाणे मुगल पठाणीआ। आपे मीत आपे कीट, चारों कुन्टां रिहा घसीट, मेट मिटाए शाह इरकानीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी आपे रिड़के, बेमुख जीव आपे झिड़के, सोहँ पाए शब्द मधाणीआ। सोहँ शब्द मधाणी हरि उठाईआ। धरत मात बणे सुवाणी, सागर सत्त रिड़कना पाईआ। उप्पर छाछ विरोले पाणी, जोती नाम नेत्रा संग रलाईआ। खिची जाए बेपरानी, हाणीआं हाणी दिस ना आईआ। ना कोई दीसे वेद पुराणी, ना कोई पढ़े अंजील कुरानी, वेला चुक्के खाणी बाणी, सोहँ अक्खर मात धराईआ। सोहँ साची बणे राणी, त्रैगुण माया भरे पाणी, पंजां तत्तां पवण मसाणी, साची रचना रिहा रचाईआ। ना कोई जाणे जेरज खाणी, अंडज होए हैरानी, उत्भज सेत्ज आपे रिहा उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। चारों कुन्ट रुशनाई, प्रभ प्रकाशया। वेख वखाणे सर्ब थाँईं, पुरख अबिनाशया। दूसर कोई दीसे नाही, काल कलन्दर करे वास्सया धर्म राए पाए फाही, लाड़ी मौत करे हास्सया। बेमुख जीव देण दुहाई, रसना लाया मदिरा मास्सया। गुरसिख वेखण चांईं चांईं, अडोल अडोला पृथ्वी अकाशया। आपे तारे फड़ फड़ बांहीं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द जपाए सोहँ सो स्वास स्वास्सया। सोहँ सो सो सुख जाणया। सति पुरख निरँजण काया माटी आप बणाए साचा कंचन, साचा देवे ब्रह्म ज्ञानया। भगत अधारा साचा सज्जण, चरन धूढ़ी साचा मजन, आप कराए नाम इशनानया। आपे मक्का काअबा हाज़ी हजन, ताल बेताले मात वज्जन, वेख वखाणे शेख़ मुलाणे मुलां काज़ीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग लेख वेख हरि, अन्त कराए झूठी खेल बाज़ीगर नाटीआ। सच घर किया निवास। आत्म जोत किया प्रकाश। आप रखाई आपणी नींआ, साचा नाम सच्चा बीआ, धुर दरगाही साची रास। लेखे लग्गे साढे तिन्न हथ्थ सींआ, अमृत जाम एका पीआ, मिल्या मेल पुरख

अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, आपे वसे सदा आस पास। हरि शब्द रचाया काज, दिवस विचारया। दर घर वेखे देस माझ, नगर खेड़ा अपर अपारया। साचा साजन आपे साज, साचा बेड़ा आप बन्ना रिहा। शब्द घोड़ा रक्ख ताज, सच्चा ताजी आप सुहा रिहा। जन हरि हरिजन रक्खण आया लाज, जगत लाज आप रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ साचा जाप मात आप धरा रिहा। शब्द रच्चया काज, गीत सुहागया। प्रभ देवण आया दाज, लक्ख चुरासी फेरे भाजिया। किसे सीस ना दीसे ताज, मुलां शेख़ ना कोई काजिया। ना कोई दीसे हाजी हाज, शाह ईराना ना कोई गाजिया। ना कोई मारे किसे अवाज़, सुत्ते रहण वड वड नाजिया। बेमुखां कढ्ढण आया पाज, कलिजुग हारी अन्तिम बाजिया। चारे कुन्टां रिहा भाज, गुरमुख उठाए दया कमाए माझन माझीआ, साचा अक्खर इक्क पढ़ाए, जगत वक्खर कर वखाए, बन्द कराए नौ दरवाज्या। जोत निरँजण दरस दिखाए, नेत्र अंजन एका पाए, पारब्रह्म पुरख अबिनाशया। जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, शब्द हथ्थौड़ा रिहा लगाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना रिहा रचाए। शब्द रचाया काज, वक्त सुहंदड़ा। करे खेल देस माझ, जोती जोत जगन्दड़ा। आपे रक्खे आपणी लाज, जगत सुहेला हरि बख्शंदड़ा। उनी अस्सू मारे आवाज़, गुरमुख सोए आप जगाए, बेमुख माया वहिण वहंदड़ा। सोहँ साचा जाप जपाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया रंगण रंग रंगदड़ा। शब्द रचाया काज, रंग महल्लया। आपे मारे गुरमुखां अवाज़, उच्च अटल्लया। धरत मात तेरी सांझ रलया जल थलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल कलिजुग कलया। शब्द रचाया काज, कलिजुग अन्धेरया। ना कोई जाणे जीव गंवार, कवण करे हेरा फेरया। माया रुल्ले सर्ब संसार, दर दर घर घर मेरा मेरया। काया बूटे अन्तिम हुले, ना कोई फले ना कोई फुले, ना कोई पाए मात मुल्ले, पाणी पया अन्तिम चुल्हे, ढहि ढहि अन्तिम होए ढेरया। गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घुल्ले, शब्द भण्डारा एका खुल्हे, देवे नाम शब्द अनमुल्ले, लेखे लाए मानस देही सौ सौ वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जगाए, ब्रह्म पार पारब्रह्म आप आपणी गोद उठाए वक्त सुहेला आप सुहारया। आप आपणी गोद उठाउँणा। पुरख अबिनाशी लाड लडाउँणा। घट घट वासी घनकपुर वासी, हउमे रोग आत्म कढ्ढ एका रंगण नाम चढ़ाउँणा। जगत विछोड़ा मिटे उदासी, गॉड खुदाई दरस दिखाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाउँणा। आप आपणा सिर हथ्थ टिकाए। शब्द चलाए जग अकथ, सोहँ सो नाम रखाए। मिले मेल पुरख समरथ, हरिजन साचा

रसना गाए। लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ, आवण जावण फेर ना आए। शब्द चाढ़े साचे रथ, चित्रगुप्त ना लेख मंगाए। पंजां चोरां पाए नत्थ, चरन कँवल जन ध्यान टिकाए। महिंमा जगत चले अकथ, अकथ कथी कथ कथन ना पाए। भगत जनां हरि देवे वथ, शब्द संजोगी मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दरस दिखाए। दिखाए दरस धार अवल्ली, रीत मात चलाईआ। करे तरस जोत अकल्ली, साचा मीती सर्ब सहाईआ। अमृत मेघ बरस गुरमुख दर दुआरा मली, काया पतित पुनीती आप कराईआ। जगत तृष्ना मिटे हरस आपे वेखे अन्दर नीती, निझर धारा रिहा वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां काया करे सीतल सीती, गुर मन्त्र अन्तर साचा जाप जपाईआ। जपणा जाप आदि गुर अन्तर। मिटे पाप सहिज गुर मन्त्र। वड तन बुझे बसंतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रखे लाज जुगा जुगन्तर। जुगा जुगन्ती जुग जगत गुर देवया। जन भगतां सुवारे भुगत मुक्त, अलक्ख निरँजण भेद अभेदया। हरि सरनाई मिले वड्याई लोकमात शक्त रसना नाउँ अजपा जाप जेहवा जेहवया। दया कमाए लेखे लाए बूंद रक्त, अमृत फ़ल खवाए सोहँ सो साचा मेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप सहाए साचा वक्त, पंचम पंचम पंचम गुरमति गुरमुख कौस्तक मणीआ साचा थेवया। जगत चलाए रीत उनी असूना। गुरमुख काया मन्दिर गुरदुआरा देहुरा मसीत, एका राह साचा दस्सणा। सोहँ सो सुहागी गीत, हरिजन हरि हरि हिरदे अन्दर वसना। गुरमुख गुर मिलणा साचे मीत, बेमुखां दर दर घर घर उठ नस्सना। हरिजन अट्ठे पहर रहे अतीत, दिवस रैण सद सद हसना। बेमुखां वक्त दुहेला रिहा बीत, चिन्ता रोग लग्गी विसना। गुरमुख देवे चरन प्रीत, आप मिटाए जगत तृष्ना। बेमुखां परखे मात नीत, झूठी चक्की पीसन पिसना। जन भगत मानस देही रिहा जीत, दर दुआरे झुकाए सीसना। लेखा लिखे जगत जगदीस, वेखे खेल बीस इक्कीस, सोहँ सो तेरी चलाए चार कुन्ट इक्क हदीसना। पंच पांच प्रधान पंच वेस्सया। झुल्ले शब्द नाम निशान, वेख वखाणे देस प्रदेस्सया। शब्द उठया वड बली बलवान, माण गंवाए नर नरेस्सया। वेखे हरि वाली दो जहान, जगत लहर सवा पहर ना कोई धीर धरेस्सया। गुरमुख साचा रिहा तैर, सदा सदा रहे निरवैर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रखे सदा सदा कर कर आपणी मिहरया।

★ १० कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल हरिभगत द्वार ज़िला अमृतसर ★

हरि शब्द अमोल, जगत अमोल्लया। जन भगतां आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, पूरा तोल आपे तोल्लया। आदि अन्त ना

जाए डोल, आवे जावे वसे हस्से काया चोल्लया। मनमुख जीवां आत्म कढ्ढे कलिजुग पोल, वरते खेल कला सोल्लया। लक्ख चुरासी होई मात अनभोल, दुरमति दाग़ ना किसे धो ल्या। गुरमुख विरला जाए जाग, जिस सुणाया पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी एका शब्द सच्चा ढोल्लया। आत्म उपजे इक्क वैराग, तन मन काया सीतल मनुआ मन हरि मोह ल्या। आत्म जोती जगे चिराग, आपे उलटे नभी कवलया। दर घर साचे लग्गा भाग, कलिजुग माया तृष्ना बुझे आग, मिले वड्याई उप्पर धवलया। हरि जन बणाए हरि हँस काग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे अन्दर मन्दिर काया मौलया। हरि शब्द ब्रह्मण्ड पूरन भगवन्तया। वेखे खेल नव नव खण्ड, जन पछाणे साधन संतया। लक्ख चुरासी नार दुहागण रंड, गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्तया। हथ्थ फड़ाए शब्द चण्ड प्रचण्ड, कलिजुग अन्तिम पावे वंड, बेमुखां वढ्ढे हरि जी कंड, ना कोई जाणे जीव जन्तया। भेखाधारी देवण आया दंड, मेट मिटाए मात पखण्ड, महिंमा अगणत ना कोई गणन्तया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग वेखे खेल कलि कलवन्तया। हरि शब्द अपार गुरमुख जाणया। गुरमुख विरला उतरे पार, चले चलाए आपणे भाणया। हउमे माया दए निवार, खेल खिलाए दया कमाए, मेट मिटाए आवण जाणया। शब्द घोड़े कर अस्वार, नौ खण्ड पृथ्वी वसे बाहर, दहि दिशा आप भुवानया। शिव शंकर रिहा पुकार, करोड़ तेतीसा आई हार, इन्द इन्द्रासण सर्ब कुरलानया। शब्द सरूपी मारे शब्द मार, ना कोई जाणे जीव गंवार, साध संत कलिजुग अन्तिम बेमुहार। गुरमुख विरले बणे बणत जिस जन देवे किरपा कर साचा हरि दरस अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द भण्डारा रिहा भर, जन भगतां देवे इक्क वर, आदि अन्त जुगा जुगन्त ना आए हार। हरि शब्द अलक्ख अलख अलक्खणा। गुरमुख विरले कीने वक्ख, सृष्ट सबाई लाउँदे भक्ख, लक्ख चुरासी छाछ विरोले उप्पर मक्खना। जोती जामा हरि प्रतक्ख, साधां संतां जीवां जन्तां भाण्डा दीसे सक्खणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरला संत सुहेला इक्क इकेला दर दुआरे नर निरँकारे एका एक रक्खणा। हरि दरस, अगम्म अगम्म अपारया। जन भगतां लेखे लाए माटी चम्म, जन हरि करे चरन निमस्कारया। आप सुवारे कारज कम्म, अट्ठे पहर रहे दुवारया। ना मरे ना पए जम्म, भगत सुहेला पहरेदारया। दो जहानी एका थम्म, आवण जावण पतित पावन लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। लक्ख चुरासी भुल्ली माया भरम, जोत निरँजण निहकलंक शब्द डंक चार कुन्ट दहि दिशा एका एक वजा रिहा। कलिजुग अन्तिम पाया हिस्सा, अंज़ील कुरानी मूल ना दिसा, वेद पुराणी गायण बतीसा, खाणी बाणी इक्क हदीसा, पढ़ पढ़ थक्के राग छतीसा, भेव किसे ना जाणया। वेख वखाए राजे

३२२
०५

राणे मुहम्मदी ईसा मूसा, कवण दुआरे नर निरँकारे छत्र झुलाए साचे सीसा, चारों कुन्ट होए वैरानया। माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, लेखा चुक्के विच उनीसा, ना कोई जाणे चतुर सुघड़ स्याणया। कवण करे प्रभ तेरी रीसा, जोती जामा हरि जगदीसा, रंग नवेला इक्क इकेला बीस इक्कीसा, आपे जाणे भाणया। शब्द भाणा हथ्थ करतार, ना कोई जाणे राजा राणा। ज्ञानी ध्यानी करन विचार, गुरमुख साचा सुघड़ स्याणा। जिस जन देवे हरि नाम निधाना। किरपा कर अपर अपार, हथ्थीं बन्ने शब्द गाना। अनहद धुंनी नाद अनाहद, आत्म घर इक्क तराना। दिवस रैण रैण दिवस एका राग सुणाए कन्ना। लाए काया भाग आप आपणे संग समाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल जन भगत मेल चढ़े शब्द तेल वाली दो जहानां। वाली दो जहान हरि सुल्तानया। मेट मिटाए जीव शैतान, ना कोई दीसे मुला काज़ीआ। फड़े शब्द तीर कमान, उठे नर हरि बली बलवान, अट्ठे पहर नौजवान, खिच्चे रसना इक्क कमान, चिल्ला चढ़े दो जहानया। नौ खण्ड पृथ्वी एका ज्ञान, सत्तां दीपां पुण छाण, चौदां लोकां एका आण, तिन्नां लोआं जाणी जाणया। आपे वेखे वेद पुराण, खाणी बाणी मार ध्यान, अंजील कुरान विच मैदान, गुणवन्त हरि गुण निधानया। साध संत सुघड़ स्याण, आदि अन्त इक्क ज्ञान, जुगा जुगन्त भगत भगवान, देवे नाम निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, धर्म राए दा चुक्के डर, दर घर साचे इक्क बहाए दया कमाए चुकाए आवण जाणया। पंज तत्त अपार, हरि उपनया। पंचां कर त्यार, तन मन बन्नया। माया ममता कर शृंगार, आपे डंनया। आपे करे शब्द प्यार, राग सुणाए साचा कन्नया। दोए धारां हरि अपार, काया मन्दिर छप्पर छन्नया। नौ दुआरे जीव भिखार, चारों कुन्ट दीसे अन्नया। गुरमुख मंगे मंग अपार, एका लिव सच्ची सरकार, पंच पंचायणी देवे डंनया। आपे पेखे तीजी धार, चौथे घर साची धार, ना कोई लाए दूसर संन्निआ। गुरमुख साचे संत दुलार, भरम ना भुल्ले विच संसार, चढ़े चढ़ाए साचे चंनया। आत्म सेजा कन्त भतार, आपे मिले भुजा पसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम भरम भउ भाण्डा तन मन्दिर अन्दर काया अन्धेरी डूंघी कन्दर, किसे हथ्थ ना आए गौरख मच्छन्दर, जगत हँकारी वज्जा जन्दर, लक्ख चुरासी दर दर भौंदी बन्दर, गुरमुख विरले एका एक शब्द टेक रखनया। हरि नर मन्नया मन बैरागी चित बुध बिबेका सदा सुहेला साचा आकीआ, जगत सुहेला मीत दर पुकारया। होए वक्त दुहेला काया रहे ठंडी सीत, किरपा करे आप गिरधारया। दिवस रैण परखे नीत, बैठा रहे सदा अतीत, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरया। हरि पावे सार काया मन्दिर मसीत, मानस देही लैणी जीत, दसवें घर मिले साचा हरि, एका गुर गुरद्वारया। जगत चलाउँणी अवल्लड़ी रीत, गऊ गरीबां इक्क प्रीत, देणा

माण दर परवान वड वड परउपकारया। झुले धर्म शब्द निशान, आप झुलाए वाली दो जहान, करे खेल श्री भगवन्तया। जुगा जुगन्त भेव कोई ना पाए शाह सुल्तानया। मन मनुआ जगत वैराग, बुझे तृष्ना आग, चरन कँवल जन लागया। उपजे इक्क वैराग, जगत विकारा जाए भागया। मिले मेल कन्त सुहाग, सोया जीव उठ उठ जागया। एका उपजे शब्द वैराग, वजे अनहद अनाहद वाज्जया। होए मात वड वडभाग, गुरमुख सूरा साचा जागया। आप बणाए फड़ फड़ हँस काग, दर घर साचे पड़दा काज्जया। आपणे हथ्थ हरि रखे वाग, लोआं पुरीआं फिरे भागया। आत्म जोती जगे चिराग, शब्द चढ़ाए साचे ताज्जया। गुर सरन सरन गुर जन हरि हरि जन जाए लाग, लेखा चुक्के कल कि आज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म सर सच इशनान कराए, इक्क भण्डारा नाम भराए, हरि वरतारा आप अख्वाए, माया डसे ना डसणी नागया। आत्म इच्छया हरि पुजाईआ। दूजी दिशा ना कोई वखाईआ। तीजा पाए आपे हिसा, तीजा लोचन रिहा खुल्हाईआ। चौथे दिसे हरि जगदीसा, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। पंचम ताज सोहे सीसा, प्रभ देवे मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मृदंग वासी पुरी घनक आप आपणा रिहा वजाईआ। सिर रख हथ्थ समरथ, दर दरवेश्या। पंजां चोरां पाए नत्थ, अंग संग तुटे हमेश्या। दूई द्वैती रिहा मथ, रखे लाज दर दर केस्या। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थ, ना चले कोई किसे पेश्या। सर्बकला आप समरथ, लोकमात आवे जावे कर कर वेस्या। जगत महिंमा चले अकथ, नेत्र लोचन नैण गुरमुख विरले साचे मात पेख्या। शब्द देवे साची वथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, नाम चढ़ाए साचे रथ, आप मिटाए पिछली रेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जन देवे एका वर, लेखा लिखे शब्द तीर पत्थर मस्तक साचे माथया। कौस्तक मनी मस्तक लाल। देवे नाम धन्न धनी, गुर गोबिन्दा गुर गोपाल। लोकमात बणत बणी, लेखे लाए जनणी जणी, फल लगाए काया डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे इक्क वर, साक सज्जण सैण बणी। अचल्ल अटल महल्ल हरि वसंदया। ना कोई जल थल डूंघी डल, साचे धाम आप बहंदया। आपे करे वल छल, भरम भुलाए घड़ी घड़ी पल पल, काया मन्दिर अन्दर सद वसंदया। शब्द सरूपी चले हल्ल, जगत विछोड़ा मिटे सल, जोती जोड़ा अज कल, शब्दी घोड़ा रिहा पल, आप चढ़ाए हरि बख्शंदया। सच दुआरा लैणा मल, आत्म जोती जाए बल, साचा धाम एका राम एका एक रखन्तया। काया मण्डप मंड, हरि उपाया। आप बणाया जीउ पिण्ड, पंजां तत्तां नाल सुहाया। आप वसाया हरि ब्रह्मण्ड, वंड आपणी आप वंडाया। आपे सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आया। संतां नौवां चण्ड प्रचण्ड, नौ अठारां भेव ना राया। मानस देही विच वरभण्ड, पुरख

अबिनाशी आप सुहाया। काया सुहागण ना होई रंड, कन्त कन्तूहला इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द झूला, जगत चुकाए अगला पिछला मूला, लहिणा देणा आपे आप मात चुकाया। जगत विहार अपार नौ दरवाज्या। एका एक साची कार, गुरमुख विरला करे वणज वपार, दर दुआरे गरीब निवाज्जया। भाई भैणा मात पित साक सज्जण मिल मिल बहिणा। दरस पेखे लगे लेखे नेत्र नैण साचे नैणा। मिले मेल कन्त भतार, भाणा प्रभ का सिर ते सहिणा। शब्द पहनाए तन हरि गहणा। लाड़ी मौत ना खाए डैणा। झूठे वहिण जग ना वहिणा। अन्तिम लेखा आप चुकाए ना करे कोई हुदारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे जीव जन्त गंवारा।

★ ११ कत्तक २०१२ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाले ★

सगल पसार वेख, मन जगत बैरागया। चारों कुन्टां दर दर घर घर दिसे भेख, हरिजन सोया विरला मात जागया। दो जहानां लेखा लिखे आपे लेख, जिस जन मेला कन्त सुहागया। साचे लोचन लैणा वेख, कवण धोए काया दागया। आपे वसे घर वसेख, हरिजन बणाए हँस कागया। निर्मल मस्तक लाए मेख, दीपक जोती जगे चिरागया। जोती जोत
३२५ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे आप बुझाए तृष्ना आज्ञा। बुझे तृष्ना अग्ग, चरन द्वारया। ३२५
०५ चरन कँवल सर पग, खुल्हे बन्द कवाड़या। लेखा चुक्के साह रग, दर घर साचे उप्पर चाड़्या। निर्मल दीवा रिहा जग, ०५
लग्गा रहे शब्द अखाड़या। पवण स्वासी रही वग, सीतल धारा ठंडी ठारया। जोत निरँजण कसे तग, गुरमुख हँस उडारी ला रिहा। हथ्थ आपणे पकड़े वाग, दस्म दुआरी हरि फिरा रिहा। चरन कँवल जन जाए लग, लक्ख चुरासी जम की फाँसी लोकमाती पुरख बिधाती अन्तिम फंद कटा रिहा। साचा देवे शब्द सुगाती, मिटे रैण अन्धेरी राती, बरखे बूंद स्वांती, बन्द किवाड़ी खोल्हे ताकी, शब्द चढ़ाए साचे राकी, चिट्टे अस्व कर त्यार, पहली वार हरि दातार, विच संसार दहि दिशा आप फिरा रिहा। गुरमुखां करे ख़बरदार, दिवस रैण शब्द अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे अकार, नौ दुआरे बन्द करा रिहा। नौ दुआरे बन्द, बन्द दरवाज्जया। गुरमुखां आत्म चढ़े साचा चन्द, आप चढ़ाए गरीब निवाज्जया। ख़ुशी कराए बन्द बंद गंवाए ममता अन्ध, मोह चुकाए झूठा धन्द आदि अन्त रक्खे लाज्जया। आपे तोड़े जम्म का फंद, आप उपजाए परमानंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, ना होए मात तोड़ विछोड़या। ना होए विछोड़ा, मात पुरख निरँजणा। शब्द जोती एका जोड़ा, दर्द दु:ख भय भंजना। धुर दरगाही

आया दौड़ा, हरि नेत्र पाए अंजना। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, चरन धूढ़ कराए साचा मजना। जोत निरँजण ब्रह्मण गौड़ा, सृष्ट सबाई साक सैण सजना। दस्म दुआरी एका पौड़ा, ताल आपणा साचा गजना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां किरपा रिहा कर, भाण्डा काया अन्तिम अन्त साध संत मात भज्जना। काया माटी चम्म, ना कलि विचारया। कवण लेखे लग्गे दम, नर हरि साचा कलि विसारया। मरे मर मर पए जम्म, आवण जावण गेड़ अपारया। वेले अन्तिम रोवे छम्म छम्म, होए विछोड़ा पुरख भतारया। गुरमुख साचे संत सुहेले आप कराए आपणे मेले, अट्ठे पहर दिवस रैण शब्द मृदंग, एका एक मन्दिर अन्दर आपे आप वजा रिहा। वज्जे नाम मृदंग, सृष्ट जगाईआ। शब्द चाढ़े काया रंग, मूर्त अकाल दया कमाईआ। मिले मेल सूरे सरबंग, दीन दयाल दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां कटे भुक्ख नंग, वस्त दस्त शब्द एका एक हथ्थ फड़ाईआ। मंगी मंग अपार हरि द्वारया। काया चोली चढ़े रंग, लेखा चुक्के नौ द्वारया। भाण्डा भरम झूठी वंग, गुरमुख साचा जाए पार लँघ, शब्द अक्खर वक्खर मंगे साची मंग, किरपा करे हरि हरि हरि गिरधारया। जोती जोत सरूप हरि, वड दाता सूरा सरबंग, दरस दिखाए तीजे नैण, रसना किसे ना सके कहण, आप चुकाए अगला पिछला लैहण देण, देवणहार सर्ब संसारया।

★ ११ कत्तक २०१२ बिक्रमी कैप्टन बंता सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईआं ज़िला गुरदासपुर ★

गुर साखी गुरमति संत परधानया। दर घर साचे मेल नर हरि साचे संत पुरख सुजानया। आप बणाए आपणी बणत, बैठा रहे इक्क इकन्त जीव जन्त करे पछानया। गुरमुख काया रंगण रंग बसंत, बेमुख माया होए भस्मंत, कलिजुग भुले जीव निधानया। माया पाई हरि बेअन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वाली दो जहानया। दो जहान हरि सुल्तान। प्रगट होए विच जहान, बली बलवान। शब्द फड़े तीर कमान। रक्खे नाम इक्क निशानया। चार वरना एका सरना आप रखाए, लोआं पुरीआं मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड कराए, जल थल थल जल आपे आप करानया। भेख पखण्डा वढे कंडां, मनमुखां अन्तिम देवे दंडा, शब्द फड़ चण्ड प्रचण्ड, कलिजुग औध गई हंढ, जगत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत नर हरि बली बलवानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपणी करनी रिहा कर, गुरमुख साचा सोहे दर दुआरे नर निरँकारे विच संसारे करे मात परवानया। करे मात परवान हरि रघुराईआ। देवे नाम गुण निधान। आत्म सोती आप जगाईआ। दीन दयाला हरि मेहरबान, देवे शब्द पीण खाण, आत्म तृष्ना तन मिटाईआ। काया

मन्दिर दिसे सुंञ मसाण, अन्दरे अन्दर गुण निधान, मनमुख जीवां दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए साचे दर, गुर संगत संग समाईआ। गुर संगत गुर संत मात प्रधान। दर दुआरे आई मंगत, तोड़े माण रोग हँगत, देवे शब्द आण शान। होए सहाई जिउँ नानक अंगद, आप बिठाए धुर दरगाही जगत मलाही इक्क बिबाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि देवे साचा वर, गुरमुख मेल गुण निधान। गुरमुख साचा पारज़ात, गुर पूरे मात पछानया। आप बंधाए चरन नात, देवे दान सच्चा दानया। मेल मिलावा कमलापात, दर घर साचे देवे माणया। आपे वेखे मार झात, शब्द सरूपी सच टिकाणया। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ात, मिल्या मेल पुरख बिधात, ना कोई जाणे सुघड़, स्याणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे करे परवानया। होए दर परवान दर घर मल्लया। मिले मेल श्री भगवान, लेखा दिसे इक्क इकल्लया। सूरबीर बली बलवान, सदा वसे जल थल्लया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे देवे वर, आप वसाए काया मन्दिर सच महल्लया। साचा महल्ल अपार, अटल अटल्लया। गुर पूरे बध्धी धार, जल थल्लया। एका देवे शब्द उडार, लक्ख चुरासी करे पार, किरपा कर अपर अपार, आत्म देवे कर उज्यार, पवण उनन्जा छत्र झुलार, दर दुआरा एका मल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आपे पाए मात सार, हर घट शब्द पसार, घट घट वास्सया। गुरमुख विरला करे विचार, मनमुख फिरे सदा उदास्सया। हरिजन पीवे अमृत धार, मानस जन्म होए रहिरास्सया। बेमुख भुल्ला मुग्ध गंवार, रसन हलकाया मदिरा मास्सया। हरि जन सोहे बंक द्वार, शब्द चलाए पवण स्वास्सया। मनमुख डोबे विच मँझधार, अन्तिम तुट्टा काया कास्सया। गुरमुख सोलां तन श्रृंगार, निज्ज घर वेखे दर द्वार, बेमुख होए धूँआंधार, धर्म राए गल पावे फास्सया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, वेख विचारे विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, रैण अन्धेरया। ना कोई जाणे जन्त गंवार, काया माटी झूठी हाटी, अन्तिम होए ढहि ढहि ढेरया। गुरमुख साचे जोती जगे आत्म चढ़े चढ़ाए साची घाटी, देवे एका नाम हरि अधारया। एका लाहा दर घर साचे साचा खाटी, आपे खोल्ले बजर कपाटी, जोत जगाए काया माटी, दिवस रैण करे उज्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मात जगाए दया कमाए, मेल मिलाए नर निरंकारया। मिले मेल नर निरँकार, शब्द उज्यारया। गुरमुख साचे कर प्यार, आए दर सच्चे द्वार, आपे जाणे जाण पछाणे, करे कराए मात प्यारया। माया भुल्ले राजे राणे, ना कोई जाणे सुघड़ स्याणे, मनमुख जीव अन्धे काणे, जोत निरँजण सर्ब पसारया। चले चलाए आपणे भाणे, दर घर साचे देवे माणे, गुरमुख बाल उठाए गोद अञ्याणे, अमृत देवे साची धारा ठंडी ठारया। एका

एक पुरख सुजाने, आपे आप ब्रह्म ज्ञाने, जोग अभ्यास ना कोई जाणे, काया मन्दिर डूंघी कन्दर खेले खेल खेल निरालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे इक्क वर, साचा नाम गुण निधानया। नाम निधान एका गुण गुणवन्तया। जन भगत रंगाए एका रंग, रंगण सच बसंतया। कलिजुग माया पाए बेअन्त, आप भुलाए साधन संतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दित्ता इक्क वर, मेल मिलावे साचे कन्तया। साचे कन्त भतार, घर वसंदड़ा। गुरमुखां देवे कर प्यार, नेत्र खोल्ह बन्द किवाड़, पर्हे हटाए पंचम धाड़, साचा दर आप सुहंदड़ा। शब्द घोड़ जाए चाढ़, आपे होए पिछे अगाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, जोत जगाए बहत्तर नाड़। हरि गुण हरि भरपूर, घट घट वास्सया। हरि गुण हरि भरपूर, शब्द शब्द शब्द स्वास स्वास्सया। हर घट हरि भरपूर, नाद अनाहद एका तूर, जोधा दाता वडा सूर, आपे वसे पृथ्वी अकास्सया। मनमुखां दिसे दूरन दूर, गुरमुखां हाज़र हज़ूर, मण्डप मण्डल काया करे रास्सया। जोती निर्मल देवे नूर, गुरमुख साचे माणक मोती वेख अन्दर बहि बहि आपे बोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा एका खोल्ल्या। दर दुआरा खोल्ह हट्ट लगाया। शब्द अक्खर एका बोल, सोहँ जाप जपाया। आदि अन्त सदा अडोल, तीर्थ तट्टां विच समाया। सभ दे पड़दे रिहा खोल्ह, नटूआ नट खेल बाजीगर साचा डंक वजाया। आपे सुणे बण बण भट्ट, सुरंगा सारंग आप उठाया। आपे मेटे दूई द्वैती फट्ट, नाम पट्टी रिहा बंधाया। आपे जोत जगाए काया मट्ट, दीपक साचा इक्क टिकाया। गुरमुख साचे लाहा रहे खट्ट, दर दुआरे दर्शन पाया। मनमुख भौंदे अठसठ, शब्द भण्डारा ना कोई वरताया। दर दर पूजण शिवदवाले मट्ठ, काया मन्दिर ना संख वजाया। चारों कुंट उलटी लट्ठ, कलिजुग गेड़ा आप गिढ़ाया। हरिजन साचा संत सुहेला इक्क इकेला दर घर साचे आवे नट्ठ, पुरख अबिनाशी घट घट वासी आत्म पड़दा देवे लाहया। माया राणी होवे भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरा इक्क वखाया। दर दुआरा खोल्ह, शब्द चौहअक्खर एका बोले गरीब निवाज्या। इक्क वजाए शब्द ढोल वज्जे मृदंग, कलिजुग रच्चया काज्जया। लक्ख चुरासी होई भंग, उडदी सोहँ पतंग, गुरमुख रंगे साचे रंग, बेमुख भन्ने कच्ची वंग देस माज्झया। चारे कुन्टां वेख विचार, हथ्थ फड़े शब्द कटार, मारी जाए वारो वार, नौ अठारां पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, पंच पंचायणी करे नास्सया। पंचम तोड़ नाता जोड़ जुड़ाया। मिल्या मेल पुरख बिधाता, साचा शब्द घोड़ चढ़ाया। आपे पुच्छे अन्तिम वाता, चार वरनां एका राह वखाया। साचा शब्द वड करामाता, किसे सीस ताज रहण ना पाया। आप संवारे आपणा काजा, जोती जोत

३२८
०५

सरूप हरि, गुरमुख साचे देवे वर, इक्क सुहाए साचा दर, दर दर घर साचे डेरा लाया। हरि पुरख अगम्म काज रचाया। जोत सरूप पया जम्म, मात पित ना कोई अख्वाया। पवण स्वासी ना लए दम, शब्द धारा रिहा चलाया। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, जोत निरँजण इक्क जगाया। आप संवारे आपणा कम्म, लोकमाती फेरा पाया। चारों कुन्ट रोवे छम्म छम्म, नगर खेड़ा कोई दिस ना आया। अमृत रस आत्म धारा। गुरमुखां देवे कर प्यारा। इन्द्र रोए दर दुआरा, प्रभ अबिनाशी कर विचारा, सेवा लग्गे विच संसारा, कलिजुग होई अन्तिम वारा, करोड़ तेतीसा तुटे नाता मिले मेल पुरख भतारा। आप चलाए आपणी रीता, बरखे मेघ एका धारा। गुरमुख गाए सोहँ सो साचा गीता, अछल अछल्ला विच संसारा। इक्क वखाए गुरुदुआरा, काया मन्दिर अन्दर जगत मसीता, दीपक जोती कर उज्यारा। दिवस रैण परखे नीता, बैठा रहे आप अतीता, पूर्ब कर्म रिहा विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, मानस देही ना आए हारा। मानस देही माण, हरि रघुराया। आपे करे कलि पछाण, साचा राह रिहा दिखाया। आप बिठाए शब्द बिबाण, दहि दिशा रिहा उडाया। सर्ब घटां हरि जाणी जाण, पड़दा उहला ना कोई रखाया। भगत सुहेला देवे जिया दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे माण दवाया। दर घर साचे माण धुर दरबारया। जन भगतां एका

ताण, नर निरंकारया। आत्म जोती मेल मिलान, आप सुहाए सर्ब द्वारया। वेखे खेल श्री भगवान, लोकमाती कर अकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग जीव आपे भुन्ने जिउँ भठयाले दाणया। कलिजुग काली धार, जगत अकालीआ। आपे रिहा सर्ब पसार, वेख वखाणे जीव जन्त साध संत गंवार, दो जहानां साचा वालीआ। अंजील कुराना पैणी मार, वेद पुराणा भरम निवार, शब्द कमान इक्क उठा ल्या। चारे खाणी होए हैरान, साची बाणी होए प्रधान, झुल्ले एका शब्द निशान, अमृत मिले साचा पाणीआ। वरन अठारां सर्ब मिट जाण, दस ग्यारां खेल महान, चार यारां आई हाण, ईसा मूसा होए वैरानया। सोहँ झुल्ले इक्क निशान, सत्तां दीपां हरि प्रधान, नौवां खण्डां कर ध्यान, लोआं पुरीआं रक्खे आणया। ब्रह्मा मारे हेठ ध्यान, कवण खोल्हे मात दुकान, काया मन्दिर सच मकान, सम्बल देस वेस भगवानया। शिव शंकर तुटा माण, एका तीर निराला छुटा, वेख वखाणे श्री भगवानया। फल ना दीसे किसे डाला, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा निवाए सीसा, कवण कल कलिजुग वरते दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्ड उत्भज सेत्ज जेरज अंड वंड करानया। करे कराए वंड आप कराया। वेखे खेल नव नव खण्ड, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। शब्द फड़ चण्ड प्रचण्ड, जोती सूरा रिहा जगाया। लक्ख चुरासी

वढ्ढे कंड, कलिजुग टुट्टी ना कोए देवे गंढ्ढ, चारों कुन्ट दए दुहाया। रैण अन्धेरी गई हंढ, मनमुखां उठाई पापां पंड, झूठा भार सिर उठाया। गुरमुखां आत्म पाए ठंड, भरम भुलेखा करे खण्ड, अमृत साचा जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, आत्म सेजा सच सिँघासण डेरा लाया। आत्म सेजा सच टिकाणा हरि बिराज्जया। निज्ज घर आत्म रक्खे वासन, सदा रहे दास दासन, शब्द चलाए स्वास स्वासन, अडोल अडोला पृथ्वी अकास्सया। जोत सरूपी पाए रासन, मिले मेल सर्ब गुणतासन, चढ़े तेल पुरख अबिनाशण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, चढ़ाए रंग लाल गुलास्या। रंग लाल काया चोल्लया। गुरमुख साचे लए भाल, लक्ख चुरासी आप विरोल्लया। शब्द बणाए इक्क दलाल, सुणे सुणाए साचा ढोल्लया। अट्ठे पहर होए रखवाल, काया मन्दिर अन्दर बोल्लया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, जन भगतां दस्से राह सुखाल, बजर कपाटी पड़दा खोल्ल्या। जोती जगे बेमिसाल शब्द वज्जे साचा ताल, धुनी नाद अनाहद धारा एका बोल्लया। भाग लग्गे काया खाल, होए उज्यारा मस्तक थाल, जोत निरँजण तीजे नेत्र पावे साचा अंजन, सदा सुहेला वसे कोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, बजर कपाटी पड़दा खोल्ल्या। जोती नूर अपार, सर्ब पसारया। गोती वरन वसे बाहर भेव न्यारया। लक्ख चुरासी पसर पसार, अन्त ना पारावारया। आवे जावे वारो वार, लोकमात लए अवतार, जुगा जुगन्त साची कारया। कलिजुग कर्म रिहा विचार, धरत मात करे पुकार, पुरख अबिनाशी पाए सार, जोती जामा भेख अपारया। शब्द डंक अपर अपार, राउ रंक रंक सुनार, राज राजानां शाह सुल्तानां आप सुणा रिहा। अन्तिम छड्डे बंक द्वार, माया धारी फड़ फड़ कढ्ढे बाहर, शब्द सरूपी खण्डा धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल विच संसार। आवे वारो वार वड संसारया। जुगा जुगन्तर साची कार, ना कोई पावे सारया। एका जोत निरँजण सर्ब पसार, भरम भुलेखे सर्ब भुला रिहा। गुरमुख विरला करे वणज वपार, जिस जन साचा वणज करा रिहा। कलिजुग रीती अपर अपार, जूठा झूठा करे पसारया। मन्दिर मसीती धूँआँधार, गीता ज्ञान ना सके विचारया। वेद पुराणां आई हार, पढ़ पढ़ थक्के वेद व्यासा मात लिखा रिहा। अञ्जील कुरानां पैणी मार, वेखण अक्खीं मदीने मक्के, मुलां काज़ी शेख़ मुसायक औलीए पीर शेख़ करे कराए ख़बरदार, खाणी बाणी राह साचा तक्के, कलिजुग फल अन्तिम पक्के, कवण कूटे शब्द झूटे प्रभ लए मात अवतारया। सम्बल देस लग्गे बूटे, किया वेस दर दरवेस गुर दस्मेश साचा लेखा लिख लिख हारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। कलिजुग दुहागण नार विच वरभण्डया। ना कोई

सुणे सुणाए साचा रागण, बत्ती दन्दां पायण डंडया। गुरमुख विरले उठ उठ जागण, आत्म रहे सदा वैरागण, नेड़ ना आए माया डस्सणी नागण, शब्द फड़ाया हथ्थ समरथ साचा खंडया। आप बणाए हँस कागण, दुरमति मैल धोए दागन, मिले मेल हरि कन्त सुहागण, फड़े शब्द चण्ड प्रचण्डया। शब्द चण्ड कटार हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंड, सम्बल देस वंड वंडाईआ। वेख वखाणे बेमुख जीव नार दुहागण रंड, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका खोल्हे सच दर, शब्द खण्डा रिहा फड़, लक्ख चुरासी चुक्के डर, साची दात नाम सुगात आत्म लाली काया डाली आप टिकाईआ। जगत तृष्ना अग्ग जगत जलाया। गुर पूरे पकड़ो पग, लेखा लिख लिख दए मिटाया। मुख लगाए शब्द सग, साचे बंधन शब्द बंधाया। दर दुआरा एका मंग, हउमे हँगता रोग गंवाया। अट्ठे पहर परमानंद, चरन कँवल कँवल चरन सीस निवाया। नूर नुरानी सीतल धारा चढ़ चन्द, तारा मण्डल मण्डप आप सुहाया। खुशी रखाए बन्द बन्द, रसन प्याए निज़ानंद, निज घर आत्म हरि वसाया। जगत जंज़ाला तोड़े फंद, गुर गोपाला नाम सुगंध, भरमा कंध मिटाया। जगत अन्धेरा आत्म अन्ध, मदिरा मास तजणा गन्द, आपे आप बणे बख्शंद, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, लोकमाती चुक्के डर, पुरख बिधाती मिले वर, गुर संगत मेला मेल सज्जण सुहेल चिन्ता रोग जगत विजोग देवे सर्ब मिटाया। गुर शब्द गुर ज्ञान नेत्र पावणा। अट्ठे पहर चरन ध्यान रमईआ राम गावणा। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, दीपक जोती इक्क जगावणा। वज्जे शब्द निराला बाण, बजर कपाटी पार करावणा। इक्क रखाए साची आण, देवे माण जगत निमाणया। दर दुआरे सच पछाण, आपे जाणे जाणी जाण जानया। झूठा कच्च जगत दुकान, माया ममता भरम भुलानया। पंजे चोर अन्दर रहे नच्च, लुट्टण माल धन धन धनवानया। गुरमुख विरला जाए बच, जिस फड़ाए आपणा दामना। बहत्तर नाड़ी रिहा रच, तिन्न सौ सठ हाडी होए जामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे इक्क वर, दर दुआरा इक्क पछानणा। सुरत ज्ञान ध्यान शब्द उडारीआ। मिले मेल पुरख साजन, दस्म महल्ल उच्च अटारीआ। वेखे खेल अज्ज कल, जोती जामा हरि प्रबल, नव खण्ड पावे सारया। आपे वसे जल थल, वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी डल, आपे करे हेरा फेरया। सच दुआरा एका लैणा मल्ल, दीपक जोती जाए बल, दूई द्वैती मिटे सल आपे तारे कर कर आपणी मेहरया। शब्द सरूपी चले हल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, देवे दरस ना लाए देरया। जोती जामा भेख अपार, वड बलकारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, विच संसारया। वेख वखाणे मुहम्मदी यार, चारों कुन्ट कर विचारया। अल्ला राणी रोवे धाहां मार, काला

३३१ ०५

सूसा तन शृंगारया। सुघड़ स्याणी विच संसार, अन्तिम आया पासा हारया। नाम मधाणी तन अद्धविचकार, नर हरि बणया आप सुवाणीआ। रिड़की जाए वारो वार, छाछ विरोले दुधों पाणीआ। वेले अन्तिम आई हार, ना कोई दीसे राज राजान शाह सुल्तान बाणीआ। कलिजुग तेरी तिक्खी धार, अंज़ील कुरानां रही विचार, जगत दुकाना होए ख्वार, ना कोई पावे किसे सारया। जगे जोत अगम्म अपार, पुरख निरँजण हरि अपार, कलिजुग काला वेस दर दरवेश खुल्ड़े केस भेख अपार, आपे जाणे सर्ब घर जाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम भेख धर, वेख वखाणे खाणी बाणीआ। खाणी बाणी कर ध्यान, वेखे खेल हरि रघुराईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजाना आत्म ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। जगत अधर्मी एका धर्म, जुगा जुगन्तर साचा कर्म आपे वेख वखाईआ। जीव जन्त भुल्ले भरम, साध संत आत्म वरम, नाम मरहम ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा लै जरम, आप आपणी जोत जगाईआ। जगी जोत अकाल विच संसारया। प्रगट होए दीन दयाल, खोल्हे वड भण्डारया। आपे तोड़े जगत जंजाल, वेख वखाणे काल महांकाल, साल बारवें तेज कटारया। एका उठे मार छाल, गुरमुखां तुट्ठे होए रखवाल, आप बंनाया एका मुट्ठे फल लगाए काया डाल, आप बहाए दर दरबारया। अमृत सुहाए साचा ताल, अन्दरे अन्दर लवाए छाल, काग हँस आप बणा रिहा। देवे नाम सच्चा धन माल, जोती दीपक देवे बाल, गगन मस्तक साची थालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चले चाल मात निरालीआ। कलिजुग चाल निराली हरि चलाईआ। जगे जोत इक्क ज्वाली, अष्टभुज सीस निवाईआ। सृष्ट सबाई आपे पाली, आवण जावण रचन रचाईआ। वेखे खेल बवन्जा साली, काया माटी देह तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूप बण दलाली, शब्द दलाला नाल रलाईआ। जोत निरँजण इक्क अकाली, कलिजुग काला वेस वटाईआ। गुरमुख साचे रिहा भाली, प्रगट होया साचा वाली, साचा मेल रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी काली धार विच संसार वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। कलिजुग काली धार, कूड़ कुड़यारया। चारों कुन्ट पसर पसार, दर दर घर घर करे शृंगारया। एका भुल्लया नर निरँकार, मानस देही पासा हारया। प्रगट होए विच संसार, शब्द डंक इक्क वजा रिहा। राज राजानां करे ख़बरदार, द्वार बंक इक्क सुहा रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी होए धूंदूँकार, सत्तां दीपां अन्धेरा छा रिहा। लोआं पुरीआं हाहाकार, सुरपति राजा इन्द दर कुरला रिहा। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, गणपत गणेश सीस झुका रिहा। ब्रह्मा नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़, कवण जोती जोत जगा रिहा। लोकमाती दर दर घर घर वेखे गौड़ ब्राह्मण प्रगट होए कवण पहाड़, कवण बजर आसण ला ल्या। लोइण तीजा दए उग्घाड़, दीपक जोती इक्क टिका

ल्या। सम्बल देस कवण अखाड़, गुर गोबिन्दे लेख लिखा ल्या। जोती जगे बहत्तर नाड़, हरि घर साचे वेख वखा ल्या। आपे फिरे पिछे अगाड़, लाड़ी लाड़ा आप सजा ल्या। नेड़ ना आए मौत लाड़, धर्म राए एह समझा ल्या। नौ दुआरे देवे पाड़, दस्म दुआरे डेरा ला ल्या। बजर कपाटी देवे पाड़, शब्द तीर हथ्थ उठा ल्या। दर घर साचे देवे वाड़, गुरमुख साचे लड़ फड़ा ल्या। आपे घड़े सच्चा घाड़, दिसे किसे ना आ रिहा। शब्द घोड़े रिहा चाढ़, वाग आपणे हथ्थ रखा रिहा। वरते खेल कलिजुग हाढ़, चारों कुन्ट जूठी झूठी धाड़ झड़ा रिहा। कलिजुग जीवां दिवस माड़, साध संत ना कोई बचा रिहा। लाड़ी मौत ना मंगे भाड़, होए विचोला ना कोई छुडा रिहा। कलिजुग काल चबाए आपणी दाड़, दर घर साचा वर घर पा ल्या। धरत मात तेरा अखाड़, नौ खण्ड आप रचा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहानां पड़दा पा रिहा। माया पड़दा पाए राज राजानया। गुरमुख साचे आप जगाए, देवे नाम गुण निधानया। बेमुख भरमे भरम भुलाए, झूठे धन्दे मात लाए, आत्म अन्धे फिरन हलकाए, ना कोई जाणे श्री भगवानया। गुरमुख साचे सहिज समाए, आप आपणी सेवा लाए, देवे दरस थांउँ थांएँ, दर घर साचे करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग काला वेस नाल रलाए पंज शैतानया। कलिजुग साचे मीत, पंज शैतानया। अट्ठे पहर रसना चीत, ना कोई कढ्ढे दानी दानया। काया ढाहुन्दे मन्दिर मसीत, मारन सदा हँकारी कानीआ। जगत विकारी सुणाउँदे गीत, दिवस रैण बेईमानीआ। माया ममता रहे मीत, जूठी झूठी ख़ाक छानीआ। गुरमुख विरला जगत अतीत, काया रहे ठंडी सीत, एका गाए सुहागी गीत, मिले मेल हरि भगवानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल दो दो वाली दो जहानीआ। दो धारा हरि चलाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, साची बणत बणाईआ। सतिजुग साचे कर प्यारा, धरत मात दा इक्क दुलारा, साची गोद उठाईआ। माया धारी हैंस्यारा, मदिरा मासी जगत हलकारा, ज्ञान ज्ञाता पुरख बिधाता सदा रिहा भुलाईआ। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ाता, अमृत पीवे बूंद स्वांता, काया ठंडी ठार कराईआ। आपे पिता आपे माता, आप बंधाए चरनी नाता, मेट मिटाए अन्धेरी राता, साची सेवा आप लगाईआ। नाम अनमोल, अनमोल, गुरमुख पाया। गुर पूरा तोले तोल, ना पड़दा उहला रखाया। आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, शब्द सरूपी वज्जे ढोल, नाम मृदंग इक्क रखाया। प्रगट होए कला सोल्ह, कलिजुग अन्तिम खेल रचाया। कलिजुग तेरी खेले होल, लाल वेसा तन सुहाया। आपे आप कराया घोल, कलिजुग लेखा आप मुकाया। हरि खेले खेल अपार, पवण मसाणीआ। शब्द खण्डा हथ्थ दो धार, गुरमुखां बेड़ा करे पार, बेमुखां मारे कर ख्वार, राजे छड्ड छड्ड भज्जण राणीआ। प्रगट होए नर निरँकार,

वेखे खेल अपर अपार, मुगल पठाणी पैणी मार, ना कोई जाणे शाह ईरानीआ। ना कोई मुगल ना पठाणा ए। ना कोई राजा ना कोई राणा ए। शब्द खण्डा दो धार विच संसारया। भरम भुलेखे रिहा निवार, संत सुहेले आप जगा रिहा। सच कराए वणज वपार, झूठ पखण्डा सर्ब मिटा रिहा। जगे जोत अपर अपार, नौ खण्डां खेल रचा रिहा। सत्तां दीपां एका धार, वाली हिन्द ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा आप घला रिहा। प्रगट जोत हरि करतार, अस्सू तिन्न दिवस विचार, नर हरि जाए दिल्ली दरबार, शाह शहानां करे ख़बरदार, मायाधारी दर दुरकार, बेड़ा डोबे अन्तिम वार, साचा हुक्म सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ एका डंक वजा रिहा। गुरमुख मंगे मंग चरन द्वारया। तन काया चढ़े रंग, होए दर भिखारया। सदा सहाई अंग संग, सदा सुहेला पहरेदारया। मानस देही ना होए भंग, लक्ख चुरासी लेखे ला रिहा। नौ दुआरे जाए लँघ, दस्म दुआरी दरस दिखा रिहा। शब्द घोड़े कस्सया तंग, काया मन्दिर चार दिवारी आपे मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वजाए नाम मृदंग, सोई सुरती मात जगा रिहा। सोई सुरत जगाए, दया कमांयदा। गुरमुख साचा सच सरनाए, साचा राह वखांयदा। रिद्ध सिद्ध ना कोई उठाए, नौ अठारां बन्न वखांयदा। पंजे चोर रहे शरमाए, शब्द डण्डा हरि वखांयदा। गुरमुखां घाल पाए थाएँ, दर आए सीस झुकांयदा। मंगी मंग इक्क रघुराए, नाम अमोला झोली पांयदा।

नर हरि सच्ची सरनाए, काया डोला आप उठांयदा। वेले अन्तिम पकड़े बाहें, भोला भाला पार लँघांयदा। सदा रक्खे ठंडी छाएं, काया चोली आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, सोहँ अक्खर मात वक्खर झोली पांयदा। सोहँ अजपा जाप, तन मन सीतला। मेट मिटाए तीनो ताप, मेल मिलाए साचा मीतला। लोकमाती वड प्रताप, रसना गाए सुहागी गीतला। दरस दिखाए आपे आप, मानस देही जग जीतला। आपे माई आपे बाप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया करे ठंडी सीतला। मदिरा मास रसना तज। शब्द सिँघासण चढ़ना भज्ज। पुरख अबिनाशी आपे आप पड़दे लए कज्ज। आपे जोगी जोग जुगीशर साध संत आपे मन्दिर अन्दर बहे सज। आपे सोनी मोनी बण तपीशर, आपे मक्का काअबा हाजी हज्ज। मेल मिलाए दो दोआबा। मिले मेल जोत महिताबा। अमृत प्याए हयाते आब जाम शराबा। दर दुआरा इक्क वखाए दया कमाए ना कोई पुंन ना स्वाबा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, भाग लगाए काया मन्दिर मस्जिद साचा काअबा। मन सुरती सुरत बंधाई नहीं। अकाल मूर्त नज़री आई नहीं। मदिरा मास रसन तजाई नहीं। तृष्ना अग्न बुझाई नहीं। प्रभ मिलण दी आस, जगत तृष्ना किसे मिटाई नहीं। दर घर साचे पूरन होवे आस, सदा सुहेला करे बन्द खुलास, नानक गुर गुर नानक दरस परस नेत्र नैण

बिगसाई नहीं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जन आए सच्ची सरनाई नहीं। गुर दर्शन गुर नेत्र पाउँणा। काया खेत्र रसना हल चलाउँणा। वेखे रंग बसंत चेत्र, फल फुलवाड़ी मात लगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच वर, गुर नानक मिले चरन धूढ़, नेत्र दर्शन साचे पाउँणा। नाम निधान निरगुण रूपया। जन भगतां देवे जिया दान, हरि वडा शाहो भूप्या। देवे दरस बेपछाण, आपे सति सरूप्या। दो जहानी एका माण, होए सहाई अन्ध अन्धकूप्या। सोहँ अक्खर रसन वक्खर, ना कोई रेख ना कोई रूप्या। सति सति कल धार, नौ नौं तत्तया। तिन्ना लोआं खेल अपार, आपे रंग आपे रतया। ब्रह्मा ब्रह्मपुरी पसार, पारब्रह्म देवे मत्तया। अन्तिम कलिजुग आई हार, जगत जहानी गई सतया। चारे वेद वहिंदी धार, मेट मिटाए तीर्थ तटया। अन्तिम छडणा हट्ट बज़ार, वेला अन्तिम आया नट्ठया। गुरमुख साचा रहे त्यार, बन्ने पल्ले नाम गट्ठया। मारे शब्द इक्क उडार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप गिढ़ाए उलटी लट्ठया। ब्रह्मा ब्रह्म विचार, दए दुहाईआ। साचा कर्म कर्म करतार, सार ना पाईआ। चारे मुख रिहा उग्घाड़, अट्ठे नेत्र खोलू वखाईआ। कलिजुग अग्गनी रही साड़, ना सके कोई बुझाईआ। धूँआँधार मात उजाड़, साध संत ना होए कोई सहाईआ। घाड़न घड़े सच्चा यार, आपे ढाहे ढाह वखाईआ। विष्नूं बंसी बंस अवतार,

३३५
०५

अग्गे हो ना कोई फड़े, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई सीस ना कोई धड़, लोआं पुरीआं अन्दर वड़े, पहरेदार ना कोई अटकाईआ। ब्रह्मे मार ध्यान, नैण उग्घाड़या। प्रगट होए हरि भगवान, लोकमात लगा इक्क अखाड़या। अन्तिम छड्डणी पए दुकान, चौथे जुग पवे झाड़या। गुरमुख साचे मिली जोती कोटन भान, करे तेज उजआरया। दर दुआरे मिले माण, सतिजुग साचे धर्म निशान, सोहँ साचा झण्डा चाढ़या। ब्रह्म पुरी करे ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे एका धाड़, शब्द घोड़ा साचा वाड़या। शब्द घोड़े गया चढ़। ब्रह्मे फड़या साचा लड़। प्रभ अबिनाशी किरपा कर। कलिजुग अन्तिम रिहा लड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर्म दुआरे गया खड़। साचे हरि हरि समझाया। ब्रह्मे ब्रह्म ध्यान चरन कँवल इक्क रखाया। मिले माण उप्पर धवल, गुरमुख साचा हरि उपजाया। पुरी ब्रह्मे जाए मवल, बीस इक्कीस खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जगदीसा खेल रचाया। जगत जगदीसे खेल अपार, शिव द्वारया। शिव शंकर करे पुकार, दर दुआरे सीस झुका रिहा। कलिजुग अन्तिम आई हार, ना देवे कोई सहारया। नर हरि साचा एका मीत मुरार, लोकमात लए अवतारया। शब्द खण्डा फड़ कटार, लोआं पुरीआं करे ख्वारया। गुरूआं पीरां कर्म विचार, साधां संतां जीआं जन्तां ढाहे तन मुनारया। पुरीआं लोआं

३३५
०५

गुण अपार, शिव शंकर रोवे जारो जारया। शब्द चढ़ाए चन्द विच संसार, मेट मिटाए अन्ध अंध्यारया। सोहँ शब्द सुणाउँणा कान, चार वरनां इक्क अधारया। प्रभ अबिनाशी बेड़ा रिहा बन्न, कलिजुग काला वेस वटा रिहा। गुरमुखां देवे नाम माल धन, ना संनॄ कोई लगा रिहा। हरिजन भाग लगाए काया तन, छप्परी छन्न आप सुहा रिहा। बेमुखां अन्तिम देवे डन्न, शब्द खण्डा हथ्थ उठा रिहा। भाण्डा भरमां देवे भन्न, जेरज़ अंड वेख वखा रिहा। आप उधारे गुरमुख साचे जन, साचा जाप इक्क जपा रिहा। आपे करे हरया तन, नाम प्याला इक्क पया रिहा। शिव शंकर सुणना ला ला कन्न, प्रभ साचा हुक्म सुणा रिहा। अन्तिम होणा खन्न खन्न, बाशक तशका गल लटका रिहा। ना कोई जाणे जीव अन्नॄ, गणपति गणेश ना कोई मना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, लोआं पुरीआं भरम मिटा रिहा। पुरी शिव द्वार, नाथ गुसांईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, सगला साथ आप निभाईआ। लेखा लेख मस्तक माथ, पार लँघाउँणा फड़ फड़ बाहीआ। कलिजुग कहर एका लहर, साध संत ना आए हाथ, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, झूठे वेसन दए दुहाईआ। आप चलाए आपणी गाथ, सोहँ साची बणत बणाईआ। सतिजुग लेखा लिखे माथ, लोकमाती जन्म दवाईआ। आप चढ़ाए साचे राथ, धरत मात गोद उठाईआ। सगल वसूरे जायण लाथ, दर दुआरे दर्शन पाया। वेखे खेल भोला नाथ, शिव शंकर कंठ माला गल गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, जगत जगदीसा बीस इक्कीसा साचा छत्र सीस झुलाईआ। हरि दाता मेहरवान शब्द जणाईआ। शिव शंकर कर ध्यान, गुर शब्दी एह जणाईआ। कलिजुग मिटे अन्त निशान, करे खेल हरि गुसांईआ। लोआं पुरीआं तुट्टे माण, झण्डा झुल्ले इक्क गुण निधान, साचा अक्खर रिहा लिखाईआ। आपे वेखे पवण मसाण, शब्द सरूपी नौजवान, बिरध बाल ना कोए जणाईआ। खाणी बाणी वेद पुराण, अंजील कुरानां करे पछाण, बेईमाना विच जहान, रसना कथनी कथ कथ थक्की, रसन विकारां होई हलकाईआ। लक्ख चुरासी अन्तिम वारी धर्म राए दी वाड़ी पक्की, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। दर दुआरे आई, पुरख अबिनाशी चरन सीस निवाई, दे वर मात रघुराई, वेख आपणी इक्क वड्याई, लक्ख चुरासी लवां प्रनाई, सुहणा लाड़ा इक्क बणाईआ। वेख वखावां थांउँ थाँईं, पकड़ उठावां फड़ फड़ बांहीं, राज राजानां रिहा हिलाईआ। नाता तुट्टे भैणां भाई, माता पूत वेखे नाहीं, दर दर घर घर दए दुहाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाई, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। आत्म सेजा इक्क विछाई, रहां नवेला इक्क इकेला सदा सुहेला डेरा रिहा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वक्त होए दुहेला, ना कोई गुर ना कोई चेला, अचरज खेल हरि जी खेला, चारे कूंटां दिसण खाली, पैसा

३३६
०५

धेला ना कोई रखाईआ। चारे कुन्ट होए ख्वारी, जीव जन्तां मिटदी जाए चार यारी, करे खेल आदिन अन्ता। लाड़ी मौत फड़े बहारी, वेंहदी जाए वारो वारी, साचा खेल हरि खिलंता। नाता तुट्टे नर नारी, ना कोई करे भैण प्यारी, मानस बाजी कलिजुग जीवां अन्तिम हारी, ना कोई समझावे दे दे मता। शब्द फड़े प्रभ तिक्खी आरी, आपे चीरे चीर कराए दो दो फाड़ी, कलिजुग खेत एका पक्का। लक्ख चुरासी कलिजुग हाढ़ी, धर्म राए दर देवे धक्का। कुम्भी नर्का जाए वाड़ी, खाली करे मदीना मक्का, ना कोई दीसे भैण भाई सका। लुक्कया रहण ना देवे कोई झाड़ झाड़ी, ना कोई लावे नाअरा ऐनलहक्का। सदी चौधवीं देवे धक्का, मेट मिटाए बूरा कक्का। आप उठाए फड़ फड़ दाढ़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धन्ना, बेमुखां पाए डोर अन्धघोर पंज चोर हरामखोर नकेल नक्का। लाड़ी मौत खुशी मनाए, गीत सुहागी गाउँदी ए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, कलिजुग वेला अन्त तकाउँदी ए। धर्म राए रिहा समझाए, धर्म सपुत्री लाज तैनूं ना आउँदी ए। लक्ख चुरासी देवे फाँसी, ना कोई छड्डणा पंडत कांसी, मुलां सेखां फड़ उठउँदी ए। ना कोई वेखे मक्के हाज़ी, पकड़ उठाए वड वड गाज़ी, मेट मिटाए नाज़न नाजी, साचे साजण रिहा साजी, साची बणत बणाउँदी ए। पुरख अबिनाशी रक्खे लाजी, जन भगतां देवे सोहँ भाजी, दर दर जाए आप वरताउँदी ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, धर्म राए दे जाणा दर, लाड़ी मौत रही वर, साचा घर इक्क सुहाउँदी ए। लाड़ी मौत चढ़या चाअ। मनमुख जीवां देवां फाह। कोई ना दीसे जगत मलाह। घर घर अन्तिम उडणे कां। कोई ना खोल्ले रंसा गां। होए विछोड़ा पुत्तरां माँ। बेमुख रोवण थाँ थाँ। गुरमुख दुरमति मैल धो, प्रभ पकड़ उठावे आपे बांह। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, मेट मिटाए उच्चे मन्दिर छोटे वडे सर्ब गरां। अप तेज वाए पृथ्वी आकाश पंज तत्तया। ना कोई मिले मात दवाए, अट्ठे पहर हाए हाए, ना कदे रैणी नैण सुत्तया। शुक्ला पक्ख रिहा वखाए, बहत्तर नाड़ी अग्न लगाए, ना कोई साचा जाम प्याए, मिले वस्त ना साचे हट्टया। निर्बल काया रही कुरलाए, निपुंसक होया हरि सरनाए, बल धार काया मटयां। एका सरन सच्ची सरनाए, रसना गुण गोबन्दा गाए, सर्ब बख्शिंदा दया कमाए, जोत जगाए घट घटयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन रंगाए सोहँ साचे शब्द भट्ठया। सतिजुग साचा मात लगाए, हरि भगवानया। चार वरनां एका थाँ बहाए, ऊँच नीच ना करे पछानया। राज राजाना माण गंवाए, ना कोई दीसे शाह सुल्तानया। गुण निधाना रसना गाए, मानस देही सर्ब परानया। एका दूजा भउ चुकाए, तीजे नैण शब्द निशानया। साचा दर इक्क खुल्हाए, वरन अवरना विच समाए, साची

३३८

०५

सरना इक्क रघुराए, ना कोई करे पाठ वेद पुराणया। एका अक्खर आप पढ़ाए, जगत वक्खर नज़री आए, साचे मन्दिर साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दान वड दानीआ। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुखां अमृत साचा सीर प्याए, जिउँ बालक माता माउँ। सतिजुग सालस आप प्रभ, नेत्र नीर ना कोई वहाए, सदा रखाए ठंडी छाउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा देवे वर, मेल मिलावा साचा दाअवा, अगम्म अगम्म अगम्म अथाहो। सतिजुग साची पति कलि आप रखाईआ। गुरमुखां देवे गुर गुरमति, मनमति रिहा दुरकाईआ। शब्द देवे धीरज यति, दुरमति ना होए हलकाईआ। रसना चरखा लए कत्त, शब्द साचा तन्द चढ़ाईआ। लै हुलारा दए घत्त, साची बणत आप बणाईआ। किसे ना टुट्टे धीरज यति, बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत, दे मति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, लक्ख ग्यारां पहली वारा मिले मात वड्याईआ। मन चंचल चित्त बगौरया। कदे ना होए किसे मित, आपे अवरा गवरा गौरया। ना कोई वेखे वार थित्त, अट्ठे पहर रहे दौड़या। चले चाल नित्त नवित्त, वेखे रस मिट्ठा कौड़या। गुरमुख साचे रखणा चित्त, पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे अन्तिम बौहड़या। जोती जोत सरूप हरि, शब्द डोरी देवे धर, दर दुआरे रिहा बहुड़या। सिर रख हत्थ समरथ, दया कमांयदा। मन मनुआ पाए नत्थ, डोर आपणे हत्थ रखांयदा। पंजां तत्तां देवे मथ, अन्ध घोर आप सुटांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर दुआरे दर्शन पांयदा। महिंमा शब्द जगत अकथ, गुरमुख सूरा कोल रखांयदा। नाम खण्डा सत्तर हत्थ, बहत्तर नाड़ी आप वखांयदा। दहि दिशा रिहा नठ्ठ, चार कुन्टां राह ना पांयदा। शब्द दुआरे जाए ढठ्ठ, गुर पूरा दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोत जगाए काया मट्ठ, सुरत ध्यान शब्द ज्ञान एका एक वखांयदा। गुर संगत दर परवान, मन वधाईआ। जो जन बैठे कर ध्यान, देवे माण शब्द जणाईआ। एका देवे शब्द निशान, गुण निधान हरि रघुराईआ। सच दुआरे एका आण, साचा नाम पीण, जगत तृष्ना रिहा बुझाईआ। एका वज्जा तिक्खा बाण, साचे सिक्खां करे पछाण, बेमुखां लाहे अन्तिम घाण, ना कोई जाणे हाणी हाणीआ। गुरमुख साचे आत्म ब्रह्म ज्ञान, शब्द फड़े तीर कमान, रसना चिल्ला चढ़े विच जहान, आप रखाए आपणी आणया। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे इक्क वर, शब्द भण्डारा रिहा भर, लेखे लाए आवण जाणया। आए दर परवान दर द्वारया। गुर संगत मेला विच जहान, एका एक धर्म निशानया। काया छडणा पए मकान, नाता तुट्टे पंज शैतान, साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण ना विच कोई जहानया। आप चुकाए लहिण देण, गुरमुख दरस पेखे तीजे नैण, शब्द पहनाए साचा गहिण, तन श्रृंगारा नर निरँकारा आपे आप करांयदा। नाम निरँजण इक्क अधारा, पवण

जोती शब्द हुलारा, वरन गोती वसे बाहरा, दर दुआरा इक्क रखांयदा। आदि अन्त इक्क ओंकारा, लोकमात लए अवतारा, जन भगतां देवे नाम भण्डारा, साची भिच्छया आत्म इच्छया आपे पूर करांयदा। आपे वेखे दहि दिशा जूठा झूठा पीसण पिसा, जगत विकारी हउमे दीसा, साची सिख्या ना कोई दवांयदा। ना कोई गाए दन्द बतीसा, जाणे जणाए राग छतीसा, नारद मुन आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे नाम वर, भरम भुलेखा दूर करांयदा। इक्क इकल्ला इक्क इक्क अकारया। दूजा वसे शब्द महल्ला, आप रचाया निहचल धाम अटला, किया सगल पसारया। तीजा वेखे जला थला, दीपक जोती कवण दुआरे बला, आत्म घोरी घोर पसारया। चौथा घर गुरमुख साचे मला, शब्द चलाया साचा भल्ला, करे खेल अपर अपारया। पंचम घर रहे तरथल्ला, शब्द देवे तिक्खा भल्ला, आप आपणे हथ्थ उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम एका एक सुहा रिहा। आप सुहाए थान, चरन छुहंदड़ा। दर दुआरे मिल्या माण, गुरमुख साचे मेल मिलंदड़ा। आपे चतुर सुघड़ स्याण, भगत सुहेला सद बख्शंदड़ा। फल लगाए काया डाल्ह, क्या कोई करे मात निन्दड़ा। शब्द घोड़े चढ़ना मार छाल, सच दुआरा इक्क वखंदड़ा। आपे परखे साचे लाल, सच वणजारा आप अख्वंदड़ा। काया वेखे खाली खाल, दस्म दुआरा हरि निरँकारा, सच भतारा जोत अकारा एका धाम सुहंदड़ा। गुरमुख साचा साची नारा, सदा सुहागण विच संसारा, तन बैरागण चरन दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सहाए तेरा दर साचा घर लोकमात बंक दुआरा। बंक दुआरा सोहे विच जहानया। जम जम काल कदे ना पोहे, सिर रक्खे हथ्थ भगवानया। भेव चुकाए एका दोए, एका रंगण नाम रंगानया। अमृत आत्म साचा चोए, उलटे कँवल जाए मवल कर्म निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण पतित पावन, लक्ख चुरासी जम की फाँसी जगत झेड़ा करे निबेड़ा कटाए आवण जाणया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सच विहारा विच संसारा आपणा आप करानया। सच विहारा कर रचन रचाईआ। आपे बन्न्ह आपणी धारा, आपणी रीती इक्क रखाईआ। वेखे विगसे कर विचारा, पतित पुनीती सहिज सुभाईआ। हरिसंगत साचा मीत मुरारा, जोत सरूपी नैण मुँधारा, देण आया मात वधाईआ। गुर लंगर होया त्यारा, प्रभ अबिनाशी पहरेदारा, ढईआ ढईआ जगत नईआ आप चलाईआ। जन भगतां करे ख़बरदारा, जूठा झूठा मात विहारा, ना कोई दीसे मीत प्यारा, एक नाता पुरख बिधाता चरन कँवल उप्पर धवल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत गुर तृष्ना भुक्ख जगत दुःख, सुफल कराए मात कुक्ख, उलटा होए ना गर्भवास रुख, साचा लेखा आप लिखाईआ। लक्ख

चुरासी मानस देही मिली मनुख, गुरमुख साचे सुखणा रहे सुक्ख, कन्त कन्तूहला एका देवे शब्द झूला, आप चुकाए अगला पिछला मूला, एका देवे अमृत धार कर प्यार, दूई द्वैती दुःख निवार, सच वरतारा विच संसारा आपे आप अख्वाईआ। भरया रहे जन भगत भण्डारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी लोकमात मार झात, साचे शब्द संग आया करन सच्ची कुड़माईआ। साचा शब्द लैणा वर, इक्क वसाउँणा साचा घर। नौ दुआरे बन्द दर। परमानंद मिले मेल साचे हरि। रसन तजाउँणा मदिरा मास गन्द, शब्द गाउँणा बत्ती दन्द, आपे ढाहे भरमां कंध, चन्द नौचन्दी अन्दरे अन्दर साचे गगन आप चढ़ाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क रखाए नाम रंगण, गुरमुखां मुख लगाए सोहँ शब्द साचा सगन, सतिजुग साची धार बन्हाउँणा। बेमुख चारों कुन्ट फिरन नग्न, कलिजुग माया अन्दर दगन, तन माटी साड़, वरे वर मौत लाड़, धर्म राए दा दर खुल्हाउँणा। चित्रगुप्त मीत मुरार, लेखा मंगे वारो वार, मात पित ना कोई सहार, भैण भईआं साक तजाउँणा। गुरमुख साचा सोहे प्रभ चरन द्वार, शब्द पाए तन फूलनहार, इक्क सुहाए सोभावन्ती नार, सोलां कलीआं तन श्रृंगार, वलीआ छलीआ पुरख भतार, आत्म साची सेजा दर घर साचे बैठ साचा कन्त गुरमुख संत एका इक्क हंढाउँणा। मिले मेल भगवन्त जगत परवानया। बणाए मात बणत, आदि अन्त तन बन्न्हे साचा गानया। इक्क सुणाए सुहागी छंत, गुणवन्ता गुण निधानया। रसना गाए साचा मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया, लिखे लेख लिखणहार। लग्गे मेख विच संसार। वेखे भेख हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे घर सस्से, चार द्वारी महल्ल अपार। सस्सा सच सुल्तान हरि बिराज्जया। चारों चार दिवार, जोत निरँजण साज्जया। बैठा रहे पैर पसार, आपे जाणे आपणा काज्जया। लेखा लिखे अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, जन रक्खे मात लाज्जया। सुफल कुक्ख मात कराउँणी। आप उतारे सगला दुःख, खिटा रोग दर्द मिटाउँणी। किशना शुक्ला वेखे पक्ख, सर्ब थाँईं आप प्रतक्ख, नाम रक्ख तन बणाउँणी। आपे करे फड़ फड़ वक्ख, पुरख अबिनाशी अलक्खणा अलख, साची धार इक्क वखाउँणी। साची देवे शब्द वत्थ, चढ़ना नाम सोहँ रथ, एका अक्खर पढ़ लोकमात जड़्ह आपणी आप लगाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति पंज तत्त करे सच शब्द समझाउँणी। हरिजन शब्द भण्डार हरि वरताया। एका मंगया दर द्वार, दूसर दर ना कोई रखाया। किरपा कर आप करतार, माई बाप सदा अख्वाया। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, जोती शब्दी मेल मिलाया। पूर्ब कर्मां कर्म विचार, मानस जन्म लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गरीब निमाणा जगत अञ्याणा दर परवाणा, मेहरवाना चरनी चरन सरन

गुर लाया। चरन सरन सरन गुरदेव। मातलोक ना जाए बिरथा सेव। अमृत आत्म मिले फ़ल, लोकमात साचा मेव। दस्म दुआरी साचा जल, आप प्याए अज्ज कल्ल, आप कराए नेह नहिकेव। हरिजन हरिसंगत जाणा मात रल, लग्गे फ़ल काया डल, पसू प्रेतों होणा देव। वेख वखाणे जल थल, उच्च महल्ल हरि अटल गाए गुण गोबिन्दा रसना जिहव। सच दुआरा लैणा मल्ल, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी अलख निरँजण सदा अभेव। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां लेखे लाए अन्तर बणतर साची सेव। सर्ब सेव सर्ब गुणतासा। मिले मेल वड देवी देव, जोती जामा पुरख अबिनाशा। अछल अछेद जगत अभेद, शब्द वजाए साचा नादा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए चार कुन्ट दहि दिशा खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्ड अनाद अनादा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द जणाए दया कमाए, वेख वखाए दिस ना आए, धार चलाए बोध अगाधा। बोध अगाधा अगाध गुर मन्त्र। जन भगतां देवे साची दाद, आप बुझाए तन मन काया लग्गी झूठी बसंतर। आप बणाए हँस फड़ फड़ काग, करे खेल जुगां जुगन्तर। शब्द डोर हथ्थ रक्खे वाग, अजपा जाप जाप गुरदेव, भेव खुल्हाए आत्म अन्तर। कौस्तक मणीआ लाए थेवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए गुरमुख साची सेवा। साची घालण घाल, सेव कमाईआ। मिले नाम सच्चा धन्न माल, शब्द ख़ज़ाना आप भराईआ। आदि अन्त ना खाए काल, जम जमकाल नेड़ ना आईआ। धुर दरगाही हरि दलाल, जगत चले अवल्लड़ी चाल, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। गुरमुख लाल अनमुल्लड़े भाल, आत्म जोती रिहा जगाईआ। लेखे लाए काया माटी भाण्डे झूठी खाल, हरि हरि साची बणत बणाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, बुध मति रिहा समझाईआ। पंजां तत्तां करे हलाल, शब्द कटारी हथ्थ उठाईआ। आपे रिहा सुरत संभाल, आत्म सेजा आसण लाईआ। आपे शाह आपे कंगाल, खाली हथ्थ सदा रखाईआ। आपे तोड़े जगत जंजाल, अमृत जाम इक्क प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे जोत धर, साची सेवा दर दुआरे लेखे लाईआ। गुरमुख तेरी धार जगत निरालीआ। पुरख अबिनाशी पाए सार, लोकमात लए अवतार, इक्क सुहाए बंक द्वार, मेट मिटाए रैण घटा कालीआ। साचा वणज कराए वपार, सोहँ शब्द अपर अपार, अन्तिम रक्खे तिक्खी धार, करे खेल इक्क अकालीआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई मीत ना मुरार, जूठा झूठा जगत विहार, माया ठूठा भन्ने भण्डार, फ़ल दिसे ना किसे डालीआ। गुरमुख साचा सोभावन्ती नार, मिल्या मेल पुरख भतार, आत्म सेजा अपर अपार, फूलन बरखा शब्दी धार, अमृत बरखे दस्म दुआर, साचा ताल आप सुहाईआ। नाभी खिड़े इक्क गुलज़ार, साची हाटी वणज वपार, औखी घाटी जोत लिलाटी

बजर कपाटी अधविचकार। गुरमुख साचा संत सुहेला इक्क इकेला अमृत रस रिहा चाटी, मिले नाम नाम गुणकार। दुरमति मैल हरि दर काटी, अग्गे दिसे नेड़े वाटी, मुक्त जुगत प्रभ चरन द्वार। लक्ख चुरासी खेल बाज़ीगर नाटी, जूठी झूठी काया माटी, पंजां तत्तां जगत प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार। पारब्रह्म भरपूर सर्बकलधारया। गुरमुखां आसा मनसा पूर विच संसारया। आप बणाए साचा बंस, गुरमुख वरोले विच सहँसा, दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंसा, मारे शब्द तीर कटारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, कलिजुग अन्तिम अन्त ना आए पासा हारया। ना आए पासा हार शब्द सहारया। मिल्या मेल मीत सच्चा यार, नर हरि हरि नर गिरधारया। एका बख्शे चरन प्यार, हउमे हँगता रोग निवार, जोत निरँजण कर अकारया। साची संगत प्रभ दर द्वार, नाम रंगत वणज वपार, चाढ़े रंगत भरे भण्डार, तोट ना आए दूजी वारया। हरि हरि सहाई जिउँ नानक अंगद, रक्खे लाज सिर शब्द ताज, मारे सोहँ आवाज़, दस्म दुआरी खोल्हे बन्द किवाड़या। खोल्हे बन्द कुआड़ दया कमांयदा। आपे रिहा आत्म पाड़, पंजां धाड़ परे हटांयदा। जोत जगे बहत्तर नाड़, दर घर साचे देवे वाड़, गुरमुख हँस काग बणांयदा। दूई द्वैती शरअ सराइती देवे साड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले, दर घर साचे साचे मेले, मिल्या मेल चढ़या शब्द तेल, धर्म राए दी कटे जेल्ह, दरगाह साची साचा धाम इक्क सुहाए, नर निरँजणा आप आपणे संग समांयदा। आप आपणे संग समाए निरगुण रूप्या। सरगुण मिल्या सहिज सुभाए, किरपा करे वडा शाहो भूप्या। निरगुण वेखे थांउँ थाँईं, ना कोई जाणे अन्ध अन्धकूप्या। सरगुण साचा राह वखाए, आप आपणा शब्द जणाए, जोती नूर इक्क उपजाए, दया कमाए आपन आप्या। दोहां मेला एका थांए, पारब्रह्म ब्रह्म धार एका एक एक हो जाए, जगे जोत मिटे वरन गोत, घर साचे सति सरूप्या। जोती जोत सरूप हरि, आप सुहाए आपणा घर, दूसर ना कोई वेखे दर, ना कोई देवे नाम सुगंधी साची धूप्या। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुर पूरया। निमस्कार दर घर साचे साची अनहद तूरया। निमस्कार गरीब साजन साजा, दर दुआरे हाज़र हज़ूरया। निमस्कार निमस्कार निमस्कार देस माझे प्रभ रच्चया कलिजुग काजा, सतिजुग मारे आपे वाज़ां, प्रगट होए सर्बकला भरपूरया। ब्रह्मा शिव वेखण दर दरवाज़ा, कवण रखाए मात लाजा, शब्द उडाए साचा बाजा, चारों कुन्ट करे नूरया। पीत पितम्बर सोहे सीस ताजा, आप रचाए धर्म राए दर इक्क सवम्बर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग कल वेख हरि, लक्ख चुरासी लाड़ी मौत तेरी डोली पाए, जूठ झूठ नाल रखाए जगत दाजा। जगत जंजाला झूठ मात पसारया। एका एक नाम अनूठ, जगत

तृष्ना देवे रोग निवारया। दस गिराह गुरमुख तेरी आत्म एका सुख, भरमे भुला सर्ब संसारया। ओंकारा गया तुठ, मिल्या मेल नर हरि करतारया। जोती जोत सरूप हरि, आत्म दुखड़े देवे मार, भाग लगाए साचे घर, पवण मसाणी चुक्के डर, छल छिद्र करे वाड़या। हाल बेहाला दर पुकारया। लोकमात होया कंगाला, ना कोई दीसे जगत दलाला, नेत्र नीर वहाए ज़ारो ज़ारया। लुट्टया जाए जगत धन माला, ना कोई दीसे बाली बाला, कवण करे सदा प्रितपाला, दिवस रैण रहे रख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, सदा भरया रहे भण्डारया। जगत रोग तन जाए चुक। हउमे चिन्ता मिटे सोग, काया रुखड़ा ना जाए सुक्क। मिले मेल धुर संजोग, मदिरा मास ना रसना लाउँणा थुक्क। दर घर साचे लगे भोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे जगत वर, तन मन्दिर अन्दर गुरदुआरा साचा सीस हरि जगदीस चरन कँवल कँवल चरन जन जाए झुक्क। चवी तत्त तत्त उपाया। पंझी प्रकृती विच समाया। पंचां बंधन आपे लाया। पंचां परमानंदन विच समाया। चवी शलोकां नाल गाया। इष्ट बुध इष्ट आत्म दृष्ट रिहा जगाया। सुरती मन मन सुरती होई भृष्ट, साचा इष्ट ना नज़री आया। वेख वखाणे सारी सृष्ट, ज्ञान गुर उपदेस कवण इष्ट कवण राह दए दिखाया। मानस देही होई नष्ट, सीस हथ्थ ना किसे रखाया। लक्ख चुरासी मानस देही अन्तिम वारी एका कष्ट, लहिणा देणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच वर, साचा राह रिहा वखाया। गुर गुर शब्द शब्द शलोक। मन मनुआ ना सके रोक। पंच पंचायणी देणी झोक। सुखमन नाड़ी टेडी ढोक। अनहद बाणी एका लोक। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच दर, वसे हस्से हरि नर देवे दवाए नाम मोख। ओंकार अकार अकारा। सगल सृष्ट हरि पसारा। गुरमुखां खोल्हे आपे दृष्ट, दिवस रैण मिटे धुंदूँकारा। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, करना वणज नाम सच्चा वपारा। आपे करना कर विचार, घर साचे पावे सारया। आत्म खुल्हे बन्द किवाड़, लेखा चुक्के नौ द्वारया। मिटे तृष्ना तत्ती हाढ़, अमृत मिले ठंडी ठारया। दर दुआरे देवे वाड़, दर घर साचे आप भुला रिहा। अग्गे पिच्छे मीत मुरार, गुर पूरा चरन ध्यान लगा रिहा। साचे पौड़े देवे चाढ़, शब्द डण्डा हथ्थ फड़ा रिहा। अग्गे वेखे धर्म अखाड़, राग अनादा इक्क सुणा रिहा। पुरख अबिनाशी सोहे साचा लाड़, गुरमुख नारी संग मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भुल्ला डुल्ल्हा कलिजुग रुल्ला, भाग लगाए कुला, देवे नाम इक्क अनमुल्ला, साचा राह बेपरवाह अगम्म अथाह शब्द तूर, जोती नूर हाज़र हज़ूर, सच सलाह जगत मलाह आसा मनसा पूरया। नाम जगत अपार लक्ख चुरासीआ। जन भगतां करे प्यार, सद कटे जम की फाँसीआ। देवे एका एक हुलार, दिवस रैण लाहे आत्म उदासीआ। पवण उनन्जा

छत्र झुलार, भगत इकवंजा शब्द बवन्जा धार रहिरासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ देवे नाम वर, गाउँणा स्वास स्वास्सया। नाम रस रसन रस रास। पुरख अबिनाशी लेखे लाए मात गर्भ अग्नी वास दस दस मास। सर्ब व्यापी वेखे सरब, रसन तजाउँणा मदिरा मास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संत सुहेला सदा सद वसे पास। आस पास चार कुन्ट दहि दिशा नाल धारीआ। वेख वखाणे रसन स्वास, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर काया पिंजर हड नाड़ी मास रक्त बूंदी आप उपा रिहा। सच वस्त गुरमुख विरले पास, गुर पूरा जिस द्वारया। चरन भिखारी रहे दास, दर द्वारी हरि बहा रिहा। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, गगन मण्डल विच समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पूरन करे आस। भाणा सहिणा दरस दिखाए तीजे नैणा हरिसंगत हरिजन मिल मिल बहिणा, काम कामनी करे नास। काम क्रोध चण्डाल दर दरवाज्जया। मोह लोभ ना करे बेहाल, काया क्रोध ना करे कंगालया। शब्द वज्जे साचा ताल, नाद अनादा इक्क रखा ल्या। अमृत आत्म सर लवाए छाल, सर सरोवर इक्क वखा ल्या। दुरमति मैल धोवे तोड़े जगत जंजाल, कलिजुग काया लाहे हड्डां पालया। अट्ठे पहर करे रखवाल, धुर दरगाही हरि दलाल, देवे नाम सच्चा धन माल, सदा सद करे कराए प्रितपालया। नाम दात गुर दर साचे पाउँणी। उत्तम ज़ात विच मात कराउँणी।
३४४ मिले मेल पुरख बिधात, नौ सट्ठ वंड वंडाउँणी। सोहँ शब्द वड करामात, आत्म तृष्ना अग्न बुझाउँणी। दरस दिखाए हरि ३४४
०५ बहु भांत, अछल अछल्ल खेल रचाउँणी। अमृत प्याए बूंद स्वांत, निझर धारा इक्क वहाउँणी। बैठा दिसे इक्क इकांत, ०५
आत्म सेजा इक्क सुहाउँणी। आपे होए भैण भ्रात, मात पित ना दीसे कोए साची रीत इक्क वखाउँणी। ना कोई दिवस ना कोई रात, अट्ठे पहर प्रभात, सञ्झ सवेर एका धार बन्नाउँणी। हरिजन वेखे मार झात, मिटे वरन गोत कलि ज़ात पात, ऊँचां नीचां राज राजानां शाह सुल्तानां एका थाँ हरि साचे साची राह वखाउँणी। प्रगट होए पकड़े बांह, आप जपाए आपणा नां, हँस बणाए फड़ फड़ कां, माणक मोती साची चोग सोहँ आपणी आप चुगाउँणी। कलिजुग तेरा अन्तिम जोग, गुरमुखां मेला धुर संजोग, सतिजुग रस लैणा भोग, हरिसंगत साची सेव कमाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आपे कटे हउमे रोग, चरन प्रीत इक्क रखाउँणी। कर्म जरम प्रभ हथ्थ, दया कमांयदा। देवे बुध बल सच वत्थ, शब्द रथ इक्क चढ़ांयदा। जगत विकारा पाए नत्थ, सगल विकारा दए मथ, हथ्थ सिर समरथ टिकांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर साचा इक्क वखांयदा। जगत महिंमा सदा अकथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समांयदा। पंचम पंचम पंचम त्रै अठ। किशना पक्ख होए कठ। शुक्ला गिड़ी उलटी लट्ठ। रक्त बूंद होई भठ। झूठा तप्या मात भट्ठ। हरि

हरि हरि जन निमाणा दर दुआरे गया ढठ्ठ। आप पहनाए शब्द बाणे जोग देवे नाम हठ। साचा वक्त हरि सुहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फल लगाए काया डाल्ह, दिवस रैण करे प्रितपाल। बेअन्त बणत मेघ भगवन्त बणाईआ। जीव जन्त साध संत, सहिज सुभाए रिहा हिलाईआ। दरस दिखाए इक्क इकन्त, पंचम पंचां मेल मिलाईआ। पंचम पंचम करे भस्मंत, पंचा रंगण नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम सुहाईआ। पंचम चढ़या रंग पंच ग्राम्या। मिल्या मेल हरि साचे संग, ना लाए कोई दामया। मानस जन्म ना होए भंग, मिटे रैण अन्धेरी शामया। दर दुआरा एका लैणा मंग, किरपा करे अन्तरयामीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम सुहाए बंक द्वार, जोत सरूपी कर अकार, शब्द सरूपी वड भण्डार, पवण स्वासी दए अधार, सदा सदा सद सति सरूप्या। गुर संगत साचा सच प्यार। उत्तम नाता विच संसार। लेखा मुके ज़ातां पातां ऊँचां नीचां इक्क अधार। साची मिले शब्द सुगाता, हउमे दुखड़ा दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे देवे वर, पंचम पंचगिरां आप सुहाए साचा थाँ। बंक द्वार हरि करतार एका एक जन भगतां टेक, लोकमात मार झात, आप आपणी रखाए छाँ। गुरमुख मंगे चरन धूढ़। तन मन काया माटी रंगे, बणे चतुर सुघड़ मूढ़ो मूढ़। सच इशनान आत्म सर साची गंगे, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। आदि जुगादि जुगो जुग ना होवण नंगे, एका रंगण रंग चढ़ाए शब्द सरूपी साचा गूढ़। इक्क दुआरा गुरमुख साचा आत्म अन्दरे अन्दर मंगे, मस्तक मस्तक मस्तक चरन चरन चरन गुर धूढ़।

★ १२ कत्तक २०१२ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ★

शब्द रंगीली सेज जगत विछाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, दिवस रैण रिहा जगाईआ। जोती दामन चमके तेज, नूर नुरानी रहे सवाईआ। आपे वेखे नौ नौं तेज, नौ दुआरे रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सुरती मात दवाईआ। शब्द रंगीला रंग हरि चढ़न्नया। आप निभाए साचा संग, आदि अन्त बेड़ा बन्न्या। शब्द डोरी गुरमुख पतंग, उप्पर दिसे छपर छन्नया। अमृत धारा वगे गंग, किसे हत्थ ना आए आत्म अन्न्या। नाम रंगीला पलँघ, जगत आपणा बेड़ा आपे बन्न्या। जोत बिराजे वड दाता सूरा सरबंग, साचा राग सुणाए कन्नया। एका एक वज्जे मृदंग, भाण्डा भरम आपे भन्नया। शब्द पहनाए साची वंग, सोहँ पाए साची अन्गया। शब्द घोड़े कसे तंग, आवे जावे मेल मिलावे साचा संगया। दर घर साचा रिहा लँघ, आदि अन्त कदे ना सन्गया। गुरमुख काया चाढ़े रंग, जोती जोत सरूप हरि, पत्त डाल्ही आपे नव नव रंगया। फ़ल फुलवाड़ी मात क्यारी, तन सुहणी मात बणाईआ। अमृत बरखे निझर

धारी, सदा रहे ठंडी ठारी, रुत्त बसंती हरि सुहाईआ। मधुर नैण करे प्यारी, शब्द सैण वणज वपारी, साची धारा इक्क वखाईआ। गुरमुख साचा साची नारी, मिले मेल पुरख भतारी, आत्म सेजा कर त्यारी, प्रभ फूलन बरखा लाईआ। प्रगट होए नर निरँकारी, जोत अगम्मी अपर अपारी, शब्द झूला दए हुलारी, आर पार इक्क किनार दो जहानां रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे, नाम कराए वणज वपारे, साची सिख्या अमृत भिख्या आत्म झोली पाईआ। आत्म झोली दर भराई, उपजे ब्रह्म ज्ञान। साचे घर वज्जे वधाई, एका दीसे नाम निशान। नौ अठारां वस कराई, दस्म दुआरा मेल भगवान। एका सच्चा राह वखाई, झुल्लदा दिसे शब्द निशान। फूलन सेजा मात विछाई, जोती खेल भगतन मेल गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, चारो कुन्ट चार दिवार पहरेदार, दिवस रैण कर प्यार, सदा सुहेला होए सहाई। फूलन सेजा जगत विछाउँणा। गुरमुख मेला भगत जगाउँणा। आपे गुर आपे चेला, आप आपणा राह विखाउँणा। ना कोई मंगे पैसा धेला, कलिजुग कन्ढा पार कराउँणा। हरिजन होए वक्त सुहेला, शब्द डण्डा हथ्थ फड़ाउँणा। प्रभ मिलण दा साचा वेला, साची वंडा वंड वंडाउँणा। धर्म राए दी टुट्टे जेल्ह, नाम भण्डारा विच ब्रह्मण्डा हथ्थ फड़ाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी मेल कर, दस्म दुआरी तेल चढ़ाउँणा। शब्द चढ़ाए तेल, गाए गीत सुहागीआ। पुरख भतारा साचा मेल, उपजे मन वैरागया। साचा मेला सज्जण सुहेल, धोए मल मल दागया। अचरज वेखे आपणी खेल, कदे ना सोया सदा जागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साची डोरी, आप आपणे संग जाए तोरी, दो हथ्थीं पकड़े वागया। फूलन गहणा शब्द पटारी। पुरख अबिनाशी किरपा कर, जन भगतां दित्ती पहली वारी। आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर महल्ल अपारी। निर्मल गोत एका कर, ऊँच नीच ना रिहा विचारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे भाग लगाए तेरी आत्म काया तन क्यारी। आत्म तन क्यारी शब्द लवाया। खिली मात सच्ची फुलवाड़ी, उप्पर धरते फुल्ल कँवलया। आपे वेखे पिछे अगाड़ी, अमृत नाभी दो दो आबी वाह वाह धारा नीली सूही पीली लाल गुलाबी जग दलाली चिट्टा खिटा नीलम नीलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए आत्म घर, अमृत जाम एका एक पया ल्या। गुर संगत तेरी भेंट सीस उठाईआ। धुर दरगाही खेवट खेट, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। आपे माँ पिउ बेट, दूसर कोई दिस ना आईआ। माया तृष्ना दए मेट, आप आपणी दया कमाईआ। नाम निरँजण चेटक चेट, रसना जिह्वा इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भाणा रिहा वखाईआ। भरम भुलेखा दए निवार, जन्म कर्म आप विचार,

लहिणा देणा मूल चुकाईआ। सति पुरख निरँजण एका धार, पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, आप आपणे रंग समाईआ। शब्द विचोला जगत मेटे कुकर्म , चारों कुन्टां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग एका कर, दोहां देवे एका वर, लहिणा देणा अन्त आदि आपे रिहा चुकाईआ। कलिजुग अन्त अन्त अन्त विचारया। आपे जाणे साची बणत, बणे बणाए साची विच संसारया। दर दर घर घर नेत्र खोलू वेखण संत, कवण दुआरा भरे भण्डारया। कवण शब्द जिह्वा मंत, मेट मिटाए धुँदूकारया। होए मिलावा साचे कन्त, वज्जे नाद अपर अपारया। काया चढ़े रंग बसंत, खिड़ी रहे सदा गुलज़ारया। मेट मिटाए पंजे दंत, सुरती खिच्चे दस्म दुआरया। नौ दुआरे जीव जन्त, गुरमुख विरला निर्मल निर्मल दर घर साचे बूझ बुझारया। मिले मेल पूरन भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त काला सूसा तन छुहा रिहा। सतिजुग साचा आदि आदि उपदेस्सया। वेखे खेल विच ब्रह्माद, ब्रह्म विष्न महेषया। शब्द वजाए साचा नाद, लोआं पुरीआं देस परदेस्सया। लेखा लिखे बोध अगाध, जोती जामा धारे भेस्सया। धरत मात रही अराध, बण भिखार दर दरवेस्सया। संत सुहेले करदे याद, पायण वैण खुलूड़े केस्सया। मिले मेल माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण दुआरे मेल निरँकारे जोती शब्द पवण स्वासी सदा रहे प्रवेशया। सतिजुग आदि आदि गुर
३४७ अन्तर, हरि साची रचन रचाईआ। अजपा जाप जाप गुर मन्त्र, लोकमात रिहा उपजाईआ। जगत तृष्ना मिटे बसंतर, अमृत ३४७
०५ मेघ रिहा बरसाईआ। गगन गगनंतर मात पताल अकाश खेल रचाईआ। आपे जाणे जुगा जुगन्तर, प्रभ साचा मार्ग इक्क ०५
लगाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त, सतिजुग आदि होया जुग जुग जुगन्तर, प्रभ साचा मार्ग लाईआ। राग नाद ब्रह्माद सुन्न समाध, जन भगतां देवे शब्द दाद, जीव जन्त ना जाणे गवण। एका उपजे आत्म नाद, भेव खुलूाए त्रै त्रै भवण। नाम जणाई बोध अगाध दिवस रैण ना देवे सौण, तन माटी साची हाटी रिहा सोध, आप कटाए अवण गवण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वस्त इक्क सच्ची धर्मसाल, रलाए स्वास पवण। पवण स्वास कर प्यार। शब्द देवे इक्क अधार। गुरमुख साचे कर्म विचार। पंज चोर ना दर घर नाचे अट्ठे पहर ख़बरदार। आपे भन्ने कलिजुग डन्ने बेमुख जीव भाण्डे काचे, गुरमुख साचे मात उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डारा रिहा भर, हरि जन मंगे दर द्वार। तख्त ताज सुल्तान हरि भगवानया। लोआं पुरीआं एका राज, शब्द निशानया। शब्द उडाए एका बाज, वेख वखाणे सर्ब थानया। आप रचाया आपणा काज, हरि हरि वाली दो जहानया। चारों कुन्ट रिहा भाज, लेख लिखाए राज राजानया। प्रगट होए देस माझ, सम्बल देस नगर सुहानया। साधां संतां जीआं जन्तां खोलू पाज, मारे

तीर शब्द निशानया। गुरमुखां पड़दे रिहा काज, साचा बन्ने हथ्थीं गानया। वेले अन्तिम रक्खे लाज, दर दुआरे करे परवानया। लक्ख चुरासी नार बांझ, साची दिसे ना घर संतानया। गुरमुख साचे दो जहानी एका सांझ, मिले मेल पुरख भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क झुलाए शब्द निशानया। शब्द निशाना एका एक झुला रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी एका टेक, हरि रखाए शाह अस्वारया। सत्तां दीपां करे बुध बिबेक, देवे नाम अपर अपारया। साचे नेत्र लैणा वेख, आप आपणा भेव छुपा रिहा। लेखा जाणे औलीआ पीर शेख़, गुर पीर औलीआ ना कोई छुपा रिहा। पंडत पांधे रहे वेख, वेद व्यासे लिखी रेख, कवण कूटे प्रभ साची जोत जगा रिहा। दर दुआरे गुरमुख विरले साचे नेत्र लैणा पेख, शब्द सिँघासण हरि डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग सतिजुग लिखे लेख, दोहां लहिणा देणा अन्तिम मात चुका रिहा। लहिणा देणा दए देवणहारया। कलिजुग झूठा लगे नेंह, माया भुल्ला सर्ब संसारया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर होणे थेह, ना कोई दीसे गुरूद्वारया। चारे कुन्ट उडणी खेह, प्रगट होए हरि निरंकारया। ना कोई भईआ बेबे बे, पिता पूत ना कोई सहारया। ना कोई रसना गावे जिह्वा जे, जगत विछोड़ा आप करा रिहा। ना कोई दीसे देवी दे, करोड़ तेतीसा वक्त चुका रिहा। शिव शंकर लाए कंठ से, बाशक तशक गल लटका रिहा। ब्रह्मा देणा रिहा दे, चारे मुख हिसाब मुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका राह वखा रिहा। सतिजुग सच द्वार, दर दर मंगया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आप निभाए आपणा सन्गया। प्रगट कर विच संसार, सोहँ शब्द भर भण्डार, इक्क चढ़ाए साचा रंगया। गुरमुख साचे मात विचार, देवे दात अपर अपार, मानस देही ना होए भंगया। तन माला गल साचा हार, अमृत प्याला भर भण्डार, ना होए कंगाला दूजी वार, वगे धार साची गंगया। नाम दुशाला अपर अपारा, फ़ल लगाए काया डाल्ह साचा मेवा पहली वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, मेट मिटाए पंचम धाड़। इक्क इक्क इक्क इक्क चार। दर घर साचे जाणा विक, पंचम मेला हरि दातार। ना कोई वडा छोटा निक्क, बिरध बाल ना कोई जवान। ना कोई जाणे रस मिट्ठा फिक, नाम रस अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच वर, भरया रहे सद भण्डार। चार चार चार यार। एका करे हरि ख्वार। चारों कुन्ट हाहाकार। गुरमुखां हथ्थीं देवे पाड़। शब्द अगम्मी रक्खे धाड़। ना कदे मरे ना कदे जम्मे, खाए ना कदे मौत लाड़। नाम अधारी एका थम्मी, गगन पतालां दिसे पाड़। आपे जाणे खेल अगम्मी, मानस देही बहत्तर नाड़। लग्गे भाग माटी चम्मी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच भण्डारा मिले वर, हरिजन चबाए आपणी दाढ़। जन भगत

अधारा एका नाम भण्डारया। पुरख निरँजण एका एक विच संसारया। दूई द्वैती ना लाए सेक, एका दीसे पार किनारया। बुद्धी रहे सदा बिबेक, जूठा झूठा मोह चुका रिहा। साचे नेत्र रिहा वेख, जगत लोचन बन्द करा रिहा। आपे लिखे मस्तक रेख, लिख्या लेख ना कोई मिटा रिहा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, तिलक ललाटी कवण लगा रिहा। जोत सरूपी हरि हरि भेख, औखी घाटी आप चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरना एका सरना साचा पल्लू शब्द लड़ फड़ा रिहा। सुरत शब्द गुर ज्ञान, आप दवाईआ। अट्ठे पहर मार ध्यान, दिवस रैण रहे सुहाईआ। जगत बिठाए नाम बिबाण, नौ दुआरे बाहर कढाईआ। काया मन्दिर सच मकान, दस्म दुआरी महल्ल बणाईआ। नेड़ ना आयण पंचम शैतान, शब्द डण्डे रिहा दुरकाईआ। साचा देवे नाम निधान, सोहँ डोरी हत्थ फड़ाईआ। सो पुरख निरँजण आप भगवान, हउमे हँगता जीव गंवाईआ। किरपा करे वाली दो जहान, साचे मण्डल साची रास पवण स्वासी रिहा वखाईआ। आप उडाए इक्क अकाश, साची दिशा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दरे अन्दर तोड़े जन्दर, लक्ख चुरासी बाहर भौंदे बन्दर, साचा राह दिस किसे ना आईआ। शब्द गुर मेहरवान आत्म जागया। दर घर साचे मिले जिया दान, सर सरोवर धोए माया दागया। जोती जगे इक्क महान, हँस बणे गुरमुख साचा कागया। एका दीसे शब्द निशान, वज्जे नाद सुणाए राग साचा रागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, गुरमुख साचे जाणा तर, आत्म रहे सदा वैरागया। मन वैराग गुरमुख साचा जाए जाग, सगल वसूरा लाथया। लोकमात वड वडभाग आत्म बुझी तृष्ना आग, दीपक जोती जगे चिराग, मिले मेल हरि समरथया। आप आपणे हत्थ रक्खे वाग, माया डस्से ना डस्सणी नाग, एका शब्द सुणाए साची कथया। सोहँ बन्ने तन साचा ताग, चरन कँवल जन जाए लाग, धुर दरगाही जगत मलाही, आप चढ़ाए शब्द साचे रथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोले बन्द कवाड़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, आप आपणा दरस दिखाए, ना कोई सीस ना कोई धड़। हरिजन साचे तरस कमाए, दस्म दुआरी अग्गे खड़। अृमत मेघ मुख चुआए, शब्द सरूपी बाहों फड़। साची सेजा आप बहाए, आप आपणे कंठ लगाए, दूसर कोई ना सके घेर साचे दर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, एका अक्खर गुर शब्द वक्खर, भगत विद्या लैणी पढ़। सतारां मास सतारां दिन। जगत लँघाउँणे गिण गिण। आप आपणी बिध बणाए, ना कोई दूसर संग रलाए, खेल कराए जिन जिन। अन्तिम साचा मेल मिलाए, शब्द सरूप हुक्म जणाए, आपणा संग आप निभाए, पकड़ उठाए पहलों दिन तिन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जाणे खेल भिन्न भिन्न।

★ १२ कत्तक २०१२ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ★

जगजीत जगजीत जगजीत भगत वणजारया। जगजीत जगजीत जगजीत जोत मेल प्रभ साचे मीत, ब्रह्म पारब्रह्म भेव अपारया। जगजीत जगजीत जगजीत काया सीत, शब्द गीत एका राग सुणा रिहा। जगजीत जगजीत जगजीत कलिजुग औध गई बीत, सोए पूत हरि सच सपूत बाहों फड़ मात जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सरूपी वेस कर, काया बुत्त सुत कलबूत ना कोई रखा रिहा। जग जान जग जान जग जान गुरमुख गुरमुख गुरमुख्या। प्रगट होए हरि भगवान, जिया दान देवे सुणे सुणाए सच बेनन्तीआ। चरन धूढ़ चरन धूढ़ चरन धूढ़ जगत इशनान, साचा धाम इक्क सुहन्तया। रंग गूढ़ रंग गूढ़ रंग गूढ़ मन मूढ़, मिले मेल भगत भगवन्तया। जगत नाता कूड़ो कूड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग माया पाए जगत बेअन्त बेअन्तया। कलिजुग माया काली रैण, चारों कुन्ट अन्धेर पसारया। एका वगे कुफर हँकारी वहिण, ना कोई जाणे जीव संसारया। दर दर घर घर रसना कहण, जाति पाती शाह सफाती ना किसे विचारया। गुरमुख विरला दर्शन पेखे साचे नैण, चढ़ महल्ल अटल उच्च मुनारया। अमृत बख्शे बूंद स्वाती, देवे दरस अगम्म अपारया। दर घर साचे पुच्छे वाती, प्रगट होए कमलापाती, जोत जगाए आत्म बाती, इक्क कराए सच्चा उज्यारया। गुरमुख साचे शब्द वैरागी, आपे बणया साचा साथी। सतिजुग जोड़ा सोहँ घोड़ा, नाम रखाए ऐराप्त हाथी। धुर दरगाही आए दौड़ा, अन्दर मन्दिर लाए एक पौड़ा, किरपा कर त्रैलोकी नाथी। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, एका रस गुरमुख विरले रिहा दस्स, दूसर ना कोई वेखे मिट्ठा कौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां वेले अन्तिम मात बौहड़ा। ओंकार अकार सोहँ पसारया। सो पुरख निरँजण अपर अपार, जीव जन्तां दए अधारया। हँसा बंसा हरि एका वणज कराए नाम वपारया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, पर्हे हटाए पंचम धाड़, दूई द्वैती पड़दा साड़या। साचे घाड़न घड़े घाड़, शब्द घोड़े देवे चाढ़, दर घर साचे देवे वाड़या। वेखे धर्म इक्क अखाड़, जोती जगे बहत्तर नाड़, वजे नाद सच्चा धुन्कारया। लगे वा ना तत्ती हाढ़, नौ अठारां चबाए दाढ़, बजर कपाटी पड़दा पाड़, मेल मिलाए साचे लाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए पिछे अगाड़या। साचा शब्द शब्द गुर दीना। पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ मेल अक्खर वक्खर आपे लीणा। अन्दर मन्दिर सज्जण सुहेल, शब्द सरूपी दाना बीना। आपे वसे रंग नवेल, गुरमुख देवे नाम, सुक्का हरया करे चाम, हरि दाता वड प्रबीना। कोई ना लाए मात दाम, अमृत प्याए साचा जाम। शांत कराया साचा सीना। मिटे रैण अन्धेरी शाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

३५० ०५

गुरमुख साचा जाए तर, आप आपणे जिहा कीना। रसना गाए गुण गहर गम्भीर। अट्ठे पहर शांत शरीर। दस्म दुआरी अमृत सीर। हउमे कढ्ढे विच्चों पीड़। चोटी चढ़े इक्क अख़ीर। शब्द सरूपी बन्ने धीर। बजर कपाटी आपे चीर। साची हाटी शब्द अमोला, पुरख अबिनाशी आपे तोला, लभ्भ लभ्भ थक्के संत फ़कीर। दर दरवाज़े रिहा गोला, भाग ना लग्गा काया चोला, जूठा झूठा विष्टा फोला, सर्ब घट वासी ना अन्दर बोला। मिल्या मेल ना जोत प्रकाशी, ना कोई सुणाए साचा ढोला। दया कमाए घनकपुर वासी, गुरमुख तेरा दस्म दुआरी काया मन्दिर अन्दर आपे होए विचोला। किरत कर्म कलि वेख, लक्ख चुरासीआ। किरत कर्म कलि वेख, गल पाए माला फाँसीआ। किरत कर्म कलि वेख, होए विछोड़ा हरि गुणतासीआ। किरत कर्म कलि वेख, माया दिवस रैण रहे उदासीआ। किरत कर्म कलि वेख, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पकड़ पछाड़े मदिर मासीआ। किरत कर्म कलि वेख, कलि काल दुहाईआ। किरत कर्म कलि वेख, काली रैण अन्धेरी छाईआ। किरत कर्म कलि वेख, चारों कुन्ट रिहा घेरी, शब्द डोरी इक्क रखाईआ। किरत कर्म कलि वेख, जोती जोत सरूप हरि, आपे करे हेरा फेरी, सिँघ शेर शेर दलेरी, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ल, भरम भउ लथ्थया। नाम विहुणी गई रुल्ल, अन्तिम वेले कोई ना रक्खया। काया दीपक होए गुल्ल, माटी भाण्डा होवे

३५१ सखिआ। लक्ख चुरासी कोई ना चुगे तेरे फुल्ल, ना कोई वंडाए दुख्खया। मानस देही सिम्मल बूटे गए हुल्ल, प्रभ पूरे ३५१

०५ आप परक्खया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख विरला मात रक्खया। रक्खे रक्खणहार विच संसारया। ०५

आपे जाणे आपणे भाणे, साचा खेल अपर अपारया। पकड़ उठाए राजे राणे, छब्बी पोह दिवस विचारया। तन छुहाए काले बाणे, साधां संतां आप हिला रिहा। आपे जाणे दर दरबाने, दर दरवेशा आप अख्वा रिहा। गुरमुख साचे आप जगाए, ब्रह्मा सेवा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे ना दूसर कोई जणा रिहा। काला तन श्रृंगार धुर दरगाहीआ। साधां संतां करे ख़बरदार, छोटा मुंडा बेपरवाहीआ। अन्दर मन्दिर पुच्छे केहड़ा मिल्या यार, फड़ फड़ बांहों दए हिलाईआ। भरम भुलाया क्यों संसार, गुर पूरा नज़र ना आईआ। शब्द सरूपी मारे मार, ना कोई सके मात छुडाईआ। एका दर सच्ची सरकार, लहिणा देणा दए चुकाईआ। दूजा वेख जगत घर बाहर, भेख पखण्डा दए मिटाईआ। तीजे राजे राणयां करे विचार, शब्द डण्डा मगर लगाईआ। चौथे घर पहरेदार, गुरमुखां रिहा सेव कमाईआ। पंजवें होया आप न्यार, अचरज रीती मात चलाईआ। छेवें छप्पर देवे पाड़, दे मति रिहा समझाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण नाल रलाए शब्द धाड़, ना सके कोई छुडाईआ। अठवें उठ उठ वेखे नाड़ नाड़, गुरूआं पीरां भरम गवाईआ। नौ दुआरे वेखे

झूठी धाड़, नावें नावां साचा लाईआ। दसवें बैठ सच्ची सरकार, आत्म कुण्डा आपे लाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर विचार, लहिणा देण मात चुकाईआ। भाणा सहिणा विच संसार, गुरमुखां हुक्म सुणाईआ। मनमुख होणा अन्तिम छार, उडे खेह दिस ना आईआ। कलिजुग काला धूँआंधार, सच धारा कोई ना पाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, शब्द भण्डारा रिहा विखाईआ। आत्म जोती दे अधार, निर्मल गोती रिहा बणाईआ। माणक मोती तन शृंगार, साचे धागे रिहा जुड़ाईआ। आप परोए दर द्वार, साची सूई नाम रखाईआ। बैठा रहे दर सच्चे द्वार, अगणत अगणत अगणत गणया मात ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साची रचना आप रचाउँणी, लिख लिख लेखा दए पुचाईआ। छब्बी पोह खुशी मनाउँणी। साधां संतां इक्क सुणाउँणी। सुरती शब्दी आप भवाउँणी। नूरी जोत इक्क जगाउँणी। शब्द धार नाल रखाउँणी। पवण स्वास मात चलाउँणी। चिट्टा जोड़ा चिट्टे कागज रक्खे पास, लेखा सभ दा उप्पर लिखाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संत दुआरा राज राजान करे खेल अपारा, पंचा पंचा मोहर लगाउँणी। जागत जागत जागत रे मन, गुर जगायो री। भागत भागत भागत रे मन, कलिजुग ठगोरी पायो री। लागत लागत लागत रे मन, गुर चरन प्रीती लायो री। सरनागत सरनागत सरनागत रे मन, हरि सूरे सर्बकल भरपूरे हाज़र हज़ूरे सच सरनायो री। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द हलूणा मार आप जगायो री। रे ठगोरी ठग्ग ठग्गण आया। आपे वसे उप्पर शाहरग, दिस किसे ना आया। अठसट्ठ फिरदे माटी पग, कदम कदम रिहा चलाया। गुरमुख विरले मेल सूरे सरबग, अन्दर मन्दिर खोज खुजाया। राह साचे गया लग्ग, साची पौड़ी आप चढ़ाया। आप मिटाई तृष्ना अग्ग, कौड़ा मिट्ठा फल खवाया। निर्मल जोती गई जग, अनडिठा शब्द सुणाया। साची काया रही मघ, पुरख अबिनाशी साचा तुठ्ठा दया कमाया। गुरमुख हँस बणया कग, दर घर रुठ्ठा आप मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा संत सुहेला एका मुट्ठा चारो कुन्टां रिहा वखाया। रे ठग्ग रे ठग्ग ठगोरी ठग्गण आयो री। कलिजुग वा तत्ती गई वग, ना कोई बचाए बवरी री। माया राणी तुट्टे तग, बैठी रहे गहर गंवरी री। गुरमुखां मुख लगाए शब्द साचा सग, ना कोई जाणे खेल अवर अवरी री। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत मात रही जग, लक्ख चुरासी मन सुरती मन सुरती पाई काया कवरी री। मन सुरती शब्द ढंडोल, आत्म अंध्या। सच वस्त सद वसे कोल, भागां मंदया। काया पड़दा आपणा फोल, रसन विकारी झूठे गन्दया। शब्द दमामा वज्जे ढोल, बन्द कुआड़ी खोल्ह् जंदया। निशअक्खर वक्खर बैठा रिहा बोल, साचा राग इक्क सुणंदया। निर्मल जोती सदा अडोल, घर साचे आप वसंदया। दिवस रैण करे चोहल, सज्जण सुहेला संग वसंदया। मिले वड्याई उप्पर धौल, चरन प्रीती इक्क

रखंदया। गुरमुख सदा रहे अडोल, प्रभ साचा आप बख्शंदया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप बणाए आपणा बन्दया। गावत गावत गावत रे मन गावत रे, रैण विहूणी आई। उठ धावत वक्त सुहावत प्रभ भावत, हरि नर शब्द तूरत इक्क वजाई तूरी। दाता सखी करे सखावत, पंचां चोरां सदा बगावत, हरिजन आसा मनसा पूरी। उठ उठ जाग मन गावत गावत गावत रे मन, ना दीसे मात दूरी। कवण गावत कवण गिणावे, कवण उठावत कवण सुणावे, गुरमुख साचा प्रभ साचे वाचा, आप आपणे चरन लगावत, दर घर साचा एका पावे। चरन धूढ़ सच्चा इशनान न्हावत, अमरापत घर साचे सदा मोख मुक्त प्रभ आप दवावे। अमृत आत्म प्याए मध, सदा खुमारी कर्म विचारी आप करावे। जोती जोत सरूप हरि, आप वखाए आपणा दर साची हद्द, फड़ फड़ बांहों पार करावे। फड़ बाहों करे पार, आप उधारया। ना कोई जाणे पार किनार, मनमुख डुब्बे विच मँझधार, भरमे सर्ब संसारया। गुरमुख साचे सच प्यार, इक्क कराया वणज वपार, शब्द उडारी जोत निरँकार, आप सुहाए बंक द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख बहाए दया कमाए साचे मन्दिर उच्च अटल शब्द महल्ल उच्च मुनारया। हरि घट राम पसार, जगत वणजारया। हरि घट राम अधार, नाम जपा रिहा। हरि घट राम पसार, तीर्थ तट्ट इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे घट घट, भरमां वट मेट मिटा रिहा। भरमां कढ्ढे कंध, आपे ढाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, साचे घर वजे वधाईआ। इक्क उपजाए परमानंद, निज़ानंद हरि समाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्द, सीतल धारा रिहा वहाईआ। आप मुकाए अगला पिछला पन्ध, जगत विचोला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द सच्चा ढोला चार वरनां एका बोला, गीत सुहागी रिहा सुणाईआ। गीत सुहागी गाउँणा नाम, आत्म मध रत्तया। लेखे लग्गे काया माटी झूठा चाम, साचा बीज बीजे साचे वत्तया। अमृत पीणा साचा जाम, लेखा चुक्के मात तमाम, पुरख अबिनाशी दे समझावे मत्तया। पूर कराए सगला काम, भाग लगाए नगर गराम, पंजां चोरां करे हतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, शब्द सरूपी साची सत्तया। शब्द सरूपी सति आप आधारया। निर्मल करे काया रत, भरम भुलेखा दूर करा रिहा। आप रखाए धीरज यति, साचा लेखा लेखे लिखा रिहा। रक्खे लाज विच जगत, साचे भगत आप बणा रिहा। शब्द वखाए एका तत्त, साचा राह आपा जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे दे समझवे मति, साचा नाम पकड़ दामन, आपणा आप जपा रिहा। साचा नाम जपाए, जाप अजपया। पूरन इच्छया आप कराए, मिटाए तीनो तप्पया। साची भिच्छया नाम पाए, गुरमुख आत्म झोली डाहे, दिवस रैण करे रक्खया। नाम रंगण इक्क चढ़ाए, दूजा दर ना मंगण

जाए, सभनी थाँईं होए सहाए, दर घर साचे साची सिख्या। साचे अंगण आप उठाए, शब्द कंगण तन पहनाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा आपे लिख्या। लेखा लिखणहार लेख लिखारया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आपे गुप्त आपे ज़ाहरया। जोती जामा धरना भेख, वड बलकारया। लक्ख चुरासी मेटण आया रेख, आपे करे आपणी कारया। साचा शब्द लावण आया मेख, ना कोई सके जड़ उखाड़या। साचे लोचन लैणा पेख, डेरा लाए विच पहाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, काया छते पाड़या। काया छत्ते लाए पाड़, शब्द सुनेहड़या। माया अग्नी देवे साड़, आपे लाए इक्क उखेड़या। पंचां चबाए आपणी दाढ़, करे हक्को हक्क निबेड़या। गुरमुख साचा दर घर साचे देवे वाड़, जूठा झूठा जगत झेड़या। मेल मिलाए साचा लाड़, खुल्ला दीसे एका वेहड़या। आपे वस्सया नाड़ नाड़, बत्ती दन्दां भेड़ भेड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, कलिजुग तेरा उलटा गेड़ आपणे हथ्थीं गेड़या। कलिजुग उलटा गेड़ आप गिड़ाया। दर दर घर घर पया झेड़, ना सके कोई निबेड़, वरन अवरनां दोख पाया। ना कोई जाणे साचा नगर खेड़, झूठी नगरी डेरा लाया। आपे मारे भेड़ भेड़, सच समग्री साची रास ना रखे कोई सवाया। आपे छेड़ा रिहा छेड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३५४ जोत धर, शब्द भण्डारे रिहा भर, लोकमाती दिस किसे ना आया। लोकमात पया अन्धेरा, रैण अन्धेरी छाईआ। पुरख ३५४

०५ अबिनाशी पाया फेरा, मेरी मेरी जगत भुलाईआ। प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेरा, मेरी तेरी अन्तिम अन्त आपे आप चुकाईआ। ०५

ना कोई जाणे सञ्झ सवेरा, अट्ठे पहर रहे दुहाईआ। मायाधारी झूठा डेरा, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। गुरमुखां बन्ने आपे बेड़ा, पार लँघाए फड़ फड़ बांहीआ। दर घर सच्चे सच निबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक्क इकेला, देवे ठंडीआं छाँईआ। देवे ठंडी छाँ, दो जहानया। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे बाल अजानया। होए सहाई सभनी थाँ, करे कराए जाण पछानया। इक्क जपाए साचा नां, साचा देवे वंञ मुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, चले चलाए आपणे भाणया। हरि भाणा अनमोल, गुरमुख विचारना। अन्तिम तुलणा पूरे तोल, मानस जन्म मात ना हारना। आपे पड़दे रिहा खोल्ह, दूई द्वैती मिट्टे हँकारना। साचा शब्द वजावे ढोल, साचा कारज आप संवारना। साचे मन्दिर रिहा मौल, खिड़ी रहे शब्द गुलज़ारना। उलटी करे नाभी कँवल, अमृत बख्शे साची धारना। मिले वड्याई उप्पर धवल, गुरमुख साचे संत उधारना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेड़ा अन्तिम पार उतारना। मस्तक मिले धूढ़, चरन द्वारया। चाढ़े रंग गूढ़, पुरख अपारया। बणे चतुर मनमुख

मूढ़, सिर रक्खे हथ्थ समरथ करे पार उतारया। झूठी माटी काया कूड़ो कूड़, जोत निरँजण आपणा महल्ल उसारया। दर घर साचे नाम चाम साची धूढ़, गुरमुख साचे हरि दुलारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे साचा नाम वर, भरया रहे शब्द भण्डारया। नाम रंग रंग नाम नाम काया चोल्लया। अंग संग संग अंग अंग संग दासी दास बणया रहे गोल्लया। भगत मंग मन तरंग, देवे कला सोल्लया। दर दुआरा रिहा लँघ, शब्द सरूपी इक्क पलँघ, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। चारों कुन्ट चार बन्द, विच रखाए परमानंद, पूरा तोल तोल्लया। मेट मिटाए भरमां कंध, शब्द चढ़ाए साचा चन्द, साचे मन्दिर कुण्डा खोल्लया। वेख वखाणे निजानंद, जोती जोत सरूप हरि, साचे दर आपे वड़, साचे मन्दिर आपे बोल्लया। बोले बोलणहार आप बुलाया। काया माटी छाछ वरोले, अचरज खेल रचाया। लग्गे भाग काया चोले, साची रंगण रंग रंगाया। हरि संत कदे ना डोले, अडोल अतुल्ल अटल आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, भाग लगाए काया साची कुल, गुरमुख मिल्या सहिज सुभाया। मिले दरस जगत गुर मीत। एका राखो चरन प्रीत। काया करे ठंडी सीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाअवत दावा खोले दर, शब्द सुणाए नाद अनादा साचे मन्दिर एका गीत।

★ २० कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

सगल पसारा आप, आप कराया। जाणे वड प्रताप, आप आपणे रंग समाया। आपे माई आपे बाप, आप आपणा आप उपाया। आपे जाणे आपणा जाप, जुगा जुगन्त मात जपाया। शब्द मारे तीनो ताप, हउमे हँगता रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस वटाया। आपे आप उपंना बलवानया। शब्द सुणाए साचा कन्ना, वाली दो जहानया। भरमां भाण्डा झूठा भन्ना, देवे नाम दान गुण निधानया। हरि जन चढ़ाए साचे चन्ना, झुलाए शब्द जगत निशानया। आप आपणा बेड़ा बन्ना, प्रभ आपणे कंध उठानया। लक्ख चुरासी देवे डन्ना, ना कोई जाणे जीव शैतानया। गुरमुखां देवे नाम धना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बीना वड खज़ानया। आपे रंग रूप अपार, वस्त अमोल्लया। आपे खोले शब्द भण्डार, साचा तोल हरि जी तोल्लया। जन भगतां बणया रहे वरतार, मन्दिर अन्दर कुण्डा खोल्लया। देवे वर सच्ची धुन्कार, नाद अनाहद साचा बोल्लया। शब्द मारे तेज़ कटार, भाग लगाए काया चोल्लया। जोत निरँजण कर अकार, अज्ञान अन्धेरा आप फोल्लया। अमृत आत्म साची धार, साचे घर साचे हरि

जू तोल्लया। गुरमुखां करे कराए वणज वपार, अक्खर वक्खर इक्क अनतोल्लया। मानस देही ना आई हार, चरन प्रीती घोल घोल्लया। किरपा करे नर निरँकार, धार काली कलि कल सोल्लया। लक्ख चुरासी उतरी पार, धर्म राए ना करे ख्वार, लाड़ी मौत होई गोल्लया। मिल्या मेल पुरख भतार, पुरख अगम्मा अन्दरे अन्दर नाड़ी नाड़ी पैज संवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा आपणा खोल्ल्या। खुल्हे इक्क द्वार नाम वरताया। चार वरनां करे ख़बरदार, गुरमुख सोया आप जगाया। आपे होया पहरेदार, दिस किसे ना आया। बेमुख सुत्ते पैर पसार, माया पड़दा आपे पाया। साध संत होए विभचार, जूठा झूठा मोह वधाया। गुरमुख विरला दर भिखार, आत्म भिच्छया साची रच्छया पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आत्म झोली आप भरा रिहा। जोती जोत मात प्रकाशी, करे खेल घनकपुर वासी, शब्द जपाए स्वास स्वासी, नवां सत्तां वंड वंडा रिहा। वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, ब्रह्मा शिव दासन दास, सुरपति राजा नाल रला रिहा। गुरमुख साचे प्रभ साचा सद बलि बलि जासी, मानस जन्म करे रहिरासी, जेरज खाणी आपे लेखे ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले देवे वर, साचा जाम आत्म नाम आत्म मध दर दुआरे सद एका एक पया रिहा। इक्क प्याए नाम साचा सीरया। सुक्का हरया करे काया चाम, तन कटे हउमे पीड़या। दर घर साचे कोए ना लगे दाम, कलिजुग वेला अन्त अखीरया। एका एक रमईआ राम, आदि अन्त बन्न्हे बीड़या। इक्क जपाए सोहँ सच्चा नाम, अन्त संत भगवन्त कटे भीड़या। पूरन करे काम, काया नगर ग्राम, मिटे अन्धेरी शाम, आसा मनसा हरि साचा पूरया। हरि साची सेव आप लगाईआ। गुरमुखां जपाए रसन जिहव, बत्ती धारा रिहा बख़्शाईआ। जोत निरँजण मिले मेल, अलख अभेव सदा सुखदाईआ। चरन सीस झुकाए करोड़ तेतीस देवी देव, धन्न धन्न गुरमुख तेरी वड वडी वड्याईआ। सोहँ लैणा रसना मेव, प्रभ साचा रिहा खवाईआ। चरन प्रीती साची सेव, दो जहान मिले वड्याईआ। कौस्तक मणीआ साचा थेव, आपणी हथ्थीं रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा अक्खर एका वक्खर, गुरमुखां रिहा वखाईआ। अक्खर वक्खर जगत निराला, गुर गोबिन्दा आप जपांयदा। आपे पाड़े बजर कपाटी पत्थर, पंजां चोरां सथ्थर लांहयदा। नेत्र नीर ना वहे अथ्थर, सोहँ साची संपुट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां बणत बणांयदा। बणत बणाए आप, जगत विछोरड़ा। शब्द जणाए आप, नाम अनमुल्लड़ा। गुरमुखां झोली पाए, दर दुआरा एका खोल्हड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना खुल्हे हरन फरना, चुक्के मरन डरना, एका घर एका वर, एका हरि सोहँ शब्द चलाए पौड़ा। सोहँ

साचा बोल सृष्ट सबाईआ। लोआं पुरीआं रिहा तोल, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी बूहा रिहा खोल्ह, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। सत्तां दीपां वज्जे ढोल, नाम मृदंगा रिहा वजाईआ। गुरमुखां सद वसे कोल, दिवस रैण सदा सहाईआ। आत्म पड़दे रिहा फोल, पुरख अबिनाशी नज़री आईआ। साचा राग अनादी रिहा बोल, सुन्न मुन आप तुड़ाईआ। आपे रहे सदा अडोल, बहत्तर नाड़ी काया मवल, फुल्ल फुलवाड़ी मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे फिरे पिछे अगाड़ी, मेट मिटाए पंचम धाड़ी, गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाई दाढ़ी, साची सेव रिहा कमाईआ। नौ सत्त सत्त नौ वंड वंडया। आपे वेखे विच ब्रह्मंडया। कवण दुआरे कर्म सति, उत्भज सेत्ज जेरज अंडया। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप खण्ड खंडया। नव सत्त नव धार खेल अपारया। जोती जामा भेख अपार, वेखे खेल सर्ब संसारया। नौवां खण्डां पाए सार, राज राजानां शाहकारया। सत्तां दीपां करे ख्वार, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। साचा शब्द पहरेदार, चोबदार हरि बणा ल्या। गुरमुख साचे कर त्यार, सच दुआरा इक्क सुहा ल्या। नाम कराए तन शृंगार, तेज़ कटार ना कोई रखा ल्या। आपे मारे पाचों यार, झूठा नाता मोह तुड़ा ल्या। इक्क कराए हरि जैकार, साचा जाप इक्क जपा ल्या। आदि अन्त ना आए हार, वड प्रतापा नाम रखा ल्या। मानस देही उतरे पार, माई बापा गोद उठा रिहा। भरमे भुल्ला कलि संसार, माया तापा इक्क चढ़ा रिहा। अमृत डुल्ला जीव गंवार, सिर पापां भार उठा ल्या। गुरमुख दर दुआरे आया भुल्ला, शब्द गाए साचे बुल्ल्हा, प्रभ साची दया कमा रिहा। काया फल मात ना हुल्ला, अमृत मेवा नाम लगा रिहा। भाग लगाए आपणे कुला, सुरती सोई जगत जगा रिहा। देवे दान नाम अनमुल्ला, अकाल मूर्ति मेल मिला रिहा। सच दुआरा एका खुल्ह्हा, ऊँचां नीचां भेव चुका रिहा। गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घुला, जिस जन आपणी सेवा ला रिहा। साचे तोल हरिजन तुला, कलिजुग माया अन्त ना रुल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लड़ फड़ा रिहा। आप आपणा लड़ फड़ाए दिस किसे ना आया। सोहँ साचा जाप जपाए, किल्हे मन्दिर अन्दर काया कोट झूठा खोट बुरज मुनारा आपे ढाहया। इक्क लगाए शब्द चोट, साचा राग रिहा सुणाया। गुरमुखां उठाए दया कमाए जगाए विच्चों कोटी कोट, दूसर कोई भेव ना राया। दुरमति मैल कढ्ढे काया खोट, अमृत साचा जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम हरि हरि नामा नौ सत्त मेल कर, भगत सुहेल दर गुर चेल मिले वर, आप आपणे रंग समाया। रंगे रंग काया चोली, शब्द रंग गुलाला। आप उठाए साची डोली, धुर दरगाही हरि दलाला। आपे दर दुआरा रिहा खोल्ही, दीना बंधू दीन दयाला। अन्दरे अन्दर रिहा बोली, सदा सदा करे रखवाला। बुध मति आली

भोली, बणी रहे पंचां गोली, फल दिसे ना किसे डाल्हा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, कलिजुग लाहे मस्तक दाग़ काला। आपे पवण स्वास, शब्द तरानया। उडे उडावे विच अकाश, वाली दो जहानया। वसे जंगल जूह विच प्रभास, आपे बणे जाणी जाणया। लक्ख चुरासी रक्खे वास, ना सके कोई पछानया। गुरमुख विरला होया दास, मिले मेल श्री भगवानया। रसन जपाए शब्द स्वास, देवे दान जिया दानया। काया मण्डल करे रास, आपे पाए आपणी रास, खेले खेल गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, शब्दी जोती मेल कर, पवण झुलाए नाम निशानया। पवण हुलारा इक्क दवाईआ। गुरमुख साचे तन श्रृंगार, साचा शब्द कराईआ। करया खेल विच संसार, भेव किसे ना पाईआ। प्रगट होए नर अवतारा, राज राजानां रिहा भुलाईआ। आपे बन्ह्े आपणी धारा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। कलिजुग होए मात ख्वारा, साध संत ना होए सहाईआ। गुरमुख विरला उतरे पारा, जिस जन एका राह वखाईआ। लक्ख चुरासी डुब्बे विच मँझधारा, ना सके कोई बचाईआ। सोहँ अक्खर सागर सिन्ध धारा, जगत वहिण रिहा वहाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यारा, काया ठंडी ठार कराईआ। बेमुख रोवण हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए दवाईआ। उनी अस्सू दिवस विचारा, प्रभ साची नींह रखाईआ। करे खेल ओंकारा, सर्ब पसारा वेख वखाईआ। पंचम कत्तक पुरख अपारा, पुरी ब्रह्मा रिहा समाईआ। इक्की कत्तक कर्म विचारा, शिव शंकर चरन लिआईआ। मग्घर सत्त उब्बल रत, करोड़ तेतीसा बीस इक्कीसा रिहा आप उठाईआ। मग्घर तेई सोहँ शब्द साची बेईं, नानक गुर गुर नानक रिहा तारी लाईआ। पोह नौ नौं पोह जगत विद्या प्रभ लए खोह, भगतन दात वड करामात सोहँ झोली पाईआ। पंझी पोह जन भगतां दुरमति मैल धो, जाप जपाया सोहँ सो, एका दूजा भउ चुकाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे को, साध संत रहे रो, राज राजानां माया ममता मोह, ना होए कोए सहाईआ। गुरमुखां काया मन्दिर साचा अन्दर अमृत आत्म लैणा धो, नीर धार हरि दातार एका रिहा वहाईआ। छब्बी पोह शब्द सरूपी हल्ल लए जो, राज राजानां रिहा जड़ उखड़ाईआ। साचा शब्द साधां संतां दर दुआरे ढोआ देवे ढो, फ़ल डाल्ही पत्त पतया एका नांउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा सदा सद जुगा जुगन्त रहाईआ। सच दुआरा एका जोत अकालया। चरन प्रीती साची टेक, बणया रहे सदा रखवालीआ। काया बुध करे बिबेक, फ़ल लगाए साची डालीआ। माया मोह ना लाए सेक, दर दुआरा होए खालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ शब्द देवे वर, दस्से राह एका एक जगत सुखालया। सोहँ अक्खर रसना पढ़। शब्द पौड़े जाणा चढ़, तोड़ हँकारी किला गढ़। दर घर साचे जाणा वड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दरे

अन्दर लए फड़। पंज तत्त प्रधान, पंज परवानया। पंचम वजे नाम बाण, पंचम मेटे हरि शेतानया। पंचम होवे हरि परवान, पंचम मेल श्री भगवानया। पंचम पंच बली बलवान, पंचम होवे नौजवानया। सुरती रली नाल रकान, दिवस रैण रहे मस्तानया। सुरती खेल करे प्रधान, माया ममता मोह भुलानया। मनुआ मन दहि दिशा उडाना, ना कोई रोके रोक रुकानया। शब्द डोर बन्ने चोर हथ्थ भगवाना, अन्ध घोर घोर करानया। जोती जोत सरूप हरि, अजपा जाप जाप गुर मन्त्र लग्गी तन बुझाए बसंतर, साचा मेल मिलानया। माया अग्नी तत्त वरोले, शब्द मधाणी पाईआ। सोहँ अक्खर हरि हरि बोले, रसन सवाणी नाल रलाईआ। ठंडा पाणी अमृत डोले, आप आपणी दया कमाईआ। सच फुलवाड़ी आपे मौले, छाछ वरोले सहिज सुभाईआ। उलटी करे नाभ कँवले अमृत धारा रिहा वहाईआ। मिले वड्याई उप्पर धवले, धरत मात खुशी मनाईआ। मिले माण साँवल सँवले, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी सतो गुण रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द डोर हथ्थ फड़, कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, चोरी चोरी गुरमुखां मन बंधाईआ। गुरमुखां बन्ने मन, शब्द डोरया। जगत जुगत ना डोले तन, नेड़ ना आए हराम खोरया। देवे नाम सच्चा धन, धन माल अवर ना जाणे होरया। निरगुण राग सुणाए कन्न, आपे जाणे गहर गवरया। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, जोती जोत सरूप हरि, भगत चुकाए मोर तोरया। मन फांधी जगत फंधाया ए। सृष्ट छल छल बांधी, भरमां गेड़ ना किसे कटाया ए। लक्ख चुरासी आत्म आँधी, काया नगर खेड़ा ना किसे वसाया ए। जगत मुसाफर थक्के पान्धी, साचा पन्ध ना किसे मुकाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बेड़ा आपणी हथ्थीं बन्न वखाया ए। रे मन ठगौरे, गुरमुख ना ठग्ग। कलिजुग जीव जन्त होए बवरे, प्रभ पकड़ उठाए शाह रग। जन हरि काज मात सवरे, जगत तृष्ना बुझे अग्ग। शब्द सरूपी करे चवरे, चरन कँवल परसे जन जग। मिले मेल गहर गवरे, वड दाते सूरे सरबग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन बंधाए सोहँ शब्द साचा तग। साचा तग बन्न करतार। देवे वड्याई जगत जग, कलि कलन्दर अन्तिम वार। दीपक जोती बले अग्ग, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। अमृत आत्म सोमा रिहा वग, गुरमुख बहाए सच द्वार। मन पंछी बणे हँस कग्ग, दया कमाए गुर करतार। कलिजुग वा तत्ती रही वग, बेमुखां तन करे छार। वेखे खेल कल कि अज, दर दुआरे बहिणा सज, शब्द सिँघासण चढ़ना भज्ज, ताल तलवाड़ा जाए वज्ज, हरिभगत अखाड़ा जाए लग, अन्तिम अन्त विच संसार। भगत मार्ग गुरमीत, गुरमुख जगाईआ। आपे पतित पुनीत, मिल्या मेल हरि रघुराईआ। मन बैरागी ल्या जीत, गुर चरन सदा अतीत, काया सोहँ सच्चा गीत, ना बैठे कर जुदाईआ। कलिजुग अन्तिम रिहा बीत, सतिजुग चले साची रीत, ना कोई

मन्दिर ना मसीत, गुरुदुआरा दिस ना आईआ। गुरमुख गुरमुख एका एक प्रतीत, सदा सुहेला रखे चीत, चितवत ठगौरी ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन मन धीरज यति, शब्द सरूपी आत्म सति एका नाम दवाईआ। नाम रोज़ी ना रोज़ी ख़ाक, राज़कि रज़िक रहीम रहिमान नूर अलाही पाकी पाक, बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, आपे दाना बीना ए। मक्का काअबा हाजन हाज, मेल मिलाए दो दो आब, सांतक वस्त शांत कराए सीना ए। वेखे खेल सच्ची ज़नाब, काया तन वजाए रबाब, इक्क प्याए हयात आब, मन मनूआं रहे भीन्ना ए। उलटी रहे कँवल नाभ, लोकमात ना आए अज़ाब, ना कोई पुन्न ना स्वाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, वेखे खेल जगत सुहेल रूसा चीना ए। उठ सुरत सवाणी, वक्त संभालणा। आवण जावण ना रहणी मात निशानी, मिले मेल पुरख भगवानणा। वेख वखाणे चारो खाणी, साची बाणी करे छानणा। आपे वेखे वेद पुराणी, अञ्जील कुरानी लाए बानणा। ना कोई दीसे पंडत ज्ञानी, ध्यानी वक्त चुकावणा। इक्क बिठाए साची राणी, साचा तख्त आप सुहावणा। सोहँ अक्खर सतिजुग साची बाणी, सो पुरख निरँजणा पहरा लावणा। सुरती शब्दी मेल हाणीआं हाणी, प्रभ साचा मेल मिलावणा। आप चुकाए जम की काणी, धर्म राए फंद कटावणा। चित्रगुप्त भरे पाणी, राजा जम दर दुरकावणा। जन भगतां संवारे आपे कम्म, आप आपणा राह वखावणा। सोहँ गाए दमा दम, काया चम्म लेखे लावणा। मेट मिटाए जगत भरम, पूर्ब लहिणा झोली पावणा। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण भेव बावना। आपे वेखे सच ब्रह्म, ब्रह्म सरूपी सद समावणा। पारब्रह्म सदा अगम्म, आप आपणे रंग समावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां करे कराए वक्त सुहावणा। गुरमुख जागे हरि जगाया, आत्म साची जाग लगाया, तन वैराग इक्क कराया, सोहँ गाए सुहागी गीती। उच्चे मन्दिर डेरा लाया, भरमां डेरा आपे ढाहया , सञ्झ सवेरा इक्क कराया, सोहँ गाए सुहागी गीती। उच्चे मन्दिर डेरा लाया, मानस देही जाए जीती। मन पंखी धावस ना धाया, प्रभ अबिनाशी फेरा पाया, हेरा फेरा आप चुकाया, आपे परखे नीती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, सुणना कन्न भाग मथन बेड़ा लैणा बन्न, भाण्डा भरम भन्न, चढ़े साचा चन्न, सुरत रहे पतित पुनीती। गुरमति जगत मीत, जीव निधानया। पारब्रह्म सच सरन प्रीत, मूर्ख मुग्ध अञ्याणया। हरिजन काया करे ठंडी सीत, देवे दान नाम भगवानया। प्रभ सदा सद पतित पुनीत, दर घर देवे माणया। दिवस रैण परखे नीत, मूर्ख चतुर सुघड़ स्याणया। आपे वेखे देहुरा मन्दिर मसीत, पुणे छाणे राजे राणया। गुरमुख विरला लक्ख चुरासी रिहा जीत, आत्म तोड़े माण जगत अभिमानया। नर नरायण राखो चीत, रसना गाए गुण गहर गम्भीर मिले

३६० ०५

वड्याई विच जहानया। एका एक सोहँ शब्द साचा गीत, सतिजुग साचे साची रीत, आप झुलाए धर्म निशानया। धर्म निशान झुलाए हरि बलकारया। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, जीव जन्त हंकारया। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांहीं, साची सेवा सेवक आप करा रिहा। कलिजुग देवे अन्तिम छाँईं, सीतल धारा अमृत आप वहा रिहा। आपे पिता आपे मांएं, चरन प्रीती नाता वखा रिहा। गुरमुख हँस बणाए माणक मोती, साची जोती सोहँ चोग चुगा रिहा। दर घर साचे साची थांएँ, ना कोई वरन ना कोई गोती, आपणा भाणा शब्दी राणा सद मेहरवाना भगत भगवाना आपणे हथ्थ रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, हरि जन जन हरि सोए मात जगा रिहा। आप जगाए जगत, जुगो जुग दाता कलि मीत। दया कमाए शब्द शब्द शब्द, नाम नाम नाम दवाए, इक्क सुणाए सच सुहागी गीत। स्वच्छ सरूपी बिन रंग रूपी वडा शाहो भूपी, आप दिसाए आपणी रीत। माया राणी वड ज़रवाणे लोकमात अन्ध कूप, मन्दिर गुरुदुआरा ना कोई मसीत। जोत निरँजण इक्क अकार सर्ब पसार सति सरूप, काल कलन्दर कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म पारब्रह्म एका मंग साचा संग, भगत जनां दी साची मंग, शब्द घोड़े कस तंग, नौ दुआरे पार लँघ, अमृत धार वहाए गंग आत्म धार। आत्म धार तेरा वेला, घर साचे आप वहांयदा। आपे वसे इक्क इकेला, दिस किसे ना आंयदा। दस्म दुआरी सच महल्ला, जलां थलां पार करांयदा। गुरमुख हथ्थ फड़ाए साचा पल्ला, रसना मेला इक्क करांयदा। दूई द्वैती मेटे सला, आपणा पला हथ्थ फड़ांयदा। सच दुआरे पए तरथल्ला, पंचम खिच लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए सच घर, नौ दुआरे चुक्के डर, ना जन्मे ना जाए मर, सद अतीता आपे आप रहांयदा। आप आपणे संग रलाया, अवर ना जाणे कोए, लक्ख चुरासी राह उपाया। आत्म सेजा आपे सोए, गुरमुख साचे रिहा जगाया। दूसर जीव ना जाणे कोए, साचा राह इक्क वखाया। अमृत बीज आत्म बोए, भरमां डेरा आपे ढाहया। दर दुआरे अग्गे होए, जोत निरँजण दरस दिखाया। शब्द सरूप प्रगट होए, शब्द सरूपी खेल रचाया। पवण सरूपी होए त्रै लोए, पवण सरूपी सर्ब समाया। नूरो नूरी जोत बलोए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, साचा राह इक्क चलाया। एका राह नाम अधार, भव जल पार उतारया। गुरमुखां देवे थाँ थाँ, प्रगट होए जगत मलाह वड वडा संसारया। शब्द सरूपी देवे साचा नां, चार वरनां परउपकारया। दिवस रैण ना करे नाँह, मंगण मंग जीव भिखारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, बंक द्वार द्वार बंक काया मन्दिर इक्क सुहा रिहा। काया मन्दिर इक्क बणाया। शब्द सिँघासण डेरा लाया। पवण सरूपी चँवर झुलाया। पृथ्वी अकाश विच समाया। घट घट वासन

३६१ ०५

सदा अबिनासन, आप आपणा भेख वटाया। भगत जनां हरि दास दासन, दर दर घर घर फेरा पाया। मानस जन्म करे कराए रास रासन, आवण जावण फंद कटाया। ना कोई दीसे मदिरा मासन, बत्ती दन्द ना मात लगाया। प्रगट होए घनकपुर वासन, शब्द सरूपी चन्द चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, अकाल अकाला दीन दयाला सर्ब प्रितपाला सदा सदा सदा होए सहाया। होए सहाई आप काया मन्दिरा। आत्म वज्जे वधाई, तोड़े जन्दरा। छत्ती राग भेव ना पाई, डूंघी कन्दरा। लक्ख चुरासी होई हलकाई, फिरे बन्दरा। चारों कुन्ट भेख वटाई, आपे बणे गोरख मच्छन्दरा। एका देवे नाम दुहाई, सोहँ साचे मन्दिरा। सोलां कला खेल वरताई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे दर दर घर घर, खेले खेल अन्दरे अन्दरा। अन्दरे अन्दर धार हरि रखाईआ। डूंघा सागर सिन्ध सार ना पाईआ। आपे वेखे काया गागर, तत्त विरोले सहिज सुभाईआ। गुरमुखां निर्मल कर्म होए उजागर, मिल्या मेल हरि रघुराईआ। वणज कराए नाम सुदागर, तन वज्जदी रहे वधाईआ। एका नाम रती रत्नागर, नूरी जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, गुर पूरा सर्ब बख्शिंदा कल्गी चीरा नाम तोड़ा शब्द घोड़ा जोती जोड़ा धुर दरगाही आया दौड़ा, लोकमात रखाया चौथा पौड़ा, कलिजुग जीव वेखे मिट्ठा कौड़ा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचा साखीआ, सुख सहिज सुभाए। मिले मेल अलखणा लाखीआ। रिहा बणत बणाए। शब्द गीत साचा भाखीआ, गुरमुख साचे रिहा सुणाए सदा सद करे राखीआ। दिवस रैण होए सहाए। आदि अन्त सगला साथीआ, विछड़ कदे ना जाए। लेखा लिखे धुर दरगाही मस्तक माथीआ, बिधना लेखा दए मिटाए। आपे रक्खे दे कर हाथया, सद सुहेला आप अख्वाए। मात चलाए अवल्लड़ी गाथीआ, सोहँ साचा नाउँ रखाए। गुरमुख चढ़ाए साचे राथीआ। अकाल मूर्त सुरत भवाए। लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्थया, नाद तूरती धुन उपजाए। जिउँ रामा घर दसरथ्थया, भेद अभेद आप छपाए। सर्बकला आपे समरथया, काहन कृष्न दिस ना आए। सृष्ट सबाई रिहा मथ्थया, निहकलंकी जामा पए, जन भगतां देवे एका साची सिख्या, सोहँ अजपा जाप जपाए। सगल वसूरा मात लथ्थया। दिवस सत्त रसन ध्याए। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले दर घर साचे कराए साचे मेले, लोकमात मार झात, आपे आप जगाए। शब्द भण्डार अडोल हरि वरताया। सच सिँघासण बैठा रिहा बोल, दिस किसे ना आया। गुरमुखां आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, दूई द्वैती तृष्ना भुक्ख गंवाया। नाम मृदंगा वज्जे सच्चा ढोल, अनाद अनादा राग सुणाया। मीत मुरार सद वसे कोल, आत्म सेजा आसण लाया। कलिजुग रैण अन्धेरी करे चोहल, शब्द तीर हथ्थ उठाया। सृष्ट सबाई

रिहा रोल, पंचां खेल रचाया। मनमुख सुत्ते रहे अनभोल, साची सेजा ना कन्त हंढाया। गुरमुख काया रिहा मवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द डण्डा देवे वर, धुर दरगाही लै के आया। नाम भण्डारा वंडे, दर दुआरे भेद किसे ना आया। कलिजुग आया अन्तिम कन्ढे, ब्रह्मा शिव सुरपति राजे कहि के आया। माण गुवाउँणा सोहँ साचे डण्डे, गुरमुख सचे नाल लै के आया। हेठ बिठाए धर्म झण्डे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, आदि अन्त गुरमुख आत्म होए ना रंडे, शब्द साचा नाद वजाया। सुणे सुणाए विच ब्रह्मण्डे, साचा खेल रचाया। जन भगतां देवे साची दाद, धर्म झोली रिहा भराया। जोत जगाए शब्द जणाए बोध अगाध, कर्म गोली रिहा बणाया। नर नरायण मेल माधव माध, चरम डोली रिहा उठाया। जूठा झूठा मेट मिटाए वाद विवाद, काया भोली भाली दए जगाया। सदा सुहेला आदि जुगादि, पूरे तोल रिहा तुलाया। दिवस रैण रक्खणा याद, सोहँ अक्खर जगत वक्खर एका एक पढ़ाया। दर दुआरा एका लैणा लाध, दूजा भरम रहे ना राया। आपे संत आपे साध, सति संतोखी विच समाया। हरिजन साची रसना लए अराध, शब्द मोखी बणत बणाया। धुर दरगाही एका दाद, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख भण्डारा आपे आप भराया। शब्द भण्डारा भर आसा पूरीआ। सच दुआरा एका दर, दरस दिखाए हाज़र हज़ूरीआ। इक्क नुहाए साचे सर, हउमे रोग दूरन दूरीआ। भरम भुलेखा चुक्के डर, प्रगट जोत नूरो नूरीआ। ना जन्मे ना जाए मर, सर्बकला आपे भरपूरीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, ना नेड़े ना दिसे दूरीआ। शब्द कराया वणज, गुर संसारया आपे लाहया पिछला करज, देवणहार हरि दातारया। दिवस रैण दोवें नैण गुरमुख साचे रहे तरस, देवे दरस अगम्म अपारया। मनमुख जूठे झूठे डोबे माया वहिण, एका भुले नर निरंकारया। जूठा झूठा नाता साक सज्जण सैण, वेले अन्त ना कोए सहारया। गुरमुख साचे साचा लाहा प्रभ दर लैण, मिले नाम वस्त अपारया। दूसर रसना किसे ना सके कहिण, गुणवन्ता गुण विचारया। कलिजुग वेख अन्धेरी रैण, जोती नूर करे उज्यारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचे शब्द करे जैकारया। सच शब्द जैकार, आप करन्नया। प्रगट हो विच संसार, भाण्डा भरमां आपे भन्नया। शब्द फड़े तेज़ कटार, मारे कर ख्वार आत्म अन्नया। गुरमुखां देवे नाम अधार, शब्द सरूपी कर प्यार, साचा राग सुणाए कन्नया। आत्म घर भरे भण्डार, लक्ख चुरासी उतरे पार, लोकमात राए धर्म ना देवे डन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, आदि अन्त जुगा जुगन्त काया खेड़ा बेड़ा बन्नया। काया खेड़ा अपर अपार, सगला साथया। पंचां करे तन शृंगार, पंचां बहाए साचे राथया। पंचां करे आप ख्वार। पंचां

३६४ लेखा लिखे मस्तक माथया। पंचां देवे देवणहार, पंच सुणाए सोहँ शब्द साची गाथया। पंचम रखाए पवण अधार, शब्द सरूपी इक्क उडार, आप रखाए सगला साथया। वेले अन्त ना करे हुदार, इक्क इकल्ला मीत मुरार, जलां थलां होए सहार, दासन दास त्रैलोकी नाथया। इक्क कराए वणज वपार, कलिजुग काला वेस उतार सोहँ शब्द फूलनहार, जगत चलाए साची गाथया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, पकड़ उठाए नौ नौं नाथया। नौ नाथ जगाए, शब्द हल्ला कराए, सोहँ साची गाथ सुणाए, अजपा जाप जगत जपा रिहा। दूसर किसे दिस ना आए, लक्ख चुरासी रिहा भुलाए, भरम भुलेखा पा रिहा। गुरमुखां मेला सहिज सुभाए, आप आपणा मेल मिला रिहा। होए सहाई सभनीं थाएँ, अट्ठे पहर सर्ब समा रिहा। आपे पिता आपे मांए, हरिजन साचे गोद उठाए, बेमुखां घर घर उडाए कांए, बोध अगाधा शब्द लिखाए, गुरमुख माणे ठंडी छाँए, पारजात आप बणा रिहा। वेले अन्तिम पकड़े बांहे, चरन नाती जोड़ जुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क जपाए साचा जाप, मेट मिटाए तीनो ताप, प्रगट होए आपे आप, साचा लेखा धुरदरगाही भेखा, काया चोली आत्म झोली आप भरा रिहा। काया चोली तन रंगाई, आत्म झोली भराईआ। साची डोली हरि सुहाई, शब्द गोली नाल बंधाईआ। कलिजुग बोली अन्त व्याही, पूरे तोल रिहा तुलाईआ। शब्द पड़दे रिहा खोल्ही, भेव अभेदा भेव ना राईआ। गुरमुख विरले काया एका मौली, फुल्ल फुलवाड़ी मात सुहाईआ। आप उलटाए नाभ कँवली, अमृत बूंद स्वांती मुख चुआईआ। मिले वड्याई उप्पर धवली, कृष्ना सँवला दया कमाईआ। लक्ख चुरासी होई बवली, रसन विकारा रिहा वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले लोकमात रिहा उपजाईआ। गुरमुख जगाए आप दया कमांयदा। साची सेवा इक्क लगाए, सोहँ मेवा मुख लगांयदा। देवी देव दया कमाए, अलख अभेवा खेल रचांयदा। रसना जिह्वा गाए, कौस्तक मणीआ थेवा मस्तक लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले सोए मात अन्तिम कलि आपे आप जगांयदा। उठे संत दुलारा, दया कमाईआ। बख्शे चरन प्यार, मिले वड्याईआ। अमृत आत्म बख्शे धार, काया ठंडी ठार कराईआ। हउमे हँगता रोग निवार, भरमां डेरा रिहा ढाहीआ। साची मंग इक्क अपार, नाम रंगत रिहा चढ़ाईआ। मंगत रहण दर द्वार, साची भिच्छया रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह रिहा वखाईआ। एका राह वखाए, वेख वखानया। दे मति रिहा समझाए, गुरमुख बाल अञ्याणया। पंज तत्त ना जाणे कोए, आप भुलाए राजे राणया। सर्बकला समरथ अखवाए, चले चलाए आपणे भाणया। साची वथ इक्क ल्याए, जन भगतां दर दरबानया। सोहँ साचे रथ चढ़ाए, धुर दरगाही धुर ३६४

०५ ०५

दी बाणया। पंजां चोरां नत्थ पवाए, डोरी आपणे हथ्थ रखाणया। जगत महिंमा अकथ वखाए, अकथनी कथ ना किसे वखाणया। सृष्ट सबाई मथ वखाए, सोहँ साचे नाम मधाणया। सीआं साढे तिन्न हथ्थ माण रखाए, आप आपणा जिस पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, रंग रंगीला माधव माध, दिवस रैण रहे अराध, आत्म सेजा साचे घर रंग हरि साचा माणया। गृह मन्दिर अपार तन सुहाया। काया वेख अन्धेरी कन्दर, झूठा जन्दर आप तुड़ाया। निर्मल जोत कर उजाली अन्दरे अन्दर, दीपक साचा रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी जगत ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन अनाहद एका रिहा वजाया। वज्जे नाद धुन, हरि साजन खोज खुजन्तया। गुरमुख गुरमुख रिहा चुण, पूरन जोत श्री भगवन्तया। सर्ब पुकार रिहा सुण, करे खेल आदिन अन्तया। लक्ख चुरासी छाण पुण, अन्दर बाहर बूझ बुझन्तया। गुरमुख जाणे आपे गुण, मेल मिलावा साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, जपत जाप जाप जपत अन्तर मिटाए काया बसंतर, ना लग्गे अग्गे तृष्ना तृप्तया। तृप्त तृष्ना अग्ग हरि बुझाईआ। दूई द्वैती लाहे जग, साची चोग रिहा चुगाईआ। मिटे अन्धेरा पक्ख, किशना सुखला जोती इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द उजाला मात कर, गुर गोपाला आप हरि, साचा जाप रिहा जपाईआ। जाप जपाए सञ्झ सवेर। आपे तारे कर कर आपणी मेहर। गुरमुख साचे शब्द प्यारे भगत उधारे ना लाए देर। नाम रंगण अपर अपारे, काया चोली एका वेर। पुरख पुरखोतम पाए सारे। बेमुख ढहि ढहि होणा ढेर। अगम्म अगम्मा हरि निरँकारे, आपे वसे नेरन नेर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत चुकाए मेर तेर। मेरा तेरा जाए चुक्क, शब्द जाप जपया। जूठ झूठ जाए रुक, आत्म तृष्ना ताप गया, काम क्रोधी मिटे दुख, वड प्रताप मात वेख्या। शब्द सरूपी साची गोदी लए चुक्क, सच सिँघासण इक्क वेख्या। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, लेखा भगत ना कोई लिख्या ना कोई पीवे नाड़, हुक, मदिरा मास दर दर घर घर कलि वेख्या। दाणा पाणी गया मुक्क, सतिजुग साचा मात धरया। जूठा झूठा फल गया टुट्ट, दूजी वार ना डाल्ह लगया। गुरमुख विरला पीवे अमृत आत्म घुट्ट, साचा ताल एका रक्खया। शब्द निराला तीर जाए छुट्ट, काल महांकाल कलि खेल बाजीगर नटयां। चोरां यारां कढ्ढे कुट्ट, आप आपणे नाल रक्खया। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, गुरमुख साचे संत जनां चरन सरन सरन चरन आपे आप रक्खया। बेमुखां जड़्ह देवे पुट्ट, अन्तिम चोग गई निखुट, हेर फेर ना कोई रक्खया। वहिंदे वहिण देणे सुट्ट, कलिजुग रैण अन्धेरी ना कोई बचया। जोती जोत सरूप हरि, रसना जाप इक्क जपाए, कोटन पाप रिहा गंवाए, आप आपणे रंग रतया। आप आपणे रंग रता। सृष्ट सबाई

देवे मता। सति संतोख शब्द धीरज यता। अन्तिम मोख प्रभ लोकमात रक्खे पता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे एका धुर दा वर, बीजे नाम सोहँ आत्म साचे वत्ता।

★ २६ कत्तक २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

शब्द रंगीला, पलँघ हरि बणाया। रंग रंगाया नीला, धरत मात उप्पर डाहया। सूरज चन्द सितार कर कर हीला, नाल रिहा लटकाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, लक्ख चुरासी वेखे वेखण आया। नूरी जोत कर अकार, अज्ञान अन्धेरा रिहा मिटाया। अकाशां पतालां मार ध्यान, सञ्झ सवेर इक्क करावण आया। आपे शब्द आपे ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म कर पछाण, साचा राग सुणावण आया। सर्ब घटा घट जाणी जाण, नेत्र नैण वेखे सरवण सुण सुण कान, साची सिख्या आत्म भिच्छया जोत निरँजण पावे सार, कलिजुग अन्तिम लेखा लिख्या। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, गुरमुख साची हरि हरि राखी अलखणा अलाखी वेले अन्तिम रक्खण आया। शब्द पलँघ अपार, हरि सजाया। रंगण रंग अपार, आपे रंगे हरि रघुराया। साची वस्त मंग विच संसार, चरन प्यारा हरि गिरधारा एका एक वखाया। देवणहार दात दातार, कुकर्म रिहा विचार, जन्म अजन्मा भेव ना राया। आपे बैठ करे विहार, सृष्ट सबाई पावे सार, भेद अभेदा भेद ना राया। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, साधां संतां आत्म तार, जीआं जन्तां जगती मार, भगत भगवन्ता खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, शब्द बैठ नर, जोत निरँजण डगमगारिहा। जोत निरँजण मात अकार, सभ घट पसारया। शब्द फड़े हथ्थ कटार, आपे उठे उठ बल धार, करे खेल अपर अपारया। तिक्खी धार अवल्लड़ी कार, ना कोई जाणे मीत मुरार, साधां सन्तां पासा हारया। कल्गी तोड़ा नाम दस्तार, सोहँ बाज अपर अपार, नीला घोड़ा सच्ची सरकार, आपणा आपे आप शृंगारया। चरन धरे विच रकाब, जोती जामा सच ज़नाब, प्रगट होए बिन बिन आब, जोती ताब ना कोई झला रिहा। ना कोई पुंन ना सवाब, लक्ख चुरासी दे अज़ाब, गुरमुखां मुख कँवल नाभ साचा अमृत आप चवा रिहा। इक्क वजाए तन रबाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठा हरि, गुर मन्त्र अन्तर जगत बसंतर तृष्ना अग्ग बुझा रिहा। शब्द सिँघासण हरि वड्याई। दया निध कृपाल गुर ठाकर साची बणत बणाई। ताल सुहाया काया गागर, अमृत जल हरि टिकाई। वणज कराए गुरमुख विरले नाम सुदागर, साचा हट्ट रिहा खुलाई। जगत अतोला बैठा इकागर, सृष्ट सबाई रिहा तुलाई। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे सत्त सागर, छाछ वरोले थांउँ थाँईं। जोत निरँजण होए उजागर, जन भगत

उठाए फड़ फड़ बांही। देवे नाम रती रत्नागर, काया रंगण रिहा चढ़ाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठ हरि जगत रचना रिहा रचाई। शब्द सिँघासण अडोल हरि बणाया। दर दुआरा साचा खोल्ह, साचे मन्दिर आपे डाहया। दूसर कोए ना वसे कोल, जोती शब्दी मेल मिलाया। साची सेजा करे चोहल, सच सुहेला इक्क अख्वाया। आप आपणे पड़दे रिहा फोल, मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहया। अनहद वज्जे सच्चा ढोल, आपे डण्डा रिहा लगाया। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत झिरना आप झिराया। शब्द सरूपी अन्दरे अन्दर रिहा मवल, दिस किसे ना आया। गुरमुखां देवे माण उप्पर धवल, जोती जामा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठ हरि, लेखा लिखणहार दातार आपे आप अख्वाया। शब्द सिँघासण बैठ लेख लिखांयदा। लक्ख चुरासी वेख रेख, भेव अभेद चुकांयदा। शब्द लगाए गुरमुख मस्तक साची मेख, ज्ञान अंजण नेत्र पांयदा। धर आया जोती जाम भेख, भरम भुलेखे आपे वेखे दिस किसे ना आया। मति मन बुद्ध ना जाणे कोई वसेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठ हरि, वरभण्डी वड पखण्डी भेखाधारी भेख न्यार, जोत निरँजण शब्द अपार, पवण अस्वार शब्द अस्वार, चारों कुन्ट वेख वखाया। शब्द सिँघासण इक्क निराला, हरि हरि साचे घड़या। लक्ख चुरासी कढ्ढे दवाला, साध संत ना कोई उप्पर चढ़या। भगत जनां हरि सदा रखवाला, अट्ठे पहर दर दुआरे खढ़या। ना हुनाला ना स्सयाला, अन्दर बाहर कदे ना वड़या। आपे चले आपणी चाला, आपे शाह आपे कंगाला, आपे चोर आपे डाकू, धाड़ धाड़वी आपे अग्गे हो हो लड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठ हरि, काया माटी भाण्डा काचा आपे आप घड़या। शब्द सिँघासण अडोल हरि अबिनाशया। गुरमुखां कर इक्ट्ठा, साचा तोल तोले ढाई भाग भार करा रिहा। नाम फड़या हथ्थ विच सत्था, चारे जुग चपाए रखाया। चारे कुन्ट लाहे सथा, सच्चा सथर हेठ विछाया। गुर पीर साध संत ना कोई मात टिकाए मथ्था, जोत सरूपी प्रगट हो हो आया। आपे पाए फड़ फड़ नत्था, शब्द डोरी नाल ल्याया। वेख वखाणे अठसठा, तट्ट किनारा कोई रहण ना पाया। आत्म अन्दर दसवें मन्दिर कवण वखाए नाम गट्ठा, नौ दुआरे फोल फुलाया। शब्द चढ़ाए ताप मट्ठा मट्ठा, सगन दिहाड़ा छब्बी पोह नेड़े आया। आत्म धीरज किसे रहण ना देवे मुट्ठा, दर दुआरे फेरा पाया। करे खेल इक्क इक्ट्ठा, भाणा सहिणा हुक्म सुणाया। भज्जया जाण ना देवे नट्ठा, तिन्नां लोआं इक्क उडारी आपणी आप रखाया। काया अग्नी चढ़या भट्ठा, माया तृष्ना झूठा बालण डाहया। पंज विकारी कर कर इक्ट्ठा, आत्म हँगता रोग वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठ हरि, दर दुआरा हरि निरँकारा, एका एक रिहा खुल्हाया। प्रभ

साचे बणत बणाईआ। महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। जीव जन्त सार ना पाईआ। साध संत भेव ना राईआ। सच महल्ला इक्क सुहाईआ। इक्क इकल्ला हरि रघुराईआ। पौड़ी ना कोई लगाईआ। भीड़ी सौड़ी इक्क गली वखाईआ। सुखमन मनमुख टेडा राह, सुरती सुरत गल पाए फाह, लँघ ना सके राईआ। गुर पूरा बणे विच मलाह, फड़ बांहों पार कराईआ। अग्गे दिसे सच्चा नां, साचा जाप जपाईआ। सच्चा नाउँ रखाए ठंडी छाँ, तृष्ना तप्त बुझाईआ। अगे दीसे सच्चा थांउँ, दर दुआरा बन्द कराईआ। ना कोई चिड़ी ना कोई कां, पसू पंछी सरवर तरवर दर दिस किसे ना आईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, कामधेन ना देवे कोई गां, शब्द सीर ना कोए प्याईआ। एका एक गुर पूरा शब्द सरूपी करे हां, कुंडा दए खुल्हाईआ। गुरमुख साचा वेखे एका एक अगम्म अथाह बेपरवाह, उच्च महल्ल अटल अचल्ल चार दिवार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा विचार, एका घर एका सर, एका दर एक हरि, ना जन्मे ना जाए मर, साचे अन्दर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आपणा घाड़न आपे ल्या घड़, नर निरँकारा इक्क अपारा, पसर पसारा दस्म दुआर महल्ल मुनार, जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणा ल्या उसार। भगत रचाया काज, गुर वधाईआ। सीस पहनाया साचा ताज, शब्द वड्याईआ।
३६८ सतिगुर साचा साजन साज, धुर दरगाही राज दवाईआ। आपे रक्खे सदा लाज, लज्जया आपणे हथ्थ रखाईआ। एका ३६८
०५ मारे अगम्मी आवाज़, आपे आप रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जोती मात धर, जन भगतां करे कुड़माईआ। ०५
हरिभगत सच्ची कुड़माई, आप करन्नया। पुरखोतम जोती इक्क प्रनाई, शब्द बन्न्हे हथ्थीं गानया। साचा मन्दिर इक्क सुहाई, ना कोई छप्पर ना कोई छन्नया। दीपक जोती डगमगाई, भाण्डा भरम आपे भंनया। दिवस रैण होए रुशनाई, करे प्रकाश आत्म अन्न्हयां। साची सेजा इक्क विछाई, फुल्ल सुहाए वंन सवंनया। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, जन भगत आत्म शक्त दए वड्याई। भगत सुहेला मीत, शब्द जवाल्या। अचरज चली अन्तिम रीत, कलिजुग काला वेख वखा ल्या। शब्द सुहागी साचा गीत, एका अक्खर हरि सिखा ल्या। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, पुरख निरँजण इक्क प्रीत, साचा मार्ग आपे ला ल्या। जगत दुहेला वक्त रिहा बीत, सच सुहेला आप मिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, आप आपणे रंग समा ल्या। भगत रंग रंगीन तन पटारीआ। फड़ फड़ आपे वक्खर कीन, लक्ख चुरासी खेल न्यारया। लेखा कटे माया तीन, खेले खेल शब्द जवाहरया। आपे दाता सूरा वड प्रबीन, नेड़ ना आए पासा हारया। हरिजन संत सदा मस्कीन, मंगे मंग दर भिखारया। दिवस रैण रसना रिहा चीन, मिले मेल नर निरंकारया। आत्म हरि ठंडा करे सीन, देवे दरस अगम्म अपारया। एका सुहाए टिका सीस, पारब्रह्म खेल खिला रिहा। जगत भन्ने हँकारी बीन,

शब्द मार हथौड़ा भारया। वेखे खेल रूसा चीन, संग मुहम्मद लग्गी यारया। साचे घोड़े कसे ज़ीन, होए अस्वारा शाह अस्वारया। जन भगतां होया रहे अधीन, देवे दरस अगम्म अपारया। गुरमुख विरला जिउँ जल मीन, अमृत मेघ आप बरसा रिहा। ना कोई जाणे जाण पछाणे ऊँच अस्माना मात ज़मील, त्रैलोकां भेव पसारया। आपे वसे रंग नवीन, महल्ल अटल इक्क उसारया। साढे तिन्न हथ्थ साची सीन, लाई मात सच्ची फुलवाड़ीआ। नौ दुआरे जगत अधीन, काया मन्दिर इक्क अपारया। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, आप चुकाए लैण देणा लोक लोका तीन। प्रभ देणा जन लहिणा लए, नाम वस्त अमोल। दर घर साचे मिल मिल बहे, आत्म कुण्डा एका खोल्ह। हरि हरि भाणा सिर ते सहे, दूसर अक्खर ना सके बोल। साचा राणा घर घर कहे, काया मन्दिर वज्जे ढोल। बेमुहाणा होणा कमला, कोई ना दिसे कोल। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, सभ दे पड़दे रिहा खोल्ह। पड़दा खोल्हे काया मट्ट। साचे कंडे हरि जी तोले, कवण दुआरे साचा पट्ट। आप अडोल कदे ना डोले, आपे जाणे घट घट। इक्क दुआरा साचा खोल्हे, ना कोई दीसे तीर्थ तट्ट। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, आप आपणी जोत बलोए, करे रुशनाए जगदी रहे लट लट। आपे आया आपे गया, साचे रंग रंगाया ए। आपे दित्ता आपे ल्या, आप आपणे संग समाया ए। आपे पिता आपे माया, पूत सपूता आपे जाया ए। आपे आप सर्ब समाया, आपे अन्दर आपे बाहर आया ए। जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, भुगत भगत रिहा बणाया ए। जगत जोत बलवान भगत अधारना। इक्क वखाए धर्म निशान, एका नाउँ रसन उचारना। ना कोई जाणे गुण ज्ञान, भेव अभेदा भेव निवारना। आपे तोड़े माण अभिमान, कारज कर्मा आप संवारना। आपे देवे पीण खाण, चरन धूढ़ सच्चा इशनान, आपे आप पार उतारना। गुरमुख साचे संत पछाण, देवे नाम गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, जगत जोती मात धर, देवे माण विच साध संत काज संवारना।

★ पहली मग्घर २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हरि जोत अगम्म अगम्म अगम्म अभेदया। हरि जोत अगम्म अगम्म अगम्म सार ना जानण चारे वेदया। हरि जोत अगम्म, ना मरे ना पए जम्म, ना लेखा लिखे क्तेब्या। हरि जोत अगम्म ना कोई पवण स्वासी दम, ना कोई गावे रसना जेह्वया। हरि जोत अगम्म, आपे जाणे आपणा कम्म, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त आदि पुरख निरँजण, अलक्ख अलक्ख अलक्ख अभेव्या। हरि जोत अगम्म सुन समाया। आपे जाणे जाण पछाणे आपणा कम्म, दो जहानी

तिन्नां लोकां खेल रचाया। मात पताल अकाश शब्द सरूपी रख थम्म्, ना हिल्ले ना सके कोई हिलाया। एका सच कर्म रक्खे मात धर्म, लक्ख चुरासी रिहा समझाया। काया माटी झूठा चर्म, घड़े भन्ने भन्नणहार अख्वाया। गुरमुख विरले साचा जरम, पूर्ब लहिणा शब्द गहणा हरि दरस तीजे नैणा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेख इक्क दर, दर साचा आप खुल्हाया। एका दर अकाल, जगत दरवाज्या। शब्द हरि उछाल, गरीब निवाज्या। मानस देही वेख काया डाल्, लक्ख चुरासी जिन साजन साज्जया। कोई शाह कोई कंगाल, नाम धन किसे विरले पास साचे लाल, कवण वजाए आत्म अन्दर साचे मन्दिर धुन अनाहद वाज्जया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, ना कोई सके सुरत संभाल, राज राजानां खाए काल, महांकाल प्रभ साजन साज्जया। जन भगतां मेला दीन दयाल, दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रगट जोत देसन माज्झया। आपे सुरती सुरत संभाल, शब्द सरूपी चले नाल, एका एक मारे अवाज्या। अमृत नुहाए आत्म साचे ताल, फ़ल लगाए काया डाल्, इक्क कराए दस्म दुआरी साचा हाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साच वेखे हरि, धुर दरगाही बेपरवाह आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता जोती जामा दर दुआरे नर निरँकारे, एका वारे विच संसारे, वेखे थांउँ थाँईं। सतिजुग साचे लाल दलारे, उठ उठ सुरत संभालीआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे, नठ्ठ नठ्ठ करे मात दलालीआ। एका देवे शब्द अपारे, मेट मिटाए कलिजुग रैण घटा कालीआ। चारों कुन्ट जै जैकारे, लोआ पुरीआं वेख विखालीआ। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे देवे वर, आपे आप करे प्रितपालीआ। सतिजुग साचे हो दलेर, प्रभ अबिनाशी जोत जगाईआ। कलिजुग काला चारों कुन्ट रिहा घेर, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। वेले अन्तिम ढहि ढहि होणे ढेर, ना कोई चुकाए मेर तेर, सञ्झ सवेर ना कोई रखाईआ। प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेर, कलिजुग तेरी अन्तिम वेर, सतिजुग साचा लए फेर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, राज राजानां शाह सुल्तानां नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी हरि जणाए। सत्तां दीपां रिहा सुणाए। इन्द्र ब्रह्मा शिव हिलाए। करोड़ तेतीसा रहण ना पाए। जटा जूट धार प्रभ जोत मिलाए। ब्रह्मा चारे मुख छुपाए। ओंकारा भेख वटाए। जोत निरँजण आप जणाए। पुरख अबिनाशी साचा सज्जण, गुरमुख साचे लए उपजाए। आपे कराए चरन धूढ़ साचा मजन, मस्तक टिक्का नाम लाए। वेले अन्तिम आया पड़दे कज्जण, सोहँ साचा मात धराया। साचे ताल शब्द सरूपी साचे मन्दिर वज्जण, राग छतीस भेव ना पाईआ। आपे वेख वखाए मक्का काअबा हाजी हज्जण, कुरान अञ्जील दए दुहाया। गुरमुख साचे संत सुहेले एका आत्म मध दर दुआरे पी पी रज्जण, जगत तृष्ना दए बुझाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक्क इकेला दो जहानीं साचा मेला विच विचोला शब्द रखाया। शब्द विचोला जग हरि रघुराया। गुरमुख हँस बणाए कग, साची रंगण रिहा चढ़ाया। एका बन्ने आत्म तग, दूसर सके ना कोए तुड़ाया। आप बुझाए तृष्ना अग्ग, निझर झिरना रिहा झिराया। चरन कँवल कँवल चरन जन जाए लग्ग, नौ दुआरे बन्द कराया। दरस दिखाए वड दाता सूरा सरबग, आप आपणे रंग समाया। बेमुख पकड़ पछाड़े शाहरग, कलिजुग लेखा रिहा लिखाया। गुरमुख संग जोती जाए मघ, अज्ञान अन्धेर रिहा मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस हरि, सतिजुग साचा दए मात उपजाया। सतिगुर साजण मीत, सर्ब सुहेलया। एका बख्शे चरन प्रीत, आपणा मेल आपे मेलया। दिवस रैण परखे नीत, बैठा रहे इक्क इकेलया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, भेव चुकाए गुरू चेलया। मानस देही लैणी जीत, होए मात वक्त सुहेलया। ना कोई मन्दिर ना मसीत, ना कोई बणे सच सुहेलया। कलिजुग वेला रिहा बीत, अचरज खेल मात हरि खेलया। लक्ख चुरासी हस्त कीट, अन्तिम जाए धर्म राए दी जेल्हिआ। गुरमुख साचे चरन प्रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वखर रंग नवेलया। रंग नवेला इक्क, गुरमुख जाणया। प्रभ मिलण दी साची सिक, नाम शब्द इक्क वखानया। आत्म मिटे तृष्ना तृख, मिले भिख गुण निधानया। साची सिख्या लैणी सिक्ख, कलिजुग जीव अन्धानया। पंच विकारी चढ़ी काया विक्ख, ना कोई लाहे विच जहानया। एका एक जन भगत टेक, शब्द सरूपी साची मेख लाए मस्तक हरि भगवानया। मेट मिटाए बिधना रेख, देवे वड्याई आत्म दर वजे वधाई, गुर पूरे बूझ बुझाई, हरिजन रिहा आप पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ बन्ने शब्द साचा हथ्थीं गानया। शब्द तन श्रृंगार, हरि कराया। पूर्ब कर्मा कर विचार, साचा लहिणा आप दवाया। गुरमुख साचा कर त्यार, तीजे नैणां पड़दा लाहया। आपे पाए आत्म सार, लहिणा देणा मूल चुकाया। निर्मल जोती कर अकार, अज्ञान अन्ध रिहा मिटाया। उपजे शब्द सच्ची धुन्कार, धुन नाद अनादा रिहा वजाया। आपे कर सोलां श्रृंगार, साचे आसण डेरा लाया। माया रूपी चार दिवार, शाहो भूपी आसण लाया। नौ दुआरे जगत भिखार, दसवां दिस किसे ना आया। सुखमन नाड़ी डूंघी भवर चुभ्भी मार, साधां संतां जन्म गंवाया। ईड़ा पिंगल रहे पुकार, दिवस रैण दए दुहाया। सुन अगम्मी साची धार, शब्द पवणी खेल रचाया। पवण चले अपर अपार, आर पार पार आर कोई जीव ना जाणे राया। शब्द उठे एका धाड़, साचे मन्दिर इक्क सितार, वज्जदी रहे वाहो दाहया। पुरख निरजंण जोत अकार, दसवें सुत्ता पैर पसार, गुरमुख विरले कुण्डा लाहया। देवे दरस अगम्म अपार, शब्द सरूपी भुजा पसार, गुरमुख साचे गोद उठाया। चारे दिशा वेख विचार,

एका नूर सति सरूर सर्बकला भरपूर, साचे धाम आप सुहाया। पंचम पंचम पंचम तन चोर, दस्म दुआरीउँ दिसण दूर, नेड़ कोई ना आया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरले आसा मनसा पूर, देवे दरस हाज़र हज़ूर, नाद वजाए सद सच्ची तूर, रूप रंग रेख भेख वेख रसना कहि ना सके राया। महल्ल अटल अचल्ल आप उसारया। काया मन्दिर डूंघी डल, जीव जन्त ना पाए सारया। जोती जगे हरि परबल, अट्ठे पहर करे उज्यारया। पंच पंचायणी वल छल, दर दुआरा हरि खुला रिहा। गुरमुखां दूई द्वैती मेटे सल, एका राह हरि वखा रिहा। रसना शब्द चलाए हल, सोहँ साचा बीज बिजा रिहा। फल लगाए काया डल, अमृत मेवा नाम वखा रिहा। इक्क प्याए अमृत आत्म साचा जल, तृष्ना अग्न बुझा रिहा। साचा दीपक जाए बल, गुर शब्दी मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, साचे मन्दिर बैठ दर, घर एका एक वसा रिहा। हरि घर वस्सया सच महल्लया। पंच विकारा जाए नस्सया, बैठा दिसे इक्क इकलया। मिट्टे रैण अन्धेरी मस्सया, लग्गे भाग जल थलया। जगत चलाए रीत, हरि प्रधानया। कलिजुग औध गई बीत, वेखे श्री भगवानया। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, सभ दे खाली दिसण खानया। गुरुदुआरे परखे सभ दी नीत, मनमुखां तन मन अन्दर मुक्का खाणा दाणया। एका एक शब्द चौह अक्खर जगत वक्खर सोहँ सुहागी गीत, जपे जपावे वाली दो जहानया। सतिजुग तेरी साची रीत,
३७२ ना कोई जाणे चतुर सुघड़ स्याणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पकड़ उठाए राज राजानया। राज ३७२
०५ राजानां लए उठाई, प्रभ साचे बणत बणाईआ। चारों कुन्ट पई दुहाई, साध संत कोई दिस ना आईआ। कलिजुग रैण ०५
अन्धेरी छाँईं, दिस ना आए साचा माही, वणज वपारा बणत बणाईआ। हरि पकड़ उठाए फड़ फड़ बांही, लैण ना देवे ठंडीआ छाँईं, जीव जन्त रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, छब्बी पोह वेख हरि, आपणा भाणा शब्द राणा, आपणे हथ्थ रिहा रखाईआ। साचा भाणा हथ्थ रखाउँणा ए। राजा राणा पकड़ उठाउँणा ए। छब्बी पोह दिवस मनाउँणा ए। काला वेस हरि कराउँणा ए। दर दरवेश आप अख्वाउँणा ए। खुल्ह्ड़े केस आप रखाउँणा ए। दर दरवेश दिस ना आउँणा ए। सोहँ खण्डा आपणे हथ्थ रखाउँणा ए। आप चलाए चण्ड प्रचण्डा, मेट मिटाए शाह सुल्तानां, अन्तिम वंडा पाउँणा ए। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, प्रभ अबिनाशी पाए वंडां, सत्तां दीपां वंड वंडाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रसन कमान उठाउँणा ए। रसन चिल्ला हरि चढ़ाया ए। वेख वखाणे बूरा कक्का बिल्ला, राज राजानां रिहा हरि सुणाया ए। ना कोई दीसे उच्चा टिल्ला, मन्दिर माड़ी रिहा ढाहया ए। गुरमुख साचा सज्जण सुहेला, आप कराए आपणा मेला, गुर साचे आप मिलाया ए। कलिजुग मेट मिटाए

रैण अन्धेरी अन्ध, कवण तीर शब्द इक्क चलाउँदा ए। सति पुरख निरँजण आप आपणी बणत बणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, एका सरन लगाउँदा ए। कलि साचा भेख वटईआ ए। इक्क चलाए साची नईआ ए। भगत जनां प्रभ साचा सज्जण सईआ ए। बेमुखां होए अन्त, अन्त प्रभ डूंघी धार वहईआ ए। ना कोई गुर ना कोई चेला, साध संत ना कोई भार उठईआ ए। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भाणा आप वरतईआ ए। हरि भाणा बलवान, किसे ना जाणया। प्रगट होए वाली दो जहान, लोकमात करे पछाणया। मेट मिटाए जीव शैतान, ना कोई दीसे बेईमानया। मेट मिटाए अंज़ील कुरान, वेद पुराण खाणी बाणी भेव चुकानया। एका झुल्ले शब्द निशान, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिखे लेख लक्ख चुरासी वेख, जोती जामा धरया भेख, वाली दो जहानया। हरि लेखा आप लिखाउँणा। धुर साची कार कमांयदा, राणा संगरूर पकड़ उठाउँणा। शब्द सरूपी धार वहांयदा, शाह पटयांला सोया मात जगाउँणा। शब्द खण्डा सीस लगांयदा, छब्बी पोह दिवस सुहाउँणा। साची वंडा आप वंडांयदा, वाली हिन्द दर द्वार दरस दिखाउँणा। आप आपणा कर्म कमांयदा, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे सच वर, सोहँ झण्डा शब्द डण्डा विच ब्रह्मण्डा एका एक लगाउँणा। सोहँ खण्डा कर त्यार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। करे खेल विच नव खण्डां, दहि दिशा नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बन्न्हे धार। बन्न्हे धार सर्ब सुखदाया। ना कोई जाणे जन्त गंवार, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। चरन कँवल प्रभ साचे कर निमस्कार, साचा लेखा आप सुणाया। सोलां कर तन शृंगार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सोहँ शब्द भण्डार साचा लेख आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे वर, लोकमात उपजाया। कलिजुग मेट मिटाए तीनो ताप्या। सतिजुग सांतक सति वरताए, इक्क जपाए सोहँ सच्चा जाप्या। दूसर कोई रहण ना पाए, सतिजुग होए वड परताप्या। ब्रह्मा ब्रह्म पुरी समाए। निहकलंक जोत मात प्रगटाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना आपे रिहा रचाए। आपे राज जोग सुल्ताना, आपे बणत बणांयदा। आपे चतर्भुज भगवाना, आपे भेख वटांयदा। आपे शब्द जोत मेहरवाना, आपे पवण स्वास रखांयदा। आपे पंचम तत्त बिध नाना, अट्ठां तत्तां विच समांयदा। चवींआं तत्ता बन्न्हे गाना, पंझीआ मस्तक जोड़ जुड़ांयदा। नौवां दरां इक्क निशाना, लोकमात हरि वखांयदा। दसवें बैठ आप जोत निरँजण करे आपणा कामा, दिस किसे ना आंयदा। आपे राम रहीमा रामा, कृष्ना काहना आप अख्वांयदा। आपे मति बुध देवे साचा चामा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। आपे लक्ख चुरासी करे सुजाना, आपे मारे आप

उपांयदा। आपे जोगी जटा जूट धार साधन संतां करे कामा, आदिन अन्ता भेव कोई ना पांयदा। आपे वज्जे जगत दमामा, वेखे खेल भगत निमाणा, कलिजुग रैण अन्धेरी निहकलंक कलि पाई फेरी, साचा वेला आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख दर, मात आप जगांयदा। गुरमुख साचा मात जगाया, प्रभ साचे दया कमाईआ। आप आपणी सरन लगाया, पूर्ब लहिणा दए दवाईआ। आपे तोड़े हँकारी वज्जा जन्दर, भाग लगाए डूंघी कन्दर, अज्ञान अन्धेर रिहा मिटाईआ। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, हरि वडा शाहो भूपा सति सरूपा सच घर आसण बैठा लाईआ। ना कोई रंग ना कोई रूपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रिहा समाईआ। आपणे रंग समाए, सर्ब समालया। सच्चा नाम मृदंग वजाए, मेट मिटाए कलिजुग तेरी अन्तिम घटा कालीआ। अमृत आत्म साची गंग वहाए, गुरमुख साचा आत्म तीर्थ एका एक नुहाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, जगत कटे भुक्ख नंग, शब्द घोड़े कस तंग, दिवस रैण करे रखवालीआ। नौ दुआरे जाए लँघ, शब्द सरूपी वेख पलँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क दुआरा वेख हरि, करे खेल नर हरि बनवालीआ। कलिजुग जीव जाग, रैण वहाईआ। कलिजुग जीव जाग, माया ममता फिरे हलकाईआ। कलिजुग जीव जाग, ना कोई साक सज्जण सैण दिस आईआ। कलिजुग जीव जाग, पुरख अबिनाशी चरनी लाग, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। कलिजुग जीव जाग, हँस बण काग, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। कलिजुग जीव जाग, धो दुरमति मैल दाग़, प्रभ साचा रिहा धवाईआ। कलिजुग जीव जाग, आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत धार रिहा वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राग इक्क सुणाईआ। कलिजुग जीव जाग, वक्त दुहेलया। कलिजुग जीव जाग, भगत सुहेलया। कलिजुग जीव जाग, कर मेलया। कलिजुग जीव जाग, नेत्र वेख गुरू गुर चेलया। कलिजुग जीव जाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी चाढ़े तेलया। कलिजुग जीव जाग, कलि दुहाईआ। कलिजुग जीव जाग, वल छल सृष्ट भुलाईआ। कलिजुग जीव जाग, भेख बावन बल, सार कोई ना पाईआ। कलिजुग जीव जाग, पुरख अबिनाशी हथ्थ पकड़े वाग, चारों कुन्ट रिहा भवाईआ। कलिजुग जीव जाग, मिले मेल कन्त सुहाग, आत्म उपजे एका राग, पंज चोर देण दुहाईआ। कलिजुग जीव जाग, वज्जे धुन साचा नाद, शब्द जणाए बोध अगाध, अगाध बोधा आप अख्वाईआ। कलिजुग जीव जाग, प्रभ अबिनाशी माधव माध, दिवस रैण रसन अराध, दु:ख दर्द रहण ना पाईआ। कलिजुग जीव जाग, मिटे जगत वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खोल्हे सच दर, आत्म तृष्ना बूझ बुझाईआ। आपे शाह रूस सुल्तान। आपे रूस चीन जपान। आपे

शाह अबनूस कोहिस्तान। जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणा भेख कर, वेख विखाए इंग्लिस्तान। आपे आप शाह ईरानी। खेले खेल शब्द दुरानी। चले तीर एका कानी। होए वहीर बेमुहानी। आए सीर हथ्थ ना पाणी। बालक छुट्टे सीर, चारों कुन्ट आए हानी। राज राजानां लथ्थे चीर, साथ छुट्टे हाणीआं हाणी। शेख मसाइक रौंदे पीर फकीर, रहे धीर ना किसे विद्वानी। कोई ना बन्ने मात बीड़, कलिजुग अन्तिम आई भीड़, मेट मिटाए शाह अफगानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द ताज सीस हरि एका रक्खे आपणी आणी। शब्द ताज सच्ची सरकार। आप संवारे आपणा काज, मात पताल अकाश ख़बरदार। सोहँ उडे साचा बाज, मेट मिटाए चार यार। करे खेल देस माझ, जोती जोत सरूप हरि, ना कोई पुरख ना कोई नार। शब्द सीस सीस शब्द शब्द नाम दस्तगीर, चारों कुन्ट इक्क जगदीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, बीस इक्कीस खेल अपार। ना कोई कुरान ना कोई हदीस, ना कोई गाए राग छतीस, पुरख अबिनाशी साची कार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, आपे पावे आपणी सार। शब्द ताज सीस टिकाया। सीस ताज जगदीश रखाया। जगदीश आस बीस इक्कीस रखाया। बीस इक्कीस आस गुरमुख रखाया। गुरमुख प्रभास डेरा लाया। मात पताल अकाश हरि हरि हरि जन शब्द स्वास आत्म रास काया मण्डल आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमाया। सोहँ छत्र सीस करतार। सत्तर बहत्तर भगत अधार। चौदां भवन गवण सवण रवण उतरे पार। उनन्जा पवण मिटे अवण कवण खेल मेल नर निरँकार। धार भेख बवन दाता दुष्ट दमन, गोबिन्द इन्द रवि चन्द संग सितार। गोबिन्द सिन्ध शब्द बिन्द नंद चन्द नंद विच संसार। मृगिन्द हिन्द बख्शिंद वड बलकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख अपार। गोबिन्द हरि हरि गोबिन्दा, अचरज रचन रचाईआ। आप बणाए आपणी बिन्दा, पित मात आप अख्वाईआ। वड दाता गुणी गहिंदा, गुणवन्ता गुण ना राईआ। आपे मेटे आपणी चिन्दा, सगल चिन्दा रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निन्दक निन्दया रिहा लगाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुर उपाया। गुर गोबिन्द गोबिन्द जन्म लेखे लाया। बख्शिंद बख्शिंद बख्शिंद कर्म धर्म धर्म कर्म पारब्रह्म ब्रह्म पार विच मात कराया। वरन बरन पुण छाण अठारां सरन इक्क रघुराया। नौ अठारां वसे बाहरा, तीस बतीसा ना गणत गिणाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, काया मन्दिर गुरूद्वार शिवदवाला ठाकर ना कोई मनाया। आपे जोती शब्दी पवणी अमर, आपे हवन गवन विच संसारा, आपे रूप रंग भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, पूर्ब लहिणा वेख हरि, सम्बल नगरी डेरा लाया। सम्बल नगरी वड वडभाग। पुरख अबिनाशी गया जाग। घट घट वासी शब्द वैराग। मदिरा

मासी जगत त्याग। शब्द स्वासी आप बुझाए तृष्ना आग। मानस जन्म करे रहिरासी, हँस बणाए काग। पकड़ उठाए पंडत कांसी, दीपक जोती ना जगे किसे चिराग। चार वरन कराए चरन दासी, मस्तूआणे लाए भाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख धर, जन भगतां बन्ने तन शब्द ताग। सम्बल देस रुत्त सुहाई, होए रुत्त बसंता। पुरख अबिनाशी जोत जगाई, साचे घर वज्जी वधाई, मिल्या मेल नारी कन्ता। मिटे रैण अन्धेरी छाही, सतिजुग साचे चन्द चढ़ाई, सोहँ साचा राह वखंता। आपे तारे फड़ फड़ बांही, अन्त विछोड़ा होए नाही, मिल्या मेल पूरन भगवन्ता। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, जन भगतां देवे ठंडीआं छाँई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जगत पछाणे संत असंता। संत असंत वेख संसार, आत्म खोज खुजाईआ। नौ दुआरे कवण यार, कवण दसवें बूझ बुझाईआ। भरमे भुल्ले भरम गंवार, माटी चरमे मन चित लाईआ। दूई द्वैती वरमे आर पार, कुकर्मी कर्म रिहा कमाईआ। गुरमुख विरला जन्मे विच संसार, गुर पूरे साचे सूरे हाज़र हज़ूरे जिस एका ओट रखाईआ। आपे करे कराए निहकरमे, निहकरमा आपणी जोती मेल मिलाईआ। नाम रखाए साचे धर्मे, धर्म निशाना हरि हथ्थ फड़ाईआ। ना मरे ना जन्मे, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द ताज देस माझ आपणे सीस रखाईआ। सम्बल देस लेख लिखाया। गुर गोबिन्दे भेख वटाया। गुणी गहिंदे धरत मात वेख रेख, आपणा संग निभाया। आपे जाणे धारी केस, वेख वखाणे गुर दस्मेस, हरि हरि साची दया कमाया। हरि हरि जोती विच प्रवेश, नर नरायण वेख वखाणे माणक मोती बाल जवानी अल्लूड़ वरेस, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा वेस। समरथ हथ्थ वड्याईआ। करे वेस अनेक, जन भगत दए चतुराईआ। आपे रखे आपणी टेक, जिन आपणा संग रखाईआ। तिस वेखे वेकी वेक, सगला साथ निभाईआ। आपे रहे सदा बिबेक, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणे घर, जुगा जुगन्तर वेस एक अनेक। हरिभगत ओट हरि रखाईआ। दिवस रैण शब्द चोट, काया नगारे वज्जदी रहे वाहो दाहीआ। साचे शब्द ना आवे तोट, देंदा रहे पुरख सबाईआ। देवे वड्याई विच कोटन कोट, कोटी कोटा जन्म भवाईआ। दुरमति मैल कढ्ढे खोट, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द भण्डारा रखे अतोट, तोट कदे ना आईआ। आप निभाए आपणा संगा, हरि हरि सगला साथया। नाम वजाए शब्द मृदंगा, रघुनाथया। दर दुआरा जिस जन मंगा, देवे दात अकथना काथया। कंचन बंचन बंचन कंचन होण ना देवे भंगा, चढ़े चढ़ाए शब्द सच्चे राथया। कदे ना होवे भुक्खा नंगा, लेखा लिखे मस्तक माथया। चिट्टे अस्व कसे तंगा, पुरीआं लोआं आपे लँघा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा

भेख धर, जन भगतां वेस इक्क कर, आप निभाए दया कमाए आपणा साथया। सुरत सवाणी होई बौरानी, मन चैंचलहारा ए। जूठी झूठी चढ़ी जवानी, पंचम मिल्या मीत मुरारा ए। शब्द ना वज्जा तीर निशानी, ना होए आरा पारा ए। पढ़ पढ़ थक्के वड विद्वानी, ना पावे कोई सारा ए। जोती जोत सरूप हरि, एक अक्खर दस्से साची बाणी, फड़ाए हथ्थ सच्ची कटारा ए। सुरती सोई मन मनुआ जागया। दुरमति मैल ना कोई धोई, लग्गी रहे तृष्ना आज्ञा। आपे आप पुरख निरँजण सोई, सच दुआरे आवे भागया। करनी किरत जो पिच्छे होई, प्रभ धोए आपे दागया। सुरत निमाणी हरि दर रोई, हरि हँस बणाए कागया। मनूए मिले ना पंचम ढोई, प्रभ बन्ने शब्दी तागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चुकाए दूजा डर, एका एक सरन सरनाई लागया। मन खेले खेलणहार, नौ दरवाज्जया। सुरती सुरत करे विचार, किरपा कर अपर अपार, दर दुआरे बणी भिखार, गरीब निवाज्जया। जूठा झूठा वणज वपार, पंजां तत्तां किया अधार, वेले अन्तिम पैणी मार, काया काअबा दर दुआबा, ना कोई कराए साचा हाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे शब्द वर, जगत मिटाए झूठा डर, साची तरनी जाणा तर, हरन फरन खुल्हे दर, एका घर वसाए दया कमाए रक्खे लाज्जया। सुरत मन मन सुरत शब्द डोर दर पाईआ। साचा राग सुणना कन्न, पंचम चोर नेड़ ना आईआ। एका बेड़ा लैणा बन्न, अन्ध घोर दए मिटाईआ। भाण्डा भरम लैणा भन्न, दूसर भेव ना कोई रखाईआ। एका मिले नाम धन, ठग्ग चोर ना कोई उठाईआ। साध संत ना देवे कोई डन्न, गुणवन्त दया कमाईआ। जाए चढ़ साचा चन्न, दिवस रैण होए रुशनाईआ। रसना जिह्वा कहे धन्न धन्न, धन्न जणेंदी माईआ। हरिजन आत्म जाए मन्न, चित्तवत्त ना ठगोरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन आसा जगत भरवासा दे शब्द दिलासा, लोकमात पूर कराईआ। काल महांकाल काल अकाला। दीन दयाल सर्ब प्रितपाल, आपे करे मात प्रितपाला। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, फ़ल लगाए काया डाल्हा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सुरत संभाल, शब्द सरूपी चले नाला। लोकमात ना होए कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे इक्क वर, सोहँ सच्चा धन माला। धन ख़जीना काया अन्दर। वड प्रबीना दिसे अन्दर। अमृत आत्म जाम देवे भीन्ना, बज़र कपाटी तोड़े जन्दर। नेड़ ना आयण ताप तीना, भाग लग्गे डूंघी कन्दर। हरिजन सांतक सति सरूपी ठांडा सीना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, जिउँ थल जल जल मीना। जल मीना थल हलकाईआ। थल मीना सार ना पाईआ। हरिजन जन हरि आत्म भन्ने हँकारी बीना, एका राग हरि सुणाईआ। पंचां चोरां वक्ख कीना, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। वरन बरन एका दीना, ज़ात पात

३७७
०५

भेव मिटाईआ। छब्बी पोह सुभागी महीना, गुरमुख साचा दर्शन पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद सद मेहरवान, अट्ठे पहर नौजवान, बिरध बाल जवान अञाण होए सदा सहाईआ। सिर हथ्थ समरथ, गुरमुखां नत्थ पकड़े आपणे हथ्थ, साध संत दए मथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, आए दर सच्ची सरनाईआ। इक्क चढ़ाए शब्द रथ, मिली वस्त वर अकथ, वेख वखाए थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द मधाणे रिहा मथ, गुरमुख साचे संत जन पार कराए फड़ फड़, शब्द घोड़े चढ़, अन्दरे अन्दर वड़, शब्द सरूपी दोवें बांहीआ। चढ़े घोड़ शब्द सरकार। शब्द जोती जोत निरँकार। प्रभ अबिनाशी पए बौहड़, वेले अन्तिम अन्तिम वार। धुर दरगाही आए दौड़, लेख लिखाए विच संसार। आपे वेखे मिट्ठा कौड़, मन्दिर अन्दर सच द्वार। ना कोई जाणे लम्भा चौड़, जोत निरँजण ब्राह्मण गौड़, देस वेस अपर अपार। हथ्थ फड़े शब्द हथौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, लक्ख चुरासी जम की फाँसी उतरे पार। पंचम नाता जाए तुट। तीर निराला जाए छुट्ट। ना कोई वेखे ज़ातां पातां, मनमुख जीवां जड़्ह रिहा पुट्ट। जन भगतां देवे अमृत बूंद सवातां एका घुट। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, पंजां चोरां कढ्ढे कुट्ट। आपे तोड़े भरम गढ़। साचे अन्दर जाए वड़। शब्द सरूपी उप्पर चढ़। वेख वखाए किल्ह्रा कोट गढ़। हरिजन पछाणे इक्क लगाए चोट, कढ्ढे खोट ना कोई सीस ना कोई धड़। जोती जोत सरूप हरि, छाणे पुणे विच्चों कोटन कोट दर दुआरे अग्गे खड्ड। तन मन काया मौले, होए रुत्त बसंतीआ। मिले वड्याई उप्पर धवले, प्रभ साची चोग चुगंतीआ। उलटी होए नाभ कँवले, अमृत मेघ हरि वसंतीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए साचे कन्तीआ। जैह कन्ता तैह नार सुहागण। बणे बणता मन भए बैरागण। मिले मेल आदिन अन्ता, गुण गुण गुण सोए जागण। जोती जोत सरूप हरि, देवे वड्याई जीव जन्तां, हँस बणाए कागण। काग हँस शब्द मोती। आत्म जगे जगत भगत जोती। चरन कँवल जन साचा लग्गे, दुरमति मैल जाए धोती। आपे होए पिच्छे अग्गे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ शब्द फड़ाए लोकमात साची सोटी। सोहँ सोटी दए हुलारा। खिच्ची जाए विच संसारा। आप वखाए पार किनारा। नौ दुआरे वसे बाहरा। दस्म दुआरा महल्ल न्यारा। महल्ल अटल उच्च मुनारा। दीपक जोती साची रही बल, बहत्तर नाड़ी कर उज्यारा। जगत तृष्ना रही सड़, मिले मेल पुरख भतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप फड़ाए आपणा लड़, आवण जावण पतित पावण पार किनारा। जगत जोग अपार हरि चलाया। रसना भोग अधार कर्म कमाया। ना होए विजोग संसार धर्म धराया। देवे दरस अमोघ, भरम चुकाया। शब्द चुगाए चोग, मानस जन्म लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणा रंग वखाया। शब्द जोत अपार तन रंगाया। आपे जाणे साची सार, साचा राग कन्न सुणाया। निर्मल जोती दे अधार, निहों नैणां इक्क लगाया। पवण घोड़े हो अस्वार, शब्द जोड़े मेल मिलाया। सति दुआरे आया बाहर, जोत निरँजण भेख वटाया। छेवें वेख सच्ची सरकार, शब्द साचा संग रलाया। पंचम खोल्हे बन्द किवाड़, पवण पवणी हरि समाया। चौथे घर बैठ दातार, लक्ख चुरासी बणत बणाया। लक्ख चुरासी पसर पसार, आप आपणा आप छुपाया। जुगा जुगन्तर साची कार, भेख भेखी धरदा आया। सतिजुग त्रेता द्वापर कर विचार, आप आपणे अंक समाया। कलिजुग काला करया किरत विहार, वेखे खेल हरि रघुराया। निहकलंका लए अवतार, शब्द डंका इक्क रखाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, द्वार बंका इक्क सुहाया। जोत जगाए वासी पुरी घनका, बार अनका अन भाया। आप मिटाए जगत शंका, जोती तनका इक्क लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दर इक्क खुल्हाया। सच दुआरा एक इक्क अकालया। दोए धारां रिहा वेख, सर्ब जीआं करे प्रितपालया। तीजे लोचन रंग वसेख, ना कोई दीसे घटा कालीआ। चौथे घर भगत जन टेक, संत सुहेले सुन समालीआ। पंचम बैठे आप बिबेक, दोवें हथ्थ रक्खे खालीआ। छेवें माया अग्न ना लाए सेक, साचा शब्द करे रखवालीआ। सत्तवें सत्त पुरख निरँजण एक, इक्क अकाल मूर्ति सुरत सबाईआ। अठवें अट्ठां तत्तां रिहा वेख, मन मति बुध नाल रखाईआ। नावें दर दर करे भेख, जगत तृष्ना मंगे बण सवालीआ। दसवां दर साचा घर गुरमुख विरला नेत्र लोचण लए पेख, जगे जोत इक्क अकालीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेखे परखे फ़ल लग्गा केहड़ी डाल्हीआ। दस्म दुआरा एक हरि वसाया। नावें दर कर कर भेख भरम भुलाया। अठवें अट्ठे नेत्र ब्रह्मा रिहा वेख, जोती जामा भेख वटाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण टेक, शिव शंकर सीस झुकाया। छेवें छप्पर छन्न ना वेख, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द जिथ्थे बहाया। पंचम सभ नूं बैठा रिहा वेख, दिस किसे ना आया। चौथा घर चौथा पद, गुरमुख साचे लए सद, एका राग रिहा सुणाया। तीजे दर मिले वर, नौ अठारां रिद्ध सिद्ध भरमे भरम भुलाया। दूजे दर मिटे डर, बिधना बिध रेखा लेखा दए मिटाया। पहले घर ना जन्मे ना जाए मर, तीर्थ नुहाए साचे सर, गुर पूरे हाज़र हज़ूरे चरनी सीस निवाया। पहला घर अपार, दर दरवाज्जया। दूजे वेख सच्चा दरबार, साजन साज्जया। तीजे कर हरि शृंगार, नेत्र नैण कज्जल पाज्जया। चौथे अमृत भर भण्डार, जन भगतां मारे अवाज्जया। पंचम बैठ सच्ची सरकार, शब्द सुहाए सीस ताज्जया। छेवें घर धुनी धुन्कार, नाद अनाहद वज्जे वाज्जया। सत्तवें निर्मल जोती कर अकार, आप आपणा साजन साज्जया। अठवें उठ उठ वेख विचार, दहि दिशा रिहा भाज्जया। नौवें नौ दर आई हार, कलिजुग

काले कवण रखे लाज्जया। दसवें धर्म शब्द जैकार, पवण उनन्जा छत्र झुलार, बवन्जा अक्खर जगत वक्खर आपे रिहा जणाया। दस्म दुआर जणाई, शब्द घनघोरया। नौ वड़े पंज चोर, मचायण शोरया। अठवें कोई ना पकड़े डोर, चढ़के शब्द घोड़या। सत्तवें सति पुरख अगम्मा ना दीसे कोई होर, आदि अन्त एका बहुड़या। छेवें चुक्के मोर तोर, जूठा झूठा भरमा डेरा रोड़या। पंचम घर साचा दर, शब्द सुहेला नाल देवे तोर, आपे जाणे जाण पछाणे, आप आपणी लोड़या। चौथे घर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क लगाए साचा पौड़या। चौथा घर साचा पौड़ा, जोत निरँजण लाया। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, जगत नैण दिस ना आया। चिट्टा अस्व शब्द घोड़ा चुक्के पौड़ा, कलिजुग अन्तिम हिस्सा ए वंडाया। धुर दरगाही आया दौड़ा ब्राह्मण गौड़ा, ईसा मूसा विच उनीसा दए मिटाया। भगत जनां तन लग्गी औड़ा, आपे परखे मिट्ठा कौड़ा, बीस इक्कीसा हरि जगदीसा दन्द बतीसा ना कोई सके गाया। इक्क शब्द इक्क हदीसा, एका छत्र सोहे सीसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, आपणा खेल खिलाया।

★ २ मग्घर २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल सालां दी वंड जगत काज ★

३८० ०५

इक्क दस अकादसी, आत्म तन श्रृंगार। दो दस प्रभ भावसी, करे वेस अपार। त्रै दस प्रभ जावसी, दर दिल्ली दरबार। चार दस प्रभ गावसी, काम कामनी होए ख्वार। पंज दस प्रभ गावसी, चारों कुन्टां दए हुलार। छे दस प्रभ ढावसी, महल्ल अटल अचल्ल उच्च मुनार। सत्त दस प्रभ भावसी, नगर शहर होए उजाड़। अट्ठ दस हरि सुहावसी, रसना गाए रूसा धाड़। नौ दस वक्त सुहावसी, अल्ला राणी काली चुन्नी देवे पाड़। बीस बीस दस दस बीस सुख पावसी, शब्द घोड़ा इक्क अखाड़। बीस इक्कीसा हरि रखावसी, सोहँ सच्चा रखाए लाड़। लक्ख चुरासी आप प्रनावसी, दर दुआरे लेवे वाड़। एका हुक्म हरि सुणावसी, शाह सुल्तानां देवे झाड़। ना कोई बोले हिन्दी उर्दू फारसी, आप चलाए आपणा ताड़। गुरमुख विरले दर दर घर घर हरि हरि साचा तारसी, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप वड वड धाड़ धाड़ धाड़सी। दस एक एका हीआ, प्रभ साचे आप कराया ए। दो दस कलि साचा जिया, गुरमुख विरले पिया पाया ए। त्रै दस लोकमात रखाए साची नीआ, वाली हिन्द रिहा जगाया ए। चार दस साढे तिन्न हथ्थ रखाए नीआ, राजे राणयां हुक्म सुणाया ए। पंज दस किसे दिस ना आए घर घर सींआ, प्रभ आपणा आप भुलाया ए। छे दस लेखा मिटे जन्तां जीआं, राह खहिड़ा दिस ना आया ए। सत्त दस वज्जे तीर कस, चारों कुन्ट होणा भस्स, अग्नी जोती रिहा

लगाया ए। अट्ठ दस अठारां, लेखा चुक्के चार यारां, संग मुहम्मद मूंह छुपाया ए। नौ दस उनी, अल्ला राणी लए चुन्नी, काला वेस दर दरवेश प्रभ अबिनाशी कलिजुग लाहया ए। बीस बीसे चोटी मुन्नी, ना कोई पंडत पाधा दिसे मुस्लिम सुनी, ज़ात पाती भेव मिटाया ए। इक्क इक्कीसे वड गुण गुणी, पंच पंचायणी साची चुणी, पंच ज्ञाना पंच ध्याना पंच निशाना, पंचम पंच रखाया ए। इक्क दस दस इक्क ग्यारां, अकार हरि कराया ए। दो दस शब्द जैकारा, सतारां हाढ़ी तेल चढ़ाया। तिन्न दस दस तिन्न वेख शब्द साची धारा, वाली हिन्द रिहा जगाया। चार दस ख़बरदारा, मारे मार हरि रघुराया। पंज दस नर नारा, ना होए कोई सहाया। छे दस सगल पसारा, आपे मेटणहार हरि अख्वाया। दस सत्त सतारां, ना कोई दीसे मात बहारां, उजाड़ पहाड़ एका धार रखाया। अट्ठ दस अठारां, लाड़ी मौत लए बहारां, लक्ख चुरासी मदिरा मासी धर्म राए फड़ फड़ बाहों आपे रिहा वखाया। नौ दस उनीसा, राज राजानां खाली खीसा, माया राणी वड जरवाणी किसे ना देवे ठंडा पाणी, चारों कुंट सृष्ट दृष्ट इष्ट हलकाईआ। बीस बीसे होए भृष्ट, कलिजुग तेरी औध मिटाईआ। इक्क इक्कीसा होए सृष्ट, जोती जोत सरूप हरि, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत डगमगाईआ। इक्क दस दस इक्क जगत अखाड़या। दो दस दस दो लाया भाग सतारां हाढ़या। दस तिन्न तिन्न दस अस्सू तिन्न सुहाए दिहाड़या। चार दस दस चार धर्म राए आपे ताड़या। पंज दस दस पंज मौत लाड़ी करे शृंगारया। छे दस दस छे नारी खौंत खौंत नारी ना कोई हंढा रिहा। सत्त दस दस सत्त, ना कोई रक्खे किसे पति, मावां पुत्तरां सुरत भुला रिहा। दस अट्ठ अट्ठ दस राज राजानां शाह सुल्तानां नठ्ठ नठ्ठ प्रभ दर किसे ना पा ल्या। नौ दस दस नौ वधाई, एका एक डंक राउ रंक वजाई, होए खेल विच संसारया। बीस बीसे सरन रघुराई, तरनी तरन आप अख्वाई, धरत मात आप वड्आ रिहा। इक्क इक्कीसे होए रुशनाई, जगत जगदीसे मिले वधाई। पीसण पीसे सर्ब लोकाई, साची रचना आप रचा रिहा। सतिगुर सूरा शाह है, सर्ब जीआं दातार। सर्बकला भरपूरा है, वरते विच संसार। ना होए बचन अधूरा है, लेख लिखाया अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। साजण साचा मीत, आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वेखे रीत, दिस किसे ना आंयदा। आपे होए पतित पुनीत, कन्त सुहाग आप अख्वांयदा। आपे साजण साचा मीत, आपे मात पित अख्वांयदा। आपे राज जोग रसना रस भोग शब्द तार संगीत, तार सतारा आप अख्वांयदा। आपे पतित आपे पुनीत आपे सांतक साचा सीत, ठंडी धार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दर दरबान आप अख्वांयदा। दर दरबाना आप अख्वांयदा। जन भगतां सेव कमांयदा। जगत

नैणां दिस ना आंयदा। तीजे लोचन आप रहांयदा। गुरमुख तेरी काया अन्दर साचे मन्दिर आपणी सेजा इक्क विछांयदा। आपे मारे चारों कुन्ट हँकारी जन्दर, मनमुख जीव ना कोई तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जन दर घर एका आप बहांयदा। कर मेला संत प्यारया, रैण सुहञ्जणी रात। साची सेजा कन्त भतारया, मिल्या मेल कमलापात। अज्ञान अन्धेरा सर्ब मिटा रिहा, आप बंधाए आपणा नात। सञ्झ सवेर इक्क रखा रिहा। अट्ठे पहर रहे प्रभात। मेरा तेरा हरि जी चुका रिहा, आपे पिता आपे मात। दरस घनेरा इक्क वखा रिहा। बैठा रहे इक्क इकांत। सच वसेरा इक्क रखा ल्या, अमृत देवे बूंद स्वांत। नेरन नेरा आप अख्वा ल्या, हरि जन वेखे मार झात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चारों वरनां इक्क वर, आपणा आप भुला रिहा। चार वरनां इक्क द्वार, प्रभ साचे मात खुल्हाया ए। देवे शब्द अपर अपार, भरया रहे सदा भण्डार, देवणहार हरि रघुराया ए। गुरमुख साचे संत विचार, पाए डोरी शब्द अपार, खिची आए वारो वार, आपणे रंग समाया ए। आपे कन्त भतारा नार, आपे साजण मीत मुरार, साची सेजा आसण लाया ए। आपे चरन गुर प्यार, आप गुरमुख नाउँ रसन उचार, दोहां धिरां मेल मिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, एका दर खुल्हाया ए। एका दर द्वार हरि खुल्हाया ए। चार वरनां कर प्यार, साचा राह वखाया ए। आपे देवे शब्द अधार, दूसर वथ ना कोई रखाया ए। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा मगरों लाहया ए। नेड़ ना आयण पंचम यार, शब्द डोरी हथ्थ फड़ाया ए। दहि दिशा वेख विचार, साचे मन्दिर डेरा लाया ए। शब्द वजावे साची तार, राग रागणी भेव ना पाया ए। पवण स्वासी होए बाहर, सुन अगम्मी बाहर रखाया ए। जोत निरँजण आपे जम्मी, मात पित ना कोई अख्वाया ए। दस्म दुआरी शब्द सरूपी लाए थम्म्ही, छपर छन्न ना कोई वखाया ए। भरमां भाण्डा रिहा भन्नी, दर दुआरे जो जन आया ए। साचा राग सुणाए कन्नीं, धुर फ़रमाणा लै के आया ए। गुरमुखां बेड़ा जाए बन्न्हीं, आपणे कंध उठाया ए। ना कोई जाणे राज राजान शाह सुल्तान वड धन धनी, गरीब निमाणयां गले लगाया ए। गुरमुख साचे संत दुलारे इक्क सुनेहड़ा हरि जी घल्ले, सोहँ अक्खर जगत वखर आपे आप पढ़ाया ए। आपे आपणा बेड़ा बन्न्हे, बजर कपाटी पाटे पत्थर, पंच पंचायणी लथ्थे सथ्थर, साची दया कमाया ए। नैण वरोले झूठे अथ्थर, अमृत धार ना कोई मुख चुआया ए। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख निरँजण भेख अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा सच महल्लड़ा आसण लाया ए। दर दुआरा एका मल्लड़ा, शब्द रखे साचा भल्लड़ा, तिक्खी धार रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, गुरमुख

सोए रिहा जगाया ए। गुरमुख सोए आप जगाए, आत्म दर खुल्लाया ए। आप आपणा राह वखाए, साचा घर वसाया ए। दूसर किसे दिस ना आए, भरमा जगत भुलाया ए। गुरमुखां हिस्सा इक्क कराए, नौवां बन्द कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल दर, दस्म दुआरी मेल मिलाया ए। मिल्या मेल श्री भगवान, दस्म दुआरया। मिटे आवण जावण विच संसारया। झुल्ले शब्द सच्चा निशान, कर किरपा पार उतारया। आप बिठाए विच बिबाण, शब्द उडाए इक्क उडानया। लोआं पुरीआं करे बाहर, शब्द सिँघासण इक्क वखानया। ल्याए दर सच्चे दरबार, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। लक्ख चुरासी वहिन्दी धार, पुरख अबिनाशी ना किसे पछानया। गुरमुख साचे संत दुलार, मिल्या मेल मीत मुरार, चले चलाए आपणे भाणया। मनमुख रोवण धाहां मार, पुत्तर मावां कर प्यार, ठंडीआं छावां विच संसार, ना देवे कोई किसे पाणीआ। हरिजन तेरी कुड़माईआ। प्रभ साचा सगन मनाईआ। दोहां धिरां वज्जे वधाईआ। दिवस रैण मंगलाचार, फूलन बरखा हरि जी लाईआ। इन्द्र मेघ रिहा बरसाईआ। शंकर शिव कंठ माला इक्क पहनाईआ। मुख उग्घाड़े दिन दिहाड़े रिहा गाईआ। पुरख अबिनाशी तेरे साचे लाड़े, लोकमात मिले वड्याईआ। फड़ फड़ बाहों घोड़ी चाढ़े, शब्द घोड़ा इक्क रखाईआ। साची पुरीआं आपे वाड़े, साची बणत रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

३८३ ०५ कर, बाल अञ्याण देवे वर, करोड़ तेतीसा पढ़े हदीस, सोहँ अक्खर दे मति रिहा समझाया। करोड़ तेतीसा एह जणाया ३८३ ०५

ए। छोटे बाले एह समझाया ए। पुरख अबिनाशी जामा पाया ए। घनकपुर वासी दया कमाया ए। निहकलंका नाउँ रखाया ए। द्वार बंका इक्क सुहाया ए। बार अनका जोत जगाया ए। एका डंक शब्द वजाया ए। राउ रंकां रिहा सुणाया ए। पुरीआं लोआं रिहा हिलाया ए। इन्द इन्द्रासण फड़ उठाया ए। सच सिँघासण दिस ना आया ए। करोड़ तेतीसा दए दुहाया ए। दन्द बत्तीसा राग ना गाया ए। नारद मुन आप समझाया ए। राग छतीसा जिन सुणाया ए। जूठा झूठा पीसण पीसा, पारब्रह्म ना दर्शन पाया ए। वेखे खेल बीस इक्कीसा, आपे माया आपे छाया ए। दर दुआरे झुल्ले छत्र सीसा, त्रैलोकी नाथ आप अखवाया ए। कोई ना करे मात रीसा, आप आपणा भेख वटाया ए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंग रंगीला रागन रागा जगत त्यागा शब्द सुहागा गीत एका कन्न सुणाया ए। साचा शब्द सुणाए वड जणाईआ। वेख वखाए थांउँ थाएँ, शब्द तीर इक्क चलाईआ। चारों कुन्ट उडे कांए, शब्द नीर हथ्थ ना आईआ। ना कोई पकड़े किसे बांहे, पीर फ़कीर मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप समझाए दया कमाए दे दे मति आप आपणी गोद उठाईआ। आपणी गोद उठाए, हरि रंग रतया। साचा संग निभाए,

वा ना लगे तत्तया। आप आपणे रंग समाए, देवे धीरज यति जतया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप समझाए दे दे मतया। किशना जगत पसारया, पक्ख पखवाड़ा मात। मात दीसे पासा हारया, ना मिले सच्ची दात। साची दात पुरख अपारया, चरन कँवल सच्चा नात। चरन नाता जन्म अधारया, मिले वस्त इक्क सुगत। सच सुगात बाल अञ्याणया, मिट्टे दुक्खां अन्धेरी रात। आप आपणी दया कमा ल्या, आपे वेखे मार झात। गुरमुख चात्रक तृष्ना अग्न बुझा ल्या, अमृत देवे बूंद स्वांत। अमृत जाम इक्क पिला ल्या, दरस दिखाए इक्क इकांत। इक्क इकांत हरि जन जानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन बंधाए साचा नात। गुरमति गुरसिख सिख्या, गुर दर पूरन पा। मिले नाम वस्त सच भिच्छया, दुरमति मैल गंवा। सदा सहेला पूरन करे इच्छया, साचा मेला लए मिला। मिल्या मेल धुर दरगाही लिख्या, ना सके कोई छुडा। आत्म लाहे दूई द्वैती विखिआ, अमृत आत्म जाम प्या। जगत मिटाए झूठी तृख्या, धीरज सति संतोख धरा। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, भाण्डा भरम दए भना। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन साचा एका दर, आपे करे कराए मात परीखिआ। जगत जगदीसे जोत जगाई, दिस किसे ना आया। बीस इक्कीसे रचन रचाई, कलिजुग करन आया कुड़माई, ईसा मूसा दए दुहाई, धर्म राए दर वज्जी वधाई, अठाई कुंढां कुण्डा खोल्ह्या। लक्ख चुरासी वेख वखाणे थांउँ थाँईं, पड़दा उहला रहे ना राया। गुरमुख साचे संत सुहेले फड़ फड़ उठाए बांही, शब्द चोला तन पहनाया। सदा सुहेला रखे ठंडीआं छाँई, सोहँ ढोला इक्क सुणाया। दर घर मेला चांईं चांईं, वक्त दुहेला मात चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द भाणा हरि सुल्तानां आपणे हत्थ रखाया। भाणा हत्थ करतार, भेद अभेदया। लोकमाती पावे सार, अछल अछेदया। लक्ख चुरासी गई हार, जूठ झूठ वैहन्दी धार, पढ़ पढ़ थक्के वेद कतेब्या। गुरमुख विरला संत दुलार, रसना गाए गुण हरि हरि जेहवया। गुरमुख विरला साची नार, मिले मेल पुरख भतार, एका सेजा ब्रह्म विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म शब्द तीर एक विध्या। पारब्रह्म ब्रह्म मेल पार किनारया। इक्क चलाए साचा धर्म विच संसारया। सतिजुग साचे तेरा कर्म, पुरख अबिनाशी आप विचारया। एका एक रखाए साचा वरन, वरन अवरना लेख लिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग लेख वेख हरि, आप आपणे रंग समा रिहा। आप आपणे रंग समाए, शाह सुल्तानया। भेख मिटाए वाली दो जहानया। रमईआ रामा शब्द दमामा इक्क वजाए, जन भगतां आत्म बन्ह्रे साचा गानया। कलिजुग लक्ख चुरासी एका तामा आप बणाए, राए धर्म दर बहानया। ना कोई नगर शहर ग्रामा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३८४
०५

जोत धर, भाणा राणा सुघड़ स्याणा एका एक वखानया। हरि भाणा बलवान, शब्द जणाईआ। शब्द गुर मेहरवान, सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई जिया दान, देवणहार हरि रघुराईआ। हरि रघुराई कर पछाण, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा श्री भगवान, नौं दुआरे दिस ना आईआ। नौ दुआरे जगत दुकान, आत्म तृष्ना फिरे हलकाईआ। आत्म तृष्ना बेईमान, काहना कृष्ना दिस ना आईआ। काहना कृष्ना जोत महान, वेद अथर्बण रिहा चलाईआ। वेद अथर्बण वेख निशान, अल्ला राणी दए दुहाईआ। अल्ला राणी नौजवान, संग मुहम्मद रही जगाईआ। संग मुहम्मद वड बलवान, चार यारां सद रखाईआ। चार यार कर ख्वार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द धार सीस रखाईआ। शब्द धार अपर अपार, चारों कुन्ट वारो वार, मारे मार अपार, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख सुहेले साचे संत लए उभार, शब्द जोती कर प्यार, चरन नाता पुरख बिधाता इक्क बंधाईआ। रूप अगम्मा पावे सार, हड्ड मास नाड़ी चम्मा आप सुहाए दर दरबार, नौ दुआरे बन्द कराईआ। दसवें दरस तरस करतार, अमृत आत्म मेघ देवे बरस, हउमे तृष्ना आत्म मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग लेख वेख हरि, आप आपणे रंग समाईआ। आप आपणे रंग समाए, रंग अनूप्या। लोकमात दिस ना आए, वडा शाहो भूप्या। कलिजुग हिस्सा इक्क वंडाए, अन्ध अन्धेरा अन्ध कूप्या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, हरिजन साचे खोल्ह दर, दरस वखाए सति सरूप्या। सति पुरख सति सरूप सति सतिवादया। वेख वखाणे मानस देही उलटा बृख, शब्द जणाए बोध अगाध्या। जन भगत मिटाए आत्म तृष्ना तृख, शब्द सुहेला एका लाध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, इक्क वजाए शब्द नाद सोहँ साचा नादया। शब्द नाद अपार हरि वजांयदा। चार वरनां एका दाद, पार करांयदा। मेल मिलावे माधव माध, धर्म जैकार विच संसार पहली वार आपे आप वखांयदा। सोलां कर तन श्रृंगार, गुरमुख साचे कर प्यार, शब्द सिँघासण आप बहांयदा। जोती नूर कर अकार, शब्द गुण भरपूर सच्ची सरकार, शब्द तूर अमृत धार, ठंडी ठार आप वहांयदा। नर नरायण खेल अपार, तीजे नैणा भगत अधार, महल्ल अटल साचे बहिणा, पूर्ब जन्म लहिणा लैणा मिले मेल पुरख भतार। अन्तिम कलिजुग भाणा सहिणा, लक्ख चुरासी वहिण वहिणा, नाता तुट्टे भाई भैणां, ना कोई दीसे साक सज्जण सैणा, गुरमुख रहणा ख़बरदार। गुरमुख शब्द जगाए, जगत गुर जागया। एका चोट तन लगाए, हउमे खोट जाए भागया। कोटन कोट फिरन हलकाए, ना कोई सुणाए अनहद रागया। ना कोई चोली रंग चढ़ाए, शब्द मिले ना साचा ताज्जया। साची डोली कवण उठाए, कलि पड़दा किसे ना काज्जया। साची गोली आप बणाए, जिस जन तेरा साजन साज्जया। कलिजुग तेरा बोली आप व्याहे, तख्तों

लाहे राजन राज्जया। अगम्म अगम्मा भेद अभेदा रिहा खोल्ही, चारों कुंट पए भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, धुर दरगाही जगत मलाही साचा शाहो लोकमात आया भागया। लोकमात प्रधान, भगत भगवानया। धर्म झुलाए इक्क निशान, वाली दो जहानया। सृष्ट सबाई एका आण, खाण पाण आप वखानया। मेट मिटाए बेईमान, ना कोई दीसे जीव शैतान, खाणी बाणी वेद पुराण अंजील कुरान पुणया छाणया। ज्ञानी ध्यानी मार ध्यान, पंडत पांधे पुण छाण, मुल्हां शेख़ मुसायक पीर गल पायण झूठी गानीआ। गुरमुख गुरमुख गुरमुख, एका एक पछाण। मैल धोए दुरमति, देवे नाम शब्द बिबाण। आप सुहाए काया रुत्त, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, दीपक जोती जगे महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग रेख वेख हरि, साचा शब्द करे प्रधान। गुर मन्त्र शब्द अपार, भगत जणाईआ। प्रभ साचा बिध जाणे अन्तर, हरि घट में रिहा समाईआ। आप बुझाए लग्गी तन बसंतर, आत्म तीर्थ तट्ट इशनान कराईआ। बणे मात जग साची बणतर, घट घट दर्शन पाईआ। मनमुख विछोड़ा जुगा जुगन्तर, गुरमुखां वक्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक देवे नाम वडी वड्याईआ। हरि शब्द अपार मिटाए रोग संताप्या। हरि शब्द विच संसार, अजपा जाप जप जप मन जाप्या। जगत तृष्ना रोग दए निवार, मेट मिटाए तीनो ताप्या। आत्म खोल्हे बन्द किवाड़, हरिजन जाणे आपन आप्या। नेड़ ना आए पंचम धाड़, होए शब्द वड प्रताप्या। दर घर साचे देवे वाड़, हरि जन थापन साचा थाप्या। आपे होए पिछे अगाड़, सदा सहाई बाप्या। वेखे परखे मिट्टे कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, कलिजुग पाप रिहा काप्या। मति मन बुध निरगुण रचन रचाईआ। सरगुण आवे सुध, सुरती सुरत हिलाईआ। सुरती सुरत होवे सुध्ध, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। तन मन अमृत आत्म रस गुध्ध, सीतल धारा ठंडी ठारा अमृत आत्म आप वहाईआ। शब्द घोड़े बहिणा कुद्द, पंच पंचायणी झूठा युद्ध, प्रभ साचा लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत संताप देवे हरि, आप आपणा संग निभाईआ। संगी साथी सगला साथ। हरि रघुनाथी त्रैलोकी नाथ। मस्तक लेखा लिखे माथी, शब्द चढ़ाए साचे राथ। कथना अकथ कथ कथ काथी, आप चलाए आपणी गाथ। लहिणा देणा चुक्के बाकी, आत्म खोल्हे शब्द बोले झूठी ताकी, लहिणा देणा तीजे नैणा शब्द गहणा हाथो हाथ। शब्द भण्डारा एक हरि वरतांयदा। जगत वरतारा एक, एका आपे आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई वेखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे धारे आपणा भेख, भेखाधारी आप अख्वांयदा। दर दुआरे ब्रह्मा विष्न महेष, दर दरवेश सेवा लांयदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, जोत सरूपी डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

३८७ ०५

आप आपणी जोत धर, लोकमाती बणत बणांयदा। लोकमात बणत बणाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म उपाया, पारब्रह्म वड वडी वड्याईआ। आप आपणा कर्म कमाया, जीव जन्त ना जाणे राईआ। लक्ख चुरासी विच समाया, वेख वखाणे थांउँ थाईआ। आप दिस किसे ना आया, गुरमुख साचे पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहींआ। जुग सताई भेखाधारी भेख धरदा आया, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम अन्त एका डंक रिहा वजाईआ। एका डंक राउ रंक चार वरन हरि सुणांयदा। हरिजन वड्याई जिउँ भगत जनक, बार अनक दरस दिखांयदा। जोत सरूपी लाए तनक, शब्द सरूपी पकड़ उठांयदा। प्रगट होए वासी पुरी घनक, सच दुआरा नर निरँकारा एका एक वखांयदा। इक्क दुआरा खोल्ह भरम भउ कटयां। पूरा तोल प्रभ तोल, दूई द्वैती मेटे फटयां। गुरमुख आत्म रहे अडोल, भाग लगाए काया मट्टया। एका एक सुणाए वजाए शब्द सच्चा ढोल, सोहँ ताल लग्गे साची सट्टया। दस्म दुआरी पड़दा खोल्ह, नज़री आए हरि हर घट घटयां। माणक मोती लैणे रोल, आत्म सोमा अमृत एका चट्टया। पुरख अबिनाशी वसे कोल, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तटयां। चरन प्रीती घोली घोल, मिले मेल शब्द दलाल, काया मन्दिर साचे अन्दर, चौदां लोक एका हट्टया। जगत जोग प्रभ हथ्थ, जन भगत वड्याईआ। हउमे रोग देवे मथ, चरन प्रीती इक्क वखाईआ। पंजां चोरां पाए नत्थ, काया कीती बैल सबाईआ। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, पंच पंचां दया कमाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, काया अन्दर मन्दिर दर्शन पाईआ। चढ़े चढ़ाए साचे रथ, दर घर साचा धाम सुहाईआ। महिंमा जगत कथना अकथ, लेखे लिख ना कोए लिखाईआ। सर्बकला आपे समरथ, घट घट में रिहा समाईआ। सर्बकला समरथ हरि भगवानया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, वाली दो जहानया। देवे शब्द साची वथ, आत्म जोती ब्रह्म ज्ञानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, सोहँ शब्द जगत भगत निशानया। जगत भगत निशान, हरि झुलांयदा। आपे जाणे जाणी जाण, दूसर कोई भेद ना पांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, गुरमुख सोए मात उठांयदा। आप बिठाए शब्द बिबाण, उडारी इक्क लगांयदा। लोआं पुरीआं मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख संत सुहेले आपे आप मिलांयदा। मिल्या मेल हरि बनवारी, आत्म ब्रह्म पछानया। जगत जोत इक्क निरँकारी, साचा धर्म जगत निशानया। संत सुहेले आप उठाए वारो वारी, देवे नाम धन धन नाम गुण निधानया। निर्मल जोती कर अकारी, शब्द सुणाए साचा राग नर नरायणा। हउमे हँगता कढु बिमारी, देवे दरस जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती इक्क ध्यानया। इक्क ध्यान इक्क ज्ञान इक्क बिबाण रखाणा ए। शब्द उडाए जगत उडान, लोआं पुरीआं बाहर रखाणा ए। प्रगट जोत सरूप हरि, आप

३८७ ०५

आपणे विच समाना ए। सोहँ झुल्ले सच निशान, प्रभ साचे हथ्थ उठाणा ए। ना कोई कोट किल्ह़ा गढ़ मकान, साचे मन्दिर आप टिकाणा ए। ना कोई दीसे पंज शैतान, ना कोई हदीसे अंज़ील कुरान, ना गाए बतीसे वेद पुराण, खाणी बाणी भेव छुपाउँणा ए। ना कोई जाणे राज राजान, भरमे भुल्ले शाह सुल्तान, माया पड़दा हरि हरि पाउँणा ए। गुरमुख साचे चतुर सुजान, चरन कँवल हरि इक्क ध्यान, रंगण रंग नाम रंगाउँणा ए। दो जहानी खेल महान, ब्रह्मा शिव होए हैरान, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द दर दरवाजे अन्त पछुताउँणा ए। प्रगट होए हरि मृगिन्द, चारों कुन्ट दीसे निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराउँणा ए। गुरमुख उपजे साची बिन्द, प्रभ सागर सिन्ध धार विहाउँणा ए। संत सुहेले साचे चुण, धुनी नाद उपजाए साची धुन, अनहद साचा राग सुणाउँणा ए। आपे जाणे गुण अवगुण, बज़र कपाटी साची हाटी आप पड़दा लौहणा ए। जगे जोत काया माटी, लेखा लिखे धुर ललाटी, औखी घाटी आप चढ़ाउँणा ए। मिले सरोवर अमृत आत्म तीर्थ ताटी, गुरमुख साचे सच इशनान कराउँणा ए। दुरमति मैल घर साचे काटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस दिखाउँणा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड वरवंड वंड आप कराया। काया मन्दिर अन्दर नव खण्ड नौ दुआरे संग रलाया। सुरत सुहागण सदा रंड, साचा कन्त ना कदे हंढाया। गुर शब्द देवे सीतल धार साची ठंड, आप आपणी दया कमाया। गुरमुख

३८८ पल्ले बन्न्हे नाम गंढु, रसना रस रसक गुण गाया। गुर पूरा करे आप आपणी वंड, जीव जन्त सार ना पाया। पंचां चोरां ३८८

०५ देवे दंड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आया। जगत मिटाए भेख पखण्ड, साचा गेड़ा इक्क वखाया। मनूआं खेल ०५

करे ब्रह्मण्ड, सुरती सुरत ना पाया। नौ दुआरे जगत विकारे विच वरभण्ड, सृष्ट सबाई फिरे हलकाया। गुर पूरे गुर शब्द हथ्थ फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, पहरेदार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे आत्म दर साचा राह वखाया। मन सुरती सुरत भवाया। गुर पूरा दया कमाया। साचा सूरा सेवा लाया। हाज़र हज़ूरा सर्ब सुखदाया। नौ दुआरे राह हधूरा, साचा राह इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, इक्क विखाए सच दर, नौ दुआरे बन्द कराया। शब्द सुरत शब्द गुर अधार। गुर शब्द सुरत पार। सुरत शब्द हरि करतार। हरि करतार पावे सार। आपे खिच्चे करे विचार। ईड़ा पिंगला ख़बरदार। सुखमन टेडी नाड़ अन्ध अंध्यार। डूंघी गहर ना उतरे पार। सुरती सुरत करे पुकार। कवण दुआरा निरँजण जोत, निर्मल निरवैर करे अकार। लेखा चुक्के वरन गोत, शब्द वजे एका तार। दुरमति मैल झूठी धोत, गुर शब्द करे पार। आपे खोल्ह़े आपणा सोत, गुर शब्द दरस गुर रूप अनूप सरूप अपर अपार। करे प्रकाश हरि वडा शाहो भूप, राग नाद अनाहद धार। जोती जोत सरूप हरि, सुरत शब्द मेल कर, डूंघी भवर पार कर, दर दुआरा

इक्क अकार करांयदा। सतिगुर शब्द ज्ञान, आत्म बरस्या। पारब्रह्म चरन ध्यान, वड वड करमिआं। जीव जन्त विच जहान, मर मर जंम्मयां। गुरमुख साचा चढ़े शब्द बिबाण, नाता तुट्टे झूठे चंमिआं। काया मुक्के झूठी कान, गर्भवास ना कोई ध्यान, मिले मेल श्री भगवान, मेट मिटाए भरम भरमिआं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आवे जावे खेल रचावे, मात पित किसे ना जंम्मया। शब्द इक्क अकार जोत अकालया। दुजी धार शब्द सवाल्या। तीजी करे रख्वार, चौथी मंगे साची धार, देवणहार दयालया। पंचम पंचम पंच अधार, तोड़े काया गढ़ जंजालया। छेवें घर सच्ची सरकार, मंगे मंग बण भिखार, दर साचे होए सवालीआ। पंचम वेखे पंचम यार, वेले अन्तिम पाए सार, फल लगाए काया डालया। चौथे दर सच्चे दरबार, परम पुरख एका जोती साची नार, शब्द वजे साची तालीआ। तीजे दर देवे वर, वेले अन्तिम जाणा तर, आपणा पीठा खा ल्या। दूजी हदीसे रहे ना कोए, साची सोए हरि बनवाल्या। इक्क इकल्ला एका होए, जोत निरँजण सच बलोए, काया बीज साचा बोए, आपे बणे साचा हालीआ। साचा हाली इक्क अख्वाना। शब्द पाली नाम तराना। तीजे वेखे मस्तक थाली, दीपक जोती इक्क जगाना। चौथे चले चाल निराली, आप आपणा भेख वटाना। आपे शाह आप सवाली, पंचम धारा आप वहाना। छेवें करे सर्ब रखवाली, साचा कंडा हथ्थ उठाना। सोहँ मंगे जगत दलाली, जोती जोत सरूप हरि, छेवें छे भाग लगाना। साचा दर इक्क दरवाजा, नज़र किसे ना आया। आपे जाणे गरीब निवाजा, सिफरा गोल साचा ढोल, अनहद आपणा इक्क रखाया। अनहद राग रिहा बोल, छत्ती राग भेव ना पाया। पूरे तोल हरि जी तोल, दोए जोड़ सीस निवाया। अट्ठे पहर करे चोहल, काया आत्म पल्लू अग्गे डाहया। शब्द सरूपी अन्दरे अन्दर बोल, साचा हुक्म सुणाया। सदा सुहेला सद वसे कोल, इक्क इकेला आप अख्वाया। आपे गुर आपे चेल, साचा वर साचे घर गुर गोबिन्दे आप दवाया। कलिजुग अन्तिम चुक्के डर, हरि बख्शिंदे साचा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, जीव जन्तां भेद किसे ना पाया। पंज तत्त प्रधान, पंच समाया। पंचां वेखे मार ध्यान, पंजां नाता आप जुड़ाया। पंचां करे आप पछाण, पुरख बिधाता आप समाया। फड़े शब्द तीर कमान, नाम सच्चा तीर चलाया। जोती जोत सरूप हरि, किल्ला हँकारी तोड़ गढ़, साचे अन्दर आप वड़, साचा राह वखाया। किल्ला गढ़ तोड़ हंकारया। नौ दुआरे वेख खड़, काम क्रोध लोभ मोह विकारया। शब्द सरूपी लए फड़, साचा राह इक्क वखा रिहा। वेखे खेल बहत्तर नड़, मास नाड़ी वेख वखा रिहा। साचे घाड़न आपे घड़, घनड़हार धड़ सीस आप धड़, जीअ पिण्ड आप उपा रिहा। पंजा तत्तां नाल लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा शब्द धर, सच रचना आप रचा ल्या। शब्द डोर

हथ्थ करतार, हरि मन्दिर आप रखाया। पंचम बन्ने अन्दर बाहर, दिस किसे ना आया। नौ दुआरे बन्द किवाड़, आपे आप कराया। शब्द घोड़े साचे चाढ़, सुरत शब्द लए उठाया। गुर शब्द होए पिछे अगाड़, झूठी धाड़ परे हटाया। पार कराए काया मण्डल डूंघी डल्ल उजाड़ पहाड़ नौ अठारां दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द गुर मेल दर, दुआरे इक्क बहाया। तीजे द्वार हरि बहाया। शब्द रखाए साची टेक, दूसर होर ना कोई जणाया। पहले करे बुध बिबेक, साचा राह हरि वखाया। माया ममता ना लाए सेक, जूठा झूठा खेल कटाया। अन्दर बैठा रिहा वेख, हरिजन साचा राह तकाया। गुर शब्द धारे साचा भेख, वेस शब्दी गुर आप वटाया। मस्तक लेखा लिखे लेख, जोत निरँजण दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, गुरमुख साचे बूझ बुझाया। गुरमुख साचा कर विचार, चरन ध्यान रखाया ए। गुर चरन ध्यान भगत बिबाण, अन्दर मन्दिर इक्क टिकाया ए। इक्क बिबाण शब्द निशान, जीव पिण्ड बाहर कराया ए आप उडाए कर पछाण, सति सवरनी विच रखाया ए। सति सवरनी नौजवान, शब्द साचा कन्त सुहाया ए। साचा कन्त हरि मेहरबान, नाम पल्ला इक्क फड़ाया ए। पल्ला फड़या इक्क रकान, नौ दर झूठ मकान, नाता तुटा भैण भराया ए। जूठा झूठा पीण खाण, जगत भगत निशान एका हरि रखाया ए। तन नगारे वज्जे चोट, दुरमति मैल कढ्ढे खोट, गुरमुख गुरमुख गुरमुख गुर शब्दी मेल मिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, अन्दर मन्दिर जोत धर, शब्द गुर गुर शब्द वेस कर, दर दरवेश आपे आप अख्वाया ए।

★ १६ मग्घर २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हरि शाहो शाबास, सर्ब वयापया। सर्ब जीआं सद वसे पास, आपे जाणे आपणा आपया। वेख वखाणे हड्ड नाड़ी मास, जोत निरँजण वड परतापया। अप तेज़ वाए पृथ्वी अकास, काया मण्डल साची रास्या। पवण चलाए विच स्वास, होए सहाई दस दस मास्या। लेखा छोडे गर्भवास, लक्ख चुरासी दुखड़ा नास्या। दर घर साचे किया वास, पारब्रह्म ब्रह्म जोत प्रकाश्या। दिवस रैण ना होए उदास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे शब्द स्वास सवास्या। शब्द स्वासा, धन्न तन हरि श्रृंगारया। गुर चरन सच भरवासा, मन्नया मन जगत उधारया। नाम फड़ाया साचा कासा, आप बणाया जगत भिखारया। आपे किया अन्दर वासा, साचा मन्दिर आप संवारया। गुणवन्ता पूरन भगवन्ता करे खेल

शाहो शाबासा, साची नगरी जोत इक्क्री धर्म समग्री एका एक वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग गुरमुख साचे वेख दर, साची क्रिया कर्म करा रिहा। गुरमुख साचा दर दरबार, मिले मेल भगवानया। शब्द जोती इक्क अपार, देवे वाली दो जहानया। करे खेल विच संसार, गुणवन्ता हरि गुण निधानया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साध संत ना किसे पछानया। गुर संगत मंग अपर अपार, सोहँ रस रसन सुहानया। सच सुहेला कन्त भतार, गुरमुख साची सेज हंढानया। पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपार, जोती नूर जगत महानया। सर्बकला भरपूर सच्ची सरकार, जन भगतां हथ्थीं बन्ने गानया। वेखे वारो वार, चले चलाए आपणे भाणया। गुर गोबिन्दे तेरी धार, ना कोई जाणे खाणी बाणीआ। सर्ब बख्शिंदे आप दातार, शब्द लग्गे तीर निशानया। आत्म खोल्हे बन्द किवाड़, आपे करे वड मेहरबानया। रचन रचाई पहली हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे जोत धर, देवे वड्याई जगत वधाई करोड़ तेतीसा छत्र सीसा आपे रिहा झुलाईआ। करोड़ तेतीसा छत्र झुलार, प्रभ आपणी बणत बणाईआ। गुरमुख साचे कर्म विचार, पूर्ब लहिणा रिहा दवाईआ। बाल अञ्याणे तन शृंगार, सोलां कलीआं हार गुंदाईआ। अमृत बरखे ठंडी धार, साचा झिरना रिहा झिराईआ। पवण उनन्जा छत्र झुलार, दे हुलारा आप झुलाईआ। अवण गवण करे पार, साचा सावण मेघ बरसाईआ। पतित पावन विच संसार, शब्द तेग हथ्थ फड़ाईआ। आपे लाहे आपणा भार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साची सईआ मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे बाल अञ्याणे दे मति रिहा समझाईआ। बाल अञ्याणे जगत दलाल, प्रभ साचा हुक्म सुणांयदा। इक्को मारे शब्द उछाल, पुरी इन्द्र धर्म धाम सुहांयदा। लग्गा फ़ल काया डाल्ह, झूठा चाम लेखे लांयदा। यमराज तुट्टा जाल, धर्मराए फंद कटांयदा। प्रभ अबिनाशी चले नाल नाल, साचा चन्द जगत चढ़ांयदा। पूरी घालन गया घाल, काल महांकाल मुख भवांयदा। जोती जगे साचे मस्तक थाल, लाल गुलाला रंग वखांयदा। अमृत आत्म सुहाया ताल, साची छाल इक्क लगांयदा। नूरी जोत इक्क अकाल, गुरमुख लाल अनमुल्लड़े भाल, दर दुआरे हरि निरँकारे आपे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर प्यार विच संसार पहली वार कलिजुग तेरी सेज सुहांयदा। कलिजुग तेरी सेज साढे तिन्न हथ्थ। पुरख अबिनाशी मात चलाई, जन भगतां चलाए साचा रथ। अमृत आत्म बरसाए मींह, पंच विकारा रिहा मथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पा हिसे इक्क दुआरा सर्बकला समरथ। कर्म धर्म जग वेख, भरम निवारया। आपे लिखण आया लेख, जोती जामा भेख अपारया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आप दिस किसे ना आ रिहा। कलिजुग मेटण आया रेख, खुल्हड़े केस दर दरवेश अख्खा रिहा। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश,

शिव शंकर सोया आप जगा रिहा। आपे नर दाता नरेश, सुरपति राजा इन्द आपे आप हिला रिहा। प्रगट होए हरि मृगिन्द, गुरमुख साची बिन्द उपजा रिहा। आप मिटाए सगली चिन्द, शब्द सुनेहड़ा इक्क घला रिहा। लोकमाती भगत निन्द, करोड़ तेतीसा हरि समझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे चतुर सुजान मार ध्यान बाल अञ्याण, साची पुरी आप सुहा रिहा। बाल निधाना शब्द निशाना कर त्यार। शब्द निशाना वड मेहरवाना इक्क झुलाए विच संसार, हरि मेहरबान वाली दो जहाना, करे खेल अपर अपार। इक्क उठाए सोहँ सच्चा तीर कमाना, लोआं पुरीआं पावे सार। शब्द उडाए भगत बिबाणा, आपे अन्दर आपे बाहर। मेले मेल हरि भगवाना, साचे मन्दिर गुप्त जाहर। दर दुआरे होया परवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाया बंक द्वार। बंक द्वार हरि सुहाया ए। चार दिवार शब्द धार खेल रचाया ए। चारों कुन्ट शब्द द्वार, प्रेम लगाया गारा ए। गुर गोबिन्दे तेरी धार, आपे रिहा वहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम वेले पावे सारा, वसदा रहे इक्क दुआरा, दूजा दर जगत घर कोई रहण ना पाया ए। जगत दुआरा झूठ मात पसारया। माया राणी फड़या हत्थ विच ठूठ, वरनी बरनी करे ख्वारया। गुरमुख साचे नौ दुआरे गए रूठ, दस्म

३६२ दुआरे हरि बहा रिहा। प्रभ अबिनाशी जाए तुठ, साचा हुक्म शब्द सुणा रिहा। आप बन्नाए नाम मुट्ठ, शब्द डण्डा हत्थ ३६२

०५ उठा रिहा। लुकया रहण ना देवे कोई गुट्ठ, बन्द किवाड़ा हरि ढाह रिहा। जोती जोत सरूप हरि, दस दस दस मास ०५

लेखा लिख्त भविख्त जणा रिहा। भगत जणाई आप हरि करांयदा। मिली वड्याई नाम वड प्रताप, साची भिच्छया झोली पांयदा। आपे माई आपे बाप, दिवस रैण रच्छया आप करांयदा। कलिजुग मारे तीनो ताप, लिख्या लेख धुर दरगाही पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। गुर गोबिन्दे जगत जहाना दिसे मिथ्या, छोटे बाले दे मति समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए साचा दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त किसे ना दिस्सया। ना दीसे जगदीसे भेख वटाया। पढ़ पढ़ थक्के राग छतीसे, माया राणी सेव कमाया। कथना कथे दन्द बतीसे, शाह सुल्तान दिस ना आया। एका एक छत्र प्रभ साचे सीसे, दूसर कोई रहण ना पाया। वेखे खेल बीस इक्कीसे, छोटे बाले बचन एह अलाया। पुरी इन्द्र शब्द चले हदीसे, सोहँ अक्खर इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीते सदा अतीते, शब्द सुनेहड़ा एका एक घलाया। शब्द सुनेहड़ा देवे घल्ल, जगत जोग ना जाणया। बैठा रहे सदा अटल, जल थल चले चलाए आपणे भाणया। आप बहाए दया कमाए उच्च महल्ल, दर दुआरा जिन पछानया। आवण जावण मिटया सल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर किया परवानया। सोलां कलीआं सोलां

कल, सोलां शब्द श्रृंगारया। आपे वसे निहचल धाम अटल, वेखे खेल घड़ी घड़ी पल्ल पल्ल, सोलां मघर दिवस विचारया। आपे वेखे जल थल डूंघी डल, गुरमुख साचे बेड़ा आप बन्ना रिहा। शब्द सुनेहड़ा एका घल, लोकमाती अछल अछल्ल, वल छल जगत भुला ल्या। भाग लगाए काया डल, लक्ख चुरासी मेटे सल, साची बणता आप बणा रिहा। अमृत आत्म वेखे फल, दीपक जोती रही बल, शब्द ताल इक्क वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म ब्रह्म मेल कर, अक्खर वक्खर एका एक जन भगत आपे आप सिक्खा रिहा। गुरमुख साचे बाल निधाना, साची सेवा आपे आप लगा रिहा। साची सेवा आप लगाई, प्रभ पूर्ब कर्म विचारया। साधां संतां रिहा जगाई, सिँघ मनजीते एह समझा रिहा। फड़ फड़ बाहों मात उठाई, साचा गीत इक्क सुणा रिहा। वेख वखाणे थांउँ थाँईं पतित पुनीते जोत जगा रिहा। देवण आए ठंडीआं छाँईं, अचरज रीते मात वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी परखे नीते, गुरदुआरा मन्दिर मसीत ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधे मुला काजी शेख़ मुसायक शब्द नाइक एका एक वखा रिहा। सोलां मग्घर जगत वधाई, कलिजुग होई कुड़माईआ। गुरमुख सोए रिहा जगाई, शब्द घोड़ी रिहा चढ़ाईआ। आप उठाए फड़ फड़ बांही, दे मति रिहा समझाईआ। साचा नाउँ पीण खाण, एका तत्त तृख बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला समरथ जगत रखाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। कलिजुग वंड हरि वंडा रिहा। लक्ख चुरासी होणी खण्ड, ना दीसे कोई सहारया। हथ्थ फड़ी चण्ड प्रचण्ड, चारे कुन्टां मारे वारो वारया। मनमुख जीव पायण डण्ड, अन्तिम आए पासा हारया। मेट मिटाए भेख पखण्ड, इक्क चलाए धारना। सत्तां दीपां देवे दंड, गुरमुख विरला पार उतारना। सृष्ट सबाई होई रंड, साचा कन्त विच वरभण्ड, काया ब्रह्मण्ड हरिजन इक्क हंढावणा। आपे वेखे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज विच समावणा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आत्म सेजा शब्द सिँघासण जोत सरूपी डेरा लावणा। कलिजुग औध गई हंढ, वेखे खेल पृथ्वी अकाशन, चारों कुन्ट घेरा पा रिहा। आत्म भरया सर्ब घमंड, मदिरा मासी धर्म राए दर देवे फाँसी, वेले अन्तिम ना कोई छुडा रिहा। गुरमुख विरले मानस जन्म होए रहिरासी, शब्द सवाली गुर चरन प्यासी, गुरमुख काया साची माटी लेखे ला रिहा। इक्क खुल्लाए साची हाटी, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताटी, कलिजुग तेरी औखी घाटी, साढे तिन्न हथ्थ सीआं उच्चा मन्दिर, कोई ना तोड़े वज्जा जन्दर, जम की फाँसी ना कोई कटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बाल अञ्याणे दर परवाणे, शब्द बिबाणे आप चढ़ा रिहा। खोल्ले हट्ट अपार, नाम अमोल्लया। गुरमुखां देवे कर प्यार, सच भण्डार आपे खोल्लया। आपे ढाहे भरमां वट्ट, बजर कपाटी पड़दा खोल्लया। इक्क वखाए

३६३ ०५

तीर्थ तट्ट, शब्द नाद अनादी एका बोल्लया। जोत जगाए लट लट, काया मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर आपे फोल्लया। दरस दिखाए घट घट, भाग लगाए काया चोल्लया। बणे हरिभगत वणजारा शब्द अपारा साचे हट्ट, पुरख अबिनाशी पूरे तोल तोल्लया। दुरमति मैल रिहा कट्ट, साचे मन्दिर अन्दर आपे बोल्लया। प्रभ दर लाहा लैण खट्ट, वज्जे नाम मृदंग सच्चा ढोल्लया। रसना रस लैणा चट्ट,, दर दुआरे नावें दिसे गोल्लया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, शब्द जैकारा एका बोल्लया। काया माटी जोती लट लट, दरस दिखाए कला सोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले, दर घर साचे होए मेले, इक्क इकेले विच्चों कोटन कोटयां। कोटी कोट आप अख्वांयदा। शब्द नगारे लग्गे चोट, तन माटी ख़ाक छाणदा। हरि जन जन हरि गुर चरन रक्खे ओट, दो जहानी आप जाणदा। मनमुख आलण्ृिओ डिगे बोट, कलिजुग ना कोई उठावंदा। माया ममता अजे ना भरी पोट, गुर पीर ना कोई सुरत संभालदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, दिवस रैण साक सज्जण सैण भाई भैण, अंस सरबंस विष्नूं बंस साची अंसा गुरमुख साचे पालदा। गुरमुख साची अंस, हरि रघुराया। काग बणाए हँस, सोहँ साची चोग चुगाया। पंज दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंस, काम कामनी नेड़ ना आया। आपे आप सहँसा सहँस दल कँवल मवल जोती सगली रंग वटाया। वड्याई उप्पर धवल, हरिजन आत्म जाए मवल, बहार बसंत इक्क वखाया। आप उलटाए नाभी कँवल, अमृत अतम मेघ बरसाया। गुरमुख गुरमुख सुरती सुरत अकाल मूर्त रहे बवल, दिवस रैण दर्शन पाया। शब्द नाद अनाहद वजे साची तूरत, कूड़ अडम्बर दिस ना आया। हरि जन जनहरि संत सुहेले आसा मनसा हरि जी पूरत, दूरत नेड़ ना रिहा कोई वखाया। नेड़े दूर ना जाणे कोए। हाज़र हज़ूर गुरमुख पछाणे सोहँ सोए। सर्बकला आपे भरपूर, जाणे भेद दो जहानी दोअँ दोए। एका जोती साचा नूर, हरिजन अवर ना जाणे कोए। वड दाता जोधा सूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मैल दुरमति धोए। सुरत सवाणी जागी, कलि कवण जगाए। सुण सुण थक्की राग रागी, प्रभ साचा कन्त ना पाए। ना कोई वड वडभागी, ना माती बणत बणाए। ना लेखा छुटे ज़ात पाती, पुरख बिधाता नज़र ना आए। ना दीसे जल्वा बाती, ब्रह्म ज्ञान ना कोई हथ्थ फड़ाए। साचे मन्दिर अन्धेरी राती, जोत प्रकाश ना दीपक कोई जगाए। जोती जोत सरूप हरि, कवण दुआरे देवे वर, गुरमुख साचे सहिज सुभाए। सुरत सवाणी सुरत ना पाई, सुरती सुरत भवाया। अकाल मूर्त दिस ना आई, नाद तूरत शब्द नाद ना किसे वजाया। नौ दुआरे वेखे थांउँ थाँईं, आसा मनसा तृष्ना पूरत कोई दिस ना आया। कवण उतारे पार किनारे फड़ फड़ बांही, डूंघी भवर अन्धेरी गुफा त्रैधातां ताला लाया। मनुआ अड्डे

पहर जगत विकारी भुक्खा, आपे रिहा आप भुलाया। सुरत सवाणी शब्द सरूपी मंगे साची भिखा, गुर पूरा देवे दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे गर्भवास उलटा रुखा, दिवस रैण रिहा कुरलाया।

★ २२ मग्घर २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे नवित्त हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जग जीत जग जीत जग जीत जाप जपानया। मन जीत मन जीत मन जीत, मन आत्म मन्नया। जग जीत जग जीत चरन कँवल सच प्रीत, कलिजुग बेड़ा लाए बन्नया। मन जीत मन जीत काया ठंडी सीत, सुणाए राग रागी कन्या। जग जीत जग जीत जग जीत सदा अतीत, मिले नाम वड धन धनया। मन जीत मन जीत मन जीत पुरख अबिनाशी दिसे मीत, ना कोई लगाए मात संन्ह्आ। मन जीत जग जीत जग जीत मन जीत काया मन्दिर अन्दर देहुरा सच मसीत, गुरदुआरा गुरमुख साचे एका एक मन्नया। एका मन मनजीत बंधाया। साचा मन जगदीस धराया। लग्गा डन्न पंज तीस गिराया। भाण्डा भरम भन्न, शब्द सीस टिकाया। चढ़या साचा चन्न, बीस इक्कीस सुहाया। बेड़ा आपणा बन्न, जोती जोत सरूप हरि, एका राग गुरमुख लेखा मस्तक भाग सोहँ सो साचा आप सुणाया। सोहँ जन गाए गहर गम्भीर अन्तर अन्तरा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, तन बुझाए लग्गी बसंतरा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाए अमृत आत्म मुख चुआए, पार कराए गगन गगनंतरा। भगत वछल आप अख्वाए, फड़ फड़ बाहों पार कराए जुग जुगन्तरा। आत्म मोख मोख रखाए। रोगी सोग दुःख मिटाए, तृष्ना भुक्ख जगत गंवाए, आप बणाए साची बणतारा। जोती जोत सरूप हरि, मनजीत जगजीत गुरमुख बन्न्है शब्द प्रीत, इक्क वखाए साचा मन्त्रा। गुर मन्त्र अधीन पंज तत्तया। शब्द रसना चीन। प्रभ दे समझावे मत्तया। जगत विकारा होए अधीन, दस दस चेतन्न सतया। सतया बुध्ध लए छीन, वेखे नाम साचा भत्तया। आपे मज़्हब साचा दीन, आपे वेखे साची वथया। सोहँ शब्द वड प्रबीन, चार वरनां एका रथया। आप चलाए रूसा चीन, साचा मथन आपे मथया। दीन मुहम्मदी मन्ने ईन, रसना कथन साचा कथया। इंग्लिस्तान दे यकीन, वेखे आत्म लाहे सथया। चारों कुन्टा भन्ने हँकारी बीन, पावे डोरी सोहँ नथ्थया। करे अकार लोकतीन, सिवपुरी इन्द्रपुरी तख्त ताज दीसे लथ्थया। गुरमुखां दरे मीन, लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थया। प्रगट होए राम रहीम करीम, बेऐब परवरदिगार हरि निरँकार, शब्द उडारी दरस अपार, शब्द देवे साची गाथया। मेट मिटाए धुँदूकारा, जोत निरँजण कर उज्यारा, साचा शब्द मात प्यारा, चारों कुन्ट जैकारा, चार वरनां इक्क दुआरा, मिले मेल पुरख अपारा, सोहँ देवे साची वथ्थया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखा

देवे नाम वर, मन जीत जग जीत गुर मीत आत्म सगल वसूरा लाथया। सगल वसूरा गया लथ, प्रभ साचे दया कमाया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, उनीं अस्सू आप सुहाया। पंजां चोरां गया मथ, पंचम कत्तक रसना गाईआ। धुर दरगाही साची वथ, गुरमुखां झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका इकी कलिजुग इकी कत्तक इकी लक्ख चुरासी वंड वंडाया। लक्ख चुरासी वंडे वंड, हरि साचा वंडण आया। चारों कुन्ट भेख पखण्ड, साचा राह दिस ना आया। खाली वेखे जेरज अंड, भरम भुलाया। वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, वरभण्ड दिस ना आया। इक्क इकल्ला नव नव खण्ड, सत्तां दीपां फेरा पाया। मनमुख सुत्ते दे कर कंड, गुरमुखां रिहा जगाया। जूठे झूठे पायण डण्ड, चौथा दर साचा घर साध संत किसे दिस ना आया। आपे देवे साचा वर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, मग्घर सत्त आत्म वत धीरज यति रक्खे पति, सोहँ साचा बीज बिजाया। चौथे दर चौथे घर चौथे पद गुरमुख साचे आपे सद्द, सोहँ सो दुरमति मैल धो, भगत राग जगत त्याग एका एक जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग लाया। पंचम माण पंचम प्रधाने। पंचम राज जोग मेहरबाने। पंचम मेटे जगत निशाने। पंचम रस रसना भोग, सोहँ सो रसन वखाणे। आदि अन्त ना होए विजोग, आत्म ब्रह्म ब्रह्म आत्म शब्द डोरी बन्ने गाने। हरि बिन अवर ना जाणे को, गुणवन्ता हरि गुण निधाने। शक्ती भुगती दो जहाने दिसे खो, करे खेल विच जहाने। साध संत रहे रो, पंचम उठया हरि बलवाने। जोती जोत सरूप हरि, छिछम वार हो त्यार, लोकमात मात झात तेई मग्घर आप झुलाए शब्द निशाने। शब्द निशाना जाए झुल्ल। हरिभगत सुहेला जग अकेला, गुरमुखां कलि पाए मुल्ल। लक्ख चुरासी वक्त दुहेला, कोई ना तोले पूरे तोल। नौ दुआरे झूठा मेला, जूठा झूठा बीज रहे बो। भगत जनां गुर आपे चेला, अमृत आत्म रिहा चो। अचरज खेल कलिजुग खेला, वक्त सुहाए नौ पोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छेवें घर छेवें दर, छेवीं वार कर विचार, देवे धार सोहँ सो। नौ पोह नौ द्वार कर ख्वार गुरमुख जगाईआ। आत्म भरे शब्द भण्डार, हरि दातार सर्ब सहार आप अख्वाईआ। पंचां मारे तेज़ कटार, पहली वारे दर दुआरे बाहर कढाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, शब्द शृंगार आत्म सेजा आसण लाईआ। रूप अगम्म अगम्म अपार, पारब्रह्म ब्रह्म कर विचार, साचा लेखा रिहा चुकाईआ। शब्द विचोला विच संसार, सोहँ ढोला नर निरँकार, आप आपणा रिहा सुणाईआ। पंझी पोह दिवस विचार, नौ सत्त प्रभ बन्ने धार, शब्द तत्त अपर अपार, बहत्तर नाड़ी उब्बल रत, मनमुख जीव होए गंवार। गुरमुख रक्खे आत्म यति शब्द सरूपी पहरेदार। पंज प्यारे दे समझाए मति, मात रहण ख़बरदार। शब्द चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही निरँकार। दरस दिखाए

हरि समरथ, फड़ फड़ बांहों लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचां देवे एका वर, शब्द जैकारा विच संसार। पंचां देवे मति वक्त सुहावणा। आपे रक्खे मात पत, जग जगावणा। शब्द संतोख धीरज यति, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत वेला अमृत फल एका एक खवावणा। पंझी पोह पंच प्यार। पंचम करे हरि निरँकार। हरिजन साचा दर घर तरे, पाए दरस अगम्म अपार। आवे जावे ना जन्मे मरे, लक्ख चुरासी उतरे पार। इक्क वखाए सच घरे, शब्द घोड़ा जोती जोड़ा एका एक दर द्वार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तक इक्का शब्द सरूपी बन्न्हे सीस जगदीस दस्तार। दस्तार दस्तार दस्तार, गुरमुखां सीस टिकाईआ। करतार करतार करतार, बीस इक्कीसा खेल रचाईआ। दो दो धार, आप आपणी रिहा कराईआ। आपे वसे विचकार, दोहां दिस ना आईआ। ब्रह्म ज्ञानी विद्‍वानी जग दोहानी सुरती सुरत आप विचार, सार ना पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां जगत स्यासत देवे भेव ना राईआ। माया सुत्ता सेजा बाशक, सहँसर मुख उठाईआ। जूठ झूठ एका तख्त ताशक, दिवस रैण फुंकारा लाईआ। सृष्ट सबाई साचा आशक, आत्म जोती एका रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जगत याचक भगत भण्डारी आपे आप अख्वाईआ।

★ पहली पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हरि वड बली बलवान, भगत करम्मया। अट्ठे पहर नौजवान, ना मरे ना कदे जंम्मया। शब्द रखे तीर कमान, आप हिलाए गगन पताली थम्म्हया। लोआं पुरीआं एका आण, आपे घड़े आपे भंनया। इक्क झुलाए शब्द निशान, राज राजानां देवे डंनया। चारों कुन्टां मार ध्यान, लक्ख चुरासी वेखे आत्म अन्न्हया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, एका राग सुणाए कन्या। नौ दुआरे बीआबान, दसवें जोती इक्क रखन्नया। हरिजन साचे कर पछाण, जगत चढ़ाए साचे चंनया। सोहँ देवे पीण खाण, अन्दरे अन्दर आत्म मन्नया। धर्म बिठाए इक्क बिबाण, धर्म राए ना देवे डंनया। दरगाह साची सच मकान, आप बहाए दया कमाए, हरिजन साचे बेड़ा बन्न्हया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लोकमाती मेहरबान देवे जिया दान नाम निधान, ना लाए कोई सन्न्हया। नाम निधान गुणवन्त गुरमुख जाणया। ना कोई जाणे साध संत, माया भुल्ले भरम भुलानया। कलिजुग वेला आया अन्त, मगर लग्गे पंज शैतानया। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, देवे दरस दर महानया। आप बणाए साची बणत, दर घर साचा इक्क वखानया। जोती जगत जगे अग्नी भगत भगवन्त, एका

रंग साचा संग, दर दुआरा साचा माणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, पकड़ उठाए राजा राणा, शाह सुल्तानया। करे कराए दर दर घर घर ख्वारया। राज राजानां शाह सुल्तान, वेखे बंक द्वारया। प्रगट होए वाली दो जहान, शब्द डंक इक्क वजा रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म पार कर पछान, राउ रंक इक्क वखा रिहा। साचा धर्म जीव जन्त जगत जहान, एका एक अंक आप सिक्खा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणा रंग वटा रिहा। आप आपणा रंग वटाए, दिस किसे ना आया। गुरमुख साचे संग समाया। शब्द घोड़े तंग कसाया। सत्तवें घर आसण लाया। जोत सरूपी डगमगाए, आपणा आप रिहा उपाया। गुरमुख साचे हँस कग बणाए, सोहँ अक्खर एका वक्खर जगत पढ़ाया। पकड़ उठाए रोड़ी सक्खर, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया। आपे पाड़े बजर कपाटी पत्थर, पंचां सथ्थर दए विछाया। आप वरोले नेत्र अत्थर, दसम दुआरी संपट लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणे रंग समाया। आप आपणे रंग समाए, भेव कोई ना पांयदा। गुरमुख साचे संत जगाए, सति सरूपी दरस दिखांयदा। जोत जगत जग बणत बणाए, वड शाहो भूपी आप अख्वांयदा। महिंमा अगणत गणी ना जाए, अनूप अनूपा हरि समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम

३६८ वेख हरि, आप आपणे रंग समांयदा। हरि हरि रंग अमोल, भेव ना राया। गुरमुखां पड़दे रिहा खोल्ह, आत्म दरस दिखाया। ३६८

०५ शब्द वजाए साचा ढोल, नाद अनाद अनाहद साचा रंग समाया। दिवस रैण सद वसे कोल, दूई द्वैती पड़दा लाहया। काया मन्दिर करे चोहल, काया मन्दिर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण रूप सति सरूप दिस ना आया। निशअक्खर वक्खर रिहा बोल, परा पसंती सार ना राया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणे रंग समाया। आपणे रंग समाए, आप रंग राता ए। गुरमुख साचे मात जगाए, देवे नाम सच्ची सुगाता ए। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, ना कोई वेखे ज़ातां पातां ए। अन्तिम जम का फाह कटाए, धर्म राए ना पुच्छे वाता ए। दरगाह साची साचे धाम बहाए, आपे पिता आपे माता ए। एका एक जन भगत टेक सोहँ साचा जाप जपाए, दरस दिखाए इक्क इकांता ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, साचे रंग रंग राता ए। दूजे दर ना गया मंगण, आप आपणा संग निभाया। जन भगतां कटे भुक्ख नंगन, शब्द कंगण तन पहनाया। शब्द सरूपी वेखे जंगण, नौ खण्ड पृथ्वी बन्न्हे तन्दन, लक्ख चुरासी होई भंगण, गुर पीर साध कोई रहण ना पाया। वजे नाम मृदंगन, साचा डंक रिहा वजाया। जन भगतां रखाए आपणे अंगण, आप आपणी गोद उठाया। चिट्टे अस्व कसे तंगन, शब्द पलाणा

उप्पर पाया। सोहँ चाढ़े साची रंगण, ओंकारा देस सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, आप आपणे रंग समाया। हरि हरि रंग चलूल, खेल अगम्मड़ा। लक्ख चुरासी गई भूल, माया राणी पल्ले दमड़ा। शब्द सिँघासण हरि बिराजे, ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई भाई भैण अंमड़ा। आपे आप कन्त कन्तुहल, सच दुआरा एका मल्लड़ा। गुरमुख साचे मात उपजाए साचे फूल, लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा। शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल अगम्म अगम्मड़ा। पुरख अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी खेल रचाया ए। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्मड़ा, मात पित ना कोई अखवाया ए। पल्ले रक्खे ना कोई पैसा धेला दंमड़ा, सृष्ट सबाई डोरी हथ्थ रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेख रेख हरि, बीस बारां बारा बीस बीस बतीस राग छतीस बीस इक्कीस देवे सर्ब मिटाया ए। एका एक इक्क अकाला ए। इक्क अकाला उच्चा दिसे दीन दयाला ए। लोआं पुरीआं पए तरथला, करे खेल काल महांकाला ए। चौथे जुग होया अन्धू, ना कोई मिले रखवाला ए। जगत तृष्ना माया झूठा धन्दू, गल पया मोह जंजाला ए। गल पापां भार उठाया कंधू, फ़ल ना लागा किसे डाल्ह ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख वेख हरि, करे खेल जगत दलाला ए। एका एक तख्त बिराज्जया। शब्द वज्जे साचा ताल, राग अनहद साचा वाज्जया। अमृत सर सरोवर इक्क उछाल, जन भगतां रक्खे लाज्जया। लाल अनमुल्लड़ा एका भाल, लोकमात कराए साचा काज्जया, जगत अवल्लड़ी चली चाल, जोत जगाए देस माज्झया। साची घालण रिहा घाल, दीपक जोती मस्तक साचे थाल, जोत निरँजण मारे अवाज्या। साध संत होए बेहाल, गुर पीर ना कोई निभे नाल, ना कोई दीसे मक्का काअबा, ना कोई हाजन हाज्जया। प्रगट होया हक्क ज़नाबा, वेख वखाणे दो दो आबा, धुर दरगाही सच नवाबा, लेखा कढ्ढे बाकीआ। चरन घोड़े दे रकाबा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, रहण ना देवे कोई आकीआ। लोकमात ना कोई आकी, हरि सच्चा शाह सुल्ताना ए। लक्ख चुरासी कढ्ढे बाकी, जोत सरूपी पहरे बाणा ए। कोई ना दीसे बन्दा ख़ाकी, ना कोई गाए राग तराना ए। औलीए पीर गौंस कुतब ना कोई दीसे पाकन पाकी, जूठा झूठा मिटे निशाना ए। अमृत जाम ना कोई प्याए बण बण साकी, एका भुल्लया हरि भगवाना ए। दस्म दुआरे कोई ना खोल्हे बन्द ताकी, नौ दुआरे अन्ध अंध्याना ए। भगत जनां हरि देवे एका झाकी, साचा मन्दिर आप सुहाना ए। सोहँ शब्द चढ़ाए साचे राकी, वाग आपणे हथ्थ रखाणा ए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, गुरमुख अन्तिम वेख हरि, शब्द बन्न्हे हथ्थीं गाना ए। शब्द बन्न्हे डोर नाम निरंकारया। कलिजुग

अन्ध अन्धघोर, नाता तुट्टा पंचम यारया। दिवस रैण ना पायण शोर, तीर छुट्टे एका वारया। आप चुकाए मोर तोर, दूसर होर ना कोई वखा रिहा। ना कोई दीसे मढ़ी गोर, शब्द घोड़ा सर्ब मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणा रंग वटा रिहा। सुरत शब्द ज्ञाना, जिस जन पाया। वेखे कर ध्याना, दर दुआरा कवण वखाया। कवण उडाए विच बिबाणा, कवण दिशा राहे पाया। कवण दीसे विच मकाना, दिवस रैण रिहा तकाया। साचा देवे पीण खाणा, सच सुनेहड़ा रिहा घलाया। आपे होए जाणी जाणा, दिस किसे ना आया। नौ दुआरे बीआबान सुंञ मसाणा, दसवां दर साचा घर गुरमुख विरला चढ़े सूरा, जिस गुर पूरा वड दाता सूरा नजरी आया। पंजां चोरां करे चूरा चूरा, साचा राह ना होए कदे हदूरा, सुखमन नाड़ी पिछे अगाड़ी, आपे करे शब्द वाड़ी, गुर चेला आप अख्वाया। ना कोई दीसे मुच्छ दाढ़ी, केसा धारी नर निरँकारी साचे घर नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां पुच्छे सच घर, जिस जन खुल्ह्आ बन्द दर, साचा बचन दए अल्ह्आया। उठ उठ बल धारे, जिस पाया पुरख अगम्म। मिल्या मेल कन्त भतारे, लेखे लग्गे काया चम्म। सच सुलक्खणी सोभावन्ती नारे, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां पुच्छे सच घर, नौंवे करे बन्द दुआरे। नौ दुआरे तज, दस्म वखाईआ। शब्द सिँघासण बैहणा सज, दया कमाईआ। आपणा पड़दा लैणा कज्ज, मानस देही अन्तिम पाईआ। साचा ताल रिहा वज्ज, रागी नादी सुणन ना पाईआ। मुख गुर गुरमुख रक्खे लज्ज, ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। जगत तृष्ना देवे तज, अमृत आत्म पीवे रज्ज, आवण जावण गेड़ कटाईआ। एका एक कराए आपणा हज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा दरस दिखाईआ। कलिजुग जीव जाग प्रभ ठग्गण आया, भेखी भेख वटाया ए। कलिजुग जीव जाग प्रभ ठग्गण आया, गुरमुख साचे लए जगाया ए। कलिजुग जीव जाग प्रभ ठग्गण आया, बेमुख भाण्डे काचे रिहा भन्नाया ए। कलिजुग जीव जाग प्रभ ठग्गण आया, एका रंग वखाए साचो साचा सोहँ साचा रंग चढ़ाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस कर, काला रंग वटाया ए। सति पुरख अपार, सति सतिवादया। आपे जाणे आपणी धार, शब्द बिबाणा बोध अगाध्या। जीव जन्त ना पाए सार, पारब्रह्म पुरख अपार, जोत सरूपी कर अकार, सच दुआरा एका लाध्या। निरगुण रूप अगम्म अपार, लोआं पुरीआं पाए सार, गगन पताला आपे बाध्या। जोत निरँजण कर अकार, लक्ख चुरासी पसर पसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख कर, वेखे खेल अनाद अनादया। सच घर सुल्तान, जोत प्रकाशया। ना कोई दीसे होर निशान, साचा मण्डल साची रास्सया। आपे वेखे मार ध्यान, लाल गुलाला दीन दयाला जोती गोती सद अबिनास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, साचे धाम आपे वसे पुरख अबिनास्सया। साचा धाम आप सुहाया। लाल गुलाला रंग चढ़ाया। आपे जाणे आपणी चाला, शब्द रंगीला पलँघ डहाया। सति सरूपी दए दुशाला, बिन रंग रूपी दिस ना आया। आप बणाए दया कमाए ओंकारा सच्ची धर्मसाला, छेवें दर साचे घर चरन छुहाया। छेवें घर अकार, जोती मिली वधाईआ। जोती रूप अपर अपार, कंचन वेस वटाईआ। देस ओंकारा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, आप आपणी बणत बणाईआ। आप आपणी बणत बणाए, साचा खेल रचाया ए। सति पुरख निरँजण छेवें घर लए वर, जोती डेरा लाया ए। जोती मिले साचा वर, आपे देवे किरपा कर, शब्द अगाधा दए प्रगटाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा मार्ग लाधा रसना गाए ना कोई स्वादा, दिस किसे ना आया ए। जोती शब्द हरि उपाया, गुर चेला इक्क बणाया। छेवें घर होए मेला, सुन्न अगम्म विच समाया। ना मरया ना पया जम्म, ना कोई पवण स्वासी लए दम, आप आपणा रंग वटाया। पीली धार जोत निरँकार, सुन्न अगम्मो आई पार, साचा मण्डल वेख वखाया। दस्म दुआरी कर प्यारी, जोत निरँकारी पहली वारी, चिट्टी चादर कर कर आदर, जोत प्रकाश इक्क अकाश चिट्टा बाणा तन छुहाया। चिट्टी धारी दस्म दुआरी जोत निरँकारी, जन भगतां करे सांझा देश, नरेश इक्क सुहाया। ना कोई गणपति गणेश, ना कोई शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष, करोड़ तेतीसा दिस ना आया। ना कोई दीसे धारी केस, मूंड मुंडाया भेव ना राया। जोत निरँजण इक्क आदेस, आप आपणा रंग वटाया। आपे दाता वड मृगेश, नीली धार हो अस्वार, दस्म दुआरी बाहर आया अजप्पा जाप वेखे जाप, तीनो मारे जगत ताप, पुन्न पाप कोई रहण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह रिहा वखाया। साचा राह आप वखाए। नीलम नीला दया कमाए। सूहा रंग इक्क चढ़ाए। कर वेस त्रैकुटी देस, आप आपणा रंग वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर आपे आप वेख वखाणे काली धार। हिरदे कँवल कर उज्यार। जगत अभ्यासी वेख विचार। जगत उदासी दए निवार। शब्द स्वासी लए विचार। किसे हथ्थ ना आए पंडत कांशी, वेद क्तेबां रहे विचार। गुरमुखां लाहे जगत उदासी, देवे शब्द नाम अपार। गुर शब्द जन्म रहि रासी, रसना गाए पंचम वार। निर्मल जोत मात प्रकाशी, जोत सरूपी घनकपुर वासी, चौदां दस चार चार दस तिन्न तेरां काया मट साचे हट शब्द सुणाए इक्क शलोक, ना कोई सके रोक। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, काया तन शब्द नगारे लाए इक्क चोट। शब्द लग्गे चोट तन नगारया। काया कढ्ढे झूठा खोट, माया मोह चुका रिहा। प्रेम प्याले अमृत भरे पेट, दुरमति हरे करे पार किनारया। गुरमुख विरला तरे विच्चों कोटी कोट, जिस जन

देवे चरन प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, अवण गवण त्रै भवण सुरती सागर सुरत बवन सुरंग रंग अंग संग सूरा सरबंग कटे भुक्ख नंग वज्जे ढोल मृदंग, काया तन साची दया कमाईआ। शब्द रंगीला चढ़े रंग, नाम डोर बन्न्हे मन्न, आप आपणा संग निभाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, इक्क सुणाए राग कन्न, हउमे चिन्ता दए मिटाईआ। दरस दिखाए आत्म अन्न्ह, दया कमाए घर सच वखाए ना कोई छप्परी ना कोई छन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग राता पुरख बिधाता गुरमुखां रक्खे उत्तम ज़ाता। शब्द अधारी कर प्यार, इक्क वखाए शब्द सार, सुरत तन प्रीत। गुरमुख नार कर विचार, चरन कँवल उप्पर धवल, दिवस रैण ठंडी सीत। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, जोत निरँजण कर अकार, आपे जाणे आपणी रीत। मानस देही ना आए हार, लेखा चुक्के नौ द्वार, दसवें अमृत ठंडी धार, काया करे पतित पुनीत। साचा मेला मीत मुरार। इक्क अकेला दर दरबार। शब्द चढ़ाए साचा तेला, गुरमुख सुलक्खनी साची नार। सोहँ पाए साची वेला नाम सति अपर अपार। आपे गुर आपे चेला, अचरज खेल कलिजुग खेला, जोत सरूपी कर अकार। दोहां धिरां घर साचे मेला, पवण शब्दी पसर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे गुण गुणी गुणवन्ता जीआं जन्तां मीत मुरार। बत्ती दन्द भेड़ जगत भेड़या। साचा शब्द करे निबेड़या। काया नगर आपे वेखे खुल्हा वेहड़या। साचा गेड़ा आपे गेड़या। गुरमुखां आत्म गंढी आपे उधेड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुखां लाए इक्क उखेड़या। मनमुख जगत गंवार दए दुहाईआ। गुरमुखां आत्म करे प्यार, खुशी मनाईआ। मनमुख रोवे धाहां मार, साचा राह दिस ना आईआ। गुरमुख क्रिया कर्म विचार, प्रभ साची दया कमाईआ। मनमुख आत्म अन्ध अंध्यार, दीपक जोत ना कोई जगाईआ। गुरमुखां मिल्या मेला मीत मुरार, आत्म सेजा आप विछाईआ। मनमुख जूए बाजी हार, मानस देही मात गंवाईआ। गुरमुखां मेला अपर अपार, साची रंगण रंग चढ़ाईआ। दर घर साचा इक्क दरबार, ज्ञान गोझ भेव वखाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, दे मति रिहा समझाईआ। शब्द कराए तन श्रृंगार, पंजां तत्तां तन छुहाईआ। सोहँ पहने तेज कटार, शब्द गात्रे हरि पाईआ। अट्ठे पहर पहरेदार, तीर्थ यात्रा इक्क कराईआ। नेड़ ना आयण पंजे यार, साचा शस्त्र रिहा चलाईआ। देवणहार सर्ब संसार, लहिणेदार आप अख्वाईआ। हरिजन मंगे बण भिखार, आत्म झोली रिहा भराईआ। मन ममता देवे मार, तामस तृष्णा दए मिटाईआ। सुरती शब्द कर प्यार, नौ दुआरे बाहर कढाईआ। जोत निरँजण कर पसार, दीप उज्यार इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर साचा साकी, दिवस रैण करे राखी, साची नगरी धाम सुहाईआ।

तन मन माटी दीसे छार। काया हाटी शब्द वपार। दुरमति मैल जाए काटी, एका एक चरन प्यार। साचा लाहा प्रभ दर खाटी, हउमे हँगता रोग निवार। आप चढ़ाए औखी घाटी, दरस दिखाए अगम्म अपार। साची मध अमृत रस आत्म घर एका चाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम अपर अपार। अपर अपार हरि का नाउँ। होए सहाई सभनी थांउँ। काया नगर साचे गराउँ। निर्मल जोत होए उजागर, गुर पूरा पकड़ उठाए बाहों। जगत वणजारा होए सुदागर, एका वेखे अगम्म अथाहो। बैठा दीसे इक्क इकागर, हँस बणाए जो जन कांउँ। जोती नूर रती रत्नागर, निउँ निउँ सद्द लागे पाओ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आलस तामस जगत निन्दरा वेख वखाणे थांउँ थांउँ। आत्म तामस मन हँकार। शब्द गुर गुर शब्द गुरू गुर ना पाए सार। लेखा लिख्या कवण जाणे धुर, पंच पंचायणी होए ख्वार। गुरमुख विरले चरन प्रीती गई जुड़ कलिजुग बेड़ा लावे पार। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, अट्ठां तत्तां भेव निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल विच संसार। वेखे खेल खेलणहारा। जूठा झूठा जगत मेल, पारब्रह्म ना किसे विचारा। गुरमुखां होए सज्जण सुहेल, आत्म धर्म कलि विचारा। धर्म राए दी कटे जेल्ह, लक्ख चुरासी उतरे पारा। आपे वसे रंग नवेल, जीव जन्त ना पाए सारा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त अन्त गुर

४०३ मन्त्र, तन लगाए जगत बसंतर, चारों कुन्ट धुँदूकारा। शब्द बसंतर लगे तन। जिया जन्त जुगा जुगन्तर, आपे आप देवे ४०३

०५ डन्न। हरि जन बणाए साची बणतर, रसना गाए धन्न धन्न। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका राग ०५

सुणाए कन्न। शब्द सुणाए राग कन्न हदीस्सया। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, ना कोई गाए दन्द बतीस्सया। मन मनुआ जाए मन्न, शब्द ताज साचे सीस्सया। एका देवे नाम सच्चा माल धन, ना कोई करे कराए मात रीस्सया। धर्म राए ना देवे डन्न, होए सहाई बीस इकीस्सया। सृष्ट सबाई होई खंन, करे कराए आप जगदीस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, ना कोई पढ़ाए जगत हदीस्सया। देवे शब्द अपार, सर्ब जणाईआ। सभ घट रिहा पसार, भेव ना राईआ। गुर मंत संत भगवन्त रहे विचार, आदि अन्त रिहा बणत बणाईआ। गुणवन्ता हरि हरि गुणवन्त, साचा कन्त दिस किसे ना आईआ। सोहँ शब्द सुणाए सुहागी छंत, सतिजुग साची बणत बणाईआ। आपे जिह्वा मणीआ मंत, कौस्तक मणी मस्तक थेवा लाईआ। काया रंगण रंग बसंत, लाल फुलवाड़ी आप वखाईआ। महिंमा जगत भगत अगणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रिहा बणत बणाईआ। मन नाचे नौ द्वारया। सुरती सुरत ना जाणे सच्चो सच्चे, भेख पखण्डा विच संसारया। मानस देही भाण्डे काचे, घड़े भन्ने भन्नणहारया। पंज चोर दर साचे नाचे,

ना दीसे कोई सहारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुण अवगुण निरगुण सरगुण दोवें रिहा विचारया। निरगुण धार अपार, दिस ना आया। सरगुण पसर पसार, खेल रचाया। दोहां मेल अपार, बणत बणाया। निरगुण गुर कर अकार, जोत सरूपी रंग वटाया। सरगुण शब्द भरे भण्डार, साची धारा रिहा वहाया। आपे वसे हो हो बाहर, दूसर दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाया। गुर साखी मेहरवान शब्द विचोल्लया। अट्ठे पहर रहे मेहरवान, दिवस रैण रहे गोल्लया। जिस जन देवे जिया दान, शब्द सुणाए साचा ढोल्लया। दर दुआरे होए परवान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, मारे तीर शब्द निशानया। पार कराए काया चोल्लया। इक्क बिठाए शब्द बिबाण, पुरीआं लोआं इक्क उडान, पार कराए कला सोल्लया। चतुर्भुज श्री भगवान, भेव गुझ शब्द निशान, चार भुज ना दीसे विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेख वखाणे राज राजानया। मन रोगी रोग वधाया। जीव जन्त होए विजोगी, धुर संजोगी नज़र ना आया। आपे जगत रस रिहा भोगी, अमृत आत्म रस ना कोई मुख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउमे रोग चिन्ता दुःख, जगत तृष्ना आत्म भुक्ख, मात गर्भ उलटा रुख़, आवण जावण पतित पावन भेखाधारी बण बण बावन, दर दरवेश आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मन सुरती रिहा चलाया। तृष्ना अग्न लग्गी, मन रहे सदा वैरागया। अट्ठे पहर अन्दरे अन्दर, ना सोया ना जागया। काया जोती मूल ना जगी, ना हँस बणया कागया। मन मति होए रास गुरू गुरमती कर वास काया मण्डल आपे जोती जातया। शब्द वैरागी चित गुरमुख लाया। जगत तृष्ना इक्क त्यागी, गुर चरन सीस झुकाया। आपे धोए काया दाग़ी, साल उनीसे जो कमाया। आत्म सोई जगत ना जागी, भरमी भरमां अन्दर लाया। सुरती होई ना मात सुहागी, कन्त संत ना किसे मिलाया। ना कोई मिल्या सच्चा वागी, साचा राह ना किसे विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द देवे वर, दूजी तृष्ना दए मिटाया। एका इष्ट दृष्ट कर विचार। जगत विकारा होए भृष्ट, सोहँ शब्द तन शृंगार। मिले वड्याई धवल सृष्ट, शब्द स्वामी इक्क अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे सिपासलार। बण भिखारी भिख हरि दर मंगया। साचा लेखा रिहा लिख, लोकमात ना सन्गाया। लोइण तीजे लैणा वेख, कवण भुक्खा कवण नम्गाया। हरिजन वेखे आत्म तृष्ना तृख, शब्द भण्डार वड संसार हरि दर मंगया। साचा लेखा रिहा लिख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निमाणे देवे वर, होए सहाई अंग संग संग अन्गाया। मांग मांग मांग जो जन मंगण आया। आत्म रहे तरंग, प्रभ रंगण आया। निरगुण वरते स्वांग, जूठा

४०४ ०५

झूठा ठूठा भन्न वखाया। आत्म चढ़ाए साची कांग, नाम गंग हरि वहावण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, एका देवे शब्द वर, आप आपणे अंगण रखण आया। मन मति बुध तन कर विचार। दिवस रैण पंचां युद्ध, अट्ठे पहर रहे कुद्द, ना कोई जाणे नर नार। आपे छाछ विरोले पाणी दुध्ध, साचा मक्खण रिहा नितार। सुरती मन मन सुरती दोवें करे सुध्ध, गुर पूरा होवे पहरेदार। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, सदा सुहेला इक्क इकेला मीत मुरार।

★ पहली पोह २०१२ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ जी दिल्ली वालयां नूं शब्द भेज्जया गया ★

संत कृपाल कवण दलाल, जगत मलाहीआ। कवण मारे शब्द उछाल, काया मस्तक साचे थाल, जोती कवण जगाईआ। कवण सवण स्वासी पवण अवण गवण लईए भाल, कवण चाल रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी किस दर अमृत मेघ बरसे सवण, सावण साचा रूप वटाईआ। कवण भेखाधारी बाला बवण, भूप रूप आप अख्वाईआ। कवण जोती तेज चमके दमन, दामन आपणा हथ्थ फड़ाईआ। कवण होए कामनी कामन, काम वन्त कवण अख्वाईआ। कवण सरूर तामनी तामन, तामस तृष्ना दए मिटाईआ। कवण संभाले जामनी जामन, जग मेला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, घर साचे रिहा जगाईआ। शब्द सुनेहड़ा आए दर, सुरती शब्द जगाउँणी। राज राजानां वेखे घर, दरगाही धुर इक्क सुनाउँणी। अमृत आत्म साचे सर, एका छाल लवाउँणी। शब्द भण्डारे साचे भर, निदया चिन्दया दूर कराउँणी। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे शब्द वर, इक्क रत इक्क मति इक्क तत्त जगत भगत एका एक रखाउँणी। दर विचोला भगत द्वार। शब्द खोल्हा सोहँ बोला विच संसार। काया चोला झूठा डोला वेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, शब्द देवे इक्क वर, मिले मेल मीत मुरार। शब्द सुनेहड़ा हरि घलाए, पूर्ब कर विचार। जगत झेड़ा आप चुकाए, वाली हिन्द कराए ख़बरदार। जगत बेड़ा बन्न वखाए, आप सुहाए बंक द्वार। भगत भबीखण तन जगाए, जोती जोत अपर अपार। नाम रखशीर इक्क अख्वाए, तपी तपीश्र सेवादर। मुन मुनीश्र भरम गंवाए, जगत जुगीशर चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, आप आपणी जाणे सार। शब्द सुनेहड़ा रक्खणा याद। प्रभ अबिनाशी देवे दाद। गऊ गरीब निमाणयां सुणे सुणाए आप फरयाद। वेख वखाणे राजे राणयां, मिले मेल राजिन्दरा प्रसाद। अस्सू तिन्न दिवस वखाणया, सोहँ वज्जे साचा नाद। आपे जाणे आपणा भाणया। शब्द जणाए बोध अगाध, साध संत ना किसे पछानया। गुर पीर ना देवे कोई दाद, तट्ट ब्यासा

आपे माणया। जन हरि रसना रिहा अराध, विच प्रभासे डेरा सुघड़ स्याणया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, दर हरि हरि दर साचा लैणा लाध। अस्सू तिन्न आए चल दर दिल्ली दरबार। दिन लँघाए गिण गिण, शब्द सरूपी मिले मेल, वेख वखाए चार यार। साचा हरि आपे जाणे भिन्न भिन्न, जोत प्रगटाए घड़ी घड़ी पल पल, शब्द सरूपी मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुहेले देवे वर, वेख वखाणे जमन किनार। जन्म किनारा लहिंदी लहर। कलिजुग अन्तिम वरते कहर। ना कोई दीसे नगर खेड़ा शहर। काया माटी झूठा चामा, एका एक गवर गहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, भेव चुकाए दया कमाए सम्मत वीह सौ तेरां चौदां पन्दरां सोलां सतारां अठारां आदि तमाम। साल उनीसे जग जुदाई। जगत जगदीसे होई कुड़माई। बीस बीसे वज्जी वधाई। इक्कीस इक्कीसे छत्र झुलाई। जोती जोत सरूप हरि, संत कृपाल हो दयाल राजिन्दर इन्द्र प्रसाद साची देवे शब्द दाद, मिले मेल इक्क रघुराई। सतिगुर साचा साख्यात, सखी सरवर दीन। अमृत प्याए आबे हयात, वड दाता हरि प्रबीन। एका बैठा रहे इकांत, भगत सुहेला सदा अधीन। अट्ठे पहर रहे प्रभात, एका धारा एका एक खाण पीण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे जगत वर, ठांडा करे सीन। हरि शब्द भण्डार जगत सवाया। हरि शब्द भण्डार सृष्ट सबाया। हरि शब्द भण्डार, देवणहार सर्ब अख्वाया। हरि शब्द भण्डार, गुर पूरा विच समाया। हरि शब्द भण्डार आप वरोले अट्ठ सट्ठ तीर्थ नीर, सर्ब थाँईं होए सहाया। हरि शब्द भण्डार आपे आप बणे वरतार, लोकमाती पुरख बिधाती साची सेवा रिहा कमाया। साची सेवा आप कमाए हरि साचा मेहरवाना ए। करोड़ तेतीसा रिहा जगाए, सुरपति राजा इन्द होए हैराना ए। शिव शंकर पकड़ उठाए, बाशक तशका गल लटकाए, ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उठाए, प्रगट होए श्री भगवाना ए। नारद मुन राग छतीसा गाए, सुरस्सती मात सुणाना ए। अंजील कुरानां वेद पुराणां, खाणी बाणी खेल जहाना साची रचना रिहा रचाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लोआं पुरीआं रिहा हिलाना ए। लोआं पुरीआं मार ध्यान, प्रभ साचे जोत जगाईआ। ब्रह्मे देवे ब्रह्म ज्ञान, चारे मुख रिहा ध्याईआ। अन्तिम मिटे जगत निशान, कलिजुग काला भेस वटाईआ। शिव शंकर बैठा शब्द बिबाण, चारे कुन्टां रिहा तकाईआ। कवण झुले मात निशान, जगत जगदीसा रिहा झुलाईआ। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, करोड़ तेतीसा दए दुहाईआ। पूरी इन्द होए वैरान, बीस इक्कीसा भेव ना राईआ। वेखे खेल दो जहान, वरभण्डी भंडी पाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी झूठ दुकान, सत्तां दीपां मेट मिटाईआ। सत्तां दीपां गुण निधान, नौवां खण्डां रिहा हिलाईआ। नौवां खण्डां बेईमान, चण्ड प्रचण्डा रिहा लगाईआ। नर हरि बली बलवान, सत्तां दीपां वंड वंडाईआ।

अड्ठे पहर नौजवान, जोती जामा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रिहा समाईआ। ब्रह्मे वेद विचार वक्त विचारना। कोई ना पाए प्रभ अबिनाशी तेरा भेद, किसे दिस ना आए जगत क्तेब, ना कोई पावे सारना। आपे होए अछल अछेद, बोध अगाधा भेद अभेद, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लोआं पुरीआं बन्ने धारना। लोआं पुरीआं बन्ने धार, सदा सद रसना गायण इन्द इन्द्रासण होए ख्वार, शब्द सिँघासण दए तजाया। करोड़ तेतीसा दर भिखार, मंगे मंग अपर अपार, प्रभ साचा झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लिख्या लेख आदि अन्त आपे वेख रिहा मिटाया। शिव शंकर दए दुहाई, कलिजुग कलिजुग कालया। लक्ख चुरासी मस्तक शाही, वेले अन्त कढ्ढे दवाल्या। शब्द सरूपी पाए फाही, सोहँ जोड़ा इक्क रखा ल्या। ना कोई उठाए फड़ फड़ बांही, शब्द घोड़ा रिहा लिताड़या। ना कोई देवे ठंडीआं छाँई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हुक्म सुणा रिहा। साचा भाणा हरि करतार। ब्रह्मा ब्रह्म करे विचार। कलिजुग काला होया धर्म, जूठ झूठ पसार। सतिजुग साचे देवे जरम, मिले वर विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप सुहाए एका एक बंक द्वार। एका एक बंक द्वारया। पुरख अबिनाशी जोत धर, आप सुहाए एका एक बंक द्वार, करे खेल विच संसारया। ब्रह्मा शिव देवे वर, दोए जोड़ करे निमस्कारया। सुरपति राजा इन्द रिहा झरि, किरपा कर हरि गिरधारया। आपणी करनी रिहा कर, वरभण्डी जोत जगा रिहा। शब्द तरनी रिहा तर, काया सुरत ना कोई बाल अटका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, नौ खण्ड पृथ्वी वंड वंडा रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी वंडे वंड, अचरज खेल रचाईआ। सत्तां दीपां देवे दंड, साची बणत रिहा बणाईआ। सृष्ट सबाई होई अन्ध, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, जेरज अंड उत्भज सेत्ज ना दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार खेल रचाईआ। कलिजुग काल कूड़ कुड़यारा, काला मुख कराया ए। चारों कुन्ट पैणी मारा, माया ममता मोह वधाया ए। अन्तिम वेले देवे झाड़ा, जूठा झूठा भार बंधाया ए। ना कोई दीसे मीत मुरारा, खाली ठूठा नाम रखाया ए। पंजां तत्तां कर प्यारा, रंग अनूठा दर घर साचे मूल ना भाया ए। लक्ख चुरासी करे कराए चट्टा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म राए हुक्म सुणाया ए। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लक्ख चुरासी दए मिटाए। अन्त खपाए, कलिजुग दर दर घर घर कोई दिस ना आए। शब्द स्वासी लए बचाए, नौ खण्ड पृथ्वी करे हर, साचे हिसे रिहा वंडाए। आपे वेखे वेख वखाणे, दिस किसे ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, नौ खण्ड पृथ्वी वेख हरि, सत्तां दीपां पुरख निरँजण साची रचना आप रचाए। सत्त समुन्दर सत्त सागरा, काया गहर गम्भीर। काया माटी हाटी साची गागरा, नौ खण्ड पिण्ड सरीर। जोती निर्मल रूप उजागरा, अमृत आत्म साचा नीर। गुरमुख विरला मात सुदागरा, प्रभ कढ्ढे हउमे पीड़। निर्मल कर्म होए उजागरा, अमृत आत्म साचा नीर, पुरख अबिनाशी बन्न्हे बीड़। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, भेख वखाणे दयाल बाग़ गुर आगरा। दयाल बाग़ गुर जाणा जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। पंजां तत्तां लग्गी आग, कोई ना पकड़े अन्तिम वाग, माया धोए ना कोई दाग़, साचा हुक्म सुणांयदा। इक्क भुलाया साचा राग, शब्द ना गाया रसना स्वाद, ना मिल्या मेल माधव माध, पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत निरँजण शब्द सिँघासण आत्म सेजा कन्त कन्तूला ना कोए बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, जोत सरूपी दूल्हो दूल्हा, दूर नेड़े ना कोई रखांयदा। दूर नेड़े ना नेड़े दूर। अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर। सो पुरख निरँजण सदा भरपूर। नेत्र पाए नाम अंजन, राग सुणाए साची तूर। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, कौस्तक मणी साची धूढ़। भरम भाण्डे मात भज्जण, सृष्ट सबाई जाणे कूड़ो कूड़। शब्द ताल साचे वज्जण, मिले मेल प्रभ साचे सज्जण, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सरूपी पाए जूड़। साची आस गुर चरन द्वार। चरन दास जन बणे भिखार। सर्ब गुणतास दस्से हक्क, नाम अक्खर इक्क अकार। पंचां बेड़ा देवे बन्न्ह, सोलां करे तन श्रृंगार। चौदां हट्टां चढ़े चन्न, चौदां लोकां कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक्क वखाए जगत धार। जगत धार हरि वखाउँणी। गुर पीर ना दीसे गद्दी धार, साची सार आपे पाउँणी। सर्ब मिटाए मुहम्मदी यार चार। शब्द उडार इक्क लगाउँणी। नौ दुआरे वसे बाहर, काल कूट इक्क रखाउँणी। दहि दिशा पाए हिसा सर्बकल आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, प्रगट होए साची जोत बिन वरन गोत त्रैलोक बलोए, जीव जन्त ना जाणे कोए, भगत भगवन्ता हाज़र हज़ूर। काया मन्दिर चार द्वार। चौथे जुग वेख विचार। सिँघ गुर चरन चरन सिँघ शब्द चोग साची चुग, वेले अन्तिम उतरे पार। सोहँ शब्द साचा जोग, तट्ट ब्यासा आर पार। दिवस रैण ना रहे सोग, जोती नूर दरस अमोघ करे कराए इक्क जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क कराए वणज वपार। वणज वपारा इक्क हरि कराउँणा। मन्दिर मसीत वेख गुरुदुआरा, साचा शब्द डंक वजाउँणा। गुर पीर साध संत तीजे लोचन रहे वेख, साचा डंक राउ रंक इक्क वखाउँणा। वेख वखाणे औलीए पीर शेख, दस्तगीर शाह हकीर कोई रहण ना पाउँणा। कलिजुग तेरी मिटदी रेख, जोती जामा धरया भेख, शाह सुल्तानां आप जगाउँणा। आपे होए धारी केस,

जोत सरूपी दस दस्मेस, शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष नर नरेश आप अख्वाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग काला वेस कर, काले तन छुहाउँणा। कलिजुग काला वेस तन कराउँणा ए। पुरख अबिनाशी बण दरवेश, कोई ना चले किसे पेश, राज राजानां आप सुनाउँणा ए। आपे नर आपे नरेश, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई साचा माही धुर दरगाही एका राह वखाउँणा। काला सूसा तन छुहाए, छबी पोह दिवस विचारया। ईसा मूसा दए मिटाए, ना कोई जाणे जीव गंवारया। शब्द हदीसा इक्क पढ़ाए, अंजील कुरानां पैणी मारया। सोहँ तिक्खा तीर रखाए, लुट्टी जाए दिन दिहाड़या। जगत जगदीस दया कमाए, बीस इक्कीस खेल रचाए, विच उनीसा पए दुहाए, साल अठारवें ना कोई छुडाए, ना कोई दीसे टट्टू भाड़या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अन्दरे अन्दर साचे मन्दिर, मेट मिटाए गोरख मच्छन्दर उच्चे टिल्ले आसण लाए, ना कोई धूंणी धूंआँ धुखा रिहा। कलिजुग धूंआँ धार जगत अन्धेरया। सतिजुग साचा करे विचार, प्रभ अबिनाशी पाए फेरया। मिले जन्म विच संसार, मनमुखां ढाहे भरम ढेरया। कलिजुग रोवे धाहां मार, जूठा झूठा लाए इक्क उखेड़या। धर्म राए होए त्यार, धरत मात खुल्हा वेहड़या। लाड़ी मौत करे शृंगार, जीआं जन्तां छिड़या झेड़या। चित्रगुप्त बणे लिखार, अन्तिम लेखा रिहा निबेड़या। जम्म राज अद्धविचकार, लक्ख चुरासी देवे गेड़या। शब्द धार सच्ची सरकार, सोहँ वज्जे काया नगर खेड़या। नौ दुआरे बन्द किवाड़, दसवें गुरमुख पाए फेरया। तत्ती वा ना लग्गे हाढ़, करे शब्द सच निबेड़या। कलिजुग दए दुहाई, अन्त कुरलानया। सतिजुग साचे मिले वड्याई विच जहानया। धरत मात मिली वधाई, पूत सपूता एका जंम्मया। कलिजुग काला भेख वटाई, बेमुख जीवां देवे डंनया। सतिजुग साची सेव कमाई, गुरमुख चढ़ाए साचे चंनया। धरत मात खुशी मनाई, कलिजुग अन्तिम अन्त पुरख अबिनाशी बेड़ा बन्हया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई आप रखाए, जूठी झूठी हेठ माया छप्पर छन्नया। जूठी झूठी माया छप्परी छाया। जाणे वड वड सेठ, वेले अन्तिम भन्ने कौड़े रेठ, ना सके कोई बचाया। वरते कहर सवा पहर महीने जेठ, शब्द हलूणे रिहा जगाया। कोई ना रक्खे साया हेठ, जगत जगदीसे शब्द तीर इक्क चलाया। जोती जामा धरया भेख, कलिजुग रेख वेख गुरमुख सोए रिहा जगाया। गुरमुख सोया जाग हरि जगांयदा। कलिजुग माया धो दाग़, प्रभ साचा आप धवांयदा। तन मन्दिर साचा राग, रागन रागी आप अख्वांयदा। काया माटी लग्गे भाग, भगत भगवन्ता आप जगांयदा। आत्म जोती जगे चिराग, साचा दीपक आप जगांयदा। माणक मोती सोहँ ताग, साची जोड़ी आप जुड़ांयदा। मन विरकती भए वैराग, सुरती शब्द आप भवांयदा। सुरत शब्द शब्द सुरत मेल मिलाए हँस बणाए काग, साची चोग नाम

चुगांयदा। आप बुझाए तृष्ना आग, राग अनादा जगत सुहागी इक्क सुणांयदा। गुर चरन धूढ़ मजन साचा माघ, गुरमुखां एह समझांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, हउमे हँगता रोग गवांयदा। मिले मेल कन्त सुहाग, तृष्ना भुक्ख जगत गवांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नाग, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे नाम वर, शब्द घोड़ा जोती जोड़ा आपे मेल मिलांयदा। शब्द घोड़ा हरि दातार। धुरदरगाही आया दौड़ा, सोलां कलां तन शृंगार। वेख वखाणे मिट्ठा कौड़ा, अक्खर वक्खर पसर पसार। आपे होए ब्राह्मण गौड़ा, गौड़ ब्राह्मण पार किनार। सम्बल नगरी साचा देस बौहड़ा, गुर गोबिन्दा भेख अपार। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, दस दस गिरां देस मझार। चिट्टा अस्व चुक्के पौड़ा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग रेख वेख हरि, भेख पखण्डा दए निवार। कलिजुग भेख पखण्ड नौ द्वारया। साधां संतां आत्म रंड, भरया तन मन हंकारया। शब्द सरूपी देवे दंड, देवे दर सच्चा द्वारया। खाणी जेरज अंड जीउ पिण्ड ब्रह्मण्ड, साची खोज खुजा रिहा। नौवां खण्डां खण्ड खण्ड, शब्द चले चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी धारा आप रखा रिहा। मनमुखां वढ्ढे कंड, ना कोई किसे छुडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख सोए मात जगा रिहा। गुर पूरे फड़ना लड़। काया मन्दिर अन्दर जाणा वड़। आपे तोड़े वजा हँकारी जन्दर, दर दुआरे अग्गे खड़। आसा तृष्ना भौंदी बन्दर, कोए ना सके पौड़ी चढ़। आप सुहाए साचा धाम मन्दिर, वेख वखाणे काया किल्ला कोट गढ़। गुरमुख साचे बाहों फड़, आप बन्नाए आपणे लड़। काया कोट गढ़ आप विचारया। साचा मन्दिर अन्दरे अन्दर गुरमुख साचे जाणा चढ़, वेखे खेल अपारया। आपे घाड़न रिहा घड़, वेख वखाणे धुँदूकारया। एका अक्खर जगत वक्खर साचा शब्द लैणा पढ़, भरमां कंध ढाहे चार दिवारया। जगे जोत बहत्तर नड़, जगत तृष्ना जाए हड़, मिटे लोभ मोह हंकारया। पुरख अबिनाशी दर द्वार अग्गे खड़, आप फड़ाए आपणा लड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, साचा राह वखा रिहा। सच सिँघासण बहिणा चढ़, भाणा सहिणा लग्गे जड़, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे करे पार उतारया। दस्म दुआरी वेख महल्ल अटलया। ना कोई दीसे चार दिवारा, ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल्लया। ना कोई दीसे चन्द सितार, गगन मण्डल वड बल बल्लया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे नाम वर इक्क दुआरा गुरमुख साचे मल्लया। आत्म वजी वधाईआ। किसे हथ्थ ना आए जंगल जूह जल थल फिरे लुकाईआ। दूई द्वैती ना मिटे थल निर्मल जोत ना जाए बल, अज्ञान अन्धेर ना कोई मिटाईआ। वेखे खेल आप प्रबल, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे बूझ बुझाईआ। गुरमुख मिल्या सहिज सुभाई, आत्म वज्जी

वधाईआ। होए सहाई सभनीं थाँईं, खुशी ग़मी ना कोई रखाईआ। पार कराए फड़ फड़ बांही, पिता अम्मी आप अख्वाईआ। जोत निरँजण कदे ना मरे कदे ना जम्मी, आवण जावण पतित पावन आपणी खेल रचाईआ। सतिजुग साचे देवे थम्मी, सोहँ साचा नाउँ रखाईआ। करे खेल अगम्म अगम्मी, अगम्मड़ी कार कराईआ। वेख वखाणे हड मास नाड़ नाड़ी चमड़ी, दमड़ी मुल ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, सोए रिहा मात जगाईआ। चरन कँवल गुर ध्यान जिस लगाया। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी मार ध्यान, नाड़ नाड़ी वेख वखाया। गुरमुख विरले आत्म ब्रह्म ज्ञान, शब्द सुनेहड़ा रिहा सुणाया। बाल नदाना जीव जहानां रोगां सोगां पाया घाण, तन पीड़ा पीड़ भराया। आपे वेखे पवण मसाण, अन्दर मन्दिर अन्ध अंध्यान, हड्डी रीड़ा दुःख वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्त मिटाया। सागर में सागर कवण गहर गम्भीर। काया गागर मल भरे, कवण दुआरे आत्म नीर। कवण दुआरे हरि शब्द सुदागर जन वरे, भगत रत्नागर हरि हरे, कवण दुआरे कढ्ढे पीड़। दोहां आत्म कौण वरे, कवण चोटी चढ़े अखीर। कवण सेजा पग धरे, कवण पहने बस्त्र चीर। कवण नेजा हथ्थ फड़े बिरहों विछोड़ा जाए चीर। जोती जोत सरूप हरि, नौ दुआरे वेख हरि, खोल्ह बन्द किवाड़ ना कोई सीस ना कोई धड़, पंचां लाई बैठा जड़्ह, बहत्तर अन्दर बैठा वड़, ना कोई शाह ना फ़कीर। शाह फ़कीर कवण कंगाल। कवण हकीर जगत दलाल। कवण अमीर तन बस्त्र माल। कवण पीड़ लग्गे काया डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे शब्द वर, कवण दुआरे चुक्के डर, आप आपणी बन्न्हे बीड़। घाड़न घड़े कवण घड़याल। कवण शब्द तन वज्जे ताल। कवण फ़ल लग्गे काया डाल्ह। कवण अमृत आत्म वेखे साचा ताल। गुरमुख साचा कवण दुआरे मारे छाल। पुरख अबिनाशी पावे सारे, भीतर भीतर खेल न्यारे, आपे होए भगत जगत दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी चाल। शब्द गुर साख्यात, गुर गुर साचा नाउँ। गुरमुख साचा पारज़ात, दर घर साचे पाए थांउँ। हरि हरि नाउँ जगत दात, देवे अगम्म अथाहो। पारब्रह्म ब्रह्म उत्तम ज़ात, हरि हँस बणाए काउँ। चरन कँवल कँवल चरन गुर साचा नात, सदा सद बलि बलि जाओ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, शब्द लेख आप लिखाया, गुरमुख सोया मात जगाया, गुर गुर गुड़गाउँ। गुड़गावां गुर साचे तेरी सेव कमाईआ। गुरमुख साचे बलि बलि जावां, आत्म धुन नादी नाद वजाईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, वेख वखाणे वड वड मुनी सुनी मुन खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे जोत जगाईआ। जगे जोत अकाल होए दयाल, गुरमुखां करे सदा प्रितपाल, दिवस रैण धार रखा ल्या। फ़ल लगाए काया डालया।

चली मात अवल्लड़ी चाल, हरिजन चाढ़े रंग गुलालया। शब्द लावे एका छाल, धुर दरगाही इक्क दलालया। कदे शाह कदे कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख दर, इक्क वजाए साचा तालया। शब्द ताल वज्जे कवण दर सुहाया। भाण्डा भरम गुरमुख साचे भज्जे, पंजां चोरां डन्न चुकाया। काया माटी पड़दे कज्जे, जूठा झूठा मोह चुकाया। एका एक कराए मक्का काअबा हज्जे, दूई द्वैती पड़दा लाहया। हरिजन अमृत पी पी प्रभ दर रज्जे, आत्म तृष्ना रोग मिटाया। चरन धूढ़ धूढ़ चरन गुर मजन साचे मथे, दुरमति मैल दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख आत्म वेख दर, साचा राग इक्क सुणाया। राग सुणाए कन्न, पूरन जोत भगवन्तया। शब्द जोत जगाए तन, देवे वड्याई आत्म वधाई लोकमात जीव जन्तया। कलिजुग अन्त होए कुड़माई, साध संत दए दुहाई, गुरमुख साचे ख़ुशी मनाई, बेमुखां माया पाए बेअन्तया। निझर रस मुख चुआई, उलटी नभी आप कराई, साची बूंद इक्क बसंतया। मिले वड्याई उप्पर धवल, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख आत्म वेख दर, दिवस रैण सुणे बेनन्तया। सुणे बेनन्ती दिवस रात, प्रभ पूरन बूझ बुझानया। आत्म अन्दर साचे मन्दिर आपे वेखे मार झात, जोती नूर नुरानया। बैठा रहे इक्क इकांत, जन भगतां देवे अमृत बूंद स्वांत, गुणवन्ता गुण निधानया। एक बंधाए चरन नात, पुरख अबिनाशी कमलापात,
४१२ दर घर साचे साचा मेला आप आपणे विच समाणया। ना कोई वेखे ज़ात पात, शब्द सुनेहड़ा साची दात, जोती जोत सरूप ४१२
०५ हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख आत्म वेख हरि, करे खेल महानया। करे खेल महान जगत वड्याईआ। आपे चतुर ०५
सुघड़ स्याण, सार किसे ना पाईआ। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड, वरभण्ड खेल रचाईआ। लक्ख चुरासी पाए डण्ड, पुरख अबिनाशी आत्म सेजा सुत्ता दे कर कंड, सुहागी कन्त ना कोई हंढ्ढाईआ। सृष्ट सबाई भेख पखण्ड, जगत विकारी पायण डण्ड, शब्द डण्डा किसे हथ्थ ना आंयदा। आपे जाणे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज खाणी बाणी जगत राणी अंज़ील कुरानी वेद पुराणी, जगत धार कर विचार हरि करतार आपणी बणत बणांयदा। बणाए बणत दो जहानया। भरम भुलाए साध संत, भेव ना जाणे कोई ज्ञानीआ। माया रुल्ले जीव जन्त, जूठी झूठी ख़ाक छानया। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, हरि साचा गुण निधानया। नूर उजाला हरि कृपाला, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख आत्म वेख हरि, जोती दीप इक्क जगाए, मस्तक गगन साची थालीआ। साचा दीप सच प्रकाश। शब्द जोत जोत शब्द आदि पुरख पुरख आदि, जुगादि जुगादि सद अबिनाश। नाद नाद विच ब्रह्माद। शब्द दाद गुरमुख मेल माधव माध। रसना रस रिहा अराध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, सज्जण

सुहेले आपणे लाध। सज्जण सुहेला साचा मीता। नर हरि साचा कन्ता, आप चलाए आपणी रीता। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीता। करे खेल बे बेअन्ता, इक्क सुणाए सुहागी गीता। मानस देही लैणी जीत, मिले वड्याई जीव जन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दिवस रैण परखे नीता। कवण माया कवण छाया, कवण गुरमुख अमृत साचे तीर्थ नुहाया, चढ़या रंग बसंतया। काया रंग बसंत, आत्म वज्जी वधाईआ। मिले मेल प्रभ साचे कन्त, साची सेजा रिहा हंढाईआ। जोती शब्दी शब्दी जोती मेल साचे संत, सुरती आप भवाईआ। मनुआं माणक होए भस्मंत, पंचम पंचां परे हटाईआ। सोहँ शब्द सतिजुग साचे संत, गुर मन्त्र इक्क सिखाईआ। आपे जाणे बिध आदि अन्त, जुगां जुगन्त जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी खेल रघुराईआ। सम्बल नगर नगर अपारा, उच्च अटल मुनारया। किसे ना दीसे पार किनारा, वेद पुराण ना पायण सारया। राज राजानां धुँदूकारा, साधां संतां पासा हारया। प्रगट होए नर निरँकारा, जोत सरूपी जामा धारा, शब्द खण्डा तेज कटारया। छब्बी पोह दिवस विचारा, जगत नाता तुट्टे मोह, करे खेल अपर अपारया। आत्म शक्ती सभ दी रिहा खोह, दर दर घर घर साध संत बैठे रहे रो, दिवस रैण हाहाकारया। शब्द सरूपी हल रिहा जो, आपे मनमुखां जड़ रिहा उखाड़या। गुरमुखां दुरमति मैल रिहा धो, जोत जगाए बहत्तर नाड़या। एका शब्द बोला जगत सोहँ सो, धरत मात तेरा वेख अखाड़या। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग काज रचा ल्या, दिवस सुहाया सतारां हाढ़या। सोहँ सो जपाया जाप, जगत पित गुरदेवा। गुरमुखां मारे तीनो ताप, करे कराए वड प्रताप, अमृत फ़ल देवे साचा मेवा। आपे पिता आपे मात, पुरख बिधाता आत्म जाणे जोत निरँजण अलख अभेवा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आपे लाए आपणी सेवा। कलिजुग जीव जाग, कलि वक्त दुहेला। जूठा झूठा धो दाग़, प्रभ मिलण दा साचा वेला। एका सुण साचा राग, कवण आत्म जाए जाग, दर घर साचे साचा मेला। आत्म उपजे इक्क वैराग, लोकमाती वडे भाग, होए मिलावा इक्क इकेला। दीपक जोती जगे चिराग, माया डस्सणी ना डस्से नाग, अन्तिम घर साचा दस्से सज्जण सुहेला। हँस बणाए काग, आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, साचा मजन गुर चरन धूढ़ी माघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सोए आप जगाए, दया कमाए आपणी सेवा लाग। सतिगुर सज्जण मीतड़ा, मेला सहिज सुभाए। काया वेखे मैला चीथड़ा, देवे नाम रंगाए। गुरमुख विरले मात डीठड़ा, मिली हरि सरनाए। मनमुख कौड़ा जीव रीठड़ा, घर सच सार ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचा संत दुलारा, आप आपणी गोद उठाए। गोद उठाए लाल, भेव अगम्मड़ा। होए जगत

दलाल, हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा। काया मन्दिर अन्दर इक्क सुहाए सच्ची धर्मसाल, ना कोई रुपा पैसा दंमड़ा। जोती शब्दी सदा दयाल, ना मरया ना कदे जम्मड़ा। अट्ठे पहर रहे रखवाल, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे वेख दर, आपे होए मात पित पित मात अम्मी अंमड़ा। पुत्त सुत सुल्तान, हरि हरि जानया। गुरमुख साचा नौजवान, भाण्डा भरम भन्नानया। शब्द फड़ाए तीर कमान, रसना चिल्ले रिहा चढ़ानया। नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्यान, सत्तां दीपां वेख वखानया। बिरध बाल वेख निधान, जीवां जन्तां रिहा जगानया। शब्द सरूपी सच बिबाण, दो जहान रिहा फिरानया। उडे उडावे विच जहान, दिस किसे ना आनया। गुरमुख विरला चतुर सुजान, गुर चरनी चित लानया। गुर पूरा होवे मेहरबान, आत्म दरस दरस दिखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, बहत्तर नाड़ी जोत जगानया। जगे जोत अपार, शब्द प्रकाश्या। काया मिटे धुँदूकार, मिले मेल पुरख अबिनास्या। मानस देही पैज संवार, हरिजन होए दासन दास्या। जोत निरँजण नेत्र अंजन चरन धूढ़ मजन हरि रखास्या। ताल तलवाड़े अन्दर राग रागनी खेल अपार। मिले मेल प्रभ साचे सज्जण, पंच जोर दर झूठा तजण, करे कराए ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां आत्म वेख दर, जोत जगाए अपर अपार। दीपक जोती कर उज्यारा, पूरन ब्रह्म जणाईआ। शब्द सुणाए इक्क जैकारा, साचा धर्म वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क दुआरा, एका अंक समाईआ। पवण उनन्जा छत्र झुलारा, पवण स्वासी सोभावन्ती शब्द वज्जे सच नगारा, साची जोत इक्क सहारा, आपे बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराए आपणे मेले, आपे गुर आपे चेले, एका दूजा भउ चुकाईआ। एका दूजा चुक्के भउ। मन मति हरि सुणाए साचा रागन, तीजे नेत्र चढ़या चाउ। सुरती होई सुहागण, चरन कँवल कँवल चरन नर हरि साचे लागण, आपे होए बेपरवाहो। आपे रागी राग रागण, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां सुहाए इक्क घर, सोभावन्ती साची नार। निरगुण रूप अगम्म अगम्म समाया। शब्द सरूपी पए जम्म, दिस किसे ना आया। हड मास नाड़ी ना कोई चम्म, मात पित ना कोई गोद उठाया। पवण स्वासी ना कोई लए दम, बहत्तर नाड़ी ना कोई बणत बणाया। दिवस रैण ना खाए कोई ताम, आत्म तृष्ना ना कोई रखाया। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। आपणे रंग समाए, सगल प्रभ साथया। जोती जामा भेख वटाए, हरि रघुनाथया। शब्द दमामा इक्क वजाए, त्रैलोकी नाथया। पूरन कामा आपणा आप कराए, दूसर कोई ना दीसे साथया। सोहँ साचा नाम मात जपाए, हरिजन चढ़ाए साचे राथया। कलिजुग रैण अन्धेरी शामा मेट मिटाए, सतिजुग तिलक लगाए माथया। लक्ख चुरासी एका तामा आप बणाए, लेखा चुक्के

साढे तिन्न हाथया। एका आपणा आप दिसाए, दूसर कोई दिस ना आए, जोत निरँजण डगमगाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कथना कथ कथ अकाथया। जोती जामा भेख वटईआ, हरि निरंकारया। शब्द चलाए साची नईआ, कलिजुग अन्तिम पार किनारया। नाता तुट्टे भैणां भईआ, ना कोई मिले साचा सईआ, ना कोई दीसे मीत मुरारया। धर्म राए लेखा मंगे कढ्ढु कढ्ढु वहीआ, कोई ना पकड़े अगे हो हो बहींआ, नाता तुट्टे झूठे यारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणी खेल रचा ल्या। आप आपणी खेल रचाए, कलिजुग अन्तिम वारया। गुरमुख साचे संत जगाए, देवे दरस अगम्म अपारया। आप आपणा रंग रंगाए, शब्द घोड़े तंग कसाए, दिवस रैण अट्ठे पहर बैठा रहे न्यारया। जन भगतां लहिणा देण चुकाए, मनमुख डूंघे वहिण वहाए, ना कोई दीसे पार किनारया। शब्द निराला तीर चलाए, जोत ज्वाला खिच्च ल्याए, दीन दयाला भेख वटाए, काल महांकाला हथ्थ रखाए, शब्द रखवाला आप हो जाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणी बणत बणाए। कलिजुग अन्तिम वेख बणत बणाईआ। गुरमुख विरला साचा जाणे संत, प्रभ साची जोत जगाईआ। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्त, गूढ़ी नींद सवाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलावा आत्म अन्दर साचे मन्दिर, साची सेजा कन्त हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख दर, गुरमुख सोया मात जगाईआ। गुरमुख सोया मात जगाउँणा, प्रभ डोरी हथ्थ रखाईआ। एका देवे शब्द हलूणा, दिस किसे ना आईआ। आपे वेखे भरया ऊणा, शब्द कंडा तोल तुलाईआ। कलिजुग भार होया दूणा, ना सके कोई उठाईआ। घर घर धूंआँ धुखदा धूणा, साचा धूप ना कोए धुखाईआ। जन भगत नैण विहूणा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख दर, गुरमुख साचे संत सुहेले दे मति रिहा समझाईआ। देवे मति शब्द गुर संता, चरन प्रीत बंधाईआ। अट्ठे पहर परखे नीता, दिवस रैण सृष्ट सबाईआ। गुरमुख विरला राखे चीता, जिस जन प्रभ दया कमाईआ। सोहँ शब्द मात रखाए, कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, माण गंवाए अठारां ध्याए गीता, उलटी नईआ चलाईआ। हरिजन आत्म सीतल सीता, आपे करे पतित पुनीता, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख दर, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप आपणे कर कर मेले, एका राग रिहा उपजाईआ। एका राग नाद अनादा। धुन धुनी कन्न काना, गुरमुखां देवे शब्द दादा। बोध अगाध आप जणाए आपणा भाणा, होए मेल माधव माधा। गुरमुख साचा चतुर सुघड़ स्याणा, नौ दुआरे मनमुख बाधा। मनमुख चारों कुन्ट भवाना, गुरमुख साचे संत दुलारे, एका नाउँ हरि हरि अराधा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर,

लक्ख चुरासी वेख दर, गुरसिख गुरसिख गुर शब्द डोरी बाधा। गुर शब्द रत्न अमोल, गुरमुख जणाईआ। गुरमुख आत्म रहे अडोल, ना कोई मात डुलाईआ। मात उतरे पूरे तोल, शब्द वस्त इक्क दस्त आईआ। जूठा झूठा पड़दा देवे खोल्ह, वज्जे राग शब्द तन ढोल, काया रंगण रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म मंग सदा संग सज्जण सुहेल आप अख्वाईआ। सज्जण सुहेला हरि निरँकार, घर साचे वस्सया जोत सरूप कर अकार, दर दुआरा एका दस्सया। दीपक जोती कर उज्यार, गुरमुख साचे मन्दिर हस्सया। मिले मेल पुरख भतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे दर घर आपे दस्सया। दर घर वस्त अमोल, आप रखाईआ। आपे तोले सच्चा तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। बैठा रहे सदा अडोल, शब्द डण्डा हथ्थ उठाईआ। तन सुरती रहे सदा अनभोल, पंचां डोरां नाल बंधाईआ। जगत विकारा करे चोहल, शब्द धारा सार ना राईआ। गुर शब्दी रसना बोल, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाईआ। सुणे नाद अनादा ढोल, मृदंगा इक्क वजाईआ। मीत मुरारा दिसे कोल, कला सोलां सहिज सभाईआ। माणक मोती लए वरोल, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। तन चाटी नाम मधाणी, सुरत सवाणी रिड़कणा पाया। गुरमुख विरला साचा लाहा प्रभ दर खाटी, दीपक जोती जगे ललाटी, प्रभ पंचम झिड़कण आया। आप चढ़ाए औखी घाटी, दुरमति मैल रिहा काटी, साची बणत बणाया। साचा शब्द वखाए साची हाटी, बजर कपाटी अन्तर पाटी, ब्रह्मण्डी वंड वंडाया। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, अमृत आत्म रस एका चाटी, दर घर एका एक वखाया। नौ दुआरे खेल बाज़ीगर नाटी, दस्म दुआरा हरि निरँकारा जोत सरूपी कर अकारा, शब्द सिँघासण साची सेजा रिहा विछाया। मिले मेल जन पुरख अबिनासण, अन्दर मन्दिर हासी हासन, तन फूलन हार कराया। एका एक कराए पृथ्वी अकाशन, नौ खण्डा डण्डा ब्रह्मण्डी हथ्थ फड़ाया। आपे पाए घट घट वंडा, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख आत्म वेख दर, दर मंगल साचा गाया। गुरमुख आत्म वज्जी वधाई, मिल्या कन्त सुहागी। सोई सुरती शब्द जगाई, अट्ठे पहर रहे बैरागी। साचे दर साचे घर गुर शब्द होई कुड़माई, सोहँ मिल्या मात लागी। सतिजुग चले नाल नाई, कलिजुग धोवे कपड़े दागी, एका वेखे साची थाँईं, चले शब्द इक्क अनरागी। सदा सदा ठंडी छाँईं, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे देवे वर, आप आपणी किरपा कर, हँस बणाए कागी। गुरमुख बणया हँस काग, सुरती शब्द बंधाईआ। शब्द उपज्या मन वैराग, तन चोट नगारे लाईआ। आप आपणा धोया दाग़, काया खोट गंवाईआ। दीपक जोती जगे चिराग, भानन कोटां होए रुशनाईआ। लगे भाग काया माट, अग्गे दिसे नेड़े वाट, सुन अगम्मा दम दमा, आपे बाहर कराईआ। आपे वेखे हड्ड मास नाड़ी चम्मा,

अवल्ल अवल्ला सहँस दल कँवला एका एक पार कराईआ। शब्द भेंट हरि खेवट खेट, इक्क नेत्र गुर पूरा गुरमुख भेंट चढ़ाईआ। आपे होए माँ पिउ बेट, पूत सपूता होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सच महल्ल इक्क अटल साचा राह वखाईआ। अटल महल्ल उच्च टिकाणा, प्रभ साचा राह वखांयदा। आप बिठाए शब्द बिबाणा, नौ दुआरे पार करांयदा। ईड़ा पिंगल होए हैराना, सुखमन मुख खुल्हांयदा। एका देवे शब्द निशाना, हथ्थीं बन्न्हे आपे गाना, अन्दर बाहर गुप्त जाहर, आर पार पार आर आपे आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे आत्म दर, विच अन्धकार डूंघी गार, नाता तुट्टे सुट्टे पंचम यार, साचा मीत मुरार आप अख्वांयदा। शब्द सरूपी पहरेदार, वडा शाहो नर हरि भूपी होए सहाई अन्ध अंध्यार, ना कोई रूप रंग सति सरूपी आप आपणे रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत दुलार, एका देवे शब्द हुलार, साचे दर बहांयदा। दर दुआरा एका भगत जणांयदा। शब्द रखाए टेक, पार करांयदा। बुद्धि करे बिबेक, दया कमांयदा। जगत माया ना लाए सेक, मिली वड्याईआ। आपे आप रिहा वेख, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जामा धरया भेख, साची कुल वेख वखाईआ। मस्तक लेखा लिखे लेख, पुरख अबिनाशी धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत दुलारे मस्तक टिक्का लाहवण आया कलिजुग झूठी छाहीआ। कलिजुग झूठी छाही, आप मिटांयदा। प्रगट होए बेपरवाही, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। आपे आप बणे मलाही, बेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। दूसर कोए जाणे नाहीं, भेव अभेदा अछल अछेदा छल अछल करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख आत्म देवे वर, बन्द कवाड़ी खुल्हे दर, मुन सुन्न सुन्न मुन आपे आप तुड़ांयदा। सुन्न मुन तुड़ाए दयावान रघुराता। सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाए, पारब्रह्म हरि ब्रह्म ज्ञाता। नाम घोड़ आप चढ़ाए, गुरमुख वेखे उत्तम ज़ाता। मिट्ठा कौड़ वेख वखाए, लक्ख चुरासी उत्तम नाता। जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मण गौड़ आप हो जाए, सम्बल देस कर कर वेस आप आपणे रंग राता। सम्बल देस नगर अमोला, काया चोला भाग लगाया ए। सृष्ट सबाई तेरा डोला, पुरख अबिनाशी आपणे कंध उठाया ए। कलिजुग व्याहे जूठा झूठा बोला, हँकार विकारा संग रलाया ए। गुरमुखां पड़दे आपे खोल्हा, शब्द जैकारा एका एक सुणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ सुणाए साचा ढोला, सो पुरख निरँजण विच समाया ए। पंचम पोह प्यार, नर हरि पुरख सुजानया। नौ दुआरे खोल्ह द्वार, कलिजुग दस्से जगत निशानया। दस्म दुआरी जोत अकार, शब्द चलाए सच तरानया। हरि हरि हरिजन मेला मीत मुरार, आत्म बन्न्हे सच्चा गानया। साचा शब्द तन श्रृंगार, चले चलाए आपणे भाणया। वेख वखाणे वारो वार, राज राजानां शाह सुल्तानया। जोती जामा भेख अपार, करे खेल दो

जहानया। लोआं पुरीआं इक्क जैकार, वरभण्ड जोत महानया। नौवां सत्तां पसर पसार, सत्तां नौवां मेल मिलानया। आदिन अन्ता एका एक ओंकार, एका रंग समानया। शब्द रखे तिक्खी धार, नाम कटार इक्क रखानया। फड़े हथ्थ आप दातार, चारे कूटां करे ख्वार, ना कोई दीसे जीव शैतानया। चीना रूसा वेख वखाणे, ईसा मूसा कर ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम करे पंच प्रधान। पंचम मोह जगत नाता, तोड़े सृष्ट सबाईआ। आपे आप पुरख बिधाता, गुरमुख साचे शब्द जोड़े उत्तम ज़ाता मात रखाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी राता, साचे जोड़े जोत मिलाईआ। देवे दात सच्ची नाम सुगाता, अन्धेरी राता रहण ना पाईआ। करे खेल इक्क इकांता, हरिजन देवे बूंद स्वांता, अमृत आत्म रिहा प्याईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वाता, ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता, आप आपणी गोद उठाईआ। चार वरन कराए भैण भ्राता, साची सरन इक्क रघुराता, शब्द मन्दिर रिहा मात उपजाईआ। साचा मन्दिर कर त्यार, जोती हरि जगाईआ। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, सार किसे ना पाईआ। जगत हँकारी वज्जा जन्दर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। पंच पंचायणी नाचे कलन्दर, झूठी डोर हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ दुआरे दर दुआरा रिहा वखाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुआरा, कलिजुग खेल रचाया ए। सम्बल देस नगर अपारा, आपणा आप सुहाया ए। वज्जे डंक इक्क नगारा, राउ रंकां रिहा जगाया ए। चार वरनां इक्क प्यारा, साचा राह वखाया ए। कलिजुग मिटे अन्धेरा काला, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाया ए। ना कोई दिसे मन्दिर गुरुदुआरा, शिवदवाला रहण ना पाया ए। ना कोई जोती जगे ज्वाला, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मेट मिटाया ए। खाणी बाणी ना होए कोई रखवाला, वेद पुराणा वक्त चुकाईआ ए। अंज़ील कुरानां होए दवाला, काला सूसा तन छुहाईआ ए। फ़ल ना दिसे किसे डाला, प्रभ शब्द हलूणा लाया ए। आपे चले अवल्लड़ी चाला, गुरमुखां दस्से राह सुखाला, सोहँ साचा जाप जपाया ए। बेमुखां कढ्ढे दवाला, धर्म राए होए बेहाला, चित्रगुप्त रिहा घबराया ए। चरन दुआरे काल महांकाला, दोए जोड़ सीस निवाया ए। प्रगट होए दीन दयाला, गुरमुखां आपणी गोद उठाया ए। हरि दे शब्द दुशाला, दूसर किसे हथ्थ ना आया ए। आप सुहाए एका सच्चा ताला, सच सरोवर इक्क भराया ए। अग्गे पिच्छे चले नाल नाला, दस्म दुआरी राह वखाया ए। आपे शाह आपे कंगाला, आपे रक्खे नाम धन माला, दूसर दर ना मंगण जाया ए। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, सोहँ पाए फूलन माला, सोहणा सच्चा हार बणाया ए। धुर दरगाही आप दलाला, बण के आया मात रखवाला, काया इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला ए। साचा गुर लिख्या धुर, जिथ्थे आप बहाया ए। चरन प्रीती गई जुड़, शब्द चढ़े साचे घोड़, दो जहानी पार कराया ए। वेले अन्तिम जाए बौहड़, शब्द लाए साचा पौड़, ऊँचा

डण्डा विच ब्रह्मण्डां किसे हथ्थ ना आया ए। वेख वखाणे हरि नौ खण्ड, सोहँ फड़े चण्ड प्रचण्ड, रसन कमानी चाढ़े चिल्ला, मेट मिटाए बूरा कक्का बिला, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, सम्बल देस कर कर वेस नर नरेश, आपे आप सुहाया ए। सम्बल देस नगर अवल्ला, सार कोई ना जाणया। पुरख अबिनाशी इक्क महल्ला, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। सदा सदा सदा निहचल धाम अटल अटल्ला, ना कोई जाणे वेद पुराणया। आप आपणा घर आपे मल्ला, दर द्वार ना किसे वखानया। शब्द फड़े हथ्थ साचा भल्ला, चारों कुन्ट मचाए तरथला, कलिजुग वरते आपणा भाणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, करे खेल वाली दो जहानया। वाली दो जहान, रचन रचाईआ। सोहँ शब्द तीर कमान, रसना कमर कसाईआ। चारों कुन्टां इक्क निशान, लहिंदी दिशा दए दुहाईआ। मक्का काअबा होए वैरान, बीस इक्कीसा दए लिखाईआ। वेखे खेल दो दो आबा, प्रगट होए हक्क ज़नाबा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, बस्त्र नील जगत दलील भगत अपील शब्द वकील एका एक मात बणाईआ। नील बस्त्र पहन तन, करे खेल अपारी। शब्द शस्त्र सोहे तन, हरि बसन बनवारी। चारों कुन्ट देवे डन्न, तन तोड़ हँकारी। भरमी भाण्डे देवे भन्न, मारे तीर कटारी। गुरमुख आत्म जाए मन, भरमी भरम निवारी। एका मिले नाम धन, हउमे जाए जगत बिमारी। शब्द सरूपी चढ़े चन्न, मेट मिटाए अन्ध अंध्यारी। आपणा बेड़ा लए बन्न, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। कलिजुग जीव कौड़े रीठे देवे भन्न, शब्द हथौड़ा एका मारी। साधां सन्तां आत्म लाए संनृ, शब्द संदेसा लाए पाड़ी। एका एक सुणाए राग कन्न, जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाए नाड़ नाड़ी। वेखे नाड़ी हाडी तिन्न सौ सट्ठ, जोड़ी जोड़ जुड़ाया। पंज तत्त बणाया एका इक्ठ, शब्द घोड़ा इक्क दुड़ाया। दहि दिशा नट्ठ नट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग रेख वेख हरि, आप गिढ़ाए उलटी लट्ठ। जगी जोत अकाल, बीस इकीस्सया। शब्द वजाए साचा ताल, चारों कुन्ट इक्क हदीस्सया। रंक राजानां शाह सुल्तानां एका मस्तक एका दीपक एका जोती एका थाल, एका बन्नृे हथ्थीं गानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शब्द सीस ताज राज काज बाज साजन साज बणानया। धन्न कमाई संत जन, धन्न साचा पाया। धन्न कमाई भगत जन, हरि साचा गाया। दोहां वड्याई इक्क तन, गुर शब्द जणाया। वज्जी वधाई भाण्डा भरम भन्न, राग नाद इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, दोहां मेल आप मिलाया। धन्न कमाई भगत जन, दिवस रैण ध्याया। धन्न कमाई संत जन, नेत्र नैण रिहा तरसाया। धन्न कमाई भगत जन, सज्जण सैण इक्क बणाया। धन्न कमाई संत

जन, भाई भैणां हित तजाया। धन्न कमाई भगत जन, लहिणेदार आप हो आया। धन्न कमाई संत जन, भाणा सहिणा दोहां मन भाया। धन्न कमाई संत जन, आत्म रस माणे। धन्न कमाई भगत जन, गुण गाए गुण निधाने। धन्न कमाई संत जन, हरि हिरदे जाए वस, राह साचा जाए दस्स, शब्द तीर मारे कस, देवे दान गुण निधाने। धन्न कमाई भगत जन, जोत जगाए इक्क तन, जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्द मेल दर, आप आपणे रंग समाने। मन आसा दर परवान। वेख वखाणे काया कासा, गुणवन्ता गुण निधान, आपे जाणे पृथ्वी अकासा, नौवां खण्डां वंड वंडान। चौदां हट्टां वेख तमाशा, ब्रह्मण्डां जाणी जाण। शब्द कराए जगत भगत रविदासा, जेरज अंडां मार ध्यान, आत्म सहिँसा जिस जन विनासा, गुर चरन मिले ध्यान। पूरन देवे नाम भरवासा, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। निज्ज घर आत्म रक्खे वासा, जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए शब्द निशान सतिगुर राह वखाया, सति पुरख मिलाया, सति पुरख निरँजण जानया। भउ भरम गंवाया, नेत्र अंजन चरन धूढ़ मजन सुख शांत ना पानया। जोती जोत सरूप हरि, इक्क इकांत वेखे मार झात शब्द बरात साचा लाड़ा दिन दिहाड़ा ना मात सजानया। आए सरन गहर गवरे, गुर दाता गुण पाया। आत्म त्याग काज अवरे, साची बणता मात बणाया। मानस देही मात सवरे, आत्म जोती दीप जगाया। जूठी झूठी काया कवरे, गीत गोबिन्द सहिज धुन धुन नाद दर मंगलाचार घर साचा पाया। कलिजुग वेला अन्तिम पंचम होए बावर बवरे, जोती जोत सरूप हरि, कर दरस आत्म तृष्ना अग्न बुझाया। दरस नीत नेत्र नैण तृप्ताया। मिट्टी रेख, लक्ख चुरासी गेड़ मिटाया। तीजे लोचन लैणा पेख, आत्म घर खुल्ला दहिलीज इक्क वखाया। मन्दिर अन्दर बैठा रिहा वेख, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणे भेख, गुरमुख लेखे लाए आया जाया। गुर पूरे सिर हथ्थ टिकाया, साची बणत बणाईआ। शब्द रथ इक्क चढ़ाया, महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। सगल वसूरे मथ वखाया, साचे सुत आप उपजाईआ। लेखा सीआं साढे तिन्न हथ्थ चुकाया, जीव जन्त विच मिले वड्याईआ। गुर पूरा हाजर हज़ूरा वड दाता सूरा आप आपणे अंक समाईआ। सखी मिल्या सुल्तान, सोहया बंक द्वारया। गोपी मिल्या साचा काहन, मोर मुकट शब्द सीस सुहा रिहा। सतिगुर पूरा सदा सदा नौजवान, ना आवे पासा हारया। जोधा सूरा गुर बलवान, फड़ फड़ बाहों करे पार किनारया। गुरमुख वड्याई दो जहान, कर किरपा जिस जन आपणा आप वखा रिहा। सतिगुर साचा जीउ पिण्ड काचा देवे जिया दान, मानस देही काज संवारया। सतिगुर सावण जिस जन हिरदे वाचा, लक्ख चुरासी आर पार पार आर किनारया। पारब्रह्म हरि प्रभ आप है, आपणी अंस बणाए। अंसा बंसा आप है, सहँसा विच समाए। पारब्रह्म सदा विसेख है, आपणे रंग समाए। शब्द जगत

बिबेक है। भगत रिहा जगाए। दस्म दुआरी दुआरा एक है, चौथे दर बाहर खड़ पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाए। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई दीसे बहत्तर नड़, मुख हथ्थ कन्न ना कोई दिसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेखे घर, मन्दिर अन्दर ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाए। जन भगत रचाया काज, खेल उपन्नया। आप रखाई शब्द सांझ, वाली दो जहानया। शब्द पहनाया सीस ताज, राए धर्म ना देवे डन्नया। आदि अन्त रखे लाज, आपणा आप बेड़ा बन्नृया। शब्द सरूपी मारे अवाज़, ना किसे वसे छप्पर छन्नया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवे जगत वड्याई रसना कहे धन्न धन्न धन्नया। सावण साजण बरखा लाई, होई रुत्त बसंतीआ। सिँघ जैमल दया कमाई, मिल्या मेल इक्क इकवन्तीआ। घर साचे वज्जे वधाई, गुर पूरे सुणी बेनन्तीआ। प्रभ देवे शब्द जणाई, पंचां नाता इक्क रखंतीआ। मदिरा मास रसन तजाई, सेवा लाई सगल सतिवन्तीआ। धुर दी बाण लेख लिखाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेव छुपंतीआ। शब्दी मेला गुर गोबिन्द गुर शब्दी भेख अवल्ला। कलिजुग वहिंदी धार, सागर सिन्ध वेखे सच महल्ला। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, दुष्ट निन्द पया रहे तरथल्ला। एका गुर पुरख अबिनाशी साची बिन्द, हथ्थ शब्द फड़ाए भल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, वक्त लँघाया कर कर वल छल्ला। गुर शब्द जणाई दिवस रैण रहे घनघोरा। दरस दिखाए तीजे नैणा ना कोई जाणे जोरू जोरा। शब्द सरूपी साक सैण भईआ भैण होर ना होरा। जगत लहिणा लैणा देणा, पंचां पाए फड़ फड़ डोरा। रसना किसे ना सके कहण, गुर मन्त्र अन्तर होरन होरा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे वेखे मोरन मोरा। काया जामा जगत जुदाई, जोत निरँजण दिस ना आईआ। सतिगुर सावण इक्क करी कुड़माई, प्रभ जोती शब्द व्याहीआ। दर मन्दिर अन्दर वज्जी वधाई, साची सेजा आप बणाईआ। रंग रंगीला सूहा पीला लाल काला नीला कंचन काया शब्द सवाया। चिट्टा अस्व साचा घोड़ा, जोती जोड़ा अन्तिम बौहड़ा, नूरो नूरी इक्क कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जामा मानस देही मुख छुपाया। होए शब्द उज्यार, जगत प्रकाशया। मिल्या मेल पुरख भतार, आदि अन्त ना कदे विनास्सया। साचा नाता मीत मुरार, मात पताल पृथ्वी अकास्सया। दोहां सांझा इक्क प्यार, आपे पुरख आपे नार, आपे घट घट रक्खे वास्सया। जोत सरूपी कर अकार, शब्द सरूपी दए हुलार, जाप जपाए पवण स्वास्सया। गुप्त बैठ सच्ची सरकार, करे मात जगत विहार, होए ज़ाहर पतित उधार, सिँघ सावण पकड़े दामन, मेट मिटाए कामनी कामन, गुरमुखां मानस जन्म करे रहिरास्सया। चौथा घर चौथा पद, गुर पूरे दित्ती मात वड्याई। अन्दर मन्दिर साचे सद, त्रैभवन बूझ बुझाई। अवण गवण मेट मिटाई।

अमृत आत्म बरखे सवण, गुर पूरे दया कमाई। गुर पूरे गुण जाणे कवण, ना कोए बूझ बुझाई। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघ सिँघ बग्गे, गुर पूरे बन्ने शब्द तग्गे, आप होए पिच्छे अग्गे, सिर आपणा हथ्थ टिकाई। अग्गे पिच्छे आपे होया। गुर पूरा ना कदे मोया। दिवस रैण ना जगत सोया। आत्म बीज साचा बोया। तन मन सीज भेव चुकाया एका दोआ। लोकमात कराई आप रीझ, अमृत आत्म मुखड़े चोया। अट्ठे पहर खड़ा रहे आत्म दर दहिलीज, शब्द रक्खे साचा ढोया। गुर सतिगुर साचा साख्यात, अट्ठे पहर रखे इक्क प्रभात, दिवस रैण सद नवां नरोया। सत्तम सप्तम सति पुरख मनाया। सति पुरख निरँजण जोत धर, आपणा दरस दिखाया। वरन गोत वेख मात हरि तरस कमाया। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साजण साचा मीत, आप आपणा नाउँ रखाया। सतिगुर साचा मीत नाउँ निरंकारया। हरिजन आत्म बन्ने प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म अपारया। एका राग सुणाए गीत, नीत अनीत आप करा रिहा। जोती नूर जगन्दा, सोहँ जाप साचा जिंदा आप तुड़ा रिहा। मनमुख भागां मन्दा, रोग संताप आत्म अन्धा, जन्म गंवा रिहा। भगत जनां हरि आपे बख्शिंदा, जुगती भुगत मात लिखा रिहा। रागन राग सुणाए सोहँ सो साचा छन्दा, लक्ख चुरासी फंद कट्टा रिहा। दुरमति मैल काया धो, इक्क उपजाए परमानंदा, आत्म रस चवा रिहा। भरमां ढाहे झूठी कंधा, बत्ती दन्दां शब्द जपा रिहा। तन मन्दिर धाम इक्क सुहंदा, गुर गोबिन्दा गीत सुणा रिहा। शब्द सरूपी चाढ़े चन्दा, जोत ज्वाला इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां धर्म शब्द कर मात वणजारे, माया ममता मोह चुका रिहा। माया ममता मोह चुकाए, आत्म तृष्न बुझाईआ। काम क्रोध ना कोई सताए, विष्नूं बंसी आप बणाईआ। आत्म तीर्थ नाम सीरथ रसना मुख चुआए, जगत तृष्ना आपे दए मिटाईआ। शब्द सरूपी भोग लगाए, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे पूरन ब्रह्म जणाईआ। पूरन ब्रह्म जणाई, दस्म दुआरया। गुर चरन सच्ची सरनाई, साचा लेख विच संसारया। घर वज्जदी रहे वधाई, तन मन्दिर इक्क सुहा ल्या। सोहँ शब्द होई कुड़माई, सुरत सवाणी नाल रला ल्या। मनुआ दहि दिशा दए दुहाई, गुर मन्त्र मेट मिटा रिहा। पंचां मस्तक लग्गी छाही, काला दाग़ ना कोई धवा ल्या। गुरमुखां मिल्या साचा सुख, साचा राह वखा ल्या। पकड़ उडाए फड़ फड़ बांही, लोकमाती गले लगा ल्या। होए सहाई सभनीं थाँईं, दिवस रैण सेव कमा ल्या। सद रक्खे ठंडीआं छाँईं, शब्द विचोला आप बणा ल्या। साचा ढोल नाम मृदंगा, तन मन्दिर अन्दर वज्जया। पुरख अबिनाशी आपे बौहड़ा, डूंघी कन्दर सच दुआरे आपे वस्सया। भाग लगाए काया चोला, आत्म तोड़े वज्जा जन्दर, संत सुहेले पड़दा कज्जया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, मिले मेल कन्त भतारे, एका ताल भगत तलवाड़ा बहत्तर नाड़ां

वज्जया। वज्जे ताल ताल ताला। गुरमुख साचा दिवस रैण, गुर चरन प्रीत रहे बेहाला। दर्शन पेखे लोचन नैण, फल लगे काया डाल्हा। मन सुरती वहे वहिंदी वहिण, अकाल मूर्ति होए रखवाला। शब्द तूरत होवे लहिण देण, दीपक जोती इक्क ज्वाला। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, गुर किरपा पार उतारे, देवे नाम जगत दलाला। जगत दलाली कर वणज कराया। भगत करे रखवाली, शब्द जणाया। दिवस रैण करे प्रितपाली, भरम मिटाया। दो जहानां हथ्थां रक्खे खाली, धन्न अनमुल्लड़ा इक्क रखाया। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाली, हरि जन साचा चन्न चढ़ाया। जोती खेल जगत निराली, गुरमुख बेड़ा बन्न्हे लाया। लक्ख चुरासी विच्चों भाली, पंचां झेड़ा रिहा चुकाया। नौ दुआरे करे खाली, दसवें साचा राह वखाया। होए सच्चा आपे माली, साची रिहा सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, कलिजुग अन्तिम पार उतारे, पंझी पोह दुरमति मैल धो, शब्द वजाए नाद सोहँ सो इक्क इक्क सद ग्यारां। पंझी पोह पंच प्रधान। पंचां देवे नाम निशान। सोहँ अक्खर जगत वखर, लोकमात करे कल्यान। नेत्र नीर वरोले अत्थर, दीपक जोती जगे महान। लक्ख चुरासी लथ्थे सथ्थर, एका राग सुणाए कान। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, कर किरपा पार उतारे शब्द सरूपी हरि वडा शाहो भूपी देवे सच्चा ब्रह्म ज्ञान। ब्रह्म ज्ञानी मस्तक थेवा। चतर्भुज हरि निशानी, पाए घाल पूर्ब सेवा। प्रगट होए वड दाता दानी। अमृत देवे आत्म चरन धूढ़ सच्चा इशनानी, लेखे लाए रसना जिह्वा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे पार उतारे, आप कराए आपणी सेवा। इक्क चरन इक्क प्यार। इक्क सरन हरि करतार। इक्क तरनी साची तरन विच संसार। चुक्के मरन डरन, भवजल उतरे पार। पंचम नाता तुटे यार। पंचम मिले मीत मुरार। पंचम रंग बसंती कन्ती चुक्के पौड़ा शब्द घोड़ा मस्तक टिक्का सीस दस्तार। धुर दरगाही एका सिक्का, साचा शब्द नाउँ निक्का, लेखा लिखे अपर अपार। लक्ख चुरासी फ़ल काया फिका, कोए ना पावे अन्तिम सार। जूठ झूठ माया ममता विका, अन्तिम वहे वहिंदी धार। जन भगतां देवे मस्तक टिका, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए जगत भगत विहार। करे प्यार पंझी पोह, भगत मात वड्याईआ। आत्म बीज साचा बो, काया हरी क्यारी आप कराईआ। शब्द सरूपी हल्ल साचा जो, साचा बीज इक्क बिजाईआ। पंचम बैठे रहे रो, दिवस रैण देण दुहाईआ। पंचम गाया सोहँ सो, आत्म वज्जी वधाईआ। जगत नाता तुट्टे भगत मोह, भगतां रिहा समाईआ। आपे आप सभ थाँईं हो, आपणी रचना रिहा रचाईआ। सप्तम वार प्रभ कर विचार, दीपक खण्ड पाए सार, साची रचन रचाईआ। जिस जन गाया प्रभ चरन ध्यान लगाया सवा पहर, शब्द लहर जगत कहर मिटाया। ना कोई जाणे गुणी ज्ञानी गावत शाइर,

४२३
०५

हरि साचे भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां काया भरम चुकाया। सोहँ सो शब्द गुणवन्ता। आपे वेखे अन्दर बाहर, हो पतित पुनीत पतिवन्ता। मनमुख जीव रहे सौं, भेव ना राया आदिन अन्ता। गुर शब्द जणाई जाणे विरला को, तन वड्याई आदिन अन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल नौ दुआरे मेल दसवें तेल बेअन्त बेअन्त बेअन्ता। सप्त सप्त सप्त वार सति पुरख निरँजण जिस जन गाया ए। ब्रह्मण्ड खण्ड आत्म वंड होए पार वरभण्ड फेर ना आया ए। नार दुहागण होई रंड, कन्त कन्तूहला दिस ना आया ए। मनमुख जीव रहे घमंड, जेरज अंड भेख वटाया ए। जन भगतां कीनी साची वंड, सवा पहर रसना गाया ए। कलिजुग औध गई हंढ, सतिजुग साचे फेरा पाया ए। पुरख अबिनाशी साची वंडा रिहा वंड, इक्क सद ग्यारां भेव छुपाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी साचा राह जणाया ए। जप तप अभ्यास ना कोई जणाया। एका शब्द सुणाया सोहँ सो, अकाश मात दिस ना आया। गुरमुख आत्म रहे प्रकाश, सत्त दिन जिस जन रसना गाया। इक्क इक्क लेखा इक्क सद ग्यारां, त्रै लोआं खेल हरि प्रभास सुख मन्दिर काया अन्दर प्रभ साची सेज विछाया। आपे बैठा मारी जन्दर अन्धेरी कन्दर अन्ध घोर चोर दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। सत्त दिवस प्रभ शब्द जणाई। गुरमुख संत वरोले, मनमुखां मस्तक लग्गी छाही। काया सुत्ते झूठे डोले, तुट्टा नाता भैणां भाई। पुरख अबिनाशी वस्सया कोले, लेखा लिखे थाांउँ थाँईं। ना कोई वेखे पड़दे ओहले, जोती जोत सरूप हरि, पंझी पोह ख़ुशी मनाई। इक्क सद ग्यारां मिले वधाई। पंचम मेला ब्रह्म पार प्रभ दए मिलाई। सति सतिवादी सति सरूप समाया। सति सतिवादी सति सर्ब उपाया। सति सतिवादी सति सर्ब वेखण आया। सति सतिवादी सति सत्त अकासां विच रहाया। सति सतिवादी सति सत्त पतालां विच समाया। सति सतिवादी सति सत्त मण्डल रंग रंगाया। सति सतिवादी सति सत्त भूमिका थल सुहाया। सति सतिवादी सति सत्त सागर वेख वखाया। सति सतिवादी सति सति पुरख निरँजण जोत जगाया। सति सतिवादी सति जोती शब्दी प्रगट हो हो आया। सति सतिवादी सति ओंकारा देस सुहाया। सति सतिवादी सति निगम अगम्म सुन अगम्मी पार कराया। सति सतिवादी सति सांतक सति समाया। सति सतिवादी सति सतो गुण लए उपजाया। सति सतिवादी सति जोती जोत इक्क अख्वाया। सति सतिवादी सति शब्द धारा बाहर कढाया। सति सतिवादी सति सुन अगम्मा इक्क अकाल मूर्त जोत निरँजण साची मात बणाया। सति सतिवादी सति आपे जाणे साचा मजन, शब्द सरूपी साचा सज्जण शब्दी सति चलाया। सति सतिवादी सति विजोगण

४२४ ०५

बणाए सति राजस रिहा खेल रचाया। सति सतिवादी सति दुरमति खोटी तामस उपजी रत, वेखे खेल धरत मात महत्त, त्रैगुण माया एका मीत पुरख अबिनाशी वेखे हट, आप अकाली जोती रत, नाभी कँवल फुल्ल खिड़ाया। सति सतिवादी सति पंचां अट्ठां आत्म ठग्ग, तृष्ना देवे साची मति, सातक सति सरूप बणाया। सति सतिवादी सति बीज बीजे साचे वत्त, जोती जोत सरूप हरि, इक्क ब्रह्मा घर साचे जन्मा, आपे आप उपाया। सति सतिवादी सति साची सिख्या आत्म भिख्या शब्द विचोला बणया गोला, काया मन्दिर सुणाए मृदंगा राग ढोल तोल अतोला शब्द अमोला अट्ठे पहर चलाया। सति सतिवादी सति चार मुख दहि दिश वेख पंज सीस खेल हरि जगदीस, ना कोई भेव राग छतीस, एका रंगण काया अंगण विच चढ़ाया। सति सतिवादी सति आपे दे समझावे मति, त्रैगुण साचा देवे तत्त, निरगुण खेल अपारी, प्रभ साचे किरपा धारी, शब्द वज्जी तेज कटारी, सोहँ साची धार रखाया। सृष्ट सबाई हरता करता आदि पुरख अपरम्पर स्वामी एका शब्द ब्रह्मे आत्म ना कोई जाणे धर्म सनातन आपणा इक्क धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, एका रंग रंगान धुर दरगाही ढोआ काया मन्दिर आप सुहाया। सुणया राग घर साचा पाया। आत्म घर ल्या लाध, एका दूजा जगत गंवाया। शब्द जंजीरी ल्या बांध, मन तन वस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आदि अन्त
४२५ अन्त आदि दोहां विचोला आप अख्वाया। दोहां विचोला आप हरि गिरधारया। शब्द सुणाए साचा ढोला, जगत सबाया। ४२५
०५ सतिजुग बणाए नाम चोला, साची रंगण आप चढ़ाया। कलिजुग काला होया गोला, दर दर मंगे भेखाधारी आत्म पड़दा ०५
देवे फोला, गुरमुख विरला नज़री आया। एका बणया साचा तोला, सोहँ कंडा नाल ल्याया। धुर दरगाही शब्द विचोला, सोहँ सोहला मात सुणाया। मनमुख जीवां कढ्ढे पोला, वेले अन्त दए सजाया। गुरमुखां काया मन्दिर अन्दर वसे कोला, दुरमति मैल धो धो सांतक सांत कराया। नौ दुआरे हो हो आसा तृष्ना दए मिटाया। आत्म घर बीज साचा बो बो, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द धरत मात चलाया। शब्द चलाया मात, भगत वड्याईआ। धुर दरगाही साची दात, प्रभ साचे झोली पाईआ। आपे बैठा रहे इकांत, दिस किसे ना आईआ। वेख वखाणे मार झात, धरत मात खुशी मनाईआ। गुरमुखां वेले अन्तिम पुच्छण आया वात, साचा राह रिहा वखाईआ। उनीं अस्सू दिवस रात, शब्द सरूपी जगत बरात लोकमात प्रभ चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ सो साचा जाप जपाईआ। सोहँ सो सतिगुर उपाया, साची बणत बणाईआ। जुगो जुग किसे हथ्थ ना आया, दर दर देण दुहाईआ। सर्बकला समरथ, नेत्र पेख साची जोत जगाईआ। गुरमुख साचे मात जगाया, फड़ फड़ बाहों राहे पाया, एका

राह सच वखाईआ। उच्च अटला नज़री आया, जल थलां विच समाया, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सति द्वार कर विचार, गुरमुख पार उतारे, साचा जन्म काज संवारे आप आपणी किरपा धार। पहले दर मात वड्याई। दूजी खोल्हे साची धार, त्रै त्रै लोक भगत जस गाई। तीजे सुणे हरि पुकार, करोड़ तेतीसा दया कमाई। चौथे घोड़ शब्द अस्वार, शिव शंकर दरस दिखाई। पंचम बैठ सच्ची सरकार, बर्हमा लेखा रिहा चुकाई। छेवें जोती कर अकार, शब्द धुन मुख छुपाई। सत्तवें पुरख अपर अपार, धर्म मात दए वड्याई। पंचां कर त्यार, भूशन लाल तन पहनाई। सीस धर शब्द दस्तार, दूसर किसे हथ्थ ना आई। पंझी पोह भगत विहार, करे जगत कुड़माई। नौ पोह शब्द अधार, सुन अगम्मी रिहा समाई। तेई मग्घर कर पसार, ब्रह्मा दे मति रिहा समझाई। सति सतिवादी सत्त मग्घर हो त्यार, बाशक तशका मेल मिलाई। इक्की कत्तक कर्म विचार, सुरपति राजा इन्द बाहर कराई। पंचम कत्तक प्रभ पाए सार, बीस इक्कीसा करोड़ तेतीसा लोकमात जन्म दवाई। उनी अस्सू दर द्वार, गुरमुखा मंगे बण भिखार, अमृत धारा ठंडा सीर शब्द सीरा जगत वहीरा आपे आप कराई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क सौ ग्यारां, सत्त सत्त वारां नौवां सत्तां पार किनारा, गुरमुख विरले शब्द अधारा, रसना गाया पुरख अपारा। सोहँ सो अनहद धारा मेट मिटाए धुँदूकारा। जगत तृष्ना नाता तुटे मोह। सतिगुर पूरा जाणीए, ब्रह्मण्ड खोज खुजाए। सतिगुर पूरा जाणीए, एका नाम वंड वंडाए। सतिगुर पूरा जाणीए, जेरज अंड पार कराए। सतिगुर पूरा जाणीए, नौ खण्ड देवे कंड पाए वंड, गुरमुख साचा पार उतारीए। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साचा एक है, संत असंता जगत वखाईए। सतिगुर साचा शाह सुल्तान, एका जोत अगम्मया। गुरूआं पीरां देवे दान, ना मरे ना कदे जंम्मया। नर हरि पुरख चतुर सुजान, जोत सरूपी निगहबान, पवण स्वासी पंज तत्त ना लए दमिआ। आप आपणी कर प्रकाशी, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड निवासी गुर दर महल्ल अटल अचल आपे वस्सया। जोती जोत सरूप हरि, गुर सतिगुर साचा सति भूमिका थामण थम्म्हया। एका एक पुरख अबिनाशा, एका इक्क अकल्ला ए। सृष्ट सबाई आपे मवला, आपे वेखे दर द्वार खुल्ह्ा ए। सत्तां नौवां एका देवे नाम भल्ला, पंजां चोरां पाए तरथल्ला, शब्द सुनेहड़ा जिस जन घल्ला ए। किरपा कर काया मन्दिर अन्दर लेखा सत्त नौ द्वार हरि जी मल्ला ए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे मात उपजाए, आप आपणी जोत जगाए, शब्द सरूपी खेल खेला ए। हुक्म सुणाए सतिगुर साखी साख्यात, घर सच बलोया। दूजी दिशा ना कोई भाख्यात, त्रै लोआं सोया। दिवस रैण अट्ठे पहर जागयात, ना जन्मे ना कदे मोया। हरि सन्त सुहेला लोकमात एका एक पारज़ात, शब्द मेले धुर दरगाही साचा ढोया। मेट मिटाए अन्धेरी रात, दरस दिखाए

इक्क इकांत, अमृत देवे बूंद स्वांत, निझर झिरना अमृत चोया। आत्म वेखे मार झात, संत दात गुर संत सतिगुर साचे
अग्गे करे नित्त अरज़ोया। जोती जोत सरूप हरि, आत्म वेखे सच घर, सिँघ देवा सतिगुर पूरा अजे मात ना होया।
मुक्त जुगत गुर हथ्थ, दया कमाईआ। जिस मिल्या मेल समरथ, क्यों रोवे दए दुहाईआ। आपे रखे दे कर हथ्थ,
आवण जावण गेड़ कटाईआ। सगल वसूरे गए लथ्थ, गुर पूरे दर्शन पाईआ। धर्म राए ना पाए नत्थ, लेखा चुक्के साढे
तिन्न हथ्थ, मात गर्भ फंद कटाईआ। शब्द चढ़ाए साचे रथ, पंचम जोड़ा इक्क जुड़ाईआ। गुर पूरे दित्ती नाम वथ,
आत्म जिह्वा रिहा जपाया। गुर पूरा गुरमुखां पिच्छे अग्गे शब्द घोड़ा दुड़ाया। सांतक सति गुर द्वार सति गुण पाया।
सतोगुण तत्त विचार, काया मन्दिर सजाया। भाण्डा भरमां भरम निवार, आत्म अन्ध अज्ञान गंवाया। मानस देही जन्म
संवार, सच सरनाई कल्ल बहाया। गुर पूरे चरनी चरन प्यार, हाज़र हज़ूरे सेव कमाया। फड़ फड़ बाहों लाए
पार, किरती किरत जन सेव कमाया। देवे भगत हुदार, धरनी धरन आप अख्वाया। मिल्या मेल पुरख भतार, नार सुहागण
गुरमुख साचा कन्त हंढाया। मानस देही पैज संवार, लक्ख चुरासी उतरे पार, गुर पूरे संत भगवन्त साची दया कमाया।
४२७ जोती जोत सरूप हरि, एका रंगन रंग चढ़ाया। मुक्त जगत दर मंगण, दूई द्वैती भउ चुकाया। साचा शब्द देवे मुक्ती ४२७
०५ भगत, दो जहानां पावे सारया। लेखे लाए बूंद रक्त, पावे सार वेले वक्त ना होए कदे ख्वारया। मिले वड्याई उप्पर ०५
धवल जगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साचा काज रचारया। मुक्त दुआरा एक जगत
गुर पूरया। दूसर नाही कोए थांउँ, आसा मनसा हरि जी पूरया। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, हरिभगत सुहेला हाज़र हज़ूरया।
जाणे भेव वड देवी देव, अगम्म अगम्म बेपरवाहो, हरिजन कीनी गुर पूरे सेव, दमा दम जपे काया फ़ल लगे साचा मेव,
अमृत आत्म फ़ल खवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द वर, दरगाह साची
एका एक वखा रिहा। जगत वणज अपार भगत करंनया। गुर पूरा देवे कर प्यार, लोकमात ना लाए कोई संन्हिआ। रक्खे
काया महल्ल मुनार, दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, ना कोई दीसे छप्पर छन्नया। तत्ती वा ना लग्गे हाढ़, गोला तीर ना
वज्जे काड़ काड़, कलिजुग माया अग्नी ना देवे साड़, हरिजन बेड़ा आपे बन्न्हया। दर दुआरे एका वाड़, मगरों लाहे झूठी
धाड़, आप सजाए गुरमुख बणाए साचा लाड़, शब्द सीस सेहरा बन्न्हया। आपे होए पिछे अगाड़, अन्दर बाहर गुप्त जाहर,
निहकलंक कौस्तक मनी नाम तिलक होए प्रकाश कोटन कोट सूरज चन्न सितार रवि ससि चन्न चंनया। जिस जन किरपा
करे अपार। देवे शब्द नाम अधार। फड़ फड़ बाहों देवे तार। हरिजन साचा तन शब्द श्रृंगार। सोलां कलीआं वलीआ

छलीआ विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख आत्म वेख दर मेल मिलाए जोत निरँजण शब्द सरूपी कर विचार। शब्द विचोला विच जहानां, मिले मेल श्री भगवाना, आवण जावण फंद कटाया। गुर पूरा हथ्थीं बन्हे गाना, गुरमुख साचा सुहणा लाड़ा साचे खारे आप चढ़ाया। आपे बणया जाणी जाणा, गुर पूरा साचा शब्द सीस ताज टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ राग धोए काया दाग़, सवाणी सुरती जाए जाग, गुर पूरा हथ्थ पकड़े वाग, माया डस्सणी ना डस्से नाग, हँस बणाए काग, सर सरोवर इक्क इशनान करा रिहा। सोहँ सो अजपा जाप आप कराए, तूं मैं मैं तूं भेव चुका रिहा। धन्न कमाई संत जन, हरि रसना गाया। धन्न कमाई भगत जन, आत्म अन्तर अन्त ध्यान लगाया। दोहां वधाई इक्क दर, घर साचे मंगल गाया। जगत जुदाई चुक्के डर, भाण्डा भरम भन्नाया। दरगाह साची नाम वर, गुर पूरा मात पाया। मानस देही ना जाए हरि, काया चोले भाग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जाणे नारी नर, बिरधां बाल जवानां एका रंग समाया। एका रंग समाए रंग चलूलया। जोत सरूपी खेल रचाए, हरि रघुराए दूलो दूल्हिआ। शब्द जणाए सृष्ट सबाए, साचे संतां कन्त कन्तूहलया। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे नाम वर, शब्द भण्डारा आत्म घर, आप चुकाए लहिणा देणा अगला पिछला मूलया। गुर संगत लहिणा लैणा मात, लोकमात मिले वड्याईआ।

४२८ पुरख अबिनाशी देणा दीआ मात, मार झात साची भिच्छया इक्क रखाई। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, गुरसिख किसे हथ्थ ना आईआ। जन भगतां देवे साची दात, आत्म झोली रिहा भराईआ। पंचां बणी जगत बरात, मन लाड़ा ल्या सजाईआ। ४२८

०५ ०५

सुरती पुच्छे ना कोई वात, गुर शब्द दिस ना आईआ। कोई ना रक्खे अन्तिम पात, पतवन्ती दए दुहाईआ। गुर शब्द साचा साख्यात, सुरती लए जगाईआ। सुरती सुरत दिवस रात, शब्द पल्लू लड्ड फड़ाईआ। आपे वेखे मार झात, साचा नाता चरन जुड़ाईआ। अन्दर मन्दिर पुच्छे वात, पहरेदार आप हो जाईआ। नाता तुटे भैण भ्रात, कमलापात नज़री आईआ। जूठी झूठी छड जमात, ना कोई वेखे सञ्झ सवेरा, ना दिवस ना प्रभात, एका रंग समाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, ना कोई दिवस रात, बैठा रहे इक्क इकांत, जोत निरँजण डगमगाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांत, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सिँघासण इक्क बणाईआ। काया मन्दिर अन्दर डाहया। चार दिवार ना कोई रखाया। हड्ड मास नाड़ी रत काली छत बन्द कराया। इक्क दरवाज़ा गरीब निवाज़ा, आप आपणा आपे साजा, दूसर किसे दिस ना आया। वज्जे नाद अनाहद वाजा, भगत जनां दी रक्खे लाजा, सच सिँघासण हरि हरि बैठा भगत जनां नूं मारे वाज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ल उच्चे अटल जन भगत संवारे तेरा काजा। जन भगत संवारे काज दस्म दुआरया। नौ दुआरे

ਖੋਲ੍ਹੇ पाज, लक्ख चुरासी देवे दाज, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। चारों कुन्टां होए भाज, अट्ठ सट्ठ तीर्थ गई लाज, लथ्थे ताज राजे राणया। ना कोई मक्का काअबा हाजन हाज, दो दोआबा होए माहताबा, पुंन सवाबा आप चुका रिहा। शब्द घोड़े चरन दे रकाबा। जोती जोड़ा जुड़े शब्द ज़नाबा। जन भगतां वजाए काया तन रबाबा, एका राग सुणा रिहा। लहिणा देणा आप चुकाए, लेखा लिखे हिसाबा। शब्द गहणा तन पहनाए, गुरमुख साचे जायण जागा। दरस दिखाए तीजे नैणां, सुरती पकड़े हथ्थ आपणे वागा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत धोवण आया कलिजुग तेरे दाग़ा। कलिजुग धोए काले दाग़, दुरमति मैल गवाईआ। प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, साची नारी खुशी मनाईआ। होए वड वडभाग, गुर संगत मेला भैणां भाईआ। गुरमुख हँस बणदे काग, गुर चरन प्रीत सर सरोवर इक्क इशनान कराईआ। जगत बुझे तृष्ना आग, शब्द बन्ने तन साचा ताग, साची सिख्या दर साचे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरी करन आया मात कुड़माईआ। गुरमुख वरना इक्क नाउँ। धुर दरगाही लेखा, सदा सुहेला देवे ठंडी छाँउँ। मस्तक लाए साची मेखा, गुरसिख गुर पूरे सद बलि बलि जाओ। हँस बणाए काउँ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख धर, पार कराए फड़ फड़ बाहों।

०५ ०५

★ ६ पोह २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

कलिजुग ठग्गण आया, सभ जग ठग्गया। कलिजुग ठग्गण आया, जूठ झूठ फिरे पिच्छे अग्गया। कलिजुग ठग्गण आया, मनमुखां पकड़ पछाड़े, फड़ फड़ शाह रगया। कलिजुग ठग्गण आया, गुरसिख विरला सरन सरनाई लग्गया। कलिजुग ठग्गण आया रे ठग्ग बवरी, सुरत अञ्याणी बाली। नैण विहुणी रोए काया कवरी, दीपक जगे ना मस्तक थाली। मानस देही मात ना संवरी, फ़ल लग्गा ना काया डाल्ही। गुर चरन प्रीती गहर गवरी, जगत अवल्लड़ी चाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे दलाली। हरिभगत दलाली, दर घर सच्चया। देवे दात सच्चा धन माली, वेख वखाणे काया भाण्डा कच्चया। मारे शब्द सच उछाल, गुरमुख विरले मात पचया। इक्क सुहाए साचा ताल, पंचम यार ना झूठा नच्चया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेखे दर, हरिजन विरला मात बचया। लक्ख चुरासी रोए दए दुहाईआ। गूढ़ी नींद कोई ना सोए, आत्म घर सुख ना राईआ। ना जन्मे ना दीसन मोए, नार दुहागण रही कुरलाईआ। आत्म बीज गुरमुख साचा मात बोए, साचा फ़ल साचे माहीआ। निज्झर धारा हरिजन चोए,

कटे कटाए जम की फाहीआ। सोहँ सो जगाए सोए, लक्ख चुरासी भेव ना राईआ। नौ दुआरे सथ्थर होए, अथ्थर दसवें इक्क वखाईआ। पत्थर पाड़ दो फाड़ा होए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पोह नौ दिहाड़ा शब्द अखाड़ा पारब्रह्म ब्रह्म होए। शब्द अखाड़ा पारब्रह्म ब्रह्म करे त्यारी। पंचम धाड़ा लाहे चम्म, शब्द करे अस्वारी। जगत विकारी लैण ना देवे दम, मारे तेज कटारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पैज संवारी। हरि जन साचे पैज संवार, गुर मन्त्र शब्द जणाया। गुर शब्द जगत अपार, गुरमुख विरले आत्म पाया। गुरमुख आत्म तन शृंगार, प्रभ साचे नाम कराया। साचा नाम जगत वणज वपार, लहिणा देणा मात चुकाया। लहिणा देणा कर्म विचार, हरि करते खेल रचाया। साचा मेल सच्ची सरकार, मानस देही लेखे लाया। मानस देही भरम निवार, भाण्डा भरम भन्नाया। गढ़ तोड़ किल्ह हँकार, उप्पर चढ़ डंक वजाया। आपे वेखे अन्दर बाहर, राउ रंक राजान शाह सुल्तान रिहा सुणाया। शाह सुल्तान शब्द दीबाण, मोह जंजाला जगत वधाया। जगत जंजाला झूठी खाण, वेले अन्त ना कोए सहाया। वेले अन्त सर्ब पछताण, ना होए कोई सहाया। गुरमुख साचे ख़ुशी मनाण, गुर पूरा नज़री आया। नज़री नज़र करे ध्यान, शब्द बिबाणा इक्क वखाया। शब्द उडाए जगत उडान, त्रै लोआं पार कराया। त्रै लोआं नाम निशान, ब्रह्मण्डी वंड वंडाया।

४३० चतर्भुज भगवान, नौ खण्डां सहिज समाया। नौ खण्डां इक्क ज्ञान, गुर डण्डा शब्द फड़ाया। शब्द डण्डा जगत बलवान, ४३०

०५ आत्म रंडा सर्ब कराया। जेरज अंडी मार ध्यान, वरभण्डी डेरा लाया। वरभण्ड वेख वखाणे पखण्ड झूठ निशान, चारों कुन्ट ०५

फिरे हलकाया। चारों कुन्टां कर ध्यान, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। जगत वक्खर नाम निधान, सो साचा नाल रलाया। सो पुरख निरँजण ब्रह्म ज्ञान, आत्म दरस दिखाया। आत्म दरस तीर निशान, बजर कपाटी चीर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी कर ध्यान चरन दुआरे साची हाटी साचा हट्ट खुल्हाया। खुल्हे साचा हट, हट हटवाणया। सोहँ अक्खर साचा पट, भगत भगवानया। कलिजुग मेटण आया फट्ट, देवे धन्न जिया दानया। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ सट्ठ अट्ठ रहण ना पाणया। दर घर साचे नाम इक्ठु, रंगण रंगे हरि हरि भगवानया। सोहँ शब्द तेरी चट्ठ करे हरि, हरि वाली दो जहानया। जूठे झूठे मण्डप गए ढठ्ठ, खाली होए खज़ानया। आप गिड़ाए उलटी लट्ठ, ना कोई जाणे शाह दुरानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे जगत वर, सोहँ सो गुणवन्त गुण निधानया। सोहँ सो साचा पौड़ा, सति पुरख निरँजण लाया। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, भेव किसे ना आया। आपे वेखे रस मिट्ठा कौड़ा, रसना रस रसन रसन रसक रस पाया। उच्च महल्ले वस्सया ब्रह्मण गौड़ा, दिस किसे ना आया। हरि जगत कुड़माई,

शब्द रचाया काज। गुरमुखां आत्म इक्क प्रनाई, सोहँ नाल बणाया दाज। दसवें घर वज्जी वधाई, अनहद वज्जे साचा साज। जोत सुहागण वेखण आई, घर साचे मन्दिर रक्खे लाज। नाम वैरागण पकड़ उठाए, इक्क लगाई साची अवाज़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल रचाया देस माझ। शब्द रचाया काज, सईआं मंगल बोल्लया। धुर दरगाही मिले सच्चा राज, सोहँ गाया सच्चा ढोल्लया। दो जहानी एका ताज, लाल अमोला इक्क वरोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत बणाया नाम सच्चा गोल्लया। शब्द काज अपार, दिस ना आया। पुरख बिधाती साची धार, लोकमाती हिसा वंडाया। साचा नाती जोत अधार, कमलापाती कर्म कमाया। दीपक बाती इक्क उज्यार, अन्धेरी राती सोहँ चन्द चढ़ाया। लेख लाया मस्तक माथी, प्रेम हाथी इक्क मंगाया। आपे बणया सच्चा साथी, साचा लाड़ा शब्द बणाया। करे खेल त्रैलोकी नाथी, भगत अखाड़ा नाल रखाया। जगत चलाए कथा अकथना काथी, दिन दिहाड़ा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका बंक द्वार लोकमात वड्आया। गुर आत्म सच सवाणी, शब्द लाड़े मात प्रनाईआ। दिवस रैण दोए नैण भरदे रहण पाणी, साचे हाणीआं हाण मिलाईआ। एका अक्खर सोहँ शब्द मिली सच्ची बाणी, होए सहाई सभनी थाँईंआ। सतिजुग साची बणनी राणी, जगत जगदीश दया कमाईआ। साचा पड़दा रही ताणी, बीस इक्कीसे खोल्ह वखाईआ। ना कोई दीसे बाणी खाणी, वेद पुराणी पुनी छाणी, मंगलचार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुरमुख आत्म नौजवान, साचा तन शृंगारया। नेत्र खोल्हे मार ध्यान, पुरख अबिनाशी चरन द्वारया। एका मिले नाम निशान, झुलदा रहे विच संसारया। एथे ओथे चुक्के कान, नाता तुट्टे नौ द्वारया। साचा मन्दिर इक्क मकान, शब्द सरूपी चार दिवारया। पवण सरूपी नाम बिबाण, सोहँ बणे सच कहारया। साचे कंधी आप उठान, लोआं पुरीआं बाहर कढा रया। आपे करे जाण पछाण, साचे अन्दर बूहा लाह रिहा। पलँघ रंगीला श्री भगवान, छैल छबीला बणत बणा रिहा। आत्म सुरत सुरत रकान, माण ताण इक्क वखा रिहा। साचा मेला इक्क इकेला दर दुआरा हरि घर परवान, अचरज खेला आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर चेला एका धाम सुहा रिहा। मिल्या मेल आत्म जागी, जोती जोत जगाईआ। उठ उठ उठ वेखे वेला प्रभाती, रैण अन्धेरी राती रहण ना पाईआ। एका मिली अमृत आत्म बूंद स्वांती, सीतल धारा सांत कराईआ। साचा न्हावण प्रभ दर नात्ही, इक्क इकांती सदा समा रिहा। नाता तुट्टे जाति पाती, कमलापाती इक्क मना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर बहाईआ। शब्द छबीला जग, हरि शृंगारया। सोहँ शब्द बन्न्हाए पग, सच दस्तारया। इक्क

दुआरा आप वखाए उप्पर शाहरग, नौ दुआरे बन्द करा रिहा। चुगे चोग मोती हँस बणाए कग्ग, कोटी कोट जन्म सुहा रिहा। दो जहानी बुझे तृष्ना अग्ग, साचा सग मुख लगा रिहा। वड दाता सूरा सरबग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पग नाम बन्ना रिहा। शब्द धागा बन्ने डोरी, दिस किसे ना आईआ। वेख वखाणे अन्ध घोरी, आपणी किर्त कमाया। अट्ठे पहर करे चोरी, हराम खोरी नेड़ ना आया। शब्द रक्खे साची घोड़ी, दिवस रैण रिहा दुड़ाईआ। शब्द जोती साची जोड़ी, आत्म जोती मेल मिलाईआ। आप चढ़ाए साची पौड़ी, वरन गोती भेव चुकाईआ। ना कोई राग सुणाए गौड़ी, प्रभ साची खेल रचाईआ। साचे घर वज्जी वधाई, मेल मिलाया। मिल्या मेल साचे माही, भरम गंवाया। आप फड़ाए आपणी बांही, पार किनारा इक्क वखाया। देवे दरस अगम्म अथाही, शब्द श्रृंगार तन कराया। बैठा रहे रथ रथवाही, साचा मार्ग इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, सुरती सुरत शब्द जगाया। पुरख अबिनाशी साची बणत बणाई, आप हरि मात पित पिता मापा। इक्क वखाए अक्खर वक्खर झोली पाए सोहँ सच्चा जापा। चौथे जुग चार कहारां डोली आप उठाए, मेट मिटाए तीनो तापा। साची चोली तन सुहाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात करे वड प्रतापा। वड प्रताप आप कराया। शब्द अजपा जाप, गुरमुख साचे आप जपाया। आपे जाणे पुंन पाप, दूसर कोए भेव ना राया। जीव जन्त रहे कांप, देवी देव रहे शरमाया। माया डस्सनी डस्से सांप, जूठी झूठी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अन्तिम मेला आप मिलाया। मिल्या मेल कन्त सुहाग, सुरत सवाणी खुशी मनाईआ। कलिजुग सोया गया जाग, साची रात दया कमाईआ। इक्क बुझाए तृष्ना आग, अमृत आत्म मुख चुआईआ। दीपक जोती जगे चिराग, सोहँ बत्ती एका लाईआ। कलिजुग चोली लाहवण आया काले दाग़, इक्क आपणी दया कमाईआ। शब्द घोड़ी गुंदे वाग, नाम मौली इक्क रखाईआ। हथ्थीं गाना साचा ताग, सच निशाना मात लगाईआ। जोत निरँजण सोहँ पाए सच तेल काना, नैण नाई आप अख्वाईआ। पाणी वारे दो जहानां, मात धरत खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी पहरे बाना, गुरमुखां रिहा बणत बणाईआ। गुरमुख बणत बणाए, शब्द जणाईआ। साचा शब्द झोली पाए, सुरत सवाणी सेव कमाईआ। पंचां गोली आप अख्वाए, साचा तोल रिहा तुलाईआ। कलिजुग बोली अन्तिम वेले अन्त व्याहे, सोहँ ढोल रिहा वजाईआ। गुरमुख साचे मात उठाए, हिरदे फोल आप वखाईआ। आप आपणे रंग रंगाए, साचा जाप अजपा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तिवहार साची खुशी मनाईआ। सच दिहाड़ा सच सो वेला, सच सुहञ्जणी रैण साचा लाड़ा। साचे मन्दिर लैणा पेख बहत्तर नाड़ा। भगत सुहेले पेखे नेत्र दोए नैणा कलिजुग

अखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां चुकाए लहिणा देणा। लहिणा देणा आप चुकाए, पंझी पोह आप दिवस विचारया। शब्द गहणा तन पहनाए, जगत मैल आत्म धो, मेल मिलाए हरि निरंकारया। पूरन जाप सोहँ सो, उतरे पार धर्म जैकार जिस जन रसन उचारया। तन क्यारी बीज साचा बो, फ़ल लगाए काया डालया। मिले फ़ल दो जहानी अग्गे हो, चले आप अवल्लड़ी चाल चालया। लक्ख चुरासी रही रो, सभ दिसे हथ्थीं खालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, शब्द बणाए जगत दलालया। जगत दलाल आप बणाया, जाप जपाया सोहँ सो। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाया, लेखा चुक्के एका दो। करोड़ तेतीसा रहण ना पाया, शिव शंकर बैठा रिहा रो। ब्रह्मा सीस जगदीस दिस ना आया, वेखे खेल छब्बी पोह। गुरमुखां हिसा मात वंडाया, अमृत आत्म रिहा चो। जोती जोत सरूप हरि, शब्द भण्डारा इक्क रखाए, अवर ना जाणे को। सतो गुण सति संतोखिआ। सति सरूप गुर नांओ, एका दस्से राह सौखिआ। दर घर साचे देवे थांउँ, दर घर मिले मोखिआ। सदा सदा सद देवे ठंडी छाँओ, लोकमात ना करे धोखिआ। गुरमुख उठाए शब्द गुड़गाउँ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे अनोखिआ। शब्द पहनाए तन श्रृंगार, प्रभ साचा मात कराईआ। वेख वखाणे थाँईं थांउँ, गुरमुख साचे मात जगाईआ। सिँघ बिशन सद बलि बलि जाओ, जागरत जोती ल्या जगाईआ। देवे माण थाँई थांउँ, सिँघ इन्द्र सहिज सुभाईआ। आपे पिता आपे मांउँ, भाई भैणां आप अख्वाईआ। जुगो जुग रखाए नाउँ, कृष्न सुदामा काया चामा लेखे लाईआ। बणया तन जगत दमामा, शब्द नगारे चोट लगाईआ। सिँघ प्रीतम पूरन कामा, कोटन कोट वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बणत बणाईआ। हरि बणत बणाए आप जगांयदा। गुरमुख सिँघ साचे सुत जगाए, एका राह वखांयदा। दर घर साचा साचे नाए, जगत राह वखांयदा। दर हँस बणाए फड़ फड़ कागन, सिँघ पाल दया कमांयदा। गुरमुख बणे साची माला, सोहँ धागे आप पुरांयदा। आपे तोड़े जगत जंज़ाला, राह सुखाला मात चलांयदा। पंझी पोह करे प्रितपाला, काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, दीपक जोती इक्क ज्वाला, मस्तक लिलाटी औखी घाटी फड़ बाहों आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हट शब्द वणजारा, घट घट आप अख्वांयदा। हरि हरि साचा मीत, वड वड संसारया। दिवस रैण राखो चीत, काया करे पतित पुनीत, ना आवे पासा हारया। सदी चौधवीं रही बीत, लक्ख चुरासी परखे नीत, चारों कुन्ट वेख वखा रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क सुहागी गीत, आप बंधाए चरन प्रीत, साचा मार्ग हरि वखा रिहा। कलिजुग चले अवल्लड़ी रीत, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा संग निभा रिहा। साचा संग निभाए, सगला

साथया। नाम रंगण रंग चढ़ाए, हरि हरि नाथ त्रैलोकी नाथया। शब्द कंगण तन पहनाए, सोहँ टिक्का मस्तक माथया। दूजा दर ना मंगण जाए, साचे अंगण आप रखाए, आपे रक्खे दे कर हाथया। शब्द घोड़े तंग कसाए, लोआं पुरीआं पार कराए, ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड जेरज अंड वेख वखाए पृथ्वी अकाशया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणे रंग समाए, गुणवन्त गुण निधान गुरमुख साचे संग मिला रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाना। जगत तृष्ना भुक्ख नंग, गुर शब्द मृदंग इक्क वजाना। नौ दुआरे वखाए लँघ, दस्म दुआरी इक्क तराना। वड दाता सूरा सरबंग, आप अख्वाना। जन भगत भगत जन आत्म बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका देवे नाम वर गुणवन्ता गुण निधाना। देवे नाम अपार, सच गुणवन्तया। आत्म भरे भण्डार, नूरी जोत श्री भगवन्तया। वेख वखाणे वारो वार, खेले खेल जुगा जुगन्तया। आपे पुरख आपे नार, पति पतिवन्त साचे कन्तया। सोलां कर तन शृंगार, हरिजन जन हरि आत्म रस इक्क चवन्तया। अमृत झिरना अपर अपार, बरसे मेघ बे बेअन्तया। काया सीतल ठंडी ठार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि हरि जन बणाए मात बणतया। शब्द तत्त प्रधान गुरमुख जाणया। गुरमुख चतुर सुजान चले गुर के भाणया। गुर पूरा होए मेहरवान, देवे नाम वंञ मुहाणया। जुगत भुगत भगत जिया दान, इक्क झुलाए शब्द निशानया। पारब्रह्म मेल मिलानया। जोती शब्द शब्द जोती रंग साचा माणया। दर घर साचा इक्क पछाण, नौ दर वेखे झूठ दुकान, मिले मेल श्री भगवानया। लक्ख चुरासी चुक्के काण, धर्म राए ना लाए बाण, लेखा लिखे गुण निधानया। पंचम चोर मिटे निशान, शब्द डोर इक्क उडान, अन्ध घोर ना कोई पाए शोर, पुरख अबिनाशी घट घट वासी फड़ फड़ बाहों अन्दर मन्दिर लए तोर, इक्क वखाए नाम खानया। ना कोई ज़ोरू जाणे ज़ोर, गुर पूरा रहे सदा शब्द घोड़, गुप्त ज़ाहिर रिहा दौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, भरया रहे सदा भण्डारया, भरपूर भरपूर भरपूर तन तन तन नाम खज़ीनया। गुर हाज़र हज़ूर सतिजुग सति सरूर, तन मन मौले सद सद सद भीन्ना। हरि हरि हरि हाज़र हज़ूर, जोधा दाता बीर सूर सांत कराए ठांडा सीना। निर्मल जोती बाती। कोह कोहनूर मिटे अन्धेरी राती। मिले मेल कमलापाती। शब्द देवे सच सुगाती। आपे नेड़े आपे दूर, दिवस रैण वेखे मार झाकी। हरिजन चुकाए लैण देण बाकी। ना कोई जाणे जीव जन्त ख़ाकी। गुरमुख साचे संत पुरख अबिनाशी अमृत आत्म प्याला भर प्याए धुर दरगाही सच्चा साकी। दीन दयाला गुर गोपाला, अट्ठे पहर दिवस रैण होए रखवाला, पंच पंचायण माया ममता डैण कोई ना दिसे आकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां

देवे शब्द वर, आप चढ़ाए गुर शब्द साचे राकी। शब्द घोड़ा जगत बलवान, प्रभ साचा मात ल्याया। गुरमुख साचा नौजवान, मेट मिटाए पंज शैतान, काया माटी भाण्डा काचा साचे रंग रंगाया। मिले मेल हरि भगवान, दीपक जोती जगे महान, एका शब्द एका राग कन्त सुहाग सुणाए कान, दुरमति जाए धोती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द वर, दो जहानां इक्क तराना अवण गवण त्रैभवण मेट मिटाए, पार उतारे विच्चों कोटन कोटी। काया धरती मौले, प्रभ अमृत मेघ बरसाईआ। होए बहार उप्पर धवले, फूलन सेज इक्क विछाईआ। गुरमुख आत्म रही बवले, शब्द सुनेहड़ा भेज प्रभ आप रिहा जगाईआ। आप उलटाए नाभ कँवले, मारे तीर सोहँ सच्चा नीर, आत्म झिरना रिहा झिराईआ। आपे भख भोज आपे करे लेहज फेहज, चारे खाए चार वरनी शब्द इक्क साची सुरती धरनी धरत आप अख्वाईआ। गुरमुख साचे साची तरनी, लेखा चुक्के मरनी डरनी, नेत्र खुल्ले हरनी फरनी, दीपक जोत करे रुशनाईआ। एका साची तरनी तरन, चरन सरन सरन गुर चरन नित्त नीती इक्क पढ़ी आपे जाणे धरनी धरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे एका वर, दसवां दुआरा जोत अपारा शब्द हुलारा हरि प्रकाश, रसन स्वास काया मण्डल रास पूरन आस आप कराईआ। भगत सुहेला दासन दास, इक्क इकेला वसे पास, आप सुहाए साचा वेला। शब्द चलाए स्वास स्वास, सुरती शब्द साचा मेला। पवण उडाए विच अकासी, गुर मन्दिर अन्दर गुर चेला। गुर पूरे सद बलि बलि जासी, अचरज खेल आपे खेला। शब्द सरूपी चाढ़े तेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, दीपक जोती कर प्रकाश, दर घर साचा आप सुहाया। दीपक जोती होए जगत प्रकाश, मन धीर धराया। हरि बिन ना जाणे कोए काया कासा, अमृत प्याला भर वखाया। दुरमति मैल धोए शब्द चलाए स्वास स्वासा, मानस जन्म होए रासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह जगत मलाह बेपरवाह आपणा आप रिहा वखाया। आपणा आप वखाए, दो जहानी बण मलाह। गुरमुखां बेड़ा पार कराए, वेख वखाए थांउँ थाँ। सञ्झ सवेर ना भरम भुलाए, ना कोई जाणे पिता माँ। गुरमुख साचे सोए मात जगाए, आपे देवे ठंडी छाँ। एका साचा नाम जपाए, वेले अन्तिम पकड़े बांह। दरगाह साची साचा धाम आप सुहाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, भगत भगवन्त भगती साची लाए। भगवन्त भगत भगत जल मीन। गुणवन्त संत अन्त कन्त रस रसना चीन। जीव जन्त बणे बणत, ना कोई मज़्हब ना कोई दीन। जगत महिंमा सदा अग्गणत, अक्खर वक्खर गुरमुख साचे वक्ख कीन। लक्ख चुरासी लथ्थी सथ्थर, ना कोई पाड़े बजर कपाटी पत्थर, पंच विकारा ना सके छीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

शब्द देवे नाम वर, दिवस रैण ठांडा सीन। सति पुरख अपार, सति संतोखिआ। पूरन जोत कर अकार, लक्ख चुरासी पावे सार, वेख वखाणे वरन गोतया। नौ दुआरे जगत भिखार, चारों कुन्ट हाहाकार, गुरमुख विरला पावे सार, दस्म दुआर खोज खुजन्तया। लोकमाती शब्द अधार, पुरख बिधाती देवणहार, चरन नाती जगत प्यार, बूंद स्वांती ठांडी धार, काया रंगण रंग बसंतया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोत सरूपी भेख अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख वखन्तया। लक्ख चुरासी भेख वखाया, प्रभ जोती जोत जगाईआ। तख्तों लाहे राजे राणे, वरन गोत रहण ना पाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ स्याणे, शब्द डोर रिहा बंधाया। शब्द देवे नाम गुण निधाने, दहि दिशा खेल रचाईआ। झुले शब्द इक्क निशाने, सत्तां दीपां रिहा झुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्याने लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा वेख आप भगवाने, कलिजुग अन्तिम जोती मेल मिलाईआ। शिव शंकर मार ध्याने, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। सुरपति राजा इन्द होए प्रधाने, करोड़ तेतीसा संग उठाईआ। करे खेल वाली दो जहाने, बीस बीसा जगत इक्कीसा भगत सीसा छत्र झुलाईआ। ना कोई जाणे राग छतीसा, दन्द बतीसा कथन ना पाईआ। वेख वखाणे अञ्जील कुरान हदीसा, ईसा मूसा होए हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, निहकलंक नाउँ रखाईआ।
निहकलंका नौ द्वार, दिस किसे ना आया। जोत सरूपी कर अकार, शब्द सरूपी डंक वजाया। चारों कुन्टां कर उडार, दहि दिशा फेरा पाया। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड, अंड जेरज उत्भज सेत्ज रिहा वंडाया। सोहँ फड़ चण्ड प्रचण्ड, कलिजुग तेरी वढ्ढे कंड, बेमुख जीवां देवे दंड, चारों कुन्ट होए हलकाया। नौ खण्ड पृथ्वी करे खण्ड खण्ड, वेखे खेल हरि ब्रह्मण्ड, भेख पखण्डा कोए रहण ना पाया। गुरमुख विरला नार सुहागण, सृष्ट सबाई होए रंड, कन्त सुहागी शब्द लागी आत्म सेजा एका एक हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, सोहँ सो हरि बिन अवर ना जाणे को, लक्ख चुरासी रही रो, गुरमुख विरले आत्म बीज साचा बो, मानस जमन लेखे लाया। मानस देही होई परवान, प्रभ साचे दया कमाईआ। पंझी पोह कर ध्यान, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। शब्द सरूपी हल साचा जो, काया मन्दिर अन्दर साचा बीज रिहा बिजाईआ। दुरमति मैल कलिजुग धो, रसन गीत सुहागा अनहद रागा आपे आप रिहा चलाईआ। हरिजन बणाए हँस कागा, आप आपणे हथ्थ रक्खे वागा, एका राह जगत मलाह बेपरवाह दो जहान चलाईआ। शब्द सुणाउँणी पारब्रह्म ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, गुरमुख साचे संत जन साची बणत मात रिहा बणाईआ। लोकमात हरि बणत बणाए, गुरमुख सोया मात जगाए, साध

संत किसे हथ्थ ना आए। रूप अगम्मा हड्ड मास नाड़ी चम्मा, मात पित कर कर हित्त, कोए ना जाणे खेल नित्त नवित्त, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, वार थित्त ना कोए जाणे आपे जाणे गति मितक, मानस देही जगत जित्त लक्ख चुरासी फंद कटाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द भण्डारा इक्क खुल्हाए। शब्द भण्डारा खोल्ह जगत जणाईआ। चौह अक्खर वक्खर जगत बोल, चार वरनां रिहा सुणाईआ। बजर कपाटी पाड़े पत्थर पंचां सथ्थर आपे लाहीआ। नेत्र नीर वरोले अत्थर, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। प्रभ हथ्थ वड्याई, सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई दए दुहाई, पुरख अबिनाशी जोत जगाईआ। धरत मात मिली वधाई, जन भगतां खुशी मनाईआ। लक्ख चुरासी होए कुड़माई, लाड़ी मौत हथ्थीं मैहन्दी लाईआ। धर्म राए दूर दुराडा वेखे चांईं चांईं, अठाई कुण्डां बूहा लाहीआ। कलिजुग काला पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, आप आपणा रंग वखाईआ। कोई ना देवे ठंडीआं छाँईं, मात पित पिता पूत ना होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले इक्क इकेला शब्द सरूपी कर कर मेला, आत्म तृष्ना भुक्ख रिहा मिटाईआ। आत्म तृष्ना कटे भुक्ख, हउमे दए जलाईआ। इक्क उपाए सच्चा सुख, धुन नाद अनाहद मृदंगा इक्क वजाईआ। निशअक्खर वक्खर शब्द जोती साचे कंडे तोल, आप आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगाए काया चोल, सच दुआरे पड़दा खोल्ह, निर्मल जोत कर अकार, अमृत बख्शे ठंडी धार मुख चुआईआ। पवण उनन्जा छत्र झुलार, भेख बवन्जा दर दरबार, भेव किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, आप आपणी रचन रचाईआ। गुर मन्दिर अन्दर किसे दिसे ना सच सचाई, पंडत पांधे देण दुहाई, मुलां काज़ी हाहाकारया। आत्म दर गुरमुख विरले वज्जे वधाई, सुणया राग शब्द अपारया। मिल्या मेल साचे माही, नाता तुट्टा नौ द्वारया। दसवे जोत अगम्म अथाही, दीपक जोती होए उज्यारया। होए सहाई सभनीं थाँईं, पारब्रह्म पावे सारया। गुरमुख आउँणा चांईं चांईं, पुरख निरँजण घट घट वासी शब्द सरूपी पकड़े बाहीं, छब्बी पोह दिवस विचारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां अमृत आत्म साचा चोअ, निझर धारा ठंडी ठारा, सीतल सांत सांतक आप करा रिहा। छब्बी पोह रुत्त बसंता, लोकमात कलि आई। मिले मेल प्रभ साचे कन्ता, गुरमुख शब्द होए कुड़माई। नाता तुट्टे जीव जन्ता, मिले मेल हरि भगवन्ता, कलिजुग कालख लाहे छाही। करे खेल आदिन अन्ता, चौथे जुग जोत जगंता, बणाए मात साची बणता, वेख वखाणे थांउँ थाँईं। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे वेख हरि, द्वार बंक राउ रंक एका एक सुहांयदा। एका एक सुहाए द्वार, राउ रंक रंक राजान शाह सुल्तान

रिहा जणाईआ। चार वरन दर भिखार, शब्द मिले वस्त अपार, आत्म झोली काया डोली हरि साचा रिहा भराईआ। आपे होए पहरेदार, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर, शब्द खंडा सोहँ डण्डा विच ब्रह्मण्डा आपणे हथ्थ रिहा उठाईआ। गुरमुख विरला विच मात पाए वंडा, फंद चुकाए जेरज अंडा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे जगत वर, जुग जुग कार कमाईआ। कार कमावे कर्म कांड, लक्ख चुरासी वेख वखानया। लक्ख चुरासी वेख वखाणे जीव जन्त साध संत प्रभ पुण छाण, गुरमुख साचे मात उपंनया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, मिले मेल गुण निधान, आत्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान पारब्रह्म मन्न मन्नया। शब्द फड़ाए हथ्थ तीर कमान, सोहँ चुक्के नौजवान, पंजां चोरां आपे डंनया। दाता जोधा सूरा गुणी गुणवान, सर्बकल भरपूरा हाज़र हज़ूरा वड धन्न धंनया। राग अनादां अनादी तोड़ा, बोध अगाध शब्दी पूरा, हरिजन चढ़ाए साचे चन्नया। गुरमुखां मस्तक लाए साची धूढ़ा, काया रंगण रंग चढ़ाए गूढ़ा, चतुर सुघड़ बणाए दर आए मूढ़ा, देवे ज्ञान गुर शब्द ध्यान आत्म अन्नृया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रेख वेख हरि, चार वरन इक्क सरन एका राग सुणाए कन्नया। साचा राग कन्न सुणाए, कँवल नैण बिध नाता। गुरमुख आत्म जाए मन्न, मिले मेल साक सैण पित माता। भाण्डा भरम देवे भन्न, लेखा चुक्के ऊँचां नीचां ज़ातां पातां। बेड़ा आपणा लए बन्न, सोहँ दात जिस जन मिले जगत सुगाता। ना कोई लाए मात संनृ, मिलाए मेल तन कमलापाता। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पारब्रह्म ब्रह्म पार ज्ञाता। सप्त सरोवर सांत रस, सतिगुर सरन सरनाए। सतिजुग साची आस रक्ख, कलिजुग कालख प्रभ रिहा मिटाए। गुरमुख आत्म जोत रवि ससि मात प्रतक्ख, दीपक दीप रिहा जगाए। मनमुख जगत गंवार होए भक्ख, जोती अग्नी रिहा जलाए। धुर मस्तक भाग प्रभ लए रक्ख, गुरमुख सोए मात जगाए। लक्ख चुरासी विच्चों कीने वख, सोहँ सो जाप जपाए। पंझी पोह दरस दिखाए हरि प्रतक्ख, गुर संगत घाल पाए थांए। आप आपणी गोद प्रभ लए रक्ख, धर्म राए नेड़ ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण, नेत्र पाया शब्द अंजन, चरन धूढ़ कराए साचा मजन, सवा लक्ख प्रभ इक्क कराए। इक्क सवाया सवा लक्ख, प्रभ जोती नूर सवाया। जोत निरँजण रही भख, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाया। हरिजन आप चढ़ाए साचे रथ, सतिजुग साचे मार्ग पाया। सर्बकला आपे समरथ, मनमुख जीवां दिस ना आया। सृष्ट सबाई पकड़े नत्थ, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा भवाया। जगत चलाए शब्द रथ, अकथना अकथ रसना कथ ना सके राया। लोआं पुरीआं रिहा मथ, ब्रह्मा शिव इन्द्र करोड़ तेतीसा दए दुहाया। लक्ख चुरासी सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग

आपणी वंड वंडाया। जन भगतां प्रभ रखे दे कर हथ्थ, विच वरभण्ड मिले वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, कर दरस सगल वसूरे जायण लथ, छब्बी पोह जो जन दर्शन पाया। छब्बी पोह प्रभ बणत बणाउँणी, काला सूसा तन छुहाउँणा ए। वेख वखाणे ईसा मूसा चीना रूसा भेख वटाउँणा ए। आपे जाणे अंजील कुरान जगत हदीसा, बीस इक्कीसा खेल खिलाउँणा ए। एका छत्र सोहे सिर जगदीसा, दन्द बतीसा लक्ख चुरासी गाउँणा ए। शाह सुल्तानां खाली खीसा, बीस बीसे दर दर कर भिखार, भेख इक्क आप अख्वाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका रंग राउ रंक सृष्ट सबाई आपणा आप वखाउँणा ए।

★ २४ पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जगत जुगीशर आप प्रभ, एका जोग कमाया। जगत मुनीश्र आप प्रभ, चिन्ता रोग सोग प्रभ रिहा मिटाया। जगत तपीश्र आप प्रभ, तन मन रसना भोग मात तजाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत अवल्लड़ा राह चलाया। जप तप अभ्यास सर्ब संसारया। लिख्या लेख वेद व्यास, निहकलंक लए अवतारया। जेरज खाणी ना कोई जाणे दस दस मास, पारब्रह्म भेव अपारया। सच मण्डल जोत प्रकाश, देवी देव सर्ब भुला रिहा। वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, ब्रह्म शिव सीस झुका रिहा। शब्द सरूपी पावे रास, पवण स्वास इक्क चला रिहा। भगत सुहेला होया दास, साची बणत मात बणा रिहा। घर मन्दिर अन्दर कीना वास, सोहँ सो जाप जपा रिहा। मिल्या मेल सर्ब गुणतास, सद ग्यारां लेखे ला रिहा। ग्यारां सद जगत प्रभास, गुरमुख सोए मात जगा रिहा। दिसे ना शाहो शाबास, कलधारी कल वरता रिहा। गुरमुख साचे सद बलि बलि जास, ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ साची सेव कमा रिहा। गुरमुख साची सेव, हरि साचे मात लगाईआ। तन काया रसना साची जेहव, वड देवी देव दया कमाईआ। अचरज लीला अलख अभेव, जोत निरँजण आप कराईआ। काया फ़ल लग्गा साचा मेव, सच दिहाड़ा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्त विहारा, सतिजुग तेरा सति पसारा, दोहां वेखे इक्क दुआरा, आप आपणे रंग समाईआ। आप आपणे रंग समाया। पंचम पोह पंच प्रधाना, पंचम बेड़ा रिहा बन्न्हाया। पंचम देवे शब्द तराना, जोत निरँजण इक्क महाना, राग अनादा रिहा सुणाया। शब्द सरूपी हथ्थीं गाना एका बन्न्हे शाह सुल्ताना, गुण अवगुण ना कोई जणाया। भेव अभेदा खेल महाना, अछल अछेदा सृष्ट भुलाना, चार वेदां वक्त चुकाना, सोहँ साचा राग सुणाया। जन भगतां सुणाए साचा गाना, धुर दरगाही देवे

दाना, झुल्लदा रहे मात निशाना, ना कोई मेटे मेट मिटाया। पूरन जोत श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, प्रगट होए वाली दो जहाना, शब्द डंक रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणा संग निभाया। जगत तृष्ना अग्ग, कलि जलाया। लक्ख चुरासी रही दग, ना किसे कोई छुडाया। जूठी झूठी वा रही वग, दिवस रैण अन्धेर मचाया। मानस देही हँस होई कग, शब्द चोग ना कोई चुगाया। दीपक जोत ना गई जग, अन्ध अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाया। धीरज यति तुटा तग, सति धर्म ना कोए रखाया। जम जमकाल पकड़ पछाड़े शाहरग, ना होए कोई सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता सूरा सरबग एका एक अखवाया। एका एक अकाल, सर्ब घट वस्सया। प्रगट होए दीन दयाल, राह साचा मात दस्सया। दिवस रैण रिहा सुरत संभाल, अन्दर बाहर फिरे नस्सया। देवे नाम सच्चा धन माल, नर हरि हरि नर हिरदे वस्सया। जगत माया तोड़ जंजाल, मारे शब्द इक्क उछाल, भाग लगाए माटी खाल, मिले नाम दान अनमुलया। दो जहानी दर दलाल, नेड़ ना आए काल महांकाल, जन हरि वरोले लोकमाती भाल, अन्तिम बेड़ा रिहा बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी चले नाल नाल, पंचम पंचां देवे डंनया। पंचम देवे डन्न, मात जगाया। पंचम देवे भन्न, पंच उपजाया। पंचम लाए संन्न, पंचम झोली रिहा भराया। पंचम भरमे भुल्ले जन, पंचम भाण्डा भरम भन्नाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम पंच विचोला पंचम पंचां विच समाया। पंच गंवाए पंच बणाए पंचम जोत जगाईआ। पंचम सुरती शब्द संग मिलाए, पंचम मुख भवाईआ। जम काल राणी दरस दिखाए, पंचम रो रो दए दुहाईआ। पंचम अमृत आत्म मेघ बरस वखाए, पंचम दिवस रैण रहे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पंचम बन्ने पंचम नाता पंचम पंचां रहे जुदाईआ। पंचम जुदाई अन्त कल, नर हरि साचे मात कराईआ। पंचम वड्याई जल थल, प्रभ आपे बणत बणाईआ। पंचम कमाई अज्ज कल्ल, कालख टिक्का मस्तक छाहया। पंचम वड्याई घड़ी घड़ी पल पल, पंचम मिल्या सहिज सुभाईआ। पंचम करे वल छल, छल वल कर भुलाईआ। पंचम जाए बलि बलि, पंचम रिहा जगाईआ। पंचम लाहे दूई द्वैती सल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पंचम बैठा आपे रल, सुन्न समाधी आसण लाईआ। पंचम मेला मन तन, नौ द्वार रहे हलकाईआ। पंचम मिल्या नाम धन, सच समग्री इक्क रखाईआ। पंचम पंचम प्रभ जाए मन्न, पंचम करे मात कुड़माईआ। नर हरि साचा मन्नया, पंचम मिले मेल हरि रघुराईआ। लग्गे भाग काया छप्पर छन्नया, कलिजुग रैण सुहञ्जणी आईआ। सुरती शब्द सेव कमाई, नर हरि साचा शाहो मंनिअ, गुरमुख वेखे थांउँ थाँईंआ। अगम्म अगम्मड़ा बेपरवाही मेट मिटाए झूठा जंनया, जोती जोत सरूप हरि, पंचम

जोती इक्क कर, शब्द देवे नाम वर, साचा राग सुणाईआ। राग कन्न संगीत प्रभ सुणाईआ। शब्द सच सुहागी गीत, सोहँ सो मात वड्याईआ। सतिजुग सति मिल्या गुर मीत, दूसर कोई भेव ना पाईआ। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, गुरदुआरा रहण ना पाईआ। दर घर बैठा परखे नीत, ना कोई सके भेद छुपाईआ। जन भगतां बख्शे चरन प्रीत, सेवक सेवा साची लाईआ। साचा मेला सज्जण सुहेले मीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जोती इक्क धर, एका रंग रंगाईआ। पंचम रंग चलूल हरि चढ़नया। मिल्या मेल कन्त कन्तूहल, सतिजुग चढ़या साचा चंनया। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, गगन राग सुणया कन्या। शिव जी सुट्टी हथ्थों त्रिसूल, सोहँ देवण आया डंनया। करोड़ तेतीसा बरखे फूल, हरि हरि भाणा जिस जन मन्नया। जो जन गए मात अन्त कलि भूल, मानस देही ना बेड़ा बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जोती इक्क दर, दर दुआरा एका मन्नया। कवण जगाए पंच, पंचम कवण सोया। वेखे खेल कवण प्रपंच, पंचम नाता दए तुड़ाया। कवण बुझाए तृष्ना अंच, कवण सांतक सति वरताया। मानस देही काया कंच, घड़न भन्नणहार कवण अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम जोती नूर कर, पंच पंचाली रिहा सुणाया। पंच पंचायणी ताज, हरि सुहंदड़ा। आपे करे आपणा काज, भगत सुहेल सदा बख्शंदड़ा। भाग लग्गे देस माझ, ना कोई जाणे जीव अन्धड़ा। जन भगतां देवे शब्द दाज, मनमुख भागां मन्दड़ा। जोती जोत सोहँ सो मारी अगाज़, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाए जन्दरा। गुरमुख साचे शब्द डोरी रिहा प्रो, रक्खे लाज साजण साज आप अख्वंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक साचा राह सृष्ट सबाई आप वखंदड़ा। सतिजुग साचा राह वखाए, नईआ नाम चलाईआ। लक्ख चुरासी फाह कटाए, भैणां भईआं साक तुड़ाईआ। धुर दरगाही भगत मलाह आपे हो जाए, साची बईआ आप फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जोती नूर कर, साचा नाउँ इक्क चलाईआ। नौ सत्त प्रभ कर विहारा, अन्तिम अन्त कराईआ। पुरीआं लोआं इक्क जैकारा, एका एक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ बन्ने धारा, वरभण्ड रीत चलाईआ। करे वंड प्रभ खेल न्यारा, गुरमुखां वंड वंडाईआ। असू तिन्न सच दिहाड़ा, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। उनी असू इन्द्र अखाड़ा, रिहा खुशी मनाईआ। पंचम कत्तक उच्च पहाड़ा, पर्बत अकाश रिहा हिलाईआ। उनी कत्तक शब्द धाड़ा, शिव शंकर रिहा जगाईआ। सत्त मग्घर पकड़े दाड़ा, ब्रह्मे मुख रिहा भुवाईआ। तेई मग्घर जोती लाड़ा, शब्द आप बणाईआ। नौ पोह करे वाड़ा, गुरमुख साचे होए सहाईआ। पंझी पोह खेल अपारा, बहत्तर नाड़ी दीपक जोती रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, मात कराए धर्म अखाड़ा, ज्ञान वैराग एका दर बहाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आपे आप गया जाग, सुत्ती सर्ब लोकाईआ। उन्नी अस्सू आस रखाई। पंचम कत्ते वज्जे वधाई। इक्की कत्तक मात रुशनाई। सत्त मग्घर कुकर्म जुदाई। तेई मग्घर तृखा बुझाई। नौ पोह दुरमति मैल धोहि, प्रभ सुरती शब्द मिलाई। पंजी पोह प्रभ प्रगट हो, पंचम देण आया वड्याई। प्रगटे शब्द सोहँ सो, जोत निरँजण एका डगमगाई। साधां संतां आत्म शक्ती लए खोह, घर साचे ना मिले किसे वधाईआ। गुर मन्दिर अन्दर बैठे रहे रो, काया काअबा दिस ना आईआ। जन भगतां दुरमति मैल धो, हक्क ज़नाबा दो दो आबा रिहा मेल मिलाईआ। अमृत झिरना निझर चो, कँवल नाभी रिहा आप उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जोती नूर धर, नूर तूर एका एक रिहा कराईआ। जोती नूर शब्द सीस दस्तार। सर्बकला भरपूर हरि जगदीस निहकलंक लए अवतार। लेखा जाणे बीस इक्कीस, नौ खण्ड वंड प्रभ पाए सार। लोआं पुरीआं एका हदीसा, करे कराए जै जैकार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम देवे नाम वर, फड़ फड़ बाहों जाए तार। इक्क इकल्ला हरि मनाया। दूजा रक्खे शब्द महल्ला, तीजे वाजा पवण वजाया। चौथे दर गुरमुख विरले मेला, दूसर किसे हथ्थ ना आया। पंचम पंच पए तरथल्ला, पंचम वेला इक्क सुहाया। छेवें वेखे जला थला, डूंघी डला भेव ना राया। सत्तवें शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, गुरमुख काया अन्दर इक्क सुहाया। आपे वसे सच महल्ला जोत निरँजण डेरा लाया। दीपक साचा एका बला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजी पोह तिलक ललाटी सोहँ शब्द लगाया। लग्गे तिलक ललाट, प्रभ लगांयदा। बजर कपाटी जाए पाट, प्रभ साचा तीर चलांयदा। चौदां लोकां दिसे एका हाट, इक्क वणजारा वणज करांयदा। नौ दुआरे झूठा घाट, दसवें अमृत आप पिआंयदा। जोती जगे काया माट, शब्द धुनी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां एका राह वखांयदा। साची सुरती सुरत चलाई, मति बुध भेव ना राया। अकाल मूर्त कलि दया कमाई, पंचां रिहा दर दुरकाया। शब्द अनाहद तूरत इक्क उपजाई, साचा राग कन्न सुणाया। साची सूरत प्रभ नज़री आई, भाण्डा भरम भंनाया। लक्ख चुरासी रही झूरत, दर घर साचा किसे हथ्थ ना आया। नौ दुआरे कूड़ो कूड़त, जगत अडम्बर खेल रचाया। दर घर साचे चरन धूढ़त, पंजी पोह जन भगतां प्रभ सवम्बर मात रचाया। चतुर सुजान करे मन मूढ़त, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाया। एका रंगण रंग चढ़ाए गूढ़त, सवा पहर दोए दोए लोचन जिस जन दर्शन पाया। लग्गे भाग कुल कुलवन्ती जिउँ बाल पिता बलोचन, बलोचन पिता प्रहलाद अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, बावन बवरा अवरा गवरा निहकलंक भेख वटाया। गुरमुखां पिता मात पुत्त सस्स सुहरा, दोहां विहारा इक्क कराया। दो जहानी कारज संवरा, पुरख अबिनाशी

दर्शन पाया। मिल्या मेल प्रभ गहर गवरा, चरन कँवल कँवल चरन होए भवरा, सोहँ सो सुगंधी दिवस रैण तन मन रही महिकाया। हउमे कद्धे वासना गन्दी, रसना गाया जिस जन बत्ती दन्दी, प्रभ साचा चन्द चढ़ाया। लक्ख चुरासी भागां मन्दी, नाम विहुणी आत्म अन्धी, भेव अभेद ना पाया। ना कोई गाए राग सोरठ सवईआ छन्द बन्दी, अष्ट पदीआं किसे पद ना लाया। गुरमुख साचे संत सुहेले पुरख अबिनाशी घर आपणे सद, शब्द सरूपी मेल मिलाया। कलिजुग तेरी लँघी हद्द, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। भाग लगाया यद्द, बंस सरबंस पार कराया। अमृत पीणा साची मध छब्बी पोह दिवस सुहाया। जोत निरँजण ना कोई पछाणे उच्चा लम्मा चौड़ा कद्द, गुरमुख तेरे हिरदे विच समाया। कर प्यार गुरमुख साचे प्रभ दए श्रृंगार सूहे फूलनहार लद, आप आपणी बणत बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा सेवादार, जोती जामा भेख धर, आपे आप अख्वाया। हरि भिखार भिक्खक दिवस रैण मंगे भिख्या। लेखा लिखे लिखारी, निहकलंक गुर संगत गुर पूरे करनी रच्छया। ना कोई छोटा वडा निक्का, एका अक्खर जगत वक्खर साची सिख्या। आपे जाणे रस मिट्ठा फिक्का, जो जन प्रभ चरन दुआरे विकया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरमुख तेरे मिलण दी दिवस रैण रक्खे सिक्कया। आ मिल आ मिल आ मिल मेरे मीत, हउँ वारी मैंडे सज्जणा। गल लाग गल लाग सुहाई रीत, मैं तैंडा करां मजना। दिवस रैण राखां हउँ चीत, अन्त तेरा पड़दा कज्जणा। किसे हथ्थ ना आउँणा गुरुदुआरे मन्दिर मसीत, भाण्डा झूठा अन्तिम सद्द है भज्जणा। धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर परखे नीत, वेले अन्तिम रक्खे लज्जना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे जगत लज्जना।

★ २५ पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार पिण्ड जेठूवाल सोहँ सो जाप इक्क सौ ग्यारां दिन दी समाप्ती समें शब्द उचारया ★

अमृत वेला पंझी पोह, पूरन आस कराईआ। अमृत आत्म बीज साचा बो, काया प्रभास सच निवास कराईआ। जगत मैल पापां धो, सच प्रकाश कराईआ। पंचां तोड़े नाता मोह, पंचां जोड़ जुड़ाईआ। जाप जपाए सोहँ सो, ना होए विछोड़ा मात कदे जुदाईआ। गुरमुख गुरमुख एका जोती गए हो, एका दूजा भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गोद रिहा उठाईआ। पोह पंझी पंच प्रधानया। काया मन्दिर आप बणाया साहिब मंजी, आपे बैठे नूरी नूर नुरानया। जाणे धार धार बवंजी, अक्खर वक्खर कर कर पछानया। कलिजुग वेखे खेल शतरंजी, जगत मिटे जीव

निधानया। किसे हथ्थ ना आए अन्ध अन्ध अन्धघोर वंञी, मनमुख होए बेमुहाणया। गुरमुखां लेखे लाए दिवस दिवस पंझी, पंझी पोह वक्त सुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर हरि मेहरवानया। बीस पंज पंज बीस प्रभ साचा रंग रंगाईआ। शब्द सोहे कलि साचे सीस, साचा संग निभाईआ। जगत पीसण रिहा पीस, मनमुख दए दुहाईआ। गुरमुखां पढ़ाए इक्क शब्द हदीस, जगत वक्ख कर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। रंग वटाया रूप रेख, तन माटी कल्ल तज। जन्म वटाया वेख भेख, मात गुवाई लोक लज्ज। भरम भुलाया औलीआ पीर शेख़, हाज़ी हज्ज। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत दुलारे कर प्यारे अमृत प्याए आत्म रज्ज। अमृत आत्म धार वहिंदी, चोआ चन्दन मस्तक टिका। गुरमुख साचे सदा सद सद घर इक्क वसदी, नाम जपाया भगत वखाया नीकन नीका। सोहँ डोरी पाई साची तन्दी, सो गंवाए भेव जीअ का। आप चढ़ाए चन्द नौचन्दी, रसना रस गंवाया फीका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन बंधाए इक्क प्रीता। चरन प्रीती बन्ने डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग काला अन्ध अन्धघोर, तोरी मोरी जगत भुलाईआ। नाम ख़ज़ाना किसे हथ्थ ना आए साची मोहर, साचा सिक्का ना कोई वखाईआ। राजन राज राजानां दिसे होर, शाह सुल्तानां

४४४ मुख भुवाईआ। आपे जाणे आपणी गोहर, दो जहानां रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे ४४४

०५ खेल आप रघुराईआ। करे खेल रघुनाथ, जगत पसारया। शब्द चढ़ाए साचे राथ, भगत अधारया। लेखा चुक्के नौ नौं ०५

हाथ, लेखा लिखणहार आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द बणाए सगला साथ, सोहँ साथी सो पहरेदार अख्वा रिहा। सोहँ सो सति प्रबीन, सो पुरख पुरख अधीन। हँ अंग अंग धार गंग अमृत ठांडा सीन। सो मृदंग मृदंग वज्जे लोक तीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिखे शाह सुल्तान रूसा चीन। लेखा लिखे लिखणहार, सृष्ट सबाई भेख्या। आपे वेखे वेखणहार, जोती जामा धारे भेस्सया। लोचन पेखे पेखणहार, दर दर घर घर धारी केस्सया। वेख वेख वेख मेटणहार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विरले नेत्र पेख्या। नेत्र पेखे नैण मूंध, निर्मल जोत अकाल। अकाल मूर्त शब्द तूरत, रंग लाल गुलाल। लाल गुलाली साची सूरत, कंचन मारे इक्क उछाल। कंचन आसा हरि हरि पूरत, नीलम नीला हरि हरि अस्वार। नीला अस्वारा जोत अधारा शब्द जैकारा चिट्टा अस्व चिट्टी धार। चिट्टी धारा दस्म दुआरा बाहर पार पील पसार। पील पसारी खेल न्यारी, अजपा जप प्रभ वेख विचारी, त्रैकुट्टी छुट्टी पंचम यारी, वेख रंग संग अपार। सूहा रंग रंग संग काला वेस दर दरवेश दिवस

रैण दीसे तंग, जोती जोत सरूप हरि, हरि चरन कँवल उप्पर धवल पेख उठ रिहा मवल सर्ब घट हरि घट निवास। घट निवासा रक्ख रक्खे लज्जया। गुरमुखां दे भरवासा, शब्द सिँघासण आपे सज्जया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, शब्द ताल एका वज्जया। सुणे सुणाए पृथ्वी आकाशा, लोआं पुरीआं हाजन हज्जया। चार कुन्ट दहि दिश कराए दासा, कोई ना सके पड़दा कज्जया। लक्ख चुरासी करे अन्तिम नासा, जूठा झूठा पाप दज्झया। हरिजन जन हरि मिल्या मेल सर्ब गुणतासा, पी अमृत आत्म रज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम रखे लज्जया। अन्तिम रखे लज्ज, जगत भगत परवानया। जगत विकारा देवे तज, मिले मेल शब्द निधानया। शब्द सिँघासण बहिणा सज्ज, गाए गुण गुण निधानया। सच नगारा रिहा वज्ज, ना सके कोई पछानया। पंचम धारी मात बज्झ, राज राजानां करे हैरानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल मात महानया। पंचम बन्ने धार, पंच पंचाइना। तन पाए शब्द कटार, नेड़ ना आए तृष्ना डायना। सोहँ होवे पहरेदार, सो चुकाए लहिणा देणा। अग्गे हो सच्ची सरकार, तन पहनाए साचा गहणा। सीस बन्न सच्ची दस्तार, लोकमात चुकाए लहिणा देणा। पंचम नाता इक्क प्यार, इक्क हुक्म सुणाए भाणा सहिणा। उत्तम जाति सच दरबार, गुण अवगुण किसे मात ना कहणा। भरे शब्द नाम भण्डार, झूठे वहिण जगत ना वहिणा। आदि अन्त ना आए हार, दरस दिखाए दर दुआरे साचे नैणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत बणाए पंच पंचायणा। सीस बन्न दस्तार, गुरमुख समझांयदा। मस्तक टिक्का नाम अपार, प्रेम झोली काया पांयदा। नाम एका मीत मुरार, साची गोली सेव कमांयदा। दिवस दिहाड़ा आप विचार, पंझी पोह खुशी मनांयदा। गुरसिख गुरसिख गुरसिख साचा लाड़ा कर त्यार, शब्द घोड़ी आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच विहारा अपर अपारा आपे आप करांयदा। करे विहार जगत रीत, शाह सुल्तान सार ना पाईआ। एका एक रहे सदा अतीत, जूठ झूठ दिस ना आईआ। सदी बीसवीं रही बीत, लेखा मुहमन्द रिहा लिखाईआ। हरि जन साचे रक्खणा चीत, प्रभ साची बणत बणाईआ। नाता बख्शे चरन प्रीत, नेड़े दूर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरद्वार मन्दिर मसीत गुर चरन सरन इक्क वखाईआ। पंझी पोह जाप जपाए सवा पहर। जगत तृष्ना हउमे तीनो ताप गंवाए, आप तराए कर कर आपणी मेहर। पुन्न पाप ना कोई जणाए, सुन्न अगम्मो पार कराए, दस्म दुआरी बूझ बुझाए, जोती शब्दी वड प्रताप। गुण अवगुण कोई सुणन ना पाए, गुरमुख साचे संत सुहेले चुण आप आपणी सरन लगाए, आपे होए माई बाप। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मेट मिटाए जगत भगत संताप। सवा पहर रसना गुण नेत्र दर्शन लोए। शब्द

पुकार रिहा सुण, वेखे सुणे ना कोए। नाद अनादी वज्जे धुन ना हस्से ना कदे रोए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे बैठा लाए समाधी सुन आपे बोले प्रगट होए। प्रगट होए अन्त कल, काली रेख मिटाईआ। करे कराए वल छल, भेखी भेख सार ना पाईआ। वेख वखाणे जल थल, लिख्या लेख ना सके कोई लुकाईआ। गुरमुख साचे सदा जाए बलि बलि, वड वडी वड्याईआ। सच दुआरा लैणा मल, पंझी होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। लक्ख बताली मेटे हरस, जन्मे जन्म भरमिआ। पुरख अबिनाशी कीना तरस, कलिजुग अन्तिम बेड़ा बन्नया। अमृत मेघ देवे बरस, भाग लगाए काया छप्पर छन्नया। पंझी पोह कमाए तरस, भरमी भाण्डा दर घर भंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम धन वड धन धनया। नाम ख़जाना उच्च दर। गुरमुख सुगंधी सच घर। दिवस सत्त गाया बत्ती दन्दी, मिले मेल सच्चा वर। जगत तृष्ना कढ्ढे गन्दी, आपणा कीता लैण भर। भगत सुहेला सदा बख़्शंदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क नुहाए अमृत आत्म साचे सर। साचे सर आप नुहाए, दुरमति मैल गंवांयदा। इक्क खुल्हाए जगत दर, भगतां पकड़ उठांयदा। नाम भण्डारा देवे भर, साची वंड आप वंडांयदा। सच दस्तारा सीस धर, गुरमुख वरभण्डी आप वड्आंयदा। छब्बी पोह भेंट कर, आप आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम पंचम कर प्रधान, खेवट खेट आप अख्वांयदा। पंच दस्तार देवे बन्न, सीस रखाए तोड़ा। शब्द राग सुणाए कन्न, दरस दिखाए चिट्टा घोड़ा। गुरमुख आत्म जाए मन्न, धुर दरगाही आया दौड़ा। सतिजुग साचा चढ़या चन्न, वेखे खेल ब्रह्मण गौड़ा। आपे बेड़ा रिहा बन्न, साढे तिन्न हथ्थ रखाए लम्भा चौड़ा। इक्क वखाए सच्चा धाम ना छप्परी ना कोई छन्न, सोहँ लगाया साचा पौड़ा। लग्गा भाग काया तन, सो पुरख निरँजण आया दौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेले अन्तिम दर दुआरे आया बौहड़ा। छब्बी पोह बन्न दस्तार, पंचां दए वधाईआ। सवा पहर लेख लिखार, साची धारा इक्क रखाईआ। लिखे लेख अपर अपार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। सोलां करे तन श्रृंगार, जगत गहणा दूर कराईआ। गुरमुखां बलि बलि जाए सद सद वार, दर्शन नैणां आप कराईआ। वल छल छल वल विच संसार, भैणां भईआ जगत भुलाईआ। गुरमुखां बहिणा सच सच्चे दरबार, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। राजा धर्म होए ख्वार, दिवस रैण रिहा कुरलाईआ। गुरमुखां दूरों करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। निहकलंक तेरी सिक्दार, पुरीआं लोआं रही डराईआ। सोहँ करे ख़बरदार, सो सुत्या रिहा जगाईआ। नेड़ ना आए चोर यार, पंजां कुत्तयां रिहा दुरकाईआ। नाता बख़्शे चरन प्यार, अदभुतया दया कमाईआ। शब्द जोती मेल अपार, प्रभ टुट्टीआं गंढु वखाईआ।

जोती जामा भेख न्यार, प्रगट होए विच संसार, मन्दिर कुटीआ ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुखमन ईड़ा पिंगल त्रैकुटी गुरमुख साचे पार कराईआ। एका तीर रसन कमानो छुटयां, बजर कपाटी पार कराईआ। अमृत सोमा आत्म फुट्टया, वहिंदी धार इक्क वखाईआ। देवे दरस विच्चों कोटन कोटयां, गरीब निमाणे गले लगाईआ। गरीब निमाणयां आवण जावण लेखा छुट्टया, शब्द सरूपी जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आत्म दरस दिखाईआ। जप तप हठ ना कोए कराया। ना कोई वखाए शिवदवाला मट्ठ, तीर्थ तट्ट ना कोए सुणाया। गुरमुख साचे संत सुहेले शब्द सरूपी कर इक्ट्ठ, काया मट्ठ इक्क वखाया। चरन दुआरे आए नठ्ठ, पंझी पोह हुक्म सुणाया। लक्ख चुरासी पैणी भट्ठ, सोहँ सो साचा तेज वधाया। पंचां करे कराए प्रभ सतिजुग चट्ठ, शब्द सरूपी तेल चढ़ाया। कलिजुग ताप चढ़या मट्ठ, सतिजुग साचा खुशी मनाया। प्रभ अबिनाशी वेखे दोहं हट्ठ, शब्द सिँघासण डेरा लाया। पुरीआं लोआं गेड़े उलटी लट्ठ, अबिनाश अबिनाश आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला समरथ, डोर आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग तेरी घाल, प्रभ साचे लेखे लाईआ। चारों कुन्टां वजाए सच्चा ताल, जूठ झूठ मात प्रनाईआ। ना कोई दीसे पातशाह कंगाल, एका राह रिहा चलाईआ। गुरमुख विरला इक्क अनमुल्लड़ा लाल, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। फ़ल लगाए काया डाल्ह, पंझी पोह रुत्त सुहाईआ। पंजां नाता तुटे जगत जंज़ाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रिहा बणत बणाईआ। कलिजुग तेरी घाल, नौ द्वारया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, ना कोई पावे सारया। चारों कुन्ट हाहाकार, लक्ख चुरासी भरम भुला रिहा। हरिजन साचे फड़ फड़ बाहों रिहा तार, पुरख निरँजण सेव कमा रिहा। आप उठाए सिर आपणे भार, हौले भार मात रखा रिहा। चले मात अवल्लड़ी चाल, शब्द सरूपी साची नार, जोती जामा भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम नाता पुरख बिधाता, आत्म जोती ब्रह्म ज्ञाता, धुर दरगाही एका एक करा रिहा। चरनी नाता जोड़ धर्म कमाया। वेले अन्तिम गया बौहड़, निहकलंका भेख वटाया। आपे होए ब्रह्मण गौड़, मात पित ना किसे जाया। नगर वेख्या लम्मा चौड़, सम्बल वासा हरि रखाया। चिट्टा अस्व चुक्के पौड़, साचा राह रिहा तकाया। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, चारे कुन्ट घेरा पाया। ब्रह्मा वेता रिहा दौड़, शिव शंकर फिरे हलकाया। करोड़ तेतीसा होया कौड़, सुरपति राजा धीर गंवाया। गुरमुखां अन्तर आत्म लग्गी औड़, पुरख अबिनाशी सम्बल नगरी कर वेस गुर गुर दस्मेस अमृत धार मात अपार एका वार उन्नी अस्सू आप वहाया। उन्नी अस्सू रचन रचाई, प्रभ

साचे ख़ुशी मनाईआ। सुरपति राजा इन्द दर आया चांईं चांईं, निहकलंक कलि एका अंक दूसर कोई दीसे नाही, आप उठाए राउ रंक शाह सुल्ताना, हरि मेहरवाना एका देवे नाम निधाना, सोहँ सो जाप जपाया, जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी डेरा लाया। सम्बल देस रुत्त सुहञ्जणी, जोती जामा हरि जी पाया। गुरमुख चरन धूढ़ कराए साचा मजनी, लक्ख चुरासी दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां देवे नाम धना, सोहँ सो आत्म अन्ध दूसर किसे हथ्थ ना आया। सोहँ सो तेरी वड्याईआ। प्रभ अबिनाशी अमृत आत्म रिहा चो, दस्म दुआरे जोत जगाईआ। लोआं पुरीआं करे कराए सोई रिहा हो, लोकमाती भेव ना राईआ। जन भगतां दुरमति मैल रिहा धो, पंझी पोह ख़ुशी मनाईआ। नौ दुआरे बेमुख ख्वारे दसवें प्रगट हो, निर्मल जोती रिहा जगाईआ। झूठा नाता तोटे जगत मोह, प्रभ चरन प्रीती इक्क बंधाईआ। माया ममता तन ना सके पोह, दुरमति मैल दर दुहाईआ। लक्ख चुरासी रही रो, साधां संतां साची वस्त हथ्थ ना आईआ। लेख लिखाए छब्बी पोह, राज राजानां नत्थ पुवाईआ। आत्म शक्ती सभ दी लए खोह, सोहँ जंज़ीरी सभ दे गल विच पाईआ। आप आपणा बणाए ढो, इक्क सद ग्यारां नौ खण्ड विचारा, सत्तां दीपां धीर गंवाईआ। मिल्या मेल जन भगतां साचा मीत मुरारा, प्रगट होया हरि करतारा, सम्बल देस नगर अपारा,
४४८ दिन दिहाड़ा लग्गा अखाड़ा, एका काज सतारां हाढ़ा, भेव रहे ना राईआ। फड़ फड़ उठाए हथ्थीं दाहड़ा, प्रगट होया ४४८
०५ जोत सरूपी हरि हरि वडा शाहो भूपी लक्ख चुरासी तेरा लाड़ा, किसे ना दिसे रंग लाल सृष्ट सबाई अन्ध कूपी बहत्तर नाड़ी ०५
वज्जे ताड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा इक्क बणाया साचा लाड़ा। गुर संगत सच फुलवाड़ी ए। प्रभ साचे दी साची लाड़ी ए। जोती जगे नाड़ी नाड़ी ए। वरन गोती मिटे, दुरमति मैल रिहा साड़ी ए। एका एक एका वर इक्क इकलौती, जोती जोत सरूप हरि, सर्ब घटां रिहा पसारी ए। संत सुहेले उठ उठ जाग, रैण सुहञ्जणी आई। गुर पूरा धोवण आया दाग़, मस्तक लेखा मिटे शाही। लग्गे भाग काया मन्दिर आत्म जोती जगे चिराग, दूसर किसे दिसे नाही। आप आपणे हथ्थ पकड़े वाग, हँस बणाए फड़ फड़ काग, चारों कुन्ट रिहा उडाई। मिल्या मेल कन्त सुहाग, गुर सतिगुर साचा गया जाग, अमृत मेघ रिहा बरसाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सावण बरखा घर साचे लाई। सावण रुत्त सुहाई, साँवल सुन्दरा। घर साचे होए कुड़माई, गल पाया पंचम नाम एका मुन्दरा। नौ दुआरे होई जुदाई, दसवें लाहया आपे कुण्डड़ा। वज्जी धुन वधाई, प्रगट होया सोहँ शब्द घर साचे मुंडड़ा। गुरमुख साचे संत सुहेले वेखण आई जगत लोकाई, हरि साजन ढूंड ढुडंदड़ा।

जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, सर्ब जीआं आपे बख्शंदड़ा। भगत दुआरा एक है, हरि भगवानया। हरि भण्डारा एक है, आपे करे खंन खंनया। सृष्ट सबाई नेत्र पेख, हरिजन साचे बेड़ा बन्न्या। मस्तक लेखा लिखे साची रेख, साचा राग सुणाए कन्नया। जोती जामा धरया भेख, ना किसे वसे छप्पर छन्नया। लक्ख चुरासी वेख वखाणे औलीए पीर शेख़, हरिजन विरला लोकमात जनणी जनया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, बेड़ा आपणा आपे बन्न्या। जोती जामा जगत भेख, सृष्ट सबाई हलकाईआ। गुरमुख विरले मस्तक लेख, साची मेख आप लगाईआ। दर दुआरा साचा वेख, साची रंगण रिहा रंगाईआ। नौ दुआरे दर दर वेख, दसवें रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम करे शब्द कुड़माईआ। पंचम माण जग ताण आप रखाया। शब्द फड़या तीर कमान, सोहँ साचे रथ चढ़ाया। पुरीआं लोआं इक्क बिबाण, साचा नाम मात उडाया। दिवस रैण मार ध्यान, घट घट अन्दर डेरा लाया। आपे चतुर सुघड़ स्यान, सभ घट में रिहा समाया। आपे गुणवन्ता हरि गुण निधान, गुणवन्ती रिहा समाया। करे खेल वाली दो जहान, दो जहानां रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा जाणे संग, जन भगतां साचा संग निभाया। साचा संग निभाए, सार समा ल्या। आप आपणे रंग समाए, अंगीकार आप अख्वा ल्या। शब्द

 ४४६ ०५

नाम मृदंग वजाए, साचा राग इक्क सुणा ल्या। चाल बिहंगम रिहा चलाए, फड़ फड़ बाहों मेल मिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समा ल्या। रंग समाए आप, अंक सहेलीआ। रंग जणाए आप, डंक नवेलीआ। वासी पुरी घनक अख्वाए आप, द्वार बंक इक्क सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वड्याए जिउँ भगत जनक, जोती तिनका इक्क रखा ल्या। आत्म जोती शब्दी धार, पवण स्वासी रिहा चलाईआ। पवण स्वासी खेल अपार, साचे मन्दिर आप टिकाईआ। साचा मन्दिर नौ द्वार, प्रभ साचे ल्या सजाईआ। साचा किया तन श्रृंगार, आलस निन्दरा नाल रलाईआ। सुरती सुरत होए ख्वार, चैंचल मति चतुराईआ। चेतन रूप सच्ची सरकार, नित नवित्त ठगौरी पाईआ। आपे करे जगत विहार, अवरी गवरी भेव ना राईआ। भगत विचोला शब्द उडार, वेख वखाए थाउँ थाँईआ। नाता तुट्टे पंचम यार, मीत मुरारा दरस दिखाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, दस्म दुआरा एकँकारा देस सुहाईआ। एकँकारा देस अपारा, जोत अधारा इक्क रखाईआ। जोत अधारा नर निरँकारा, दूसर कोए दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दयाल काल काल दयाल महांकाल भेख वटाईआ। दयाल काल अकाल कलिजुग कालया। जन भगतां करे जगत प्रितपाल, देवे नाम सच्चा दुशालया। मारे शब्द सच्ची उछाल, फ़ल लगाए काया डालया। अमृत

सुहाए सच्चा ताल, दीपक जोती जगे जवाल्या। आपे चले नाल नाल, गुरमुख घालन साची घालया। तोड़ तुड़ाए जगत जंज़ाल, भाग लगाए काया सच्ची धर्मसालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा साचे दर आपे आप बहालया। दर घर साचे बहे, गुरमुख जागया। गुर चरन प्रीती एका लाए, चरन धूढ़ मजन माघन माघिआ। नौ दुआरे दिसे भै, जगत बुझे तृष्ना आज्ञा। लेखा चुक्के तीनो तै, मैं मेरा आपे जागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा कन्त सुहागया। नार सुहागी कन्त, शब्द हंढाया। शब्द बणाई बणत, जगत उपाया। जगत उपाए जीव जन्त, प्रभ रसना रस चलाया। गुरमुख विरला आप जगाए संत, साचा मार्ग इक्क वखाया। मिले वड्याई जीव जन्त, शब्द ताज सीस रखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी गोद उठाया। गोद उठाए लाल दुलारे, गुरमुख साचे सुत्त। पारब्रह्म प्रभ किरपा धारे, मेल मिलाए पुरख अबिनाशी अचुत्त। प्रीत रखाए चरन कँवलारे, आप सुहाए कलिजुग रुत्त। अमृत आत्म देवे ठंडी ठारे, सुक्का हरया करे काया बुत्त। जगे जोत अगम्म अपारे, पंजां चोरां कढे कुट्ट। भरया रहे तन शब्द भण्डारे, शब्द भण्डार रहे अतुट। आप कराए वणज वपारे, जगत चोग ना जाए निखुट्ट। जगे जोत विच संसारे, मनमुखां जड़ रिहा पुट्ट। हरिजन साचे पार उतारे, साचा लाहा लैण लुट्ट। जोत सरूपी गिरवर गिरधारे, वेख उठाए कोटन कोट। निहकलंक शब्द डंकी राउ रंकी खेल अपारे, जगत नाता गया छुट। जगत नाता छोड़, भगत वड्याईआ। एका चढ़या साचे घोड़, धुर दी बाण इक्क रखाईआ। शब्दी जोती साचा जोड़, जोड़ी साची मात बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सभ घट में रिहा समाईआ। सभ घट वस्सया आप, सर्ब जणाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, जन भगतां रिहा जगाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, वड प्रताप इक्क रखाईआ। कलिजुग पाप रिहा कांप, सोहँ सो साचा जाप जपाईआ। पिता पूत पूत पित बाप, आपे आप हो जाईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, मेट मिटाए अन्धेरी रात, सोहँ दात वंड वंडाईआ। सतिजुग साचे सच करामात, सति संतोखी धीरज यति धुर दी बाण धर्म रखाईआ। आप चलाए आपणी गाथ, शब्द चढ़ाए साचे रथ, मस्तक टिक्का साचे माथ, लिलाटी तिलक लगाईआ। महिंमा जगत अकथना अकथ जोत निरँजण त्रैलोकी नाथ, अनाथां नाथ आप अख्वाईआ। संत सुहेला सगला साथ, अन्तिम मेल मस्तक माथ, शब्द गुरू गुरू शब्द चेला साची बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाईआ। रंग समाए आप प्रभ, बहु बहु रंगा। गुरमुख जगाए आप प्रभ, नाम वजाए शब्द मृदंगा। साचा राह वखाए आप प्रभ, होए सहाई

अंग संगा। काम क्रोध लोभ मोह मेट मिटाए झब्ब, अमृत धार वहाए गंगा। उलटी करे कँवल नभ, हरि जन जन हरि अमृत धार एका मंगा। लेखा चुक्के आदि अन्त मात सभ, मानस देही वेख वखाणे भुक्खा नंगा। गुरमुख साचे संत उधारी, जुगा जुगन्तर वणज वपारी, दो जहानां खेल न्यारी, शब्द घोड़े कस्सया तंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ नाम वजाया इक्क मृदंगा।

★ २६ पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

अमृत वेला आत्म रस, रसना मुख चवीजे। पुरख अबिनाशी राह साचा दस्स, जन भगतां कारज कीजे। गुरमुख साचा नस्स नस्स, प्रभ चरन धूढ़ मस्तक लीजे। पुरख अबिनाशी हस्स हस्स, तन मन काया सीजे। हरि हरि हिरदे अन्दर वस वस, दरस दिखाए नैण तीजे। शब्द तीर निराला कस कस, सोहँ सो आत्म बीज निराला बीजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां कराए मात रीझे, अमृत वेला आत्म जोत, ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। दुरमति मैल प्रभ कलिजुग धोत, कंचन रंग चढ़ाईआ। लेखा चुक्के वरन गोत, मिले मेल सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी रही रोत, ना कोई गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत दुलारे आप आपणे रंग रंगाईआ। अमृत वेला आत्म बीज, प्रभ साचा आप बिजाया। शब्द सुनेहड़ा मात भेज, गुरमुख साचे रिहा जगाया। आपे जाणे जोती तेज, निर्मल जोती आप जगाया। जल थल थल जल नौ नौं नेज, सम्मत अठारां वेख वखाया। गुरमुख विरला वेखे जगत भगत शमस तबरेज, सोहँ सो सूली आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा पिछला मूल रिहा चुकाया। अमृत वेला आत्म अन्ध, अज्ञान अन्धेर मिटाया। नौ दुआरे कीते बन्द, प्रभ दसवां आप खुल्हाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द, सति पुरख निरँजण घर में पाया। लोकमात चढ़या साचा चन्द, सतिजुग तेरा सति उपजाया। दिवस रैण अट्ठे पहर रक्खे परमानंद, हरि विच समाया। खुशी कराए बन्द बन्द, छब्बी पोह जिस दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत दुआरा जूठा झूठा गन्द तजाया। अमृत आत्म नीर, प्रभ एका धार चलाईआ। गुरमुखां देवे शब्द सीर, सच रसना नाल प्याईआ। अट्ठे पहर धीरन धीर, हउमे रिहा पीड़ गंवाईआ। लोकमात प्रभ बन्न्हे बीड़, ना कोई वेखे हस्त कीड़, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत दुलार, पारब्रह्म कर विचार, जोत निरँजण मात अकार, शब्द नेत्र अंजन जगत श्रृंगार, किरपा करे दर्द दुःख

भय भंजन, शब्द हथौड़ा रिहा मार। प्रगट होया साचा सज्जण, दो जहानी मीत मुरार। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, एका देवे नाम अधार। लक्ख चुरासी जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, आपे भन्ने भन्नणहार। दर दर घर घर राज राजान शाह सुल्तान तजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार कुन्ट नौ खण्ड पृथ्वी कर रिहा विचार। अमृत वेला आत्म रस, काया चोली आप चढ़ाईआ। गुरमुख तेरा साचा संग, प्रभ साचा शब्द बणाईआ। सोहँ डोरी जगत पतंग, प्रभ उनीं अस्सू डोरी पाईआ। अमृत आत्म वगे गंग, पंझी पोह प्रभ अबिनाशी अन्दर हो लेखे लाईआ। सोहँ सो रसना आप जपाईआ। बेमुख जीव ना जानण को, गुरमुख साचे संत सुहेले लोकमात बांह धर सरहाणे जाणा सौं, प्रभ लक्ख चुरासी देवे फंद कटाईआ। जन्म जन्म दा बीज्जया बीज मिल्या फ़ल प्रभ चरन दुआरे अगे हो, लहिणा देणा कर्ज रिहा चुकाईआ। नौ दुआरे रहे रो, जन भगतां आत्म दर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह गुर संगत देवे मात वड्याईआ। अमृत वेला आत्म रस, निझर धार वहाईआ। जोत प्रकाश कोटन रवि ससि, होए प्रकाश सहिज सुभाईआ। गुर संगत तेरी सेवा होई जगत बस, प्रभ आत्म मेवा फ़ल इक्क खवाईआ। वेले अन्तिम पकड़ उठाए नस्स नस्स, दूर नेड़े ना कोई जणाईआ। जगत निराला राह दस्स, पार ब्यास खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
४५२ आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण जगत माया मात साचा मन्दिर दए बणाईआ। सोहँ सो विच रखाए करामात, देस मालवे ४५२
०५ मिली वड्याईआ। गुर गोबिन्दे तेरी बिन्दे गुरमुख उपजे पारज़ात, प्रभ मस्तक टिक्का रिहा लगाईआ। ना कोई वेखे ज़ात ०५
पात, ऊँचां नीचां आपणी गोद उठाईआ। एका शब्द देवे साची दात, धुर दरगाही लै के आईआ। चरन प्रीती बन्ने नात, ना कोई सके मात तुड़ाईआ। प्रगट होया पुरख बिधात, दो जहानां एका राह चलाईआ। जन भगतां मिल्या प्रभ कमलापात, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त आप आपणी बणत बणाईआ। अमृत वेला आत्म राग, प्रभ साचा इक्क सुणांयदा। गुरमुख सोया गया जाग, भाग काया तन लगांयदा। मिल्या मेल कन्त सुहाग, हउमे दुखड़ा रोग गंवांयदा। शब्द बन्ने तन साचा ताग, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। आप बुझाए तृष्ना आग, धीरज धीर इक्क धरांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, मस्तक धूढ़ी चरन छुहांयदा। दिवस रैण जन रहे वैराग, अन्तिम लेखा मात चुकांयदा। मिल्या मेल कन्त सुहाग, गुरमुख साचा साची नारी आत्म सेजा कर प्यार आपे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुगां जुगां दे विछड़े यार, बिदर सुदामा मीत मुरार आप आपणा लड़ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर किले अन्दर उप्पर चढ़, साची शब्द चोट नगारे एका एक लगांयदा। अमृत वेला आत्म चढ़, चोट नगारे लाईआ।

प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़, दसवें कुण्डा लाहीआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई केसाधारी पकड़े लड़, रुंड मुंड भेव ना राईआ। गुरमुख साचे संत सुहेले चार वरना रिहा फड़, दिवस रैण रिहा जगाईआ। लोकमाती मार झाती प्रभ अबिनाशी साचे घाड़न रिहा घड़, हरि हरिसंगत मेला इक्क इकेला रिहा कराईआ। एका अक्खर जाणा पढ़, सोहँ सो सतिजुग साचा राह वखाईआ। जोती जगे बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। धुर दरगाही लाए जड़्ह, ना सके कोई मिटाईआ। आप फड़ाया आपणा लड़, सोहँ पल्लू अगे डाहीआ। सच दुआरे जाणा चढ़, शब्द डण्डे हथ्थ टिकाया। दर दुआरे अगे खड़, प्रभ आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलार कर विचार पहली वार विच संसार रंगण रंग चढ़ाईआ। अमृत वेला आत्म रंग, शब्द भबूती लाईआ। गुरमुखां कटे भुक्ख नंग, सोहँ सो अहूती पाईआ। दिवस रैण करे जंग, पंचां नाल रहे लड़ाईआ। जूठे झूठे भन्ने वांग काची वंग, गुरमुख साचे कंचन उप्पर नाम सुहागा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग माया धोवण आया दागा, आप आपणी दया कमाईआ। अमृत वेला आत्म प्यार शब्द ज्ञानी पाया ए। शब्द ज्ञानी चरन अधार, प्रभ चरनी चरन लगाया ए। चरन कँवल कलि प्रभ उतरे पार, कँवल नाभ उलटाया ए। कँवल नाभी पुरख अपार, अमृत धारा रिहा वहाया ए। अमृत धार सच द्वार, सोहँ सम्पट लाया ए। सो होड़ा अपर अपार, सरसा किला बणाया ए। दोहां रक्खे तिक्खी धार, निरगुण सरगुण मेल मिलाया ए। होड़ा बणे सुखमन नाड़ा, गुर पूरा विच समाया ए। दोहां जोड़ा इक्क दरबारा, शब्द घोड़ा संग रखाया ए। आत्म अन्दर लाया पौड़ा, डण्डा किसे हथ्थ ना आया ए। धुर दरगाही आया दौड़ा, गुरमुखां पाई वंडा, बेड़ा आपे पार कराया ए। इक्क वखाया पार कन्ढा, विचकार अद्ध ना किसे रखाया ए। गुरमुख आत्म होई ना रंडा, जगत रंडेपा आप कटाया ए। मिली वड्याई विच वरभण्डा, मानस देही जन्म जणेपा इक्क सौ ग्यारां छिला कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत वेला आपे आण सुहाया ए। अमृत वेला आत्म दात, मानसरोवर कन्ढा ए। गुरमुख साचा पारज़ात, घर साचे पई वंडा ए। दिवस रैण रहे प्रभात, लेखा चुक्के जेरज अंडा ए। अन्दर मन्दिर मिट्टी अन्धेरी रात, मिल्या अमृत सीतल ठंडा ए। काया सीतल सांतक होई स्वांत, लोकमात ना आई कंडा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द धारा जन वणजारा विच संसारा आपे पाई साची वंडा ए। अमृत आत्म पाई वंड, हरि साचा वंडण आया ए। वेख विखाणे उत्भज सेत्ज जेरज अंड, चारे खाणी विच समाया ए। चारे खाणी साची राणी, सोहँ सो साचा अक्खर इक्क पढ़ाया ए। सतिजुग तेरी साची राणी लक्ख चुरासी कीनी वक्खर, शब्द ताज सीस टिकाया ए। शब्द

विहूणे लथ्थे सथ्थर, जूठा झूठा माया भार उठाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नीर वरोले अत्थर, शब्द सरूपी आत्म बोले, पाटे बजर कपाटी पत्थर, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे विच समाया ए। अमृत वेला आत्म जाग, जगत जुदाईआ। घर साचे लगा होए भाग, मात रुशनाईआ। आत्म तृष्ना बुझे आग, हउमे रोग मिटाईआ। माया डस्सणी ना डस्से नाग, सांतक सति शब्द वरताईआ। दीपक जोती जगे चिराग, मिट्टे जगत बिनाईआ। धूढ़ी मजन साचा माघ, रुत्त बसंती इक्क सुहाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सर सरोवर इक्क वखाईआ। आपे धोवण आया दाग़, अन्दर रिहा मेघ बरसाईआ। शिव शंकर सेज त्याग, आए दर सच्ची सरनाईआ। ब्रह्मा गाए चार मुख राग, पंचम बैठा सीस निवाईआ। कलिजुग आया कन्त सुहाग, जोत निरँजण मात जगाईआ। जन भगतां पकड़ी वाग, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोहँ सो साची जाग लगाईआ। सोहँ सो कलिजुग कलि साची पोह गई फुट्ट। आप बुझाए तृष्ना आग, लक्ख चुरासी गई छुट्ट। हथ्थीं बन्ने शब्द ताग, पंजां चोरां कढ्ढे कुट्ट। आत्म लाए इक्क वैराग, गुरमुख होए वड वडभाग साचा लाहा लैण लुट्ट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द वर, अमृत आत्म साचा पी, लेखा मिटे साढे तिन्न हथ्थ सीं, दर घर घर दर इक्क प्याए एका घुट्ट। अमृत वेला जाग हरि जगांयदा। वक्त सुहेला आदि अन्त खुशी मनांयदा। वेखे खेल शब्द ब्रह्माद, कन्त बणत बणांयदा। देवे नाम सच्ची दाद, जीव जन्त वड्आंयदा। धुनी वज्जे साचा नाद, नादी धुन आप वजांयदा। रसना किसे ना आवे साध नाम सरोवर इक्क वखांयदा। मिले मेल माधव माध, बोध अगाधा शब्द जणांयदा। दर घर साचे रिहा साज, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। दिवस रैण जन रक्खणा याद, साची वंडा वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा पार कन्ढा, सोहँ डण्डा पार करांयदा। अमृत वेले जाग निमाणी, सुरत सवाणी बालड़ीए। मिल्या मेल शब्द हाणी, जोती जगे इक्क अकालड़ीए। अमृत आत्म लैणा ठंडा पाणी, दिवस रैण रहे सवालड़ीए। प्रगट होया जाण जाणी, सोहँ सो आप बणाया विच दलालड़ीए। आपे जाणे खाणी बाणी, दर दुआरे भरया पाणी नालड़ीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करी कार हरि करतार, जगत विहारा सच्ची धारा इक्क सुखालड़ीए। सुरत निमाणी होई बौरानी, रो रो धाहां मारदी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, कवण करे पार उतारी, जूठी झूठी दिसे यारी, अन्तिम पासा हारदी। नौ दुआरे हाहाकारी, गुर मन्त्र मिले ना शब्द अधारी, दिवस रैण मन्दिर अन्दर, काया बहि बहि आपा आप विचारदी। गुर पूरा मिल्या अन्त भण्डारी। साचे संतां रिहा तारी, आई द्वारी सोलां तन शृंगारदी।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, गुरमुख तेरी आत्म सुरती एका गुण गुर चरन विचारदी। सुरती सुरत विचार, चरन द्वारया। अकाल मूर्त अकार मात पसारया। देवे शब्द दाती दात, सोहँ सो अपर अपारया। वेले अन्तिम लैण आया मात, निहकलंकी जामा धारया। लक्ख चुरासी होई कलंकी कमज़ात, मिले मेल ना पुरख भतारया। गुरमुख साचा पारज़ात, अमृत आत्म मेवा इक्क खवा रिहा। आत्म दर वज्जी वधाई ख़ुशी मनाई अमृत वेला हरि प्रभात, दिवस रैण इक्क वखा रिहा। बैठा दिसे इक्क इकांत, निर्मल जोती जोत जोत जगा रिहा। आपे वेखे मार झात, दिस किसे ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले, दर घर साचे कर कर मेले, सोए मात जगा रिहा। गुरमुख सोए मात जगाए, भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आप आपणे रंग रंगाईआ। शब्द अनादी नूर अकाला, दीन दयाला जोती रिहा जगाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुर गोपाला, भगत भगत सदा रखवाला, दिवस रैण रहे रघुराईआ। जोत निरँजण इक्क ज्वाला, आदि शक्त जगत भवानी आवण जावण लेखे लाईआ। शब्द रखाए मात निशानी, दूसर वस्त दिस ना आईआ। मारे तीर दो जहानी कानी, तिक्खी धारा इक्क रखाईआ। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी, जगत विद्या सार ना पाईआ। माया भुल्ले चतुर सुजानी, पढ़ पढ़ रसना होई हलकाईआ। देवे दात शब्द दानी, दयावान आप अख्वाईआ। बाल अवस्था चढ़े जवानी, साल पन्दरूवें होए रुशनाईआ। बीस इक्कीसे तेरी निशानी, चारों कुन्ट होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल गुण निधानी, सार कोई ना पाईआ। जागत जागत जागत रे जग, जागण वेला आयो रे। भागत भागत भागत रे जग, चारों कुन्ट वक्त दुहेला रे। सरनागत सरनागत सरनागत रे जग, इक्क सरनाई चरन कँवला रे। मांगत मांगत मांगत रे जग, नाम निधाना उप्पर धवला रे। स्वांगी स्वांग रचे रचनागत, बैठा रहे इक्क इकेला रे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, छब्बी पोह सुहाया दिवस, जन भगत कराया मेला रे। छब्बी पोह वक्त सुहाया वेला, संगत जोड़ जुड़ाईआ। शब्द सरूपी चढ़ाया तेला, हथ्थीं गाना बन्न वखाईआ। फ़ल खवाए अमृत केला, काहना कृष्ना भेख वटाईआ। ना कोई जाणे गुरू चेला, लक्ख चुरासी होई हलकाईआ। दर घर साचे साचा मेला, आत्म दर वज्जी वधाईआ। आपणे रंग वसे हरि रंग नवेला, गुर संगत रंगण रिहा चढ़ाईआ। धर्म राए दी कढ्ढे जेल्हा, शब्द सरूपी जोत जगाईआ। जोती जामा खेल खेला, सति सतिवादी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच घर बैठा ताड़ी लाईआ। सच घर बैठा ताड़ी लाई, आसण शब्द सजाया ए। रचन रचाई सतारां हाढ़ी, हरि साजण साचा मीत मुरारा लोकमात अख्वाया ए। जन भगतां रक्खे लाज चरन छुहाई

दाढ़ी, सोहँ सो गीत इक्क सुणाया ए। शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी, प्रभ अबिनाशी अग्गे हो साचा राग वखाया ए। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, धर्म राए रिहा घबराया ए। चित्रगुप्त पिछे अगाड़ी, दोए जोड़ सीस झुकाया ए। दर घर साचे गया वाड़ी, छब्बी पोह जिस जन दर्शन पाया ए। जगे जोत बहत्तर नाड़ी, दिवस रैण रहे रुशनाया ए। मनमुख जीवां किस्मत माड़ी, जोत निरँजण दिस ना आया ए। अन्तिम वासा झाड़ झाड़ी, मन्दिर महल्ल कोई रहण ना पाया ए। जगत तृष्ना रिहा साड़ी, अग्न मेघ बरसाया ए। गुरमुखां फिरे पिछे अगाड़ी, अन्दर सेवा लाया ए। सतिजुग तेरी सच फुलवाड़ी, सतारां हाढ़ी सच क्यारी हरी मात कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीतल धारा ठंडी ठारा तन मन्दिर इक्क धराया ए। तन मन भरया आत्म घर, होया वक्त सुहेला। प्रभ अबिनाशी मिल्या वर, मेल मिलाया गुर गुर चेला। नौ दुआरे चुकया डर, हरि हरि पाया सज्जण सुहेला। ना जन्मे ना जाए मर, अचरज खेल हरि हरि खेला। शब्द भण्डारे रिहा भर, होए मात ना वक्त दुहेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, बैठा रहे इक्क इकेला। वंडण आया नाम हरि प्रभातया। पंजे सुत्ते दे कर कंड, कलिजुग रैण अन्धेरी रातया। पंजां मेट भेख पखण्ड, पंजां होवे उत्तम जातया। पंचां होए विछोड़ा अंड, पंजां मिल्या कमलापातया। पंजे रोवण पायण डण्ड। पंजां प्रभ निरँजण जातया। पंजां पाई झूठी वंड, पंजां मिली शब्द दातया। पंजा वासा जेरज अंड, पंजां मिल्या पुरख बिधातया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि लोक लोकमातया। लोकमात हरि रचन रचाई, शब्द वजाया नादा ए। महिंमा अगणत गणी ना जाई, भेव ना पाया संतां साधा ए। जीव जन्त कोए नाही, शब्द अनादी बोध अगाधा ए। गुरमुख दर वज्जे वधाई, जिस पाया पारब्रह्म ब्रह्मादा ए। दिवस रैण होए रुशनाईआ, गुर पूरा घर आपणे साचा लाधा ए। दूजा दर ना मंगण जाई, इक्क अकेला दीन दयाला आदि जुगादा ए। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, जुगा जुगन्तर रक्खे यादा ए। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, हरि हरि मोहण माधव माधा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप लाधा ए। गुरमुख साचा लध, खोज खुजंनया। अमृत आत्म प्याए मध, भाण्डा भरम भन्नया। इक्क वजाए शब्द नद, साचा राग सुणाए कन्नया। दस्म दुआरे आपे सद्द, सतिगुर बेड़ा बन्नूया। विष्नूं वंसी साची यद, ना किसे वसे छप्पर छन्नया। कलिजुग तेरी अन्तिम हद, वेले अन्तिम जाए डंनया। जगे जोत इक्क ब्रहिमद, ब्रह्मा आत्म मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख चढ़ाए मात साचे चंनया। कर्म धर्म प्रभ हथ्थ, बणत बणांयदा। मानस देही जन्म देवे समरथ, नत्थ इक्क पवांयदा। आत्म तृष्ना

जगत विकार दए मथ, रती रत विच टिकांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन आए दर्शन पांयदा। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, आवण जावण गेड़ कटांयदा। प्रभ अबिनाशी अकथना अकथ, देवी देव कोई भेव ना पांयदा। शब्द चढ़ाए साचे रथ, जो जन आए गुर संगत सेव कमांयदा। पंच पंचायणी देवे मथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी दया कमांयदा। मूर्ख मुग्ध गंवार, कर्म विछुंनया। कर किरपा देवे तार हरि करतार, ना कोई जाणे गुण अवगुनया। छब्बी पोह दिवस अपार, निहकलंक लए अवतार, जोती जामा भेख न्यार, लक्ख चुरासी छाण पुनया। वज्जे डंक शब्द अपार, चारों कुन्ट जै जैकार, नौ दुआरे हाहाकार, दस्म दुआरे गुरमुख मन्नया। पुरख अबिनाशी सोलां करे तन शृंगार, चुरासी कलीआं लाए पाए गल विच हार, काला वेस दर दरवेश लोकमात आए भन्नआ। दर बुलाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द आत्म मन्नया। गुरमुख साचे विच प्रवेश, नौ खण्ड पृथ्वी लावे सन्न्हया। नर निरँकारा ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, मूंडन मूंड किसे ना मुन्नया। जोती जामा धर धर धर दस्मेस, वेस अनेक अनन करन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म नुहाए साचे सर, शब्द बन्न्हे हथ्थीं गानया। शब्द बन्न्हे हथ्थीं गाना, डोरी तन्द रखाईआ। देवे नाम जगत निशाना, बंधन शब्द बंध बंधाईआ। आपे जाणे पवण मसाणा, बत्ती दन्द पवण स्वास चलाईआ। गुरमुखा रक्खे अन्दर भाणा, साचा भाणा शब्द जणाईआ। ना कोई छुट्टे राजा राणा, ताज सीस ना कोई बंधाईआ। गले लगाए गऊ गरीब निमाणा, देस माझ जोत जगाईआ। दर दर फिराए शाह सुल्तानां, जगत सांझ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे गोपी आपे काहना, नाम रखाए सच तराना, शब्द जणाए बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे शब्द वर, शब्द सरूपी अन्दर वड़, साचे मन्दिर जाए चढ़, देवे धीर साचे नीर जिउँ जल मीना सहिज सुभाईआ। जल मीना जल तृप्तास्सया ठांडा सीना, फ़ल अमृत पाया। गुरमुख साचा प्रभ साचे वक्ख कीना, मज़्ब दीना ना कोई रखाया। रंगण रंग चढ़ाया भीन्ना, सोहँ भट्ठी आपे पाया। मेट मिटाए ताप तीना, तृष्ना जगत कर इक्ट्ठी आपे विच सुटाया। हरिजन जन हरि तेरा साचा लोकमात जीणा, दर समरथी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगता देवे शब्द वर, साचा मार्ग रिहा वखाया। पंजां करे सच प्यार, सच्चे शब्द जणाईआ। चारों कुन्टां पहरेदार, दिवस रैण रघुराईआ। आपे बैठे अधविचकार, खण्ड ब्रह्मण्ड खेल रचाईआ। साचे घोड़ हो अस्वार, दिवस रैण रिहा दुड़ाईआ। चारे कुन्टां चार किनार, दहि दिशा वेख वखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कन्दर ध्यान लगाईआ। धरत मात तेरा इक्क अखाड़, गुरदुआरा मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ तीर्थ तट्ट कोई रहण ना पाईआ।

आपे वेखे अट्ठ सट्ठ नौ खण्ड पृथ्वी नठ्ठ नठ्ठ, सत्तां दीपां लठ गिड़ाईआ। अग्नी जोती मट्ठ मट्ठ, वरन गोती इक्क इक्ट्ठ, शब्दी शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बणत बणाईआ। बणत बणाए एक, इक्क अकारया। दूजा धरे जोती भेख, दिस किसे ना आ रिहा। तीजे करे वेस अनेक, जुगा जुगन्तर साची कारया। चौथे रहे सदा बिबेक, आप आपणे रंग समा रिहा। पंचम भगतां देवे टेक, साचा संग निभा रिहा। छेवें शब्द सरूपी लाए मस्तक मेख, रेख रेखा आप लिखा रिहा। सत्तवें सति पुरख निरँजण रिहा वेख, अगम्म अगम्मा कार करा रिहा। अठवें अट्ठां तत्तां रिहा वेख, धरया भेख मति मन बुध नाल रला रिहा। नौवें नौ दर भुल्ले औलीए पीर शेख़, दस्तगीर किसे ना पा ल्या। दस्म दुआर सच निरँकारा, जोत अधारा शब्द जैकारा गुरमुख विरला लए पेख, भाण्डा भरम भन्ना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, मानस जन्म लेखे ला रिहा। मानस जन्म लेखे लाए, एका एक अकालया। जगत भुलेखे सर्ब कढाए, किरपा करे दीन दयालया। नेत्र पेखे दर्शन पाए, शब्द पहनाए तन साची मालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़ल लगाए काया डालिआ। काया डाल लग्गे फ़ल, नाम फुल्ली फुलवाड़ीआ। गुरमुख साचे जाए बलि बलि, दर दुआरा एका ताड़ीआ। रसन चलाए साचा हल्ल, भाग लग्गे काया कल, अन्तिम कटे साची हाढ़ीआ। वेख वखाणे जंगल जूह जल थल, उच्चे टिले जगत पहाड़ीआ। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल, आत्म हिंसा जगत विकारीआ। इक्क प्याए अमृत आत्म जल, मेल मिलाए जोत निरँकारीआ। गुर संगत जो जन जाए रल, काया हरी होए क्यारीआ। दीपक जोती जाए बल, मिटे रैण अंध्यारीआ। सच दुआरा लैणा मल, नौ दुआरे जगत ख्वारीआ। लेखा चुक्के डूंघी डल, काया मन्दिर अन्दर शब्द भण्डारीआ। रूप जणाए सदा साँवल सल, सूहा पीला लाल तन श्रृंगारीआ। जोती जामा भेख परबल, काला पीला कंचन धारीआ। आपे वसे उच्च महल्ल अटल, ना कोई पावे सारीआ। दीपक जोती रही बल, दहि दिशा होए उज्यारीआ। जोत सरूपी मार अछल्ल, सत्तवें अन्दर आया बाहरीआ। आपे जाणे आपणी कल, छेवें घर खेल न्यारीआ। ओंकारा पसर पसारा सच दुआरा रिहा मल्ल, उपज्या शब्द अपारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती शब्दी मेल कर, पंचम करे सच्ची कारीआ। पंचम घर हरि सुहाए, पवण स्वास चलाईआ। जोती शब्दी मेल मिलाए, एका पवण चलाईआ। पवण स्वासी सेव कमाए, दिवस रैण पक्खा झुलाईआ। दस दस मासी कोई दिस ना आए, वेखे खेल अवण गवण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, बावण सावण कामनी कामन खेल कराए, वल छल कराईआ। पंचम घर मेल मिलाया, पवण शब्द वधाईआ। जोत सरूपी विच

४५८ ०५

समाया, दोहां बणत बणाईआ। तिन्नां रंगां इक्क वटाया, त्रैगुण माया लए उपजाईआ। आप आपणा तत्त समाया, हड्ड मास नाड़ी कोई दिस ना आईआ। कमलापात आप हो आया, त्रैगुण नारी आप बणाईआ। शब्द धीरज यति धराया, ब्रह्मा आप लए उपजाईआ। चौथा घर आप उपजाया, प्रभ साचे जोत जगाईआ। दे मति रिहा समझाया, पारब्रह्म ब्रह्म होए जुदाईआ। तिन्नां लोकां रचन रचाईआ। चौदां हट्टां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। चौथा घर नर नारी, कोए दिस ना आईआ। चौथा दर हरि सुहाए, ना कोई दिसे नारी नर, बाल अञ्याणा दिस ना आए। ना कोई दीसे चतुर सुघड़ स्याणा, वेद पुराणां कोई ना गाए। ना कोई गाए खाणी बाणी, अंजील कुराना सार ना राए। एका एक पुरख बिधाती जगे जोत महानी, आप आपणे विच समाए। दूजी देवे शब्द निशानी, ब्रह्मा होए जगत विद्वानी, चारे कुन्टां चार द्वार चार मुख लगाए। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आत्म देवे जोत अधार, शब्द सरूपी किरपा धार, पवण झुलाए दया कमाए आपे आप करे मेहरवानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा दित्ता इक्क वर, भेव अभेदा अछल अछेदा चारे जुग जोग रखीशर, आपे आप आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, चौथा घर खोल्ह दर, पहला वर पारब्रह्म ब्रह्मे आप दवाए। जगत भण्डारा खोल्ह, जगत तराया। शब्द जैकारा बोल, भगत सुहाया। दोहां दुआरा अडोल, छब्बी पोह दिवस सुहाया। जगत मंग अपार, जन जन मंगदा। गुरमुख मंग अपार, काया रंगदा। दोहां देवणहार, लोकमात ना संगदा। जगत कराए वणज वपार, वेखे खेल सच्ची शतरंज दा। गुरमुखां देवे शब्द अधार, वक्त चुकाए सवेर सञ्झ दा। दोहां सुहेला मीत मुरार, वक्त दुहेला नार बांझ दा। छब्बी पोह वक्त विचार, मेल मिलाए हीर रांझे दा। हीर निमाणी सुरत दए दुहाईआ। शब्द मिले रांझा सूरत, तुटे जगत जुदाईआ। गुरमुख आसा मनसा पूरत, मिले माण वड्याईआ। जगत दुआरा दिसे ना दूरत, नर निरँकारा दरस दिखाईआ। जगत विकारे रहे झूरत, तृष्ना अग्न जलाईआ। अन्तिम दिसे कूड़ो कूड़त, कोए नाल ना जाईआ। एका लेखा गुर चरन मस्तक धूढ़त, वेले अन्त होए सहाईआ। माया भुल्ले मनमुख मूढ़त, जगत तृष्ना झूठ वधाईआ। गुरमुखां आसा मनसा पूरत, साचे शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरी साची वर, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। छब्बी पोह रुत्त सुहञ्जणी, प्रभ साचे मात बणाईआ। जगी जोत निरँजणी, गुरमुख विरले मिल्या मीत मुरारा साचा साक सजणी, भाण्डा भरम रिहा भन्नाईआ। मण्डप माड़ी अन्तिम बन्न्हणी, विच प्रभास दरस दिखाईआ। वेले अन्तिम किसे लाज ना रक्खणी, झूठा नाता भैणां भाईआ। प्रभ आया पड़दे कज्जणी, देवे शब्द सच्ची लेफ तलाईआ। चरन धूढ़ साचा मजनी, लक्ख चुरासी

रिहा कटाईआ। एका दर दो दो आबा मक्का काअबा हाजन हजनी, तन हज्ज कबूल इक्क कराईआ। जगत तृष्ना दर घर साचे तजणी, जन आत्म वर प्रभ बेड़े रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द झूला रिहा झुलाईआ। शब्द झूला हरि झुलाए, गुरमुख संत मिलाईआ। कन्त कन्तूहला मेल मिलाए, साची बणत बणाईआ। फूलां हार तन पहनाए, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। दूल्हो दूल्हा आप अख्वाए, शब्द सीस ताज रखाईआ। सोलां कल रिहा वखाए, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। काया चोली रंग चढ़ाए, सोहँ भट्ठी चढ़ाईआ। साची डोली आप उठाए, सच कुहारा हरि निरँकारा आपे आप हो जाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त व्याहे बोली, लक्ख चुरासी तेरी गोली, धर्म राए खुशी मनाईआ। गुर संगत होए आली भोली, आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, देवे वस्त नाम अनमोली, प्रभ आपणे अंक समाईआ। गुरमुख मंगे साची मंग आत्म दर डाहे झोली, प्रभ शब्द भण्डारा रिहा भराईआ। पूरे तोल रिहा तोली, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची रिहा बणत बणाईआ। गुर संगत साची बणत बणाउँणी, लेखा लेख लिखांयदा। रंगत नाम इक्क चढ़ाउँणी, झूठा भेख मिटांयदा। सच दुआरा एका मंगत, आपे कटे भुक्ख नंगत, दु:ख कलेश दर हटाउँणी, माण गंवाए हँगता हँगत, शब्द कटार इक्क उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर संगत देवण आया वर, शब्द सुणाए इक्क सुनाउँणी, शब्द ला ला कान सुणांयदा। काया मन्दिर कलिजुग मकान। नौ दुआरे झूठ दुकान, दस्म दुआरे श्री भगवान। दिस ना आए जीव निधान। पंचां डोर हत्थ फड़ाई, भुल्लया मात गुण निधान। पंजे चोर रहे सुणाई, सुरती पीण खान। गुरमुख विरले जगत जुड़ाई, एका चरन ध्यान। दरगाह साची मिले वड्याई, होए सहाई आन। पारब्रह्म प्रभ जोत जगाई, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्यान। लोआं पुरीआं रिहा जगाई, साची वंडण वंड वंडाण। गुर संगत तेरे हिसे आई, बीस बाह्वें हरि रघुराई। आप आपणी दया कमाई, छब्बी पोह खुशी मनाई। करोड़ तेतीसा सेवा लाई। शिव शंकर तशका गल लटकाई। ब्रह्मा वेखे मुख उठाई। नेत्र खोल्हे केहड़ी कूटे हरि जी बोले। शब्द भण्डारा हरि जी खोल्हे। गुरमुखां काया रंगण रंगे चोले। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां इक्क सुणावण आया सोहँ साचा ढोले। सोहँ सच्चा ढोल मृदन्गाया। धुर दरगाही एका बोल गुरमुख विरले मात मंगया। लक्ख चुरासी पड़दा फोल, अग्गे पिच्छे भुक्खा नंगया। सच वस्त ना किसे कोल, नाम नौ दुआरे ना किसे टंगया। बजर कपाटी कुण्डा खोल्ह, साची हाटी एका साची वंगया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, निहकलंक नरायण नर, देवण आया दान हरि भगवान, जो जन आए मूंहो मंगया। मंगणी

मंग अपर अपार, होए रुत्त बसंतया। छब्बी पोह जगत अधार भगत सुधार, मिले मेल कन्त सतवन्तया। दीपक जोती कर उज्यार, पारब्रह्म पाए सार, घर साचे धाम वसंतया। गुरमुख साची नार, चरन प्रीती करे प्यार, सति सरूपी जाए तार, जोत सरूपी एका धार, मेल मिलाए गुण गुणवन्तया। सोहे दर बंक द्वार, काया भाण्डा झूठा जगत द्वार। पंच दुआरे जूठा झूठा भेव ना पावे दस्म दुआर। जगत तृष्ना अग्गनी माया हउमे दु:ख ना देवे कोई निवार। गुरमुख विरला आत्म घर साचो सच दिवस रैण रैण दिवस इक्क इकल्ला सच महल्ला सुत्ता रहे पैर पसार। पुरख अबिनाशी जल थला, अछल अछला पौंदा रहे सार। मिले वड्याई अन्त जुदाई। जिउँ गुर गोबिन्दे डला, प्रभ साचा मेल मिलाई। वेखे खेल अज कि कला, मालवे देस करे हल्ला, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका पग सूरा सरबग आपणा दए टिकाई। मंगण मंग अपार कोटन कोटयां। गुरमुख विरले करन प्यार, वज्जे तन नगारे शब्द साची चोटयां। लक्ख चुरासी रोवे धाहां मार ना कोई करे सच्चा वणज वपार, जूठे झूठे तोड़न बोटीआ। गुरमुख साचे हिरदे वासे, पंच चोर ना दर घर नाचे, प्रभ एका बख्शे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख धर, लोकमात हरि जोत धर, खिच ल्याए दर द्वार। नौ दुआरे जगत खुल्हाया, दसवे गूझ रखाया ए। पहले दर भेव ना राया, सृष्ट सबाई फिरे हलकाया ए। दूजे दर तृष्न रखाई, माया ममता जाल विछाया ए। तीजे दर करी कुड़माई, नौ अठारां साधां संतां गुरूआं पीरां भेड़ भिड़ाया ए। चौथा घर गुरमुखां दस्से राह सिध्धा, तन मन सीतल कराया ए। पंचम दस्से आपणी बिधा, साची धारा रिहा वखाया ए। छेवें घर पए गिधा, शब्द ताल वजाया ए। सत्तवें दर बणाए बिधा, लोआं पुरीआं रिहा उपजाया ए। अठवें अट्ठां तत्तां आपे विधा, लक्ख चुरासी विच समाया ए। नावें दर मिल्या जगत विकारा, भर भण्डारा साचे झोली पाया ए। गुरमुख साचा रोवे धाहां मार, प्रभ अबिनाशी करे प्यार, एका देवे शब्द अधार, दे मति रिहा समझाया ए। बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत, चरन प्रीती बझे नत्त, आपे जाणे मित गत, तीर्थ तट्ट सर्ब तजाया ए। जाणे जणाए घट घट, ढाहे भरमा वट्ट, पंझी मारे शब्द सट्ट, चौथा घर वखाया ए। चौथा घर जोत लट लट, कवण मति कवण सति पंजवें बाहर कढाया ए। पंजवां उत्तों दित्ता छत्त, गुर संगत गुर संगत तेरा पड़दा बणाया ए। कोई ना जाणे काया मट, प्रभ करते की खेल रचाया ए। दुनियां भरमे भुल्ली मति, पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाया ए। देह धारी विच पिण्ड घविंड, आप आपणा भेव छुपाया ए। कलिजुग तेरी मूधी होई टिंड, ज्ञानीआं ध्यानीआं सार ना राया ए। वेले अन्तिम जाणा खिण्ड, ना पल्लू किसे फड़ाया ए। गुरमुख साचे आप उपजाए साची बिन्द, जोती शब्दी मेल मिलाया ए। वेखे खेल प्रभ साचा विच हिन्द, राम रमईआ कृष्न घनईआ आप अख्वाया

ए। गुरूआं पीरां साधां संतां शब्द सरूपी खिच्चे जिंद, नाड़ सितार ना कोई हिलाया ए। छब्बी पोह प्रगट होवे हरि दाता सूरा वड मृगिन्द, एका धारा रिहा वहाया ए। चारों कुन्टां सृष्ट सबाई करे निन्द, निहकलंक आपणा डंक रंक अंक आप वजाया ए। आप सुहाए द्वार बंक, साचा धाम इक्क बणाया ए। जुग त्रेते इक्क जनक, लोकमात वड्आया ए। प्रगट होया वासी पुरी घनक, इक्क सद ग्यारां पंझी पोह माण दवाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे दर दर, धर्म राए होए हलकाया ए। गुरमुखां देवे माण, सीस सिर ताज्जया। झुल्ले जगत निशान, रचन रचाए साचा काज्जया। एका बख्शे ब्रह्म ज्ञान, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया। शब्द उडाए धर्म बिबाण, करे पार देस माज्झया। गुरमुख साचे चढ़न आण, सोहँ उडे साचा बाज्जया। कल्गी तोड़ा जगत पछाण, जोती जोड़ा शब्द ध्यान, सोहँ मारे साची वाज्जया। पारब्रह्म चतुर सुजान, कलिजुग तेरी लाहुण आया अन्त मकाण, जूठा झूठा बन्ने तेरे पल्ले दाज्जया। सतिजुग तेरा सति मकान, नौ दरवाज़े बन्द रखान, मिटे हज्ज काअबन काअब्या। चरन धूढ़ इक्क इशनान जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सीस रखाए साचा ताज्जया। नौ दुआरे नौ निधां नावें रंग रंग रतया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, प्रभ दे समझावे मत्तया। जीआं देवे दानी दान, आत्म साचा भतया। सोहँ साचा पीण खाण, सो यती यतया। सावण बरखा मेघ महान, बीज बीजे काया वतया। गुरमुख विरले होए चतुर सुघड़ स्याण, तन होए ना सीतल तत्तया। पद पाया इक्क निरबाण, रसना रस एका चट्टया। गुर पूरे भगत निशान, जगत जहान झूठी मट्टया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, हरि जन विरले लाहा खट्टया। लाहा खट्टणहार गुरमुख गहरया। तीर्थ तट्टां कर विचार, प्रभ साचे कीनी मिहरया। घट घटां कर पसार, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवण आया शब्द भण्डारया। शब्द भण्डारा हरि हरि वंडे, कलिजुग वंडण आया। अमृत धारा अमृत खण्डे, नाम प्यावण आया। हथ्थ फड़ाए चण्ड प्रचण्डे, सोहँ नाम धराया। वेखे खेल हरि वरभण्डे, ब्रह्मण्डे रचन रचाया। हरिभगत चढ़ाए साचे डण्डे, कलिजुग कन्ढा पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणी दया कमाया। हरि भण्डार अमोल, गुरमुख विरले जाणया। शब्द भण्डारा रिहा खोल्ह, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। तोलण आया साचा तोल, वणज वणजारा हरि निरँकारा इक्क अख्वा रिहा। गुरमुख आत्म रिहा फोल, शब्द सरूपी अन्दर बोल, साचा राह इक्क वखा रिहा। मनमुखां सद वसे कोल, दिस किसे न आ रिहा। हरिजन चरन प्रीती घोली घोल, कलां सोलां मेल मिला ल्या। कलां सोलां कराए चोहल, नौ सत्त खेल खिला रिहा। नौ

सति सुणाया बोल, साचा राह इक्क वखा रिहा। सोहँ वज्जे साचा ढोल, छोटा बाला इक्क चढ़ा ल्या। करोड़ तेतीस रिहा अनभोल, सुरपति राजा इन्द जगा ल्या। आपे बैठ शब्द अडोल, गुर मन्त्र तीर चला रिहा। एका अक्खर वक्खर बोल, प्रभ साचे राग सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, छब्बी पोह चरन धूढ़ी साचा मजन माघ करा ल्या। साचा मजन आप कराए, सज्जण सुहेल सुभागया। साचे सज्जण आण जगाए, सुणाए साचा रागया। पड़दा कज्जण आप अख्वाए, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादीआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे धर्म कर्म जरम आदि आदि आदि जुगादि जुगादि जुगादया। रसना भोग अपार, शब्द लगाया। होया संजोग सच सच्चे दरबार, हउमे रोग जलाया। ना होए विजोग प्रभ पुरख भतार, दरस अमोघ दर दिखाया। आत्म रस साचा लैणा भोग, गुर प्रसादी गुरमुखा आत्म साधी, वाद विवाद गंवाया। शब्द भोग तन अहार, मन सांतक सुख उपजाया। कर प्यार जीव जन्त अधार, मुख साचे आप रखाया। साचा सुख सहिज विचार, उतरे तृष्ना भुक्ख रोग सोग निवार, निजानंद विच समाईआ। चार खाण जगत पकाण छत्ती भोग छत्ती राग, इक्क संजोग बिरहों वैराग आपणा आप कराया। आप बणाए हँस काग, मस्तक धूढ़ी जन जाए लाग, दुरमति मैल रिहा धवाया। पाए हंढाए कन्त सुहाग, सिर साचा हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, सर्बकलां समरथ, देवे शब्द

४६३ साची वत्थ, दे मति रिहा समझाया। शब्द देवे साची वथ, सज्जण साचा मीतड़ा। आप चढ़ाए साचे रथ, काया चोली ४६३

०५ लाहे जूठा झूठा चीथड़ा। वेले अन्तिम रक्खे दे कर हथ्थ, तन मन होए सीतल सीतड़ा। जोती जोत सरूप हरि, सर्बकला ०५

आपे समरथ, वेला आए ना किसे हथ्थ अन्तिम कलिजुग बीतड़ा। कलिजुग जाए बीत, रीत अवल्लड़ी। किसे ना दिसे साचा मीत, तृष्ना लग्गी काया खल्लड़ी। गुरमुख विरला मानस देही जाए जीत, मिले मेल जोत अकलड़ी। गाए शब्द सुहागी गीत, दर दुआरा एका मलड़ी। चरन प्रीती साची नीत, चाल निराली जगत अवल्लड़ी। जोती जोत सरूप हरि, आपे बैठा रहे अतीत, लक्ख चुरासी आत्म मलड़ी। सदा रहे अतीत, आत्म वास्सया। जगत जाणे आपे नीत, आपे वेखे हो हो पास्सया। अन्दर बाहर हस्त कीट, जंगल जूह उजाड़ विच प्रभास्सया। गुरदुआरा मन्दिर मसीत, काया मंडल जूठी झूठी रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क खुल्हाए शब्द दर, वेख वखाए पृथ्वी अकास्सया। पृथ्वी पताल अकाश, दयाल दया करे गुर दीना। लक्ख चुरासी पवण स्वास, रास आस आस रहे सद सीना। हरिजन होई काया रास, प्रभ मिलण दी साची आस, मिले मेल सर्ब गुणतास, नर नरायण रसना चीना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे सच्चा शब्द वर, जो जन तजाए मदिरा मास। मदिरा मास जगत विकारा, हरि साची रचन

रचाईआ। करे खेल मेल दो दोआबा, भेद अभेद भेव छुपाईआ। अमृत आत्म कर प्यारा, हरि हरि रिहा वरताईआ। मदिरा मास करे गंवारा, मध माती भरम भुलाईआ। दोहां खोल्हे आप भण्डारा, देवणहार सर्ब अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। चतुर्भुज सच्ची सरकारा, विष्नूं वंसी आप अख्वाईआ। कलिजुग वज्जे ताल दुहरी धारा, काहना कृष्ना खेल रचाईआ। साचा लग्गे मात अखाड़ा, सोहँ बंसी आप वजाईआ। जेठ जेठ पंज दिहाड़ा, साची सुरती सुरत भवाईआ। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताल तलवाड़ा, अकाल मूर्त रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, दिवस रैण जगाए। जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पल, आपणा भेव छुपाए। भेखाधारी बावन बल, सृष्ट सबाई रिहा हिलाए। गुरमुखां मेटे दूई द्वैती सल, साचा अमृत मेघ बरसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहचल धाम इक्क सुहाए। निहचल धाम हरि अटल, हरि महल्लया। दीपक जोती रिहा बल, पसर पसारे जल थलया। वेखे खेल कलिजुग कल, एका एक सुनेहड़ा घल्लया। आप सुहाए साचा ताल, वेख वखाणे जंगल जूह जल थलया। जोती शब्द गुरमुख तेरे अन्दर गई रल, भाग लगाए डूंघी डल्लया। साचा दीपक गया बल, मिटे अन्धेर काया खलया। सच दुआरा लैणा मल, लोकमाती फुलया फलया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, अमृत आत्म जाम प्याए एका एक चुलीआ। अमृत जाम मिटे जमग्रास। मिले नाम पुरख अबिनाश। पल्ले नाम शब्द स्वास। पूरन काम काया रास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंच विचोला सद वसे पास। पंज विचोला शब्द पंच जणाईआ। पंचां होया आप गोला, पंचां विच समाईआ। पंचम सुणाए साचा ढोला, नाद अनादा रिहा सुणाईआ। पंचां देवे एका बोला, सोहँ साचा जाप जपाईआ। पंचां पड़दा रिहा खोल्हा, नाम चोला चोली पाईआ। पंचां आप उठाया डोला, लोआं पुरीआं रिहा फिराईआ। पंचां साचा तोल तोला, साचा कंडा रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पंचम पंचम होए विचोला, छब्बी पोह खुशी मनाईआ। पंचम विचोल जगत मीत, हरि हरि आप निरँकारा। जगत चलाए अचरज रीत, ना कोई दीसे मन्दिर गुरुदुआरा। मक्का काअबा हाजन हाजी इक्क वखाए सच मसीत, जोत निरँजण कर पसारा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, मेट मिटाए धुँदूकारा। गुरमुख उपजाए साचे सुत्त, शब्द फड़ाए हथ्थ कटारा। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत, राज राजानां वेखे जाए दुआरा। आप सुहाए साची रुत्त, पहली चेत थित्त विचारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। पहली चेत जगाए राजा संगरूर, दर दए सुणाउँणी। मेट मिटाए झूठी धार, साची बणत बणाउँणी। होए दयाल

हरि कृपाल, सम्मत वीह सौ सोलां, सोलां कलां जोत जगाउँणी। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखण जाए दर दरवेश काला वेस वांग जगत हकीरां खेल रचाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, किसे दिस ना आए गुर पीर साध संत राज राजान शाह सुल्तान, गऊ गरीब निमाणयां देवे माण गुण निधान, जगत पखण्डा मेट मिटाउँणी। मिटाए भेख जगत दुआरे। आपे लिखे सतिजुग तेरी रेख, प्रगट होए नर निरँकारे। औलीए पीर शेख़ चारों कुन्ट रिहा वेख, भेखाधारी भेख अपारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, माझे देस कर कर वेस सच सच्चे दरबारे। माझे देस तख्त सुहाए, प्रगट होए वाली दो जहाना। हथ्थीं बन्ह्ण जाए साधां संतां राज राजाना मौली गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे नारी चतुर सुजान, सेवा करे पुरख सुजान, सुहागी कन्त इक्क हंढाना। साजन मेरे उठ, संत दुलारया। साजण सुत्तड़े उठ, सुत प्यारया। साजण सुतड़े उठ, प्रभ करन आया एका मुठ्ठ, पंच पंचां इक्क बणा रिहा। पुरख अबिनाशी गया तुठ्ठ, खोल्ह्हे दर सच्चा दरबारया। जुगां जुगां दा विछड़या जो रिहा रुठ्ठ, आप मनाए कर कर कर प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पोह छब्बी दिवस विचारया। जगत नींद वसंदड़ा, गुर पूरा गया भुल्ल। प्रेम लगाया माया धन्दड़ा, अमृत आत्म गया डुल्ल्ह। सच दुआरे वज्जा जिंदड़ा, ना मिले वस्त अनमुल्ल। दूई द्वैती दिसे कंधड़ा, नौ दुआरे रिहा तुल। जोती जोत सरूप हरि, आप बणाए आपणी बिन्दड़ा, शब्द चढ़ाए तन भेंट साचे फुल्ल। जगत विकारी जगत रस, आत्म मध वैराना। गुरमुख साचे घर साचे सद, हथ्थीं बन्न्हे साचा गाना। एका देवे साची दाद, सोहँ नाम भगत तराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौं सोया आप जगाना। नौ नौं नर विचार। पुरख भतार हरि करतार। हरि करतार जोत अकार। जोत अकार शब्द भण्डार। सोहँ वरतार भगत द्वार। हरि दातार देवणहार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुख साचा सुहागण नार शब्द भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम करे सच विहार। पंचम धारा आप कर, आपे रक्खण आया सति। सीस दस्तारा आप धर, बन्न्हे धीरज यत। जोत अकारा मात कर, बीज बीजे साचा सति। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे समझावण आया मति। साची मति मात दवाई। संत मनी सिँघ सेव कमाई। सिँघ मनी तेरी वड वड्याई। मिल्या मेल वड धन धनी, नाम खजाना हरि दर पई। महिंमा अगणत ना जाए गणी, सतिजुग साचे होए रुशनाई। कलिजुग ताणी एका तणी, चारों कुन्ट अन्धेरी छाँईं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग बणत आपे आप बणाई। नाम टिक्का मस्तक लगाया। गुरमुख साचा सोया मात आप उठाया। दुरमति मैल पापां धोया। अवर ना जाणे जन्त कोया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे गुर आपे चेला, आपे होए भगत सुहेला, संत मनी सिँघ तेरा वेला आपे आप सुहाया। संत मनी सिँघ मंगी मंग। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी काया कंचन तन मन रंग। साढे तिन्न साल विछोड़ा, जोती शब्दी होए जोड़ा, चिट्टा अस्व मिले घोड़ा, पुरख अबिनाशी वागां मोड़ा, ना कोई जाणे ब्राह्मण गौड़ा, हरि जन वेद पुराणां सार ना पाईआ। जोत निरँजण पुरख अपारा, शब्द सरूपी साची धारा, जोत सरूपी कर उज्यारा, चारों कुन्ट दहि दिशा रिहा कर विचारा, जोती जोत सरूप हरि, संत विछोड़ा संत विछोड़ा संत विछोड़ा आप आपणी बणत बणाईआ। संत विछोड़ा साढे तिन्न। प्रभ वक्त लँघाए गिन गिन। लेखा लाया मस्तूआणे, राणे संगरूर मारी जंजीर हथ्थीं चिन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता शब्द वर, इक्क महीना ठांडा सीना वेखे बैठा लोक तिन्न। तन मन सदा रहे भीन्ना। जूठा झूठा लोकमात जीणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता शब्द वर, दर लग्गे भाग जगे जोत चिराग, उन्नी कत्तक साँवल सुन्दर होए महीना। प्रभ अबिनाशी वेखण वेखा, संत मनी सिँघ धारे भेखा, जोत निरँजण अलख अलेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संत मनी सिँघ गल पाया शब्द शृंगार। मिल्या मेल प्रभ मीत मुरार। पकड़ बहाए दर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणे लेख लिखार। भगतन लिख्या आप लेखा, नेत्र किसे दिस ना आया। राज राजानां शाह सुल्तानां पहली चेत जाए सुणाया। भाग लग्गे काया खेत, संत मनी सिँघ वड वड्आया। साची सेवा पुरख अबिनाशी आप लगाया। सोई सोई सोई सुरती मात जागी, अकाल मूर्त जोत जगी, साचा नाद नाद अनादा आपणी धुन रिहा उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म लेखा घर घर वेखा जगत विछोड़ा दोए जोड़ा भरम भुलेख डाहढा पाया। भरम भुलेखा भरमे भुल्ल। भाग लगाए कलि साची कुल। सम्मत सोलां पए मुल। लक्ख चुरासी चारों कुन्ट जाए रुल। संत मनी सिँघ तेरी सच फुलवाड़ी, मातलोक विच जाए फुल्ल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी रक्खे लाज साजन साचा साज, चरन छुहाए मस्तक टिका साची दाढ़ी। सम्मत सोलां सोलां कल धारे। राजे राणे करे ख्वारे। मस्तूआणे खेल अपारे। संत मनी सिँघ लेख लिखारे। वेखे वेख नेत्र लोचन नैणा लैणा वेख, वरते रंग रंग संग सच्ची सरकारे। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणी कारे। आपे जाणी जाण, जगत जणाईआ। ना कोई जाणे जीव निधान, जोत निरँकारी खेल रचाईआ। शब्द घोड़ा इक्क बलवान, जोती जोड़ा शब्द धारी रिहा वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संत जेलृ जगत विछोड़ा मेल, आपणी खेल आपे आप बणाईआ। साकी

साखत साख्यात, सर्बकल भरपूरे। गुरमुख साचा पारज़ात, कलि आसा मनसा पूरे। गुर पंचम दित्ती शब्द दात, पंचम शब्द सदा हज़ूरे। दिवस रैण पुच्छे वात, साक सज्जण हाज़र हज़ूरे। वेखे परखे इक्क इकांत, हरि संत ना जानण दूरन दूरे। चरन प्रीती साचा नात, जोती नूर कोह कोहतूरे। दरस दिखाए बहु बहु भांत, आत्म बख्शे नाम सरूरे। लेखा लिखे नौ नौं सात, नव सत्त कारज पूरे। उत्तम गुरमुख तेरी ज़ात, ज़ात पाती होई चूरे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आत्म दर, कवण सु वेला होए प्रभात। प्रभाती प्रभात भरम गंवाया। एका मिल्या शब्द जमाती, साचा शब्द पढ़ाया। धुर दरगाही दित्ती साची दाती, चौदां तबकां विच समाया। अन्दर मन्दिर मारे झाकी, माड़ी मण्डप दिस ना आया। आप चुकाए पिच्छली बाकी, बन्द ताकी खोल्ह वखाया। शब्द चढ़ाए साचे राकी, साचा ढोला रिहा सुणाया। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, चरन गोला इक्क सुहाया। पंज चोर ना दिसे कोए आकी, सोहँ गोला एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आत्म वेखे सच दर, पड़दा उहला भेव ना राया। काया मन्दिर कोट गढ़, उच्चा मन्दिर टिलया। आपे वेखे अन्दर वड़, ना कोई करे कराए सिलया। दर दुआरे अन्दर वड़, साचा मेल मिलाए आपे मिल्या। शब्द सरूपी बाहों फड़, नाम सरूपी लाए मस्तक किलया। नौ दुआरे उखड़े जड़, दस्म दुआरी बूहा खुल्हया। साचे घाड़न रिहा घड़, गुरमुख विरला पूरे तोल तुल्या। जगत तृष्ना जाए सड़, अमोल अमोला माणक मोती रुल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वेखे शब्द वर, कवण वजाए ढोल ढोल्लया। वज्जे ढोल मृदंग नाद अनादया। सच दुआरे कवण संग, कवण देवे साची दादया। सच दुआरा एका मंग, मिल्या मेल बोध अगाध्या। सुरती चढ़ी अकाश पतंग, शब्द डोरी साची बाध्या। वहिंदा वहिण गई लँघ, तन मन आपणा आपे सोध्या। राह भीड़ा दिसे तंग, आप कराए साचा जोधन जोध्या। शब्द घोड़े कसे तंग, अग्गे हो वजाए मृदंग, सुरती फड़े उप्पर बोध्या। आप लपेटे आपणे रंग,। नाड़ी सुखमन जाए लँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे आत्म दर, मन पंछी जिस जन सोध्या। मन चंचल चात्रिक दिवस रैण, रैण दिवस रहे प्यासा। गुर पूरा सांतक दरस नेत्र नैण, वेखे आप तमाशा। जगत भगत चुकाए लहिण देण, काया वेखे भाण्डा साचा कासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे आत्म दर, खेले खेल शब्द तमाशा। शब्द तमाशे खेल आप रचाईआ। आपे सुरती आपे मेल, अकाल मूर्ति रंग वटाईआ। आप चढ़ाए जोत निरँजण साचा तेल, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। आपे पाए साची वेल, गीत सुहागा एका गाईआ। शब्द विचोला खेले खेल, दोहां धिरां रिहा सुणाईआ। मानस देही अन्तिम वेल, गुरमुख वेला वक्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म वेख हरि, शब्द हलूणा इक्क लगाईआ। इक्क हलूणा शब्द लगाए, वेखे पत्त पत्त डाल। गुरसिख गुरसिख संत हरि भगवन्त भगत जोत सरूपी दूलो दूल, दीपक जोती मस्तक थाल, मनमुख माया मता आत्म तत्ता रहे ऊना, दिवस रैण मन तन कंगाल। गुरमुखां मिल्या शब्द भत्ता, आप आपणा रिहा पाल। अमृत आत्म चेतन्न सता, चात्रिक साचे रिहा प्याल। आपे आप समझावे दे दे मत्तां, दीन दयाला बाग़ दयाल। जोती नूर एका रता, रती रत देवे डाल। भाग लगाया जैमल यता, यती सती शब्द प्रितपाल। धुर दरगाही मिल्या पता, नौ दुआरे होए खाल। सेव कमाई सांतक सता, सति पुरख निरँजण होया दयाल। बीज बीजे साचे वता, परम पुरख बणाया साचा लाल। आप सुणाई आपणी गाथा, फ़ल लगाया काया डाल। सर्बकला दिसे समरथा, करे कराए सदा प्रितपाल। सगल वसूरा तन मन लथा, नाता तुटे जगत जंज़ाल। धुर दरगाही साची मिल्ली वत्था, बणया शाह जगत कंगाल। आपे गाए रसना कथा, कथ कथ कथनी होए खुशहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द वजाए साचा ताल। शब्द वजाया साचा ताल, तन मन वज्जी वधाईआ। फ़ल लगाए काया डाल, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्द विचोला भगत दलाल, साची सेवा रिहा कमाईआ। पुरख निरँजण आपे भाल, जोत निरँजण विच टिकाईआ। जोत निरँजण बेमिसाल, दिवस रैण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। सुरत शब्द ज्ञान, तत्त मति बुध दिवाना। एकँकारा एका पत, चतर्भुज श्री भगवाना। बहत्तर नाड़ी ना कोई दिसे हड्ड मास नाड़ी रत, एका अंग अंग अंग शाह सुल्ताना। शब्द कराया साचा जप, धर्म बंधाया हथ्थीं बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, आपे जोती आपणा आप, आपे मानस देही पछाना। आप आपणा मानस देह। जोत निरँजण लागे नेंह। अमृत आत्म बरखे मेंह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आत्म वेख घर, हरि घर वसेरा एका रहे। मन आई प्रीत, तन मन जितया। काया सीतल सीत, पुरख अबिनाशी साचा मितया। मिल्या मेल साचे मीत, झेड़ा चुक्के नित्त नवितया। एका सुणया साचा गीत, लेखे लगी वार थितया। संत सुहेले सच प्रीत, आप कराया आपणा हितया। आपे परखी अन्दर मन्दिर मसीत, आपे जाणे आपणी विथया। आप बंधाई चरन प्रीत, तन मन काया सीतल धारा अमृत साचा सिंचया। जोती जोत सरूप हरि, आत्म अन्दर वेख वेख, दर वेख वखाणे ऊँच नीच नीकन नीकया। तन मन्दिर वेख अपार, खुशी मनाईआ। शब्दी तोड़े साचा जन्दर, सुरत सवाणी तन श्रृंगार कराईआ। आपे वसे साचे अन्दर, हाणीआ हाणी मेल मिलाईआ। होए मिलावा डूंघी कन्दर, हड्ड मास नाड़ी बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर मन्त्र अन्दर बणे बणतर, साची बणत मात बणाईआ।

मात बणाई बणत, गुरू गुर जागया। गुर गुरू बणाया संत, वड वडभागया। संत सांतक महिंमा अगणत, सुणे सुणावे अनहद रागया। पार कराए हरि भगवन्त, संत विचोला पावे आज्ञा। बैठा वेखे इक्क इकन्त, पुरख अबिनाशी शब्द सुहागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण नेत्र पाए साचा अंजन, बुझे जगत तृष्ना आज्ञा। जगत तृष्ना दूर, आत्म दर रोग निवारया। मिल्या मेल गुर पूरे सूरे सूर, शब्द चोग इक्क चुगा रिहा। नौ दर दिसे दूरन दूर, नेरन नेर आप वखा रिहा। जोत सरूपी पूरन पूर, मन अन्दर मन्दिर आप संवारया। सर्बकला आपे भरपूर, प्रगट होए दरस दिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म जोती नूर धर, शब्द गोली इक्क बणा रिहा। शब्द गोली प्रभ मात वडाई, गुर पूरे शब्द जणाईआ। दर घर साचे वज्जी वधाई, सुणया राग अनादी नाद ना कोए गाईआ। मिल्या मेल बेपरवाही, साची जाग एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे हथ्थ पकड़े वाग, जगत भगत भगत जगत रथवाहीआ। रथ रथवाही इक्क इक्क अख्वाया। बेपरवाही तेरी साची सिक, अंक अंक रखदा आया। आपे रहे सदा बिबेक, बिबेकी बाणा भेव ना राया। भगत भगवन्त संत एका टेक, एका अंक समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तन श्रृंगारा कर विहारा, साची सूरत अकाल मूर्त एका एक कराया। मिली वस्त वस्त अपार, मन अन्दर भरया तन ख़ज़ीना। भरया रहे शब्द भण्डार, दर घर साचे रहे भीन्ना। जगत कराए वणज वापार, सतिगुर साचा शब्द नगीना। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, ना कोई जाणे मुहम्मदी दीना। ऊँचां नीचां भेव निवार, ठांडा करे दर आया सीना। भरमे भुल्ले जीव गंवार, जीव ना जाणे तीनो तीना। त्रैगुण माया जगत पसार, आपे होए प्रभ अधीना। प्रभ अधीना भगत द्वार, ना कोई जाणे जीव नाबीना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वेखे सच दर, शब्द भण्डारी सर्ब प्रबीना। शब्द भण्डारा खोल्ह, गुप्त जणाया। पंचम अक्खर एका बोल, बणत बणाईआ। आपे वसे सदा कोल, सतिगुर साचा साचे संत रिहा उपजाईआ। काया गगरी लैणी फोल, गुणवन्ता गुणी गुण निधान, किस दर बैठा मुख छुपाईआ। तन मन मन तन लैणा तोल, शब्द सरूपी बैठ अडोल, कवण राग कन्न सुणाईआ। दिवस रैण करे चोहल, सावण सावण सावण रसना रही बोल, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। आपे होए पतित पावन, दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, हरि घट घट में नज़री आईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, मिटे अन्धेरी शामनी शामन, सञ्झ सवेर इक्क कराईआ। आप फड़ाए आपणा दामन, चण्ड प्रचण्ड ना होर कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरे कीनी वंड, संत सुहेला सदा सुहागी ना होए रंड, पले बन्न्हे नाम गंढु, अट्ठे पहर रहे ठंड, सुरत शब्द चढ़े घोड़, दिवस रैण रिहा दौड़ धुर दरगाही

एका पौड़, सच महल्ला शब्द अटारी, जोत निरँजण नर निरँकारी, चारों कुन्ट कर्म द्वारी, भरम करे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत भगवन्त भगवान दे जिया दान एका रंग रंगाईआ। गुरमुखां दासी दास दासन दास आप अख्वांयदा। जिस जन तजाया मदिरा मास, शब्द स्वासी जाप आप जपांयदा। लेखे लाए काया हड्ड मास, घनकपुर वासी जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी कीनी नास, पाताल आकाश दया कमांयदा। गेड़ कटाया गर्भ मात मण्डल रास, काया आप बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत साची रिहा वर, साचा पल्ला कर कर हल्ला आपणा नाम फड़ांयदा। पल्ला नाम फड़ाए, गुर गुर लिख्या। साचे मार्ग रिहा लगाए, दर दुआरे देवे साची भिख्या। सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वाए, सृष्ट सबाई दिसे मिथ्या। गुरमुख विरले नेत्र डीठला माया ममता तृष्ना जगत जलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे शब्द वर, आप आपणा भेव घर साचे रिहा सुणाए। भेव रखाया सच घर, आसण डेरा लाया। आसण लग्गे इक्क दर, दूसर कोए दिस ना आया। भरमी भरम भरम तन गए हर, भाण्डा भरम ना किसे भन्नाया। मरनी मरन गए मर, मरना मात ना किसे सिक्खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, आप आपणा रंग वटाया। जोती आई सतिसंग, सति पुरख निरँजण राता। गुरमुखां मंगी नाम मंग, देवणहार जगत बिधाता। पुरीआं लोआं आया लँघ, सोहँ शब्द ल्याए सच सुगाता, आप विछाया धर्म पलँघ, चारों कुन्ट चार कनाता। चिट्टे अस्व कसे तंग, करे खेल नौ नौं साता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दया कमाए, एका एक शब्द पढ़ाए, लेखा तुट्टे ज़ातां पातां। एका अक्खर जिस जन पढ़या, साची पौड़ी चढ़या ए। जोत सरूपी अन्दर वड़या, साचा घाड़न घड़या ए। शाहो भूपी किसे ना फड़या, चोर विकारा बाहर दड़या ए। बिन रंग रूपी अजे ना सड़या, जोत निरँजण किया मात पसारा ए। गुरमुख साचे अन्दर वड़या, निहकलंक ल्या अवतारा ए। छब्बी पोह दिवस सुभागी चढ़या, संत मनी सिँघ लेख लिखारा ए। सृष्ट सबाई नाल आपे लड़या, फड़या हथ्थ शब्द कटारा दो धारा ए। साचे मन्दिर उच्चे टिल्ले आपे चढ़या, ना कोई लाए इट्टां गारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, धुर दरगाही इक्क सहारा ए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण आसण लाया, लेख चुकाया नौ दुआरे आपे होया अन्दर आपे निकले बाहरा ए। घर घर साजण वस्सया, सच घर सच होए प्रकाश। दर दर आपे फिरे नस्सया, जोत निरँजण पुरख अबिनाश। कलिजुग मिट्टे रैण अन्धेरी मस्सया, जो जन गाए रसन स्वास स्वास। राह एका अवल्ला दस्सया, सोहँ सो कलिजुग प्रभास।

साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, वेख वखाणे पृथ्वी अकाश। देवे नाम वड वड रस्सया, साचा शब्द सर्ब गुणतास। तीर निराला एका कस्सया, लेखे लाए दस दस मास। विकारा जाए दर तों नस्सया, हरि जन होए दासन दास। जगे जोत कोटन रवि सस्सया, सर्बकला प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, एका जोड़ा दए जोड़ा जोड़ी जुड़ी शाहो शाबाश। सस्सा होड़ा शब्द लगाया। शब्द जोड़ा मेल मिलाया। जोती घोड़ा इक्क रखाया। ना कोई दिसे वरन गोती, आप आपणे रंग समाया। जन भगत उठाए आत्म सोती, शब्द मृदंग इक्क वजाया। आप बणाए माणक मोती, साची मंगण मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ तन्दी परमानंदी निजानंद प्रभ रिहा पुचाया। सोहँ अनन्द शब्द अपार। खुशी कराए बन्द बन्द, दीपक जोती कर उज्यार। नौ दुआरे कढ्ढे गन्द, दस्म दुआरे मेल मिलार। सर्ब जीआं आपे बख्शिंदे, सृष्ट सबाई पाए सार। हरिजन साचा गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा कर प्यार। एका गीत सुहागी छन्द, दो जहानां बेड़ा करया पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले वेख वखाए दर दर घर घर सच्चे दरबार। सच दरबारा मात खुल्हाया। नौ दरवाज़े भेख्या इक्क अकारा जोत टिकाया। सौ सौ वारा जन्म दवाया। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। गुरमुख साचा आत्म नेत्र खोल्ह, आपे आप वखाया। शब्द घोड़े आप चढ़ाए, जोती जोड़े मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहाया। इक्क दुआरा बंक बंक द्वारया। ना कोई जाणे राउ रंक, रंक राजान ना किसे विचारया। जन भगतां मिटाए आत्म शंक, हउमे सहिंसा रोग गंवा रिहा। शब्द सरूपी लाए तनक, दीपक जोती इक्क जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम यार हरि करतार, पंचम मेला आप मिला रिहा। पंचम मिल्या मेल, मेल गुरमति। शब्द सरूपी चढ़या तेल, सति सतवन्ते साचे सते एका आपणा खेले खेल, जीव जन्त सर्ब भरम भुलंते। धर्म राए दी कटे जेल, गुरमुख साचे संत सुहेले साचे धाम इक्क सुहंते। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगत बणाए मात बणते। जगत बणाए बणत आप सिक्दारया। देवे वड्याई विच जीव जन्त, देवणहार सर्ब संसारया। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म सेजा साचा संग हरिजन जाणे कन्त भतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए दया कमाए लेखा लिखे वारो वारया। लेखा लिखणहार हरि समरथया। लक्ख चुरासी पावे सार, गुरमुख साचे जाए तार, शब्द चढ़ाए साचे राथया। निर्मल जोती कर अकार, वरन गोती वसे बाहर, दुरमति मैल जाए धोती, जो जन आए द्वारया। सोहँ फड़े शब्द सोटी, ना कोई जाणे लंमी मोटी, तीर निराला एका कस्सया। चारों कुन्ट फिर फिर थक्के कोटन कोटी, कोई ना चढ़या उप्पर चोटी, भेख भिखारी

मंगदे फिरदे बोटी बोटी रोटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जना कढ्ढे मैल दुरमति वासना खोटी। दुरमति मैल गंवाए दर द्वारया। गुरमति रिहा समझाए, जोती जामा भेख बणा रिहा। सोहँ अतुट्ट रहे भण्डारया। साची रीती मात चला रिहा। मित गत आपणे हथ्थ रखाए, आपणे भाणे हरि समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम ज़ाता पंच पछाता, पंचम मेला इक्क मिला रिहा। पंचम मेला भगत दर, इक्क इकेला सज्जण सुहेला। वेख वखाणे नावें घर, नावें घर ना कोई गुर ना कोई चेला। लक्ख चुरासी रही मर, आप सुहाए अन्तिम वेला। कलिजुग चुकाए झूठा डर, धर्म राए दी कटे जेल्हा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां आप कराया आपणा मेला। आसा पूरत सर्ब जन, सर्ब घट भरपूर। देवे सच्चा नाम धन्न, जोत निरँजण हाज़र हज़ूर। हरिजन आत्म जाए मन्न, काया तपे ना वांग तन्दूर। जगत बेड़ा जाए बन्न, वेला नेड़े ना जाणो दूर। साचा राग सुणाए कन्न, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, जो जन मस्तक लाए चरन धूढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे भगत वर, एका रंग चढ़ाए गूढ़। रंग चढ़ाए लाल, हरि रंग रतया। फ़ल लगाए काया डाल, बीज बीजे पंज साचे वतया। गुरमुख साचे जगत दलाल, आपे दे समझावे मतया। आपे शाह आपे कंगल, आप आपणे रंग सद रतया। शब्द वजाए साचा ताल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलाए कमलापतया। कमलापती धुर दरगाही, मेला लोकमात मिलाया ए। वेख वखाणे गुर गुर चेला, शब्द सुहेला इक्क बणाया ए। आपे बैठा हो हो विहला, जोत निरँजण सेवा लाया ए। अचरज खेल हरि हरि खेला, सोहँ मेवा गुरमुख खवाया ए। प्रगट होया वड देवी देवा, अलख अभेवा भेव ना किसे राया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां आप आपणा संग निभाया ए। संग निभाए सगला साथ, दयावान निध दाता। साचा लेखा लिखे मस्तक माथ, लेखा चुक्के ज़ाता पाता। मिले मेल त्रैलोकी नाथ, शब्द सुणाए साची गाथा। भगत जगत जगत भगत महिंमा कथना अकाथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, सगल वसूरा दर दुआरे लाथा। प्रभ आया सुण पुकार, भगत भगवन्तया। साचा नेत्र रिहा विचार, नेत्र खेत्र काया सुत्तया। शब्द बहाए साची धार, रुत्त वखाए इक्क बसंतया। खिड़ी नाम सच्ची गुलज़ार, सोहँ देवे सच सुगन्तया। चरन प्रीती इक्क प्यार, फूलनहार तन श्रृंगार पती पतवन्तया। नौ दुआरे बन्द कवाड़, दसवें खोजे खोज खुजन्तया। दर घर साचे देवे वाड़, साचा राग इक्क सुणन्तया। साचा राग बहत्तर नाड़, मृदंगा एका ढोल वजन्तया। करे बेनन्ती चरन द्वार, दिवस रैण नित्त नितया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार,

मेल मिलावा साची वार, साची थितया। प्रगट होए नर निरँकार, देवे दरस अगम्म अपार, नौ दरवाज़े तन मन जितया। सोलां करे तन शृंगार, रूप अगम्मा चलाए पवण स्वास सुवास्सया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, लेखा चुक्के बहत्तर नाड़ी ना मरे ना कदे जंम्मया। गुरमुख साचे रिहा उधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बजर कपाटी लाए पाड़। बजर कपाटी लाए पाड़ा, हरि मन्दिर आप सुहाया। परे हटाए पंचम धाड़ा, साचे अन्दर खेल रचाया। आपे वेखे इक्क अखाड़ा, सुरती शब्दी घोल कराया। लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, जोत सरूपी भेख वटाया। गुरमुख साचा संत सुहेला धुर दरगाही साचा लाड़ा, साची घोड़ी रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक दुआरा, एका इक्क सुहाया। गुरमुख साचे बंक द्वार एका दर सुहाया। मेल मिलाए अनक अनक अनक बार, आत्म सहिंसा शन्क गंवाया। जोती तनक विच संसार, सहँसा बंसा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आपे फेरे मन का मनक, अजपा जाप रिहा चलाया। भेव चुकाए मन मनका, साचा मार्ग इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब अख्वाया। देवणहार दयाल दात अमोल्लया। शब्द कराए सच विहार, गुरमुख आत्म कदे ना डोल्लया। जोत निरँजण कर अकार, शब्द सतवन्ता आपे बोल्लया। भरया रहे भगत भण्डार, पुरख अबिनाशी पूरे तोल तोल्लया। मानस देही ना आए हार, भाग लगा काया चोल्लया। नाता तुट्टे नौ द्वार, दर घर साचे होए गोल्लया। दसवें घर सच्ची सरकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भण्डारा एका खोल्लया। आपे राम रमईआ जोत जगांयदा। प्रगट होया शाम घनईआ, लोकमाती भेख वटांयदा। नाल ल्याया साची सईआ, आपे गोपी आपे काहन अख्वांयदा। आप फड़ाए आपणी बहीआ, जगत चढ़ाए नईआ, बेड़ा पार करांयदा। नाता तुटे भैणां भईआ, धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ, लेखा आप चुकांयदा। एका एक जोत निरँजण, जुगा जुगन्तर दूसर कोए दिस ना आंयदा। नरायण नरायण नरायण हरिभगत जन जाणे, दूसर कोई भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म खोल्ले बन्द दर, एका शब्द चोट तन नगारे लांयदा। भगत प्यारे मोहे चरन दर प्यार दे। आए दुआरे जन कृष्न मुरार दे। भरे भण्डारे, धन माल सच्चे नाम दे। होए वणजारे गोपी साचे काहन दे। फूलन तन शृंगारे, उत्तों आपा आप वारदे। नेत्र खोल्ले शब्द आप जगाए, पिछला चुकाए लहिण देण रसना गाए बत्ती दन्द, लक्ख चुरासी वहिंदी झूठे वहिण। काया मन्दिर अन्दर झूठा गन्द। हरिभगत सुहेला इक्क दुहेला, कलिजुग तेरा आप सुहाए साचा वेला, लोकमात चढ़ाए साचे चन्द। गीत गोबिन्द गुण गा, नरायण निरवैरया। अट्ठे पहर रहे तन चा, मिले मेल ना लाए देरया। नित उठ उठ वेखे राह, कवण सु वेला मेरा शाम सुन्दर मोहण माधव

घर आवे पावे फेरया। साचा कुण्डल सीस रखाए, भगत सुहेला आप अख्वाए, आपे तारे कर कर मिहरया। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई जगत भुलाए कर कर हेरा फेरया। आपे मुकंद मनोहर मुरारी है। मोर मुकट सीस सुहाए, जगदीश जोत निरँकारी है। साँवल सुन्दर रूप वटाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी है। प्रेम सिँघासण इक्क विछाए एका सेजा दोवें सुत्ते, साचा कन्त सच्ची भगत नारी है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नरायण नर नर नरायण जाए मन तूही तू बलिहारी है। नैण सुहाया नेत्र अंजन रखे लाज जिउँ द्रोपती चीर, मेरे आत्म अन्दर बोल्लया। हउमे गई जगत पीड़, भाग लगाए काया चोल्लया। ना कोई हस्त ना कोई कीड़, शाह सुल्तानां आप सुणाए सच्चा ढोल्लया। कलिजुग वेला अन्त अख़ीर, करे पार जिस रसना हरि हरि बोल्लया। ना कोई दीसे पीर फ़कीर, लक्ख चुरासी होई धर्म राए दी गोल्लया। गुरमुख विरला चोटी चढ़े अखीर, जिस आपणा आप घोली घोल्लया। हरि हरि बोले इक्क जैकारा, मिले मात वड्याईआ। मेटण आया धुँदूकारा, करे जोत रुशनाईआ। शब्द चलाए अपर अपारा, सोहँ धार रखाईआ। सो पुरख निरँजण हरि गिरधारा, भगती भगत भगत सुहेला कर प्यारा, साचे मार्ग रिहा चलाईआ। मंगण आए मंग दुआरा, आत्म झोली अग्गे डाहीआ। पुरख अबिनाशी भरे भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी वेखे दर, हरि हरि साचा भगत सुहेला कोटन कोट देवे एका एक एक हथ्थ आईआ। जुग जुग धरया भेख, भेख वटाया। सति पुरख निरँजण एका एक, वेस अनेक रखाया। सनक सनंदन सनातन संत कुमार बाल अधारी रहे बिबेक, आप आपणा मात उपाया। बराह रूप होए प्रभ वेख, धरत धवल दया कमाया। यगह पुरश होए विसेख, साची युगती रिहा चलाया। हाव गरीव साची टेक, वेद उप्पर धरत बाहर ल्याया। नर नरायण धारे भेख, नैण मुँधारी धाम सुहाया। कपल मुनी आपे रेख, ज्ञान गोझ भेव चुकाया। दत्तात्रे लिखे लेख, भेव किसे ना राया। रिखव देव नर नहिकेव, लोकमाती रचन रचाया। पृथू पृथ्वी लाए सेव, साची करनी रिहा कराया। कच्छुव होए अलख अभेव, उच्च पहाड़ा पिठु उठाया। मोहणी धारे, भेख करे भगत सेव, सति सरोवर रिड़क वखाया। चौदां रत्न रिहा वेख, लोआं पुरीआं आप टिकाया। आपे धर धर बावन भेख, बल राजा अछल छिलाया। हँसा बंसा बार अनेक, ज्ञान गोझ आप खुल्राया। हरी हरी हरि एका एक, गराह गज दए छुडाया। आप आपणा रंग रिहा वेख, बालक ध्रू पार कराया। जोती जामा धर धर भेख, वैद धनंतर आप अख्वाया। सतिजुग तेरी वेखे साची रेख, वार अठारां जोत जगाया। आया मात त्रेता, प्रभ साची रीत चलाईआ। आपे बणया जगत वेता, परस रामा राम समाईआ। पंडत देवे साचा नेता, साचा किरती किरत कमाईआ। घर क्षत्री साचा बेटा, राजा दसरथ हरि रघुराईआ। आपे

बणया खेवट खेटा, लंका गढ़ तोड़ तुड़ाईआ। मारे दुष्ट हँकारी रावण बेटा, जूठा झूठा मेघ नाथा सुरत भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दोए दोए धारा एका वारा, लोकमाती आप जगाईआ। रामा राम भया अवतारा। पूर कराए आपणा काम, वेखे खेल कर कर पसर पसारा। भगत जनां दर साचा मेल, भबीखन सोहे बंक दुआरा। आपे बणया सज्जण सुहेल, गौतम नारी पार उतारा। चरन छुहाया उप्पर सिला, सिल उडी मार उडारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका किया भगत प्यारा। भगत अधीना हरी हरि, जुग जुग सेवा लाए। आपे होए नीकन नीका, वड मस्कीना फीकन फीका रस रसना भोग लगाए। तारे भीलनी जीअ जीअ का, नाम टिक्का मस्तक लाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सभ घट में रिहा समाए। सभ घट रमिआ आप, जोत जगंनया। सृष्ट सबाई माई बाप, दिस ना आए आत्म अन्नया आपे जाणे आपणा वड प्रताप, जन भगतां आत्म मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्तर भेख धर, मनमुख जीवां फड़ फड़ डंनया। जुग तैंता गया बीत, द्वापर जोत जगाईआ। वेद व्यासा होया अतीत, साचे दर वज्जी वधाईआ। सृष्ट सबाई चलाए रीत, पुराण अठारां गया लिखाईआ। चार लक्ख हज़ार सतारां लिख लिख, शब्द शलोकी रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख लिखारा आप अख्वाईआ। लिख्या लेख अपर अपारा, कलिजुग अन्त जणाईआ। प्रगट होए हरि करतारा, पिता पूत ना कोए अख्वाईआ। लिख्या लेख अपर अपारा, गौड़ ब्राह्मण गोत उज्यारा, उच्चे पर्बत आसण लाईआ। ना कोई जाणे पार किनारा, कवण कूटे बैठा आप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग भविख्ता आपे आप रिहा लिखाईआ। लिख्या लेख अगम्म अथाह, प्रगट होए मुरार। आपे होए बेपरवाह बाल अवस्था कंसी मार। जन भगतां बणे जगत मलाह, बिदर सुदामा जाए तार। जगत वखाए साचा राह, दुष्ट हँकारी दर्योध्न कर ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग द्वापर आपे जाणे, पकड़ पछाड़े राजे राणे, पांडो सुहाए इक्क दरबार। इक्क दरबारा हरि सुहाया। पूरन जोत जगाया। सोलां कल मात अख्वाया। हउमे मैं हउँ भेव चुकाया। गीता ज्ञान गोझ लिखाया। एका अर्जन आप समझाया। लक्ख चुरासी बोझ उठाया। अठारां ध्याए रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणया कृष्न रथवाहया। आपे रथ रथवाही भगत चलांयदा। सृष्ट सबाई रिहा मथ, भेव किसे ना आंयदा। दुष्ट हँकारीआं पाई नत्थ, साचा खेत्र इक्क बणांयदा। वेले अन्तिम होए सथ, अठारां अकशूणी आप खपांयदा। एका अक्षूणी अठाई लक्ख, साचा लेखा आप लिखांयदा। प्रगट होए आप प्रतक्ख, धर्म पुत्त दया कमांयदा। सिर अर्जन रक्खे हथ्थ, भगत भगवन्त पूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

जोती जामा भेख धर, युग द्वापर अन्त मथ, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा कर्म कमाया, भगत मिली वड्याई। मानस देही जन्म दवाया, जोत टिकाई विच रघुराई। पंजां तत्तां तन बणाईआ, मन बुध मति नाल रलाई। आप आपणा वेख वखाया, दिस किसे ना आई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग धारे भेख, सृष्ट सबाई रिहा वेख, दूसर किसे दिस ना आई। वडा हरि धरया भेख, हरि बनवारया। द्वापर मिटाई रेख, कृष्न मुरारया। कलिजुग दूर दुराडा रिहा वेख, मंगे मंग प्रभ चरन द्वारया। मस्तक टिक्का ला ला साची मेख, झोली भरे जूठ झूठ लोभ मोह हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम वेख दर, कलिजुग करे खेल अपर अपारया। लछमी करे चरन प्यार, चोली लाल रंगाईआ। सुहणी सेजा सुत्ता पैर पसार, दिवस रैण करे प्यार, आलस निन्दरा मगरों लाहीआ। हरिजन करन आया सच्चा प्यार, मिले मेल ना होए जुदाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, घर साचे होए कुड़माईआ। लक्ख चुरासी उतरे पार, जम्म जम्म गेड़ा आप कटाईआ। निर्मल जोती होए उज्यार, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट्ट जाईआ। नरायण नरायण दरस तीजे नैण, मिले मेल साचे माहीआ। चोली रंग गुलाल तन मन रतया। दर घर होई साची गोली, तन मन आत्म बन्ह्रे धीरज जतया। आप उठाए काया डोली, हौली हौली अन्दर बोली, वेख वखाणे पंजां तत्तां, अप तेज़ वाए पृथ्वी अकाश, हड्ड मास नाड़ी नाड़ रत रतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आप मित गतया। आए चरन द्वार तन मन रंगया। मिल्या मेल पुरख भतार, देवे दान मूंहे मंगया। सोलां करे कराए तन श्रृंगार, जो जन प्रेमी आत्म भुक्खा नंगया। देवणहार सदा दातार, जन भगतां कोल कदे ना सन्गया। अमृत आत्म देवे ठंडी ठार, दस्म दुआरी प्याला टंगया। झिरना झिरे अपर अपार, दर दुआरा एका मंगया। जगे जोत अगम्म अपार, वज्जे ताल शब्द मृदन्गया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण काया रंगया। रंगण आया रंग हरि ललारीआ। शब्द घोड़े कस्सया तंग, प्रगट होया निहकलंक बली वड बलकारया। नौ खण्ड पृथ्वी शब्द सरूपी वेखे जंग, जन भगतां वेखे मात इक्क अखाड़या। इक्क उडारी चढ़े पतंग, वसे बाहर नौ द्वारया। अमृत आत्म वहाई साची गंग, आपे वसे आर पारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण तन भरे शब्द भण्डारया।

★ २६ पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल पंजां प्यारयां दे नवित्त ★

शब्द कराया वेस, कलिजुग काला रंगया। शब्द बणाया दर दरवेश, मुहम्मद मंगी साची मंगया। आपे वेखे धर धर

भेस, सच दुआरे आपे लँघया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल विच वरभण्डया। मंगी मंग इक्क अपार, मुहम्मद दीन अलाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, बणना सच मलाहीआ। कलिजुग अन्तिम होणा छार, झूठी लग्गणी मस्तक छाहीआ। चार यारां आउँणी हार, चारों कुन्टां पए दुहाईआ। सोहँ शब्द करे ख़बरदार, पीर फकीरां रिहा जगाईआ। जोती जामा धर करतार, आप आपणा रंग वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी बणत बणाईआ। प्रभ साचा दर दरवेश, जगत मौलाणा ए। जोती जामा हरि प्रवेश, वेख वखाणे राजा राणा ए। माझे धरया हरि हरि भेस, शब्द सिँघासण सच टिकाणा ए। ना कोई जाणे धारी केस, गुणवन्ता गुण निधाना ए। दर दर घर घर लभदे फिरन श्री दस्मेश, वरते आपणा भाणा ए। प्रगट होया नर नरेश, तन पाया काला बाणा ए। कोई ना चले किसे पेश, तख्तों लाहे शाह सुल्तानां ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दो जहाना ए। दो जहानी काज हरि रचाया। भाग लग्गे देस माझ, प्रभ साचे समां सुहाया। धुर दरगाही तेरा साचा राज, लोकमात शब्द निशाना दए झुलाया। बीस इक्कीसा सिर सोहे साचा ताज, काज आपणा आप रचाया। जन भगतां रक्खण आया लाज, आप आपणे अंक समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाणा सहिणा हुक्म सुणाया। हरि भाणा बलवान, किसे ना रोकया। प्रगट होया नौजवान, शब्द उठाए इक्क निशान, अनाथ अनाथां नाथ त्रैलोकीआ। आप उडाए धर्म बिबाण, लोआं पुरीआं पुण छाण, सोहँ सो सच सुणाए जगत शलोकीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, गुरमुख खोजे तन बैरागीआ। काया मन्दिर धुँदूकारा ए। विरले सुरती शब्द जागी, वज्जे ताल अपारा ए। कोई ना जाणे जगत त्यागी, घर घर धुंदूकारा ए। नुहावण नुहाया साचा माघी, प्रभ चरन सच्ची निमस्कारा ए। दर दुआरे धोया दाग़ी, मिल्या मेल पुरख भतारा ए। धुर दरगाही आया वागी, हथ्थ फड़या शब्द कटारा ए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आपे वेखे पहरेदारा ए। चौहां यारां कर प्यार, संग रलाया ए। नीली रक्ख सीस दस्तार, मस्तक टिक्का लाया ए। गल चोली अपर अपार, पंजां तत्तां बन्द कराया ए। तीजे करे आप प्यार, आपणी भुजा नाल सजाया ए। चौथे बख्शे चरन प्यार, रंगण रंग रंगाया ए। आपे वसे हो हो बाहर, दिस किसे ना आया ए। अहिमद मुहम्मद एका धार, एका मात पित अख्वाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा दित्ता वर, वेले अन्तिम तोड़ निभाया ए। तोड़ निभावण आया वेले अन्त, भेखाधारी भेख वटाईआ। महिंमा रक्खे अगणत, अन्त कोई भेव ना पाईआ। ना कोई जाणे जहान कवण दुआरे सुत्ता जन्त, चारे कुन्टां मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द निशाना इक्क वखाईआ। शब्द निशाना इक्क

वखांयदा। पहली चेत्र लेख लिखाउँणा, राजा राणा पकड़ उठांयदा। आप आपणे चरन लगाउँणा, भाणा सहिणा हुक्म सुणांयदा। सोहँ साचा शब्द गाउँणा, सतिजुग साचा राह वखांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउँणा, अगे हो ना कोई छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। चार यार साचा मीता, पुरख निरँजण आया ए। आपे जाणे आपणी रीता, इक्क वखाए सच मसीता, काया मन्दिर इक्क सुहाया ए। वज़ू कराए पाक पुनीता, बरदा दर दा इक्क बणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज खेल रचाया ए। खेल रचाए जगत जग, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चारों कुन्ट लग्गे अग्ग, वेखे खेल खुदी खुदाईआ। किसे सीस अन्तिम ना दिसे पग, चारों कुन्ट वाहो दाहीआ। प्रगट होया शाह सूरा सरबग, दीन मुहम्मद देवण आया धुर दरगाही सच्ची इक्क सलाहीआ। धुर दरगाही सच सलाह, देवण आया जगत नवाब। आपे होए भगत मलाह, चरन घोड़े दए रकाब। दए रकाब। किसे लैण ना देवे उच्चा साह, मुख रखाए काली नकाब। वेख वखाणे थाओ थाँ, किसे हथ्थ ना आवे बे बेआब। ना कोई दिसे पिता माँ, वरते खेल हक्क ज़नाब। जगत निशाना उडे ना, मेट मिटाए मक्का काअब। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल कन्त कन्तूहल अन्त शिताब। खेलणहार खिलावण आया, उम्मत नबी रसूल दी। फड़ फड़ बाहों राहे पावण आया, एका हज्ज साचा जो कबूलदी। दे मति जगत समझावण आया, तिक्खी धार शब्द त्रसूल दी। भेखाधारी बावन आया, कलिजुग तोड़े जगत सिँघासण भन्ने पावे चूल दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल कन्त कन्तूहल दी। चार यार देण दुहाई, वेला अन्तिम आया ए। प्रगट होया धुर दरगाही, दिस किसे ना आया ए। मस्तक टिक्का दर दर वेखे लग्गी छाही, भरम भुल्लया दीन सबाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार यारी रिहा मिटाया ए। चार यारी जाए मुक्क, वेला अन्त कराउँणा ए। चारों कुन्ट पए मुख थुक्क, ना कोई किसे छुडाउँणा ए। रसना तीर कमानो जाए छुट्ट, एका चिला नाम चढ़ाउँणा ए। वेला नेड़े आया ढुक्क, बूरा कक्का बिला नाल हिलाउँणा ए। अल्ला राणी तेरा बूटा जाए सुक्क, फड़ जड़्ह आप हिलाउँणा ए। कलिजुग काला आपणा भार लए चुक, संग मुहम्मद साचा यार मिलाउँणा ए। धरत मात दी खाली होवे कुक्ख, जूठा झूठा नष्ट कराउँणा ए। सतिजुग साचा सुखणा रिहा सुक्ख, प्रगट होए जेठा पुत्त, प्रभ आपणी हथ्थीं गोद उठाउँणा ए। आप प्रगटाए दया कमाए प्रभ अबिनाशी पारब्रह्म अचुत, साची सेव कमाउँणा ए। सतिजुग तेरी आप सुहाए साची रुत्त, फल फुलवाड़ी मात लगाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बणत बणाउँणा ए। साची बणत बणाए दया कमांयदा। नौ दुआरे वेख, भगत तरांयदा। दसवें वसे एका एक,

दिस किसे ना आंयदा। गुरमुखां करे बुध बिबेक, आत्म इक्क पिआंयदा। चरन प्रीती देवे एका टेक, गीत सुहागी इक्क सुणांयदा। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़, मुलां काज़ी भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साचा मार्ग लांयदा। कलिजुग अन्त करावण आया, निहकलंक अवतारा ए। साध संत जगावण आया, देवे शब्द हुलारा ए। गुरमुख सोए मात उठावण आया, जन भगत सुहाए चरन दुआरा ए। अमृत जाम प्यावण आया, धुर दरगाही नाम भण्डारा ए। अमृत मेघ सवण सावण बरसावण आया, सावण साँवल सुन्दर रूप अपारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे जगत विहारा ए। जगत विहारा रीत, हरि चलांयदा। सदी बीसवीं रही बीत, बीस इक्कीसा बणत बणांयदा। ना कोई गाए राग छतीस, रागां नादां वक्त चुकांयदा। ना कोई पढ़े कुरान हदीस, अंज़ील कुरानां मुख भवांयदा। वेद पुराणां रिहा पीस, सीस किसे दिस ना आंयदा। लक्ख चुरासी रही पीस, माया राणी चक्की इक्क चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस कर, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। भरमे भुल्ली लक्ख चुरासी जोती भेव अवल्लड़ा। धर्म राए दर देवे फाँसी, प्रगट होए इक्क इकल्लड़ा। कोए ना दीसे मदिरा मासी, कलिजुग अन्तिम होए खाली पल्लड़ा। गुरमुख विरले वेख वखाणे शब्द स्वासी, पार कराए

४७६ काया चम्मड़ा। मानस जन्म होए रहिरासी, मिले मेल साचे शब्द अम्मड़ी अम्मड़ा। किसे हथ्थ ना आए पंडत कांशी, दर ४७६

०५ दर घर घर मंगदे फिरदे दमड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण मात प्रकाशी, करे खेल अगम्मड़ा। पुरख अगम्म ०५

अथाह, खेल बेपरवाहीआ। दो जहानी बण मलाह, लोकमाती जोत जगाईआ। तिन्नां लोकां एका राह, रिहा बणत बणाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा तका, चारों मुख चारे दिशा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थांउँ थाँईंआ। नेत्र खोल्ह उठ उठ बोले, चार कुंट उज्यारा ए। जगत सिँघासण सारा डोले, प्रगट होए नर निरँकारा ए। शिव शंकर अन्दर कुण्डा खोल्ह, वेखे मन्दिर इक्क अपारा ए। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द साचा तोल तोले, कराए वणज सच्चा वपारा ए। नाथ त्रैलोकी करे खेल काया चोले, ना कोई जाणे जन्त गंवारा ए। आपे वसे पड़दे ओहले, सच महल्ले पसर पसारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी बन्नहण आया साची धारा ए। सतिजुग साची धार बन्नाए, साचा राह चलाउँणा ए। चार वरन इक्क थाँ बहाए, ऊँचां नीचां भेव मिटाउँणा ए। दर घर साचे एका नाम जपाए, सोहँ साचा नाउँ रखाउँणा ए। तीनो ताप मार वखाए, पुंन पाप ना कोई जणाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा आप लिखाउँणा ए। लेखा लिखणहार जगत स्वामी, जोत जगांयदा। जन भगतां

पकड़े दामन दानी, निहकामी निहकर्म कमांयदा। कलिजुग तेरी मिटे अन्धेरी शामी, शाम शामा रंग वटांयदा। सर्ब घटां हरि अन्तरजामी, अन्दर बाहर वेख वखांयदा। गुरमुख विरला पल्ले बन्ने नाम दामी, लक्ख चुरासी खाली हथ्थ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप चलाए साची बानी, चार वरनां एका राह वखांयदा। एका बाणी एका खाणी, जेरज भाग लगाईआ। कलिजुग तणदा साची ताणी, सुरत सवाणी नाल रलाईआ। दिवस रैण तन भरदी पाणी, पीसण पीसे सेव कमाईआ। शब्द मिल गया साचा हाणी, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। लेखे लग्गी जगत जवानी, साचा कन्त इक्क प्रनाईआ। आपे होए जाण जाणी जाणी जाण रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल वड वडी वड्याईआ। निरवैर निरवैर निरवैर निरंकारया। निरवैर निरवैर निरवैर सर्ब घट घट घट पसर पसारया। निरवैर निरवैर निरवैर तीर्थ तट्ट जमन गंग किनारया। निरवैर निरवैर निरवैर अंग संग संग अंग सर्ब संसारया। निरवैर निरवैर निरवैर आप आपणे वसे संग, रंग रंगीला माधव माध आपणी धारा आप चला रिहा। आप चलाए आपणी धार, जोती नूर उपाईआ। जोती नूर अपर अपार, साचे घर करे रुशनाईआ। साचा घर इक्क द्वार, दूसर कोए दिस ना आईआ। पवण पवणी ना पाए सार, शब्द सुरत ना कोए गाईआ। ना कोई राग नाद वज्जे तूरत, मृदंग ढोल ना कोई रखाईआ। एका एक अकाल मूर्त, साचे घर डगमगाईआ। दूजे दर वेख वखाए, शब्द सरूपी वज्जे ताला ए। तीजे घर चरन छुहाए, पवण स्वासी चले नाला ए। चौथे घर मेल मिलाए, साचा मेला गुर गोपाला ए। पंचम जोड़ा आप मुरारे, चले अवल्लड़ी चाला ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, संग रखाए काल महांकाला ए। सच सिँघासण हरि जी सोया, जोत निरँजण कर अकार। शब्द सरूपी साचा ढोया, देवण आया विच संसार। मनमुख जीव ना जानण कोआ, गुरमुख विरला पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम करे विचार। कलिजुग कर विचार, कर्म कमाया। प्रगट हो विच संसार, भरम भुलेखा रिहा गंवाया। लक्ख चुरासी वहिंदी धार, अन्तिम लेखा रिहा मुकाया। ना कोई दिसे नर नार, एका धक्का रिहा लगाया। नौ खण्ड पृथ्वी होए ख्वार, सत्तां दीपां रिहा भवाया। शब्द फड़ तेज कटार, सुहणा तन श्रृंगार कराया। शब्द घोड़ा हरि दातार, चारों कुन्टां रिहा भवाया। मिल्या जोड़ा पहली वार, निहकलंकी डंक वजाया। साचा पौड़ा अपर अपार, राउ रंकां इक्क वखाया। प्रगट होए ब्राह्मण गौड़ा, वेख वखाणे ऊँचां पौड़ा, वेद व्यासा गया लिखाया। धुर दरगाही आया दौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वक्त सुहाया। अन्त सुहाए अन्त अन्त करंनया। हरिजन साचे आप जगाए संत, फड़ फड़ बेड़ा बन्नया। शब्द जणाए मणीआ मंत, एका राग साचा कन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, लक्ख चुरासी देवण आया डंनया। लक्ख चुरासी देवे डन्न, होए मात जुदाईआ। जूठे झूठे भाण्डे देवे भन्न, ना सके कोई छुडाईआ। ना कोई दिसे छप्परी छन्न, उच्चे मन्दिर रिहा ढाहीआ। दर भगतां देवे एका माल धन, ना सके कोई छुडाईआ। सुक्का हरया करे तन, अमृत आत्म सिंच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रिहा बणत बणाईआ। साची बणत बणाए वड बलकारया। सतिजुग साचा मात उपजाए, प्रगट होए विच संसारया। साची वस्त झोली पाए, सोहँ शब्द सच्चा जैकारया। ज़ात पात मेट मिटाए, इक्क द्वार आप खुल्हा रिहा। अन्धेरी रात दिस ना आए, जोत उज्यारा आप वखा रिहा। मार झात सर्ब जगाए, गुरमुख साचे वेख वखा रिहा। बैठ इकांत दया कमाए, लोकमात अन्त सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा मुख छुपा रिहा। मुख छपाया काली धार, रैण अन्धेरी छाईआ। वेख वखाणे चार यार, सांझा यार आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी कार, दूजी धार रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचे चढ़या चाअ, प्रभ पल्ला आप फड़ाया। धुर दरगाही मिल्या सच मलाह, चप्पू नाम लगाया। जन भगतां तुट्टे लक्ख चुरासी कलिजुग फाह, प्रभ आपणे लड़ बंधाया। बेमुखां दिसे ना कोई राह, नौ द्वार फिरे हलकाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भ्राता साक तजाया। बिन गुर पूरे कोई ना पकड़े बांह, जूठा झूठा मोह वधाया। अन्तिम देवण आया ठंडी छाँ, जुगां जुगां दे विछड़े दर साचे मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, आप आपणा संग निभाया। कर जोत अकार, वेख वखाया। पहला दर जगत ख्वार, साचा घर दिस ना आया। दूजे किसे ना मिले वर, माया तृष्ना होई हलकाया। तीजे नौ अठारां पावे डर, वेस आपणा आप वटाया। चौथे घर मिले हरि, गुरमुख विरले मात पाया। पंचम जोती नूर कर, सच दुआरा इक्क खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर राह वखाया। नौ दुआरे खोल्ह, आत्म झाकी लाईआ। शब्द सरूपी अन्दर बोल गुरमुखां देवण आया बाकी, साचा रिहा ढोल सुणाईआ। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, माया रोल रुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पंचम घर आपे वसे ना जाणे जगत लोकाईआ। निरगुण अपार दिस किसे ना आईआ। घर सत्तवें कर अकार, आपणे संग समाया। प्रगट होया आप निरँकार, ओंकारा देस सुहाया। ओंकार साची धार, जोती शब्द जणाया। छेवें घर लग्गी बहार, शब्द चले बेपरवाहया। पंचम वेख सच्ची सरकार, पवण स्वासी रिहा रुलाया। तिन्नां मेला इक्क द्वार, जोत निरँजण नाउँ रखाया। पवणी शब्दी एका धार, जोत सरूपी विच समाया। आप आपणी कर विचार, लक्ख चुरासी रिहा उपाया। चरन उठाए सच्ची

सरकार, घर चौथे आप टिकाया। त्रैगुण माया वेख विचार, आपे बणत बणाया। आत्म अन्दर रिहा पसार, महिंमा अगणत गणी ना राया। आपे कन्त सुहागी नार, कँवल फूला इक्क उपजाया। आप झुलाए आपणा झूला, साची रचना रिहा रचाया। बाहर आया फलया फूला, ब्रह्म नाउँ रखाया। मुख चार रखाए कन्त कन्तूहला, साचा शब्द जणाया। शब्द जणाए दूलो दूला, चारे वेदां रिहा लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे होए भेद अभेद, भेव किसे ना राया। ब्रह्मा चारे वेद लिखाए, प्रभ आत्म शब्द जणाईआ। अट्ठे पहर रसना गाए, वज्जदी रहे वधाईआ। ना कोई पिता ना कोई माए, भाई भैणा ना कोई अख्वाईआ। हरि हरि वेखे सभनीं थांए, मात पाताल अकाश दिस ना आईआ। आपे आप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, इक्क प्रकाश आदि अन्त ना जाए विनास, सद्द रक्खे बेपरवाहीआ। पंचम मेला मेल, बणत बणाईआ। घर चौथे चढ़या तेल, लक्ख चुरासी आप उपाईआ। आपे होया सज्जण सुहेल, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। आपे खेले साचा खेल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे जुग मात उपाए, छोटे वडे वडे छोटे भाईआ। चारे जुग मात धराए, सतिजुग सांतक सत्तया। आप आपणा विच टिकाए, प्रभ दे समझावे मत्तया। धीरज यति इक्क वखाए, आत्म होए किसे ना तत्तया। नीली छत्त पलँघ रंगीला एका डाहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे सच दर, लक्ख चुरासी तेरा अन्तिम वत्तया। पंचम बोले हरि निरँकार, पंचम पंच जणाईआ। पंचम रहणा ख़बरदार, मिले मेल मात वड्याईआ। पंचम होणा मात ख्वार, शब्द कटारा रिहा चलाईआ। पंचम मेला धुर दरबार, कलिजुग अन्तिम रुत्त सुहाईआ। मिल्या मेल कन्त भतार, छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे सच दर, साची रंगण रिहा चढ़ाईआ। रंगण चाढ़े रंग आप, प्रभ साचा रंगणहारा। मारन आया तीनो ताप, तन करे शब्द शृंगारा। सोहँ सो जपाया साचा जाप, दिन लँघाए इक्क सौ ग्यारां। आपे बणे माई बाप, शब्द गोदी दए हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख उठाए साचा लाल दुलारा। साचे लाल उठ उठ जाग, प्रभ साचे दया कमाईआ। प्रभ साचे चरन लाग, घर साचे वज्जे वधाईआ। कलिजुग माया धो दाग़, होए तन रुशनाईआ। दीपक जोती जगे चिराग, प्रभ सोहँ बत्ती लाईआ। चरन धूढ़ी साचे माघ, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सिँघ दया तेरी वड वड्याईआ। आप आपणे हथ्थ पकड़े वाग, मानस देही मात उपजाईआ। अट्ठे पहर रहे वैराग, गुर गोबिन्द होए सहाईआ। आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत आत्म रिहा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मेला रिहा मिलाईआ। पंचम मेल मिलावण आया, पंचां दर दरबारीए। पंचां मात उठावण आया, पंचां दर दुरकारीए।

पंचां शब्द पढ़ावण आया, पंचां तेज कटारीए। पंचां लड़ फड़ावण आया, पंचां दर दुरकारीए। पंचां गढ़ तुड़ावण आया, पंचां संग हँकारीए। पंचां घाड़ घड़ावण आया, पंचां ढाहे महल्ल अटारीए। पंचां धार बन्नॄण आया, पंचां रिहा साड़ीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी अक्ख उग्घाड़ीए। सतिजुग तेरी उग्घड़ी अक्ख , धरत मात खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे कीने वख, पीसण पीसे जूठी झूठी सर्ब लोकाईआ। फड़ फड़ बाहों करे वक्ख, प्रगट होया हरि रघुराईआ। करे खेल हरि प्रतक्ख, भरम भुलेखा रिहा गवाईआ। सज्जण सुहेला साचा सिक्ख, अलक्खना अलख जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला रिहा मिलाईआ। पंचम पंच प्रधान आप जगाया। पंचम मारे हरि शैतान, तीर निराला इक्क चलाया। पंचां देवे ब्रह्म ज्ञान, शब्द रंगण इक्क चढ़ाया। पंचां दिसे झूठ मकान, पंचां रिहा वसाया। पंचां लाहुण आया मकाण, निहकलंका नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाया। गुरमुख साचे उठ, प्रभ साचा बूझ बुझन्तया। वेले अन्तिम गया तुठ, हरि साचे फुल्ल बसंतया। जुगां जुगां दे विछड़े जो गए रुठ, मेल मिलाए साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा पन्थया। पन्थ बणाए नर नरायण, ज़ात पात ना राई। लक्ख चुरासी वेखे एका नैण, दूसर कोई दीसे नाही। चार वरनां एका नाता भाई भैण, बरन अठारां दिसे नाही। आप चुकाए लहिण देण, सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाँईं। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे आप उठाए, शब्द सरूपी फड़ फड़ बाहीं। शब्द सरूपी फड़े बांह, गुरमुखां रिहा जगाईआ। सिंघ बिशन ना करे नांह, अग्गे होए सीस झुकाईआ। सच दुआरे साचे थाँ, सन्मुख रिहा बहाईआ। आपे पिता आपे माँ, आपे गोद रिहा उठाईआ। आपे जपाया साचा नां, साची सेवा लाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कां, माणक मोती चोग चुगाईआ। भाग लगाए गुरू गरां, गुड़गावां आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली वेर मेट मिटाए पंजे चोर, शब्द सरूपी बन्ने डोर, आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द डोरी कर त्यार, प्रभ साचा लड़ बंधाईआ। अन्ध घोरी पावे सार, हराम खोरी नेड़ ना आईआ। वेख वखाए काया गोहरी, गवरी रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे रिहा वड्याईआ। गुरमुख साचा आप उठाया, दिसे साचा धामा। साचा हुक्म हरि जणाया, पूर कराए कलिजुग कामा। रैण अन्धेरी मेट मिटाया, ना कोई दिसे शामन शामा। सञ्झ सवेर इक्क कराए, शब्द वजाए सच दमामा। कलिजुग अन्तिम फेरी पाए, निहकलंक बली बलवाना। गुरमुख चेरी आप बणाए, आपे गोपी आपे काहना। सिँघ शेर शेर दलेरी इक्क वखाए, लक्ख चुरासी देवे ताअना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां हथ्थीं

बन्नृण आया गाना। हथ्थीं बन्ने गाना, लाल दुलारया। देवे शब्द निशाना, इन्द्र सिँघ प्यारया। तुट्टे माण जगत अभिमाना, आप सुहाए बंक द्वारया। मिल्या नाम तीर निशाना, सोहँ चिले आप चढ़ा रिहा। एका एक भगत बिबाणा, फड़ फड़ बाहों राह वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, एक देवे सच्चा दाना, दानी दान आप अख्वा रिहा। देवे दान वणज करांयदा। चरन धूढ़ मात इशनान, मस्तक लहिणा आप चुकांयदा। मेला होए दो जहान, भाणा सहिणा हुक्म सुणांयदा। आपे करे जाण पछाण, भाण्डा भरम हरि भन्नांयदा। देवे दात गुण निधान, साची भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप वड्आंयदा। आप वड्याए जुगो जुग पैज रखांयदा। जुग जुग धरे भेख, वेख गुरमुख सोए उठाया। आपे लिखे मस्तक रेख, बिधना लेख मिटांयदा। साचे लोचन रिहा वेख, दोए लोइण बन्द करांयदा। जोती जामा धरया भेख, भरमां कंध मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ प्रीतम माण दवांयदा। सिँघ प्रीतम सच सुल्तानां, साचा मेल मिलाया। भगत सुदामा जगत निधाना, रसना हरि गुण गाया। लेखे लाए काया चामा, पुरख अबिनाशी पाया। पूर कराए आपणा कामा, राम रामा दया कमाया। कलिजुग अन्तिम पाया जामा, निहकलंकी भेख वटाया। नाल रलाया भगत सुदामा, आत्म तृखा भुक्ख रिहा वधाया। जोत निरँजण कृष्ना काहना, ब्रह्मा विष्ना भेव ना राया। शब्द देवे साची सिखना, हरि हरि लेखा साचा लिखणा, ना सके कोई मिटाया। दर दुआरे मंगे भिखना, आत्म लाहे झूठी विसना, हरि भाण्डा आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर इक्क सुहाया। काया मन्दिर मार झाकी, आपणा कर्म कमांयदा। द्वापर लहिणा देवे बाकी, कलिजुग अन्त चुकांयदा। आपे बणे साचा साकी, अमृत जाम पिआंयदा। बन्द कुआड़े खोल्हे ताकी, जोत निरँजण विच टिकांयदा। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। आप बणाए पाकन पाकी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलांयदा। जगत सुणाए भविख्त वाकी, लेखा लिख्त लिखांयदा। शब्द चढ़े साचे राकी, बीस इक्कीसा आप दुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला कर कर मेला साचा जोड़ जुड़ांयदा। जुड़ाया जोड़ हरि बनवारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। एका कन्त एका नारी। एका संत इक्क प्यारी। दर दुआरे बणी बणत, मिल्या मेल मेल गिरधारी। ना कोई जाणे जीव जन्त, लोकमात मिली सच्ची सिक्दारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां करे पहरेदारी। पंचम पंच पंच अख्वाउँणा, सर्ब घट में आप समाया ए। ना मरया ना कदे जम्मा, ना कोई मुम्मा मूंह रखाया ए। ना कोई निन्दरा आलस तम्मा, जगत कम्मां मूल ना भाया ए। ना कोई पवण स्वासी दमा, बिन थम्मां गगन रहाया ए। सृष्ट सबाई आप भुलाए हरि हरि भरमा, भरमे

४८४
०५

अन्दर माया ए। गुरमुखां मानस देही लेखे लाए जरमा, जरम चण्डूल, अख्वाया ए। आपे देवे आपणी सरना, नेत्र खोले हरना फरना, करनी करना रिहा कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नीत अनीता वेख वखाया ए। पंच दूत चण्डाल, जगत चमयारड़ा। मनमुखां दिसे दिसे कंगाल, प्रभ साचे करे प्यारड़ा। आपे बणे मात दलाल, करे वणज सच्चा वपारड़ा। गंगा माता होई निहाल, लाड लडाया साचे बालड़ा। फ़ल लगाया काया डाल, गाया गीत गोबिन्द सुखालड़ा। साचे अमृत मारी छाल, तन सुहाया एका दुशालड़ा। आप चलाया नाल नाल, जोत सरूपी इक्क अकालड़ा। वेले अन्तिम होया दयाल, गुरमुख साचे भालड़ा। नेड़ ना आए कलिजुग काल, आपे पाए शब्द दुशालड़ा। काया मन्दिर इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, दीपक जोती साचा बालड़ा। साचे मन्दिर सुहाए ताल, तोड़े जगत जंज़ालड़ा। आपे मारे इक्क उछाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चले मात अवल्लड़ी चालड़ा। रविदास रवि आस्सया, आसा पूरन नांओ। रसन स्वास गरास्सया, दिवस रैण सच चाउ। लेखे लगे दस दस मास्सया, मिले मेल अगम्म अथाहो। उडे उडाए विच अकास्सया, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्माओ। पंच विकारा करे नास्सया, आप बहाए साचे थांउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ गुरमुख देवे साचा वर, सदा सुहेला बलि बलि जाओ। बलि बलि जाए हरि बलिहार।

४८५
०५

अछल अछल्ल विच संसार। वेख वखाणे जूहां थल, जूह उच्च पहाड़। प्रभ का भाणा रिहा चल, धाड़ा मारे धाड़वी धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे साचे लाड़। आपे वेख वखाए, जुग जुग साची कारा ए। डाके मारे दिन दिहाड़े, लुट्टया माल करारा ए। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, प्रभ पाया अगम्म अपारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे शब्द नाम अधारा ए। नाम शब्द अधार हरि कराया। प्रभ अबिनाशी हो दयाल, सिँघ पाल पाल तराया। आपे परखे साचे लाल, शब्द जौहरी नाल ल्याया। दर दुआरा कवण कंगाल, शाह सुल्ताना कवण अख्वाया। फ़ल वेखे काया डाल, नाम हलूणा एका लाया। पंचां वज्जे शब्द ताल, ताल तलवाड़ा रिहा वजाया। पंचम पंचां रहे पाल, धर्म अखाड़ा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम पंचां मेल मिलाया। पंचम मेला धुर दरबार, होए कुड़माईआ। दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। सोलां करे तन शृंगार, सोलां कलां जोत जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां रचन रचाईआ। आपे वसे हो हो बाहर, पुरीआं लोआं धार वहाईआ। करोड़ तेतीसा करे प्यार, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। शिव शंकर कर रिहा विचार, ब्रह्मा नेत्र रिहा उठाईआ। होणी अन्त जुदाईआ। शब्द चले तीर काड़, लक्ख चुरासी रिहा उठाईआ। गुरमुखां साची करे वाड़, शब्द सरूपी रचन रचाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, पंचां देवे मात वड्याईआ। पंचम सुण पुकार, पंच जगाया। पंचम बण सच्ची सरकार, पंचम राह वखाया। पंचम तन पहनाए शब्द कटार, सोहँ साचा नाउँ रखाया। किसे हथ्थ ना आए जीव गंवार, लुहार तरखाण ना कोए घड़ाया। पुरख अगम्मड़े अगम्मड़ी कार, कोई दमड़ा मात ना लाया। गुरमुख साचे तेरी काया माटी उत्तम चम्मड़ा, जोती भरया शब्द भण्डार। सच दुआरा एका मलड़ा, खिड़ी बसंत बहार। प्रगट होया इक्क अगम्मड़ा, निहकलंक नर अवतार। सच दुआरा एका मलड़ा, लक्ख चुरासी नौ कवाड़। आपे करे भारा पलड़ा, मनमुख जीवां राए धर्म करे ख्वार। सोहँ हथ्थ एका वार कराए हलड़ा, लोआं पुरीआं हाहाकार। धुर दरगाही इक्क सुनेहड़ा। दर दर घर घर घलड़ा, छोटे बाले कर त्यार। सच सिँघासण आपे मलड़ा, ना कोई जाणे जीव गंवार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम पंच पंचायण सतिजुग तेरी आप बणाए सच्ची सरकार। सच्चा शाह सुल्तान हरि रघुराईआ। आपे उठया नौजवान, साचा नाउँ नां रखाईआ। नाल रलाए पंच जवान, शब्द कटार तन पहनाईआ। गरीब निमाणयां पहरेदार, पुरख अबिनाशी आप अख्वाईआ। तोड़े गढ़ किल्हा हँकार, तेज कटारा रिहा चलाईआ। गुरमुखां करे तन श्रृंगार, कलिजुग वारी अन्तिम आईआ। बैठ दर सच्चे दरबार, जन भगतां दए वड्याईआ। गल पाए फूलनहार, वज्जे नाद शनवाईआ। जगत तृष्ना दए निवार, आपे हरस मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अमृत मेघ देवे बरस, सोहँ सति कराईआ। पंच पंचां चोटन चोटी, प्रभ साचा आप चढ़ाईआ। वेख वखाणे कोटन कोटी, गुरमुख विरला नज़री आईआ। शब्द फड़ाए साची सोटी, सोहँ नेजा नाउँ रखाईआ। पंचां करे बोटी बोटी, पंचां होए सहाईआ। पंचां मिले भण्डारा अतोटी, पंच करे हलकाईआ। पंचां जगे आत्म जोती, अन्धेर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवण आया मात वड्याईआ। पंचम पंचम पंचम यार, हरि साचा आप अख्वाया ए। देवण आया नाम अधार, जगत प्यार वधाया ए। कर्म कराए इक्क करतार, साचा धर्म धराया ए। ऊँचां नीचां भेव निवार, रंक राजानां एका धाम वसाया ए। शाह सुल्तानां कर ख्वार, चरन द्वार इक्क समझाया ए। लक्ख चुरासी पैणी मार, नर हरि साचा हुक्म सुणाया ए। पंचां देवे शब्द दस्तार, साचे सीस सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस इक्कीसा हो हो आया ए। पंचां सिर दस्तार, हरि टिकाईआ। पहलां कीता सच प्यार, अस्सू तिन्न ख़ुशी मनाईआ। किल्हा लाल दिल्ली दरबार, संत मनी सिँघ वज्जी वधाईआ। आपे जाणे आपणी कार, जीव जन्त ना जाणे राईआ। साची थित्त वार विचार, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। देह तजाई जोत अकार, आप आपणी बणत बणाईआ। नाता छुट्टा नौ द्वार, दसवें आसण लाईआ। पुरी घनक कर ख्वार, आर पार डेरा लाईआ।

जोती तनक इक्क अपार, प्रभ साचे आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे जगत वड्याईआ। हरि हरि हरिभगत जलाद, हरि अख्वाया। दूसर कोई ना देवे दाद, साक सैण वेख वखाया। साचा संत ना जाए लाध, फिर फिर वेखे जगत सबाया। साचा मेला माधव माध, बोध अगाधा हरि घर पाया। हरि घर पाया नाम वर, मस्तक तिलक लिलाटी। जगत चुकाया झूठा डर, आप चढ़ाए औखी घाटी। साची तरनी जाणा तर, चरन दुआरा साचा तीर्थ ताटी। साची मरनी जाणा मर, सौदा लैणा साची हाटी। आपणी किरपा रिहा कर, जन भगतां दुरमति मैल काटी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाए काया माटी। शब्द खण्डा हथ्थ कटार, प्रभ साचे आप उठाईआ। ताणा तणया नौ द्वार, गुरमुख दसवें आप बहाईआ। दस्म घर सच सरकार, सच विहारा इक्क उपजाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपार, जोत अबिनाश रिहा जगाईआ। पृथ्वी अकाश पावे सार, शब्द स्वास वेख वखाईआ। हरिजन साचे संत दुलार, साची बणत बणाईआ। खिच्च ल्याए चरन द्वार, संत मनी सिँघ लेख लिखाईआ। आपे वसे हो हो बाहर, गुप्त ज़ाहिर रचन रचाईआ। करे कराए करावणहार कार, करनी कलिजुग आईआ। शब्द वहाए साची धार, मारे मार हरि रघुराईआ। होए आत्म आर पार, सीस धड़ रिहा कटाईआ। लाल चोला तन शृंगार, वहिंदी धार इक्क वखाईआ। बहत्तर नाड़ां कर प्यार, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे मात वड्याईआ। शब्द कटारी हथ्थ, मात भगत उधारया। आप चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। शब्द सरूपी पाए नत्थ, जोत सरूपी तनक लगा रिहा। पंच पंचायणी रिहा मथ, द्वार बंक इक्क सुहा रिहा। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, आवण जावण लेखे ला रिहा। मिल्या मेल पुरख समरथ, पतित पावन पार करा रिहा। मिले शब्द नाम सच वत्थ, साचा दामन आप फड़ा रिहा। महिंमा जगत चले अकथ, सतिजुग साचा समां सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला इक्क मिला रिहा। पंचम मेला पंच प्यारा, पंचां रंग समाईआ। पंचां देवे शब्द धारा, पंचम जोती नूर उज्यारा, पंचम वज्जे वधाईआ। पंचम मेटे धुँदूकारा, पंचम पंचां खुशी मनाईआ। किरपा करे अगम्म अपारा, शब्द अस्वारा इक्क अख्वाईआ। प्रगट होया नर निरँकारा, निहकलंक डंक वजाईआ। इक्क सुहाए मात दुआरा, नौ दुआरे वेख वखाईआ। साचे घर करे पसारा, आप आपणा रंग वटाईआ। लाल गुलाला अपर अपारा, असुत्ते प्रकाश कराईआ। गुरमुखां देवे जोती धारा, चिट्टी धारा दूण सवाईआ। दस्म दुआरी खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेल मिलाईआ। शब्द रत्न अपार, नाम जणाया। गुरमुख आत्म जाए मन्न, सीस धड़ लेखे लाया। साचा राग साचा कन्न, अन्दर चढ़

ढोल वजाया। दर दुआरे अग्गे खड़, सोहँ साचा शब्द पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेल मिलाईआ। अन्दर वस्सया अन्ध कूप, दिवस रैण रंग राता। जोत निरँजण सति सरूप, गुरमुख विरले मात पछाता। दर दर घर घर देंदे धूप, किसे ना दिसे इक्क इकांता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेले अन्तिम पुच्छे वाता। रसना चिला इक्क चढ़ाया। सस्सा किल्ला जगत वखाया। होड़ा अग्गे एका लाया। साचा घोड़ा शब्द दुड़ाया। पहला पौड़ा आप लगाया। निरगुण सरगुण विच समाया। सरगुण आपे बाहर कढाया। शब्दी रूप इक्क बणाया। शाहो भूप दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्ध अन्धकूप, आप आपणा भेख वटाया। कमर कस जगत त्यारी, प्रभ साचे आप कराईआ। गुरमुखां हिरदे जाए वस करे श्रृंगारी, साची बणत बणाईआ। सतिजुग साचा राह जाए दस्स वड संसारी, साची दया कमाईआ। सिँघ बिशन प्रभ पहली वारी, हरि सीस जगदीस इक्क दस्तार टिकाईआ। लेखा चुक्के बीस इक्कीस, बणे सच सच्ची सरकारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाई मात सच्ची फुलवाड़ीआ। फल फुलवाड़ी गई मवल। भाग लग्गा उप्पर धवल। नाभी उलटी खुल्लया कँवल। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल सँवल। आप आपणी रचन रचाई, तन मन अन्दर रच्चया ए। गुरमुख साचे बचन सुणाई, सच विहारा साचे सुज्झया ए। काया झूठी कच्च कंचन बणाई, राह एका एक दस्सया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दरगाही आया सईआ ए। धुर दरगाही आया दौड़। गुरमुखां अन्तिम गया बौहड़। आत्म दर साचे घर इक्क लगाया सोहँ सच्चा पौड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मिलाया साचा जोड़। साचा जोड़ आप जुड़ाया। गुरमुख गुरमुखां पाया। सिँघ इन्द्र प्रभ दए वड्आया। लाधा लाधा लाधा नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन मन गुर शब्द बाधा, ना सके कोई छुडाया। धुर दरगाही देवे साची दादा, पल्ले गंढु बंधाया। मिल्या मेल माधव माधा, आत्म सीने ठण्ढ रखाया। शब्द जणाए बोध अगाधा, बीस इक्कीसे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जगदीशे शब्द ताज, धुर दरगाही साचा राज, एका छत्र साचे सीस टिकाया। सखा सहाई साजण मीत, साचा वक्त सुहाउँदा ए। अट्ठे पहर गाउँणा गीत, गोबिन्द गोबिन्द गाउँदा ए। काया बणाई मन्दिर मसीत, गुरदुआरा कोई दिस ना आउँदा ए। पुरख अबिनाशी तेरी वेखे अचरज रीत, साची बणत बणाउँदा ए। मानस देही जाणा जीत, साचा हुक्म सुणाउँदा ए। सिँघ प्रीतम सदा अतीत, चरन प्रीत निभाउँदा ए। एका गाए सुहागी गीत, प्रभ सोहँ शब्द फड़ाउँदा ए। सदी बीसवी रही बीत, प्रभ साचा सीस बन्न दस्तार आपे आप टिकाउँदा ए। नाम भण्डारा

वंडण आया, साचा हट्ट खुल्हाउँदा ए। गुरमुखां टुट्टी गंढुण आया, साचा जोड़ जुड़ाउँदा ए। वरभण्डी हरि भंडण आया, आपणी रीत चलाउँदा ए। बेमुखां कंडी वंढण आया, शब्द कटारा उठाउँदा ए। भेख पखण्डा दंडण आया, दो धारा शब्द चलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच विहारा मात कराउँदा ए। सच विहारा सच सुल्तान, सच विहार कराया। प्रगट होया हरि मेहरवान, साची धारा रिहा चलाया। गुरमुख साचा नौजवान, सोया मात उठाया। आप बिठाए शब्द बिबाण, इक्क हुलारा रिहा दवाया। दहि दिशा वेखे मार ध्यान, तिन्नां लोकां बूझ बुझाया। झुलदा जाए शब्द निशान, सोहँ लेख लिखाया। सत्तां दीपां मार ध्यान, नौ खण्डां रिहा जगाया। गुरमुख साचा चतुर सुजान, गुर पूरे आप बणाया। गुर मन्त्र दित्ता नाम निधान, निझ घर वासा आप रखाया। चरन धूढ़ सच्चा इशनान, धुर भरवासा मात धराया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे जगत तमाशा, दिस किसे ना आया। जगत किसे ना दिसे, दूरन दूर किनारा। लक्ख चुरासी पीसण पीसे, प्रभ धारे भेख न्यारा। सच वणजारे खाली खीसे, जूठा झूठा भरया भण्डारा, वेखे खेल बीस बीसे, निहकलंक नरायण नर अवतारा, गुरमुखां पढ़ाए एका शब्द हदीसे, सोहँ शब्द सच्चा जैकारा। ना कोई करे मात रीसे, जोती जोत सरूप हरि, सिँघ गुरमुख मुख गुर आप बन्हे दस्तारा। सिँघ पाल करे प्रितपाल दीन दयालया। दीपक जोती दए बाल, मारे शब्द उछालया। आप बणाए शाह कंगाल, दित्ता नाल सच्चा धन्न मालया। फ़ल लगाए काया डाल्ह, अमृत सुहाए साचा तालया। इक्क लवाई साची छाल, धुर दरगाही बण दलालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम वजाए साचा तालया। नाम वज्जे तलवाड़ा हरि रंग रतया। साचा शब्द रहे अखाड़ा, लगे वा ना तत्तया। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, शब्द रखाए साचा जपया। आप बणाए साचा लाड़ा, मौली गाना साची अट्टीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाग लगाए काया मट्टया। काया मट्ट अपार हट्ट खुल्हाया। जोत जगाए लट्ट लट्ट, अज्ञान अन्धेर मिटाया। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, तीर्थ तट्टां भेव मिटाया। दर दुआरे आया नट्ठ, होए सद सहाया। उलटी गेड़े आपे लट्ठ, दे मति हरि समझाया। सच दुआरे एका इक्ठ, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म जणाया। जोती अग्नी डाहे मट्ठ, शब्द रिहा जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच तीर चलाया। पंचम तीर चलाए, पंचम मारया। पंचम पार कराए, पंच श्रृंगारया। पंचम मार मिटाए, पंचम जिवा रिहा। पंचम दिस ना आए पंचम उज्यारया। पंचम विच समाए, पंच भुल्ला रिहा। पंचम दया कमाए, पंचम दिस ना आ रिहा। साचा कन्त इक्क अख्वाए, साची नारी आप प्रना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत विहारी आप करा रिहा। भगत अधारी खेल खेला, धुर संजोगी मेला

ए। सच दुआरा एका खुल्ला, शब्द गुरू गुर चेला ए। कोए ना लाए हरि हरि मुल्ला, कलिजुग अन्तिम वक्त दुहेला ए। पंचम नाता पुरख बिधाता पंचम उत्तम होए ज़ाता, पंचम भरम भुलाया ए। पंचम भुल्ला पंचम माया अन्दर रुल्ला, पंच बणाए पारज़ाता ए। पंचम तोल साचे तुला, चरन प्रीती घोल घुला, पंचम मिटे अंधेरी राता ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम सच धन माल सच सुगाता ए। सच सुगाती दीन दयाल, देवे नाम एका दाती। दिवस रैण होए रखवाल, अट्ठे पहर रहे प्रभाती। मिल्या मेला हरि दलाल, अमृत देवे बूंद स्वांती। काया सिंचे झूठी खाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम सच्चा धन माल। नाम खजाना वंडण आया, हरि हरि दीन दयाल। पंजां चोरां खण्डन आया, पंच करे हरि प्रितपाल। पंचां अन्तिम दंडण आया, पंचम अन्तिम फ़ल लगाए काया डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर कर किरपा पार उतारे, हरिजन साचा सिँघ पाल। सिँघ पाल पाल शब्द अस्वार। पुरख अबिनाशी होए दयाल, दयाल दयाल गुर करतार। गुरमुख साचा वेखे लाल, लाल लाल रत्न अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम देवे नाम वर, सोहँ शब्द सीस जगदीस सच्ची दस्तार। पंचां सीस दस्तार हरि टिकाईआ। लेखा लिखे बीस इक्कीस, भेव ना राईआ। वेखे खेल हरि हरि नर नर जग जग जगदीस, साचा तेल चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचां करे जोत शब्द कुड़माईआ। छब्बी पोह दिवस दिहाड़ा, भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। भिन्नड़ी रैण धर्म अखाड़ा, पंचम मेला धुर दरगाहीआ। शब्द सरूपी करे वाड़ा, ना कोई सके जड़्ह उखड़ाईआ। नेड़ ना आए जगत धाड़ा, फड़ उठाए आपे बाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सहाई थांउँ थाँईंआ। पंचम कर त्यार, पंच संवारया। पंचम मारे मार, शब्द उडारया। पंचां देवे तार, नर निरंकारया। तन पहनाए साचा हार, साची बरखा मेघ बरसा रिहा। मानस देही काज संवार, जगत हरस आप मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई बणत बणा रिहा। सृष्ट सबाई बणत बणाए, एका राह वखाया। गुरमुख साचे संत जगाए, साचा शब्द सुणाया। साचे शब्द मिली वड्याई, हरि हिरदे नाम वसाया। छब्बी पोह होई कुड़माई, पंचां नाता जोड़ जुड़ाया। ऊँचां नीचां भैणां भईआ भाई भैणा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच दुआरा इक्क सुहाया। पंचां सोहे ताज, सीस टिकांयदा। करया काज देस माझ, साची बणत बणांयदा। साचे साजन रिहा साज, संत असंत वेख वखांयदा। वेले अन्तिम रक्खण आया लाज, कलि विछड़े मेल मिलांयदा। सोहँ शब्द उडाया साचा बाज, चारों कुन्ट आप फिरांयदा। शब्द सरूपी मारे अवाज़, जन हरि सोए मात जगांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मेला इक्क इकेला आपे आप करांयदा। पंचम मेला इक्क द्वार। शब्द मेला जोती निरँकार। पवण सुहेला धुर दरबार। चौथे जुग साची वेल, लग्गे फ़ल काया डाल। जोत निरँजण चाढ़े तेला, कन्त सुहागी वर भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा कीता मेला, पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपार। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। इक्क वखाया साचा धर्म, धरनी धरन आप अख्वाया। जन भगतां वेखे मात कर्म, कर्मी कर्म कर्म लिखाया। दूई द्वैती मेटे वरम, एका मार्ग एक दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच द्वार बंक सुहाया। पूरन सेवा घाल घाल, दर द्वार कराईआ। आत्म मेवा काया डाल, अमृत फ़ल खवाईआ। सुरती रहे हाल बेहाल, दीन दयाल सेवा लाईआ। दिवस रैण एका चाल, सिँघ दरसन दर्शन हरि हरि पाया, दिवस रैण कलम चलाईआ। पुरख अबिनाशी तरस कमाया, भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। अमृत मेघ बरस वखाया, छुट्टे जगत जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात देवे वड्याईआ। मिले मात वड्याई, चरन द्वारया। मस्तक मिट्टे झूठी छाही, मानस देही काज संवारया। शब्द सरूपी पाई फ़ाही, खिच ल्याए चरन द्वारया। गोझ ज्ञाना भेव खुल्हाई, धर्म निशाना इक्क झुल्ला रिहा। नाम तराना इक्क वजाई, राग स्याना आप जणा रिहा। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना मात कराई, सीतल धारा आप वहा रिहा। दिवस रैण सेव कमाई, लेखा लिखणहार आप

४६१ अख्वा रिहा। आत्म दर वज्जे वधाई, प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, शब्द सरूपी मेल मिलाई, सिँघ दर्शन सीस ४६१

०५ ०५

प्रभ देस माझ रच भगतां काज, आपे आप करा रिहा। चाकर सेवा चाकरी, दिवस रैण प्रभात। अन्तिम नेड़े आई वाटड़ी, प्रभ देवे सच्ची दात। नाम लभ्भे साची गाठड़ी, सोहँ शब्द सच्ची करामात। हथ्थ फड़ाए साची लाठड़ी, इक्क कराए दिवस रात। शब्द हठीला साचा हाठड़ी, चरन कँवल सच्चा नात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम काया चाम सच्ची दात। नाम दात दर वंडण आया, ठाकर ठाकर वेसा। गुरमुख साचे काया चोली रंगण आया, कर कर वेस अनेका। चरन प्रीती साची मंगण आया, करे बुध बिबेका। शब्द कंगण तन वेखण आया, कलिजुग माया ना लाए सेका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, सदा रहे बिबेका। ठाकर सेवा सिँघ ठाकर जागे। अमृत मेवा आत्म मांगे। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, चरन प्रीती एका लागे। प्रगट होए घनकपुर वासी, जोत सरूपी शाहो शाबासी जगत बुझाए तृष्ना आगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाए शब्द वैरागे। शब्द वैराग रहे तन अन्दर, मन अन्दर दए दुहाईआ। जोती जगे साचे अन्दर, डूंघी कन्दर होए रुशनाईआ। आपे तोड़े वज्जा जन्दर, तीजे नैण जाए बीनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे भगत जगत वड्याईआ।

भगत भण्डारा भरपूर भरम भउ लथ्थया। पुरख अबिनाशी आसा मनसा पूर, लेखा देवे हथ्थो हथया। आपे नेड़े आपे दूर, आपे वेखे मस्तक साचे मथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी देवे तूर, जोत सरूपी साचा नूर, सगल वसूरा दर घर साचे लथ्थया। सगल वसूरा जाए लथ्थ, मिल्या मेल पुरख भतारा। पंचां चोरां पाए नत्थ, शब्द फड़ाए हथ्थ कटारा। जगत चलाए साची गत्थ, सोहँ शब्द भगत जैकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्त विजोग मथ, सीस बन्नाए शब्द सच्चा दस्तारा। लड़ फड़ाए आपणा, हरि लाड लडाए। इक्क जपाया साचा जापना, एका अक्खर मात पढ़ाए। मेट मिटाए तीनो तापना, साची दात हरि झोली पाए। आप बुझाए भेव आपणा, अज्ञान अन्धेरा रिहा मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दुआरा नर निरँकारा एका एक वखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घट घट में रिहा समाए। त्रैगुण माया तत्त कर परधानया। आप बणाए पंचम रत, साचा मेल मिलानया। बीजे बीजे काया साचे वत, उलटा बिरख आप उगानया। लहू मिझ बणाए हड्ड मास नाड़ी रत, बणत बणाए श्री भगवानया। विच रखाए साचा तत्त, पवण स्वासी वेख वखाणया। ना कोई कथनी सके कथ, कवण दुआरे आए जाए श्री भगवानया। नौ अठारां मिली वत्थ, देवणहार हरि समरथ साची दया कमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे धीर सरीर इक्क तरानया। माया कुक्ख ना लग्गे दुःख, उलटी नभी वासा ए। मिट्टी रहे तृष्ना भुक्ख, मिल्या मेल पुरख अबिनाशा ए। साची सुक्खणा रिहा सुक्ख, वेखे अन्दर पृथ्वी अकासा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे कीता अन्दर वासा ए। आपे अन्दर वस जोत जगाया। आपे रवि ससि, अज्ञान अन्धेरा रिहा मिटाया। आपे आए बाहर नस्स, पूत सपूता नाउँ धराया। माया राणी दए झस्स, भरमे भरम भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, करे कर्म लेखा इक्क लिखाया। लिख्या लेखा चुक्के मात, वेला अन्तिम आए। ना कोई जाणे दिवस रात, सुबह शाम ना कोई समझाए। अट्ठे पहर वेखे मार झात, आपे मेटे मेट मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि रघुराए। अन्तिम वेला औखा घाट, सार कोई ना राया। काया पिंजर आन बाट, प्रभ माया पड़दा पाया। आत्म जोती खिच्चे लिलाट, उप्परों नेड़े आया। आपे पाड़े पाल कपाट, आपणा राह वखाया। शब्द मारे साची चाट, जोती लाट दए बुझाया। लेखा चुक्के साचे हाट, रोम रोमी बाहर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैलोकी धारा मस्तक पारा आपे रिहा वखाया। होए मन वैरागी चरन द्वारया। चरन प्रीती जिस जन लागी, नाता तुट्टे नौ द्वारया। बुझी जगत तृष्ना आगी, साचा मेला कन्त भतारया। आपे बण जाए हरि सरबागी, देवे शब्द सच तत्त सहारया। सोई सुरती जिस जन जागी,

मिले वस्त अपर अपारया। दर दुआरे एका एक वड वडभागी, जोती शब्दी मेल मिला रिहा। मन चंचल करे चतराईआ। सुरत सवाणी रोवे धाहां मार, हरि हरि शब्द तेरी वड्याईआ। कर किरपा पार उतार, ना होए कदे जुदाईआ। दिवस रैण रैण दिवस एका चरन प्यार, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। मेल मिलावा डूंघी गार, ना कोई धी पुत्त जणाईआ। एका शब्द सच्ची कुड़माईआ। सुती नारी कन्त व्याहीआ। खिच्च ल्याए दर सच दरबार, फूलन सेजा इक्क विछाईआ। जोती नूर करे अकार, नाद धुन सच्ची उपजाईआ। चारों कुन्ट ढोल मृदंग रिहा वजाईआ। दोहां मेला कन्त भतार, साची सेजा एका सुत्ते सुत्तया खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सुरती सुरत सवाणी मेल मिलाए शब्द हाणी, एका नाता पुरख बिधाता दोहां जोड़ जुड़ाईआ। जोड़ जुड़ाया सच दरबार, प्रभ साचे मेल मिलाया। शब्द घोड़ा कर त्यार, सुरत सवाणी लए चढ़ाया। आपे होए पहरेदार, गुर पूरा जिस नाम रखाया। दिवस रैण रैण दिवस करे उज्यार, अन्ध अन्धेरा रहण ना पाया। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, नाम टिक्का मस्तक लाया। वलीआ छलीआ हरि करतार, जोत सरूपी भेख वटाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सुहणा हार गल पहनाया। करे खेल अपर अपार, चुरासी कलीआं आपणे लड़ बन्न्हाया। सुरत कमाउँणी सेव, प्रभ जणांयदा। मिले मेल घर साचे देव, साचा राह वखांयदा। आत्म देवे साचा मेव, अमृत फ़ल खुवांयदा। वड गुणी गुण रसना जिह्व, जोती जोत सरूप हरि, जो जन रसना गांयदा। सतिगुर भाए सहिज सुभाए, सखीआं मंगल गाया ए। जोत सरूपी दरस दिखाए, माया संगल कटाया ए। जगत तृष्ना हरस मिटाए, दर दुआरा जो जन मंगण आया ए। चरन प्रीती तरस कमाए, आत्म झोली भिच्छया पाया ए। आत्म मेघ बरस वखाए, गुरमुख तेरी इच्छया पूर कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाया ए। दर मंगे मंग भिखार, चतुर सुजाना। प्रभ खोल्हे बन्द किवाड़, नेड़ ना आए पंच शैताना। पंचम मेटे धाड़, मारे तीर इक्क निशाना। चारों कुन्ट शब्द सरूपी आपे करे वाड़, गुर पूरा जिस पछाना। नौ अठारां आप चबाए आपणी दाढ़, गुणवन्त गुण निधाना। वा ना लगे तत्ती हाढ़, अमृत देवे ठंडा खान पाना। मनमुखा काया लई साड़, बाल बिरध विच जवाना। गुरमुख उपजाए साचे लाल, जिन्हां लेखा मस्तक आप लिखाना। धुर दरगाही मात निशानया। साचा लेखा आप चुकाया, प्रभ कर कर वड मेहरबानया। चरन प्रीती आप बंधाया, देवे धूढ़ सच्चा इशनानया। काया नार जती जगत रखाया, माया मूढ़ चतुर सुजानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे दान सच्चा नाम दानया, देवणहार दातार सृष्ट सबाईआ। आदि अन्त ना जाए हार, एका रंग रिहा समाईआ। सति पुरख निरँजण अपर अपार, सार कोई ना पाईआ। गुरमुख नेत्र अंजन

शब्द शृंगार, साची बणता रिहा बणाईआ। मानस देही कज्जल धार, साचे नेत्र पाईआ। नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। बजर कपाटी पत्थर पाड़, साची हाटी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर चेला दर घर साचे साचा मेला एका धाम सुहाईआ। गुर चेला सच घर वस्सया, गुर पूरे दया कमाई। दर साचा मात दस्सया, मिली जगत वड्याई। असथिल मन्दिर बहि बहि हस्सया, दिवस रैण होए रुशनाई। अमृत मेघ एका वस्सया, सावण बरखा हरि हरि लाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां अन्दर रिहा जोत जगाई। पहली चेत्र चेतन्न चित, प्रभ चेता मात कराया। करे खेल नित्त नवित्त, भगतां हित जोती जामा पाया। वेख वखाणे काया खेत, आत्म साचा बीज बिजाया। लग्गी धुप महीना जेठ, साचा फ़ल पकाया। सतारां हाढ़ी करे साया हेठ, जोती साया शब्द वधाया। लेखे लाए कौड़े रेठ, अमृत आत्म जाम प्याया। चाढ़े एका रंग मजीठ, काया चोली रंग वखाया। हरि हरि साचा जिस जन ल्या डीठ, आप आपणा भरम मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म सिंच भण्डारा दर दुआरे इक्क वरताया। अमृत साचा कर त्यार, सोहँ सो समाया। सोहँ वेखे साची धार, निझर धारा रिहा वहाया। निझर धारा अपर अपार, नौ दुआरे बन्द कराया। नौ दुआरे बन्द किवाड़, शब्द अखाड़ा इक्क बणाया। शब्द उठाए दर दरबार, हाढ़ सतारां ताल वजाया। वजे ताल भगत अधार, फड़ फड़ बेड़ा पार कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जूठा झूठा झेड़ा रिहा मिटाया। प्रगट होए नर निरँकार, बीस इक्कीसा भेव छुपाया। छब्बी पोह दिवस विचार, काया माटी देह तजाया। जगी जोत अगम्म अपार, जोती जामा भेख वटाया। गुरमुखां करे मात प्यार, आत्म तृष्ना रिहा बुझाया। पंचम प्यारे शब्द दुलार, नाम वणजारा इक्क कराया। आपे बख्शे चरन प्यार, चरनी नाता इक्क वखाया। इक्क सद ग्यारां कर विचार, नौवां सत्तां वंड वंडाया। सोहँ सो शब्द जैकार, प्रभ अबिनाशी आपणा आप कराया। साची रसना गाए हरि निरँकार, जीवां जन्तां लेखे लाया। किरपा कर अपर अपार, साची सेवा रिहा लगाया। अमृत हरि भरे भण्डार, अचरज रीती रिहा चलाया। जन भगतां बन्न्हे आप दस्तार, लहिणा देणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाया। अमृत जल आत्म धारा, साची गंग वहाईआ। जन भगतां देवे कर प्यारा, रंगण रंग रिहा चढ़ाईआ। दर दुआरे इक्क वणजारा, हरिजन साचा आप बणाईआ। आपे बणे मात वरतारा, दोवें धारा रिहा चलाईआ। जोती जामा भेख न्यारा, मोहणी रूप हरि वटाईआ। देवत देवी देव देवे धारा, अमृत कलश हथ्थ उठाईआ। मनमुखां किया मध प्यारा, भरम भुलेखे आप भुलाईआ। सतिजुग तेरा सच विहारा, एका राह सुहाईआ। एका नर सच्चा निरँकारा, एका जोती रिहा जगाईआ।

एका दरस दुआरा, दूजा दर रहण ना पाईआ। अमृत देवे ठंडी धारा, शांतक सीतल सति वरताईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सारा, पूरन आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द स्वास रसना भगत जणाईआ। अमृत आत्म पिरम प्याला, प्रभ साचे आप बणाया। देवणहार दीन दयाला गुर संगत रिहा वरताया। फ़ल लगाए काया डाला, आप आपणा रंग चढ़ाया। होए सदा सदा रखवाला, सखी सज्जण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दृष्टी दृष्ट आपणी पाया। कलिजुग वणज वहाज्जया, दुःख भुक्ख कुड़माई। कोई ना रक्खे किसे लाज्जया, चारों कुन्ट पई दुहाई। जो जन आए दर घर भाज्जया, देवे शब्द सच्ची सरनाई। आप आपणा साजन साज्जया, जोत निरँजण मात जगाई। रच्चया काज देस माज्झया, गुरमुखां देवे मात वड्याई। रक्खण आया लाजन लाज्जया, पल्ला रिहा नाम फड़ाई। शब्द घोड़े साचे ताज्जया, फड़ फड़ बाहों रिहा चढ़ाई। आप उठाए दर घर जाए शब्द सरूपी मारे वाज्या, गुरमुख सोया रहण ना पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे मेल मिलाई। दुःख रोग संताप, जगत सताया। कलिजुग तेरा वध्या पाप, जूठा झूठा ताप चढ़ाया। ना कोई जाणे आपा आप, गुर पूरा नज़र नां आया। एका भुल्लया सच्चा बाप, हउमे हँगता ताप चढ़ाया। गुरमुख विरला गुर दर मेटे जगत संताप, एका ओट रिहा रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नगारे लाए चोट, काया ताल सुहाया। काया नगारा वज्जे ताल, शब्द चोट लगाईआ। सुरत निमाणी होए बेहाल, ना दर्शन पिया पाईआ। बाहों फड़ लए उठाल, आप आपणे रंग रंगाईआ। दर दुआरा इक्क वखाल, आप आपणे विच समाईआ। आत्म जाम इक्क प्याल, दिवस रैण रिहा रंग लाईआ। प्रगट होए दीन दयाल, दीनां बंधू आप अख्वाईआ। हरिजन साचे जगत कंगाल, नाम खज़ाना रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार सर्ब सुखदाईआ। देवणहार हरि साची जुगता, मुक्ती मुक्त दवाईआ। मानस देही आप संवारे तेरी भुगता, साची जुगता शब्द सुणाईआ। एका अक्खर साचा नुक्ता, प्रभ अबिनाशी रिहा लगाईआ। आपे बैठा बण के मुक्ता, दूजा डण्डा नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे मात वड्याईआ। उपज्या मन वैराग, सोया जागया। गुर पूरे लाया भाग, धोया दाग़िआ। आप बुझाए जगत तृष्ना आग, दीपक जोती जगे चिरागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे सच वर, सरन सरनाई जो जन लागया। गुरमुख तत्त पछाण आपा जाणया। गुरमति जगत प्रधान, भरम चुकानया। नाम चढ़ाए इक्क बिबान, लेखा चुक्के जेरज खाणीआ। देवे दरस गुण निधान, लक्ख चुरासी पार करानया। गावत गावत गावत नर हरि साचा रसना गावत, कर किरपा पार

उतारया। गुरमुख रंग लाल रंग लालड़ा। गुरमुख तोले पूरे तोल, इक्क वखाए सच महल्लड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द फड़ाए साचा पलड़ा। निशअक्खर वक्खर रिहा बोल, दीपक जोती एका बलड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चाल अवल्लड़ी जगत चलड़ा। जगत अवल्लड़ी चाल, भेव ना राया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां कर्म विचार, दिस किसे ना आया। लोआं पुरीआं इक्क जैकार, शब्द कराए हरि गिरधार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सोहँ साचा जाप जपाया। पवण उनन्जा छत्र झुलार, साल बवन्जा खेल अपार खेले खेल जिउँ शतरंज। लक्ख चुरासी तेरी अन्तिम वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म रिहा विचार। गुरमुख मंगे मंग दर घर मंगया, पुरख अबिनाशी चाढ़े साचा रंग, अमृत आत्म वहाए साची गन्गाया। नौ दुआरे जाए लँघ, दसवें वेखे शब्द रंगीला पलँघया। सुरती डोरी शब्द पतंग, आप आपणे रक्खे अंग, चले चाल इक्क बिहंग, चिट्टे घोड़े कसे तन्गाया। डूंघी कन्दर जाए लँघ, दर घर साचे दहि दिशा भरम निवारे वजा जंद, जगे जोत रवि रवि सस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप सुहाए काया मन्दिर, गुरमुखां राह साचा दस्सया। काया मन्दिर हरि रघुनाथ, आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारया। सृष्ट सबाई सगला साथ, दिस किसे ना आ रिहा। गुरमुखां मस्तक लेखा लिखे माथ, धुर दरगाही मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुहेला आप अख्वा रिहा। शब्द सुहेला संग सखाई, नर नरायण निरवैरा। वेख वखाणे थाउँ थाँईं, गुरमुख साचे कर कर मेहरा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, कलिजुग अन्त ना लाए देरा। दिवस रैण देवे ठंडीआं छाँईं, माया भरमां ढाहे डेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वखाए एका घर सञ्झ सवेरा। एका घर इक्क उजाला, दिवस रैण रुशनाईआ। जोती जगे गुर गोपाला, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। शब्द भूषण रंग लाला, असुते प्रकाश कराईआ। सति पुरख निरँजण सति बणाए धर्मसाला, आप आपणा विच टिकाया। आप चले अवल्लड़ी चाला, भेव किसे ना राईआ। जोत निरँजण इक्क अकाला, घट घट में रिहा समाईआ। लक्ख चुरासी वेखे काया मस्तक दीपक थाला, माणक मोती कवण टिकाईआ। मन्दिर अन्दर वेखे धर्मसाला, मस्जिद काअबा कुण्डा लाहीआ। बजर कपाटी तोड़े ताला, शब्द हथ्थौड़ा इक्को लाईआ। वेखे फ़ल काया डाल्ह, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। गुरमुख विरले मिल्या हरि हरि शब्द दलाला, गुर पूरे रिहा मिलाईआ। शब्द सरूपी उप्पर देवे नाम दुशाला, काया चोली पड़दा पाईआ। सतिजुग दस्से राह सुखाला, सोहँ सो साचा जाप जपाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाला, जो जन रसना रिहा गाईआ। ना कोई जाणे हनाल स्याला, बारां तीस एका रंग समाईआ। जगत अवल्लड़ी चले चाला,

राग छतीस भेव ना पाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द खेल निराला, वेद पुराणां रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अंज़ील कुराना विच जहानां दिस किसे ना आईआ। ना दीसे वेखणहार, हर घट समाया। शब्द झुलाए साचा सीसे ताज बाज इक्क उडाया। इक्क चलाए शब्द हदीसे, सोहँ सच अवाज़ लगाया। खाणी बाणी खाली खीसे, माया राणी पन्ध मुकाया। लेखा चुक्के दन्द बतीसे, नर नरायणा रसना गाया। मेल मिलाए बीस इक्कीसे, आप आपणी दया कमाया। एका छत्र झुले सीस जगत जगदीसे, दूसर कोई रहण ना पाया। काला सूसा ईसे मूसे, विच उनीसे दए मिटाया। पकड़ उठाए शाह अबनूसे, अट्ठ अठारां होए हलकाया। लेखा मंगे चीने रूसे, सम्मत सतारां भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म वेख दर, साची रंगण रिहा रंगाया। रंग अमोला चाढ़, काया चोली हरि रंगाईआ। पर्हे हटाई पंचम धाड़, सुरत शब्दी मेल मिलाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, साचा धाम इक्क वखाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, जोती शब्दी सेव कमाईआ। हरि हरि रमिआ नाड़ नाड़, नाड़ बहत्तर जोड़ जुड़ाईआ। पंच पंचायणी देवे झाड़, शब्द डण्डा रिहा उठाईआ। गुरमुख साचा साचा लाड़, शब्द घोड़े रिहा चढ़ाईआ। ना कोई जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत पार कराईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, सीतल धारा अमृत आत्म आप प्याईआ। जगत तृष्ना देवे साड़, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख दर, साचे घर वज्जे वधाईआ। आत्म घर वजे वधाई, पुरख अबिनाशी पाया। दिवस रैण ना होए जुदाई, सोहँ मंगल साचा गाया। कलिजुग मेटे अन्तिम छाही, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाया। हरिभगत उठाए फड़ फड़ बाहीं, अन्दरे अन्दर रिहा मिलाया। मनमुख रोंदे मारन धांही, गुर गोबिन्द नज़र ना आया। गुरमुख दर्शन पायण चांईं चांईं, छब्बी पोह शब्द दिहाड़ा आप बणाया। पौण सुनेहड़ा देवे जादे राही, गुर पूरे सेवा लाया। पुरीआं लोआं वेख वखाई, पल्लू एका एक फड़ाया। दूसर कोए जाणे नाही, पुरख अबिनाशी आपणा भेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख दर, पूर्ब लहिणा मात दवाया। पूर्ब लहिणा मात दवाए, लेखा जगत चुकाया ए। शब्द गहणा तन पहनाए, भाण्डा भरम भन्नाया ए। भाणा सहिणा हुक्म सुणाए, तीजा लोयण खुल्हाया ए। दर घर साचे एका बहिणा, गुर संगत मेल मिलाया ए। झूठे वहिण मात ना वहिणा, ऊँचां नीचां भेव चुकाया ए। पुरख अबिनाशी एका रहणा, कलिजुग वेला अन्तिम आया ए। लक्ख चुरासी लेखा देणा पैणा, धर्म राए हुक्म सुणाया ए। गुरमुख साचा नेत्र वेखे प्रभ अबिनाशी साचे नैणा, आप आपणी गोद उठाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर मन्त्र शब्द पढ़ाया ए। गुर मन्त्र शब्द अमोल,

हरि पढ़नया। लक्ख चुरासी रिहा तोल, जन भगतां बेड़ा बन्नया। काया गगरी लए फोल, दिस ना आए मात आत्म अन्नया। गुरमुख विरले भाग लगाए काया चोल, शब्द सुणाए साचा बोल, किसे हथ्थ ना आए छप्पर छन्नया। नाम मृदंगा वजे ढोल, माया पड़दे देवे खोल्, जूठा झूठा भन्ने भाण्डा जो जन काची वँगया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख हरि, नौ द्वार आपे लँघया। नौ दुआरे छड, दया कमांयदा। नाता तुट्टा मास नाड़ी हड्ड, जोत निरँजण दया कमांयदा। डूंघी भवरे सुरती कढ्ढ, शब्दी मेल मिलांयदा। पंजां चोरां देवे वढ्ढ, शब्द खण्डा इक्क चलांयदा। गुरमुखां आप लडाए लड, आप आपणी गोद उठांयदा। जोधा सूरा हरि वड वड, रण साचा जित्त वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख दर, काया चोले भाग लगांयदा। काया चोला फ़ल अपारा, पुरख अबिनाशी जोत जगाईआ। गुरमुख ना जाणे आला भोला, प्रभ साचे दया कमाईआ। प्रगट होया कला सोला, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम खेडण आया होला, लक्ख चुरासी रंग गुलाला रिहा चढ़ाईआ। पूरा तोल अन्तिम तोला, सोहँ अक्खर एका बोला, गुरमुख विरला तोल तुलाईआ। लक्ख चुरासी तन मन फोला, धर्म राए दे दिसण गोला, साचा नाम किसे दर दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां आत्म वेख दर, आप आपणा रंग वखांयदा। आप आपणा रंग वखाए, हरि रंग प्रभ राता। भगत सुहेला संग निवाए, गुरमुख साचे पारज़ाता। अंग संग संग अंग आप हो जाए, मेट मिटाए अन्धेरी राता। शब्द घोड़े तंग कसाए, चारों कुन्ट रिहा दौड़ाए, पुरीआं लोआं पार कराए नेड़े आए कलिजुग अन्तिम वाटा। सतिजुग साचे रिहा जगाए, धरत मात दी गोद बिठाए, मस्तक टिक्का लाए लिलाटा। गुरमुख साचे संग रलाए, भिन्नड़ी रैण खुशी मनाए, भैणां भईआ इक्क बणाए, लेखा चुक्के ज़ातां पातां। साचा सईआ मंगल गाए, जगत नईआ इक्क चलाए, जन भगतां देवे नाम सुगाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख हरि, देवे दरस बहु बहु भांता। बहु भांती बहु भांत हरि भतारया। आपे बैठा दिसे इकांत, आपे घट घट रिहा पसारया। आपे रैण अन्धेरी रात, आपे जोत करे उज्यारया। आपे पिता आपे मात, आपे पूत सपूता करे प्यारया। आपे गोती वरन ज़ात, आपे वसे सभ तों बाहरया। आपे शब्दी दाता वड करामात, आपे दिस किसे ना आ रिहा। आपे अमृत वेला सच प्रभात, आपे सन्धया संख वजा रिहा आपे जोती कमलापात, आपे हवन करा रिहा। आपे होए उत्तम ज़ात, आपे नीचो नीच अख्वा रिहा। आपे होए साची दात, आपे खाली हथ्थ वखा रिहा। आपे गाए साची गाथ, आपे मुख भुवा रिहा। आपे आप त्रैलोकी नाथ, आपे साथ तजा रिहा। आपे मस्तक लेखा लिखे माथ, आपे लेख

मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख आत्म वेख दर, साचा साथ आप निभा रिहा। आपे चतुर सुजान, आपे मूढ़या। आपे ब्रह्म ज्ञान, आपे कूड़या। आपे शब्द निशान, आपे दिसे दूरया। आपे गोपी साचा काहन, जन भगतां दिसे हाज़र हज़ूरया। आपे शब्दी फड़े तीर कमान, लक्ख चुरासी करे चूरया। आपे जोधा बली बलवान, प्रभ सर्बकला भरपूरया। आपे देवे पीण खाण, जोधा दाता सच्चा सूरया। आपे मेटे जम की कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां आत्म वेख वर, आशा मनसा पूरया। आसा मनसा पूर, सगली चिन्त मिटांयदा। एका बख्शे चरन धूढ़, महिंमा अगणत गणी ना जांयदा। सृष्ट सबाई दिसे कूड़ो कूड़, गुरमुख विरले साचे संत बूझ बुझांयदा। मनमुख ना जाणे जगत मूढ़, मनमती विच समांयदा। गुरमुख विरले रंग चढ़ाए काया गूढ़, नाम रती विच टिकांयदा। धर्म राए प्रभ कटे जूड़, एका पट्टी शब्द पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख दर, साची वट्टी सोहँ नाउँ साचे दीपक विच टिकांयदा। सस्सा दीपक कर त्यार, होड़े वट्टी लाईआ। प्रेम प्याला तेल अपार, चौदां हट्टी वेख वखाईआ। सज्जण सुहेल आप करतार, दोवें धारा रिहा कटी, कोई भेव ना जाणे राईआ। आप टिकाए काया मटी निरगुण सरगुण खेल कराईआ। गुरमुख विरले लाहा जाण खट्टी, जो जन रसना रहे गाईआ। किसे हथ्थ ना आवे तीर्थ तट्टी, अट्ठ सट्ठ भौंदी फिरे लोकाईआ। नौ दुआरे ना कोए वखाए नाम हट्टी, साची वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। जन भगतां दुरमति मैल प्रभ साचे कटी, सोहँ साचा जाप जपाईआ। आत्म जोत जगे लट लटी, दिवस रैण करे रुशनाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्टी, प्रभ साची पट्टी लाईआ। दन्द बतीसे वटी वटी, रसना वट चढ़ाईआ। हाहे टिप्पी प्रभ लाए सिप्पी दोवें पासे कटी, तिक्खे मूंह रखाईआ। धारा बत्ती रक्खे निक्की, उप्पर जोत जगाईआ। बले तेल आवे खिची, सुरती सुरत बनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सस्सा होड़ा हाहा टिप्पी काया मन्दिर अन्दर इक्क टिकाईआ। हाहा डण्डा रिहा वक्ख, नौ दुआरे अन्तिम कन्ढा, प्रभ अबिनाशी ल्या रख। पिण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ पाई वंडा, दोहां कीना वक्ख वक्ख। हाहे मोड़ा सुखमन नाड़ी जोड़ा, कोई ना रसना सके लक्ख। अग्गे जाए अद्धविचकारे जोड़ा, भेव कोए ना पाए। सतिगुर साचा प्रगट होए फिर आए बौहड़ा, सो पुरख निरँजण दया कमाए। इक्क लगाए साचा पौड़ा, दर घर साचा धाम सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म वेख दर, मिट्ठा कौड़ा आप जणाए।

★ २७ पोह २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

चार जुग प्रभ चाकरी, लोकमात करदा आया। कलिजुग तेरी अन्तिम वाटड़ी, भेखाधारी भेख वटाया। चारों कुन्ट अन्धेरी रातड़ी, दहि दिश अन्धेरा छाया। जूठी झूठी वा वगे तातड़ी, धर्म कर्म दिस ना आया। पापां बन्ही घर घर गाठड़ी, अन्तिम पार बुलाया। गुरमुख विरले मिल्या प्रभ सखड़ी, सच्चा जाम प्याया। कलिजुग काया माया आकड़ी, ना होए कोए सहाया। प्रभ आप उठाया साचा शब्द मस्त हाथड़ी, सोहँ नेजा हथ्थ फड़ाया। जन भगतां पुच्छण आया वातड़ी, आप आपणा रंग वटाया। जगत चलाए साची गाथड़ी, अकथनी कथा ना किसे गाया। आत्म चिन्ता प्रभ दर लाथड़ी, दर दुआरे दर्शन पाया। मिल्या मेल त्रैलोकी नाथड़ी, नाथ अनाथां होए सहाया। धुर दरगाही साचा साथड़ी, साचा संग निभाया। लेखा लिखे मस्तक माथड़ी, लिखणहार आप रघुराया। हथ्थ फड़े साची ताकड़ी, सोहँ कंडा नाम उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा लक्ख चुरासी रिहा वखाया। लक्ख चुरासी अनभोलीए, मात होई अन्धेरी रैणा। नौ दुआरे गोलीए, नाता तुट्टे भाई भैणा, धर्म राए दी चोलीए, ना कोई दिसे साक सैणा। अल्लड़ जवानी बाल अनभोलीए, नेत्र कज्जल किसे ना रहणा। प्रभ चाढ़न आया डोलीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी देवे वर, भाणा पैणा सभ नूं सहिणा। सीस ताज सुल्तानया, हरि साचे शाह सुल्तान। सीस ताज मेहरबानया, हरि साचे मेहरबान। सीस ताज जिया दानया, देवे जिया दान। सीस ताज गुण निधानया, गुणवन्ता गुण रिहा पछाण। सीस ताज पुरख सुजानया, लक्ख चुरासी रिहा वखान। सीस ताज बली बलवानया, राज राजानां वेखे आन। सीस ताज नौजवानया, नौजवाना वेखे विच मैदान। सीस ताज आप टिकानया, जोत सरूप श्री भगवान। साचा तोड़ा नाम लगानया, झण्डा झुले जगत निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवण आया ब्रह्म ज्ञान। आत्म ब्रह्म ज्ञान, शब्द जणाईआ। पुरख अबिनाशी कर ध्यान, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। देवे नाम गुण निधान, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आप मिटाए जम की कान, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। माया भुल्ले जीव नादान, जूठा झूठा मोह वधाईआ। कलिजुग खाक रहे जाण, लाल अमुला हथ्थ ना आईआ। हरिभगत सुहेला उलटा मारे बाण, सोहँ चिला रसन चढ़ाईआ। आवण जावण तोड़े बाण, पतित पावन आप अख्वाईआ। पंच सँघारे रामा रावन, साची नाम कमान उठाईआ। भेखाधारी नर हरि बावन, वल छल आप कराईआ। कलिजुग वेखे कामनी कामन दिवस रैण फिरे हलकाईआ। जन भगतां होवे साचा जामन, धुर दरगाह दए गवाहीआ। आप फड़ाए आपणा दामन, ना सके कोए छुडाईआ। लेखे लाए

काया चामन, पंजां तत्तां तत्त समाईआ। इक्क कराए साचा न्हावण, साचे अमृत ताल नुहाईआ। आपे होया पतित पावन, पतित पुनीता रिहा कराईआ। नौ दुआरे बहि बहि गावण, दसवें कोए सार ना पाईआ। ना कोई बरखे मेघ सावन, कलिजुग काली घटा छाईआ। माया चमके दामनी दामन, आपणा तेज रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्धेरी रैनड़ीए, नेत्र खोल्ह उग्घाड़। कलिजुग काली रैण अन्धेरड़ीए, काला घूंगट पाड़। कलिजुग काली रैण अन्धेरड़ीए, काला सूसा देणा साड़। कलिजुग काली रैण अन्धेरड़ीए, ईसा मूसा देणे झाड़। कलिजुग काली रैण अन्धेरड़ीए, नाल उठाई मौत लाड़। कलिजुग काली रैण अन्धेरड़ीए, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे जगत वर, मनमुख झूठे देवीं साड़। काल रैण खुशी मनाई, प्रभ साचे दया कमाईआ। कलिजुग तेरे घर वज्जे वधाई, हाहाकार करे लोकाईआ। लक्ख चुरासी भेव ना जाणे राई, प्रभ साचे बणत बणाईआ। अन्तिम पावण आया फाही, माया जाल इक्क विछाईआ। जूठा झूठा मात माही, माहीगीर काल रखवाईआ। आपणी कल रिहा वरताई, चारों कुन्ट रिहा भवाईआ। वल छल सभनीं थाँईं, सुरत किसे रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काली रैण दित्ता वर, होए वड वडी वड्याईआ। मनमुखां पी पी लहू रज्जण आई, आपा मुख खुल्हाया ए। अमृत धारा तजण आई, मदिरा मास हलकाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाया ए। देवे मति छोटी बाली, रैण अन्धेरी बालड़ीए। चारों कुन्ट अन्धेरी छाँईं, कोई कूट ना दीसे खालड़ीए। जगत अवल्लड़ी चली चाली, ना कोई दीसे बाग़ मालड़ीए। पवण भरपूर मारे छाली, जड़्ह उखाड़े पत्त पत्त डालड़ीए। जगे जोत इक्क अकाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, दो हथ्थीं रहणा खालड़ीए। रैण अन्धेरी अरज गुजारे, किरपा कर गिरधारया। लक्ख चुरासी जीव जन्त चारों कुन्ट होए हँकारे, धरत मात रहे पुकारया। हउमे हँगता करे पसारे, कूड़ो कूड़ होई कुड़यारया। भुक्खा नंगा मार ललाकारे, फिरदा काल चार चुफेरया। कोई ना पावे सारे, रैण काली आ घेरया। आप वखाए सच दुआरे, पुरख अबिलाशी पाया फेरया। लोकमात लए अवतारे, जाणा दर ना लाईं देरया। देवे वर सच्ची सरकारे, आया घर करे मिहरया। देवणहार सर्ब संसारे, दर दुआरा नेरन नेरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपारे। काली रैण देवे मत्ता, काल रही समझाईआ। पंजां तत्तां पीती रत्ता, साचा राह रही वखाईआ। निहकलंक चरन नाता, तेरा रही जुड़ाईआ। प्रगट होया पुरख सुजाता, सार किसे ना पाईआ। देवण आया साची दाता, जो जन आए सरनाईआ। रैण अन्धेरी काली राता, दोए जोड़ सीस रही झुकाईआ। इक्ठे होए भैण भ्राता, प्रभ जोड़ी रिहा

बणाईआ। सृष्ट सबाई एका खाता, दिन सत्तां दए भराईआ। इक्क बणाईए धरती माता, दूसर कोई रहण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी रहि जाए ज़ाता, वरन गोत मेट मिटाईआ। जोत निरँजण गाए गाथा, दूसर अक्खर ना कोई पढ़ाईआ। शब्द दिसे साचा राथा, तिन्नां लोकां रिहा चलाईआ। देवे दात त्रैलोकी नाथा, जाए पै सरन सरनाईआ। कलिजुग अग्गों टेके माथा, काल काले खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। काली रैण राह वखाया ए। आया काल द्वारया पुरख अबिनाशी दर दुआरे, दोए जोड़ सीस झुकाया ए। नैण मुँधारी नैण उग्घाड़े, लोचन खोल्ह वखाया ए। काल काला कढ्ढे हाढ़े, भुक्खा ढिढ्ढ वखाया ए। मैं लुट्टया गया दिन दिहाड़े, कोई तामा हथ्थ ना आया ए। मेरे दिन आए माड़े, प्रभ साचे दिलों भुलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धीरज शांत रिहा धराया ए। काल बली बलवान, चरन निमस्कारया। पुरख अबिनाशी मार ध्यान, नेत्र रोवे करे गिरयाज़ारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अपर अपारया। नेत्र खोल्हे नैण उग्घाड़दा। काले काल प्रभ जी ताड़दा। एका रंग वखाए बत्ती धाड़ दा। संग निभाए मौत लाड़ दा। महीना वखाए जगत हाढ़ दा। लक्ख चुरासी हरि जी साड़दा। मनमुखां सीने पाड़दा। वड धावड़ी धाड़ मारदा। उच्च पहाड़ टिले ढाहवंदा। अमृत तीर चिले चढ़ावंदा। कलिजुग तेरे शिले करावंदा। इक्क सद ग्यारां दिन लिखावंदा। सत्तां दीपां वंड वंडावंदा। नौवां खण्डां रंड करावंदा। ब्रह्मण्डां विच सुणावंदा। जेरज़ अंडां मेट मिटावंदा। वरभडा दिस ना आवंदा। सोहँ खण्डा इक्क उठावंदा। नाम डण्डा लम्बा रखावंदा। आपे वंडण आया वंडां, ना कोई किसे छुडावंदा। मेट मिटाए भेख पखण्डा, साची वंडा वंड वंडावंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समावंदा। रंग समाया सत्त रंग। सत्त रंगा हरि सतवन्तया। काल दुहाई भुक्ख नंग, चारों कुन्ट ना मिले पतया। दर दुआरा रिहा लँघ, प्रभ दे समझावे मत्तया। होए सहाई अंग संग, लक्ख चुरासी करनी हत्या। इक्क फड़ाए हरि मृदंग, आप वजाए चौदां हट्टया। जून अजूनी करनी भंग, ना कोई दिसे काया मट्टया। लक्ख चुरासी काया वंग, उप्पर मारे साची सट्टया। शब्द घोड़े कसे तंग, वड जोधा सूरा मरहट्टया। सच दुआरा लैणा मल्ल, वड जट्ट जटेटे जट्टया। कलिजुग औध गई हंढ, अन्तिम वेले जाए फटयां। करे खले हरि ब्रह्मण्ड, जिउँ नाच नटूआ नटया। खाणी जाणे जेरज अंड, वेख वखाणे साचे हट्टया। अन्तिम करे खण्ड खण्ड, बाहर कढाए आन बाटयां। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले संत जन रसना नाउँ रटयां। गुरमुख एका नाउँ है, वसे हरि हरि राए। नाम सच्चा निशान है, वेखे सभ सभ थाएँ। हरि हरि थाउँ धर्म दीबाण है, दूसर कोई जाणे नाहे।

५०२ ०५

गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द पारब्रह्म ज्ञान है। पारब्रह्म ज्ञान इक्क ध्यान, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चर्म, पिता पूत ना कोई जरम, शब्द धागा साचा सूत, पवण कर्म जोती हवन कुरान है। जोती जोत सरूप हरि, आदि आदि आदि गुर ब्रह्माद ब्रह्माद ब्रह्माद शब्द सुर जुगादि जुगादि जुगादि आदि मेहरबान है। जोती नूर नूर निरवैर ना कोई वरन गोती, ना दिसे किसे ग्राम शहर है। सर्बकला आपे भरपूर, आपे जाणे आपणी मेहर, कदे ना होवे नेड़ दूर शब्द प्याए साचा सीर, शब्द प्रेमी साची मेहर है। तज़ सुणाए साचा राग, एका लहर है। पवण देवे साची तूर, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुर गुर गुर शब्द जोती जगे नूरो नूर है। नूर जोत उजाला, गुर शब्द गुर गोपाला, सिर पवन हवन दयाला धर, जोती जोत सरूप हरि, आपे आप आपे वेखे कोटी कोट है। गुर गुर गुर गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रखवाला तूं गोबिन्द। गहर गहर गहर गवर गवर गवर एका मांगे मेहर मेहर मेहर निन्द निन्द निन्द चुकाए चुक्के हेर फेर मेर तेर। धार धारा अमृत सिन्ध आप प्याए कर कर कर फेर फेर फेर। आपे जाणे जगत निन्द, जुगा जुगन्तर कई कई वेर वेर वेर। सगल मिटाए सगली चिन्द, ना लाए देर देर देर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फेरा पाया दूजी वेर। मात तजाया दर घर, साचा घर साचा हरि जोत मिलाया। जोत जगाया मिल्या वर, लोकमाती फेरा पाया। शब्द भण्डारा नाल भर, पंचम कुण्डा लाहया। आप आपणी किरपा कर, साचा कर्म कमाया। धरनी धरनी धरनी धर, वरनी वरनी वरनी कर, सरनी सरनी सरनी पड़, साची सरन निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, लोकमात कलि तज्या दर, आपणा रंग वखाया। रंग रंगाया रंग रतड़े, रंग किया करतार। वस्सया दर घर साचे सुत्तड़े, पुरख पुरखोतम जोत निरँजण कर आकार। आपे आया भाग लगाया दर घर साचे वतड़े, गुरमुख साचे कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे आया घर बाहर। खोल्हे दर करे खेल अपर अपारी। सच दुआरा तज के आया, पारब्रह्म उपकारी। लोकमात विच भज्ज के आया, छड्डी देह प्यारी। जोती लाड़ा सज के आया, पूरन सिँघ मिली सच्ची नारी। आपणा पड़दा कज्ज के आया, एका पाई सोहँ फुलकारी। जगत जवानी तज के आया, जोत निरँजण कर अकारी नर निरँकारी। शब्द घोड़े सज के आया, वेखे खेल मुरारी। अमृत पी पी रज्ज के आया, भरदा रहे भण्डारी। जोती जोत सरूप हरि, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुर गुर गुर करे खेल अपारी। नारी कन्त हंढावण आया, कलिजुग दूजी वारी। साची जोत जगावण आया, सोहँ वडा बलकारी। आपणी हथ्थीं तेल चढ़ावण आया, देवण आया मात सच्ची सरदारी। राजा राणा तख्तों लाहवण आया, सीस बन्न सच्ची सरदारी। संत मनी सिँघ सोया मात उठावण आया, करे खेल अपर अपारी। चारे कुन्टां रसना गावण

आया, ना कोई जाणे जीव बेचारी। साचा धाम सुहावण आया, नौ दवारयां वस्सया बाहरी। दुष्ट हँकारी रावण रामा मारन आया, जिउँ कंसा कृष्न मुरारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वस्सया घर, प्रगट होया पहली वारी। आया संत सुहेला इक्क सुहेल्ड़ीआ। आप मिलाया आपणा मेला, गुरमुख बणाए साची चेल्ड़ीआ। कलिजुग तेरा अन्त सुहाए वेला, पुरख अबिनाशी वड वड अल्बेलड़ीआ। आपणे घर कराए मेला, ना होए वक्त दुहेला, कलिजुग वेला अन्त सुहेल्ड़ीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वस्सया घर, लोकमात हरि जोत धर, साचा मेल मेलड़ीआ। साची नारी कन्त प्यारी आपे आप सुहाउँदा ए। आपे करे साची कारी, पहला प्रेम पहली वारी आपणी गोद उठाउँदा ए। आपे बैठा भुजां पसारी, आपे मात उठाउँदा ए। आपे छुप्या अन्दर बाहरी, दिस किसे ना आउँदा ए। गुरमुखां देवे नाम खुमारी, दिवस रैण एका रंग रंगाउँदा ए। संत मनी सिँघ कर विचारी, आपणी वंड वंडाउँदा ए। मिल्या मेल हरि निरँकारी, एका गुंझल पाउँदा ए। कलिजुग वेला अन्तिम भारी, आपणा हुक्म चलाउँदा ए। बिरध अवस्था दु:ख लग्गा भारी, बन्दीखाने बन्द कराउँदा ए। दोए जोड़ करे निमस्कारी, पुरी घनक सीस निवाउँदा ए। जन्म ना दिवाउँणा दूजी वारी, होर ना दु:ख उठाउँणा ए। मेरा कर्ज रिहा सिर भारी, तूं जोधा सूर बलकारी, मैं जावां तैथों बलिहारी, मुखों आख सुणाउँदा ए। प्रभ पूरे किरपा धारी, इक्क दित्ता सीस प्यारी, माया ममता कर न्यारी, आपणा आप जपाउँदा ए। वेखे खेल राज दरबारी, मिले मेल सच्ची सरकारी, साचा आपणा हुक्म सुणाउँदा ए। एका होवे हाहाकारी, कवण सृष्टी रिहा मारी, जूठा झूठा लेख लिखाउँदा ए। जोत निरँजण तेज कटारी, वाली हिन्द पहली मारी, ना कोई होर छुडाउँदा ए। मिले हुक्म सच्ची सरकारी, पकड़े जीव जन्त गंवारी, जो रसना तीर चलाउँदा ए। आउँणा चल सच्चे दरबारी, वेखण सिँघ पूरन केहड़ा लाई बैठा धुर दरगाही यारी, मनमुखां आई किस्मत माड़ी, संत मनी सिँघ तेरी लाज रखाए चरन छुहाई दाढ़ी, सोहणी बणत बणाउँदा ए। तेरे संग ना आई मौत लाड़ी, पुरख अबिनाशी पिछे अगाड़ी, भेव कोए ना पाउँदा ए। होए खेल सतारां हाढ़ी, प्रभ साचा लेख लिखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सरन रखाउँदा ए। जुग जुग मेला आप कर, जुग जुग मेल मिलांयदा। सज्जण सुहेला आप बण, बेड़ा बन्ने लांयदा। नगर खेड़ा इक्क तन खुल्ला वेहड़ा आप वखांयदा। आवण जावण गेड़ा जन, आपणा आप संग निभांयदा। आपे देवे नाम धन, पल्ले गंढु बनाँयदा। शब्द सुणाए राग कन्न, साची भिख्या इक्क वखांयदा। हरिभगत चढ़ाए साचे चन्न, जोती आपणी विच टिकांयदा। हरिजन आत्म जाए मन, नैण नैणा विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां जोड़ा इक्क दर, इक्क वखाए साचा घर, साचा तख्त सुहांयदा।

साचा तख्त जगत सुल्तान, उत्ते हरि मुरारया। साँवल सुन्दर गोपी काहन, मोर मुकट सीस दस्तारया। तिन्नां लोआं मार ध्यान, बैठा कर सोलां श्रृंगारया। दर दुआरे खड़ आप दरबान, ध्रू नाम अपारया। दिवस रैण रक्खे चरन ध्यान, पारब्रह्म करे उपकारया। बिप्पर सुदामा आया अञ्याण, ढहि पया द्वारया। कवण दुआरे मिलदा माण मिले मेल कृष्न मुरारया। देणा इक्क सच्चा फ़रमाण आया दर भगवन्त भगत भिखारया। अग्गों बोले दर दरबान, कवण नाता विच संसारया। बोले सुदामा लै के आया धुर फ़रमाण, मीत मीत मीत गुवारया। मिले मेल निगहबान, होए भगत पार किनारया। हुक्म सुणाया दर द्वार, आप उठाया कृष्न मुरार, विच विचोला आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम अन्त तिन्नां मेला इक्क दरबार, साचा घर वखा रिहा। साचा तख्त हरि शाहो बिराजे, वेखे रंग अपारया। भगत जनां हरि करे काजे, सृष्ट सबाई करे ख्वारया। भाग लग्गे देस माझे, जागे वड वड संत प्रभ करे परउपकारया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त गणत अगणत ना पावे कोई सारया। आपे खेले आदि अन्त, आपे मेले जुगा जुगन्त, आपे बन्न्हे साची धारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, ना होए मात ख्वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जिस जन मंगया आए वर, घर सर सच्चा चरन द्वारया। गोकल मथरा माण, मन डेरा लाया। वण तृण मौलया हरि भगवान, प्रभ दर्शन पाया। प्रभ दर्शन गुण निधान, साची उत्पत दए कराया। उत्पत होए विच बीआबान, सच महल्ला दए वसाया। किरपा कर आप भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कर्म रिहा कमाया। तन गोकल मन मथरा मान, सुरती मन कर पछाण। शब्द बणे तेरा बिन्दराबन, जोत निरँजण साचा काहन। भरम भरम भरम प्रभ देवे भन्न, शब्द वखाए इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दात गुण निधान। मन मौलया होई फुलवाड़ी, रुत्त बसंती आई। रुत्त बसंत मिल्या मेल कन्त, आत्म घर वज्जी वधाई। कोई ना दिसे होर साचा संत, भेख पखण्डा भरी लोकाई। एका ओट एका चोट एका जोत महिंमा अगणत, अकथ ना कथया जाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया कमाए दर द्वार, देवे सरन सच्ची सरनाई। सुरती बिन्दरा कर त्यार। शब्द बंधाए फूलन हार। दीपक जोती कर उज्यार। अन्दर मन्दिर वेख अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया कमाए दर द्वार। दर दुआरा दूखन दूखिआ। रोग सोग दर चिन्ता शब्द विचोला सूखन सूखिआ। पूरन जोत भगवन्त, चरन प्रीती भूखन भूखिआ। प्रेम मधा मध कन्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दान जीवां जन्तां। जाणी जीव जन्त गुणवन्त भगवान। दासी जीव चरन गुर, गुर देवणहार जहान। एका लेख लिखाए धुर,

धुरदरगाही सच फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे देवे माण। दर दुआरा वेख दया कमांयदा। आप मिटाए पिछली रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। अन्दर बाहर गुप्त जाहिर, दिस किसे ना आंयदा। आपे जाणे आपणी मेहर, कवण सो वेले भगत सुहेले फड़ फड़ बाहों पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोचन नेत्र नैण पेखण दरस हरस मिटांयदा। पेख पेख मन बिगसाया, तन वजी वधाई। पुरख अबिनाशी दर्शन पाया, मिली जगत सरनाई। भाण्डा भौ भरम ना किसे भन्न वखाया, ना होई सच्ची रुशनाई। जोती जोत सरूप हरि, संत असंता वेख विचारे अन्दर बाहरे, जीव जन्त ना जाणे राई। क्या राजा क्या दर भिखारी। प्रभ अबिनाशी एका तुठ्ठा, शब्द ल्याए साची वंडा, वंडी जाए वड सरदारी। कोई ना दिसे भगत रुठ्ठा, आप आपणी किरपा धारी। लक्ख चुरासी टंगे पुठ्ठा, चारों कुन्ट होए ख्वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवण आया साचे मन्दिर शब्द सरूपी इक्क बहारी। शब्द बहारी हरि फिराए। दुरमति मैल दूर कराए। गुरमति गुरमति गुरमति साची धार, हरि हिरदे विच समाए। दुरमति दुरमति दुरमति दर दुरकार, साचा राह इक्क वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेख धुर दी बाण, लिख मस्तक टिक्का लाए। जागे भाग गुर संगत पाईआ। गुर संगत बुझाए आग, जन सेव कमाईआ। सेवा धोए काया दाग़, अमृत फ़ल खुवाईआ। दुरमति मैल गई भाग, प्रभ साचे दया कमाईआ। जगत बुझाए तृष्ना आग, मिली शब्द वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा मूल चुकाईआ। नेत्र लोचन नैण विहुणे चारों कुन्ट वखानण। भेख पखण्डा जूठे झूठे ना कोई जाणे पवण मसानण। भरमे भुल्ले बाल अंञानण। सीस निवारे होए गंवारे, लेख लिखाए काल कालन। गुरमुख विरले गुर पूरा आसा मनसा पूरे, देवे शब्द दलालन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़ल लगाए काया डालन। काया डाल फूल लगाए। फ़ल लुवाए अवल्ला, सच कन्तूहल दया कमाए। रुत्त बसंती इक्क ल्याए। आपे वेखे बैठ इकल्ला, रंग रंगीले वेख वखाए। काले कंचन सूहे पीले चिट्टे नीले लाल रिहा सजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे कर कर आपणे मेले, जगत वसीले रिहा बणाए। वेखण वेखे दिस ना आया, फ़ल जगत लगाई। प्रभ अबिनाशी भेव छुपाया, जोती जोत जगाई। देवी देव किसे हथ्थ ना आया, शिव ब्रह्मा खोज खुजाई। आप आपणे अंग समाया, शब्द करे जणाई। सच दुआरा लँघ वखाया, आप आपणी दया कमाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भेव रहे ना राई। हरि सरनाई सदा सुख, जगत सोग व्यापे। उज्जल होए जगत मुख, मेट मिटाए आप संतापे। आप मिटाए तृष्ना भुक्ख, जाप

जपाए अजपा जापे। सुफल कराए मात कुक्ख, जिस जन दर्शन देवे आपणा आपे। जोती जोत सरूप हरि, आपे होए माई बापे। दर्शन वेख मन तृप्तावे, भए शांत सरीरा। पुरख अबिनाशी घर साचे पावे, मिल्या मेल गुणी गहीरा। साचे न्ह़ावण न्ह़ावे, चुक्के हउमे पीड़ा। एका राग गावण गावे, चढ़े सिखर अखीरा। पुरख अबिनाशी लड़ जिस जन फड़ावे, लोकमात बन्न्ह़े बेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए काया जीऊड़ा। काया मन्दिर महल्ल तन उसारया। नौ दुआरे जगत चढ़ाया चन्न, वेख वखाणे कर उज्यारया। दसवें आप रखाया साचा धन्न, बन्द कराया दिस किसे ना आ रिहा। आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले आत्म जिन्दर देवे भन्न, इक्का वखाए शब्द भण्डारया। कोए ना लाए मात सन्न्ह़, काया डूंघी कन्दर आपे आप लगा रिहा। ना कोई जाणे ना कोई पछाणे ना कोई तोले धड़ी सेर। मन रती रत ना किसे तुला रिहा। आपे आप गया मन, पित मात ना कोई बणा रिहा। साचे अन्दर ताणे ताण, शब्द बस्त्र इक्क उँणा रिहा। तख्त सुहागी दस्म दुआरी साचा राम बण, साची सेजा आसण ला रिहा। आपे आप जोत भगवानन, सोहँ ताज सीस टिका ल्या। आपे आप जगत विद्वाना बण, साचा राग जगत सुणा रिहा। आपे आप धर्मशाला बण, आप आपणे संग मिल रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, द्वार दर दर द्वार इक्क सुहा रिहा। सुहाए द्वार बंक, डंक वजाया। इक्क रखाए आण अंक, शंक आत्म दए मिटाया। दरस दिखाए वासी पुरी घनक, बार अनक जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाया। क्या रंग दिसे मनमुख, चोली होई पुरानी। कोई ना देवे नाम सुख, सुरती होई बौरानी। काया बूटा औखा औखम, अमृत मिले ना ठंडा पाणी। दिवस रैण सद रहे भूखम, बाल बाला कोई ना चढ़े जुवानी। प्रभ कट्टण आया चिन्ता दूखम, लोकमात रहे निशानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दात गुण निधानी। गुण निधान देवे दात, दृष्ट इष्ट वखाईआ। वेखे खेल बहु बहुभांत, नगर प्रांत किसे दिस ना आई। मिटावण आया अन्धेरी रात, चरन बंधाए साचा नात, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला रिहा सुहाईआ।

★ २८ पोह २०१२ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे गृह पिण्ड बलोवाल ज़िला गुरदासपुर ★

सगल पसारा आप मात कराया। आपे वेखे पुन्न पाप, जप तप खेल रचाया। सृष्ट सबाई माई बाप, प्रगट होए नेत्र पेखे जोत जगाया। कवण पछाणे आपा आप, पारब्रह्म प्रभ रिहा वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, प्रगट धुन रिहा समाया। घट घट मन्दिर जोत अकार, माया पड़दा पाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग काला कफ्न पाया। गुरमुख विरले मिले, मेल प्रभ कन्त भतार शृंगार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखाया। आपे वेखे नेत्र खोल्ले, दिस किसे ना आंयदा। घट घट अन्दर हरि जी बोले, मनमुख मूल ना भांयदा। गुरमुख साचे तोल तोले, शब्द कंडे आप चढ़ांयदा। आप रगाए काया चोले, रंग बसंती इक्क वखांयदा। आत्म गड्डड़ी रिहा फोले, शब्द भण्डारा इक्क वखांयदा। आदि अन्त कदे ना डोले, भगत जनां सद वसे कोले, मनमुखां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम सुखा, जगत मिटाए तृष्ना भुक्खा, हउमे रोग गुवांयदा। हउमे रोग गंवाए, दया कमांयदा। सच वस्त प्रभ झोली पाए, शब्द दस्तार इक्क रखांयदा। गुरमुख विरले संत सुहेले फड़ फड़ बाहों आप उठांयदा। आप कराए आपणे मेले, आपे गुर आपे चेले, दूजा दर ना कोई वखांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेले, धर्म राए दी कटे जेले, जो जन आए चरनी सीस निवांयदा। शब्द सरूपी चाढ़े तेले, काया रंगे रंग नवेले, रंगण आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले संत वरोले आप आपणी गोद उठांयदा। संत वरोले आप हरि, साची दया कमांयदा। गुरमुख विरला भगत जन, प्रभ साचा मेल मिलांयदा। एका राग सुणाए कन्न, भाण्डा भरम भनांयदा। जोत जगाए साचे तन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। गुरमुख आत्म जाए मन, प्रभ दरसी दरस दिखांयदा। आप वसाए साचे घर, छप्परी छन्न ना कोई रखांयदा। ना मरे ना जाए जम्म, एका धाम सुहांयदा। ना कोई रक्खे पल्ले दम, नाम वस्त इक्क लिआंयदा। ना नेत्र रोवे छम्म छम्म, हन्झू नीर ना कोई वहांयदा। पवण स्वासी लए ना दम, सद अडोल टिकांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, लक्ख चुरासी भरमे भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले दर घर साचे मेल मिलांयदा। दर घर साचा इक्क पछाणा, गुर पूरे जोत जगाईआ। मिल्या मेल पुरख निधाना, गीत सुहागी गाईआ। चरन प्रीती सच्चा नाता, ना होए कदे जुदाईआ। देवे नाम शब्द सुगाता, प्रभ साचा धुर दरगाहीआ। अन्तिम वेले पुच्छे वाता, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। रंग रंगीला हरि रंग, प्रभ नर हरि रतया। जन भगतां निभाए आपणा संग, दे दे समझाए मतिया। अमृत आत्म धार वहाए गंग, जूठा झूठा कढ्ढे पाणी तत्तया। चले चाल इक्क बिहंग, बीजे बीज साचे वतया। नाम वजाए साचा मृदंग, पंजां चोरां करे हत्या। अमृत वहाए साची गंग, साची धार साची सतया। शब्द डोरी चढ़े पतंग, गुरमुख

साचा आत्म धीरज सति संतोखी रक्खे जतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे आत्म दर, रंगण नाउँ नाम रंग रतया। रंगण नाम अपार, गुर पूरे तन चढ़ाईआ। दर घर मंगण हरि द्वार, प्रभ भिच्छया साची पाईआ। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, रसन फिरे हलकाईआ। भरमे भुल्ले ना पावण सार, हउमे तृष्ना जगत वधाईआ। हरिजन साचे पुरख अबिनाशी चरन प्यार, आत्म वज्जदी रहे वधाईआ। आपे पुरख आपे नार, आपे कन्त भतारा मीत मुरार, आपणी सेजा रिहा हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत दुलारे, जन्म कर्म प्रभ मात विचारे, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लहिणा देणा देवण आया, कर किरपा गिरधारी। चरन प्रीती बन्हण आया, बख्शे नाम खुमारी। दूई द्वैती जन कट्टण आया, हउमे कटे बिमारी। अमृत आत्म नाम प्यावण आया, काया सीतल करे ठंडी ठारी। आपणा आप दामन फड़ावण आया, कर किरपा हरि गिरधारी। धुर दरगाही साचा जामन आप अख्वावण आया, हरि जोत जोत निरँकारी। अमृत मेघ सावण बरसावण आया, करे बसंत बहारी। मनमुखां आत्म धुआवण आया, मारे तेज कटारी। गुरमुखां वक्त सुहावण आया, गाए गीत सुहागी नारी। हरिजन सोए मात जगावण आया, शब्द फुकारा रिहा मारी। फड़ फड़ बाहों राहे पावण आया, देवे नाम खुमारी। आप आपणे रंग रंगावण आया, प्रभ बणया सच लिलारी। हरि हिरदे विच वसावण आया, जोती जामा भेख न्यारी। दुरमति मैल गंवावण आया, एका बख्शे चरन प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक चरन टेक, देवे शब्द अधारी। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, संत सुहेले आए मात। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, प्रभ देवण आया दात। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, मिले मेल कन्त सुहाग। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, प्रभ धोवण आया दाग़। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, प्रभ दीपक जोती आप जगाए चिराग। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, नर नरायण पकड़े तेरी वाग। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, गुरमुख बणन लग्गे हँस काग। उठ जाग भिन्नी रैनड़ीए, चरन कँवल कँवल चरन पुरख अबिनाशी लाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मजन इक्क कराए चरन धूढ़ी साचा माघ। भिन्नी रैण दे सलाह, प्रभ सोई मात जगाईआ। कवण आया जगत मलाह, फड़ फड़ उठाए बाहींआ। जन भगतां जपाए साचा नां, वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। गुर पूरे सद बलि बलि जां, साची बणत बणाईआ। आपे पिता आपे माँ, भैणां भईआ साक सैणा साचा सज्जण आप अख्वाईआ। शब्द सुहेला देवे ठंडी छाँ, एथे ओथे होए सहाईआ। नित नैण उग्घाड़े मैं खड़ी उडीकां राह, कवण कूटे हरि प्रभ साचे जोत जगाईआ। मनमुख जीव अन्तिम सुक्क गए बूटे, फ़ल काया रहण ना पाईआ। गुरमुखां देवे शब्द झूटे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म सर साचे ताल रिहा

नुहाईआ। अमृत आत्म ताल सुहाया, गुरमुख लाए तारी। पार किनारा किसे दिस ना आया, कोई वेखे नां जीव गंवारी। साचे धाम आप टिकाया, हरिजन विरले पाए सारी। पुरख अबिनाशी राह वखाया, नाता तोड़े नौ द्वारी। दर घर साचा इक्क सुहाया, मन्दिर अन्दर ब्रह्मचारी। अमृत साचा ताल भराया, निझर झिरना झिरे अपारी। कवण सरसा उप्पर टिकाया, ताल भरे शब्द भारी। किल्ला कोट प्रभ आप बणाया, शब्द सरूपी चार दिवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे रिहा तारी। तारे तारनहार, प्रभ हथ्थ वड्याईआ। लोकमात ना होए ख्वार, गुर पूरे संग निभाईआ। पूर्ब कर्म रिहा विचार, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। लहिणा देणा देवे कर प्यार, देवणहार आप अख्वाईआ। भाणा सहिणा विच संसार, साचा रिहा हुक्म सुणाईआ। अट्ठे पहर रहणा ख़बरदार, जूठे झूठे जीव गंवार, चुगली निन्दया मुख रखाया। गुरमुख विरले चरन अधार, दिवस रैण करे प्यार, शब्द सरूपी देवे धार, अमृत आत्म मुख रिहा चुआईआ। हरि जन मेला कन्त भतार, आत्म सेजा कर त्यार, वेख वखाए पहली वार, फूलन बरखा लाईआ। निरँजण जोत कर अकार, शब्द सरूपी बण भिखार, शाहो भूपी वड सिक्दार, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। आपे जाणे आपणी कार, ना कोई जाणे जन्त गंवार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आपे निरँकार, आप आपणे रंग समाईआ। सृष्ट सबाई करे विहार, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां रिहा वड्याईआ। ब्रह्मे रहणा ख़बरदार, मारे शब्द तीर कटार, चारे मुखां रिहा भुवाईआ। शिव शंकर तेरी अन्तिम वार, मिले जोत पुरख भतार, अन्तिम मेला आप कराईआ। इन्द इन्द्रासण आई हार, शब्द सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशन घट घट वासन साची सेजा मात बणाईआ। भगत जनां होए दासी दासन, जो जन तजाए मदिरा मासन, शब्द चलाए स्वास स्वासन, मानस जन्म करे रहिरासन, साची सेव लगाईआ। जगे जोत पृथ्वी अकाशन, मनमुख जीव अन्त विनाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाईआ। आप आपणा रंग वटाए, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख समझाए आपा, मात हुक्म सुणांयदा। शब्द पल्ला फड़ाए आपा, शब्दी मेल मिलांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा, मानस देही जन्म दवाया अन्तिम लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा संत सुहेला आप आपणे संग रलांयदा। धुर दरगाही धुर दी बाणा, धुर फ़रमाणा गाया ए। भगत जनां देवे नाम निशाना, हथ्थीं बन्ने शब्द गाना, दूसर किसे हथ्थ ना आया ए। रसना चिल्ला तीर कमाना, अट्ठे पहर बली बलवाना, सृष्ट सबाई इक्क निशाना आपे रिहा लगाया ए। ना कोई दिसे राजा राणा, तख्तों लाहे शाह सुल्ताना, गरीब निमाणा गले लगाया ए। आपे गोपी आपे काहना, आपे जोत सरूपी भगवाना, वरन गोत मेट मिटाया ए। आपे बीना आपे दाना, आपे पीणा आप

५१० ०५

खाणा, आपे तृष्ना भुक्ख वधाया ए। आपे मरना आपे जीणा, आपे पाटा आपे सीणा, आपे खाए खाणा, अन्तिम अन्त अन्त कलि ना होए कोई सहाया ए। प्रगट होए हरि प्रबीना, जन भगत कराए ठांडा सीना, अमृत साचा जाम प्याया ए। होए विछोड़ा जिउँ जल मीना, मेल मिलाए लोकां तीनां, सच खण्डी धाम सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, साची रंगण रिहा चढ़ाया ए। सतिजुग साचा सति सरूप, सांतक विच समाया। सांतक वरते सच भूप, रूप रंग वटाया। रूप रंग प्रभ सदा अनूप, गुरमख विरले पाया। सृष्ट सबाई अन्धकूप, दिस किसे ना आया। दर दर घर घर गुर दर मन्दिर देवण धूप, दीनां नाथ दिस किसे ना आया। भेखाधारी वड संसारी फिरदे कर कर बहु रूप, रूपां वाला किसे हथ्थ ना आया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां लभ्भदे फिरदे मस्तक रेख, जोत सरूपी भगत दलाली, शब्द सवाली सार ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमखां पूर कराए घालण घाली, साची सेवा अमृत आत्म मेवा, वड देवी देवा लेखे लाया। लेखा लिखण आया, बण बण लिखारी। साची सिख्या देवण आया, प्रभ साचा शब्द भण्डारी। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुरमुखां दर इक्क सुहावण आया, प्रगट जोत निरँकारी। औलीए पीर शेख़ मिटावण आया, संग मुहम्मद चार यारी। कलिजुग तेरा मस्तक लहिणा अन्तिम वेखण आया, चारों कुन्ट जूठ झूठ मात पसारी। शब्द गीता गुरमुख तेरी रसना मति बुध मन एका देवण आया, कर कर कर कर कर कर सच्ची हितकारी। चरन प्रीती एका टेक धीरज धीर धरावण आया, वड जोधा दाता सूरबीर बलकारी। अमृत नामा ठांडा सीर नीर प्यावण आया, हउमे तृष्ना जगत निवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम गुर गुर नाम अधारी। नाम अधारा आप जन, प्रभ रंगण रंग रंगाता। हरिजन देवे नाम धन्न, उत्तम होई ज़ाता। धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी इक्क पछाता। साचा राग सुणाए कन्न, चरन प्रीती बन्ने नाता। अन्तिम बेड़ा जाए बन्न, सर्ब जीआं प्रभ एका दाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए ब्रह्म ज्ञाता। पारब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। ज्ञानी ध्यानी सार ना पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। विद्वानी रहे दु:ख दाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दया कमाईआ। भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आपे जाणे भगत कर्म, धर्म धरती उप्पर रखाईआ। मेट मिटाए दूई द्वैती जूठा झूठा वरम, साची सरन इक्क तकाईआ। नेत्र खोले हरन फरन, लोचन नैणा दरस दिखाईआ। हरिजन साचा तरनी तरन, प्रभ दर मिली वड्याईआ। आप चुकाए मरन डरन, शब्द चोली तन पहनाईआ। दर घर आया वरनी वरन, दर घर साचा माहीआ। आपे होए करनी करन, करन करावणहर आप अख्वाईआ। आप आपणी देवे सरन सरनाई, आत्म दर वज्जी वधाई, मंगलाचार सहिज सुभाई, पंचम सुत्तयां संग

मिलाई, ढोल मृदंगा नाम वजाई, नाम मृदंगा नाल रलाई, एका संगा सहिज सुखदाई, किरपा करे आप रघुराई, दिवस रैण ना होए जुदाई, मिल्या मेल साचे माही, गले लगाए फड़ फड़ बांहीं, जोती जोत सरूप हरि, साचे थाँ साची सेजा इक्क विछाईआ। साचे धाम वसणा तेरा हरि हरि मीत, हरि जाणे साचे मीत, हरिजन साचे पार करंदड़ा। आपे परखे नीत, जुग जुग बख्शिंदड़ा। बैठा रहे अतीत, मनमुख निन्दक दुष्ट दुराचार दिवस रैण कर निन्दड़ा। होए नीत अनीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर गुणी गहिंदड़ा। गुणी गहिंदड़ा गहर प्रभ, गुणवन्ता गुण निधान। ज्ञान ध्यान कँवल नभ, उलटी होए बिधनान। बिध नाता प्रभ आपे ज़ाता, गुरमुख साचा लए लभ्भ, लोकमाती कर प्रगट जोत जगाए झब्ब, मनमुख निन्दक लए दब्ब, करे खेल अन्त महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान। शब्द जणाई, आत्म होए उज्यारया। चरन ध्यान मिले वड्याई, दर साचा इक्क सुहा रिहा। रसना गाया सर्ब सुखदाई, राम रमईआ राम मिला रिहा। दर घर साचे देवे माण होए सहाई, अमृत आत्म जाम पिला रिहा। वेख वखाणे जंगल जूह पहाड़ उजाड़ बीआबान, सागर गहर ना कोई भेव छुपा रिहा। शब्द निशाना चले एका बाण, नगर खेड़ा शहर ना कोई वसा ल्या। लक्ख चुरासी आपणा कीता आपे पाण, पुरख अबिनाशी कहर वरता रिहा। जूठे झूठे सोहले घर घर गाण, गावण गीत नीत कन्त सुहागी किसे नार ना पा ल्या। अट्ठे पहर ना आवे चीत, जूठे झूठे फिरदे मन्दिर मसीत, माया भरमे भरम भुला रिहा। सदी चौधवीं रही बीत, प्रगट होए इक्क अतीत, लक्ख चुरासी परखे नीत, आत्म अन्दर साची सेजा बैठ वेख वखा ल्या। गुरमुख विरला राखे चीत, मानस देही जाए जीत, काया होए ठंडी सीत, प्रभ अबिनाशी दर्शन पा ल्या। चरन प्रीती साची रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आप मिला रिहा। गुरमुख पाए नाम रंग, प्रभ साचे चरन कँवलारे। प्रभ साचा शब्द घोड़े कसे तंग, करे खेल उप्पर धवलारे। सोहँ नाम वज्जे मृदंग, चारों कुंट होए ख़बरदारे। शब्द अस्त्र पहने साचे अंग, ना कोई जाणे जीव गंवारे। गऊ गरीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, देवे नाम अधारे। भगत सुहेला साचा संग, भरमे भुल्ले जीव गंवारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दान भगत भगवान शब्द अपारे। शब्द दान महान भगत भगवानया। चरन धूढ़ इशनान जीआं दानया। शब्द तीर कमान नौजवानया। लक्ख चुरासी एका आण, आपणी आण रखानया। एका गीत राग विच जहान, लक्ख चुरासी करे बौरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वेखे आत्म दर, दर दुआरा इक्क पछानया। आत्म दर द्वार हरि खुल्हाया। किरपा कर अपार, मन्दिर अन्दर डेरा लाया। आपे वेखे डूंघी गार, सागर गहर

जगत हरि वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरि जन देवे शब्द वर, दूजा दर ना कोई वखाया। दर दरवाज़ा खोल्ह, आपे बोल्लया। शब्द वजाए साचा ढोल, अनहद रागां पड़दा खोल्ल्हया। आप बणाए हँस कागा, जोत सरूपी पकड़े वागा, जो जन चरन प्रीती घोल घोल्लया। धोवे दुरमति मैल दागा, आप बुझाए तृष्ना आगा, हरिजन होए वड वडभागया। मिल्या मेल कन्त सुहागा, भाण्डा भरम भउ भन्ना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, जन्म मरन मरन जन्म आवण जावण पतित पावण गेड़ कटा रिहा। आवण जावण मिटे गेड़ा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आपे बन्न्हे लाए बेड़ा, शब्द मुहाणा वंञ इक्क लगाईआ। काया वसे नगर खेड़ा ना कोई दिसे सवेर सञ्झ, पुरख निरँजण साची जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी नार बंझ, साचा पूत जगत सपूता ना कोई जन्म दवाईआ। मायाधारी रोवण नीर वहायण हंञ, कारू गंज रहण ना पाईआ। नाता तुट्टे भैण भाई संग, माता पिता पूत हित ना दीसे कोई सहाईआ। जगत ताल रिहा वज्ज, कलिजुग काल रिहा भज्ज, धर्म दुआरा रिहा सज्ज, लाड़ी मौत लहू पीए रज्ज, अन्तिम वेला आईआ। जन भगतां पड़दे लए कज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, जगत भगत भगत जगत गुर मंत संत अन्त होए सहाई गुर शब्द कुड़माईआ।
५१३ गुर शब्द होए कुड़माई, मुख साचा सगन लगाया। घर साचे वज्जे वधाई, पुरख अबिनाशी वेखण आया। पंचम मिल मिल ५१३
०५ मंगल गाई, साचा ढोलक रिहा वजाया। आपे नैण आपे नाई, आपे वट्टणा हथ्थीं लाया आपे पाणी वारन आई, मात सवाणी ०५
आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, शब्द शृंगार तन अपारा, साचा लाड़ा रिहा सुहाया। साचा लाड़ा शब्द शृंगार फूलन सेहरा लाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपे वेखे कर विचार, मूलन मूल चुकाया। आत्म जामा एका धार, पवण उनन्जा छत्र झुलार सुरत भरजाई नेत्र कज्जल नाम पाया। वाग गुंदे कर प्यार, नेत्र मूंदे होए शर्मसार, आत्म खुशी अपर अपार, बुध निमाणी भैण प्यारी साचा सीस गुंदाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपे जाणे सच विहार, गिरवर तेरा गिर गिरधार, गृह मन्दिर अन्दर साचे तन साचा रंग रंगाया। साचा रंग रंगाए लाड लडन्नया। साचा गाना हथ्थ बन्न्हाए, पंडत पांधा कोई ना मन्नया। चरन धूढ़ इशनान इक्क कराए, दुरमति मैल करे खंन खंनया। चन्नण चौंकी साची डाहे, नाम रती रत्न जड़ाउ अंगण लाए अन्नाया। गुरमुख शौका नाल हंढाए, प्रभ दे समझावे मत्तया। आपे वेखण मात आए, पाए नक्क सुहागी नथ्थया। मुखों कहि कहि खुशी मनाए, सुहणा मुखड़ा हरि समरथया। हउमे दुक्खां रोग गंवाए, आप आपणा दरस दिखाए, सगल वसूरा अन्तिम लथ्थया। तन मन्दिर भाग लगाए, दीपक जोती

इक्क जगाए, दिवस रैण होए रुशनाए, आप चढ़ाए साचे रथया। रथ रथवाही आप अख्वाएं, नौ दुआरे बाहर कढाए, पंजे चोर रहे कुरलाए। अंक सहेल्ड़ीआं रो रो वैण पाए, आसा तृष्ना दए दुहाए। सुहरे पईए जोड़ जुड़ाए। इक्क विछोड़ा जीऊ पिण्ड, ब्रह्मण्ड पिण्ड वसाए। शब्द घोड़ा गुरमुख साचे देवे मृगिन्द, बाहों पकड़ चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत प्रीती साची रीती रिहा मात सुणाए। सति सवरनी कर त्यार, सोभावन्ती नार सुहाईआ। प्रेम प्यार तन श्रृंगार, हथ्थीं मैहन्दी लाईआ। नैणीं कज्जल तिक्खी धार, सोहँ कंगण हथ्थ पहनाईआ। प्रेम प्यारी होई मुटियार, गुर पूरा वेख वखाईआ। आपे करे भगत विहार, साची भगत नार व्याहीआ। आत्म शक्ती देत अधार, बूंद रक्ती लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां देवे इक्क वर, साचा घर सुहाईआ। दर पाया घर साचड़े, सच मिली वड्याई। जीउ पिण्ड पिण्ड काचड़े, अन्त रहण ना पाई। पंज चोर दिवस रात नाचड़े, जगत विकारा रहे वधाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द वखाए इक्क दर, धुर दरगाही साचे साकड़े। घर वसाया इक्क एका सेज विछाईआ। शब्द सुनेहड़ा एका भेज, साची नारी आप बणाईआ। आपे वेखे दर दहिलीज, दस्म दुआरी बैठा राह तकाईआ। दिवस रैण नेत्र खोल्ह लाई रक्खे रीझ, आलस निन्दरा मगरों लाहीआ। तन मन सीतल होया सीत, सुख सांतक सहिज सुभाईआ। अनहद बाणी साचा राग गाउँदा रहे गोबिन्द दे गीत, मीत प्यारा रिहा रिझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। साचा धाम इक्क सुहंना, ऊँच अटल महल्लया। गुरमुख लाड़े आत्म मन्ना, प्रभ वेखे खेल इक्क इकल्लया। देवे दात नाम धन्ना, वड धन्न धंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे फलया आपे फुल्लया। फ़ल फुल्ल फुल्लवाड़ी गई मवल, रुत्त बसंती आईआ। उलटी नभी खिड़या कँवल प्रभ अमृत धारा आप वहाईआ। मिले वड्याई उप्पर धवल, गिरधारा गिरवर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर्म धर्म जरम लेखे रिहा लगाईआ। लेखे लाए कर्म, सदा बख्शंदड़ा। नाता तोड़े दूई द्वैती वरम, इक्क उपजाए परमानंदड़ा। मानस देही साचा जरम, प्रभ साचा रंग रंगन्दड़ा। लक्ख चुरासी भुल्ली भरम, ना कोई तोड़े आत्म जिंदड़ा। गुरमुख साचे संत दुलारे प्रभ फड़ फड़ बाहों जाए तार, आप आपणे घर वसंदड़ा। हरि घर अपार, चार दरवाज्या। शब्द सरूपी एका धार, अनहद वाज्जया। जोत निरँजण इक्क अकार, साजन साज्जया। ना कोई दीवा बाती तेल दी धार, धूप दीप ना कोई राखिआ। पवण उनन्जा छत्र झुलार, एका आपणा साजन साज्जया। आपे बैठ सच्ची सरकार, आत्म सेजा इक्क सुहाए तख्त ताज्जया। गुरमुख साचे करे प्यार, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया।

मिल्या मेल सच्ची सरकार, आपे आप संवारे जगत काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गऊ गरीबां देवे वर, धुर दरगाही आपे भाज्जया। धुर दरगाही आया दौड़, जन भगतां होए सहाईआ। चढ़के आया शब्द घोड़, दिस किसे ना आईआ। आपे वेखे मिट्ठे कौड़, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपे आप साचा संग निभाईआ। कलिजुग झूठा ताज, तख्त सुहाया। कलिजुग झूठा राज, राजन राज कमाया। कलिजुग झूठा काज, कुकर्मी काजी काज बण काज कमाया। कलिजुग झूठा हाजी हाज हज्ज कराया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, लाजी लाज रक्खण आया। कलिजुग झूठा शाहो शाह प्रधानयां। कलिजुग झूठा राज झूठ मुहानया। कलिजुग झूठा दर घर साचे एका रूठा, पारब्रह्म ब्रह्म पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हथ्थीं बन्नूण आया गानया। हथ्थीं बन्ने गाना लक्ख चुरासीआ। मिटे नाम निशाना, मदिरा मासीआ। वज्जे तीर निशाना, पंडत काशीआ। झुले शब्द इक्क निशाना, पुरख अबिनाशीआ। करे खेल वाली दो जहाना, सृष्ट सबाई वेख तमाशया। गुरमुख विरले आपे करे पछाना, मानस जन्म करे रहिरास्सया। मनमुख भुल्ले जीव निधाना, दर दर घर घर करन हास्सया। लाड़ी मौत गाए तराना, गावे एका सच्चा गाना, सभ दे वसे आस पास्सया। माण तोड़े सर्ब अभिमाना, करे दासन दास्सया। वेखे खेल श्री भगवाना, गुरमुख विरला जाणे शब्द स्वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रहे सच तख्त बहे, आदि पुरख अपरम्पर करता जगत मीत अबिनाशया। एका रसना नांओ, सृष्ट सबाईआ। दूसर नाही कोए थांउँ, चारों कुन्ट होए दुहाईआ। घर घर अन्तिम उडे काउँ, लाड़ी मौत पाए फाहीआ। आप पकड़ उठाए बांहों, कोई ना देवे किसे ठंडीआं छाईआ। कलिजुग काला मस्तक टिक्का लाए छाही, गुरमुख साचे बलि बलि जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जिस रसना चाउ, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कांउँ, एका देवे सच्चा नांउँ, जोत निरँजण रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे दर, सृष्ट सबाई बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी वेखण आया, जोत सरूपी जामा धारे। औलीए पीर शेख़ मिटावण आया, अल्ला राणी हाहाकारे। गुरमुख साचे शब्द लपेटण आया, नाम कराए जै जैकारे। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां साढे तिन्न हथ्थ सीआं मनमुख जीआं बेचण आया, नाम कराए जै जैकारे। अन्तिम आपणी वंड वंडाईआ। सतिजुग तेरी साची रक्खण आया नीआ, कलिजुग अन्तिम जड़ उखड़ाईआ। गुरमुख साचे अन्तिम सच साचा हीआ, अमृत निधान आत्म एका पिया, प्रभ साचा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा किया हीआ, जीआं जन्तां

५१५ ०५

भेव ना राईआ। जीव जन्त ना जाणे कोए, माया भरम भुलाया ए। साधां संतां जूठा मोह, आदि अन्त दिस ना आया ए। कर्म दुआरे बैठे रहे रो, मानस जन्म ना किसे लेखे लाया ए। कलिजुग काला दाग़ जूठे झूठे मस्तक टिक्के सके ना धो, मन चैंचलहारा ए। नौ दुआरे दहि दिशा चारों कुन्ट रिहा फिराया ए। गुरमुख साचे पुरख अबिनाशी जोत निरँजण दस्म दुआरे अग्गे हो, जाप जपाए सोहँ सो, सतिजुग साचा सति धरत मात तेरी धर्मी गोद आपे आप बिठाया ए। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त, तेरी आप सुहाए साची रुत्त, सति सतिवादी शब्द अनादी बोध अगाधी साचा मार्ग लाया ए। देवे दात वड करामाती, गुरमुख विरले आत्म लाथी, पंजां चोरां तन मन बाधी, सूखम काया आपणी साधी, सतिगुर साचा पाया ए। दिवस रैण रहे अराधी, मिल्या मेल माधव माधी, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी धारे भेख, सृष्ट सबाई रिहा वेख, लक्ख चुरासी तेरी रेख, आपणी रेखा रिहा छुपाया ए। आपे वेखे वेखण आया, आपणा आप छुपाए। संत सुहेले परखण आया, गुरमुख साचे सोए मात जगाए। लज पति लाजा लाज रक्खण आया, आप संवारे आपणा काजा, प्रगट होए देस माझा, सृष्ट सबाई साजन साजा, गरीब निवाजा दया कमाए। भगत जनां हरि मारे अवाजा, शब्द रखाए सीस ताजा, चिट्टे अस्व साजन साजा, नीली छत्ते पाड़ा लाए। धरत मात रचाए तेरा काजा, अनहद वज्जे साचा वाजा, सोहँ देवे साचा दाजा, धुर दरगाही लै के आए। दूर दुराडा आया भाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची रिहा बणत बणाए। सतिजुग सोया मात जगाए, भगत जगावण आया। आप आपणी रुत्त सुहाए, गुरमुखां मुख सुहावण आया। मनमुखां अन्तिम अन्त कराए, कोई भेव ना पाए राया। जूठा झूठा माया लूठा साध संत कोई रहण ना पाए, खाली ठूठा हथ्थ फड़ाया। भगत सुहेला जुगां जुगां दा रूठा, आप आपणा मेल मिलाया। आदिन अन्ता आपे तुठ्ठा, लुकया रहण ना देवे कोई गुट्ठा, नेत्र खोल्ह शब्दी बोले पवण झकोले त्रलोआं रिहा वेख वखाया। भाग लगाए काया चोले, रंगे रंग इक्क अमोले, बजर कपाटी पड़दे खोल्हे, आप आपणा अंक वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, दस्म दुआरी दरस दिखाया। दस्म दुआरी खोल्ह दरस दिखांयदा। राग अनादा बोल, भरम चुकांयदा। माधव माधा दिसे अडोल, साचा धाम सुहांयदा। भगत जनां सद वसे कोल, आपणे रंग समांयदा। साचे मन्दिर रिहा मौल, शब्द सुगंधी इक्क वखांयदा। साचा तोलण रिहा तोल, परमानंद विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां कढ्ढे वासना गन्दी, नौ चन्दी चन्द चढ़ांयदा। आत्म कढ्ढे वासना गन्दी, रसना हरि हरि नाउँ। जो जन

गाए बत्ती दन्दी, दरगाह साची देवे थांउँ। धर्म राए ना पाए बन्दी, चित्रगुप्त ना करे न्यांओ। सृष्ट सबाई आत्म अन्धी, जूठे झूठे उडाए काउँ। गुरमुख विरला रस जाणे परमानंदी, प्रभ मेला सहिज सुभाउ। माया राणी झूठी तन्दी, मनमुखां पाए गल क्वाओ। आपे आप सदा बख्शंदी, वेख वखाणे थाँईं थांउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई वेख दर, करे खेल अगम्म अथाहो। अगम्म अगम्म अगम्म अथाहो, अथाह बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई हरि मलाहो, शब्द बेड़ा रिहा बन्न्हाईआ। हरिजन पकड़ बहाए बाहों, साचा नाउँ रिहा जपाईआ। दर घर देवे ठंडी छाउँ। अमृत आत्म सहार प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धीरज धीर रिहा धराईआ। आत्म धीरज सति संतोख, गुर मन्त्र जग माण। अन्तर मोख आत्म ब्रह्म ज्ञान। राह दिसे सोख, शब्द सरूपी ब्रह्म पछान। आप मिटाए तृष्ना भोख, हरि वडा शाहो भूपी तख्त बिराजे हरि सुल्तान। सुफल कराए मात कुक्ख, गुणवन्ता हरि गुण निधान। उलटा वास ना होए गर्भ रुख़, लक्ख चुरासी फंद कटान। मानस देही मिली मानुख, प्रभ पूरा जप भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे जिया दान। जीअ जन्त प्रभ देवणहारा। आपे रहे सदा अडोल, साध संत हरि परखणहारा। शब्द चोह अक्खर रसना बोल, भगत जनां हरि रक्खणहारा। शब्द वस्त अनमोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क कराए साचा वणज वापारा। साचा वणज कराए नाम धन, गुरमुख जगत ख़ज़ीनया। लोकमात ना लाए कोई संन्न्, ना सके कोई छीनया। एका राग सुणाए कन्न, वड दाता सूरा सूर बीनया। जोती नूर चढ़े चन्न, उपजे राग साचा कन्न, सांतक सीतल सीनया। हरिजन कहे धन धन, मिले मेल प्रभ दाने बीनया। नौ खण्ड पृथ्वी खंन खंन, कलि अन्तिम वक्ख वक्ख कीनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत सरूपी वेखे दर रूसा चीनया। रूसा चीना मार ध्यान। ईसा मूसा होए हैरान। काला सूसा तन तन शैतान। शाह अबनूसा बेईमान। कुरान हदीसा विच जहान। बीस इक्कीसा मेट मिटान। राग छत्तीसा होए वैरान। दन्द बतीसा जगत गान। बीस इक्कीसा ना सके कोई पछान, वेद पुराणी आई विचार, शब्द निशानी हरि करतार, ब्रह्म ज्ञानी ना पाए सार, विद्वानी कलि होए ख्वार। गुण ज्ञानी रोवे धाहां मार। चतुर सुजानी डुब्बा विच मँञधार। हरिजन जनहरि एका ओट प्रभ चरन ध्यानी, दो जहानी लावे पार। शब्द सुणाए धुर दी बाणी, धुर दरगाही अन्त सहार। चरन सरन चरन प्रीती कलि कुरबानी, लग्गे सीस तेज़ शब्द कटार। आपे वेखे जेरज खाणी, कवण दीपक होए उज्यार। निशअक्खर वक्खर एका बोले बाणी, पर्रा पसंती कर विचार। शब्द मिले जिस जन साचा हाणी, सो सुहञ्जणी सोभावन्ती नार। अमृत देवे ठंडा पाणी, आत्म सेजा बहे सवाणी, सोलां करे तन श्रृंगार।

आपे जाणे जाण जाणी, हरि दाता वड शाह सुल्तानी। तख्त बिराजे गुण निधानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, हथ्थ फड़ाए शब्द मधानी। शब्द मधाणा हथ्थ फड़ाया, मति वरोले तन। दोहां हथ्थां गेड़ लगाया, विच चलाया मन। सुरत शब्द मेल मिलाया, प्रभ राग सुणाया कन्न। सोहँ साचा तेल चढ़ाया, मस्तक टिक्का लाया चन्न। आप आपणा मेल मिलाया, भाण्डा भरम प्रभ झूठा भन्न। हउमे चिन्ता रोग गंवाया, हरिजन आत्म गया मन्न। शब्द सरूपी ज्ञान दवाया, जोत सरूपी विच समाया, दूसर किसे दिस ना आए तन। सर्बकला हरि आप अख्वाया, अटल अटलया इक्क धाम सुहाया, किसे दिस ना आया छप्पर छन्न। गुरमुख साचे संग रखाया। शब्द घोड़े तंग कसाया। सोहँ सच्चा मृदंग वजाया। नौ दुआरे पार लँघाया। दसवें आसण हरि हरि लाया। शब्द स्वास रसन चलाया। मात पाताल आकाश अकाशन, गगन गगनंतर हरि रिहा सुहाया। ढोल मृदंगा ताल वजन्तर, साची बणतर रिहा बणाया। राग रागनी कन्न सुणंतर, शब्द बणाए साची बणतर, गावत सुनत सुनत गावत पावत ध्यावत आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेला सहिज सुभावत, पूर्ब लहिणा झोली पाया। लहिणा देणा देवणहार, दो जहानी दाता। गुरमुख साचा सेवणहार, पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता। आप आपणा लेवणहार, चरन प्रीती बन्ने नाता। जन्म कर्म धर्म प्रभ रिहा विचार, ना कोई वेखे ज़ाता पाता। शब्द सरूपी कर शृंगार, जोत सरूपी तन आकार, साचा धाम इक्क सुहाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, मेट मिटाए अन्धेरी राता। अकाल मूर्त सभ तों प्यारी ए। दीन दयाल करी चरन भिखारी ए। करे प्रितपाल कलिजुग तेरी अन्तिम वारी ए। अनमुल्लड़ा एह लाल, एहदी खलड़ी काली ए। दीपक जगे मस्तक थाल, सृष्टी दंमड़ी सारी ए। प्रभ चले नाल नाल, माता अम्मड़ी विसारी ए। फ़ल लग्गे काया डाल, रुत्त फ़ल फुली फुलवाड़ी ए। मारे शब्द उछाल, वा मिटे तत्ती हाढ़ी ए। सोहे अमृत ताल, नेड़ आए ना मौत लाड़ी ए। भया प्रभ दयाल, कलि काल रिहा तन साड़ी ए। अनमुल्लड़ा एह लाल, एहदी शब्द सच्ची वाड़ी ए। प्रभ भया कृपाल, लाज रक्खे एहदी दाढ़ी ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घोड़े रिहा चाढ़ी ए। जन भगत तेरी वड्याईआ। गुर चरनी चित लाया, लोक लज्जया भगत तजाया। दर घर साचा हरि हरि पाया, आत्म घर वज्जी वधाईआ। गुर संगत मिले साची सखीआं, साचा मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गरीब निमाणा जगत निताणा बेमुहाणा फड़ बाहों बन्ने लाईआ। जिस दा कोई मात ना वाली ए। प्रभ बणदा आप रखवाली ए। फ़ल लगाए काया डाली ए। जगे जोत इक्क अकाली ए। एह धुर दी अवल्लड़ी चाली ए। गुरमुख साचे

जोड़ी जुड़दी, लिखी रेख ना कदे मुड़दी, सृष्ट सबाई जांदी रुड़दी, ना मिलदा कोई पाली ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवण आया एका नाम सच्चा धन सच सच्चा धन माली ए। नाम ख़ज़ाना वंडण आया, हरि वडा शाह सुल्ताना। बेमुखां कलि फंडण आया, फड़ सोहँ तीर कमाना। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां चण्ड प्रचण्डन घर घर रंडन करन आया, लाड़ी मौत बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भगत जनां दर देवे वर, ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ पाए वंड जेरज अंड जूठे झूठे भाण्डे भन्नण आया। मंगी नाम इक्क भिख, प्रभ चरन द्वार। साची रेख प्रभ दए लिख, बण बण लेख लिखार। जगत मिटाए तृष्ना तृख, शब्द भरे भण्डार। अन्तिम लाहे माया विख, कर्म धर्म विचार। गुरमुख गुरसिख साचा सिक्ख, सिक्खी सिख्या सर्ब प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म देवे ठण्ढी धार। अमृत पिया जगत जिया मिल्या पिया बीज बीजे बीआ, ना कोई जड़ सके उखाड़। नेत्र लोचन तीजा दीआ, आत्म जोती जगया दीआ, आप आपणे जिहा कीआ, भरम भुलेखा दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला करे प्यार, चरन दासी चरन प्यार। तूं तूं कर पुकारदी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, तूं तूं वाजा मारदी। आपणी जोत आत्म धर, मेरी काया औगुण हार दी। शब्द भण्डारा भर, मैं
५१६ दुहागण नार संसार दी। चरन वणजारा बण कर, मंगी एका सिक्ख तेरे दीदार दी। जन्म कर्म पार उतारा कर, गुण अवगुण ५१६
०५ मन मती ना विचारदी। साचा शब्द साचे घर अधारा कर, रक्खे लाज चरन प्यार दी। साचे घर शब्द जैकारा कर, मिट्टे ०५
रैण अन्धेरी धुँदूकार दी। आपणा दीप उज्यारा घर साचे हरि कर, किरपा कर स्वच्छ सरूपी दरस अपार दी। फड़ फड़ खड़ खड़ बहि बहि गई थक्क, अमृत फ़ल ना गया पक्क, दूर दुराडी नौ द्वार आपे पई विचारदी। करे निबेड़ा अन्तिम हक्क, चढ़ां पौड़ी सच्ची सरकार दी। आपणी गोदी लए चक्क, होवे मेहर तेरे सच्चे दरबार दी। शब्द पाईं नकेल नक्क, कुंजी देवीं दस्म दुआर दी। भरम ना रहे कोई शक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दासी होई रासी बन्द खुलासी, पार उतारा चरन प्यारा, इक्क वणजारा दोहरी धारा, आपे डोबे आपे तारदी। तारन आया तारनहार, गुरमुख चरन द्वार। मानस जन्म संवारन आया देवे शब्द उडार। साचा घर इक्क वसावण आया, खोल्ले बन्द किवाड़। अमृत मेघ बरसावण आया, सीतल करे बहत्तर नाड़। आपणा दामन आप फड़ावण आया, शब्द घोड़े देवे चाढ़। धुर दरगाही जामन आपे होए सहाया, जंगल जूह उजाड़ पहाड़। मस्तक टिक्का लाहवण आया, बिधना लिखी रेख, चरन पीती जो जन कमाया, आपे होया पिछे अगाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आप सजाए धुर दरगाही साचा लाड़। जग करता प्रभ आप, करन करावण जोग। वख करता प्रभ आप, लेखा लिखे धुर संयोग। नाम धरता प्रभ आप, आत्म रसना देवे भोग। घट घट दाता आप, ना होए कदे विजोग। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्तर जोत धर, जन भगतां मेला धुर संजोग। भगत मिलाए मेल, कलि जोती नूर उपाया। शब्द दुआरा वेख, घर नादी नाद वजाया। पंजां चोरां चूर कर, शब्द अगाधी झोली पाईआ। सर्बकला भरपूर हरि, बोध अगाधी नाम रखाया। आसा मनसा पूर दर, दर दरवेशा जो जन आया। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण घट घट प्रवेशा, दिस किसे ना आया। ना दीसे ना दिसण योग, सच महल्ल वसेरा ए। सृष्ट सबाई रसना रस रही भोग, आत्म रस किसे ना पाया ए। हउमे तृष्ना लग्गा रोग, नैण मुँधारा साँवल कृष्ना दिस किसे ना आया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया ए। रंग रतड़ा लाल, प्रभ साचा भेख वटाउँदा ए। दो जहानी जगत जलाल, प्रभ साचा संग निभाउँदा ए। संत सुहेले भाल, प्रभ अमृत जाम प्याउँदा ए। दीपक जोती धर मस्तक थाल, प्रभ अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। सर्ब जीआं दर कंगाल, प्रभ तन मन्दिर अलख जगाउँदा ए। पूर्ब कर्मा कर विचार, प्रभ नाम भिच्छया पाउँदा ए। मानस देही जन्म संवार, प्रभ हँस आप बणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखी भेख वखाउँदा ए। भेखी भेख अवल्लड़ा, भेव किसे ना पाया। आपे वसे इक्क इकल्लड़ा, जोती नूर करे रुशनाया। साचा धाम सच दुआरा पुरख अबिनाशी एका मल्लड़ा, सच सिँघासण आसण लाया। त्रैगुण माया कोई ना दिसे पल्लड़ा, असुत्ते प्रकाश कराया। शब्द सुनेहड़ा एका एक घल्लड़ा, त्रै लोआं धार बंधाया। आप फड़ाए आपणा पल्लड़ा, जोती देवे जगत सबाया। दर दुआरे अग्गे खलड़ा, दिस किसे ना आया। पंचां चोरां कीता हल्लड़ा, मनमुखां सार ना पाया। आपे सुत्ते डूंघी डल्लड़ा, अन्ध अन्धेर रखाया। गुरमुख विरले संत जन संत सुहेले मीत हरि दर दुआरा एका मलड़ा, पुरख अबिनाशी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलि भेखी भेख वटाया। कलिजुग धारे भेख, जोत निरंकारया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, प्रभ आप दिस किसे ना आ रिहा। नौ दुआरे लिखी जगत रेख, कलिजुग साचा कर्म कमा रिहा। गुरमुख साचे आत्म बुध रहे बिबेक, चरन प्रीती इक्क रखा रिहा। शब्द रखाए साची टेक, आत्म अतीती हरि हिरदे विच वसा रिहा। जगत माया ना लाए सेक, काया सीतल सीती अमृत धार मुख चुआ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, भेख पखण्डा चारों कुन्ट दिसा रिहा। कलिजुग भेख पखण्ड, घर घर वस्सया। कलिजुग जीव नार दुहागण रंड, प्रभ मेला किसे ना दस्सया। प्रभ अबिनाशी वेख वखाए खोज

खुजाए विच ब्रह्मण्ड, पुरीआं लोआं फिरे नस्सया। खाणी वेखे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज बहि बहि हस्सया। आपे करे आपणी वंड, सोहँ तीर निराला कस्सया। सोहँ फड़े चण्ड प्रचण्ड, मेट मिटाए कलिजुग रैण अन्धेरी मस्सया। सृष्ट सबाई खण्ड खण्ड, माया नागणी सभ जग डस्सया। मनमुख जीवां देवे दंड, जन भगतां हिरदे अन्दर वस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, करे जोत प्रकाश कोटन कोट रवि सस्सया। रवि ससि भान तेज, जगत जवाया। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, साची करनी किरत कमाया। शब्द सिँघासण बैठा साची सेज, साचा धाम हरि सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे पृथ्वी आकाश, आकाश अकाशां विच समाया। पृथ्वी आकाश अकाश अकाशा। पारब्रह्म प्रभ पुरख अबिनाशा। ना मरे ना पए जम्म, आपे जाणे आपणी रासा। जुगां जुगन्तर करे कम्म, वेखण आए जगत तमाशा। जीव गंवारी आत्म हँकारी जूठे झूठे भाण्डे देवे भन्न, किसे हथ्थ ना दिसे माया कासा। जन भगतां देवे नाम धन, चरन प्रीती धुर भरवासा। एका राग सुणाए कन्न, रती ना उब्बल मासा। दो जहानी बेड़ा जाए बन्न, हरि हरि साचा शाहो शाबासा। धर्म राए ना देवे डन्न, चित्रगुप्त होए दासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, किसे दिस ना आए, आपे जाणे जाण पछाणे जन हरि हरि हरिभगत करे जन्म रहिरासा। हरिजन हरि घट वेख, घट घट मौलया। नेत्र लोचन साचे पेख, उलटी नभी नाभ कवलया। आपे लेखा लिखे रेख, देवे माण उप्पर धवलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, किसे दिस ना आए सुन्दर साँवलया। साँवल सुन्दर मीत मुरारा, नैण मूंदन सद रहिंदा ए। इक्क कराए वणज वापारा, साचे तख्त बहिंदा ए। भगत जनां हरि कर्म विचारा, लहिणा देणा दहिंदा ए। धर्म कराए शब्द जैकारा, कूड़ कुड़यारा ढहिंदा ए। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अपारा, सच सुनेहड़ा देंदा ए। जगे जोत अगम्म अपारा, सृष्ट सबाई वज्जे वधाई पावण आया नेंदा ए। करे कराए आपणी कारा, नौ खण्ड पृथ्वी आप भवाए गेंदा ए। मारे डण्डा शब्द करारा ए। वेख वखाणे सागर सिन्धा, उच्चे पर्बत ढाहे किनारा ए। ना कुछ खाए ना कुछ पींदा, सृष्ट सबाई देवणहारा ए। जोत अधारी आपे जींदा, अट्ठे पहर रहे उज्यारा ए। लक्ख चुरासी बीज बींदा, ब्रह्मा लाए सच फुलवाड़ा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वेखण आया इक्क अखाड़ा ए। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे अखाड़ा, प्रभ साची बणत बणाउँदा ए। वक्त सुहाए सतारां हाढ़ा, जीव जन्त साध संत सर्ब कुरलाउँदा ए। जगे जोत बहत्तर नाड़ा, ना कोई मात बुझाउँदा ए। काल चबाए आपणी दाढ़ा, लाड़ी मौत नाल रलाउँदा ए। धर्म राए दा भरे वाड़ा, राजा जनक खाली कराउँदा ए। चारों कुन्ट फिरे अगम्मी

धाड़ा, जीव जन्त सभ कढ्ढे हाढ़ा, ना पल्लू कोई फड़ाउँदा ए। लुट्टया जाए माल धन्न दिन दिहाड़ा, अग्गे हो ना कोई छुडाउँदा ए गुरमुख साचा साचा लाड़ा, प्रभ शब्द घोड़े आप चढ़ाउँदा ए। आपे होए पिच्छे अगाड़ा, दिवस रैण तरस कमाउँदा ए। बजर कपाटी लाए पाड़ा, औखी घाटी आप चढ़ाउँदा ए। शब्द वखाए साची हाटी, चौदां हट्टां फोल वखाउँदा ए। दुरमति मैल रिहा काटी, जो दर आए सीस झुकाउँदा ए। जोत जगाए मस्तक लिलाटी, सति प्रकाश कराउँदा ए। अमृत आत्म देवे काया बाटी, दस्म दुआरी ताल सुहाउँदा ए। हरिजन साचा निझर रस रिहा चाटी, निजानंद समाउँदा ए। दूसर ना कोई तीर्थ ताटी, अट्ठ सट्ठ वेख वखाउँदा ए। अमृत आत्म काया माटी, प्रभ साचा जाम प्याउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख दर, आप आपणे रंग रंगाउँदा ए। रंग वटाए जगत प्रभ, वेखे सर्ब लोकाई। संग निभाए भगत प्रभ, होए मात रुशनाई। आत्म देवे शक्त प्रभ, सोहँ साच जाप जपाई। लेखे लाए बूंद रक्त प्रभ, हड मास नाड़ी दया कमाई। होए सहाई वेखे वक्त प्रभ, कलिजुग रैण अन्धेरी छाँई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, शब्द सुणाए राग कन्ना, देवण आया सच सच्ची वधाई। मिले वधाई सच घर, हरि प्रभ साचा पाया। होए जुदाई नौ दर, तृष्ना भुक्ख ग्वाया। अमृत नुहाए सच सर, भरमा मैल गंवाया। पंजां चोरां चुक्के डर, प्रभ शब्द ताज सीस पहनाया। करनी किरत धरनी धिरत जन रिहा भर, सच सीरत मुख चुआया। लक्ख चुरासी पीड़े पीड़त, धर्म राए गल फाँसी पाया। ना कोई जाणे हस्त कीड़त, जोत निरँजण जोत जगाया। भगत जनां हरि बन्हे बीड़त, वरन गोत ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, जगत विचोला बण के आया। शब्द विचोला जगत कर, लेखा धुर दरगाही दा। सोहँ बोला मात धर, सोहँ साचा मात वड्याई दा। कलिजुग तोला आप हरि, लेखा आपणे हथ्थ रखाई दा। काया चोला वेख सभ, भोले भाउ गोबिन्द मिलाई दा। नाम झूला दए सभ, पार किनारा आप कराई दा। प्रगट जोत जोत झब्ब, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाई दा। उलटी करे कँवल नभ, अमृत आत्म मुख चुआई दा। हरि संत सुहेले लए लभ्भ, तन मन्दिर खोज खुजाई दा। धन्न माल माल धन्न घर साचे देवे दब्ब, कुंजी आपणे हथ्थ रखांयदा। वड दाता सूरा सरबग, दयावान दयानिध आप अख्वांयदा। मनमुख पकड़ पछाड़े शाहरग, रामा रावण जिउँ खपांयदा। जूठा झूठा तोड़े तग, कृष्ना कंसा आप मिटांयदा। गुरमुख विरला चरन प्रभ जाए लग्ग, पाए दरस रघुपत रघुराई दा। जगत बुझाए तृष्ना अग्ग, हरि हरि रसन साचा गाई दा। शब्द ताल तन जाए वज्ज, मुन सुन आप तुड़ाई दा। आपदा पड़दा लए कज्ज, शब्द सुरती हज्ज कराई दा। आपे रक्खे

घर साचे लज्ज, नौ दुआरे बन्द रखाई दा। शब्द सिँघासण चढ़ना भज्ज, गुरमुख साचे राह वखाई दा। लोक लज्जया देणी तज, पति पतिवन्ता साचा कन्ता पुरख अबिनाशी साचा माही फिर पाई दा। सच दुआरे बहिणा सज, लेखा चुक्के मक्का काअबा हाजन हज्ज, अंज़ील कुराना वेद पुराणां खाणी बाणी राग अनादा बोध अगाधा दिवस रैण प्रभ मन्दिर साचे गाई दा। जगत तृष्ना देवे तज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, इक्क वखाए साचा घर, आत्म सेजा शब्द शृंगार। फूलन बरखा प्रेम प्यार, अमृत धार ठण्ढी ठार। पवण उनन्जा छत्र झुलार। जोत निरँजण इक्क आकार, मिले मेल कन्त सुहागी नार। रैण सबाई वज्जदी रहे वधाई, साचा मंगल गाई दा। अट्ठे पहर ना होए जुदाई, प्रभ पूरे करे मात कुड़माई, जोती जोत मिलाई दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख दर, साचा संग निभाई दा। साचा संग निभावण आया, हथ्थीं बन्न्हे गाना। नाम रंग चढ़ावण आया, सोहँ बणे निशाना। वड दाता सूरा सरबग अख्वावण आया, वेख वखाया राजा राणा। शब्द घोड़े कस तंग चारों कुन्ट दुड़ावण आया, नाम वजाए सच मृदंग। दहि दिशा आप सुणावण आया, जोती जोत सरूप हरि, गढ़ हँकारी तोड़न आया, गुरमुख विछड़े जुगो जुग जोड़ी जुड़ावण आया, सच दुआरा जिस जन ल्या मंग। मांगण को एका भगवान, देवे सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई जिया दान, भेव ना जाणे राईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा विच जहान, भेव ना पाए राईआ। पढ़ पढ़ थक्के चारे वेदा, चारे मुख ब्रह्मा गाईआ। वेद व्यासा लिखे क्तेबा, पराण अठारां रिहा समझाईआ। कथनी कथा कर कर थक्की जिह्वा, भगवन्त अन्त संत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, जुगा जुगन्तर खेल रचाईआ। जुगा जुगन्तर खेल साची कारा, जुग जुग करदा आईआ। लोकमात लए अवतारा, भेव किसे ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल अपारा, बाई वारां जोत जगाईआ। बोध अगाधा आप करतारा, कलिजुग रचन रचाईआ। अन्तिम वेखे धुँदूकारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। संग मुहम्मद चार यारां, मिल्या वर अपर अपारा, अल्ला राणी वेल वधाईआ। मूसा ईसा कर त्यारा, दन्द बतीसा करे विचारा, सच हदीसा ना कदे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लए मात अवतारा। निहकलंक नरायण नर, लए मात अवतार चौबीसा। रसना किसे ना सके कहण दर, ना कोई गाए दन्द बतीसा। जेरज खाणी आत्म सतया गई हर, लेखा चुक्के राग छत्तीसा। चारों कुन्ट आउँणा डर, अल्ला राणी विच उनीसा। पए स्यापा घर घर, सम्मत अठारां खाली खीसा। माई बापा ना मिले वर, करे कराए बीस इक्कीसा। जोती जोत सरूप हरि, आप

५२३ ०५

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका छत्र झुलाए जगत पित जगदीस आपणे सीसा। जगत पित जगदीस, छत्र झुलावणा। लेखा चुक्के बीस इक्कीस, आप आपणा रंग वखावणा। कवण करे प्रभ तेरी रीस, भेव किसे ना पावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, दे मति शब्द तत्त जगत भगत भगत जगत आप समझावणा। हरिसंगत हरि रंग माणया। हरि दुआरे होई मंगत, आपणा आप पछाणया। कटे जगत दुआरे भुक्ख नंगत, देवे माण निमाणया। दर दुआरे साची पंगत, साचा देवे नाम खाणया। मेट मिटाए रोग हँगत, मारे सोहँ तीर सच्चा बाणया। मान देही ना होए भंगत, आप चुकाए झूठी काणया। इक्क चढ़ाए नाम रंगत, ना कोई सके जीव पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे इक्क वर, धुर दरगाही गुणवन्ता गुण निधानया। नाम धन्न वर लै के जाणा, प्रभ साचा दया कमांयदा। दो जहानी बहि के खाणा, आवण जावण गेड़ कटांयदा। गुर संगत साची बहि के जाणा, रंगण रंग मजीठ चढ़ांयदा। धन्न धन्न धन्न गुरदेव रसना लाई शब्द सेव, हरि हरि रसना कहि के जाणा, जोत निरँजण अलख अभेव, वड दाता देवी देव, देवा देव आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, गुरमुख साचे विदा करांयदा। दीर्घ रोग जगत है, आत्म तृष्ना अग्ग। धर्म संजोग गुरू भगत है, हरिजन जाए लग्ग। लेखे लाए बूंद रक्त है, हँस बणाए कग। आत्म जोती देवे शक्त है, दरस दिखाए उप्पर शाहरग। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप वड दाता सूरा सरबग। जगत विकारा रसना भोग है, मन तन हरया जित। गुरद्वार सदा विजोग है, पंच खेले नित नवित्त। गुरमुख विरले धुर संजोग है, प्रभ साचा मिल्या मित्त। देवे दरस अमोघ है, ना कोई जाणे वार थित्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे तारे कर कर हित्त। जगत विकारी अन्ध है, अन्ध अन्धेर अज्ञान। पापां आत्म गन्द है, जूठ झूठ निशान। माया मती धन है, शब्द भुल्लया गुण निधान। जगत जंजाला हथ्थकड़ी कीता बन्द है, तुटयां माण ताण। रसन विकारा मास गन्द है, मनमुख मैले खाण। शब्द स्वास वरोले गुरमुख बत्ती दन्द है, आप जणाए जाणी जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे ब्रह्म ज्ञान। जगत विकारा तत्त है, तत्त दुआरे नीत। गुर की राह सति है, करे कराए चरन प्रीत। चरन प्रीती साचा नत्त है, ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत। आत्म धीरज सति संतोखी यति है, सदा सद राखो चीत। वेले अन्तिम रक्खे पति है, मानस देही जाणा जीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क गाए सुहागी गीत। जगत विकारा कर्म, जन कमांयदा। शब्द जैकारा धन्न, गुरमुख दुआरा मात वखांयदा। चार वरन दुआरा इक्क मिटाए भरम, पुरख अबिनाशी आप मिटांयदा। लक्ख

५२४
०५

चुरासी एका ब्रह्म, ब्रह्म रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगांयदा। हरि साजन सुखवन्त है, जीव जन्त अधार। दर राज राजन भगत है, पारब्रह्म पुरख अपार। हरिजन साचा संत है, सोहे गुर गोबिन्द गुर चरन द्वार। अन्तिम वेला जीव जन्त है, मस्तक धूढ़ ख़ाक मिले जगत प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे देवणहार दातार। चरनोदक चरन धूढ़ हरि जन अमृत पी। अमृत आत्म साचा सर, सदा सदा ठण्ढा थी। इक्क वसाए आपणा घर, लोकमात रखाए नींह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आत्म बीज साचा बी। आत्म बीज बोए, शब्द भगवानया। तन मन हरया होए, उपजे ब्रह्म ज्ञानया। खेल खेल साची सोए, भुल्ले जगत निशानया। अवर ना दीसे हरि बिन कोए, गोबिन्द गुर गोबिन्द एका धाम रखानया। नूर उजाला आत्म होए, अज्ञान अन्धेरा दूर करानया। करनी किरत करे जो होए, ना जाणे जीव निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस कर तरस मेहरवानया। मेहरवान मेहरवान गुर मीत। दयावान दयावान जगत प्रीत। सदा सदा सदा अटल, ऊँचां नीचां ठांढा सीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आत्म देवे अमृत पतित पुनीत।

★ पहली माघ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर नवित्त हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

पुरख अगम्म अपार अपर अपारया। आपे आप खसम खसम नर निरंकारया। जोती नारी पिरम प्यारी पावे आपे सारया। तन श्रृंगारी फूलनहारी खेल घर बाहरी, भेव कोई ना पा रिहा। दोहां मेल दर दरबारी, सति संतोखी सच विहारी, दूसर ना कोई संग रखा रिहा। साची सेजा अपर अपारी, पुरख अगम्मा साचा कन्त जोत निरँजण साची नारी, एका धाम सुहा रिहा। ब्रह्म पार हरि करतार निरविकार आप आपणा आप उपा ल्या। जोती कन्ती कन्त बेअन्ती, एका धाम सुहंती, एका रंग रंगा रिहा। अंक अंक अंक पुरख पुरख पुरख जोती जोती नारी सुहाया द्वार बंक, ना कोई जाणे ब्रह्म विचारी। आप आपणी खेल करे अंक, हरि नर नरायण निरँजण निज़ घर पसर पसारी। जोती जोत सरूप हरि, सति पुरख निरँजण भेव ना राया, आपे जाणे आपणी धारी। जोती पुरखा मेल मिलाया। पुरखा जोती अंक सुहाया। अंका जोती तन कमाया। पुरख अबिनाशी दया कर, साचा सुत इक्क उपजाया। अगाध बोध बोध अगाधा नाउँ रखाया। जोती माता ख़ुशी मनाई। सुत सुत साचा शब्द गोद उठाई। साचा शब्द प्रगट होया, मिली मात वधाई। आदि पुरख निरँजण स्वामी आपणी रचना आप रचाई। शब्द पूत होया बलवान। लोआं पुरीआं इक्क ध्यान। कोई ना दीसे किसे निशान। कोई ना दीसे खाणी बाणी,

कोई ना दीसे ज़िमी असमान। कोई ना दीसे राजा राणा, कोई ना दीसे शाह सुल्तान। कोई ना दीसे जीव जहानी, कोई ना दीसे पीण खाण। एका एक पुरख पुरखोतम चरन दासी जोती नार। साचा शब्द साचा सुत दर दिवस रैण करे प्यार। आप आपणी रचन रचाई, शब्द सुत करे निमस्कार। माता जोती देत अधार, पित पुरखोतम प्रभ पावे सार। एका देवे बाल अधार। जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी पाए वंड, आपे रक्खे तेरा अधार। साचा सुत सीस निवाए। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाए। माता जोती खुशी मनाए। साची रुत्त मस्तक टिक्का साचा लाए। जोती पुरखा एका कर्मा एका धर्मा एका सुत एका ब्रह्मा ब्रह्मण्ड विच समाए। शब्द सुत करी विचार। एका मंगां साची मंग, प्रभ अबिनाशी देवे तार। ना कोई दीसे दूजा संगा, दो जहानां मीत मुरार। जोती पुरखा अंगा संगा, एका बख्शे चरन प्यार। पुरख अगम्मा सुण पुकार, शब्द सच्ची जणाई। साचे सुत कर अकार, प्रभ साचा रिहा तकाई। त्रैगुण माया कर त्यार, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाई। सुत शब्द करे वापार, नौ निध बणत बणाई। जोती जामा करे निमस्कार, मात शक्ती वज्जे वधाई। त्रैगुण माया सच्चा तत्त विचार, चरन धूढ़ दए मस्तक लाई। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आपणी बणत रिहा बणाई। शब्द सुत भया वैराग। त्रैगुण माया कवण लगाए जाग। दूसर कोए दिस ना आया, कवण पकड़े मेरी वाग। जोती पुरखा सुत ना जाया, कोई ना दूसर दीसे राग। जोती माता देवे मति। त्रैगुण माया प्रभ चरनी नत्त। प्रभ चरन धूढ़ जोती रत। जोती रत उपजे साचा सुत। साचा सुत मेरे अन्दरे तत्त। पिता पूत पुरखा एका एक यति। पुरखा जोती जोती पुरखा एका बद्धा सच्चा नत। माता सिख्या सच दिलाई। साचे सुत सेव कमाई। पुरख अगम्मा चरन धूढ़ मस्तक लाई। मस्तक धूढ़ साची शाही माता जोती दए लगाई। माता जोती खुशी मनाई। साचा सुत लए उपजाई। साचा सुत पारब्रह्म अचुत आपे रिहा बणाई। ना कोई जाणे अदभुत, कँवल नाभी बाहर कराई। आप सुहाए आपणी रुत्त, ब्रह्मा पुत्त जोती जाई। जोती पुरखा आदि आदि आदी आदि रिहा बणत बणाई। त्रैगुण माया कर्म कमाया। ब्रह्मा सुत जोती जाया। शब्द पुत्त खुशी मनाया। पारब्रह्म अचुत्त दे मति रिहा समझाया। साचा मेला एका घर, साचे शब्द सुणाया। आप खुल्हाया आपणी हथ्थीं दर साचे मन्दिर आप बहाया। ब्रह्मा भेव ना पावे सार, कवण बिध प्रभ रिहा कराया। शब्द सुत गया अन्दर वड़, भाईआ भाईआ मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी वेखे खड़, साची रचना रिहा रचाया। जोती पुरखा कन्ता नारी, सुत असुत वेख विचारी, शब्द प्रकाश रिहा कराया। शब्द सुत प्रभ दए जणाए। हरि शब्द लोआं पुरीआं दए मिटाए। ब्रह्मा वेखे खुल्हा वेहड़ा, चारे मुख अट्ठे नेत्र दूसर कोई दीसे नाहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे हिसे

रिहा पाए। शब्द सुत रसना गा उचारे। चारे वेद ब्रह्मा उपजाए, चारे जुगा रखाए। सतिजुग त्रेता द्वापर जाए। कलिजुग अन्तिम नेड़े आए। प्रभ अबिनाशी जामा पाए। जगत झेड़े रिहा मिटाए। नगर खेड़े रिहा ढाहे। भगत बेड़े बन्न वखाए। सृष्ट सबाई उलटे गेड़े कलिजुग लठ रिहा गिढ़ाए। राज राजानां लए फड़, शाह सुल्तानां भञ्ज कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम नठ्ठ नठ्ठ, घट घट अन्दर वेख वखाए। वेखे चार दिवारी, चारे जुग आपा किल्ला बणाया ए। जूठी झूठी चार यारी, काली रैण अन्ध अंध्यारी, सच सुच्च नज़र ना आया ए। माया राणी दए बहारी, सृष्ट सबाई वहिंदी धारी, कोई ना जाणे नर अवतारी, प्रभ साचे भेव ना पाया ए। वेले अन्तिम होए ख्वारी, ना कोई दिसे शाह सवारी, हाहाकार जगत कराया ए। भगत जनां प्रभ पाए सारी, दया कमाए वारो वारी, जोत निरँजण कर उज्यारी, शब्द सरूपी रिहा जगाया ए। संत सुहेला मीत मुरारी, कलिजुग मेला अन्तिम वारी, गुर चेला आप अख्वाया ए। उव्चे मन्दिर ढाहे अटारी, ना कोई दीसे बंक द्वारी, महल्ल अटारी नज़र ना आया ए। जीव जहाना होए विभचारी, नार दुहागण कन्त विसारी, साध संत जूए बाजी हारी, साची दाद किसे हथ्थ ना आया ए। जगे जोत अगम्म अपारी, जगत मुदारी कलिजुग तेरी काली धारी, काला दाग़ किसे ना लाहया ए। नर नरायण खेल अपार, लहिणा देणा विच संसार, भाणा सहिणा गुर चरन द्वार, साचा हुक्म सुणाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे जुग चार दिवारी आपे ढाहया ए। चार जुग प्रभ चाकरी, जुग जुग करदा आया। कलिजुग धारे भेख रेख वेख कर्म धर्म बिरद आपणा रक्खदा आया। सृष्ट सबाई वेख वेख, मानस देही भगत जनां दे मति समझावण आया। अपणी किरपा आपे करदा, जीव जन्त सर्ब दोषी धरदा, बैठा रहे सद ख़ामोशी, सृष्ट सबाई बुलावण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुनेहड़ा साचा गुर धुर दरगाही लै के आया। धुर फ़रमाणा प्रभ साचा मात ल्याया ए। आप मिटाए राजा राणा, पड़दा उहला रहण ना पाया ए। पकड़ उठाए चतुर सुजाना, साधां संतां रिहा सुणाया ए। प्रगट जोत वाली दो जहानां, ब्रह्म रिहा मिलाया ए। मारे तीर इक्क निशाना, शिव शंकर सीस झुकाया ए। जोती जगे हरि बलवाना, सुरपति राजे इन्द तख्त तजाया ए। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, हर घट में रिहा समाया ए। आपे जाणे आपणा भाणा, भाणे अन्दर लोक सबाया ए। आपे जाणे पीणा खाणा, खाणा पीणा आप बणाया ए। आपे जाणे मरना जीणा, जीणा मरना रचन रचाया ए। आपे जाणे लोकां तीनां, तीनां लोका आप अपनाया ए। आपे जाणे राम रुमीका, अवणा गवणा भेव ना राया ए। आपे जाणे पातालां भूमिका, भूमी भरता आप अख्वाया ए। आप जाणे जोती नूर नूरका, नूरी नूर उपाया

ए। आपे जाणे शब्द तूर तूरका, शब्द अधारी आप अख्वाया ए। आपे होए आसा मनसा पूरना, दयावान सुखदाया ए। आपे आप प्रभ कला भरपूरका, भरमा भरम मिटाया ए। आपे आप नेड़े दूरका दूरों नेड़े नेड़ आया ए। आपे होए जोधा सूरका, सूरबीर आप अख्वाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुनेहड़ा धुर दरगाही अन्तिम मात लै के आया ए। शब्द सुनेहड़ा लै के आया, देवे राज राजाना नूं। धुर दरगाही कहि के आया, मेटां जगत निशानां नूं। सोलां कलां कलि लै के आया, चार भुजां बली बलवाना नूं। साचे तख्त सिँघासण बहि के आया, आपे जाणे आपणे कामा नूं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जाणे आपणी शानां नूं। राज राजानां दए जगाए, प्रभ फेरा मात पाया ए। शाह सुल्तानां दए उठाए, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया ए। पहली चेत्र खुशी मनाए, संगरूरीं चरन छुहाउँणा ए। दूजी चेत्र धर्म कमाए, शाह पटियाल हिलाउँणा ए। तीजी चेत्र जोत जगाए, फरीदकोट हिलाउँणा ए। चौथी चेत्र खेल रचाए, सिँघ ईश्र फड़ जगाउँणा ए। पंचम चेत्र भरम मिटाए, सिँघ रणधीर भरम मिटाउँणा ए। छेवें चेत्र कर्म कमाए, सिँघ मेहर प्रभ काया खेत्र फोल फुलाउँणा ए। सत्तवें चेत्र सति पुरख निरँजण, कपूरथला वक्त सुहाउँणा ए। अठवें चेत्र वेखे नेत्र, तट्ट ब्यासा मेट मिटाउँणा ए। नावें चेत्र लाए चित, सिँघ तेजा लाभ उठाना ए। सैद पुरे दी लाहे विस्स, प्रभ साचे कर्म कमाणा ए। दसवें चेत्र दहि दिश धार, दास हरनाम तेरी पावे सार, सिँघ हरनाम आप हिलाणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाणा ए। पहली अस्सू आस रखाउँणी, सिँघ प्रताप सुरत जगाउँणी। दूजी अस्सू शब्द जगाउँणी, सिँघ कृपाल खुशी मनाउँणी। तीजी अस्सू दरस अपार, चरन छुहाए दिल्ली दरबार। आप आपणी जाणे सार। पंचम सिक्ख करे प्यार। छेवां लेखणी लिखणहार। सत्तवां रक्खे सांझा यार। दूसर ना कोई मीत मुरार। ना कोई सका सुहेला नारी नार। सर्ब जीआं प्रभ आपे दाता, देवणहार सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धार। दयावान दयावान दयावान सर्ब सुखदाईआ। भगवान भगवान भगवान हरि अख्वाईआ। जिया दान जिया दान जिया दान सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रीती आपणे हथ्थ रखाईआ। सर्बकला समरथ हरि रघुबंस्सया। आप बणाए साचा बंसा, विष्नूं वंस जगत सरबंसा, दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंसा, भगत अधारे विच सहँसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल गुणवन्त गुणवन्तया। असू तिन्न धर्म द्वार, प्रभ साचा दया कमाए। शब्द सीस जगदीस प्रभ कर त्यार, वाली हिन्द फड़ाए। सोहँ ताज नौ खण्ड पृथ्वी राज सच निशान रखाए। कर्म अवाज़ रक्खे लाज, सति सतवन्त कराए। प्रगट जोती देस माझ, सृष्ट

सबाई संवारे राज, सृष्ट सबाई डोरी आपणे हथ्थ रखाए। भारत खण्ड तेरी रक्खे लाज, निहकलंक जोत जगाए। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग हरिभगत दे मति आप समझाए। सोहँ ताज हरि बणाउँणा। अक्खर वक्खर चार, साचा काज आप कराउँणा। जाए दिल्ली दरबार, जगत सांझ इक्क वखाउँणा। चार वरन इक्क प्यार, जोती जोत सरूप हरि, साचा राज इक्क कराउँणा। ऊँचां नीचां भेव निवार, वरन गोत जाति पाती भरम मिटाणा। इक्क कराउँणा जै जैकार, धुर दरगाही धुर फ़रमाणा। करे कराए ख़बरदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल नर निरँकार। दूसर वस्त इक्क अमोल, पुरख अबिनाशी रक्खे कोल। सोहँ शब्द सदा अडोल। दो जहानी रिहा पड़दे खोल्ह। भगत सुहेले दस्से बोल। इक्क इकेले पड़दे खोल्ह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे तोले पूरे तोल, हरि निशाना हरि बणाउँणा। सोहँ उप्पर लेख लिखाउँणा। काली धार नाल जुड़ाउँणा। चिट्टा अक्खर आपे पाउँणा। कर कर वक्खर, लोकमाती विच रखाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वखाउँणा। किरपा करे तीजी वार। जोत सरूपी अपर अपार। चिट्टा जोड़ा हरि दातार। ना मिट्ठा ना दिसे कौड़ा, सर्ब जीआं दा सांझा यार। धुर दरगाही एका पौड़ा, ऊँचां नीचां दए निवार। धुर दरगाही आए दौड़ा, वेखे खेल अपर अपार। प्रगट होए ब्राह्मण गौड़ा, निहकलंका नर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस इक्कीसा हरि जगदीसा चरन छुहाए दया कमाए, जोत सरूपी जामा धार। चौथा रंग रंग कराए। शब्द मृदंग इक्क वजाए गऊ गरीब निमाणया भुक्ख नंग कट्ट वखाए। आप जणाए शाह सुल्तानां, राजे राणया सृष्ट सबाई संग रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द घोड़े तंग कसाए। शब्द घोड़ा कर त्यार। सोहँ डण्डा फड़े हथ्थ सरकार। नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंडां, खिच्ची जाए वारो वार। वेख वखाए जेरज अंडा, कोई ना करे मात उधार। मेट मिटाए भेख पखण्डा, वरनां बरनां वसे बाहर। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, वाली हिन्द करे ख़बरदार। इक्क वखाए साची वंडा, शब्द डण्डा दिल्ली दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे घर चार दिवार। पंचम पंचां लेख लिखाउँणा। शब्द कमान इक्क वखाउँणा। जीव जहानी भेव ना पाउँणा। राज राजानां मुख छुपाउँणा। शाह सुल्तानां दुःख उठाउँणा। आप आपणी जोत धर, उज्जल मुख जगत कराउँणा। भगत जनां हरि देवणहार, देवे मात वड्याईआ। एह बणाए शब्द श्रृंगार, साचा लेख रिहा लिखाईआ। त्रै कुन्ट वेखे वेख विचार, चौथी नाभ आप रखाईआ। उप्पर रखे सोहँ धार, अचरज बणत बणाईआ। आपे वसे अद्धविचकार, विष्नूं रूप वटाईआ। भगवन जोती नर निरँकार, जोत सरूप आप अख्वाईआ। वरन गोती वसे बाहर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ।

कंचन अक्खर कर त्यार, पुरख अबिनाशी पहली वार दिल्ली दरबार भेंट चढ़ाईआ। प्रगट होवे नर निरँकार, बीस इक्कीसा पावे सार हरि रघुराईआ। छत्र झुलाए अपर अपार, माणक मोती जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख सोहे चरन द्वार, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। राउ रंक ना कोई विचार, राजा राणा कोई दिस ना आईआ। जोत निरँजण इक्क अकार, सर्ब निमाणा जीव अख्वाईआ। तन पहनाए शब्द कटार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज रीत मात चलाईआ। देवे वस्त घर साचे दात, रखणी मात संभाल। बीस इक्कीसा पुच्छे वात, सृष्ट सबाई खाए काल। प्रगट होए कमलापात, तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी चाल। जगत कराए काज देस माज्झया। जन भगत लगाए अवाज़, सोहँ साजन साज्जया। लोकमात रखाए लाज, प्रगट होए सीस शब्द रखाए साचा ताज्जया। वेले अन्तिम रक्खे लाज, सृष्ट सबाई पए भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द सच्चा दाज दाज्जया। काज रचाया जगत प्रभ, सोहँ तेल चढ़ाउँदा ए। राज राजानां लाहे ताज, प्रभ धर्म राए जेल वखाउँदा ए। कोई ना रक्खे किसे लाज, कलिजुग काली रेख वखाउंदा ए। आप भुलाए कर वल छल, अछल अछलीआ आप अख्वाउँदा ए। वेख वखाए जल थल, जलां थलां विच समाउँदा ए। फल ना दिसे किसे डाल, काया सिंमल नज़री आउँदा ए। गुरमुख विरला सोहे साचे धाम, प्रभ अबिनाशी रसना गाउँदा ए। साचा राग सुणे कान, भाण्डा भरम भन्नाउँदा ए। अन्तिम लेखा चुक्के जन, साचा धन प्रभ झोली पाउँदा ए। आपणा बेड़ा लए बन्न, मानस देही लेखे लाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरा रच्चया काज, जूठा झूठा लक्ख चुरासी अन्त मिटाउँदा ए। लक्ख चुरासी चुक्कणा भार, वेला अन्तिम आया ए। नाता तुट्टे मीत मुरार, ना कोई दीसे सांझा यार, चारों कुन्ट दिसे पासा हार, लहिणा देणा ना कोए रिहा चुकाया ए। मात पित ना कोए सहार, सगला साथ प्रभ तजाया ए। अन्तिम रोणा धाहां मार, पुरख अबिनाशी दिस ना आया ए। गुरमुखां करे हरि प्यार, शब्द गोदी आप उठाया ए। सोलां करे तन शृंगार, आप आपणा रंग रंगाया ए। वेखे परखे परखणहार, मनमुख गुरमुख थांउँ थाँईं बहाया ए। आपे रक्खे रक्खणहार, जिस जन चरन कँवल चित लाया ए। पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपार, उप्पर धवली जोत जगाया ए। कलिजुग तेरा अन्तिम कर्म विचार, किशना सँवला रूप वटाया ए। शब्द फड़े प्रभ हथ्थ कटार, नाभी कँवली रिहा भुवाया ए। अमृत देवे ठंडी धार, गुरमुखां मुख चुआया ए। साचा करे शब्द प्यार, दस्म दुआरी राह वखाया ए। सच द्वारी महल्ल अपार, चारों कुन्ट होए रुशनाया ए। दीपक जोती इक्क उज्यार, तेल बाती ना कोई टिकाया ए। धूप दीप ना कर विचार, सुगंधी

सोहँ सो पाया ए। पवण धूंआँ साची धार, सीस छत्र झुलाया ए। शब्द सिँघासण बैठ दातार, आपणा रूप वटाया ए। अगम्म अगम्मी करे कार, हड्ड मास नाड़ी चम्मी डेरा लाया ए। जोत निरँजण कदे मरी ना कदे जम्मी, कपाल घाट एका आपणा राह वखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर अन्दर वेखे चौदां हाट, साचा हट्ट इक्क रखाया ए। साचा हट्ट शब्द वणजारा, गुर पूरा आप करांयदा। आप कराए इक्क वापारा, मोल अमोला झोली पांयदा। अन्दर बाहर दए सहारा, गुप्त जाहरा अंक समांयदा। सच झकोला दए हुलारा, अवण गवण पार करांयदा। सोहँ बोला सतिजुग तेरा जै जैकारा, चार वरनां इक्क करांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, दूसर कोई ना संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ा संग रखांयदा। शब्द घोड़ा हरि दातार, चारों कुन्ट दुड़ांयदा। शब्द फड़ हथ्थ तीर कटार, दो धारां आप करांयदा। गुरमुखां मेला मीत मुरार, मनमुखां अन्त मिटांयदा। एका साचा सुखा, अमृत आत्म धार, हउमे रोग गवांयदा। उज्जल होए मात मुखा, चिन्ता सोग मिटांयदा। मात गर्भ ना उलटा रुखा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। कँवल चरन चरन कँवल जो जन भुक्खा, प्रभ नेतन नेत काया खेत तीजे लोचन दर्शन पांयदा। सुफल कराए मात कुक्खा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चेतन्न चेत आप अख्वांयदा। हरि सच्चा शाह सुल्तान, शब्द जणाईआ। प्रगट होया हरि मेहरवान, दे मति रिहा समझाईआ। इक्क बणाए धर्म निशान, सत्तां दीपां नाउँ लिखाईआ। वेखे खेल वाली दो जहान, नौ खण्डां वंड वंडाईआ। प्रगट होए साचा काहन, ब्रह्मण्डां ताज सुहाईआ। शब्द फड़े तीर कमान, सोहँ डण्डा हथ्थ उठाईआ। चिट्टा जोड़ा नौजवान, शब्द घोड़ा वाग उठाईआ। पंचम बौहड़ा गुण निधान, पंचम टिक्का मस्तक लाईआ। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, राज राजान शाह सुल्तान वड दाता बेपरवाहीआ। पंचम निशाना हरि गोबिन्द, आपणे रंग रखाया ए। विच जहानां साची बिन्द, हरिभगत रिहा उपाया ए। शब्द वहाए धार सागर सिन्ध, ना कोई सके धीर धराया ए। हरि जोधा सूरा हरि मृगिन्द, साचा तीर रिहा चलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, मेल मिलावे वाली हिन्द, साचा मेला आप मिलाया ए। साचा मेला आप कराया, वाली हिन्द शब्द जणाए करे खेल बहु रंगी, आप आपणा अंक दिखाए। हुक्म सुणाए शाह फरंगी, द्वार बंक इक्क सुहाए। सोहँ कटार करे नंगी, राउ रंक रिहा जगाए। नाम वस्त शब्द दस्त किसे हथ्थ ना आए मंगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वड दाता सूरा सरबंगी। वाली हिन्द धुर फ़रमाणा, प्रभ साचे आप सुणाउँणा ए। ना कोई दीसे राजा राणा, तख्त निवासी दिस ना आउँणा ए। अन्तिम मेटे सुघड़ स्याणा, शाह शाहाना सीस ताज

ना किसे मात रखाउँणा ए। चार वरना एका आणा, सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञाना, जोत निरँजण तीर निशाना एका एक लगाउँणा ए। प्रगट होया हरि भगवाना, धर्म झुलाए इक्क निशाना, कर्म कमाए जीव निधाना, जन्म अजन्मा भेव ना पाउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन ब्रह्म ब्रह्म भेव खुल्हाउँणा ए। पंच वस्त अमोल, प्रभ पंचम संग मिलांयदा। शब्द सरूपी कुण्डा खोल्ह, साचे मन्दिर आप टिकांयदा। शब्द चौह अक्खर एका बोल, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। सृष्ट सबाई कर कर वक्खर, ढोल मृदंग इक्क वजांयदा। कवण दुआरे माटी पत्थर, कवण सथ्थर हेठ विछांयदा। सृष्ट सबाई अन्त वरोले नेत्र नैणी अत्थर, वाली हिन्द आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत दलाली भगत रखवाली आपे आप करांयदा। जगत दलाला हरि हरी, आपे आप अख्वाया। गुर गोपाला किरपा मात करी, दे मति समझावण आया। वाली हिन्द ना अन्त डरीं, प्रभ आपणा लड़ फड़ाया। चारों कुन्ट ना कोई दीसे घर घरी, कलिजुग वंडां वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा कर्म रिहा कमाया। आप आपणा कर्म कमाए, पल्ला नाम फड़ाया ए। धरत मात तेरा धर्म रखाए, शब्द हल्ला इक्क कराया ए। गुरमुखां मानस देही जन्म लेखे लाए, अमृत आत्म इक्क प्याया ए। पवण स्वासी दम दमा जाप जपाए, सोहँ मम्मा मुख रखाया ए। आप संवारे आपणा कम्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाया ए। रंग वटाया भेख धर, जगत पखण्ड मिटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वेख दर, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। आपणी करनी रिहा कर, ब्रह्मण्डां वंड वंडांयदा। लोआं पुरीआं करे सर, जेरज अंडां चरनी निवांयदा। हरिभगत सुहेला देवे वर, अन्तिम कन्ढा कलिजुग पार करांयदा। बीस इक्कीसे चुक्के डर, वरभण्डी भंड मिटांयदा। इक्क सुहाए साचा दर, नौ खण्डी राह वखांयदा। अमृत भण्डारा देवे भर, साची डण्डी मार्ग पांयदा। भरम भुलेखे कढ्ढे नारी नर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्डी ब्रह्मण्ड समांयदा। नौ सत्त चार दिवार, सोहँ ताज बणाउँणा ए। शब्द रक्खे पहरेदार, साचा कर्म कमाउँणा ए। आपे बैठे अद्धविचकार, उप्पर मुख रखाउँणा ए। चारे दिशा कर्म विचार, साचा हिस्सा आप वंडाउँणा ए। बीस इक्कीस नर निरँकार, नर नरेशा आप जगाउँणा ए। करे खेल अपर अपार, दर दरवेशा भेव किसे ना आउँणा ए। देवे वर दिल्ली दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, वेसाधारी वेस वटाउँणा ए। शब्द ताज अपर अपार, साची जड़त जड़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां संग रलांयदा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, कोए दोए भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैलोए रचन रचांयदा। शब्द ताज अमोल, हरि बणाईआ। सृष्ट सबाई रही डोल, इक्क अडोल आप

रहि जाईआ। वाली हिन्द सुणाए अक्खर वक्खर बोल, सोहँ बोली भगत वधाईआ। एका वजे मृदंगा ढोल, नौ खण्ड शब्द लड़ाईआ। शब्द खण्डा रक्खे कोल, दिस किसे ना आईआ। पाए वंडां ना रहे अनभोल, कलिजुग कन्ढा अन्तिम वखाईआ। अन्तिम पड़दे रिहा फोल, ब्रह्मण्डां हरि समाईआ। लक्ख चुरासी देवे रोल, जम की फाँसी इक्क लगाईआ। मदिरा मासी खेले होल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। गुरमुख विरला संत सुहेला पुरख अबिनाशी वसे कोल, आप आपणा संग निभाईआ। शब्द ताज जगत अपारा, पंचम धारा नाल सिवाउँदा ए। सूई चले तिक्खी आल्ा, नाम धागा इक्क रखाउँदा ए। भारत खण्डी वसे इक्क महल्ला, वाली हिन्द आप जगाउँदा ए। सोहँ फड़े प्रभ तिक्खा भल्ला, डूंघी डल्ला वेख वखाउँदा ए। रसन कमानी चढ़या चिल्ला, कलिजुग शिला आप कमाउँदा ए। लेख लिखाए बूरा कक्का बिला, संग मुहम्मद नाल रलाउँदा ए। ईसा मूसा ढाहे टिल्ला, पाताली किला ना कोई लगाउँदा ए। रूसा चीना आत्म हिल्ला, शाह प्रबीना आप हिलाउँदा ए। वाली हिन्द ठांडा सीना, प्रभ साची दया कमाउँदा ए। नाथ त्रैलोकी वाली लोक तीना, इक्क अधीना भगत रखाउँदा ए। आपे जल आपे मीना, अमृत आत्म देवे भीन्ना, सांतक सति वरताउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नाम देवे वर, साचा कर्म आप कमाउँदा ए। शब्द ताज कर त्यार, पंचम धार चलांयदा। पंचम मेला मीत मुरार, सवा हथ्थ हरि समरथ, एका कार कमांयदा। दस उंगली रक्खे चौड़ा, आत्म गिरहा साचा पौड़ा, ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, साची वंड वंडांयदा। अक्खर वक्खर सस्से होड़ा, हाहे टिप्पी जोड़ जोड़ा, साची बणत बणांयदा। काली धार हेठ दौड़ा, चिट्टा दौड़े शब्द घोड़ा, गुरमुखां मस्तक लेख लिखांयदा। बीस इक्कीसा आपे बौहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाणा हरि भगवाना एका एक जणांयदा। पंचम धारी पंच प्रमुख। कर्म विचारी देवे सुख। धर्म संसारी सर्ब मनुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे उज्यारी बीस इक्कीसा उज्जल मुख। उज्जल मुख जीव जहान। मिले सुख चरन भगवान। मिटे दु:ख दे जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीजा देवे भगत निशान। भगत निशाना अपर अपार। सोहँ डण्डा विच संसार। आर पार ना दीसे कन्ढा, बैठा रहे तन विचकार। आवे जावे विच ब्रह्मण्डां, जीउ पिण्ड जन डूंघी गार। वेखे खेल विच वरभण्डा, वरभण्डी कर्म रिहा विचार। सोहँ शब्द साचा डण्डा, रखे हथ्थ सच्ची सरकार। वाली हिन्द वंडाई वंडा, प्रभ आपे देवे किरपा धार। अन्तिम अन्त ना होए रंडा, एका बख्शे चरन प्यार। माण ताण तोड़ जगत घमंडा, चरन कँवल उप्पर धवल इक्क अधार। मेट मिटाए भेख पखण्डा, सोहँ खण्डा साची धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे विच संसार। चौथा जोड़ा

जोड़ जुड़ाया। चिट्टा रंगण रंग रंगाया। सतिजुग साचा आया मंगण, प्रभ अबिनाशी चरन छुहाया। आप आपणे रक्खे अंगण, आप आपणी गोद उठाया। शब्द घोड़े कसे तंगन, शाह अस्वारा आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम जैकारा इक्क कराया। चिट्टा जोड़ा चरन द्वार। ना होए विछोड़ा विच संसार। मिट्ठा कौड़ा जीव गंवार। ब्राह्मण गौड़ा बन्ने धार। सोहँ पौड़ा अपर अपार। धुर दरगाही आया दौड़ा, आपे देवे कर प्यार। पन्दरां सोलां लम्भा चौड़ा, चरनी नाता मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त साचे दस्त दर दिल्ली दरबार। पंच निशाना पंच हरि, सप्तम रंग रंगाए। सति पुरख निरँजण हथ्थ फड़, नव खण्डी लड़ बन्नाए। किल्ले हँकारी उप्पर चढ़, आपे लए छुडाए। जीव शैतानी मात फड़, आपे मेट मिटाए। पुरीआं लोआं आप लड़, दिस किसे ना आए। शब्द अक्खर एका पढ़, सृष्ट सबाई रिहा पढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेख लिख्त भविख्त आपणा आप लिखाए। पंचम निशाना सत्त रंग सत्त दीप जगाईआ। सतिजुग मंगी साची मंग, प्रभ साचे दया कमाईआ। कलिजुग धारा होई भुक्ख नंग, काली हेठां आप रखाईआ। सतिजुग साचे अंग संग, लाल भूषन तन पहनाईआ। शब्द वजाए नाम मृदंग, कंचन रंग चढ़ाईआ। जगत दुआरा जाए लँघ, पीला रंग वटाईआ। आप निभाए आपणा संग, चिट्टा अस्व चिट्टा रंग, चिट्टे
५३४ घर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रिहा बणत बणाईआ। नीला काला नीला रंग, ५३४
०५ सूहा आप चढ़ांयदा। शब्द घोड़े कसे तंग, धर्म बूहा आप खुल्हांयदा। शब्द दुआरे जाए लँघ, नाम सूहा आप अखवांयदा। ०५
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रिहा किरपा कर, भगत भगवान आप झुलांयदा। प्रभ साचा कर्म कमावणा। काला सूसा तन छुहावणा। दर दरवेश आप अखवावणा। किसे ना चले कोई पेश, प्रभ साचे पकड़ उठावणा। फड़ फड़ उठाए नर नरेश, प्रगट होया धुरदरगाही जामना। जोती जोत सरूप हरि, भेखाधारी बल दुआरे बावना। भेखाधारी भेख वटाया ए। जोती जामा हरि जी पाया ए। सृष्ट सबाई रही सोती, दिस किसे ना आया ए। शब्द फड़ी हरि साची सोटी, इक्क सहार बणाया ए। शब्दी पवणी रलया जोती, पहली चेत्र वक्त सुहाया ए। राज राजानां तेड़ लंगोटी, एका एक चीर सुहाया ए। साध संत वेखे विच्चों कोटन कोटी, जूठा झूठा झेड़ मिटाया ए। लक्ख चुरासी बोटी बोटी, ना होए कोई सहाया ए। जीवां जन्तां किस्मत खोटी, कलिजुग माया छाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया ए। प्रभ साचा रंग रंगांयदा। दिस किसे ना आंयदा। साधां संतां भरम चुकांयदा। लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जीवां जन्तां कर्म बणांयदा। जो जन आए सीस झुकांयदा। महिंमा अगणत गणी ना जांयदा। माया पाई

जगत अगणत, आप आपणा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वखांयदा। रंग वखाए लालड़ा, रंग रता रंगीला। कलिजुग तोड़े जगत जंजाला, शब्द सरूपी कर कर हीला। जन भगतां गल पाए सोहँ सच्ची मालड़ा, नाउँ रखाए कंठ नीला। प्रगट होए धुर दरगाही हरि सच्चा दलालड़ा, संत जनां दा सति वसीला। मनमुखां मुख करे कालड़ा, माया अग्नी लाए कलिजुग तीला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल नीलम नीला। नीली धार भेव ना राया। पुरख अबिनाशी शाह सवार, आपे आप बाहर आया। लक्ख चुरासी कर्म विचार, जोती जामा भेख वटाया। शब्द फड़े हथ्थ कटार, शब्द खण्डा नाउँ धराया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, शब्द बेड़ा रिहा बचाया। प्रगट होया नर निरँकार, देवण आया मात सजाया। ना कोई दीसे मुहम्मदी यार, ईसा मूसा रहण ना पाया। खाणी बाणी कर विचार, जेरज डेरा रिहा ढाहया। अगम्म अगम्मड़ी मारे मार, देव किसे हथ्थ ना आया। दीपां लोआं करे ख्वार, खण्ड मण्डल प्रभ रिहा हिलाया। दर दरवेशा नर नरेशा हाहाकार, शाह सुल्तानां रिहा मिटाया। करे खेल अपर अपार, नौ दुआरे सुरत सजाया। गुरमुख विरला प्रभ अबिनाशी पाए सार, दस्म दुआरी बूझ बुझाया। जगत तृष्ना दए निवार, शब्द डंक प्रभ रिहा वजाया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, जोत सरूपी दीप जगाया। कलि मन्दिर वेख अपार, अज्ञान अन्धेरा रिहा मिटाया। जोत सरूपी पसर पसार, गुरमुख हिरदे विच समाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धार, आप आपणा रंग वटाया। रंग रंगाया जगत भेख, भेव कोई ना पांयदा। सृष्ट सबाई लिखे लेखा लेख, लिखणहार दिस किसे ना आंयदा। हरिजन साचा संत सुहेला दर दुआरे नेत्र नैण लोचन लए पेख, दर दुआरे दरस दिखांयदा। लक्ख चुरासी मेटण आया रेख, ना कोई दिसे औलीआ पीर शेख़, आप आपणे रंग रंगांयदा। ना कोई जाणे धारी केस, चार वरनां एका सरना, साची सरन हरि लिखांयदा। किसे हथ्थ ना आए श्री दस्मेश, दहि दिशा वेख वखांयदा। पंडत पांधे रहे वेख, गौड़ ब्राह्मण कवण चोटी आसण लांयदा। सम्बल नगरी केहड़ी रेख, साचा राह किसे दिस ना आंयदा। जोती जामा धरया भेख, सृष्ट सबाई रिहा वेख, साचा माही दिस ना आंयदा। सम्बल नगरी सच टिकाणा, प्रभ साचे जोत जगाईआ। शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, चारों कुन्ट रिहा उडाईआ। सच तख्त प्रभ आप सुहाना, शब्द सिँघासण नाउँ रखाईआ। नौ दुआरे मुख रखाणा, साची बणत बणाईआ। दसवें अन्दर हरि समाना, साचा खेड़ा रिहा वसाईआ। करे खेल श्री भगवाना, जोती शब्दी मेल मेले, पवण स्वासी रिहा चलाईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधाना, चतर्भुज गुण निधाना, दो जहानी रचन रचाईआ। आपे वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं मार ध्यान, शब्द

सरूपी मेहरवान, दया नंद आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी शब्द टिकाणा, जोती जोत जगाईआ। सम्बल नगरी हरि समाया। साचे आसण डेरा लाया। साची धारा रिहा वहाया। अमृत आत्म साचा जल एका नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर आप सुहाया। साचा मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जगे अन्दरे अन्दर, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। लग्गा भाग डूंघी कन्दर, गुर गोबिन्दा आसण लांयदा। आप तुड़ाया वज्जा जन्दर, साचा कुण्डा आप खुल्हांयदा। आपे गुर आपे गोबिन्दा, आपे जोती शब्दी आपे बिन्दा, आपे सुत मात पित आप अख्वांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अबिनाशी अचुत, आप सुहाई आपणी रुत्त, फ़ल फुलवाड़ी मात लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सम्बल नगरी चार दिवारी ए। प्रभ साचे करी त्यार, नौ द्वारी नाल शृंगारी ए। आप आपणा किया प्यार, जंम्मया शब्द सुत दुलार, जोती बणी माँ प्यारी ए। अट्ठे पहर देवे गोद हुलार, पारब्रह्म प्रभ साची कार, दो जहानां वारो वारी ए। पूर्ब लहिणा कर विचार, दर्शन नैणा खेल अपार, वेखे रंग अपर अपारी ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्बल नगरी सच टिकाणा बैठा दस्म दुआरी ए। सम्बल नगरी दस्म दुआरी, साचा खेड़ा आप बणाया ए। पारब्रह्म ब्रह्म जोत अकारी, लोकमाती झेड़ा आप चुकाया ए। शब्द रक्खी प्रभ सच पटारी, सृष्ट सबाई देवणहार आप अख्वाया ए। वेंहदा जाए वारो वारी, गुरमुख साचे रिहा जगाया ए। गोबिन्द गोबिन्द तेरी साची धारी, धर्म सपूता आप बणाया ए। नर नरायण प्रभ पाए सारी, सच विष्नूं नाम टिकाया ए। आपे जाणे आपणी कारी, भेव किसे ना आया ए। इक्क सुहाया बंक द्वारी, घर साचा इक्क वसाया ए। जोत निरँजण कर अकारी, साचा खेल करे रघुराया ए। नौ दुआरे महल्ल उसारी, जगत भुलेखा पाया ए। दसवें घर शब्द उडारी, सच सिँघासण डेरा लाया ए। सम्बल नगरी अपर अपारी, कंचन गढ़ ना कोई तोड़े ना सके मात तुड़ाया ए। कंचन गढ़ हरि बणांयदा। पुरख अबिनाशी उप्पर चढ़, साचा तख्त सुहांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती नूर रखांयदा। ना कोई विद्या जाए पढ़, एका अक्खर सर्ब पढ़ांयदा। साचे घाड़न आपे घड़, घड़नहार आप अख्वांयदा। शब्द बिबाणे जाए चढ़, दिस किसे ना आंयदा। संत सुहेले मात फड़, सोए आप जगांयदा। आप फड़ाए आपणा लड़, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। जोत जगाए बहत्तर नड़, किल्हा हँकार कोट गढ़ तुड़ांयदा। पंच विकारी जाए सड़, जोती अग्नी एका लांयदा। दर घर साचे वड़, गुरमुखां साचा राह वखांयदा। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, फड़ बाहों पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पार उतारा आप करांयदा।

★ ४ माघ २०१२ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ नाल बचन होए हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

संत दुआरा सति है, गुर सतिगुर भाए। नाम अधारा तत्त है, दे मति समझाए। सृष्ट सबाई एका रत है, गुरमुखां नाउँ बीज बिजाए। गुर पूरा रक्खणहारा पति है, सभ थाँईं होए सहाए। संत सुहेला जगत यति है, घर साचे मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हर घट मे रिहा समाए। संत सुहेला इक्क मीत पारब्रह्म अतीत। शब्द गाए रस रसना चीत। गुर चरन सरन सरन गुर चरन एका सच प्रीत। सृष्ट सबाई वरनी वरन, वेखे परखे नीत अनीत। आपे आप करनी करन, गाए गंवाए शब्द सुहागी गीत। बुध मति जग साची धरनी, काया रहे सीतल सीत। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वेखे खेल दर दुआरे इक्क अतीत। संत सुहेला साख्यात, सर्ब जीआं अधार। नाम वखाए पारज़ात, अमृत फ़ल अपार। ना कोई वेखे ज़ात पात, वरनां बरनां दिसे बाहर। नौ खण्ड पृथ्वी एका दात, देवणहार इक्क करतार। गुर संगत गुर शब्द शब्द गुर सच्ची करामात, आत्म जोती नूर अकार। मेट मिटाए अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा धुँदूकार। अमृत बरखे बूंद स्वांत, सीतल करे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला इक्क दर, इक्क इकेला मिले वर, जोती शब्दी साचा नात। जोती शब्दी नाता इक्क जुड़ाया ए। लेखा चुक्के वरन गोती, रूप रंग कोई दिस ना आया ए। प्रेम प्यार धुर मस्तक लेख लिखाया ए। हरि संत नाम विचोला कोटन कोटी, लोकमाती नज़री आया ए। शब्द सरूपी चढ़या साची चोटी, नौ दुआरे गई वासना खोटी, दसवां दर इक्क खुल्हाया ए। ना कोई हड मास ना बोटी, आपणा आप रूप वटाया ए। बली जोत इक्क इकलौती, शब्द विचोला विच रखाया ए। नाता तुटे अन्न दाना जीआं रोटी, आत्म भण्डार इक्क भराया ए। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले देवे शब्द वर वरभण्डी रिहा जगाया ए। वरभण्ड जगाए शब्द चोट, तन नगारे रिहा लगाईआ। मानस देही कढे खोट, सच वणज वणजारा इक्क कराईआ। भण्डारा भरया इक्क अतोट, तोट कदे ना आईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर जुगा जुगन्त रहे निकट, कलिजुग दूर कदे ना जाईआ। मनमुखां जड़ रिहा पुट्ट, तिक्खा तीर शब्द चलाईआ। गुरमुख लाहा लैण लुट्ट, जो जन रहे सरनाईआ। अमृत आत्म प्याए साचा घुट्ट, तृष्ना अग्न बुझाईआ। आप सुहाए साची रुत्त, मन्दिर अन्दर जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्दी मेल दर, पवण स्वासी विच रखाईआ। शब्द बोला जगत धर, साचा कर्म कमाया। सतिजुग साचे दीआ मात वर, पारब्रह्म चित लाया। आप आपणा कर्म कर, भाण्डा भरम भंनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संत सहार सच दर, दर घर साचा इक्क वखाया। जगत विचोला हरि संत, जीव जन्त अधारी। देवे नाम नित

नवित्त, किरपा कर अपर अपारी। महिंमा मात गणत अगणत, ना कोई जाणे जीव गंवारी। मिले वड्याई धुर दरगाही साचा मेला आदि अन्त, जोती शब्दी खेल अपारी। हरि पाया दर सुहाया मेल मिलावा साचे कन्त, जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला सच दर, साचा खेड़ा रिहा वसाया। काया नगर साचा खेड़ा, सच महल्ल बणाया ए। दिवस रैण पंचां झेड़ा, पंचां रंग वटाया ए। पंचां बन्ने आपे बेड़ा, पंचा दूर वखाया ए। पंचां वेखे खुल्हा वेहड़ा, पंचां दिस ना आया ए। पंचां करे हक्क निबेड़ा, पंचां राह भुलाया ए। पंचम पंच पंच प्यारा, संत सुहेला जगत वणजारा, साचा नाम एका झोली पाया ए। जीआं अन्दर सच खेत, फ़ल फुलवाड़ी लाया ए। रुत्त बसंती रहे चेत, नाम सुगंधी रिहा उपजाया ए। दरस दिखाए नेतन नेत, सच सिँघासण आसण लाया ए। गुर पूरा हाज़र हज़ूरा खेवट खेट, बेड़ा बन्ने लाया ए। हरि शब्द शब्द हरि गुरमुख गुर दर बेट, मात पित मीत आपणी दया कमाया ए। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला इक्क दर एका एक रखाया ए। इक्क अकेला इक्क सच महल्ल वसाया ए। आपे वसे जल थला, जल थल विच समाया ए। आपे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी डल्ला, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाया ए। गुरमुख विरले आत्म जोती दीपक बला, अन्ध अज्ञान जगत अन्धेर मिटाया ए। जीव जन्त भुलाए कर कर वला छला, वलीआं छलीआं भेद ना राया ए। आपे वसे निहचल धाम अटला, साचा धाम इक्क सुहाया ए। हरि संत आत्म दर दुआरे अग्गे खला, आप आपणा रंग वखाया ए। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर भेव देवी देव ना कोई छुपाया ए। दर दुआरा एका मल्ला, शब्द सुनेहड़ा धुर दरगाही घल्ला, दिस किसे ना आया ए। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला इक्क दर, इक्क पल्ला नाम सृष्ट सबाई आप फड़ाया ए। नाम पल्ला जगत फड़ाया, करे भगत कुड़माईआ। साचा राह इक्क वखाया, नौ खण्ड पृथ्वी वज्जे वधाईआ। लहिण देणा रिहा चुकाया, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द गहणा तन पहनाया, तन श्रृंगार इक्क कराईआ। तीजे नैणा दरस दिखाया, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। भाणा सहिणा हुक्म सुणाया, साचा धर्म सतिगुर पूरे सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी जूठे झूठ वहण वहण, ना होवे कोई सहाईआ। साचे धाम अटल अडोल हरिजन साचे संत बहिणा, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले इक्क वर, दर दुआरा रिहा सुहाईआ। नौ दुआरे तज दसम संवारया। शब्द सिँघासण चढ़या भज्ज, गुर पूरे किरपा धारया। अमृत आत्म पीणा रज्ज, खुल्हे बन्द कवाड़या। काया काअबा कीना साचा हज्ज, मिल्या मेल परवरदिगारया। जगत तृष्ना दित्ती तज, पाया नाम अगम्म अपारया। शब्द ताल गया वज्ज, दिवस रैण रहे धुनकारया। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला शब्द वर, साचा मेला इक्क दर, आपे वेखे वेख वखा रिहा।

शब्द वज्जे साचा ताल, दिवस रैण वज्जे शहिनाईआ। अमृत भरया आत्म ताल, गुरमुखां रिहा प्याईआ। गुरमुख विरला मारे एका छाल, काग हँस हँस बण जाया। फ़ल लग्गे काया डाल्ह, साची अंस शब्द गुर शब्द अख्वाईआ। पंज दूत सँघारे जिउँ काहना कृष्ना कंस, सच कटार रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग रक्खे दुहरी धार, वेखे खेल सृष्ट सबाईआ। दूजी धार जगत दलील। शब्द विचोला संत वकील। एका तोल साचा तोला, आपे पहने बस्त्र नील। दर दुआरा एका खोल्हा, प्रगट होए छैल छबील। चार वरन सुणाए एका ढोला, ना कोई जाणे ब्रह्मण भील। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संत सुहेला इक्क दर आपे जाणे सीतल सील। साची बणत बणाए, सखी सुल्तानया। साचे संत मेल मिलाए वाली दो जहानया। आदि अन्त इक्क हो जाए, ना कोई जाणे जीव निधानया। नैणी नेत्र लोचन पेखण पाए, हथ्थी बन्न्हे शब्द गानया। मस्तक नाम मेख मेखण साची लाए, देवे नाम धुर फ़रमानया। दिल्ली दरबार वेखण जाए, अस्सू तिन्न दिवस सुहानया। संत कृपाल दयाल संग रलाए, झुलाए धर्म सच्चा निशानया। लाल गुलाल रंग चढ़ाए, कंचन धार वेख वखानया। सूही सुरती नाल भवाए चिट्टी चिट्टा अस्व हरि भगवानया। नीली धार हो अस्वार पार कराए, पीली वेखे पुरख सुजानया। कलि काली रैण मिटाए सति पुरख निरँजण सति सतिवादी। पारब्रह्म ब्रह्म शब्द बोध अगाधी। साचा संग निभाए, लेखा लिख्या आदि जुगादी। जोती जोत सरूप हरि, सच सुनेहड़ा लै के जाए संत सुहेला साची गोद बहिके जाए, मिले मेल माधव माधी। असू तिन्न तिन्न विचार। खेल करे प्रभ भिन्न भिन्न, नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार। वक्त लँघाए गिण गिण, लेख लिखाए दिल्ली दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे साचा वर, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़। राज इन्द्र इन्द्र प्रसाद। शब्द देवे प्रभ साची दाद। आत्म धुनी साचा नाद। मिले मेल हरि वड गुण गुणी, खोज खुजाए जीउ पिण्ड ब्रह्माद। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहाए इक्क दर, दिवस रैण रहे अराध। संत कृपाल किरपा कलि करी। होए दयाल, गुर पूरे आत्म लाई शब्द सावण साची झड़ी। आप उपाया साचा लाल, फ़ल लगाया काया डाल, सच वस्त आत्म जोत धरी। शब्द इकल्ला मारे इक्क उछाल, गऊ गरीब निमाणयां बणया जगत दलाल, हथ्थों लाहे धर्म राए दी झूठी कड़ी। आपे शाह आपे कंगाल, गुर सतिगुर साचा होए रखवाल। तिन्न माघ वड वडभागी। एका इच्छया जगत विजोग, धरत मात सोई जागी। धोवण आया काले दाग़, हरि संत सुहेला कलिजुग झूठा दाग़ी। गुर पूरे हथ्थ पकड़ी वाग, हरि मेला शाहो कन्त सुहागी। जीव जन्त बुझाए तृष्ना आग, इक्क उपजाए साचा रागी। जगत विछोड़ा रहे भगत वैराग, कँवल चरन चरन कँवल प्रीत गुर पूरे लागी। मस्तक लेखा धुर वडभाग, माया ममता तन त्यागी। एका

पाया कन्त सुहाग, जोती जोत सरूप हरि, संत सुहाए इक्क दर, शब्द रखाए साचा ताल। आए द्वार किरपा कर, अचरज रीत चलाईआ। वेख वखाए इक्क घर, काया मन्दिर मसीत इक्क सुहाईआ। बन्द कराए नौ दर, दसवें गीत सुहागी गाईआ। साचे मन्दिर गया चढ़, दर घर वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी लड़ ल्या फड़, गुर पूरा होए सहाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, शब्द सरूपी मेला सहिज सुभाईआ। जगे जोत बहत्तर नड़, दिवस रैण होए रुशनाईआ। पंच विकारा गया सड़, शब्द जैकारा मिली वड्याईआ। धर्म दुआरे गया खड़, सृष्ट सबाई रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले देवे वर, माघ तिन्न वेला वक्त सुहाईआ। आए दर द्वार, भाग लगन्नया। साचा मेला मीत मुरार, चिरी विछुनया। साची सेजा कन्त भतार, नैणी भर भर रुनया। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले इक्क वर, वड दात दातार शब्द गुण गुणया। साची सेजा कन्त बहाया, आत्म सेज विछाईआ। राग अनादी इक्क सुणाया, साची सेव कमाईआ। शब्द ब्रह्मादी नाल रलाया, आदि जुगादी दया कमाईआ। मोहण माधव माधी घर सच बहाया, वज्जदी रहे सदा वधाईआ। अराधन अराधी रसन रस पुरख अबिनाशी साचा पाया, जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले इक्क वार ना होए विछोड़ा ना मिले कदे जुदाईआ। वक्त सुहाए अन्त कल, मेल मिलाया आण। मिल्या मेल संत जन, चढ़या शब्द बिबाण। साची वस्त नाम धन, धन विच जहान। साचा राग सुणाए कन्न, शब्द साचा ब्रह्म ज्ञान। भाण्डा भरम देवे भन्न, हरि संत साचा चतुर सुजान। आप वसेरा छप्परी छन्न, काया मन्दिर दिसे झूठ मकान। जोती जोत सरूप हरि, वेखे शब्द सच घर, कवण बैठा ला ध्यान। कवण अबिनाशी अभ्यास कमाए। कवण वास काया विच रखाए। कवण स्वास हरि रसना गाए। कवण प्रभास प्रभ डेरा लाए। कवण निवास शब्द सिँघासण आप विछाए। कवण दुआरा रक्खे वास, आप आपणा रंग वटाए। पुरख अबिनाशी शाहो शाबास, संग सुहेला इक्क अखवाए। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, नाम मृदंग रिहा वजए। जूठे झूठे माया लूठे होणे नास, जन भगतां अंग संग रखाए। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेला इक्क वर, सच दुआरे दरस कराए। त्रैगुण माया तत्त आप उपाया। शब्द जणाई घर साचे मति, मिली मात वड्आया। धरत मात तेरी रक्खे पत, जोती जामा भेख वटाया। गुरमुखां बीज बीजे आत्म साचे वत, सोहँ साचा हल चलाया। कलिजुग खेत गया पक्क, अन्तिम वेले वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया अंक सुहाया। त्रैगुण माया अंग भबूत हरि चढ़ाया। शब्द धागा साचा सूत, आपे आप हथ्थ वखाया। वड्डा हरि ना कोई रंग रूप, भेव ना राया। शाह सुल्ताना वड्डा भूप, प्रगट होया सति सरूप, जोत निरँजण रिहा जगाया। होए प्रकाश अन्ध कूप, अज्ञान अन्धेर रिहा मिटाया। पवण देवे साचा धूप, नाम सुगंधी

५४० ०५

रिहा उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख वेख धुर फ़रमाण, लक्ख चुरासी रिहा सुणाया। लक्ख चुरासी आप जणाए, वड वड्डी वड्याईआ। मन उदासी आपे लाहे, वेखे खेल हरि रघुराईआ। मनमुख जीव धर्म राए दे देवे फाहे, ना सके कोए छुडाईआ। गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों पाए राहे, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। दरगाह साची देवे थांए, आप आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना रिहा रचाईआ।

★ १० माघ २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

हरि साजण जग मीत, दो जहानया। सदा सद जन रखे चीत, देवे माण भगत भगवानया। दिवस रैण परखे नीत, जीव जन्त जन्त जीव शैतानया। गुरमुख विरले काया ठण्ढी सीत, पीवे अमृत नाम निधानया। आपे करे पतित पुनीत, जिस जन बख्शे चरन ध्यानया। शब्द सुहेला रहे अतीत, मिले मेल पुरख सुजानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल गुणवन्ता गुण निधानया। जगत जीव अधीन, नाम विसारया। ना कोई सहाए लोका तीन, लोका तीन होए ख्वारया। हरिजन साचे काया मन्दिर आत्म ठांढा सीन, देवे दान शब्द निशानया। अक्खर वक्खर जगत कीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे पुण छाणया। पुण छाण प्रभ जगत वरोले, भेव किसे ना आईआ। एक तोल साचा तोले, शब्द कंडा रिहा लगाईआ। आदि अन्त कदे ना डोले, इक्क अडोल आप अख्वाईआ। भगत जनां हरि अन्दर बोले, मुख सहिज सहिज गुण गाईआ। भाग लगाया काया चोले, शब्द सुनेहड़ा भेज रिहा जगाईआ। आत्म पड़दे अन्तिम खोल्हे, अंग अंग मिली वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे शब्द सच्ची कुड़माईआ। जगत जुगती जाण, भगत पछाणया। साची मुक्ती विच जहान, चरन सरन सरन चरन गुर ध्यानया। काया भुगती गुण निधान, शब्द बन्न्हे हथ्थीं गानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दान जिया दानया। जीव जन्त भिखार दर द्वारया। देवणहार दातार वड संसारया। आपे पाए सार, कर्म विचारया। मानस देही आई हार, जन्म गंवा रिहा। कोई ना लावे पार, माया भरम भुला रिहा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क देवे शब्द अधार, साचा मार्ग इक्क वखा रिहा। आपे जाणे आपणी धार, मात पित हित नित नवित्त दिवस रैण आप करा रिहा। आपे जाणे वार थित्त, रुत्त माह ना भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखा रिहा। एका राह इक्क आकार, इक्क अधार रखाईआ। एका नांउँ एका थांउँ चरन प्यार रखाईआ। एका पिता एका माउँ, बत्ती धारां सीर

प्याईआ। एका हिता पकड़े बाहों, अमृत आत्म सीर मुख चुआईआ। दिवस रैण जन राखे चीत, जगत जंज़ीर गलों कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे दया कमाईआ। धूढ़ रैण ख़ाक। प्रभ चरन पाक। खुल्हे सोत बन्द ताक। लेखा जाणे भविख्त वाक्। नेत्र नीर सुगंध नाक। तन चीर शब्द धीर नाम गुर जगत साक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन धूढ़ी बख्शे ख़ाक। बुध मति मन तन चतराई। चैंचल चित प्रभ वेख वखाई। हड्ड मास नाड़ी रित, रत आप उपाई। अमृत आत्म काया सित, आपे हरया रिहा कराई। नैण मुँधारी आत्म चित तृष्ना त्याग अग्ग तन बुझाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द ताग तन बंधाई। दर दुआरा इक्क सुहाना, निर्मल जोत जगाईआ। साचा शब्द इक्क सुहाना, वरन गोती मेट मिटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म विच समाना, एका दूजा भेव चुकाईआ। अमृत आत्म तीर्थ साचे नहाना, अठसठ लेख दए मिटाईआ। पुरख अबिनाशी दर घर साचे पाना, मन्दिर मसीत ना कोई रखाईआ। दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गाना, गम्भीर गहर गहर गम्भीर शब्द सहिज सुखदाईआ। एका राग जगत वैराग कन्न सुणाना, सोहँ तीर बजर कपाटी जाए चीर, अन्त अखीर जिस कराईआ। गुर शब्द भगत कुड़माई, साची रचन रचाईआ। आत्म घर वज्जी वधाई, गोबिन्द गीत सुहागी गाईआ। मिल्या मेल पारब्रह्म
५४२ सरनाई, अचरज रीत मात चलाईआ। आत्म घर वज्जी वधाई, प्रभ साचे दया कमाईआ। नाता तुटा भैणां भाई, मात ५४२
०५ पित साचा हित नित नवित्त सार ना राईआ। नर नरायण हरि हरि चित, दरस पाए तीजे नैणा मेल मिलावा साचे मित, चरन ०५
प्रीत इक्क वखाईआ। नौ दुआरे रहे जित्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द सुहेला देवे वर, भगत मात वधाईआ। वडी वड वड्याई, गुरमुख नाउँ अपारया। ना होए मात जुदाई, दो जहानी पार उतारया। पार कराए फड़ फड़ बाही, लक्ख चुरासी भव जल पार उतारया। दूसर कोई दीसे नाही, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध संत भगत भगवन्त, शब्द रंग साचा संग, एका एक बली बलवान, साध संत रिहा जगाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, खण्ड मण्डल वरभण्ड वरभण्डी दिस ना आईआ। भेखाधारी भेख निधान, जोत अधारी हरि भगवान, साची वंडन वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत वेखे काया खेत, राज राजाना शाह सुल्तानां एका शब्द जणाईआ। शब्द जणाए हरि निरँकार, पहली चेत जणांयदा। करे खेल अपर अपार, काया खेत वेख वखांयदा। काला वेस दर दरवेश, काली धार दिस ना आंयदा। आपे होवे धारी केस, मूंड मुंडाना आप अख्वांयदा। आपे दाता नर नरेश, आपे दस दस्मेस बणांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शिव शंकर आप उपांयदा। आपे आवे जावे कर कर वेस, करोड़ तेतीसा सुरपति

राजा इन्द सेव लगांयदा। कलिजुग अन्तिम लैणा वेख, लक्ख चुरासी मिट्टदी रेख, ना कोई दीसे औलीआ पीर शेख, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जामा धरया भेख, गुरमुखां मस्तक लाए रेख, शब्द रंगण रंग चढ़ांयदा। नौ दुआरे चुक्के लेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। घर साजण पुरख अगम्मड़ा, दिवस रैण रक्खे उडीक। ना कोई वेखे चम्मी चम्मड़ा, सुरती धारी शब्द बारीक। आपे माई पित अंमड़ा, आपे बिरध बाल वड नीकन नीक। जोती जोत सरूप हरि, सुरती शब्द मेल कर, ना कोई दीसे होर शरीक। सुरत सवाणी सति गुण सति सतिवन्ता। तन नाम निरँजण तपो तन, तामस तृष्ना अग्न गगन लग्नता। मुख शब्द सगन नाम रंगण, अगण अगणता। शब्द भिखारी दर साचा मंगण, हउमे रोग तोड़े हँगता। नौ दुआरे जूठे झूठे मंगण, दसवें घर मेल साचे साची संगता। जोती जोत सरूप हरि, सुरती शब्द मेल कर, एका एक देवे शब्द सच्ची सुगंधता। शब्द सुगंधी दिवस रैण, मन्दिर तन महिकाईआ। नेत्र नैण बन्दी, दुरमति मैल आत्मा वासना गन्दी, डोरी चोरी शब्द हरि पाईआ। गाए सुभाए बत्ती दन्दी, जोती नूरी आप जगाईआ। मस्तक चढ़े साचा चन्द नौ चन्दी, आत्म अन्धी भरम गंवाईआ। शब्द गाए सुहागी छन्दी, भरमा कंधी झूठी ढाहीआ। मनमुख सुरती भागां मन्दी, परमानंदी रस ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
५४३ आपणी जोत धर, सुरती शब्दी मेल कर, अनन्द अनन्द अनन्द निजानंद निज घर में रिहा उपाईआ। निज घर आत्म चार ५४३
०५ कुन्ट, दहि दिशा हरि वसेरा। नाम रस रसना हरिजन लए लुट्ट, मिटे अन्ध अन्धेरा। तीर निराला जाए छुट्ट, चुकाए मेरा ०५
तेरा। शब्द पंघूड़ा हरिजन लए झूट, प्रभ देवे दरस कर कर आपणी मेहरा। काया माटी जूठा झूठा भाण्डा जाए फुट वेले अन्त ना लाए देरा। कर्म विकारा कढ्ढे कुट्ट, इक्क वखाए सञ्झ सवेरा। हरि जन जन हरि दर घर साचे लुट्ट, शब्द सरूपी पाए घेरा। मनमुखां हथ्थ फड़ाए ठुठ, दर दर घर घर फेरी फेरा। हरिभगत विचोला एका मंगे नाम मुठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरती शब्दी मेल कर, करे साचा सच निबेड़ा। रसन रस त्याग, आत्म रस पाया। आत्म तृष्ना बुझी प्यास, अमृत आत्म मुख चुआया। सोई सुरती गई जाग, हउमे चिन्ता रोग गंवाया। दर घर साचे बणया हँस काग, धुर संजोगी मेल मिलाया। हथ्थ आपणे पकड़े वाग, हरि अमोघी दरस दिखाया। चरन कँवल जन साचे लाग, जगत विजोगी फंद कटाया। मानस देही वड वडभाग, पारब्रह्म मिली सरनाया। शब्द बन्ने साचा ताग, साचा धर्म इक्क वखाया। नाम उपजाए साचा राग, नाद अनादा धुन वजाया। आप आपणा जन लए लाध, अन्दर मन्दिर दीपक जोती दए जगाया। पंचम चोरां तन मन बांध, डूंघी कन्दर दए सुटाया। नर नरायण रसन अराध, हँकारी जन्दर दए तुड़ाया।

वेख वखाणे संत साध, जोती जामा भेव वटाया। गुरमुख साचे लए लाध, रमईआ रामा मेल मिलाया। आत्म मेटे वाद विवाद, विद्या ब्रह्म इक्क सिखाया। शब्द जणाए बोध अगाध, बोध अगाधा भेव ना राया। धुर दरगाही मेला माधव माध, पुरख अबिनाशी दर घर पाया। आत्म मेला आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर मेल मिलाया। पारब्रह्म ब्रह्म विच ब्रह्माद, अन्त मंत शब्द जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां कलिजुग माया लगी बसंतर, अन्दरे अन्दर दए बुझाया। कलिजुग अग्न अथाह, जगत जलाया। ना कोई दीसे साचा राह, माया भरम भुलाया। ना कोई पकड़े अन्तिम बांह, जूठा झूठा भैण भराया। लक्ख चुरासी अन्तिम फाह, राए धर्म रिहा लटकाया। गुर पूरा जगत मलाह, शब्द बेड़े रिहा चढ़ाया। पवण स्वासी रसना साह, साचा जाप रिहा जपाया। होए सहाई सभनी थाँ, मात पित आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नित्त नवित्त कर कर हित्त, हरिजन साचे लए बचाया। जन हरि साचा दिवस रैण चरन कँवल चित लाईआ। रसन स्वासी काम धेन, अमृत आत्म मुख चुआईआ। पेखण वेखण दरसन तीजे नैण, निगाह खोल्ह वखाईआ। दर घर साचे साचा बहिण, धर्मसाला इक्क वखाईआ। आप चुकाए लैण देण, शाह कंगाला हरि रघुराईआ। मनमुख डुब्बे वहिंदे वहिण, मुख काला मात कराईआ। गुरमुख साचे संत सुहेले दर दुआरे लाहा साचा लैण, शब्द झोली हरि भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम इक्क जपाईआ। जप नाम गुरदेव, जन भीतर अन्तरा। पारब्रह्म ब्रह्म सेव, लोक तीन बुझे बसंतरा। अमृत आत्म रस साचा मेव, साचा मेला जुगा जुगन्तरा। करे कराए आप नहिकेव, सतिजुग जपाए साचा मन्त्रा। पुरख निरँजण अलख अभेव, आदि अन्त बणाए बणतरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे गगन गगनंतरा। त्रैलोक प्रभ खेल जोत जगाईआ। लोकमाती मार झाती जन भगतां कराए मेल, वरन गोत भेव ना राईआ। आत्म खोल्हे बन्द ताकी सतिगुर साचा सज्जण सुहेल, दुरमति मैल धोत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे रंग नवेल, लक्ख चुरासी दिस ना आईआ। लक्ख चुरासी तन जलाना, प्रभ साचे सार ना पाईआ। मनमुख भुल्ले जीव निधाना, रसन विकार वधाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, जिस जन आत्म बूझ बुझाईआ। हथ्थीं बन्न्हे धुर दरगाही नाम गाना, वेद पुराणां अंजील कुरानां भेव ना राईआ। करे खेल श्री भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेख वखाणे ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, अंज़ील कुराना भेव ना जाणा, जन भगतां वेखे आत्मक मस्तक लग्गी रेख, साचे नैण लोचन नेत्र नैण पेखण, आप आपणा रंग वटाईआ। सतिगुर सच्चा शाह सुल्ताना, दो जहानी वस्सया।

आपे वेखे जाणे गुण निधाना, जन भगतां राह साचा दस्सया। लक्ख चुरासी पुण छाणा, हरिजन बहि बहि अन्दर हस्सया। शब्द फड़ाए तीर कमाना, शब्द चिल्ला एका कस्सया। आप झुलाए धर्म निशाना, मेट मिटाए अन्धेरी रैण जन मस्सया। दाता सूरा जोधा बली बलवाना, प्रगट होए विच जहाना, जन भगतां दुआरे आए नस्सया। आपे गोपी आपे काहना, दीपक जोती जगे महाना, गुरमुख साचे माणक मोती लोकमाती करे पछाना, सभ घट वासी हिरदे अन्दर वस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा रस्सया। रसना रस रसायण, हरि जन पाया। दरस पेखे तीजे नैण, मन तन तन मन तृप्ताया। रसना किसे ना सके कहण, जूठा झूठा जन खुल्हाया। माया खाए ना डस्सनी डैण, भाण्डा भरम भन्न वखाया। मनमुख वहिंदे झूठे वहिण, आत्म धन्न ना किसे वखाया। हरिभगत चुकाए लहिण देण, शब्द साचा तन वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मिटाए अन्धेरी रैण, सोहँ साचा चन्द चढ़ाया। सोहँ शब्द प्रकाश त्रै त्रै लोकया। जोत निरँजण पुरख अबिनाश, पुरीआं लोआं इक्क सुणाए सति शलोकया। आपे रक्खे घट घट वास, ब्रह्मा चारे मुख रखाए मोखिआ। शिव शंकर जटा जूट धार करे विचार, कलिजुग अन्तिम करे धोखिआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रोवे धाहां मार, प्रभ का भाणा किसे ना रोकया। प्रगट होए हरि जगदीसा निहकलंक नरायण नर अवतार, लोकमात पुरख बिधात जन भगतां देवे अन्तिम मोखिआ। हरिभगत वड्याई जगत उपाया। आत्म बूझ बुझाई, ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म सरनाई, भरम चुकाया। मिल्या मेल साचे माही, आवण जावण जन्म कटाया। शब्द सरूपी पकड़े बांही, सोहँ साचा दामन फड़ाया। सदा सुहेला रखे ठण्ढीआं छाँई, आप आपणे अंक समाया। दूसर कोई दीसे नाही, राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां एका राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आप आपणा अंक चलाया। आप आपणा अंक चलाए, शब्द जगत अमोला। राउ रंक रंक उठाए, पुरख अबिनाशी बणया तोला। द्वार बंक बंक इक्क सुहाए, नौ दुआरे दर दर खोल्हा। जोत सरूपी तनक लगाए, शब्द सरूपी अन्दर बोला। वासी पुरी घनक अख्वाए, सम्बल नगरी साचा ढोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाग लगाए काया चोला। भाग लगाए काया चोला, रंगण गूढ़ प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम बोला, ना कोई जाणे जीवत मूढ़, जीव जन्त कोई भेव ना पांयदा। गुरमुख विरला दर घर साचे मस्तक लाए चरन धूला, पड़दा उहला भेव चुकांयदा। इक्क सुणाए राग सोहला, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ नौ दुआरे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द जणाए भगत विचोला, लक्ख चुरासी कटे जूड़, धर्म राए नेड़ ना आंयदा। धर्म राए ना मंगे लेखा, जिस जन

दया कमाईआ। आपे जाणे आपणी रेखा, दस्म दुआरी बूझ बुझाईआ। नौ दुआरे भरम भुलेखा, प्रभ अबिनाशी दिस ना आईआ। कलिजुग जीव भुल्ले रुल्ले भरम भुलेखा, मदिरा मास रसन हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे बुध विसेखा, कवण दर कवण घर कँवल नर कवण नारी कवण तरे साची तरनी रिहा तर, दर दुआरा हरि निरँकारा, जोत निरँजण कर पसारा, शब्द खोल्हे इक्क भण्डारा, चार वरनां एका सरना राउ रंक रंक राजानां शाह सुल्तानां नाम भिच्छया झोली पाईआ। आत्म झोली भर भण्डारा, होए शब्द जणाईआ। नौ दुआरे बन्द कुआड़ा, दसवें जोत टिकाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपे होए पिछे अगाड़ा, साचा संग निभाईआ। भाग लगाए बहत्तर नाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीपक जोती जोत जगाईआ। निरगुण निरगुण खेल इक्क महल्लया। सरगुण सरगुण मेल गुरू गुर चेलया। निरगुण सज्जण सुहेल, शब्द चढ़ाए सरगुण तेलया। सरगुण वधे मात वेल, निरगुण अन्दरे अन्दर बोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी आत्म मौलया। लक्ख चुरासी आत्म मौले, भेव रहे ना राईआ। आपे वेखे नाभ कँवले, अमृत धारा आप वहाईआ। जीव जन्त साध संत उप्पर धवले, नौ दुआरे फिरे हलकाईआ। गुरमुख विरले आत्म भवरे, चरन प्यारा इक्क रखाईआ। मिले मेल प्रभ साँवल सँवले, साँवल सुन्दर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, काया मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर नौ दुआरे खोज खुजाईआ। नौ दुआरे दर दरबान, जीव जन्त हँकारी। मगर लग्गे पंच शैतान, हउमे लग्गी तन बिमारी। शब्द ना मिले सच निशान, माया ममता नाड़ नाड़ी। आत्म अन्धेरा अन्ध अज्ञान, हउमे भरी तन पटारी। साचा मन्दिर सुंञ मसाण, दीपक जोत ना होए उज्यारी। जगत विकारा पीण खाण, काम क्रोध तन श्रृंगारी। मिल्या मेल नर हरि भगवान, पंजां नाता तुटी यारी। दर दुआरे मूल ना भाण, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम वेखे बन्द दर, आपे आप आप मुरारी। ना कोई मंगे ना मंगण जाए, किसे हथ्थ ना आए राजे राणे सुघड़ स्याणे, गुरमुख विरला हरि घर घर हरि दर माणे, चले चलाए आपणे भाणे, शब्द फड़ाए तीर कमाने, पंजां मारे धुर दी बाणे, आप रखाए आपणी आणे, एका शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जीआं जन्तां आत्म घर ताणे, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सर्ब जीआं बिध आपे जाणे, तन मन्दिर सच महल्ला, इक्क इकल्ला किसे ना पाया। ना कोई फलया ना कोई फुलया, माया भरमे जगत भुल्लया, अमृत आत्म काया डुल्हिआ, भाग लग्गे ना साचे कुलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर्म धर्म धर्म कर्म आपे वेख जगांयदा। हरि शब्द गुर जणाई। गुर शब्द भगत वड्याई। भगत शब्द जन्म सुखदाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण रिहा

रंगाई। हरि शब्द शब्द अमोल। गुर शब्द किया मृदंग ढोल। भगत शब्द रस रसना बोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हट्ट रिहा वरोल। हरि शब्द बोध अगाध। गुर शब्द भगत लाध। भगत शब्द धुनी नाद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल विच ब्रह्माद। हरि शब्द सुन्न अगम्म। गुर शब्द काया खेत पए जम्म। भगत शब्द दमा दम। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा कम्म। हरि शब्द शब्द अथाह। गुर शब्द भगत मलाह। भगत शब्द सदा बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पकड़े घर घर जा। हरि शब्द जोत जगाई। गुर शब्द बूझ बुझाई। भगत शब्द एका दूज भउ मिटाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र तीजे वेख वखाई। गुर चरन हरि द्वार। गुरमुख साचे साचा जापा साची सरन विच संसार। काया माटी लेखे लाया, लक्ख चुरासी उतरे पार। जम की फ़ासी गल कटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चौअक्खर शब्द स्वासी, काया मण्डल साची रासी, साचा मेला इक्क इकेला मात मिलाया। मेला मेल इक्क इकल्ला, नर नरायण निरँकारा। दूजा दस्सया शब्द महल्ला, मिल्या मेल पुरख भतारा। तीजा दस्से राह सुखाला, नैण उग्घाड़े अमृत धारा। चौथा दर मेल दर वस्सया घर काया मन्दिर डूंघी डल्ला, गुरमुख साचा सुत दुलारा। पंच पाया पंच गंवाया। पंच जगाया काया खल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण दए रंगाया। छेवें घर शब्द घनघोरा, हरि साचा रिहा जणाया। सति पुरख निरजंण दर घर साचे एका बौहड़ा, एका जोती रिहा जगाया। अट्ठां तत्तां जुड़या जोड़ा, अप तेज वाए पृथ्वी आकाश मति मन बुध रखाया। नावें नौवां दरां होए विछोड़ा, शब्द घोड़े रिहा चढ़ाया। दसवें दस्म दुआरा लाया पौड़ा, सस्सा होड़ा डण्डा इक्क रखाया। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, चार कुन्ट दिस ना आया। अमृत आत्म रस ना कोई वेखे मिट्ठा कौड़ा, भेव पखण्ड जगत हलकाया। भगत सुहेला होया वस धुर दरगाही आया दौड़ा, जीव जहानी रंडा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोत निरँजण कर उज्यारी, शब्द फड़ हत्थ कटारी, साची वंड रिहा वडाया। गुरमुखां वंडे वंड नाम अमोल्लया। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, आत्म दर किसे ना खोल्ल्या। गुरमुखां देवे वड्याई विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड सुणाए सोहँ साचा ढोल्लया। मनमुख जीवां देवे अन्तिम कंड, धर्म राए दर बहालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे अन्दर वड़, शब्द अनादी एका एक बोल्लया। शब्द अनादी बोल भरम चुकाया। करे खेल आदि जुगादी, साचा धर्म मात धराया। आपे आप वड प्रताप ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म विच समाया। गुरमुख साचे संत सुहेले वस्त अमोल मात लाधी, वड कमी कर्म कमाया।

आप कराए आपणे मेले शब्द देवे साची दादी, आत्म झोली पाया। वेखे खेले गुरू गुर चेले काया चोली, जगत डोली अन्दर मन्दिर वेख वखाया। कवण दुआरे पंचम गोली, कवण दुआरे शब्द बोली, कवण दुआरे मिले नाम वस्त दस्त अस्त शब्द इक्क अनमोली, कवण दुआरा काया पिण्ड ब्रह्मण्ड शब्द खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर दर गुर घर अन्दर मन्दिर काया मण्डप माड़ी मठ शिवदवाला गुर गोपाला साची नाम वस्त खोज खुजाया। साचा घाड़न आपे घड़, त्रैगुण तत्त बणाईआ। नौ दुआरे उप्पर चढ़, दसवें डेरा लाईआ। ना कोई सके मात फड़, आप आपणा मुख छुपाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती शब्दी हरि रघुराईआ। एका एक जन भगत फड़ाए साचा लड़, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे आत्म दर, दर दुआरा बन्द खुल्हाईआ। आत्म दर शब्द विचार, प्रभ साचा बूझ बुझाईआ। जोत सरूपी कर अकार, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आपे वसे अन्दर बाहर, बाहर अन्दर आप हो जाईआ। इक्क अकेला मीत मुरार, भगत सुहेला आप अख्वाईआ। जगत भगत जोत निरँजण कर अकार, साचा मेला रिहा मिलाईआ। शब्द सरूपी तन शृंगार, पवणी पक्खा रिहा झुलाईआ। लेखा चुक्के नौ द्वार, एका नाता चरन बंधाईआ। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, जीवां जन्तां भेव ना राईआ। सर्ब पुकार रिहा सुण, घट मन्दिर आसण लाईआ। हरिजन साचे मात चुण, शब्द सिँघासण इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काला वेस दर, दर दरवेश नर नरेश सहिज सुखदाईआ। कलिजुग काली धार, काली रैणया। प्रभ अबिनाशी करे विचार, लोकमात चुकाए लहिणा देणया। लक्ख चुरासी पावे सार, जन भगतां सुणाए भाणा सहणया। आदि अन्त ना जाए हार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे खेल नेत्र नैणया। कलिजुग नेत्र खोल्ह, वेख वखांयदा। साचा अक्खर एका बोल, जूठा झूठा भेख मिटांयदा। नाम मृदंगा वज्जे ढोल, पूरन तोल तुलांयदा। हरिजन आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, दरस अमोला इक्क वखांयदा। निज घर वासी सदा कोल, सोलां कल वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी रिहा रोल, दर दरवेश दिस ना आंयदा। गुरूआं पीरां साधां संतां पड़दा खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे नर निरँकारे आपे वेख वखांयदा दर दुआरा वेखे, जाए पवण सुवास्सया। नौ दुआरे भेव खुल्हाए, दसवें पुरख अबिनाशया। शब्द गुर गुर शब्द किस वसे थांए, काया करे मण्डल रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, प्रगट होए घनकपुर वास्सया। प्रगट होए नर निरँकारा, अछल अछल्ल कराया। जोत सरूपी इक्क उज्यारा, जल थल विच समाया। पहली चेत्र दिवस विचारा, राज राजानां रिहा उलटाया। आपे बन्ह्रे आपणी धारा, साधां संतां रिहा

हिलाया। इक्क वखाए जगत जैकारा, सोहँ साचा नाउँ धराया। भरया नाउँ अगणत भण्डारा, तोट कदे ना आया। बणया हरि आप वरतारा, देवणहार सर्ब अख्वाया। भरमे भुले जीव गंवारा, अमृत धारा किसे हथ्थ ना आया। प्रगट होए चवीआं अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाया। वेद व्यास बणे लिखारा, चार लक्ख सतारां हज़ार अठारां पुराणां भेव खुल्हाया। गुर गोबिन्दे हरि न्यारा, वाली हिन्दे हरि दातारा, सम्बल नगरी रुत्त सुहाया। कोई ना पाए मात सारा, पारब्रह्म ब्रह्म खेल अपारा, जोत उजगरी इक्क कराया। नौ दुआरे जगत दुवारा, दसवां खोल्हे बन्द कुआड़ा, आप आपणे विच टिकाया। शब्द सरूपी साचा लाड़ा, चढ़ाए तेल सतारां हाढ़ा, सोहँ टिक्का मस्तक लाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेख अखाड़ा, लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाहड़ा, राए धर्म खुशी मनाया। कोई रहण ना देवे उच्च पहाड़ा, वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, साचा रिहा कर्म कमाया। कर्म कमाए आपणा, दो जहानां वाली। एका जाप जपाए साचा जपना, तट्ट तीर्थ करे खाली। माया डस्सणी ना डस्से सप्पना, देवे शब्द नाम दलाली। जोती जोत सरूप हरि, भेव खुल्हाए आप आपणा, दीपक जोती जगे दिवाली। भेव खुल्हाए आपणा। हरि जणाई शाह संगरूर एका जाप लोकमाती जपणा। पट पटयांला हरि हजूर, मेट मिटाए तीनो तपना। शाह फरीद काया चोट, कलिजुग माया विच ना तपणा। जोती जोत सरूप हरि, दर दुआरे जोत धर, सिँघ ईश्वर वेख जगदीसर कलिजुग माया डस्सणी डस्से सप्पणा। सिँघ रणधीर तन लथे चीर। पाया घर ना मिल्या वर, चोटी चढ़या ना अन्त अखीर। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेख वखाए गुरुदुआरा कवण अमृत आत्म सीर। सिँघ मेहर मन लैणा जित। चेत्र छे वार थित्त। कवण गुर जिस लाया नेह, कवण बणया साचा मित। काया माटी झूठा मट्ठ, ना कोई मात ना कोई पित। अमृत आत्म कवण बरसे मेह, देवे दरस नेतन नित। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा वेखण आए दर दुआरा साचा हित्त। राज अभिमान अबगत होए। दुरमति मैल ना कोई धोए। वेखे खेल संत मनी सिँघ कट्टी जेल्ह, बीज बीज्जया रसना हल्ल जोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज कपूर थल अस्गाह बेपरवाह वेखे नैण लोचन दोए। संग संग ब्यास। कवण वस्त सिँघ गुरचरन तेरे पास। गुर शब्द फड़या अस्त, कवण मण्डल वेखी रास। कवण मिल्या साचा हसत, कवण कँवल होया प्रकाश। कवण वेला रहे मस्त, मन मति बुध ना होए उदास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उठ उठ नट्ठ नट्ठ आए दर देवे वर, करे तरस गाउँणा गुण गुण स्वास। सिँघ तेज नौ द्वार। पुरख अबिनाशी ना पाई सार। सुखमन नाड़ी डूंघी भँवर, आपे बैठा अद्धविचकार। तन काया माटी जगत कवर, भरया काम क्रोध लोभ

५४६ ०५

मोह हँकार। मानस जन्म ना गया सवर, मिल्या मेल ना मीत मुरार। गुर पूरा ना सीस झुलाए चवर, ना गोद उठाए कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ चेत वेखे नौ दर, दसवां खुल्हा कवण किवाड़। सावण रुत्त ना तन सुहाई। काया माटी झूठा बुत, मन ममता संग रलाई। सतिजुग साचा इक्क उपजाए साचा सुत, आत्म ब्रह्म दवाए। पंजां चोरां कढ्ढे कुट, पूर्ब कर्म कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ लाभ वेखे कँवल नाभ, कवण सवेला कवण मुख रिहा उलटाए। कवण अमृत आत्म धार, प्रभ साचे आप टिकाईआ। कवण सुवेला देवे कर प्यार, भाण्डे काचे दया कमाईआ। कवण सवेला होए उज्यार, दिवस रैण अट्ठे पहर कवण रूप रंग कवण भेख वटाईआ। नौ जेठ कवण रक्खे साया हेठ, सतिगुर सावण कवण कूटे शब्द झूटे रिहा भगत दवाईआ। सावण वेखे सुरत ज्ञानी, नैण विहुणे अन्धे। कवण दुआरे शब्द निशानी, चढ़या चन्द नौ चन्दे। वज्जे तीर एका कानी, कवण गाया बत्ती दन्दे। आदि पुरख दी कवण निशानी, कवण होए मात बख्शिंदे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख धर, लोकमाती आए दर, ढाहे भरमा कंधे। सिँघ हरिनाम हरि हरि हरिजन जन जन तन जाण। कवण काम कवण चाम कवण धाम कवण दाम कवण नाम आत्म घर पछाण। कवण हरि कवण सर कवण दर कवण घर मिले वर चुक्के आवण जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे नर निरँकारे मंगे भिख एका एक नाम अगम्म अपारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग जुग आदी शब्द ब्रह्मादी प्रगट होए त्रै त्रैलोए, गुरमुख विरला जाणे कोए सच वस्त जिस जन दर घर साचे लाधी।

★ पहली फग्गण २०१२ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जोती जोत अकाला, हरि जगाईआ। जोती जोत ज्वाला, हरि रखाईआ। जोती जोत दीन दयाला, करे रुशनाईआ। जोती जोत भगत रखवाला, करे खेल रघुराईआ। जोती जोत गुर गुर गोबिन्द धारा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल मात निराला जाणे भेव ना राईआ। जोती जोत दिवस रात, सूरज चन्द रखाए भानया। जोती जोत अज़ात, किसे ना जाणया। जोती जोत बहु भांत, ना करे कोई पछानया। जोती जोत भगत प्रभात, एका एक हरि जाणया। जोती जोत जगत पित मात, उपजाए बाल सद अञ्याणया। जोती जोत आत्म दात, देवणहार हरि गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दो जहानया। जोती जोत अगम्म, भेव

५५१ ०५

ना राया। जोती जोत गई जम्म, मात पित ना सके जणाया। जोती जोत ना दिसे कोई चम्म, तन मन्दिर दिस ना आया। जोती जोत ना रोए छम्म छम्म, पवण स्वासा दम ना कोई आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणे विच समाया। जोती जोत अडोल, आप रखाईआ। जोती जोत अमोल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत अतोल, ना सके कोई तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा संग इक्क निभाईआ। जोती खेल अपार, संग निभाया। शब्द उपाया साची धार, सुन अगम्मी पार कराया। प्रगट हो आप दातार, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मीतड़ा ना कोई जाणे रंग मजीठड़ा, आप आपणे अंक लगाया। हरि जोती शब्द सपूत इक्क उपन्नया। वेख वखाणे दहि दिशा कूटो कूट, ना कोई सूरज ना कोई चन्नया। आप आपणा झूटा रिहा झूट, ना कोई दीसे छप्पर छन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुणी साचा मुनी शब्द साचा जम्मया। शब्द जणेपा आप कर, जोती खुशी मनाईआ। सच्चखण्ड खण्ड सच रंडेपा इक्क घर, नार सुहागण सर्ब सुखदाईआ। आपणा आप आपे वर, आप आपणी सेज हंढाईआ। शब्द सपूता गोद धर, साची धारा मुख चुआईआ। ना जन्मे ना जाए मर, आदि अन्त रहे सभनीं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे वज्जी इक्क वधाईआ। घर जंम्मया सुत दुलार, होए खेल नव रग्गया। जोती करे शब्द प्यार, आप उठाए आपणे अन्गया। साचा शब्द करे प्यार, अमृत सीर एक मंगया। जोत सरूपी कर अकार, देवे धार सूरा सरबन्गया। आत्म तृष्ना शब्द निवार, रंग आपणे आपे रंगया। इक्क कराया वणज वापार, बाल अञ्याणे एह वर मंगया। कवण भूमिका होए उधार। कवण सु धामा लग्गे चंगया। जोत सरूपी कर विचार, इक्क फड़ाया सच मृदन्गया। आपे वेखां तेरी धार, आदि अन्त ना होए नंगया। सृष्ट सबाई महल्ल उसार, त्रैगुण माया नाल रलया। एका किया धर्म प्यार, नाभी कँवली डेरा मल्लया। जुग सताई एह धार, कँवल फुलया अते फलया। पारब्रह्म शब्दी धार, शब्द अधारा ब्रह्म रक्खनया। ब्रह्मा उत्पत कर आकार, आप आपणा बेड़ा बन्नया। शब्द दित्ता कर प्यार, वड धन धन धन्नया। सृष्ट सबाई कर त्यार, पुरख अबिनाशी बेड़ा बन्नया। लक्ख चुरासी ब्रह्म अपार, आपे ढाहे आपे भन्नया। धाम वखाए इक्क दरबार, नौ दुआरे आंधन अन्नया। दसवें खोल्ह इक्क किवाड़, विकारी हँकारी जिंदा भन्नया। वखाए महल्ल अपर अपार, शब्द साचे एह मन मन्नया। आप बिठाए कर प्यार, ना कोई लाए मात सन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द साचे देवे वर, साचा राग गुरमुख विरला जाए जाग, सुणे सुणाए एका कन्नया। शब्द सपूता एक, सदा प्रकाशया। जोती जोत रखाए

टेक, एका एक एक अबिनास्या। आपणा आप किया बिबेक, घट घट सद रक्खे वास्सया। ना ठण्ढा ना लाए सेक, एका मण्डल एका रास्या। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दिवस रैण करे हास्या। ब्रह्मे ब्रह्म करे प्रवेश, किया दासन दास्या। जोती शब्द सुत आदेस, ना आए गर्भ वास्या। लक्ख चुरासी रहे प्रवेश, किया दासन दास्या। शब्द जणाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, आपे जाणे आपणी रास्या। जोती सुत शब्द वर दर दरवेश, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे चरन भरवास्या। जोती सुत शब्द बलवान, जगत जैकारया। आपणा फड़या तीर कमान, वेख वखाणे चारों कुन्ट सर्ब हंकारया। मारे मार पंज शैतान, नौ दुआरे पावे सारया। चढ़ा चिल्ला इक्क जहान, ढाहवे झूठा किल्ला जो उसारया। खोले नाम बन्द दुकान, बजर कपाटी लावे पाड़या। इक्क झुलाए सच निशान, आपे वेखे धर्म अखाड़या। जोती वेखे मार ध्यान, साचा सुत चढ़या घोड़े साचा लाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सुत सुहाए रुत्त दर घर साचे आपे वाड़या। साचा लाड़ा आया घर, जोत मात खुशी मनाईआ। बजर कपाटी लाए पाड़ टुट्टा गढ़, अन्धेरी रात रहण ना पाईआ। साचे अन्दर जाणा वड़, अमृत धारे साचा पाणी निझर धारा इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दुलारे कर प्यारे, आप आपणा धाम वखाईआ। शब्द दुलारा वेख घर, चरनी सीस निवाउँदा ए। मात सुलखणी किरपा कर, एका मंग मंगाउँदा ए। नौ दुआरे आवे डर, दसवां रंग रंगाउँदा ए। छाती तेरी लवां चड़, अमृत सीर साचा पाउँदा ए। करां दरस नित्त अग्गे खड़, एह मेरे मन भाउँदा ए। एका अक्खर तेरी साची सिख्या लई पढ़, जुगा जुग लँघाउँदा ए। ना कोई सीस ना कोई धड़, सभ दे अन्दर डेरा लाउँदा ए। राज राजाना शाह सुल्ताना ना कोई सके फड़, तीर कटार ना कोई चलाउँदा ए। लोआं पुरीआं रिहा लड़, आप आपणा हथ्थ वखाउँदा ए। जन भगतां तोड़े किल्ला हँकारी गढ़, एका एक हथौड़ा लाउँदा ए। सच महल्ले उत्ते चढ़, आपणा राग सुणाउँदा ए। जोती माता लए बाहों फड़, जगत सुतीला नाता तोड़ वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती शब्दी मेल कर, एका घर वसाउँदा ए। एका घर वसंदड़ा, प्रभ साचे बणत बणाईआ। जोती मेल मिलंदड़ा, शब्द घोरी रिहा उठाईआ। ना कोई वेख वखंदड़ा, दिस किसे ना आईआ। सर्ब जीआं बख्शंदड़ा, हर घट में रिहा समाईआ। लक्ख चुरासी घर घर करदी निन्दड़ा, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। ना जाणे जीव पिण्ड पिण्डड़ा, ब्रह्मण्ड खोज ना राईआ। धरया भेख हरि घविंडड़ा, ना जाणे जीव गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना आप रचाईआ। रचन रचाई आपणी, करया खेल अगम्मा। ना कोई जपाए जाप जापनी, आपे वेख वखाणे काया चम्म चम्मा। मेट मिटाए तीनो तापनी, दो जहानी बणे

साचा थम्म्हा। नेड़ ना आयण पापन पापनी, आप कराए आपणा कम्मा। जोत सरूपी वड प्रतापनी, शब्द पूत सपूता सच्चा जम्मा। सृष्ट सबाई अन्तिम कापनी, लक्ख चुरासी रोवे छम्म छम्मा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआं सभ ने नापनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखे लाए ना किसे चम्मा। हरि जोती आप जगाई, शब्द चलाई धारा ए। लक्ख चुरासी भेव ना राई, प्रगट होया नर निरँकारा ए। कलि भुल्ली मात लोकाई, घट वेखे वेखणहारा ए। अन्तिम होई सर्ब जुदाई, ना कोई दीसे मीत मुरार ए। गुरमुखां करे सच कुड़माई, गल पाए फूलनहारा ए। देवे नाम जगत वड्याई, सोहँ सो अपर अपारा ए। आपे धोवे पिछली छाही, अमृत देवे साची धारा ए। शब्द बणाए नैण नाई, गुरमुख साचा बणया लाड़ा ए। आपे धी आपे जवाई, आपे घर करे कुड़माई, पलँघ रंगीला इक्क विछाई, करे खेल अपर अपारा ए। छब्बी पोह वज्जे वधाई, पंचम मीता रिहा जगाई, मेट मिटाए धुँदूकारा ए। राज राजानां रिहा जगाई, साधां संतां रिहा सुणाई, पहली चेत्र करे विहारा ए। शाह संगरूर हिलाए फड़ फड़ बांही, लेखा मंगे थांउँ थाँईं, ना करे कोई उधारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करया शब्द इक्क प्यारा ए। इक्क शब्द उजागर हरि करांयदा। आपे बणे भगत सुदागर, साचा वणज इक्क रखांयदा। आप टिकाए काया गागर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। जीउ पिण्ड मरयाद है, सुणे विच ब्रह्माद। नौ दुआरे जिस जन याद है, प्रभ देवे साची दाद। काया नगर करे आबाद है, हरिजन साचे लए लाध। मेल मिलावा माधव माध है, शब्द वजाए साचा नाद। होए जणाई बोध अगाध है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साची दाद। मंगी मंग अमोल, दर दर रुनया। प्रभ साचा शब्द विरोल, देवे दान वड गुण गुणया। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, मेल मिलावे चिरी विछुन्नया। वज्जे नाद अनादा सच्चा ढोल, संत सुहेला साचा चुनया। नर निरँकारा दिसे कोल, राग अपारा एका सुणया। दस्म दुआरी करे चोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले लोकमात चाढ़े चन्नया। सुरत जगाए शब्द चोट हरि साचा आप लगांयदा। हरिजन वरोले कोटी कोट, मानस देही वेख वखांयदा। शब्द भण्डारा भरे अतोट, बेपरवाही दया कमांयदा। जगत तृष्ना भरे पोट, साँवल सुन्दर रूप वखांयदा। नौ दुआरे कन्ढे खोट, नाम मुन्दर एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे साचा वर, तन मन्दिर इक्क सुहांयदा। तन मन्दिर आप सुहाए, दीपक जोत जगाईआ। अन्दरे अन्दर दया कमाए, वरन गोत भेव मिटाईआ। दूई द्वैती जन्दर तोड़ वखाए, दुरमति मैल रहे ना राईआ। साढे तिन्न करोड़ सोत खुल्हाए, रागण राग रिहा उपजाईआ। जोती शब्दी मेल मिलाए, जगत

५५३ ०५

विछोड़ा रिहा मिटाईआ। शब्दी जोती खेल खिलाए, नाम घोड़ा रिहा दुड़ाईआ। साचे घोड़े आप चढ़ाए, प्रेम वागां हथ्थ फड़ाईआ। साचा राह इक्क वखाए, धुर दरगाही साचा माहीआ। दस्म दुआरी कुण्डा लाहे, शब्द सिँघासण दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, संत सुहेले साचे धाम आप बहाईआ। गुरमुख वसणा सच घर, निज घर होए वसेरा। नौ दुआरे बन्द दर, मिटे अन्ध अन्धेरा। आप नुहाए साचे सर, लक्ख चुरासी कटाए गेड़ा। आप आपणे जिहा कर, इक्क वखाए खुल्हा वेहड़ा। ना जन्मे ना जाए मर, पंचां नाता तुट्टे झेड़ा। शब्द भण्डारा मिले वर, काया वसदा रहे खेड़ा। साची तरनी जाणा तर, प्रभ बन्न्हण वाला बेड़ा। हरनी फरनी खुल्हे दर, घर साचे हक्क निबेड़ा। धर्म राए दर चुक्के डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, संत सुहेले इक्क इकेले, दर घर साचे साचे मेले, जगे जोत बहत्तर नाड़ा। नाड़ बहत्तर नाता जोड़ा, प्रभ जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। शब्द चढ़ाए साचे घोड़ा, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दरगाही आए दौड़ा, दिस किसे ना आईआ। लोआं पुरीआं पुरीआं लोआं ना कोई पैंडा जाणे लम्मा चौड़ा, फिर फिर थक्की जगत लोकाईआ। शब्द घोड़ा चुक्के पौड़ा, जीउ पिण्ड बाहर कराईआ। नीकन नीका राह दिसे सौड़ा, गुर पूरा वेख वखाईआ। किल्हे कोट तन मन्दिर अन्दर हरि हरि साचा बौहड़ा, आप आपणा दरस दिखाईआ। दस्म दुआरी लाए एका पौड़ा, साचा डण्डा इक्क वखाईआ। आपे जाणे रस मिट्ठा कौड़ा, नौ दस भेव मिटाईआ। भगत सुहेला जाए बौहड़, नस्स नस्स मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह साचा दस्स, सुरत सवाणी करे वस, हस्स हस्स आपणे अंग लगाईआ। अंग लगाए आप प्रभ, जगत निमाणी भगत अधीन। लेखा लेख चुकाए आप सभ, देवे दात शब्द प्रबीन। प्रगट जोत दरस दिखाए झब्ब, शब्द घोड़े पाए ज़ीन। उलटी करे कँवल नभ, अमृत झिरना इक्क झिराए ठांढा होए सीन। पंचां चोरां लए दब्ब, पंच पंचाइनी लए छीन। गुरमुख साचे संत सुहेले लोकमात प्रभ लए लभ्भ, जुगां जुगन्त रहे अधीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संत सुहेले देवे वर, मिले वड्याई लोकां तीन। लोक तीन प्रभ चरन द्वार, घर साचे सच वसेरा। लोआं पुरीआं प्रभ रिहा छीन, कलिजुग तेरी अन्तिम वेरा। ब्रह्मा शिव खड़े मस्कीन, करोड़ तेतीसे ढठ्ठा डेरा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, लक्ख चुरासी करे निबेड़ा। लक्ख चुरासी लेख आप लिखावणा। करोड़ तेतीसा रिहा वेख, ना भेव किसे छुपावणा। आप वस्सया सद विसेख, ब्रह्मे मुखड़ा मुख छुपावणा। शिव शंकर लए वेख, अजपा जाप इक्क जपावणा। ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ रिहा वेख, दिस किसे ना आवणा। गुरमुख विरला नेत्र लोचन लए पेख, चरन ध्यान इक्क

लगावणा। मस्तक लेखा लिखे रेख, ब्रह्म ज्ञान इक्क दवावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज राजानां शाह सुल्तानां साधां संतां जीआं जन्तां एका राह वखावणा। एका राह जगत वखाए, प्रभ साचे जोत जगाईआ। राज राजानां रिहा समझाए, वरन गोती भेव मिटाईआ। साध संत संत साध भाण्डा भरम भन्नाए, दर दुआरा वेख विखाईआ। निहकरमी कर्म कमाए, साचा धर्मी धर्म चलाए, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

★ पहली फग्गण २०१२ हरिभगत द्वार जेठूवाल महाराजयां अते संतां नूं शब्द संदेस भेज्जया कि पहली चेत तों आप दे पास शब्दी लिख्त मुताबिक आउँणा है ★

पूरन जोत होए प्रकाश, हरि शब्द जगत जैकारा। प्रगट होए हरि अबिनाश, करे मात सच विहारा। भगत जनां हरि दासन दास, शब्द घोड़ अस्वारा। निज्ज घर आत्म रक्खे वास, काया कन्दर चार दिवारा। वेखण आए मण्डल रास, नगर खेड़ा शहर अपारा। राज राजानां मेला शाहो शाबास, साधां संतां वणज वपारा। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, एका एक एकँकारा। लक्ख चुरासी होणी नास, मारे शब्द तेज कटारा। पहली चेत चेतन्न चित रक्खणा याद, दिवस दिहाड़ा। शब्द भरपूर जोत आधारी। वेखे दर दरबार, राज राजानां वारो वारी। पहली चेत आए दर, शाह संगरूर कर त्यारी। दूजी चेत मीत मुरार, शाह पटियाला करे उधारी। तीजे चेत नाम आधार, कोट फरीद ख़बरदारी। चेत्र चार खेल अपार, सिँघ ईश्र रहणा ख़बरदारी। पंचम चेत नेतन नेत सिँघ रणधीर वेखे तन बस्त्र चीर लथ्थे अपर अपारी। छे चेत वेखे काया खेत, सिँघ मेहर फड़ शब्द कटारी। चेत सत्त प्रभ वेखे पति, थल कपूर कर कर्म विचारी। चेत अट्ठ दर घर इक्ठ शब्द घोड़े नठ्ठ, सिँघ गुरचरन तेरी आई वारी। चेत नौ दहि दिशां वेखणीआं भौं, चार कुन्ट महल्ल अपारी। सिँघ तेजा बांह दे सरहाणे ना रहण सौं, वेखे खेल दस्म दुआरी मेल हरि गिरधारी। सिँघ लाभ कवण विचोला विच दो आब, कवण तेज झुल्ले ताब किस मिले द्वारी। सिँघ हरनाम गुर गोबिन्दे कवण चरन घोड़े दिसे रकाब, कवण कूटे करे अस्वारी। चेत दस जोती शब्द एका घर गए वस ना जायण नस्स, काया महल्ल चार दिवारी। कवण दुआरे मिले प्रकाश रवि ससि, कवण मेला मेल मिलाए दस्म दुआरी। कवण गुर कवण चेला, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, राज राजानां साधन संतां दर दरवेसा काला वेसा वेखण आए बंक द्वारी। संत जगाए सति पुरख, जुग जुग साची धारा। एका एक वखाए

नाम परख, तृष्ना तृख मिटाए जगत धुँदूकारा। पंच पंचायण रही हरख, माया ममता पाए वैण नैण विहूणी करे हाहाकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द बोले आत्म बोला, खोल्हे जगत भण्डारा। जगत भण्डारा खोल्ह, भगत जगाया। नाम चहु अक्खर बोल, कर्म कमाया। आपे वेखे काया सथ्थर, अथ्थर नेत्र नीर वहाया। बन्द कवाड़ा कपाटी पत्थर, अमृत सीर दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत दुआरा इक्क विखाया। जगत दुआरा भगत जणाई, प्रभ साचा आप करांयदा। देवे नाम शब्द अपारा, दर घर साचे वजे वधाई, साचा मेल मिलांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, नाद वजाए अनहद धारा, साची तार हिलांयदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, महल्ल अचल इक्क उसारा, दिस किसे ना आंयदा। शब्द सरूपी चार दिवारा, शाहो भूपी सुत्ता पैर पसारा, दिस किसे ना आंयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, शब्द महल्ला जोत अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां करे नाम प्यारा, आत्म झोली पांयदा। आत्म झोली आप भराए, हरि हरि नाम अमोला। काया चोली नाम रंगाए, दर दुआरा एका खोल्हा। साची डोली आप उठाए, इक्क सुणाए शब्द सच्चा ढोला। हौली हौली अन्दर बोला। आप चुकाए पड़दा उहला। तन श्रृंगार कराए सोलां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत बणाया दर घर गोला। सोलां तन श्रृंगार, नौ सत्त वंडया। सोलां इच्छया कर विचार, मेला मिले हरि वरभण्डया। दहि दिशा पावे सार, वेख वखाणे ब्रहिमंडया। साची भिच्छया नाम अपार, पार कराए जेरज अंडया। करे रक्खया विच संसार, भगत जगत जगत भगत तन मन सदा रक्खे ठंढिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल ब्यास किनारा पार आर कंढुया। बेआस बेआस मनमुख मन मती दए दुहाईआ। सदा सदा तन रहे दुःख, वा तत्ती अग्न जलाईआ। आवे जावे गर्भ उलटा रुख़, नाम रती हथ्थ ना आईआ। जगत तृष्ना रहे भुक्ख, धीरज यती ना कोई दवाईआ। कलिजुग कालख काला होया मुख, चरन नीती ना कोई बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल ब्यास किनारा पार आर कंढिआ, जन भगतां दे समझावे मती, एका नाम रसना भोग, राग रागणी छत्ती लेखा दए चुकाईआ। जो जन गाए दन्द बत्ती, सुरत सवाणी होए सती, सतिगुर साचा पंचां चिखा आप बणाए लोक विकारा रिहा जलाया। साची चिखा कर त्यार, अचरज खेल रचाया। माया ममता कर प्यार, दोहां मेल मिलाया। अगम्म अगम्मा करे ख्वार, जूठा झूठा तेल चढ़ाया। कलिजुग वेख अन्तिम वार, खाली ठूठा लक्ख चुरासी हथ्थ फड़ाया। गुरमुख साचे संत दुलार देवे नाम एका मुठा, शब्द झोली रिहा भराया। भरया रहे भगत भण्डार, नर नरायण साचा तुठ्ठा, तोट रहे ना राया। जगत कराए वणज वापार लुकया रहण ना देवे कोई गुठ्ठा,

५५७ ०५

वेख वखाणे अन्दर बाहर संत सुहेला जो जन रुड्डा, जुगां जुगां दा विछड़यां यार, |मेल मिलाए दर दरबार, जगत भगत प्रीती सच विहार, आप आपणा कर्म कमाया। आपे जाणे जोग जुगत, जोग जुगीशर आप। आपे जाणे मोख मुक्त, तप तपीशर आप। आपे जाणे सच भगत, मुन मुनीशर आप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा वड प्रताप। वड प्रताप करे रघुराई। लेखा रिहा बाकी साल ढाई। नाता तुटे धी जुवाई। लाड़ी मौत करे कुड़माई। धर्म राए घर वज्जी वधाई। चौंसठ चौंसठ पायण वेल, इक्क रुत्त वेखण काया बुत्त माई कालका आई। दर दर घर घर नौ दुआरे दिसे दुःख, महल्ल अटारी तृष्ना भुक्ख, जीव जन्त गंवारे सार ना पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, लोकमात ना होए जुदाई। एका ढईआ शब्द नईआ, प्रभ सच्चा रिहा चलाईआ। चित्रगुप्त साचा सईआ, धर्म राहे कढ्ढे वहीआ, भैणां भईआ ना कोई सहाईआ। कलिजुग वहिण एका वहईआ, गुरमुख विरला मात रहईआ, लक्ख चुरासी दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां देवे नाम वडी वड्याईआ। ढईआ ढाहे गढ़ कोट किल्ला महल्ल अटल उच्च मुनार। एका वजे शब्द चोट, निरँकार निरँकार अपर अपार। मेट मिटाए कोटन कोट, गुरमुख विरला उधरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, वेखे परखे परखणहार। जग ढईआ ढहि ढहि होए ढेरा। ना कोई दीसे सञ्झ सवेरा। सृष्ट सबाई आप भुलाई, करे कराए हेरा फेरा। कलिजुग पाए काल दुहाई, चारों कुन्ट पाए घेरा। दीन दयाल दया कमाई, जन भगत उधारे कर कर हेरा फेरा आपणी मेहरा। आप आपणा दरस दिखाई, सदा सद वसे नेरन नेरा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख कर, करे कराए सच निबेड़ा। करे निबेड़ा हक्क, नूर जलालया। दर दुआरा रिहा तक्क, जोत निरँजण इक्क अकालया। लक्ख चुरासी फ़ल गया पक्क, ना कोई जगत दलालया। साध संत बैठे विच शक़, प्रगट होए गोबिन्द गोबिन्द गुर गोपालया। वेले अन्तिम अगे लाए सारे हक्क, काया मन्दिर इक्क दवाल्या। कोई ना सके किसे मात रक्ख, जोती जगत बुझे जुवाल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द वजाए साचा ताल, दो जहानां एका तालया। दो जहानी वज्जे ताल, शब्द नगारा वजदा ए। गुरमुख विरला साचा वेखे लाल, मनमुख दर दुआरा तजदा ए। हरि पकड़ उठाए काल महांकाल, लक्ख चुरासी खा खा मूल ना रज्जदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां करे सदा सदा प्रितपाल, धर्म दुआरे बहि बहि सजदा ए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क झुलाए शब्द निशान, जन भगतां पड़दे कज्जदा ए।

★ २ फग्गण २०१२ बिक्रमी पिण्ड बोपा राए नसीब सिँघ दे गृह ★

पूर्ब लहिणा लेख है, वेखे लिखणहार। सभ घट आप विसेख है, आपणे रंग रवे करतार। साचे नेत्र रिहा पेख है, पेखणहार सर्ब संसार। गुरमुखां मस्तक लाए नाम साची मेख है, किरपा करे अपर अपार। आप पछाणे धरया भेख है, जोत निरँजण कर अकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन धूढ़ी साचा मजन कराए तन श्रृंगार। साचा मजन चरन धूढ़, गुर शब्दी आप कराईआ। जग चतुर मन मूर्ख मूढ़, तन भाण्डा काचा भाग लगाईआ। लक्ख चुरासी कूड़ो कूड़, हरि भाणा सहिज समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द वणजारा एका वणज कराईआ। एका वणज कराए, दुआरा खोल्ल्या। दर दुआरा इक्क वखाए, शब्द चहु अक्खर हरि हरि बोल्लया। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, नाम सुणाए साचा ढोल्लया। एथे ओथे होए सहाए, हरिजन चरन बणाए गोल्लया। दर घर साचे देवे थांए, पूरा तोल हरि हरि तोल्लया। पार कराए फड़ फड़ बांहें, चरन प्रीती जो जन घोली घोल्लया। गुरमुख हँस बणाए काएं, अमृत आत्म एका डोल्लिआ। ना कुछ पीए ना कुछ खाए, शब्द रलाया नाल विचोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा नाम मधाणे जगत विरोल्लया। नाम मधाणा काया चाटी, गुर पूरा रिहा चलाईआ। दुरमति मैल जाए काटी, वड सूरा दया कमाईआ। लेख चुकाए अठसठ्ठ तीर्थ ताटी, सर्बकल भरपूरा दरस दिखाईआ। जोत जगाए काया माटी, नूरो नूर जोत सवाईआ। दर दुआरा नेड़े वाटी, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। मनमुख नौ दुआरे रसना रस रहे चाटी, साचा राह ना कोई वखाईआ। जन भगतां आप चढ़ाए औखी घाटी, फड़ बाहों पार कराईआ। मस्तक लेखा लिखे लिलाटी, आदि शक्त जगत भगत जोत निरँजण रिहा जगाईआ। दर दुआरे बजर कपाटी पाटी, एका रंगण रंग वखाईआ। संत सुहेले लाहा हरि दर खाटी, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समाईआ। आप आपणे अंक समाया, गुरमुख सोए जगाए। राउ रंक किसे भेव ना राया, द्वार बंक इक्क वखाए। मात पित किसे ना जाया, जीवत जी मर जाए। गुर शब्द विचोला हरि प्रभ पाया, धरनी धर आप अख्वाए। साचा ढोला राग सुणाया, नाम चलाए साची नाए। एका बोला जगत विहाया, नौ खण्ड पृथ्वी करे खै। साचा तोला आप अख्वाया, गुरमुख मनमुख बचया कोई ना रहे। कलां सोलां जोत जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण साचे बहे। शब्द सिँघासण हरि दातार, आपणा आप सुहाया। जोत अबिनाशण कर उज्यार, साचा चरन छुहाया। होए प्रकाश विच संसार, अन्ध अन्धेर मिटाया। पृथ्वी आकाशन एका धार, सूरज चन्द चन्द रहे लिव लाया। आपे वसे हो हो

बाहर, बन्द बन्द विच समाया। आपे वरते गुप्त ज़ाहिर रंग रूप किसे भेव ना पाया। आपे गूझ ज्ञाना दाता शायर, शरअ शरीअत विच न आया। पंचम पकड़ पछाड़े कायर, नाम कटारा रिहा चलाया। नेड़ ना आयण ऐर गैर, चौसठ खेले खेल रचाया। हरिजन तारे कर कर मेहर, मेहरवान सर्ब सुखदाया। प्रगट होए शेर दलेर, सिँघ शेरा शेर अख्वाया। नौ खण्ड पृथ्वी लवे घेर, सत्तां दीपां फेरा पाया। अन्तिम ढहि ढहि होए ढेर, ना सके कोई बचाया। ना कोई जाणे सञ्झ सवेर, अन्ध अन्धेर कलिजुग छाया। जीव जन्त साध संत भुलाए कर कर हेर फेर, देवी देव भरम भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गरीब निमाणयां देवे वर, जिउँ भीलणी दर खाए बेर, अमृत आत्म जाम प्याया। अमृत आत्म जाम अवल्ला, निझर रस चवीजे। गुरमुखां वेखे इक्क महल्ला, खड़ा रहे दर दहिलीजे। सृष्ट सबाई अछल अछल्ला, किसे दिस ना आए नेत्र तीजे। हरिभगत सुनेहड़ा एका घल्ला, शब्द बीज साचा बीजे। पंच पंचायण करे हल्ला, तन मन मन तन गुर शब्द भिन्ना जगत भीजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निमाणा वेख दर, आप कराए शब्द सरूपी साची रीझे। शब्द वस्त अपार, हरि रखाईआ। कलिजुग अन्तिम किया प्यार, गुरमुख साचे लेखा रिहा समझाईआ। तीजे लोचन दोहरी धार, अन्तिम भिच्छया झोली पाईआ। जगत विकारा मारे मार, आपणी रच्छया रिहा कराईआ। जोत सरूपी कर आकार, लेखा लिख्या रिहा चुकाईआ। उपजे शब्द सच्ची धुन्कार, धुनी नाद अनादा रिहा वजाईआ। पड़ा पसंती जाणे धार, मधम बैखरी भेव ना राईआ। साची कन्ती पुरख भतार, साची सेवा रिहा कमाईआ। आत्म सेजा कर त्यार, प्रेम विछोणा इक्क विछाईआ। सोलां करे तन श्रृंगार, रूप अनूपा आप वखाईआ। जोत निरँजण कर आकार, शाहो भूपा आप अख्वाईआ। साचा सज्जण मीत मुरार, एका दूजा भउ चुकाईआ। शब्द बख्शे साची धार, धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। सुन्न अगम्मो आवे पार, दस्म दुआरे विच टिकाईआ। सुन्न अगम्मी शब्द अपार, ओंकारा देस सुहाईआ। ओंकारा शब्द जैकार, जोती सुत रिहा उपजाईआ। जोती जोत बली ललकार, वरन गोत ना कोई रखाईआ। आपणे रंग रवे करतार, धूआँधार रहण ना पाईआ। प्रगट होए विच संसार, जुगा जुगन्त बणत बणाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। मनमुख भुल्ले मुग्ध गंवार, गुणवन्ता नज़र ना आईआ। अन्तिम आवे पासा हार, लक्ख चुरासी रोवे धाहां मार, ना सके कोई छुडाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, शब्द फड़े तीर कमान चारों कुन्टां मारे वारो वार, दहि दिशा वेख वखाईआ। गगन पतालां पावे सार, पुरीआं लोआं हाहाकार, करोड़ तेतीसा करे विचार, शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, ब्रह्मा वेता दए दुहाईआ। प्रगट होए हरि करतार, कलिजुग वेखे काली धार, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क द्वार, सत्तां

५५६
०५

दीपां भगत विहार, साची जोती रिहा जगाईआ। पवण स्वासे कर प्यार, नाम अरदासा अन्तिम अन्त विच संसार, गुरमुखां देवे चरन भरवासा, जोती जोत सरूप हरि, सदा बख्शिंदा बख्शणहार। क्या मांगे जन मंगता, मंगण मंग द्वार। गुर पूरा काया चोली रंगता, नाता तुटे नौ द्वार। प्रभ पाया मेल मिलाया साची संगता, खुल्हे बन्द किवाड़। हउमे रोग गंवाए हँगता, नेड़ ना आए पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नीकन नीका देवे वर, नेड़ ना आवे मौत लाड़। हरि शब्द अपार, हरि उपाया। गुर पूरे दे अधार, लोकमात जणाया। लोकमाती कर विचार, साची धारा रिहा वहाया। साची धारा अपर अपार, काया मन्दिर अन्दर इक्क वखाया। दीपक जोती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेरा सर्ब मिटाया। कलिजुग भेख वटाए, भेव ना राया। लक्ख चुरासी वेख वखाए, दिस किसे ना आया। औलीए पीर शेख़ मेट मिटाए, साचे हिसे रिहा वंडाया। बिधना लिखी रेख मिटाए, गुर सोए मात जगाए, नेत्र लोचन नैण साचा वेख वखाए, दूई द्वैती पड़दा लाहया। नाम मेखण मस्तक साची लाए, नौ द्वारी बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आपणे भाणे विच समाया। हरि भाणा बलवान, किसे ना जाणया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, आपे जाणे आवण जाणया। जीव जन्त जहानी पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, अंज़ील कुराना आई हाणया। प्रगट होए हरि शब्द नौजवान, रसना फड़े तीर कमानया। लक्ख चुरासी एका मारे सच्चा बाण, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, जन भगतां देवे नाम गुण निधानया। कलिजुग काली रैण अन्धेरा छाया ए। माया राणी झूठी डैण, बेमुखां भेव ना राया ए। अन्तिम चुक्कणा लहिण देण, धर्म राए रिहा अटकाया ए। नामा तुट्टे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण, कूड़ कुटम्ब मात बणाया ए। गुरमुख विरला दर दुआरे दरस पेखे तीजे नैण, आत्म गहिणा प्रभ साचे तन पहनाया ए। शब्द जणाए भाणा सहिण, कलिजुग माया झूठा वहिण, आपे होए सहाया ए। संत सुहेले इक्क इकेले, धुर दरगाही अन्तिम मेले बैठ इक्ट्ठे रहण, आत्म सेजा सच सुहागण एका नारी कन्त प्यारी शब्द रंगीला पलँघ विछाया ए। मोहण माधव नैण मुँधार पारब्रह्म ब्रह्म रूप पसारी, एका रंग आपणा आप वटाया ए। करे खेल दसम दुआरी, आपे खोल्हे बन्द किवाड़ी, साची हाटी इक्क वखाए तीर्थ ताटी, अमृत आत्म सच सरोवर इक्क इशनान कराया ए। हरिजन चढ़ाए औखी घाटी, दीपक जोती जगे लिलाटी, नूरो नूर कराया ए। अगे दिसे नेड़े वाटी, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, एका रंग भगत जनां दर साचा संग जगत विछोड़ा शब्दी जोड़ा धरनी मेल मिलाया ए। सुरत सवाणी होई सुहागण, कन्त मिलावा पाया ए। इक्क उपजाए साचा रागन, नेड़

ना आई पंचम नागन, प्रभ सच श्रृंगार कराया ए। दर मन्दिर अन्दर होए वड वडभागन, पंजे मोए पंजे सोए पंचां रिहा जगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख हरि, दीपक जोती रिहा टिकाया ए। दीपक जोती दीप बलोए, वेखे त्रै त्रैलोआ, वरन गोती मेट मिटाए। आप आपणा रंग, पुरख अबिनाशी साचा सोहे। शब्द घोड़े कसे तंग, नाम नगारा वजे मृदंग, लोआं पुरीआं जाए लँघ, करे कराए सोई सोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, दुरमति मैल जन भगतां दर दुआरे साचे धोए। दुरमति धोए मैल, दया कमांयदा। अठसठ तीर्थ रही फैल, ना भेव कोए जणांयदा। हरिजन जन हरि साचे संत सुहेले एका घर मिले साचा वर, खुल्हे शब्द दर, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, साची तरनी रिहा तर, ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, हरिभगत दुआरा जोत निरँकारा हरि शब्द जैकारा एका एक करांयदा। शब्द जैकारा एक एक जणाईआ। जन भगतां करे बुध बिबेक, आत्म भिच्छया झोली साची पाईआ। चरन कँवल कँवल चरन हरि साची टेक, सृष्ट सबाई मिथ्या आप वखाईआ। जगत माया ना लाए सेक, साची सिख्या रिहा सिखाईआ। दरस अनोखा साचे नेत्र नैण पेख, धुर संजोगा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सच दुलारया, पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, वरभण्डी रिहा जगाईआ। वरभण्ड प्रभ पाए वंड, गुरमुख मात जगाए। नौ दुआरे कीने खण्ड, दसवें बूझ बुझाए। हत्थ फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, पंचम खण्ड खण्ड कराए। पंचम दूर दुराडे पायण डण्ड, पंचम पंचां मेल मिलाए। पंचम पंच जवानी गई हंढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम रंगण रंग रंगाए। रंगण रंग अपार आप रंगांयदा। जो जन मंगण नौ द्वार शब्द घोड़े तंगन, आप कसांयदा। आप रखाए आपणे अंगन, आर पार दूजा दर ना मंगण जांयदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगन, वजाए नाम मृदंगन, मानस देही ना होए भंगन, लक्ख चुरासी पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, कलिजुग काया खेड़ वखांयदा। जोत अकाल दयाल जगत जगाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, किसे दिस ना आईआ। दिवस रैण रहे रखवाल, प्रितपाल रिहा कराईआ। सद वसे नाल नाल अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। गुरमुखां रिहा सुरत संभाल, वज्जा जन्दर तोड़ वखाईआ। मारे शब्द इक्क उछाल, डूंघी कन्दर पार कराईआ। देवे नाम अनमुल्लड़ा लाल, मस्तक थाली विच टिकाईआ। हरि जन जन हरि साची घालन रहे घाल, गुर पूरा मात दलाल, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आप वखाए काया मन्दिर इक्क सुहावा ताल, अमृत झिरना रिहा झिराईआ। फ़ल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म मेवा इक्क खवाईआ। सुरत सवाणी होए बेहाल, देवी देवा दरस पाईआ। बहत्तर

नाड़ी वज्जे शब्द सच्चा ताल, पिछा अगाड़ी दिस ना आईआ। काया दिसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चा टिल्ला नौ दुआरे हरि वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी वेखे किल्ह्रा, बजर कपाटी सिला, ना कोई सके बूहा लाहीआ। शब्द सरूपी चार दिवार, प्रभ साचे रचन रचाईआ। जोत निरँजण पहरेदार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। ना कोई दीसे पंचम यार, नारी खौते ना कोई वखाईआ। ना कोई सुणे सुणाए पुकार, हाहाकार ना कोए जणाईआ। एका एक शब्द सरूपी वहिंदी धार, साची धारा रिहा वहाईआ। दस्म दुआरी खुल्ह्रे बन्द किवाड़, सुन अगम्मी पार कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पसार, आप आपणा रंग रंगाईआ। निहकरमी कर्म विचार, धर्म द्वार धर्म कमाईआ। मानस जन्म दए सुधार, झूठी माया भरम मिटाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, काया चोटी उप्पर चढ़ाईआ। देवे शब्द सच्ची धुन्कार, कोटन कोटी राग हथ्थ ना आईआ। धन्न धन्नवन्ता इक्क दातार, सति सतवन्ता आप अख्वाईआ। हरिजन बणाए साची बणता, साचा सईआ मेल मिलाईआ। शब्द चाढ़्हे रंग बसंता, आदि अन्ता अंक समाईआ। महिंमा जगत भगत गिणाए अगणता, अगणत गणी ना जाईआ। देवे वड्याई हरि साचे संता, जन जननी लेखे लाईआ। हउमे रोग गंवाए रंगता, साची संगता गुर सरनाईआ। दर दुआरा एका मंगता, अकाल मूर्त मूर्त रघुराईआ। आपे होए भुक्खा नंगता, शाह कंगाल सहिज सुखदाईआ। इक्क वहाए अमृत धारा साची गंगता, गंगा गोदावरी सार ना पाईआ। शब्द घोड़े कसे तंगता, चौथा पौड़ा रिहा उठाईआ। पंच पंचाइनी होए जंगता, ब्रह्मण गौड़ा भेव ना राईआ। सम्बल नगरी वासा सौड़ा, गुर गोबिन्दा जोत जगाईआ। धुर दरगाही आया दौड़ा, दिस किसे ना आईआ। दर घर साचे लाया एका पौड़ा, ना हथ्थ किसे फड़ाईआ। आपे जाणे लम्मा चौड़ा, साढे तिन्न हथ्थ सीआं अन्दर रिहा टिकाईआ। भगत जनां हरि साचा बौहड़ा, जीवां जन्ता भेव ना राईआ। हरि संत सुहेले आत्म लगी औड़ा, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। लक्ख चुरासी वेखे फ़ल मिट्ठा कौड़ा, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां आपे वंड वंडाईआ। लोआं पुरीआं अगम्म अगम्मा, हड मास ना नाड़ी चम्मा, मात पित ना किसे जम्मा, आप आपणा रिहा उपाईआ। पवण स्वासी ना लए दंमा, नेत्र नीर वरोले ना छम्म छम्मा, साची कारा रिहा कराईआ। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड करे खण्ड खण्डा, कलिजुग देवे अन्त दुहाईआ। ब्रह्मे आत्म होई रंडा, चारे वेदां वक्त चुकाईआ। शिव जी तोड़े माण घमंडा, बाशक तशका गल लटकाईआ। करोड़ तेतीसा होया रंडा, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लोकमात मार झात, सोहँ फड़या हथ्थ विच डण्डा, चारों कुन्ट दहि दिशा रिहा उलटाईआ। आपे तोड़े सर्ब घमंडा, मेट मिटाए भेख पखण्डा, राज रजानां शाह सुल्तानां जीव जहाना रिहा जगाईआ। जोत सरूपी खेल महाना, आपे वेखे वाली दो जहाना,

लक्ख चुरासी अन्तिम अन्त बन्नृण आया एका गाना, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। प्रगट होए गुण निधाना, धर्म राए सीस झुकाना, अठाई कुण्डां कुण्डा लाहीआ। गुरमुख साचे चतुर सुजाना, मिले मेल श्री भगवाना, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, वज्जे तीर शब्द निशाना, बजर कपाटी पार कराईआ। चरन प्रीती इक्क ध्याना, आप बिठाए शब्द बिबाणा, नौ दुआरे इक्क उडाना, जीउ पिण्ड बाहर कढाईआ। पाए वंड सगल टिकाना, सच्चा शब्द इक्क सुणाना, छत्ती रागां इक्क तराना, अनहद धुन सुणाए काना, आपे आप रिहा उपजाईआ। निज घर आसण इक्क विछाना, हरिजन साचा संग समाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म सेजा कन्त कन्तूहला शब्द झूला सोहँ बरखे बरखा फूला, अगला पिछला मूल आप चुकाना। सति पुरख अपार, सति उपाया। घर सत्तवें कर आकार, जोती नूर कराया। जोती नूर होया उज्यार, साया हेठ आप रखाया। जोती साया खेल अपार, ओंकारा देस वसाया। ओंकारा साची धारा, साची धार रिहा वहाया। साची धारा अपार, सो साचा नाउँ रखाया। सो होड़ा इक्क अपार, जोती जोड़ा नाल मिलाया। जोती जोड़ा इक्क विचार, साचा तोड़ा सीस लगाया। साचा तोड़ा तन शृंगार, सोलां कलीआं नाल बंधाया। सोलां कलीआं अपर अपार, सोलां इच्छया बन्न वखाया। सोलां इच्छया धर्म जैकार, पाई भिच्छया धर्म कर्म कमाया। साचा शब्द किसे ना दिस्सया चन्द बतीसा रिहा गाया।

५६३ राग छतीसा पाया हिस्सा, मुन मुनीश्र आप सुणाया। पंचम पावे साचा हिस्सा, पवण स्वासी संग रलाया। जोती जोत सरूप ५६३

०५ हरि, पंच दुआरे जोती शब्दी मेल अपारे, पवण हुलारा इक्क दवाया। जोती शब्दी मेल पवण स्वास्सया। जोत निरँजण ०५

चाढ़े तेल पृथ्वी आकास्सया। चौथे घर वेखे वेहल, गुरमुख साचे संत सुहेले आपे सद्दे, निज घर रखे सद वास्सया। दरस दिखाए दया कमाए आप आपणे मध मधे, मध आत्म जाम पिलाया। चरन कँवल कँवल चरन जन हरि साचे बद्धे, पल्ले दाम नाम बन्नृाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे तीजे दर तेरी हद्दे, नौ अठारां रंग रंगाया। दूजे घर साची बिधे, आसा तृष्ना फिरे हलकाया। एकम एक एका गुरमुख विरले लाधे, गुर मन्त्र शब्द जणाया। पाया पद अमर वज्जे नाद नदे राग अनादा अनहद इक्क सुणाया। आपे जाणे भेव बोध अगाधा, ब्रह्मादा खेल रचाया। गुरमुख विरले रसन अराधा, साचा देवे साची नाम दादा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत सुहाए इक्क दर, दर घर साचा इक्क सुहाया। जन दुआरा बंक है, बंक दुआरा आप। आपे राउ रंक है, सृष्ट सबाई माई बाप। प्रभ साचा जोत सरूपी वासी पुरी घनक है, जन भगतां मेट मिटाए तीनो ताप। जोत प्रगटाए बार अनक है, आप जपाए आपणा जाप। हरिजन वड्याई जिउँ जनक है, ना दिसे कोई संताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, दरस

दिखाए आपणा आप। वर पाया घर आपणे, मिले मेल गोबिन्दा। जपे जाप जप जपने, हरि सदा सदा बख्शिंदा। मेट मिटाए तप तपने, सगल मिटाए आत्म चिन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी देवे वर, हरिजन बणाए लोकमात साची बिन्दा। गुरमुख गुरमुख गुरमुख, गुर चरन ध्याना। आत्म तृष्ना उतरे भुक्ख, देवे नाम शब्द बिबाणा। उज्जल करे मात कुक्ख शब्द चलाए नाम निशाना। सुफल कराए मात कुक्ख, सोभावन्ती नार सुहाना। मात गर्भ ना उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाना। मानस देही मिली मनुक्ख, मिल्या मेल हरि भगवाना। जगत वसूरा उतरे दुःख, चरन कँवल गुर इक्क ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ बन्ने हथ्थीं गाना। सोहँ गाना नाम डोरी, प्रभ साचा तन्द बंधाईआ। लोकमात कलि करे चोरी, बन्दी बंध बंधाईआ। ना कोई जाणे जोर जोरी, अन्ध घोरी वेख वखाईआ। आप आपणे हथ्थ रक्खे डोरी, संग अंग प्रभ जाए तोरी, आप आपणा संग निभाईआ। शब्द चाढ़े साची घोड़ी, धुर दरगाही जुड़ी जोड़ी, जगत विछोड़ा भगती जोड़ा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंग संग संग अंग नाम मृदंग रिहा वजाईआ। नाम मृदंग वज्जे तन होए शब्द घनघोरा। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, मिटे पंज चोरा। दर घर साचे बूझ बुझाई, चुक्के मोरा तोरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे शब्द घोड़ा। मनमति जगत विकार है, सहिंसा रोग जलाए। गुर शब्द ना किसे प्यार है। दुरमति रही बिल्लाए। पंजां तत्तां हाहाकार है, ना कोई धीर धराए। रती रत उब्बल घार है, सार कोई ना पाए। ना कोई पुरख पुरखोतम नार है, कन्त सुहागी आप हंढाए। वरन गोत ना शब्द वपार है, साचा वणज कराए। एका जोत जगत अधार है, पवण उनन्जा विच समाए। हरिभगत शब्द अधार है, बवन्जा अक्खर वखर रखाए। एका एक जोत निरँकार है, सुरत बिबेक बणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हउमे रोग गंवाए। मनमति जगत विकार है, तन मन होए पुराणा। लोभ मोह हँकार है, काम क्रोध निशाना। नौ दुआरे सद ख्वार है, रस रसना फिर वखाना। गुरमती नाम अधार है, तन भाण्डा भरम भन्नाना। वा तत्ती ना घर सच्चे दरबार है, चरन धूढ़ सचा इशनाना। दीआ बत्ती ना कोई विहार है, दीपक जोती इक्क जगाना। अट्ठे पहर रहे उज्यार है, सञ्झ सवेर ना कोई दिखाना। दहि दिशा महल्ल अपार है, चारे कुन्टां बन्द रखाना। नाम झरोखा इक्क अपार है, दर दरवाजा धर्म निशाना। हरि जन जन हरि मौका अन्तिम वार है, मिले मेल श्री भगवाना। सोहँ बेड़ा जगत त्यार है, गुरमुख विरले चरन टिकाना। एका दूजा आपे बन्ने वार है, साची सरन इक्क रखाना। लेखे लाए सौ सौ जन्म ल्या अवतार है, सो साचा जाप जपाना।

देवण आया भगत अधार है, आपणा देण मूल चुकाना। भाणा सहिणा कर्म विचार है, मानस जन्म लेखे लाणा। साचे बहिणा दर दरबार है, चुक्के आवण जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम गुण निधाना। मनमति जगत सभ मथया, रही रत वरोल। रसना गाए ना साची गाथया, अन्जाणी बाली रही अनभोल। पंचम पंजां पाई नथ्थया, काया मन्दिर डूंघा ढोल। ना कोई चढ़ाए साचे रथया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेखे घर, आपे वसे सदा कोल। मनमति तेरा नाता, मनमुख तन जुड़ाया। एका भुल्लया पुरख बिधाता, काया सुख उपजाया। दिवस रैण अन्धेरी राता, सतिगुर गुर सति मुख ना नज़री आया। कर्म हीण नार कुलक्खणी कमज़ाता, साचा कन्त ना सेज हंढाया। ना कोई देवे साची दाता, शब्द भण्डार हरि झोली पाया। वेले अन्त ना पुच्छे वाता, पिता मात गोद जिस उठाया। हरि जन जन हरि एका एक निरँजण ज़ाता, चरन नाता धर्म धराया। आप सुणाए आपणी गाथा, साची वरनी हँस बिठाया। मिल्या मेल कमलापाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, मनमुखां दिस ना आया। मन मति विभचार ना रंग राती। कलिजुग जीवां कर्म रही विचार, करे खेल बहु बहु भांती। वरन अवरना हाहाकार, चारों चार बणाए साथी। पंचम पंचम ना पायण सार, पंचम टिका काला माथन माथी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख विरले संत विरोले, भाग लगाए काया चोले, शब्द बिठाए साचे डोले नाम कहारा साचा साथी। तन मन हरया सीतला, मिल्या पुरख अगम्मा। मेल मिलावा साचे मीतला, लेखे लग्गे काया चम्मा। मानस देही जगत जग जीतला, रसना गाए दम दमा। सतिजुग साची चले रीतला, एका एक हरि हरि नाउँ निमा। साचा मन्दिर गुरुदुआरा तन मसीतला, जोती जोत सरूप हरि, साचा शब्द देवे साचा पूरन होए कम्मा। तन मन्दिर गुरद्वार, गुर गुर जाणया। गुर मन्दिर बैठ अपार, कर्म पछानया। शब्द बख्शी साची धार, साचा धर्मी धर्म कमानया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अपार, जरमी जम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे जगत वर, सतिजुग तेरी साची धारया। सतिजुग साची धार आप बणांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द घोड़ हरि अस्वार, लोआ पुरीआं आप जणांयदा। त्रै त्रैलोआं एका कार, वरभण्ड खण्ड प्रभ शब्द अधार, ब्रह्मण्ड रचन रचांयदा। शब्द फड़ तेज कटार, मारी जाए वारो वार, ब्रह्मा शिव इन्द हिलांयदा। वरभण्डी करे ख़बरदार, भेख पखण्डी चोर यार, साची डण्डी नाम अधार, नाम कन्ढी इक्क वखांयदा। नार दुहागण मनमुख बेहंढी दो जहानां दिसे रंडी, कन्त भतार ना कोए हंढांयदा। गुरमुख विरले मात साची वंडी, दात इक्क शब्द नाम प्रचण्डी, साची भिच्छया झोली पांयदा। लक्ख चुरासी देवण आया दंडी, राज राजानां वढ्ढे कंडी, खण्डन

खण्डी आप करांयदा। चरन छुहाए सकेत मंडी, सम्मत चौदां चौदां लोकां चौदा हट्टां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पर्बत टिल्ले उच्च पहाड़, आप चबाए आपणी दाढ़, जंगल जूह जल थल विच समांयदा। वल छल छल धार भेखन बावना। कलिजुग काला कलि चारों कुन्ट अन्धेरी शामना। ना कोई जीव जहानी जाणे अमृत आत्म साचा जल, तृष्ना तजे ना कामनी कामना। दूई द्वैती मिटे ना सल, ना कोई फड़ाए साचा दामना। शब्द चलाए ना साचा हल, लग्गे फ़ल ना काया डालना। सच दुआरा ना ल्या मल, वेले अन्त संत कन्त पछतावना। गुरमुख गुर शब्दी गया रल, गुरमती बूझ बुझावना। साची घालन घाली घाल, आत्म जोती दीप जगावणा। भाग लगाए काया खल्ल, वरन गोती भेव मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, दूई द्वैती मिटे सल, एका नाम हरिजन आत्म ताम साचा भोग रसना मुख लगावणा। साचा भोग आत्म रस, निज घर आत्म पाए। पुरख अबिनाशी होए वस, रैण दिवस दिवस रैण सद सेव कमाए। प्रेम तराना तीर मारे कस, दो जहानी कार कराए। शब्द सुनेहड़ा राह साचा जाए दस्स, धुर निशानी इक्क वखाए। मिटे रैण अन्धेरी कलिजुग मस, ब्रह्म ज्ञाना इक्क जणाए। दर घर साचे मेला हस्स हस्स, नाद अनादा अनहद धुनी साचा राग सुणाए। साची जोत होए प्रकाश, ना कोई दिसे रवि ससि, बोध अगाधा शब्द जणाए। अमृत आत्म मुख चुआए साचा रस, तीर्थ तट्ट कोई दिस ना आए। एका घर दोए गए वस, सुरत शब्दी साचा मेल मिलावा होए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सच घर, दर घर साचे एका दाअवा होए। सच्चा दाअवा धुर अपील। गुरमुख करना शब्द वकील। एका देवे जगत दलील, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होए सम्बल नगरी साचा वासा, उप्पर छप्पर छाया नील। छप्पर छाया नील हरि सुहाया। चन्द सितार टिकाया। आप आपणे रंग समाया। साची सेवा जगत लगाया। सूर सूर्या साचा बंसा इक्क प्रकाश वखाया। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी इक्क इकग्गरी जोत निरँजण संग रखाए, सगल समग्री तिन्नां लोआं पाया, अडम्बर नाम सवम्बर शब्द विचोला दो जहानी एका एक रखाया। सम्बल नगर सच महल्ला, दो जहानां टिकाणा। आपे वसे इक्क इकल्ला, शब्द पवण विच समाणा। आपे वेखे जल थला, नौ खण्ड वंड वंडाणा। सत्तां दीपां आपे रला, ब्रह्मण्ड विच समाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निज घर वासा इक्क रखाणा। दूसर किसे दिस ना आए, जन भगतां साचा संग रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट दहि दिशा मार ध्याना। आपे वरते आपणा भाणा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जिस उपाया। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, दया कमाया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, साचा मार्ग रिहा चलाया। जगत विचारा देवे मथ, शब्द कुण्डा एका लाहया। लेखा

५६६ ०५

चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, दर दुआरा इक्क वखाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जोत निरँकारा दर्शन पाया। रसना कथनी ना सके कथ, अकथ कथा अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत द्वार जगत उज्यार आपणा चरन छुहाया। भगत निमाणा हीन है, गुर पूरे लगे पाए। गुर बचन शब्द अधीन है, वड सूरे सेव कमाए। रसना रस चीन है, हरि हज़ूरे विच समाए। वखर अक्खर जगत कीन है, साचे घर वसाए। मनमुखां काया मन्दिर विच हँकारी बीन है, पुरख अबिनाशी दिस ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बंधाए तत्तां तीन है, मन मति बुध एका रंग रंगाए। मन मति बुध प्रभ पाए डोरी, शब्द नाम रखाया। दर दुआरे कारज सुध, मनमुख जीवां करे चोरी, कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, दिस किसे ना आया। जगत चुकाए मोरी तोरी, पंच ना पायण दर दुआरे शोरी, आपे आप रिहा दुरकाया। हरि जन जन हरि साचा पिण्ड चढ़े शब्द साची घोड़ी, नाम सेहरा सीस गुंदाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जीआं दान जोग जुगत भगत गुर चरन ध्यान लगाया। कोट ब्रह्मण्ड खोज थक्के, भेव किसे ना पाया। जेरज अंड पिण्ड ब्रह्मण्ड वंड, लेख सके वेख ब्रह्मा ना राया। आप सुणाए नौ खण्ड, सुरत सुहागण दिसे रंड, साची सेव ना कोई कमाया। गुरमुख विरला हथ्थ फड़े चण्ड प्रचण्ड, एका वंड वंडाया। नर हरि साचा राज राजानां शाह सुल्तानां वाली दो जहानां शब्द सरूपी देवे दंडे, शब्द कुहाड़ा हथ्थ उठाया। मेट मिटाए भेख पखण्डे, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां दिवस रैण रैण दिवस होए सद सहाया। दिवस रैण आत्म घर मेल मिलावा हरि हरि कन्ता। आप चुकाए जगत मोह, भेखाधारी जुगा जुगन्ता। चरन धूढ़ नुहाए साचे सर, लोकमात बणाए साची बणता। चरन कँवल कँवल चरन हरिजन साचा जाए तर, मिले वड्याई साधन संता। एका एक हरी हरि, ना जन्मे ना जाए मर, पूरन जोत श्री भगवन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत द्वार कर विचार, मेल मिलाए साचे कन्ता। पंचम मार पंच जिवाया। पंचम कर शब्द पंच सेव कमाईआ। पंचम शब्द कटार, पंचम फूलन हार पहनाया। पंचम मेला इक्क द्वार, पंचम पंचां विच समाया। पंचम गाए पंच सुन, पंच शब्द जणाया। पंच जणाए पंच जन, पंचम आप उठाईआ। पंचम अलाहे पंचम शब्द धुन, पंचम राग मिटाईआ। पंचम पुकार रिहा सुण, जोती जोत सरूप हरि, पंचम रंग रंगाईआ। पंचम माया पंचम पाया, पंचम पुरख अपारा। पंचम आया पंचम जाया, पंचम शब्द हुलारा। पंचम पाया पंचम वड्आया, पंचम नाम जैकारा। पंचम मिलाया पंच तृप्ताया, पंचम भरे भण्डारा। पंचम मिटाया पंचम पाया, पंचम मेल अपारा। पंच सुहाया पंच जगाया, पंचम दए हुलारा। पंचम पंचां विच समाया, पंचां वसे आपे बाहरा। पंच पायण

पंच गायण, पंचम रंग रंगाया। पंच आयण पंचम जायण, पंचां संग निभाया। पंच खायण पंच डायण, पंच पंचां हथ्थ फड़ाया। पंचम जोती इक्क मिलायण, पंचम शब्द जणाया। पंचम वेखे एका नैण, पंचम गोती इक्क बणाया। पंचम भाणा सिर ते सहिण, पंचम रोती रो रो नीर वहाया। पंच चुकाया लहिण देण, कोटी कोट फिरन हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम मेला पंचम घर पंच दर इक्क खुल्हाया। पंच उपन्ना शब्दी धन्ना, नाम वस्त अमोला। पंचम भन्ना पंचम खंना, पंचम तोल अतोला। पंचम चन्ना पंचम डन्ना, पंचम घोल घोला। पंचम मन्ना पंचम संना, पंचम वसे कोला। पंचम तना छप्परी छन्ना, पंचम बोले ढोला। पंचम पंचम पंचम हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल कला सोला। पंचम मीता पंचम चीता, पंचम रीत चलाया। पंचम सईआ पंचम नईआ, पंचम गीता इक्क सुणाया। पंचम जीता अमृत पीता, पंचम चीता इक्क रखाया। पंचम तत्तया काया मन्दिर मतया, चार दिवारी इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम परखे आपे मीता, आप आपणे विच समाया। पंचम बोले काया चोले, पंचम रिहा लुकाईआ। पंचम आत्म पड़दे फोले, वेख वखाणे काया चोले, पंचम रहे जुदाईआ। पंचम तोल साचा तोले, पंचम तत्त शब्द वरोले, काया मथना आप अख्वाईआ। पंचम वसे हरि हरि कोले, पंचम पंच रहे अनभोले, पंचम गोले रिहा बणाईआ। पंचम तोल साचा तोले,
५६८ जोती जोत सरूप हरि, पंचम खण्डा एका शब्द रिहा लगाईआ। पंचम जोग परपंच गंवाया। पंचम भोग आत्म रस पाया। ५६८
०५ पंचम संजोग हरि हरि हरि वर वर वर घर साचे पाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम मेला मेल कर, पंचम पंच उपाया। ०५
पंच उपाए पंच मिटाए, पंचां शब्द जणाईआ। पंच उठाए पंच खपाए, पंचम मेल मिलाईआ। पंच हसाए पंच रवाए पंचां तेल चढ़ाईआ। पंच छुडाए पंच बंधाए, पंचां अंग लगाईआ। पंच जणाए पंच भुलाए, पंचां भरम मिटाईआ। पंच उठाए पंच रुलाए, पंचां पंचम मीता एका शब्द सुणाईआ। माण रखाए अठारां ध्याए गीता, अर्जन नीता वेख वखाईआ। पंचम मन्नया पंचम डंनया, पंचम भए भयानक। पंचम राग सुणाए कन्नया, पंच उठाए अचन अचानक। पंचम पंच साचा जणया, पंच सुहाए साचा थानक। पंचम राह एका बन्नया, पंचम वेखे मोती माणक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे ख़लक ख़ालक। जगत जोग प्रभ दए त्याग। चरन छुहाए अयुध्या प्राग। वेख वखाणे अबिनाश सन्यास वैराग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सोया जाए जाग। अयुध्या प्राग दर दर घर घर मन्दिर अन्दर वेखे लग्गी तृष्ना आग। कवण हवन कवण जोती साचा दीपक जगे चिराग। कवण भबूती तन धोती, कवण हँस कवण काग। कवण मध आत्म रस पीती बूटी, कवण संत हथ्थ पकड़े वाग। कवण घर जीव जनकी

छूटी, कवण दुआरे मजन माघ। कवण जणाए शब्द त्रैकूटी, कवण दुआरे वज्जे अनहद साचा नाद। जगत माया कलिजुग छूटी, सृष्ट सबाई डस्से डस्सणी नाग। धुर दरगाही अन्तिम रूठी, कोई ना पकड़े अन्तिम वाग। जोत निरँजण एका तुट्ठी, दर घर साचे लाए भाग। चार वरन कर एका मुट्ठी, मेल मिलाए कन्त सुहाग। पंडत पांधे रहण ना देवे किसे गुठी, धोती टिका तन बस्त्र वेखे भाग। संत सुहेले जुगा जुगन्तर गए रुठी, आप मिलाए दया कमाए इक्क उपजाए शब्द वैराग। कँवल नाभी करे पुठ्ठी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क पछाने, गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे साचा मेला कन्त सुहाग। नीकण नीका फीकन फीका। दृष्ट जगत अगोचर स्वामी भेव जाणे जन जिया का। अन्त आदि आदि अन्त निहकामी, लेख लिखाणे वेख वखाणे राज राजाने साढे तिन्न हथ्थ सीं का। घट घट अन्तरयामी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए बलोए घर साचे नामी। आप अनामी आप नेहकामी अन्तरयामी जानत। आपे रैण आपे शामी, आपे पीर फ़कीर पछानत। आपे रस आपे तामी, आपे क्रोधी कपटी होए कामी, आपे ब्रह्म ज्ञानत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख घर, करे कराए सर्ब पछानत। आप पछाणे आपे जाणे आपे पड़दे ओहले। आप जगाए चतुर सुघड़ स्याणे, भाग लगाए काया चोले। आप सुणाए नाद अनादी साचे गाणे, सोहँ सो
५६६ साचे ढोले। आप जगाए राजे राणे, दर द्वार बणाए गोले। आप उठाए साध संत बेमुहाने, पूरा तोल हरि हरि तोले। आप ५६६
०५ चलाए नाम वंञ मुहाणे, सृष्ट सबाई काया फोले। आप रखाए आपणे भाणे, हरिजन अन्त मात ना डोले। आप उठाए ०५
इक्क निशाने, प्रगट होए कला सोले। चढ़े शब्द सच्चे बिबाणे, लक्ख चुरासी अन्त वरोले। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया डूंघी कन्दर साचे मन्दिर जगत पुजारी शब्द सरूपी बहि बहि बोले। शब्द पुजारी प्रेम इष्ट, एका एक रखाईआ। आपे जाणे आपणी दृष्ट, वशिष्ट वशिष्ट गुर बणाईआ। कलि हिलाए मात सृष्ट, दिस किसे ना आईआ। मति बुधी होई नष्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ। आपणी कल आप वरताए, शब्द कहर अन्धेरा। वल छल प्रभ आप कराए, ना कोई जाणे सञ्झ सवेरा। जगत धाम आप डुलाए, नौ खण्ड पृथ्वी पाए घेरा। चारों कुन्ट उठ उठ धाए, सिँघ शेर प्रभ शेर दलेरा। लक्ख चुरासी रोवे हावे, नाता तुट्टे मेरी मेरा। गुरमुख विरला गीत अनादी एका गावे, जिस जन करे आपणी मेहरा। एका पद घर साचे पावे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, ना मात कलि लावे देरा। इक्क शब्द इक्क शृंगार। इक्क गुर इक्क अधार। इक्क सुर इक्क नाद बोध अगाध अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आत्म वेखे सच घर, कवण दुआरे मेला माधव माध। हरि

दुआरा आप पछाणे, नौ दुआरे तज। भगत जनां हरि पावे सारे, कलिजुग माया पड़दे कज्ज। आवण जावण गेड़ निवारे, अन्तिम रक्खे लज। पतित पावन खेल अपारे, प्याए अमृत आत्म रज। दरस दिखाए अगम्म अपारे, काया काअबा इक्क कराए साचा हज्ज। शब्द जणाए सच्ची धुन्कारे, शब्द सरूपी मारे अवाज। जोत निरँजण इक्क अकारे, इक्क सुनेहड़ा गुर मंत देवे गुर शब्द साचा भज्ज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर घर दर एका एक बहे सज। सति पुरख अपार, सति समाया। घर सत्तवें कर आकार, जोती नूर उपाया। आपे वेखे आपणी धार, प्रभ आपणा दर सुहाया। छेवां घर कर त्यार, जोती सुत शब्द जणाया। शब्द चले अपर अपार, आदि अन्त भेव ना राया। आपे वेखे दर द्वार, पंचम कुण्डा आपे लाहया। पंचम कर पवण अधार, सच स्वासी रिहा चलाया। चौथा घर जोत निरँकार, दूर नेड़े दिस ना आया। साधां संतां करे प्यार, नाम विचोला विच रखाया। आपे होए बाहर वार, दूसर कोए रहण ना पाया। सोला करे तन शृंगार, शब्द सिँघासण दए वखाया। एका घर सच्चा दरबार, दर दरवेशा भेख वटाया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, निहकलंकी जोत जगाया। बीस बीसे ख़बरदार, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। बीस तेरां तेरां नानक धार, नैण नेत्र वेखण आया। राज राजानां करे ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा दर पुचाया। साधां संतां पावे सार, दस्म दुआरी बूहा लाहया। आपे पुच्छे जगत विहार, कवण चेला कवण गुर होए सहाया। कवण उठाए काया माटी भार, तीर्थ ताटी दुरमति मैल धवाया। कवण चड़ाए औखी घाटी, भाण्डा भरम दए भन्नाया। दीपक जोती जगे कोल लिलाटी, सति प्रकाश कराया। बजर कपाटी जिस जन पाटी, तन साची हाटी जोत सरूपी खेल रचाया। करे खेल बाजीगर नाटी, अगे दिसे नेड़े वाटी, कन्ढ्ढा पार ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग समाया। प्रभ आपणे रंग समाए, भेव भेव अभेदा। नौ खण्ड पृथ्वी खेल खिलाए, सत्तां दीपां अछल अछेदा। ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ वंड वंडे भेव गंवाए प्रभ चारे वेदा। सोहँ खण्डा इक्क उठाए, ना कोई जाणे जगत क्तेबा। चार कुन्ट जाम पिलाए कथनी कथे ना कोई जिह्वा। जेरज अंडां वेख वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला इक्क कर वड देवी देवा। पंचम लाया पंच हरि, पंचम जोत जगाईआ। पंच चुकाए आप डर, पंचम धीर धराईआ। पंचम देवे भगत वर, पंचम करे हलकाईआ। पंचम खोल्हे आत्म दर, पंचम आप भवाईआ। पंचम नुहाए साचे सर, पंचम सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचिन्त काया खेत, सोहँ बीज तन मन सीज साचे मन्दिर रिहा बिजाईआ। एका बाणा एका रत, शब्द चढ़ाए साचे रथ, दिवस रैण रहे खुमारी। आदि अन्त प्रभ रक्खे पति, दिवस रैण आपे खुमारी। पवण तत्त प्रभ रक्खे पति, सति

संतोखी धीरज यति, जोत जगाए अगम्म अपारी। भाग लगाए काया हट, तन मन्दिर अन्दर चौदां हट, देवे नाम वस्त नाम पसारी। इक्क वखाए तीर्थ तट्ट, दुरमति मैल काया कट्ट दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका देवे शब्द अधारी। दीपक जोती लट लट, सीस हथौड़ा मारे सट्ट, प्रभ खोल्हे बन्द कवाड़ी। साचा लाहा लैण खट, हरि शब्द पहनाए तन साचा पट, मानस देही पैज संवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात फड़ाए आपणा लड़, दो जहान श्री भगवान देवे सच सच्ची सरदारी।

★ १६ फग्गण २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

दहि दिशा हरि दिवस विचार। पाए हिस्सा विच संसार। बीस इक्कीसा जोत आकार। छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, राज राजानां करे ख़बरदार। एका शब्द चले हदीसा, चार वरनां एका धार। माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, कलिजुग अंतम गई हार। शाह सुल्तानां खाली खीसा, रोवण धाहां मार। गाया राग दन्द बतीसा, ना कोई सुणे मात पुकार। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, सोहँ शब्द धर्म जैकार। पुरख अबिनाशी इक्क बुलाया, नौ खण्ड पृथ्वी बन्न्हे धार। लोकमाती वेखण आया, शब्द घोड़े हो अस्वार। ज़ात अजात परखण आया गुरमुखां देवे चरन प्यार। नाम नाती बन्न्हण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बैठ सिँघासण लक्ख चुरासी वेखे परखे दिस ना आया। वेखे परखे परखणहार। नाम घसवटी लाए, करे खेल अपर अपार। सोहँ साची बाणी इक्क पढ़ाए, गुरमुख साचा वेखणहार। तीर्थ तट्टी इक्क इशनान कराए, आपे वसे घट घटी, घट घट अन्दर डेरा लाए, मनमुख जीवां अन्तिम भरनी धर्म राए दी चटी, डाहढे होण ख्वार। गुरमुखां जोत जगाए लट्ट लट्टी, काया मटी करे रुशनाए, शब्द धार अपर अपार। दर घर साचे सुट्टी, आपे निकले हो हो बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुरमति रिहा कट्टी, अमृत आत्म देवे ठंडा ठार। अमृत आत्म भर प्याला, गुरमुखां आप पिआंयदा। प्रगट होए दीन दयाला, सोहँ साचा जाप जपांयदा। वेखे खेल खेल त्तकाला, साची घाला घालण लेखे लांयदा। गल पहनाए साची माला, तोड़े माया जगत जंजाला, राह सुखाला इक्क वखांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, अग्नी जोत जगे ज्वाला, काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, साचा धाम इक्क सुहांयदा। बन्द कुआड़ी तुट्टे ताला, फ़ल लग्गे काया डाल्हा, चले मात अवल्लड़ी चाला, चाल निराली शब्द वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, काया ताल इक्क सुहांयदा। काया अमृत आत्म सोहे ताल,

साचे अन्दर धरया। गुरमुख विरला मारे छाल, दो जहानी तन मन हरया। सुरत सवाणी दीन दयाल, आत्म बूटा एका होया। नाम फ़ल पत्त डाल, रुत्त बसंत कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चले नाल नाल, मनमुख दन्द बतीसा मात फड़या। माण मोह तुटे अभिमाना। वज्जे तीर शब्द निशाना। पुरख अबिनाशी पड़दे कज्जे, होए सहाई वाली दो जहाना। आपे होए खब्बे सज्जे पिच्छे , अगे जोत महाना। पंच विकारा चरनां हेठ दब्बे, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। हरि जन जन हरि साचा दर घर साचा एका लभ्भे, मिले मेल हरिजन सज्जण सुहेल, साँवल सुन्दर गोपी काहना। अमृत आत्म रस चुआए कँवल नभ्भे, तेज प्रकाश कोटन भाना। पूर कराए कारज सभ्भे, जो जन रखे एका चरन ध्याना। चरन ध्यान जगत चतुराई, प्रभ पूरन बूझ बुझाईआ। दर घर मिले सच्ची वड्याई, आत्म भेव गूझ खुलाईआ। होए सहाई सभनीं थाँई, एका दूजा भउ चुकाईआ। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, इक्क प्रीती भगत रीती जगत अतीती चरन कँवल चरन पंचम तत्त रत सति खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, आप आपणी गोद उठाईआ। आपे बाल आप अञ्याणा। आपे चतुर सुघड़ स्याणा। गुरमुख गुरमुख गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द एका रंग साचा माणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दिवस रैण रैण दिवस रंग रंगे नाम महाना। नाम रंग रंग अवल्ला, गुरमुख विरले काया चोला मात रंगाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, लक्ख चुरासी वेखे काया महल्ला, जेरज अंड उत्भज सेत्ज रिहा समाईआ। आपे होए अछल अछला, किसे हथ्थ ना आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल डूंघी डल्ला वेख वखाईआ। आप आपणी वरते कला, शब्द फड़े हथ्थ तिक्खा भल्ला, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप आपणे रंग समाईआ। आप आपणे अंक लगाए, हउमे रोग गंवांयदा। राउ रंक सद आए जणाए, द्वार बंक इक्क सुहाए, काया मन्दिर साचे अन्दर जोत सरूपी हरि हरि वडा शाहो भूपी, एका ताल वजांयदा। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, गुरमुख विरला स्वच्छ सरूपी, माया ममता जगत जंजाला, आत्म नौ दुआरे खोह घर दसवां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुरमति मैल हरिजन धो, आत्म बीज साचा बो, एका नाम निहचल धाम अटल सोहँ साचा फ़ल कलिजुग अन्तिम आप खवांयदा। आत्म फ़ल गुरमुख रस, रसन रस ना जाणया। पुरख अबिनाशी होवे वस, एका राह देवे दस, ना कोई जाणे खाणी बाणीआ। करे प्रकाश जोत कोटन रवि ससि, मिटे रैण अन्धेरी मस, मारे तीर इक्क निशानया। शब्द सुहेला आप कराए आपणा मेला दर घर साचे आए नस्स, जोत निरँजण देवे नाम अंजन घट घट आपे जाणया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे नाम वर, अमृत आत्म दिवस रैण ठण्ढा पाणीआ। अमृत आत्म साची धार, गुरमुख विरले पाईआ। नौ दुआरे बन्द किवाड़, पंचम धाड़ पड़े हटाईआ। दर घर साचे हरि हरि साचा देवे वाड़, जिस जन साची सेव कमाईआ। आपे होए पिछे अगाड़, नेड़ ना आए मौत लाड़, राए धर्म रिहा शरमाईआ। शब्द घोड़े देवे चाढ़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे जगत वर, भविख्त वाकी एका राह जगत मलाह बेपरवाह आपणा आप वखाईआ। आप आपणा राह वखाए, कलिजुग अन्तिम वारया। सोहँ साचा नाम जपाए, जोत निरँजण नर निरंकारया। हरिजन सोए आप जगाए, मारे शब्द सच्ची उडारया। दुरमति मैल काया धोए, चरन कँवल कँवल चरन जो जन करे प्यारया। मनमुख जीव रहे रोए, आत्म भरया इक्क हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जन विरला देवे शब्द भण्डार, अनहद साची धार वजदी रहे वारो वारया। अनहद धार अनहद धुन। आप तुड़ाए मुन सुन। गुरमुख साचे मात चुण। आपे जाणे गुण अवगुण। लक्ख चुरासी छाण पुण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सिँघासण बैठ हरि, सर्ब पुकार रिहा सुण। मस्तक टिक्का नाम लिलाटी। आप चढ़ाए औखी घाटी। वेख वखाणे काया माटी। आपणी बिध आपे जाणे, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताटी। भरमे भुल्ले सुघड़ स्याणे, साचा नाम ना मिले किसे जगत हाटी। गुरमुख साचे बाल अञ्याणे, साचा लाहा दर घर साचे रहे खाटी। दरगाह देवे माणे, जोत जगाए हरि रघुराए एका एक निरँजण लिलाटी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म नाम प्याला इक्क प्याए दया कमाए दिस ना आए हरिजन साचा रसन रस रिहा चाटी। नाम सति शब्द मस्ताना। सोहँ सति नौजवाना। तन सति गुण निधाना। मिले वस्त श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म बन्ने नाम गाना। नाम गाना तन शृंगार। शब्द निशाना आर पार। मले बिबाणा विच संसार। गुण निधाना गुण गुणवन्ता आदिन अन्ता रिहा विचार। मिले वड्याई जीव जन्त आप बणाए साची बणता, साची नारी कन्त भतार। साचा धाम इक्क सुहंता, सुरत सवाणी साचा मेला प्रभ साचे संत एका रंग अपर अपार। ना विछोड़ा होए आदि अन्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा तार। आत्म मध प्रेम रस ज़ाता, पुरख अबिनाशी घट घट वास। दर घर साचे एका हद्द, सद मेल मिलाया शाहो शाबास। नाम ख़ुमारी अनहद नद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राग जगत त्याग भगत वैराग एका रिहा उपाया। एका नाम सच घर पति पतिवन्ता पाईआ। जगत चुकाए जम का डर, चरन सरन जन जाए तर, साचे कन्ता मेल मिलाईआ। आपणी करनी रिहा कर, अमृत नुहाए साचे सर,

जगत तृष्ना अग्न बुझाईआ। नाम भतारा एका वर, कर्म विचारा वस्सया दर, भरम निवारा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म तत्त भगत मति एका एक बंधाईआ। चरन नाता धुर दरगाह, प्रभ साची दया कमाईआ। शब्द बणाए इक्क मलाह, साची नईआ रिहा चढ़ाईआ। दो जहानी पकड़े बांह, सज्जण सुहेला आप अख्वाईआ। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता गोद उठाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, रुत्त बसंता इक्क सुहाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कां, नाम चोग इक्क चुगाईआ। गुरमुख साचे सदा बलि बलि जां, साचा जोग जो जन रिहा कमाईआ। चरन कँवल प्रभ देवे थाँ, धुर संजोगा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला इक्क कर, साचा मेला मेल मिलाईआ। जगत विकारा काया हट्ट, मनमुख सार ना राईआ। गुरमुख विरला इक्क वरोले शब्द पट, साची तार नाम रखाईआ। मनमुख फिर फिर थक्के तीर्थ तट्ट, अठसठ्ठ जोग कमाईआ। गुरमुख विरला एका वेखे काया मट्ठ, जोत ज्वाला हरि जगाईआ। शब्द वणजारा करे इक्खु, नाद अनादा नाद वजाईआ। जोती अग्नी तपे मठ, काया भट्ठी इक्क बणाईआ। पंजे चोर जायण नठ्ठ, गुर चरन सरन सच्ची वड्याईआ। देवे दात दान जीआं हरि समरथ, धुर दी बाण आपणे हथ्थ रखाईआ। उलटी गेड़े काया लट्ठ, पुण छाण नाड़ नाड़ी आप कराईआ। हाडी वेखे तिन्न सौ सट्ठ, जोड़ी जोड़ जड़त जुड़ाईआ। नाम अनमुल्ला विच रक्खी गट्ठ, जीव जन्त किसे हथ्थ ना आईआ। हरि चरन दुआरे जो जन गया ढठ्ठ, प्रभ आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वणजारा भगत भण्डारा वड संसारा देवणहारा सृष्ट सबाईआ। जगत रचाया काज, पुरख अबिनाशीआ। करे खेल प्रभ देस माझ, हरि साजन साचा शाहो शाबासीआ। इक्क बणाए शब्द साचा ताज, वेख वखाणे पृथ्वी आकास्सया। नौ खण्ड पृथ्वी लाए इक्क आवाज़, हरिजन गाए रसन स्वास्सया। वेले अन्तिम रक्खे लाज, करे कराए बन्द खुलास्सया। साचा साजन रिहा साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, भेव ना राए पंडत कांशया। पंडत पांधे भेव ना पाया, भरमे भुल्ले ज्ञानी। नौ दुआरे बांधे फिरे हलकाया, साचा शब्द ना मिले मात निशानी। दर दुआरा ना बन्द खुल्हाया, बिरहों वज्जी ना तीर कानी। दर घर साचा मात ना पाया, धुर दरगाह ना मिली सच निशानी। भाण्डा भरम ना भौ भन्नाया, अक्खर वक्खर ना गाई साची बाणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे वेख वखाणे, राज राजाने शाह सुल्ताने, वेद पुराणे अंज़ील कुराने खाणी बाणी। खोल्हे भेव अभेदा, पुराण अठारां आपे गाए। आपे होए अछल अछेदा, वेद व्यासा संग रलाए। ब्रह्मा नेत्र रिहा उठाए, चारे मुख भवाए चारे वेदा। कलिजुग अन्तिम सार ना पाए, ईसा मूसा होए ध्याए, काला सूसा तन छुहाए, आपे होए अछल अछल

अछेदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे घर, कवण वखाए कवण जणाए दस्म दुआरी जोत निरँकार शब्द भण्डारी अमृत धारी एका राह साचा सिध्धा। शब्द भण्डारा हरि द्वार, काया बन्द कवाड़या। आपे देवे देवणहार, मनमुख सुत्ते पैर पसार, लाड़ी मौत चबाए दाढ़या। हरि हरि साचा कन्त भतार, गुरमुख सुहागण साची नार, शब्द विचोला इक्क प्यार, जोत जगाए नाड़ी नाड़या। सोहँ ढोला अपर अपार, बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, प्रगट होए नर निरँकार। आप चुकाए आपणा उहला, दरस दिखाए अगम्म अपार, काल कलंका कला सोला शब्द वजाए एका डंका, हरिजन जगाए भोला भाला, करे कराए शब्द साची वाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे मल्ले जगत पर्बत ब्रह्मण गौड़ शब्द पहाड़या। ब्रह्मण गौड़ जन जणाए। धुर दरगाही आया दौड़, साचा राग कन्न सुणाए। चौथे घर साचा पद एका पौड़, बाहों फड़ आप चढ़ाए। आत्मक धुन वज्जे साचा नद, काया रस हरि मधे मिट्ठा कौड़ा आप वखाए, भाग लग्गे गुरमुख तेरी साची यद्द। रसन तजाया जगत मदि। अमृत आत्म प्रभ मुख चुआया, दर दुआरे साचे सद्द। कलिजुग अन्तिम लग्गी औड़, जोत निरँजण दु:ख दर्द भय भंजन ना कोई जाणे ऊँचा लम्भा कद्द। मनमुख सुत्ते माया विगुते नौ द्वारी कुत्ते, दस्म दुआरी ना मिली हद्द। गुरमुखां सुहाए आप साची रुत्ते, आपे होए माई बाप पुरख अबिनाशी हरि अचुत्ते, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, शब्द जणाई बोध अगाध। अगाध बोध दीन दयाला। गुरमुख काया रिहा सोध, दीपक जोती कर उजाला। दाता सूरा वड जोधन जोध, दिवस रैण रैण दिवस अट्ठे पहर रहे रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द वर, सोहँ सो आत्म बीज साचा बो, लोकमात जीव जन्त साध संत ना जाणे को। प्रभ माया पाई बेअन्त, दर दर घर घर बैठे रहे रो। हरिजन मेला गुण गुणवन्त, आत्म मध निझर रस कँवल नभी देवे चो। गुरमुख सवाणी पुरख अबिनाशी साचे हाणी एका मजन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी देवे वर, चुकाए जगत नाता झूठा मोह। जगत नाता जगत है, भगत ना जाणे कोए। भगत नाता भगवन्त है, आदि अन्त विछोड़ा ना होए। हरिजन साचा संत है, मेल मिलावा एका भगत है, नाम घोड़ा जोती शब्दी जोड़ा एका घर धुर दरगाही आया दौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे वर, दर घर साचे एका बौहड़ा। शब्द चोला तन शृंगारे, गुरमुखां वाजां मारदा। पुरख अबिनाशी पैज संवारे, इक्क कराए शब्द जैकारे, पुरीआं लोआं पावे सारे, वखाए घर सच्ची सरकार दा। आपे खड़ा दिसे दर दरबारे, जोत सरूप अगम्म अपारे, नूरो नूर इक्क अकारे, मिल्या मेल सच सच्चे परवरदिगार

दा। पारब्रह्म पावे सारे, हड मास नाड़ी चम्म काया उधरे पारे, साचा मेल साचे मीत मुरार दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर आपणे रंग रंगाए आपे पैज संवारदा। पैज संवारे भगत जन, हरि हथ्थ वडी वड्याईआ। एका राग सुणाए कन्न सगल वसूरे जायण लथ्थ, मिली चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जनणी जणे साचा जन, लक्ख चुरासी जाए मथ, पूत सपूता पिता पूत उपजाईआ। हरि हरिभगत महिंमा अकथ, शब्द चढ़या साचे रथ, सिँघ सुन्दर तन नाम मुन्दर शब्द गहणा संत मनी सिँघ चुक्कया लहिणा, प्रभ आपे लेखा रिहा मुकाईआ। दिवस रैण दरस साचे नैणा, माटी काया भाण्डे अन्त मात ना रहणा, जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द देवे साचा साक सज्जण मात पित भाई भैणा ना सके कोई छुडाईआ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी काया, धन्न धन्न धन्न जिस सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगम्म अथाह बेपरवाह ना मरे ना पए जम्म, वेख वखाणे थल अस्गाह एथे ओथे दो जहानी ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड जेरज अंड वेख वखाईआ।

५७६ ०५ ५७६ ०५

★ २३ फग्गण २०१२ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

हरि भेखी भेख वटाए, भेव ना राया। वेख वेखी जगत भुलाए, दिस ना आया। मस्तक रेखी गुरमुख जगाए, साचा हिस्सा मात वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, एका धार शब्द अपार घर साचे वेखी, साची रिहा बणत बणाया। शब्द धार अवल्ली, हरि चलाईआ। वगदी रहे इक्क इकल्ली, संसार सागर विच समाईआ। आपे वसे जल थली, काया गागर सर्ब टिकाईआ। अमृत आत्म पी पी पली, अहूती बली जोत चढ़ाईआ। आपे बणया वल छली, अछल अछल्ल खेल कराईआ। कलिजुग तेरी डूंघी गली, ना कोई सके पैर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। कलिजुग डूंघा वहिण, नौ द्वारया। लक्ख चुरासी लहिणा देण, देवणहार आप अख्वा रिहा। गुरमुख विरले दरस पेख, तीजे नैण तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगा रिहा। वेखे रंग गुलाल विच संसारया। मारे शब्द उछाल, दिवस विचारया। नाल रखाए काल महांकाल, दीन दयाल जोत जगा रिहा। लक्ख चुरासी वेखे परखे काया डालू, अमृत आत्म नभी कँवल सुहा रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी कवण दुआरे एका इक्क सच्ची धर्मसाल, दीपक जोती कवण जगा रिहा। गुरमुख अनमुल्लड़ा एका लाल, धुर दरगाही मेला शब्द दलाल, मात विचोला इक्क बणा रिहा। दिवस रैण करे प्रितपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी गोद उठा रिहा।

शब्द उठाए भगत तन, सुरती सुरत जगाईआ। जोत जगाए काया तन, अकाल मूर्त दया कमाईआ। साचे मन्दिर लाए सन्न्ह, नाद तूरती इक्क वजाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, दूरत दूर नेरन नेर नेर वखाईआ। एका राग सुणाए कन्न, सिँघ शेर शेर दलेर हेर फेर मिटाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां मारे घेर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग कल आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग कला कल प्रभ धारी, काल रूप वटाया। प्रगट होए नर नरायण, नरायण नर अवतारी, भूपत भूप आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई वहाए वहिंदे वहिण, लाड़ी मौत खाए डैण, सति सरूप हरि अनूप दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे अन्ध कूप, दीपक जोती जोती दीपक चारों कुन्ट दहि दिशा दिस ना आया। दीपक दीपक दीपक होए प्रकाश, प्रकाश आकाश भया। विनास दास दास दास दास पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, मानस जन्म करे रास। पहली चेत चात्रिक बूंद अमृत मेघ हरि बरसाईआ। गुरमुख साचे सांतक सांत, आत्म तृप्त कराईआ। आपे वसे इक्क इकांत, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार झात, कलिजुग रैण अन्धेरी रात दिस किसे ना आईआ। पंच शब्द जगत जग दात, धुर दरगाही वड करामात, एका एक वखाईआ। करे खेल प्रभ कमलापात, धरती धवला चरन नात, काया कँवला पारज़ात आपे रिहा खिड़ाईआ। वेखे खेल हरि प्रभात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, दर दुआरे अलक्ख जगाईआ। दर दुआरा वेखण जाए, आए पुरख अबिनाशा। खाली हथ्थ सर्ब वखाए, फड़े शब्द हथ्थ साचा कासा। राज राजानां हथ्थ वखाए, भेख धारी वेख तमाशा। सीआं साढ्ढे तिन्न हथ्थ दिसाए, अन्तिम अन्ता त्रैलोकी नाथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकल कला कलि वरते, भेद अभेव भेव ना राए।

★ ३० फग्गण २०१२ बिक्रमी जेठूवाल ★

(महाराजयां अते संतां दे पास जाण तों पहले विहार होया अते एह चीजां नाल लईआं :-

१) दस्तारां ४ २) कूजा मिश्री, ३) केसर ५ रती, ४) भस्म १० रती, ५) नलेर १

शब्द सिँघासण प्रभ चरन टिकाया। नौ खण्ड पृथ्वी दए उलटाया। आपे पाए आपणी वंड, दिस किसे ना आया। शब्द तीर प्रभ चण्ड प्रचण्ड, राज राजान दए सजाया। आत्म तोड़े सर्ब घमंड, सोहँ डण्डा हथ्थ उठाया। वढ्ढण चल्लया घर घर कंड, साधां संतां मुख छुपाया। नार दुहागण होई रंड, अन्तिम कन्ढ्ढा नेड़े आया। वेखे खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी

५७७ ०५

डेरा आपणा लाया। गुरमुखां नाम नाम नाम प्रभ रिहा वंड, अमृत साचा जाम प्याया। सदा सुहेला रक्खे ठण्ढ, पल्ले गंढु इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ तेरी धार, जोत सरूपी कर आकार, वेला अन्त संत सुहाया। संत मनी सिँघ घाली घाल, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। मनमुखां प्रभ लाहुण आया खाल, देवे मात सजाईआ। फड़ फड़ तोड़े काया डालृ, लेखा लिख साल ढाईआ। शाह सुल्तानां रिहा उठाल, आप आपणी बणत बणाईआ। आपे बणे जगत कंगाल, दर दरवेशा आप अख्वाईआ। गुरमुखां देवे नाम सच्चा धन माल, दो जहानां शब्द वड्याईआ। तन बस्त्र शब्द दोषाल, प्रभ साचा तन पहनाईआ। आपे चले नाल नाल, कलिजुग काली निन्दरा मस्तक टिक्का रक्खे छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ तेरी करी शब्द कुड़माईआ। संत मनी सिँघ कर कुड़माई, साचा शब्द सगन मुख लगाया। साचे दर घर वज्जी वधाई, निहकलंका डंक वजाया। एका घर धी जवाई, दूसर घर दिस कोए ना आया। शब्द जोती आप प्रनाई, साची डोली फड़ फड़ पाई, जगत कहारा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्त विहारा आप आपणे हथ्थ रखाया। करे विहार हरि जगदीसा, अचरज बणत बणाईआ। छत्र ना झुल्ले किसे सीसा, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। लेखा चुक्के बीस इक्कीसा, राज राजानां जाए सुणाईआ। एका पढ़ना शब्द हदीसा, दूसर कोए रहण ना पाईआ। जूठा झूठा पीसण पीसा, सच वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। चढ़े रंग कलिजुग तेरा काला, काल उन्नी उनीसा दए दुहाईआ। जल थल थल जल जगत उछाल, दस अठ्ठ अठारां सार ना पाईआ। दस सत्त सतारां शाह कंगाल, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। सोलां सोलां तन लाहे श्रृंगार, नारी नर फिरे हलकाईआ। पन्दरृां पन्दरृां तेरी धार, तिक्खी नाम इक्क रखाईआ। चौदां चौदां वेखे हट्ट मीत मुरार, संग मुहम्मद खेल खिलाईआ। तेरां तेरां करे प्यार, प्रभ साची खुशी मनाईआ। पहली चेत दिवस विचार, खेले खेल हरि रघुराईआ। पंचां देवे नाम अधार, शब्द लिखारा संग रखाईआ। आपे बण रिहा भिखार, गुरुमखां देवे माण वड्याईआ। रक्खे संग चार दस्तार, राज राजानां वेख वखाईआ। कवण होया ख़बरदार, प्रभ देवे भेंट चढ़ाईआ। रती दस भस्म त्यार, मस्तक टिक्का देवे लाईआ। ग्यारां ग्यारां कर विचार, इक्क इक्क अगे दए रखाईआ। पंचम केसर पंच प्यार, नाम रती मस्तक लाईआ। आपे करे जगत विहार, इक्क नलेर संग रखाईआ। साध संत वेखे साचा यार, दस्म दुआरी जो बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, साची रचना रिहा रचाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर बली बलवान, दर घर साचे सदा वज्जदी रहे वधाईआ।

★ पहली चेत २०१३ बिक्रमी महाराज संगरूर दे घर जा के शब्द उचारन कीता ★

प्रभ साचा साची दया कमाए। जीउ पिण्ड काचा, नाम साचा विच रखाए। गुरमुख साचे हिरदे वाचा, पारब्रह्म सरनाए। एका शब्द हरि साचो साचा, साची जुगत भुगत विच जग रहि जाए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत जगाए। निहकलंक प्रगट होया, दो जहानां वाली। जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी देवे साची डाली। राज राजानां शाह सुल्तानां एका ढोआ, दोहां हथ्थां रक्खे खाली। हरि बिन अवर ना जाणे कोए दोआ, धुर दरगाही आप दलाली। गुरमुख आप उठाए लोकमात सोया, पुरख अबिनाशी साचा पाली। आत्म बीज अमृत नाम रस साचा बोया, लग्गे फ़ल काया डाली। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आप आपणे जिहा होया। आए दर बण भिखारी। जोत सरूपी खेल अपारी। शब्द भूप ना कोई रंग ना कोई रूप, अगम्म अगम्मा ना कदे मरे ना कदे जम्मा, सर्ब घट प्रभ रिहा पसारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच घर, साचा वणज वपारी। सच घर सच टिकाणा। एका एक शब्द बिबाणा। राम रहीम रहिमान कृष्णा काहन गोकल काहना। जोत निरँजण नेत्र अंजन शब्द भूप हरि वड मेहरबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह संगरूर देवण आया धर्म निशाना। शाह संगरूर तेरी धार। पुरख अबिनाशी पाए सार। सम्मत बीस सद सोलां कर विचार। साचे घर वज्जे नद, पारब्रह्म मिले पुरख भतार। मानस देही लेखे लग्गे चम्म, एका मेला एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत सुहाए दर, एका करे भगत विहार। पहली चेत चेतन्न आया, पुरख अबिनाशी अगम्मा। नैण नेत्र हरि संत वखाया, पवण स्वासी घट घट दमा। मीतन मीत मीत आप अख्वाया, आपे जाणे ब्रह्म ब्रह्मा। जोती जोत सरूप हरि, साची रीती रीतन जगत चलाया, आप सुहावे साचा धामा। साचा धाम हरि सुहाए। जोत सरूपी जामा पाए। मस्तूआणे डेरा लाए। राजे राणे लए बुलाए। धुर फ़रमाणा इक्क सुणाए। जीव जन्त ना किसे दिखाए। साध संत फिरे हलकाए। आपे जाणे आपणा भाणा, दो जहानी बैठा आसण लाए। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द राम राम राम रहीम रहीम रहीम आपे होए सुघड़ स्याणा, जन हरि साचे मात उपजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सगन आत्म जोती रहे मग्न जो जन रसना मुख लगाए। साचा सगन मुख लगाए, देवे गुर प्रसादी। अट्ठे पहर मग्न रखाए, मिले मेल ब्रह्म ब्रह्मादी। एका रंगण रंग रंगाए, उपजे शब्द नाद धुन धुन अनाद अनादी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह संगरूर देवे वर, मिले मेल प्रभ बोध अगाधी।

★ पहली चेत २०१३ बिक्रमी संगरूर सः चन्नण सिँघ महाराज साहिब दे हाऊस होल्डर दे नवित्त शब्द उचारया गया ★

गुरमुख साचे तन रत्तया, तन शब्द शृंगार। कलिजुग वा ना लाए तत्तया, प्रभ देवे नाम आधार। आपे दे समझावे मत्तया, जीव जन्त अन्त होण ख्वार। लक्ख चुरासी जाणे मित गतया, जोत सरूपी एका कार। चार वरन बणाए एका नतया, गुरमुख सतीआ साची नार। धर्म जोग आत्म यति साचा यतया, मिले मेल इक्क करतार। सर्बकल आपे समरथया, देवणहार सर्ब संसार। सगल वसूरा जिस जन लथ्थया, दर्शन पाए चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे जगत वर, भरया रहे शब्द भण्डार। नाम भण्डार रहे अतुट, भुक्ख रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन साची सेव कमाईआ। पंज चोरां बाहर कढ्ढे कुट्ट, शब्द डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। साचा लाहा गुरमुख साचे लोकमात लैण लुट्ट, मनमुखां मस्तक टिक्का छाहीआ। अमृत आत्म पीणा एका घुट्ट, दस्म दुआरी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, नौ दुआरे बन्द कराईआ।

५८० ५८०

०५ ०५

★ २ चेत २०१३ बिक्रमी महाराजा यादविन्दर सिँघ मोती महल पटियाला विच शब्द उचारन कीता गया ★

धुर मस्तक लेखा वेख, रेख जगांयदा। जोती जामा धारे भेख, दर दरवेश आप अख्वांयदा। वेख वखाणे नर नरेश, गुर दस्मेश रूप वटांयदा। ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शिव शंकर भेव ना पांयदा। लोकमात ना चले किसे पेश, ज्ञान ध्यान ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी इक्क सुहांयदा। सम्बल नगर धाम अवल्ला, प्रभ साचे जोत जगाईआ। इक्क रखाए शब्द भल्ला, सृष्ट सबाई रिहा जगाईआ। किसे दिस ना आए जल थला, घट घट में रिहा समाईआ। भाग लगाए गोबिन्द डल्ला, इक्क इकल्ला फेरा पाईआ। दीपक जोती जिस आत्म घर साचे बला, शब्द भण्डार रिहा वरताईआ। दूई द्वैती मेटे सला, चार वरन करे कराए इक्क सरनाईआ। सच द्वार गुरमुख साचे प्रभ दर घर साचे एका मल्ला, माण ताण दो जहान हरि भगवान आप रखाईआ। शब्द पहनाए तीर कमान, जोधा सूरा वड बली बलवान, अमृत आत्म पीण खान, तृष्ना भुक्ख दए जलाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, इक्क झुलाए धर्म निशान, प्रगट होए वाली दो जहान, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क मकान, सत्तां दीपां रंग रंगाईआ। सत्त रंग रंग रंगाए। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, शब्द मृदंग इक्क वजाए। चारों कुन्ट कराए जै जैकार, हरि जन जन हरि साचे

संत जगाए। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, शब्द घोड़े तंग कसाए। लोआं पुरीआं पार किनार, आप आपणे रंग समाए। पंजां तत्तां वसे बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी जोत इक्की, शब्द सिँघासण डेरा लाए। शब्द सिँघासण हरि दातार, एका जोत जगाईआ। नौ दुआरे जगत द्वार, पुरख अबिनाशी दिस ना आईआ। जन भगतां देवे नाम अधार, आत्म बूझ बुझाईआ। एका भरे शब्द भण्डार, एका दूजा भउ चुकाईआ। गुणवन्ता गुण रिह विचार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। सम्मत चढ़या वीह सद तेरा सच विहार हरि करतार शब्द अधारा आप कराईआ। आप सुहाए बंक द्वार, भेखाधारी भेख अपारा, गुरमुख साचे विच पसारा, जोत निरँजण डगमगाईआ। काल महांकाल रहे दुआरा, सृष्ट सबाई करे प्रितपाल आपे बणे नाम अधारा, लक्ख चुरासी वेखे काया खाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेस कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपार बेपरवाह कलिजुग जोत जगाईआ। वेख वखाणे थांउँ थाँ, गुरमुख साचे रिहा उठाईआ। आप फड़ाए हरि शब्द साची बांह, पल्लू नाम लड़ बंधाईआ। दो जहानी देवे ठण्ढी छाँ, सच दिवारी अन्दर चढ़, किल्ला हँकारी तोड़े गढ़, पंजां चोरां आपे फड़ साची प्रीत जणाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोत जगाए बहत्तर नड़, सच सिँघासण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, दर दरवेशा नर नरेशा इक्क दुआरे हरि निरँकारे नाम निरँजण साची अलख जगाईआ। आप अलक्ख ना लख्या जाए, लेखा लिखणहार होए प्रतक्ख हरि संत सुहेले लए रक्ख, सृष्ट सबाई हाहाकार। जगत विचोला शब्द सुणाए साचा ढोला फड़ फड़ बाहों करे वक्ख, आदि अन्ता जुगा जुगन्ता पूरन भगवन्ता साची कार। नौ खण्ड पृथ्वी उडे कक्ख, ना कोई दिसे शाह करोड़ी लक्ख, आपे होए भेख भक्ख, जोती जोत सरूप हरि, इक्क सुहाए बंक द्वार। राज राजानां शाह सुल्ताना। शाहो भूप सति सरूप आदि पुरख महिंमा अनूप, गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना। हथ्थीं गाना नाम डोरी, प्रभ साचे आप बंधाईआ। लक्ख चुरासी करे चोरी, किसे दिस ना आए आत्म घोरी, आप आपणी बणत बणाईआ। शब्द चढ़े साची घोड़ी, जोती शब्दी जुड़ी जोड़ी, लोआं पुरीआं एका राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर अलक्ख निरँजण अलक्ख अलक्खणा, दोवें हथ्थीं फिरे सक्खणा, छाछ वरोले साचे मक्खणा, हरि संतां रिहा जगाईआ। राज जोग जगत सुल्तान, मिले नाम वड्याईआ। साचा मेला श्री भगवान, दो जहानां होए रुशनाईआ। काया माटी झूठा मकान, संत असंत अन्त रहण ना पाईआ। गुर मन्त्र शब्द निधान, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, भरम भुलेखा रहण ना पाईआ। फड़े शब्द तीर कमान, दाता जोधा सूरा वड बली बलवान एका आण रखाईआ। निहकलंक नरायण बली बलवान, जोती जामा विच जहान,

शब्द डंक रिहा वजाईआ। सम्मत वीह सौ सोलां वेखे मार ध्यान, पुरीआं लोआं होण हैरान, शिव शंकर लुट्टी जाए दुकान, ब्रह्मा देवे अन्त दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भिखारी इक्क सुहाए भगत दर, देवे शब्द जगत सच्चा बिबाण, सीस ताज जगत भेंट साची भेंट चढ़ाईआ। धुर दरगाही खेवट खेट, लोकमाती बणत बणाईआ। आपे होए बेटी बेट, मात पित आप अख्वाईआ। शब्द दुशाले गुर गोपाले हरि संत सुहेले लए लपेट, करे जगत सच्ची कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम सगन, अट्ठे पहर रहे मग्न, निर्मल जोती इक्क इकलौती ना कोई वरन ना कोई गोती, शब्द धुन्कारा हरि आकार, काया मन्दिर तुटे जन्दर उच्च महल्ला अटल अटला शब्द सिँघासण नर निरँकार एका दर्शन पाईआ। शब्द सीस जगत दस्तार। करे कराए सच विहार। बीस बीसा हरि जगदीसा प्रगट होए विच संसार। वेखे खेल विच उनीसा, अट्ठ अठारां जल जल धार। सत्त सतारां वहिंदी धारा, मनमुख डुब्बे विच मँझधार। छे दस सोलां कल सोलां जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होवे विच संसार।

★ ३ चेत २०१३ बिक्रमी फरीद कोट दे राजे नूं किले अन्दर जा के इक्क दस्तार बख्शीश कीती अते शब्द उचारया गया ★

पुरख अबिनाशी जोत जगाई, आया बंक द्वार। नर नरायणा सार ना पाई, कलिजुग तेरी धार। पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना राई, पुरख अगम्मा एका एक आकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरवेशा नर नरेशा आया बंक द्वार। हरि भगवान ले के आया शब्द निशाना। धुर दरगाही इक्क फ़रमाना। निहकलंका वासी पुरी घनका, इक्क वजाए डंक उठाए राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां। जोती सरूपी लाए तनका, प्रगट होए वार अनक, आप आपणे संग समाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल वाली दो जहानां। वाली दो जहान हरि रघुराईआ। फड़ाए शब्द तीर कमान, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। दाता जोधा सूरा वड बली बलवान, शब्द खण्डां हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां वंड वंडाईआ। चतर्भुज श्री भगवान, शब्द घोड़े तंग कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फरीद कोट शब्द चोट इक्क नगारे रिहा लगाईआ। इक्क नगारा शब्द तन, वज्जे अगम्म अपारी। आत्म अन्दर जाए मन्न, मिले मेल जोती निरँकारी। भांडा भरम प्रभ देवे भन्न, सोलां करे तन शृंगारी। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, जिस जन खोल्हे दस्म दुआरी। साचा शब्द देवे माल धन, ना कोई लुट्टे चोर यारी। एका राग

सुणाए कन्न, दो जहानां पार उतारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे फेरा पाए बणया दर दरवेश भिखारी। आप भिखारी आपे शाह वाली दो जहानया। जन भगतां बणे जगत मलाह, हथ्थीं बन्ने शब्द सच्चा गानया। वेख वखाणे थांउँ थाँ, सम्मत वीह सद सोलां गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा लै के आया, धुर दरगाही साचे बहि के आया। आप आपणा भाणा सहि के आया। सोलां कल सोलां धार पूर्ब इच्छया कर्म विचार, साची वस्त लै के आया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा जगत देणा दरस दिखाए तीजे नैणा, आप चुकाए अगला पिछला मूल। प्रभ आप चुकाए कन्त कन्तूहल, जुगा जुगन्त ना जाए भूल। गुरमुख साचे संत जगाए, तन शब्द चढ़ाए साचे फूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल। चेत्र तिन्न चित चितावनी। नित नवित्त प्रभ जोत जगावणी। वेख वखाणे काया खेत, साचे मीत बणत बणावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां आत्म काया सीत, अमृत बूंद इक्क प्यावणी। अमृत आत्म देवे सीर साची दया कमाईआ। अन्तिम अन्त कटे भीड़, बख्शे दर सच्ची सरनाईआ। ना कोई वेखे हस्त कीड़, ऊँचां नीचां शाह सुल्तानां बंक दुआरा नर निरँकारा एका एक वखाईआ। एका बख्शे सीस दस्तारा, लोकमाती तेरा सच विहारा, प्रगट होए पुरख अबिनाशी घट घट वासी सर्बकल धारा भेव रहे ना राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जोत धर, लोआं पुरीआं रिहा धार बन्नाईआ। मंगी मंग हरि दातार, गुर संगत कर प्यारा। मिले धाम कर्म मन्दिर महल्ल उच्च अटल मुनारा। पंचम मीता पंचम यार, पंचम करे शब्द प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख घर, आपे जाणे आपणी धारा। पंज मिन्ट मंगी मंग, पुरख अबिनाशी बोले। काया चोली चढ़े रंग, जो जन कुण्डा खोल्हे। पुरख अबिनाशी शब्द घोड़े कस्सया तंग, लोआं पुरीआं पुरीआं लोआं अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर आपे बोले। नाम वजाए इक्क मृदंग, आपे वसे काया चोले। भगत सुहेला सदा सहाई अंग संग, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त कदे ना डोले। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द वर, दिवस रैणा तीजे नैणा सद वसे कोले।

★ ४ चेत २०१३ बिक्रमी संत ईश्र सिँघ पास जा के शब्द उचारया गुरुदुआरा नानकसर ज़िला लुध्याणा ★

आया दर भिखार, बण सवालीआ। आपे वेखे शाह कंगाल, वाली दो जहानीआ। शब्द विचोला जगत दलाल, जोत लिलाट इक्क जगालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोवें हथ्थां रखे खालीआ। आपे शाह आपे कंगाला। आपे नाम सच्चा धन माला। भगत जनां हरि देवणहार, आदि अन्त दिवस रैण होए रखवाला। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्त, हरिजन उठाए साचे संत, आपे दस्से राह सुखाला। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट चार वरनां इक्क वखाए शिवदुआला। कलिजुग माया पाए बेअन्त, कोए सार ना पाईआ। प्रगट होया हरि साचा कन्त, शब्द डंक रिहा वजाईआ। ना कोई जाणे जीव जन्त, कलिजुग माया रही भुलाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, घट घटां अन्तरजामी, हर घट में रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे तीर्थ तट्ट कवण दुआरे जगे जोत इक्क रघुराईआ। जगे जोत कवण द्वार। शब्द सरूपी भरे भण्डार। हरि हरि साचा हिरदे वसे, बिन रंग रूपी एका एक कराए कार। सति पुरख निरँजण सति सरूपी, पारब्रह्म ब्रह्म रिहा पसार। जीव जन्त कलि अन्ध कूपी, होया अन्ध अन्धयार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई वेख दर, वेख वखाणे संत सुहेले धुर दरगाही साचा यार। आपे नर आपे नरेश, आपणा आप उपांयदा। जोती जामा धारे भेस, गुर दस्मेश तन सुहांयदा। आपे वेखे धारी केस, बस्त्र शस्त्र तन सजांयदा। कलिजुग अन्तिम करया वेस, गगन गगनंतर विच समांयदा। भाग लगाए माझे देस, सम्बल नगरी नाम उपांयदा। साल तेरवां जोत वरेस, आप आपणे रंग समांयदा। वेखे खेल देस प्रदेस, शाह सुल्तानां पकड़ हिलांयदा। साध संत रिहा वेख, काया खेत फोल फुलांयदा। दिवस दिहाड़ा महीना चेत, चौथी थित्त वार लिखांयदा। दर दुआरे आया नेतन नेत, नेत नेती वेख वखांयदा। वेख वखाणे जिन्न प्रेत, भेव अभेदा अछल अछ दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुर दस्मेश जन्म दवाया, जोती विच टिकाईआ। मुछ दाढ़ी केस सजाया, वरन गोती भरम मिटाईआ। कँघा कच्छ कड़ा किरपान किसे दिस ना आया, शब्द गात्रे इक्क रखाईआ। साचा हिस्सा रिहा वंडाया, लोकमात करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी भाग लगाईआ। सम्बल नगर आप सुहाया, गुर गोबिन्द उपाया। पुरख निरँजण जोत टिकाए, सद बख्शिंदा आया। वरन गोत कोई रहण ना पाया, एका रंगण रिहा रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणा भेख धर, भेखाधारी नर निरँकारी दर दरवेश सम्मत तेरां बीस संत सुहेले मंगण आया। मंगण आया चरन प्रीती, धुर दरगाही दाता। गुरूद्वार अन्दर वेखे नीती, सर्ब जीआं प्रभ ज्ञाता। कलिजुग औध अन्तिम बीती, जूठा झूठा टुट्टे नाता। सतिजुग चले साची रीती, प्रभ साचा खेल रचाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेट मिटाए अन्धेरी राता। आया दर शब्द भण्डारी, लै के धुर फ़रमाणा। वेखे खाली महल्ल अटारी, ना कोई सुघड़ स्याणा। संत सुहेला होया बाहरी भुल्लया गुण निधाना। कलिजुग अन्तिम होए ख्वारी, ना कोई दीसे राह टिकाणा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, सोहँ शब्द रखाए सच बिबाणा। करे खेल अपर अपारी, दर दर फिराए राजा राणा। एका एक करे जैकारी, लोआं पुरीआं एका एक ध्यान रखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वाली दो जहानां। महल्ल अटल उच्च मुनारा, लोकमात बणाया। दिस ना आया ओंकारा। निरँकारा भेव ना राया, तन मन्दिर अन्दर धुँदूकारा, आत्म ज्ञान ना पाया। रसन रसायणी बोल विकारा, पढ़ पढ़ वाद वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। शब्द सुनेहड़ा आया द्वार, आत्म सार ना पाईआ। माया जेड़ा बन्दी चार, काया खेड़ा भरम भुलाईआ। अन्तिम करे हक्क निबेड़ा, निहकलंक नरायण नर अवतार, भरमां कंधी देवे ढाहीआ। सिँघ ईश्र रहणा ख़बरदार, प्रगट होया हरि रघुराईआ। जोत सरूपी कर आकार, शब्द घोड़ा रिहा दुड़ाईआ। नीली छत्तों आया बाहर, नाम तोड़ा सीस लगाईआ। आपे होए शाह अस्वार, कल्गी तोड़ा जगत वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, चौथा पौड़ा रिहा उठाईआ। सम्बल नगरी कर आकार, मिट्ठा कौड़ा वेख वखाईआ। गोबिन्द काया रूप अपार, सति सरूपी विच समाईआ। भरमे भुल्ले भरम गंवार, शाहो भूपी दिस ना आईआ। अन्तिम अन्त करे ख्वार, कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध कूपी दए दुहाईआ। लोआं पुरीआं पावे सार, खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड लुकया कोई रहण ना पाईआ। सृष्ट सबाई मेट मिटाए भेख पखण्ड, सतिजुग साची दात एका नाम दए वंड, बीस इक्कीसा हरि जगदीसा आत्म झोली दए भराईआ। एका छत्र झुलाए सीसा, वेख वखाणे राग छतीसा, अंज़ील कुरानां वेद पुराणां जाणे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखण आया सच दर, चेत्र चार दिवस विचार, खाली बंक द्वार, संत साजन दिस ना आईआ।

★ ५ चेत २०१३ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ दी कोठी शब्द उचारया
लुध्याणा पुराणा मॉडल टाऊन ★

आया गया बंक द्वार, दिस किसे ना आया। आपे जाणे आपणी धार, जोती शब्दी रंग रंगाया। करे खेल अपर अपार, सच मृदंगन रिहा वजाया। होए विछोड़ा मीत मुरार, मीत मीता दिस ना आया। शब्द खण्डा रक्खे तिक्खी धार, वेले अन्तिम वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, अन्त संत संत कन्त जगत विछोड़ा धुर दा लेख लिखाया।

★ ६ चेत २०१३ बिक्रमी मेहर सिँघ दे डेरे शब्द उचारया परंतू उहनां अन्दरों कुण्डे मार लए
ते अन्दर ना वड़न दित्ता जलँधर नवां मॉडल टाऊन ★

पुरख अबिनाशी जामा पाया। करे खेल अगम्मा, कलिजुग जीवां दिस ना आया। वसे काया चम्मा, जगत विकारा आत्म हँकारा एका हिस्सा वंड वंडाया। लेखे लाए ना पवण स्वासी दमा, आप आपणी कंड वखाया। नार दुहागण दिसे रंड, संत सुहागी कन्त ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरेशा दर दुआरे संत सुहेले भेख भिखारी मंगण आया। बन्द कुआड़ी वज्जे ताला। मिले मेल ना गुर गोपाला। दिवस रैण अट्ठे पहर लोकमात पया जंजाला। काया नगर ना दिसे शहर, माया राणी एका लहर, दर घर साचे होए कंगाला। कलिजुग अन्तिम वरते कहर, जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे परखे काया फ़ल किसे लगे डाल्ह। आया दर दरवेश भेख धारया। कलिजुग काला करया वेस, जगाए जोत अगम्म अपारया। ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, संत सुहेले करे विचारया। आपे शाह कंगाल नर नरेश, आपे आप नर निरंकारया। आपे होया धारी केस, मूंड मुंडाई आप संसारया। किसे ना चले कोई पेश, प्रभ फड़े खण्डा शब्द दो धारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखण आया बंक द्वारया। बंक दुआरा हरि हरि वेखे, खाली दिसण भण्डारे। संत सुहेले नेत्र पेखे, कवण शब्द वणजारे। मस्तक लग्गी साची मेखे, जगे जोत अगम्म अपारे। माया भुल्ले भरम भुलेखे, मिल्या मेल ना कन्त भतारे। अन्तिम मिटणी कलिजुग रेखे, खाली रहण दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल अपर अपारे। शब्द सुनेहड़ा हरि घलाया। बणे दर सवाली, खुल्ह वेहड़ा इक्क वखाया। काया मन्दिर साचे अन्दर दीपक जोत जगे दिवाली, डूंघी कन्दर दिस ना आया। सुरत सवाणी होई बेहाली, आत्म जन्दर इक्क लगाया। शब्द विहूणा दिसे खाली, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। धुर दरगाही साचा माली

शब्द घेरा इक्क रखाया। निर्मल जोत जगे अकाली, सञ्झ सवेरा दए मिटाया। एका शब्द वजाए साचा आत्म अन्दर अनाद अनादा साचा ताली, अमृत आत्म जाम प्याया। काया माटी लेखे चाम लगाया। शब्द घोड़ा धुरदरगाही आया दौड़, हरि संत दुआरे बण सवाली, आपे परखे मिट्ठे कौड़, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणे अंग समाया। वार थित्त विचार, बणत बणांयदा। आत्म जोती शब्दी पवणी वेखे साची धार, अवणी गवणी विच समांयदा। दीवा बाती कमलापाती कवण घर उज्यार, काया मन्दिर कवण सुहांयदा। माया राणी कूड़ पसार, कूड़ो कूड़ जगत विहार, एका रंगण नाम साची रंग वखांयदा। काया माटी भाण्डे काची, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर अन्दर आपे आप सुहांयदा। दस्म दुआरी रही बन्द। गा गा थक्के बत्ती दन्द। पढ़ पढ़ अक्के शब्द चढ़या ना साचा चन्द। नाता तुट्टे लक्ख चुरासी जगत साक सैण कच्चे अज्ञान अन्धेर ना गया अन्ध। सम्मत सोलां प्रभ फड़ फड़ बाहों धुर दरगाही अग्गे हक्के, ना कोई किसे सुणाए छन्द बन्द। एका शब्द नकेल पाए नक्के, भरमां ढाहे झूठी कंध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवण आया वर, शब्द सुनेहड़ा धुर दरगाही जगत मलाही बेपरवाही खुशी कराए बन्द बन्द। शब्द गुर जिस तन वसाए, मस्तक लेखा वेखे लिख्या। शब्द नाद ना कोई वजाए ना उपजे साची सुर, राग रागनी किसे ना गाया। एका दिसे शब्द घोड़, ब्रह्मण्ड वंड जिस वंडाया। गुरमुख विरला चढ़े तोड़, नौ दुआरे डेरा सभ ने लाया। जोत निरँजण पावे अंजन शब्द प्रीत जिस जन गई जुड़, आत्म पड़दा देवे लाहया। गुर पूरे चरन धूढ़ जिस जन किया मजन, आत्म अन्दर काया कन्दर मिले साचा सज्जण, भाण्डे भरम नौ दुआरे भज्जण, अमृत आत्म पी पी संत सुहेले रज्जण, जिस जन पुरख अबिनाशी साचा दर्शन पाया। जूठे झूठे आपणे पड़दे कज्जण, दर दुआरे छड्ड छड्ड भज्जण, लोकमात ना आए लज्जन, शब्द डंक प्रभ आप वजाया। राउ रंक शाह सुल्तानां राज राजानां वाली दो जहानां एका अंक रिहा सुणाया। लाड़ी मौत बन्न्हे हथ्थीं गाना, निहकलंक नरायण नर, एका फड़े शब्द तीर कमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी अन्त मिटाए, साध संत कोई रहण ना पाए, इक्क रखाए नाम सच्चा शब्द बिबाणा। सति करतार सति ना जाणया। आत्म उपजी ना ब्रह्म मति, पारब्रह्म ना दर पछानया। बहत्तर नाड़ी उबली रत, जूठा झूठा पीणा खाणया। धीरज शब्द ना दित्ती साची मति, चरन नत्त ना पुरख निधानया। सर्ब जीआं प्रभ जाणे मित गत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे सुघड़ स्याणे दर घर साचे एका एक मार ध्यानया।

★ ७ चेत २०१३ बिक्रमी कपूरथले दे राजे दे महल्ला विच जा के शब्द उचारया अते इक्क दस्तार सिरोपाओ दित्ता ★

पुरख अबिनाशी जामा पाया, लोकमात वज्जी वधाई। गुरमुख साचे लए जगाया, देवे जगत वड्याई। आप आपणा दरस दिखाया, सिरोपाओ सीस टिकाई। अमृत आत्म मेघ बरस वखाया, शब्द धुन उपजे सुन खुल्हाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि हरि थाँई। राज कपूर शब्द जोग तन शृंगार। आत्म रस साचा भोग, मिले मेल नर हरि करतार। लेखा लिख्या धुर संजोग, आदि अन्त ना होए विजोग, चरन सरन प्रभ इक्क प्यार। देवे दरस आप अमोघ, जगत विछोड़ा कटे रोग, बाहों फड़ फड़ लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंक नरायण नर, जोत जगांयदा। शब्द डंक इक्क अपार, चार वरनां आप सुणांयदा। राउ रंक मीत मुरार, दो जहानां होए सहाए। सम्मत वीह सौ सोलां सद विचार, आप आपणा मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी जोत इक्की शब्द घोड़ अस्वारी, जोती जोत निरँकारी, आप आपणे अंग समाए। भरया रहे भण्डार, तोट ना आईआ। देवणहार दातार, सर्ब थाँईंआ। राज राजानां खड़ा रहे दर दरबार, खेवट खेट आप अख्वाईआ। वेले अन्तिम करे प्यार, दरस दिखाईआ। ब्यास किनारा आर पार शब्द नगारा इक्क वजाईआ। करे खेल हरि करतार, नाम वणजारा वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए जोत बलोए, करे प्रकाश त्रै त्रै लोए, सम्मत सोलां एका चरन दर साचे आपणा आप छुहाईआ।

★ महाराजा कपूरथला दे सैक्टरी मेजर कृपाल सिँघ नवित्त शब्द उचारया ★

कृपाल किरपा देवे कर, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुर शब्द पाया साचा वर, तुट्टी जगत जुदाईआ। काया भाण्डा ल्या भर, अमृत आत्म साचा सर, सीतल धार वहाईआ। धुर दरगाही मिल्या वर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, जम की फाँसी आपणी आप कटाईआ। चरन कँवल प्रभ जाए पढ़, पंजां चोरां नाल लड़, घट घट वासी दरस दिखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणे रंग रंगाईआ।

★ ८ चेत २०१३ बिक्रमी ब्यास सतिसंग घर डेरा बाबा जैमल सिंघ, चरन सिंघ दे नाल शब्द उचारया ★

सोई सुरत सवाणी, सुरत ना राईआ। मिले मेल ना साचे हाणी, सार शब्द सार ना पाईआ। अमृत आत्म मिले ना ठण्ढा पाणी, ठण्ढी धार ना कोई वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साधां संतां जीआं जन्तां आत्म पुण छाण छाण पुण रिहा कराईआ। कलिजुग संत जगत दुहागण, सुहागी कन्त ना कोई हंढाईआ। दर दुआरे छड्ड छड्ड भागण, माया राणी बणत बणाईआ। मानस देही हँस बणे कागण, एका विष्टा मुख रखाईआ। गुरमुख विरले सोए मात जागण, आत्म दृष्टा जिन खुलाईआ। उपजाए शब्द सच्चा वैरागण, विच सृष्ट दए वड्याईआ। दरस दिखाए वड वडभागण, एका इष्ट जोत रघुराईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कागण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राउ रंक रंक राजान शाह सुल्तान वाली दो जहान एका राह वखाईआ। साध संत होए गंवार, माया भरम भुलाया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। जूठा झूठा तन बुखार, काया रंगण साची रंगत ना सके कोए चढ़ाया। पंज विकारा अट्ठे पहर करे ख्वार, जगत धुँदूकारा तन रखाया। हरि जन साचा दर घर साचा एका माणे गुर चरन प्रीती एका रंगत शब्द राग आत्म धुन आपे आप दए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे घर घर एका साचा ढोल वजाया। वजे ढोल मृदंग, ना नगारया। आर पार किनारा जाए लँघ, वेख वखाणे विच मंञधारया। जन भगतां कटे भुक्ख नंग, देवे शब्द सच्चा भण्डारया। चिट्टे अस्व कसे तंग, साधां संतां पावे सारया। अमृत आत्म वेखे गंग, सच सुरसती वहिंदी धारया। जोती जोत सरूप हरि, लोआं पुरीआं रिहा लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ जाए वंड, जेरज अंड विच समा रिहा। वंडे वंड अपार, भेव ना राया। मेट मिटाए भेख पखण्ड, जोती जामा भेख वटा रिहा। शब्द फड़ चण्ड प्रचण्ड नौ खण्ड पृथ्वी करे खण्ड खण्ड, साचा खण्डा हथ्थ उठा रिहा। मनमुख जीवां वड्ढे कंड, वेले अन्तिम देवे दंड, ना सके कोई छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्यास किनारा रिहा लँघ, वेखे खेल दो जहानी लाल, शब्द तेल किसे तन चढ़ाया। शब्द वणजारा कलिजुग कवण, करे जोत कुड़माईआ। कवण फिरे अवण गवण, वरनी वरन रहे भवाईआ। कवण आत्म मेघ बरसे सवण, सावण सुरती शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती चमके दामनी दामन, कामन कमन खेल खिलाईआ। आपे वेखे अन्दर बाहर, सच दुआरे वड़या। नौ दुआरे भेख भिखार, उच्चे टिल्ले आपे चढ़या। डूंघी कन्दर पावे सार, जोत निरँजण कर आकार, आपे बहे आपे खढ़या। शब्द फड़े तेज कटार, मारी जाए वारो वार, मेट मिटाए सीस धड़या। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, दर दर लोचन दरस अपार, दर

५८६
०५

दुआरे अग्गे खढ़या। शब्द कराए वणज वापार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व हो अस्वार, साची घोड़ी रिहा चढ़ाया। साचे घोड़े आप चढ़या, नाम वाग गुंदाईआ। सत्तां दीपां वेखे खड़्, एका आवाज़ रिहा लगाईआ। रहण ना देवे किसे दी लग्गी जड़्, शब्द उखेड़ा इक्क लगाईआ। एका अक्खर ना गया पढ़, कुरान हदीसा हरि जगदीसा बीस इक्कीसा आपणे भाणे विच समाईआ। वेख वखाणे राग छतीसा, काला सूसा ईसा मूसा ना कोई गाए दन्द बतीसा, वेद पुराणां एका वेखे वाली दो जहानां भेव रहे ना राईआ। शब्द झुलाए सच निशाना, उडे इक्क बिबाण जन भगतां ब्रह्म ज्ञाना, पूरन बूझ बुझाईआ। आपे गोपी आपे काहना, आपे राम रहीम रहिमाना, जुगा जुगन्त बणत बणाईआ। करे खेल घनईआ शामा, लक्ख चुरासी करे एका तामा, एका बाण जगत निशान आपणा रिहा झुलाईआ। गुरमुखां करे मात पछाना। नाथ त्रैलोकी मार ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल जगत महाना। करे खेल महान जगत बनवारया। ना कोई जाणे जीव जहान, आत्म शब्दी कल हंकारया। हरिजन साचा चतुर सुजान, एका रक्खे प्रभ चरन ध्यान, साचा देवे जिया दान, देवणहार सर्ब संसारया। अमृत आत्म पीण खाण, आप चुकाए जम की कान, राए धर्म दर दुरकारया। फ़ल लग्गे काया डाल्, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर,
५९० ०५ शब्द भण्डारा देवे भर, मिले मेल प्रभ साचे सज्जण, भाण्डे भरम मात भज्जण, दरस पेखत दोए दोए नैणा। सतिगुर साचा ५९० ०५
साख्यात, नेत्र जोत बलोए। आत्म अन्दर वेखे मार झात, अज्ञान अन्धेर रहे ना कोए। मेल मिलावा कमलापात, आत्म सेजा इक्खे रहण दोए। चरन कँवल बख्शे साचा नात, ना जन्मे ना कदे मोए। गुरमुख साचा पारज़ात, दर घर साचे रिहा खलोए। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, धुर दरगाही एका सच्चा ढोए। शब्द देवे जन साची दात, दुरमति मैल काया धोए। आपे रक्खे दे कर हाथ, आदि अन्त साध संत हरि भगवन्त जगत विछोड़ा कदे ना होए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए दया कमाए वेख वखाए तीजे लोए। लोइण तीजा साचा नेत्र, गुरमुख विरले पाया। वेखे सगल काया खेत्र, आप आपणी बूझ बुझाया। लग्गे बहार महीने चेत्र, चित वित नित नवित्त हरि हरि करदा आया। साचा हित जगत ठगोरी दए मिटाया। आपे होए मात पित ना कोई वेखे वार थित्त, अमृत आत्म काया सित, ठण्ढी ठार कराया। नौ दुआरे लैण जित, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन एका नाम मिले दाम, धुर दरगाही दए सुणाया। काया अन्दर सच टिकाणा, हरि हरि वेस अनेका। गुरमुख विरला चढ़े शब्द बिबाणा, इक्क रखाए प्रभ चरन ध्याना। दर घर साचे नर हरि साचा एका इक्क पछाना। होए बुध्ध बिबेका, धुर दरगाही देवे माणा। कलिजुग माया ना लाए सेका, सरन सरनाई

राजा राणा। साध संत बेमुहाणा, गुरमुख विरले आत्म नेत्र पुरख अबिनाशी साचा पेखा, आप चलाए आपणे भाणा। हरि समरथ अकथना अकथ, लक्ख चुरासी पाए नत्थ, सोहँ डण्डा हथ्थ उठाना। लोआं पुरीआं रिहा मथ, जन भगतां देवे साची दात वथ, साचे रथ चढ़ाना। सगल वसूरे जायण लथ, लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, सरन सरनाई हरि रघुराई एका ओट रखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाए, आत्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म जन मेल मिलाना। मिले मेल पारब्रह्म आत्म धुन वज्जी वधाईआ। लेखे लग्गे काया चम्म, सुन्न मुन रिहा तुड़ाईआ। पले बन्ने नाम दम, दो जहाना होए सहाईआ। एका एक रमईआ राम जुगा जुगन्त भेख वटाईआ। काया माटी झूठी हाटी अन्तिम किसे ना आवे कम्म, माया ममता रोग हँगता तन रखाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वासी साचा दम, नर हरि साचा रसना गाईआ। नेत्र नीर वरोले छम्म छम्म, बिरहों रोग इक्क लगाईआ। अमृत आत्म पीवे साचा जाम, इक्क खुमारी रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, नर निरँकारी जोत अधारी देवे दात शब्द भण्डारी अतुट भण्डारा इक्क रखाईआ। रोग सोग तन वगे नथूर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, आसा मनसा देवे पूर। रसना गाउँणा एका नाउँ साचा हरि साची बख्शे चरन धूढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे देवे वर, काया रंगण रंग चढ़ाए गूढ़। कर्म जरम प्रभ हथ्थ, जिस जन बणत बणाईआ। लेखा लेख लिखे मस्तक माथ, पूर्ब कर्मा रिहा जगाईआ। काया माटी चढ़े साचे रथ, विच बैठा रिहा चलाईआ। पंजां चोरां पाई नत्थ, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। पंचां लाहे आत्म सथ, साचा साथ ना कोई निभाईआ। रसना गाए अकथना अकथ, अकथ कथी दया कमाईआ। सगल वसूरे जायण लथ, मन चिन्दया जगत निन्दया आप बणाए साची बिन्दया, मानस देही वेख वखाईआ। तन मन वज्जा एका जंदया, जोती जोत सरूप हरि, जीव वजन्त जन्त जीव जगत जोत धर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। आत्म बिध आपे जाणे, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। नौ अठारां ना कोई पछाणे, सति वस्तू विच समाईआ। दर दुआरे होए निमाणे, एका एक रक्खी सरनाईआ। जगत फंद प्रभ आप कटाने, बत्ती दन्दां जाप जपाईआ। साचा चन्द आप चढ़ाने, जगत विकारा गन्द मिटाईआ। खुशी बन्द बन्द कराने, आसा मनसा पूर कराईआ। पारब्रह्म प्रभ एक, शब्द जणाईआ। गुर पूरा रक्खे साची टेक, आत्म वज्जे सच्ची वधाईआ। जीवां जन्तां करे बुध बिबेक, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। कलिजुग माया ना लाए सेक, जिस जन उत्ते हथ्थ टिकाईआ। लक्ख चुरासी रिहा वेख, आप दिस किसे ना आईआ। माया भुल्ले भरम भुलेख, घट घट वासी दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, करे खेल आप

रघुराईआ। कलिजुग जोती जामा पाया, करया भेख अवल्ला। साचा शब्द डंक वजाया, इक्क वखाया सच महल्ला। अन्दर सुत्या रिहा जगाया, शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला। साधां संतां रिहा जगाया, हथ्थीं फड़या सोहँ भल्ला। पूर्ब लहिणा कर्म कमाया, वलीआ छलीआ हरि रघुराया, आपे वसे जलां थलां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा बंक एका एक सुहाया। खुल्हे बंक द्वार, दस्म दुआरया। कलिजुग जीव भुल्ले नाम गंवार, नौ दर भरे हंकारया। गुरमुख साचे उतरे पार, गुर पूरे निमस्कार, फड़ फड़ बाहों कराए पार, पार किनारा वहिंदी धार, आत्म खोल्हे बन्द कुआड़, मेट मिटाए पंचम धाड़, मारे खण्डा दो धारया। जगत विकारा देवे साड़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, इक्क वखाए धर्म अखाड़, उपजे शब्द सच्ची धुन्कारया। धुर दरगाही साचा लाड़, शब्द घोड़े देवे चाढ़, आपे होए पिछे अगाड़, डूंघी कवरी काया बवरी आपे पार उतारया। मानस देही संवरी, मिल्या मेल प्रभ गहर गवरी, लेखा लिखणहार दातारया। दो जहानी पावे सार, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर, आप कराए इक्क वणज वापार, आप आपणे रंग समा रिहा। आप आपणे अंक समाए, जोती जामा धारया। वेखण आए अछल अछल्ल अटल महल्ल कवण शब्द वज्जे साची धुन्कारया। सर्ब जीआं प्रभ आपे जाणे, संत सुहेले जाण पछाणे, सच कराए वणज वापारो, पकड़ उठाए राजे राणे, मारे तीर एका बाणया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, राउ रंकां वेख हरि, आप आपणे अंक समाणया। आप आपणे अंक समाए, शब्द कला कल धारी। पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना राए, वसे सच महल्ल उच्च अटारी। गुरमुख विरले दर्शन पाया, लेखा चुक्के नौ द्वारी। आत्म सहिंसा रोग गंवाया, जगे जोत अगम्म अपारी। पंचम मेला आप मिलाया, करे कराए सच प्यारी। साचा दर इक्क सुहाया, जोत सरूपी डगमगाया, शब्द सिँघासण डेरा लाया, नरायण नरायण नरायण जोत निरँकारी। निरँकार निरँकार निरँकार, शब्द सच्चा जणाईआ। एका शब्द सच्ची धुन्कार, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द, प्रभ वेख वखाए गुणी गहिंद, दिवस रैण सुणे पुकार, घर साचे बैठा ताड़ी लाईआ। लक्ख चुरासी कर्म कुकर्मा रिहा विचार, जोत निरँजण कर पसार, काया मन्दिर डूंघी कन्दर बैठा सेज विछाईआ। हरिजन मेटे अन्ध अंध्यार, शब्द लपेटे तन करे श्रृंगार, गुर पूरा होए खेवट खेटे, फड़ फड़ बाहों लाए पार, पार किनारा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चेत्र अट्ठ दर आए नट्ठ, वेखे रंग घर साचा संग, कसे घोड़ तंग, तीजे नैण मुँधारया। शब्द घोड़े तंग कसाया। चिट्टे अस्व अस्वारा नौ दुआरे लँघ वखाया। दसवें शब्द हुलारा, दूसर ना कोई संग रखाया। आप आपणा कर आकारा, नाम मृदंगा इक्क वजाया। जगत मेटे धुँदूकारा अमृत आत्म गंग वहाया। जन भगतां करे ठण्ढी ठार, भुक्ख नंग

कलि रिहा कटाया। देवे शब्द आधार, भेखाधारी भेख धारा दर दरवेशा बणके आया। मंगे शब्द अपार, कलिजुग सूसा तन सुहाया। ईसा मूसा दिस ना आया। वेद पुराणां सार ना राया। अंजील कुराना दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस वटाया। जोती जामा भेख वटाए, वेखे खेल मन्दिर, गुरमुख साचे संत जगाए, आत्म बैठा अन्दर। राजे राणे किसे दिस ना आए, खाली दिसण मन्दिर। गुरमुख साचा साचे घर एका हिसा रिहा वंडाए, बजर कपाटी तोड़े जन्दर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख हरि, करे खेल कलन्दर। सावण सावण सावण कैंहदे, सतिगुर सावण किसे ना पाया। सतिगुर सावण पकड़े दामन, मेट मिटाए कामनी कामन, निज घर आत्म जिस वसाया। कलिजुग रैण अन्धेरी शामन, ना कोई फड़े किसे दामन, पल्ला नाम ना किसे फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, आप आपणे रंग समाया। सतिगुर सच द्वार है, करे सच न्याउँ। लिख्या लेखा अपर अपार है, गुरचरन सिँघ रहणा साचे थाउँ। दर आए बण भिखार है, मंगे साचा नाउँ। इक्क कराउँणा वणज वापार है, मिले मेल अगम्म अथाहो। लेखा तुट्टे नौ द्वार है, मस्तक टिक्का लथ्थे छाही, मिले मेल प्रभ साचे माही, धुर दरगाही हँस बणाए काउँ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दर दरवेशा आया, वेख वखाणे सभनी थाउँ। सच सगन प्रभ शब्द लगाया, जोती शब्दी वेखे मंगण आए, हर घट समाया ए। सरन सरनाई जो जन मंगण संत सुहेले इक्क इकेले धुर दरगाही साचे मेले अन्तिम अन्त दर घर साचे दए मिलाया ए। आपे गुर आपे चेले अचरज खेले पारब्रह्म कलि खेले, शब्द सुनेहड़ा अन्तिम तुट्टे जम का जेड़ा, पंचां चोरां कटे गेड़ा, लक्ख चुरासी गेड़ गेड़ा, करे कराए हक्क निबेड़ा, काया दिसे नगर खेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख धर, दर दरवेशा नर नरेशा मंगण आया बण भिखारी, आपे बण के शब्द अधारी, दो जहानां पार कराए वस्त नाम अनमोल, गुरमुख विरले मात पाया ए। पूरे तोल रिहा तोल, निशअक्खर वक्खर आपे बोल, दिस किसे ना आईआ। जिस जन पाड़े बजर कपाटी पथ्थर, नेत्र नीर वरोले अथ्थर, पंच पंचायण लत्थे सथ्थर, सच समग्री हरि रघुराईआ। काया मन्दिर साचे अन्दर जोत निरँजण डगमगाईआ। एका शब्द धुन अनाद साचा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, दर घर साचे एका एक करे शब्द कुड़माईआ। शब्द कुड़माई घर साचे होवे, आत्म वज्जे वधाई। दिवस रैण ना होवे जुदाई, अट्ठे पहर मंगलाचार कराई, नाता तुट्टे भैण भाई साक सज्जण सैण एका एक अख्वाईआ। दरस दिखाए तीजे नैणा, आप चुकाए लहिणा देणा, शब्द पहनाए तन साचा गहणा, हरि शृंगार

कराईआ। दर दुआरे साचे बहिणा, पुरख अबिनाशी भाणा सहिणा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, करे खेल रघुराईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए, शब्द वजाए डंका। संत जनां दर मेल मिलाए, भेव मिटाए राउ रंका। एका नाम तेल चढ़ाए, भरम मिटाए जीव जन का। धर्म राए दी जेल्ह कटाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क सुहाए द्वार बंका। गुरमति जगत प्रधान है, हरिजन विरला पाए। मनमुख सुत्ते जीव नादान है, आलस निन्दरा मगर लगाए। सतिगुर साचा सदा सदा मेहरवान है। सुरत सवाणी लए जगाए। जिस जन देवे नाम दान है, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाए। चरन धूढ़ सच्चा इशनान है, आवण जावण गेड़ कटाए। दर घर साचे एका माण है, रंक राजाना शाह सुल्तानां एका धाम सुहाए। जिस जन मिले मेल श्री भगवान है, सच निशाना इक्क रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, घट घट में रिहा समाए। घट घट वस्सया आप, सर्बकल धारीआ। सृष्ट सबाई माई बाप, खिलाए खेल खेलन हारया। त्रैगुण माया जगत ताप, पंजां तत्तां तत्त पसारया। जन भगतां जपाए साचा जाप, अन्दर मन्दिर धुन उपजा रिहा। आप वखाए आपणा आप, मेट मिटाए जगत संताप, देवे दरस अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आपे बख्शे अमृत आत्म निज घर वासी साजन साची धारिआ। अमृत आत्म साचा जाम, गुर पूरा मात पिआंयदा। मेट मिटाए कामनी काम, साचा दाम इक्क फड़ांयदा। जिस जन जपया साचा नाम, पूरन आपणा काम करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए साचा घर, शब्द सुहागी एका गीत धुर दरगाही साची रीत, काया मन्दिर सच मसीत, हाज़ी काज़ी विरला एका गांयदा। रोग सोग तिस तन मन जापे, जिस सताया दोख, चिन्ता सोग हरि हरि संत ना व्यापे, शब्द मिली साची मोख। सहिंसा चुक्के मात संतापे, पाया दरस दर अमोघ, नेड़ ना आयण तीनो तापे, जिस मिल्या धुर संजोग। कोटन कोट उतरन पापे, आत्म रस साचा शब्द जिस एका पाया भोग। एका रूप वखाए पंजे पुरख अबिनाशी घट घट वासी नाम शब्द गुर मन्त्र अन्तर इक्क चुगाए साची चोग। लथ्था दुःख सगल वसूरा, आत्म उज्यारा एका सुख। पाया पारब्रह्म सतिगुर साचा, हरि हरि लेखे लग्गी मानस देही जगत मनुक्ख। इक्क उपजाए नाद अनादी साची तूरा, मात गर्भ कटाया डर चुकाया उलटा रुख़। जोती नूर पाया हाज़र हज़ूर सति सतवन्ता पूरन भगवन्ता हाज़र हज़ूरा रोग सहिंसा चिन्त मिटाई, मिटया जगत अन्धेरा। पुरख अगम्मा जोत जगाई, इक्क वखाया सञ्झ सवेरा। नेत्र नैण हरिजन प्रभ दरस दिखाई, लेखे लाया काया चम्मा। साचे शब्द होई कुड़माई, सुरत सवाणी नेत्र नीर वहाए छम्म छम्मा। घर मन्दिर अन्दर वज्जी वधाई, धुर दरगाही दया कमाई,

एका पूत सपूता शब्द गुर साचा जम्मा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वखाए घर, रोग सोग जगत चिन्त मिटाए, जूठ झूठ सभ जगत वखाए, माया छाया किसे ना आए कम्मा। भरया शब्द भण्डार, प्रभ साचे दया कमाईआ। निर्मल जोत इक्क आकार, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, नाता तोड़े ना कोई जोड़े जगत भगत एका आपणे संग जुड़ाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त साची धार, संत सुहेले मीत मुरार, गुर शब्द कराए इक्क प्यार, देवणहार हरि हरि थाँईंआ। गुरमुख विरला करे वणज वापार, मानस देही पाए सार, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, इक्क वखाए सच घर, नौ दुआरे बन्द कराईआ। नौ द्वार तुट्टा नाता, पाया पुरख बिधाता। लेखा चुक्के ज़ात पाता, मिल्या मेल हरि कमलापाता। धुर दरगाही प्रभ दया कमाई, एका रती नाम सच्ची सुगाता। आदि अन्त साजन साचे संत तोट रहे ना राई, जिस जन सुणाए शब्द साची गाथा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणा दस्से घर, सदा निभाए अपणा साथा। संगी साथी पुरख अबिनाशी, घट मन्दिर अन्दर डेरा लाया। आप आपणी जोत प्रकाशी, सहिंसा रोग गंवाया। मिल्या मेल शाहो शाबासी, शब्द सिँघासण डेरा लाया। आदि शक्त आदि भवानी,
५६५ जोत निरँजण मात निशानी, साची धुन रिहा उपजाया। इक्क सुणाए साची बाणी, अक्खर वक्खर किसे ना जाणी, पड़ा ५६५
०५ पसंती रूप वटाया। गुणवन्ता हरि गुण निधानी, साचे संतां रिहा पछानी, मारे तीर शब्द कानी, बजर कपाटी पार कराया। ०५
सृष्ट सबाई दिसे फानी, एका नूर अलाही बेपरवाही शाह सुल्तानी, शब्द ताज सीस टिकाया। सर्ब जीआं वड दाता दानी, देवे दात शब्द निशानी, संत जनां हरि विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, इक्क वखाए आपणा घर, रोग सोग कोई रहण ना पाया। मिटया जगत रोग वसूरा, सुरत सवाणी आप जगाईआ। दर घर साचा पाया सूरा, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। दीपक जोत जगे नूरी नूरा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। राग रागणी गाए राग एका नाद वजाए साची तूरा, ढोल मृदंग दाता सूरा सरबंग, एका एक रिहा वजाईआ। पंचम पंचायण करे भंग, शब्द घोड़े कसे तंग, गुरमुख चोली रंगे रंग, फड़ बाहों उप्पर चढ़ाईआ। डूंघी कन्दर आपे लँघ, आत्म जन्दर तोड़े बन्द, इक्क सुणाए साचा छन्द, सच घर स्वच्छ सरूपी प्रगट होए आप आपणा रूप सति सरूप निज घर अन्दर मन्दिर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन वखाए इक्क घर, रोग सोग रहण ना पाईआ। हरिजन साचा घर वसाया। पुरख अबिनाशी दया कमाया। महल्ल अटल अचल्ल इक्क रखाया। चारे दिशा वेख वखाया। अमृत धार रिहा वहाया। सर सरोवर रिहा भराया। हरिजन साचा आप तजाए जीउ पिण्ड काचा, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। हिरदे अन्दर हरि हरि वाचा,

एका मारे शब्द तमाचा, नौ दुआरे खण्ड खण्ड खण्ड कराईआ। दरस दिखाए साचो साचा, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, इक्क वखाए साचा घर, चार दिवारी कोई दिस ना आईआ। चार दिवारी माया कंध। लक्ख चुरासी पाया फंद। कलिजुग भुल्ले जीव अन्ध। नौ दुआरे खायण गन्द। पुरख अबिनाशी सार ना पाई, रसन ना गाया बत्ती दन्द। आत्म घर ना वज्जे वधाई, सच महल्ले उच्च अटले शब्द ना चढ़या साचा चन्द। मिले मेल ना इक्क इकल्ले, वेख वखाणे जूहा जल थले, जंगल पहाड़ां विच समाईआ। गुरमुख विरले मेले दूई द्वैती मेटे सल्ले, इक्क फड़ाए शब्द साचा भल्ले, नाम त्रिसूल कन्त कन्तूहल, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, पावा चूल ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, इक्क वखाए सच घर, रोग सोग चिन्त रहण ना पाईआ। सच घर सच टिकाणा, गुरमुख विरले पाया। एका मिल्या गुर शब्द धुर बिबाणा, दर घर साचे दए पुचाया। दीन दयाला गुर गोपाला चरन दुआरे देवे माणा, आवण जावण गेड़ कटाया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, इक्क वखाए सच घर, पीणा खाणा मात चुकाया। जगत नाता विकार है, भुल्ली सर्ब लोकाई। गुरमुख विरला पावे सार है, सार शब्द जिस जन पूरे गुर बूझ बुझाई। माया राणी पावे अन्ध अंध्यार है, जीव जन्त साध संत आत्म होई हलकाई। एका एक एकँकार है, सृष्ट सबाई पसर पसार है, जन भगतां मीत मुरार है, होए सहाई सभनी थाँईं। कलिजुग रैण अन्धेरी काली धार है, भेखाधारी भेख अपार है, सृष्ट सबाई होई विभचार है, दुहागण नार कन्त सुहागी ना कोई हंढाई। संत सुहेले गुरमुख विरले चरन प्यार है। जिन जन प्रभ साचा देवे किरपा धार है, करे कराए एका वणज वापार है, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाई। नौ खण्ड पृथ्वी धूँआंधार है, सत्तां दीपा हाहाकार है, लोआं पुरीआं कोई ना पावे सार है, जूठ झूठ वज्जी मात वधाई। प्रगट होए नर निरँकार है। शब्द खण्डा फड़े हथ्थ तिक्खी रक्खे दोवें धार। सृष्ट सबाई वेखे परखे करे कराए आर पार है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे सच घर, दीपक जोती ना कोई वरन ना कोई गोती, अट्ठे पहर आलस निन्दरा कदे ना सोती, शब्द वजाए उपजाए सच्ची धुन्कार है।

★ ६ चेत २०१३ बिक्रमी संत तेजा सिँघ दे पास जा के शब्द उचारया पिण्ड सैदपुर ज़िला अमृतसर ★

शब्द सिँघासण हरि बिराजे, लोक लाज तजाई। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरि दाता शाहो शाबासी आत्म वेख सेज विछाई। काया मण्डल पाए रासे, कवण द्वार वज्जे शब्द वधाई। किसे कम्म ना आए काया सुख, काया झूठी माटी

अन्त विनासे। गुरमुख साचे संत जनां ज्ञान बोध प्रभ शब्द जणाए भाग लगाए काया कासे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, शब्द सिँघासण डेरा लाए। शब्द सिँघासण हरि सुहाया, करे खेल अपारया। लोकमात किसे दिस ना आया, भुल्ले जीव गंवारया। महल्ल अटल इक्क अपारया। दर घर साचे आपे डाहया, शब्द कराया पहरेदारया। जोत सरूपी आसण लाया, पृथ्वी आकाशन वेखण आया। शब्द स्वासन लए बचाया। सति सरूपी सति समाया। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, जगत सिँघासण मूल ना भाया। जगत राज भगतन जोग, गुरमुखां शब्द कुड़माईआ। रसना रस झूठा भोग, आत्म रस एका मंगे, काया चोली आपणी रंगे, काली लाहे गलो छाहीआ। दर दुआरे ना मंगे, शब्द घोड़े कसे तंगे, आपे फिरे पैरीं नंगे, भेख भिखारी आप अख्वाईआ। गुर शब्द वेखे घर कवण मंगे, वज्जे नाम इक्क द्रंगे, आलस निन्दरा दए गवाईआ। अमृत आत्म वगे गंगे, मिले मेल दाते सूरे सरबंगे, सदा सहाई अंग संगे, दो जहानां हरि मेहरबान ना होए विछोड़ा राईआ। नौ दुआरे आए लँघे, दसवें वेखे इक्क पलँघे, जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, साची किरपा देणी कर, मंगे साचे घर सच्ची सरनाईआ। जोती जामा हरि जी पाया, करे भेख अवल्ला। शब्द सतिगुर इक्क उठाया, आत्म पाया घर साचे पल्ला। वड दाता जोधन जोध आप अख्वाया, लोकमात अन्तिम कर के आया हल्ला। जिस जन हिरदा सोध वखाया, प्रभ हथ्थ फड़ाया साचा शब्द पल्ला। ज्ञान बोध बोध ज्ञान आप अख्वाया, इक्क ध्यान चरन लगाया, दूई द्वैती मेटे सल्ला। संत सुहेले वेखण आया, नेत्र लोचन पेखण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां किरपा देवे कर, इक्क वखाए रंग महल्ला। आत्म अटारी, प्रभ साचे जोत जगाईआ। किसे दिस ना आए चार दिवारी, सृष्ट सबाई फिरे हलकाईआ। गुरमुख विरले आत्म ब्रह्म पारब्रह्म करे विचारी, साची वस्त झोली पाईआ। प्रभ पड़दा दए उतारी, गुर संगत करे निमस्कारी, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। जगे जोत अगम्म अपारी, मिले नाम सच खुमारी, देंदा आए वाहो दाहीआ। भगत सुहेले आप कराए आपणे मेले, आत्म दरस भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे बणया दर भिखारी, करे खेल अपर अपारी, काला सूसा वेख वखाए मूसा ईसा ईसा मूसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगे शब्द सिँघासण, सुरत सवाणी ना होए दुहागण, जगत रंडेपा देणा कटाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट। देवे भण्डार इक्क अतुट्ट, जोती जगे लट लट। इक्क वखाए साचा हट। साचे दर साचे मिले वर, इक्क सिँघासण आदि पुरख अबिनाशण आपणा मेल मिलाईआ। जग नाता झूठ निशान है। एका पुरख बिधाता, जिस दीआ शब्द बिबाण है। उडे उडावे विच जहान है। नाता तुट्टे पीण खाण है। अमृत आत्म सर सरोवर करे सच्चा इशनान है। सर्ब

५६८
०५

जीआं हरि जाणी जाण है। काया वेखे सच मकान है। जन भगतां आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान है। धुर दरगाही एका दान, कलिजुग जीआं लाहुण आया अन्त मकाण है। फड़ शब्द तीर कमान, नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्यान, सत्तां दीपां इक्क निशान, लोआं पुरीआं पावे एका आण, होए मेहरवान है। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, संत सुहेले मंगे वर, किरपा आपणी देणी कर, गेड़ा तुटे आवण जाण। आवण जाण गेड़ा छुट्टे, मिले पुरख अबिनाशा। पंजां चोरां फड़ फड़ कुट्टे, होए दासन दासा। दूई द्वैती फड़ फड़ कुट्टे, काया मण्डल वेखे रासा। भैणां भईआं नाता तुट्टे, शब्द चलाए स्वास स्वासा। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, संत सुहेले करे आपणी मेहर, जोत जगाए काया कासा। काया कासा डूंघी कन्दर, वस्त हथ्थ ना आईआ। जगत विकारी वज्जा जन्दर, ना सके कोई तुड़ाईआ। संत सुहेला जो जन चढ़या साचे मन्दिर, आत्म कुण्डा देवे लाहीआ। होए मिलावा अन्दरे अन्दर, गुर शब्दी जन्म दुहाईआ। किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिले लभ्भण देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, आपणी किरपा देणी कर, जोती शब्दी शब्दी जोती पवण स्वासी एका रंग रंगाईआ। पवण स्वासी लग्गे लेखे, शब्द मिले वड्याईआ। काया तुट्टे भरम भुलेखे, वजे सच्ची वधाईआ। लिखणहारा आपे लेखे, लिखी रेखा दए मिटाईआ। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेखे, कलिजुग भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मस्तक लाई साची मेखे, दीपक जोती साची जगे, जगत तृष्ना मूल ना लग्गे, होए सच्ची रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, सदा रहण पिच्छे अग्गे अग्गे पिछे दूर नेड़े नेड़े दूर एका धाम सुहाईआ। संत भिखारी आप है, आपे खोल्ह्णहार। भगत द्वारी आप है, आपे मेलणहार। जोत निरँकारी आप है, आपे शब्द भण्डार। जीव जन्त उधारी आप है, आपे सर्ब पसार। साचा कन्त पुरख भतारी आप है, सृष्ट सबाई वेखे नार। जोत अगम्म अपारी आप है, जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, संत सुहेले किरपा देणी कर, आए संत द्वार। संत दुआरा वेखे खुल्ह्ला, आया जोत जगाए। मिले शब्द इक्क अनमुल्ला, दूसर किसे हथ्थ ना आए। संत सुहेला साचे तोल तुला, आपणी किरपा आपे कर, साची वस्त देवे दस्त अट्ठे पहर रहे मस्त, अज्ञान अन्धेर मिटाए। कलिजुग झूठा माया लूठा अन्तिम हुल्ला, अमृत फ़ल ना कोई लगाए। झूठा दिसे काया कुला, अन्त खाली रहि जाए। जगत अन्धेर एका झुल्ला, जूठ झूठ रही सताए। अमृत आत्म सभ दा डुल्ह्ला, गुर शब्द जाम ना कोई पिलाए। जोती जोत सरूप हरि, दर दुआरे आया भुल्ला, आपणी किरपा दए कमाए। दर्शन मंगे नेतन नेत, नेत्र तीजा खोल्ह्। नौ दुआरे छड्डे नौ नौं चेत, साचे मन्दिर अन्दर बोल। प्रभ वसे साचे काया खेत, सद तोले पूरे तोल। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचे घर आत्म पड़दे रिहा

खोल्॥ दर्शन वेखे दरस, हरि दरस रहे बिल्लाए। अमृत आत्म मेघ बरस, हरि जगत तृष्ना रिहा मिटाए। सति पुरख निरँजण सति घर समाया, आपणी बणत बणांयदा। जोती नूर आप कराया, दिस किसे ना आंयदा। जोती पुरखा नाम रखाया, साचा धाम सुहांयदा। शब्द सुत इक्क उपाया, घर छेवें आप टिकांयदा। बोध अगाधा नाउँ रखाया, गुणवन्ता धन्न धन्नवन्ता, आप बणाए आपणी बणता, साचा माण दवांयदा। पंचम दर वेखे घर साचा कन्त पवण स्वासी साचा संग रलांयदा। जोती शब्दी एका रास, पंचम मेला पुरख अबिनाश, लेखा गणत गिणांयदा। चौथे पद चौथे घर पावे रासी, आप बणाए लक्ख चुरासी, गुण त्रैगुण माया तत्त उपांयदा। त्रैगुण माया दासन दासी, पंचां करे आप प्रकाशी, पंझी प्रकृति संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख हरि, लोआं पुरीआं खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्डी बणत बणांयदा। वरभण्डी हर बणत बणाई, लक्ख चुरासी उपाया। हड्ड मास नाड़ी रक्त बूंदी रिहा उपाई, आपणा पिण्ड इक्क सुहाया। मन मति बुध विच टिकाई, नौ दुआरे खोल् विखाया। सुरत सवाणी विच समाई, पुरख अबिनाशी दिस ना आया। शब्द विचोला संग बणाई, दस्म दुआरी इक्क खुल्हाया। साचा ढोला रिहा सुणाई, कलिजुग जीव सुणन ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट घट अन्दर वेखे काया मन्दिर निर्मल जोती रिहा जगाया। निर्मल जोती कर आकार, प्रभ वेखे जगत तमाशा। साधां संतां सच्चा यार, आपे वेखे नेत्र पेखे, लेखे लाए पवण सुवासा। जो जन रहे भरम भुलेखे, अन्दर मन्दिर साचे वेखे, झूठा भन्नाए काया कासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे नौ दर, दसवें घर जिस जन मिलावा पुरख अबिनाशा। पुरख अबिनाशी जिस जन पाया, होवे शब्द कुड़माईआ। पोथी ग्रन्थ कोई पढ़न ना पाया, शब्दी धार इक्क वहाईआ। मनमुख जीव साचे मन्दिर चढ़न ना पाया, ना तृष्ना अग्न बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वखर, जन भगतां पाड़े बजर कपाटी पत्थर, सोहँ साचा लेख लिखाया, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, एका शब्द राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान गुण निधान, संत असंतां जीव जन्तां रिहा जगाया। गुर संगत धन्न कमाईआ। दर घर साचा पाया, जगी जोत इक्क रघुराईआ। आपणा भेद रिहा छुपाया, भरमे भुल्ली जगत लोकाईआ। गुण निधाना दिस ना आया, अन्तिम वज्जे शब्द डंक, घर साचे इक्क वधाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, राज राजानां दर दर रिहा फिराईआ। भेखाधारी भेख अपारा, कलिजुग सतिजुग टिक्का लाहे छाहीआ। काला सूसा तन पहनाया, हरि दाता धुर दरगाहीआ। ईसा मूसा रिहा हिलाया, जोती जोत सरूप हरि, सम्मत वीह सद उन्नी आपे लाहे काली चुन्नी, मक्के मदीने चरन छुहाईआ।

मक्के मदीने जाए चढ़, प्रभ जोती जामा पाया। शब्द घोड़ा ल्या फड़, दिस किसे ना आया। जोत निरँजण ना कोई सीस ना कोई धड़, लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़ नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाया। कोई ना सके अगे खड़, दर दर घर घर बैठे रहे पढ़, एका अक्खर नर निरँकार, शब्द ना किया तन श्रृंगार, पंजां तत्तां विच समाया। जिस जन मेला पुरख भतारा, दो जहानी करे पारा, नाम देवे जगत भण्डारा, तोट कदे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द देवे साचा वर, सति संतोखी आत्म मोखी ब्रह्म ज्ञान जणाया। सोहँ शब्द जगत धार है, धुर दरगाही आई। कलिजुग अन्तिम होवे पार है, सतिजुग वज्जे सच्ची वधाई। जन भगतां फड़ फड़ बाहों रिहा तार है, मनमुख नींद दुहागण रिहा सवाई। एका एक ओंकार है, जोती जामा भेख अपार है, शब्द खण्डां रिहा उठाई। लोआं पुरीआं आर पार है, आपे जाणे आपणी धार है, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर संगत देवे दरस दर, आत्म तृष्ना जगत मिटाई। हरि शब्द अपार गुर जणाईआ। गुर शब्द अपार, सुणे सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला पावे सार, आत्म बूझ बुझाईआ। हरि शब्द अपार, गुर पूरे द्रिढ़ाईआ। गुर पूरा करे प्यार, लिव अन्तर एका लाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यार, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुख साचे उधरे पार, गुर पूरे शब्द कमाईआ। हरि शब्द अपार, गुर पूरे झोली पाया। गुर शब्द अपार, गुरमुखां कन्न सुणाया। गुरमुख साचा संत दुलार, दर घर आपणे लए वसाया। अज्ञान अन्धेरा दए निवार, दीपक जोती इक्क जगाया। साचा मेला इक्क द्वार, एका दूजा भउ चुकाया। लोकमाती वेख करे विहार, आवण जावण खेल रचाया। जुगां जुगन्तर साची कार, हरि भगवन्ता भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम रूप वटाया। हरि शब्द अडोल, कदे ना डोल्लया। गुर शब्द साचा बोल, सृष्ट सबाई एका बोल्लया। जन भगतां आपणे पड़दे रिहा खोल्ह, भाग लगाए काया चोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल कला सोल्लया। हरि शब्द अथाह, बेपरवाह है। गुर शब्द जगत मलाह, साचा दस्से एका राह है। जन भगतां मेला रिहा मिला, फड़ फड़ साची बांह है। साचा धाम रिहा सुहा, दीपक जोती इक्क जगा है। इक्क जपाए साचा नाम, निशअक्खर वक्खर आप रखा है। हरिजन बणाए हँस फड़ फड़ कां, साची जोत रिहा जगा है। दो जहानी रक्खे ठण्डी थाँ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई वेख दर, हरिजन संत सुहेले आप कराए आपणे मेले, आपे पिता आपे माँ है। हरि शब्द अबिनाश, जगत प्रकाशया। गुर पूरा दासन दास, मिले मेल शाहो शाबास्सया। जन भगतां पूरन करे आस, इक्क जपाए स्वास स्वास, वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, साचे मण्डल पावे रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, करे खेल सगला साथया। हरि शब्द अजून, किसे ना जूनीआ। गुर शब्द अमोल, गुरमुख विरला सुणे सुणाए खोल्हे मुंन सुंनया। आपे वसे पड़दे उहल, वड दाता गुणी गुनया। गुरमुख विरला अट्ठे पहर करे कराए काया मन्दिर साचे चोहल, किसे हथ्थ ना आए रिखी मुनीआ। माया भरम भुलाया, कलिजुग वेला अन्तिम आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, गुर शब्द साची चुन्नीआ। हरि शब्द अस्वार घोड़ दुड़ांयदा। गुर शब्द अपार, लोकमाती जोड़ जुड़ांयदा। जन भगतां देवे कर प्यार, मिट्ठा कौड़ वेख वखांयदा। अमृत आत्म बख्शे साची धार, दुरमति मैल रोग गंवांयदा। वेख वखाए महल्ल अपार, दीपक जोती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आप वखाए सगल पसार, आपे वसे सभ तों बाहर, नगर खेड़ा आप सुहांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, आपे रहे ख़बरदार, शब्द बणाए पहरदार, गुरमुख सोए मात जगांयदा। आपे पुरख नारी नार, शब्द भण्डारा साचा यार, आपे साची सेज हंढांयदा। पूत सपूता कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख कर, करे खेल अपार। हरि शब्द अपार, भरया रहे भण्डारया। गुर पूरे बख्शी साची धार, निझर धार इक्क वहा रिहा। एका एक दिसाए चरन प्यार, दूसर कोए दिसना आ रिहा। शब्द चोट लग्गे काया तन नगार, नगारा इक्क वजा रिहा। आप सुहाए बंक द्वार, गुरदुआरा इक्क वखा रिहा। गुर शब्द शब्द गुर प्रगट होए वेख वखाए त्रै त्रैलोए एका रंग समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा कालख टिक्का, किसे ना दिसे नीकन नीका, माया रस फीकन फीका, वेला अन्तिम अन्त अन्त अन्त मिटा रिहा। निहकलंक कलि जामा पाया, करे खेल अवल्ला। शब्द डंक इक्क वजाया, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जगत महल्ला। राउ रंक रिहा वखाया, आपे होया अछल अछल्ला। वासी पुरी घनक अख्वाया, शब्द सुनेहड़ा एका घला। बार अनक जोत जगाया, कलिजुग वेखे जूहां जंगल जल थला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी पवणी आपे रला। जगी जोत अगम्म अपार, लोकमात वज्जे वधाईआ। सम्मत तेरां बन्न्हे धार, साधां संतां रिहा जगाईआ। रंक राजानां करे ख़बरदार, शब्द डण्डा मगर लगाईआ। वाली हिन्द हो त्यार, अस्सू तिन्न नेड़े आईआ। मिले मेल प्रभ सचा यार, भिन्न भिन्न खेल रचाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, गिण गिण वक्त लँघाईआ। नाम कटारी पहन हथियार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जगत खुमारी लाहे बुखार, कलिजुग अन्तिम कन्ढा आईआ। मेट मिटाए झूठी धाड़, भेख पखण्डा रिहा मिटाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, जोती जोड़े मेल मिलाईआ। पुरीआं लोआं पावे सार, आपे रिहा हिलाईआ। ब्रह्मा चारे मुखड़े दए उग्घाड़, आप आपणा रंग वखाईआ। अन्तिम कलिजुग करे ख्वार, देवे इक्क

दुहाईआ। शिव शंकर खोले बन्द किवाड़, बाशक तशका गल लटकाईआ। शब्द अगम्मी दिसे धाड़, पुरख अबिनाशी एका रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द आपे रिहा हिलाईआ। सुरपति राजा इन्द हरि हिलांयदा। गुरमुख साचा लेखे लाए साची बिन्द, सगली चिन्द मिटांयदा। प्रगट होए विच हिन्द, निहकलंकी डंक वजांयदा। वड दाता सूरा सरबंग आप अख्वांयदा। मनमुख जीवां कढ्ढे जिंद, चारों कुन्ट करन निन्द, दहि दिशा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द धारा सच वहाए आत्म गंग, इक्क वखाए डूंघी डले सागर सिन्ध, गुरमुख साचे विच समांयदा। तेरां तेरां तेरी धार। वेखे जाए दया कमाए, संत सुहेले साचे यार। सम्मत चौदां चौदां हट्ट, करे कराए ख़बरदार। चरन छुहाए अट्ठ सट्ठ, उलटी गेड़े आपे लट्ठ, किसे ना देवे कोई सहार। सम्मत पन्दरां प्रभ जाणे सभ दीआं अन्दरां, जोगी यती तपी सती फड़ फड़ बाहों कढ्ढे बाहर। सम्मत सोलां घर घर गली गली फिरन लक्ख चुरासी रोल झकोला राज राजानां शाह सुल्तानां राह खेड़ा दिस ना आईआ। सत्त सतारां लाड़ी मौत लए बहारा, चारों कुन्ट दिसे उजाड़ा, देणा लहिणा रूसा धाड़ा, मनमुखां लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। सम्मत चढ़े अट्ठ दस्स अठारां, किसे ना दिसे पल्ले भाड़ा, बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, धरत मात मार झात गूढ़ा रंग लाल मैहंदी हथ्थीं लाईआ। सम्मत चढ़े बीस उनी, कोई ना दिसे मुस्लिम सुन्नी, सभ दी चोटी जाए मुंन्नी, सिरों लाहे काली चुन्नी, ईसा मूसा दए दुहाईआ। सम्मत होए बीस बीसा, प्रगट होए जगत जगदीसा, एका छत्र झुलाए सीसा, आप आपणा आप उपाईआ। बीस इक्क इक्कीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, ना कोई गाए राग छतीस, लेखा मुक्के कुरान अंज़ील हदीस, वेद पुराण रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द साचा झण्डा, आप झुलाए विच ब्रह्मण्डां नौवां खण्डां सत्तां दीपां वंड वंडाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, गुरमुख साचे संत सुहेले, शब्द सुनेहड़े रिहा जगाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, करे खेल दिवस रैणा। सृष्ट सबाई आप भुलाए कर कर वल छल, किसे दिस ना आए जगत नैणा। जोती शब्दी आपे गया रल, आप आपे वहिण वहिणा। प्रभ का भाणा ना जाए टल, गुरूआं पीरां साधां संतां अन्तिम सिर ते सहिणा। वेखे खेल अज्ज कि कल्ल, कलिजुग तेरा आप चुकाए लहिणा देणा। धरती उप्पर उप्पर जल, एका मारे शब्द उछल्ल, डूंघी डल मनमुख जीवां अन्तिम वहणा। गुरमुख साचे संत सुहेले गुर संगत साची रल, दूई द्वैती मेटण आया सल, चरन दुआरे साचे बहिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख घर, एका एक सच महल्ला पुरख अबिनाशी आपे मल्ला, आपे बैठे रहिणा। पूरन संत जाण के, दर्शन पाए

नेत्र नैण। पूरन संत आपणा आप जीव जाण के, रसना सके कुछ ना कहण। जगत छोड़े माण ताण बण अञ्याण साक सैण। संत दरस नेत्र परस मिट्टे हरस, अमृत आत्म मेघ देवे बरस, चुकाए लहिण देण।

★ ६ चेत २०१३ बिक्रमी संत लाभ सिँघ पास जा के शब्द उचारया पिण्ड सैदपुर ज़िला अमृतसर ★

सच पलँघ प्रभ आप सुहाया। लुहार तरखाण ना किसे बणाया। जगत वाण ना कोए उँणाया। शब्द बिबाण इक्क रखाया। आपे बैठ श्री भगवान, साची बणत बणाया। वेख वखाए वाली दो जहान, दिस किसे ना आया। इक्क झुल्लाए सच निशान, सति पुरख अबिनाशी आप उठाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी विच समाया। लोकमाती गुर गुर पीरां साधन संतां ब्रह्म ज्ञान शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया। उपजे धुन तुट्टे सुन्न काया मन्दिर सच मकान, बेड़ा साचा हथ्थ वखाया। मंगे मंग शब्द दान, उडे उठाए विच बिबाण, खाणी बाणी होए हैरान, जाणी जाण मेल मिलाया। जोत जामा धुर दी बाण, कलिजुग अन्तिम करे पछाण, वेख वखाए राज राजान, चतुर सुघड़ स्याण ज्ञान बोध, बोध अगाधा प्रभ आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण इक्क सुहाया। शब्द सिँघासण हरि बिराजे, जोती जोत जगाईआ। एका रक्खे सीस ताजे, दो जहानां राज कमाईआ। आप संवारे आपणा काजे, शब्द निशाना साचा तीर जगत कमान उठाईआ। वेख वखाणे संत औलीए शेख़ मुलां पीर जगत नाइक मुसायक रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण बैठ हरि, पावा चूला ना कोई रखाईआ। पावा चूल ना रक्खया कोए, प्रभ साचे बणत बणाईआ। खाली हथ्थीं वस्सया दिवस रैण कदे ना सोए, ना जन्मे ना मोए, अट्ठे पहर गुरमुख अन्दर वड़ वड़ हस्सया। शब्द निराला तीर कस्सया। दिस ना आए लोचन दोए, मेट मिटाए अन्ध अन्धेरी रैण मस्सया। एका राह साचा दस्सया, जो जन सरन सरनाई साची होए। घट घट अन्दर आपे वस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लाए, दिवस रैण डगमगाए। गुर पूरे अवर ना कोई जाणी जाए। गुर पूरा जानणहार है, पुरख अबिनाशी बणत बणाई। भरमे भुल्ला सर्ब संसार है, गत अन्तर भेव ना राई। सुरत सवाणी होई गंवार है, शब्द भतार ना कोई हंढाई। चढ़ चढ़ थक्के नौ द्वार है, महल्ल अटल दिस ना आई। हरिजन मेला इक्क द्वार है, एका एक लिव लाई। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ है, जिस दित्ता बन्द कराई। अमृत आत्म साची धार है, शब्द खण्डा हथ्थ उठाई। जोत जगाए बहत्तर नाड़ है, साची जोत करे रुशनाई। साचे दर घर देवे वाड़ है, धुन आत्मक वज्जे सच

वधाई। साचे घोड़े आपे चाढ़ है, नाम सेहरा दए लगाई। लाड़ी जोत कर प्यार है, घर दसवें लए व्याही। एका सेजा सुत्ते पुरख नारी भतार है, दिवस रैण खुशी मनाई। साचा मन्दिर प्रभ करे त्यार है, आत्म सेजा इक्क विछाई। सिँघ भगवान गुरमुख विरला संत करे दीदार है, भरमे भुल्ली लोकाई। जोती जोत सरूप हरि, सच घर आण आपणा लाए, शब्द सिँघासण इक्क विछाई। गुरमुख साचे संत बहाए दिवस रैण दरस दिखाए, भाणा सहिणा हुक्म जणाए, शब्द गहिणा तन पहनाए, सोलां करे तन श्रृंगार। संतन धाम जगत न्यारा, जाणे पुरख अबिनाशी। करे खेल अगम्म अपारा, वेखे घट घट वासी। ना कोई मिले चार दिवारा, जोत सरूप एका मण्डल रासी। ना कोई जाणे वेद पुराण अंज़ील कुराना, पंडत पढ़ पढ़ थक्के कांशी। हरिजन साचा सुघड़ स्याणा, जिस जन मिल्या शब्द बिबाणा, उडे उडाए आकाश आकाशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण एका मंगे, दर दुआरे मूल ना संगे, दसवीं गली दस्म दुआरा आपे लँघे, वेखे खेल तमाशी। उठो जागो सुरत संभालो, वेला अन्तिम आया। दुरमति मैल धोवो दागो, रिहा काग हँस बणाया। सतिगुर साचे सरनी लागो, जगत बुझाए तृष्ना आगो, आत्म जोत दए जगाया। पुरख अबिनाशी एक है, संतन रिहा उपाए। शब्द स्वासी देवे साची टेक है, आत्म ब्रह्म जणाए। जगत माया ना लाए सेक है, जिस जन समरथ आपणा हथ्थ टिकाए। आत्म आपे आए आपणा वहाए नीर है, जगत दिस ना आए। सद वसे आप विसेख है, दसवें हिसे वंड वंडाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, संत असंता आत्म अन्दर साचे मन्दिर भेद अभेदा अछल अछेदा अछल अछेदा भेव गूझ खुल्हाए। हरि वडी वड्याई साचे संत मात उपाया। घर संत वज्जी वधाई, प्रभ अबिनाशी रसना गाया। पुरख अबिनाशी करे कुड़माई, सवाणी जोती शब्द व्याहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे संत मेला इक्क इकन्त दस्म दुआरी कर विचारी, शब्द वेखे तिक्खी धारी, दर घर साचे वेखण आया। संत जगत बलवान है, सति पुरख समाए। सति पुरख सच्चा दाता देवे दान है, आत्मक शब्द धुन उपजाए। संत रक्खे चरन ध्यान है, पुरख अबिनाशी रिहा दिखाए। पुरख अबिनाशी सदा अबिनाश है, साचे संतां हुक्म जणाए। साचा संत होए दास है, सतिगुर साची दया कमाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुगा जुगन्तर वेख वखाए। साध संत अन्दर बाहर आपे होए। संत सुणाए गीत सृष्ट सबाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द जणाईआ। दिस किसे ना आए आप वसे काया गुरदुआरा मन्दिर मसीत, सच महल्ला रिहा वसाईआ। अट्ठे पहर परखे नीत, सद अतीत कर्म कमाईआ। सृष्ट सबाई रिहा जीत, अजित्त आप अख्वाईआ। एका रक्खे सुहागी गीत, साचे संतां साचा छन्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखण आया दर

दर, कवण नारी होई मुटयांर, प्रेम मैहन्दी हथ्थीं लाईआ। सोलां करे तन श्रृंगार, लहिंदी दिशा इक्क वखाईआ। आप खुल्हाए बन्द किवाड़, आत्म सेजा किस विछाईआ। संत सुहेला साची नारी, पुरख अबिनाशी मात बणाईआ। आपे करे सच प्यारी, आत्म बीज साचा पाईआ। हरी करे तन क्यारी, फुल्ल फुल्लवाड़ी सच वखाईआ। नाता तुट्टे पंज यारी, शब्द सरूपी फेर बहारी, साचा धाम इक्क सुहाईआ। फूलन सेजा कर त्यारी, आप बणाए कन्त भतारी, साचे संत वडी वड्याईआ। दोवे सुत्ते एका सेजा पैर पसारी, धुर दरगाही साची यारी, आपे कन्ता आपे नारी, भेद भेव कोई ना राईआ। रसना कहि कहि थक्की हारी, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखण आया संत दर, पुरख निरँजण जिस घर आया, तुठया दीपक जोत जगाया, साचे घर करी उज्यारी। संतन घर कर उज्यार, ना होए कदे अन्धेरा। नेत्र पेखण मीत मुरार, चुक्के मेरा तेरा। एका अमृत आत्म बख्शे साची धार, शब्द सरूपी पाए घेरा। जोत सरूपी कर आकार, आप चुकाए भरमा डेरा। इक्क वखाए दर सच्चा दरबार, ना कोई जाणे सञ्झ सवेरा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखण आया संत दर, कवण करे जगत निबेड़ा। जगत निबेड़ा हक्क, कवण कराईआ। जीव जन्त राह तक्क गए थक्क, साध संत ना कोए भार उठाईआ। आपणा आप चलाया घर घर मति, एका मिटया धर्म सति, नाम बेड़ा ना कोई वखाईआ। बहत्तर नाड़ी उबली रत, पुरख अबिनाशी तेरा भुल्लया एका नत्त, मन मति रही भड़काईआ। प्रगट होए हरि समरथ, सृष्ट सबाई पाए नत्थ, दोवें वागां रक्खे हथ्थ, चारों कुन्ट रिहा खिचाईआ। सम्मत सोलां सगल वसूरे जायण लथ्थ, भेख पखण्डा प्रभ देवे मथ, अगम्मी जोत जगाए एक अलक्ख, गुरमुख विरले आत्म अन्दर रहि जाए साचा तथ, ना कोई रहि जाए तीर्थ तट्ट, अन्दर मन्दिर लेखा रिहा लिखाईआ। प्रभ चरन दुआरे इक्क इक्ठ, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखण जाए दर दर संत सुहेला कोए मिलाए दया कमाए, दर दुआरा इक्क वखाईआ। नकद सौदा मिले जिस हट्ट, सो हट्ट क्यों मात छुपाया। आपे वेख काया मट्ट, चौदां हट जिस उपाया। आत्म अन्दर तीर्थ तट्ट, दुरमति मैल देवे कट्ट, सिँघ लाभ दोआब किस धाम रखाया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, जगत विषना लए चट्ट,, घट घट नज़री आया। जोत जगे लट लट, शब्द मारे भारी सट्ट, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। साडे वास्ते कीता हट्ठ, नौ दुआरे रिहा नठ्ठ, दसम ना गिड़ी साची लट्ठ, काया अग्गनी लग्गी मट्ठ, शब्द भठ तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मंगे शब्द वर, दीपक जोती मेल दर, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाया। संत सदा निरवैर है, सति सरूप समाए। नौ दुआरे वसे बाहर है, दसवें शांत समाए। काया माटी जगत झूठी सीर है, रसन फिरी हलकाए। भरम भुलाया ऐर गैर है, एका रंग ना

जाणे राए। जोत सरूपी गम्भीर गहर है, हरि घट में रिहा समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे दर, जूठी झूठी जगत लहर है। कलिजुग झूठा मृदंग वजाईआ। गुरमुख विरले आत्म वस, मेहर हो दलेर जिस तन मन मन तन ल्या बंधाईआ। मनमुख जीवां आत्म तृष्ना रही घेर, काया छेड़ रिहा छिड़ाईआ। बत्ती दन्दां होया भेड़, साचे गेड़ ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे सच निबेड़, जगत निबेड़ा कवण कराईआ। मन मति जगत प्रधान, कलिजुग जीव मत्तया। दुरमति नाल रली शैतान, पाणी पाया उत्ते तत्तया। गुरमति होई जगत निधान, कलिजुग लथ्थी अन्तिम पत्तया। गुर पूरा होए जिस मेहरवान, धीरज देवे साची सत्तया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, चरन बंधाए साचा नत्तया। चरन धूढ़ कराए इक्क इशनान, नाम रंगण साची रत्तया। किसे हथ्थ ना आए वेद पुराण, रसना कहि कहि आपे अक्कया। आपे करे पुण छाण, नाता तोड़े भाई भैण सक्कया। बैठ काया मन्दिर विच मकान, नौ दुआरे नज़र ना आए किसे तक्कया। जिस जन मिले शब्द निशान, पंजां चोरां लाहे विक्खया। मिले मेल शब्द गुर बलवान, पार लँघाए डूंघी गार वडी ढक्कया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, शब्द सरूपी देवे वर, आप वखाए एका काअबा एका हाज़ी एका साचा मक्कया। हरि संत सतिगुर रूप है, सतिगुर विच समाए। सतिगुर वडा शाहो भूप है, देवणहार सबाए। ना कोई रंग ना कोई रूप है, महिंमा अनूप गणी ना जाए। गुरसिख गुरमुख साचा सति सपूत है, पुरख अबिनाशी आपणी गोद उठाए। मनमुख भुल्ले जीव अवधूत है, विकार हँकार जगत तृष्ना तन वसाए। जिस जन बख्शे चरन भबूत है, मानस जन्म लेखे लाए। एका मेटा ताणा सूत है, लक्ख चुरासी बणत बणाए। पंजां चोरां कढ्ढे कुट्ट है, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाए। गुर संगत शब्द पंघूड़ा लैणा झूट है, प्रभ इक्क हुलार चढ़ाए। शब्द पावे तन साचा सूट है, उतर कदी ना जाए। अन्तिम छड्डणा तन कलबूत है, सुरत सवाणी शब्दी मेल मिलाए। जगत नाता झूठो झूठ है, भेख पखण्डा कोई रहण ना पाए। अन्तिम खाली दिसणा सभ नूं ठूठ है, नाम वस्त किसे हथ्थ ना आए। पुरख अबिनाशी जिस जन गया तुठ है, लुकया रहण ना देवे किसे गुट्ठ है, चारे कुन्टां वेख वखाए। शब्द पल्लू बन्ने करे एका मुट्ठ है, साचा राह वखाए। मनमुख जीवां अन्तिम टंगे कर कर पुट्ठ है, धर्म राए दए सजाए। हरि जन साचे दर घर साचे लाहा रहे लुट्ट है, अमृत आत्म जाम प्याए। शब्द निराला तीर रिहा छुट्ट है, लोआं पुरीआं रिहा हिलाए। शब्द भण्डारा सदा अतुट्ट है, देवणहार आप रघुराए। ना जाए मात निखुट्ट है, एका पड़दा मात पाए। जिस जन लग्गे साची चोट है, धुनी नाद वज्जे रैण सबाए। दुरमति मैल कढ्ढे खोट है, आप आपणी दया कमाए। जीव जन्त आलणिओ डिगे बोट है, कलिजुग माया

६०६
०५

अन्त उठाए। भरमे भुले कोटी कोट है, सतिगुर साचा विरला गुरमुख पाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साध संगत एका मंगे साची मंग, सच प्रीती भिच्छया पाए। मंगे मंग प्रीत, बण सवालीआ। प्रभ परखे साची नीत, जोत अकालीआ। अचरज कलिजुग चले रीत, मनमुखां कढ्ढे अन्त दवालीआ। वेख वखाए गुर दर दुआरा मन्दिर मसीत, किस घर जगे दीपक जोत दिवालीआ। गुरमुख साचा संत सुहेला इक्क इकेला प्रभ मिले साचा मीत, फ़ल लगे काया डाल्हीआ। सुणे सुणाए शब्द सुहागी गीत बणाए दो जहानी इक्क दलालीआ। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, लोकमात ना जाए डर, वेखे परखे घर घर नाम वस्त साचा धन वड माल मालीआ। नाम धन्न माल खजीना, हरि मंगे बण भिखारी। अट्ठे पहर होए अधीना, जोत सरूपी कर अकारी। दिवस रैण रहे भीन्ना, अमृत आत्म सीतल धारी। आप आपणा वक्खर कीना, वस्सया काया महल्ल अचल्ल उच्च अटारी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर संगत मंगे इक्क वर, करे कराए जगत भगत भगत जगत शब्द सच्ची वणजारी। शब्द वणजारा भगत है, आत्म धन पाए। मिले नाम सच्ची शक्त है, दिवस रैण इक्क जैकार कराए। लेखे लाए बूंद रक्त है, पुरख भतारा साचा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, सरन सरनाई जो जन दर घर साचे एका आए। हरि संत दुआरा धन है, सति पुरख मिलाए। जिस जन आत्म जाए मन्न है, भाण्डा भरम भउ भन्नाए। आपे राग सुणाए कन्न है, राग रागणी सार ना पाए। देवे सच्चा माल धन है, चोर यार लुट्ट कोए ना जाए। जिस मन चढ़या आत्म साचा चन्न है, अन्ध अन्धेर रहण ना पाए। सतिगुर पूरा बेड़ा रिहा बन्न है, बेड़ा बन्न्हणहार इक्क अखवाए। जो घड़या सो देवे भन्न है, रंग कोई रहण ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम देवे डन्न, मिले वर घर साचे करे सच नयाए। निमस्कार गुरदेव को, करन करावणहार। साचा सेवनहार सेव को, पारब्रह्म पुरख अपार। सुरत गाए जिह्वा जेहव को, गुणवन्ता भरे आत्म भण्डार। आपे जाणे भेव अभेद को, वेखे खेल शब्द सुन्यार। मात पित सभ देवी देव को, करोड़ तेतीसा सभ बणे चरन भिखार। नेतन नेती साचा नेव को, शिव शंकर बैठा करे पुकार। ब्रह्मा वेखे एका एक को, नेत्र अट्ठे रिहा उग्घाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, दूसर किसे ना दिसे दर, गुणवन्ता गुण रिहा विचार। निमस्कार गुर चरन दर, एका रंग रंगाए। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, हँस काग बणाए। कलिजुग जीवां दर चुक्के डर, एका पल्ला नाम फड़ाए। साची तरनी गुरमुख विरला लोकमात कलि जाए तर, बंस सरबंस एका पार कराए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दर दरवेश नर नरेश, ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, गुरमुख साचे विच समाए। साचे मन्दिर आप

६०७
०५

समाया। आप आपणी कल धारी, तन मन वज्जा जन्दर आप दिस ना आया। प्रभ चरनां थल्ले रिहा लिताड़ी, शब्द सिँघासण इक्क विछाया। नाम आधार प्रभ आप अख्वाया। धरत धवल आकाश प्रकाश नूरो नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेखे घर, आवण जावण खेल रचाया। आवे जावे लोकमात, खेले खेल चुरासीआ। भगतां देवे शब्द दात, गल्ल टुट्टे जम की फाँसीआ। चरन प्रीती बन्ने साचा नात, जो जन तजाए मदिरा मासीआ। लेखे लाए पवण स्वास, आदि पुरख सदा अबिनासीआ। गुरमुख साचे बलि बलि जास, प्रभ होए दासन दास्सया। चरन कँवल कँवल चरन दए निवास, लेखे लाए काया रास्सया। आपे वसे आस पास, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल जगत मेल भगत सुहेल रंग नवेल इक्क वखास्सया। सीस झुकाए भगत जन, गुर पूरा लेखे लाए। पंच पंचायणी ना देवे डन्न, भाण्डा भरम भन्नाए। जोत आकारा करे साचे तन, पिण्ड देस तज जाए। ब्रह्मण्ड खण्ड चढ़े साचा चन्न, जेरज अंड रहण ना पाए। रसना जिह्वा ना कोई दिसे गाए धन्न धन्न, शब्दी शब्द जणाए। एका साचा घर वखाए। ना कोई छपरी ना कोई छन्न, पुरख अबिनाशी डेरा लाए। गुरसिख गुरसिख हरिजन जन भगत आत्म आत्म आत्म जाए मन्न, सुणे सुणाए राग कन्न, जोती जोत अन्त मिल जाए। मिले जोत पुरख अबिनाशा, साचा धाम सुहांयदा। आप आपणे घर रक्खे वासा, आपे प्रगट हो हो आंयदा। आपे वरते हो हो दासा, दासी दास आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे मात तमाशा, काला सूसा दर दरवेशा आप रखांयदा। कवण दुआरे नाम रती तोला मासा, दस्म दुआरी कवण खुल्हांयदा। कवण उडे मात पाताल आकासा, पुरीआं लोआं पार करांयदा। कवण दुआरे नौ दर करे हासा, मनमती मात चलांयदा। कलिजुग अन्तिम उलटे पासा, सतिजुग साची बाज़ी लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी रासा, आदि अन्त जुगा जुगन्त बणत बणांयदा। आपे आए आपे जाए, बणत बणाए अवल्ली। जोत सरूपी जामा पाए, शब्द डंक इक्क वजाए, राउ रंक रिहा उठाए, होका देवे गली गली। गुरमुखां जोती तनक लगाए, आत्म सहिँसा शंक मिटाए, शब्द सरूपी हरि वड शाहो भूपी दरस वार अनक दिखाए, जोत जगाए अन्ध कूपी। मनूआं मन मनक भवाए, मिले वड्याई जिउँ राजे जनक ज्ञान ज्ञान ज्ञान ध्यान छिन्न भंगर आप दवाए, दरस दिखाए सति सरूपी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, ना कोई रंग ना कोई रूपी।

★ १० चेत २०१३ बिक्रमी संत हरनाम सिँघ नाम धारीए दे पास जा के शब्द उचारया परन्तू उह अन्दरों कुण्डा मार के बहि गया पिण्ड नुशहरा मजा सिँघ ★

हरि संत पुरख अगम्म है, सतिगुर उपाए। देवे शब्द सच्चा माल धन है, दिवस रैण होए सहाए। एका राग सुणाए आत्म अन्दर साचे कन्न है, ज्ञान बोध अगाध सुणाए। जीवां जन्तां बेड़ा रिहा बन्न है, साची वंडण मात वंडाए। भाण्डा भरम भउ देवे मात भन्न है, जो जन सरनाई आए। इक्क वखाए साचा घर ना कोई छप्परी ना छन्न है, जोत सरूपी डगमगाए। हरया करे काया माटी काला चम्म है, दीपक जोती इक्क जगाए। शब्द सहारा देवे नौ खण्ड पृथ्वी साचा थम्म्ह है, ना सके कोए हिलाए। सतिगुर पूरा कदे ना सोए दे कर कंड है, दर दुआरे मंगण मंग जन भिखारी आए। गुर गोबिन्दे वाली हिन्दे जिस हथ्थ फड़ी चण्ड प्रचण्ड है, लोआं पुरीआं एका राह वखाए। संत सुहेला सदा सुहागी नार ना होए रंड है, कन्त सुहागी आत्म सेजा इक्क हंढाए। खोज खुजाए विच ब्रह्मण्ड है, जेरज अंड उत्भज सेत्ज भेव अभेदा आप अख्वाए। नाम खज़ाना धुर दरगाही गंढु है, निखुट्ट कदे ना जाए। साचे संतां गऊ गरीबां सिर उठाई वडी पंड है, अन्तिम बेड़ा बन्न्हे लाए। मेट मिटाए संत सुहेले जगत झूठ पखण्ड है, एका एक अकाल दयाल प्रितपाल साचा मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, साचे संतां धुर दरगाही इक्क दिसाए आत्म घर, दूसर दर कोए दिस ना आए। संत सुहेला सति है, पुरख अबिनाशी पाया। एका दे समझाए मति है, साचा राग कन्त सुहाग जगत वैराग झोली पाया। जगत बुझाए तृष्ना आग है, हँसा हँस बणाया। फड़ फड़ काग दुरमति मैल धोया दाग है, दीपक जोती इक्क चिराग जगाया। आप आपणे हथ्थ रखे वाग, है, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, संत सुहेले वसे दर, माया डस्से ना डस्सणी नाग है, एका ब्रह्म ज्ञान जणाया। ब्रह्म ज्ञान जणाई, धुन आत्म अन्तर साचे घर वज्जी वधाई। पंजां चोरां बुझी बसंतर, गुर पूरे करी शब्द कुड़माई। लेखे लाया अन्तिम अन्तर एका रंग महल्ल अटल शब्द सिँघासण सेज विछाई। आपणी हथ्थीं आपे डाहया, गुरमुख साचे ल्या बिठाई। फूलन बरखा एका लाई, जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच घर, संत सुहेला इक्क इकेला चौथे पद घर साचे सद नाम वजाए साचा नद, नाद अनादी शब्द ब्रह्मादी बोध अगाधी आदि जुगादी जुगा जुगन्त साचे कन्त ना मात विछोड़ा होई। संतन मेला धुर दरगाह, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शब्द विचोला जगत मलाह, एका राह वखाईआ। नौ दुआरे जीव जन्त गोला, गुरमुख साचा सुणे साचा ढोला, पुरख अबिनाशी रिहा सुणाईआ। भाग लग्गे किसे काया चोला, गुर शब्द काया जिस में मवला, उलटी होए नाभ कँवला, अमृत झिरना रिहा झिराईआ। मिले

मेल हरि साँवल सँवला, जगत वड्याई उप्पर धवला, कमला रमला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सच वस्सया आत्म घर, जगत भुलेखा मुक्कया डर, एका रंगण रंग रंगाईआ। संतां रंगी काया चोली, चोजी कर्म कमाया। जगत व्याही झूठी बोली, आत्म खोजी खोज खुजाया। पूरा तोल मात रहे तोली, जीवां जन्तां बोझ उठाया। साचे संत हउँ घोल घोली, आत्म गूझ जिस भेव खुल्हाया। पुरख अबिनाशी आपे बैठा बण कहारा साची डोली, दर घर साचे जीउ पिण्ड काचे जिस साचा नेंह लगाया। एका पुरख अगम्म अगम्मा जोत सरूपी साचो साचे हरि दर वाचे, डूंघी कन्दर काया मन्दिर लाया जिंदा आप आपणा भेव छुपाया। धन्न नगर धन्न ग्राम धन्न खेड़ा, घर वज्जी वधाया। पंजां चुक्के जगत झेड़ा, खुल्हा वेहड़ा इक्क वखाया। माया ममता मिटे गेड़ा, गुर पूरा करे अन्त निबेड़ा, बेड़ा आपणा रिहा बन्हाया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां आत्म वस्सया घर, दर दरवाज़ा गरीब निवाजा, रखे लाजा देस माझा संवारे काजा, शब्द निर्मल इक्क आवाज़ रिहा लगाया। शब्द अवाज़ भगतन घनघोर, साचा काज साजन साज। नाम पाए साची डोर, संत सुहेला रक्खे लाज। दरस दिखाए उठ उठ आज। भरम चुकाए मोर तोर, गुर संगत चाढ़े नाम रंगत, दर दुआरे आई मंगत, मानस जन्म ना होए भंगत, जूठा झूठा उतरे पाज। जोती जोत सरूप हरि, संतन हिरदे वस्सया साचे घर, गरीब निमाणया जगत निताणया सदा सद रक्खे लाज। हरि भिखारी विच भेख है, भेख अवल्ला धार। शब्द खुमारी साचा लेख है, लेखा लिखे लिखणहार। ना कोई जाणे औलीआ पीर मुसायक शेख़ है, कलिजुग अन्तिम वहिंदी धार। प्रगट होए गुर दस्मेश है, कल्गी तोड़ा नाम जोड़ा सीस अपार। शब्द घोड़ा रक्खे हेठ है, लोआं पुरीआं रिहा दौड़ा, वेख वखाणे ब्रह्मण गौड़ा, लक्ख चुरासी मिठ्ठा कौड़ा शब्द खण्डा दो धार। वेखे खेल विच ब्रह्मण्डां, मनमुख जीवां वढ्ढे, कंडां कोई ना बचया रहे जेरज अंडां, गुरमुख साचे संत जनां आपणी गोद लए उठाल। जोती जोत सरूप हरि, संतन वस्सया साचे घर, दिवस रैण नेत्र लोचन वेखे सदा हमेश है।

★ १० चेत २०१३ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर ★

हरि पखण्डी धारे भेख, आपणा वेस वटाईआ। नौ खण्डी वेखे नाम रेख, किस मस्तक लेख लिखाईआ हरि चण्डी वेखे शब्द बिबेक, कवण हथ्थीं रिहा उठाईआ। ब्रह्मण्डी वेखे एका एक, सच महल्ला कवण वसाईआ। जेरज अंडी वेखे माया सेक, काया माटी रही जलाईआ। लोइण नेत्र लोचन आपे रिहा वेख, कवण बैठा मात खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरां सद बिक्रमी बीस, करे खेल आप रघुराईआ। करे खेल अपार, खेलन हारया। जोती

नूर कर अकार, वेख वखाए दस्म दुआरया। साधां संतां पावे सार, कवण खोल्हे बन्द कवाड़या। कवण सुत्ता पैर पसार, नौ द्वार पंचम लग्गी झूठी धाड़या। शब्द फड़ तेज कटार, साचे घोड़े चढ़या साचा लाड़या। नारी वेखे कवण मुटयांर, सुरत सवाणी संत जरवानी कवण दुआरे बहि बहि पालया। नाम पाए साचा हवन, ना कोई जाणे अवण गवण, राग रागनी गाए पवन, साचा राग इक्क सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा गढ़ हँकारा चढ़ निरँकारा आपे आप वेख वखा रिहा। शब्द खण्डा हरि जी फड़या। चिट्टे अस्व हरि अस्वारा, आपे वेखे कलिजुग तेरा घाड़न घड़या। जीव जन्त ना पायण सारा, वेद पुराणां अंजील कुरानां खाणी बाणी जो जन पढ़या। पंजां तत्तां नाल लड़या। शब्द सुहागी एका फड़या। कवण दुआरे घाड़न घड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेले घर घर, काया माटी बहत्तर नड़या। शब्द घोड़े हरि अस्वारा, पहला पौड़ उठाईआ। राज राजानां करे ख़बरदारा, साधां संतां सुरत भुवाईआ। अगम्म अगम्मा इक्क रखाए हड्ड मास नाड़ी ना कोई दिसे चम्मा, आपणी बणत आपे आप बणाईआ। जोती नार शब्द सपूत एका जम्मा, साची गोदी आप उठाईआ। जुगा जुगन्त आप संवारे आपणा कम्मा, लक्ख चुरासी लहिण देण चुकाईआ। मात पताल अकाश बिन रखाए थम्म्हां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे सर्ब लोकाईआ। शब्द घोड़े तंग कसाया। पाया नाम पलाणा, सोलां कलीआं लड़ गुंदाया। पकड़ उठाए राजा राणा, साधां संतां मुख भुवाया। मारे शब्द तीर निशाना, बत्ती दन्दी आत्म गन्दी दिवस रैण लगाया। नार दुहागण मन्द मन्दभागण माया राणी आत्म होई अन्धी, रसन विवाद जगत वधाया। अन्तिम कलिजुग पुरख अबिनाशी फड़ फड़ ढाहे दूई द्वैती कंधी, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। जन भगतां तोड़े आत्म जंदी, इक्क सुणाए सुहागी छन्दी, लक्ख चुरासी तोड़े फंदी, जगत जंजाल दए कटाया। कलिजुग धार एका वहिंदी, साध संत ना पायण सार। जगत गद्दी माया वध्धी इक्क दूजे नाल खहिंदी, बीतदी जाए बीसवीं सदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक्क वहाए डूंघी घर विच संसार। जूठी झूठी कलिजुग तेरी नदी, कलिजुग वहिण आप वहाए। माया राणी झूठी डैण, जीव जन्त साध संत अन्त खाए। नाता तुटे भाई भैण, साक सज्जण ना कोई चुकाए लहिण देण, वेले अन्तिम ना होए सहाए। गुरमुख विरले प्रभ तन पहनाए शब्द गहिण, दरस दिखाए तीजे नैण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, एका रंगण रंग रंगाए। हरि सुणे अरदास, प्रभ ठाकर साचा मीता। दिवस रैण वसे पास, आपणा आप लगाया गुरमुख अन्दर चीता। साचे मण्डल काया पाए रास, आप कराए पतित पुनीता। लेखा चुक्के दस दस मास, अमृत आत्म जाम हरि जन साचे पीता। शब्द

उडाए बिबाण विच आकाश, दो जहानी परखणहारा नीता। लेखे लाए स्वास स्वास, रसना हरि हरि हरि गुण गाया, एका अक्खर माण दवाया अठारां ध्याए गीता, संत जनां हरि दासी दास, काया करे सीतल सीता। शब्द मेला शब्द गुर सर्ब गुणतास, कलिजुग अन्तिम अन्त अन्त मिलण दा वेला। लगे भाग विच प्रभास, निज घर आत्म वेखे वास, एका धाम सुहाए गुर गुर चेला। सतिगुर पूरे सद बलि बलि जास, दर घर साचे देवे इक्क निवास, धर्म राए दी कटे जेला। जुगा जुगन्तर संत भगवन्त ना होए उदास, मेल मिलाए प्रभ इक्क इकेला। सृष्ट सबाई जाए विनास, गुरमुख साचे संत मात प्रकाश, शब्द चढ़या साचा तेला। एका एक मिल्या पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो जन होए दासन दास। ठाकर हरि रत्नागरो, देवे नाम सुगंधी निर्मल कर्म करे उजागरो, कटे आत्म फंदी। वणज कराए शब्द सति सुदागरो, दूई द्वैती कढ्ढे वासना गन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, जो जन गाए हरि रसना बती दन्दी, बती दन्द गुण गाया गहर गम्भीर, गुरमुख मिली वड्याईआ। सांतक सांतक सांतक सति सरीर, अमृत आत्म मिले साचा सीर, आपणी हथ्थीं हरि समरथी मुख चुआईआ। ना कोई वेखे हस्त कीड़, जन भगतां बन्ने मात बीड़, पंच विकारां देवे पीड़, वेले अन्तिम कटे भीड़, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, आप आपणे रंग समाईआ। अंक समाया साध संग, संगी साथी। आप नाम चढ़ाया एका रंग, सृष्ट सबाई माई बाप। हरि जन मंगे साची मंग, मेट मिटाए कोटन कोट पाप संताप। अमृत आत्म नुहाए साचे गंग, इक्क जपाए अजपा जाप। दिवस रैण वजे मृदंग, नौ दुआरे वेखे लँघ, गुर पूरा आपे होए संग, आप वखाए आपणा वड प्रताप। चले चाल इक्क बेहंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। संत पुकार सुण दातार, लोकमात करे धाईआ। लोआं पुरीआं आए पार, नौ द्वार छड द्वार, हथ्थीं खोल्हे बन्द किवाड़, मेट मिटाए पंचम धाड़, साचे घोड़े चढ़ के लाड़, आत्म कुण्डा लाहीआ। इक्क वखाए शब्द अखाड़, बहत्तर नाड़ी वजे ताड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दसम दुआरा इक्क वखाईआ। सच द्वार खोल्हे ताकी, प्रभ साचा दया कमांयदा। सिंघ भगवान प्रभ लहिणा देणा देवे बाकी, पंच चोर ना रहण आकी, परमानंद इक्क वखांयदा। आपे बणे साचा साकी, शब्द जणाई भविख्त वाकी, अमृत आत्म जाम पिआंयदा। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, गुरमुख विरला चढ़े शब्द घोड़े साचे राकी, दो जहानां आप दुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म जोती शब्द देवे साचा वर, एका अक्खर जगत वक्खर, बजर कपाटी पाड़े पत्थर, अमृत

आत्म वरोले अत्थर पंच पंचायण लथ्थे सथ्थर, एका रंग प्रभ चरन टेक, कलिजुग माया ना लाए सेक, आप आपणी सरन रखांयदा। देवे सरन हरि सरनाईआ। खुल्है हरन फरन, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। मेल मिलावा प्रभ साचे तरनी तरन, पार किनारा इक्क वखाईआ। नौ अठारां पाणी भरन, गुरमुख नेड़ रहण ना पाईआ। मिले मेल अवरनी अवरन, सुरत शब्द रिहा जगाईआ। आपे जाणे करनी करन, किरना जोती इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, जगत डर रिहा चुकाईआ। ठाकर पाया पुरख अबिनाशी, मिटया भरम भुलेखा। हउमे चिन्ता रोग सोग जगत विनासी, लिख्या साचे लेखा। एका मण्डल वेखी साची रासी, साचे लोचन आपे पेखा। वेखे खेल हरिभगत मेल मात पाताल पृथ्वी आकासी, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, शब्द सुनेहड़ा मिले वर, गुरमुख साचे बलि बलि जासी। सति पुरख कलि साची रीत, आपणी आप चलांयदा। वेख वखाणे देहुरा मन्दिर गुरदुआरा मसीत, गीत सुहागी कवण सुणांयदा। कवण रक्खे प्रभ साचा चीत, चरन ध्यान प्रीत लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला आपणा आप वसांयदा। आप आपणा घर उपाया, करे खेल अपारी। उच्च अटला नाउँ रखाया, शब्द सरूपी चार दिवारी। पहरेदार कोई दिस ना आया, अट्ठे पहर ख़बरदारी। पवण झूला ना कोई झुलाया, आपे होए सीतल धारी। दीपक चिराग ना कोई जगाया, दिवस रैण होए उज्यारी। सति संतोखी यति रखाया, ना कोई उत्ते दिसे भारी। नाम दरवाजा सच्चा लाया। गरीब निवाजा कच्चा पक्का आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्दिर आप सुहाया। हरि मन्दिर हरि भगवान, बणत बणाईआ। जोती नूरो नूर नुरान, आपणा रंग वखाईआ। आपे होया बेपछाण, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे जाणी जाण, आपणे मन्दिर डेरा लाईआ। मन्दिर हरि अडोल, दिस किसे ना आया। आपे वसे इक्क इकल्ला, आपणा हिस्सा आप वंडाया। वेख वखाणे जल थला, पुरीआं लोआं विच समाया। शब्द सुनेहड़ा दर दवारयो एका घल्ला, दर दरवाज़ा बाहर कढाया। छेवां घर एका मल्ला, सच सपूते माण दुवाया। ना कोई दिसे उप्पर थला, एका एक वखाया। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, अलक्ख अभेव रेख भेव हरि आपणी आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, साचे शब्द देवे वर, आप आपणा हुक्म सुणाया। हरि साचे शब्द जणाईआ। लोकमात लए अवतारा, पंचां तत्तां विच समाईआ। करे खेल न्यारा, साचे तन वज्जे वधाईआ। इक्क सुहाए दर दुआरा, गुर पूरा सद अख्वाईआ। जिस मेला कन्त भतारा, साची वस्त हरि झोली पाईआ। भरया शब्द भण्डारा, देवणहार सभ सभ थाँईंआ। आदि पुरख अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, आपे वेखे अगम्म

अपारा। हरि शब्द बलवान, जगत उपाया। गुर पूरे देवे साचा दान, अन्दर मन्दिर दए टिकाया। गुर पूरा वेखे मार ध्यान, हरि साचा विच समाया। इक्क वखाए शब्द निशान, निशअक्खर वक्खर रिहा पढ़ाया। शब्द निराला मारे बाण, एका रंगण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर लेखा धुर धुर संजोग मिलाया। लिख्या धुर संजोग, शब्द गुर चेलया। रस काया कीता भोग, पंचां तत्तां मेल मेलया। दरस दिखाए सद अमोघ, घर रहे इक्क इकेलया। इक्क चुगाए साची चोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर पूरा देवे शब्द वर, आप सुणाए आपणा ढोल्लया। गुर साचा बलवान, प्रभ साचा दया कमाईआ। हरि देवे दाता दान, आत्म जोती इक्क भराईआ। चरन प्रीती सच ध्यान, अकाल पुरखा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर दोवें रिहा उपाईआ। सतिगुर पूरा जाणीए, सति पुरख मिलाए। एका देवे नाम निशानी ए, सहिंसा रोग चुकाए। एका अक्खर सुणाए धुर दरगाही साची बाणी ए। हउमे रोग मिटाए। अमृत आत्म जल प्याए ठण्ढा पाणी ए, साची चोग चुगाए। अन्त कटाए जम की काणी ए, दरस अमोघ दिखाए। दर घर साचा इक्क वखाणी ए। धुर संजोगी मेल मिलाए। दर दुआरा एका माणी ए, आत्म रस भोगी भोग कराए। लेखा तुट्टे जेरज खाणी ए, साची जोती आप समाए। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, सतिगुर सो मात पछाणीए। सतिगुर सुरत संभालदा, दिवस रैण कलि कारी। संत सुहले गुरमुख साचे आपे पालदा, शब्द जोधा बलकारी। दर दरवाज़ा इक्क वखालदा, नौ दुआरे खड़ा रहे बाहरी। डूंघी भवरे सुरत संभालदा, होवे अगे पिछे अगाड़ी। नाम कुठाली एका गालदा, जोती अग्नी लाए भारी। देवे खज़ाना नाम सच्चे धन्न माल दा। ना कोई लुट्टे चोर यारी। फ़ल खवाए आत्म परमात्म काया साचे डाल् दा, चढ़े सच खुमारी। नाता तोड़े जगत जंजाल दा, बख्शे चरन प्यारी। एका वस्त साचे यार दा, करे खेल न्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचे देवे वर, आपे वाली शाह कंगाल दा। शाह कंगाल दलाल हरि अख्वांयदा। सर्ब जीआं करे प्रितपाल, आपे रिहा सुरत संभाल, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख वखाए साचे लाल, शब्द पाए नाम दुशाल, आप आपणी गोद उठांयदा। लक्ख चुरासी खाए काल, गुरमुखां मेला दीन दयाल, जगत अवल्लड़ी चाल वखांयदा। काया सच सरोवर मारे इक्क उछाल, हरिजन साचे माणक मोती गुर पूरा लए भाल, इक्क जगाए साची जोती मस्तक दीपक साचे थाल, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, सम्मत तेरां नेरन नेरा प्रगट होए सिंघ शेर शेर दलेरा, पहली चेत वार थित्त थित्त वार वेख वखांयदा। पहली चेत चेतन्न होया, दो जहानां वाली। आपे नेत नेतन होया, दोवें

हथ्थां रक्खे खाली। आपे सृष्ट सबाई काया खेत जगत बीज बोया, सृष्ट सबाई आपे माली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे कुन्ट दहि दिशा वेखे घर कवण फ़ल लग्गा डाल्ही। पहली चेत प्रभ दया कमाई, शाह संगरूर जगाया। दर घर साचे वज्जे वधाई, संत मनी सिँघ लेख लिखाया। सम्मत सोलां होए कुड़माई, मस्तूआणा धाम सुहाया। काया माटी छड्डया चोला, पाया जन्म हरि अमोला, जोती जोत जगाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल घट घट थाँईं। दो चेत प्रभ लैणा विचार। पट पटियाला ख़बरदार। शब्द पैणी अन्तिम मार। प्रगट होए नैण मुँधार। भगत जनां दा सांझा यार। गऊ गरीब निमाणयां आपे बख्शे चरन प्यार। तख्तों लाहे राजे राणयां, करे मात ख्वार। जिस जन चलाए आपणे भाणया, इक्क वखाए बंक द्वार। किसे हथ्थ ना आए चतुर सुघड़ स्याणयां, मूर्ख मूढ़ मुग्ध गंवारां आपे लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, लोकमात रहणा ख़बरदार। सोए मात जगावण आया, लै के शब्द संदेसा। फड़ फड़ बाहों आप उठावण आया, पुरख अबिनाशी नर नरेशा। दे मति संत समझावण आया, वेख वखाए धारी केसा। आप आपणा रूप वटावण आया, नां रखाए गुर दस्मेशा। शब्द डंक वजावण आया, राउ रंक समझावण आया, किसे कोए ना चले पेशा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा वेसा। चेत तिन्न लोक तिन्न वधाई। करे खेल प्रभ भिन्न भिन्न, ब्रह्मा शिव इन्द रिहा जगाई। पुरीआं लोआं लए छिन लेख लिखाए गिण गिण, भुल्लया कोई रहे नाही। करे खेल दिहाड़े दिन, साध संत होए भूत प्रेत जिन्न, प्रभ अबिनाशी सार ना पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, साचे घर वज्जी वधाई। फरीदकोट प्रभ कढ्ढे खोट। शब्द सुनेहड़ा दर घर आए दूजी वारी लग्गे चोट। दर दरबान कोई रहण ना पाए, बाहों पकड़ ना कोई उठाए आलण्ह्रिओ डिगे बोट। प्रभ अबिनाशी होए सहाए, अन्तिम चरनी लए लगाए, गऊ गरीब निमाणयां देवे शब्द गुण निधानया, काया कढ्ढे जूठे झूठे खोट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे घर, कवण रखाए प्रभ साचे तेरी एका ओट। नानकसर दर नानक आया। अचन अचानक खेल रचाया। भय भयानक होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भरमे भरम रिहा भुलाया। सिँघ ईश्र ना आई जाग। हँस बणया मात काग। दुरमति मैल माया लग्गी, सुरत दुहागण ना गई जाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख विरले आत्म तृष्ना बुझाए आग। पंज चेत प्रभ पंच विचारा। वेखे खेल दर दरबारे, पंच विकारा पंच हँकारा करन हाहाकारा। संत रणधीर की करे विचारा। शब्द डण्डा सीस भारा। ना कोई दिसे आर पार किनारा। नाता तुट्टा मीत मुरारा। हउमे फस्सया जीव गंवारा। साच राह किसे ना दस्सया, रैण अन्धेरी

६१५ ०५

घर साचे होई मस्सया, पुरख अबिनाशी घर ना वस्सया, लेखे लग्गा ना मात सीर बत्ती धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे गुर मन्दिर अन्दर गुरदुआरा। छे चेत प्रभ छत्र झुलाई। आपे वेखे काया खेत, सत्तर बहत्तर बहत्तर सत्तर कोई दिस ना आई। सिँघ बग्गे ना तन बद्धे तग्गे, जिन भूत प्रेत मिली वड्याई। दो जहानी फिरन नंगे, नाम भिच्छया कितों ना मिले मंगे, गुर पूरा ना संग अंगे, रहे सदा जुदाई। पुस्तक ग्रन्थ संख संख्या बस्ते रहण बद्धे, अमृत आत्म मिले ना मध मधे, रसन फिरे हलकाई। भाग ना लाया आपणी यदे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द दुआरा जिस देवे कर, ना सके कोए खुल्हाई। चेत सत्त प्रभ पाई मति, आप जणाई आपणी मित गति, साचा राह विखाया। चरन दुआरा जोत निरँकारा शब्द भण्डारा, ना कोई दिसे तीर्थ अट्ठ सट्ठ एका राह दिसाया। थल कपूर प्रभ हाज़र हज़ूर, पार ब्यासों करे इक्ठ। गुर संगत दर आए नट्ठ, कलिजुग अग्नी लग्गे मट्ठ, कलिजुग लट्ठ रिहा आप गिढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए सर्बकला समरथ, सृष्ट सबाई एका पाए नत्थ ना सके कोए छुडाया। चेत अट्ठ अट्ठ तत्त विचार। अप तेज वाए पृथ्वी आकाश बन्न्हे धार। मन मति बुध करे ख़बरदार। शब्द करना साचा युद्ध, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। चिट्टे अस्व बहे कुद्द, शाह शहाना हरि मेहरवाना सर्ब जीआं सरकार। लक्ख चुरासी फड़ फड़ कुट्टे, आपे बन्न्हे एका मुट्ठे, हिरदे करे सुध्ध, बन्न बंनाए साची धार। संत द्वार सतिगुर साचा तुट्ठे, लुकया रहण ना देवे कोई गुट्ठे, आप मिलाए जुगां जुगां दे विछड़े रुट्ठे, एका बख्शे चरन प्यार। मनमुख जीवां टंगे पुट्ठे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए दर दुआरा सच दरबार। नौ चेत प्रभ रिहा भौं। दिवस रैण रैण दिवस सद जागे ना रहे सौं। वेखे हँस हँस सरबंस कागे, नगर खेड़ा सच गिरांओ। जो जन सरनाई साची लागे, पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहों। साचा मजन चरन धूढ़ कराए माघे, हँस बणाए काउँ। दुरमति मैल धोवे दागे, इक्क उपजाए शब्द रागे, सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाउँ। आप आपणे हथ्थ रक्खे वागे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पिता आपे माउँ। सिँघ तेज बल बुध धार। शब्द सुनेहड़ा नौ दर वेखे नौ नौं नेज, लेहज फेहज कर विचार। नाम फूलन आत्म बस्ती विछी साची सेज, काया गुफा डूंघी कुन्दर साचे मन्दिर सद न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, करे कराए जगत प्यार। सिँघ लाभ प्रभ लैणा लभ्भ। आप उलटाउँणी आपणी कँवल नभ। गुर मूर्त साची सूरत नूरो नूरत इक्क ध्यान रखाउँणी, हउमे हँगता दूर कराउँणी, वेख वखाणे हरि हरि सभ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, वेख वखाए सच घर, जिस जन मिल्या नाम वर,

६१६ ०५

दर दरवारे रिहा फब। सिँघ हरनाम हरी ना पाया। पल्ले दिसे ना कोई दाम, काया चाम रस फीका खाया। जूठ झूठ पिया जाम, आत्म रस नीकन नीका दिस ना आया। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम, पुरख अबिनाशी जाणे भेव, जीव जीव का अन्दर वड़ क्या कोई सके छुपाया। अन्तिम लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीं का, महल्ल अटल अचल कोई रहण ना पाया। वेखे खेल बीस बीस का, ना कोई गाए राग छतीस का, दस दस्मेशा ना कोई गाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा दर दरवेशा धारे भेखा दर दरवेश कहाया। जोती जोत सरूप हरि, चेत दस किसे ना आया वस, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा नस्स, आप आपणे रंग वखाया। दस चेत्र चतुर सुजान। आपे आप गुण निधान। करे कराए पुण छाण, शब्द मधाणा हरि भगवाना इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दहि दिशा वंड रिहा वंडाया। हरिसंगत हरि रंग हरि दर माणया। चढ़े एका साची रंगत, दर दुआरे साची मंगत, मिले मेल पुरख सुजानया। जगत तृष्ना कटे भुक्ख नंगत, दाता दानी देवे दान नाम गुण निधानया। सतिगुर पूरा सदा सहाई जिउँ नानक अंगद, दर द्वार घर सच करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साची दात, एका शब्द धुर फ़रमाणया। कर्म ना जाणे जीव जन्त, गुर पूरे जणाईआ। आप बणाए जिस बणत, आपणी दया कमाईआ। शब्द जिह्वा मणीआ देवे साचा मंत, ना दूसर कोए वखाईआ। मेल मिलाए आपणा आपे कन्त, ना छिला कोई कराईआ। चरन ध्यान गुण निधान पूरन भगवन्त, कर्मां रेख मिटाईआ। शिव शंकर अन्त होण भस्मंत, प्रभ साचा एक रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोग अग्गे धर, साचा राह वखाईआ। शिव शंकर जटा जूट धार। खड़े रहण प्रभ चरन द्वार। एका मंगण दरस अपार। शम्भू नाथ हरि रघुनाथ आप रखाए आपणा साथ, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा देवे कर, गुरमुख साचे उतरे पार। पैंहट हज़ार की बणत बणाई। बहत्तर नाड़ ना गणत गिणाई। जगत विकारा ना सके झाड़, गुर पूरे ना दित्ती साची मति मति सच्ची समझाई। दर घर साचे ना सक्कया वाड़, एका तत्त ना बूझ बुझाई। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आपे होए पिछे अगाड़, सर्ब मिटाए झूठी धाड़, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाई। इक्क लक्ख ना लेखा लिखाया। जोगी नाथां भेख वटाया। सगला साथा दिस ना आया। मस्तक माथा जोत लिलाटी तिलक गुर पूरे ना हथ्थीं लाया। लोकमात ना होया पूरा घाटा, साचा राह ना किसे वखाया। अमृत आत्म ना पिया बाटा, साचा वणजारा ना बणया ना बणाया साचा हाटा, जगत पसारे विच समाया। जीव जन्त खेल बाज़ीगर नाटा, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर,

आप आपणे रंग दए रंगाया। इक्क लक्ख रसना गाए। पुरख अबिनाशी सद्द वस्सया वक्ख, प्रतक्ख होए ना दरस दिखाए। गुरमुख पूरा एका ओट चरन गुर लए रक्ख, जन्म अधूरा मात ना जाए। आपे करे कक्खों लक्ख, लख लख ना जाप जपाए। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, जोत जगाए काया माटा, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताटा, आपणी दया आप कमाए। पिछला घाटा पूर कराए आए नेड़े वाटा, हाज़र हज़ूर दर्शन पाउँणा। आपे पाड़े बजर कपाटा, शब्द तूर नाद वजाउँणा। जोती जगे सच लिलाटा, नूरो नूर हरि भरपूर आपणा आप विखाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे किरपा कर, साचे राह आपे पाउँणा।

★ ११ चेत २०१३ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ★

शास्त्र वेद प्रभ जणाई। कुतब जीव जन रहे गाई। आत्म साची सेव गुरमुख विरले मात कमाई। फ़ल लग्गा साचा नाम मेव, काया पत्त डाल्ही प्रभ हरी कराई। दर घर पाया वड देवी देव, मिली सच सच्ची सरनाई। दाता भिखारी अलक्ख अभेद, इक्क वजाए दया कमाए, शब्द सच्ची वधाई। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ खण्ड पृथ्वी एका घर रिहा वखाई। पुराण ज्ञान प्रभ राह चलाया। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्यान, शब्द मलाह इक्क रखाया। आपे होए निगाहबान, जम का फाह रिहा कटाया। जगत कुकर्मी कर कुरबान, साचा धर्मी धर्म निशान, नाम झण्डा विच ब्रह्मण्डां एका हथ्थ फड़ाया। आत्म अन्तिम पीण खाण, सति सरोवर नहावण नुहाण, दुरमति मैल प्रभ रिहा धवाया। शब्द चढ़ाए सच बिबाण, धर्म राए दी चुक्के काण, शब्द राग तन वैरान, सुरत सोई गई जाग, घर साचे गाण एका रंग वखाईआ। जोधा सूरा हरि बलवान, खाणी बाणी कर पछाण, जीआं जन्तां देवे दान, जो जन रहे सरनाईआ। जागरत जगे भगवान, वरन गोत मिटे निशान, एका रंग चढ़ शब्द तरंग आपणा आप वखाईआ। चरन धूढ़ इक्क वखाए सच गंग, गऊ गरीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, अंग संग संग अंग आप समाईआ। नौ खण्ड नौ दुआरे लग्गा जंग, दसवें घर कोए ना जाए आत्म लँघ, शब्द रंगीले पलँघ हरि बैठा गुण निधानया। गुरमुख विरला सच दात नाम वस्त दर घर साचे लए मंग, अट्ठे पहर रहे प्रभात आत्म अन्तर वहे साची गंग, मिले मेल सूरे सरबंग, आवण जावण गेड़ चुकानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल विच ब्रह्मण्ड वरभण्ड चलाए आपणे भाणया। वरभण्ड चलाए आपणे भाणे, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द फड़े तीर कमाणे, रसना चिले आप चढ़ाईआ। पंच जगाए सुघड़ स्याणे, पंचां बस्त्र शस्त्र

नाम अस्त्र आप सुहाईआ। पंच सुणाए साचे गाणे, पंचम रागा आप अख्वाईआ। पंचम तणया जगत ताणे, पंचम फिरे मात हलकाईआ। पंच वखाया इक्क ज्ञाने, मिले मेल श्री भगवाने, तन बद्धे साचे नाम गाने, होए सच्ची कुड़माईआ। पंचम होए जगत वैराने, आपणा आप ना कोई पछाणे, आत्म भरया इक्क गुमाने, हँकार विकारा आत्म तृष्ना इक्क रखाईआ। गुरमुख साचा नौजवाने, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, नाम मृदंग रिहा वजाईआ। नाम मृदंग वज्जे तन अन्दरे, साची रचन रचाईआ। हरिजन वेखे जगत दुआरा अगे लँघे, प्रभ साची बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द घोड़े कस्सया तंगे, आपणी हथ्थीं वाग गुंदाईआ। गुरमुख साची मंग लैण मंगे, सोलां कलीआं तन श्रृंगार सदा रंग रलीआं पुरख भतार आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। जोत निरँजण कर प्यार, नेत्र अंजन कज्जल धार, सोहँ बस्त्र अपर अपार, चरन प्रीती साची नीती फूलन बरखा एका वार, रुत्त बसंती साचा कन्ती आपे आप सुहाईआ। दिवस रैण रहे मंगलाचार, सुणे सुणाए आप सुणनेहार, बैठा दसवें घर दर सच सच्चे दरबार। ना कोई जाणे जीव भाण्डा कच्च,
६१९ नौ दुआरे रहे नच्च, माया ममता रही मच, गुरमुख विरला उधरे पार। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, ६१९
०५ एका बख्शे धुर दरगाही चरन प्यार। चरन प्यार जिस जन पाया। शब्द घोड़े हो अस्वार, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहया। मिले मेल प्रभ मीत मुरार, उच्चा लम्मा कोई दिस ना आया। कन्त भतारी नर निरँकारी एका वेखे सांझा यार, सभ घट अन्दर आप समाया। सीतल ठांढा दर द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे जगत वर, ०५
आपणी गोद रिहा उठाया। आप आपणी गोद उठाए, गुर गोबिन्द गोपाला। हरिजन हिरदा सोध वखाए, देवे दात वड करामात कमलापात हरि शब्द कृपाला। अगाध बोध बोध अगाध जणाए, आत्मक धुन इक्क उपजाए, सुन्न मुन प्रभ दए तुड़ाए, दीपक जोत कर उजाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, सदा शाह ना होए कंगाला। जगत शाह कलि होए कंगाल। कोई ना मिले धुर दरगाह सच मलाह, चारों कुन्ट थक्के भाल। पंच विकारा फड़या राह, धर्म राए गल पाए फाह, कोए ना सके मात सुरत संभाल। लाड़ी मौत आपणा आपे लाए दाअ, घर घर उडे अन्तिम काँ, ना कोई पिता ना कोई माँ, ना होवे कोई सहाईआ। कोई ना देवे ठण्ढी छाँ, एका भुल्लया हरि हरि नाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, इक्क दुआरा बंक आपणा आप वखाईआ। बंक दुआरा छड्ड, जगत समाया। नर निरँकारा अन्दरों कढ्ढ, हँकार विकार भराया। वेले अन्तिम कवण लडाए लड, मोह प्यारा साचा सच ना किसे कमाया। अन्तिम साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण सभ देणे छड, धर्म राए डंक वजाया।

किसे कम्म ना आवे नाड़ी मास हड्ड, जूठा झूठा विकार वधाया। एका एक प्रभ चरन टेक, जगत माया ना लाए सेक, प्रभ नाम झण्डा गुरमुख साचे गड्ड, दो जहानी रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, भरम भुलेखा देवे कढ्ड, दूई द्वैती अन्दर वढ्ड, आप आपणे रंग रंगाया। रंगे रंग करतार, काया चोली रत्तया। जन भगतां करे प्यार, आपे दे समझावे मत्तया। कलिजुग अन्तिम होण ख्वार, एका वगे वा तत्तया। सत्तां दीपां कोए ना पावे सार, ना कोई दिसे नार सत्तया। भरे रहण खाली भण्डार, ना कोई सवाणी सिर उठाए भत्तया। नाता तुटे मीत मुरार, नारी खौत ना करे प्यार, ना कोई देवे धीरज जत्तया। चारों कुन्ट हाहाकार, शब्द मारे डाहढी मार, करे खेल प्रभ कमलापत्तया। जीव जन्त दूत दुष्ट नार विभचार, वेले अन्त ना कोई सहार, लथी पति उबली रत, ना मिल्या मेल पति पती पतवत्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, संत सुहेले लए उभार, देवे दर्शन अगम्म अपार, एका एक चरन कँवल कँवल चरन उप्पर धवल बणाए साचा नत्तया। चरन नाता जोड़, गुरमुख तराईआ। धुर दरगाही आया दौड़, मात कुक्ख ना कोई उठाईआ। आपे आप ब्रह्मण गौड़, शब्द जोत सपूता आप उपजाईआ। सम्बल नगर वेखे लम्भा चौड़, साढे तिन्न हथ्थ आप बणाईआ। जोत निरँजण साचा शब्द लाए पौड़, आपे चढ़ चढ़ वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, भन्ने भन्नणहार रघुराईआ। दो जहानी रिहा दौड़, बेड़ा बन्नॄणहार दातार कलिजुग बेड़ा बन्नॆ लाईआ। गुरमुखां आत्म लग्गी एका औड़, प्रभ अमृत आत्म मुख बरस आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, एका देवे शब्द वर, जगत भण्डारा देवे भर, आप आपणा जिहा कर, आपणी गोद आप उठाईआ। आप आपणी गोद उठाए गुरमुख साचे लाल। पुरख अबिनाशी दया कमाए, दीनां बंधू दीन दयाल। साची नईआ नाम चलाए पकड़ बिठाए, ना कोई जणाए शाह कंगाल। साचा सईआ आप अखवाए, भैणा भईआ जगत हो जाए, जगत अवल्लड़ी चले चाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे चरन प्यार, फ़ल लगाए काया डालॄ। काया डाल लगा फ़ल, प्रभ साचे मात लगाया। अमृत आत्म सुहाया ताल, गुरमुख साचा नुहावण आया। मिली वस्त नाम धन सच्चा माल, जगत जंज़ाला मोह चुकाया। धुर दरगाही आप दलाल, कलिजुग अन्त करे प्रितपाल, जिस जन पल्ला आप फड़ाया। शब्द सरूपी मार उछाल, हरिजन संत सुहेले आप आपणे लए भाल, अन्दरे अन्दर साचे मन्दिर शब्द डोरी तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे चरन प्यार, बती दन्द हरि बख्शिंद, मात सीर अमृत नीर कटे हउमे पीड़, सुख सांतक सहिज सहिज समाया। जोत अकालण मंगती, गुरसिख तेरे प्यार दी। मात रखाए

साची संगती, सिक्क तेरे दीदार दी। अट्ठे पहर भुक्ख नंगती, करे वेस शब्द श्रृंगारदी। आपे होए अंग संग संगती, बजर कपाटी देवे पाड़। रूह निमाणी विरली आए दर मंगती, मिलाए मेल प्रभ साचे लाड़। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, दरस दिखाए दया कमाए, नेड़ ना आए पंचम धाड़।

★ ११ चेत २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार विच टूर तों वापिस आ के पंज रती केसर, दस रती काका जगदीस सिँघ दी ख़ाक, ग्यारां मिसरी कूजे अते इक्क नरेल संगत नूं भेंट कीता, किसे संत महात्मा आदि नूं नहीं दित्ता हरिसंगत नूं वधाई होवे ★

जुगो जुग प्रभ यात्रा, करे कराए आप। तन पहने शब्द गात्रा, वेखे वड प्रताप। किसे हथ्थ ना आए वेद शास्त्रा, कर कर थक्के जीव जाप। हरि जोत ना कोई लग्ग ना कोई मात्रा, ना कोई पिता ना कोई बाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा आप। आप आपणा आपे जाणे, आप आपणी बणत बणाईआ। वार थित्त आप आपणी वेख वखाणे, सम्मत सम्मती थित्त सुहाईआ। नित नवित्त खेल जहाने, अगम्म अगम्मी कार कमाईआ। जगत जगाए राजे राणे, सीसे दस्तार बन्न्हाईआ। आप कराए चरन ध्याने, जग जगदीसा दया कमाईआ। तुटे मात जगत अभिमाने, अन्त निमाणे लए बचाईआ। करे खेल वाली दो जहाने, चरन कँवल बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। सच दस्तार प्रभ सीस टिकाए। जगत विहार आपणे हथ्थ रखाए। करे कराए अवल्लड़ी चाल, छत्र ताज किसे रहण ना पाए। शब्द खण्डा फड़ दो धार, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, राज राजान शाह सुल्तान मिटाए। पंचम रती पंचम केसर, करे खेल प्रभ विच थनेसर, मस्तक टिक्का तिलक लगाए। जोती जोत सरूप हरि, भेद अभेदा अछल अछेदा वल छल धारी जोत निरँकारी, सृष्ट सबाई पसर पसारी, दिस किसे ना आए। रती दस प्रभ रक्खी ख़ाक, गुरमुख साचे हथ्थ फड़ाईआ। लेखा लिखे इक्क इक्क टांक, लिखणहार आप अख्वाईआ। अन्त कन्त सिर पाए ख़ाक, बंक द्वार ना कोई सुहाईआ। कोई ना दिसे आकी आक, पाकी पाक सर्ब खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट घट अन्दर मारे झात, वेखणहार दिस ना आईआ। इक्क नरेल हथ्थ सिँघ शेर दलेर, आपे आप उठाईआ। साधां संतां रिहा घेर, कलि समरथ बणत बणाईआ। कवण चुकाए मेर तेर, जीव जन्त होए सहाईआ। माया राणी घर घर दर दर लग्गे ढेर, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। करे खेल प्रभ पहली वेर, वेस अवेसा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस दस्मेसा बणत

बणाईआ। दिवस दस दस दस बीस, हस्स हस्स नस्स नस्स मात लँघाईआ। साध संत जूठे झूठे माया वहिण रहे फस, ना सके कोई छुडाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी एका एक राह साचा रिहा दस्स, सतिजुग मार्ग साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए अन्त प्रतक्ख, गुरमुख साचे लए रख, जूठ झूठ दए खपाईआ। दिवस दस कर विहारा। पहली चेत्र परउपकारा। दसवें चेत डंक नगारा। करे खेल पुरख एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धारा। मिश्री कालख मिठ्ठा रस, प्रभ साचे हथ्थ उठाया। संत सुहेले वेखे नस्स नस्स, साचा मीत कोई दिस ना आया। कलिजुग तेरी अन्तिम होई बस, झूठी रीत जगत चलाया। लक्ख चुरासी होई भस, आत्म रस सर्ब गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग समाया। दस इक्क ग्यारां, चेत्र चिन्त मिटाईआ। दर दुआरे शब्द बहारां, प्रभ साची बणत बणाईआ। करे कराए मात विहारा, साध संत ना कोए भेव जणाईआ। आप जाणे आपणी कारा, माया पाए बेअन्त एका एक विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, मिसरी कालब कूजा ग्यारां, अमृत करे साची धारा, मिठ्ठा सीर हरि गुणी गहीर साची वंडण वंड वंडाईआ। दस्म दुआरी दस घर, दिस कोई ना आया। नौ दुआरे वेख दर, माया पीसण पीस पिसाया। किस देवे प्रभ साचा वर, मुख सगन दए लगाया। चारो कुन्ट आवे डर, नाम नग्न जगत कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे शब्द वर, लोकमाती माण दवाया। गुर संगत प्रभ माण दवाए, साचा राग सुणाईआ। इक्क दस प्रभ बणत बणाए, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क ग्यारां दस इक्क इक्क दस करे सच्ची कुड़माईआ। गुर संगत करे मात सच्ची कुड़माई, साचा सगन मुख लगाया। सतिजुग तेरी साची वज्जी वधाई, गुर पीर साध संत कोई रहण ना पाया। एका एक निहकलंक सच्ची सरनाई, आत्म सीर अमृत नीर देवे मुख चुआया। चारों कुन्ट एका डंक वजाई, राउ रंक रिहा जगाई, शब्द धीर इक्क धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिसरी कूजा भउ चुकाए दूजा, रहण ना पाए कोई तीजा, चौथा घर एक दर मिले हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दए मुख चुआया। गुर संगत दए मुख लगाए, थित्त वार अपारी। अट्ठे पहर मग्न रखाए, देवे नाम खुमारी। जगत तृष्ना अग्न बुझाए, शब्द भरे भण्डारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, आपे बैठा इक्क इकल्ला, जोती नूर कर उज्यारी। गुर संगत कलि वंडी वंड, प्रभ साचा आप वंडांयदा। दिवस दस प्रभ पल्ले बन्न्ही गंढु, साध संत ना कोई खुल्हांयदा। गुरमुख साचे संत जनां दिवस ग्यारां जेरज अंड फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, जिस जन देवे शब्द वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची वस्त नाम दात आत्म झोली आपणी भिच्छया पांयदा।

★ १२ चेत २०१३ बिक्रमी संत हरभजन सिँघ दे गृह तोपखाना लाईन पटियाला ★

हरि पुरख अगम्म, अगम्म समाया। ना मरे ना पए जम्म, दिस किसे ना आया। ना रोवे छम्म छम्म, नेत्र नीर ना कोए वहाया। पवण स्वासी ना लए दम, आप आपणे रंग समाया। दिवस रैण रैण दिवस ना खाए कोई तम, आहार प्यार ना कोई वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच समाया। आप आपणे विच समाए। हरि पुरख अबिनाशी लक्ख चुरासी जगत उपाए। सर्ब घटां घट वासी, पारब्रह्म ब्रह्म आप बणाए। काया मण्डल साची रासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त वेखे खेल खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड आपणे संग समाया। गुर शब्द अमोल है, गुरमुख विरले पाया। रसना रहे बोल है, आत्म पड़दा खोल्ह ना दर्शन पाया। जगत मात तुल्या पूरे तोल है, अन्ध अन्धेर ना भरम मिटाया। हरि घट वासी वसे सदा कोल है, काया मन्दिर अन्धेरी कन्दर दिस किसे ना आया। गुर पूरा हाज़र हज़ूर है, आत्म पड़दे देवे खोल्ह है, शब्द हथौड़ा इक्क रखाया। देवे वस्त नाम अनमोल है, पंचम कूड़ो कूड़ दए मिटाया। शब्द चौंहअक्खर एका बोल है, पंचम मेला आप मिलाया। उपजे धुन अनाहद वज्जे साचा ढोल है, राग रागणी दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देवे शब्द जणाया। शब्द पाया घर आपणे, वज्जी नाम दर वधाई। जपया जाप जपत जप जपने, हउमे तृष्ना अग्न जलाई। माया ममता दिवस रैण तन तपने, सुरती सुरत ना शब्द भुवाई। गुर मूर्त आकाल दयाल, नेत्र नैण नूरत दिस ना आई। शब्द ना लाए सच उछाल, बन्द किवाड़ आप रखाई। फ़ल ना लग्गे काया डाल्ह, पंचम धाड़ा मगर लगाई। गुर पूरा होए आप रखवाल, बहत्तर नाड़ एका देवे जोत जगाई। आपे होए शाह कंगाल, पल्ले बन्न्हे सच्चा धन्न माल, गुर पूरे दया कमाई। अंमित आत्म वेखे भरया ताल, ताल सुहावा इक्क सुहाई। गुर पूरा चले नाल नाल, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर आपे खोजे खोज खुजाई। सुरत सवाणी होई बेहाल, शब्द वजाए साचा ताल, आपे लए सुरत संभाल, जिस जन साचे दया कमाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरे देवे शब्द जणाई। गुर पूरा शब्द आधार है, गुरमुख जगाए। गुरमुखां कर प्यार है, आत्म झोली लए भराए। आपे आप सच्चा सिक्दार है, दो जहानां होए सहाए। दिवस रैणा पहरेदार है, ईड़ा पिंगल रिहा जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप

६२३ ०५

कराए आपणे मेले, गुरमुख साचे संग मिलाए। ना कोई साजण ना कोई मीता। जिस जन मिल्या पुरख अबिनाशी घट घट वासी काया मन्दिर सच मसीता। एका शब्द राग सुणाए, भाण्डा भउ भरम भन्नाए, माण रखाए अठारां ध्याए गीता। फड़ फड़ बाहों पार कराए, मँझधार कोई रहण ना पाए, अमृत धारा मुख चुआए, कँवल नाभी आप उलटाए, आप कराए सांतक सीता। आत्म सेजा इक्क विछाए। शब्द सिँघासण डेरा लाए। जोत निरँजण मंगल गाए। सुरत सवाणी ख़ुशी मनाए। पुरख अबिनाशी दर घर साचा एका एक आत्म पाए। जीउँ पिण्ड जन भाण्डा काचा, पंच दुआरे रिहा नाचा, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना राए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, साचा पल्ला नाम फड़ाए। नाम पल्ला जिस जन फड़या। शब्द घोड़े मात चढ़या। गुर पूरा पड़दे दए कज्ज, आदि अन्त कदे ना डरया। इक्क कराए मक्का काअबा हज्ज, आप आपणे अग्गे खड़या। अमृत आत्म प्याए रज्ज, प्रेम प्याला एका भरया। शब्द ताल तन जाए वज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, ना कदे जम्मे ना कदे मरया। गुर पूरे ओट जिस जन रखाईआ। काया लग्गे शब्द चोट, आत्म घर वज्जे वधाईआ। हउमे कढ्ढे खोट, आपे जाणे जाण जणाईआ। जिस जन मिले नाम अतोट, अतुट भण्डार सदा रखाईआ। गुरमुख संत भगत भगवन्त विच्चों कोटी कोट, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। जीव जन्त आलणिॢओ डिगे बोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। नाम पाया पद निरबाणा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी दर दुआरे आपणे सद, नौ दुआरे ना लँघी हद, मिल्या मेल ना पुरख भगवाना। हरि रघुराई सार ना पाई जोत निरँकारी वेखे साची यद्द, देवे सच्चा शब्द निशाना। अमृत आत्म साचा जाम प्याए साची मध, एका राग सुणाए घर सच्चा तराना। नाम विहुणा बैठा विच अन्ध, पार किनार कवण वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेदा अछल अछेदा, वेख वखाणे चारे वेदा, खाणी बाणी अंजील कुरानी शाह सुल्तानी इक्क निशानी नाम रखाए। नाम ख़ज़ाना हरि प्रबीना, आपणे हथ्थ रखाया। आपे होए दाना बीना, वेखे खेल सर्ब घट राया। गुरमुखां करे काया ठण्ढा सीना, चरन कँवल कँवल चरन जिस जन ध्यान लगाया। पार कराए दुआरे तीना, चौथा घर राह वखाया। एका राग सुणाए भीन्ना, हँकारी बीना दए भंनाईआ। चरन धूढ़ी साचा अमृत जल गुरमुख नुहाए साचा मीना, साचा मजन इक्क कराया। ना कोई मज़्हब ना कोई दीना, अक्खर वक्खर एका कीना, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुआरा वेखे घर, कवण गुर मेल मिलाया। धुर उपजाए शब्द सुर, मूल मन्त्र तन बुझाए बसंतर, गगन मग्न लग्न सगन मुख लगाया। पंज तत्त पंच बणाया। पंचम मेल मिलाया। पंचम

रत विच समाया। पंचम मीत रखाया। पंचम मति दे समझाया। पंचम दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा नूर कर, नूरो नूर रिहा समाया। काया तन अपर अपार, साचा जोड़ जुड़ाया। मति मन बुध कर पसार, आपणा भेव छुपाया। मन चंचलहार करे विहार, जगत विहारा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रखे छाया। मति बुध चतुर सवाणी, दिवस रैण करे चतराईआ। मिल्या मेल साचे हाणी, आपणे भाणे सद समाईआ। जगत माया तणया ताणी, चारे खाणी रिहा समाईआ। अन्दर बैठा जाण जाणी, भेद अभेदा मुख छुपाईआ। ना कोई जाणे जीव प्राणी, अछल अछेदा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि रघुराईआ। आप आपणा मुख छुपाया। काया मन्दिर सच दुआरे, हउमे तृष्ना जगत दुःख वधाया। पारब्रह्म आत्म पाए ना सारे, गुरमुख विरले उज्जल मुख कराया। जिस जन किरपा करे हरि हरि अगम्म अपारे, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां तिक्खी रक्खे दोवें धारे। शब्द खण्डा जगत बलवान, गुरमुख विरले हथ्थ उठाया। गुर पूरा देवे हो मेहरवान, धीरज यति आत्म हठ तिस रखाया। इक्क फड़ाए शब्द निशान धुर दरगाही आए नठ्ठ, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाया। पंचां गेड़े उलटी लठ, अग्नी जोती लाए मठ, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ दए वखाया। चरन दुआरे आए नठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, उलटी लठ्ठ दए गिढ़ाया। हथ्थ डण्डा जगत बलकारी। आप वखाए काया आत्म पार कन्ढा, ना कोई जाणे चार दिवारी। मनमुख जीव दुहाई रंडा, अठ्ठे पहर दिवस रैण रहे विभचारी। हरि जन साचा हथ्थ फड़े चण्ड प्रचण्डा, नौ दुआरे पाई जाए वंडा, मारी जाए वारो वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, मेल मिलाए दस्म दुआरी। दस्म दुआरी गुरमुख गुरसिख विरले पाया। प्रभ अबिनाशी इक्क इकल्ला, आत्म सेजा आसण लाया। आप वसाए सच महला, अमृत ताल इक्क सुहाया। ना कोई दिसे डूंघी डल्ला, अन्ध अन्धेर रहण ना पाया। ना कोई जाणे जला थला, घड़ी घड़ी पल पला जोती नूर रिहा उपाया। दूई द्वैती मेटे सला, शब्द कराए एका हल्ला, साचा भल्ला हथ्थ फड़ाया। सच दुआरा आपे मल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, गुरमुख सोए रिहा जगाया। गुरमुख सोया जाए जाग। जगत तृष्ना बुझे आग। दीपक जोती जगे चिराग। गुर पूरा दया कमाए, हँस बणाए काग। आप आपणे रंग रंगाए, शब्द घोड़े तंग कसाए, बाहों फड़ चढ़ाए आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग। दर घर साचे मेला मेल मिलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुरमति मैल धोवे दाग़। दुरमति मैल धोवे दाग़ तन, एका शब्द जणाईआ। शब्द डोरी पाए मन, दहि दिशा लए बंधाईआ।

एका राग सुणाए कन्न, आत्म तृष्ना हरस मिटाईआ। भाण्डा भरम प्रभ दए भन्न, पंच ना लायण डन्न, दूई द्वैती विसा पार कराईआ। दीपक जोती जगे चन्न, होए प्रकाश आत्म अन्नृ, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, इक्क वसाए साचा घर, साचे मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहीआ। मन्दिर अन्दर चार दिवारी दिस किसे ना आया। काया अन्धेरी डूंघी कन्दर, दिवस रैण अन्धेरा छाया। एका वज्जा हँकारी जन्दर, बिन गुर पूरे किसे ना लाहया। नौ दुआरे भौंदे बन्दर, गोरख मच्छन्दर उच्चे टिले डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे घर, दर दुआरा इक्क वखाया। दर दुआरा उच्च महल्ला, प्रभ साचे आप सुहाया ए। वसे एका धाम अटले, हथ्थ किसे ना आया ए। गुरमुख विरले घाल साची घाली, मिल्या नाम शब्द दलाली, साचा हिस्सा मात वंडाया ए। धुर दरगाही मिल्या माही, दिवस रैण करे रखवाली, दोवें हथ्थां रक्खे खाली, साचा डण्डा नाम फड़ाया ए। जगत अवल्लड़ी चली चाली, जगी जोत इक्क निराली, काया मन्दिर सच वखाए धर्मसाली, दीपक जोती इक्क जगाया ए। सुरत सवाणी हाल बेहाली, वेखे खेल मस्तक गगन साची थाली, नाम सुहागण जगत वैरागण वड वडभागण साचा सीस गुंदाया ए। दर घर साचा सुहाई, जपया प्रभ अबिनाशी रागन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द जोड़ा एका घर बहाया ए। सतिगुर दुआरा धन्न है, सति पुरख जणाई। जिस जन आत्म जाए मन्न है, होए शब्द सच्ची कुड़माई। दूई द्वैती लत्थे तन है, घर साचे वज्जे वधाई। एका राग सुणे सुणाए कन्न है, दिवस रैण रहे लिव लाई। जोत निरँजण चढ़ाए साचा चन्न है, अन्ध अन्धेर दए मिटाई। देवे सच्चा माल धन है, ना सके कोई चुराई। इक्क वसेरा साचे घर हरिजन कराए, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न है, साचा मेल हरि रघुराई। धर्म राए ना देवे डन्न है, चित्रगुप्त ना भेव खुल्हाई। संत दुआरा ना जानण जीव अन्नृ है, भरमे भुली सर्ब लोकाई। हरिभगत सदा सदा सद धन्न धन्न धन्न है, साध संगत जिस जन मन भाई। लक्ख चुरासी होवे खंन खंन है, अन्तिम जोती मेल मिलाई। आपे बेड़ा रिहा बन्न है, जिस जन तेरी बणत बणाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दो जहानां होए सहाई। आए दर द्वार, वक्त सुहाया। गुर पूरा करे विचार, राउ रंक ना कोई जणाया। शब्द घोड़े हो अस्वार, जन भगतां पहरेदार, दहि दिशा विच समाया। नौ दुआरे करे ख़बरदार, दसवें मेला मीत मुरार, सज्जण सुहेला आप अख्वाया। गुर चेला भरम निवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला सुहाए सच दर, सच सिँघासण डेरा लाया। आत्म घर शब्द सिँघासण प्रभ साची सेज विछाईआ। बैठा रहे पुरख अबिनाशण, दिवस रैण एका रंग लाईआ। गुरमुख विरला

जपे स्वास स्वासण, पृथ्वी आकाशन एका रंग वखाईआ। भगत जनां हरि दास दासन, दासी दास आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, काया मण्डल रास जिस रचाईआ। मंगी मंग अपार, चरन द्वारया। किरपा करे अपर अपार, देवे शब्द सच सहारया। फड़ फड़ बाहों करे पार, आप कराए पार किनारया। सोहँ शब्द सच्चा जैकार, जै जैकारा नौ द्वारया। आत्म तृष्ना दए निवार, हउमे सहिंसा करे ख्वार, मारे शब्द खण्डा दो धारया। मिले मेल मीत मुरार, हरिजन होए सहाई सुहागी नार, कन्त कन्तूहला इक्क मिला रिहा। देवे नाम वस्त शब्द आधार, दो जहानी करे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला विच बणा रिहा। शब्द विचोला जगत है, गुर पूरे दए मिलाए। गुरमुख साचा भगत है, हाज़र हज़ूरे दर्शन पाए। लेखे लाए बूंद रक्त है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। गुर मन्त्र आदि शक्त है, सच शक्ती दए मिलाए। कलिजुग वेला अन्तिम वक्त है, हरिजन सोए लए जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ देवे शब्द वर, बेड़ा कलिजुग पार कराए। सुरत सवाणी दए दुहाईआ। गुर मिले साचा हाणी, दिवस रैण रही राह तकाईआ। अमृत आत्म देवे ठंढ्ढा पाणी, तीजे नेत्र साचे नैण दरस दिखाईआ। आप चुकाए जम की कानी, पंचम बोले साची बाणी, सच सवाणी कन्न सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्त भविख्त इक्क लिखाई, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। साचा लेखा हरि लिखाए। भरम भुलेखा जन कढाए। मस्तक लिखे साची रेखा, नाम मेखा हथ्थीं लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, जगत मेला मेल मिलाए। अमृत मेघ बरसे सावण, सीतल ठण्ढी धारा। हरस मिटाए कामनी कामन, महीने रहे बाकी बारां। इक्क फड़ाए आपणा दामन, देवे दरस अगम्म अपारा। धुर दरगाही मिले साचा जामन, लोकमात होए छुटकारा। रैण मिटे अन्धेरी शामन, अज्ञान विनासे धुँदूकारा। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे शब्द वर, गुर पूरा किरपा देवे कर, गुरमुख ना होए मात ख्वारा। बणाए बणत जिस बणत बणाई। जीव जन्त जन जन जन रहे सदा सरनाई। आपे जाणे आदि अन्त, भरम भुलेखा रहे नाही। साची सरन साचे संत, जगत विछोड़ा होए नाही। रसना नाउँ मणीआ मंत, रंग बसंत तन चढ़ाई। जोती जोत सरूप हरि आपणी किरपा देवे कर, आत्म घर वज्जे वधाई। वज्जे वधाई नाद अनादा। मिले मेल साचे माही, पाए भेव ब्रह्म ब्रह्मादा। इक्क वखाए साचा थाँईं, धाम अगम्मा शब्द जणाई बोध अगाधा। आप संवारे आपणा कम्मा, मानस देही काया माटी झूठा चम्मा, दिवस रैण जिस जन रसन अराधा। अप तेज़ वाए पृथ्वी आकाश शब्द सरूपी देवे थम्मा, बहत्तर नाड़ी तन मन मन तन साचा बाधा। पुरख अगम्मड़ा अगम्म अगम्मा, जोती जोत सरूप हरि, मेल मिलाए माधव माधा।

नाम वर जो जन पाए। मदिरा मास रसन तजाए। स्वास स्वास हरि गुण गाए। आस पास प्रभ आप हो जाए। दिवस रैण ना होए उदास, चरन सरन सरन चरन जो जन सीस झुकाए। शब्द जणाए पृथ्वी आकाश, लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास, लिख्या लेख दस दस मास चुकाए। गुरमुख साचे सद बलि बलि जास, गुर मन्त्र जो तन टिकाए। गुर मन्त्र आत्म ब्रह्म ज्ञान है, देवे शब्द जणाई। जुगा जुगन्तर साची बाण है, जन भगतां मिले वड्याई। एका वणज सच्चा नाउँ काया झूठ मकान है, थिर रहणा मात नाही। साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण ना कोई पीण खाण है, वेले अन्त होए जुदाई। एका एक गुर शब्द सच्चा निशान है, साचे घर होए सहाई। गुरमुख विरले लोकमात मार झात दर दुआरे साचे माण है, लक्ख चुरासी फिरे हलकाई। जोत निरँजण नूर नुरिंतर कोटी कोट भान है। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, सोहँ साचा जगत भगत एका एक बिबाण है। सुरत शब्द प्रभ बन्ने डोर। वेख वखाणे अन्धेर घोर। नेड़ ना आयण पंजे चोर। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर। आप मिटाए मोर तोर। नाम वस्त सच पल्ले बन्ने, दिवस रैण जन खाए भोर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, बैठा हरि वेखे मिट्ठे कौड़। कौड़ा मिट्ठा काया रीठा। गुरमुख विरले गुर आपणा डीठा। साचा नाम पीसन पीसा। चिन्ता सहिंसा जगत रोग, आत्म तृष्ना हलकाईआ। गुर मन्त्र रहे सदा वियोग, रती जोती टिकण ना पाईआ। कवण मिलाए मेला करे धुर संजोग, किरती किरत रिहा कमाईआ। आत्म रस मिले साचा भोग, अमृत साचा सीर सीरनी रसना दए पिलाईआ। शब्द चुगाए साची चोग, नेड़े दूर दूर वाटी एका घर वखाईआ। एका मिले दरस अमेघ, काया कूड़ कूड़ती अन्त रहण ना पाईआ। जुगा जुगन्त ना होए विजोग, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ती, साची बख्शी आप आपणी सरनागती, लेखे लाए मूर्ख मुग्ध मूढ़ मूढ़ती, अचल सुरती सुरत सवाणी जिस जन भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे होवे खेवट खेट, काया खेड़ा मिटाए पंचां झेड़ा, इक्क वखाए खुल्ला वेहड़ा, बेड़ा आपे बन्ने लाईआ। बेड़ा बन्ने लाए पार। शब्द करे तन शृंगार। पूरन इच्छया पाए भिच्छया, होए रच्छया विच संसार। नेत्र लोचन नैण जिस जन दिस्सया, आत्म लाहे झूठी विस्सया, लेखा तुट्टे पंचम यार। जगत विकारा फड़ फड़ कुठया, तीर निराला एका छुट्टया, बजर कपाटी जाए पाड़। गुरमुख विरले लाहा दर घर साचे लुट्टया, अमृत आत्म पीता एका घुट्टया, दर्शन पाए नर निरँकार। आवण जावण मात छुटया, जिस जन किरपा कर, एका बख्शे चरन प्यार। आलस निन्दरा जगत विहार। गुर पूरा तोड़े जिस जन वज्जा जिन्दरा, अट्ठे पहर रहे उज्यार। काया वेखे बन बन बिन्दरा, गोपी काहन कृष्न मुरार। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, जगत तृष्ना देवे मार। आत्म

६२८
०५

बोले पर्दा खोल्ले, आत्म ब्रह्म जणाईआ। आत्म वसे सदा सद कोले, आत्म वसे काया चोले, भेव ना आया राईआ। आत्म पूरे तोल तोले, देवी देव आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आत्म ब्रह्म जणाईआ। सतिगुर साचा साख्यात, सगल समग्री साथ। गुरमुख साचा पारजात, कौस्तक मणीआ टिक्का माथ। देवे सच्चा नाम राथ। धुर दरगाही साची दात, मिले मेल हरि सज्जण सुहेल, भगत विचोला त्रैलोकी नाथ। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साजण मेल मिलाए, राजन राज हरि आप अख्वाए, साजन साज बणत बणाए, लेख चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ। सतिगुर पूरा पाया, घर साचे वजे वधाई। जोती नूरा जिस उपाया, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाई। नाद अनादी शब्द तूरा इक्क सुणाया, सञ्झ सवेरा इक्क कराई। ब्रह्म ब्रह्मादी विच समाया, पारब्रह्म भेव ना राई। आदि जुगादी इक्क अख्वाया, बोध अगाधी शब्द वड्याई। मोहण माधव माधी बण के आया, कलिजुग खेले खेल आप रघुराई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, मनमुख जीवां रहे जुदाई। निहकलंक कलि जोत जगाए, वेद व्यास लिखारी। साचा डंक शब्द वजाए, राउ रंक सुहाए बंक द्वारी। एका अंक आप हो जाए,
६२६ चार वरनां करे इक्क पसारी। साध संत जीव जन्त जग शंक मिटाए, दहि दिशा वेखे चार दिवारी। गुरमुख साचे भगत ६२६
०५ जगाए, जिउँ जनक अनक बलकारी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपारी। निहकलंक ०५
बली बलवाना। आप उठाए राउ रंक, वेखे खेल दो जहाना। नाम रखाए वासी पुरघनक, शब्द रखाए तीर कमाना। आपे होए संत कुमारा, अन्तिम खेले खेल महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी वंड वंडाना। नौ खण्ड प्रभ वंडे वंड, कलिजुग दए दुहाईआ। शब्द फड़े चण्ड प्रचण्ड, चारो कुन्ट दिसे रंड, जूठ झूठ भेख पखण्ड दए मिटाईआ। वेखे खेल सर्ब ब्रह्मण्ड, ब्रह्मा ब्रह्मलोक रिहा राह तकाईआ। आपे सुत्ता दे कर कंड, शिव शंकर अंकर कंकर बाशक तशका गल लटकाईआ। कलिजुग औध गई हंढ, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा, नेत्र वेखे हरि जगदीसा, करे खेल बीस इक्कीसा, लोकमात वज्जे वधाईआ। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, ना कोई दिसे मूसा ईसा, काला सूसा तन छुहाईआ। शाह सुल्तानां खाली खीसा, माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, नाम रती किसे हथ्थ ना आईआ। जोत सरूपी दर दर घर घर जाए दे समझावे मती, शब्द सुहागण नार वेखे अन्तिम होए सती, जोती लम्बू एका लाईआ। एका एक नर हरि साचा कमलापती, दीपक जोती देवे बत्ती, कलिजुग वा ना लगे तत्ती, आप आपणे अंक समाईआ। बंक दुआरा इक्क सुहाए आपे जाणे मित गती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक दुआरा देवे मात सुहाईआ।

६३० ६३०

०५ ०५

बंक दुआरा इक्क सुहाउँणा। जोत निरँकारा आकार कराउँणा। शब्द जैकारा एका ताड़ा सोहँ सो जोती धागे प्रभ आप परो, लोकमात मार झात पुरख बिधात गुरमुखां गल लटकाउँणा। लेखा चुक्के ज़ात पात राउ रंक रंक राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहाउँणा। वेखे खेल वाली दो जहान, नाम झुलाए शब्द निशान, सत्तां रंगां रंग रंगाउँणा। जमन किनारा खेल महान, आपे वेखे गोपी काहन, रमईआ रामा इक्क वजाए नाम दमामा, लक्ख चुरासी एका तामा, लाड़ी मौत ना कोई छड्डे नारी खौंत, साचा सगन मुख लगाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग लेखा अन्त मिटाउँणा। सुणे बेनन्ती दयाल कृपाल, दया निध दाता। गुरमुख साचे लाल पाल, आपे होए पिता माता। सत्त सरोवर मारे इक्क उछाल, चौदां हट्टां ब्रह्मा ज्ञाता। अमृत नुहाए आत्म साचे ताल, काल महांकाल आपणे हथ्थ रखाता। आपे चले आपणी चाल, जन भगतां रिहा सुरत संभाल, देवे शब्द सच्ची सुगाता। गगन वेखे साचा थाल, जोती जगे अनमुल्लड़े लाल, राग सुणाए साची गाथा। फ़ल लगाए काया डालृ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क चढ़ाए दया कमाए शब्द साचे राथा। शब्द रथ इक्क चढ़ाए, आपे होए निहकरमी। सगल वसूरे मथ वखाए, सति पुरख साचा धर्मी। लेखा साढे तिन्न हथ्थ चुकाए, गुरमुख आत्म मिले मेल परमात्म ना मरे ना कदे जरमी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर बैठा वड़, काया अन्धेरी डूंघी वरमी। देवे असीस हरि जगदीस, रसना मंगल गाया। लेखे लग्गे दन्द बतीस, पुरख अबिनाशी घट घट वासी हिरदे अन्दर रसना मंगल गाया। हरिजन ना कोई करे तेरी रीस, मनमुख जीवां माया भरम भुलाया। एका छत्र झुल्ले जन तेरे साचे सीस, गुर पूरे जिस सिर हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत आवण जावण पतित पावन दर दुआरे बंक, संत सुहेले साचे मन्दिर लेखे लाया। संत दुआरा इक्क है, एका हरि हरि नाउँ। गुरमुख उज्जल मुख है, मिले मेल अगम्म अथाहो। तीजे नेत्र लैणा वेख है, सद वसे जोती छाउँ। चौथे घर आप बिबेक है, करे सच न्याउँ। पंचम बैठा रिहा वेख है, ना कोई पिता ना कोई माउँ। छेवें लिखणहारा लेख है, पुरीआं लोआं घट घट वासी सभनी थाउँ। सत्तवें सति पुरख निरँजण दु:ख दर्द भय भंजन एका एक जन भगतां साची टेक है, अगम्म अगम्म अगम्म वसे अगम्म अथाहो।

★ १३ चेत २०१३ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ★

शब्द तोड़ा नाम कल्गी, प्रभ साचे आप सजाईआ। जोती शब्द जुड़या जोड़ा, अचरज बणत बणाईआ। सोहँ फड़या

साचा घोड़ा, आपणी हथ्थीं तंग कसाईआ। धुर दरगाही आया दौड़ा, लोकमात वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे इक्क दुआरा लम्मा चौड़ा, सत्तां दीपां राह तकाईआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव मिट्ठा कौड़ा, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आपणा आप उपाईआ। सम्बल नगरी आया दौड़ा, गोबिन्द धार वहाईआ। भगत जनां मन लग्गी औड़ा, अमृत आत्म रिहा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी फिरे दौड़ा, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। साचा नाम जगत जगदीस दस्तार, प्रभ आपणे सीस टिकाईआ। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड प्रभ करे विहार, राग छतीसा भेव ना राईआ। पुरीआं लोआं गगन पतालां करे ख़बरदार, बीस इक्कीसा दए दुहाईआ। ना कोई दीसे मुहम्मदी यार, ईसा मूसा काला सूसा तन छुहाईआ। वेद पुराणां आई हार, विच जहानां रहण ना पाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, शब्द दमामा इक्क वजाईआ। करे कराए आपणी कार, आपणे भाणे विच समाईआ। ना कोई जाणे जीव जन्त साध संत, भरमे भुल्ली लोकाईआ। प्रभ माया पाई बेअन्त, दीर्घ रोग वधाईआ। आपे बैठा रहे इकन्त, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म साची जोत जगाईआ। त्रैगुण माया करे भस्मंत, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा उपाईआ। आपे आप बणाए आपणी बणत, जुगा जुगन्तर खेल रचाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका शब्द डंक वजाईआ। शब्द डंक हरि अपार, प्रभ आपणा आप वजाया ए। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, वीह सौ तेरां बिक्रमी भेव खुल्लाया ए। भगत जनां हरि पहरेदार, चोबदारी सेव कमाया ए। शब्द फड़ खण्डा दो धार, मारी जाए वारो वार, दहि दिशा वेख वखाया ए। ना कोई दिसे जीव गंवार, माया राणी करे ख्वार, काल दयाल महांकाल प्रभ साचे भेव मिटाया ए। जन भगतां देवे शब्द दलाल, अट्ठे पहर करे रखवाल, साचा मार्ग रिहा वखाया ए। आपे शाह आपे कंगाल, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप उठाए आपणे लाल, साची गोद रिहा उठाल, फ़ल लगाए काया डाल, अमृत नुहाए साचे ताल, साचे तीर्थ इक्क इशनान कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा वाली हिन्दा हरि जगदीसा, छत्र झुलाए साचे सीसा, दूसर कोई रहण ना पाया ए। हरि जगदीसा हरि बनवारी, अलख निरँजण आया। करे खेल बीस इक्कीसा, गुरमुख साचे संत जनां चरन धूढ़ी साचा मजन एका एक रिहा कराया। कलिजुग मनमुख जीव भाण्डे काचे अन्तिम कलिजुग भज्जण, वेले अन्तिम कोई सार ना पाया। भगत जनां आत्म घर ताल साचे वज्जण, अनहद राग रिहा सुणाया। मदिरा मास जो जन तजण, मिले मेल प्रभ साचे सज्जण, काला कलि वेला अन्तिम आया। दर दुआरे बहि बहि सजण, अमृत आत्म पी पी रज्जण, पुरख

अबिनाशी पड़दे कज्जण, सभ दे उप्पर पड़दा पाया। आपे मक्का काअबा हाज़ी हजन, गुर दर द्वार मन्दिर मसीत नौ दुआरे परखे नीत दसवें घर आसण लाया। नेहकलक चलाई अचरज रीत, इक्क सुणाए सुहागी गीत, मंगलाचार कर प्यार साचे घर रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा तोड़ा नाम एका एक सीस रखाया। नाम तोड़ा अलख निरँजण अलख रिहा जगाईआ। अलख जगाए वक्ख कराए प्रतक्ख हो जाए, साक सज्जण सैण आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई कक्ख हो जाए, दर दुआरा सख हो जाए, अन्तिम अन्त कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम लोकमात जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। वरते कल कला कल धारी, भेव कोए ना राया। शब्द खण्डा फड़ दो धारी, सृष्ट सबाई दए दुहाईआ। ना कोई दिसे नर नारी, दहि दिशा हाहाकारी, धर्म राए एका कुण्डा दर दुआरे एका लाहया। जोती जोत सरूप हरि, लाड़ी मौत मात शिंगरी, लक्ख चुरासी देवे वर एका वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अगम्म अगम्म अपारी। बीस सद तेरां तेरी धार, प्रभ बन्ने विच संसारा। धुर दरगाही साची कार, करे कराए मात विहारा। वेख वखाणे संत सुहेले मीत मुरार, जाए दर दुआरा। नौ द्वार कवण भिखार, दसवें वेखे रंग अपारा। पंच पंचायणी मारे मार, पंचां कवण करे प्यारा। नाम रसायणी गुर शब्द सुन्यार, आपे परखे परखणहारा। अमृत आत्म वेखे धार, कवण दुआरे वहे अपारा। किस जन मेला नर निरँकार, काया खोले बन्द किवाड़ा। कवण दुआरे उपजे शब्द सच्ची धुन्कार, मिले मेल प्रभ धुर दरगाही साचे लाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, दर दरवेश वेखे शब्द मात अखाड़ा। शब्द अखाड़ा मात लगाया। हरि हरि मेहरवाना, पिच्छा अगाड़ा दिस किसे ना आया। भुल्ले राज राजाना, साचा हिसा ना किसे वंडाया। साध संत होए निधाना, माया विस्सा ना तन मन लाहया। मिल्या मेल ना गुण निधाना, अमरापद घर ना साचा पाया। शब्द ना उपजे सच तराना, आप आपणा ना जन गंवाया। सुणया राग ना साचा काना, भाण्डा भरम ना भन्न वखाया। मिल्या नाम ना सच्चा दाना, आपणा बेड़ा ना बन्न वखाया। अमृत आत्म सर ना किया इशनाना, दसम दुआरी उप्पर चढ़ सच महल्ल अटल किसे ना पाया। काया मन्दिर होया सुंञ वैराना, गुरमुख विरले संत सुहेले अछल अछल्ल मेल मिलाया। हथ्थीं बन्ने गाना, कलिजुग कालख टिक्का मस्तक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भरम भुलेखा जगत जहाना देवे पाया। मस्तक टिक्का काली शाही, कलिजुग काली रेखा। प्रगट होया नर नरायणा, जोत सरूपी धारे भेखा। गुरमुखां तन पहनाए शब्द गहणा, आत्म अन्तर बुझाए लग्गी बसंतर, लाए नाम सच्ची मेखा। जगे जोत गगन गगनंतर, एका जाप

जपाए साचा सतिगुर हरि जन बुध करे बिबेका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए एकम एका। एका एकँकार इक्क कराया। जोत सरूपी जामा धार, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया। आपे पाए दर घर सार, नगर खेड़ा वेख वखाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, अट्ठे पहर करे प्यार, नेत्र नैण लोचन दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट वेख विचार, साचा मार्ग एका एक रिहा वखाया। कवण दुआरे दर्शन पाईए, होए सांत शरीरा। आप आपणा भरम चुकाईए, मिले मेल गहर गम्भीरा। पूर्ब लहिणा कर्म कमाईए, अमृत आत्म मिले ठण्ढा सीरा। मानस जन्म लेखे लाईए, हउमे रोग गंवाईए पीड़ा। भरम भुलेखे दूर कराईए। एका अंक समाए हस्त कीड़ा। निझ घर आसण लाईए, लेखे लाईए काया जीअड़ा। काया मण्डल साची रास, पुरख अबिनाश रसना गाईए। अन्तिम अन्त बन्ने बेड़ा। स्वास शब्द स्वास शब्द हरि गुण गाईए। सर्ब गुणतास दर्शन पाईए। जोती जोत सरूप हरि, नेत्र नैण दरस कर, जगत रोग भगत विजोग धुर संजोग एका दर एका घर एका सर एका फड़ाए नाम लड़, काया मन्दिर जाणा चढ़, अन्तिम अन्त वेख दर। काया मन्दिर औखी घाटी, गुरमुख विरला चढ़या। लक्ख चुरासी फिरे अट्ठ सट्ठ तीर्थ ताटी, दर घर साचे ना कोए वड़या। चार वरनां खेल बाज़ीगर नाटी, पंच विकारा अन्दर सड़या। जगे जोत ना काया माटी, जूठा झूठा घाड़न घड़या। मिले नाम ना साची हाटी, चौदां हट्ट चौदां लोक अगे खड़या। गुरमुख विरले बजर कपाटी पाटी, एका अक्खर जगत वखर गुर मन्त्र साचा पढ़या। जगे जोत मस्तक लिलाटी, मिले मेल पुरख अबिनाशी, ना कोई सीस ना कोई धड़या। किसे हत्थ ना आए पंडत कांशी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ले उच्च अटले शब्द सिँघासण इक्क विछाए, आत्म सेजा चरन टिकाए, शब्द किवाड़ी विकार हँकारी एका जन्दर जड़या। एका जन्दर लाया अन्दर, ना सके कोई तुड़ाया। रैण अन्धेरी काया डूंघी कन्दर, दिस किसे ना आया। दर दुआरे नौ मनमुख जीव रहे भौं। भेखाधारी घर घर फिरदे बन्दर, पारब्रह्म ब्रह्म हत्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे नाम वर, एका धर्म एका जरम मानस देही भगत सनेही लेखे लए लगाया। लेखे लग्गे काया तन, जिस जन दया कमाईआ। शब्द डोरी दए बन्न, सच नत्थ पवाईआ। एका राग सुणाए कन्न, समरथ हत्थ वड्याईआ। इक्क चढ़ाए साचा चन्न, महिंमा अकथ कथी ना जाईआ। नौ दुआरे करे खंन खंन, पंच पंचायणी मथ वखाईआ। सुक्का करे हरया तन मन, साची वथ इक्को झोली पाईआ। धर्म राए ना देवे डन्न, लक्ख चुरासी जम की फाँसी पुरख अबिनाशी आपे रिहा कटाईआ। मिले मेल हरि शाहो शाबासी, चरन कँवल होवे दासन दासी, काया मण्डल साची रासी, गगन पतालां एका राह वखाईआ। मिले मेल घनकपुर वासी, गुरमुख

साचे बलि बलि जासी, आत्म स्वासी शब्द चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पवण उनन्जा धार बवन्जा एका बार कर विचार रिहा चलाईआ। धार बवन्जा बवन्जा अक्खर भेव कोए ना पाया। लेखा लिखे ना कोए बजर कपाटी पत्थर, नेत्र अथ्थर रिहा वहाया। गुर पीर औलीए साध संत लथ्थे सथ्थर, आदि अन्त कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर करे खेल रघुराया। जुगा जुगन्तर प्रभ कार कमाए, आप बणाए आपणी बणता, जोत सरूपी जामा पाए, दया कमाए साधन संता। आप आपणा शब्द जणाए, मेल मिलाए साचे कन्ता। द्वार बंका इक्क वखाए, काया चोली साची रंगता, हरिजन घोल घोली चरन प्रीती सेव कमाए, दर दुआरे होए मंगता, सुरत सवाणी होई भोली भाली, आप जगाए आप उठाए आप रखाए अंगता। शब्द डोली विच बहाए, नाम गोली संग रलाए, लोआं पुरीआं आपे लँघता। कलिजुग बोली आप व्याहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जनता। कलिजुग तेरी अन्तिम बोली, प्रभ साचा लए व्याहीआ। लक्ख चुरासी पाए एका डोली, आप आपणे कंध उठाईआ। जूठ झूठ नाल रलाए गोली, माया ममता बस्त्र तन पहनाईआ। आत्म पड़दे सभ दे रिहा फोली, लोभ विकारा लग्गी बसंतर जीआं जन्तां रही जलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पूरे तोल रिहा तोली, गुरमुख साचे संत सुहेले आप कराए आपणे मेले, लेखा चुक्के गुरू गुर चेले, एका शब्द जणाईआ। अचरज खेल हरि हरि खेले, आपे वसे रंग नवेले, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा देणा वेले अन्त रिहा चुकाईआ। कलिजुग लहिणा जाए चुक्क, प्रभ देवणहारा संसारा। अन्तिम वेला आए ढुक, ना करे कोई आधारा। मनमुख जीवां चारों कुन्ट पए मुख थुक्क, ना कोई अग्गे दिसे सहारा। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, राज राजानां करे ख्वारा। गुरमुख साचे संत सुहेले आपणी गोदी लए चुक्क, आपे देवे शब्द हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क कराए वणज वपारा। वणज वपार हरि जगदीस, लोकमात रिहा कराईआ। लक्ख चुरासी जाणी पीस, मनमुख जीव देण दुहाईआ। कोई ना गाए राग छतीस, वेद पुराणां वक्त चुकाईआ। अंज़ील कुरानां ना कोई करे पछाना, तीस बतीस हदीस ना कोई सुणाईआ। एका झुल्ले शब्द निशाना, आप झुलाए हरि भगवाना, वेखे खेल वाली दो जहानां, ब्रह्म लोक फिरे दुहाईआ। शिव शंकर वेखे मार ध्याना, प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, बाशक सेजा सांगोपांग आसण बैठा लाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द होए हैराना, पुरख अबिनाशी घट घट वासी मारे शब्द तीर निशाना, वेले अन्त होए जुदाईआ। वरभण्डी हरि खण्ड कराए, शब्द चण्डी प्रभ हथ्थ उठाए, मनमुख जीवां वढ्ढे कण्डी, चारों कुन्ट होए वैराना। किसे ना

६३४ ०५

दिसे राह डण्डी, भैणां भईआ साक छुडाना। आपे जाणे जेरज अण्डी, उत्भज सेत्ज विच समाना। मेट मिटाए भेख पाखण्डी, गुणवन्ता हरि गुण निधाना। नार दुहागण वेखे रण्डी, मनमुख जीव विच जहाना। भगत जनां एका देवे नाम धना शब्द भण्डारा रिहा वण्डी, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, इक्क चलाए शब्द तराना। शब्द नाम अवल्ला, प्रभ साचे आप चलाईआ। इक्क रहाए हरि इकल्ला, गुरमुख वखाए सच महल्ला, दूसर किसे दिस न आईआ। एका धार जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ऊँचा टिल्ला एका राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, इक्क सद ग्यारां आप कराया साचा शिला, पूर्ब लहिणा शब्द गहणा प्रभ झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, बजर कपाटी पाड़े सिला, सोहँ तीर हथ्थ उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे शाह आपे हकीर, ऊँच नीच जीव जन्त साध संत भगत भगवन्त कन्त आप अख्वाईआ। आपे कन्त संत बनवारी। आपे जीव जन्त अधारी। आप बणाए आपणी बणत, लक्ख चुरासी रिहा पसारी। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भरमे भुल्ले साध संत, पारब्रह्म ना पायण सारी। होए विछोड़ा अन्तिम अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख दर, नौ खण्ड पृथ्वी आप वसाए इक्क घर, धर्म राए खोल्ह्रे इक्क किवाड़ी। धर्म राए खोल्ह् किवाड़, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। मनमुख जीवां दर घर तेरे देवे वाड़, देवे अन्त सजाईआ। मगर लगाए पंचम धाड़, वेखे खेल सतारां हाढ़, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जूठे झूठे माया लूठे देवे झाड़, राज राजानां हथ्थ फड़ाए खाली ठूठे, दर दर भिच्छया रिहा मंगाईआ। गुरमुख साचे जुगां जुगां दे विछड़े रूठे, आप आपणा मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी साचा तुठे, सम्मत सोलां करे कराए एका मुड्ढे, आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुख जीवां टंगे पुठे, लुकया रहण ना देणा कोई गुठे, दर दर घर घर अन्दर मन्दिर खोजी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द कटारी नर निरँकारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, चौथे जुग पहली वारी आपणे हथ्थ रिहा उठाईआ। देस वेस प्रभ आप कराए। शब्द जोत कर प्रवेश, दर दरवेश आप अख्वाए। वेख वखाणे नर नरेश, खुल्ह्ड़े केस गल लटकाए। कोई ना चले किसे पेश, वेले अन्त ना होए सहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे रिहा समाए। आपणे भाणे हरि समाया। रूप रंग रंग राता, दे मति रिहा समझाया। आत्म देवे धीरज यता, एका तत्ता रिहा वखाया। आपे जाणे मित गता, जगत नाता रिहा तुड़ाया। ना कोई दिसे पिता माता, साची रीता रिहा चलाया। एका एक पुरख बिधाता, दर दर घर घर किसे हथ्थ ना आया। पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के अठारां ध्याए गीता, खाणी बाणी रंग लाल तन नां किसे चढ़ाया। मिल्या मेल ना साचे मीता, अंजील कुरान विच

जहान हो दलाल ना लए छुडाया। मक्का काअबा वेखे मन्दिर मसीता, ज्ञान ध्यान वेद पुराण ना कोई जाणे भेव जीअ का, नीकन नीका फीकन फीका अनरस मीठा रसन रसायणी रस किसे ना पाया। गुरमुख विरले पुरख अबिनाशी साचे नेत्र एका डीठा, मानस जन्म लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां इक्क बणाए धर्म अंगीठा, त्रैगुण माया देवे विच जलाया। त्रैगुण माया तेरा मठ, प्रभ साचा दए बणाए। तट्ट किनारा खिच ल्याए अट्ठ सट्ठ, पार ब्यासों खेल रचाए। सृष्ट सबाई उलटी गेड़े लट्ठ, नट्ठ नट्ठ, प्रभ कर्म कमाए। मण्डप माड़ी जाणे ढट्ठ, बंक द्वार शाह कोई रहण ना पाए। दर घर साचे होए इक्ट्ठ, शब्द निशाना दए वखाए। चरन दुआरे जो जन आए नट्ठ, नाम अधारा नर निरँकारा आपे आप हो जाए। जोती अग्नी लाए मट्ठ, हाडी जले तिन्न सौ सट्ठ, नाड़ बहत्तर दए दुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम इक्क सुहाए। साचा धाम मात बणाउँणा। त्रैगुण तत्त विचार, आपणा आप विच टिकाउँणा। शब्द सरूपी पहरेदार, पवण उनन्जा हुक्म सुणाउँणा। पुरीआं लोआं ख़बरदार, ब्रह्मा दर द्वार बुलाउँणा। तख़्त ताज दए सीस निवार, गुरमुख माण दवाउँणा। सतिजुग साची बन्ने धार, चारे मुख चारे वेद, अछल अछल्ला हरि अभेद, आप आपणे विच समाउँणा। ना कोई जाणे जीव गंवार, शिव शंकर सोया आप उठाउँणा। बाशक तशका गलों लाहुणा, एका बख़्शे चरन प्यार। जगत जगदीसे खेल रचाउँणा, बीस बीसे माण गंवाउँणा, हरिजन बणाए सच्चा सिक्दार। करोड़ तेतीसा ख़ाक मिलाउँणा। गुरमुख साचा पाकी पाक, शब्द किवाड़ी खोल्हे ताक, दीपक जोती इक्क जगाउँणा। रती दस प्रभ अबिनाशी रक्खी ख़ाक, साधां संतां राज राजानां मस्तक टिका अन्तिम लाउँणा। कोए ना दिसे अग्गे आक, शब्द घोड़ा चले राक, पुरख अबिनाशी आप दुड़ाउँणा। शब्द सुनेहड़ा दर दर घर घर संत सुहेले देवे वाक, इक्क जणाई वणज कराउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा ताल जगत विछोड़ा तुट्टे जाल, जंजाला आप मिटाउँणा। त्रैगुण माया तेरी धार, प्रभ साचा वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, आपणी हथ्थीं दए जलाईआ। लहिणा देणा देणा लहिणा चौथे जुग दए उतार, पंचम मीता अचरज रीता संग मुहम्मद चार यारां करे ख्वार देण दुहाईआ। आपे वसे हो हो बाहरा, जोत सरूपी रंग अपारा, शब्द खण्डा हथ्थ दो धारा, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द करे ख़बरदार, तन बस्त्र अस्त्र शस्त्र एका आप सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि शक्त आदि भवानी, देवे चण्डी नाम निशानी, मेट मिटाए भेख पखण्डी शब्द चलाए एका बाणी, दूसर कोई रहण ना पाईआ। गुर गोबिन्द प्रभ दया कमाए, देवे शब्द निशानी। आप आपणी बिन्द उपजाए, गुणवन्ता हरि गुण निधानी। सागर सिन्ध अमृत आत्म सीर प्याए, दिवस

रैण ठण्ढा पाणी। एका अंक बस्त्र चीर पहनाए, बख्शे पद सच्चा निरबानी। नौ खण्ड पृथ्वी वहीर कराए, सोहँ मारे तिक्खी कानी। पीर दस्तगीर शाह हकीर दूर दुरानी कोई रहण ना पाए, ना कोई दीसे झूठ निशानी। गुरमुख साचे संत जनां आत्म अन्तर शब्द जंजीर लगाए, इक्क रखाए आपणी आनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा अन्त, आपे जाणे आपणी मति, सृष्ट सबाई उब्बले रत ना कोई जाणे खाणी बाणी। ना जाणे खाण चारे खाणी रचन रचाईआ। चारे बाणी ब्रह्म विचारा, परा पसंती सार ना पाईआ। मधम बैखरी जगत धारा, रसना रहे गाईआ। साध संत करन हाहाकारा, जीवां जन्तां रहे सुणाईआ। आत्म तृष्ना जगत दर घर विकारा, साची भगती ना भगत कमाईआ। जूठा झूठा भरया तन हँकारा, आत्म शक्ती हथ्थ ना आईआ। मन मति काया तत्ते होए जीव दुष्ट दुराचारा, दिब दृष्ट साचा इष्ट देवी देव सार ना आईआ। माटी काया होई भृष्ट, ज्ञान गोझ भेव अभेदा अछल अछेदा डूंघी कन्दर दिस ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के चारे वेदा, वेद पुराण अठारां कतेबा, रसना जिह्वा कौस्तक मनी ना लग्गा थेवा, जोत निरँजण साचे गगन मस्तक थाली ना मात जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे घर, त्रैगुण माया तेरा नाता आपे रिहा तुड़ाईआ। नाता तोड़े पुरख बिधाता, वेला अन्तिम आया। सर्ब जीआं प्रभ ज्ञाता, जानणहार सर्ब अख्वाया। मेट मिटाए कलिजुग तेरी रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाया। अट्ठे पहर रहे प्रभाता, दिवस रैण एका रंग रंगाया। बैठा रहे इक्क इकांता, जन भगतां देवे अमृत बूंद स्वांता, सीतल धारा रिहा चलाया। देवे दरस बहु बहु भांता, आपे पिता आपे माता, बिरध बाल बाल जवान एका रंग रिहा रंगाया। ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ऊँचां नीचां विच समाया। त्रैगुण माया तेरा जाल, प्रभ साचा तोड़ तुड़ांयदा। आपे वेखे शाह कंगाल, गुरमुख साचे जोड़ जुड़ांयदा। फ़ल लगाए काया डाल्, साचा फ़ल मुख खुवांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाल, वेख वखाणे काया सच्ची धर्मसाल, धुंन अनाद एका राग सुणांयदा। सृष्ट सबाई पुण छाण, शब्द पाए नाम निधान, आप आपणी बणत बणांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त आपे लाहुण आया मकाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जगत जगाए बणाए बणत, मति तत्त रत आपणे रंग रंगांयदा। मति तत्त रत प्रभ रंगाईआ। बुध मति मन संग रखाईआ। धीरज यति सति रखे पत, मित गति हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे देवे वर, गुरमुख साचे संत जनां जोती लाड़ी कर प्यारी लोकमात जिस प्रनाईआ। हरि दाता वड भण्डार है, देवणहार संसार। जन भगत मंगण मंग भिखार है, देवे वस्त नाम अपार। सर्ब जीआं प्रभ मीत मुरार है, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर।

मनमुख जीवां करे ख्वार है, चारों कुन्ट हाहाकार। जन भगतां धर्म जैकार है, देवे नाम सच आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे नाम वर, जो जन आए दर द्वार। दर दुआरे आए भिखारी। हरि देवे नाम भण्डारा, रसना गाए गुण गुणकारी। मानस जन्म होए अधारा, दुःख रोग सोग जगत चिन्त मिटाए, आत्म करे कारी। धुर संजोगी शब्द संजोग मिलाए, जोत सरूपी कर आकारी। आत्म अमृत रस साचा भोग लगाए, काया बीड़ा हड्डी रीड़ा कढ्ढे जन बिमारी। दरस अमोघ गुरमुख वखाए, आप आपणी दया कमाए, अट्ठे पहर रहे खुमारी। जगत विछोड़ा इक्क विजोग मिटाए, दरगाह साची देवे सच्ची सिक्दारी। एका नाम सोहँ साची चोग चुगाए, पारब्रह्म ब्रह्म पावे सारी। चरन प्रीती जो जन साचा जोग कमाए, लक्ख चुरासी उतरे पारी। हउमे हँगता रोग गंवाए, आप उडाए शब्द उडारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तारे बंक द्वारी। बंक द्वारी आए निमाणा, दोए जोड़ करे बेनन्तीआ। पुरख अबिनाशी सुघड़ स्याणा, आपे होए जाणी जाणा, जाण पछाणे जीव जन्तया। गुरमुख चलाए आपणे भाणा, दर घर साचे देवे माणा, काया रंगण रंग चढ़ाए एका एक बसंतया। आप मिटाए जम की काणा, इक्क सुणाए अनहद धुंन अनाहद धुंनी आत्मक गाना, शब्द जणाए बोध अगाध्या। अक्खर वक्खर धुर फ़रमाणा, दो जहानी मात बिबाणा, किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, गुरमुख विरले साची वस्त लोकमात लाध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे साचा वर, धुर दरगाही साची दादया। धुर दरगाही एका दाद, जोग जगत तन पाए। मिले मेल माधव माध, मुक्ती मुक्त हो जाए। दिवस रैण जन लए अराध, आत्म शक्ती जोत जगाए। गुरमुख साचा साचा साजन मीत, साचा संत साध अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि देवे साचा वर, साचा मार्ग इक्क वखाए। एका मार्ग एका राह, प्रभ साचा रिहा जणाईआ। आपे बणे हरि मलाह, वेले अन्त होए सहाईआ। पार कराए फड़ फड़ बांह, ना होवे मात जुदाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, नाता तुट्टे भैणां भाईआ। दर दर घर घर अन्तिम उडणे काँ, ना कोई पिता ना कोई माँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, दे मति रिहा समझाईआ। गुरमति जगत अपार, शब्द जणाईआ। मनमति करे ख्वार, दर घर साचा मूल ना पाईआ। दुरमति जीव होए विभचार, काया रंगण ना रंग चढ़ाईआ। जन भगतां बख्शे किरपा धार, प्रभ साची दया कमाईआ। तन मन ख़जाना भरे शब्द भण्डार, दाना बीना आप अख्वाईआ। ठांढा सीना हरि प्रबीना, अमृत आत्म जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जल आपे मीना, गुरमुख आत्म हरि परमात्म सदा सदा भीन्नी भीन्ना, कँवल नाती दो दोआबी बूंद स्वांती

६३८ ०५

इक्क इकांती रिहा मुख चुआईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत चाढ़े नाम रंगत, दर दुआरे आए मंगलाचार रसना गुण गहर गम्भीर गाईआ। गाया गुण गहर गम्भीरा, प्रभ अबिनाशी वर घर पाया। तन मन सांतक शांत सरीरा, बन्द दुआरा इक्क खुल्हाया। मिल्या मेल वड पीरन पीरा, अमृत आत्म साचा सीरा, बूंदा बांदी मुख चुआया। हरिजन साचा साचा हीरा, मस्तक बन्ह्े ताज साचा चीरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, शब्द चीरा सीस धराया। शब्द चीरा रक्ख सीस, गुरमुख खुशी मनांयदा। मिले मेल हरि जगदीस, उज्जल मुख मात करांयदा। माया ममता तन देवे पीस, अग्नी अग्ग दाता सूरा सरबग तन जलांयदा। दरस दिखाए उप्पर शाहरग, जोत निरँजण जाए जग, दिवस रैण डगमगांयदा। जो जन दर दुआरे आए पड़े गुर पग, हँस बणाए कग्ग, दुरमति मैल तन गंवांयदा। शब्द बन्ह्े तन साचा तग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मेल मिलांयदा। जगत तृष्ना अग्ग, जीव जलाया। माया राणी बद्धे तग, भरमे भरम भुलाया। जूठ झूठ अन्धेरी रही वग, पारब्रह्म भेव ना राया। दीपक जोती जगी ना सूरे सरबग, हँस काग रिहा बिल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरि जन साचे संत सुहेले सोए रिहा मात जगाया। जगत भुक्ख रसन विकारा, दिवस रैण रहे हलकाईआ। अट्ठे पहर हाहाकारा, माया ममता रोग हँगता एका तन वसाईआ। गुरमुख साचा नाम अधारा, नौ दुआरे वसे बाहरा, गुर पूरा साचा राह वखाईआ। एका देवे शब्द हुलारा, अन्दर बाहर कर प्यारा, काया मन्दिर साचा गुरदुआरा, गुर पूरा मेल मिलाईआ। भरया रहे तन भण्डारा, पुरख अबिनाशी देवे वारो वारा, वज्जा घर जन्दर बन्द किवाड़ी आपे कुण्डा लाहीआ। शब्द सिँघासण कर त्यारा, दस्म दुआरी पावे सारा, जोत जगाए अगम्म अपारा, आपे डगमगाईआ। शब्द सुणाए अनहद धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आत्म बूझ बुझाईआ। आत्म बूझ ब्रह्म ज्ञान, गुर साचे शब्द जणाईआ। आपे बख्शे चरन ध्यान, एका दूजा भेव मिटाईआ। अमृत आत्म तीर्थ सच इशनान, अठसट्ठ लेखा रिहा मिटाईआ। ना कोई वेद पुराण कुरान, अंजील सार ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जन्त जहान, पुरख अगम्मा नज़र ना आईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे सच्चा माल धन, जोत निरँजण एका रंग रंगाईआ। रंग रंगीला माधव माध, गुरमुख काया चोली आप रंगाईआ। शब्द देवे कलि साची दाद, नाम गोली आप बणाईआ। होए जणाई ब्रह्म ब्रह्माद, आत्म पड़दे खोल्ह खुल्हाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, अनहद साचा राग सुणाईआ। धुर दी बाण आदि जुगादि, जोती जोत सरूप हरि, एका राग सुणाए कन्न, अक्खर वक्खर बोल वखाईआ। अक्खर वक्खर हरि हरि रागा, हरि साचे संत जणाया।

लोकमात होए वड वडभागा, गुर पूरे दर्शन पाया। दुरमति मैल धोवे दागा, कागी काग हँस बणाया। मेल मिलाया कन्त सुहागा, चरन धूढ़ साचा मजन एका माघ कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, भेव अभेदा अछल अछेदा दरस अमोघा हरि संजोगा काया मन्दिर साचे अन्दर आपणा आप वखाया। काया मन्दिर रैण अन्धेरी, मनमुख भरम भुलाया। कोई ना दीसे सञ्झ सवेरी, राह साचा दिस ना आया। नौ दुआरे भरम भुलाए कर कर हेरी फेरी, दर घर आपणा मूल ना पाया। गुर पूरा तारे कर कर आपणी मेहरी, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। देवे दरस मिटाए हरस ना लाए देरी, जिस जन नाम साचा लड़ फड़ाया। आपे गुर आपे चेरी, तन मन चुकाए मेरी तेरी, आप आपणे अंक समाया। कलिजुग अन्तिम पावे फेरी, सृष्ट सबाई रिहा घेरी, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। सिँघ शेर हरि शेर दलेरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डंक शब्द वजाया। शब्द डंक इक्क वजाए, दिस किसे ना आया। शाह सुल्तानां रिहा जगाए, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां साचा हिस्सा आप वंडाया। गुरमुख साचे संत मिलाए, आत्म घर दहि दिशा आपे वेख वखाए, आप आपणा कर्म कमाया। जोत सरूपी जामा पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई रिहा एका कर, चार वरनां साची सरना, आप चुकाए मरना डरना, एका रंगण रिहा रंगाया। चार वरन एक सरनाई, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। नाता तुटा भैणां भाई, साक सज्जण सैण कोई दिस ना आईआ। गुरमुख साचे संत जनां दरस दिखाए तीजे नैणा, आत्म पर्दा खोल्ह वखाईआ। दर घर साचा इक्क वखाया, गुरमुख साचे चरन कँवल प्रभ एका बहिणा, साचा शब्द रिहा जणाईआ। तन पहनाए नाम गहिणा, गुरमुख साचे आत्म भाणा एका सहिणा, काया चोली साची डोली आपणे कंध उठाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम व्याहे पुरख अबिनाशी साची बोली, धर्म राए दी करे गोली, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। करे खेल हौली हौली, पूरे तोल रिहा तोली, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, लोआं पुरीआं रिहा डुलाईआ। लोआं पुरीआं गगन पताला, आपे आप हिलांयदा। शब्द सरूपी मारे छाला, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे कवण फ़ल लग्गा डाला, कवण रंग समांयदा। नाल रखाए काल महांकाला, गुर गोपाला दीन दयाला आप आपणा भेख वटांयदा। भगत जनां तोड़े जगत जंजाला, एका देवे नाम सच्चा धन माला, आपे शाह आपे कंगाला, दोवें खाली हथ्थ रखांयदा। काया मन्दिर इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, जगे जोत इक्क अकाला, अकाल मूर्त शब्द तूरत नूरो नूरत, साची सूरत आप जणांयदा। भगत जनां प्रभ आसा मनसा पूरत, मनमुखां दिसे दूरो दूरत, कूड़ो कूड़त सर्ब समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, एका राह

जगत मलाह धुर दरगाह वखांयदा। धुरदरगाही बेपरवाही साचा राह वखाया। आपे तारे फड़ फड़ बांही, चरन कँवल कँवल चरन जिस जन साचे सीस झुकाया। आदि अन्त देवे ठण्ढीआं छाँई, सृष्ट सबाई उप्पर धवल जाए मगल, उलटी करे नाभी कँवल, अमृत आत्म मुख चुआया। मेल मिलावा साँवल सँवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर मन्दिर शब्द सिँघासण जोत बिराजे, करे खेल देस माझे, कलिजुग संवारे तेरे काजे, सतिजुग साचा राह वखाया। शब्द सिँघासण डेरा लाए, जोती जामा पाया। मनमुख जीवां दिस ना आए, कलिजुग अन्धेरा छाया। हरि जन साचे रिहा जगाए, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। आप आपणा दरस दिखाया। अमृत आत्म मेघ बरस वखाए, मानस जन्म लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, आवण जावण जम की फाँसी देवे फंद कटाया।

★ १४ चेत २०१३ बिक्रमी सवेरे निरँजण सिँघ दे गृह पिण्ड अजितवाल ज़िला फिरोज़पुर ★

खोज खोज थक्के गुर मन्दिर, गुर पूरा दिस ना आया। जगत हँकारी वज्जे जन्दर, राग छतीस भेव ना राया। बैठे रहे अन्धेरी कन्दर, अज्ञान अन्धेर ना किसे मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग काला वेख दर, आपणी रचना रिहा रचाया। कलिजुग काल दुहाई, संत सबाया। वेले अन्तिम होए जुदाई, ना दीसे कोई सहाया। गुरद्वार मन्दिर बैठे रोवण मारन धांही ना कोई करे पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत वेखे वीह सौ तेरां भेख भिखारी फेरा मारया। भेख भिखारी शब्द जरवाणा, इक्क रखाए भल्ला। करे कराए ख़बरदारी, भरम भुलेखा पाए कर कर वला छला। जीव जन्त ना पायण सारी, दिस ना आए निहचल धाम अटला। रैण अन्धेरी करे ख्वारी, डूंघी धारी जल थला। गुरमति आत्म तन विसारी, मनमुख कागी काग रला। शब्द फड़ प्रभ तेज कटारी, आप कराए आपणा हल्ला। आपे ढाहे उच्चे बंक द्वारी, ना कोई लाए घड़ी पला। एका धाड़ रिहा चाढ़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम बुलाए एका हल्ला। नाम हल्ला देवे बोल, शब्द वड वड्याईआ। जगत वजाए साचा ढोल, दूतां दुष्टां दए सजाईआ। गुरमुख साचे संत वरोल, साची दृष्टा आप खुल्हाईआ। निज घर वासी वसे कोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल जगत जुदाईआ। कलिजुग संत माया मति, आत्म अन्ध अंध्यारी। दर घर साचे रहण तत्ते, होए दुष्ट दुराचारी। गुरमुख विरला प्रभ आप जणाए आपणी मित गते, मेल मिलाए जोत निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां साधन संतां चुक्के डोला शब्द होला खेल खिलारी। शब्द होला देवे खेल, खेल खिलावण

आया। मौत लाड़ी चाढ़े तेल, गुर चेल मिटावण आया। वेखे खेल रंग नवेल, सज्जण सुहेल दिस ना आया। जन भगत कराए आपणा मेल, जोत सरूपी दरस दिखाया। धर्म राए दी कटे जेल, कलिजुग अन्तिम तरस कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुख जीवां दए सजाया। मनमुख मुग्ध अञ्याण, जगत विकारया। मिल्या मेल ना हरि भगवान, भाण्डा भरया तन हंकारया। जूठा झूठा वेख मकान, मन्दिर सुत्ता पैर पसारया। कलिजुग झूठी पए दुकान, सतिजुग साचा हट खुल्हा रिहा। आपे करे पुण छाण, लक्ख चुरासी मेट मिटा रिहा। जगत जवानी भन्ने टाहण, तीर्थ तट्ट सथ विकारया। जन भगतां देवे जिया दान, नाम रथ इक्क चढ़ा रिहा। दीपक जोती जगे महान, साची गाथ रसन सुणा रिहा। निजानंद निज घर आत्म आपणे पाण, आप आपणा आप वखा रिहा। राग हदीसा एका गान, अजपा जाप हरि जपा रिहा। शब्द छत्र सीस झुलान, अमरापद पुरख अबिनाशी दर घर साचे सद शब्द बिबाणे आप बहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे कलिजुग यद्द, कवण दुआरे वज्जे नद, धुनी नाद कवण अपारया। वज्जे नाद शब्द जणाई, सोहँ सच्चा ढोला। जन भगतां बणत रिहा बणाई, चरन द्वार कराए गोला। साचे संत मिले वड्याई, एका तोल आत्म तोला। महिंमा अगणत गणी ना जाई, देवे शब्द नाम झकोला। गुरमुख साचे संत रिहा जगाई। मनमुखां गूढ़ी नींद सवाई, आप रक्खया पड़दा उहला। दर घर साचे वज्जे वधाई, मंगलाचार रैण सबाई, गुरमुख शब्द होए कुड़माई, भाग लगाए काया चोला। दिवस रैण ना होए जुदाई, मिले मेल प्रभ साचे माही, दरस दिखाए कला सोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे रहण ना देवे तन पाया शब्द चोला। गुरमुख दुआरा धन्न है, मिले मेल हरि राए। आत्म बेड़ा रिहा बन्न है, देवे चरन सच्ची सरनाए। जगत अमोला नाम धन है, गुरमुख साचे लए छुडाए। जोत निरँजण चाढ़े साचा चन्न है, कलिजुग रैण अन्धेरी डगमगाए। गुरमुख साचे आत्म जाए मन्न है, एका दूजा भउ चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका रंगण शब्द चढ़ाए। शब्द चोली मात रंगाईआ। नाम डोली इक्क वखाए, हौली हौली रिहा उठाईआ। साची बोली इक्क सुणाए, सोहँ साचा जाप जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाईआ। निरगुण तेरी धार, भेव ना राया। सरगुण रिहा विचार, दिस ना आया। सभ घट रिहा पसार, आसण लाया। तीर्थ तट्ट ना दए आधार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी काया मट्ट, खाली दिसे शब्द हट्ट, साचा वणज ना किसे कराया। जूठा झूठा खेल बाज़ीगर नट, माया राणी भरम भुलाया। मस्तक जोत ना जगे लट लट, दुरमति मैल दए कट्ट, अमृत आत्म साचा जाम ना किसे पिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

६४२ ०५

आपणी जोत धर, वेख खेल सृष्ट सबाया। वेखे खेल जगत भिखारी, कलिजुग वेखण आया। कवण दुआरे शब्द भण्डारी, गुर गोबिन्द चरनी चित लाया। मायाराणी पसर पसारी, जीवां जन्तां आत्म अन्धी अन्ध अंध्यारी, सच वस्त किसे हथ्थ ना आया। जूठी झूठी चार यारी, पंचम भुल्लया मीत मुरारी, नैण मुँधारी मुख छुपाया। ना कोई देवे जगत अधारी, आत्म भुगती होई ख्वारी, आत्म तृष्ना मोह वधाया। दीपक जोत ना होए उज्यारी, शब्द ना उपजे सच्ची धुन्कारी, धुनी नाद काया ब्रह्माद साचे तन ना किसे वजाया। पुरख अगम्मा ना आया याद, दर दुआरा नर निरँकारा जोत सरूपी ना कोई लए लाध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल अपर अपारा। अपर अपारा हरि हरि खेल, जुगा जुगन्त बणाईआ। हरि संत सुहेला गुरमुख साचे रिहा मेल, मनमुख जीवां दिस ना आईआ। शब्द चाढ़े साचा तेल, साचा धाम इक्क सुहाईआ। आपे वसे रंग नवेल, दिवस रैण डगमगाईआ। आप चुकाए लहिण देण, दरस दिखाए तीजे नैण, किल्ला कोट हँकारी गढ़ काया मन्दिर दए तुड़ाईआ। आपे गुर आपे चेल, धर्म राए दी कटे जेल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आत्म ब्रह्म जणाईआ। आत्म ब्रह्म जणाई, शब्द अभेदया। कलिजुग जीव ना पाए सार, पढ़ पढ़ थक्के चारे वेदया। जोत निरँजण अपर अपार, आदिन अन्ता अछल अछेदया। काया मन्दिर रिहा पसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे वेद कतेब्या। वेद कतेबां पढ़ पढ़ थक्के, जीव जन्त जहाना। काज़ी मुलां शेख़ फिरन मक्के, बगलीं पकड़ कुराना। कलिजुग अन्तिम पैण धक्के, एका शब्द तीर निशाना। होए निमाणी अल्ला राणी तक्के, लक्ख चुरासी पुरख अबिनाशी लाड़ी मौत जगाई, हथ्थीं बन्ने गाना। गुरमुख पूरे आत्म दर वज्जे वधाई, साधां संतां सुरत ना आई, ज्ञानी ध्यानी भेव ना राई, माया ममता रही भुलाई, उपजे नाम ना सच तराना। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम जोत धर, लहिणा देणा जगत चुकाए, हरिजन साचे लए बचाए, देवे जगत सच्ची वड्याई। हरिजन साजन साचा मीत है, लोचन पेखे नैणा। अचरज चलाई रीत है, लक्ख चुरासी आप वहाए वहिंदे वहिणा। ना कोई गुरूद्वार मन्दिर मसीत है, पुरख अबिनाशी घट घट वासी काया मन्दिर साचे अन्दर धाम सुहेले एका बहिणा। इक्क सुणाए सुहागी गीत है, बैठा रहे सदा अतीत है, दिवस रैण परखे नीत है, आप चुकाए लहिणा देणा। गुरमुख साचे मानस देही जाणा जीत है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, शब्द पहनाए साचा गहिणा। शब्द गहणा तन पहनाए, करे तन शृंगारी। गुरमुख साचे संत जगाए, देवे शब्द भण्डारी। आप आपणी सरन रखाए, पारब्रह्म ब्रह्म भेव न्यारी। मानस जन्म लेखे लाए, जगे जोत अगम्म अपारी। पूर्ब कर्मां वेखे धर्मां, इक्क इकल्ला आपे वसे सच महल्ला,

६४३
०५

दिस ना आए जल थला, सच टिकाणा दस्म दुआरी। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, इक्क बहाए शब्द बिबाणे, लोआं पुरीआं पार कराना, मेल मिलाए जोत निरँकारी। जोत निरँकारी मेल मिलाए, करे खेल अवल्ला। शब्द जैकारी इक्क कराए एका हल्ला। वणज वापारी भगत कराए, देवे नाम धन साचा धना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, पंजां देवे आपे डन्ना। पंचां देवे डन्न, शब्द जणाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, आत्म अन्तर अग्न बुझाईआ। होए प्रकाश आत्म अन्न्ह, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। आप चढ़ाए साचा चन्न, जोत लिलाटी रिहा जगाईआ। दो जहानी बेड़ा देवे बन्न, औखी घाटी पार कराईआ। साचा घर इक्क वखाए ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, जोत सरूपी डगमगाईआ। दो जहानी बेड़ा देवे बन्न, औखी घाटी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे दर, संत असंता भेव अभेदा आत्म भेव रिहा खुल्हाईआ। वेखे संत साजण कवण धन कवण माल, कवण शाह कवण कंगाल, कवण जगत भगत दलाल, देवे वड वड्याईआ। काया फ़ल परखे डाल्ह, अमृत आत्म वेखे ताल, शब्द सरूपी मारे छाल, दहि दिशा वेख वखाईआ। माया तोड़े जगत जंज़ाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दर घर घर आपे वेखे, लोचन नेत्र साचे पेखे, करे खेल बेपरवाहीआ। वेखे वखाए थांउँ थाँ, करे खेल महाना। दर दर घर घर उडणे कां, उच्च महल्ल अटल रहण ना पाना। ना कोई दीसे पिता माँ, नाता तुट्टे भैण भ्राना। एका एक प्रभ साचे तेरा नां, झुले धर्म निशाना। पुरख अबिनाशी प्रगट होए पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बन्न्हे हथ्थीं नाम गाना। गुर संगत धन्न कमाई, धन्न हरि नामा पाया। साचे घर वज्जी वधाई, मंगलाचार रसना गाया। नाता तुट्टे जगत जुदाई, पुरख अबिनाशी साचा पाया। होए सहाई सभनीं थाँई, घट घट वासी घट घट नज़री आया। पार उतारे फड़ फड़ बांही, अन्तिम बेड़ा बन्न्हे लाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँई, जिस जन आए दर दरसन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए आया जाया। आए दर परवान, आत्म मन्नया। देवे वर धुर फ़रमाण, साचा राग सुणाए कन्नया। मनमुख मूर्ख मुग्ध अञ्याण, चरन कँवल इक्क ध्यान, भाण्डा भरम दर घर भंनया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, मिले दात जिया दान, चढ़े चन्न साचा चंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे जगत वर, दिस ना आए आत्म अन्न्हया। आत्म अन्ध अन्ध अज्ञान। भागां मन्द जगत निधान। आत्म विकारा जगत हँकारा, बन्द बन्द माया ममता माण तान। अन्त ख्वारा दुष्ट दुराचारा, हाहाकारा जीव कुरलान। हरिजन साचे चरन प्यारा, मिले नाम शब्द अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां

वेखे इक्क दर आपे जाणे जानणहार। लग्गे भोग शब्द भगवान। रसना चोग जीव जहान। लिख्या लेखा धुर संजोग, कलि मेला मिल्या आण। जगत नाता होए विजोग, नाम रखाए साची आण। दर दुआरे दरस अमोघ, नाम जोग साचा पीण खाण। दूई द्वैती हउमे मिटे रोग, शरअ शरायती काया मन्दिर अन्दर इक्क मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे शब्द वर, देवत देवत देवत जिया दान। जिया दान जगत आस, प्रभ पूरन आप कराईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, रसना गोबिन्द गोबिन्द गाईआ। जो जन तजाए मदिरा मास, प्रभ सगली चिन्त मिटाईआ। लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास, पृथ्वी आकाश काया मण्डल साचे गगन आपे आप चढ़ाईआ। जोत सरूपी पाए रास, पुरख अगम्मा सदा अबिनास, आत्म सेजा बैठा आसण लाईआ। हरिजन साचे वसे पास, दिवस रैण ना होए उदास, राग अनाद अनाहद धुन, अनहद साचा राग सुणाईआ। दर घर साचे रिहा सुण, संत सुहेले आपे चुण, जोगी जुगता जाणे गुण अवगुण, सृष्ट सबाई छाण पुण, अक्खर वखर धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे शब्द वर, शब्द सिँघासण इक्क अपार, जोत निरँजण सच आकार, शब्द कराए जै जैकार, आप आपणा राग सुणाईआ। शब्द सिँघासण हरि बिराजे, दिस किसे ना आया। सीस रखाए एका ताजे, हरि जगदीस अख्वाया। लोआं पुरीआं करे काजे, प्रगट होए देस माझे, सम्बल नगरी डंक वजाया। भगत जनां प्रभ रखे लाजे, शब्द सरूपी मारे अवाज़े, अन्दरे अन्दर रिहा जगाया। मनमुख जीव जायण भाजे, जूठा झूठा साजन साजे, पंचम चोर अन्दर गाजे, बंक दुआरा दिस ना आया। हरि हरि साचा राजन राजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण साचे बहिणा, आप आपणा रंग वेखण आया। वेखे रंग अपार, खेल सबाया। सृष्ट सबाई हाहाकार, गुणवन्ता हरि गुण भतार, कन्त नारी दिस ना आया। गुरमुख साचा मीत मुरार, आत्म भरया शब्द भण्डार, माया ममता मोह गंवाया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, अमृत आत्म ठण्ढी धार, कँवल नाभी मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, आत्म अन्दर काया सेजा आप आपणा चरन छुहाया। शब्द सिँघासण हरि बणाया, नाम चढ़ाए फूल। पुरख अबिनाशी आसण लाया, आपे कन्त आप कन्तूहल। दूसर कोए दिस ना आया, ना कोई पावा ना कोई चूल। गगन मण्डल विच समाया। आपे जाणे आपणा मूल। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा लै के आया, सत्तवें अन्दर बहि के आया, गुरमुख साजण साचे संत होए विभचारी, साचा कन्त दिस ना आया। जगत तृष्ना चढ़ी खुमारी, आदि अन्त अन्त आदि भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बंक द्वारी, फड़े शब्द सच कटारी, चारों कुन्ट रिहा चलाया।

६४५ ०५

★ १५ चेत २०१३ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह पिण्ड बदोवाल ज़िला लुध्याणा ★

हरिजन मात वड्याईआ, देवणहार दातार। आपे वेख वखाईआ, वेख वखाए परखणहार। दर दुआरा बंक सुहाईआ, लेखा लिखे लिखणहार। आप आपणे अंक समाईआ, बख्शे चरन कँवल प्यार। साजण मीत सर्ब सुखदाईआ, देवे नाम शब्द भण्डार। अचरज कलिजुग रीत चलाईआ, एका रंगण रंग रंगे करतार। गुरमुख साचे काया तीर्थ इक्क वखाईआ, मंगे मंग दर द्वार। सीतल धारा अमृत मुख चुआईआ, जगत तृष्ना दए निवार। आप आपणी गोद उठाईआ, साचा देवे नाम हुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फड़ फड़ बाहों लाए पार। सोहे बंक द्वार, चरन छुहाया। चरन कँवल प्रभ साची धार, राउ रंकां भेव मिटाया। मिटे भेव विच संसार, एका रंग रिहा वखाया। एका रंग एकँकार, सच महल्ला रिहा वसाया। सच महल्ला जोत निरँकार, शब्द पल्ला रिहा फड़ाया। शब्द पल्ला मीत मुरार, औखी घाटी रिहा चढ़ाया। औखी घाटी डूंघी गार, बजर कपाटी पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन वेख सच घर, साची हाटी साचा वणज कराया। वणज कराए लेखे लाए काया चाम, सज्जण सैण सईआ आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी रिहा कटाईआ।

६४६ ०५

★ १५ चेत २०१३ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह लुध्याणा ★

काया गढ़ अपार हरि बणाया। कोए ना वेखे उप्पर चढ़, सृष्ट सबाई भरम भुलाया। नौ दुआरे रहे खड़, दसवां दिस किसे ना आया। रसना वखाणी रहे पढ़, हिस्सा नाम ना किसे वंडाया। माया ममता रहे सड़, दहि दिशा ना पड़दा लाहया। पंजां चोरां रहे लड़, लड़ सच ना किसे फड़ाया। दर घर साचे ना लग्गी जड़, जड़ आपणी आप उखड़ाया। कलिजुग वहिण रहे हड़, मनमुख आपणा आप रुढ़ाया। गुरमुख साचा एका अक्खर जाए पढ़, गुर मन्त्र शब्द जणाया। लेखा चुक्के मढ़ी मड़, घर साचे दए बहाया। दरस दिखाए दया कमाए ना कोई सीस ना कोई धड़, हरि जगदीसा दया कमाया। शब्द मारे काड़ काड़, दूती दुष्टां दए दुरकाया। साचा घाड़न रिहा घड़, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे आसण डेरा लाया। साचे आसण हरि बिराजे, दिस किसे ना आया। शब्द सिँघासण देस माझे, वेसी वेस कमाया। राज राजाने लाहे सीस ताजे, नर नरेशी रहण ना पाया। आपणा साजन आपे साजे, दस दस्मेश भेख वटाया। आप संवारे आपणे काजे, ब्रह्मा विष्न महेष सेव कमाया। भगत जनां हरि रक्खे लाजे,

देवत देवी देव आप अख्वाया। शब्द सरूपी मारे आवाज़े, नेत्र नैणा नेंह लगाया। जगत कराए साचा हाजे, हाजन हाजे आबे हयात, अमृत आत्म मेघ मींह बरसाया। साधां संतां खोल्हे पाजे, काया माटी खेह उडाया। शब्द घोड़े चढ़या साचे ताजे, नौ खण्ड पृथ्वी आपे वेख वखाया। नाम बणाए सति जहाजे, सोहँ अक्खर वक्खर इक्क रखाया। दो जहानी राजन राजे, शाह सुल्ताना आप अख्वाया। वेखे खेल कल कि आजे, भेव किसे ना आया। जीव जन्त साध संत चारों कुन्ट फिरन भाजे, भाणा राणा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण जोती आसण लाया। जोत बिराजे शब्द सिँघासण, अन्त लए अंगड़ाईआ। प्रगट होए सर्ब गुणतासन, शब्द करे कुड़माईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाशन, साची नाम करे चढ़ाईआ। प्रगट होए घनकपुर वासन, मन्दिर मुनारे देवे ढाहीआ। मेट मिटाए मदिरा मासन, मनमुखां मस्तक काली छाहीआ। जन भगतां होवे दास दासन, देवे जगत जुगत वड्याईआ। काया मण्डल वेखे रासन, आत्म घर वज्जे वधाईआ। सरन रखाए शब्द स्वासन, साची बणता रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे आसण लाए, शब्द सिँघासण इक्क सजाईआ। प्रेम सिँघ बिलासन, परम सुख पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। शब्द सिँघासण शाह सुल्तान, हरि साचा आप सुहांयदा। अट्ठे पहर नौ जवान, अस्त्र शस्त्र एका शब्द तन सुहांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। शब्द उडाए इक्क बिबाण, ना कोई जाणे जीव जहान, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी करे पुण छाण, एका कंडा पुरख अबिनाशी वंडा, सोहँ डण्डा नाम रखांयदा। जगत झुलाए इक्क निशान, प्रगट होए श्री भगवान, जन भगतां देवे जिया दान, दाता दानी आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण मेहरबान, नेत्र अंजन ब्रह्म ज्ञान, चरन मजन धूढ़ इशनान, दुरमति मैल गवांयदा। साचा सज्जण दो जहान, भाण्डे भरम भज्जण जो जन साची सेव कमान। जगत विकारा रसन तजण, दर दुआरे साचे सज्जण, अमृत आत्म पी पी रज्जण, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटान। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, रक्खे लाजी लाज लज्जण। लाजावन्त हरि भगवन्त, जगत अधारे साचे संत, किरपा कर अपर अपारे। आप बणाए आपणी बणता, देवणहार सृष्ट सबाईआ। देवणहार अगम्म अगम्मा, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। काया माटी वेखे चम्मा, दर दुआरा कोई रहण ना पाईआ। आपे जाणे आपणा कम्मा, जोत निरँकारा कर आकार, सृष्ट सबाई विच समाईआ। कलिजुग तेरा धुँदूकार, जीवां जन्तां साधां संतां आत्म होया इक्क हँकारा, शब्द आधारा कोई दिस ना आईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, शब्द खण्डा फड़ दो धारा, मारी जाए वारो वारा, ना सके कोई छुडाईआ। मन्दिर अन्दर हाहाकारा, गुरदुआरा

ना कोई सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आपणी कल रिहा वरताईआ। आपणी कल आपे वरते, कलिजुग अन्तिम आया। वेखे खेल उप्पर धरते, साध संत कोई रहण ना पाया। राज राजान शाह सुल्तान फिरन भिखारी दर दर मंगते, आत्म इच्छया पूरन भिच्छया ना कोई पाया। मनमुख जीव नाम विहूणे जगत नंगते, काया पड़दा शब्द दुशाला किसे हथ्थ ना आया। हरि जन साचा प्रभ अबिनाशी तेरी माणे साची संगते, जुगा जुगत शब्द घोड़े साचे चाढ़, साचे मार्ग पाया। आत्म रंगण एका रंगते, एका अक्खर गुरमुख पढ़ना, भाणा सहिणा रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम दरस अमोघ धुर संजोग आपणा मेल मिलाया।

★ १६ चेत २०१३ बिक्रमी सरूप सिंघ दे गृह पिण्ड मुध ज़िला जलँधर ★

हरि दाता दातार है, देवणहार संसार। जीव जन्त गंवार है, प्रभ अबिनाशी ना पायण सार। जिस जन देवे किरपा धार है, सो जन उधरे मात पार। चरन प्रीती सच्चा इक्क विहार है, वणज कराए नाम वापार। जूठ झूठ चुक्कणा कलिजुग भार है, वेले अन्तिम होए ख्वार। खाली ठूठा काया उजाड़ है, ना कोई लगावे अन्तिम पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत प्यारे दर घर साचे देवे वाड़। गुरमुख साचा धन्न, धन्न जणेंदी माईआ। आपणा बेड़ा आपे ल्या बन्न, गलों कटे जम की फाहीआ। रसन विकार तजे तन, मस्तक टिक्का लाहे काली छाहीआ। धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी होए आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणी दया कमाईआ। गुर भण्डार आत्म अनन्द है, गुर मन्त्र हीन ना खाए। निझ घर आत्म परमानंद है, जल मीन रही बिल्लाए। झूठी माया भरमा कंध है, भागांहीण कोई ना ढाहे। मदिरा मास बत्ती दन्द है, पीण खाण सुझ ना पाए। गुरमुख साचे आत्म चढ़या साचा चन्द है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस हरि रघुराए। साचा खाण रसना मुख, जगत विकार गंवावणा। पुरख अबिनाशी लए रख, नाम अधार दवावणा। दरस दिखाए हो प्रतक्ख, हरि एका कर्म कमावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द आहार इक्क करावणा। शब्द आहारा तन मन सीता, सीतल धार वहाईआ। गुर अमृत आत्म साचा पीता, ठण्डा ठार रखाईआ। मिले मेल प्रभ साचे मीता, देवे प्यार दर द्वार सच्ची सरनाईआ। आपे परखे काया नीता, काया महल्ल अटल उच्च मुनार बैठा आसण लाईआ। भगत जनां दर साची रीता, साचा राह इक्क वखाईआ। संत सुहेले सदा अतीता, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे

बख्शे घर, रसना भोग इक्क लवाईआ। जगत खिलाड़ी आप, आप खलांयदा। दर दरबारी आप, दर सुहांयदा। नर निरँकारी आप, जोत जगांयदा। शब्द अधारी आप, जाप जपांयदा। कर्म विहारी आप, सभ घट वेख वखांयदा। धर्म जैकारी आप, साचा धाम इक्क जणांयदा। जन्म अधारी आप, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। पैज संवारी आप, जिस जन दया कमांयदा। नाम खुमारी वड प्रताप, अमृत आत्म जाप पिआंयदा। आपे होए माई बाप, गुरमुख साचे गोद उठांयदा। नेड़ ना आयण तीनो ताप, शब्द कटारी तन पहनांयदा। पंच विकारा रिहा कांप, नाम डण्डा इक्क उठांयदा। आदिन अन्ता आपे आप, आप आपणे रंग समांयदा। साधन संतां वेखे पाप, सच दुआरा दिस ना आंयदा। नौ खण्ड पृथ्वी थापन रिहा थाप, आप आपणी बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भेखधारी भेख वटांयदा। भेखाधारी आप भेख वटाया। जगत पसारी आप, सर्ब समाया। शब्द भिखारी आप, निहकलंक नाम रखाया। वणज वपारी आप, साचा वणज नाम कराया। जोत उज्यारी आप, दीपक जोत रिहा जगाया। शब्द उडारी आप, लोआं पुरीआं विच समाया। ब्रह्म अधारी आप, पारब्रह्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाया। जगत अनादी आप, शब्द नाद वजाया। ब्रह्म ब्रह्मादी आप, ब्रह्मण्ड खण्ड समाया। बोध अगाधी आप, बोध अगाधा शब्द जणाया। माधव माधी आप, आदि अन्त भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोगी जुगत जगत जुगादी आपणा भेख वटाया। भेखधारी आप भेख वटांयदा। लेखा लिखे बण लिखारी, लिखणहार आप अख्वांयदा। लिख्या लेख मेट संसारी, मेटणहार सर्ब जणांयदा। वेख वखाए दर द्वारी, जुगा जुगन्तर बणत बणांयदा। सतिजुग द्वापर त्रेता पावे सारी, कलिजुग अन्तिम अन्त जगांयदा। देवे दान शब्द भण्डारी, जीव जन्त विच टिकांयदा। आत्म करे साची कारी, विकार हँकारी नष्ट करांयदा। आपे धुन सच्ची धुन्कारी, आत्म धुन इक्क उपजांयदा। शब्द फड़ खण्डा दो धारी, सुन्न मुन तोड़ तुड़ांयदा। आपे वसे हो हो बाहरी, गुरमुख साचे साजण चुण आपणा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे लेखा लिखणहारा, सृष्ट सबाई मापा। आपे परखे परखणहारा, आपे जाणे आपणा आप। आपे रक्खे रखणहारा, हरिजन होए वड वड प्रतापा। सृष्ट सबाई मथनहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे पुन्न पापा। शब्द आधार ब्रह्मण्ड है, ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ होए। जोत सरूप इक्क आकार है, पुरीआं लोआं जोत बलोए। एका शब्द सच्ची जैकार है, जुगा जुगन्तर प्रगट होए। प्रभ तिक्खी रखे धार है, काया अन्तर ना वेखे कोए। जन भगतां पहरेदार है, आपे आप उठाए सोए। एका बख्शे चरन प्यार है, कलिजुग दुरमति मैल धोए। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँजण प्रगट होए। जोत निरँजण निराकार, जोती जामा पाया। शब्द रक्खे भगत भण्डार, आपणा काम आप कराया। नौ खण्ड पृथ्वी परखणहार, सत्तां दीपां खेल न्यारा, करे कराए गुप्त ज़ाहिरा, आप आपणा मुख छुपाया। कलिजुग रैण अन्धेरी धुँदूकारा, ज्ञान गुर शब्द किसे हथ्थ ना आया। गुरमुख विरले लए उधारी, आत्म जोत जगे निरँकारी, पारब्रह्म ब्रह्म पावे सारी, मिले मेल पुरख भतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप कराए भगत विहारा। जगत विहार करावण आया, पुरख अबिनाशी भेव अभेदा। शब्द जैकार करावण आया, आपे आप अछल अछेदा। जोत निरँजण कर आकार, शब्द खण्डा फड़ दो धार, मेट मिटाए चारे वेदा। मनमुख जीवां भरम निवार, अन्तिम कलिजुग करे ख्वार, सोहँ मारे तिक्खा नेजा। गुरमुख साचे लाए पार, आप आपणी किरपा धार, चरन छुहाए आत्म सेजा। आत्म सेजा हरि विचार, जोत सरूपी करे आकार, दसम दुआरी खोल्ह किवाड़, बैठा रहे दर दहिलीजा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां किरपा देवे कर, तन मन काया आत्म सेजा। तन मन काया सीतल धारी, प्रभ दर्शन पाया नैणा। हउमे तृष्ना अग्न निवारी, नाता तुट्टे भाई भैणां। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सारी, एका एक नज़री आए साक सज्जण सैणा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, जगे जोत नर निरँकारी, गुरमुखां देवे शब्द भण्डारी, तन पहनाए साचा गहणा। सृष्ट सबाई अन्ध अंध्यारी, अट्ठे पहर रहे दुख्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, साचा हुक्म भाणा सहिणा। हरि भाणा अडोल, अडोल रखाया। सृष्ट सबाई रिहा तोल, तोलणहार आप अख्वाया। शब्द अटला रिहा बोल, आप आपणा राग उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा मेला कन्त सुहाग मिलाया। कन्त सुहागी साचा पाया, सुरत सवाणी जागी। शब्द अनादी नाद वजाया, दुरमति मैल भागी। आदि जुगादी दर्शन पाया, हँस बणया कागी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, देवे दरस वड वडभागी। वडभागी वडभाग, गुर मन्त्र जाणया। आत्म दीपक जगे चिराग, माण निमाणया। कलिजुग काया धोवे दाग़, साचा देवे पीण खाणया। जगत तृष्ना बुझाए आग, दर दुआरा जिस जन माणया। चरन कँवल जन जाए लाग, लेखा चुक्के आवण जाणया। माया डस्से ना डस्सणी नाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे देवे माणया। दर घर साचा दर दरबार, प्रभ साचा इक्क सुहांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। जन भगतां वेखे कर विचार, जगत विचोला आप अख्वांयदा। मनमुख रोवे धाहां मार, काया डोला ना कोई उठांयदा। धर्म राए करे ख्वार, कलिजुग होला अन्त वखांयदा। लाड़ी मौत करे ख़बरदार, पूरा तोला हुक्म सुणांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संत सुहेले वेख घर, आप आपणा रंग वखांयदा। रंग वखाए सति सरूप, निज्ज घर आत्म वस्सया। हरि हरि वडा शाहो भूप, मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया। जुगा जुगन्तर महिंमा अनूप, कलिजुग तेरी अन्तिम वार तीर निराला कस्सया। पवण उनन्जा देवे धूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां किरपा देवे कर, एका जोत करे प्रकाश कोटन कोट रवि सस्सया। कोटन कोट रवि ससि करे प्रकाशया। एका राह साचा देवे दस्स, आदि पुरख अबिनाशया। जन भगतां मेल मिलाए नस्स नस्स, वेख वखाणे पृथ्वी आकास्सया। मनमुख जीवां अन्तिम रिहा झस्स, होए कलिजुग मात विनास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, रसन तजाए मदिरा मास्सया। मदिरा मास रसन तजाए, आत्म ब्रह्म जणाईआ। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, निर्मल जोती आप जगाईआ। साची नईआ जगत चढ़ाए, पार किनारा इक्क वखाईआ। साक सज्जण सैण इक्क अख्वाए, शब्द अस्वारा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, इक्क हुलारा रिहा दवाईआ। इक्क हुलारा शब्द झूला, काया मन्दिर हरि टिकाया। मिले मेल कन्त कन्तूहला, भाण्डा भरम हरि भन्नाया। पुरख अबिनाशी दूल्हो दूला, मानस जन्म लेखे लाया। मनमुख जीव माया ममता भूला, हउमे चिन्ता रोग वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा संत सुहेला धुर संजोग मिलाया। धुर संजोगी साचा मेला, प्रभ साचा आप मिलांयदा। आपे गुर आपे चेला, गुर मन्त्र शब्द जणांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला कलिजुग काया पंच बसंतर लग्गी ना कोए बुझांयदा। कोई ना दिसे सज्जण सुहेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द वर, आप आपणे रंग समांयदा। आप आपणे रंग समाया, वड वड नीकन नीका। राउ रंकां रिहा जगाया, रसना रस रहे कलि फीका। एका डंक रिहा वजाया, भेव खुल्हाए जीव जीअ का। गुरमुख साचा भगत जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीं का। जगत ज्ञाना गुर शब्द है, घट घट प्रगट होए। आपे पिता आपे मात है, दूसर दिसे नाही कोए। पुरख अबिनाशी आत्म दात है, ऊँच नीच नीच ऊँच विच बलोए। आप बैठा रहे इकांत है, दिवस रैण कदे ना सोए। जन भगतां दिवस रैण अट्ठे पहर रहे प्रभात है, शब्द जणाए त्रै त्रै लोए। एका देवे धुर दरगाही साची दात है, शब्द सुनेहड़ा साचा ढोए। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत है, ना जन्मे ना कदे मोए। मेट मिटाए अन्धेरी रात है, तन मन बीज साचा बोए। इक्क चलाए गाथ है, सतिजुग साचा प्रगट होए। सगल वसूरे जाण लाथ है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, मिले मेल त्रलोकी नाथ है। त्रैलोकी नाथा हरि रघुनाथा, जोती

जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई सगला साथा, लेखा लेख मस्तक माथा, लिखणहार आप अख्वाईआ। जन भगत चढ़ाए साचे राथा, शब्द बिबाणा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पकड़ उठाए राजा राणा, ना कोई दिसे शाह सुल्तानां, वाली दो जहाना आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। शाह सुल्तानां रंक राजानां, एका रंग रंगांयदा। अट्ठे पहर करे ध्यान द्वार बंक, साजन साचा आप सुहांयदा। गुरमुख विरले आत्म जोती लाए तनक, साचा नाम तिक्खा बाण आर पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, सोलां कर तन श्रृंगार, शब्द भरे नाम भण्डारा हउमे तृष्ना रोग निवार, इक्क उजाला गुर गोपाला जोत निरँजण आपणा मेल मिलांयदा। गुरमुख सति सरूप है, सति पुरख भगवान। ना कोई रंग रूप है, आदि अन्त एका जाण। आपे दीपक जोत सच्चा धूप है, साचा मेला पवण मसाण। जुगा जुगन्त महिंमा अनूप है, आपे वेखे आवण जाण। मिल्या मेल हरि शाहो भूप है, होए सहाई दो जहान। दया कमाए अन्ध कूप है, जोती जगे जगत महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर आए दया कमाए, एका बख्शे जिया दान। जिया दान देवे दाता, भरया शब्द भण्डारा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाता, अमृत देवे बूंद स्वांता, काया करे ठण्ढी ठारा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, उप्पर धवल चलाए गाथा, कर्म धर्म धर्म कर्म आपणे हथ्थ रखाता, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, भरया रहे जगत भण्डारा। कलिजुग भण्डार भरपूर, प्रभ साचा दया कमांयदा। अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर, जिस जन साची दया कमांयदा। आपे दाता जोधा सूर, जोती देवे साचा नूर, शब्द साचा नाद वजांयदा। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, गुरमुख साचे मस्तक धूढ़, काया रंगण रंग गूढ़ चढ़ांयदा। मनमुख जीव ना जानण मूढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले इक्क इकेले दर दुआरे आपणे मेले, आप आपणा हथ्थ समरथ सिर टिकांयदा। रख हथ्थ समरथ, जगत वड्याईआ। पंच विकारा देवे मथ, बूंद रक्त लेखे लाईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, कथा ना कथनी जाईआ। पंजां चोरां पाए नत्थ, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर दुआरे जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां किरपा देवे कर, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ।

★ १७ चेत २०१३ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह करतार पुर महल्ला चरखड़ी ज़िला जलँधर ★

सोभावन्ती नार गुरमुख सच सवाणीआ। प्रभ पाया पुरख भतार, मिल्या मेल साचे हाणीआ। आत्म जोती जगे अपार,

तुटे जम की काणीआ। वरन गोती दए निवार, दुरमति मैल जाए धोती, अमृत आत्म देवे ठण्ढा पाणीआ। हरि जन बणाए दर दुआरे साचे मोती, इक्क सुणाए साची बाणीआ। सृष्ट सबाई रही रोती, खाली होई जेरज खाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, देवे दात वड वड दानीआ। दानी दाता आप, धुर दरगाहीआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, जिस जन दया कमाईआ। मेल मिलावा कमलापात, पति पतिवन्ता पूरन भगवन्ता साचे संतां दरस दिखाईआ। महिंमा जगत भगत भगवन्ता, आपे बणत बनावणहार आप अख्वाईआ। देवे वड्याई जीवां जन्तां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र अंजन नाम साचा आपणी हथ्थीं पाईआ। नेत्र नाम साचा कज्जल गुरमुख साचे पाया। मिल्या मेल प्रभ साचे सज्जण, भाण्डा भरम भन्नाया। आत्म ताल घर साचे वज्जण, राग अनादी एका राग सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, चरन धूढ़ कराए साचा मजन, जो जन चरन सरन सच्ची सरनाई आया। चरन धूढ़ मस्तक रेखा, गुरमुख विरले लाईआ। आपे जाणे अगला पिछला लेखा, जीव जन्त सार ना पाईआ। कलिजुग माया भरमे भुल्ले मुग्ध गंवारी, नेत्र गुर गुर नेत्र किसे ना देखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, आत्म तृष्ना हँगता रोग गंवाईआ। जगत विजोग झूठा नाता जाए छुट्ट, प्रभ साचा दया कमाईआ। पंजां चोरां कढे कुट्ट, शब्द चोट इक्क लगाईआ। जूठ झूठ काया मन्दिर देवे जड़ पुट्ट, एका नाम सच फुलवाड़ी आपे दए लगाईआ। दर दुआरे जाए वाड़ी, शब्द घोड़े जाए चाढ़ी, आपे होए पिछे अगाड़ी, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। हरिजन लाज रखाए चरन छुहाए दाढ़ी, माया ममता अग्न तृष्ना देवे साड़ी, एका लग्न गुर चरन ध्यान रखाईआ। दीपक जोती साचे जगण, दर दुआरा एका एक जो जन मंगण, नाम भिच्छया पूरन इच्छया प्रभ साचे आप कराईआ। मनमुख जीव भौंदे नग्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, आपणे अंगण आप रखाईआ। आप आपणे अंग समाईआ, गुरमुख संत जगाए। काया चोली रंग वखाया, नीचों ऊँच बणाए। शब्द घोड़े तंग कसाया, सूचो सूच आप हो जाए। भुक्ख नंग दए कटाया, एका दूजा भउ चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, आपणे अंगण आप रखाए। दरस पेखत नैनण नैण लोचन, जगत गया विकारा। दर दुआरे मिटी लिखी रेखन, मिले मीत शब्द भण्डारा। मनमुख जूठे झूठे दर दुआरे वेखण, दिस ना आए नर निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, एका रंग रंगाए, शब्द डोली विच बिठाए, साची गोली आप हो जाए, दो जहानी पार किनारा। दो जहानी उधरे पार, जिस जन सेव कमाईआ। शब्द निशानी विच संसार, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। गुण निधानी किरपा करे

६५३ ०५

अपर अपार, जाणी जाण आप अख्वाईआ। खाली भरे भगत भण्डार, वेख वखाए वारो वार, जुगा जुगन्त साध संत पूरन भगवन्त साची बणत बणाईआ। माया पाए जगत बेअन्त, हरिजन विरले मेल मिलावा साचे कन्त, नार सुहागण तन मन बैरागण एका मीता हरि हरि सदा रक्खे चीता, दूजा नेत्र दिस ना आईआ। मिल्या मीत हरि मुरार, दर घर साचा पाया। सोलां कर तन शृंगार, प्रभ अबिनाशी घर मनाया। मिल्या मेल पुरख भतार, एकँकार एका चोला तन पहनाया। शब्द कराए जै जैकार, साचा ढोला रिहा गाया। अज्ञान अन्धेरा मिटे धुँदूकार, दीपक जोत रिहा जगाया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, सो जन उधरे विच संसार, एका रंगण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, दूजा दर ना मंगण जाया। जिस जन मिल्या मेल, हरि भगवन्तया। शब्द चढ़ाए साचा तेल, काया चोली रंगे रंग बसंतया। धर्म राए दी कटे जेल्ह, दिवस रैण रैण दिवस अट्ठे पहर सुणे बेनन्तया। आपे होए सज्जण सुहेल, सदा सुहेला सद वसे रंग नवेल, एका धाम इक्क अखवन्तया। आपे गुर आपे चेल, आप आपणा करे मेल, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, एका देवे शब्द वर, पुरख अबिनाशी घट घट वासी पित हित पती पतवन्तया। पति रक्खणहार सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई आए डर, ना होए कोई सहाईआ। लक्ख चुरासी आवे जावे जन्मे जाए मर, ना कोई फंद कटाईआ। गुर गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरा एका दर, साचा घर दए वखाईआ। मिले मेल प्रभ साचे हरि, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, दुरमति मैल रहण ना पाईआ। आप आपणी किरपा कर, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, एका घर रिहा वसाईआ। वस्सया घर हरि गोबिन्दा, शब्द सिँघासण पाया। सगल उतरी तन मन चिन्दा, पुरख अबिनाशी नज़री आया। हरिजन उपजे साची बिन्दा, मात कुक्ख सुफल कराया। जीव जन्त कलि करे निन्दा, मुख कालख टिका लाया। जिस जन मेला गुणी गहिंदा, आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, नेत्र लोचन नैण बन्द किवाड़ी दए खुल्हाया। आपे तोड़े वज्जा जन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दस्म दुआरी जोत निरँकारी शब्द धारी एका धार रिहा वहाया। दस्म दुआरी दर दरवाज़ा, प्रभ साचे आप सुहाया। आपे वसे गरीब निवाजा दिस किसे ना आया। जिस जन तेरा साजन साजा, तेरे मन्दिर अन्दर विच सुहाया। आप संवारे तेरा आपणा काजा, चरन कँवल कँवल चरन उप्पर धवल दोए जोड़ सीस निवाया। काया फुल्लवाड़ी जाए मवल, मिले मेल साँवल सँवल, आत्म सेजा साची बैठा आसण लाया। उलटी करे नाभ कँवल, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, नाम भण्डारा देवे भर, अतोट अतुट अखुट आप अख्वाया। नाम भण्डार हरि भरपूर, तोट रहे ना राईआ।

जन भगतां सद हाज़र हज़ूर, बेमुखां दिस ना आईआ। शब्द उपजाए अनाहद साची तूर, अनहद साचा राग सुणाईआ। जोती बख्शे साचा नूर, निर्मल जोत आकार कराईआ। जगत नाता कूड़ो कूड़, अन्तिम कोई रहण ना पाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। चतुर सुजान बणाए मूढ़, जो जन बत्ती दन्द गाईआ। एका रंग चढ़ाए गूढ़, मदिरा मास तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, आप आपणा दरस दिखाईआ। दरस दिखाए तीजे नैणा, गुरमति बूझ बुझाईआ। कलिजुग वहिण वहे वहिणा, मन मति फिरे हलकाईआ। ना कोई दिसे साक सज्जण सैणा, भैणां भईआं सार ना राईआ। आपे होए साक सज्जण सैणा, जुग जुग चुकाए लहिणा देणा, देवणहार सभनीं थाँईंआ। हरि जन तेरा एका नाउँ मात रहिणा, दूसर कोई दिस ना आईआ। शब्द संतोखी आत्म एका भाणा आत्म घर साचे सहिणा, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, उज्जल मुख रिहा मात कराईआ। उज्जल मुखड़ा होए मात, हरि हरि हिरदे वाचा। उतरे दुखड़ा जगत तुट्टे नाता। बूझ बुझाए जीउ पिण्ड लेखा चुक्के ज़ात पाता। उत्तम ज़ात मिले मेल प्रभ कमलापात, एका नांओ वखाणे साचो साचा। आप बणाए पारज़ात, कौस्तक मणीआ साचा टिक्का लाए मस्तक माथ, धुर दरगाही देवे सच सुगाता। शब्द चढ़ाए साचे राथ, मेल मिलाए त्रैलोकी नाथ, आप चलाए आपणी गाथा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हाथा। नाम विहूणा जग, मात बौरानया। माया तृष्ना लगी अग्ग, होए सुंञ मसाणया। अन्तिम हँस बणे कग्ग, एका भुल्ले गुण निधानया। दिस ना आए उप्पर शाह रग, दर घर साचे एका शाह सुल्तानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दो जहानया। दो जहानी वेखे खेल, लोआं पुरीआं वासा। लक्ख चुरासी घल्ले धर्म राए दी जेल्ह, प्रगट जोत पुरख अबिनाशा। पकड़ उठाए फड़ फड़ गुर चेल, झूठी ना कोई पाए रासा। जन भगत चढ़ाए आत्म अन्तर तेल, नाम वस्त पाए काया कासा। आप आपणा करे मेल, वेख वखाणे पृथ्वी आकाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक शब्द चलाए हरिजन साचे स्वास स्वासा। स्वास स्वास रसन गुण गाया। लेखे लाए काया हड्ड नाड़ी मास, आप आपणी दया कमाया। गुरमुख साचे बलि बलि जासन, मिल्या मेल हरि शाहो शाबासन, काया मन्दिर जोत जगाया। अप तेज़ वाए पृथ्वी आकाशन, पंजां तत्तां विच समाया। आदि अन्त ना होए विनासन, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग लेखा रिहा लिखाया। पुरख अबिनाशी साचा कन्ता। नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाए, लक्ख चुरासी जीव जन्ता। ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ वंड कराए, किसे दिस ना आए, साधन संता। शब्द खण्डा प्रभ हथ्थ उठाए, वढ्ढे वड वड दंता। मनमुख होए नार

दुहागण कोई रहण ना पाए, हउमे रोग गंवाए हँगता। पंच विकारा खण्ड खण्डता, जिस जन मिलाए साची संगता। जेरज अंड कट वखाए, साची रंगण नाम रंगता। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणी गोद उठाए जिउँ नानक अंगदा। गुरमुख साचा गोद उठाए, धुर दरगाही बाल अञ्याणा। अगाध बोध प्रभ शब्द जणाए, इक्क सुणाए धुर फ़रमाणा। दाता जोधा आप अख्वाए, हरि सूरबीर बलवाना। हिरदे सोध गुर मन्त्र नाम जपाए, शब्द चढ़ाए सच बिबाणा। काया अन्तर जगत बसंतर आप बुझाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, मारे तीर शब्द निशाना। शब्द निशाना वज्जे तीर, बजर कपाटी पार कराईआ। अमृत आत्म बख्शे सीर, काया ठंडी ठार कराईआ। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, शब्द धारा इक्क चलाईआ। आदि अन्त प्रभ बन्न्हे बीड़, जोत अकारा नर निरँकारा काया मन्दिर उच्च मुनारा आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, एका जोत शब्द जैकारा, दो जहानी उतरे पारा, पल्लू साचा नाम फड़ाईआ। साचा पल्लू नाम फड़ाए, दो जहानां वाली। गुरमुख साचे मात उठाए, जगाए जोत इक्क अकाली। आप आपणे रंग रंगाए, देवे शब्द सच्चा धन माली। शब्द घोड़े तंग कसाए, शाह अस्वारा हरि निरँकारा वेख वखाए काया डाल्ही, जोती जोड़े मेल मिलाए, जिस जन देवे नाम आधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, निहकलंकी जामा पाए। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी रामा। नौ खण्ड पृथ्वी दिस ना आया, शब्द वजाए इक्क दमामा। गुरमुख साचा लोकमात साचा हिस्सा रिहा वंडाया, लक्ख चुरासी लाड़ी मौत करे ध्याना। राज राजानां खाली ख़ीसा कर वखाया, प्रगट होए शाह सुल्तानां। कुरान हदीसा रहण ना पाया। वेद पुराणां वक्त चुकाया। इक्क चलाए शब्द हदीसा, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। राउ रंकां विच समाया। एका छत्र झुलाए सीसा, सोहँ खण्डा हथ्थ रखाया। वरभण्डी हरि रिहा चलाया। साचा डण्डा नाम लगाया। दूसर कोई रहण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, भाणे अन्दर सद समाया। हरि भाणा बलवान, किसे ना जाणया। भुल्ले जीव नादान, माया रुलाए राजे राणयां। गुरमुखां आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिस जन आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानया। चरन प्रीती बख्शे साचा ध्यान, दीपक जोती जगे महानया। रसना नाउँ हरि हरि थांउँ देवे पीण खाण, जगत तृष्ना अग्न बुझानया। शब्द चढ़ाए जगत बिबाण, पताल अकाशां इक्क उडानया। धर्म झुलाए मात निशान, लेखा लिखे श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे जिया दान, हथ्थीं बन्न्हे नाम सच्चा गानया। नाम गाना बन्न्हे हथ्थ, हरि दाता धुर दरगाहीआ। शब्द चढ़ाए साचे रथ, पिता मात आप अख्वाईआ। सगल

वसूरे जायण लथ्थ, जो जन आए दर्शन पाईआ। जगत विकारा देवे मथ, एका अक्खर वक्खर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई पाए नत्थ, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। महिंमा जगत चलाए अकथ, अकथ ना कथया जाईआ। सर्बकला आपे समरथ, हर घट में रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां एका मेला आपणा आप मिलाईआ। आप आपणा मेल मिलाया, देवे शब्द अधारा। गुरमुख साचा सेवा लाया, चरन कँवल कँवल चरन एका बख्शे नाम प्यारा। उलटी नभी मवले कँवल, उप्पर धवल साची खिड़े मात गुलज़ारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी सति फुलवाड़ी वेखण आया बसंत बहारा। सतिजुग तेरी सच फुलवाड़ी, प्रभ साचे मात लगाईआ। किया विहार सतारां हाढ़ी, अमृत आत्म बख्शी दात साची वस्त झोली पाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, नेड़ ना आए मौत लाड़ी, शब्द बिबाणा रिहा उठाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ी, जोत जगाए, बहत्तर नाड़ी, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दर घर साचे देवे वाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां इक्क अधारा, जोत निरँकारा शब्द वणजारा एका वणज कराईआ। साचा वणज करावण आया, एका नाम अमोला। हरिजन साचा दर घर साचे लाहा लैण आया, दर दुआरे बणया गोला। मनमुख जीवां पुरख अबिनाशी लोकमात चढ़ लैण आया, धर्म दुआरे बणया साचा तोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई वेख हरि, लक्ख चुरासी जूठी झूठी माया लूठी शब्द हथौड़े भन्नण आया मौला। धुर दरगाही बाण, धुर दरगाहीआ। धुर दरगाही सच फ़रमाण, धुर दरगाही रिहा सुणाईआ। धुर दरगाही एका आण, सृष्ट सबाई रिहा पाईआ। धुर दरगाही शब्द बिबाण, लोकमाती रिहा उडाईआ। धुर दरगाही इक्क निशान, साचा झण्डा नाम झुलाईआ। धुर दरगाही राज राजान, शाह सुल्तानां रिहा मिटाईआ। धुर दरगाही हरि भगवान, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दात वडी वड्याईआ। धुर दरगाही साचा राणा, लोकमात कलि आया। जन भगतां मेला पुरख बिधाता, वल छल कर कर जगत भुलाया। हरिजन मिटे अन्धेरी राता, दीपक जोती जाए बल अज्ञान अन्धेर गंवाया। ना कोई वेखे परखे ज़ाता पाता, ऊँचां नीचां शाह सुल्तानां एका राह वखाया। बैठा रहे इक्क इकांता, सृष्ट सबाई पिता माता, दिस किसे ना आया। हरिजन मेला कमलापाता, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप बणाया शब्द विचोला, साचा चपू नाम लगाया। शब्द विचोला आप बणाया, साची बणत बणाईआ। सोहँ ढोला कन्न सुणाया, अगणत गणी ना जाईआ। धुर दरगाही आया तोला, संत असंता रिहा तुलाईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह्या, दसम दुआरी बूझ बुझाईआ। नौ दुआरे काया माटी झूठा डोला, मनमुख जीव फिरे हलकाईआ। प्रगट होए

प्रभ कला सोला, आपणी कल रिहा वरताईआ। जन भगतां देवे शब्द झकोला, पार किनारा इक्क वखाईआ। सच दुआरा एका खोल्ह, अमृत आत्म धारा रिहा मुख चुआईआ। दर दुआरे करे कराए गोला, मानस देही उज्जल मुख हरिजन साचे रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मात गर्भ ना उलटा रुख्ह, आवण जावण पतित पावन लेखा रिहा मिटाईआ। आवण जावण चुक्के झेड़ा, मिले मेल पुरख अबिनाशा। दो जहानी बन्न्हे बेड़ा, हरि हरि साचा दासन दासा। भाग लगाए काया खेड़ा, जोत जगाए पृथ्वी आकाशा। लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, भन्न वखाए काया कासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे हक्क निबेड़ा, जन भगतां वसे आस पासा। आस पास दो जहानी, देवे शब्द निशानया। मारे तीर तिक्खी कानी, इक्क सुणाए साची बाणीआ। सर्ब जिया प्रभ जाण जाणी, करे कराए आप पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दो जहानया। दो जहानी वेखे खेल, सर्ब जीआं प्रभ ज्ञाता। परखण आया गुरू चेल, कवण दुआरे संत दुलारे बद्धा सच्चा नाता। माया ममता कवण वणजारे, हउमे हँगता भरे भण्डारे, साचे नुहावण कवण नहाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा इक्क पछाता। महांबली बलवान, नर निरंकारया। वल छल छली जहान, अछल अछल्ल आप करा रिहा। वेख वखाणे नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां गली गली, पुरीआं लोआं इक्क ध्यान लगा रिहा। जोत निरँजण कर प्रकाश दीपक साची मात बली, मेट मिटाए अन्ध अंध्यारया। पवण उनन्जा छत्र झुलार, दर दरबार साचे बली, ब्रह्मे वेता मुख उग्घाड़या। जोती जोत सरूप हरि, एका लाए शब्द झड़ी, वक्ख कराए सीस धड़ी, नगर खेड़ा कोई दिस ना आ रिहा। ब्रह्मा वेता ब्रह्म विचार, आत्म दए दुहाईआ। प्रगट होए नर निरँकार, पुरी ब्रह्म होए जुदाईआ। शब्द चले तीर अपर अपार, गुरमुख साचे विच समाईआ। लोआं पुरीआं करे ख्वार, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। पारब्रह्म करे कराए आपणी कार, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म भेव ना राईआ। इक्क इकल्ला जै जैकार, शब्द मृदंग रिहा वजाईआ। गुरमुख विरला सुणे सच्ची धुन्कार, काया रंगण जिस जन एका रंग रंगाईआ। मनमुख जीवां दर दर घर घर हाहाकार, दिवस रैण दए दुहाईआ। हरि संत सुहेला सच सुहागी एका नार, प्रभ साचा कन्त हंढाईआ। जगत दुहागण होए विभचार, प्रभ अबिनाशी दिस ना आईआ। गुरमुख विरले आत्म सोई जागी, उपज्या मन इक्क वैरागी, शब्द धारा रिहा चलाईआ। आप बणाए हँस कागी, दुरमति मैल धोवे दागी, अमृत आत्म सच सरोवर इक्क इशनान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी करी कुड़माईआ। लक्ख चुरासी तेरा नाता, प्रभ साचा जोड़ जुड़ांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, आप आपणे रंग समांयदा। भगत जनां देवे साची दाता,

आत्म झोली इक्क भरांयदा। आपे पिता आपे माता, आपणी गोद उठांयदा। सति पुरख निरँजण सांतक सांता, अमृत साचा सीर पिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क चलाए शब्द तीर, चारों कुन्ट करे वहीर, ना कोई दिसे औलीआ पीर फ़कीर, शाह सुल्तानां ख़ाक रलांयदा। शाह सुल्तानां देवे ख़ाक रुलाई, प्रभ साचे जोत जगाईआ। चारों कुन्ट पए दुहाई, ना सके कोई छुडाईआ। नाता तुट्टे भैणां भाई, पिता पूत ना कोई गोद उठाईआ। ना कोई दिसे धी जवाई, कलिजुग तेरी वारी अन्तिम आई, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। धर्म राए घर आई चांईं चांईं, वेख वखाणे थाउँ थाँईं, नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंडां, मेट मिटाए भेख पखण्डा, सोहँ फड़े हथ्थ विच डण्डा, लुकया कोए रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। लाड़ी मौत करे श्रृंगार, एका दर सुहाया। धर्म राए दे दर दरबार मंगे वर, किरपा धार दे दे वर, लोकमाती रही राह तकाया। कलिजुग अन्तिम आए डर, वेख वखाए घर घर, नारी कन्त ना सके कोए हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, धुर दरगाही साचा दर इक्क खुल्हाया। साचा दर इक्क खुल्हाए, चार वरन चार मीता। साचा घर इक्क वखाए, एका अक्खर नाम पढ़ाए, माण रखाए अठारां ध्याए गीता। बजर कपाटी पाड़ वखाए झूठा पत्थर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विकाए साची हाटी, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताटी, जीव जन्त साध संत फिरन हलकाए। नाम वस्त तन साची हाटी, प्रभ साचा आप टिकाया ए। गुरमुख विरला खोल्हे आत्म बन्द ताकी, जिस जन आपणी दया कमाया ए। अमृत आत्म देवे साचा साकी, प्रेम प्याला इक्क प्याया ए। मनमुख भुल्ले बन्दे ख़ाकी, दीन दयाला दिस ना आया ए। पंचम चोर होए आकी, शब्द खण्डा ना किसे हथ्थ फड़ाया ए। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जन भगतां लहिणा देणा चुकावण आया बाकी, आप आपणे रंग रंगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला इक्क इकेला, आत्म जोती शब्दी मेला, पवण स्वासी इक्क कराया ए। पवण स्वास साचा मेला, आत्म जोत जगाईआ। गुरमुखां होया वक्त सुहेला, दुरमति मैल काया दूर कराईआ। मिले मेल प्रभ साचे गुर गुर चेला, रंग नवेला धाम सुहाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, नाम नामा शब्द फड़ाए सचा दामा, पलू आपणे हथ्थ रखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ अन्तरजामा, मेट मिटाए रैण अन्धेरी शामा, अज्ञान अन्धेरा अन्ध मिटाईआ। लक्ख चुरासी करे एका तामा, वज्जे शब्द जगत दमामा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लक्ख चुरासी तुट्टे नाता, मिले मेल हरि भगवाना। एका रंग पुरख बिधाता, धुर

दरगाही देवे शब्द निशाना। साचा शब्द जगत बिबाण, मिले मेल हरि भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दीपक जोती जगे महाना। शब्द गुर अपार है, हरिजन रिदे वसाए। दो जहानी उतरे पार है, धर्म राए ना दए सजाए। जिस जन बख्शे चरन प्यार है, अन्तिम मेला मेल मिलाए, हउमे दुखड़ा रोग उतरे पार है, उज्जल मुखड़ा आप कराए। आत्म सुखड़ा हरि शब्द शृंगार है, मिले वर घर मेला सहिज सुभाए। उलटा रुख़ड़ा गर्भवास है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। काया माटी अन्तिम होणी नास है, ना सके कोए छुडाए। जो जन प्रभ चरन होए दासन दास है, देवे दरस हरि रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, सभ घट रक्खे वास है, दिस किसे ना आए। रोग विजोग दोवें तन, होए धुँदूकारा। शब्द राग गुर सुणना कन्न, करे पार उतारा। धूंआं धुखे काया मन, सुणे सुणाए ना कोई पुकारा। भरमे भरम जगत मन, होया धुँदूकारा। आपणा बेड़ा लए बन्नू, पंच विकारा प्रभ देवे डन्न, सच कराए वणज वापारा। सच्चा देवे माल धन्न, ना कोई लाए मात संनू, भरया रहे भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आउँणा जाणा लेखे लाए, रोग सोग चिन्त मिटाए, काया कुक्खड़ी सुखला किशना पक्ख लए रक्ख, देवे चरन सहारा। बुध बल प्रभ साचे हथ्थ, जिस जन बणत बणाईआ। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, काया अन्दर रिहा समाईआ। सर्बकल करे

६६० ०५

समरथ, काया रंगण रंग चढ़ाईआ। शब्द डण्डा फड़ाए हथ्थ, अवल्लड़ी चाल रिहा चलाईआ। गुरसिख ना हारे मात हट्ट, काया माटी उलटी लट्ट रिहा गिड़ाईआ। लेखा लिखे अट्ट सट्ट ,धर्म दुआरे इक्क इक्ट्ट, जोत निरँकारे नट्ठ नठ्ठ, गुरमुखां रिहा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती शब्दी देवे नाम वर, उडे उडाए जगत फिराए दयावान दया निध दाता आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शब्द विचोला जिस जन दलाल। गुर पीर गाए साचा ढोला, एका रंग समाए बिरध बाल जुवान। जिस जन मिल्या साचा तोला, अट्ठे पहर रहे निगाहबान। दर दुआरा आपणा खोलू, नाम फड़ाए सच निशान। अंग संग संग अंग काया अन्दर साचे मन्दिर सद वसे कोला, नर हरि श्री भगवान। आप उठाए तेरा काया डोला, सृष्ट सबाई वेखा होला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। ब्रह्म ज्ञान शब्द जणाई। प्रभ आत्म जोती गुरसिख प्रनाई। आप उठाए कलिजुग सोती, मस्तक टिक्का दुरमति मैल धवाए काली शाही। नाम विहूणी सुरत सवाणी रही सोती, कोई ना पकड़े अन्तिम बांही। गुरमुख साचे संत दुलारे पारब्रह्म कलि पाए सार, सदा सदा देवे कलि ठण्ढीआं छाँई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म भण्डारा देवे भर, दिसे किसे नाही। मूर्ख मुग्ध गंवार, चरन द्वारया। तन रंगे रंग अपार, लेखा चुक्के नौ द्वारया। मंगे मंग शब्द अपार, भेव खुल्हे दस्म दुआरया।

६६० ०५

अंग संग संग अंग आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारया। भुक्खे नंगे उतरे पार, सिर हथ्थ रख करतार, बेड़ा दो जहानी पार उतारया। आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त साचे संत पावे सार, दिवस रैण रहे पहरेदारया। मेल मिलावा साचे कन्त, जगत बणाए साची बणत, महिंमा गिणाए गणत अगणत, लेखा आपणे रक्ख हथ्थ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, दे मति पंज तत्त काया विच टिका रिहा।

★ १७ चेत २०१३ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ★

जगत बुलाया बोलदा, प्रभ आप बुलावणहारा। काया माटी सभ दी फोलदा, कवण शब्द वणजारा। नाम हाटी एका खोल्हदा, भरया रहे सच भण्डारा। वेला नेड़े कला सोल दा, सम्मत सोलां खेल अपारा। चुक्कया झेड़ा रसना बोल दा, ना कोई करे बोल विकारा। हरिजन साचे फड़ फड़ आपे मेलदा, मेलणहार सच्ची सरकारा। वेखे खेल गुर गुर चेल दा, दृष्ट इष्ट वेखे आत्म धारा। एका रंग रंग नवेल दा, सृष्ट सबाई दए सहारा। जन भगतां नाता तुट्टे धर्म राए दी जेल्ह दा, देवे दरस अगम्म अपारा। जुगां जुगां दे विछड़े फड़ फड़ बाहों मेलदा, साचे शब्द करे वणजारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल रंग नवेल दा, हरि करता करनहारा। जगत नवेला वस्सया वक्खर सोहे थांउँ। एका राह साचा दस्सया, पुरख अबिनाशी अगम्म अथाहो। सच दुआरा आपे बहि बहि हस्सया, काया खेड़ा वेखे नगर गराउँ। सच वणजारा जगत वस्सया, होए सहाई हरिजन साचे पुरख अबिनाशी साचे थांउँ। एका तीर निराला कस्सया, सोहँ जपया अजपा नाउँ। मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया, फड़ फड़ हँस बणाए काउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सद सुहेला देवे ठण्ढी छाउँ।

★ १७ चेत २०१३ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ★

हरि शब्द बलवान, जगत उपाया। पुरख अबिनाशी मार ध्यान, लोकमाती खेल रचाया। नौ खण्ड पृथ्वी आपे वेख विखाण, सत्तां दीपां रिहा जणाया। राज राजानां शाह सुल्ताना मारे एका बाण, शब्द तीर रिहा चलाया। साधां संतां करे पछाण, आत्म जोती वेख वखाया। कलिजुग जीवां जगत ज्ञान, अज्ञान अन्धेर वधाया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, प्रभ चरनी चित्त लाया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, दूई द्वैती भरम मिटाया। एका मिले शब्द निशान, दर दुआरा इक्क सुहाया।

६६२ ०५

नौ दुआरे बन्द दुकान, दसवें बूझ बुझाया। दीपक जोती जगे महान, गुर मन्त्र शब्द जणाया। आत्मक राग सुणावे अनहद कान, कवण आत्मक धुन रिहा उपजाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, अंजील कुरानां सार ना राया। हरिजन साचा चतुर सुजान, पुरख अबिनाशी चरन ध्यान एका ओट रखाया। मिले मेल हरि गुण निधान, जगत जंज़ाला फंद कटाण, एका मार्ग रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरस अमोघ धुर संजोग आपे आप कराया। हरि शब्द हरि दान, मेहर कमाईआ। जन भगतां देवे जिया दान, आत्म तृष्ना अग्न बुझाईआ। दर दुआरे साचा माण, काम क्रोध नेड़ ना आईआ। शब्द बिठाए इक्क बिबाण, जोधन जोध आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटान, जिस जन मिले नाम धन, आत्म जाए मन्न, हउमे रोग गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि जी पाया, करया खेल अवल्ला, वरन गोत किसे दिस ना आया, वस्सया सच महल्ला। भरम भुलेखे जगत भुलाया, दूई द्वैती लाया सला। हरिजन साचा भगत जगाया, नाम फड़ाया साचा पल्ला। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया, होए सहाए जल थला। जल थल प्रभ आप समाया, वेख वखाए उजाड़ पहाड़ डूंघी डल्ला। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आप आपणे रंग समाया। हरि शब्द जगजीत, सृष्ट सबाई जितया। गुरमुखां बख्शे चरन प्रीत, करे कराए साचा हितया। काया करे ठण्ढी सीत, अमृत आत्म बख्शे साचा मितया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, दरस दिखाए नित नवितया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, वेखे लक्ख चुरासी वार थितया। शब्द गुर जगत दात है, देवणहार दातार। चरन कँवल गुर सच्चा नात है, मेल मिलाए धुर दरबार। साचा मेला पुरख बिधात है, घर दिसाए इक्क एकँकार। एकँकारा उत्तम ज़ात है, ज़ात पाती विच ना आए। सृष्ट सबाई पिता मात है, निर्मल जोती रिहा जगाए। आपे आप कमलापात है, सच सिँघासण आसण लाए। सति पुरख निरँजण साचा मात है, सति सतिवादी हरि हरि रघुराए। शब्द ब्रह्मादी विच ब्रह्माद है, धुन अनादी इक्क वजाए। बोध अगाधी माधव माध है, भेव अभेदा आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्त आदि अन्त साध संत भगत भगवन्त आपणी रचन रचाए। शब्द अनादी बोल हरि सुणांयदा। सृष्ट सबाई तोले पूरा तोल, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरले आत्म पड़दे देवे खोलू, बजर कपाटी फोल फुलांयदा। काया मन्दिर साचे अन्दर करे चोहल, साचा राग इक्क सुणांयदा। आदि अन्त ना जाए हरि भूल, भाणे विच समांयदा। लक्ख चुरासी काया मट शब्द मधाणे रिहा वरोल, साची सेव कमांयदा। गुरमुख साचे संत जनां दुरमति मैल देवे कट, इक्क वखाए साचा हट,

चौदां लोकां भेव मिटांयदा। आत्म सर सच सरोवर ना कोई दीसे तीर्थ तट्ट, हरि हरि वस्सया घट घट, घट भीतर आप समांयदा। जोत जगाए काया मट, दिवस रैण लट लट, अज्ञान अन्धेर रहण ना पांयदा। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, गुर चरन सरोवर साचा मट्ठ, लक्ख चुरासी होवे भट्ठ, अन्तिम जोती मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन बणाए एका गोती, गुरमुख उपजाए साचे माणक मोती, माणक मणीआ आप अख्वांयदा। माणक मोती गुरमुख लाल उपंनया। तन पहनाए शब्द दुशाल, जगत चढ़ाए साचा चंनया। आपे शाह आपे कंगाल, देवे वस्त नाम धन माल, वड दाता हरि धन्न धंनया। फ़ल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म सुहाए एका ताल, नेड़ ना आए काल महांकाल, जगत मिटाए झूठा जनया। जगत अवल्लड़ी चले चाल, धुर दरगाही शब्द दलाल, संत सुहेले लए भाल, कलिजुग वेखे अन्तिम बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी आत्म घर दिवस रैण लगाए संन्हिआ। लक्ख चुरासी काली धार, कलिजुग रैण विहाईआ। वेले अन्तिम पैणी मार, बीस इक्कीसा जोत जगाईआ। शब्द खण्डा फड़ हथ्थ कटार, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा हरि जगदीसा रिहा जगाईआ। वरभण्डी खेल विच उनीसा, ना कोई दिसे मूसा ईसा, काला सूसा रहण ना पाईआ। ना कोई पढ़े कुरान हदीसा, अंजील कुरानां वेद पुराणां, हरि हरि सच्चा शाह सुल्ताना, वेख वखाए खाणी बाणी, गुरमुख साचे ब्रह्म ज्ञानी, एका हरि हरि जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा जगत वर, अगम्म अगम्मा भगत जणाईआ। शब्द सुनेहड़ा धुर दरगाह, प्रभ साचा मात पुचांयदा। कलिजुग जीवां अन्तिम देणा फाह, राए धर्म बणत बणांयदा। लाड़ी मौत करे इक्क नकाह, कलिजुग वेला वक्त सुहांयदा। वेख वखाणे थांउँ थाँ, नौ खण्ड वंड वंडांयदा। ना कोई सहाई पिता माँ, पुत्तर धीआं दिस ना आंयदा। गुरमुख विरले संत सुहेले गुर पूरा आपे पकड़े बांह, एका एक चरन टेक साचा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, जीव जन्त प्रभ माया पाई कलि बेअन्त, गूढ़ी नींद सवांयदा। कलिजुग जीव जाग जगत जलनया। अन्तिम जोती दीपक बुझे चिराग, होए अन्धेर काया मस्सया। माया ममता हँस बणाया काग, पंच पंचायणी बहि बहि डंनया। माया डसणी डस्से नाग, साचा धन दर घर दिस ना आए आत्म अन्न्हया। चरन कँवल प्रभ साचे लाग, आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि साचे बेड़ा बन्न्हया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, कोए ना लाए मात सन्न्हया। शब्द चले एका लहर, प्रभ साचा मात चलांयदा। लेखा लिखे सवा पहर, काया नगर काया शहर साचा नगर खेड़ा इक्क वसांयदा। भरम भुलेखा कढ्ढे ऐर ग़ैर, जो दर आए भेव खुल्हांयदा।

शब्द दाता आत्म हरि हरि ज्ञाता वड शाइरी शाइर, देवी देव आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम वरते कहर, प्रगट होए गम्भीर गहर, भेव कोई ना पांयदा। हरिभगत उधारे कर कर आपणी मेहर, हरि दाता हथ्थीं आपणी बन्न शब्द गाना, तन्द सुच्चा नाम रखांयदा। आपे आप आप हरि निरवैर नौ खण्ड पृथ्वी रिहा घेर, साची वंडां वंड वंडांयदा। वेख वखाणे अंडज जेर, जेरज अंड विच वरभण्ड आत्म ब्रह्म ब्रह्म वखांयदा। लक्ख चुरासी सुत्ती दे कर कंड, नार दुहागण होई रंड, संत सुहागी जगत वैरागी गुरमुख मात बणांयदा। सोई सुरती जिस जन जागी, दर घर साचे बणे हँस मात कागी, चरन सरोवर साची धूढ़, मनमुख मूढ़ इक्क इशनान करांयदा। काया रंगण रंग चाढ़े गूढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द वजाए डंक आप उठाए राउ रंक, रंक राजाना शाह सुल्ताना वाली दो जहानां आपणा आप जणांयदा। दो जहानां हरि हरि वाली, शब्द गुर उपजाया। लिख्या जाणे धुर, वरन अवरनी भेव ना राया। ना कोई जाणे देवत सुर, करोड़ तेतीसा भेव ना पाया। शब्द चढ़े प्रभ साचे घोड़, चिट्टे अस्व तंग कसाया। दो जहानी रिहा दौड़, पुरीआं लोआं बाहर कराया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठे कौड़, कलिजुग अन्तिम चौथा, पौड़ साचा पौड़ा रिहा उठाया। प्रगट हरि घर ब्रह्मण गौड़, ना कोई जाणे लम्भा चौड़, साढे तिन्न हथ्थ झेड़ा जगत मुकाया। साचा शब्द इक्क रखाए साचा शब्द साचा पौड़, गुरमुख साचे संत जनां साचा दर रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, काला वेस दर दरवेश नर नरेश, ना कोई मुछ दाढ़ी, ना दीसे केस, आप आपणा रूप वटाया। केसाधारी नर निरँकारी। जोत अगम्म अगम्म अपारी। शब्द तेज जगत कटारी। ब्रह्मण्ड खण्ड खण्ड वंड जल कारी। चण्ड प्रचण्ड पावे वंडां, बेहंढु खण्ड रंड नर नर नारी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मेट मिटाए भेख पखण्ड, एका शब्द एका गुर, एका हरि एका नर, एका दर एका सर, एका वर चार वरन खड़े रहण द्वारी। चार वरन प्रभ एका दाता, जोती भेख वटांयदा। शब्द देवे घर साचे साची दाता, दहि दिशा वेख वखांयदा। हरिजन अपारे पारज़ाता, कौस्तक मणीआ मस्तक तिलक लगांयदा। मिले मेल प्रभ कमलापाता, आप चढ़ाए औखी घाटी, इक्क वखाए साची हाटी, साचा सौदा नाम रखांयदा। बजर कपाटी जिस जन पाटी, जगे जोत काया माटी, लेखा चुक्के तीर्थ ताटी, अमृत सर सरोवर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख कल, घर अवल्ला इक्क इकल्ला आपणा आप सुहांयदा। गुर संगत धन्न कमाई, हरि हरि मंगल गाया। आत्म दर वज्जे वधाई, अन्ध अज्ञान अन्धेर रिहा मिटाया। दीपक जोती करे रुशनाई, जिस जन काया तन भाण्डा भरम भउ भन्नाया। शब्द गुरमुख सगन लगाए करे मात कुड़माईआ, नाम दात साची

आत्म झोली रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे नाम वर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, चरन सरन सरन चरन गुर इक्क ध्यान जिस जन लगाया। चरन ध्यान गुरदेव, गुर मन्त्र जगत जणाईआ। मिले मेल प्रभ अलख अभेव, अमृत आत्म साचा फ़ल खवाईआ। रसना गाए जिह्वा जिहव, आवण जावण पतित पावण साचा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे जगत वर, अन्दर मन्दिर साचे बहि बहि हरिजन आपे गाए, आपे सके सुणाईआ। सच राग घर साचे गाया, सुणे सुणाए काना। मनमुख जीवां दिस ना आया, नाद अनादी इक्क तराना। दहि दिशा दर वेख वखाया, गुणवन्ता हरि गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, साचा हिस्सा मात वंडाया। मिले मेल श्री भगवान, श्री भगवान सच सुल्तान घर साचे तख्त बिराज्जया। धर्म झुलाए इक्क निशान, शब्द सरूपी मारे आवाज्या। एका राग सुणाए कान, खाणी बाणी वेद पुराणी सारे गाण, आपे रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, दिवस रैण अट्ठे पहर निगाहबान, जन भगत संवारे जगत काज्जया। हरि जोत अगम्म बेपरवाह है। आपे आप पए जम्म, ना कोई पिता ना कोई माँ है। पवण स्वासी ना कोई दीसे दंम, ना कोई लए साह है। आपे आप आपणा जाणे कम्म, एका वसे साचे थाँ है। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप रखाए आपणा नां है। जुग जुग धारे भेख भेख वटांयदा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी लिखे लेख, लिखणहार आप अख्वांयदा। धुर मस्तक लावे साची मेख, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुख विरला आत्म नेत्र लए पेख, मनमुख जीवां दिस ना आंयदा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, मुलां काज़ी शेख़ मुसायक, ना कोई जाणे साचे नायक, भरमे भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख हरि, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे नर आपे नरेश, ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, आपणा आप उपाया। आप आपणे रंग समाए, जोती जामा पाया। शब्द मृदंग इक्क वजाए, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। लक्ख चुरासी भंग कराए, धर्म राए रिहा जणाया। लाड़ी मौत मंग मंगाए, दोवें हथ्थीं मैहन्दी लाए, वेला अन्तिम दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम जोत जगाया। कलिजुग जीवां पड़दा उहला जाए चुक, वेला अन्तिम आया ए। लक्ख चुरासी बूटा अन्तिम जाणा सुक्क, चारों कुन्ट मूंह विच पैणा थुक्क, ना कोई किसे सके बचाया ए। पंज तत्त प्रभ दया कमाई। हड मास नाड़ी रत बूंद रक्ती देह उपाई। आप बणाए जगत जुगती, मति बुध मन विच टिकाई। नाल रलाई आत्म सुरती, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग वसाई। इक्क रखाए शब्द नाद तूरती, पड़दा उहला रिहा कराई। जोत निरँजण अकाल मूर्ति, मूर्त सूरत दिस ना आई।

जगत विकारा वेख वेख नेत्र पेख आत्म तृष्ना रही झूरती, अमृत झिरना ना कोए झिराई। दर दुआरा दिसे दूर दूरती, नेरन नेर ना कोए अख्वाई। भरम भुलेखा कूड़ो कूड़ती, शब्द हथौड़ा मन लैणा लाई। आसा मनसा हरि साचा पूरन पूरती, वेख वखाणे मिट्ठा कौड़ा, जो जन आए चरन सरन सच्ची सरनाई। मति बुध करे अभिमान। भुल्लया नांउँ गुण निधान। हत्थ ना आया नाम निशान। पंचम बली होए बलवान। कर्म रेख ना सिर ते टल्ली, भुल्लया जीव निधान। प्रभ अबिनाशी वली छली, वसे काया मन्दिर विच मकान। निहचल धाम वखाए सच गली, शब्द झुल्ले इक्क निशान। सीस धरना गुर चरन सरन साची तली, आत्म उपजाए ब्रह्म ज्ञान। काया माटी झूठी खल्ली, अट्ठे पहर रैण अन्धेर अन्ध अज्ञान। दीपक जोती दर दुआरे एका बली, मति दे समझावे पंज तत्त, बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत, तिन्न सौ सट्ठ हाडी प्रभ बणे गाडी, पंच विकारा देवे वाढी, चरन द्वार लडावे साची लाडी, इक्क रखाए सच ध्यान। रसना गाया पढ़ पढ़ थक्के, भेव ना पाया हरि हरि राया। सुरत सवाणी ना निकली विच्चों सूई नक्के, जगत विवाद मुख रखाया। अगाध बोध किसे हत्थ ना आया। ना कोई देवे शब्द दाद, ब्रह्माद खोज ना कोई खुजाया। आत्म धुन ना उपजे साचा नाद, सहिंसा रोग दए मिटाया। जीव जन्त पुरख अबिनाशी आपे जाणे गुण अवगुण गुणवन्ता गुण निधान, वेख वखाणे सुरत सवाणी जगत नादान, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर घट घट अन्दर आप समाया। काया खेड़ा नगर अपार। मन मति सद रहे झेड़ा, कोए ना उतरे पार। पंच लाउँणी जड़ उखेड़ा, विच्चों देवे जड़ उखाड़। चेतन्न करे हक्क निबेड़ा, अट्ठे पहर ख़बरदार। जिस जन बन्नृया आपणा बेड़ा, गुर पूरे चरन करे निमस्कार। खुल्ला वखाए काया वेहड़ा, बुध मति ना सके विचार। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, एका बख्शे चरन प्यार। मेल मिलाए पुरख भतार। पारब्रह्म ब्रह्म जणाए जीव जन्त आपणा कर्म आप कमाए। इक्क वखाए साचा धर्म, चरन नाता पुरख बिधाता जोड़ जुड़ाए। दूई द्वैती मिटे भरम, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, साचो साचा सच वखाए। शब्द धार प्रभ गंग वहाउँणी। नाम मृदंग इक्क वजाउँणी। शब्द झुले इक्क निशान, हरि समरथ बणत बणाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, वड दाते सूरे सरबंग सतिजुग तेरी मात बणत बणाउँणी। हरि साजण साचा मीत, सर्ब सुखदाया। जगत चलाए अवल्लड़ी रीत, आप आपणी बणत बणाया। वेख वखाणे देहुरा मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा गुर सुहाया। लक्ख चुरासी परखे नीत, नीत अनीता आप अख्वाया। सुणे सुणाए राग छतीस गीत, गीता ज्ञान अठारां ध्याए जणाया। सृष्ट सबाई राखे चीत, लहिणा देणा आपणे हत्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाया। जोती जामा हरि निरँकार, कलिजुग खेल रचाईआ। शब्द डंक

अपर अपार, राउ रंक रिहा जगाईआ। प्रगट होया वासी पुरी घनक, एका रंगण रंग चढ़ाईआ। आत्म जोती लाए तनक, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भेखाधारी आप अख्वाईआ। भेखाधारी भेख वटाया, भरमे भुल्ली लोकाईआ। नेत्र खेत्र किसे दिस ना आया, माया रुल्ले जीव जुदाईआ। नेतन नेत गुरमुख विरले दर्शन पाया, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी रुत्त सुहाईआ। सम्बल नगर हरि सुहाए, जोती मात जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी भगत उजागर आप कराए, शब्द सौदा गुर आप कराईआ। काया गागर भाग लगाए, वणज वपारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचे शब्द जणाईआ। साचे शब्द हरि जणाई, साचा डंक वजाया ए। साचा धाम आप सुहाई, राउ रंक भेव ना पाया ए। चार द्वारी आप बणाई, दहि दिशा वेख वखाया ए। महल्ल अटल उच्चा नाम रखाई इट्टां गारा कोई ना लाया ए। निर्मल जोती कर आकार, दिवस रैण करे रुशनाई, अज्ञान अन्धेर मिटाया ए। साचे शब्द वज्जे वधाई, प्रभ मंगलाचार कराया ए। गुर गोबिन्दे होई कुड़माई, प्रभ जोती मेल मिलाया ए। वाली हिन्दे दया कमाई, गुणी गहिंदे खेल वखाया ए। आप मिटाए सगली चिन्दे, आत्म भरमा गढ़ तुड़ाया ए। गुरमुख वेखे साची बिन्दे, शब्द हलूणा लाया ए। सर्ब जीआं आपे बख्शिंदे, कलिजुग भेख वटाया ए। लक्ख चुरासी करे निन्दे, चुगली निन्दया मुख रखाया ए। गुरमुख विरले अमृत आत्म धार वगे सिन्धे, हरि गुण सागर गहर गम्भीर पाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी भाग लगाया ए। सम्बल नगरी रुत्त सुहाई, फुल्ले मात फुलवाड़ी। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत दया कमाई, वेखे खेल सतारां हाढ़ी। बिन हरि नामे खाली बुत्त वखाई, किसे कम्म ना आए मुच्छ दाढ़ी। काया माटी चम्म बणाई, मन्दिर अन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेख घर, आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी। सम्बल नगरी साचा राणा, हरि हरि हरि जू आया ए। कलिजुग वरते आपणा भाणा, एका दूजा भउ चुकाया ए। चरन लगाए राजा राणा, साधां संतां रिहा हिलाया ए। शब्द फड़े नाम मधाणा, लक्ख चुरासी रिड़कणा पाया ए। सोहँ फड़े तीर कमाना, रसना चिले तीर चढ़ाया ए। करे खेल वाली दो जहाना, बूरे कक्के बिल्ले आपे रिहा हिलाया ए। अन्दर वड़ ना करे शिले, सभ दे अंगण करे ढिल्ले, कमरकसा ना कोए कसाया ए। गगन पताली थम्म्ह हिले, चढ़के आया घोड़े नीले, छत्तों बाहर कराया ए। लाल गुलाला हरि गोपाला, धुर दरगाही शब्द दलाला, एका वणज कराया ए। बस्त्र पाए सूहे पीले, आपे कर कर आपणे हीले, नीले चोले तन सजाया ए। गुरमुख वेखे साचे लाला, दीपक जोती जगे मस्तक साचे थाला, गगन गगनंतर आत्म अन्तर तन बुझाए लग्गी बसंतर,

जिस जन दया कमाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप बणाए आपणी बणतर सम्बल नगरी डेरा लाया ए। सम्बल नगरी लाए डेरा, हरि हरि कन्त सुहागया। नौ खण्ड पृथ्वी पावे घेरा, दीपक जोती जगे चिरागया। कोई ना जाणे सञ्झ सवेरा, शब्द घोड़े चरन देवे इक्क रकाब्या। प्रगट होए शेर शेर दलेरा, हक्क हक्क जनाब्या। जगत चुकाए मेरा तेरा, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस वेस हरि, आपे करे हक्क निबेड़ा। करे निबेड़ा हक्क, हक्क जलालया। दो जहानां राह रिहा तक्क, दोवें हथ्थां रखे खालीआ। कलिजुग फ़ल गया पक्क, लक्ख चुरासी फड़ फड़ झाड़े डाल्हीआ। शब्द पाए नकेल नक्क, जगत चले अवल्लड़ी चालीआ। संत सुहेले काया गढ़ उप्पर चढ़ चढ़ गए थक्क, मिल्या मेल ना वाली दो जहानीआ। दिवस रैण रसना फीका रस रहे फक, आत्म बुध्ध अमृत रस ना पीती सच प्यालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, सम्बल नगरी जोत इक्ग्री इक्क जगाए अकाल अकालीआ। सम्बल नगरी धाम सुहञ्जणा, जगे जोत पुरख अबिनाशीआ। जन भगतां नेत्र पाए शब्द अंजना, मेल मिलाए घनकपुर वासीआ। प्रगट होए दो जहानी साक सैण सज्जणा, आत्म लाहे जगत उदासीआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, किसे हथ्थ ना आए पंडत काशीआ। एका ताल कलिजुग अन्तिम वजणा, जूठा झूठा भाण्डा भज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचे मण्डल पाए साची रासीआ। साचे मण्डल पाए रास, जोत अगम्म जगाईआ। सृष्ट सबाई ना कोई जाणे पृथ्वी आकाश, गगन पातालां सार ना पाईआ। मानस देही दस दस मास, रसन विकारा रक्खी आस, शब्द स्वास ना गाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, फड़े शब्द खण्डा दो धारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, मनमुख जीवां दए मिटाईआ। एका शब्द करे जैकारा, चार वरनां इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां इक्क दुआरा, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी शब्द सिँघासण आत्म सेजा इक्क विछाईआ। शब्द सिँघासण हरि दातार, लोकमात बणाया ए। जगे जोत अगम्म अपार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया ए। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उग्घाड़, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया ए। शिव शंकर दिस ना आए अगम्मी धाड़, भेखाधारी भेख वटाया ए। शब्द वज्जे काड़ काड़, सुरपति राजा इन्द रिहा घबराया ए। नौ खण्ड पृथ्वी आप चबाए आपणी दाढ़, आप आपणी कल वरताया ए। लेखा लिखे सतारां हाढ़, भरम भुलेखा दए कढाया ए। सत्तां दीपां कर उजाड़, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर शब्द बणाए साचा लाड़, चिट्टे अस्व दए चढ़ाया ए। चिट्टा अस्व हरि दातार, धुर दरगाही आप सजाउँदा ए। नाम पहन तन साचा गहिण बस्त्र इक्क हथियार, साचा हुक्म सुणाउँदा ए। दिवस रैण अट्ठे पहर रहे त्यार, वेख

वखाणे मुहम्मदी यार, ईसा मूसा मेट मिटाउँदा ए। जीव जन्तां पैणी मार, घर घर होवे हाहाकार, नाता तुटे कन्त भतार, नार प्यार ना कोई हंढाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी रुत्त सुहाउँदा ए। हरि शब्द अपार, गुर जणाईआ। गुर शब्द अपार, सृष्ट सबाई रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई उधरे पार, जो जन हिरदे रिहा वसाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, बेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नईआ इक्क चलाईआ। हरि शब्द अपार, गुर पूरे अन्दर वस्सया। गुर शब्द अपार, सृष्ट सबाई एका राह दस्सया। सृष्ट सबाई उधरे पार, मिटे रैण अन्धेरी मस्सया। मानस जन्म लेखे लाए, साचा मार्ग दस्सया। हरि शब्द अपार, सदा अडोल्लया। गुर शब्द अपार, सृष्ट सबाई अन्दर मौलया। सृष्ट सबाई ख़बरदार, सच भण्डार हरि हरि खोल्ल्या। देवणहार सर्ब संसार, आदि अन्त एका तोल्लया। सच कराए वणज वापार, भाग लगाए काया चोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल कला सोल्लया। हरि शब्द हरि रूप, गुर पूरे विच समाईआ। गुर पूरा साचा भूप, सृष्ट सबाई शाह अख्वाईआ। सृष्ट सबाई सति सरूप, गुर मन्त्र रिदे वसाईआ। मेट मिटाए अन्ध कूप, निर्मल जोत जगाईआ। जोत निरँजण इक्क धुखाए साचा धूप, शब्द साचा राग एका एक उपजाईआ। आप वखाए महिंमा हरिजन अनूप, कन्त सुहाग मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणे रंग समाईआ। हरि शब्द बलवान गुर पूरे जाणया। गुर पूरा गुण निधान, मिले मेल श्री भगवानया। सृष्ट सबाई देवे जिया दान, धुर फ़रमाणा नाम दानया। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ स्याण, गुर पीर सुणे साचे कानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे साचा नाम, काया माटी झूठे चाम, जगत भगत सच निशानीआ। हरि शब्द अतीत सदा अतीतया। गुर पूरा करे प्रीत, सदा सदा रहे अजीतया। सृष्ट सबाई परखे नीत, काया बन्द बैठे गुरुदुआरे मन्दिर सच मसीतया। गुरमुख विरले काया ठण्ढी सीत, अमृत आत्म साचा जाम पीतया। इक्क सुणाए साचा गीत, अट्ठे पहर वसे चीत, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे हस्त कीटयां। हरि शब्द हरि रंग, गुर पूरे विच समाया। गुर पूरे वज्जे शब्द मृदंग, सृष्ट सबाई रिहा सुणाया। सृष्ट सबाई कटे भुक्ख नंग, शब्द दुशाला तन पहनाया। गुरमुख विरला साची दात लए मंग, मनमुखां मुख छुपाया। सदा सुहेला अंग संग, शब्द घोड़े तंग कसाया। नौ दुआरे आपे लँघ, सुखमन तेरी करे सहाया। शब्द रंगीला इक्क वखाए सच पलँघ, आत्म सेजा इक्क विछाया। अमृत आत्म धारा वगे गंग, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ हथ्थ ना आया। आत्म धुन शब्द नाद वज्जे मृदंग, राग छतीसा ना कोए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरिजन साचे रिहा तराया। हरि शब्द अमोल,

६६६ ०५

गुर पूरे जणाईआ। गुर पूरा रहे अडोल, सृष्ट सबाई रिहा तराईआ। सृष्ट सबाई मात अनभोल, गुर शब्द सार ना पाईआ। गुरमुख विरले भाग लगाया काया चोल, काया डोली इक्क उठाईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, साची हाटी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां काया मन्दिर किल्हे कोट, शब्द लगाए साची चोट, औखी घाटी आप चढ़ाईआ। हरि शब्द अभेद, भेव ना राया। गुर शब्द घर आत्म साचे वज्जे किसे दिस ना आए विच कतेब, रसना जिह्वा किसे ना गाया। आपे होए अछल अछेद, भेव ना पावण चारे वेद, खाणी बाणी सार ना राया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धना, साचा मार्ग रिहा वखाया। हरि शब्द अतोट दो जहान है। गुर शब्द उधारे कोटन कोट, एका बख्शे चरन ध्यान है। कलिजुग जीव आलणिआं डिगे बोट, ना सके कोई उठाल है। गुरमुख विरले तन नगारे वज्जे साची चोट, मनमुख दर दुआरे कुरलान है। जन भगतां कढ्ढे काया खोट, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान है। मनमुखां अजे भरी ना काया पोट, रसना रस रसक फिरे हलकान है। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां देवण आया नाम निधान है। हरि शब्द अधार, गुर पूरे मात रखाया। गुर शब्द जैकार, वरभण्डी रिहा कराया। वरभण्डी ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। भेख पखण्डी चोर यार, दर दर घर घर रहे भेख वटाया। साची डण्डी इक्क संसार, चारां वरनां दए वखाया। नौ खण्डां करे ख़बरदार, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। चण्ड प्रचण्डी तिक्खी धार, आर पार रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां देवे नाम वर, आप आपणे रंग समाया। हरि शब्द हरि नाउँ, गुर पूरे अन्दर वज्जया। गुर पूरा देवे सभनीं थांउँ, आप आपणा मात तज्या। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, हरिजन साचे पड़दा कज्जया। कलिजुग पार कराए फड़ बाहों, इक्क वखाए हाजन हज्जया। सदा सुहेला देवे ठंडी छाउँ, सच दुआरा एका सज्जया। आपे पिता आपे मांओ, आपे रक्खण आया लज्जया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख घर, गुरमुख विरले इक्क दर शब्द ताल मात वज्जया। हरि शब्द अकाल दयाल जणाईआ। दयाल शब्द गुर गोपाल, गुर मन्त्र बणत बणाईआ। गुर मन्त्र जगत प्रितपाल, वक्खर अक्खर भेव खुल्हाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, कपाटी पत्थर बजर आप तुड़ाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, साचे शब्द होए शनवाईआ। फ़ल लग्गे काया डाल, आत्म मेवा इक्क खवाईआ। मिले विचोला धुर दलाल, गुर पूरा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, एका धाम रिहा वखाईआ। हरि हरि धाम सुहाए, बणत बणांयदा। गुरमुख विरला पाए, संत जणांयदा। साचे न्हावण तीर्थ नहाए, दुरमति

मैल गवांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कांए, सर सरोवर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर सच द्वार, ना कोई जाणे पार किनार, भेव अभेद ना कोई पांयदा। साचा मन्दिर सच महल्ला, प्रभ साचे आप उपाया। आपे वसे इक्क इकल्ला, दूसर कोए दिस ना आया। हरिजन साचा संत सुहेला दर दुआरे खला, दोए जोड़ सीस निवाया। गुर शब्द फड़ाए साचा भल्ला, पंच पंचायणी मेट मिटाया। हरि शब्द कराए साचा हल्ला, नौ दुआरे पार कराया। शब्द फड़ाए आपणा पल्ला, डूंघी कन्दर होए सहाया। दर घर साचे अग्गे खला, राग अनादा रिहा वजाया। सुरती शब्दी आपे मिला, आप आपणा मेल मिलाया। पार कराए माया कोट किल्ह़ा, झूठा भरमा डेरा ढाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत दुलारे दर घर साचे इक्क वखाया। साचा दर दरवाजा, दिस किसे ना आया ए। आपे खोल्ह़े गरीब निवाजा, गुरमुख विरले हिसा मात वंडाया ए। आप आपणा साजण साजा, दहि दिशा विच समाया ए। साचे तख्त आप बिराजे हरि शाहो राजन राजा, जोती नूर सवाया ए। शब्द सरूपी मारे आवाजा, चोबदार आप अख्वाया ए। आपे रक्खे गुरमुख लाजा, लाजावन्त सर्ब सुखदाया ए। दस्म दुआरी रच्चया काजा, पारब्रह्म ब्रह्म दोहां मेल मिलाया ए। सीस पहनाए साजा ताजा, साचा गहिणा तन सजाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

६७१ धर, दर दुआरा इक्क सुहाया ए। दर दुआरा आप सुहाए, हरि साचा कन्त सुहागीआ। गुरमुख साचे मेल मिलाए, होए ६७१

०५ वड वडभागीआ। साचा सज्जण सुहेल आप अख्वाए, दुरमति मैल धोवे दाग़ीआ। धर्म राए दी जेल्ह़ कटाए, लाड़ी मौत ०५

होए दुराडीआ। अचरज खेल आप कराए, चरन कँवल उप्पर धवल जिस जन गुर पूरे हाज़र हजूरे चरन प्रीती लागीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए कन्त सुहागीआ। कन्त सुहागी हरि सुल्तान, घर मन्दिर अन्दर पाया। मिल्या मेल श्री भगवान, हउमे हँगता वज्जा जन्दर, आपणा आप तुड़ाया। शब्द वखाया सच निशान, डूंघी कन्दर भाग लगाया। गुर पूरा सदा सदा सदा मेहरवान, गुरमुखां दे मति रिहा समझाया। लक्ख चुरासी चुक्के कान, जम की फाँसी फंद कटाया। आप बिठाए शब्द बिबाण, गुण निधाना दया कमाया। पुरीआं लोआं इक्क उडान, तिन्नां लोकां बाहर रखाया। चौथे घर सच मकान, गुरमुख साचे लए बहाया। पंचम मेला गुण निधान, पवण पवणी विच समाया। छेवें मेल शब्द बलवान, शब्दी रंग रंगाया। सत्तवे सति पुरख निगाहबान, जोती जोत रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच मण्डल घर साचे आसण लाया। घर साचा वेख, गुरमुख साचे खुशी मनाईआ। नेत्र लोचण साचे पेख, आत्म तृष्ना जगत मिटाईआ। प्रभ लिखण वाला लेख, ब्रह्म पारब्रह्म होए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम धारे भेख,

निहकलंका नाउँ रखाईआ। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आप दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां करे बुध बिबेक, चरन टेक इक्क रखाईआ। कलिजुग माया ना लाए सेक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मनमुख जीव रहे वेखी वेख, अकाल मूर्त नज़र ना आईआ। अन्तिम मेटे बिधना लिक्खी रेख, साची सूरत दए छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे सर्ब लुकाईआ। सच दुआरा वेख गुरमुख हस्सया। जोती जामा गुर दस्मेस, पंच विकारा दर तों नस्सया। आपे दाता जोधा सूरा नर नरेश, शब्द कराए कमरकस्सया। कोई ना चले किसे पेश, चार वरनां राह एका दस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग रैण अन्धेरी मेटे अन्धेरा मस्सया। गुरमुख वेखे सच द्वार, प्रभ साचे जोत जगाईआ। चारे कुन्टां बन्द किवाड़, दूसर कोए दिस ना आईआ। आपे घड़या आपणा घाड़, घड़नहार सर्ब अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दिसे सच घर, द्वार बंका इक्क सुहाईआ। कलिजुग काली धार, काल पुकारया। लेखा चुक्के मुहम्मदी यार, प्रभ अबिनाशी सुण पुकारया। मंगे मंग दर भिखार, ना दिसे पासा हारया। भिच्छया पाउँणी अपर अपार, लाड़ी मौत नाल त्यार, धर्म राए वेखे दर द्वारया। दो जहानां देणा इक्क प्यार, लोकमात रहीए ख़बरदार, करे कराए सच विहारया। मनमुख जीव होए गंवार, घर घर धूंएँ रहे धुख प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुखां करे उज्जल मुख मनमुखां मारे शब्द कटार, सार कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सिँघासण जोत बिराज कलिजुग अन्तिम रच्चया काज, काल महांकाल दीन दयाल हुक्म सुणा रिहा। काल पुकार दातार कर, दोए जोड़ करे बेनन्तीआ। किरपा अपर अपार कर, वेखां खेल जुगां जुगन्तीआ। लाड़ी मौत तन श्रृंगार कर, रंग चढ़ाए तन बसंतीआ। आप आपणा शब्द उधार धर, गुरमुख साचे पार कर, धनवन्ते हरि धन्नवन्तीआ। जोती जोत सरूप हरि, मंगण आए वर दर, जगत भरना साचा घर लक्ख चुरासी जीव जन्तीआ। कलिजुग काल करी सलाह, वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी अन्तिम बणे कवण मलाह, साध संत आत्म रसन होए हलकाया। कवण कटाए जम का फाह, धर्म राए रिहा खुशी मनाया। लाड़ी मौत वेखे थाँ, नौ खण्डां खेल रिहा खिलाया। गुरमुख विरले पुरख अबिनाशी आपे पकड़े बांह, शब्द सरूपी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, जगत कूट पै जाए फूट, लहिंदी दिशा पाए हिस्सा, दहि दिशा वेख वखाया। काल दयाल प्रभ शब्द जणाई, रहणा ख़बरदार। कलिजुग अन्तिम होए कुड़माई, जगत विचोला मुहम्मद यार। लक्ख चुरासी पैणी फाही, सोहँ ढोला करे ख़बरदार। मस्तक टिक्का कवण मेटे मस्तक काली शाही, जन्त अन्त होणा दुष्ट दुराचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, मंगे मंग दर भिखार। आत्म

भिच्छया प्रभ साचे पाई, मंगी मंग अपार। जगत इच्छया पूर कराई, सृष्ट सबाई होए भंग, ना कोई दीसे मीत मुरार। दहि दिशा वेख वखाई सरबंग, रंग मूल ना कोई हंढाई, गुरमुख विरले साची सिख्या गुरमति पाई, गुर चरन प्रीती सच प्यार। मित गत गति मितक प्रभ शब्द जणाई, भरया रहे भगत भण्डार। धरनी धर आप अख्वाई, करनी करन सृष्ट सबाई आपे जाणे आपणी धार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल रचाया, हरि साची वंड वंडाईआ। सम्मत तेरां मात चढ़ाया, राज राजाना शब्द जणाईआ। साधां संतां रिहा हिलाया, आत्म ज्ञान वेख वखाईआ। आप आपणा रंग वटाया, शब्द निशाने तीर उठाईआ। वेखे खेल श्री भगवाना, भगत भगवन्ता देर ना लाईआ। पुरीआं लोआं इक्क निशाना, गुण निधाना रिहा बणाईआ। ब्रह्मलोक होए अन्त वैराना, ब्रह्मा मेट मिटाईआ। शिव शंकर बैठा लाए ध्याना, बाशक तशका गल लटकाईआ। सुरपति राजा इन्द रहे मस्ताना, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। वरभण्डी होए जीव नादान, कलिजुग भंडी पाईआ। प्रगट होए हरि बलवाना, नौ खण्डी जोत जगाईआ। एका रक्खे शब्द निशाना, चण्ड प्रचण्डी आप उठाईआ। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, मनमुखां कंडी रिहा वढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत बीस सद तेरां आप चुकाए, हेरा फेरा रिहा मिटाईआ। हेरा फेरा जगत मिटाए, हरि साचा वक्त सुहाउँणा ए। असू तिन्न दया कमाए, दिल्ली दरबार जा हिलाउँणा ए। भिन्न भिन्न प्रभ जोत जगाए, शाह शहाना हरि भगवाना इक्क अलख जगाउँणा ए। वाली हिन्द उठ निधाना, प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, सृष्ट सबाई तुटे माणा, शाह सुल्तानां कोई दिस ना आउँणा ए। इक्क झुलाए धर्म निशाना, चार वरना ब्रह्म ज्ञाना, हिन्दू सिक्ख इसाई मुसलम कोई दिस ना आउँणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क रखाए धुर फ़रमाणा, वेद पुराणा भेव ना पाउँणा ए। सम्मत चौदां चौदां हट्ट, प्रभ साचा मात खुल्हांयदा। इक्क दिखाए शब्द पट, गुरमुखां तन पहनांयदा। जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। मनमुखां दूई द्वैती लग्गा फट्ट, ना कोए रोग गंवांयदा। गुरमुखां दुरमति मैल कट्ट, धुर संजोग मिलांयदा। वेख वखाए अट्ठ सट्ठ आप आपणी बणत बणांयदा। दर दुआरे इक्क इक्ठ, कलिजुग तेरी उलटी लट्ठ हरि समरथ आपे आप गिड़ांयदा। जगत विद्या होणी भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। दस पंज पंज दस तेरी धार। गुरमुखां प्रभ नस्स नस्स करे कराए ख़बरदार। साचा राह एका दस्स, इक्क वखाए पार ब्यास किनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरिभगत मेल जोत निरँजण नर निरँकार। सम्मत पन्दरां पन्ध मुकाए, जूठी झूठी यारी दा। कलिजुग जीआं अन्ध मिटाए, करे खेल हरि गुणवन्त गुणा

गुणकारी दा। मदिरा मास ना कोई दन्द लगाए, लेखा चुक्के जगत विहारी दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे चन्द लोकमात चढ़ाए, मेल मिलाए धुर दरबारी दा। सोलां सोलां कल धार, आपणी कल वरतांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां भिख मंगांयदा। आपे बैठ सच सच्चे दरबार, गुण निधाना वेख वखांयदा। चारों कुन्ट हाहाकार, भैण भईआ ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख मिले साचा सईआ, नाम चढ़ाए साची नईआ, कलिजुग बेड़ा पार करांयदा। सम्मत सतारां होए विछोड़ा कन्त नारा, चारों कुन्ट अगम्मी धाड़ा, किसे ना दिसे पिछे अगाड़ा, हाढ़ सतारां वक्त सुहांयदा। सम्मत चढ़े दस अट्ठ अठारां, धर्म राए घर लग्गे बहारां, लाड़ी मौत लक्ख चुरासी वेखे एका लाड़ा, हथ्थीं गाना बन्न वखाईआ। सम्मत चढ़े जगत उनीसा, कोई ना दिसे जगत हदीसा, माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, खाली होए सर्ब दा खीसा, जगत भुक्ख किसे मुन रिख लोकमात हथ्थ ना आईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा छत्र झुलाए साचे सीसा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका वरन एका सरन एका राग एका जाग मेल मिलावा कन्त सुहाग, साचा मेला आप मिलाईआ। बीस इक्क इक्कीस सृष्ट सबाई रहि जाए निक्की, रवि ससि ससि रवि नाम नौका साची चढ़, दर दुआरे अग्गे खड़्ह, पुरख अबिनाशी लड़ साचा फड़। एका वर मंगण सीस धड़। लोकमाती लग्गे जड़्ह। सोहँ अक्खर सतिजुग वक्खर लैणे पढ़। दर दुआरे साचे वड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दे दे वर, गगन गगनंतर जायण चढ़। इक्कीस इक्कीस करे विहारा, कल्गीधर जगदीस। नौ खण्ड पृथ्वी एका धारा, शब्द रखाए साचे सीस। पारब्रह्म ब्रह्म रूप न्यारा, कोई ना करे मात वेस। साचा शब्द धर्म जैकारा, जै जैकार इक्क हदीस। एका एक एकँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा जगत वर देवे अलक्ख अभेवे, सृष्ट सबाई रसना सेवे, गाए गुण जिह्वा जिहवे इक्क इक्कीस। भगत द्वार हरि साचे भाए, जुगा जुगन्तर रीती। नाम अधारा इक्क रखाए, काया करे पतित पुनीती। सोलां तन शृंगार कराए, वणज वपार इक्क कराए, बैठा दिसे इक्क अतीती। कन्त भतार मेल मिलाए, आत्म सेजा इक्क वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धारा मुख चुआए, काया करे सीतल सीती। गुरमुख पाया राम, धाम बिराज्जया। अमृत आत्म पिया जाम, पूरन होए काज्जया। काया नगर खेड़ा सच गराम, दीपक जोती जगे मिटे अन्धेरी शामिआ। लेखे लग्गा काया माटी चाम, मिले मेल प्रभ अन्तरजामीआ। पले बन्न्हे सच्चा दाम, दो जहानां करे रखवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत दुआरा मंगे मंग, चरन प्यारा बण सवालीआ। चरन प्यार मंगे मंग, हरि दाता जगत सवालीआ। काया

चोली चाढ़े रंग, मिटे हरि जन घटा कालीआ। वजे शब्द नाम मृदंग, बहत्तर नाड़ी साचा ताड़ा दिवस दिहाड़ा इक्क वखाईआ। मानस देही ना होए भंग, पुरख अबिनाशी साचा संग, मिले मेल जोत अकालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म वेखे सच घर, दीपक जोत जगे दिवालीआ। दीपक जोती तन उज्यार, मिटे अन्ध अज्ञाना। एका एक कर आकार, वेख वखाए श्री भगवाना। दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, साची धूढ़ करे इशनाना। नौ द्वार तत्ती अग्नी हाढ़, मनमुख जीव वंड वंडाना। जगत विकार मगर लग्गी धाड़, पंजां चोरां इक्क अखाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे जाए तार, एका देवे शब्द हुलार, धुर दरगाही धुर बिबाणा। नाम बिबाणे साचे चढ़, गुरमुख मिटी जुदाईआ। नौ दुआरे अगे खड़, प्रभ साचे दया कमाईआ। शब्द घाड़न साचा घड़, रथ रथवाही आप हो जाईआ। एका नाम फड़ाए लड़, शब्द डण्डा रिहा वखाईआ। हरि जन साचा जाए चढ़, कलिजुग अन्तिम कन्ढा नेड़े आईआ। दर दुआरे नर निरँकारे अग्गे खड़, सीस धड़ कोए दिस ना आईआ। एका अक्खर जगत वक्खर जाए पढ़, आप उधारे पुरख अबिनाशी बाहों फड़, साचे मन्दिर भगत अन्दर एका एक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीनां बंधप दीन दयाल सर्ब प्रितपाल काल महांकाल भाणे विच रखाईआ। सिँघ तारा प्रभ शब्द तार हिलाई। आत्म उपजी धुन सच्ची धुन्कार, सुन्न मुन तुड़ाई। गुर शब्द कर उज्यार, तन साची जोत जगाई। भाण्डा भरम जगत निवार, हउमे तृष्ना रोग जलाई। मिल्या मेल पुरख अपार, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मी कार कराई। नाम कराए वणज वपार, ना कोई पल्ले पैसा दंमड़ी दमड़ा साचा धन्न इक्क वखाई। एका देवे चरन प्यार, लेखे लाए काया चम्मड़ा, बोध अगाध शब्द जणाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म वेखे शब्द घर, शब्द शब्दी मेल मिलाई। मिले मेल शब्द गुर, सुरती सुरत भवाईआ। आप चढ़ाए साचे घोड़, धुर दरगाही आया दौड़, उच्चा पौड़ा इक्क वखाईआ। ना कोई जाणे लम्भा चौड़, सति पुरख निरँजण ब्रह्मण गौड़, गौड़ सपूता हरि अवधूता जोती सुत एका शब्द आपणी गोद उठाईआ। कलिजुग सुहाए साची रुत्त, मनमुख जीवां वढ्ढे नक्क गुत, शब्द खण्डां रिहा उठाईआ। जन भगतां अमृत आत्म देवे घुट, मनमुखां जड़्ह देवे पुट, हरिजन साचा लाहा लैण लुट, नेत्र नैण लोचन दर दुआरे दर्शन पाईआ। रसना तीर कमानों रिहा छुट, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क वखाए सच घर, गुरमुख साचे दया कमाईआ। गुरमुख साचा गुण निधान, गुणवन्ता हरि पाया। एका एक गुर चरन ध्यान, धुर भगवन्ता मेल मिलाया। अन्तिम चुक्के जम की काण, साचे संतां सरन सरनाई इक्क वखाया। जोती जगत जुगत जुगीशर देवे सच्चा दान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया। तपी तपीशर रिखी मुनीशर इक्क

ज्ञान, आत्म ब्रह्म जणाया। सर्ब जीआं प्रभ आपे जित्त, ईश्र जगत जगदीश्र जगत पित, नित्त नवित्त भगतन हित जोती जामा भेख वटाया। आपे जाणे वार थित्त, पतित पवित आपे रिहा कराया। भगत जनां प्रभ साचा मित, सिर सुहाए पीत पीतम्बर जगत काज रचाया सवम्बर, मेट मिटाए झूठा अडम्बर, साचा राह रिहा वखाया। एका राह जगत मलाह, होए सृष्ट सबाईआ। चार वरन वखाए एका थाँ, आपे पिता आपे माँ, आपणी गोद उठाईआ। रंक राजानां शाह सुल्तानां एका थाँ दए बहा, ऊँच नीच कोए रहण ना पाईआ। महल्ल अटल उच्चे मन्दिर अन्दर उडे कां, सुंञ मसाणा रिहा वखाईआ। भगत सुहेला भगतन पकड़े बांह, पवण बिबाणे रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाता जोधा सूर बली बलवान, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका डंक द्वार बंक वजाईआ। गुरमुख विरले आत्म दर वज्जे वधाई, जै जैकार नर निरँकार। एका एक एक एकँकार। सति सरूप सर्ब पसार। हरि वडा शाहो भूप, रंग अनूप सति सरूप जोत सरूप जोत अधार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, प्रगट होए कलिजुग अन्ध कूप, गऊ गरीब निमाणयां पावे सार। कलिजुग अन्ध अन्धेरा छाया। जूठ झूठ हो दलेर, माया राणी घेरा पाया। भरमी भरम निहकरमी कर्म दए निबेड़ा, जगत झेड़ा रिहा मिटाया। वरनी वरना तरनी तरना करनी करना लाए एका शब्द उखेड़ा, नगर खेड़ा कोई दिस ना आया। धरत मात मार झात पुरख बिधात तेरा खुल्ह कराए वेहड़ा, गुरमुख विरले नाता चरन बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल एका साता, बैठा रहे इक्क इकांता, आपणे रंग समाया। मंगे मंग द्वार शब्द भण्डारया। देवणहार दातार विच संसारया। जन भगतां देवे कर प्यार, वेख वखाणे वारो वारया। आत्म ताकी खोल्ह बन्द कुआड़, देवे जिया दान आत्म शब्द आधारया। तत्ती वा ना लग्गे कलिजुग हाढ़, माया ममता तृष्ना प्रभ देवे साड़, पंजां चोरां करे ख्वारया। सुरत सवाणी शब्द मिलाए साचे हाणी, अमृत आत्म जल प्याए ठण्ढा पाणी, जोत जगाए बहत्तर नाड़या। आत्म धुन उपजे सच्ची बाणी, भरमे भुल्ली जेरज खाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दान हरि मेहरवान गुणवन्ता हरि गुण निधानया। नाम वस्त प्रभ झोली पाए। गुरमुख काया रंगे, चरन घोली हउँ घोल घुमाए। वज्जे नाम शब्द सच मृदंगे, होए सहाई सदा अंग संगे, संग अंग आप अख्वाए। शब्द घोड़े कस तंगे, दहि दिशा रिहा दौड़ाए। भगत दुआरे मूल ना संगे, देवे दरस कर कर तरस आपे आप रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन देवे शब्द वर, मिले मेल हरि सजण सुहेल, साचा मेला सहिज सुभाए। जगत ज्ञानीआं मन मति उपजाए। पारब्रह्म चरन ध्यानयां, गुरमुख विरला मात वखाए। शब्द जाणे जो

सच निशानीआं, भाण्डा भरम भउ भन्न वखाए। आत्म वज्जे तीर साची कानीआ, कर्म कुकर्म मानस जन्म हरिजन वेख वखाए। धुन आत्मक शब्द अनाद अनादी कवण दुआरे उपजे धुन, कवण जणाए बोध अगाधी साची बाणीआ। जगत विद्या पढ़ पढ़ इक्क दूजे तों रहे सुण, गुरमुख विरला ब्रह्म ज्ञानीआ। पुरख अबिनाशी आपे करे सृष्ट सबाई छाण पुण, गुणवन्ता हरि गुण निधानीआ। सर्ब पुकार रिहा सुण, गुरमुख उधारे विरले चुण, जुगा जुगन्त साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती खेल अपर अपार, एका भरया शब्द भण्डार, ना कोई जाणे जगत ज्ञानी जेरज खाणीआ। ज्ञान गुर जग शब्द है, शब्द गुर जगत ज्ञान। गुर शब्द जिस जन परवान है, जाणे खेल श्री भगवान। आप रखाए आपणा बिरद है, जुगा जुगत वेख वखाण। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूप वाली दो जहान, ना कोई जीव जन्त ना जगत संत करे पछाण। जगत नाम हरि अंस, लोकमात उपांयदा। हरिजन बणाए साचा बंस, साची दात झोली पांयदा। दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंस, भेख पखण्डा अन्त मिटांयदा। धरे जोत वार सहँस, रूप रंग ना कोए भेव जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा। कलिजुग अन्तिम जोत जगाए, करे खेल अपारी। शब्द डंक संग रलाए, चारों कुन्ट कराए जै जैकारी। नाम मृदंग इक्क वजाए, वजे नाद अपर अपारी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख दर, करे कराए आपणी कारी। करन करावणहार हरि जगदीस्सया। भेखाधरी भेख बावन, वेख खेल बीस इकीस्सया। इक्क फड़ाए शब्द सच्चा दामन, नाम छत्र झुलाए सीस्सया। नेड़ ना आए कामनी कामन, माया राणी जूठा झूठा पीसण पीस्सया। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी शामन, शाह सुल्तानां खाली खीस्सया। गुरमुख साचे आत्म अन्दर बहि बहि गावन, कथनी कथ ना सके दन्द बतीस्सया। मेल मिलावा पुरख अबिनाशन घट घट वासन, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, वेख वखाणे जगत हदीस्सया। जगत हदीस जगत भावनी, कलिजुग अन्तिम वेखे खेल पुरख अबिनाशन कमलापाती। सज्जण सुहेले आपे मेल, देवे शब्द गुर मन्त्र शब्द दाती। जोत सरूपी चाढ़े तेल, करे विहारा इक्क इकांती। कलिजुग अन्तिम अचरज खेल, दीपक जोत जगे बिन दीवा तेल बाती। आपे वसे रंग नवेल, जन भगतां अमृत देवे बूंद स्वांती। धर्म राए दी कटे जेल्ह, आवण जावण फंद कटाती। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, अट्ठे पहर दिवस रैण रहे प्रभाती। साचे मन्दिर रहे प्रभात, ना होए सञ्झ सवेरा। हरि जन विरला आत्म अन्दर वेखे मार झात, शब्द सिँघासण हरि बिराजे करे हक्क निबेड़ा। मिटे रैण अन्धेरी भरमा रात, भाग लग्गे काया नगर साचे खेड़ा, ना कोई जाणे ज़ात पात, पुरख निरँजण साचो साच, इक्क

वखाए खुल्हा वेहड़ा। काया माटी झूठा काच, नौ दुआरे मनमुख जीव रिहा नाच, माया ममता पाया झेड़ा। गुरमुख विरला गुर पूरे शब्द हिरदे लए वाच, आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि भगवन्त जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, लक्ख चुरासी देवे गेड़ा। लक्ख चुरासी दए गेड़ा, हरि जोती जोत जगाईआ। दन्द बतीसा भेड़ भेड़ा, किसे ना दीसे काया नगर खेड़ा, भरमे भुल्ली लोकाईआ। हरिजन साचा आप जगाया। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। पूर्ब लहिणा झोली पाया। साची रंगण नाम रंगाया। पंच पंचायणी लाए इक्क उखेड़ा, काया डोली रिहा उठाया। हौली हौली काया मन्दिर आपे बोली, साचा राह रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जिस जन देवे शब्द वर, आत्म सहिंसा रोग गंवाया। आत्म अन्दर आपे वड़, प्रभ साचे जोत जगाईआ। आपे जाणे सीस धड़, किल्हा कोट ना कोई वखाईआ। जगत अक्खर ना जाए पढ़, निशअक्खर वक्खर आप समाईआ। परा पसंती ना कोई जड़, मधम बैखरी ना रचन रचाईआ। गुरमुख विरला संत सुहेला एका अक्खर लए पढ़, जिस जन आपणा लड़ फड़ाईआ। जीव जन्त मन मती घाड़न रहे घड़, गुरमती बूझ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन दुआरे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी हरि हरि वडा शाहो भूपी, मेट मिटाए अन्ध कूपी, सति सरूपी दरस दिखाईआ। सति सरूप विस्माद, हरि रघुराया। वेख वखाणे विच ब्रह्माद, ब्रह्मादी खेल रचाया। शब्द वजाए साचा नाद, अनाहद तूर इक्क वखाया। शब्द जणाए अगाध बोध, बोध अगाध हरि रघुराया। जन भगतां हिरदा देवे सोध, दुरमति मैल गंवाया। दाता सूरा जोधन जोध, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, काया कंचन साचा रंग चढ़ाया। काया रंग चढ़ाए सच्च, सच्ची वड्याईआ। कलिजुग जीव नौ दुआरे रहे नच्च, दसवें भेव ना राईआ। जगत तृष्ना रहे मच्च, कलिजुग अग्न रही जलाईआ। शब्द गुर ना मिल्या धुर साचे अन्दर ना गया पच, रसना रसक हलकाईआ। काया माटी भाण्डा कच्च, अन्तिम अन्त जीव जन्त साध संत गुर पीर औलीए शेख़ मुसायक दस्तगीर शाह हकीर कोई रहण ना पाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म असत, एक सरूप कीट हस्त, नाम देवे साची वस्त, लेख मिटाए दस्त बदस्त, तन बस्त्र साचा चीर पहनाईआ। इक्क वखाए शब्द ससत, अट्ठे पहर रहे मस्त, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जिस जन बूझ बुझाईआ। आप आपणी बूझ बुझाई, दूई द्वैती मेटे सल्ला। आपणा भेव गुज्झ खुल्हाए, दरस दिखाए इक्क इकल्ला। ब्रह्म पारब्रह्म जन सूझ सुझाए, वेख वखाए सच महल्ला। लोचन नेत्र तीजा खोल्ह वखाए, दरस वखाए वसे निहचल धाम अटला। अमृत आत्म बीज साचा बीज बिजाए, नाम लगाए साचे फ़ला। जन भगतां जुगा

६७८ ०५

जुगन्त रीझ कराए, दर दहिलीज़ इक्क वखाए, पंजां चोरां देवे डन्ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे नाम धन्न, धन्न धन्नी आप अख्वाए। नाम धन भगत खजाना, गुरमुख विरले पाया ए। पुरख अबिनाशी बीना दाना, देवणहार सर्ब सबाया ए। अक्खर वक्खर आपे कीना, बजर कपाटी रक्खया पत्थर, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा रिहा छुपाया ए। नर नरायण प्रभ आप, घट घट विच समांयदा। सृष्ट सबाई माई बाप, पूत सपूता मात जणांयदा। आपे जाणे आपणा वड प्रताप, लेखा लेख ना कोई गिणांयदा। कलिजुग काया अन्त संताप, सतो गुण दिस ना आंयदा। रजो गुण वध्या पाप, तमो जगत तृष्ना आप तपांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा कांप, प्रभ साची वंड वंडांयदा। हथ्थ खड़ग शब्द चण्ड प्रचण्ड, जेरज अंड लेख मिटांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपे उठ उठ दहि दिश धांयदा। लक्ख चुरासी वेखे नार दुहागण रंड, गुरमुख विरला कन्त सुहागी इक्क हंढांयदा। नौ खण्ड नौ दर भरया भेख पखण्ड, भेख पखण्डी सार ना पांयदा। प्रगट होए विच वरभण्ड, मनमुख जीवां दंड लगांयदा। कलिजुग वंडण आया गंढ, गुरमुख विरले आत्म ठण्ढ रखांयदा। जगत विकारा आत्म हँकारा मनमुख जीवां सिर उठाई झूठी पंड, झूठे मार्ग भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी वरते कल, कलधारी आप अख्वांयदा। कलिजुग वरते कल, काल दुहाईआ। प्रगट होए अछल अछल्ल, अछल अछल्ल आप अख्वाईआ। वेखे खेल घड़ी घड़ी पल पल, जोती दीप जगे प्रबल, बजर कपाटी उच्चे पर्बत शब्द सिँघासण एका डाहीआ। सत्त सागरां वेखे जल, चौदां लोक रिहा मल्ल, अव्वां सव्वां डूंघी डल, भेव अभेदा भेव ना राईआ। सच सिँघासण साचा हल, सोहँ बीज रिहा बिजाईआ। सतिजुग साचे लग्गे फ़ल, भाग लगे काया डल, काया धरती आपे मवले, उलटी करे नाभ कँवले, अमृत झिरना आत्म रस एका मुख चुआईआ। मिले मेल प्रभ साँवल सँवले, जगत विद्या हीण गुरमुख बावल बवले, एका ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना रिहा रचाईआ। रचन रचाई जगत प्रभ, खेले खेल खिलारी। आप उठाए भगत जन, देवे नाम शब्द भण्डारी। भाग लगाए काया चोली साचे तन, दिवस रैण रहे खुमारी। भरम भुलेखा कढे जन, जो जन मंगे चरन द्वारी। साचे धाम आप वसाए। पुरख अबिनाशी दया कमाए। ना कोई दीसे छप्परी छन्न, जोत सरूपी डगमगाए। एका राग सुणाए कन्न, दो जहानी बेड़ा बन्न, रसना मुख ना कोई गाए। संत सुहेला इक्क इकेला सदा कराए धन्न धन्न, जै जैकार इक्क कराए। दर घर साचे शब्द संधेवे लावे संन्ह, दर दरवाजा गरीब निवाजा आपणा आप खुल्हाए। हरिजन आत्म ब्रह्म पारब्रह्म घर साचे जाए मन्न, एका जोती एका गोती एका हवन कराए। अमृत आत्म

सच सरोवर दुरमति मैल जाए धोती, जन हरि साचा हँस काग काग हँस हो जाए। शब्द फड़ाए साची सोटी, आप चढ़ाए उच्ची चोटी, गुरमुख विरला विच्चों कोटन कोटी कोट ब्रह्मण्ड आपे वंड गुरमुख साचे धाम सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे शब्द वर, सुरत सवाणी अन्त प्रनाए। अन्त कन्त प्रभ मेल, लोकमात होए जुदाईआ। हरिजन मेला हरि सज्जण सुहेल, प्रभ साची बणत बणाईआ। इक्क वसाए धाम नवेल, चार दिवारी कोई दिस ना आईआ। अचरज करे आपणे आपे खेल, जोत निरँकारी एका एक रंग महल्ल सच प्रकाश रही कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, अकाश अकाशां उप्पर आप समाईआ। उप्पर आकाश हरि बिराजे, तख्त ताज सुहाया। असुते प्रकाश करे प्रकाशे, आप आपणा प्रकाश कराया। आदि अन्त ना कदे विनासे, ना कोई जाप जपत आत्म रस पाया। आपे जाणे आपणा वड प्रतापे, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी घर सत्तवें आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच घर, साचा सुत शब्द दए उपाया। सुत शब्द हरि उपाए, जोती मात बणाईआ। पुरख अबिनाशी देवे वर, वरन गोती ना कोई बणाईआ। इक्क भण्डारा रिहा भर, अतोटी अतोट आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, वेखे खेल छेवें घर, सच समग्री इक्क टिकाईआ। सच समग्री हरि टिकाए, भरे शब्द भण्डारा। निर्मल जोत इक्ग्री इक्क वखाए, एका बख्शे चरन ध्याना। साची नगरी साचा धाम आपणा आप उपाए, आपे आप श्री भगवाना। पंचम घर खोल्हे दर, पवण मसाणी लए फड़, साचा झूला रिहा झुलाया। पंचम दर दर सुहाया। जोती शब्द पवण प्रभ मेल मिलाया। आपे वेखे अवण गवण, गवण अवण विच हरि समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत इक्क वर, पवण सुनेहड़ा रिहा घलाया। पंचम दर दर परवान। पुरख अबिनाशी होवे मेहरवान। तिन्नां जोती इक्क निशान। आपे बैठा नर हरि जोती राज राजाना शाह सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे चौथा घर, सृष्ट सबाई देवे वर, संत सुहेला इक्क ज्ञान। चौथे घर प्रभ आसण लाया। शब्द सिँघासण इक्क बणाया। त्रैगुण माया लए उपाया। आप आपणी रिहा बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जाणे जीव जन्त, आपणे रंग समाया। सति पुरख निरँजण एक, सृष्ट सबाईआ। जुगा जुगन्तर धारे पेख, आप आपणा रंग वटाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे रेख, सो पुरख निरँजण आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साची लाए मेख, हँ हँगता दए गंवाईआ। एका नेत्र सृष्ट सबाई वेख, सो साचा जाप जपाईआ। ना कोई दीसे औलीआ पीर शेख़, ईसा मूसा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग वखाए इक्क घर, सोहँ सो साचा जाप जपाईआ। मानस देही तुट्टा नाता, होया

शब्द सनेही। जोती जामा पुरख बिधाता, गुरमुख कराए साचे नेही। कलिजुग वेख अन्धेरी राता, माटी चाटी दिसे थेही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग आपे जाणे, ना कोई जाणे कथना जिहवी। जोती जामा भेख वटाया, गुरमुख साचे विच समाईआ। खेवट खेट आप अख्वाया, मात पित बेट कोई ना जाईआ। पंज तत्त आपणा आप लपेट वखाया, आवण जावण शब्द रूप दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सद बीस जोत जगाईआ। बीस सद प्रभ जोत जगाई। शब्द वजाया साचा नाद, बोध अगाध आप अख्वाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वक्त रिहा सुहाई। जोती जामा भेख न्यार, साचे घर कराया ए। जोत सरूप कर आकार, शब्द डंक वजाया ए। दहि दिशा इक्क उडार, दहि दिशा विच समाया। भरमे भुले जीव गंवार, कलिजुग माया पड़दा पाया ए। जोती जामा भेख न्यार, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा रंग वटाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग समाया ए। रोग सोग प्रभ हथ्थ, दया कमांयदा। शब्द चुगे जन साची चोग, दरस अमोघ दिखांयदा। रसना रस साचा भोग, अमृत आत्म साचा रस मुख चुआंयदा। जगत नाता तुटे होए विजोग, धुर संजोगी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मति मन बुध धीरज यति सति इक्क रखांयदा। हरि पाया घर आपणे, मिटया जगत अंदेसा। लेखा चुक्के जाप जपने, जोत निरँजण सदा सदा अदेसा। काया तपे ना माया तपने, दया कमाए नर नरेशा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, शब्द जगत साचा वर, मेल मिलाए वेस अनेका। कोटन कोट जुग गए बीत, भेव ना किसे राया। कोटन कोट ब्रह्मा शिव होए सीतल सीत, करोड़ तेतीसा देवी देव दिस किसे ना आया। कोटी कोट होए गुरुदुआरे मन्दिर मसीत, भय भीत खेल आपणी आप रिहा रचाया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणा आपे मीत, सृष्ट सबाई रिहा उपाया। सृष्ट सबाई हरि आप उपाई, आप उपावणहारा। अगणत अगणत महिंमा गणी ना जाई, जुग जुग जीव जन्त करे विचारा। लक्ख त्रिताली हज़ार बीस इक्क चौकड़ी लेख लिखाई मेट मिटावणहारा। चौदां मनवन्तर ब्रह्म ब्रह्म समाई, इकत्तर जुग चौकड़ी इक्क मनवन्तर लेख लिखारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी उत्पत, जुगो जुग जगत जोग ना कोई जाणे लेख लिखारा। गुरमुख सोहण बंक द्वार, मनमुख देण दुहाईआ। जन भगतां करे तन श्रृंगार, फूलन बरखा सीस लगाईआ। मनमुखां आत्म हाहाकार, आत्म विकारा रिहा सुणाईआ। दोहां मेला इक्क दरबार, अपे वेखे वेखणहार भुल्लया कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे मात वड्याईआ।

★ १८ चेत २०१३ बिक्रमी हीरा नंद दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ★

बाल अवस्था बाली बुध, मति साची जगत रखाईआ। शब्द सिँघासण चढ़या कुद्द, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। मन मनुआ तन कीता सुध्ध, कंचन रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीत इक्क वखाईआ। चरन प्रीत जगत गुरदेव, गुर मन्त्र शब्द जणाया। पारब्रह्म ब्रह्म साची सेव, जगत बसंतर दए बुझाया। जिह्वा रसना कथनी गाए जिहव, आत्म अन्तर मेल मिलाया। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए साचा थेव, आकाश प्रकाश अबिनाश कराया। मिले मेल अलक्ख अभेव, दाता वड देवी देव, स्वास स्वास लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल अञ्याणा चतुर सुघड़ स्याणा दर द्वार बंक सुहाया। बंक दुआरा दर हरि दान, जगे जोत रघुराईआ। एका झुल्ले शब्द निशान, साचा राह हरि वखाईआ। नाम बिठाए विच बिबाण, दो जहानां मलाह आप अख्वाईआ। चरन प्रीती बख्शे सच ध्यान, ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म जणाईआ। जगत रखाए, माण ताण, दर निमाणा जो जन सीस झुकाईआ। मिले मेल नर हरि पुरख भगवान, पीण खाण रसना गान, जिया दान देवणहार सर्ब अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल अवस्था नाम अधारे, पूर्ब कर्म जरम विचार, लहिणा देणा आपे आप चुकाईआ। लहिणा देणा देवणहार, हरि हरि पुरख समरथा। मंगे मंग शब्द अधार, नाम चढ़ाए साचे रथा। दर दुआरे करे ख़बरदार, देवे दरस अगम्म अपार, सगल वसूरा घर साचे लथ्था। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, एका बख्शे चरन प्यार, सर्बकल आपे समरथा। शब्द गुर जागे जगत जगांयदा। मेल मिलाए लिख्या धुर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। ना कोई जाणे देवत सुर, पति परमेश्वर इक्क अख्वांयदा। चढ़या रहे शब्द घोड़, पुरीआं लोआं वेख वखांयदा। लोकमाती धुर दरगाही आया दौड़, जोती जामा भेख वटांयदा। गुरमुखां आत्म लग्गी औड़, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। कलिजुग जीव वेखे परखे मिट्ठा कौड़, शब्द तेग हथ्थ उठांयदा। इक्क दुआरा नर निरँकारा जोत आकारा ना कोई जाणे लम्भा चौड़, शब्द सिँघासण हरि सुहांयदा। जगत मलाही बेपरवाही एका लाए शब्द पौड़, ऊँचा डण्डा विच ब्रह्मण्डा आपणा आप वखांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी अन्तिम कन्ढा, चारों कुन्ट भेख पखण्डा, गुरमति गुर मन्त्र लग्गी बुझाए तन बसंतर पंचम मीता नीकन नीका आत्म रस हिरदे वस राह साचा दस्स आपणा मेल मिलांयदा। शब्द गुर जुगा जुग ताज, जुगा जुगन्तर रीता। सृष्ट सबाई साजण आपे रिहा साज, लक्ख चुरासी परखणहारा आपे नीता। जन भगतां आदि अन्त जुगा जगंत रक्खे लाज, अमृत आत्म नाम निधान गुर चरन द्वार जिस जन पीता। मेल मिलावा कमलापात, शब्द चढ़ाए साचे रथ, सर्बकल आपे समरथ, जोती जोत सरूप हरि, जिस

जन किरपा देवे कर, काया करे ठण्ढी ठार सीतल सीता। सीतल धारा अमृत रस, गुर पूरा मुख चुआंयदा। एका एक प्रभ चरन टेक राह साचा दस्स, हउमे रोग गंवांयदा। कलिजुग माया ना लाए सेक, तन बुधी रहे सदा बिबेक, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, लेखा लिखणहारा लेख, आप दिस किसे ना आंयदा। दर दुआरा शब्द भिखारी ब्रह्मा विष्न महेष गणेश दाता सूरा जोती नूरा शब्द भरपूरा, साची वस्त एका झोली पांयदा। चतुर सुघड़ स्याण स्याणे मूढ़ मूढ़ा, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा, काया रंग चढ़ाए गूढ़ा, नाम पहनाए साचा चूड़ा, शब्द डोली इक्क वखांयदा। जगत नाता कूड़ कूड़ा, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आत्म देवे शब्द वर, सुरती शब्दी शब्द सुरत अकाल मूर्त नाद तूरत धुन आत्म मेल परमात्म बन्दी बन्द कटांयदा। बन्दी बन्द देवे कट्ट, कटणहार स्वामी। एका राग सुणाए साचा छन्द, निहकर्म करे निहकामी। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे कंध, सर्ब जीआं प्रभ अन्तरजामी। जोती जोत सरूप हरि, नाम चढ़ाए साचा चन्द, गगन मण्डल रवि ससि सितार ख़बरदार मिटे रैण अन्धेरी शामी। खेले खेला जगत खिलारी, कर कर भेख अवल्ला। गुरमुख साचे रिहा उभारी, मनमुख जीवां करे ख़बरदारी, पंच पंचायणी कराए हल्ला। शब्द ज्ञाना वड भण्डारी, आत्म जोत नर निरँकारी, जिस जन बख्शे चरन प्यारी, होए सहाई जल थला। काया कन्दर अन्ध अंध्यारी, गुर पूरे बिन कोए ना उतरे पारी, जीव जन्त चढ़ चढ़ थक्के, दिस ना आए महल्ल अटल उच्च अटारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, आप खुल्ह्राए बन्द किवाड़ी। बन्द किवाड़ी खोल्ह दया कमांयदा। निश अक्खर वक्खर आपे बोल, आपणे संग आप मिलांयदा। आपे बैठा रहे अडोल, डोल कदे ना जांयदा। सदा सुहेला एका तोले साचा तोल, तोलणहार आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी दर दर घर घर आत्म पड़दे रिहा फोल, पड़दा उहला ना कोई रखांयदा। गुरमुख विरला चरन प्रीती गुर पूरे चरन रिहा घोल, नाम अमोल वस्त झोली पांयदा। माणक मोती हरिजन साचे पुरख अबिनाशी आप विरोल, नाम निधाना श्री भगवाना वाली दो जहानां पुण छाण विच जहान आपणी आप करांयदा। एका राग सुणे सुणाए कान, शब्द वखाए हरिभगत निशान, झुल्ले झुलाए दर दरबान, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सिँघासण जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। रसना भोग हरि भगवान, गुर प्रसादी पाया। जीआं देवे दाता दान, माधव माधी मेल मिलाया। नाम अमोला पीण खाण, बोध अगाधी शब्द जणाया। गुरमुख विरले शब्द चढ़े सच बिबाण, नाद अनादी दर्शन पाया। आप मिटाए जम की कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत देवे जगत वर, लक्ख चुरासी फंद कटाया। भोग भगवन्त घर साचे लग्गे, लेखे लाए रास। जगत तृष्ना बुझे अग्गे, निज घर आत्म रखे वास।

दरस पाया गुर पूरे सरबगे, रसना गाया स्वास स्वास। वेल वधाई प्रभ साचे सिँघ बग्गे, गुरमुख काया कीनी रास। आपे फिरे पिछे अग्गे, खण्ड ब्रह्मण्ड विच ब्रह्माद। सरन सरनाई जो जन साची लग्गे, देवणहार गुर शब्द दाद। कलिजुग रैण अन्धेरी वा तत्ती वगे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेख वखाणे हर घट जाणे संत साध। दर दुआरा आस प्यास जगत तृष्ना, गुर पूरा दए बुझाईआ। जगत विकारा जूठी झूठी लाहे विसना, तन नाम शृंगार कराईआ। एका एक जणाए सच हदीसा, रोग सोग चिन्त मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे शब्द वर, आत्म रस साचा भोग, रसना हरि गुण गाईआ। मंगे मंग आत्म घर, वेख वखाणे साचा हरि, जीउ पिण्ड पिण्ड जीउ काचा, नौ दुआरे रिहा नाचा, अमृत आत्म ना मिल्या सीर। एका एक शब्द गुर वाचा, लक्ख चुरासी चुक्के डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे जगत वर, गुरमुख वखाए साजण साचा।

★ १८ चेत २०१३ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ★

गुरसिख दुआरा धन्न है, वज्जे शब्द अनाद। गुरमुख दुआरा धन्न है, वड वड्याई विच ब्रह्माद। गुरमुख दुआरा धन्न है, गुर पूरा ल्या लाध। गुरमुख दुआरा धन्न है, मिले शब्द साची दाद। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत जणाई बोध अगाध। हरिजन दुआरा धन्न है, मन तन खोज खुजाया। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, आत्म ज्ञान ब्रह्म पारब्रह्म जणाया। निर्मल जोत जगाए साचे तन, अन्ध अन्धेर रिहा मिटाया। राग सुहागी इक्क सुणाए कन्न, जगत तृष्ना रिहा बुझाया। जगत बेड़ा रिहा बन्नृ, आप आपणा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गऊ निमाणयां होए अन्त सहाया। गऊ गरीब निमाण, प्रभ साचे ओट रखाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, नाता बिधाता आप जुड़ाईआ। शब्द फड़ाए तीर कमान, साचो साच राह वखाईआ। दर घर साचे देवे माण, दर दुआरा इक्क वखाईआ। जगत विछोड़ा चुक्के काण, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लोकमात देवे वड्याईआ। वड वडी वड्याई, गुरमुख द्वारया। मिली जगत सच्ची सरनाई, प्रभ आत्म पाए सारया। घर साचे वज्जी वधाई, मंगलाचार इक्क करा रिहा। गहर गम्भीर गाउँणा चांईं चांईं, आत्म सीर इक्क पया रिहा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांही, धीरज धीर इक्क वखा रिहा। सदा सुहेला देवे ठण्ढीआं छाँईं, दर दहिलीज़ निवाज़ गरीब एका एक वखा रिहा। गुरमुख आत्म तन मन जाए भीज, सीतल धारा मुख चवा रिहा। जगत विचोला इक्क सुणाए साचा ढोला जगत कराए रीझ, तन शृंगार हरि निरँकार शब्द अपार करा

रिहा। वेखे खेल वारो वार, कलिजुग लहिणा देणा रिहा उतार, भाणा सहिणा सच्ची सरकार, साचा हुक्म सुणा रिहा। नेत्र नैण दरस साचे नैणा, आत्म धुन सच्ची धुन्कार, ना कोई जाणे रिख मुन पढ़ पढ़ थक्के वेद विचार, सृष्ट सबाई छाण पुण गुरमुख साचे संत वरोले। आत्म अन्दर आपे बोले। आदि अन्त कदे ना डोले। करे खेल अपर अपार, भाग लगाया काया चोले। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे वसे पड़दे ओहले। जगत भुलेखा भरम, प्रभ साचा मात रखांयदा। आपे जाणे आपणा कर्म, लिख लिख ना कोए सुणांयदा। जुगा जुगन्तर साचा धर्म, जुगा जुगन्त बणत बणांयदा। दूई द्वैती मिटे वरम, सतिजुग साचे जन्म दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख सुहाए इक्क दर, अलख निरँजण इक्क अलख जगांयदा। हरि अलख जगाए, मंगण आया चरन प्रीत। गुरमुख साचे वक्ख कराए, कलिजुग अचरज चलाई रीत। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, हरि दरस दिखाए किसे दिस ना आए देहुरे मन्दिर मसीत। वेखे अन्तिम हरिजन साचे वेख वखाए, इक्क सुणाए अनादी गीत। सृष्ट सबाई खाली हत्थ वखाए, अट्ठे पहर परखे नीत। गुरमुखां मेल समरथ आप मिलाए, अट्ठे पहर वसे चीत। नौ खण्ड पृथ्वी सति सरूपी नत्थ पवाए, ना कोई जाणे हस्त कीट। एका एक सतिजुग साचा रथ चलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुहाए पीतम्बर पीत। पीत पीतम्बर लाए छहिबर, अकल कला कल धारीआ। सृष्ट सबाई एका रैहबर, करे खेल न्यारीआ। सम्मत चौदां छेड़ छिड़ाए दरा ख़ैबर, आपणा गेड़ा आप गिड़ाईआ। मुगल पठाणी वेखे बहि दर, दर दरवेशा आप अख्वाईआ। शब्द सिँघासण साचे घर जगत कलामी नेह नेहकामी अन्तरजामी घट घट बूझ बुझाईआ। सोया मात जगत निधानी, माया सुरत ना आईआ। प्रगट होए हरि बलवानी, नाद तूरत इक्क वजाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्यानी, कूड़ो कूड़त वेख वखाईआ। शब्द उडाए इक्क बिबाणी, धूढ़ो धूढ़त रिहा उडाईआ। गुरमुख साचे आत्म अन्दर एका गाण, मूढ़त मूढ़ रहे कुरलाईआ। मेल मिलावा साचे काहन, सुरती राधा कृष्न मिलाईआ। आपणा कीता आपे पाण, चौदां हट्ट सच दुकान, तीर्थ तट्ट होए वैरान, घट घट लेखा रिहा लिखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, आपे करे जाण पछाण, सृष्ट सबाई आपे वेख वखाईआ। वेखण आया शब्द गुर, जगत दमामा वजे। एका चढ़या शब्द घोड़, जन भगतां पड़दे कज्जे, धुर दरगाही आया दौड़, लक्ख चुरासी अन्तिम वेखे जो घड़या सो भज्जे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत इक्क जनां सुणाए राग कन्ना, आत्म मोघी दरस दिखाए, साचा हज्ज कराए मक्का काअबा एका हज्जे। मक्का काअबा हक्क ज़लाब, नबी रसूलां रिहा जगाईआ। साचा मेला दो दोआब, एका किल्ला रिहा वखाईआ। कोए ना झल्ले नेत्र ताब, एका इक्क

प्रकाश वखाईआ। आपे जाणे पुंन स्वास, आबे हयात हथ्थ रखाईआ। लहिणा देणा चुकाए अन्त हिसाब, लिखणहारा हरि रघुराईआ। संग मुहम्मद कढ्ढे इक्क किताब, चार यारां रिहा सुणाईआ। प्रगट होए हक्क ज़नाब, जगत उधारा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे जगत निमाणे, दर द्वार करे परवाने, परमानंद विच समाईआ। दर दुआरा वेख, दया कमांयदा। संग मुहम्मद वेखे रेख, यार चार नाल उपांयदा। पकड़ उठाए औलीए पीर शेख़, दस्तगीर हकीर शब्द जंज़ीर इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तन छुहाए चोला नील, जगत मलंग आपे आप बण जांयदा। चोला नीला नीली धार। वेख वखाणे संग मुहमन्दी चार यार। धरत मात वेख वेख कम्बदी, अन्तिम पैणी कलिजुग मार। उम्मत नबी रसूल दी निज्ज मेरे घर जम्मदी, दिवस रैण कढ्ढे हाढ़। वेखे खेल पुरख अगम्म दी, आप उठाई अगम्मी धाड़। मेटे रेख हड्ड मास नाड़ी चम्म दी, जोती अग्नी देवे साड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख बणाए साचे लाड़। धरत मात करे पुकार, रो रो धाहां मारदी। प्रभ साचे सुण पुकार, कलिजुग होणा अन्त ख्वार, माया राणी पासा हारदी। एका एक सच दरबार, सच न्याउँ सच्ची सरकार, सदी चौधवीं वहिंदी धार, वेखे खेल आर पार दी। बीस बीसा कर आकार, हरि जगदीसा डंक अपार, राउ रंकां करे ख़बरदार, करे खेल परवरदिगार दी। चारों कुन्टां हाहाकार, गुरमुख विरले करे जै जैकार, मिल्या मेल पुरख भतार, सोलां कलीआं तन शृंगार दी। कलिजुग देवे पैज संवार, दोवें भुजा आप उभार, गुरमुख साचे संत जनां दिवस रैण नेत्र खोल्ह, हिरदे अन्दर साचे बोल, शब्द सरूपी अवाजां मारदी। आपे वसे सदा कोल, बैठी रहे जगत अडोल, सृष्ट सबाई रही तोल, जोती खेल अकल अकाल दी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां मेल सच घर, साची वेल दीन दयाल दी। हरि साजन जग सज्जणा, जुग जुग मीत मुरार। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, इक्क वखाए द्वार बंक द्वार। पी अमृत दर घर साचे रज्जणा, मिले भगत भण्डार। कलिजुग काया पड़दा कजना, ना होए अन्त ख्वार, जो घड़या सो भज्जणा, शब्द खण्डा प्रभ रिहा हुलार। दर दुआरा सभ ने तजणा, ना कोई दीसे महल्ल अटार। एका ताल जगत वज्जणा, सृष्ट सबाई हाहाकार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणी धार। हरि साजण जग मीत, जोत जगांयदा। जुगा जुगन्तर साची रीत, दिस किसे ना आंयदा। हरि जन विरले एका बख्शे चरन प्रीत, आप आपणी दया कमांयदा। जीवां जन्तां परखणहारा नीत, नीत अनीता सद अख्वांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी रही बीत, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुख विरले काया सीतल सीत, अमृत धारा मुख चुआंयदा। आप जाणे हस्त कीट, शाह सुल्तानां भिख मंगांयदा। सृष्ट सबाई मीत, खेवट

खेट साचा बेड़ा नाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया नगर साचा खेड़ा आपणा आप वसांयदा। काया खेड़ा वस्सया नगर, प्रभ साचे जोत जगाईआ। निर्मल कर्म होया उजागर, ज़ात पाती भेव चुकाईआ। जन भगत बणाए नाम सुदागर, सच वणजारा इक्क अख्वाईआ। शब्द जणाई काया गागर, आत्म धुन रिहा उपजाईआ। मिले नाम रत्न रती रत्नागर, रंग गुलाला रिहा चढ़ाईआ। काया डूंघी गहर गवर, सत्त सागर नीर सरोवर सच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरिजन साचे साचे घर इक्क वसाए शब्द महल्ला। शब्द महल्ला भगत अपार, प्रभ साचा मात बणांयदा। नाम सरूपी चार दिवार, दहि दिशा मुख रखांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, दिस किसे ना आंयदा। पंचम रखे बाहर धाड़, मनमुख झूठे धन्दे लांयदा। गुरमुख साचे संत सुहेले दर घर साचे देवे वाड़, आप आपणा तरस कमांयदा। आपे होए पिछे अगाड़, शब्द घोड़े देवे चाढ़, जगे जोत बहत्तर नाड़, अन्धेर अज्ञान जगत अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम धन्ना, रंग रंगीला मोहण माधव एका रंगण रंग चढ़ांयदा। रंगण रंग हरि चढ़ाए, एका एक मजीठ। दूजा दर ना मंगण जाए, दर घर साचा इक्क बसीठ। हरिजन साचा साचे अंगण आप रखाए, दिस ना आए हरि अनडीठ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख हरि, लक्ख चुरासी वेखे परखे कौड़े मिट्ठे रीठ। वेखणहारा वेखण आया, कलिजुग रैण अंध्यारी। नेत्र लोचण साचे पेखण आया, सोलां कलीआं कर तन शृंगारी। कलिजुग रेख मेटण आया, फड़ शब्द दो धारी। गुरमुख साचे संत सुहेले शब्द दुशाले आप लपेटण आया, करे कराए साची कारी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत अवल्लड़ी बन्ने धारी। जगत अवल्लड़ी बन्ने धार, धारी नर नरेशया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, दर दर घर घर गुर दस्मेस्सया। पुरीआं लोआं ख़बरदार, आप जगाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशया। पकड़ उठाए संग मुहम्मद चार यार, काली धारी दर दरवेस्सया। ईसा मूसा करे कराए ख़बरदार, दाता जोधा सूरा नर नरेशया। लोआं पुरीआं एका मारे शब्द मार, ब्रह्मा ब्रह्म करे आदेस्सया। शिव शंकर दर रिहा पुकार, संग रलाए गणपत गणेशया। सुरपति राजा इन्द रोवे धाहां मार, नाता तुट्टे देवी करोड़ तेतीस्सया। वरभण्डी जेरज अंडी हाहाकार, गा गा थक्के दन्द बतीस्सया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, माया पड़दा राग छतीस्सया। अंज़ील कुरान ना पायण सार, ना कोई जाणे सच हदीस्सया। वेद पुराणा आई हार, प्रगट होए हरि जगदीस्सया। खेले खेल विच संसार, खेलणहार बीस इकीस्सया। चार वरन कराए एका धार, शब्द झुलाए साचा सीस्सया। प्रगट होए नर निरँकार, राज राजानां खाली करे खीस्सया। इक्क सुहाए दर दरबार, चारों कुन्ट जगत इकीस्सया। सृष्ट सबाई एका धार आप

चलाए, दूसर ना कोई करे रीस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा पीसण पीस्सया। सतिगुर सति सरूप समाया। प्रगट होए अन्ध कूप, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाया। दो जहानां शाहो भूप, शाह सुल्तानां आप अख्वाया। एका एक सति सरूप, जन भगतां हिरदे विच समाया। किसे दिस ना आए रंग रूप, अनूपा हरि रघुराया। गुरमुख उपजाए सच सपूत, पिता मात आप अख्वाया। वेख वखाणे चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। हरिजन साचे साचा लाहा रहे लूट, मनमुखां भेव ना राया। नौ दुआरे रही फूट, अमृत जाम ना किसे प्याया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरि जन साचे संत दुलार आपे रिहा जगाया। हरि संत जगाए आप प्रभ, आपणी दया कमांयदा। उलटी करे कँवल नभ, अमृत मुख चुआंयदा। पंज विकारा देवे दब्ब, शब्द जैकारा करे सभ, काया मण्डल वेख वखांयदा। दरस दिखाए प्रगट झब्ब, हरि संत सुहेले आपे लभ्भ, निर्मल जोती कर आकार, शब्द कराए इक्क जैकार, साचा डंक वजांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी धुँदूकार, जीवां जन्तां हाहाकार, जूठा झूठा पसर पसार, सच सुच्च ना कोई रखांयदा। शब्द फड़ प्रभ तेज कटार, प्रगट होए विच संसार, नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां वंड वंडांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वार, कल्गी तोड़ा अपर अपार, जोती जोड़ा शब्द सरदार, वेख वखाणे नारी नार, लक्ख चुरासी भेव खुल्लांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, संत सुहेला साचा यार, जन भगतां बख्शे चरन प्यार, एका नाता जोड़ जुड़ांयदा। हउमे हँगता रोग निवार, साची संगता दर दरबार, जो जन आए नाम मंगता, करे कराए खेल वणज वापार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, अगाध बोधी बोध अगाधी एका एक जणांयदा। शब्द सुनेहड़ा लै के आया, धुर दरगाही साचा दाता, लक्ख चुरासी वेख वखाणे घनकपुर वासी, शब्द स्वासी लए बचाया। सचखण्ड वेख ब्रह्मण्ड जेरज अंड भेख पखण्ड, कलिजुग अन्तिम दए मिटाया। साचा नाम एका वंड, नौ दुआरे खण्ड खण्ड, दर घर साचे बूझ बुझाया। हथ्थ फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर अमृत ताल इक्क सुहाया। हरि मन्दिर हरि जोत जगाए, अमृत सीर भरया। वरन गोत कोई दिस ना आए, एका देवे शब्द सीर चुकाए डरया। आप आपणे रंग रंगाए, जन साचे संत तराए, दो जहानी साचा देवे वरया। जगत दुआरा लँघ वखाए, शब्द मृदंग इक्क वजाए, भाग लगाए साचे घरया। चाल बेहंग इक्क रखाए, शब्द घोड़ा रिहा दौड़ाए, जोती जोड़ा मेल मिलाए, ना जन्मे न कदे मरया। जन भगतां भुक्ख नंग कटाए, साचा संग आप निभाए, अमृत आत्म गंग वहाए, दुरमति मैल देवे हरया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, संत सुहेला देवे वर, सरन सरनाई जो जन पड़या। सरन पड़े सरनागत, प्रभ वेखणहार दातारा। दर दुआरे

नाम मांगत, कराए वणज सच्चा वपारा। एका एक चढ़ाए साची रंगत, ना कोई रंगे रंग ललारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत जनां देवे चरन प्यारा। चरन प्रीती नाता जोड़, मेला धुर दरगाही दा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, दर दुआरे पार करांयदा। अन्तिम अन्तिम आपे बौहड़, शब्द दुआरे लाए पौड़ा, उच्चे टिल्ले काया किले कोट गढ़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दरस अमोघा धुर संजोगा आपणा आप वखांयदा। देवे दरस धुर संजोग, प्रभ साचा मेल मिलाया। हउमे चुक्के जगत रोग, अचरज खेल खिलाया। जगत नाता तुट्टे विजोग, सज्जण सुहेला साचा मीता, दर घर साचे दर घर एका पाया। आपे वसे रंग नवेल, परखणहारा नीतन नीता, द्वार बंक इक्क सुहाया। शब्द चढ़ाए साचा तेल, भगत जनां प्रभ मीतन मीता, जोत निरँजण रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन नेत्र पाए अंजन, खेल कराए अपर अपारी, नाम खुमारी एका रिहा चढ़ाया। नाम खुमारी दिवस रैण, गुरमुखां हरि चढ़ांयदा। नाता तुटे भाई भैण, साक सज्जण सैणा कोई दिस ना आंयदा। रसना किसे ना सके कहिण, आत्म रस निज घर साचे मुख चुआंयदा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, एका राह साचा दस्स, गुरमती तत्त बुझांयदा। दर दुआरे मेल मिलावा नस्स नस्स, पुरख अबिनाशी हिरदे वस, आप आपणी बणत बणांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी मस्स, करे प्रकास कोटन रवि ससि, तेजन भाना हरि भगवाना, शब्द उठाए तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। हरिजन मेल हस्स हस्स, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना, चरन ध्याना इक्क वखांयदा। आत्म ब्रह्म ज्ञान, शब्द जणाया। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। कलिजुग सेक ना लग्गे तन, पंचम डन्न ना लाया। भरम भुलेखा कढ्ढ जन, नौ दुआरा जो जन फिरे हलकाया। इक्क वखाए सच्चा नाम धन्न, सच ख़ज़ाना आपणा आपे रिहा छुपाया। आत्म राग सुणाए कन्न, अनाद अनादी धुन उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई वेख हरि, जोती जोत रिहा उपजाया। लक्ख चुरासी गावे थांउँ थाँईं, साचा राह दिस ना आया। हरिजन साचे संत सुहेले आप उठाए फड़ फड़ बांहीं, धर्म अखाड़ा इक्क वखाया। दो जहान देवे ठण्ढीआं छाँईं, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां एका एक समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी आपे बणत बणाया।

सर्बकला समरथ, सर्ब समाया। आपे जाणे आपणा रथ, आपे आप रिहा चलाया। चौदां लोकां रिहा मथ, दिस किसे ना आया। लोआं पुरीआं रिहा वस, डोरी आपणे हथ्थ रखाया। शब्द चलाए साचा रथ, सुर नर रिहा जगाया। दो जहानी एका वत्थ, एका अक्खर रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वेसी वेस वटाया। सर्बकला समरथ, सर्ब घट वास्सया। खेले खेल दस दस, हरि साचा शाहो शाबास्सया। देवी देवत गुर पीर साध संत किसे ना आवे वस, साचा मेल ना किसे मेलया। लक्ख चुरासी रिहा झस्स, आपे वसे रंग नवेलया। तीर निराला एका कस, मेट मिटाए गुर गुर चेलया। चरन दुआरे रवि ससि, ना कोई दूसर सज्जण सुहेलया। कलिजुग रैण अन्धेरी मस, खेले खेल अचरज इक्क इकेलया। चौदां लोकां राह एका दस्स, सोहँ चढ़ाए शब्द साचा तेलया। लोआं पुरीआं रिहा नस्स, दिवस रैण ना होए विहलया। एका रूप वखाए स्वच्छ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर्म दुआरे वेखे जेल्हिआ। सर्बकला समरथ दो जहानया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस जन देवे दरस महानया। पंच विकारा देवे मथ, मेट मिटाए पंज शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चौदां लोक इक्क शलोक प्रभ बन्न्हण आया साचा गानया। साचा गाना नाम निशानी, धुर दरगाही लै के आया। शब्द सरूपी मारे कानी, तख्त ताज शाह शहाना साचे बहि के आया। एका पद रखाए साचा निरबाणी, काल महांकाल दीन दयाल चरन भिखारी लै के आया। त्रैगुण माया तोड़ जंजाली, शाह कंगाला वेख वखाया। तत्त तत्त प्रभ सुरत संभाल, पंचम पंझी दए हिलाया। नौ खण्ड पृथ्वी बिरध बाल जुवान, सूरत मूर्त दए मिलाया। अमृत आत्म वेखे ताल, कवण द्वार रिहा सुहाया। दर घर वजे एका छाल, हँस काग रिहा उडाया। एका एक सच्चा धन माल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोकां देवे झोक, कोई ना सके कलिजुग रोक, आपणे भाणे विच समाया। सर्बकला समरथ, गरीब निवाज्या। शब्द चढ़ाए साचे रथ, आप आपणा साजन साज्जया। लेखा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग देवे अन्तिम दाज्जया। हरि संत सुहेला जिउँ रामा घर दसरथ, शब्द सरूपी मारे आवाज्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोक चौदां हट्ट, खेले खेल बाजीगर नट, आप रचाए आपणा काज्जया। चौदां लोकां एका धार, प्रभ साचा मात वहांयदा। ना कोई जाणे जन्त गंवार, साध संत भेव ना पांयदा। आकाश पाताली रिहा विचार, गगन गगनंतर विच समांयदा। दीपक थाली कर उज्यार, गुरमुख साचे जोत जगांयदा। शब्द सरूपी साचा पाली, गुरमुख साचे करे रखवाली, जगत अवल्लड़ी चाल चलांयदा। दोवें हथ्थां रक्खे खाली, लक्ख

ਚੁਰਾਸੀ वेखे परखे काया फ़ल डाली, सोहँ नाल हिलांयदा। जोत निरँजण इक्क अकाली, धुर दरगाही शब्द दलाली, पवण उनन्जा रिहा पाली, धर धरती वेख वखांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी काली, चौदां हटां वेखे खाली, सच वणजारा नाम अधारा, कलिजुग माया झूठी छाया साध संत कोए दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोकां वेख दर, एका हट एका घाट ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, काया वेखे साचा हट्ट, जोती नूर लट लट, एका दीप जगांयदा। चौदां लोक चौदां रंग, प्रभ साचा आप सुहांयदा। शब्द घोड़े कस तंग, साचा राह वखांयदा। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, नाम मृदंग इक्क वजांयदा। विच आकाशां रिहा लँघ, राह विच ना कोई अटकांयदा। भूअलोक प्रभ रिहा मंग, शब्द जणाई ना कोए सुणांयदा। दूवरलोक प्रभ रिहा मंग, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। स्वर्गलोक प्रभ वेखे जंग, कलिजुग जड़ उखड़ांयदा। महरलोक कलि होए नंग, कोए ना संग निभांयदा। जपलोक जिउँ काची वंग, अन्तिम भन्न वखांयदा। तपलोक कलि डंग, विस विसना ना कोए लुहांयदा। सतिलोक प्रभ आपे लँघ, साची रंगण रंग चढ़ांयदा। शब्द डोरी इक्क पतंग, प्रभ साचा हथ्थ उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका रंग समांयदा। एका रंग हरि समाया, कलिजुग तेरी धारया। सत्तां लोकां वेख वखाया, उडे शब्द उडारया। सत्तां लोकां विच समाया, ना कोई जाणे ब्रह्मा ब्रह्म विचारया। शब्द शलोका इक्क रखाया, चारे वेदां वसे बाहरया। साची नौका इक्क चलाया, खाणी बाणी ना पावे सारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, एका राह आप वखाया। सति लोक प्रभ बन्ने धार, साची बणत बणाईआ। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती मात जगाईआ। शब्द डंका अपर अपार, देवत देव हरि नहिकेव, सभ घट रिहा समाईआ। आपे जाणे आपणी कार, दिस किसे ना आईआ। करे कराए खबरदार, अट्ठे पहर पहरेदार, एका डंक रिहा वजाईआ। कलिजुग मिटे काली धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत्त आकाशा जोत प्रकाशा एका रंग वखाईआ। एका रंग हरि वखाउँणा, साची बणत बणांयदा। पाताल आकाशा विच समाउँणा, जोती नूर उपांयदा। राग रागणी एका गाउँणा, भेव अभेदा अछल अछेदा अछल छल करांयदा। ना कोई जाणे कथे कहे कितेबा, जिह्वा रसन ना किसे गाउँणा। ना कोई भईआ ना कोई बेबा, देवी देव ना किसे ध्याउँणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, आपणे रंग समाउँणा। सति सतिवादी सति पुरख, सप्तम रंग रंगाया। आदि आदि आदि लाल सुरख, भूषण बस्त्र रिहा तन पहनाया। आपे नारी आपे पुरख, आपे आप रिहा उपाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, एका रंग समाया। दीपक चौदां जोत जगाई, चौदां लोक

अन्धेरा। गुरमुख विरले होए रुशनाई, लक्ख चुरासी भरमा डेरा। हरिजन साचे इक्क कुड़माई, जीव जन्त चुरासी गेड़ा। आत्म घर वज्जे वधाई, हरिभगती भगत निबेड़ा। मन मति करे अन्त जुदाई, उजड़े काया खेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोक एका हट्ट साचा रिहा खुल्हाई। दीपक चौदां कर प्रकाश, प्रकृति कर्म कमाया। आपे अन्दर कर कर वास, निवास निवासा आप अख्वाया। आपे पाए मण्डल रास, सच समग्री इक्क रखाया। आपे वेखे दासी दास, दासन दास आप अख्वाया। आपे जाणे पृथ्वी आकाश आकाश पातालां विच समाया। सत्तां करे एका वास, एका राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा रिहा लिखाया। लेख लिखाए लिखणहारा, होए अन्त जुदाईआ। अतल लोक प्रभ पावे सारा, दस हज़ार जोजन वेख वखाईआ। वितल लोक प्रभ मारे नाअरा, राकश दैंत दए हिलाईआ। सिथल लोक प्रभ इक्क जैकारा, बल राजा दए उठाईआ। रसातल लोक प्रभ इक्क अधारा, सूरज चन्द कोए दिस ना आईआ। लोक तलातल धुँदूकारा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। लोक महातल वेख विचारा, अगम्म अगम्मी भेव ना राईआ। पाताल लोक प्रभ हरि आपारा, जल जल धारा इक्क वखाईआ। जल जल धारा पार उतारा, धरती कँवल मुख चुआईआ। धरती धवल करे पुकारा, हरि वेखे वेख वखाया। एक एका मारे उछाला, सत्त लोकां दए मिटाईआ।
६६२ लोकमात मार झात, करे खेल अपर अपारा, निहकलंका डंका इक्क वजाईआ। चौदां हटां वेख पसारा, काया मटा बणत ६६२
०५ बणाईआ। तीर्थ तट्टां पार किनारा, ताल सुहावा इक्क वखाईआ। जोगी यती जटा ना कोई दीसे, जोती जोत सरूप हरि, ०५
आप आपणी जोत धर, एका एक एका रंग वखाईआ। चौदां लोक जगत प्रकाश, भगतन तन समांयदा। हरिजन वेखे काया रास, ब्रह्मण्ड खोज खुजांयदा। ब्रह्मण्ड पिण्ड जन साची रास, इंड इंड आप अख्वांयदा। आदि अन्त ना जाए विनास, सागर सिन्ध ना कोए रुढ़ांयदा। ना कोई वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, पिता पूत बिन्द ना कोई उपजांयदा। ना कोई जाणे पवण स्वास, हड्ड मास ना कोई दिसांयदा। सर्ब गुणा आपे गुणतास, हरि गुण रूप समांयदा। चौदां लोक पूरन करे आस, पूरन ब्रह्म अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम करे नास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोक वेख वखांयदा। चौदां लोक मात किनारा, कलिजुग अन्त वखाया। संग मुहम्मद चार यारा, प्रभ लेखा रिहा चुकाया। मारे तीर शब्द कटारा, भरम भुलेखा रिहा गुवाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, अमाम मैहन्दी नाउँ रखाया। अल्ला हू लगाए एका नाअरा, दिशा लहिंदी वेख वखाया। आपे होए शाह सवारा, जल थलां पार कराया। उचां वेख इक्क मुनारा, कुतब गौंस कोए दिस ना आया। जगत मजौरी हाहाकारा, साचा गौरी दिस ना आया। परखे लाल सच्चा जौहरी, वेख वखाणे सृष्ट

सबाया। कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, आप आपणा मुख छुपाया। अल्ला राणी करे चोरी, शब्द पल्लू ना किसे फड़ाया। कलिजुग काला आपणे संग जाए तोरी, संग मुहम्मद संग निभाया। अहिमद फड़ी साची डोरी, शाह भी नाल सुहाया। पुरख अबिनाशी चढ़या साची घोड़ी दर दरवाज़ा रिहा खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोकां एका धार, लक्ख चुरासी पावे सार, आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त जाहर भेव छुपाया। चार यारी संग मुहम्मद एका मता पकाया। अन्त ख्वारी कलिजुग मलाह, धीरज यता ना कोए धराया। मौत लाड़ी फेरे बुहारी, धर्म राए सिर साचा हथ्थ टिकाया। पुरख अबिलाशी करे कारी, साची सेवा रिहा लगाया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, अन्दर मन्दिर मस्जिद काअबा दो दो आबा शाह ज़नाबा हथ्थ रबाबा भेव अभेदा रहण ना पाया। ना कोई पुंन ना स्वाबा, पाप संताप ना कोई अज़ाबा, आपे मारे आपे लए जिवाया। ना कोई मक्का ना कोई काअबा, उम्मत नबी रसूल दी सम्मत उन्नी एका अन्तिम वेखे खवाबा, सोहँ शब्द प्रभ मारे अवाज़ा, ना सके कोई बचाया। आपे आवे आपे जावे वसे विच गैबा, काला वेस दर दरवेश मुख नकाब हक्क ज़नाब शब्द ताजी मारे गाज़ी, करे हज्ज प्रभ साचा हाज़ी, कोई नाज़ी दिस ना आया। सृष्ट सबाई आपे रिहा साजना साजी, कलिजुग तेरी अन्तिम वेखे बाजी, ना कोई मुल्लां ना कोई काज़ी, ना कोई रोज़ा बांग स्वांग ना मारे वाज़ी, हक्क मुसल्ला नूर अलाही अल्ला इक्क इकल्ला, प्रभ मेल मिलाए जल थला, थल जलां विच समाया। सोहँ फड़या तिक्खा भल्ला, नौ खण्ड दुआरा एका मल्ला, सत्तां दीपां जोती हल्ला, आपणा आप कराया। गुरमुख विरले आप फड़ाए आपणा पल्ला, दस्म दुआरी दर घर साचा लोकमात जिस जन आपणा मल्ला, दूई द्वैती मिटे सल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले इक्क दर, आत्म सेजा रुत्त बसंती फूलन सेजा साचा कन्ती आपणी हथ्थीं रिहा विछाया। सच मुहम्मद साचा यार, बेऐब परवरदिगारया। चौदां लोक आपे वेखे कर ख्वार, उप्पर नीचे हाहाकारया। ना कोई दीसे मीत मुरार, ना कोई बणे मात सहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां चौदां लोक शब्द सुणाए इक्क शलोक, इक्क कराए जै जैकारया। जै जैकारा होए मात। सोहँ शब्द चढ़े सच्ची प्रभात। पन्दरां कत्तक कलिजुग मिटे अन्धेरी रात। पुरख अबिनाशी प्रनाए संगत, गुरमुख बणाए सच बरात। सम्मत सोलां तेरा वक्त, हरि साचा बख्शे साची दात। भुल्ली लोकाई विच जगत, भरमे भुल्ले ज़ात पात। अन्त जुदाई ना कोई होए भगत, गुर पीर ना पुच्छे कोई वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वज्जे वधाई, गुरमुख साचे सच सरनाई, आप आपणी गोद लए उठाई, आपे होए पिता मात, पन्दरां कत्तक कन्ती केत। चरन छुहाए मंडी सकेत। धारी

नाम वेखे अमृत जाम किस रक्खया काया खेत। अन्तिम लेखा लिखे तमाम, रुत्त बसंती ना रहे चेत। गुरूआं पीरां अन्धेरी शाम, प्रगट होया प्रभ नेतन नेत। पल्ले ना दिसे अन्तिम कोई दाम, साचा शब्द ना मिल्या खेवट खेट। खाली दिसे साधां संतां चाम, अग्नी अग्ग काया मघ्ठे महीना जेठ। रसन आहार विकार झूठा तम, कलिजुग माया पुरख अबिनाशी भन्ने कौड़े रीठ, नेत्र नीर वहायण छम्म छम्म, गुर, मन्दिर अन्दर कोए ना लए दम, कोए ना रखे साया हेठ। मानस देही पए जम्म, लेखा लग्गा ना काया चम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, एका बख्शे चरन ध्यानया, दर दर फिराए राजे राणया, किसे हथ्थ ना आए वड वड सेठ। पन्द्रां कत्तक कन्त प्यार। गुरमुख साचे संत लए उभार। वेख वखाणे जीव जन्त देव दंत यख सुर हरि अवतार। आप बणाए आपणी बणत, पति पतिवन्त साचा यार। महिंमा जगत गणत अगणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रवे करतार। कवण लिखारा लिख्त है, कवण करे ज्ञान। कवण जाणे खेल भविख्त है, वेखे गुण निधान। सिख्या सिक्खी सिक्खी सिख्या गुण गणंत है, आपे जाणे करे पछाण। प्रभ खेले खेल बेअन्त है, जुगा जुगन्तर साची काण। जोती जोत सरूप हरि, आपे गुरमुख आपे संत है, आपे भगत आपे भगवन्त है, आपे पंचम मीता विच जहान। मिले मेल इक्क भगवाना। सुरत सवाणी मंगे शब्द हाणी, धुर दरगाही एका दाना। अमृत आत्म ठण्ढा पाणी, नाद अनादा साचा गाना। दर घर साचे पद निरबाणी, एका एक सच तराना। गुरमुख साचा दर घर साचे आपे सद बन्ने नाम हथ्थीं गाना। हरि शब्द प्याए साची मध, जगत विकारा देवे मथ, नाम दान सच खज़ाना। दसवीं गली पार किनारा एका हद्द, खोल्हे सच दुकाना। पुरख अबिनाशी घट घट वासी काया मन्दिर अन्दर डूंघी खड्ड, ना कोई दीसे उच्चा लम्मा कद्द, भाग लगाए गुरमुख तेरी साची यद्द, नेत्र नैण लोचन नैण नेत्र काया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे दरस दर, दरसन पेख चुक्के गेड़ा, लक्ख चुरासी फंद कटाना। आवण जावण मिटे गेड़ा, जम की फाँसी रिहा तुड़ाईआ। आपे करे हक्क निबेड़ा, चरन दासी जो अख्वाईआ। सोहँ चप्पू नाम लगाया, आप चलाए आपणा बेड़ा, रसना जाप ना कोई जपाईआ। भाग लगाए काया नगर खेड़ा, खेवट खेटा मात पित पिउ बेटा पित पूत आप अख्वाईआ। आपे ताणा सूत्र पेटा, मूर्ख मुग्ध अज्याण तराए जट्ट जटेटा, जगत ज्ञान ना कोए सुणाईआ। शब्द दुशाले साचे पट लपेटा, आपणी भुजा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, हिरदा सोध शब्द जणाई बोध अगाध सुरत सवाणी आप प्रनाईआ। सुरत सवाणी आप प्रनाए, कन्त सुहागी एका साचे हाणी मेल मिलाए, चरन कँवल जन आप रखाए टेका। खाणी बाणी कोई सार ना

६६५ ०५

पाए, कवण दुआरे वसे हरि बिबेका। अंजील कुरानी रहे कुरलाए, वेद पुराणी हाए हाए, जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की जगत कतेबा। सति पुरख निरँजण सार ना पाई, आत्म घर ना वज्जी वधाई, जोती जोत सरूप हरि, जोती नूरा सर्ब गुण भरपूरा, नेत्र नेत किसे ना पेखा। आसा मनसा पूर, शब्द जणाईआ। जोत सरूपी हाज़र हज़ूर, दूसर कोई दिस ना आईआ। आपे दाता जोधा सूर, आपे शब्द तूर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई दिसाए कूड़ो कूड़, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का कौस्तक मनी वड वड धनी जिस जन एका रिहा छुहाईआ। मस्तक धूढ़ी जगत रेखा, कलिजुग दए मिटाईआ। पार कराए मूर्ख मूढ़ी, काया रंगे रंगण गूढ़ी, उतर कदे ना जाईआ। आवण जावण पतित पावन, भेखाधारी भेख बावन लक्ख चुरासी कटे जूड़ी, जोग जुगत ना कोई दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म खोल्हे बन्द दर, दर दरवाज़ा गरीब निवाजा, आप आपणा साजन साजा, चार द्वारी बंक द्वार, ना कोई दीसे पसर पसार, उच्च महल्ल अटल अपार, आपे कुंडा रिहा लाहीआ। मंगे शब्द प्यार दस्तार साची प्रभ साचा सीस बन्न्हाउँण लग्गा पग्गा। काया माटी दिसे काची कच्च, कंचन रूप वटाउँण लग्गा। पंच पंच द्वार रहे नाची, पंचम पंचां मेट मिटाउँण लगा। पंचम पंच जनां इक्क साची पंचम राग, पंचम शब्द धुन आत्मक इक्क उपजाउँण लगा। पंचम पंच प्यारा रिहा वाची, पंचायण मेल मिलाउँण लग्गा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म जोत जोत जगाउँण लगा। जगे जोत भगत वधाई होवे, निर्मल बुध विच संसार तेरी। सतिगुर सावन नाल कुड़माई होवे, सिँघ भगवान सुलखणी नार चेरी। दिवस रैण ना कदे जुदाई होवे, भरमां कंध ढाहे ढहि ढेरी। मन्दिर अन्दर इक्क रुशनाई होवे, एका एक वखाए सञ्झ सवेरी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए साचे दर, वेख वखाए नेरन नेरी। जुड़या जोड़ जुड़ाया गुर पूरे, जोग जुगत इक्क वखाईआ। पंचम शब्द चढ़ाया साचे घोड़े, पंचां दूतां रिहा दुड़ाईआ। होए मेल चढ़े जगत तेल दिन रहे थोड़े, दिन दिहाड़े दरस दिखाईआ। शब्द गुर साचा हरि जन हिरदे वाचा आदि अन्त सदा बौहड़े, ना होवे कदे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कर्म रिहा कमाईआ। जुड़े जोड़ मेल समरथ साईं, आसा मनसा पूरन पुंनीआ। देवे दरस अगम्म अगम्म सभनी थाँईं, हरि टिकाए शब्द रखाए साची चुन्नीआं। काया गगन पाताली एका एक रखाए शब्द साचा गुण गुणवन्त कन्त वड गुण गुणीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्द मेल कर, गुरू चेल इक्क घर, पवण स्वास आस प्यास बुझाए दम दमीआ। ऐड़ा अक्खर एका अक, जिस जन मात खुल्हाईआ। नना निरगुण रूप प्रतक्ख, निज घर वास रखाईआ। दद्दा दाता ना दिसे सख, हरि घट में रिहा समाईआ। अनन्द अनन्द अनन्द हरि

गाईआ। पप्पा पूरन जोत प्रकाश, गुर गोबिन्दे भेख वटाया। आदि अन्त ना जाए विनाश, गुणी गहिंदे खेल रचाया। आपे होए दासन दास, जन भगतां सेवा रिहा कमाया। रारा राम नाम सर्ब गुणतास, राज जोग एका धाम सहाया। प्रभ मिलण दी राखो आस, साची सेवा एह लगाया। रसना जिह्वा रहे प्यास, बत्ती दन्द होए हलकाया। दिस ना आए पृथ्वी आकाश, गुरमुख साचे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी जोत इक्ग्री, शब्द रखाए सच समग्री, जन भगतां प्यास रिहा बुझाया। हस्त कीट प्रभ रूप, घट घट आप समाया। खेले खेल शब्द बहु भूप, शब्द भूपा आप अख्वाया। घर दस्से सति सरूप, सति सरूपा नाउँ रखाया। कलिजुग मिटे अन्ध अन्ध कूप, अन्ध अन्धेरा मात छाया। वेख वखाणे चारे कूट, दहि दिशा भेव ना राया। तीर निराला रिहा छूट, चौदां लोकां रिहा हिलाया। नौवां खण्डां पाए फूट, सत्तां दीपां फुट्ट पवाया। मेट मिटाए जूठ झूठ, भेख पखण्डा दिस ना आया। माया राणी खाली ठूठ, त्रैगुण माया दए खपाया। नाम रती एका मुट्ठ, बीस इक्कीसा दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेले अन्तिम जाए तुट्ठ, गुरमुख साचे संत लए जगाया। हरि जन साचे आप जगाए, जुगा जुगन्तर कारी। शब्द पल्ला नाम फड़ाए, मेल मिलाए आप आपणी धारी। निर्मल धाम अटला इक्क वखाए, पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यारी। वल छला कर कर

६६६ ०५ जगत भुलाए, जोग जुगन्तर ना पायण सारी। दूई द्वैती शिला इक्क रखाए, जप तप हट्ठ छड्डे सिक्दारी। सोहँ भल्ला ६६६ ०५

इक्क रखाए, जगत विद्या हाहाकारी। नाम फला इक्क ख्वाए, चारे वरनां दए अधारी। गोबिन्द डल्ला आप जगाए, शब्द पहनाए तन कटारी। कलिजुग जना आप मिटाए, लाड़ी मौत दए बहारी। धन्न धन्ना नाम आप अख्वाए, वंडे वंड शब्द भण्डारी। नना निरगुण रूप समाए, निर्मल जोत कर आकारी। सरगुण साचे रिहा मिलाए, सोभावन्त बणाए नारी। कन्त कन्तूहला इक्क वखाए, जगत झूला शब्द खुमारी। आत्म फूला सेज विछाए, प्रेम विछाउँणा नाम क्यारी। दूलो दूला आप अख्वाए, आपे सुत्ता पैर पसारी। मूलो मूला आप चुकाए, लहिणा देणा मात उधारी। त्रैसूला शब्द चलाए, सोहँ खण्डा तेज कटारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग क्रिया कर्म रिहा विचारी। कलिजुग कर्म विचार, कर्म कमाया। चौदां वेखे हट्ट पसार, कवण वस्त विच रखाया। सत्त सत्तां बन्ह्रे धार, सति सतिवादी घेरा पाया। सत्त पातालां वेखे पाड़, पड़दा कोई रहण ना पाया। संतां उप्पर वेखे चढ़, शब्द पौड़ा इक्क लगाया। लोकमाती वेख अखाड़, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया। आप जाणे आपणी धाड़, लक्ख चुरासी गेड़ा आपणा आप बणाया। त्रैगुण माया देवे साड़, पंज तत्त रहण ना पाया। आप चबाए आपणी दाढ़, धीरज यति कोई रहण ना पाया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़,

डूंघी कन्दर डेरा लाया। तीर निराला चले काड़ काड़, जोत अकाला चिले चढ़ाया। मनमुखां जीवां विंन्हे नाड़ नाड़, हड्ड मास नाड़ी चम्म कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले दर घर साचे लए वाड़, चौदां भवन मिटे अवण गवण लहिणा देणा मूल चुकाया। चौदां चौदस रैण मस, रवि ससि मुख छुपाया। धर्म राए कलि वेखे हस्स, वक्त सुहेला इक्क वखाया। दर दुआरे आए नस्स, गल पल्लू चरन सरनाया। पुरख अबिनाशी राह साचा दस्स, कलिजुग वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी देवां झस्स, लाड़ी मौत रहे प्रनाया। गुरमुख हिरदे आपे वस, आपणा पल्लू दए फड़ाया। दिवस रैण कलि रिहा नस्स, ना सके कोए छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां होए सदा सहाया। चौदां लोक हट्ट पसार, वणज करे वापारी। तीर्थ तट्ट पार किनार, अट्ठ सट्ठ पसर पसारी। काया मठ गुरूद्वार, दीपक जोत जगे अपारी। चार दिवारी जाए ढठ्ठ, हरि महल्ल अटल अटारी। शब्द गुरू गुर शब्द करे कलि इक्ठ, सुहाए बंक द्वारी। हरि संत सुहेला आए नठ्ठ, चौदां लोक होए ख्वारी। अन्तिम गेड़े उलटी लट्ठ, राए धर्म देवे धक्का भारी। सतिजुग तेरी आप कराए साची चट्ठ, करोड़ ढाई भेंट चढ़ाए पहली वारी। त्रैगुण माया तेरा मट्ठ, अग्नी जोत हरि निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आपे मेले दरस दिखाए अगम्म अपारी। त्रैगुण माया दए दुहाई, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। ब्रह्म द्वार रही कुरलाई, ब्रह्म देवता नाल रलाईआ। शिव शंकर पल्ला गल विच पाई, आपे रिहा मनाईआ। करोड़ तेतीस सच्ची सरनाई, सुरपति राजा इन्द संग मिलाईआ। विष्नूं तेरी सच सरनाई, वास वासना फिरे हलकाईआ। पुरख अबिनाशी कलि जोत जगाई, दिस किसे ना आईआ। घनकपुर वासी देह तजाई, पवण स्वासी लेख चुकाईआ। आपे रवया मात पाताल पृथ्वी आकाशी, जोती नूरो नूर सवाईआ। त्रैगुण माया होए दासी, आप आपणी रचन रचाईआ। खेले खेल शाहो शाबाशी, सम्मत चौदां चौदां लोक तेल चढ़ाईआ। जन भगतां पूरन करे आसी, आलस निन्दरा मगरों लाहीआ। पकड़ उठाए पंडत कांशी, काया कासा वेख वखाईआ। मेल मिलाए शब्द स्वासी, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। इक्क वखाए मण्डल रासी, ब्रह्मण्ड वज्जी वधाईआ। प्रगट होए सर्ब गुणतासी दासन दासी सार ना राईआ। त्रैगुण माया रोवे, कलिजुग मती मुखड़ा धोवे, ना कोई दीसे सच्चा साथी, ब्रह्मा शिव विष्न देण दुहाईआ। त्रैगुण माया तेरा जाल, प्रभ मात तुड़ावण आया। त्रैलोकी वेखे दीपक थाल, गगन गगनंतर विच समाया। आपे मारे शब्द उछाल, नूर नुरंतर जोत सवाया। आपे दाता शाह कंगाल, कलिजुग काया लग्गी बसंतर अन्त बुझावण आया। शब्द बणाया धुर दलाल, दुर्गा देवे ना गायत्री मन्त्र आपे मेट मिटाया। ना कोई दिसे मन्दिर अन्दर कन्दर मस्जिद काअबा

गुरूद्वार, दर दरवाज़ा इक्क खुलाया। लक्ख चुरासी करे प्यार, धर्म दासी रिहा बणाया। राए धर्म हो त्यार, गल फाँसी रिहा लटकाया। आपे खोले बन्द किवाड़, जनका घनकपुर सुहाया। गुरमुख साचे आप बचाए साचे लाड़, बार अनका दरस दिखाया। वरनी वरना अवरन हरि सृष्ट सबाई रिहा ताड़, दूसर कोई रहण ना पाया। मति तत्त प्रभ देवे झाड़, साचा सति इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे होए कमलापात, पति पतिवन्ती साची नार सदा सुहागण वड वडभागण, दुरमति मैल धोवे दाग़न, हँस हँसनी कागी कागण, साचे बंसा इक्क प्यार। त्रैगुण माया तुटे नाता, अन्त विछोड़ा मात। लेखा मिटे ज़ातां पातां, सृष्ट सबाई वेखे मार एका झात। मेट मिटाए अन्धेरी राता, खेले खेल सति सति साता। जोती जोत सरूप हरि, चौदां लोकां वेख दर, गुरमुखां देवे सोहँ शब्द साची दाता। तेरा मेरा चुक्कया, चुक्का लहिणा देण। मानस देही पैंडा मुक्कया, प्रभ शब्द पहनाए तन गहिण। हरया होए कासट सुक्कया, अमृत आत्म वहे वहिण। वेला साचा आण ढुक्कया, दरस परसे तीजे नैण। चरन दुआरे साचे झुकया, काया मिटे अन्धेरी रैण। सतिगुर साचा शब्द दलेर बुकया, नाता तुटे भाई भैण। गुर शब्द तीर निराला कदे ना रुकया, हरिजन आत्म साचे सहिण। मुख मुख ना आए मुखों थुक्कया, सोहँ नेत्र कज्जल नैण। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द वर, तीर निशान कदे ना रुकया, नेड़ ना आए मौत लाड़ी डैण। सीस निवाया सच घर, दरस पेख जगदीसा। मिले मेल शब्द वर, लेखा मुक्के दन्द बतीसा। आत्म वसे इक्क घर, सच वखाए महल्ल शीशा। नौ दर चुक्के जगत डर, दसवें इक्क हदीसा। साची तरनी रिहा तर, प्रभ छत्र झुलाए शब्द साचा सीसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग मिलाए संग, संग निभाए नाम मृदंग, तन वजाए जगत बीस इक्कीसा। त्रैगुण माया तेरा रूप, दिस किसे ना आया। चौदां लोकां अन्ध कूप, अन्ध अन्धेरा छाया। हरि जोती नूर सति सरूप, हर घट में रिहा समाया। दो जहानां साचा भूप, शाह सुल्तानां भेव ना राया। घर घर दर दर धुक्खे धूप, आत्म हवन ना किसे कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तेरा तत्त आप उपाया आपे दए मिटाया। त्रैगुण माया जगत जंज़ाल, हरि साचा मात तुड़ांयदा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, पुरख बिधाता सीस निवांयदा। चरन भिखारी काल महांकाल, दाता दयाल संग रखांयदा। राए धर्म होए बेहाल, अकाल अकाल नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आप आपणा रंग वटांयदा। त्रैगुण माया तेरा तत्त, प्रभ साचे विच समाया ए। आपे दे समझाए मति, कलिजुग अन्तिम आया ए। लक्ख चुरासी उब्बल रत, पंच विकार चलाया ए। नाता तुट्टा धीरज यति, सति संतोखी रहण ना पाया ए। नाम वैरागण होवे सत्थ, घर सथ्थर इक्क विछाया ए। लाड़ी

मौत पाए नत्थ, जम जेड़ा हथ्थ उठाया ए। सीआं देवे साढे तिन्न हथ्थ, चित्रगुप्त लेख चुकाया ए। कलिजुग काल देवे मथ, लहिणा देणा मूल ना राया ए। आपे जाणे आपणी गाथ, वेद पुराणां सार ना राया ए। जोत सरूपी हरि अकथ, जोत सरूपी हरि समरथ, खाणी बाणी दिस ना आया ए। कलिजुग काला वेखे रथ, अंज़ील कुरानां धक्का लाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, त्रैलोकी नाथा सगला साथा त्रैगुण माया तेरी धार आप आप उपाया, आपे रिहा मिटाया ए। त्रैगुण तेरी धार मिटाए, सांतक सति सरूपा। कर्म विचारी कर्म कमाए, राजन राज बहु भूपा। तामस तेरी तृष्न मिटाए, हरि खेले खेल अनूपा। ब्रह्मा विष्न कोई भेव ना राए, हरि साचा शाहो भूपा। शिव शंकर वेखे मुख छुपाए, कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अन्ध कूपा। सुरपति राजा इन्द आप पछताए, गण गंधरब कोई राग ना गाए, धर्म द्वार ना साचा धूपा। पुरीआं लोआं वेख वखाए, दहि दिशा प्रभ फेरी पाए, लोक कलि चारे कूटा। कलिजुग वेला अन्त सुहाए, साध संत कोई भेव ना पाए, देवी देव कोई दिस ना आए, जोत सरूपी जामा पाए, निहकलंक डंक वजाए, एका शब्द तीर निराला सोहँ रसन कमानो छूटा। त्रैगुण माया तेरी गंढ, प्रभ अन्तिम खोल्हण आया। लक्ख चुरासी वढे कंड, नौ खण्ड पृथ्वी आप विरोलण आया। सत्तां दीपां करे रंड, ब्रह्मा शिव कुरलाया। वरते खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड डगमगाया। आपे करे खण्ड खण्ड, जेरज अंड वंड वंडाया। शब्द फड़ाए हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई नार दुहागण संत असंत होए रंड, कन्त सुहागी ना कोई हंढाया। नौ खण्ड पृथ्वी जूठ झूठ पाए वंड, वरनी वरना देवे दंड, साचा नाम ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, त्रैगुण माया आपे वेखे तेरा रूप सति सरूप, सच समग्री विच समाया। सच समग्री हरि हरि दाद, दिस किसे ना आया। निरगुण माया उत्तम ज़ात, प्रभ आपे आप बणाया। आपे पिता आपे मात, पुत्तर धीआं आप अखवाया। आप बंधाया एका नात, भैण भईआ आप अखवाया। आप चलाया एका राथ, आपे भरम रिहा भुलाया। आप निभाया आपणा साथ, संगी साची आप अखवाया। आप जणाई आपणी गाथ, रसन कथन ना सके राया। आपे आप त्रैलोकी नाथ, दर दुआरा रिहा उपाया। साचा लेखा मस्तक माथ, ब्रह्मा रूप उपाया। नाभी कँवली चवी हाथ, शब्द डण्डा डोर बंधाया। शब्द विछाउँणा साची खाट, प्रभ साचे हेठ विछाया। दीपक जोती इक्क लिलाट, प्रभ आपणी अंस उपाया। चार जुग मुख चारे काट, नाम जिह्वा रसन लगाया। आकाश पाताली पाटे पाट, पवण अवण गवण विच समाया। सर सरोवर तीर्थ ताट, हरि दुआरा इक्क समाया। सच दुआरा साचा घाट, सच समग्री झोली पाया। चरन कँवल रस चाट, ब्रह्म वेता दर बहाया। हरि इक्क खुल्हाए साचा हाट, शब्द वस्तू विच टिकाया। आपे पूरा करया घाट, घाटा

कोई रहण ना पाया। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, जूट जटा ना कोए अख्वाया। ना कोई काया माटी दिसे लिलाट, अजपा जाप जपाया। ना कोई हेठां बस्त्र देवे खाट, जोती नूर इक्क सवाया। ना कोई पूजा शब्द जगत दिसे पाठ, गायत्री मन्त्र ना कोई गाया। ना कोई जोधा सूरा दिसे राठ, बस्त्र शस्त्र ना वेख वखाया। जप तप ना दिसे हाठ, सति संतोखी बणत बणाया। पंज तत्त ना दिसे आठ, पंज पंझी ना रूप वटाया। नौ द्वार ना दिसे घाट, रूप रेख ना कोई वखाया। वरन बरन ना दिसे कोए आन बाट, मात हित्त ना कोई वसाया। दूर नेड़े ना जाणे वाट, मात पाताल आकाश ना वेख वखाया। ना कोई वणज वणजारा करे हाट, तोला बोला ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया देवे वर, आप आपणे रंग रंगाया। त्रैगुण माया रंग लाल, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। ब्रह्मा शिव करे प्रितपाल, विष्नूं बंस आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी शब्द उछाल, धवल धरत गोद बहांयदा। लोकमात फ़ल एका डाल़, आपे आप लगांयदा। आपे वेखे दीन दयाल, मिट्ठा कौड़ा ना भेव छुपांयदा। नाल रखाए काल महांकाल, लम्भा चौड़ा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, त्रैगुण माया तेरा ताल, बिन रंग रूपी बुणया जाल, लक्ख चुरासी होई बेहाल, माया डोरी बद्धा काल, ना कोई अन्त छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चौदां लोकां वेख घर, दर दरवाज़ा गरीब निवाज़ा, पारब्रह्म ब्रह्म साजन साजा, चार कुन्टां दहि दिशां आपे वेख वखांयदा। मिले मेल संत सतिगुर, आत्म जगत तृपाईआ। लेखा लेख मस्तक धुर, गुर पूरे कीमत पाईआ। चरन सरन सरन प्रीती गई जुड़, तोट रहे ना राईआ। शब्द चढ़ाए इक्क घोड़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। सम्मत वीह सद सोलां जाए बौहड़, काया दाग़ दए मिटाईआ। आपे परखे मिट्ठे कौड़, हँसो काग बणाईआ। जोती नूर शब्द ब्रह्मण गौड़, हाज़र हज़ूर सर्बकल भरपूर एका दूजा भउ चुकाईआ। एका पौड़ नेत्र तीजा, आपे खोल़ वखाईआ। तन मन अमृत आत्म सीजा, सीतल धारा इक्क वहाईआ। गुरसिख कराए आपे रीझा, सिँघ अनन्द कलि चढ़या चन्द, प्रभ गाया बत्ती दन्द, बत्ती धार सीर बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे साचा वर, गुर चेल एका घर, साचा मेल विछड़ कदे ना जाईआ। ना होए विछोड़ा दिवस राता, आठ पहर रंग राता। आपे होए पिता माता, देवे नाम सुगाता। ना कोई पुच्छे ज़ात पाता, हरि साचा इक्क इकांता। जन भगतां देवे साची दाता, अमृत आत्म बूंद सवाता, शब्द विछाउड़ा साची खाटा, काया मिटे अन्धेरी राता, बजर कपाटी जाए पाटा, जोती नूर जगे लिलाटा, वणज कराए साचे हाटा, गुरसिख अन्त ना आए घाटा, कलिजुग अन्तिम आई वाटा, ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा, गुरमुख विरला सद चढ़या शब्द घाटा, जोती जोत सरूप हरि, शब्द देवे साचा वर, भाग

लगाए काया माट। शब्द गुर जिस जन भेंटयां, मेला सहिज सुभाए। आपे खेवट खेटयां, फ़ल नाम लगाए। आपे पिता पूत बेट बेटयां, आपणी गोद उठाए। आपे शब्द दुशाल लपेटयां, तन पड़दा एका पाए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख आत्म सच दर, दर दुआरा वेख वखाए। गुरमुख लहिणा लहिणेहार, देवणहार हरि अबिनाशया। शब्द गहणा तन शृंगार, निज घर आत्म रक्खे वास्सया। शब्द बन्न सीस दस्तार, माण रखाए पृथ्वी आकाशया। शब्द घोड़े हो सवार, वेखे खेल जगत तमाशया। साचा वणज करे वापार, काया मण्डल साची रास्सया। निर्मल जोती कर आकार, ज्ञान गुर शब्द प्रकाशया। अज्ञान अन्धेरा दए निवार, जन हरि होए दासन दास्सया। नौ दुआरे पार किनार, लेखा चुक्के पवण स्वास्सया। एका खोल्ह बन्द किवाड़, दिवस रैण ना होए उदास्सया। ना कोई दिसे पंचम धाड़, पंचम पंचम बलि बलि जास्सया। साचा वेखे शब्द अखाड़, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख वेख आत्म दर, आदि अन्त ना कदे विनास्सया। गुरमुख आत्म सच घर, प्रभ साचे आप बणाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, गरीब निवाज़ा दया कमाया। अमृत नुहाए सच सर, साजण साचा खेल रचाया। एका एक वखाणे सच्चा हरि, जन्मे ना कदे आया। आवण जावण चुक्के फर, धर्म राए ना दए सजाया। शब्द भण्डारा देवे भर, तोट रहे ना राया। हरि हरि भाणा जाए जर, धुर फ़रमाणा रिहा सुणाया। जोती लाड़ी शब्द वर, नाम घोड़े रिहा चढ़ाया। वाग गुंदाए फड़े लड़, प्रेम मैहन्दी हथ्थीं लाया। धर्म दुआरे जाए वड़, शब्द रंगीला पलँघ विछाया। आपे वेखे अगे खड़, पल्लू आपणे नाल बंधाया। अन्दर मन्दिर साचे वड़, एका साचा राग अलाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, सति पुरख निरँजण सति समाया। साध संत ना सके फड़, चढ़ चढ़ थक्के हथ्थ ना आया। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणा कुण्डा लाहया। आपे जाणे आपणी जड़्ह, चेतन्न चित ना आया। जुग जगत ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना डेरा लाया। आप जाप ना जाए पड़, थल जल प्रभ पार रहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए बंक द्वार, द्वार बंक वखाया। एका बंक द्वार शब्द जणाया। जोत सरूपी कर आकार, शाह भूपी दिस ना आया। बिन रंग रूपी हरि निरँकार, अन्ध कूपी दए मिटाया। पवण धूपी विच संसार, शब्दी जोत हवन कराया। एका शब्द भगत अधार, पवण उनन्जा छत्र झुलाया। हरिजन विरला उतरे पार, अवण गवण गेड़ कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म मेघ बरसे सवण, सीतल धारा इक्क वहाया। सीतल धार इक्क प्रभ हरि द्वार वहांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, अगम्म अगम्मा दरस दिखांयदा। नाता तुटे मीत मुरार, भैण भईआ साक सज्जण सैण सईआ कोई दिस ना आंयदा। एका ओट प्रभ चरन रखाईआ, धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ, चित्रगुप्त सीस निवांयदा।

गुरमुख साचा पारजात, शब्द मिली गुर साची दात, मिटे रैण अन्धेरी रात, चन्द नंद कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। रसन रसायणी बत्ती दन्द, नौ दुआरे चुक्के गन्द, शब्द सुहागण एका छन्द सुणांयदा। आप जगाए सुरत सवाणी, मिले मेल गुर शब्द हाणी, अमृत देवे ठण्ढा पाणी, एका एक पद निरबाणी, साचे घर वसांयदा। पारब्रह्म प्रभ कलि निशानी, मिले मेल गुण निधानी, जगत विद्या दिसे फानी, शब्द कानी तीर चलांयदा। दो जहानी साचा हाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुरत देवे वर, साचा सीस हथ्थ टिकांयदा।

★ २ जेठ २०१३ बिक्रमी आत्मा सिंघ दे गृह पिण्ड मल्लूवाल ज़िला अमृतसर ★

वडभागी गुर पाया, मेला सहिज सुभाए। हँस कागी मात बणाया, मोह ममता रोग मिटाए। धुर संजोगी मेल मिलाया, पल्ला नाम फड़ाए। आत्म भोगी आत्म रस चखाया, एका साची चोग चुगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बंक द्वार सुहाए। दर दुआरा एक एकँकारया। जन भगतां देवे साची टेक नाम उज्यारया। काया करे बुध्ध बिबेक, मानस देही पैज संवारया। कलिजुग माया ना लाए सेक, देवे दरस अगम्म अपारया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आप दिस किसे ना आ रिहा। जोती जामा धरया भेख, शब्द डंका इक्क वजा रिहा। आपे लिखणहारा लेख, आदि अन्त जुगा जुगन्त गुरमुख साचे संत जनां साची बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, भाण्डा भरम भन्ना रिहा। भाण्डा भरम देवे भन्न, आपणी दया कमांयदा। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँचां नीचां रंक राजाना एका रंग रंगांयदा। आपे पिता आपे मात, गुरमुख साचे बाल अञ्याणे आपणी गोद उठांयदा। धुर दरगाही साची दात, एका अक्खर जगत वक्खर दहि दिशा वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी कमलापात, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, माया भरम भुलांयदा। अन्दर मन्दिर वेखे मार झात, नौ दुआरे बन्द करांयदा। शब्द रखाया साचा राह, गुरमुख साचे पार करांयदा। लेखा लिख्या माथ मस्तक कौस्तक मणीआ तिलक लगांयदा। प्रगट होया त्रैलोकी नाथ, लोआं पुरीआं बणत बणांयदा। आप निभाए सगला साथ, संगी साथी आप अख्वांयदा। अन्तिम रक्खे दे कर हाथ, राए धर्म ना डन्न लगांयदा। भाग लग्गे साढे तिन्न हाथ, कलिजुग सीआं झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण जोत जगांयदा। इक्क कराए शब्द जैकार, चारों कुन्ट धुर दरगाहीआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, शिव ब्रह्मा रहे तकाईआ। दर दरबाना पहरेदार, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रिहा जगाईआ। खेले खेल हरि भगवाना,

आपे गोपी आपे काहना, आप आपणे अंक समाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम तीर कमाना, सोहँ चले तीर निशाना, मारे जोधा हरि बलवाना, गढ़ कोट रहण ना पाईआ। जोती नेत्र कोटन भाना, गुरमुख विरले चरन ध्याना, अमृत आत्म सति सरोवर इक्क इशनान कराईआ। सर्ब घटां घट जाणी जाण, आपे करे मात पछाणा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर प्रभ साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, रंग महल्ल उच्च अटल आदि अन्त आप आपणी जोत जगाईआ। नाम वस्त प्रभ साचे लाल, बंक द्वार रखाईआ। दस दस साल प्रभ दलील, वडा गुर शब्द बणाईआ। बाल अवस्था छैल छबील, सूहा पीला कंचन काया गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दस्म दुआरी उप्पर चढ़, दस धारी रिहा वहाईआ। दस दस धारी दहि दिशा विचार। कलिजुग खेल करे अपारी, मिले मेल जोत निरँकारी, बीस बीसा शब्द भण्डार। आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, आपे कन्त आपे नार, आपे दाता वड संसारी जुग जुग धारे भेख मेल मिलांयदा। आपे मस्तक लाए मेख, नेत्र लोचन साचे पेख, साचे मार्ग लांयदा। सृष्ट सबाई रिहा वेख, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, संग मुहम्मद मता पकांयदा। जोत निरँजण धारे भेख, मंगे दर भिखार वर सवालीआ। देवणहार जोत अकालीआ। खाली भरे भण्डार, शब्द दलालीआ। कराए नाम सच्चा वणज वपार, मानस देही पैज संवार, फ़ल लगाए काया डालीआ। शब्द घोड़े कर अस्वार, पार कराए घटा कालीआ। पुरीआं लोआं जै जैकार, गुरमुख साचे साचा राह वखालीआ। राए धर्म करे निमस्कार, जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे किरपा कर, करे माल मालीआ। ख्वाजा खिजर शाह तक्के जाणे जाफर हकीक तहिकीक। अलाओ अल्ला अट्ठे पहर मिलिआ हरि शेख़ रफीक। सदा मेहरवान करे सदा मेहर नज़र, नज़र ना आए जगत बरीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दूसर ना कोई बणे जगत शरीक। तुलसी जैमल सावण रुत्त बसंतया। आपे जाणे वेला वक्त सतवन्तया। साधां संतां करे खाली बुत्त, एका नाउँ पूरन भगवन्तया। पन्दरां अन्दरां पए फुट्ट, तीर रसन कमानो रिहा छुट जुगा जुगन्तया। घर घर बैठी रही लुट्ट, सोभावन्ती नर सुहन्तया। गुरमुखां अमृत आत्म देवे इक्क घुट, मिले वड्याई विच जीव जन्तया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, लोकमात बणाए साची बणतया। कबीर करीम रहिमान रहीम शब्द वखाए इक्क निशान। धर्मी धर्म कमाए, चार वरन कराए एका आण। गुरमुख सतिजुग एका घर जन्म दवाए, पारब्रह्म करे कराए आप पछाण। करे कराए कुक्ख सुफल वसे काया चम्म, जुगा जुगन्तर साची आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, लोकमात चुकाए आवण जाण। जीत अजीत सदा जीत, जन अतीत रखाईआ। आपे जाणे प्रभ आपणी रीत, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत,

आप आपणे रंग समाईआ। एका गाए सुहागी गीत, जगत जगदीश दर्शन पाईआ। काया होए ठण्ढी सीत, आपे परखणहारा नीत, नित्त नवित्ता जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द साचा बीज बिजाया। सिँघ जगीर गुर तेग गुर शब्द तेज कटार। सच लाल जाए सज, जिस बख्शे चरन प्यार। चरन कँवल जाए सज, मिले जगत अधार। जोती जोत सरूप हरि, दरस दिखाए चारे भुजा पसार। चतर्भुज दरस बहु रूपा, रंग रूप वटाईआ। करे खेल हरि शाहो भूपा, नाम मृदंग अंग अंग वजाईआ। करे प्रकाश अन्ध कूपा, साचा संग आप निभाईआ। प्रगट होए सति सरूपा, धुन नाद अनाद धुन आत्म सुन तुट्टे मुन गुण गहर गम्भीर सुन शनवाईआ। वज्जे बीन संख घंटा सुण, घड़ी घड़याल हरि दयाल आपणी आप चलाईआ। मनोहर मुकंद लखमी नरायण काहन घनईआ। इक्क वखाए नईआ सुणाए बैंसरी राग गाए जैत्सरी मल्हार सार गौंड सुणाईआ। आत्मक धुन गाए हरि हरी, किरपा करे नर नरी, जोत निरँजण राह वखाईआ। शब्द भण्डारा तन भरी, पाया पुरख घर सच वरी, दस गिरहा गृह मन्दिर अन्दर समाईआ। आपे हूर आपे परी, सदा वसे बाहर नौ दरी, इक्क खुल्हाए साचा घर दस्म गली। दस्म गली बन्द किवाड़ खोल्ह वखाईआ। अमृत आत्म मेघ बरसे ठण्ढी झड़ी, दिवस रैण छहिबर लाईआ। सरन सरनाई जो जन सवाणी साची पड़ी, सच महल्ल उच्च अटल सच कन्ते मेल मिलाईआ।

शब्द सरूपी बांह साची फड़ी, इक्क बंधाए शब्द डोर साची लड़ी, रसना गाया सुलक्खणी घड़ी, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, एका देव आत्म वर, दर दरवाज़ा नज़री आईआ। दर मांगे जन मंगता, एका एक भगवान। तोड़े हउमे रोग हँगता, देवे शब्द सच्चा निशान। होए सहाई जिउँ नानक अंगदा, पारब्रह्म ब्रह्म एका जाण। जोती जोत सरूप हरि, काया चोली साची रंगता, देवे जिया दान। गुरमुखां प्रभ दया कमाए, साचा धाम सुहांयदा। राए धर्म ना लेखा लिखे, चित्रगुप्त मुख भवांयदा। ब्रह्मा चारे मुख उठाए, अट्ठे नेत्र वेख वखांयदा। हरिजन साचा साचा सुख सहिज समाए, पुरीआं लोआं पार करांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। साची नईआ नाम चढ़ाए, अलख अलक्ख विच समांयदा। साचा सईआ आप हो जाए, निहकामी निहकामी कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नाम वड्आंयदा। घट घट वेखे अन्तरजामी साचे देश कर प्रवेश नर नरेश जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जाणे शिव शंकर गणेश ब्रह्मा विष्न महेष दर दरवेश थांउँ थाँईंआ। गणपत गणेश जन भगतां करे सदा आदेस, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, आवण जावण चुक्के डर, धाम सुहञ्जणा जोत निरँजण इक्क वखांयदा। पति पतिवन्ता रक्खे पत, पीत पीतम्बर सोहे लाल। शब्द चढ़ाए

साचे रथ, दयावन्त हरि दीन दयाल। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर्शन पायण शाह कंगाल। शब्द सुहागी अकथना अकथ, जुगा जुगन्त अवल्लड़ी चाल। पुरख निरँजण रिहा मथ, कलिजुग अन्तिम वेख उछाल। लक्ख चुरासी लथ्थी सत्थ, सथ्थर वरोले बे बेहाल। लाड़ी मौत नक्क पाए नत्थ, संग कहारा रक्खया काल। सीआं मिणे साढे तिन्न हथ्थ, जगत अवल्लड़ी चले चाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे शब्द आत्म अन्दर साचा ताल। आत्म ताल शब्द धुन, नाद नादी नाद वजांयदा। वेख वखाणे जेरज खाणी, उत्भज सेत्ज अंडज वेख वखांयदा। पराु पसंती जाणे बाणी मधम बैखरी बोल बुलांयदा। सोहँ अक्खर वखर साचा जाणी, साचे धाम आप सुहांयदा। ओअँ सोहँ बणे जाणी, पुण छाण मात करांयदा। सो पुरख निरँजण एका कानी, सच निशानी तीर चलांयदा। हँ हँगता जिह्वा निधानी, हउमे रोग मिटांयदा। सो मेला विच दो जहानी, सतिगुर पूरा आप करांयदा। सृष्ट सबाई दिसे फानी, साची बाणी ना कोई दिसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे ब्रह्म ज्ञानी, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। सो सतिगुर साचा साख्यात, निश अक्खर रिहा समाए। होड़ा जोड़ा इक्क इकांत, शब्द घोड़ा संग रखाए। जोती जोड़ा बहु बहु भांत, तोड़ा जोड़ा उप्पर नज़र ना आए। बैठा रहे इक्क इकांत, गौड़ गौड़ा मात उपाए। सृष्ट सबाई वेखे मार झात, धुर दरगाही आया दौड़, आपणा रूप वटाए। लक्ख चुरासी वेखे फ़ल मिठ्ठा कौड़, रस रसना रिहा चखाए। सम्बल नगरी लाए पौड़, दासन दास वक्त सुहाए। आप जाणे लम्मा चौड़ा, नस्स नस्स पार कराए। सस्से उप्पर लाए होड़ा, किलुा कोट रिहा बणाए। दोवें मुख रिहा मोड़, निरगुण सरगुण भेव ना राए। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण एका धाम वसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ सो साचा दर वखाए। दस उधरे दस देवे मार। दस सुधरे दस करे ख्वार। दस मूधड़े दस कँवल नाभी होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस दस वेखे अद्धविचकार। दस जणाया दस गिणाया। दस मिलाया दस गंवाया। दस उपजाया दस रुलाया। घर सहिज समाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दसवां इक्क वखाया। दसवां दर दूर दुराडा, प्रभ साची बणत बणाईआ। ना कोई दीसे नाड़ी मास हाडा, साची काढा रिहा कढाईआ। चारों कुन्ट अन्धेरी खाडा, दूसर कोई दिस ना आईआ। बिरध बाल लडाए लाड़ा, नौजवाना जोबन रिहा हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे वखाणे काया भाण्डा, झूठी माटी पोच पुचाईआ।

नन्ना : नन्ना निरगुण रिहा समाए। नन्ना निरँकार सच भूप है, शब्दी शब्द समाए। कका कर्मा महिंमा रूप है, जग मेला मेल मिलाए। तिन्न अक्खर सति सरूप है, निरगुण माया संग रलाए। आपे वेखे चारे कूट है, दहि दिशा वेख वखाए। जगत नेत्र नैणा झूठ है, मनमुखां रिहा जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर भेख वटाए। नानक नाम निरँजण निरगुण विच समाया। हरिजन पाए नेत्र अंजन, भाण्डा भरम भुन्नाया। साची धूढ़ प्रेम मजन, कर्मी कर्म कमाया। साच ताल आत्म वजण, दर दुआरा बन्द खुल्हाया। धर्म दुआरे बहि बहि सज्जण, सति संतोखी नज़री आया। पंचां चोरां पड़दा कज्जण, पंचां पंचां रिहा जगाया। गुर नानक जिस जन सज्जन, लोक लाज दए तजाया। एका डंक आत्म वजन, निहकलंक रिहा जगाया। गुर गोबिन्दा शब्द गुर सज्जणा, साचे साजण रिहा मिलाया। जगत विकारा रसना तजना, अमृत धारा मुख चुआया। काया काअबा कराए साचा हज्जना, हाजी हज्ज करावण आया। नौ दुआरे लेखा तजना, आत्म तृष्ना दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक नानक रिहा समाया। नानक निज्ज घर वास है, निरँजण जोत बलोए। हरिजन होए दासन दास है, आप खुल्हाए लोचन लोए। उडे उडाए पृथ्वी आकाश है, हरि बिन अवर ना जाणे कोए। धर्म सति संतोखी आत्म धरवास है, धर्म रथ रथवाही होए। हथ्थ आए ना नौ नाथ है, सिद्ध चुरासी रहे रोए। जन भगतां सगला साथ है, अट्ठे पहर पहरेदार होए। आपे आप त्रैलोकी नाथ है, नाथ अनाथां आपे होए। मस्तक लेखा लिखे माथ है, नेत्र लोचन परखे दोए। सर्बकला आपे समराथ है, जुगा जुगन्त भेव ना कोए। आपे रक्खे दे कर हाथ है, दिवस रैण कदे ना सोए। जिउँ रामा घर दसराथ है, कृष्न मुरारी मोहे। एक रखाए साची वथ है, अंजन नेत्र नाम बलोए। जगत चलाए महिंमा अकथ है, कथनी कथ ना सके कोए। कलिजुग जिन चलाया रथ है, समरथ गुर सोहँ सो नानक होए। सृष्ट सबाई रिहा मथ है, लक्ख चुरासी रिहा परोए। लेख चुकाए साढे तिन्न हथ्थ है, निहकलंका प्रगट होए। हरिजन साचे लए रक्ख है, राउ रंकां पुच्छे ना कोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे दरस, दरस मिलावा होए। शब्द रूप गुर नानक, रूप भूप समाए। आपे जाणे जाणी जणका, निज घर वास रखाए। आपे बाणी बानका, बवन्जा अक्खर रिहा उपाए। पैंती अक्खर जगत निशानका, सतारां भेव ना राए। एका लेखा धुर फ़रमाण का, कलिजुग मात करे रुशनाए। लक्ख चुरासी खेल खिलानका, गुणवता गुण रहाए। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे साचा वर, एका आण रखाए। नानक दरस कवण हँस मंगे सुरत सवाणी। रसना सके ना कहिण, मिले मेल प्रभ साचे हाणी। जुगा जुगन्तर चुकाए लहिण देण, आत्म देवे ठण्ढा पाणी। नाता तुट्टे भाई भैण, अक्खर

वक्खर इक्क पढ़ाए, आपे होए साक सज्जण सैणी। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, नानक रसन वखाणी। नानक गाया गहर गुण, गोबिन्द सार ना पाया। छत्ती रागां रहे सुण, नाद अनादा आत्म धुन ना कोए वजाया। बहत्तर नाड़ी छाण पुण, बोध अगाधा होए शब्द जणाया। गुर गोबिन्दा अन्दर मन्दिर एका रस सुरत शब्दी मेल मिलाया। हरिभगत सुहेला जाणे गुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी नर निरँकारी एकँकारा शब्द जैकर कराया। दर घर साचे वज्जी वधाई, हउमे रोग गंवाया। गुर नानक रस रसना गाई, परम पुरख प्रभ पाया। मिल्या मेल ना होए जुदाई, रोग विजोग जगत गंवाया। जोती नारी होई कुड़माई, शब्द सुहागी कन्त हंढाया। जोत निरँजण नैण नाई, नेत्र कज्जल पाया। सुखमण नाड़ी धार बणाई, काली धार बणाया। साचे घोड़ श्रृंगार कराई, नर निरँकार नाम रखाया। नौ दुआरे बाहर कराई, दसवें वाग गुंदाया। पुरख अबिनाशी दया कमाई, दसवीं गली रिहा लटकाया। साचे घर होए शनवाई, महल्ल अगम्मा इक्क सुहाया। दोहां एका मेल मिलाई, एका सेजा रिहा बहाया। दिवस रैण ना होए जुदाई, पंचम मीता राग सुणाया। आप आपणे विच समाई, दूसर अंग कोई दिस ना आया। नानक नानक नानक अमरापद बानी पद निरबाण शब्द बिबाण गुण निधान इक्क चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, साची रंगण रिहा रंगाया। इक्क चढ़ाए नाम रंग, रंगत रंग अमोल्लया। मानस देही ना होए भंग, काया माटी भाग लगाए साचे चोल्लया। आत्म घर वज्जे मृदंग, पंचां घर ना होए गोल्लया। पुरख अबिनाशी साची संग, हौले भार उठाए डोल्लया। आप रखाए आपणे अंग, शब्द अनादी इक्क सुणाए साचा ढोल्लया। शब्द घोड़े कसे तंग, सच दुआरा एका खोल्ल्या। गुरमुख विरला जाए लँघ, चरन प्रीती घोल घोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, मेल मिलाए कला सोल्लया। नानक रूप अगम्म है, अगम्म रूप समाए। ना मरया ना पए जम्म है, जन्म मरन विच ना आए। वेख वखाणे पवण स्वासी दम है, दम दमां विच समाए। सदा वसे काया चम्म है, निरगुण रूप वटाए। गुरमुख विरला आपे जाए मन है, हरि हरि रसना गाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, नानक नानक नानक दादक मात मिलाए।

★ २८ जेठ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हरि रूप अपार, हरि समाया। सृष्ट सबाई अन्धकूप, कलिजुग जीवां दिस ना आया। आपे आप सति सरूप, माया ममता मुख छुपाया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर धुखदे धूप। पुरख अबिनाशा नज़र ना आया। रैण अन्धेरी दहि दिशा

चारे कूट, हउमे हँगता रोग गंवाया। शब्द निराला तीर एका रिहा छूट, हरि शब्दी नाम रखाया। हरि शब्द पंघूड़ा गुरमुख लैणा झूट, काया मन्दिर अन्दर इक्क टिकाया। दर दुआरे अमृत आत्म साचा लाहा लैण लूट, नौ दुआरे बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, जुगा जुगन्तर भेख वटाया। आपे सीता राम है, आपे कृष्न मुरार। आपे भगत प्यार है, आप जपाए आपणा नाम। जुगा जुगन्तर साची कार है, करे खेल जगत निशकाम। कलिजुग तेरी अन्तिम वार है, गुरमुख पीए अमृत आत्म साचा जाम। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, लक्ख चुरासी आप करावे एका ताम। कलिजुग काली रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख विरला साचे नेत्र पुरख अबिनाशी दर्शन पाए तीजे नैण, आप आपणे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, आप आपणी दया कमाईआ। लेखा लिखणहार हरि स्वामीआ। हरिजन साचा लहिणेदार, वेखे खेल जगत तमामीआ। कलिजुग माया पसर पसार, भेद अभेदा अन्तरजामीआ। जूठा झूठा कूड़ पसार, प्रगट होए निहकलंक, शब्द वजाए इक्क डंक, पकड़ उठाए राउ रंक, गुरमुख वड्याई जिउँ राजा जनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, सर्ब जीआं आपे जाणीआ। आपे जाणी जाण सर्ब अख्वाया। आपे शब्द अक्खर बानी बान, आपे बोल सुणाया। आपे गुण निधान करे सर्ब पछाण, जीआं जन्तां विच समाया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, लेखा चुक्के आवण जाण, दर घर मन्दिर इक्क वसाया। अमृत आत्म पीण खाण, साचा जाम रिहा प्याया। जेरज खाणी कर पछाण, मानस देही लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखण आया सच घर, कवण संत मिल्या कन्त आत्म दर्शन पाया। नौ दुआरे बन्द किवाड़, दसवें मेल मुरारी। पंच विकारा देवे झाड़, फड़े शब्द तेज कटारी। कृष्न घनईआ इक्क चढ़ाए साची नईआ, आप फड़ाए आपणी बहीआ, दो जहानी इक्क वखाए पार किनारी। सृष्ट सबाई अन्तिम फानी, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर वड विद्वानी। ना कोई जाणे जीव जन्त, साध संत माया रुले जगत भुल्ले, पूरे तोल ना कोई तुल्ले, आत्म सेजा किसे ना जाणी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखणहार दो जहानी। आत्म ब्रह्म ज्ञान, दृष्ट खुलाईआ। मिल्या शब्द बिबाण, उडया सृष्ट सबाईआ। आपे करे कराए जगत पछाण, गुण निधाना दया कमाईआ। काया वेखे सच मकान, मथरा मन्दिर गोकल रंग वटाईआ। जोत सरूप साचा काहन, साचे मण्डल साची रास एका आपणी रिहा पाईआ। जगत ना दीसे कोई निशान, रसना पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, पुरख अबिनाशी घट घट वासी साचे मन्दिर अन्दर शब्द सरूपी इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कवण संत सच सुहेला पुरख अबिनाशी मेल मिलाईआ।

७०८ ०५

जुगा जुगन्तर रीत है, जोत सरूपी हरि निरँकार। इक्क सुणाए साचा गीत है, काया मन्दिर सच द्वार। चरन कँवल कँवल चरन जन साची प्रीत है, खोल्हे बन्द किवाड़। सच वसेरा मन्दिर मसीत है, आपे वस्सया विच हस्त कीट है, जोत जगे बहत्तर नाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देवे वाड़। कवण दुआरा संतन पाया। मिल्या मेल अगम्मा, कवण काया रंगण रंग चढ़ाया। उत्तर ना जाए काया झूठा चम्मा, नेत्र नीर वहाया छम्म छम्मा, रसना कहि कहि वाद विवाद वधाया। अगाध बोध ना शब्द जणाया। हिरदा सोध ना प्रभ मनाया। सच इशनान ना किसे कराया। साचा बणे ना कोई सौदागर, निर्मल कर्म ना करे उजागर, कन्त संत ना किसे पाया। कवण दुआरे राम है, मेला सहिज सुभाए। काया माटी झूठा चाम है, वेले अन्त होए फन्हाए। हरिजन अवर ना कोई लेखे दाम है, कवण गाए कवण जगाए, कवण रिहा सोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल संत दर, दर दरवाज़े आपे आप खलोए। संत सरूप सति पुरख है, हरि जोती रिहा समाए। लेखा चुक्के उलटे बिरख है, वरन गोती भेव मिटाए। ना कोई हरख ना कोई सोग है, हरि रंगण रंग समाए। आदि अन्त ना होए विजोग है, धुर संजोगी मेल मिलाए। आत्म रस साचा भोग है, निजा नंद समाए। गुरमुख विरले दरस अमोघ है, प्रगट होए दरस दिखाए। संत रंग अपार, काया चढ़ाया। काया कंचन खेल अपार, शब्द घोड़े तंग कसाया। अट्ठे पहर पहरेदार, संतन मेला सतिसंग लोकमात अखाड़या। काया चढ़े सच रंग, वेखे खेल बहत्तर नाड़या। शब्द घोड़े कस तंग, आत्म विकारा आप चबाए आपणी दाढ़या। हरिजन साचा हरिभगत दुआरा एका मंगे सच मंग, प्रभ आपे कटे भुक्ख नंग, नेड़ ना आए पंचम धाड़या। संतन हथ्थ जगत डोर है, प्रभ साचा रिहा फड़ाई। पंचां पंचां अन्दर चोर है, भुल्ली मात लुकाई। काया युद्ध अन्ध घोर है, कुरक्षेत्र रिहा बणाई। जिस जन तारे कर कर मेहर है, आपणा पल्ला रिहा फड़ाई। सर्ब व्यापी आप है, सभ घट में रिहा समाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई। दुनी दीन जगत रीत है, जुगा जुगन्तर होए। आप जणाए एका शब्द सुहागी गीत है, साची बणत बणाए। साचा देहुरा मन्दिर मसीत है, गुर चरन सरन लिव लाए। आत्म अन्दर बोले इक्क प्रीत है, एका दूजा भउ चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाए। जगत दीन नौ द्वार है, दर दर भेख वटाए। घर ठांढा सच दरबार है, गरीब निवाज़ा इक्क खुल्हाए। नाम गंढु अपर अपार है, शब्द पल्लू आप बंधाए। जोती जोत सरूप हरि, आपे वंडणहार है, जुग जुग बणत बणाए। दीन दुनी जग माया, जुगा जुगन्तर लोअ। हउमे हँगता छाया, लक्ख चुरासी लई परो। गुरमुख विरला नज़री मंगता आया, दुरमति मैल मुखड़ा धो। भुक्ख नंगता आप कटाया,

साचा जाप जपाए सोहँ सो। सतिगुर संगता इक्क मिलाया, दरस दिखाया अग्गे हो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दुनी दीन दीन दुनी एका राह वखाया, अवर ना जाणे को। दीन दुनी जग अन्धेरया, अन्ध अन्धेर प्रधान। ना कोई जाणे सञ्झ सवेरया, गुणवन्ता होए निधान। लेखा जानण किस किस तेरया, आप आपणा ना लैण पछाण। जगत माया पाया घेरया। मोह ममता रक्खी आण। पुरख अबिनाशी पाया फेरया, घट घट अन्दर वेख मार ध्यान। आपे करे हक्क निबेड़या, बैठ शब्द सच्चे बिबाण। लक्ख चुरासी चुक्के झगड़ा झेड़या, अन्तिम लाहे मात मुकाण। उलटा गेड़े आपे गेड़या, महल्ल अटल सर्ब मिट जाण। धरत मात कराए खुल्हा वेहड़या, ना कोई झुलाए उच्च निशान। हरिजन विरले कन्त सहेड़या, देवे दानी दाता शब्द सच्चा दान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे कट्टणहारा आवण जाण गेड़या, राग नाद सुणाए धुन साचे कान। दीन दुनी बंधन जगत है, बन्दा बन्दी चार। हरिजन साचा भगत है, वेखे नेत्र नैण उग्घाड़। आत्म जोती साची शक्त है, खोल्हे बन्द किवाड़। लेखे लग्गे बूंद रक्त है, प्रभ अबिनाशी दरस सतारां हाढ़। कूड़ कुड़यारा नेड़े वक्त है, धरत मात लग्गे अखाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग समाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़। दीन दुनी माया भरम है, भरम भुलाया जग। दीन दुनी ना जाणे कर्म कुकर्म है, जगत तृष्ना लग्गी अग्ग। दीन दुनी कलिजुग ल्या जन्म है, जूठा झूठा बन्न्हया तन तग। दुनी दीन द्वैती वरम है, काल अन्धेरी रही वग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल सूरा सरबग। दीन दुनी अन्त काल है, मनमुखां सिर मण्डलाए। एका पाया जगत जंज़ाल है, भेख पखण्ड वधाए। गुरमुख विरला साचा लाल है, शब्द चण्ड प्रचण्ड हत्थ उठाए। आपे शाह आपे कंगाल है, विच ब्रह्मण्ड समाए। करनहार सर्ब प्रितपाल है, जेरज अंड भेव ना राए। दीनां बंधप दीन दयाल है, भेख पखण्डा दए मिटाए। फ़ल वेखे काया डाल्ह है, शब्द हलूणा एका लाए। करे निबेड़ा सच सच्ची धर्मसाल है, धर्म राए दर बुलाए। जगत चले अवल्लड़ी चाल है, जन्म कर्म धर्म अपणे हत्थ रखाए। रंग वेख सूहा पीला लाल है, गुर शब्दी कवण चढ़ाए। दीपक जोती आपे बाल है, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाए। वरन गोती खेल निराल है, गुरमुख काया सोती आप जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दीन दीनां बन्द अन्ध अन्धेर मिटाए। कलिजुग दीन झूठ पखण्ड, जगत वणज विहाज्जया। पुरख अबिनाशी सुत्ता दे कर कंड, नौ दुआरे मूल ना जागया। गुरमुखां मेला विच ब्रह्मण्ड, आप आपणा जन तयाज्ञा। जगत विकारा खण्ड खण्ड, मेट मिटाए तृष्ना आज्ञा। सतिजुग साची शब्द दात प्रभ वंड, सोहँ सुणाए साचा रागया। गुरमुख विरले आत्म बन्न्हे पल्ले गंढ, धुर दरगाही देवे सच्चा दाज्जया। मनमुख

जीवां आपे वढ्ढे कंड, कलिजुग रच्चया अन्तिम काज्जया। मन मती पायण डण्ड, साचा साजण किसे ना साज्जया। नौ खण्ड पृथ्वी पाई वंड, आप आपणी लायण अवाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द घोड़े हो अस्वार, वेखे खेल विच संसार, चिट्टे अस्व साचे ताज्जया। दीन दुनी कलि कालड़ा, काल रूप अपार। ना कोई दीसे राह सुखालड़ा, डूंघी कन्दर वसे गार। आपे बिरध बाल ज्विालड़ा, आपे बैठा अन्ध अंध्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दीन दीन दुनी मेटणहार विच संसार। दीन सहँसर जगत जन, जोग जुगत अनेक। गुरमुख साचे एक तन, काया बुध बिबेक। चरन प्रीती इक्क मन, लोकमात ना लाए सेक। आपणा बेड़ा आप बन्न, हरि दर्शन नेत्र पेख। साचा राग सुण कन्न, प्रभ लोचन पेखण पेख। भरम भुलेखा निकले जन, मस्तक लहिणा साची मेख। रसना कहे धन्न धन्न, जिस जन वेख्या एका एक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दुनी दीन दीन दुनी मिटावण आया लिख्या लेख। मन कामल मुरशद पीर है, पंजां विच प्रधान। आपे चढ़े चोटी अख़ीर है, आपे बैठे अन्ध अंध्यान। आपे पीवे अमृत सीर है, आपे दर दर हलकान। जोती जोत सरूप हरि, काया वेखे इक्क दर, मन मति बुध होए दरबान। मन पंखी उडारूआ, दिवस रैण उठ धाए। गुर शब्द साचा पाहरूआ, बन्द बन्दीखाने विच रखाए। मन औखद गुर चरन साचा दारूआ, चरन धूढ़ी जाम पिलाए। वेखणहार गुप्त ज़ाहरूआ, भेव अभेदा वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आत्म अन्तिम वेख दर मन तन तन मन साचा संग निभाए। मन उडारी संत है, मन्दिर शब्द बिबाण। उप्पर वसे साचा कन्त है, हेठां वेखे मार ध्यान। सच धारा शब्द बसंत है, करे कराए आप कल्याण। गुण अवगुण गणत अगणत है, हरि जाणे गुण निधान। साची चोटी गुरमुख विरला चढ़े संत है, धुर मिल्या जिस जिया साचा दान। मेल मिलावा साचे कन्त है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर वेख हरि, मन मधा मन महान। गुर चरन नेत्र पदम है, तीजा लोइण विस्थार। नौ दरवाज़े उप्पर एका कदम है, वेखे अक्ख उग्घाड़। धारा जाणे आपणी आपे मधम है, आपे वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर वेख दर, मेल मिलाए साचे मीत मुरार। चरन गुर जगत नेत्र है, सांतक सति सरीर। जन्म कर्म लेखा लिख्या, आपे जानणहार। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, पवण शब्द उडार। जिस जन गुर शब्द मिले साची सिख्या, जन्म अजन्मा लए संवार। गुर पूरा पाए नाम साची भिच्छया, कर्म कुकर्मा दए निवार। जगत तृष्ना लाहे विखिआ, दरस दिखाए अगम्म अपार। साचा लेख आपे लिख्या, आपे पाड़नहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, गुर पूरा ठांढा दीसे दर दरबार। गुरमुख ओट रखाईआ।

गुर पूरा मेल मिलाए, काया चोट इक्क लगाईआ। सच शब्दी तेल चढ़ाए, जगत तृष्न खोट गवाईआ। साचा सज्जण सुहेल अख्वाए, आलणिॣओ डिगे बोट उठाईआ। गुर शब्दी गोद बिठाए, एका अमृत आत्म रस पोट भराईआ। जगत तृष्ना दए गंवाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म वेखे सच दर, कवण वणजारा कवण वणज कराईआ। गुरसिख आस प्यास मन, दरस तरस लोचन नैणा। सर्ब घटा जोत प्रकाश जन, वेख वखाणे लोचन नैणा। शब्द वसेरा ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, तन बस्त्र शस्त्र ना दीसे गहणा। घट घट अन्दर लाई बैठा सन्नॣ, ना कोई जाणे हरि पछाणे, रसन भेव किसे ना कहणा। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्नॣ, जुगा जुगन्तर गुर पूरा आप चुकाए लहिणा देणा। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, एका रंगण तन रंग चढ़ाए राए धर्म ना देवे डन्न, एका राग सुणाए कन्न, महल्ल अटल उच्च मुनार साचे मन्दिर एका बहिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म वेखे सच दर, हरिजन भाणा राणा सिर ते सहिणा। समरथ सर्ब सिरताज है, शब्द करे जणाई। गुरूआं पीरां देवे दाज है, लोकमात करे कुड़माई। आपे बैठा मारे अवाज़ है, दिस किसे ना आई। आपे आपणा साजण साज है, साजणहार सृष्ट सबाई। हरिभगतन रक्खणहारा लाज है, जिस जन एका ओट रखाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग साध संत दए वड्याई। साध संत हरि अराध्या, मिल्या धन अपार। शब्द जणाए बोध अगाध्या, तन मन ठांढा सीतल धार। मिटया जगत वाद विवादया, साचा मेला मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, खेले खेल खेलणहार। संत मिली वड्याई नाम उपनया। होई तन रुशनाई, राग सुणाए साचा कन्नया। तन मन्दिर वज्जी वधाई, प्रकाश आकाश चन्न चंनया। अन्ध अन्धेर मेट मिटाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, भगत बेड़ा जगत बन्नॣया। संत बणाई जगत जुगत, प्रभ डोरी हथ्थ फड़ाईआ। आपे जाणे भगती भुगत, चोर चोरी रिहा कमाईआ। गुरमुख ना जाणे मोख मुक्त, दर द्वार रही शरमाईआ। दरस दान प्रभ इक्क भुक्खत, संत दुआरे पैज रखाईआ। संत सुहेला साधन साची जुगत, रसना अराधन अराध गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संतन मिल्या साचा मेला, शब्दी बणत बणाईआ। संत बणाया मीत, संत सतिवादीआ। चरन कँवल कमाई प्रीत, आदि जुगादीआ। अन्दर वस्सया नीत अनीत, पतित पुनीत आप अख्वाईआ। गाए रसना एका गीत, सिँघ बग्गा तन बद्धा तग्गा, आपणी करी आप कुड़माईआ। शब्द पाया तन साचा झग्गा, काया चोला नाम रखाईआ। आप बुझाए नौ दुआरे लग्गी अग्ग, मुख सगनी सगन लगाईआ। दाता जोधा सूरा सरबग, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि संत सुहेले आप बणाए हँस कग्ग, काग हँस बणाईआ। चरन सरन सरन चरन जो

७१२
०५

जन साचे साची लग्ग, साची सेव कमाईआ। आपे वसे उप्पर शाहरग, गुर शब्दी भेख वटाईआ। एका देवे एका सेव, गुर पूजे साचे पग, पति पतिवन्ता होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आत्म वेखे इक्क दर, संत सुहेला सच घर साचे नुहावण नुहाईआ। संत रूप सति इष्ट है, आत्म दृष्ट खुल्हाए। हरि खेले खेल अनूप है, जिउँ रामा वशिष्ट सहाए। आपे बैठा अन्ध कूप है, नूर जोती डगमगाए। मन वणजारा जगत झूठ है, ठग्ग ठगोरी पाए। दहि दिशा चारे कूट है, प्रभ अबिनाशी सार ना राए। हरिजन हरि शब्द पंगूढ़ा रिहा झूट है, पवण हुलार रखाए। तीर निराला रिहा छूट है, सो मुखी नाम लगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच समाए। थिर घर अपार हरि बणाया। जोती नूर कर आकार, एका तन प्रकाश कराया। शब्द रख सच्ची सरकार, नाद अनादी धुन वजाया। रूप अगम्म अगम्म अपार, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। ना मरे ना जन्मे विच संसार, आदि अन्त एका रंग समाया। ना खुशी ना गम, रेख मेख बिस ना आया। पवण स्वासी ना लगे दमा, जोत आधार कर्म कर्मा करदा आया। दर दरवाज़ा ना कोई पौड़ा, अन्दर बाहर ना कोई रखाया। ना कोई दीसे चोबदार, धन्न धन्ना ना नज़री आया। आपे बैठ सच्ची सरकार, आप आपणी बणत बणाया। ना कोई दीसे चार कुन्ट दिवार, दहि दिशा भेव ना राया। खाणी बाणी जेरज अंड ना कोई विचार, उत्भुज सेत्ज ना जाणे धार, आप आपणी रचन रचाया। सच महल्ल अटल उच्च मुनार, घट घट वासी इक्क समाया। दीपक जोती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर रहण ना पाया। वरन गोती वसे बाहर, सञ्झ सवेर ना कोई जणाया। अचल अखल प्रबल महल्ल उसार, शब्द सिँघासण इक्क रचाया। थिर घर सच दरबार, प्रभ साचा आप सुहांयदा। शाहो भूप दात दातार, आप आपणी रचन रचांयदा। ना वस्त शब्द भण्डार, पुरीआं लोआं विच टिकांयदा। वरते वरतावे विच संसार, मात पाताल आकाश बणत बणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका धार, सत्तां दीपां माया जाल विछांयदा। लक्ख चुरासी कर प्यार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। करनी किरत आपणी आप विचार, धरनी धीरत धरांयदा। अमृत आत्म मेघ अपार, एका मेघ हरि बरसांयदा। शब्द तेग नाम कटार, जोत सरूपी गल लटकांयदा। थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। आपे होए पिछे अगाड़, दूसर कोई दिस ना आंयदा। जोत निरँजण लाड़ी लाड़, शब्द लाड़ा नाल सुहांयदा। सति सतिवादी आदि जुगादी सदा ब्रह्मादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे इक्क दर, दर दरवाज़ा गरीब निवाज़ा आपणा बन्द रखांयदा। थिर घर बणाई बणत आप बणाया। गुरमुख विरला जाणे संत, प्रभ आपे आप जणाया। भरमे भुल्ले मात बेअन्त, रसना वाद वधाया। हरिजन मेला साचे कन्त, बोध अगाधा शब्द जणाया। रसना गाओ शब्द गुर संत, गुर दच्छणा

झोली पाया। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग भेखी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे इक्क घर, आप आपणा दर सुहाया। थिर घर रूप अपार, महल्ल अपारया। प्रभ चाढ़े रंग लाल गुलाल, कंचन सूहे धारया। मारे शब्द इक्क उछाल, इक्की इक्की कोट आए बाहरया। सति पुरख निरँजण एका लाड़, सुरत शब्दी गोद उठा रिहा। प्रभ जोती करे प्रितपाल, रस रसना सीर पया ल्या। ना कोई काल दिसे महांकाल, दीन दयाल आपणे रंग आप समा रिहा। जुगा जुगन्त अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे इक्क घर, घर मन्दिर आप सुहाया। थिर घर मन्दिर धन्न है, हरि साचे रचन रचाया। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न है, ना कोई बाडी बणत बणाया। ना कोई हड्ड मास नाड़ी तन मन है, हथ्थ पैर ना सिर रखाया। नेत्र पेखत सुणन ना कन्न है, भरमी भरम जन गंवाया। आप आपणा बेड़ा बन्न है, बन्नूणहार सर्ब रघुराया। ना कोई पुरख नार ना मन है, निर्मल जोती नूर सुहाया। थिर घर मन्दिर अन्दर हरि अपार ना कोई लाए सन्नू है, ना कोई लुट्टे चोर यार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, थिर घर वसेरा नेरन नेरा नरायण नर नर नरायण निरँकार। थिर घर तेरी धार, जन्त ना जाणया। आप आपणा पसर पसार, करे खेल हरि करतार, वसे हस्से आप बणे राजा राणया। शब्द भरे इक्क भण्डार, देवणहार सर्ब संसारया। वडा शाह लेखा जाणे जोग जुगत जन भगतां करे प्यार, देवे नाम शब्द अपार, खोल्हे बन्द किवाड़, पंच विकारा आप चबाए आपणी दाढ़, शब्द घोड़े साचे चाढ़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, मेल मिलाए गुर सतिगुर साचे हाणीआ। बजर कपाटी पड़दा पाड़, हउमे हँगता देवे साड़, अमृत आत्म जल धार देवे ठण्ढा पाणीआ। लेखा चुक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़, दर घर साचे देवे वाड़, एका एक सुणाए निशअक्खर वक्खर साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, थिर घर वसे इक्क दर, घट घट वेखे जेरज खाणीआ। हरि शब्द मेहरवान, हरि उपाया। जुग जुग झुलाए धर्म निशान, आप आपणे रंग रंगाया। लोआं पुरीआं इक्क बिबाण, एका एक रिहा उडाया। उप्पर बैठ श्री भगवान, पवण उनन्जा विच समाया। आपे चतुर सुघड़ स्याण, बोध अगाध शब्द जणाया। आपे गोपी आपे काहन, भेखाधारी भेख कलिजुग खेले खेल, माया ममता मोह भुलाया। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्यान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, शब्द अनादी नाद वजाया। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भेख मिटाया। सम्मत सम्मती कर पछाण, बीस सदी तेरां एका आण, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां वंड वंडाया। ब्रह्मा शिव दर कर ध्यान, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, भेखाधारी भेख धर,

७१४
०५

अगम्म अगम्मा केसाधारी दिस ना आया। वेखण आया गुर पीर औलीए शेख़ शिव ब्रह्मा वेख वखाया। सर्बकला समरथ नाथ त्रैलोकी, उठ उठ धाया। लक्ख चुरासी जाए झोकी, दिस किसे ना आया। गुरमुख विरला आत्म मोखी, गुर चरन सरन रहे सरनाया। आप चढ़ाए घाटी औखी, हरनी फरनी नेत्र लोचन देवे खुल्हाया। नौ द्वार उप्पर जोती, गुरमुख विरला चढ़े शब्द साची चोटी, राह भीड़ा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी वेख दर, आप कराए अन्तिम बोटी बोटी अन्तिम कलि अन्तिम आया अन्त संत भगवन्तया। जीव जन्त कोई रहण ना पाया, ना दिसे देव दन्तया। नारी कन्त ना कोए हंढाया, चढ़े रंग ना तन बसंतया। धर्म राए सम्मत तेरां प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेर राज राजानां शाह सुलतन्तया। भरमा डेरा दए मिटाए, मनमती गुर बाण गुरमति रही बुलाए, गुर पूरा शब्द पछन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप चलाए आपणे भाणतया। हरि तत्त अपार दिस ना आया। ना कोई दीसे बुध मन मति, हड्ड मास नाड़ी ना कोए रखाया। आदि अन्त ना लाहे कोई पत, पति पतिवन्ता आप अख्वाया। एका शब्द साचा यति, जोती चीर तन पहनाया। निश अक्खर वेखे साचा सति, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हिस्से रिहा वंडाया। कलिजुग वंड वंडाई, बीस चौबीस्सया। शब्द गंढु इक्क घलाई, वरे राग रागनी हरि छतीस्सया। पवण ठण्ढ प्रेम चलाई, चँवर झुलाए साचे सीस्सया। आत्म ब्रह्मण्ड खोज खुजाई, ना कोई जाणे कुरान हदीस्सया। जेरज अंड वेख वखाई, लेख लिखाए विच उनींस्सया। चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाई, दे सजाए मूसा ईस्सया। लक्ख चुरासी कंड वढाई, राज राजाना खाली खीस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा पीसण पीस्सया। कलिजुग वंडी वंड, आप वंडाईआ। पाया अन्तिम हिस्सा खण्ड खण्ड सृष्ट सबाईआ। पुरख अबिनाशी नेतन नेता ना दीसे नार दुहागण रंड दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बोध अगाध शब्द जणाईआ। एका एक एक इकीस्सया। बीस चौबीस इक्कीस बतीस आपणे रंग मौलया। शब्द ताज साचा सीस, सोहँ ताज मुखी बोल्लया। जगत काज करे जगदीस, धर्म दुआरा एका खोल्ल्हया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल काया चोल्लया। सोहँ ताज पंचम मुख, मोख मुग्ध गुर सांईआ। जुगा जुगन्त मिटे दुंख, वड दाता बेपरवाहीआ। उज्जल करे धरत मात तेरी कुक्ख, आप आपणी बणत बणाईआ। गर्भवास ना उलटा रुख़, जोती जामा दया कमाईआ। शब्द सरूपी साचा सुख, घर आपणे इक्क रखाईआ। जगत वसूरा उतरे दुःख, जो जन दुआरे दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मुख पंचम ताज सृष्ट सबाई रक्खे लाज, सतिगुर साचे रच्चया काज, सीस आपणे आप टिकाईआ।

★ ११ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

ना दीसे ताज जगत सीस शाहीआ। प्रभ रच्चया साचा काज, बेपरवाहीआ। सुणाए शब्द इक्क आवाज़, धुर दरगाहीआ। ना कोई दीसे गाज़ी नाज, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जन भगतां रक्खे लाज, आपणी बणत बणाईआ। नाम चढ़ाए शब्द ज़हाज, सतारां हाढ़ी भेव खुल्हाईआ। लेखा चुक्के कल कि आज, अजमतो कस्मतो अज़िबवहा अतिलहे एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा गुर गोबिन्द लगाईआ। गुर गोबिन्द सेव कमाउँणी, शब्द धुर फ़रमाणा। सवा पहर आत्म जोत जगाउँणी, चरन ध्यान रखाणा। गुर संगत दुरमति मैल धो धो वखाउँणी, पूत सपूता कर कुरबाणा। चारे कुन्टां दहि दिशा खेल रचाउँणी, फड़ फड़ तीर कमाना। पंज दिवस प्रभ आण रखाउँणी, एका रंग समाना। सृष्टी सोए आलस निन्दरा मगरों लौहणी, बारां बारां इक्क ज्ञाना। दिवस रैण ना कोए वखाउँणी, अध मध परमपद एका एक बिबाणा। लग्गे भाग बहादर तेग तेरी यद्द, हरि एका रंग चढ़ाना। अद्धी रातर पुरख अबिनाशी दस्म दुआरी घर साचे सद, दरस दिखाए श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानी एका वर देवे हरि मेहरवाना। मेहरवान रंग साचा लाए, होए आप कृपाल। अमृत आत्म गंग वहाए, इक्क सुहाए साचा ताल। दो जहान पतंग उडाए, सिँघ पाल तेरा साचा लाल। गुर गोबिन्द मृदंग वजाए, तेग बहादर कर प्रितपाल। चिट्टी चादर अंग लगाए, कलिजुग काया बस्त्र लाहे जाल। गऊ गरीब निमाणया भुक्ख नंग कटाए, शब्द धर सिर सच दुशाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द बणाए साचा लाल। गुर गोबिन्द लाल उपन्ना, भेदी भेव ना राया। शब्द सुत प्रभ एका जम्मा, दाई दाया कोई दिस ना आया। आप जाणे आपणा कम्मा, ग्यारां हाढ़ी हुक्म सुणाया। लेखे लग्गा काया चम्मा, पूरन नाता जगत तुड़ाया। अट्ठे पहर वसे प्रभ दम दमा, बाहर रहे ना राया। अमृत आत्म देवे साचा मंमा, सति संतोखी सीर प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा पिछला मूल रिहा चुकाया। पूरन देह गोबिन्द गुर, मेला दीन दयाला। मेला मिल्या लिख्या धुर, घर दसवें खेल निराला। जोती शब्दी एका सुर, सुरत छड्डे लोक काला। ना कोई दीसे रैण अन्धेरी घोर, अट्ठे पहर रहे उजाला। हथ्थ फड़े प्रभ साची डोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चले अवल्लड़ी चाला। गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर पाया, भेदी भेद अवल्ला। जगत पड़दा प्रभ दए खुल्हाया, फड़े शब्द हथ्थ भल्ला। निर्मल जोती दए जगाया, नूरी नूर कराए इक्क महल्ला। अकाल तख्त तख्त अकाल प्रभ दए हिलाया, शब्द पाया तरथल्ला। गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द कलि बैठ सजाया, माया ममता होए छला। सतारां हाढ़ी

लेखा दए लिखाया, सर अमृत नीर चला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द संदेशा देवे वर, गुर गोबिन्दा नाल रलाए डल्ला। पंचम दिवस जागे मितया। सवा पहर सरनाई, अट्ठे पहर नित्त नवितया। सीतल सीता मेल मिलाए, आपे जाणे आपणी रीतया। पूर्ब जन्म जन्म दए जणाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ पूरन साची सेवा हाढ़ ग्यारां लाई। कंचन रूप रंग अपार, बस्त्र तन छुहावणा। शब्द फड़ तेज कटार, प्रभ साचे लेख लिखावणा। नंगी पैरीं हो ख़बरदार, गुरमुखां राह तकावणा। केसर टिक्का सीस दस्तार, पंचम मुखी आप लगावणा। सोहँ जोती तिक्खी धार, कोटन कोटी गढ़ तुड़ावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा माण दवावणा। माण दवाए जगत जुग, लहिणा मूल चुकाए। कलिजुग औध गई पुग, गुरमुख साचे चरन लगाए। जगत चोग जन लई चुग, आत्म रोग मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा माण दवावणा, साची सेवा लाए। साची सेवा सवा पहर, गुरमुखां आप लगांयदा। रसना हरि गुण एका लहर, साचा जाप जपांयदा। आपे वरते हरि निरवैर, निरवैरी विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया साचा सीर वहांयदा। काया नगर वसे खेड़ा, प्रभ साचा मात वसांयदा। जूठा झूठा चुक्के झेड़ा, नेत्र नैण वखांयदा। हरि बिन पार लँघावे केहड़ा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। आपे कटणहारा गेड़ा, आपे भरम भुलांयदा। सतारां हाढ़ी खुल्ला वेहड़ा, इकी सिक्खां शब्द जणांयदा। इकी सिक्ख शब्द जणाई, आत्म जोत जगदीस। धुन नाद इक्क सुणाई, लेखा चुकाए राक छतीस। दर घर साचे वज्जे वधाई, बन्द कराए दन्द बतीस। गुर पूरे संग होए कुड़माई, माया ममता जाए पीस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द ताज बंधावे सीस। शब्द ताज सीस बंधाउँणा, करे मेहर मेहरवाना। धुर दरगाही राज दवाउँणा, सति रिखी मिटे निशाना। चन्द सूरज प्रभ वक्त चुकाउँणा, भेव आपणे हथ्थ रखाणा। नौ नाथ कलि रहण ना पाउँणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल महाना।

★ १६ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

आप गुर आपे चेला, आपे आप लिखाया। आप कराया आपणा मेला, वीह सद तेरां रुत्त सुहाया। अचरज खेल हरि हरि खेला, दिस किसे ना आया। सवा पहर रंग नवेला, गुर गोबिन्दा सेवा लाया। आपे वसे इक्क अकेला, सज्जण सुहेला सर्ब अख्वाया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, हरि शब्दी लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

गुर चेला वक्त सुहाया। चेला गुर गोबिन्द कार, प्रभ साचे आप कराईआ। लिख्या लेख धुर सच्ची सरकार, साचे नेत्र वेख वखाईआ। गुणवन्ता गुण कलि विचार, वेले अन्तिम बणत बणाईआ। जोती जामा भेख अपार, गोबिन्द धारा शब्द चलाईआ। आपे वस्सया हरि हरि बाहर, रूप रंग भेख वटाईआ। मिल्या मेल गुर मीत मुरार, घालन घाल सेव कमाईआ। पूत सपूता चरन द्वार, चरन कँवल रघुराईआ। वेखे परखे परखणहार, जुग जुग बणत बणाईआ। प्रगट होए विच संसार, आपणा रंग चढ़ाईआ। शब्द खण्डा सच कटार, गुर गोबिन्दे आत्म तन पहनाईआ। दिस ना आए लक्ख चुरासी विच संसार, हथ्थ आपणे मुट्ठ रखाईआ। तिक्खी रखे दोवें धार, सृष्ट सबाई कुट्ठ वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ पावे सार, नौ खण्ड वंड वंडाईआ। कल्गी तोड़ा शब्द अपार, साचा सीस टिकाईआ। नीले घोड़े हो अस्वार, नीली छत्तों पार कराईआ। दामन दमके अपर अपार, रूप रंग रंग अनूप समाईआ। करे खेल वार अनके, वासी पुरी हरि घनके, निहकलंकी नाउँ रखाईआ। इक्क सुहाए द्वार बंके, सम्बल नगरी नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी साचा गुर, गुर गोबिन्द जग चेला। मस्तक लहिणा मिल्या धुर, प्रभ पाया सज्जण सुहेला। जोती शब्दी जोड़ी गई जुड़, ना होए वक्त दुहेला। कलिजुग बेड़ी रही रुढ़, गुर संगत गुर मिलण दा वेला। शब्द सरूपी आपे आए चढ़ घोड़, वेखे खेल इक्क अकेला। सतारां हाढ़ी शब्दी औड़, वेखे परखे मिट्ठे कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए गुर गुर चेला। चेला गुर गोबिन्द, दर पूरे निमस्कारया। तुध बिन अवर ना दीसे कोई होर, मात पित जगत जगदीस आदि अन्त ना पारावारया। लक्ख चुरासी लड़ी गुंद, नाता तोड़े पंचम चोर, शब्द फड़ तेज कटारया। लेखा चुक्के मोर तोर, कलिजुग मिटे अन्धघोर, प्रगट होए निहकलंक बली बलकारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, गुर चेला एका धाम सुहा रिहा। गुर चेला धाम सुहाए, प्रभ साचे बणत बणाईआ। आपणा मेला आप कराए, महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। लक्ख चुरासी दए सजाए, ना सके कोए छुडाईआ। जोड़ा घोड़ा इक्क रखाए, दिस किसे ना आईआ। शब्द हथ्थौड़ा हथ्थ उठाए, मिट्ठा कौड़ा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लुकया रहण ना देवे कोई गुट्ठा, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। लक्खण करोच जम्बु पुष्कर नेत्र वेखे तीजे सान सलमल कुशा प्रभ चरनी दर दहिलीज़े। जोती नूर हरि हज़ूर एका झिलमिल गुरमुख विरले आत्म तन पतीज़े। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला बहाए इक्क घर, कलिजुग आपणी हथ्थीं करे रीझे। गुर गोबिन्द जग साचा मेला, प्रभ साचे मात संवारना। इक्क नौ दो अट्ठ गुरमुख लैणा विचार। प्रभ दरस यात्रा अठसठ, गंगा गोदावरी

होए पनिहार। हँकार विकारा जाए ढठ्ठ, शब्द मेला अपर अपार। हरि दर्शन मेला नठ्ठ नठ्ठ, लोकमाती वणज वापार। कलिजुग गेड़ उलटी लट्ठ, नर नारी होए ख्वार। सृष्ट सबाई होए भट्ठ, गुरमुख विरला उतरे पार। ना कोई दीसे मन्दिर शिवदवाला मट्ठ, मस्जिद अन्दर धुँदूकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा संत दुलारा इक्क करे त्यार। इक्क इकी प्रभ साचे पाउँणी, कलिजुग अन्त कुड़माईआ। निक्की सिक्खी संग रलाउँणी, लक्ख चुरासी नाता आप तुड़ाईआ। तिक्खी धारा इक्क वखाउँणी, होए प्रतक्ख दरस दिखाईआ। पूर कराए आत्म भाउँणी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। लेखा चुक्के हाढ़ी साउँणी, इक्क बहार बसंत रखाईआ। आत्म सर नुहाए साची नहाउँणी, दुरमति मैल रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सतारां हाढ़ी फ़ल फुलवाड़ी काया तन सच क्यारी आपणी हथ्थीं बूटा लाईआ। आपणे हथ्थ रक्ख वड्याई, समरथ कलि वरतांयदा। जोग जुगत जगत ना जाणे राई, भाओ भगत प्रेम ना कोए कमांयदा। पढ़ पढ़ थक्की मात लोकाई, गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर दिस किसे ना आंयदा। गुर बाणी नाता धी जवाई, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम दए दुहाई, साध संत ना कोई छुडांयदा। लक्ख चुरासी पैणी फाही, प्रभ साची बणत बणांयदा। वरन अवरनी भुल्ले जगत राही, साचा माही दिस ना आंयदा। वेख वखाणे थांउँ थाँईं, नौ सत्त फोल फुलांयदा। पुरीआं लोआं अगम्म अथाही, ब्रह्मा शिव इन्द हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रवि ससि चरन कँवल देवे झस्स, नस्स नस्स ना कोए पन्ध मुकांयदा। रवि ससि मात प्रकाश, आकाश दिस ना आईआ। पुरख अबिनाशी उप्पर दासी दास, दासन दासी जीव लगाईआ। आपे जाणे आपणे मण्डल साची रास, आपणी बणत बणाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, पुरीआं लोआं विच समाईआ। लक्ख चुरासी बणत बणाए हड्ड नाड़ी मास, आप आपणा विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल इक्क अबिनाश, अबिनाशी पुरख हरि हरि थाँईंआ। हरि रंग प्रभ साचे आप रंगाया। कलिजुग अन्तिम मंगी मंग, लक्ख चुरासी होई नंग, प्रभ साचा दए सजाया। बाल जवानी गई हंढ, बुड़ेपा सुत्ता दे कर कंड, लेखा चुक्के जेरज अंड, उत्भज सेत्ज ना होए कोई सहाया। सतारां हाढ़ी वंडी वंड, साल बारवें हरि ब्रह्मण्ड, नौ दर माती वेख वखाया। पहला साल पहला घर पुरख अबिनाशी खोले दर, सम्मत तेरां नेरन नेरा गुर संगत माती, पुरख बिधाती उत्तम जाति, गुर संगत जन्म दवाया। लेख चुकाए सतारां हाढ़ी लक्ख चुरासी सुत्ती राती, गुरमुख साचे चरन बहाया। आपे पिता आपे माती, आपणी गोद लए बिठाया। ना कोई पुच्छे ज़ात पाती, ऊँचां नीचां विच समाया। सर्ब जीआं प्रभ कमलापाती, कँवल नाभी अमृत मुख चुआया। आपे दीवा आपे बाती, मेट मिटाए अन्धेरी राती, गुरमुख

साचे दीपक जोत जगाया। चरन बंधाए साचा नाती, देवे शब्द हरि धुर सुगाती, लोकमाती किसे हथ्थ ना आया। इक्क वखाए साची हाटी, आप चढ़ाए औखी घाटी, दुरमति मैल हरिजन काटी, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क नौ दो अट्ठ गुरमुखां साचा लेख लिखाया। लेख लिखाया इक्क नौ, पिया परम सुजान। दूई द्वैती जाए नट्ठ, गुर बख्शे चरन ध्यान। नौ दुआरे होइण भट्ठ, उपजे ब्रह्म ज्ञान। दूजे घर वेखे नट्ठ, हरि शब्द झुलाए सच निशान। अट्ठां तत्तां एका मट्ठ, काया जगत मकान। गुर चरन सरन सरन गर चरन जो जन पए ढट्ठ, हरि जोती मेल मिलान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क नौ दो अट्ठ गुरमुख बणाए जगत निशान। नौ दर तेरी धार, साढे तिन्न हथ्थ रखाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, भेव आपणा बैठा छुपाईआ। मारे शब्द इक्क लल्कार, दूसर कोए नेड़ ना आईआ। कल सोलां कल कलि विचार, जगत झेड़े रिहा चुकाईआ। वल छल अपर अपार, नगर खेड़े दिस ना आईआ। बलि बलि हरि करतार, खुल्ले वेहड़े दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां साचा रिहा हुक्म सुणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ नौ दर, मानस देही ख़ाक। पुरख अबिनाशी साचा घर, दो जहानी पाकी पाक। पंज तत्त कलि देवे वर, शब्द घोड़े चढ़ राक। धूढ़ चरन साचा सर, मस्तक टिक्का माथे नाक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दुआरे खोल्ले ताक। साढे तिन्न हथ्थ नौ दर, शब्द सिँघासण हरि सुहाईआ। इक्क बणाए साचा घर, गुरमुखां मात वखाईआ। कोई ना सके अन्दर वड़, सीस धड़ दए दुहाईआ। गुरसिख दूर किनारा उप्पर वेखे चढ़, दूसर किसे ना दीसे जड़, ना कोई चोटी वेख वखाईआ। तुट्टे किल्ले हँकारी गढ़, प्रभ साचा तोड़ तुड़ाईआ। एका अक्खर कलि जाणा पढ़, गुर बचन तन वसाईआ। मन तन धन वहिणा जूठे झूठे हड़, लज पति ना कोए रखाईआ। गुर सतिगुर साचा गुरमुखां आपे लए फड़, जीउ पिण्ड काचा गढ़, कंचन सोना आप बणाईआ। माया ममता ना जाणा सड़, गुर प्रसादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आत्म ब्रह्म जणाईआ। सच वस्त घर साचे लाधी, मिल्या मेल प्रभ माधव माधी, काया नूरो नूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मेला सच घर, गुरमुखां मेल मिलाईआ।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हाड़ सतारां सति है, गुर संगत पूत उपन्नया। एका जोग जगत सच वत है, हरि भाणा हरि हरि मन्नया। एका ताणा पेटा नाम साचा सूत है, कलिजुग अन्तिम बेड़ा बन्न्या। शब्द जैकारा चारों कूट है, जोती साचा चढ़या चन्नया। गुरमुख

७२० ०५

विरला शब्द पंघूड़ा रिहा झूट है, भाण्डा भरम भउ तन भंनया। नौ खण्ड पृथ्वी तीर निराला रिहा छूट है, ना दीसे आत्म अन्नृया। कुला खण्ड इलाबुत हरिवरख किंपुरख भारत खण्ड पाए वंड, हरणयमह केतमाल रमक भद्र गुरमुखां आत्म लाए सन्नृया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौ खण्ड पृथ्वी देवे डन्नया। दस सत्त सतारां सति है, हाढ़ सतारा रीत। गुर शब्द जणाए धीरज यति है, काया करे पतित पुनीत। नाम वड्याई कमलापत है, आप वसाए काया मन्दिर मसीत। नाड़ बहत्तर उबली रत है, हस्त अस्त शस्त बणाए कीट। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट है, मानस देही जामा जीत। रसना नाउँ नरायण रट है, अट्ठे पहर राखे चीत। दूई द्वैती मेटे फट्ट है, नेत्र लोचन दोवें मीट। आपे दिसे घट घट है, शब्द जणाए सुहागी गीत। जोती नूर उजाला लट लट है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी इक्क अतीत। सति सतिवादी कर्म कमाया, गुर संगत संग निभाए। सतिजुग साचा मार्ग लाया, तेरां तेरां तेरी धार रंगत नाम चढ़ाए। शब्द सुदागर इक्क कराया, दूजे दर ना मंगण जाए। काया गागर विच समाया, डूंघा ताल सुहाए। निर्मल कर्म उजागर गुरसिख कराया, प्रभ आपणी बूझ बुझाए। जन्म कर्म प्रभ लहिणा झोली पाया, गुर संगत दया कमाए। देवणहार सदा अख्वाया, गुरमुखां भिच्छया रिहा पाए। मीत मुरारा साचा यार लोकमाती भेख वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला धुर दरबार। धुर दरबारी सच तख्त, प्रभ साचे जोत जगाईआ। लेखा लिखे ना कोई लिख्त, अलक्ख अलक्ख गए गाईआ। आप ना जाणे कोई वेला वक्त, होए प्रतक्ख दरस दिखाईआ। जोती शब्दी एका शक्त, ब्रह्मण्ड विच समाईआ। एका जाणे जुगती भगत, भगत भगवन्ता हरि रघुराईआ। वेख वखाणे साचे संत, आत्म घर वज्जे वधाईआ। जीव जन्त अनेक अगणत, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। माया ममता देव दंत, जीव जन्त रसन हलकाईआ। हरिजन मेला साचे कन्त, शब्द सिंघासण इक्क सुहाईआ। दर घर साचे बणी बणत, साची सेजा आप सुहाईआ। आपे जाणे आदि अन्त, कवण पुरख कवण नारी, कवण सेजा कन्त भतारी, कवण रंग रूप शाम मुरारी, कवण जोत सति अनूप सरूप राम अवतारी, कवण नूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, खेले खेल वारो वारी, आपे जाणे आपणी कारी, गुर संगत तेरी सच विहारी, सतारां हाढ़ी मात कराईआ। हाढ़ सतारां आत्म रस, हरि साचा नाम चवीजे। भगत सुहेला होया वस, घर बैठा दर दहिलीजे। गुर संगत मेला हस्स हस्स, मन तन आत्म सीजे। दो जहानी एका जस, गुर मन्त्र नाम गवीजे। पंच विकार जाए नस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतारां हाढ़ी नाम बीज साचा बीजे। नाम बीज साचा तन क्यारी, प्रभ आपणी हथ्थीं पाउँणा। आपे वेखे फ़ल फुलवाड़ी, बाग़ बग़ीचा

७२१ ०५

मात लगाउँणा। शब्द कराए साची वाड़ी, दूसर हथ्थ ना किसे आउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां नौ नौं हरि साचा भेव खुल्हाउँणा। शब्द अभेदा ताकी बन्द, दिस किसे ना आया। चारे वेदां रसना गाया बत्ती दन्द, ना कोए वंडाया। पुराण कुराना आत्म अन्ध, पढ़ पढ़ थक्के होए हलकाया। आपे सुता दे कर कंड, आत्म कुण्डा ना अन्दरों लाहया। वेस अनेका विच ब्रह्मण्ड, साची वंड वंडाया। जीव जन्त नार दुहागण दिसे रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाया। मनमती भरया इक्क घमंड, वरन वरनी रोग लगाया। प्रभ फड़े हथ्थ शब्द प्रचण्ड, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। नौ खण्ड पृथ्वी वंडे वंड, गुरमुखां दुःख दए मिटाया। शब्द सरूपी पाए ठण्ढ, आत्म सुख उपजाया। पल्ले बन्न्हे नाम गंढ, करीर जंड ना कोई मनाया। मेट मिटाए भेख पखण्ड, साचा मार्ग इक्क वखाया। देवणहार जुग जुग दंड, लेखा लिखणहार सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेली मेल मिलाया। हरिसंगत खोल्हे बन्द किवाड़, गुर मन्त्र जाप जपांयदा। जगत विकारां देवे झाड़, शब्द शस्त्र तन पहनांयदा। गुर शब्द चढ़ाए बणाए साचे लाड़, जीव जन्त वड्आंयदा। लेखा चुक्के पंचम धाड़, कन्त संत मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बणत बणांयदा। बणत बणाए जुगो जुग, जुग जुग कार कमांयदा। ना कोई चिन्ता हरख सोग, दुःख सुख एका रंग समांयदा। अट्ठे पहर शब्द भोग, घर साचे आप लगांयदा। साचा मेला धुर संजोग, इक्क इकेला आप करांयदा। हाढ़ सतारां दरस अमोघ, गुर चेला वक्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रसन चोग इक्क चुगांयदा। रसना चोग शब्द गुर, गुरमति विच समाया। मिल्या मेल लिख्या धुर, बुध मति सार ना राया। आपे जाणे आपणी सुर, ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। आत्म अन्दर जाए बौहड़, अन्ध अन्धेर जोत जगाया। शब्द चढ़या साचे घोड़, लोआं पुरीआं पन्ध मुकाया। लोकमात कलि आया दौड़, भेखाधारी भेख वटाया। दर दुआरा दिसे भीड़ा सौड़, अगे लँघ कोई ना दर्शन पाया। कलिजुग अन्तिम चौथा पौड़, अस्व साचे आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा भगत मूल जगत मात चुकाया। भगती भावत सति रंग, भय निर्भय समाए। जामा जोग जगत गंगी गंग, एका रंग वखाए। साची मुक्ती गुर चरन संग, अंग संग रहाए। आप संवारे हरि जन, शब्द रंग तन चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कौस्तक मनी मस्तक टिक्का सवा रती पंचम केसर मस्तक तिलक लगाए। तिलक लगाए रता केसर, केसरी रंग वटाईआ। चरन छुहाए विच थानेसर, पन्दर्हां चेत्र पन्दर्हां लेख लिखाईआ। वेख वखाणे साचा खेत्र, आपणी हथ्थीं जिंदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रत रती रिहा जगाईआ। वीह सौ पन्दर्हां

७२२ ०५

सम्मत पन्दरां चेत, वरते कलिजुग धारी। करे खेल प्रभ नेतन नेत, लेखा लिखे अपर अपारी। गुरमुखां करे साचा हेत, दिस ना आए नौ द्वारी। पकड़ उठाए जिन्न प्रेत, यक्ष गंधरब वारो वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगाए जोध सूर बलकारी। पन्दरां अन्दर आपे वड़, आपे दए जगाईआ। आपे घाड़न साचा घड़, शाह सुल्तानां उलटी पटी दए पढ़ाईआ। गढ़ हँकारी किले अन्दर वड़, सार पासा खेल खिलाईआ। आपे पुटणहारा जड़, नरद नटी सभ दी पाईआ। गुरमुख साचा एका अक्खर जाए पढ़, ना होए मात जुदाईआ। ना दीसे किसे सीस धड़, नौ नौं विच समाईआ। शब्द विचोला रिहा लड़, जोती चण्डी हथ्थ उठाईआ। कलिजुग कर्म अग्गे खड़, देवे मात दुहाईआ। भगवन भगत भगौती रही लड़, खाली हथ्थीं रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीती मात चलाईआ। वीह सौ पन्दरां पन्ध मुकाए, ग्रन्थ पन्थ पुराण। बन्द बन्द प्रभ जोत जगाए, हरिजन काया सच मकान। दन्द दन्द दन्द ना कोई गाए, एका नेत्र चरन ध्यान। गीत सुहागी छन्द सुणाए, सुणे सुणाए साचे कान। सर्ब जीआं बख्शंद आप अख्वाए, देवे जिया दान। परमानंद विच समाए, पारब्रह्म ब्रह्म रूप समान। भरमा डेरा झूठी कंध मिटाए, इक्क वखाए सच निशान। कारज अनन्द आप कराए, गुरसिख साची सईआ साचा मंगल गान। शब्द प्रतेज चन्द चढ़ाए, पुर अनन्द चरन छुहाए, गढ़ केस कर ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दस दस्मेस हरि मेहरवान। केस गढ़ केसाधारी, पवण चवर झुलार। आपे लाई मात जड़, आपे लए उखाड़। संगत पंगत रही सड़, माया ममता तृष्ना लग्गी मगर झूठी धाड़। पुरख अबिनाशी बांह लए फड़, दर दुआरे साचे देवे वाड़। लेखा चुक्के गोर मड़, जगे जोत बहत्तर नाड़। सृष्ट सबाई रिहा लड़, फड़ शब्द खण्डा दो धार। देवी नैण वहाए जल धारा, हरि खेले खेल मात महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पन्दरां पन्दरां पन्दरां आए विच मैदान। आए मैदान शब्द बलकारी, फड़ नाम तीर कमाना। मारे राज राजान शाह सुल्तान हँकारी, वेखे नौजवाना। तिक्खी रक्खे इक्क कटारी, चलाए वाली दो जहानां। लाड़ी मौत दए बहारी, लग्गे जगत निशाना। गुरमुखां पैज रिहा संवारी, आपणी हथ्थीं बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत सद सद सद सद बलिहारी, मिल्या नाम धुर फ़रमाना। धुर फ़रमाणा नाम संदेश, हरि शब्दी मात जणांयदा। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मा शिव गणेश, नर नरेश ना कोई पांयदा। काया माटी गुर दस्मेस, साची हाटी शब्द विकांयदा। आपे बैठा धारी केस, आपे मूंड मुंडांयदा। आपे जाणे आपणा वेस, गुरमुख साचे ढूंड ढुंडांयदा। प्रगट होया माझे देस, सम्बल नगरी रुत्त सुहांयदा। साढे तिन्न हथ्थ सीआं इक्क वरेस, आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

७२४ ०५

जोत धर, साची भिच्छया झोली पांयदा। पाए भिच्छया गरीब निवाज़, गऊ गरीब निमाणया। करे रक्खया सीस सोहे ताज, दर दर फिराए राजे राणया। जन भगतां रक्खे अन्तिम लाज, देवे शब्द बिबाणया। साचा साजण रिहा साज, आपे जाणे आपणे भाणया। कलिजुग अन्तिम रच्चया काज, लक्ख चुरासी लाहे आप मुकाणया। माया ममता जूठा झूठा देवे दाज, धर्म राए दया कमाए, अठाई कुण्डां एका राह वखाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बख्शे चरन सरन सरनाए, देवे जगत निशानया। वड वड वड प्रताप, बोध अगाध ज्ञानीआ। वड वड वड जगत संताप, घर पंचम चोर शैतानीआ। वड वड वड प्रभ अन्तिम जाप, हरि मेला दो जहानीआ। वड वड वड कलिजुग पाप, जूठ झूठ होए प्रधानीआ। वड वड वड प्रभ आपे आप, आपे जाणे सच निशानीआ। वड वड वड जग तीनो ताप, लक्ख चुरासी रिड़के वांग मधानीआ। वड वड वड प्रभ आपे आप, जोती नूर श्री भगवानीआ। नीकन नीका आप हरि, निज घर निकट समाए। फीकन फीका जगत दर, रस किसे ना आए। भेव जाणे जन जीअ का, आपणी दया कमाए। कलिजुग माया जगत शरीका, अन्तिम झगढ़ा पाए। हाढ़ सतारां सच तारीका, प्रभ साचा लेख लिखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई मात हिलाए। हाढ़ सतारां सच तारीक, लक्ख चुरासी कलिजुग पाईआ। एका वाहद लाशरीक, ना देवे कोई किसे सफाईआ। गुरमुखां मंगी नाम भीख, गुरमुखां आत्म झोली पाईआ। जगत हँकारा तपी सीख, माया ममता अग्न जलाईआ। आपे करे कराए प्रीखिआ प्रीख, साध संत जीव जन्त डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, मेला मेले शाह भीखम भीख, घर गुज़रां जन्म दवाईआ। भीखम शाह जगत मलाह, लोकमात उपाया। सतारां हाढ़ी मिल्या साचा राह, साचा सुत उपाया। इक्क जपाए एका नां, हू अल्ला दए मिटाया। आपे वेखे थाँ थाँ, जल थलां विच समाया। घर घर अन्तिम उडणे कां, गली महल्ला ना कोए सुहाया। ना कोई पंखी पंछी दिसे किसे किले गरां, उच्चे टिल्ले पर्बत ढाहया। पिता पूत ना जाणे माँ, भैण भाई धी जवाई नाता मात तुड़ाया। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, साचे सूरे नाम रंग चढ़ाया। प्रगट होए पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख चुकाए मनसूर ऐनलहक आसा मनसा पूर कराईआ। ऐनलहक हक्क हलाल, महबूब रंग रंगीला। नूरी जल्वा सच जलाल, बाहर वसे त्रैगुण तीना। एका हथ्थ फड़ी मसाल, दीन दयाल जोत अकाल इक्क वखाए मज़्बी दीना। मन्सूर होए मात बेहाल, आपे तारे आपणा लाल, शब्द पाए सच दुशाल, ठांढा करे सीना। जगत अवल्लड़ी चले चाल, सृष्ट सबाई खाए काल, चरन छुहाए प्रभ मक्का मदीना। अरबी फारसी वेखे ताल, अजमतो करसमतो अज़िबवहा अतिलहे रूप रंग बेमिसाल। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, शब्द हदीस जगत वर, बीस इक्कीस साचा दर, दर दरवेसा दए वखाल। पुरख अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार। ना मरे ना कदे जम्मड़ा, आदि अन्त एका धार। पल्ले रक्खे ना कोई दमड़ा, देवणहार सर्ब संसार। सृष्ट सबाई माई बाप अंमड़ा, पिता पूत प्यार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पहली चेत्र करे विहार। पहली चेत्र जगत विहारा, प्रभ साचे मात कराया। राज राजाना वेखे दुआरा, शाह संगरूर आप उठाया। वेखे खेल धर्म जैकारा, पट पटियाला दए हिलाया। कोट फरीदा धुँदूकारा, प्रभ मेटे मेटण आया। सिँघ ईश्र झूठा वणज वपारा, घर नानक लाज लगाया। सिँघ रणधीर ना मिल्या गुर प्यारा, रस रसन विकार चलाया। सिँघ मेहर लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, माया ममता तृष्न जलाया। थल कपूर प्रभ चरन प्यारा, सम्मत सोलां दए टिकाया। आपे वेखे ब्यास किनारा, सिँघ जैमल संग रलाया।
सिँघ तेजा वेख नौ दुआरा, घर साचा दिस ना आया। सिँघ लाभ तन हाहाकारा, काया काअबा हज्ज ना मात कराया।
हरनाम दास ना धर्म विचारा, आप आपणा तत्त गंवाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। रक्खे संग सगन अपारा, संत सुहेले खोज खुजाईआ। लक्ख चुरासी जीव गंवारा, महल्ल अटल अचल्ल कोई दिस ना
७२५ आईआ। इक्क नरेल रती केसर, किस अगे दए टिकाईआ। अन्तिम वेला विच थानेसर, पन्दरां चेत्र सम्मत पन्द्रां प्रभ ७२५
०५ देवे भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, गुर चेला मेल मिलाईआ। गुर ०५
चेला मेलणहार आप अखवनया। देवे शब्द सच्चा भण्डार, वड दाता धन्न धंनया। इक्क कराए वणज वापार, सुणाए राग नाद अनादया। पंच विकारा देवे मार, जन भगतां बेड़ा बन्न्हया। जुगा जुगन्त लाहे उधार, भेव ना जाणे अन्तिम अन्न्हया। प्रगट होए विच संसार, लोकमात चढ़ाए चंन्हिआ। कलिजुग मेटे धुँदूकार, सृष्ट सबाई हंनया बन्न्हया। शब्द सरूपी पहरेदार, गुरमुखां बेड़ा बन्न्हया। धारे भेख अपर अपार, लक्ख चुरासी देवे डंनया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर चेला आप कराए आपणा मेला, जगत चुकाए झूठा जनया। सच विहारा जगत मात, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। प्रगट होए कमलापात, मनमुखां दिस ना आया। वसे बाहर ज़ात, वरनी अवरनी रिहा उपाया। इक्क बंधाए चरन नात, साचा सुहला राग सुणाया। शब्द विकाए साचे हाट, लोकमाती रिहा खुल्हाया। ना कोई दीसे तीर्थ ताट, अठसठ लेखा रिहा चुकाया। गुरमुख विरला अमृत आत्म रस रिहा चाट, प्रभ साचे मुख लगाया। आपे खोल्हे बजर कपाट, मुख सगन शब्द लगाया। गुर संगत नेड़े आई वाट, निहकलंक जोत जगाया। वेखे खेल काया माट, प्रभ सुत्ता सेज विछाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर चेला मेल इक्क दर, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रूप वटाया। गुर संगत तेरी दात, साची

मति रखाईआ। अन्तिम पुच्छण आया वात, लक्ख चुरासी पई दुहाईआ। जूठा झूठा माया नात, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा पाईआ। कोई ना रक्खे कलिजुग पात, आप आपणा दिस ना आईआ। माया ममता अन्धेरी रात, अगम्म अगम्मा बैठा मुख छुपाईआ। लेख चुकाए ज़ात पात, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आप आपणा भेख वटाईआ। भेख वटाया सतिगुर, गुर संगत रिहा जणाए। साचा मेला लिख्या धुर, अन्तर मेल मिलाए। जगत प्रीती गई थुड़, चरन प्रीती इक्क बंधाए। गुर गोबिन्दा गया बौहड़, तख्त अकाला इक्क सजाए। चढ़या रहे साचे घोड़, नीला उप्पर रिहा दौड़ाए। आप उठाया पहला पौड़, लोकमाती राह तकाया। जन भगतां अन्तिम गया बौहड़, जोत सरूपी दरस दिखाया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, हँकारी विकारी दर दुरकाया। साढे तिन्न हथ्थ कलिजुग सीआं जगत लेखा लम्भा चौड़, पूरे गुर बिन ना मुकाया। प्रगट होया ब्रह्मण गौड़, वेद व्यासा गया लिखाया। गुर गोबिन्दा आया दौड़, आपणा भेख वटाया। गुरमुखां लग्गी आत्म औड़, अमृत मेघ बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा रंग वखाया। गुर संगत तेरा सति रंग, प्रभ साचे आप रंगाया। चवी हथ्थ जगत पतंग, शब्द डण्डा नाम चढ़ाया। सत्तां दीपां वंडी वंड, दिस किसे ना आया। आपे सुत्ता दे कर कंड, नार दुहागण दिसे रंड, लक्ख चुरासी दए दुहाया। गुरमुखां मेला विच ब्रह्मण्ड, मेट मिटाए जेरज अंड, लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग काल उठाई पंड, पापां दए दुहाया। जन भगतां आत्म पाए ठण्ढ, सम्मत सोलां सोलां कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, कलिजुग तेरा अन्तिम होला आप खिलाया। संगत तेरी साची मति, बुद्धी तन बिबेक। लेखे लग्गी काया रत, प्रभ चरन रखणी साची टेक। आपे जाणे मित गत, सृष्ट सबाई रिहा वेख। चरन कँवल बंधाए साचा नात आपे जाणे धीरज यति, लोचन नेत्र साचे पेख। सदा सुहेला वसे काया मट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे इक्क दर, कलिजुग माया ना लाए सेक। गुर संगत तेरी धुर दरगाह, एका वंड वंडाईआ। जोती जामा हरि मलाह, नौ खण्ड वंड वंडाईआ। कुलाखण्ड प्रभ वेखे थाँ, इला बुत संग रलाईआ। हरिवरख प्रभ ठण्ढी छाँ, किंपुरख आप दुवाईआ। भारत खण्ड पकड़े बांह, निहकलंकी जोत जगाईआ। हरणयमह साचा नाउँ, एका जाप जपाईआ। केतमाल तेरा साचा राह, सोहँ साचा ढोला गाईआ। रमक राम रिहा समा, निशअक्खर शब्द जणाईआ। भद्र भरम दए मिटा, साचा डंका इक्क वजाईआ। सत्तां दीपां लेखा लिखा, लिखणहारा आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई पिता माँ, लक्ख चुरासी गोद उठाईआ। आपे वेखे थांउँ थाँ, दिस किसे ना आईआ। लक्खण दीप उडे कां, प्रभ साची रचन रचाईआ। पुष्कर नाता तुटे पिता माँ, बाल बिरध

सार ना राईआ। करौच वेखे साचा ना, गुणवन्ते लए उपजाईआ। जम्बु दीप पकड़े बांह, बीस बीसा दया कमाईआ। सान सुरती दए भुला, राज राजानां ख़ाक रुलाईआ। सलमल रोवे मार धाह, ना होवे कोई सहाईआ। कुशा दीप प्रभ वेखे थाँ, गुरसिख साचे लए जगाईआ। कलिजुग अन्तिम पकड़े बांह, जोती जामा भेख वटाईआ। आपे जाणे आपणा नां, वेद पुराणां भेव ना राईआ। वेद व्यासा पुराण अठारां लिखा, चार लक्ख सतारां हज़ार शलोक बणाईआ। ब्रह्मा चारे मुख रिहा उठा, चारे जुगां रचन रचाईआ। वेले अन्तिम रोवे मार धाह, प्रभ अचरज खेल रचाईआ। पुरी ब्रह्म ना मिले थाँ, वेला अन्तिम रिहा जगाईआ। अन्तिम जोती जाए समा, भन्नणहार सर्ब रघुराईआ। हरि बिन अवर दीसे कोई ना, शिव शंकर ख़ाक रुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, बीस बीसा दए दुहाईआ। गुर संगत धन्न कमाई, हरि धन्न पाया। मिले मात जगत वड्याई, गुर पूरे दरस दिखाया। गुर शब्द होए कुड़माई, प्रभ साचा सगन मुख लगाया। रल मिल सखीआं मंगल गाई, गोबिन्द जामा भेख वटाया। गुरसिख बणाए छींबे नाई, गऊ गरीबां माण दवाया। आपे पकड़न आया बाहीं, धुर लेखा आप लिखाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढीआं छाँईं, जुगा जुगन्तर रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेख घर, साची नगरी धाम सुहाया। साची नगरी धाम अवल्ला, गुर पूरे मात वखाया। हरि जी वसे इक्क इकल्ला, दूसर दिस किसे ना आया। ना कोई जाणे जल थला, सागर सिन्ध सार ना पाया। सति सरोवर डूंघी डल्ला, चौदां तबकां भेव ना राया। इतल वितल सितल ना मिला, प्रभ साचा दिस ना आया। तलातल महातल रसातल इकल्ला, चरनां हेठ दबाया। पाताल दिसाए जला थला, जल धरती उप्पर टिकाया। आपे जाणे आपणा हल्ला, लोआं पुरीआं रिहा हिलाया। दीपक जोती एका बला, लोकमाती चन्द चढ़ाया। लेखा चुक्के गोबिन्द डल्ला, सम्मत चौदां लहिणा देणा दए चुकाया। कलिजुग मेटे तेरा सला, सतिजुग साचा गहिणा शब्द तन दए पहनाया। सच दुआरा पुरख अबिनाशी एका मल्ला, गुरमुखां दए जणाईआ। गुर संगत जो साची रल्ला, हाढ़ सतारां रुत्त सुहाईआ। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला, पन्दरहां कत्तक सम्मत सोलां आत्म पड़दा देवे लाहीआ। जगत भुलाया कर कर वल छला, आपे वस्सया निहचल धाम अटला, जोती नूर सवाईआ। शब्द सुनेहड़ा जुगा जुगन्त घल्ला, दस जामे रूप वटाईआ। गुर गोबिन्दे दर दुआरा एका मल्ला, पिता पूत अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क चढ़ाया रसना चिला, नैणा देवी दरस दिखाईआ। किल्हा कोट गढ़ करे ढिल्ला, कलिजुग अन्तिम खेल रचाया। सम्मत अठारां वेखे बूरा कक्का बिल्ला, शाह इग्लिस्ताना दए हिलाया। जन भगतां पाड़े बजर कपाटी लग्गी सिला, साचा निर्मल रूप रखाया। दस्म दुआरी महल्ल अन्दर अचल्ला, दिस

किसे ना आया। अमृत आत्म सच सरोवर गुरमुख विरले मिला, पुरख अबिनाशी आपणी झोली आपे पाया। दर दुआरे आपे फिरे कर कर हल्ला, शाह सुल्तानां संत निधाना किसे हथ्थ ना लाया। गुर संगत सच दुआरा मल्ला, सतारां हाढ़ी दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मेला इक्क दर, आपणा भाणा रिहा लिखाया। साचा भाणा हरि बलवान, आपणे हथ्थ हरि रखाया। फड़े शब्द तीर कमान, चिल्ह्ा नाम चढ़ाया। प्रगट होए दो जहान, भेव कोए ना पाया। मेट मिटाए मात निशान, लक्ख चुरासी दए दुहाया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणे रंग रिहा रंगाया। एका देवे चरन ध्यान, नाता बिधाता आपणा रिहा बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख धर, गुर संगत लहिणा देणा आपे रिहा चुकाया। गुर संगत सतिगुर रूप है, सतिगुर विच समाया। हरि आपे दाता वडा शाहो भूप है, सच सुल्ताना आप अखवाया। वेख वखाणे चारे कूट है, दहि दिशा फेरा पाया। नौ खण्ड पृथ्वी नौ दुआरे रिहा लूट है, दर दरबारा इक्क रखाया। शब्द सिँघासण रिहा झूट है, साढे तिन्न हथ्थ आप सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत लहिणा देवे वर, भेखाधारी भेख वटाया। गुर संगत सोहे बंक द्वार, प्रभ साचा तख्त बिराज्जया। शब्द डंक अपर अपार, गुरमुखां मारे आवाज्या। राउ रंकां करे ख़बरदार, चढ़या चिट्टे अस्व साचे ताज्जया। चार यारां पैणी मार, ना कोई दीसे मुहम्मदी गाज़ीआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, आपणी साजण रिहा साज्जया। आपणी साजण आपे साजे, गोबिन्द गोबिन्द रामा। करे खेल देस माझे, शब्द वजाए इक्क दमामा। पकड़ उठाए राजन राजे, कलिजुग वेखे अन्धेरी शामा। सीस ना किसे दिसे ताजे, मधर ना पीए कोई जामा। ना कोई मक्का काअबा हाजन हाजे, ना कोई पढ़े अंजील कुराना। ना कोई औलीआ पीर शेख़ मुसायक चढ़े साचे ताजे, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दा वेख घर, करे खेल इक्क महाना। करे खेल इक्क महान, प्रभ साची बणत बणाईआ। छाणे पुणे वेद पुराण, वेद व्यासा गया लिखाईआ। आपे वेखे ब्रह्म पुराण, बीस हज़ार शलोक गिणाईआ। पदम वेखे सच निशान, हज़ार पचवंजा भेव खुल्ह्ाईआ। विष्नूं वेखे कर ध्यान, हज़ार तीस लेख लिखाया। शिव जी करे इक्क ज्ञान, चवी हज़ार गिणाईआ। श्री मद् भगवत चतुर सुजान, हज़ार अठारां बणत बणाईआ। नारद वेखे जगत निशान, हज़ार पंझी गणत गिणाईआ। अग्नी वरोले शब्द मधाण, पन्द्रां हज़ार सौ चार गिणाईआ। भगतन वेखे गण निधान, नौ हज़ार पड़दा रिहा फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौं वेखे इक्क घर, नौवां भेद छुपाईआ। नौ दुआरे नौ खण्ड, निज घर आत्म वास्सया। शब्द वेख जगत प्रचण्ड, फड़े हथ्थ पुरख अबिनाशया। मनमुख जीवां

वढ्ढे कंड, गुरमुखां देवे जगत धरवास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उडे उडाए, पृथ्वी आकास्सया। दुष्ट सँघारे दुष्ट दमन, प्रभ साचे सेवा लाईआ। आपे जाणे कामनी कमन, अवण गवण विच समाईआ। साची चमके दामनी दमन, साची चण्डी हथ्थ उठाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे कवण, साची सेवा मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वस्तू झोली पाईआ। साची वस्त साची दात, प्रभ साचा झोली पांयदा। भाणा मन्नणा वड करामात, उत्तम ज़ात रखांयदा। कलिजुग अन्तिम मेला कमलापात, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। वेखे खेल नव सात, सति सतवन्ता बणत बणांयदा। कोई ना दिसे जगत घाट, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। कोई ना दीसे मात हाट, नाम वणज ना कोई करांयदा। दीपक जोत ना जगे लिलाट, औखी घाटी ना कोए चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा रंग वटांयदा। लेखा लिखणहार हरि रघुराईआ। हरि मन विकारा दर द्वार, मनमुखां नाउँ उपजाईआ। गुरसिख आपणा घर विचार, हरि साचा दर सरनाईआ। आए करना सच्चा वणज वपार, हरि नाउँ वस्त पराईआ। वेले अन्तिम करे पार, मात पित ना कोई सहाईआ। नाता तुटे मीत मुरार, नारी खौंत होए जुदाईआ। गुर चरन सद सद बलिहार, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, जो जन आए दर्शन पाईआ। हउमे हँगता रोग निवार, साची संगता मेल मिलाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, जगत अग्नी तन वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साची सिख्या देवे वर, अन्तिम बेड़ा बन्ने लाईआ। गुर शब्द जगत जैकार विच ब्रह्मंडया। आपे पावणहारा सार, क्या कोई करे भेख पखंडया। वस्सया अन्दर गुप्त ज़ाहिर, आप बैठा दे कर कंडया। हरिजन साचे जन्म संवार, मानस देही वेला हंढया। चरन प्रीती इक्क अपार, शब्द चढ़ाए साचे डंडया। लक्ख चुरासी उतरे पार, नौ दुआरे उप्पर अमृत आत्म ठण्ढया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साची वंडण आपे वंडया। कलिजुग साची वंड वंडाई, वंडणहारा आपे। जीउ पिण्ड हरि खोज खुजाई, ब्रह्मण्ड किसे ना जापे। खण्ड खण्ड प्रभ कर विखाई, संग रलाए तीनो तापे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे वड प्रतापे। वड प्रताप दीन दयाल आपणा आप कराया। चरन रखाए काल महांकाल, शब्द दलाल विच रखाया। जगत जंजाला तोड़, शब्द चढ़ाए साचे घोड़, इक्क रखवाला आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, दो जहानां खेल रचाया। दो जहानां साचा मेला, साची बणत बणाईआ। गुर गोबिन्द बणया चेला, पुरख अबिनाशी गुरू बणाईआ। सतिगुर मिल्या सज्जण सुहेला, सति पुरखा नाउँ रखाईआ। आपे वसे सदा अकेला, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। प्रगट किया जगत चेला, साचा वेला रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख

धर, देवे मात जगत वड्याईआ। पुरख अबिनाशी सतिगुर साचा, गुर गोबिन्दे पाया। शब्द दुआरे साचा ताजा, अनहद राग सुणाया। एका अक्खर एका वाचा, एकँकार सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, पंज तत्ती बणत बणाया। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गढ़, प्रभ साचे मात उसारया। तेग बहादर लाई जड़, पिता पूत प्यारया। जोत सरूपी अग्गे खड़, देवे दरस अपारया। भाग लगाए काया धड़, जगत महल्ल चुबारया। शब्द सरूपी अन्दर वड़, मेल मिलाए पुरख भतारया। एका राग बहत्तर नाड़, बहत्तर ताड़ा आप वजा रिहा। सज्ज सिँघासण आपे चढ़, पुरख अबिनाशी डेरा ला ल्या। गुर गोबिन्दा बाहों फड़, विच मात हरि जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई दीसे सीस धड़, साचा संग इक्क रखा ल्या। गोबिन्द तेरा काया कोट, शब्द महल्ल उसारया। पुरख अबिनाशी लाए चोट, उप्पर सच द्वारया। चढ़ चढ़ थक्के कोटी कोट, बिन नानक किसे ना पा ल्या। साध संत आलूणिओ डिगे बोट, इक्क कबीरा गोद उठा ल्या। पुरख अबिनाशी गुर गोबिन्द तेरी भरे पोट, अमृत धारा इक्क वहा रिहा। नौ दर ना दिसे कोटी कोट, एका रंग समा रिहा। शब्द नगारा साची चोट, अट्ठे पहर लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रूप वटा रिहा। तेग बहादर तेरा लाल, गोबिन्द नाम रखाईआ। प्रभ शब्द पाई सच दुशाल, आपणा मुख छुपाईआ। नूरी जल्वा जगत जलाल, हक्क हलाल सर्ब खुदाईआ। ग़नीम ग़नीमा बेमिसाल, अज़मत किसे हथ्थ ना आईआ। शाह भीखम करे जगत मलाह, प्रभ साचे बूझ बुझाईआ। वेखे खेल अन्त तमाम, साचा संग निभाईआ। सम्मत उनी प्याए साचा जाम, विच मदीने लए जगाईआ। पहने बस्त्र काले शाम, अरशों कुरसों जोत जगाईआ। आप रहीम आप रहिमान, शब्द कुरान जगत जुदाईआ। ना कोई दीसे बेईमान शैतान, हाज़ी काज़ी नज़र ना आईआ। इक्क सुणाए धुर फ़रमाण, गरीब निवाज़ी दया कमाईआ। सोहँ अक्खर मात प्रधान, सत्त रंगा चढ़े मात निशान, प्रभ साची बणत बणाईआ। तिन्न अस्सू देवे भारत खण्डी आप जवान, शाह सुल्ताना हथ्थ फड़ाईआ। शब्द रखाए एका आण, ना कोई मेट मिटाईआ। सोहँ फड़े तीर कमान, खेवट खेट हरि रघुराईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द बली बलवान, पिता पूत आप अख्वाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, शाह रूस चीन हिलाईआ। सम्मत सोलां वेखे मार ध्यान, नाम बिबाणा जगत टिकाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सारे गाण, ग्रन्थी पन्थी भरम चुकाईआ। ना कोई पूजे मढ़ी मसाड़, ओंकारा देश वधाईआ। निहकलंका खेल महान, शब्द जैकारा इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी भाग लगाईआ। सम्बल नगरी जागे भाग, गुर गोबिन्दे लेख लिखाया ए। हरि जोती जगया इक्क चिराग, शब्द चलाई साची नईआ ए। जन भगतां पकड़े आपे वाग, आपे

मात पित भैण भईआ ए। दुरमति मैल धोवे दाग़, जुगा जुगन्तर साचा सईआ ए। हँस बणाए फड़ फड़ काग, लेखा पाड़े धर्म राए कलि वहीआ ए। मस्तक लिखे साचे माथ, प्रभ लिखणहार अख्वईआ ए। जगत चलाए साची गाथ, सोहँ नांओ रखाईआ ए। साढे तिन्न हथ्थ तेरा चुक्के साथ, गुर संगत माण दवईआ ए। नौ दुआरे हाथो हाथ, प्रभ लेखा आप लिखईआ ए। दसवें बैठा सगला साथ, लज पति आप रखईआ ए। अनहद धुनी साची गाथ, आत्म घर सुणईआ ए। सम्मत सोलां शब्द सरूपी साची ठाठ, अमृत धारा उप्पर वहईआ ए। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, साचा नाहवण इक्क नवाईआ ए। गुर शब्द ना जले काया काठ, अग्नी पोहे ना रईआ ए। चरन प्रीती साचा पाठ, धुर दरगाही मेल मिलईआ ए। नेत्र दर्शन साचा हाठ, जप तप सति आपणे आप रखईआ ए। जन भगतां पकड़े आपे लाठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखईआ ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्द माण दवईआ ए। गुर गोबिन्द साचा मीता, एका एक अकालया। जुग जुग चलाए आपणी रीता, दीना बंधू दीन दयालया। आप बणाए मन्दिर मसीता, आप उपाए गुरदुआरे शिवदवाल्या। आपे वसे काया चीता, हीर मन्दिर इक्क सुहा ल्या। एका शब्द सुणाए ध्याए अठारां गीता, पुरख अबिनाशी जिस जन दर्शन पा ल्या। हरि कृष्न मुरारी साचा मीता, राम रमईआ आप अख्वा ल्या। आपे राधा आपे सीता, आपे कन्त सुहाग हंढा ल्या। आपे होए पतित पुनीता, गुरमुखां अन्दर डेरा ला ल्या। आपे बैठा रहे अतीता, आपणा भेव छुपा रिहा। जुग जुग धारे आपणी रीता, आपणा रंग वखा ल्या। ना कोई जाणे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां विच मसा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दे माण दवा ल्या। गुर गोबिन्द साचा यार, हरि हरि नैण मुँधारा। प्रगट होए विच संसार, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सम्बल नगरी अपर अपार, विच वस्सया एकँकारा। जोती नूर अपर अपार, कंचन बस्त्र धारा। शब्द फड़े प्रभ हथ्थ कटार, सतारां हाढ़ी दिवस विचारा। गुर संगत तेरा पहरेदार, अट्ठे पहर ख़बरदारा। नेड़ ना आए ठग्ग चोर यार, पंजां चोरां दए दुरकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरी रंगत दर करे खेल अपर अपारा। गोबिन्द तेरी धार, पुरख अबिनाशी आप बणाईआ। आपे जाणे आपणी कार, साचा शब्द हुक्म जणाईआ। पिता पूत मात दर कीनी शब्द कुड़माईआ। मिल्या मीत इक्क मुरार, छुट्टी जगत जुदाईआ। साचा कीता कौल इकरार, वेले अन्तिम होए सहाईआ। कलिजुग बेड़ा लाए पार, फ़ल फुलवाड़ी आपणी हथ्थीं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दे मेल मिलाईआ। गुर गोबिन्दे वर घर पाया, होया जगत सुहागी। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया, इक्क सुणाया नाद अनादी। रूप रंग कोई दिस ना आया, सति पुरख सदा सतिवादी। बोध अगाधा शब्द

जणाया, सदा रहे विस्मादी। आप आपणी गोद उठाया, हरि मेला माधव माधी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, देवे धुर दरगाही साची दादी। धुर दरगाही साची दात, गुर गोबिन्दे झोली पाईआ। एका गेड़ा नव सात, नौ खण्डां सत्तां दीपां रिहा दवाईआ। आपे वेखे खेल मात, कमलापात जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर शब्द वेखे इक्क घर, एका रंग रंगाईआ। गुर गोबिन्द साचा मीता, प्रभ साची जोत जगाईआ। आप कराया आपणा मेला, वरन गोत मिटाईआ। धुर दरगाही सज्जण सुहेला, आपणे अंग लगाईआ। आपे गुर आपे चेला, गुर गोबिन्दे भेव खुल्हाईआ। कोई ना जाणे साचा रहिबर, किस वेले बणत बणाईआ। शब्द चढ़ाए साचा तेला, जोती अंजन नेत्र पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे होए इक्क इकेला, शब्द घोड़े वाग गुंदाईआ। शब्द घोड़े गुंदे वाग, प्रभ साचे खेल खिलाया। धुर दरगाही आया भाग, गुर गोबिन्दे मेल मिलाया। जगत तृष्ना बुझी आग, प्रभ चरन कँवल चित लाया। दो जहानी वड वडभाग, गुर चेला एका धाम सुहाया। आपे पकड़े हथ्थ आपणे वाग, डोरी चोरी चोर बणाया। हँस बणाए जगत काग, मोरी तोरी भेव मिटाया। बाशक नागा तशका नाग, सागोंपांग सेज विछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साढे तिन्न कोस सहँस मुख एका धरवास आपणा वाज लगाया। सहँसर मुख मिटाए दुःख, प्रभ अबिनाशी खेल अपारा। साढे तिन्न हथ्थ शब्द सिँघासण आप बणाए, विच टिकाए दिल्ली दरबारा। सम्मत वीह सौ सतारां खुशी मनाए, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सम्मत तेरां ल्या लिखाए, प्रगट होए गुर गोबिन्द विच संसारा। वाली हिन्द चिन्त मिटाए, फड़ शब्द तेज कटारा। सागर सिन्ध आप अख्वाए, जगत वहाए वहिंदी धारा। आलस निन्दरा आप गंवाए, चरन छुहाए दिल्ली दरबारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मस्तूआणा खोल्हे नाम भण्डारा। नाम भण्डारा देवे खोल्ह, प्रभ साचे बणत बणाईआ। निशअक्खर वक्खर एका बोल, राज राजानां रिहा जगाईआ। आपे तोलणहारा तोल, तोले सृष्ट सबाईआ। आदि अन्त ना जाए डोल, दो जहानां बणत बणाईआ। साधां संतां गुरूआं पीरां सोहे कोल, आत्म दर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द भण्डारा नौ खण्ड पृथ्वी तेरा खोल्ह आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल जोत सरूप दर्शन दे के दर्शन सिँघ दिल्ली वाले तों कृपान मंगाई ★

दर्शन सिँघ प्रभ दरस दिखाया, मेला धुर दरगाही दा। कंचन बस्त्र रंग रंगाया, गुर शब्द मेला साचे माही दा। बस्त्र

तन लए छुहाया, गुरमुखां लेख कटे लक्ख चुरासी फाही दा। वाली हिन्द लए जगाया, नाता तुटे झूठी शाही दा। गुर संगत साचा माण दवाया, शब्द द्वार आप अख्वाया, जन साची सेव कमाई दा। साचा मार्ग इक्क वखाया, सोहँ मन्त्र जाप जपाया, दोवें नेत्र बन्द कराया, आत्म गवरा मन बंधाया, दीपक जोत जगाई दा। आपणा खण्डा आपणे हथ्थ रखाया, शब्द सिँघासण हेठ दए दबाया, गुरसिख ना कोए हथ्थ उठाया, एका शब्द खण्डा चारों कुन्ट वाही दा। जगत शब्द जिस मात सजाया, आपे अन्तिम होए सहाया, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां साचा वणज कराए एका मेला प्रभ सज्जण सुहेला गुर चेला एका धाम सुहाई दा। गुर चेला साचा मीतड़ा, मित्र प्यारे मीत। क्यों करे जगत चलितरा, कर काया गोबिन्द ठांढी सीत। अमृत आत्म साचा नितरा, काया होए पतित पुनीत। बाकी वक्त रहि गया कितड़ा, ढहि जाणे देहुरे मन्दिर मसीत। गुरमुखां मन्त्र एका दीतड़ा, गाए शब्द सुहागी गीत। ना कोई वार ना कोई थित्तड़ा, अट्ठे पहर पतित पुनीत। बाकी वक्त रहि गया कितड़ा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा चीथड़ा, गुर संगत तेरी शब्द नरेल, प्रभ साचे गोद उठाईआ। आपे करे आपणी मेहर, मति बुध ना कोई चतुराईआ। चरन ल्याए घेर घेर, शब्द लहिणा रिहा चुकाईआ। दाता सूरा शेर दलेर, जोती जामा भेख वटाईआ। सोहँ गरजे साचा केहर, चारों

७३३ कुन्ट पए दुहाईआ। लक्ख चुरासी ढहि ढहि ढेर, नौ खण्डी ख़ाक उडाईआ। ना कोई दिसे सञ्झ सवेर, सूरज चन्द ७३३

०५ मुख छुपाईआ। तारा मण्डल इक्क अन्धेर, दीप लोअ दिस ना आईआ। गुरमुखां चुकाए मेर तेर, एका धाम सुहाईआ। ०५

प्रभ अबिनाशी ना लाए देर, आत्म पड़दा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी हथ्थीं इक्क नरेल, पहली चेत्र काया खेत्र वेख वखाईआ। जगत नरेल भगत वर, गुर संगत वंड वंडाईआ। चारों कुन्ट अग्नी जेठ, कलिजुग जीवां रही तपाईआ। अमृत आत्म काया वेख, किसे हथ्थ ना आईआ। परम परमात्म गुरमुख विरला रिहा वेख, जिस जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा लहिणा देणा ताणा पेटा साचा सूता अन्तिम रिहा चुकाईआ। गोबिन्द लहिणा मात चुकाया, साचा खेल खिलाया ए। गुरमुखां गहिणा तन पहनाया, शब्द नाम अख्वाया ए। आपे नेत्र तीजे दरस दिखाए, आत्म पड़दा लाहया ए। शब्द तूर घर राग अलाउँणा, अन्तिम वक्त चुकाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ अक्खर एका दो दो एका मेल मिलाया ए। कलिजुग काया लग्गे सेक, ना अन्त किसे छुडावणा। गुरसिख विरले वेखे बुध बिबेक, इक्क ध्यान लगावणा। साचे नेत्र रिहा वेख, पारब्रह्म ब्रह्म समझावणा। ना कोई दिसे औलीआ पीर शेख़, अन्त फड़ाए दामना। अन्तिम मिटणी सभ दी रेख, करे खेल भेखाधारी भेख बावन बावना।

जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर शब्द देवे जगत वर, नर नरेशा हो दलेर धुर दरगाही बणाए साचा जामना। जगत नरेल मात वड्याई, धुर दरगाही फ़रमाणा। करे खेल पहली वेर, पुरख अबिनाशी चतुर सुघड़ स्याणा। आपे जाणे अंडज जेरज, उत्भज सेत्ज विच समाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वरते अन्तिम भाणा। कलिजुग भाणा हत्थ, प्रभ शब्द डोर बंधाईआ। सर्बकला समरथ, प्रभ कलिजुग घोर वखाईआ। सृष्ट सबाई पाए नत्थ, जोरू जोर ना कोई छुडाईआ। लेखा वेखे सीआं साढे तिन्न हत्थ, प्रभ लाड़ी मौत संग मंगाईआ। गुरमुखां देवे अकथना अकथ, प्रभ सोहँ साचा जाप जपाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो दर दर्शन पाईआ। जगत विकारा दए मथ, गुर शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर चेला सुहाए इक्क घर, साची बणत बणाईआ। बणत बणाए अन्त कलि, जुग जुग बेड़ा बन्न्हणा। सृष्ट सबाई वल छल, गुरमुख विरला मात मन्नणा। आप चलाए कर्मी हल, निहकरमी बीज बीजणा। जगत द्वैती मिटे सल, दर दुआरा जिस जन मल्लणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा एका घल्लणा। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल, जगी जोत अकालया। आपे वसे जल थल, हर घट में आप समा ल्या। साची जोती बल, कलिजुग रैण अन्धेरी घटा कालया। काया माटी वेखे खल, साचा शब्द जगत दलालया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, प्रगट होया वाली दो जहानया। दो जहाना वाली गोबिन्द राया। दोहां हत्थां रखे खाली, सृष्ट सबाई शब्द बंधाया। गुरमुखां फ़ल वेखे काया डाल्ही, अमृत मेवा इक्क खुवाया। जुग जुग धारे भेख, भेखाधारी भेख वटाया। ना कोई जाणे कलिजुग अकाल अकाली, रूप कवण द्वार सुहाया। मायाराणी गुर मन्दिर दलाली, साचा भूप मनों भुलाया। ना कोई जाणे हक्क हलाली, कलिजुग पड़दा पाया। उच्चे मन्दिर दिसण खाली, गुर गोबिन्दे मुख छुपाया। फ़ल ना दिसे किसे डाल्ही, चूड़ीदार पजामा पाया। कच्छ कछिहरा झूठी शाली, तन पड़दा ना किसे लगाया। हत्थ कड़ा ना धुर दा वाली, साचा तन्दन तन्द ना किसे बंधाया। शब्द ना पाई जगत किरपान, अट्ठे पहर रहे काया विच म्यान, ना कोई जाणे जीव निधानी, कंघा करे मात सफाया। गुरमुख साचे चतुर सुजानी, त्रै सौ सठ हाडी नाड़ बहत्तर जोड़ी जोड़ दूई द्वैती रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा वेस कर, गुर गोबिन्दा वाली हिन्दे सद बख्शिंदे एका मार्ग रिहा लगाया। एका मार्ग गुर गोबिन्दा, गुर नानक रीत चलाईआ। ना कोई करे किसे निन्दा, वरन अवरन भैणां भाईआ। सर्ब जीआं पुरख अबिनाशी आप बख्शिंदा, अठारां वरनां विच समाईआ। जोती जामा धरे हरि मृगिन्दा, गुर दसवें जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका मेला सच घर, सम्बल

नगरी रुत्त सुहाईआ। सम्बल नगरी रुत्त बसंता, खिड़ी मात फुलवाड़ी। प्रगट होया साचा कन्ता, खेल कराए सतारां हाढ़ी। गुरमुख साची नारी आपे होए पति पतिवन्ता, लाज रखाए चरन छुहाई दाढ़ी। माण दवाए साचे संता, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। जुगो जुग महिंमा अगणता, वेद पुराण रहे पुकारी। आपे पुरख अगम्म अगम्मड़ा, खाणी बाणी ना पावे सारी। ना कोई लए दंम दमड़ा, ना कोई अट्ठे पहर पवण चलाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख घर, भाग लगाए काया महल्ल सच अटारी। सम्बल नगरी धाम न्यारा, गोबिन्द आप उपाया। आपे लाया मिटी गारा, लहू मिझ संग रलाया। ना कोई जाणे वेखण परखणहारा, सृष्ट सबाई भरम भुलाया। जोत जगाए पुरख अपारा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, सच विहारा रिहा कराया। शब्द विहार कराए जगत जगदीसया। हरि मन्त्र धार चलाए बीस इक्कीसया। संग मुहम्मद चार यार मिटाए विच उनीस्सया। अट्ठ अठारां जल जल धार, चारों कुन्ट दुहाई दन्द बतीसया। सम्मत सतारां मारे मार, शाह सुल्तानां खाली खीस्सया। सम्मत सोलां होए उज्यार, वेखे खेल राग छतीसया। पन्दरां पन्दरां वेख विचार, अन्दरे अन्दर मारे चीसया। चौदां चौदां हट्ट वणज वपार, गुरमुखां आप कराए जगत जगदीसया। तेरां तेरां तेरी धार, प्रभ साचा किसे ना दीसया। सम्बल नगरी अपर अपार, प्रभ बैठा चढ़ के टीसया। नौ दर वेखण जीव गंवार, छत्र दिसे ना किसे सीस्सया। गुरमुखां बेड़ा लाए पार, वक्त सुहाए बीस इक्कीसया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, साचा मेला इक्क इक्कीसया। इक्क इक्कीसा अकल कल, मातलोक वरतांयदा। सोलां कलां वल छल, काया भेख वटांयदा। धुर दरगाही इक्क दुआरा बैठा मल, आवण जावण बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग वटांयदा। रंग वटाए सतिगुरू, गुर सतिगुर मात जणाईआ। पुरख अबिनाशी एका सुर, नर निरँकारा रिहा जगाईआ। लेखा चुक्के चेला गुर, नाद तूरत इक्क वजाईआ। शब्दी जोती गया जुड़, अकाल मूर्त रूप समाईआ। साचे चढ़या नीले घोड़, नीली छतों बाहर कराईआ। तारा मण्डल रिहा रुढ़ चन्द सूरज दए दुहाईआ। प्रभ चरनी उप्पर रिहा जुड़, हेठां भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी भाग लगाईआ। सम्बल नगरी सच निथानो, निथावयां दिस ना आया। पुरख अबिनाशी इक्क ग्राम, साचा नाम वसाया। अमृत प्याए साचा जाम, तृष्ना भुक्ख रहे ना राया। आप संवारे आपणा काम, गुर गोबिन्दे माण दुवाया। गुरमुखां प्याए आत्म जाम, साचा नांओ नाम उपाया। गगन पातालां साचा धाम, काया मन्दिर इक्क रखाया। राम रहिमान साचा राम गुणी गणीमा आप अख्वाया। लक्ख चुरासी करे ताम, लाड़ी मौत रिहा सुणाया। धर्म राए मंगे आत्म दाम, कलिजुग लेखा

रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख वेखे इक्क दर, गुर संगत संग रलाया। गुर गोबिन्दा साचा चेला, जोती जोत विच वस्सया। सच दुआरा एका मेला, दर दुआरा एका दस्सया। पुरख अबिनाशी इक्क इकेला, काया मन्दिर आकाशया। गुर संगत साचा सज्जण सुहेला, मेटण आया रैण अन्धेरी मस्सया। जोत सरूपी जगत अभेद, तीर कमानो इक्को कस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दा इक्क घर गुर पूरा दर घर साचे एका वस्सया। घर दुआरा इक्क है, एकँकार बणाया। आपे बैठा अन्दर टिक है, दिस किसे ना आया। गुरमुख तेरी सद रक्खे टेक है, हथ्थ कंडे उप्पर टिकाया। चरन प्रीती जो जन गया लग है, प्रभ शब्द सिँघासण लए बिठाया। जगत मिटाए तृष्ना तृख है, साची सिख्या सिख सिखाया। दो जहानां लेखा रिहा लिक्ख है, ना सके कोई मिटाया। गुर संगत मंगी साची मंग है, प्रभ आत्म झोली दए भराया। दरस देखणा साचे नेत्र पेखणा आत्म लाहे दूई द्वैती विख है, अमृत आत्म जाम प्याया। गुर दस्मेस साचा गुर पुरख अबिनाशी तेरा साचा सिक्ख है, भाणा उप्पर सीस टिकाया। तेग बहादर लेख लिखाया शब्द है, दिल्ली सीस लगाया। माता गुजरी उप्पर चढ़ चढ़ वेखे बुरज है, नेत्र दिस ना आया। दर मंगी साची भिख है, लाल गोदी दए बिठाया। आपे लेखा लिखणहारा लेख है, शब्द कलमी कलम चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वक्त सुहाया। गुर गोबिन्द साचा चेला, लोकमात अख्वाया। गुर संगत तेरी झोली पाई साची वेला, चारे पूत सपूत झोली पाया। कलिजुग अन्तिम आया वेला, चारे कूटां रिहा जगाया। जन भगतां साचा सज्जण सुहेला, साढे तिन्न हथ्थ सीआं रिहा मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा वेख घर, जगत दित्ता साचा वर, सिँघ मनजीता सदा अतीता साची सेव लगाया। साची सेवा आप लगाई, कलिजुग अन्तिम वारया। प्रगट होया देवी देवा, निहकलंक नर अवतारया। रसना कोई ना गाए हरि हरि जेहवा, जोधा सूरा बलकारया। गुरमुखां कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, नूरो नूर अपारया। जोत निरँजण अलक्ख अभेवा, साढे तिन्न हथ्थ नींह उसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे साचा वर, करोड़ तेतीसे छुट्टे घर, राजा इन्द्र रोवे धाहां मारया। सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। करोड़ तेतीसा मिटणी चिन्द, देवी देव रहण ना पाईआ। साची बिन्द सच सपूता लेखे लाईआ। वेखे खेल प्रभ अबिनाशी विच हिन्द, साची बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, गुर चेला एका थाम सुहाईआ। चेला गुरू गोबिन्द हरि निरँकार दा। तन मन लाहे आपणी चिन्द, दोए जोड़ सदा निमस्कार दा। लेखे लाए साची बिन्द, मात पित पिता पूत मात वारदा। लक्ख चुरासी करे निन्द, गुरमुख साचे मात शृंगार

दा। जोती जोत सरूप हरि, मेला कराए इक्क घर, साचा वेला कौल इकरार दा। कौल इकरार करके आया, दुष्ट दमन जग दाता। मीत मुरार बणके आया, चार वरन इक्क ज़ाता। शब्द कटार फड़ के आया, आपे पुरख बिधाता। हार शृंगार कर के आया, वेखे खेल मात तमाशा। इक्क जैकार कर के आया, माण रखाए पृथ्वी आकाशा। दोए जोड़ चरन निमस्कार करके आया, मंगया दान हरि भगवान अग्गे डाहया काया कासा। किरपा करी आप महान, शब्द खुल्हाई इक्क दुकान। जोत जगाई हरि भगवान, काया मण्डल पाई रासा। होई बुध मात बलवान, गुणवन्ता करे सुध जुवान। तोड़े माण अभिमान। सति सरूपी करे युद्ध, धुर दरगाही इक्क फ़रमाण। सच्चे घोड़े बहे कुद्द, आपे वेखे ज़िमी अस्मान। पुरख अबिनाशी कारज करनहारा सुध, जगत रखाए माण ताण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, कलिजुग वेखे मार ध्यान। गुर गोबिन्दे दित्ता वर, प्रभ आत्म बूझ बुझाईआ। अन्तिम वसणा एका घर, एका दूजा भउ चुकाईआ। जाति पाती चुक्कणा डर, हरि साचा सहिज समाईआ। अन्धेरी राती दए हरि, कलिजुग अन्तिम काज रचाईआ। चारों कुन्टां चुकणा डर, ना कोई लाज रखाईआ। ना कोई दिसे तीर्थ सर, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। यति सति कलि जाए हर, ना सके कोई बचाईआ। गुरमुख विरला एका वसे साचे घर, प्रभ साचा दया कमाईआ। पुरख पुरखोतम नारी नर, आपे पिता पूत अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सरूपी अन्दर वड़, सभ घट में रिहा समाईआ। सति सरूपी अन्दर वड़या, गुर गोबिन्द गोपाला। लक्ख चुरासी किसे ना फड़या, काया लाया बाहर ताला। संत सुहेला आत्म चोटी कोई चढ़या, तोड़े जगत जंजाल। सिँघ पाल प्रभ साचे फड़या, फ़ल लगा काया डाल्हा। लोकमात कलि घाड़न घड़या, आपे बणया हाली हाला। बहत्तर नाड़ी ताणा भणया, जगत अवल्लड़ी चाला। काया बुत मात पित जणया, आपे होए आप रखवाला। अन्तिम वेले कोए ना बणया, तुट्टा माण ताणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, इक्क घर इक्क दर एका गुरमुख वरया। गुरमुखां वर पाया, एका एक पुरख अबिनास्सया। घर मन्दिर इक्क सुहाया, होए दासन दास्सया। आत्म जन्दर इक्क तुड़ाया, मण्डल वेखे साची रास्सया। डूंघी कन्दर होए रुशनाया, घट घट करे प्रकास्सया। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, रसना गाए स्वास स्वास्सया। अन्दरे अन्दर मेल मिलाया, गुर पूरे बलि बलि जास्सया। हरि मन्दिर नाम रखाया, ना कोई जाणे पृथ्वी आकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सद रक्खे साचा वास्सया। गुर संगत तेरी वस्त, प्रभ साचे हथ्थ उठाईआ। देवण आया दस्ती दस्त, समरथ कल वखाईआ। अट्ठे पहर मस्ती मस्त, अन्तिम कलि जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे मात वर, मुख सगन गुर शब्द

जगत कुड़माईआ। वड वड्याई धरना पत, बख्शे चरन सरन सरनाईआ। आप कराए उत्पत, मेटणहार आप अख्वाईआ। आप बणाए काया बुत्त, आपे अन्तिम ढाहीआ। आप उपाए लक्ख चुरासी साचे सुत्त, आपे मेट मिटाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, रंग बसंत चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आदि अन्त रचन रचाईआ। सतिजुग आदि आदि अवतारा। पारब्रह्म रूप अनूप अपारा। सच धर्म चार वरन जैकारा। हरिजन वेखे आपणे कर्म, साचा नाता चरन प्यारा। उत्तम जाति नाम वरन, गोबिन्द लेखा अपर अपारा। साचे नेत्र हरन फरन, मेटे अन्ध अन्धयारा। लेखा चुक्के मरन डरन, प्रभ पाया अगम्म अपारा। सति सच सरनाई निहकलंक नरायण नर अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए बंक दुआरा। बंक द्वार हरि अपार, आपणा आप साज्जया। जोत सरूपी कर आकार, वसे गरीब निवाज्या। शब्द रक्खे साची धार, मारे साची आवाज्या। पवण सरूपी हो अस्वार, शब्दी पवणी अवणी गवणी आप संवारे आपणा काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर बन्ने धार। जुग जुग धारे भेख, भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम ल्या वेख, रोग सोग चिन्त विजोग माया भरम भुलांयदा। ना कोई दिसे औलीआ पीर शेख़, लिख्या अन्तिम यार यारी आप चुकांयदा। आपे जाणे धारी केस दस दस्मेस, पंचम मीता आप अख्वांयदा। आपे बणे दर दरवेश, मूंड मुंडाए नर नरेश, बाल अवस्था अल्लड़ वरेस, तेरां तेरी धार वहांयदा। प्रगट होया माझे देस, सम्बल नगरी साचा वेस, गौड़ ब्रह्मण सुत उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, बजर कपाटी उच्चा टिल्ला, शब्द पहाड़ी दिसे किल्ला, प्रगट होए दरस दिखांयदा। शब्द पहाड़ी चार दिवार, किला कोट उसारया। अन्दर वड़या हरि निरँकार, किसे दिस ना आए अन्दर बाहर, शब्द वहाए साची धार, आपे जाणे आपणी कारया। लक्ख चुरासी वेखे नौ द्वार, शब्द सिँघासण अपर अपारया। गुरमुखां देवे नाम अधार, एका राग सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, एका बंक द्वार खुल्हा रिहा। बंक द्वार इक्क खुल्हाए, होए शब्द जणाईआ। साचा शब्द मृदंग वजाए, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। राउ रंक रिहा उठाए, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर रिहा फिराईआ। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना, नाम दात झोली पाईआ। चरन धूढ़ साचा इशनाना, साचा नहावण अमृत साचे आत्म नीर नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे गोपी आपे काहना, आपे काया साचा मन्दिर बन बिन्दरा साची सेज विछाईआ। साची सेजा आत्म घर, प्रभ आपणी आप विछांयदा। गुरमुख नुहाए साचे सर, साचा संग निभांयदा। आपणी हथ्थीं खोल्हे दर, नाम रंग चढ़ांयदा। आवण जावण चुक्के डर, संत सुहेला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अंगीकार हरि गिरधार जन भगतां

आप अख्वांयदा। भगत सुहेला साचा मीत, जुग जुग रीत चलाईआ। आपे परखणहार नीत, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। बैठा रहे सदा अतीत, दिस किसे ना आईआ। दो जहान सदा अतीत, मर कदे ना जाईआ। सदी बीसवीं रही बीत, प्रभ साची रचन रचाईआ। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, अठारां देवे ढाहीआ। सो इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर रिहा मात जगाईआ। चरन छुहाए रोड़ी सखर, सम्मत उन्नी आपणी दया कमाईआ। संग मुहम्मद चार यारी मक्का मदीना चरन हेठ छुहाईआ। नेत्र नीर वरोले अत्थर, उम्मत नबी रसूले दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी होणी सथ्थर, धरत मात सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, धर्म राए तेरी सच सपुत्री लाड़ी मौत आपणी हथ्थीं करे कुड़माईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, प्रभ साचा नाता आप बनाँयदा। प्रगट होया गुर दर चेला, पुरख बिधाता दया कमांयदा। आप कराया आपणा मेला, आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रंगांयदा। हरि ठाकर अबिनाश, जोत प्रकाशया। हरि ठाकर अबिनाश, सर्ब घट वास्सया। हरि ठाकर अबिनाश, जन भगतां दासन दास्सया। हरि ठाकर अबिनाश, साचे मण्डल पावे रास्सया। हरि ठाकर अबिनाश, वेखे खेल पंडत काशया। हरि ठाकर अबिनाश, पंच चलाए शब्द स्वास्सया। हरि ठाकर अबिनाश, मेल मिलाए पृथ्वी आकाशया। हरि ठाकर अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आदि पुरख पुरख अबिनाशया। हरि ठाकर रत्नागरा, हर घट जोत बलोए। काया हाटी डूंघा सागरा, सच वस्त ना जाणे कोए। अमृत भरया एका गागरा, हरि बिन अवर ना देवे कोए। हरिजन बणे सच सुदागरा, दुरमति मैल पापां धोए। बैठा रहे इक्क इकाग्रा, निर्मल जोती रिहा बलोए। निर्मल कर्म करे उजागरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला मेल मिलाए घर इक्क वसाए दोए। एका घर एका वास, एका आप रखाईआ। एका मण्डल एका रास, एका बूझ बुझाईआ। एका पवण एका स्वास, एका पवण चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, साची रचन रिहा रचाईआ।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल अकाल तख्त अमृतसर वास्ते शब्द ★

अकाल तख्त प्रभ तख्त रचाया, शब्दी बणत बणाईआ। लोकमाती बाडी कोए ना लाया, दिस किसे ना आईआ। तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाया, नाड़ी बहत्तर ताणा पेटा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा तख्त सुहाईआ। तख्त रखाया सच रंग, हरि साचे शाह सुल्तानया। धुर दरगाही एका मंग, ना कोई दिसे होर

निशानया। शब्द रंगीला सच पलँघ, हरि साचा आप विछानया। चारे कुन्टां अमृत धारा गंग, पवण ठण्ढी ठार रखानया। वज्जे शब्द अनादी मृदंग, हरि एका ताल वजानया। आपे वसे अंग संग, चारे कुन्टां वेख वखानया। कोई ना दिसे भुक्ख नंग, ना मंगे पैसे धेले दवानी चवानीआ। सच दुआरा बैठा लँघ, अट्ठे पहर शब्द कहाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे जगत निशानीआ। अकाल तख्त तख्त अकाल कवण दुवार बणांयदा। कवण करे कराए प्रितपाल, कवण धाम सुहांयदा। कवण विछाए उप्पर दुशाल, कवण सिँघासण लांयदा। कवण रंग चढ़ाए गुलाल, कवण रूप वटांयदा। कवण सुहाए साचा ताल, अमृत नाम रखांयदा। कवण मारे शब्द उछाल, सच मोती बाहर कढांयदा। कवण तोड़े जगत जंज़ाल, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, आप आपणा आप वटांयदा। तख्त अकाल जोत अकाली, हरि हरि मात जगाईआ। एका मंगे शब्द दलाली, दूसर वस्त ना पाईआ। आत्म वज्जे साचा ताली, ढोलक छैणा ना कोई वजाईआ। उच्चे मन्दिर दिसण खाली, साचे नैणा ना दर्शन पाईआ। नीले बस्त्र रंग रंगीला काली, काली धार वहाईआ। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाली, दीपक जोत जगे निराली, सच सिँघासण डेरा लाईआ। अट्ठे पहर सदा प्रितपाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल हरि रघुराईआ। अकाल तख्त कलि काला बाणा, नीली धार वहांयदा। कवण ज्ञानी सुघड़ स्याणा, गुर गोबिन्दा दर्शन पांयदा। कवण बुधी जगत बिबेक आत्म जाणे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म हरस मिटांयदा। कवण फड़े तीर कमाना, शब्द निशाना इक्क रखांयदा। कवण जगे जोत महाना, गुरू ग्रन्थ बतलांयदा। कवण रूप श्री भगवाना, अकाल तख्त सुहांयदा। कवण बन्ने हथ्थीं गाना, वेख वक्त जणांयदा। कवण सरोवर सच इशनाना, मैल दुरमति गवांयदा। कवण आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। कवण शब्द गुर मन्त्र जगत बिबाणा, लोआं पुरीआं पार करांयदा। कवण वखाए सच टिकाणा, ज़ात पाती भेव मिटांयदा। कवण सुणाए साचा गाणा, राग छतीसा कवण अलांयदा। कवण बताए आपणा भाणा, दन्द बतीसा कवण सुहांयदा। कवण बणाए राजा राणा, गऊ गरीबां माण दवांयदा। कवण सो होए जाणी जाणा, कवण राज कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरि मन्दिर वेख वखांयदा। हरि मन्दिर महल्ल अपार, कवण बणांयदा। कवण रिहा नींह उसार, दर दरवाज़ा कवण लगांयदा। कवण अमृत देवे धार, बूंद स्वांती मुख चुआंयदा। कवण खोल्हे बन्द किवाड़, इक्क इकांती खेल रचांयदा। कवण मिटाए पंचम धाड़, पंचम मेल मिलांयदा। कवण पंचम देवे साड़, कवण पंचम जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दा लेख दर, धुर फ़रमाणा हुक्म जणांयदा। धुर फ़रमाणा हरि भगवान,

शब्द लेख लिखाईआ। सम्बल नगरी हरि मेहरवान, एका जोत जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखणा मार ध्यान, कवण धाम सुहाईआ। सत्तां दीपां कवण निशान, गुर गोबिन्दा लेख लिखाईआ। खाणी बाणी होए हैरान, वाली हिन्द दिस ना आईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, आत्म चिन्द रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सुनेहड़ा दर घलाईआ। शब्द सुनेहड़ा आए दर, लै के धुर फ़रमाणा। अमृत आत्म वेखे सर, सर अमृत कवण टिकाणा। कवण भण्डारे रिहा भर, देवे सच्चा दाना। ना जन्मे ना जाए मर, खेले खेल महाना। सम्बल नगरी मिल्या वर, प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना। आप चुकाया आपणा डर, जगत भय विच रखाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, घर मन्दिर खोज खुजाना। हरि मन्दिर चार दिवारी चार दरवाज्ज़या। कवण दुआरे रिहा पैज संवारी, मारे अवाज्ज़या। नीले घोड़े कर अस्वारी, दौड़ाए वड राजन राज्जया। चारों कुन्ट दहि दिशा रिहा विचारी, पुरख अबिनाशी साचा साजन साज्जया। आपे जाणे आपणी धारी, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारी, करे कराए आपणा काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सर अमृत वेखे शब्द उडारी, कवण दुआरा कवण रिहा उडाईआ। कवण घोड़े हो अस्वारा, प्रभ वेखे थांउँ थाँईंआ। कवण खण्डा शब्द दो धारा, आत्म लेखा रिहा चुकाईआ। कवण जोती हरि निरँकार, लोकमाती दया कमाईआ। कवण कलंकी लै अवतार, वरन गोती दए मिटाईआ। कवण बंकी सोहे द्वार, हरि रसना शब्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेख लिख्त वाक, दर दुआरे रिहा पुजाईआ। गोबिन्द गुरू कलि जामा पाया, अल्लड़ वरेस निधानी। सृष्ट सबाई निन्द लगाया, भरम भुलाए वड वड ज्ञानी। सगली चिन्द ना कोए मिटाया, पढ़ पढ़ थक्के वड विद्वानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां लेख अठारां मारे तीर कानी। तीर कानी लग्गे तन, होए आत्म घातया। जगत मनुआं देवे डन्न, हरि खेल कमलापातया। दिवस दिहाड़े लाए संन्, कलिजुग रैण अन्धेरी रातया। माया ममता इक्ठ्ठा कीता धन, अन्तिम पैणा डूंघे खातया। सम्मत सतारां देवे भन्न, लेखा चुक्के ज़ात पातया। सम्मत सोलां बेड़ा बन्न, आप निभाए आपणा साथया। पार ब्यासों चाढ़े चन्न, हरि हरि त्रैलोकी नाथया। मण्डप माड़ी खंन खंन, ना कोई ग्रन्थी गाए गाथया। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिखणहार मस्तक माथया। सम्बल नगर भेव खुल्हाउँणा, आत्म ज्ञान विचारी। पुरख अबिनाशी धाम सुहाउँणा, करे खेल निआरी। बीस इक्कीसा हरि अख्वाउँणा, आपे राम मुरारी। राग छतीसा लेख चुकाउँणा, इक्क शब्द जैकारी। वरन गोत कोई रहण ना पाउँणा, आपे जाणे केसा धारी। सरन वरन प्रभ इक्क रखाउँणा, चार वरना

सच्ची यारी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आत्म लेखा वेख दर, सम्बल नगरी इक्क इक्क्री वेखे चार दिवारी। चार द्वारी काया माट, कवण कूट उपाईआ। कवण तीर्थ साचा ताट, अमृत घुट प्याईआ। कवण दुरमति मैल देवे काट, सच सीरत मुख चुआईआ। कवण दीपक जोत लिलाट, काया माट जगाईआ। तख्त अकाल कवण वणज साचे हाट, कवण मात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर शब्द मंगे इक्क वर, भेव अभेदा भेव खुल्ाईआ।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी डा० राजिन्दर प्रसाद वास्ते शब्द लिखाया हरिभगत द्वार जेठूवाल ★

वाली हिन्द उठ जाग, प्रभ अन्तिम वार जगाए। हँस बणना कलिजुग काग, दर दुआरे दर्शन पाए। आत्म उपजे इक्क वैराग, प्रभ चरनी चित लाए। दुरमति मैल धोवे दाग़, आपणी सरन लगाए। दीपक जोती जगे चिराग, हरन फरन खुल्ाए। शब्द सरूपी पकड़े वाग, सच सुनेहड़ा रिहा घलाए। अस्सू तिन्न बुझाए तृष्ना आग, बेड़ा बंन वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सदा रिहा जाग, गुरमुख साचे रिहा जगाए। वाली हिन्द शाह भबीखण, वेला अन्तिम आया। आपे जाणे हरि जगदीशन, जुगा जुगन्तर बणत बणाया। सृष्ट सबाई पीसे पीसण, जीव जन्त होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, असू तिन्न दर दुआरे देवे चरन छुहाया। अस्सू तिन्न वक्त सुहाउँणा, वाली हिन्द सद मानया। प्रभ अबिनाशी चरन छुहाउँणा, दिल्ली दर दरबानया। साचा तख्त इक्क सुहाउँणा, धुर दरगाही धुर फुरमानया। शब्द जणाई हुक्म सुणाउँणा, करना घर परवानया। दीन अलाही मेट मिटाउँणा, ना कोई दीसे पंच शैतानया। ऊँचां नीचां इक्क कराउँणा, राजा राणा तख्तों लाहुणा, मारे शब्द तीर निशाना, शाह सुल्ताना माण गंवानया। सम्मत अठारां ख़ाक रुलाउँणा, गुरमुखां बख़्शे एका चरन ध्यानया। पाकी पाक आप अख्वाउँणा, साचा साकी एका अमृत जाम प्याउँणा, आत्म खोल्े बन्द ताकी, नूरी जोत स्वच्छ सरूपी दरस दिखाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखण आए जगत दर, ना बणना मात नादानया। अस्सू तिन्न दस तीस, आए बंक द्वार। शब्द झुले साचा सीस, ना कोई जाणे जीव गंवार। लहिणा देणा बीस इक्कीस, रखे सिर उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे पंचम मुख पंचम ताज, सोहँ उड्डे साचा बाज, धुर दरगाही एका काज, जोत निरँजण खोल्े पाज, शब्द रचाए मात काज, साचा गीत गोबिन्द एका गाईआ। गीत गोबिन्द एका गाए, शब्द अनाद सुहागी। वाली हिन्द रिहा उठाए, प्रभ खोजे जूह पिण्ड

ब्रह्मण्ड ब्रह्मादी। पुरख अबिनाशी तुठा दया कमाई मेल मिलाए मुरारी कृष्न हरि माधव माधी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणी हादी।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी संत कृपाल सिँघ दिल्ली वाले नूं शब्द भेज्जया जेठूवाल तों ★

शब्द विचोले संत कृपाल, एका शब्द जणाईआ। अस्सू दो आए दीन दयाल, वज्जे शब्द वधाईआ। आपे चले नाल नाल, पल्ला आपणा आप फड़ाईआ। आपे जाणे कवण दलाल, कवण राह वखाईआ। कवण तोड़े जगत जंजाल, शाह सुल्ताना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरे रिहा जणाईआ। दर द्वार संत कृपाल, पुरख अबिनाशी आए। खेले खेल काल अकाल, घट घट वास रखाए। जगत चले अवल्लड़ी चाल, पृथ्वी आकाश समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच विचोला रिहा जगाए। शब्द विचोला सच है, ना भुल्ले भुल्लणहार। जीव जन्त कौल इकरार कच्च है, वरते विच संसार। नौ दुआरे जो जन रहे नच्च है, अन्त ना उतरे पार। आत्म हिरदे ज्ञान गुर जिस जन ल्या वाच है, धुर शब्द करे परवान। नाम विचोला सच्चो सच है, मेल मिलाए आण। शाह सुल्ताना कोए ना सके बच है, गुर पूरे रक्खी आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, लेखा धुर फ़रमाण। पंझी भाद्रों मिलणा शाह, साचा भेव खुल्हावणा। प्रगट होया भगत मलाह, जिस जन बन्न्हे लावणा। अस्सू तिन्न पकड़े बांह, हाल मुरीदां इक्क सुणावणा। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, नाम शहीदां विच रखावणा। गुर चरन विटहों बलि बलि जां, दीदा सिध्धा इक्क रखावणा। इक्क सुणाउँणा साचा नां, सोहँ जाप जपावणा। सृष्ट सबाई पिता माँ, एका एक आप अखावणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका मेल मिलावणा।

★ १७ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

हरि जोत प्रकाश, सृष्ट सबाया। हरि जोत सच रास, वेख वखाया। हरि जोत पृथ्वी आकाश, भेव ना राया। हरि जोत प्रकाश, लक्ख चुरासी विच समाया। हरि जोत हरिजन वसे पास, एका एक करे रुशनाया। हरि जोत गुरमुख विरले रक्खे वास, बाहर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वंड वंडाया। हरि जोत अकाल, अकल कला भरपूरया। जुगा जुगन्त मार उछाल, शब्द चलाए नादी तूरया। संत सुहेले आपे पाल, आसा मनसा

पूरया। हरिजन गोद उठाए लाल, आत्म जोती जोत नूरया। आपे शाह आपे कंगाल, आपे नेरन नेर दूरन दूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हाज़र हज़ूरया। हरिसंगत साचा दास, साची सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी तोड़े फास, जगत जंजाल कट्ट वखांयदा। गुरमुख गुरसिख ना होए उदास, हड्ड मास नाड़ी लेखे लांयदा। गाए सद रसन स्वास, तन मन्दिर विच बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लक्ख चुरासी कलिजुग फाँसी आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी रोवे नार, कलिजुग अन्तिम पैणी मार, गुर पीर ना कोए सहाया। माया झोले अपर अपार, गुरमुखां करे सदा निमस्कार, आपणा रंग वखाया। कल्गी तोड़ा शब्द अपार, जोती जोड़ा हरि निरँकार, आपणा मेल मिलाया। नीली छत्तों आया बाहर, एका जोती नूर अपार, प्रभ होया विच संसार, वरन गोती दए मिटाया। ब्रह्मण्डी पाए आप विचार, भेख भखण्डा दए मिटाया। शब्द डण्डी हथ्थ कटार, वेखे खेल हरि निरँकार, दिस किसे ना आया। गुरमुखां कर शब्द प्यार, एका देवे नाम अधार, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, आत्म घमंडी देवे दर दुरकाया। आपणा रंग रूप वटाया। रेख ना कोए मिटाया। गुर गोबिन्दे लेख लिखाया। लेखा लिखणहार आप अख्वाया। शब्द लेखा आप लिखाया। कमी कर्म कमाया। गुरमुख साचे मानस देही देवे जाम, आत्म भरम चुकाया। दूई द्वैती भरम मिटाया। गुर मन्दिर रहण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग रिहा लगाया। शब्द सिँघासण बैठ करतार, जोत सरूपी कर आकार। पंजां तत्तां वसे बाहर, आपे वसे अद्ध विचकार। चौथे घर कर विचार। तिन्न उप्पर तिन्न नीचे, साचा महल्ल ल्या उसार। हरिजन साचा सच पतीजे, दरस दिखाए नैण तीजे, सोलां कर तन श्रृंगार। भगत भिखारी खड़ा दहिलीजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अट्ठे पहर वाजां रिहा मार। अट्ठे पहर आप जगाए, होए ख़बरदारा। गुरमुख सोए लए उठाए, चारों कुन्ट देवे पहरा। धर्म राए सीस निवाए, वेखे दर दुआरा। पुरख अबिनाशी जामा पाए, निहकलंकी खेल अपारा। सति संतोखी नाम जपाए, सोहँ साची धारा। पुरीआं लोआं रिहा हिलाए, शब्द सिँघासण मात अपारा। राजा इन्द्र दर कुरलाए, अन्तिम आया पार किनारा। जटा जूट शिव शंकर रिहा कुरलाए, जगत जगदीशा मारे एक शब्द हुलारा। ब्रह्मा चारे मुख वखाए, अट्ठे नेत्र बन्द कराए, ना कोई पावे सारा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, जोत सरूपी जामा पाए, निहकलंक लए अवतारा। गुर गोबिन्द नाल रलाए, साल बार्हवां उमर कराए, पिछला लहिणा मूल चुकाए, जोती नूर विच टिकाए, अट्ठे पहर कदे ना होए बाहरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ पूरन भरया जगत भण्डारा। पूरन जोती विच धर, प्रभ साची रीत चलाईआ। माणक मोती सच

घर, शब्द रिहा भराईआ। दुरमति मैल गई धोती, प्रभ नूरो नूर कराईआ। सिँघ पाल प्रभ पकड़ उठाया, सच वस्त प्रभ तेरी झोली पाईआ। दूसर किसे दिस ना आई, नौ दुआरे निकली वासना, घर दसवां इक्क वखाईआ। नाता तोड़े हड्ड मास नाड़ी बोटी, सति पुरख साचा नूर कराईआ। साध संत दर दर घर घर भौं भौं थक्के कोटन कोटी, राह साचा हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे वर, लक्ख चुरासी रिहा कटाईआ। लक्ख चुरासी चरन दासी, प्रभ आपणी आप बणांयदा। हर घट आपणी आप बणांयदा। हर घट अन्दर रक्खे वासी, साचा हुक्म जणांयदा। वेखे खेल पृथ्वी आकाशी पुरीआं लोआं विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द सिँघासण इक्क घर आत्म सेज विछांयदा। आत्म सेजा शब्द रंगाया, लाल रंग अमोला। आपणी हथ्थीं पर्दा पाया, गुरसिख बणया दर दुआरे गोला। चढ़दी कला आप चढ़ाया, जोत जगाए कला सोलां। आत्म पर्दा आपे लाहया, शब्द सरूपी आपे बोला। अन्दर वड़दा दिस ना आया, भाग लगाया काया चोला। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर चेला आपणे रंग रंगाया। सतिगुर साचा धन्न है, सदा सदा वड्याईआ। सतिगुर साचा धन्न है, जुगां जुगन्तर बणत बणाईआ। सतिगुर साचा धन्न है, गुरमुखां बेड़ा रिहा बंधाईआ। सतिगुर साचा धन्न है, हउमे दुःख रोग रिहा मिटाईआ। सतिगुर साचा धन्न है, सुफल कुखा रिहा कराईआ। सतिगुर साचा धन्न है, उज्जल मुखा मात कराईआ। सतिगुर साचा धन्न है, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुख साचा धन्न है, चरन गुरू निमस्कारया। गुरमुख साचा धन्न है, पार कराए सर्ब परवारया। गुरमुख साचा धन्न है, प्रभ बहाए चरन द्वारया। गुरमुख साचा धन्न है, मिले मेल पुरख भतारया। गुरमुख साचा धन्न है, साची नारी करे कन्त प्यारया। गुरमुख साचा धन्न है, कलि अन्त ना पारावारया। सतिगुर साचा धन्न है, फड़ हथ्थ तेज कटारया। गुरमुख साचा धन्न है, सद वसे बाहर नौ द्वारया। गुरमुख साचा धन्न है, करे वणज सच्चा शब्द वणजारया। गुरमुख साचा धन्न है, प्रभ कमी कर्म विचारया। गुरमुख साचा धन्न है, आपणा बेड़ा रिहा बन्ह है, प्रभ साचा भार उठा रिहा। गुरमुख साचा धन्न है, जोती जोत सरूप हरि, धुनी नाद वजाए अपर अपारया। सच घर वस्सया आप, आपणा घर पछाणया। सच घर वस्सया आप, आपणा जाप जपानया। सच घर वस्सया आप, खेले खेल महानया। सच घर वस्सया आप, दिस ना आए राजे राणया। सच घर वस्सया आप, आपे वरते आपणे भाणया। सच घर वस्सया आप, भेव ना पाए कोई सुघड़ स्याणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां। सच घर वस्सया आप, सहिज सुखदाया। सच घर वस्सया आप, गुरमुखां रिहा भेव खुल्हाया। सच घर वस्सया आप, हउमे

दुक्खां रिहा मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्की सिक्खां रिहा माण दवाया। इक्की सिक्ख एका दर, एका घर सुहागीआ। धुर दरगाही मिल्या वर, सोई किस्मत जागीआ। शब्द भण्डारा रिहा भर, वज्जे नाद अनादीआ। आउँणा जाणा चुक्के डर, मिले मेल ब्रह्मादीआ। इक्क सुहाए साचा दर, शब्द जणाए बोध अगाधीआ। आप वसाए आपणा घर, हरि मिल्या माधव माधीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस दस हस्स हस्स लेख लिखाया नस्स नस्स, गुरमुख जिस जन रसन अराधीआ। सोल सतारां सतारां सोल, प्रभ आपणी हथ्थीं रिहा वजाईआ। आपे वसे सदा कोल, समरथी बणत बणाईआ। अन्दर मन्दिर पर्दा खोल्ह, अकथ कथा रिहा जणाईआ। नाम वजाए मृदंग ढोल, आप आपणी दया कमाईआ। शब्द सरूपी करे चोल्ह, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका रंगण रंग रंगाईआ। सोल सतारां सतारां सोल, सखी कर्म विचारया। आत्म पर्दा सभ दा फोल, साचा लेख लिखा रिहा। आदि अन्त ना जाए डोल, सृष्ट सबाई डुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, मनमुखां सद भुला रिहा। सोल सतार नाम उज्यार, प्रभ साचा मात कराईआ। पंचम पंचम वसे बाहर, पंचम विच समाईआ। पंचम गुप्त कीता जाहिर, पंचम रंग रंगाईआ। पंचम देवे अमृत धार, पंचम शब्द खण्डा हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेखा आप लिखाईआ। लेखा लिखणहार हरि स्वामीआ। गुरमुखां करे तन श्रृंगार, सदा निहकामीआ। वणज कराए इक्क वपार, हर घट अन्तरजामीआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, वजाए डंक सच दमामीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम मीता इक्क दर, आप बहाए सच्ची सरकार। सच्ची सरकार सच्ची शाही, कलिजुग बणत बणांयदा। पंचम मेला साचे माही, साचा हुक्म जणांयदा। दरस दिखाए थांउँ थाँईं, आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता अचरज रीता, आपे करे पतित पुनीता, साचा देहुरा काया मन्दिर मसीता, एका राग सुणांयदा। आपे राग धुन अनाद शब्द जणाईआ। आपे तोड़े सुन्न मुन, बन्द किवाड़ी खोल्ह रखाईआ। संत सुहेले साचे जन सतारां हाढ़ी जोत जगाईआ। आपे करे छाण पुण, पिछे अगाड़ फिरे रघुराईआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, अवगुण सृष्ट सबाई गुणवन्ता गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे जगत वर, भगत भगवन्ता मात वड्याईआ। सिँघ किशन शब्द किरपान, प्रभ साचे तन पहनाईआ। आप वखाए धर्म निशान, दरस दिखाए श्री भगवान, गोपी काहना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मेला सहिज सुभाईआ। पाल सिँघ ना होए ओहले, पुरख अबिनाशी वस्सया कोले, भाग लगाए काया चोले, आप उठाए गुरमुखां डोले, सच कहार अख्वाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे संत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। सिँघ नसीब हरि करीब, दर दहिलीज सुहांयदा। आत्म बीजे साचा बीज, अमृत फल लगांयदा। दरस दिखाए दिवस तीजे, साची दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रंगण रंग रंगांयदा। निर्धन माण देवे बलकारी। शब्द निशान झुल्ले संसारी। विच जहान होए उज्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उडाए शब्द सच्ची उडारी। शब्द उडारी आप उडाए, गुरसिख बाल अञ्याणा। नाम डोरी तन्द बंधाए, ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा। सोहँ तन्द नाउँ रखाए, सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा। बन्द बन्द प्रभ बन्न वखाए, वेखे खाणी खाणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, बलवन्त कन्त बाली बाला बुध सुघड़ स्याणा। कन्त हंढाया आत्म सेज, दरस दिवस रैण मस्तानी। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, ना कोई जाणे जगत विद्वानी। हरि फूलन बरखा साची सेज, धुर दरगाही इक्क निशानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमक्खां देवे भेंट चरन सरन सच्ची कुरबानी। गुरसिख तेरी कुरबानी, गुर चरन प्रीत लगाया। लेखा लिखे दो जहानी, साचा सुत आप अखवाया। दर दुआरे दर घर साचे देवे माणी, गति मितक साची रिहा जणाया। आपे जोती नूर प्रकाश कोटन भानी, साचा चन्द रिहा चढ़ाया। एका अक्खर सुणाए साची बाणी, काया रंगण रंग रंगाया। छाछ वरोले तन पाए नाम साची मधाणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विखाए सच्चा घर, हरिजन पाए पद निरबानी। इक्की सिक्ख एकँकार। इक्क इकल्ला साची धार। दूजा वसाए जगत महल्ला, शब्द भरे भण्डार। तीजा वेखे जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़। चौथा गुरमुख विरले मात मिला, धुनी नाद अपर अपार। सत्तवां घर सति पुरख एका मिला, जोती नूर कर आकार। अट्ठ अठवां घर काया अट्ठां तत्तां रला, मन मति बुध नाल प्यार। अप तेज़ वाए पृथ्वी आकाश करे श्रृंगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नावें नौ दुआरे वेख घर, दसवें खोल्ह्रे बन्द किवाड़। दसवें घर सच निशानी, प्रभ साचे इक्क रखाईआ। गुरमुख जाणे आत्म बाणी, होए ब्रह्म जणाईआ। इक्क ग्यारां ना कोई जाणे मात निशानी, प्रभ धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका ओट चोट आपणी हथ्थीं लाईआ। दस्स इक्क ग्यारां गुरमुख बोल्लया। दस दो बारां साची धारा आप नवेलया। दस तिन्न तेरां आपे तारे कर कर मिहरया, आपे अन्दर मन्दिर कुण्डा खोल्ह्या। चौदां दस चार प्रभ करे विचार, हरि मेला कला सोल्लया। दस पंज पन्दरह्रां प्रभ जाणे आत्म अन्दर डूंघी कन्दरां, कदे ना डोल्लया। सोलां दस छे प्रभू लग्गा नेंह, सच दुआरा एका खोल्ह्या। दस सत्त सतारां हरि मिल्या मीत मुरार, शब्द चोर घर एका बोल्लया। दस अट्ठ अठारां गुरमुखां करे प्यारा, चरन प्रीती घोल

घोल्लया। उनी दस नौ दहि दिशा प्रभ रिहा भौं, चारे कूटां फोलन फोल्लया। दस दस बीस गुरमुखां पीसण रिहा पीस, धुर दरगाही बण विचोल्लया। बीस इक्क इक्की गुरमुखां धार दस्से निक्की, ना कोई मात मुनी रिखी, काया पर्दा किसे ना फोल्लया। गुरमुख तेरी साची धार, प्रभ साचा मात चलांयदा। जगत चाह ना कर प्यार, माया ममता मनो तजांयदा। शब्द व्याह बेपरवाह, तन श्रृंगार आपणी हथ्थीं आप करांयदा। हरिजन साचा कोए ना करे नांह, नारी जोती इक्क विआंयदा। आत्म गोती पकड़े बांह, सुरत सुवाणी सोई आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक एक धाम सुहांयदा। गुरमुख सोया मात उठाए, हरि साची बणत बणाईआ। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, देवे मात वधाईआ। साचा नाउँ नाम जणाए, कटे जम की फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटण आया मस्तक लिख्या लिखी काली फाहीआ। लेखा लेख मेट मिटाए मेटणहारया। खेवट खेट खेट आप अख्वाए, सृष्ट सबाई पार कराए, आपे बेटी बेटा पिता मात सुत पूत अख्वाए, देवे नाम सहारया। सति सति सतिवन्त जुगा जुगन्तर जामा पाए, भेखी भेख वटा रिहा। ना कोई जाणे वार थित्त, आपणा आप रिहा जित्त, सृष्ट सबाई साचा हित्त, सतिजुग आपणे हथ्थ रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेख गुरमुखां मिल्या सज्जण सुहेला, साचा खेड़ा शब्द जणा रिहा। रसना चाह जगत तज, प्रभ साची सेजे चढ़ना भज्ज, अन्तिम वेला नेड़े आया। दर दुआरे पर्दे लए कज्ज, जगत झेड़ा रिहा मिटाया। घर घर खाली दिसे छानणी छज्ज, नारी खौंत ना कोई हंढाया। धी जवाई ना देवे कोई दाज, गुरमुख साचे पुरख अबिनाशी इक्क अवाज लगाईआ। शब्द सिँघासण साचा डाहया। भाग लगाया देस माझ, जोत निरँजण डगमगाया। साचा अंजन नेत्र पाया, कज्जल धार इक्क रखाया। बंक दुआरे रिहा सज, शब्द गहणा तन पहनाया। सच नारी घर तीजे बहिणा, साचा हुक्म सुणाया। लहिणा देणा मूल चुकाए, भैणा भईआ साक तुड़ाया। धर्म राए दी पाड़े वहीआ, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराए आपणे मेले, नारी खौंत आप अख्वाया। नार सुहागण गाए गीत, गुरमुख साची नारया। प्रभ चरन कँवल कलि लग्गी प्रीत, उतरे पर किनारया। अट्ठे पहर वसे चीत, हरि साचा मीत मुरारया। दिवस रैण सौं ना सके, सो रहे पहरेदारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द श्रृंगार इक्क करा रिहा। सोहँ गल हार लटकाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। सोहँ हार तन अपार, प्रभ साचा आप छुहांयदा। कोई ना वेखे जीव संसार, अन्दरे अन्दर धार बनाँयदा। डोरी पाए अपर अपार, आपणी हथ्थीं गंढु दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वसाए इक्क घर, साची सेजा

आप बहांयदा। साची सेजा आत्म सुख, गुरमुख साचे माणया। जगत तृष्ना मिटी भुक्ख, हरि पाया गुण निधानया। शब्द सपूता आया कुक्ख, बाल बाली बाल निधानया। जोत निरँजण वेखे मुख, मिटे रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दर करे परवानया। हरि दर होवे परवान, साचा धर्म कमाईआ। अट्ठे पहर निगाहबान, गुरमुखां आप अख्वाईआ। चारों कुन्ट वेखे मार ध्यान, लुकया कोए रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर वेखे सच मकान, सच महल्ले आसण लाईआ। आसण लाया आप प्रभ, आपणी सेज विछांयदा। उलटी करे कँवल नभ, अमृत मुख चुआंयदा। पंच विकारा लए दब्ब, शब्द तीर चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरस दिखाए प्रगट झब्ब, सहिंसा रोग मिटांयदा। सहिंसा रोग जगत हथयार, घर घर अन्दर लग्गया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, दीपक जोत किसे ना जगया। गुरमुख विरले चरन द्वार, शब्द बन्नाए साचा तगया। वणज कराए इक्क वपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता सूरा सरबंगया। हरि सूरा सरबग, सच घर वस्सया। सद वसे उप्पर शाह रग, सच मन्दिर बहि बहि हस्सया। दीपक जोती रही जग, शब्द अनादी हर घर हस्सया। जगत ना दिसे तृष्ना अग्ग, पंच विकारा जाए नस्सया। शब्द सिँघासण हरि चरन लग, मिले आत्म रस रस्सया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे इक्क वर, सच सरनाई जो जन लगया।

७४६ ०५

★ १८ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल निशान साहिब दे पास
सत्त रंगा चवी हत्थ उच्चा है विहार होया ★

साढे तिन्न हत्थ जिया दान, प्रभ देवे सृष्ट सबाईआ। चवी हत्थ मात निशान, उच्चा लम्मा रिहा रखाईआ। सत्तां दीपां इक्क ध्यान, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। इक्क उडाए शब्द बिबाण, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कोटन कोटी जन्म भुवाईआ। जगत निशाना सतिजुग, गुर पूरे बणत बणाईआ। कलिजुग औध गई पुग, नूरी नूरे जोत जगाईआ। मनमुख जीव जूठी झूठी चोग रिहा चुग, शब्द चोग ना कोई चुगाईआ। कलिजुग माया ममता रोग, लोभ हँकारा तन वसाईआ। गुरमुखां मेला धुर संयोग, साची संगत मेल मिलाईआ। दरस दिखाए हरि अमोघ, कलि साची जोत जगाईआ। आदि अन्त ना होए विजोग, बेड़ा बन्नणहार आप अख्वाईआ। वेखे खेल तीन लोक, त्रैगुण माया संग उपाईआ। लक्ख चुरासी देवे झोक, चौदां चौदां हट विकाईआ। प्रभ का भाणा ना कोई सके रोक, तीर्थ

तट्ट तट्ट दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निशाना रिहा झुलाईआ। जगत निशाना रंग सत्त, प्रभ साचे मात रंगाया। नौ खण्ड पृथ्वी एका मति, एका बूझ बुझाया। लक्ख चुरासी उब्बल रत, ना धीर कोए धराया। जन भगतां जाणे मित गत, काया मन्दिर आसण लाया। अन्तिम रखणहारा पत, पति पतिवन्ता आख अख्वाया। चरन प्रीती बंर्ने नत्त, साचा नाता मात बंधाया। सगल वसूरे गए लथ्थ, जिस जन दर घर साचे दर्शन पाया। लेख मिटाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, तिन्न हथ्थ चिट्टा मन्दिर दए सुहाया। आप चढ़ाए साचे रथ, धुर दरगाही लै के आया। शब्द जणाए अकथना अकथ, धुन आत्मक शब्द वैराग जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निशाना इक्क धर्म वरभण्डी आप झुलाया। वरभण्डी तेरा सच निशान, प्रभ आपे आप झुलांयदा। आपे जाणे आपणी आण, वाली हिन्द हुक्म सुणांयदा। अस्सू तिन्न करे ध्यान, पंचां संग रलांयदा। जोती जामा श्री भगवान, दिस किसे ना आंयदा। गुर गोबिन्दा मिल्या नौजवान, साचा हाणी मेल मिलांयदा। शब्द फड़े तीर कमान, तन गात्रे आप लटकांयदा। बजर कपाटी सच म्यान, ना कोई फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी लाहे घाण, अन्दर बैठा वार चलांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वेख मकाण, प्रभ भेख भेख वटांयदा। चारों कुन्ट झूठ मकान, सच समग्री ना कोए रखांयदा। शाह सुल्तानां वेखे परखे आपे आण, आप आपणी बणत बणांयदा। दिल्ली तख्त हरि राज राजान, पंचम मीता चरन छुहांयदा। अस्सू तिन्न सच दिहाड़ा, प्रभ साचे जोत जागवनी। इक्क कराए शब्द अखाड़ा, रग रागनी संग रलावनी। वेखे खेल बहत्तर नाड़ा, हाडी हाडी भेड़ भिड़ावनी। प्रगट होए साचा लाड़ा, साचे घोड़े वाग फड़ावनी। आपे होए पिछे अगाड़ा, गुरमुखां दामन रक्खे साचा दामनी। ज़िमी अस्माना तुटे पाड़ा, लेख लिखाए सतारां हाढ़ा, कलिजुग मिटे अन्धेरी शामनी। माझा देश होए उजाड़ा, पुरख अगम्मी मारे धाड़ा, जिउँ लंका ढाहे रामा रावनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निशाना इक्क कर, हरि साची बणत बणावनी। जगत निशाना सत्त रंग, सत्तां दीपां डन्नया। धर्म मात मंगी साची मंग, सतिजुग साचे बेड़ा बन्नॄया। लोआं पुरीआं वेखे लँघ, ब्रह्मा शिव सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा देवे डंनया। हरि शब्द वसेरा ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, जन भगतां बेड़ा बन्नॄया। गुर संगत मुखों कहणा धन्न धन्न, प्रभ दिस ना आए आत्म अन्नॄया। गुरमुख आत्म गया मन्न प्रभ साचे बेड़ा बन्नॄया। भरम भुलेखा कढ्या जन, शब्द चढ़ाया साचा चन्नया। राए धर्म ना लाए डन्न, लक्ख चुरासी करे बन्नया। जगत विकारा खंन खंन, एका राग सुणाए कन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल मन भगवंनया। हरि अवल्लड़ी कार अवल्लड़ी रीतया। दोहरी धारा जगत वखाए इक्क अतीतया। दुहरी धारा जगत

वखाए कलिजुग अन्तिम जाए बीतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चलाए आपणी रीतया। साची रीती सति पुरख, जुग जुग मात चलांयदा। आपे आप करता पुरख, निर्भय रूप समांयदा। कदे सोग ना कदे हरख, एका रंग रंगांयदा। गुरमुख साचे रिहा परख, घसवटी नाम रखांयदा। अन्तिम वेले करे तरस, साची हाटी इक्क वखांयदा। अमृत मेघ देवे बरस, काया माटी ताल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत निशाना इक्क कर, सत्तां दीपां आप झुलांयदा। जगत निशाना साढे तिन्न हथ्थ, प्रभ चारों कुन्ट बणांयदा। वेखे खेल हरि समरथ, सतिजुग साचा राह चलांयदा। लक्ख चुरासी पावे नत्थ, राज राजाना शाह सुल्तानां दर फिरांयदा। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, जोत सरूपी हरि भगवाना, एका बख्शे नाम निशाना, धुर दरगाही संग रखांयदा। आपे गोपी आपे काहना, आप रमईआ आपे रामा, आप प्याए अमृत जामा, लक्ख चुरासी मिटे शामा, भगत उधारे बिदर सुदामा, आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वजाए शब्द दमामा, पुरीआं लोआं लोआं पुरीआं पाताल आकाशां आपणा आप सुणांयदा। शब्द दमाम वज्जया, कलिजुग अन्तिम वार। जोत सरूपी हरि हरि गज्जया, निहकलंकी जामा धार। गुर गोबिन्द सतिगुर साचा, सोहँ फड़ शब्द तेग कटार। अमृत पी पी रज्जया, आपे वसे पार किनार। हरि हरि नर नर होवे खब्बे सज्जया, आपे होए पिछे अगाड़। भाग लग्गे देस माज्झया, सतिजुग साचा खोल्हे द्वार। चार वरनां एक हाजी हज्जया, मक्का काअबा होए खुआर। जो घड़या सो भज्जया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सतिजुग साचा ताल वज्जया, प्रभ आप वजावणहारा। चरन धूढ़ इशनान कराए साचा मज्जया, दुरमति मैल दए उतार। दर दुआरे जो जन आए भज्जया, लक्ख चुरासी उतरे पार। किसे लाउँण ना देवे अज्जया पज्जया, सम्मत सोलां हथ्थ फड़े तेज कटार। जन भगतां रक्खे लज्जया, हरि पुरखा सच भतार। मनमुखां माया ममता दज्जया, अग्नी जोती लाए हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता एका रीता देहुरा गुरदुआरा मन्दिर मसीता सभ तों वसे आपे बाहर। मन्दिर मसीत ना गुरूद्वार, प्रभ साचे जोत जगाईआ। आपे वसे गुप्त जाहिर, दिस किसे ना आईआ। भेखाधारी दर दर ख्वार, गुर गोबिन्द सार ना पाईआ। नाता तोड़े ऊँचां नीचां एका बख्शे चरन प्यार, राज राजाना दर दर फिराईआ। सर्ब जीआं प्रभ सांझा यार, जोती जामा भेख वटाईआ। कर्म कुकर्मां रिहा विचार, कलिजुग लेखा रिहा मुकाईआ। धर्म दुआरे हाहाकार, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। चित्रगुप्त लेख लिखार, अठाई कुण्डां बूहा लाहीआ। छोटा मुंडा कर त्यार, पुरख अबिनाशी बन्ने धार, सिँघ मनजीता अगे लाईआ। नौ दुआरे होया बाहर, इक्क उडया शब्द उडार, पुरी इन्द्र राह वखाईआ। करोड़ तेतीसा मारे मार, सोहँ खण्डा फड़ दो

७५१
०५

धार, निहकलंक नर अवतार, शब्द सरूपी ख़बरदार, देवी देव हाहाकार, ना होए कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी नर अवतार, घनकपुर वासी खेल अपार, मदिरा मासी करे ख्वार, नाता तुट्टे भैणा भाईआ। शब्द रंगाया सच रंग, प्रभ साची बणत बणाईआ। नाम डोरी चढ़े पतंग, आपे आप रिहा वजाईआ। वेख वखाणे गोदावरी गंग, अट्ठ सट्ठ तीर्थ चरन छुहाईआ। कवण दुआरा वज्जे मृदंग, ठाकर दुआरा गुर दर मन्दिर नाद अनादा रिहा वजाईआ। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, गुर गोबिन्द दिस ना आईआ। पुरख अबिनाशी वस्सया अन्दर, सच सिँघासण डेरा लाईआ। उच्चे टिले फिर फिर थक्के गोरख मच्छन्दर, काया मूंड मुंडाईआ। करोड़ तेतीसा रोवे अन्दर, ना कोई होए सहाईआ। काहना कृष्ना वेखे बन बिन्दर, जीव जन्त फिरे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी इक्क घर, सर अमृत लेख लिखाईआ। सर अमृत अमृत रस, गुर घर किसे ना पाया। मदिरा मासी गए वस, साचा राह भुलाया। अन्तिम पैंडा मुके नस्स नस्स, ब्यास किनारा इक्क वखाया। सम्मत सोलां रिहा दस्स, कोए ना किसे सहाया। ना कोई सके कमर कस, हथ्थ किरपान ना कोए उठाया। पुरख अबिनाशी चरनां हेठां देवे झस्स, रंग सुनिहरी कलिजुग वरते कहरी, आपणा भेख वटाया। चारों कुन्ट दिसण वैरी, मुगल पठाणा शेर दलेरी, सत्तर लक्ख रिहा चढ़ाया। मायाधारी ढहि ढहि ढेरी, उच्चे मन्दिर फिरे हनेरी, गुर

७५२ दर कोई दिस ना आया। कलिजुग तेरी वरते कहरी, ना कोई दिसे नगर शहरी, पुरख अबिनाशी एका काम आपणे हथ्थ ७५२

०५ ०५

रखाया। लेखा चुक्के जगत दाम, एका पल्ले रहि जाए नाम, गुरमुखां विरला बणे वणज वपारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी मिटे शाम, फड़ शब्द खण्डा दो धारी। शब्द खण्डा हथ्थ कटार, प्रभ साचा हथ्थ रखांयदा। सोलां कर तन श्रृंगार, चिट्टा अस्व कसांयदा। कल्गी तोड़ा नाम अपार, जगत जगदीस सीस टिकांयदा। जोती नूरा शब्द सरूरा, साचा राह वखांयदा। लोआं पुरीआं एका पौड़ा, ना कोई लम्भा चौड़ा, सोहँ सो लगांयदा। आपे होए ब्रह्मण गौड़ा, पूत सपूता आप उपांयदा। सम्बल नगरी वेखे मिट्ठा कौड़ा, नौ दर वेख वखांयदा। धुर दरगाही आया दौड़ा, नीला घोड़ा पौड़ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर तेरा सच निशाना, एका झुले विच जहाना, हरि साची बणत बणांयदा। साची सतिजुग धार, प्रभ लाल रंग गुलालया। लखण दीप अपर अपार, चले अवल्लड़ी चालया। कंचन रूप करोच कर, फल वेखे सृष्ट सबाई डालया। पुष्कर नीली धार वरोले दस्से राह सुखालया। जम्बु दीप एका घर, मेट मिटाए घटा कालया। सुहा पीला मिले वर, शान सलमल आप लिखालया। कलिजुग तेरी काली धार, कुशा रूप वटा ल्या। प्रभ वेखे खेल विच संसार, दहि दिशा भेख वटा ल्या। भेख मिटाए मुहम्मदी यार, अंज़ील कुराना

कढ्ढे दवाल्या। मक्का मदीना पावे सार, सम्मत उन्नी अल्ला राणी पाड़े चुन्नी, करे खेल अकालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क निशाना जगत वर, आपणी हथ्थीं आप बणा ल्या। इक्क निशाना इक्क बणत, धुर दरगाह बणाईआ। लेखा लिखणहारा हरि हरि साचा महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। ना कोई जाणे जीव जन्त, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। गुरमुख विरले शब्द आत्म मिला अभेद अभेद दए खुल्हाईआ। मिले मेल हरि दाता गुणवन्त, अछल अछेदा खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, चार वेदां रिहा मुकाईआ। चार वेद मार ध्यान, ब्रह्मे रिहा जगाया। सतिजुग द्वापर त्रेता कलिजुग वेख मकान, प्रभ लेखा रिहा मुकाया। शब्द रखाए साची आण, साची रेखा मात लिखाया। आप उडाए इक्क बिबाण, लोचण नेत्र लेखा दिस ना आया। गुरमुख विरले चतुर सुजान, भरम भुलेखा रिहा मिटाया। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, शब्द निशाना तीर चलाया। राग सुणाए साचे कान, धुनी नाद वजाया। दरस वेख श्री भगवान सुन्न मुन तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशाना रिहा बणाया। सच निशाना पहली वंड, भारत खण्ड वंडाईआ। आपे वेखे हरि ब्रह्मण्ड, साची रचन रचाईआ। सत्तां दीपां रिहा वंड, नौ खण्ड बूझ बुझाईआ। ना कोई दीसे सतिजुग नार दुहागण रंड बीस इक्कीसा होए सहाईआ। पहली बन्न्हे आपणी हथ्थीं गंढ, वाली हिन्द लए खुल्हाईआ। जन भगतां पाए आत्म ठंड, अस्सू तिन्न खुशी मनाईआ। हथ्थ फड़े चण्ड प्रचण्ड, दिल्ली तख्त चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे लिखणहारा लिख्त ना सके कोई मिटाईआ। शब्द निशाना कर त्यार, दूजी धार चलांयदा। आपे जाणे आपणी कार, आपणी कार कमांयदा। शब्द बणाए सच दस्तार, आपणे सीस टिकांयदा। जुगा जुगन्तर कन्त विहार, नारी कन्त प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे लिखणहारा लिख्त, आपणा रंग वखांयदा। शब्द धार चलाए हरि बनवालीआ। साचा सीस नाम टिकाए, पंच मुखी नाम रखालीआ। देस माझ गणत गिणाए, चारे कुन्टां दिसे खालीआ। पंचम कूटां वेख वखाए, ज़िमीं अस्मानां गगन थालीआ। गुरमुख साचे लए लटकाए, उप्पर नीचे आप बहालीआ। देवत सुर रहे तरसाए, प्रभ साचे जोत जगालीआ। शिव शंकर सीस झुकाए, दर बणे मात सुवालीआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उठाए, कवण मेटे घटा कालीआ। गुरमुख साचे लए जगाए, कलिजुग अन्तिम दर घर कराए खालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुखी साचा ताज, लेख लिखाए बण सुवालीआ। चारे कुन्टां चार मुख, सोहँ धार वहाईआ। गुरमुखां उतरे मात दुःख, साची दिशा वेख वखाईआ। सुफल कराए मात कुक्ख, दस दस्मेश सीस टिकाईआ। नाता तोड़े गर्भ मात उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कलिजुग मिटे तृष्ना भुक्ख, अमृत आत्म प्यास

७५३ ०५

बुझाईआ। दर घर उपजाए एका सुख, हड्ड नाड़ी मास जोत जगाईआ। जुग जुग सुखणा रहे सुख भगत भगवन्ता होए सहाईआ। सुफल करे मात कुक्ख, जो जन रसना रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुखी साचा ताज, रक्खे लाज देस माझ, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। पंचम मुख पंच पुकार, धुर दरगाही रिहा सुणाईआ। शब्द सरूपी अवाज़ां मार, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। शब्द डोरी अपर अपार, त्रैलोआं बंध बंधाईआ। सति पुरख निरँजण जोत अकार, निरँकार समाईआ। उपजे शब्द सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक रिहा उपजाईआ। गुरमुखां करे ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। प्रगट होए नर निरँकार, दिस ना आया कल्गी तोड़ा नाम अपार, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। शब्द घोड़ा कर त्यार, साचा आसण लाईआ। नौ दुआरे आवे बाहर, दसवां खोज खुजाईआ। आपे गुप्त आपे जाहर, आपे बूझ बुझाईआ। आप आपणी पावे सार, एका दूजा भेव मिटाईआ। पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार, भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम मुखी पंचम ताज आपे रिहा बणाईआ। साचा ताज पंचम धार, पंचम दिशा वहांयदा। वेखे खेल विच संसार, साचा हिस्सा मात वंडांयदा। निहकलंकी नर अवतार, दहि दिशा वेख वखांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वार, लोआं पुरीआं पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ उप्पर साचा लेख, दोए दोए नेत्र लैणा पेख, सोहँ साचा मेल मिलांयदा। शब्द सोटी कर त्यार, नाम मुट्ठ लगांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, दर द्वार खाली हथ्थ वखांयदा। प्रगट होए हरि करतार, लुकया कोई रहण ना देवे गुट्ठ, सुरती शब्द जगांयदा। अन्तिम वेले देवे कुट्ठ, जो दर दुआरे गए रुट्ठ, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। गुर संगत मेल मिलाए लक्ख चुरासी धर्म राए दर टंगे पुट्ठ, ना अन्तिम कोए छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो हथ्थीं रक्खे शब्द दोहरी मार करांयदा। शब्द सोटी हथ्थ बलकार, आपणे हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम चुक्कणा भार, साचा हुक्म सुणाईआ। चरन छुहाए दिल्ली दरबार, वाली हिन्द सेव लगाईआ। अस्सू तिन्न दिवस विचार, प्रभ साची जोत जगाईआ। आपे जाणे जगत विहार, भगत भगवन्त अचरज रीत बणाईआ। ना कोई वेखे पहरेदार, ना सके मात उठाईआ। किले मन्दिर लए उसार, प्रभ जोती रिहा ढाईआ। इक्क सुहाए बंक द्वार, घर साचे वज्जे वधाईआ। सो जन अन्तिम उधरे पार, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सोटी हथ्थ उठाईआ। पंच धारी काला रंग, सवा हथ्थ रखावणा। सोहँ अक्खर हरि समरथ, आपणा लेख लिखावणा। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, भाण्डा भरम भन्नावणा। संत सुहेले लए रक्ख मनमुखां अन्त खपावणा। चारों कुन्ट उडे कक्ख, वाली हिन्द जणावणा। मन्दिर अन्दर दिसण सक्ख, साचा रंग

ना कोई सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेख भविख्त वाक दर दिल्ली लिखावणा। पंचम निशाना पंचम मुख, पंचां धार बनाँयदा। हरिजन उतरे सगला दुःख, विच संसार दया कमांयदा। इक्क उतारे तृष्ना भुक्ख, साचा सुख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। पंचम जोड़ा चिट्टा तन्द, चरन कँवल छुहाईआ। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, रसना ना कोई हिलाईआ। बीस इक्कीसा मेट मिटाए मदिरा मास गन्द, वाली हिन्द हथ्थ फड़ाईआ। सोहँ शब्द सुणाए सुहागी छन्द, चार वरनां इक्क जणाईआ। इक्क उपजाए परमानंद, दर दुआरे बूझ बुझाईआ। शब्द चढ़ाए साचा चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सर्ब जीआं साचा बख्शंद, हरि करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चिट्टा जोड़ा शब्द घोड़ा होए अस्वार, वेखे थांउँ थाँईंआ। चिट्टा जोड़ा गुरमुख सेव, प्रभ शब्दी मात जणाईआ। अमृत आत्म साचा मेव, धुरदरगाही रिहा खुवाईआ। मिले वड्याई देवी देव, उत्तम ज़ात कराईआ। साचा मेला अलख अभेव, भेद अभेदा मुख वखाईआ। गुरमुख काया सदा नहिकेव, रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत सेवा लाईआ। गुर संगत सेवा सच कमावणी, पंचम मुख सुहाया। गुर पूरे आत्म भिच्छया पावणी, आत्म सहिंसा रोग मिटाया। पूर कराए दर घर भावनी, कलि दुःख रहण ना पाया। अन्तिम पक्की साची सावणी, सतारां हाढ़ी बणत बणाया। हुक्म सुणाए पवण पावणी, पवण पाणी विच समाया। लेख चुकाए अवण गवणी, अवण गवणा विच फिराया। दामन चमके दामन दामनी, कामन कामनी दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला रिहा मिलाईआ। पंचम मेला पंच वस्त, प्रभ साचा हथ्थ फड़ांयदा। लहिणा देणा दस्त बदस्त, आपे बैठ साचे हसत, पुरख अबिनाशी आप मुकांयदा। हरिजन रहणा सदा मस्त, शब्द मिल्या हरि साचा सस्त, मुल्ल कोई ना लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वाली हिन्द सुहाए दर, साची वस्त टिकांयदा। पंचम वस्त दर दरबार, आपे दए टिकाया। बन्द कराए शब्द किवाड़, आत्म कुंडा लाहया। आपे खोल्हे सतारां हाढ़ बीस बीसा खुशी मनाया। दिल्ली ढिली होए उजाड़, एका कूट दए वसाया। आपे वेखे धरत मात तेरा अखाड़, प्रभ साची रचन रचाया। जीव जन्त चबाए आपणी दाढ़, राए धर्म हुक्म सुणाया। नौ दुआरे रिहा पाड़, गुरमुख साचे मात जगाया। शब्द घोड़े देवे चाढ़, नाम डोरी हथ्थ फड़ाया। धुर दरगाही बणाए साचे लाड़, मस्तक टिक्का एका लाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, आत्म घर नाम टिकाया। आपे होए पिछे अगाड़, नीकन नीका दिस ना आया। गुर संगत लहिणा सतारां हाढ़, भेव चुकाए जीव जन जीअ का, लहिणा देवणहार आप अख्वाया। लहिणा देवणहार जगत सुल्तानया। गुरमुख मंगे मंग अपार विच जहानया।

तन चाढ़े काया रंग शब्द अपार महानया। अमृत धार वहाए गंग, काया ठंडी ठार करानया। ताल वजाए नाम मृदंग, साचा राग आप अलानया। बैठ हरि शब्द पलँघ, वेखे खेल श्री भगवानया। गुरमुख विरला अन्दर जाए लँघ, जिस होए आप मेहरवानया। जोती शब्दी साची संग, पवणी चवर झुलानया। अंगीकार लाए अंग, एका नारी साचा आत्म सेज हंढानया। कलिजुग काया रंग बसंत, माया पाई मात बेअन्त, गुरमुख विरले आप जगाए चतुर सुघड़ स्याणया। मनमुख जीव देव दंत, आत्म होण भस्मंत, हरि भाणा गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल देस लेख वेख हरि, गुर गोबिन्द पछानया। गुर गोबिन्द पछाण, मेल मिलाया। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, साचा खेल रचाया। काया चिले वेख कमान, शब्द तीर चलाया। वेखे खेल श्री भगवान, साचा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम मीता, पंचम रीता, पंचम रहे सदा अतीता, पंचम विच समाया। पंचम संग निभावण आया, हथ्थीं बन्हे गाना। पल्ला नाम फड़ावण आया, धुर दरगाही इक्क निशाना। शब्द घोड़ चढ़ावण आया, हरि वड बली बलवाना। जोती जोड़े जोड़ जुड़ावण आया, शब्द सुणाए राग काना। सोहँ सो साचे होड़े निरगुण सरगुण जोड़, दस्म दुआरी जोड़न आया सच मकाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां देवे जिया दाना। सोहँ होड़ा दोए मुख, दोए धार चलाईआ। निरगुण रूप धारा साचा सुख, सच वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सति पुरख निरँजण वेख दर, सति सतिवादी शब्द अनादी, बोध अगाधी एका बणत बणाईआ। बोध अगाध शब्द जैकार, प्रभ साचा मात करांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, नाम अरदासा इक्क करांयदा। गुरमुख वेखे सुत्ते केहड़े घर, ना कोई मात जगांयदा। चारे कुन्ट लग्गी अग्ग आवे डर, ना कोई किसे बुझांयदा। मस्तक टिक्का केसर जगे जगे जोत लिलाटी साचे मट्टे औखी घाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख खोल्हे बन्द दर जगत दुआरे नौ वेख सृष्ट सबाई फिरे हलकाईआ। प्रभ जोती धरया जामा भेख, दृष्ट इष्ट ना किसे खुल्हाईआ। ना कोई जाणे बिधना लिखी रेख, ना सके मात मिटाईआ। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़ गौंस कुतब मुसायक देण दुहाईआ। कोए ना सके नेत्र लोइण साचे पेख, साध संत बेअन्त रहे धूणीआँ ताईआ। गुरमुख विरले लग्गे मस्तक रेख, ना सके मात मिटाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों आपे वेख, जोत सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, शब्द निशाना नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां अन्तिम मात झुलाईआ। शब्द निशान जाए चढ़, बीस बीसा दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे दूर खड़, ईसा मूसा दए दुहाईआ। ना कोई दिसे सीस धड़, संग मुहम्मद चार यार, गल विच पल्ले बैठे पाईआ। चारों कुन्ट दिसे उजाड़, धरत मात तेरा इक्क अखाड़

मौत लाड़ी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां बजर कपाटी पाड़, जोती निर्मल नूर जगाईआ। बजर कपाटी माया पड़दा, प्रभ आपणा आप रखाया। जीव जन्त विच अग्नी सड़दा, ना कोई अमृत जाम प्याया। जुगा जुगन्तर सभ घाड़न घाड़ घड़दा, आपणे भाणे विच समाया। गुरमुख विरला औखी घाटी चढ़दा, प्रभ डण्डा शब्द हथ्थ उठाया। अक्खर वक्खर जो जन पढ़दा, मस्तक लेखा दए मिटाया। दर दुआरे साचे वड़दा, गुर चरन सरन चित लाया। लेख मिटाए अस्थूल जड़्ह दा, सो अगम्म रूप वटाया। सृष्ट सबाई अगे पर्दा, दिस किसे ना आया। घट घट अन्दर आपे वड़दा, नौ दरवाज़े बन्द कराया। पौड़ी पौड़ी मंज़ल चढ़दा, महल्ल अटल इक्क सुहाया। दस्म दुआरी कुण्डा फड़दा, पहरेदार टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी संग रलाया। शब्द गुर हो त्यार, अन्दर मन्दिर दए सुहाईआ। आपे करे ख़बरदार, पहरेदार आप अख्वाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, साचा बेड़ा रिहा बंधाईआ। ना कोई लुट्टे चोर यार, पंजां चोरां दए दुरकाईआ। शब्द घोड़ा तन शृंगार, जोती जोड़े दए मेल मिलाईआ। आपे बैठा अध विचकार, साची रचन रचाईआ। सत्तां दीपां रूप अपार, जम्बु दीप सुहाईआ। दस्म दुआरी चिट्टी धार, आपणी आप वहाईआ। सुन अगम्मो आया पार, नाद अनादा ढोल वजाईआ। ओंकार एकँकार, आपणा अंक कराईआ। जोत सरूपी पसर पसार, सति पुरखा विच समाईआ। सति पुरखा जाणे आपणी धार, सच सिँघासण डेरा लाईआ। हरि सिँघासण अपर अपार, जोती नूर सुवाईआ। जोती नूर हरि करतार, लक्ख चुरासी विच टिकाईआ। लक्ख चुरासी बन्न्हे धार, जुग जुग बणत बणाईआ। संत सुहेला मीत मुरार, लोकमात आवे वाहो दाहीआ। कलिजुग कर्मां रिहा विचार, धरत मात दए दुहाईआ। निहकलंक लए अवतार, गुर गोबिन्दा लेख लिखाईआ। शब्द डंक अपर अपार, चारों कुन्ट रिहा वजाईआ। राज राजाना करे ख़बरदार, गुरूआं पीरां दए हिलाईआ। गुरसिक्खां होया पहरेदार, नंगीं पैरीं सेव कमाईआ। दो जहानी साचा यार, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी नार बांझ, शब्द पूत ना गोद उठाईआ। माता पिता पूत प्यार ना दिसे किसे सांझा, अन्तिम कोए ना संग निभाईआ। रूह निमाणी साची हीर शब्द गुर साचा रांझा, नाद अनादा वंञली वजाईआ। आपे वेखे बोध अगाधा, जाणे खेल विच ब्रह्मादा, गोबिन्द गोबिन्द तेरी धार सुहाईआ। गोबिन्द तेरी धार विच ब्रहमादया। पुरख अबिनाशी पाए सार, आदिन अन्ता आदि ब्रहमादया। साचे संतां दए हुलार, मेल मिलाए मोहण माधव माध्या। एका घर एकँकार यति सरूपी साची धार, सच वस्त ना किसे लाधीआ। अक्खर वक्खर रिहा विचार, रोड़ी सक्खर मारे मार, लेख चुकाए पिउँ दादया। संग रलाए मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी होए ख्वार, काली चुन्नी सिर सरदार, पुरख अबिनाशी

देवे पाड़, ना कोई दिसे लाड़ी लाड़, सतारां हाढ़ी अग्नी जोती देवे साड़, मगर लगाए पंचम धाड़, राह खहिड़ा नज़र ना आईआ। आपे वेखे पुरीआं लोआं पुरख अबिनाशी मार ध्याना, शब्द सरूपी बैठ बिबाणा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। जन भगतां देवे जीआं दानां, हथ्थीं बन्ने नाम गाना, चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, दरस नेत्र साचा मजन दो जहानां आप कराईआ। कलिजुग मेला साचे सज्जण, दूई द्वैती भाण्डे भज्जण, गुरमुखां आया पर्दे कज्जण, शब्द दुशाला उप्पर पाईआ। मदिरा मास जो जन तजण, सच दुआरे बहि बहि सज्जण, अमृत पी पी दर दर रज्जण, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। इक्क कराए मक्का काअबा हज्जण, दो दोआबा रंग शताबा, आपे वेखे हक्क ज़नाबा, काया वजाए सच रबाबा, सोहँ तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां करे शब्द कुड़माईआ। गुरमुख साचे सगल सुख, आत्म चिन्दया उतरे दुःख, भाण्डा भरम भन्नाईआ। सुफल कराए मात कुक्ख, उज्जल करे जगत मुख, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लहिणा देणा मूल चुकाईआ। कलिजुग लहिणा जाए चुक्क, प्रभ साचा मात चुकांयदा। सतिजुग भार लए चुक्क, गुर पूरा सेवा लांयदा। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, ना कोई किसे बचांयदा। जूठा झूठा बूटा रिहा सुक्क, अमृत सिंच ना कोए हरा करांयदा। सिँघ शेर शेर दलेर अन्तिम रिहा बुक्क, हरि मृगिन्द वाली हिन्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ दुआरे वेख घर, सच दुआरे आसण लांयदा। पारब्रह्म सरनाई, ब्रह्म जणाईआ। आत्म घर वज्जे वधाई, मंगलाचार रिहा सुणाईआ। ना कोई जाणे जन्त लुकाई, मन्दिर अन्दर खेल रचाईआ। गुरमुख साचा वेखे चांईं चांईं, जिस जन आपे रिहा वखाईआ। आप वखाए फड़ फड़ बाहीं, ढोल मृदंग नाम वजाईआ। शब्द सुहेला देवे ठंडीआं छाँईं, नाम रंगा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साची गंगा, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। अठसठ्ठ तीर्थ कलिजुग ताट, कलिजुग हट्ट विकांयदा। गुरमुख विरला लाहा लए खाट, गुर चरनी चित लांयदा। सर सरोवर काया माट, तीर्थ नुहावन आप नुहांयदा। वणज कराए साचे हाट, वस्त अमोला झोली पांयदा। निझर रस लैणा चाट, सच धारा आप वहांयदा। दीपक जोती वेख लिलाट, अंञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां पूरी घाट, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जगत भगती चरन ध्यान, एका एक रखाईआ। नाम शक्ती गुण निधान, साची सेव लगाईआ। बूंद रक्ती वेख वखाण, आदि शक्ती आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां बणत बणाईआ। गुरमुख रंग चलूल, काया आप चढ़न्नयां। दर दुआरा ना जाणा भूल, राए धर्म ना देवे डन्नया। हथ्थ फड़ाए शब्द त्रिसूल, पंचां बेड़ा देवे बन्नआ। आप चुकाए अगला पिछला

मूल, साचा राग सुणाए कन्नया। शब्द सिँघासण हरि बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना जननी किसे जणयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मेल सच घर, कवण दुआरे चढ़या साचा चंनया। कवण शब्द शब्द प्रकाश करे लोअ अकारा। कवण तेज पुरख अबिनाश मेटे धुँदूकारा। कवण पृथ्वी वेख अकाश, खेले खेल अपारा। कवण मण्डल पाए रास, करे कराए शब्द जैकारा। कवण चलाए सुवास सुवास, अगम्म अगम्मी धारा। कवण वसे जन सदा पास, आदि अन्त दए हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे इक्क घर, सुहाए इक्क बंक दुआरा। बंक दुआरे साचा ताल, अनहद राग वज्जया। अमृत आत्म मार उछाल, आवे बाहर भज्जया। दोवें वेखण काल महांकाल, उप्पर नीचे सज्जया। कवण करे अन्त प्रितपाल, कलिजुग दमामा वज्जया। पुरख अबिनाशी चले अवल्लड़ी चाल, जुग जुग रक्खदा आया लज्जया। वेखे खेल काया माटी खाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरे बहि बहि सज्जया। घर घर वज्जे नाद, हरि प्रभ वजावणा। आत्म आपे देवे साध, सति संतोख वरतावणा। करे खेल विच ब्रह्माद, एका जोग कमावणा। संत सुहेले लए लाध, दीपक जोत जगावणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्मत सम्मती आप सुहावणा। निरगुण रूप अपार, सरगुण समाया। सरगुण बन्ने धार, दर घर मन्दिर वेखे आया। जोगी यतीए कर्म विचार, आत्म रतीए ल्या उठाया। हठीए सतीए लहिणेदार, पूर्ब लहिणा झोली पाया। तीर्थ तट्टीए हाहाकार, माया राणी फिरे हलकाया। लक्ख चुरासी नौ द्वार माया ममता मोह वधाया। लोकमाती धुँदूकार, अगम्म अगम्मा दिस ना आया। गुरमुख विरला उतरे पार, पुरख अबिनाशी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत भाणा रिहा सुणाया। हरि भाणा बलवान, हथ्थ रखाया। अट्ठे पहर नौजवान, समरथ सहिज सुखदाया। एका वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्मा शिव होए हैरान, करोड़ तेतीसा रिहा जगाया। लोकमाती करे पछाण, जगत जगदीसा सेवा लाया। नौ दुआरे झूठ दुकान, बीस इक्कीसा दए मिटाया। पंचम नाता कलि प्रधान, पुरख बिधाता मुख छुपाया। उत्तम ज़ाता गुण निधान, गुरमुखां रिहा सुणाया। आपे पिता आपे माता, हरिजन साचे गोद उठाया। देवण आया साची दाता, धुर फ़रमाणा नाम सुणाया। आपे रहे इक्क इकांता, घट मन्दिर डेरा लाया। अमृत देवे बूंद स्वांता, निझर धार वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां साचे हट्ट विकाया। साचा हट्ट जगत वणजारा, प्रभ आपणा आप करांयदा। गुरमुखां मेला मीत मुरारा, द्वार बंक इक्क सुहांयदा। साचा बख्शे चरन प्यारा, राउ रंक ना कोई जणांयदा। ऊँचां नीचां एका धारा, एका धाम सुहांयदा। आप वसे हो हो बाहरा, आप आपणा मुख छुपांयदा।

गुरसिख साजण साची नारा, हरि कन्त नाल रलांयदा। दोहां मेला इक्क दुआरा, एका रूप समांयदा। लेखा जाणे अपर अपारा, साची बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्मत चौदां चौदां लोक इक्क चलाए शब्द शलोक, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां मुख रखाईआ। जन भगतां दुरमति मैल रिहा कट्ट, देवत सुर असुर जगाईआ। मेटण आया शरायती फट, इक्क हदाइती हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लेख चुकाए तीर्थ तट्ट एका आत्म सर सच सरोवर इशनान कराईआ। इक्क इशनाना आत्म घर, प्रभ साचे आप करावणा। ना जन्मे ना जाए मर, जगत जगदीसा देवे वर, पल्ले नाम बंनावणा। वरन अवरनी बरन बरनी एका रिहा कर, ध्यान पंचां विच समावणा। राज राजाना शाह सुल्ताना एका राह वखावणा। ना कोई दिसे पुरख नारी नर, लज पति ना कोई रखावणा। प्रभ का भाणा लैणा जर, गुरमुख साचे साचा हुक्म सुणावणा। चरन कँवल जन जाणा तर, धुर मस्तक लेख लिखावणा। धर्म राए दा चुक्के डर, मस्तक धूढ़ छुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल जिउँ बल बावना। बावन खेल बाल अवस्था, सतिजुग रचन रचाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम मस्ता, माया राणी बद्धा बस्ता, पंडत पांधे रहे सिर उठाईआ। गुरू ग्रन्थ जन कीता सस्ता, पंजां पंजां वेच विचाईआ। आत्म अन्तिम कोए ना मिल्या साचा रस्ता, प्रभ दर्शन लोइण पाईआ। पुरख अबिनाशी धुर शब्द कटार फड़े दस्ता, पंचां तत्तां दए मिटाईआ। आपे वेखे कीट हस्ता, राज राजाना शाह सुल्ताना दर दरबान खाक रुलाईआ। माया राणी जूठा झूठा पीसण पिसदा, कलिजुग चक्की रिहा चलाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त अन्त ना दिसदा, धर्म राए रिहा दे सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, एका चरन सच्ची शरनाईआ। कलिजुग चक्की दोए पुड़, प्रभ धरत मात टिकांयदा। जूठ झूठ गई जुड़, माया पीसण आपणे हथ्थीं पांयदा। लालच ममता लग्गा गुड़, ना कोई गेड़ कटांयदा। नाम वस्त दी आई थुड़, हाहाकार सृष्ट करांयदा। आपे चढ़े शब्द घोड़, शब्द घोड़ा इक्क दुड़ांयदा। लोकमाती जाए बौहड़, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। वेखे खेल ब्रह्मण गौड़, पन्दरां कत्तक उच्चे टिल्ले जगत पहाड़ी आसण लांयदा। लेखा जाणे लम्भा चौड़, सच पर्बत लेख लिखांयदा। मारन आया पहला पौड़, मक्का मदीना ढाहिंदा। गुरमुखां आत्म अन्तर लग्गी औड़, एका मेघ बरसांयदा। परखण आया मिट्ठा कौड़, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, चरन प्रीती राह वखांयदा। कलिजुग काली धार जोत प्रकाशीआ। सतिजुग साची कर विचार, आए दर द्वार पुरख अबिनाशीआ। दोहां इक्क द्वार, लहिणा देणा रिहा उतार, करे खेल घनकपुर वासीआ। कलिजुग रोवे धाहां मार, लोकमाती

अन्तिम वार, जूठी झूठी पाई फाँसीआ। सतिजुग साचा हो त्यार, मंगे मंग शब्द अपार, देवणहार सच्ची सरकार, पारब्रह्म पुरख अबिनाशीआ। अन्तिम भरे धर्म भण्डार, सोहँ अक्खर साची धार, आप कराए दासन दासीआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यार, साचा मेला मुहमन्दी यार, वेले अन्तिम पावे हासीआ। सतिजुग साचा ख़बरदार, गुरमुखां देवे नाम अपार, निझ घर आत्म रक्खे वासीआ। दोहां मेला इक्क द्वार, पूर्ब लहिणा रिहा विचार, जोती जामा भेख अपार, ना कोई जाणे पंडत काशीआ। कलिजुग काली धार, दए दुहाईआ। सतिजुग साचा हो उज्यार, आया सरनाईआ। प्रभ अबिनाशी बख़्शे किरपा धार, आत्म वस्तू इक्क टिकाईआ। जुगां जुगां दा चुकया भार, धरत मात रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी लए अवतार, निहकलंका जोत जगाईआ। गुर गोबिन्दा ख़बरदार, काया आसण इक्क विछाईआ। आपे वस्सया अन्दर बाहर, शब्द धारा रिहा चलाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पुरख अबिनाशी सार ना पाईआ। प्रगट होए जोत निरँकार, काया कंचन गढ़, जोत सरूपी उत्ते चढ़, आपे तोड़ तुड़ाईआ। किसे ना लग्गी रहण ना देवे जड़, सम्मत अठारां वहे हड़, एका धक्का लाईआ। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मासी जायण सड़, गुरमुख साचे लए तराईआ। आपे आप वेखे अन्दर वड़, शब्द चौह अक्खर एका पढ़, वेला अन्तिम अन्त रिहा कराईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, मात पाताल ना वेखे जड़, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। ब्रह्मा शिव लए फड़, करोड़ तेतीसा दर प्रभ एका हथ्थ उठाईआ। जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवे शब्द वर, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। साची शरन जगत गुरदेव, कलिजुग अन्तिम आया। बिरथा ना जाए गुरमुख सेव, प्रभ लेखे रिहा लगाया। रसना गाए जिह्वा जेहव, मस्तक लाए साचा थेव, कौस्तक मणीआ नाम रखाया। अलख निरँजण आप अभेद, भेव अभेदा मुख छुपाया। ना कोई जाणे चारे वेद, ब्रह्मा मुख रिहा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कोटी कोट रिहा उठाया। कोटी कोट उठाए, कोट गढ़ निवारया। कोटी कोट जगाए, सो सस्से लाया होड़या। कोटी कोट खपाए, हँ जीव ना नाँ आपणा लोड़या। कोटी कोट खपाए, मिल्या शब्द ना सच्चा घोड़या। कोटी कोट हलकाए, प्रभ साचा मात ना बौहड़या। कोटी कोट फिराए, मिले नाम ना साचा जोड़या। गुरमुख साचे संत मिलाए, दर घर आपणे आपे बहड़या। कन्त सुहागी दर्शन पाए, दर आए वागां मोड़या। आत्म सोती आप जगाए, वर पाए जिहा लोड़या। शब्द अनादी इक्क सुणाए, कलिजुग माया वेला थोड़या। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाए, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख वेखे आत्म घर, शब्द सरूपी चढ़ चढ़ घोड़या। गुरमुख साचे परखण आया, हथ्थ फड़या तीर निशाना। लोकमाती रक्खण आया, सोहँ बन्ने हथ्थीं गाना। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण कलिजुग रेख मेटण आया,

७६१
०५

गुणवन्ता गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दा इक्क दर, आपणा आप सुहाना। दर सुहाए आप प्रभ, आपणी रचन रचाईआ। गुरमुखां उलटाए कँवल नभ, अमृत मुख चुआईआ। प्रगट जोती करे झब्ब, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। संत सुहेले लए लभ्भ, लक्ख चुरासी खोज खुजाईआ। इक्क कराए साचा हज्ज, चरन सरन हरि रघुराईआ। अन्तिम वेले रक्खे लज्ज, आपणी गोद उठाईआ। शब्द दुआरे रिहा सज, जोती आसण लाईआ। जगत विकारा बैठा तज साचे मन्दिर चढ़या भज्ज, गुरमुख साचे दर घर साचे एका एक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, लोकमात करे सच्ची कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम वर घर पाया, होए मात निबेड़ा। पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाया, जूठा झूठा ढहिणा नगर खेड़ा। सृष्ट सबाई रिहा जणाया, धरत मात तेरा खुल्ह्णा वेहड़ा। गुरमुख साचे लए तराया, आपे बन्न्हणहारा बेड़ा। दर दुआरा बंक सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम करे हक्क निबेड़ा। करे निबेड़ा हक्क, हक्क जलालया। गुरमुख साचे लए रक्ख, दो जहानां करे रखवाल्या। कलिजुग फल गया पक्क, पत दिसे ना किसे डालया। राए धर्म रिहा तक्क, असथिल मन्दिर होवण खालया। लक्ख चुरासी पाए नकेल नक्क, एका वारी करे साची चालया। डूंघे वहिण देवे धक्क, लाड़ी मौत मारे तालया। गुरमुख साचे संत जनां दरस दिखाए प्रगट हो प्रतक्ख, धुर दरगाही साचा मालया। प्रगट हो प्रभ दरस दिखावणा। आपणी रचन रचावणा गुरमुखां साचे मार्ग लांयदा। मनमुख कोए रहण ना पावणा। सृष्ट सबाई होई दुहागण, शब्द हलूणे आप जगावणा। एका राह साचा दस्स, आत्म रस हस्स हस्स, प्रभ झोली पावणा। साचे मार्ग शब्द तीर मारे कस कस, काया नगर खेड़ा वेखे नस्स नस्स, एका पन्ध मुकावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्त मिटे अन्धेरी मस्स, दीपक जोती इक्क जगावणा। गुरमुख साचे संत जगाए, धुर दरगाही दाता। आप आपणा शब्द जणाए, बोध अगाध अगाधा। सगला संग आप निभाए, प्रगट हो त्रैलोकी नाथा। गुरमुख काया रंग चढ़ाए, मस्तक टिक्का लाए माथा। शब्द उडारी पतंग उडाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, सम्मत चौदां लेख लिखाता। गुरमुख सोए जाण जाग, प्रभ जागरत दिशा वखाईआ। आपे जाणे जाण पछाणे काया मन्दिर दए सुहाए, दीपक जोती रिहा जगाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, सर सरोवर इक्क इशनान कराईआ। सम्मत चौदां धोवे दाग़, आत्म उपजे इक्क वैरग, जिस जन दया कमाईआ। रसना रस मन दए त्याग, जोती जामा पूर कराए आपणा कामा, शब्द वजाए, इक्क दमामा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, साची रंगण रंग रंगाईआ। रंगे रंग

मजीठ, लक्ख चुरासी रिहा डीठ, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। साचा पीसण रिहा पीठ, साची चक्की नाउँ चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां देवे शब्द वर, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणांयदा। शब्द सुनेहड़ा धुर फ़रमाण, दर घर साचे लै के जाणा। ना कोई जाणे पवण पाणी मसाण, तन रत ना करे पछाणा। गुणवन्ता हरि गुण निधान, कमलापत सर्ब समाणा। जोती जोत धरे भगवाना, आप उडाए शब्द बिबाणा। सम्मत चौदां वेखे मार ध्यान, गुरमुख साचा सुघड़ स्याणा। एका बख्शे चरन ध्यान, देवे जिया दाना। दर घर मन्दिर लए पछाण, चरन छुहाए श्री भगवाना। मनमुख जीव लेखा अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ लक्ख चुरासी विच फिराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, इकी इकी मेल मिलाना। इकी सिक्ख इकी घर, एका रंग रंगाईआ। शब्द इक्की देवे वर, निक्की जोत जगाईआ। आत्म सिक्की आत्म घर, रस फिक्की दए मिटाईआ। गुरसिख आत्म प्रभ चरन विकी, प्रभ कीमत देवे पाईआ। सोहँ चढ़ मात प्रकाशे सूरज चन्द इक्क साची टिक्की, दिवस रैण रहे रुशनाईआ। आपे रक्खे हरिजन तेरी साची सिक्की, दिवस रैण नेत्र तीजा आपे वेख वखाईआ। जाणे खेल जीव जन जीअ की, ना कोई सके भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इक्कीसा हरि जगदीसा आपणी रिहा बणत बणाईआ। इक्की सिक्खां इक्क द्वार, प्रभ साचा मात सुहांयदा। काया मन्दिर सच घर बाहर, शब्दी चरन टिकांयदा। माया ममता जगत महल्ल उसार, झूठा आसण लांयदा। गुरमुखां करे ख़बरदार, नगर खेड़ा इक्क वसांयदा। साचा मेला मीत मुरार, आत्म अन्दर दरस दिखांयदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़, पंच धाड़ परे हटांयदा। विच प्रभास जंगल जूह उजाड़ पहाड़, मण्डल रास इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे जगत वर, साचा हुक्म सुणांयदा। इकी सिक्ख एका रंग, गुर संगत संग चढ़ाईआ। पूरी करे सच्ची मंग, सम्मत चौदां नेड़े आईआ। आपे कटे भुक्ख नंग, रो रो कोए ना दए दुहाईआ। गुरसिख चढ़े ना ताप खंघ, रोगां सोगां दए मिटाईआ। आप बिठाए शब्द रंगीले पलँघ, आपणीआं भुजां उप्पर उठाईआ। गुरसिख डोरी शब्द पतंग, विच आकाशां रिहा उडाईआ। आत्म सर सरोवर बख्शे साची गंग, आपणी हथ्थीं इशनान कराईआ। पंज चोर ना करन जंग, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। इक्क वजाए नाम मृदंग, छत्ती रागां भेव चुकाईआ। आपे होए सगला संग, विछड़ कदे ना जाईआ। नौ दुआरे बैठा लँघ, दसवें आसण लाईआ। शब्द घोड़े कस्सया तंग, गुरमुखां रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हथ्थीं पकड़े आपणे वाग, जन भगतां धोवे आत्म दाग़, आपणी सेवा रिहा लाईआ। आपणी सेवा आपे लाए, गुरमुखां सेव कमांयदा। वड देवी देव आप अख्वाए, दर दर फिरांयदा। अमृत आत्म

मेवा साचा फल खुवाए, आपणी हथ्थीं तोड़ तुड़ाए, रसना जिह्वा हरिजन हरि गुण गाए, हरि हरि साचा मेल मिलांयदा। छाण पुण जन भगतां सृष्ट सबाई आप कराए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मधाणा इक्क चलांयदा। शब्द मधाणा आप चलाया, चले वाहो दाही। राजा राणा रिड़कण आया, हरि दाता बेपरवाही। मनमुख जीवां झिड़कण आया, गुरमुखां तारे फड़ फड़ बाहीं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दो जहानी ठण्ढीआं छाँई। इकी सिक्खां एका राग, नादी नाद वजाईआ। आत्म रहे इक्क वैराग, हरि दर्शन नेत्र पाईआ। सदा सुहेला रिहा जाग, आलस निन्दरा लाहीआ। दर दर घर घर लाए भाग, साचा धाम सुहाईआ। चरन धूढ़ करे मजन साचा माघ, गुरमुख साचे संत उठाईआ। चरन कँवल जन जाए लाग, तृष्ना आग बुझाईआ। लोकमाती वड वड भाग, हरि सरन सच्ची मिली सरनाईआ। इकी सिक्खां इक्क इक्ठु, एका घर सुहावणा। आपे जाए नठ्ठ, गुर संगत तेरा दर्शन पावणा। कलिजुग अन्तिम करे चठ्ठ, उलटी लठ्ठ गिड़ावणा। गुर संगत दुआरा तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, प्रभ साचा लेख लिखावणा। काया मन्दिर वेखे मठ्ठ, पंज तत्ती अग्ग बुझावणा। पंजे चोर होण भठ्ठ, हथ्थीं आपणी मेट मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दरस दिखावणा। इक्की सिक्ख इक्क द्वार, एका रंग चढ़न्नया। दरस दिखाए अपर अपार, कलिजुग बेड़ा

७६४

बन्न्या। पवण उनन्जा छत्र झुलार, भरमां भाण्डा भंनया। वेखण जाए दर द्वार, जिस जन मन तन आत्म मन्नया। आत्म ताकी खुल्हे किवाड़, दूती दुष्टां डंनया। वा ना लग्गी तत्ती हाढ़, देवे नाम सच्चा धन धनया। जगत विकारा आप चबाए आपणी दाढ़, गुरमुखां राग सुणाए कन्नया। दर घर साचे देवे वाड़, कलिजुग अन्तिम बेड़ा बन्न्या। जोत जगाए बहत्तर नाड़, लक्ख चुरासी लावे सन्न्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, जिस जन आत्म मन्नया। तन मन मन्ने मन, जिस जन आप जणांयदा। जगत हँकारा रक्खे तन, साचा धन्न झोली पांयदा। कोई ना लाए मात संन्ह, दिस किसे ना आंयदा। गुर शब्दी चढ़े साचा चन्न, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, सञ्झ सवेर इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, एका इकी नाम पांयदा। एका इक्की देवे दाज, इक्की सिक्ख लए प्रनाईआ। शब्द सुणाए इक्क अवाज़, एका घर वजे वधाईआ। भाग लगाए देस माझ, जोती शब्दी आप बणाए धी जवाईआ। अन्तिम वेले रक्खे लाज, मात पित पूत अख्वाईआ। शब्द सरूपी देवे दाज, पल्ले गंढु बन्न्हाईआ। धुर दरगाही साचा राज, प्रभ चरन सरन सच्ची शरनाईआ। इक्क संवारे गुरमुख काज, आपणी सेवा आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विचोला आप बणाए जगत सांझ, गुरमुखां सगन लगाईआ।

साचा सगन हथ्थ रखाए, पहली चेत्र दिवस विचार। सम्मत चौदां हो प्रतक्ख वखाए, गुरमुखां बन्ने धार। लक्ख चुरासी कक्ख उडाए, चारों कुन्ट धुँदूकार। गुरमुखां मुख सगन लगाए, गुर शब्दी कर प्यार। हउमे हँगता रोग मिटाए, तन कराए इक्क शृंगार। उज्जल मुख मात कराए, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। मात कुख सुफल कराए, वेखे दर दरबार। जगत तृष्ना भुक्ख मिटाए, गऊ गरीबां पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, लहिणा देणा रिहा उतार। लहिणे देणा करज चुकावणा। धर धर जुग जुग लेखा, आपणी हथ्थीं हिसाब मुकावणा। गुरमुख साचे नेत्र पेखा, धर्म राए प्रभ दर दुरकावणा। चित्रगुप्त मिटाए रेखा, आप आपणा हुक्म सुणावणा। कवण जोती धारे भेखा, आत्म रामा दरस दिखावणा। वरन गोती भेव मिटावणा। पारब्रह्म ब्रह्म विच समावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, साचा मार्ग मात लगावणा। साचा मार्ग मात लगाए, गुरमुखां कन्न सुणांयदा। मनमुख जीवां डन्न लगाए, ना कोई अन्त छुडांयदा। गुरमुखां बेड़ा बन्नू वखाए, आपणी कंधीं भार उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे तोड़े खाना बन्दी, जो जन गाए बत्ती बन्दी, रस रसना विच मिलांयदा। बत्ती दन्द बत्ती धार, प्रभ माता दए बख्शाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सोहँ सच्ची जोत जगाईआ। मानस देही उतरे पार, जो जन मधरा मास तजाईआ। रसना चाह ना करे प्यार, एका साल रिहा जणाईआ। दर दर घर घर पावे सार, कवण गुरमुख रहे सच्ची सरनाईआ। गुर पीर ना करे उधार, प्रभ मारे मार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पैज रिहा संवार, मनमुख जीव रहण ना पाईआ। ना गुर ना चेला कोई, हरि का हुक्म पछाणे ना। दो जहानी मिले ना ढोई, जो चले प्रभ के भाणे ना। गुरमुख आत्म कदे ना सोई, रंग साचा मनमुख माणे ना। आत्म अन्दर करदा अरजोई, प्रभ आपे पुणे छाणे जीव जन्त कोई जाणे ना। दुरमति मैल पापां रिहा धोई, दिस ना आए किसे सुघड़ स्याणे ना। एका हल साचा रिहा जोई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम वस्त साचा बीज, साचा दाणा कोई जाणे ना। नाम बीज हरि तन क्यारी, हरि पहली वार बिजांयदा। हल चलाए सतारां हाढ़ी, वडी वड करांयदा। पहली चेत्र वेख फुलवाड़ी, निझ आपणा हुक्म जणांयदा। अन्तिम कट्टणी फसल हाढ़ी, नाड़ी नाड़ी इक्क वजांयदा। लेखा लिखणहार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, उच्चे पर्बत वेख वखांयदा। दीप लोअ चरनां हेठ रिहा लिताड़ी, सच प्रकाश आपणा इक्क करांयदा। गुरमुखां फिरे पिछे अगाड़ी, दासी दास आप अख्वांयदा। नाम तेल जोत निरँजण रिहा चाढ़ी, लाल रंग साची मैहन्दी हथ्थीं लांयदा। काया डोले आपे वाड़ी, आपणी हथ्थीं बन्द करांयदा। सच कुहारा हरि करतारा गुरमुख उठाए साची डोली, नौ

७६५
०५

दुआरे पार करांयदा। दिवस रैण करे प्यारा, गुरमुख साजण मीत मुरार, धन्न सुभाग सतारां हाढ़ा, विछड़े मेल मिलांयदा। जुगां जुगां दा किया अधारा, कलिजुग अन्तिम मूल चुकांयदा। शिव जी नज़र भेंट करे त्रशूल, जगत जगदीशे हथ्थ फड़ांयदा। पुरख अबिनाशी ना जाए भूल, जुग जुग भेख वटांयदा। लहिणा देणा ब्रह्मे शिव चुकाए मूल, लिख लिख लेख हिसाब मुकांयदा। हरि हरि साचा कन्त कन्तूहल, गुरमुख साचे साची नारी जुग जुग सेवा लांयदा। साची नारी कन्त सुहागण, पुरख अबिनाशी पाया। आप उपजाए इक्क वैरागण, सोहणा सीस गुंदाया। हथ्थीं बन्ने साचा तागन, जगत जगदीश सिर ताज टिकाया। जो जन सरनाई लागण, प्रभ साचे धाम दए बहाया। आप बुझाए तृष्ना आगन, दिवस तिन्न जिस दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां कर विचार खुशीआं नाल मनाया। हाढ़ सतारां सुहाई रुत्त, सतिजुग तेरी मात उपाईआ। कलिजुग वढ्ढे नक्क गुत्त, बेमुख रहण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त, गुरमुख आप उठाए साचे सुत, मस्तक टिक्का रिहा लगाईआ। अमृत आत्म प्याए घुट्ट, लक्ख चुरासी जाणी छुट्ट, पंजां चोरां जड़ देवे पुट्ट, सोहँ तिक्खा तीर रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी जाए जुट, दर दर घर घर अन्दर मन्दिर होए लुट्ट, गुरुदुआरा ना कोए बचाईआ। तीर निराला रिहा छुट्ट, सत्तां दीपां पै जाए फुट्ट, राज राजानां शाह सुल्तानां लाड़ी मौत कलि फिरे हलकाईआ। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, पुरख अबिनाशी हरि भगवाना, एका देवे जिया दाना, दर घर साचे मेल मिलाईआ। आपे गोपी आपे काहना, नारी कन्त गुरमुख साचे संत शब्द बिठाए विच बिबाणा, लोआं पुरीआं इक्क उडाना, ज़िमी अस्मानां गगन पतालां विच समाईआ। हरिजन तेरा सदा रखवाला, दिवस रैण करे प्रितपाला, दीनां बंधू दीन दयाला, लोकमाती सेव कमाईआ। जगत अवल्लड़ी चले चाला, आपे बैठा हरि धाम सच्ची धर्मसाला, साचा दीप जोत जगाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर गोबिन्दा वेख घर, एका जोत जगाईआ। गुर गोबिन्द वस्सया घर, होया जोत उजाला। सच दुआरा लिख्या दर, प्रभ मिल्या गोबिन्द गोबिन्द गुर गोपाला। जन्म जगत दा मिल्या वर, फुल लग्गे साचे डाला। सच धर्म दी लाए जड़, मनमुख जीवां करे मूंह काला। चार वरनां घाड़न एका घड़, इक्क वखाए साचा घर, शब्द वजाए साचा ताला। अन्दर मन्दिर आपे चढ़, सुरत सुवाणी लए फड़, फल वेखे लग्गा काया डालु। दिवस रैण प्रभ रिहा लड़, मनमति उखाड़े तेरी जड़, गुरमति करे प्रधाना। मोह विकारा जाए सड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां हथ्थीं बन्ने गाना। हथ्थीं बन्ने नाम डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी घोर, ना कोई करे रुशनाईआ। नौ दुआरे पया शोर, हाहाकार रही कुरलाईआ। एका झगड़ा मोर तोर, ना सके कोई

चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, वेले अन्तिम होए सहाईआ। वेला अन्त संत ना जानण, कन्त ना पाया कमला। जीव जन्त ना मात पछानण, प्रभ वसाया कवण महल्ला। गुण निधानी होए नादानण, हथ्थ आया ना शब्द भल्ला। वेद पुराण पढ़ पढ़ छानण, दूई द्वैत ना मिटया सला। मुलां शेख़ अंजील कुरानण, पाया हक्क ना सच मसल्ला। ग्रन्थी पन्थी इक्क ध्यानण, भेव ना आया शलोक पहला महल्ला। ना कोई वेखे अन्तर आत्म मार ध्यानण, गुर नानक त्रैगुण रूप समाया। साचे मन्दिर ना होए चानण, हवण पवण ना कोए कराया। अन्तिम देवे ना कोई दानण, जगत झोली रहे भराया। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानण, शब्द सितार ना कोए वजाया। राग ना सुणया साचा कानण, अनहद राग ना दए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम बालण लक्ख चुरासी हाण्डी दए बणाया। गुरमुख तेरा सति सरूप, साचे विच समाया। जगत अन्धेरा अन्धकूप, अन्त रहण ना पाया। हाहाकारी चारों कूट, साचा तीर रिहा छूट, ना सके कोई उलटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेट मिटाए

७६७ जूठ झूठ, सच सुच्च वरतारा आया। सच सुच्च हरि वरतार, साचा कलस हथ्थ उठाईआ। अमृत भरया हरि भण्डार, सतिजुग साची बणत बणाईआ। गुरमुखां बख्शे एका धार, देवी देव दए दुहाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, भेव ना जाणे राईआ। ७६७

०५ प्रगट होए नर निरँकार, माझे देस वज्जे वधाईआ। सम्बल नगरी चार द्वार, काया नगरी इक्क रखाईआ। सच समग्री शब्द धार, प्रभ आपणी विच रखाईआ। आपे कढ्ढे वारो वार, सम्मत सम्मती लेख लिखाईआ। भरया रहे सदा भण्डार, तोट कदे ना आईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं जगत विहार, साढे तिन्न हथ्थ लेख मिटाईआ। नौ दुआरे खोल्ह द्वार, दसवें बूझ बुझाईआ। माया ममता रहे साड़, गुरमुख नेड़ ना आईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा चाढ़, शब्द सिँघासण इक्क विछाईआ। कोई ना दिसे झूठी धाड़, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोत जगे बहत्तर नाड़, सम्मत सोलां जो जन दर्शन पाईआ। बजर कपाटी जाए पाड़, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के सतारां हाढ़, कलिजुग तेरी अन्तिम थित्त लिखाईआ। बीस बीसा प्रगट होए विच पहाड़, नैणां देवी चरन छुहाईआ। कमरकसा कर त्यार, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां आपणा आप भुवाईआ। लोकमात लाए साचा डण्डा, चार वरन प्रभ वंडे वंडां, ज़ात पात रहण ना पाईआ। ना कोई दिसे भेख पखण्डा, एका गोबिन्द गोबिन्द गाईआ। गुरमुख आत्म कोई ना दिसे रंडा, प्रभ साचा कन्त सुहागी साचे सीस टिकाईआ। लेखे लाए खाणी जेरज अंडा, उत्भज सेत्ज आप मिटाईआ। गुरमुख वंडाउँणी साची वंडा, सम्मत तेरां हाढ़ सतारां आईआ। किसे हथ्थ ना आए विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां काया

दुःख रिहा मिटाईआ। हरि रचना जुग चार, आप उपाईआ। हरि रचना जुग चार, आप रचाईआ। हरि रचना जुग चार, सृष्ट सबाईआ। हरि रचना जुग चार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। हरि रचना जुग चार, मण्डल रासी आप सुहाईआ। हरि रचना जुग चार, रवि ससि जोत प्रकाशी, साची सेवा लाईआ। हरि रचना जुग चार, पृथ्वी आकाशी बिन थम्म्हां गगन रहाईआ। हरि रचना जुग चार, घर घर दर दर अन्दर करे वासी, वास निवासा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बणत बणाईआ। हरि रचना जुग चार, जुगा जुगन्तया। हरि रचना जुग चार, पूरन भगवन्तया। हरि रचना जुग चार, सच मेला साधन संतया। हरि रचना जुग चार, खेले खेल हरि हरि कन्तया। हरि रचना जुग चार, गोबिन्द काया रूप बसंतया। हरि रचना जुग चार, योधा सूर धनी धनवन्तया। हरि रचना जुग चार, सर्बकला भरपूर पती पतवन्तया। हरि रचना जुग चार, गुरमुख साची नार सती सतवन्तया। हरि रचना जुग चार, धीरज यति सति संतोखी मात आप अख्वन्तया। हरि रचना जुग चार, गुरमुखां रक्खणहारा पति, आत्म बीज बीजे साचे वत्त, फुल फुलवाड़ी इक्क उगन्तया। हरि रचना जुग चार, जगे जग पावे सार, ब्रह्मा शिव लए अधार, करोड़ तेतीसा भेख वटन्तया। हरि रचना जुग चार, प्रगट हो हो लए अवतार, सच मार्ग आपणे हथ्थ रखन्तया। हरि रचना जुग चार, चवी तत्त चवी अवतार, प्रकृति जीव अपार, पंजां तत्तां एका धार, पंजां मेला हरि भगवन्तया। हरि रचना जुग चार, राग रागनी करे प्यार, ब्रह्मा वेता वेद उचार, सुरसती बीना सच्ची धुन्कार, नर नरायण राग सुणन्तया। हरि रचना जुग चार, प्रभ साची बन्न्हे धार, करे खेल अपर अपार, वड दाता गुण गुणवन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रंग बसंतया। हरि रचना जुग चार, चलत कराया। जुग जुग पावे सार, धर्म धराया। जीव जन्त लए उभार, साध संत तराया। गुरमुख नारी कन्त प्यार, शब्द पंघूड़ा इक्क झुलाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, गूढ़ा रंग इक्क चढ़ाया। नाम चूड़ा अपर अपार, हथ्थीं मैहन्दी प्रेम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि रचना जुग चार, आपणा काज रचाया। हरि रचना जुग चार, काज निरंकारया। हरि रचना जुग चार, करे खेल वारो वारया। हरि रचना जुग चार, चारे जुग मात अपारया। हरि रचना जुग चार, धरतमात गोद उठा रिहा। हरि रचना जुग चार, लक्ख चुरासी आप उपा रिहा। हरि रचना जुग चार, गुरमुख साचे संत जनां घर साचा इक्क वखा रिहा। हरि रचना जुग चार, गोबिन्द काया रूप बसंत, अन्त आपणी महिंमा आप जणा रिहा। हरि रचना जुग चार, जोग अभ्यास्सया। हरि रचना जुग चार, शब्द प्रकाशया। हरि रचना जुग चार, पुरख अबिनाशया। हरि रचना जुग चार, घट घट अन्दर रक्खे वास्सया। हरि

रचना जुग चार, वेख वखाणे पृथ्वी अकाशया। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप शब्द चलाए स्वास स्वास्सया। हरि रचना जुग चार, आप करतारया। हरि रचना जुग चार, सर्ब पसारया। हरि रचना जुग चार, जोत अधारया। हरि रचना जुग चार, शब्द धुन्कारया। हरि रचना जुग चार, कर्म विचारया। हरि रचना जुग चार, एका एक एकँकार एका धाम सुहा रिहा। हरि रचना जुग चार, पवण पवणी आप उडार, अवणी गवणी पावे सार, पुरीआं लोअ रहण ना देवे को, दो जहानी पसर पसारया। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, हरि वडा शाहो भूप, जोत सरूपी सतिगुर सच सिँघासण आसण ला रिहा। हरि रचना जुग चार, जोत अकालीआ। हरि रचना जुग चार, लक्ख चुरासी रहे सुवालीआ। हरि रचना जुग चार, प्रभ बणया धुर दरगाही साचा वालीआ। जोती जोत सरूप हरि, दोवें हथ्थीं फिरे खालीआ। हरि रचना जुग चार, आपे वेखे परखे कर विचार, फल लग्गा कवण डालीआ। हरि रचना जुग चार, गुरमुखां करे सद प्यार, देवे नाम धुर दरगाही इक्क दलालीआ। हरि रचना जुग चार, संत सुहेला मीत मुरार, प्रगट होए विच संसार, जुग जुग बन्ने आपणी धार, आपणे रंग रंगा लीआ। जोती जोत सरूप हरि, गोबिन्द काया कंचन रूप, जुग जुग महिंमा मात अनूप, आप आपणे विच समा लीआ। हरि रचना जुग चार, चोट नगारया। हरि रचना जुग चार, खोट गंवा रिहा। हरि रचना जुग चार, शब्द भण्डार अतोट अतुट रखा रिहा। हरि रचना जुग चार, कोटन कोटी जीव उपा रिहा। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, पवण उनन्जा देवे धूप, नाम सुगंधी इक्क रखा रिहा। हरि रचना जुग चार, भगत भगवानया। हरि रचना जुग चार, चारे वेद भेद दर दरवानया। हरि रचना जुग चार, अठारां कतेब धुरदरगाही इक्क फ़रमानया। हरि रचना जुग चार, अछल अछेद करे खेल महानया। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कंचन काया गोबिन्द रूप गुर शब्द करे मस्तानया। हरि रचना जुग चार, गणत गणाईआ। हरि रचना जुग चार, साध संत रिहा वड्याईआ। हरि रचना जुग चार, देव दंत दए सजाईआ। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप साचा गढ़ इक्क उपाईआ। हरि रचना जुग चार, जुग उपांयदा। जुग जुग बन्ने धार धर्म चलांयदा। सतिजुग त्रेता उतरे पार, बीस बीसा जन्म दवांयदा। द्वापर तेरी मात वार, दो दोए भेख वटांयदा। अर्जन बणया मीत मुरार, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। अठारां ध्याए गाए गीता, भगत सुणाए साची रीता, आत्म धीर धरांयदा। चरन दुआरा हरि निरँकारा, एका पाया पुरख अपारा, आत्म देही तन मन जीता,

प्रभ साचा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आप आपणा रूप वटांयदा। हरि रचना जुग चार, जोग कमाया। त्रै जुग उतरे पार, चौथे जुग वक्त सुहाया। कलिजुग तेरी साची धार, वर मंगे दर दरबार, प्रभ अन्तिम भिच्छया पाया। नाल रलया मुहम्मदी यार, कीता कौल सच्चा इकरार, प्रगट होए हरि निरँकार, चौदां तबकां मारे मार, सदी चौधवीं होए ख्वार, जोती भेख वटाया। शब्द खण्डा हथ्थ दातार, विच ब्रह्मण्डां पावे सार, जेरज अंडां करे ख्वार। मनमुखां वढ्ढे गंढ्ढां, आपे सुत्ता दे कर कण्डां, नार दुहागण होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप पाया पुरख अपार। हरि रचना जुग चार, जुग जुग जगत कुड़माईआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग अन्तिम वार मिली मात वधाईआ। धरतमात होई त्यार, हथ्थीं मैहन्दी एका लाईआ। लक्ख चुरासी नार मुटियांर, वेले अन्तिम लए प्रनाईआ। धर्म राए दा खोल्हे बन्द किवाड़, साचे मन्दिर दए टिकाईआ। अन्तिम लेखा चुक्कणा सतारां हाढ़, सृष्ट सबाई आप मिटाईआ। चारों कुन्ट दिसे उजाड़ पहाड़, नगर खेड़ा शहर कोई दिस ना आया। एका फिरे अगम्मी धाड़, शब्द गोला काड़ काड़, मारनहार दिस ना आईआ। गुरमुख साचे साचे लाड़, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आप आपणे रंग समाईआ। हरि रचना जुग चार, रचन रचांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, वेख वखांयदा। प्रगट होए विच संसार, जोत सरूपी जामा पांयदा। निहकलंक चौवीआं अवतार, जोती जोत जगांयदा। गुर गोबिन्द कर प्यार, गुणी गहिंदे मेल मिलांयदा। साची बिन्दे कलि न्यार, जोती माता गोद टिकांयदा। क्या कोई निन्दे विच संसार, भेव कोए ना पांयदा। सर्ब बख्शिंदे बख्शणहार, गुरमुखां पैज रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आपणा आप वटांयदा। हरि रचना जुग चार, कलिजुग मिली वड्याईआ। आदि अन्त एका धार, कलिजुग अन्तिम लहिणा देण चुकाईआ। शब्द गहिणा अपर अपार, नेत्र नैणां दए वखाईआ। गुरमुखां लैणा कर प्यार, प्रभ आपणी हथ्थीं रिहा पाईआ। गुर संगत बहिणा चरन द्वार, भाणा सहिणा हुक्म जणाईआ। प्रगट होए हरि निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, कंचन रंग रंगाईआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग होए सवालीआ। चौथे चौथे आई हार, फिरे हथ्थीं खालीआ। कोई ना दिसे साचा यार, घर घर कढ्ढी बैठे दुवालीआ। गुरमुखां मेला मीत मुरार, दिवस रैण रसना रहे चितार, अन्तिम तोड़े जगत जंजालीआ। हरि खण्डा शब्द दो धार, लक्ख चुरासी मारे मार, फल रहण ना देवे किसे डालीआ। जोती जमा भेख न्यार, वरन गोती वसे बाहिर, ऊँचां नीचां एका रंग समालीआ। राज राजाना करे ख़बरदार, साधां संतां दए हुलार, गुरमुखां

बख्शे चरन प्यार, जो जन आए दर सवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, जगत चले अवल्लड़ी चालीआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग वंड वंडाईआ। धरत मात दी सुण पुकार, ब्रह्मण्ड होए हलकाईआ। सति पुरख निरँजण पावे सार, घर सत्तवें वेख वखाईआ। शब्द सुनेहड़ा देवे साची धार, दर छेवां खुल्हाईआ। पवण स्वामी कर त्यार, पंचम बूहा लाहीआ। चौथे घर एका धार, शब्द जोती पवणी मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया तत्त विचार, प्रभ साची बणत बणाईआ। ब्रह्मा शिव कर आकार, साची सेवा लाईआ। आप आपणा रूप अपार, विष्नूं भेख वटाईआ। जोत सरूप सर्ब पसार, देवे शब्द जणाईआ। आपे वस्सया हो हो बाहर, आपे विच समाईआ। आदि अन्ता एकँकार, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, दिस किसे ना आईआ। हरि रचना जुग चार, शब्द जणाईआ। त्रैगुण पाए सार, तत्त तत्ती रिहा उपाईआ। लक्ख चुरासी बन्न्हे धार, धरती उप्पर जल टिकाईआ। पुरीआं लोआं पावे सार, आकाश प्रकाश जोत निरँकार, हर घट में रिहा समाईआ। दासन दास हरि निरँकार। गुरमुखां अन्तिम पावे सार। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। प्रगट होया धुर दरगाही साचा माली करे कराए चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आपे जाणे आपणी धार। हरि रचना

७७१ जुग चार, कलिजुग वेलया। भगत भगवन्ती साची धार, अचरज खेल प्रभू कलि खेलया। रंग बसंत तन श्रृंगार, काया ७७१

०५ चोले सोलां सोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, अदि अन्त कदे ना ०५

डोल्लया। हरि रचना जुग चार, कलिजुग भेख वटाया। शब्द दमामा अपर अपार, सृष्ट सबाई वेख आप वजाया। लोआं पुरीआं आप सुनार, सुनणेहार आप अख्वाया। गोबिन्द गायण गीत अपार, सोहँ साची रीत चलाया। पद अमरा पायण गुरसिख साचे संत मुरार, हरि हिरदे चीत वसाया। आप वखाए दर सच्चा दरबार, पतित पुनीत बणाया। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, कलिजुग रीत वखाया। पहले वेख पंचम धाड़, हाहाकार कराया। दूजे माया ममता आड़, जीव जन्त फिरे हलकाया। तीजे नौ अठारां रही साड़, उप्पर नीचे फिरे हलकाया। चौथे घर करे विचार, सति सतिवादी डेरा लाया। पंचम खोल्हे इक्क किवाड़, पवण शब्दी जोती मेल मिलाया। छेवें घड़या आपे घाड़, हरि शब्दी नाद वजाया। सत्तवें मेला पुरख ब्रह्माद, पारब्रह्म समाया। अठवें अट्ठां तत्तां वाद विवाद, मति बुद्धी मन फिराया। नौवें नौ दर वेखे कवण पुरख अबिनाशी रिहा अराध, रसना हरि गुण गाया। दर घर दसवें सदा सदा रहे विस्माद, शब्द सिँघासण इक्क विछाया। आपे बैठा आदि जुगादि, जुग जुग बणत बणाया। संत सुहेले रहे अराध, प्रगट होए दरस दिखाया। इक्क वजाए साचा नाद, सोहँ नाउँ धराया। सुणे पुकार

हरि ब्रह्माद, थांउँ थाँईं दए दुहाया। गुरमुखां बेड़ा रिहा बांध आपणे कंध उठाया। भाग लगाया दर दरबार, करोड़ छिआनवें दए लटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, हरि साचे रूप समाया। हरि रचना जुग चार, कलिजुग काल परवानया। देवे वर पुरख करतार, सच शब्द जगत निशानया। साची धारा शब्द कटार, फड़ाए हथ्थ बली बलवानया। अन्तिम मारे वारो वार, जोधा सूर नौजवानया। जीआं जन्तां करे ख़बरदार, सोहँ तीर तिक्खी कानया। नाता तुटे मीत मुरार, कलिजुग मेटे अन्त निशानया। प्रगट जोती निहकलंक नरायण नर अवतार, करे प्रकाश कोटन भानया। गुरमुखां सद होया दास, फड़ तारे वड वड कर मेहरबानयां। प्रभ मिलण दी रक्खी आस, बीस बीसे एह निशानयां। नूरो नूर जोत प्रकाश शब्द झुलाए पवण मसाणयां। लक्ख चुरासी काया मण्डल पाए रास, ना कोई जाणे जगत वड विदवानयां। वरते वरतावे पृथ्वी आकाश, मेट मिटाए जीव शैतानयां। गुरमुखां लेखे लाए स्वास स्वास, आत्म रिड़के वांग मधाणयां। लक्ख चुरासी होणी नास, कोई ना देवे किसे पाणीआ। प्रगट होया शाहो शाबाश, इक्क पढ़ाए साची बाणीआ। ना कोई खाए मदिरा मास, धुर दरगाही इक्क फ़रमाणया। निझ घर आत्म रक्खे वास, गुरचरन प्रीती विटहु जन कुरबानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, दस्से सच निशानीआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग खुशी मनाईआ। साचा मेला मुहम्मदी यार, सदी चौधवी आईआ। ईसा मूसा हो त्यार, प्रभ साचा संग निभाईआ। सम्मत अठारां बन्ह्े धार, एका डोले पाईआ। सम्मत उनीं लाए पार, डूंघी धार पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, साचा भूप समाईआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग वेख्या। सतिजुग साचा वेख द्वार, प्रभ धारे जोती भेख्या। दर घर एका अपर अपार, नेत्र लोचन आपे पेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, लिखणहारा लेखिआ। हरि रचना जुग चार, जुग जुग शब्द उपन्नया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, कोई किसे ना दिसे बन्न्ह्या। गुर पीर रहे विचार, घर घर भरया एका जनया। अन्तिम पैणी डाहढी मार, तन मन्दिर लग्गणी सन्न्ह्या। प्रगट होए निहकलंकी नर अवतार, लक्ख चुरासी देवे डंन्ह्िआ। शब्द डंकी अपर अपार, आप उपाए हरि नर नार, साचा चढ़ाए एका चन्नया। गुरमुख साचे उतरे पार, आपे बख्शे चरन प्यार, प्रभ बेड़ा अन्तिम बन्न्ह्या। लोआं पुरीआं एका धार, देवी देवत कर त्यार, लोकमाती पुरख बिधाती देवे दाती, सतिजुग साचा जंम्मया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आप आपे अन्दर मन्नया। हरि रचना जुग चार, जुग पलटांयदा। जुग जुग बन्ने धार, मनमुख मेट मिटांयदा। छत्ती छत्ती उतरे पार, नौ चार चार नौ इक्क विहार, आपे वेखे

७७२
०५

नगर गराउँ महल्ल अटल शहर अपार। कवण उठाए फड़ फड़ बाहों, होए सहाई अन्दर बाहर। लेखा चुक्के थांउँ थाँईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, चाढ़े रंग अपार। कलिजुग वंड वंडावण आया, प्रभ कन्त अन्तिम वारी। ब्रह्मण्ड खेल खिलावण आया, फड़ शब्द चण्ड कटारी। जेरज अंड मिटावण आया, उत्भज सेत्ज पावे सारी। मनमुखां कंड वढावण आया, लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रंग रंगावण आया, बण बण शब्द ललारी। हरि रचनां जुग चार, कलिजुग अन्त कराईआ। गुरमुखां पावे सार, लेखा लहिणा आप चुकाईआ। एका मंगे चरन प्यार, शब्द भिच्छया झोली पाईआ। आपे सांझा मीत मुरार, नैण मुंदारा हरि रघुराईआ। विसर ना जाए विच संसार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख साचे रहणा ख़बरदार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। आपे घड़े भन्नणहार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। छप्पर छन्न वसे बाहर, उच्च महल्ल अटल कोए दिस ना आईआ। गोबिन्द काया नगर अपार, चार द्वारी कोई दिस ना आईआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग अन्तिम धंदया। हरि वेखे खेल अपार विच संसार, प्रभ साजन खाकी बन्दया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, आप उठाए राजन राज आत्म अंध्या। सम्मत तेरां बन्ने धार, वाली हिन्द रहणा ख़बरदार, मदिरा मास तजाउँणा गन्दया। सम्मत चौदां चौदां आप विचार, गुरमुखां चरन छुहाए द्वार, एका इकी पाए पहली वार, आत्म घर उपजाए परमानंदया। आपे वेखे वारो वार, गुर संगत रहणा मात त्यार, प्रभ दर दर घर घर भरदा फिरे भण्डार, लेखा लेख मिटाए भागां मंदया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, हरि शब्द रंगीले रंदे रंदया। हरि रचना जुग चार आप रचाईआ। गुरमुख विरला मात बचणा, कलिजुग लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। जूठ झूठ नौ दर पंज तत्त घर घर खाली नच्चणा, साचा नाम कोई दिस ना आईआ। गुर पूरे शब्द वाक गुरमुख विरले आत्म बचना, मनमुख देण दुहाईआ। काया माटी भाण्डा कच्चना, अन्तिम भन्ने भन्न वखाईआ। सम्मत चौदां गुरमुखां देवण आए दच्छणा, इक्क नरेल हथ्थ रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं आपे कच्छणा, लक्ख चुरासी गेड़ मिटाईआ। शब्द दुआरे बहि बहि हस्सणा, प्रभ खेवट खेट जगत मलाहीआ। गुर चरन दुआरे साचे वसणा, साचा मीत पिता पूत अख्वाईआ। मिटे रैण अन्धेरी कलिजुग मस्सणा, मदिरा मास रसन तजाईआ। आत्म जोती तेज प्रकाश रवि रवि ससिना, हरि साचा रिहा कराईआ। वेख वखाए पृथ्वी आकाश अकसना, अप तेज़ वाए नाल रलाईआ। सृष्ट सबाई आपे मथना, मथणहार अख्वाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे रथना, सोहँ रथ चलाईआ। लक्ख चुरासी पाए नत्थना, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग चलाए आपणी कथना, अकथ कथी

ना जाईआ। सर्बकला आपे समरथना, कलिजुग अन्तिम भेख वटाईआ। गुरमुख छाछ विरोले मक्खणा, लक्ख चुरासी पाई फाहीआ। वेले अन्त किसे ना रक्खणा, जमदूतां हथ्थ फड़ाईआ। गुरमुखां लाज रखाए चरन लगाया मस्तक मथना, धूढ़ी खाक रमाईआ। हिरदे अन्दर हरि हरि वसणा, आत्म सेजा आण लाईआ। एका राह साचा दसणा, शब्द नेज़ा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, कंचन गढ़ सुहाईआ। हरि रचना जुग चार, कलिजुग वेख वखानया। हरि शब्दी पावे सार, पकड़ उठाए राजे राणयां। देवे शब्द सच्चा हुलार, जोधा सूर बली बलवानयां। अन्तिम मारे डाहडी मार, खिच ल्याए विच मैदानयां। सम्मत चौदां गुरमुख धार, गुरसिख करे दर परवानयां। ना भुल्लणा विच संसार, प्रगट होए हरि वाली दो जहानयां। मनमुखां देवे दुरकार, राज राजानां दर फिरानयां। गुरमुख महिंमा अपर अपार, ब्रह्मा शिव मुख छुपानयां। सिँघ पाल बैठा हो त्यार, लेखा लिखे वेद विदानयां। सतिजुग बंनी साची धार, मेल मिलाए श्री भगवानयां। एका नेत्र रिहा उग्घाड़, अमृत आवे धुर दी बाणीआं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे जगत वर, चौदां चौदां लोक करे दर परवानयां। चौदां लोक काया मट, साचा हट्ट खुल्हाईआ। गुरमुख पहनाए तन पट, नाम रंगीला रंग रगाईआ। प्रगट होए घट दासन दरस दिखाईआ। गुरमुख तेरा दर द्वार आप बणाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ, पुरख अबिनाशी चरन टिकाईआ। दर्शन पाए नठ्ठ नठ्ठ, एका इक्की एक कराईआ। आत्म अन्दर गेड़े लट्ठ, आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत विकारा पए भट्ठ, जोती अग्नी लाईआ। झूठा मन्दिर जाए ढठ्ठ, काया बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन रूप, आपणा रूप वटाईआ। हरि रचना जुग चार, कन्त कन्तूहलया। हरि रचना जुग चार, गुरमुखां कर्म रिहा विचार, प्रभ साजण दूलो दूलया। भाण्डा भरम रिहा निवार, जो दर आए भुल्लया। शब्द कराए तन श्रृंगार, तन मन हरया फूलया। वणज कराए इक्क वापार, जिस जन शब्द पंघूड़ा साचा झूलया। दो दो लिखी दोहरी धार, आत्म सखी विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, इक्क सुहाए साचा घर, मिले मेल कन्त कन्तूहलया। सम्मत चौदां साचे हाट, एका नाम विकावणा। गुरमुख वसेरा आत्म घाट, पार किनार करावणा। दीपक जोती जगे लिलाट, अन्ध अन्धेर मिटावणा। लेख चुकाए पूजा पाठ, एका शब्द सुणावणा। अमृत धारा मारे ठाठ, एका सर वहावणा। शब्द रखाहे साचा हाठ, धीरज सति संतोख दुवावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां चौदां लोक, गुरमुख सुणाए शब्द शलोक, एका घर वसावणा। सम्मत पन्दरां पन्ध न्यारा, आपणा आप रखांयदा। लोआं पुरीआं पार किनारा, बत्ती दन्द ना कोई पांयदा। जग जहान धुँदूकारा,

गगन पतालां आप सुहांयदा। प्रकाश अकाश अपर अपारा, बेअन्त बेअन्त सदांयदा। जुगो जुग लै अवतारा, लोकमात धाम सुहांयदा। घर साचे वस्सया नर निरँकारा, आवण जावण कोए भेव ना पांयदा। शब्द सरूपी साची धारा। लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्मत चौदां बन्ने धारा, आप आपणा भेव छुपांयदा। सम्मत पन्दरां वेखे अन्दरां, कलिजुग मुख छुपाईआ। दरस दिखाए डूंघी कन्दरां, आत्म तोड़े वज्जा जन्दरा, निउँ निउँ अन्दर जाईआ। लक्ख चुरासी भौंदे बन्दरा, दिस किसे ना आईआ। इक्क सुहाए काया मन्दिरा, शब्द रंगीला पलँघ विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाल कंचन सूहा पीला नीला सति सफैदी काला धारा, सति पुरख निरँजण साचा काहन सति सतिवादी बोध अगाधी ब्रह्म ब्रह्मादी रंग रंगाईआ। जाणे भेव जुगा जुगादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया कंचन गढ़, सद सद विच समाईआ। हरि रचना जुग चार, जगत दवाल्या। हरि रचना जुग चार, कलिजुग अन्तिम होए बेहालया। हरि रचना जुग चार, ना कोई दिसे सुहावा तालया। हरि रचना जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सभ थाँईं करे खालीआ। सम्मत पन्दरां पन्ध मुकावणा। तीर्थ गंगा यात्रा, आत्म अन्ध अज्ञान गंवावणा। शब्द पहनाउँणा साचा गात्रा, इक्क ध्यान जगत करावणा। सोहँ जणाउँणी साची मात्रा, पारब्रह्म कलि भेव छुपावणा। चरन जोड़ साचा नातरा, गुरमुख साचा संग रलावणा। चरन बंधाए साचा नातरा, गुर गोबिन्द एका धाम सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किसे हथ्थ ना आए वेद शास्त्रा। पन्दरां पन्ध मुका, पन्ध पुवावणा। साचा लेखा लेख लिखा, सृष्ट भुवावणा। राजा राणा मात रुला, तख्तों लाहवणा। भेखाधारी भेख वटा, गंगा गोदावरी चरन छुहावणा। आप आपणा रंग वटा, पंडत काशी आप उठावणा। वेख वखाणे थांउँ थाँ, सार पासा बाजी लावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव छुपावणा। प्राग अयुध्या जाए घाट, त्रैबेणी संगम वेख वखाईआ। सम्मत पन्दरां सभ दर जाणे पाट, जोती लाट इक्क रुशनाईआ। कोई ना दिसे गऊ घाट, सूरज जल ना कोई चढ़ाईआ। नेती धोती जाए पाट, मस्तक तिलक ना कोई लगाईआ। वणज वणजारा वेखे साचे हाट, पट पटणे चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप जाए दर दर जगत मंज़ल कट्ट वखाईआ। आपे जाणे दर दर वाली। घर घर भेख पखण्डा, करदा जाए मन्दिर खाली। हथ्थ फड़या शब्द डण्डा, पुरख अबिनाशी करे रखवाली। गुर गोबिन्दा तोड़े घमंडा, अन्तिम चले अवल्लड़ी चाली। मेट मिटाए भेख पखण्डा, साधां संतां देंदा जाए शब्द दलाली। जो वेखे आत्म रंडा, फड़ फड़ उठाए जगत अकाली। शब्द जणाए विच ब्रह्मण्डा, दीपक जोती जगदी वेखे मस्तक थाली। कलिजुग अन्तिम पार कन्ढा, पुरख अबिनाशी अन्तिम

अन्त बणया हाली। भारत खण्ड वंडाई वंडा, सम्मत पन्दरां हक्क हलाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुखां वेख फल काया डाली। चारे कुन्टां पन्दरां पन्ध पाया गुरमीते, गोबिन्द संग रलाया। शब्द जणाए काया चीते, चेतन्न मीत रखाया। एका मेला पतित पुनीते, पूत पूत समाया। सम्मत पन्दरां फिर फिर फरीते, भारत खण्डी दए हिलाया। पुरख अबिनाशी तेरी भीते, टेडी डण्डी रिहा चलाया। इक्क हदीस जगत मसीते, अल्ला हू हू नाअरा लाया। एका लाए शब्द पलीते, गुम्बद काअबा दए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नरायण बदर नाथ कदार, वेखे वेख वखाया। जगन्नाथ, कलिजुग साचा मेला आपणा आप वखावणा। सगल वसूरा जाए लाथ, पहाड़ी दामन चमके कामन, रूप अनूप समावणा। चरन छुहाए पतित पावन, पंडतां पांधिआं आपणा दामन फड़ावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शमशी रंग रंगावणा। जगत बंगाली आप बण, माया पकड़े डस्सणी नाग। वेखे खेल जगत सभ, घर घर लाए बुझाए आग। आपे प्रगट होए झब्ब, आपे जोत छुपाए चिराग। आपे अमृत वहाए कँवल नभ, आप तड़पाए दो दो आब। लहिणा देण चुकाए सभ, आपे जाणे हिसाब किताब। गुर संगत चरन दुआरे जाए फब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन घोड़े दए रकाब।

★ १६ हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल चाह दे वास्ते शब्द उचारया ★

हरि खुमारी नाम जगत अमोल है। ना कोई लग्गे तन बीमारी, प्रभ वसे सदा कोल है। रस रसना फिरे हलकारी, मन मती रिहा विचोल है। गुर पूरे सदा बलिहारी, जुग जुग तोले पूरा तोल है। आपे बख्शे बख्शणहारी, जन भगतां करे चोहल है। चरन प्रीती चाह प्यारी, सद वसे गुरमुख कोल है। काया हाडी अपर अपारी, अमृत आत्म भरया साचा डोल, है। अग्नी जोती लाए भारी, नेत्र नीर रिहा खोल्ह है। नाम रस मिट्ठा अपर अपारी, हर हिरदे पए आपे अन्दर मौल है। गुरमुखां आप आप प्याए कर प्यारी, शब्द रलाए पड़दे खोल्ह है। मानस जन्म ना जाए हारी, गुरमुख रहे सदा अडोल है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द जणाए बोल है। हरिभगत आधार अमृत धारया। प्रभ साचे आप विचार, साचा राह वखा ल्या। आपे देवे देवणहार, दूसर हथ्थ किसे ना आ रिहा। सम्मत चौदां कर त्यार, पहली चेत्र हथ्थ उठा ल्या। गुरमुखां देवे घर घर जाए पहली वार, बीस इक्कीसे मेल मिला रिहा। साचा मेला सच सरकार, नावां धुर दरगाही ला ल्या। इक्क कराए वणज वपार, झूठा नाम जगत मिटा ल्या। गुरमुख साचे शब्द प्यार, रसना चोग चुगा

ल्या। जगत तृष्ना देवे मार, जिस हरि चरनी चित ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत जाम पया ल्या। अमृत आत्म जाम प्याए, कर कर आपणा हल्ला। गुरमुखां साचा नाम जपाए, आप फड़ाए आपणा पल्ला। साचा पल्ले दाम बन्ह्राए, नाम रखाए निहचल धाम अटला। जगत विकारा रहण ना पाए, तृष्न मिटाए काया खला। निर्मल जोती नूर कराए, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला। कलिजुग रसन होए हलकाए, प्रभ नाउँ गाए हरि मिले इक्क इकल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा अन्त वसावण आया काया सच महल्ला। काया महल्ला सच्चा घर बाहर, प्रभ साची वस्त विच टिकाईआ। भरमे भुल्लया जीव गंवार, विच नशियां चित्त लगाईआ। प्रभ पावणहारा सार, जिस तेरी बणत बणाईआ। आपे मारे आपे लए ज्विाल, वैद हकीमां कोए ना लए बचाईआ। प्रभ देवणवाला इक्क अधार, हउमे तृष्ना रोग मिटाईआ। सम्मत बारां कीता ख़बरदार, गुर संगत नींह रखाईआ। माया भुल्ले अन्ध अंध्यार, भाणा हरि मूल ना भाईआ। बीता साल इक्क सदी हज़ार, लेखा लिख्त ना राईआ। सम्मत तेरां कर विचार, गुर संगत रिहा सुणाईआ। जिस जन अन्तिम उतरना पार, हरि भाणा सीस टिकाईआ। दोवें जोड़ करो निमस्कार, जगत तृष्ना चाह मिटाईआ। प्रभ बेड़ा बन्ह्णहार, सांतक सीतल सति वरताईआ। सद खुल्ह्ा रक्खे किवाड़, दिवस रैण दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी लग्गे अग्ग, गुरमुख चरनां हेठ छुपाईआ। कलिजुग अग्नी अग्ग, जगत जलांयदा। मनमुख पछाणे आप पकड़ शाहरग, ना कोए छुडांयदा। गुरमुखां बन्ह्रे हथ्थीं साचा तग, एका चाह चरन प्रीत रखांयदा। धर्म राए दर मनमुखां किसे सीस ना अन्तिम दिसे पग्ग, खाली हथ्थीं हाहाकार करांयदा। गुर चरनी जो गया लग्ग, मनमति हरि दुरकांयदा। हरि शब्द लगाए मुख साचा सग, साचा सगन मनांयदा। मिले वड्याई अन्तिम जग, जो आपणा घर सुहांयदा। सम्मत तेरां पुरख अबिनाशी एका जोती रही जग, ना पर्दा कोई पांयदा। गुरमुखां घर बुझाई अग्ग, बेमुखां घर लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे भाणे विच समांयदा। होवे सिक्ख परवान, तुटा जग नातया। एका साल वेख निशान, प्रभ आपे पिता मातया। गुर मन्दिर सच जहान, हरि मेला कमलापातया। गुरमुख साचे किरत कमाण, मिटे अन्धेरी रातया। अमृत आत्म पीण खाण, उत्तम होए जातया। साचा मज़्हब दीन ईमान, गुरज चरनी एका नातया। ना कोई हिन्दू मुस्लमान, ऊँचां नीचां पुच्छे वातया। प्रभ फड़ शब्द किरपान, होए सहाई कमलापातया। गोबिन्द रसना गुरमुख साचे गाण, ना आवे मात घाटया। दरस दिखाए दर घर साचे आण, एका शब्द विकाए साचा हाटया। गुर संगत करना इक्क प्यारी, रसना लोभ तजाईआ। प्रभ गुर संगत तेरा प्रेम दाज रक्खे शब्द पटारी, ना कोए चोर चुराईआ। पावे सार

अन्तर वारी, धर्म राए मुख छुपाईआ। ल्याए बिबाण सच्चा दरबारी, गुरमुख साचे लए बिठाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपारी, दोवें हथ्थीं रिहा उठाईआ। सिँघ पाल उत्ते चढ़या चुबारी, संगत रिहा जगाईआ। जगत जगदीशे मिली सिक्दारी, घर साचा इक्क सुहाईआ। गुर संगत तेरी आई वारी, प्रभ नेत्र नीर वहाईआ। ना भुल्लणा बचन बण हँकारी, प्रभ साचा दए दुहाईआ। अन्तिम बेड़ा बन्न्हे कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, गुर संगत तेरी भेंट आपणा सीस दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क प्रीती जगत रीती साची चाह रखाईआ। प्रीत लगाई सच घर, साचा नेंह निभावणा। ना जन्मे ना जाए मर, जिस जन दर्शन पावणा। आवण जावण चुक्के डर, प्रभ साची गोद उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां हुक्म सुणावणा। रसना चाह जो गुरसिख लाए, दर दरबार ना आए, मुख काला मात कराए, गुर संगत धक्के लाईआ। नौ दरवाजे फिरे हलकाए, गुर पीर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां इक्क लकीर लगाईआ। तेरां तेरां तेरी धार, नानक साचे कंडे तुलाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रभ साचे डण्डे बोदी लाईआ। कलिजुग खाणी बाणी पाए वंडे, नाम वट्टे नाल लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका तोला मात अख्वाईआ। एका तोला तोलणहारा, धुर दरगाही मापा। जुगो जुग गुर शब्दी बाणी बोलणहारा, आपे जाणे आपणा जापा। मात पाताल अकास पर्दे खोल्हहारा, मेटण आया तीनो तापा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप कराए आपणा वड प्रतापा। नानक तेरी धार, तेरां तेरां आईआ। सम्मत तेरां निहकलंकी अवतार, हेरा फेरा जगत मुकाईआ। शब्द डंकी अपर अपार, भरमां डेरा ढाहीआ। इक्क सुहाए बंक द्वार, जोती जोत सवाईआ। गुरमुख साचे रसन उचार, राह साचा रिहा वखाईआ। गुर पूरे होवे चरन अधिकार, दूजी आस मुकाईआ। एका शब्द तन प्यार, हरि मन्दिर वज्जे वधाईआ। ताल तलवाड़ा अपर अपार, शब्द अखाड़ा रिहा लगाईआ। बहत्तर नाड़ी जोत उज्यार, सच प्रकाश कराईआ। आपे बख्शणहार, लक्ख चुरासी घूँघट लाहीआ। तन बस्त्र पहने इक्क अपार, शब्द दुशाला नाउँ रखाईआ। आपे गेड़े देवे चार दिवार, चारे कूटां वेख वखाईआ। दहि दिशा प्रभ पावे सार, आपणा कर्म कमाईआ। दोवें चरनां रिहा हुलार, अग्गे पिच्छे रिहा लटकाईआ। पहलां ब्रह्मे पाए भार, सज्जे हेठ दबाईआ। दूजा शिव करे ख़बरदार, जग जगदीसा रिहा कराईआ। तीजे पुरी इन्द्र दए हुलार, इन्द्र इन्द्रासन चरन छुहाईआ। मातलोक प्रभ कर विचार, शब्द सिँघासण इक्क विछाईआ। आपे बैठ सच्ची सरकार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्द आपे बख्शे बख्शणहार, प्रभ शब्द ताल रखाईआ। छत्ती रागां वस्सया बाहर, भेव कोई ना पाईआ। ज्ञानी ध्यानी

होए मुरदार, प्रभ गोबिन्द गोबिन्द धार अलाईआ। गुर संगत करे प्यार, हरि दाता आप मिलाईआ। सदा सुणे सुणाए पुकार, फड़ फड़ बन्ने लाईआ। दर आए तजो हँकार, गुर चरनी सीस निवाईआ। सिँघ सूरत मारी मार, उठ गया वाहो दाहीआ। गुर संगत ना करे निमस्कार, प्रभ साचा हुक्म सुणाईआ। प्रगट होए निहकलंक नर अवतार, सिँघ प्रेम रहणा ख़बरदार, दो जहान पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। सिँघ पूरन की करे विचारा, प्रभ जामा जोत उलटाया ए। आपे वस्सया विच निरँकारा, कोटन कोट फिरे हलकाया ए। हथ्थ फड़ाए शब्द खण्डा दो धारा, साची जोत जगाया ए। इक्क सुहाए बंक दुआरा, सम्बल नगरी नाम रखाया ए। बैठा सिँघ शेर शेर दलेरा, अग्गे कोए रहण ना पाया ए। जो जन होए चरन भिखारा, प्रभ देवे साचा ताज सीस टिकाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे सभ तों बाहरा ए। गुर संगत धन्न कमाई, धरत सुहाईआ। सम्बल नगरी वज्जी वधाई, सुणे लोकाईआ। ब्रह्मा शिव वेखण आए चांईं चांईं, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा संग रलाईआ। धर्म राए आए कर कर लंमीआं बाहीं, दोए जोड़ खुशी मनाईआ। चित्रगुप्त कलम उठाई, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। लाड़ी मौत रही शरमाई, नौ दुआरे बाहर दिखाईआ। कलिजुग देवे पया दुहाई, ना कोई होवे अन्त सहाईआ। प्रगट जोत हरि रघुराई, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। मारी जाए वाहो दाही, पुरीआं लोआं रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत दरस दिखाए घर बैठे थांउँ थाँईंआ। गुर संगत धाम सुहाया। आए चरन हज़ूरे, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। करे कारज पूरे, बचन अगम्मी एह सुणाया। जगत नाता दस्सण कूड़े, दम दमा स्वास चलाया। शब्द पहनाए हथ्थीं चूड़े, आपणे कम्मां आपे लाया। काया रंग चढ़ाए गूढ़े, साचा वेला इक्क सुहाया। आपणी बख्शे चरन धूढ़े, गुर संगत मेल मिलाया। चतुर सुजान बणाए मूर्ख मूढ़े, इक्क ध्यान हरि भगवान आपणा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बरखा फूलण लाया। संगत सद बलिहार, हरि बलहारना। आप उपजाए वारो वार, गुर संगत कर प्यार, सतिजुग बन्ने तेरी धार, छोटे लाल करे सलवारना। धरतमात पाणी रही वार, मिलण आए साचे यार, वेख लाड़ा कन्त भंतार, उच्ची सेजे बैठा चरन पसार, दोवें हथ्थीं मारे तालीआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, लक्ख चुरासी होए ख्वार, लोआं पुरीआं मारे मार, पत्त रहण ना देवे किसे डालीआ। गुर संगत सांझा मीत मुरार, प्रगट होए विच संसार, जोत जगाए अगम्मी अपार, मस्तक साची थालीआ। पूर्ब कर्मां रिहा विचार, लहिणा देणा करज उतार, बैठ तख्त साची सरकार, कुकर्मी मंगे साचा हालीआ। शब्द खज़ाना अपर अपार, हरि भगवन्ता देवणहार, अट्ठे पहर ना होए खालीआ। गुर संगत मंगे वारो वार, प्रभ

आत्म भरे भण्डार, चले जगत अवल्लड़ी चालीआ। बणे आप सच्चा दलाल, गुरमुख नाल रलाए लाल, पार कराए घटा कालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे जगत वर, सद रहे आप प्रितपालीआ। गुर संगत हरि गुण गाया, गाया गहर गम्भीर। दर घर साचा इक्क सुहाया, होए शांत सरीर। आप आपणा दर्शन पाया, हउमे चुक्की पीड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत बंनण आया बीड़। गुर संगत तेरा बेड़ा, प्रभ अन्तिम कंध उठांयदा। अग्गे दीसे राह भीड़ा, कोए ना पार कराया। सभ दी तुट्टे हड्डी रीड़ा, ना कोई सीस उठांयदा। हउमे लग्गा अन्दर कीड़ा, दिवस रैण खांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख लेखे लाए जीअड़ा, दर दुआरे दर्शन पांयदा। दर्शन पाया नैण मुँधारा। नैणी कज्जल पाईए, दर घर मिल्या इक्क दुआरा। लग्गा भाग देस माझे, प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारा। चिट्टे अस्व चढ़या ताजे, गुरमुख पाए घर घर सारा। पुरख अबिनाशी गरीब निवाजे, देंदा जाए नाम भण्डारा। सतिजुग साची साजणा साजे, कोए ना जाणे गंवारा। मनमुख जीवां आए लाजे, गुर संगत मंगे बण भिखारा। प्रभ देवे शब्द दाजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे नाम वर, वेले अन्तिम पड़दे काजे। गुर संगत प्रभ विदा कराए, साची डोली पा के। सिध्धा राह इक्क वखाए, काया चोली रंग चढ़ा के। नौ निधां ना रोड़ा अटकाऐ, अठारां भन्न जाए धा के। आपणी बिधा आप बणाए, शब्द चढ़ाए घोड़े बांके। हरिजन तन मन आत्म बिद्धा, लग्गा तीर निशाना हरि भगवाना एका नाउँ नांके। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे भगत वर, जगत तृष्ना मूल चुका के। जगत तृष्ना कट्ट, भगत वड्याईआ। इक्क वखाए साचा हट, जगत जुदाईआ। हरिजन साचा लाहा लैण खट्ट, गुर चरन सच्ची शरनाईआ। नाता तुट्टे काया मट्ट, प्रभ सुरती शब्द मिलाईआ। दर दरवाजे वेखे तीर्थ तट्ट, चारो कुन्ट रहे दुहाईआ। एका जोती घर साचे जगे लट लट, शब्द सिँघासण डगमगाईआ। दुरमति मैल दर दुआरे कट्ट, निर्मल जीअ कराईआ। शब्द पहनाए तन साचा पट, लज पति आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे शब्द वर, मुख सगन शब्द लगाईआ। मुख सगन शब्द छुहारा लाया, हरि साचे दीन दयाले। जगत विहारा आप कराया, तोड़े जगत जंजाले। साची धारा शब्द चलाया, सदा करे प्रितपाले। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्यारा इक्क रखाया, गुरमुख निभ जाए नाले। जगत प्रीती चरन प्यार, नित नित आप रखांयदा। जुग जुग हरि लै अवतार, हरि हरि संत तरांयदा। करे खेल अपर अपार, भाणा भाणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराए

७८० ०५

आपणे मेले, दर दरबारे हरि निरँकारे सच जैकार बुलांयदा। हरिसंगत भेंट जगदीस सीस, आपणा आप वारया। वेखे खेल बीस इक्कीस, नूरी जोत कर उज्यारया। सृष्ट सबाई गाए दन्द बतीस, सोहँ होवे जै जैकारया। चार वरन रखाए इक्क हदीस, साचा मार्ग ला रिहा। गुर संगत करे ना कोई रीस, गुर पूरा विच समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्नां लोकां चरनां हेठ झसा रिहा। गुरमुखां देवे माण, हरि अग्गे सीस निवाईआ। आपे बैठ बण नादान, गुरसिख साची सेवा लाईआ। मंगे एका वर वरदान, भुल्ल कोए ना जाईआ। खेले खेल श्री भगवान, मुल्ल कोए ना लाईआ। देवण आया एका दान, अन्तिम चिन्दया दए मिटाईआ। साचा बख्शे चरन ध्यान, गुर संगत संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रीती आप बणाईआ। आपणी रीत आप चलाई, करया कलि प्यारे। गुरमुख साचे मात जगाई, सीस बंधाए हरि दस्तारे। गुर पूरा मात आप अख्वाई, दिवस रैण अन्दर वसे, कदे ना होवे बाहरे। गुर संगत तेरी धन्न कमाई, गुर गोबिन्द लगाया आपणे पहरे। दर घर साचे दए वधाई, गुर संगत तेरा माण गुरसिख तेरी दस्तारे। आपणी छड्ड बैठा चतुराई, गुरमुखां आत्म रिहा प्रनाई, हरि साचा सुलाहकारे। ना होवे कदे जुदाई, चरन प्रीती रिहा निभाई, अट्ठे पहर ख़बरदारे। चोरां यारां रिहा हटाई, अट्ठे पहर वेखे थांउँ थाँईं, लुकया कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ दर्शन देवे इक्क वर, दर घर आउँणा वाहो दाहीआ। सिँघ दर्शन तेरी जुड़ गई जोड़ी, प्रभ साचे घोड़ चढ़ाईआ। पहली वेरां दर घर आया आपे बौहड़ी, तेरी तोड़ निभाईआ। नौ दुआरे कढ्ढे वासना खोटी, आपणी झोली पाईआ। गुर संगत वेखणा जिस जमाल, दिवस रैण कराईआ। लिक्ख लिक्ख भरया हरि भण्डार, अतोल तोट रहे ना राईआ। आपे चढ़या दो जहान, कोई लाह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्नां लोकां करे कुड़माईआ। आपे पुरख सुजान स्वामी, आपे गुणी गहीरा। आपे देवे जिया दान निहकामी, कटे हउमे पीड़ा। रैण अन्धेरी मिटाई, लेखे होए काया जीअड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां बन्ने बेड़ा। तिन्न लोक प्रभ धार, जुग जुग आप चलाईआ। आपे रिहा सर्ब पसार, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, धरतमात खुशी मनाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुखां होए सहाईआ। गल पाए फूलन हार, साची नारी वड्याईआ। आपे कन्त भतार, दर घर साचे रिहा कराईआ। ना कोई भुल्ले जीव गंवार, प्रभ रचन रचाईआ। मेटण आया धुँदूकार, साची जोत करे रुशनाईआ। मनमुखां मारे मार, गुरसिक्खां दए वड्याईआ। गुरसिख करे प्यार, साची सेव कमाईआ। गुणवन्ता हरि गुण विचार, अचरज खेल रचाईआ। साचे संतां करे प्यार, शब्द श्रृंगार तन कराईआ। जुग जुग जाणे आपणी

कार, गुरमुख आपे संग रखाईआ। लोकमात प्रभ पाए सार, लक्ख चुरासी तेरा यार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द सिक्दार बणाईआ। गुरमुख रहण ख़बरदार, पुरख अबिनाशी होए सहार, निहकलंक लए अवतार, शब्द डंक अपर अपार, तिन्नां रिहा वजाईआ। शब्द डंक वजावण आया, कलिजुग ताल अवल्ला। सतिजुग तन पहनावण आया, मातलोक वसाए चारे कुन्टां विच इक्क महल्ला। आप आपणा संग रलाया, नाल रलाया गोबिन्द डल्ला। माझे देश भाग लगावण आया, कर कर वल छल्ला। गुरमुख सोए जगावण आया, फड़ सोहँ साचा भल्ला। मनमुख जीवां मिटावण आया, जोती जामा कर कर हल्ला। गुर संगत दे मति समझावण आया, गुर शब्दी साचा रल्ला। एका तत्त समावण आया, होए सहाई जल थला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सद वसे निहचल धाम अटला। निहचल धाम प्रभ वसणहार, लोकमात कलि आया। सतिजुग राह प्रभ दसणहार, जुग जुग भेख वटाया। गुरमुखां हिरदे प्रभ वसणहार, हरि आपणी बणत लए बणाया। मनमुखां नूं झस्सण वाला, प्रभ डण्डा रिहा उठाया। लक्ख चुरासी पैरां हेठ रक्खण वाला, नंगी पैरीं सेव कमाया। गुरमुख साचे रक्खणहारा, अट्ठे पहर देवे पहरा, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, आवे जावे अन्दर बाहर गुप्त जाहरा। गुप्त जाहर प्रभ अभेद, जीव ना जाणे कोए। पंजवें अन्दर आसण लाया, शब्दी जोती होए। शब्द सिँघासण दए सजाया, उत्ते आप खलोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरा वस्सया घर, गुर पीर रहे ना कोए। गुर पीर रहण ना पाए, गुर संगत मन्नणा कहणा। हरि हरि दर्शन प्रभ चरन दुआरे, नेत्र लोचन नैणा। दिवस रैण प्रभ करे प्यारे, साचा साक सज्जण मात पित भाई भैणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सद वसे धाम न्यारे। गुर संगत धाम अवल्ले बहिणा। धाम अवल्ला सच तख़्त, हरि सुल्ताना आप बिराज्जया। लिखणहारा आपे लिख्त, आपे जाणे आपणा काज्जया। शब्द जणाए वाक भविख्त, भाग लगाए देस माज्झया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे दए वड्आया, सिर रक्खया सीस ताज्जया। ताज सीस जगदीस, गुरमुख हथ्थ बन्न्हाया। मस्तक टिक्का लाए बीस इक्कीस, पंचम रंग चढ़ाया। एका छत्र झुलाए हरि हरि सीस, लेखा लिखणहार अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुग बणत बणाया। गुरमुख तेरी सच सिर दस्तार, प्रभ साचे आप उठाईआ। आपे रक्खे विच संसार, सम्मत इक्की रंग चढ़ाईआ। सृष्ट सबाई करे प्यार, एका रंग रिहा रंगाईआ। चार वरनां मीत मुरार, साचे शब्द जणाईआ। चारों कुन्टां जै जैकार, दिल्ली तख़्त सुहाईआ। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, गुरमुखां दए वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्वी करे विहार, शब्द सुनेहड़ा दए घलाईआ। दो जहानां पावे

सार, लोआं पुरीआं धार बंधाईआ। पंज मुखी सीस अपार, गुरमुख सचे लए टिकाईआ। हरि फड़ शब्द कटार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची नींह आपे रिहा रखाईआ। सतिजुग साची नींह रखा के, हल्ला नाम करावणा। अमृत आत्म मींह बरसा के, प्रभ लोभ हँकार दूर करावणा। साढे तिन्न हथ्थ सीआं लेख मिटा के, गुरमुख साचे गोद उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी एका राज, शब्द सरूपी साचा ताज, आप आपणे सीस टिकावणा। शब्द सीस प्रभ ताज टिकाए, देवे धुर फ़रमाणा। धुर फ़रमाणा लेख लिखा के, सत्तां दीपां देवे ब्रह्म ज्ञाना। आप आपणा शब्द जणा के, राज राजाना बख्शे चरन ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क उडाए सच बिबाणा। सच बिबाणे आपे चढ़, डंक वजावणा। सुरती शब्दी लए फड़, शब्द डोर बंधावणा। आपे बैठे अन्दर वड़, दिस किसे ना आवणा। नौ खण्ड पृथ्वी साचा घाड़न घड़, सच सुनेहड़ा इक्क सुणावणा। पुरख अबिनाशी आपे लड़, काया गढ़ हँकारी आपे ढाहवणा। राजा राणा शब्दी फड़, निहकलंकी हुक्म सुणावणा। दूजा अक्खर कोई ना जाणा पढ़, सोहँ जाप जपावणा। शब्द गुर ना सीस ना धड़, हर घट आप टिकावणा। जोत सरूपी अगे खड़, दे मति जग समझावणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुर संगत तेरा मिल्या वर, साचे दस्तार टिकावणा। गुर संगत तेरा सिरोपा, कलिजुग अन्तिम पाया। लक्ख चुरासी कटे फाह ना सूझे थाँ, गुर चरनी चित लाया। वेले अन्तिम पकड़े बांह, साचा मीत अख्वाया। गुरमुख कोई ना करे नांह, प्रभ साचे हित्त वधाया। सद देवणहारा ठंडी छाँ, हाढ़ सतारां इन्द्र सेवा लाया। आपे बणया पिता माँ, गुरमुख साचे गोद उठाया। चारों कुन्ट उडणे कां, पंखी पसू कोए रहण ना पाया। ना कुछ पीणा ना कुछ खां, गुर संगत तेरा प्यार अधार रखाया। आपे बैठा हो हो नीवां, गुर संगत उप्पर सीस टिकाया। लेख चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीआं, साची दरगाह धाम सुहाया। गुरमुखां आत्म प्रेम रस प्रभ भर भर चूलीआं पीवण, तृष्ना रहे ना राया। पुरख अबिनाशी होया वस, गुर संगत सेवा आपे लाया। प्रेम निराला तीर मारे कस, गुर चरनी सीस झुकाया। राह साचा आपे रिहा दस्स, पड़दा विहला रहण ना पाया। बेमुख जाए नस्स, नौ दुआरे राह वखाया। जिस मिलणा दर घर साचे हस्स, दोए जोड़ परे सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे साचा वर, आपणा मूल चुकाया। गुर संगत तेरी दात, प्रभ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। आपे जाणों आपणी ज़ात, साची कुल मिले वड्याईआ। एका मेला कमलापात, साचा सईआ जगत सरनाईआ। साचा बीआ डाली पात, फल फुलवाड़ी आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतारां हाढ़ी गुर संगत तेरी जड़ लगाईआ। गुर संगत जड़ लगाए, मात आकाशया। भेख

पखण्डा रहण ना पाए, हरि वेखे जगत तमाशया। शब्द डण्डा हथ्थ उठाए, कलिजुग अग्गे अग्गे बहि बहि हास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे जगत वर, साचे मण्डल साची रास्सया। कलि कल्कि अवतार कला कल धारया। वेखे खेल जल थल की, जोती नूर कर अकारया। पावे भेव जीव जन की, शब्द डोर अपर अपारया। करे पछाण तन मन की, सुरती सुरत वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम दर आप खड़, लक्ख चुरासी वेख वखा रिहा। पंचम घर हरि अपार, हरि सुहाया। आपे बैठ सच्ची सरकार, त्रै त्रै मेल मिलाया। सत्तवें जोती कर अकार, छेवें शब्द धुन आपार, पंचम पवण रूप अधार, पंचम जोत सुहाया। आपे जाणे जानणहार, चौथा दर दए खुल्लाया। त्रैगुण माया कर त्यार, पंचम बैठा हुक्म सुणाया। पंचम पंचां दे प्यार, बीस पंज नाल रलाया। त्रै त्रै वेखे आप करतार, तिन्नां रूप वटाया। आप आपणी किरपा धार, लक्ख चुरासी दए उपाया। आपे पाले पालणहार, राजक रिजक रहीम अख्वाया। साची घालण घाले घालणहार, जुग जुग वेस करेंदा आया। पत्त डाली वेखे विच संसार, साचा माली आप अख्वाया। आपे खाली भरे भण्डार, भरनहार रघुराया। आपे लए महल्ल उसार, आपे जोती दए जगाया। आपे शब्द कराए जै जैकार, आपे रागां विच समाया। आपे हरि दए हुलार, वेद विदांता आप अख्वाया। आपे सुरसती करे प्यार, प्रेमी बीन इक्क वजाया। आपे जोगी जगत करे अधार, नारद मुन समझाया। आपे वसे अद्धविचकार, छत्ती रागां रिहा अल्लाया। आपे जोग जुगीशर नार, शिव सतीआं संग बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण त्रै त्रै वेखे तेरा रंग, पंचम दुआरा लँघ, दिस किसे ना आया। पंचम घर मता पकाया, लक्ख चुरासी उपावणी। चौथा घर इक्क वसाया, सुरत शब्द बेहावली। त्रैगुण माया माण दवाया, सृष्ट सबाई आप उपावणी। ब्रह्मा सेवा साची लाया, उत्पत रूप अख्वावणी। आप आपणा भेख वटाया, विष्नूं वेस करावणी। आपे नर नरेश अख्वाया, सभ देवे रिजक सबावणी। शिव शंकर फड़ के हुक्म जणाया, जो बणया सो ढाहवणी। सच वस्त प्रभ आपणे हथ्थ रखाया, त्रैगुण समावणी। त्रैगुण माया तृष्ना ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचावणी। पंचम घर दर दरवाज़े दर दहिलीज्जया। वेखे खेल गरीब निवाज़े, लक्ख चुरासी बीज बीज्जया। जीव जन्त जो साजण साजे, लेखा चुक्के लोक तीज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त हाढ़ सतारां रच्चया। सच घर सुल्तान, उठ उठ जागया। आपे वेखे मार ध्यान, उपजे इक्क वैरागया। कवण सुवेला मिटे निशान, कलिजुग काले धोवे दाग़िआ। मातलोकी वेख वखान, जोत सरूपी आवे भागया। ना वसे किसे मकान, सम्बल नगरी मिली आज्ञा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, पंच दुआरे वेख हरि, आपे वेखे हँस कागया। पंच दुआरा छड्डु, लाड लडांयदा। लक्ख चुरासी लोकमाती जो दए कढु, ना कोई गोद उठांयदा। सभ दीआ कंडां रिहा वढु, अग्गे हो ना कोई बचांयदा। ना कोई वजे सारंगा ढड्ड, गौड़ी पौड़ी कोए ना गांयदा। गुरमुखां इक्क लडाए लड्डु, आत्म गीत इक्क सुणांयदा। जीव जन्त खाली दिसण हड्ड, नाम रंग ना कोई चढ़ांयदा। काया रैण अन्धेरी खड्डु, दीपक जोत ना कोई जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, आप आपणा संग निवांयदा। पंचम दाता पंच तजाए, पंचम मेल मिलांयदा। पंच ज्ञाना पंच जणाए, पंचम तेल चढ़ांयदा। पंचम माता पंचम पिता आप अख्वाए, पंचम गोद उठांयदा। पंचम अन्दर पंचम बाहर पंचम करे तन श्रृंगार, पंचां ख़ाक मिलांयदा। पंचां भरे शब्द भण्डार, पंचां मारे डाहढी मार, पंच पंचां विच छुपांयदा। पंचम मेला दर दरबार, पंचम देवे दर दुरकार, पंचम पंचां रंग वटांयदा। पंचम सांझा मीत मुरार, पंचम कोए ना पावे सार, पंचां एका दूजा भउ चुकांयदा। पंचम सच सच्चा सच्यार, पंचम कूड़ कूड़ा कुड़यार, पंच विचोला आप अख्वांयदा। पंचम ढोला शब्द धुन्कार, पंचम बोला विकार हँकार, पंचम पंचां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचां पंचां जोड़ करो निमस्कार। पंचम मात जगाए, पंचम सुवालीआ। पंचम जोत जगाए, पंचम रैण अन्धेरी घटा कालीआ। पंचम वरन गोत मिटाए, पंचम पत्त ना दिसे डालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वाली दो जहानीआ। करते कीमत ना जाणे, कर्म ना जाणे रेख। आप आपणा ना पछाणे, प्रभ कवण करे वेस। जीव अञ्याण ना जाणे, हरि भुल्लया गुर उपदेस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अन्दर रिहा वेख। कवण पर्दा कवण उहला, कवण भेव छुपाए। जिस जन बणाया काया चोला, बाहर रहे ना राए। शब्द सुणाया साचा ढोला, भुल्ल रुल ना लाल गंवाए। दर द्वार जो होया गोला, हँकार विकार क्यों तन वसाए। प्रभ तोलणहारा साचा तोला, साचा तोल तुलाए। सच दुआरा एका खोल्ह्या, धर्म कंडे रिहा चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसना चल्लया हँकारी बोला, आपे दए सजाए। रसना बोल तन मन फिका, दर घर मूल ना भाया। गुरबचन बोल ना जाणे निक्का, शब्द वडा वड अख्वाया। जिस जन मस्तक लाया नाम टिका, सो क्यों मनों भुलाया। चरन दुआरे जो जन विका, हउमे रोग रहे ना राया। आपे जाणे भेव जीअ का, जीव जन्त विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। मति बुध अञ्याण, ज्ञान ना जाणया। आपे बण जगत प्रधान, आपणा रंग ना माणया। ना सुझे पीण खाण, अट्ठे पहर रहे नूरानया। धृग धृग धृग जीवण जीण, जो चले ना प्रभ के भाणया। दिवस रैण तड़पे जिउँ जल मीन, मिले

ना ठण्ढा पाणीआ। कोए ना करे ठांढा सीन, रसना रस फिरे हलकानीआ। मिले ढोई ना लोकां तीन, जिस छड्डया पुरख सुजानीआ। आपे भन्ने हँकारी बीन, फड़ शब्द तीर कमानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलि करे सर्ब पछाणीआ। काया कपड़ रूप रंग जिस जन तन चढ़ाया। जगत नहावण नहाता छप्पर, सर सरोवर जिस वखाया। विसरया हरि माई बप्पड़, मैं मैं तूं तूं भरम चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। रोवत रोवत रो रहे, रोवण किसे ना आया। नेत्र नेत्र मुखड़ा धोवत धोवत धोवत धो रहे, गुरमुख कोए ना मैल गंवाया। मनमुख सोवत सोवत सौं रहे, गूढ़ी नींद ना कोए जगाया। गुरमुख साचा बीज बोवत बोवत बो रहे, प्रभ आपणी हथ्थीं आप बिजाया। मनमती मानस जन्म खोवत खोवत खो रहे, गुरमति दए तजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट वेखे थांउँ थाँईंआ। कवण नैण जग नेत्रा, कवण प्रेम प्यार। कवण वेख काया खेत्रा, तन लग्गी अग्ग तत्ती हाढ़। ना कोई रुत्त बसंत चेत्रा, फल फुलवाड़ी होई उजाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल जिस जन घड़या घाड़न घाड़। घाड़नहारा घड़ रिहा, जन माटी भाण्डे साज। आपे अन्दर वड़ रिहा, करे आपणे काज। मनमती बैठा दड़ रिहा, गुरमती रक्खे लाज। उप्पर चोटी आपे चढ़ रिहा, सीस रक्खे शब्द ताज। आपे पंचां नाल लड़ रिहा, दिवस रैण देवे भाज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, आप सुवारे काज। काया माटी जगत खेह, अन्त ना कोए सहाईआ। दर घर साचे लग्गा नेंह, मनमती तोड़ तुड़ाईआ। अमृत आत्म कोए ना बरसे साचा मेंह, तन अग्नी रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेशा दिस ना आईआ। मंगण मंग मंगती, चरन कँवल कलि प्यार। हरिजन उधरे पार। साचा मेला मेल संगती, प्रभ पार उतारनहार। काया चोली गुर रती नाम रंगती, कंचन चाढ़े रंग अपार। हउमे कढ्ढे वासना गन्दती, साचा बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, डुबदा बेड़ा जाए तार।

★ २० हाढ़ २०१३ बिक्रमी हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड मैहणीआं ज़िला अमृतसर ★

जगत विछोड़ा जुगो जुग, हरिभगत सुहागी मेल। गुरसिख माणक मोती चुग, प्रभ जुग जुग रंग रंगाए नवेल। लोआं पुरीआं वेखे झुक झुक, आपे खेलणहारा खेल। लक्ख चुरासी झूठी जूठी चारों कुन्ट पए थुक्क, ना कोए सज्जण सुहेल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन चढ़े शब्द तेल। जगत जुदाई जुग जुग गुरमुख जगाया। हरिभगत

कुड़माई जुग जुग, जुग जुग शब्द ताज सीस पहनाया। मिले वड्याई जुग जुग, जुग जुग मंगलाचार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विछोड़ा जुगो जुग, कलिजुग अन्तिम दए मिटाया। जुग जुग लहिणेदार, हरि वडा शाह सुल्ताना। गुरमुख देवण देवणहार, कलि करे आप पछाणा। हरि दर्शन नैणा नैण मुँधार, मन चुक्के माण अभिमाना। नारी मेला कन्त भतार, हरि मिल्या श्री भगवाना। हरि संत शब्द प्यार, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। दर भरया रहे भण्डार, दातां देवे गुण निधाना। जुग जुग करे कराए साची कार, गुरमुख साचे मेल मिलाना। शब्द कराए तन श्रृंगार, हथ्थीं बन्ने नाम गाना। साचे घोड़े कर अस्वार, पार कराए दो जहानां। इक्क वखाए महल्ल अटल उच्च मनार, दीपक जोती इक्क जगाना। जोत सरूपी कर अकार, शब्द सुणाए सच तराना। अनहद खिच्चे आप सितार, धुनी नाद वज्जे महाना। आपे सुणे सुणाए सुणनेहार, आपे रूप वटाए गोपी काहना। आपे सुरत शब्दी कन्त भतार, आपे आपणी सेज हंढाना। आप आपणा करे प्यार, आप आपणे विच समाना। आप आपणा वेखे रूप अपार, आप आपणा लेख लिखाना। आपे भूप सच सरूप सच्ची सरकार, आपे राज राजान शाह सुल्ताना। आपे बैठ तख्त सच्चे दरबार, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना। आप बणाए कंचन गढ़ अपर अपार, चार दीवार ना कोई रखाना। बैठे चढ़ नर निरँकार, दिस किसे ना आना। ना कोई काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हरि एका रूप समाना। त्रैगुण माया ना दीसे पसर पसार, पंज पंझी ना मिले निशाना। हड्ड मास नाड़ी रत ना कोई आकार, एका एक डगमगाना। रूप रंग ना पावे कोई सार, सीस जगदीस ना कोई रखाना। ना कोई कपड़ रूप अपार, बस्त्र शस्त्र ना कोई बिबाणा। ना कोई संगी साथी सगला यार, ना कोई दीसे मीत मुरार, ना लाए कोई यराना। ना कोई डंक मृदंग ढोल नगार, वजाए ताल गुण निधाना। जोधा सूरा बलि बलि ना कोई बलकार, ना कोई चतुर सुघड़ स्याणा। आपे जाणे आपणी धार, हरि आपणे रंग समाना। त्रैगुण रूप अनूप अपार, सति सरूप सच सुघड़ स्याणा। आपे जाणे आपणी धार, शब्द समग्री इक्क अपार, हरि साची वस्त रखाना। आपे वंडे वंडणहार, पुरीआं लोआं वंड वंडाना। पवण सुवासी कर त्यार, प्रभ साचा संग निभाणा। दर पंच मेल मिलार, तिन्नां एका एक निशाना। चौथा पद घर अपार, संत सुहेले साचे सद्द, प्रभ देवे साचा दाना। त्रैगुण माया बद्धा बध्ध, ना कोई जाणे उच्चा लम्मा कद्द, सृष्ट सबाई लए पसार। ब्रह्मा उपजे विष्नूं यद्द, वेद विदांता हरि शब्द धुन्कार। शब्द सरूपी पीवे मध, नाभी कँवली सदा खुमार। पुरख अबिनाशी आपणी गोद लडाना लड, आपे खेल खिलावणहार। सच दुआरा ल्या छड्ड, पुरी ब्रह्म महल्ल उसार। वेले अन्तिम पुरख अबिनाशी देवे कढ्ढ, गुरमुख साचे संत सुहेले सीस बन्ने दस्तार। धर्म निशाना देवे गड्ड, सोहँ होवे जै जैकार। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले जुग जुग विछड़े यां आपे मेलणहार। जगत विछोड़ा अन्ध, गुरमुख पन्ध मुकाया। प्रभ खुशी कराए बन्द बन्द, आत्म जोती चन्द चढ़ाया। रसना गाए बत्ती दन्द, मदिरा मास गन्द तजाया। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, परमानंद विच समाया। आपे ढाहे भरमां कंध, पिता पूत एका मार्ग लाया। कोई ना दीसे भाग मन्द, जिस घर प्रभ साचे चरन छुहाया। नंगी होवे ना कदी कन्ढु, हरि आपणा हथ्थ टिकाया। धर्म राए ना देवे दंड, प्रभ साचे दर दुरकाया। धुरदरगाही एका नाम रिहा वंड, जोत सरूपी लै के आया। मनमुख जीवां जूठी झूठी चुक्की पंड, ना कोई सके भार वंडाया। गुरमुखां आत्म पाए ठंड, हरि जोती दरस दिखाया। प्रभ फड़े हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, वेखे खेल विच ब्रह्मण्ड, लक्ख चुरासी देवे दंड, दंडणहार आप अख्वाया। पल्ले किसे ना दिसे नाम गंढु, जगत विकारा बैठे वंड, नार दुहागण होई रंड, पुरख अबिनाशी साचा कन्त ना कोए हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा विछड़या मीत, आप आपणे रक्खया चीत, जुग जुग परखणहारा नीत, बैठा रहे सदा अतीत, किसे हथ्थ ना आए गुरदुआरे देहुरे मन्दिर मसीत, घर साचे डेरा लाया। घर साचा शाह सुल्तान, आपणा साज्जया। ना कोई मन्दिर ना मकान, हरि दिसे गरीब निवाज्जया। ना कोई जंगल जूह उजाड़ बीआबान ना कोई अस्त्र शस्त्र हाथी घोड़ा ताज्जया। ना कोई जोधा दिसे सूर बली बलवान, ना कोई दीसे मुलां काजिया। ना कोई पीण ना कोई खाण, ना कोई दीसे धरत निशान, ना कोई मारे जन अवाज्जया। आपे जाणे आपणी शान, जोत सरूपी हरि भगवान, आपे रक्खणहारा लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संत सुहेले साचा मेल कराए चरन कँवल कलि चरन उप्पर धवल एक कराए साचा हाज्जया। चरन कँवल जन धूढ़, मस्तक लाईआ। चतुर बणाए मूर्ख मूढ़, आत्म जोती नूर सवाईआ। काया रंग चढ़ाए गूढ़, दुरमति मैल जाए धोती, हरि शब्दी मेल मिलाईआ। जगत नाता कूड़ो कूड़, बिन गुर पूरे कोए ना पार लँघाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, नाता तोड़े, घर साचे पिता पूत ना करे निन्दया। पित्ता पूत पति एक है, रक्खणहार करतार। हरि शब्द साचा सूत है, प्रभ बन्ने सर्ब संसार। हरि नाउँ वडा दूत है, सद रहे पहरेदार। काया माटी पंचक पंच भूत है, घर वसे निरँकार। जगत तृष्ना झूठा सूत है, मनमुखां वणज वापार। हरिजन साचे दर घर साचे सच सपूत है, प्रभ परखे परखणहार। वेख वखाणे चारे कूट है, वजाए शब्द डंक अपार। शब्द हुलारा रिहा झूट है, गुरमुख साचे लाए पार। आवण जावण जाए छूट है, जो जन दर्शन पाए दर दरबार। एका घर एका दर ना कोई दूजी दिसे कूट है, प्रभ मेले मेलणहार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत

दुलारे, आप कराए वणज वपारे चरना सच्चा प्यार। चरन प्यार सच्चा नाता, प्रभ साचा मात वखांयदा। जगत मेला पुरख विधाता, गुर चेला राह वखांयदा। रूप अनूपा कमलापाता, सति सरूपी रंग वटांयदा। शाहो भूप उत्तम ज़ाता, ज़ात पात विच ना आंयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, दिवस रैण एका रंग समांयदा। अन्दर बाहर वेखे मार झाता, गुरमुख कवण सुवेले हरि गुण गांयदा। गुरमुख बणाए सच बराता, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। आपे बणे पिता माता, मस्तक लहिणा पूर्ब कर्म चुकांयदा। धुर दरगाही देवे दाता, शब्द गहिणा तन पहनांयदा। पंच विकारा नेड़ ना आए नार कमज़ाता, प्रभ साचा दुरकांयदा। एका शब्द सुणाए साची गाथा, ओंकारा देस सुहांयदा। आप चढ़ाए साचे राथा, पार किनारा इक्क वखांयदा। साचा मेला त्रैलोकी नाथा, दर दुआरा बंक सुहांयदा। आपे होए अकथना अकाथा, कथ कथ कोए भेव ना पांयदा। सर्बकला आपे समराथा, जुग जुग भेख वटांयदा। लेख चुकाए साढे तिन्न तिन्न हाथा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। मस्तक लहिणा वेख वखाए साचे माथा, कौस्तक मणीआ तिलक लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दरस तीजे नैणा आप वखांयदा। शब्द अनादी आपे बोल, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। बोध अगाधी तोले साचा तोल, साचा कंडा नाम लगांयदा। सच ब्रह्मादी वसे कोल, दस्म दुआरी कुण्डां लांहयदा। शब्द सिँघासण करे चोल्ह, जोती नूर इक्क रखांयदा। नाद अनादी वज्जे ढोल, हरि दोहरा ताल लगांयदा। चरन कँवल कँवल चरन गुरसिख प्रीती घोल, एका रंग महल्ल वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, कला सोल दया कमांयदा। सोलां कल कलिजुग धार, रैण अन्धेरी छाईआ। प्रगट होवे नर निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। ना कोई बस्त्र शस्त्र तीर कटार, तीर बन्दूक ना हथ्थ उठाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ दो धार, चारों कुन्टां वेख वखाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, चारे कूटां वेख वखाईआ। आप आपणी जोत धार, दहि दिशा भेव खुल्हाईआ। जोत निरँजण कर अकार, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। साचा अंजन कर त्यार, सोहँ गुरसिख नेत्र पाईआ। दुःख भंजन प्रगट विच संसार, चरनी धूढ़ मजन इक्क कराईआ। जोती नूर कर आकार, शब्द घोड़े पौड़ उठाईआ। लोआं पुरीआं मारे मार, ब्रह्मा शिव दए दुहाईआ। करोड़ तेतीसा हाहाकार, निहकलंकी जोत जगाईआ। नीली छत्तों आया बाहर, एका डंक शब्द वजाईआ। राज राजाना शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, राउ रंका रिहा जगाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरी धार, नर हरि साचा रिहा चलाईआ। पुरख अगम्मा प्रगट हो विच संसार, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाईआ। सत्तां दीपां मारे मार, ब्रह्मण्ड पए दुहाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई दीसे मीत मुरार, धर्म राए दी फाँसी गल लटकाईआ। गुरमुख विरला संत सुहेला उतरे पार, जो हरि चरन रहे सच्ची

७८६
०५

सरनाईआ। कलिजुग माया ममता बद्धा भार, जूठ झूठ सिर उठाईआ। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, संग मुहम्मद चार यार दए दुहाईआ। ईसा मूसा होए ख्वार, चीना रूसा संग निभाईआ। करे खेल कलि करतार, कुरान हदीसा ना कोए गाईआ। जोधा सूरा वड बलकार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। लहिंदी दिशा लहिंदी धार, आपे रिहा वहाईआ। अमाम मैहन्दी जोत उज्यार, रंग गूढ़ा लाल चढ़ाईआ। अञ्जील कुरान इक्खी हो हो बहिंदी, कलिजुग अन्तिम दए सलाहीआ। प्रभ दा भाणा अन्तिम सहिंदी, सम्मत अठारां पए दुहाईआ। उत्तम नबी रसूल दी एका गाहे गहिंदी, हरि साची लखत लिखाईआ। लाड़ी मौत आपणी हथ्थीं लाए मैहन्दी, सगना चूड़ा हथ्थीं पाईआ। धर्म राए नूं उठ उठ कहिंदी, कलिजुग लज पति मेरी शरम गुवाईआ। मैं दर घर तेरे मूल ना बहिंदी, लोकमात जावां कर कर धाईआ। रसना उठ उठ मूंहों कहिंदी, कुंवार कन्यां लभां वर, लक्ख चुरासी एका नाउँ तेरा जवाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, आपणी अक्खीं वेखां जा जा ढैहन्दी, तेरा घर द्वार वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां दे दे वर, धरत मात रही कुरलाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, दर राए धर्म पुकारे। किरपा कर इक्क अपार, प्रगट विच संसारे। एका दे सिर प्यार, मारां जीव जन्त गंवारे। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, पहलां जा करां निमस्कारे। सम्बल नगरी धाम अपार, जगे जोत इक्क गिरधारे। गौड़ ब्रह्मण पूत प्यार, उच्चे पर्बत टिल्ले पत्थर पाड़े। प्रगट होए एकँकार, एका धार बन्ने संसारे। इक्क कराए शब्द जै कार, चारों कुन्ट जै जै कारे। वरन बरन ना दीसे चार वरन ना मिले ढोई, सृष्ट सबाई रही रोई, हरि बिन अवर ना दीसे कोई, पुरख अबिनाशी मन्न अरज़ोई, दर साचे रही पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती देवे वर, सोलां सोलां कर विचार। दर घर साचे कर सलाह, एका मता पकाया। पुरख अबिनाशी जगत मलाह, लोकमात विच आया। जन भगतां दस्से साचा राह, मार्ग साचा लाया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, आपणा भेव छुपाया। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे शब्द वर, जुग जुग विछड़े कलिजुग अन्तिम दए मिलाया। जगत विछोड़ा कट, घर सुहांयदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका साचा हट्ट खुल्हांयदा। आत्म जोती लट लट, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। होए प्रकाश काया मट, घट घट नज़री आंयदा। लेखा चुक्के तीर्थ अट्ठ सट्ठ, काया सरोवर आत्म अमृत इक्क वखांयदा। जोग अभ्यास तप जप सचा हठ, गुर चरन प्रीत रखांयदा। काया मन्दिर जूठा झूठा अन्तिम जाए ढठ्ठ, ना फेर कोए बणांयदा। राए धर्म उलटी गेड़े लट्ट, कुम्भी वास रखांयदा। गुर चरन दुआरे इक्क इक्ठ, हरिसंगत मेल मिलांयदा। ना कोई दीसे शिवदवाला मट्ठ, आप आपणी दया कमांयदा। हरि

दर्शन लोचण नेत्र नठ्ठ, निज आत्म रूप वटांयदा। पल्ले बन्ने नाम गड्ड, दो जहान संग रखांयदा। धुर दरगाही साची वत्थ, एका नाम रखांयदा। सर्बकला आपे समरथ, दंडणहार सर्ब अख्वांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, घर घर मन्दिर अन्दर जो जन दर्शन पांयदा। पंच विकारा पाए नत्थ, डोर आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग विछड़े मीत मुरार, बख्शणहार चरन प्यार, होए उधार पंच विकार हरिजन भाण्डा भरम भउ भनांयदा। तोड़ गढ़ हँकार, काया गढ़ भरम भउ कढुया। बख्शे चरन प्यार, पंच विकारा हरिजन वढुया। दो जहानी पावे सार, साचा मेला मीत मुरार, जोती नूर अगम्म अपार , शब्द धार लडावे लड्डुया। इक्क सुहाए बंक द्वार, हरि हरि साचा साजणहार, ना कोई दीसे चार दिवार, ना पाई उप्पर छत्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला इक्क घर, जुग जुग दे समझावे मत्तया। मति बुध्ध मन तन विचार, प्रभ साची जोत जगाया। पंच तत्त झूठा वणज वपार, वरन गोत भरम भुलाईआ। साचा शब्द हट्ट वणजार, घर साचे वस्त टिकाईआ। नौ खण्ड दर जगत माया पसर पसार, मीत मुरार दिस ना आईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, शब्द सिँघासण बैठा आसण लाईआ। आपे बैठा कर बन्द किवाड़, ना कुण्डा कोई लाहीआ। पहरेदार पंचम धाड़, मनमुख जीव रही दुरकाईआ। गुरमुख साचा संत सुहेला आए दर दरबार, शब्द कटार तन पहनाईआ। चोरां यारां ठग्गां करे ख़बरदार, एका सोहला गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गाईआ। पुरख अबिनाशी ख़बरदार, अन्दर देवे बूहा लाहीआ। भीड़ी गली राह अपार, गुर शब्दी पार लँघाईआ। आपे होए पिछे अगाड़, साचा लाड़ा घोड़ चढ़ाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, आप आपणी दया कमाईआ। वा लग्गे ना तत्ती हाढ़, अमृत धारा सीतल इक्क वहाईआ। ना कोई दीसे बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी नज़र ना आईआ। ना कोई दीसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, महल्ल अटल ना वेख वखाईआ। जोत सरूपी इक्क अकार, नूरो नूर सुवाईआ। शब्द डंक धुन अनाहद वज्जे साची तार, शब्द सुरंगा आप हिलाईआ। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, आपे सुणनेहार अख्वाईआ। राग नाद ना पावण सार, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। धुर दरगाही दर सच्चा दरबार, धर्म अखाड़ा इक्क लगाईआ। जोत निरँजण कर त्यार, लोकमात विदा कराईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, उत्तम जाति नाउँ रखाईआ। बूंद स्वांती ठंडी धार, अमृत आत्म झोली पाईआ। दीपक जोती कर उज्यार, आपणी हथ्थीं जोत जगाईआ। शब्द नाद अपर अपार, साचा डंक वजाईआ। दस्म दुआरी महल्ल उसार, प्रभ साचे विच टिकाईआ। चारों कुन्टां बन्द किवाड़, दिस किसे ना आईआ। शब्द सरूपी कर कर वाड़, आपे बन्द कराईआ। सुरती लाए एका पाड़, आत्म नाम रखाईआ। परम आत्म तेरी धार, उप्पर नीचे आईआ। नौ दुआरे खोले

७६१
०५

बाहर, नौ खण्ड खण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। नौ दुआरे जगत नाता, प्रभ साचे मात रखाया। लक्ख चुरासी दित्ती दाता, विकार हँकार अकार जूठा झूठा पसर पसार, पल्ले गंढु बन्नाया। आपे वस्सया हरि हरि बाहर, माया ममता जगती धार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार चुकाया। नौ दुआरे वेखे गुप्त ज़ाहिर, कोई ना पावे किसे सार, जीव जन्त फिरे हलकाया। गुरमुख विरला उतरे पार, जिस जन बख्शे चरन प्यार, आत्म सांतक सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, हरिजन मेला सच घर, एका तत्त रिहा बुझाया। शब्द ज्ञान सच तत्त, धुर दरगाही बाण। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत, साचा मेला श्री भगवान। आपे रक्खणहारा पत, हरि हरि वाली दो जहान। शब्द तन नगार लाए सट्ट, दुरमति मैल प्रभ साचा कट्ट, जो जन रसना हरि गुण गान। नूर उजाला आप कराए गुर गोपाला हरि जोती लट लट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, जगत तोड़े मोह जंजाल। घर आ संत वणजारया, कर आपणी बुध बिबेक। खोलू आपणा बन्द किवाड़या, तन लग्गा माया सेक। पंजां चोरां आप लताड़या, गुर पूरे ना दित्ती टेक। माया ममता लग्गा अखाड़या, ना मिल्या एका एक। एका तन हँकारी वा तत्ती हाढ़या, गुर शब्द ना धरया भेख। दर घर साचे किसे ना वाड़या, नेत्र लोचन दरस ना ल्या पेख। फिरे काया पिण्ड जंगल जूह उजाड़या, ब्रह्मण्ड ना ल्या वेख। बहत्तर नाड़ी ममता साड़या, मस्तक उग्घड़ी ना अजे रेख। गुर घर ना बणया साचा लाड़या, साची आया ना साया हेठ। चिट्टे घोड़े किसे ना चाढ़या, कौड़ा होया काया रेठ। अनाद वज्जे ताल तलवाड़या, ना कोई वेखे अन अनडीठ। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण दरवाज़ा गरीब निवाजा साजण साचा अनहद मारे अवाजा, गुरमुख साचे वेख लेख। कवण दरवाजा खोलू, अवाज लगांयदा। कवण शब्द बोल, मृदंग वजांयदा। अनहद रक्खया किथे ढोल, कवण ताल लगांयदा। कवण ढोल पुलाड़ा रिहा बोल, उप्पर काया खलड़ी लांयदा। बहत्तर नाड़ी पाई नत्थ विच्चों रक्खया पोल, कोए ना कुण्डा लांहयदा। कोटन वस्त जन तेरे कोल, जन साचा पुच्छ पुछांयदा। कवण दर आत्म घर शब्द अनहद टंग्गया ढोल, किस हत्थ समरथ वजांयदा। आपणा पर्दा आपे खोलू, गुर पूरे अग्गे रसना बोल, निशअक्खर वक्खर ना कोए जणांयदा। बजर कपाटी अजे ना पाटा पत्थर, पंजां चोरां पया सथ्थर, गुर पूरा ना गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, नौ दुआरे फोल फुलांयदा। कवण दर गुरमुख तेरा रच्चया मात काजा। कवण दर मिले शब्द सच्चा साजण साजा। कवण हरि रखे लाजन लाजा। कवण सर तीर्थ नुहाए, दुरमति जाए मैल भाजा। कवण दर ढोल मृदंग वजाए, अनहद अनाहद धुन आत्मक परम परमात्मक गुण गम्भीर,

शब्द चोटी चढ़ अख़ीर, कोई तत्त ना दीसे गुर पीर, कवण डंका कवण वेख ना पाए, राउ रंकां शाह फ़कीर दस्तगीर भेव ना राए। पुरख अबिनाशी घट घट वासी काया मन्दिर साचे अन्दर अटल मुनार हो त्यार डंक अपार कवण कूटे रिहा वाजा। कवण कूट काया महल्ल अपार, प्रभ अनहद शब्द वजाईआ। पंचम मीता पंचम यार पंचम जाणे साची रीता, पंचम धुनी धुन्कार सुणाईआ। पंचम सुणाए राग अतीता, पंचम करे पतित पुनीता, पंचां पंच हरि हरि जीता, पंचम पंचां सीतल सीता, पंचम देवे साची धारा, ताल तलवाड़ा इक्क अखाड़ा, पंच शब्द धुन नाद अपर अपारा, आप वजाए वारो वारा, पुरख अबिनाशी कर प्यारा, कवण सु वेले बन्ने धारा, बत्ती दन्द ना गाए रसन हलकाईआ। आत्म होई अन्ध, भेव ना राईआ। गुर शब्द ना चढ़या चन्द, सीतल धार ना किसे वहाईआ। जीवड़ा भागां मन्द, आत्म घर ना वज्जी वधाईआ। माया ममता फस्सया झूठे धन्द, गुर पूरे कंड वखाईआ। सुरत सुवाणी होई रंड, साचा कन्त दिस ना आईआ। भेव ना जाणे कोई ब्रह्मण्ड, ना जीउ पिण्ड तजाईआ। पंज चोर ना होए खण्ड खण्ड, जेरज अंड उत्भज सेत्ज खाणी चारे आप भुवाईआ। शब्द नाम गुर पूरा रिहा वंड, गुरमुख आत्म अन्दर आप टिकाईआ। आपणी हथ्थीं देवे गंढ, ना सके कोई खुल्हाईआ। जीवां जन्तां भरमां चुक्की सिर झूठी पंड, रसना पढ़ पढ़ वाद वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख पुच्छे तेरा घर, कवण दरवाजा गरीब निवाजा अन्दर बैठा लाईआ। बन्द दरवाजा जिस कराया। कवण सिँघासण डेरा लाया। कवण मण्डल पावे रासन, कवण वेखे पृथ्वी आकाशन, काया विच पुलाड़ रखाया। मनमुख जीव जन्त विनासन, ना होए कोए सहाया। कलिजुग माया लग्गी तन बसंतर, गुर शब्द ना पाया साचा मन्त्र, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख पुच्छे तेरा घर, कवण महल्ल इक्क रखाया। सच महल्ल सच द्वार, प्रभ तेरे विच टिकाईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, उप्पर छत्त दिस ना आया। ना कोई चन्द सूरज ना तारा मण्डल करे आकार, आकाश आकाशी हरि समाया। गुर पूरे धुर चरन धरवास, जिस दस मास गर्भवास सिर तेरे हथ्थ टिकाया। आप ना वस्सया आस पास, काया मंडल ना पाई रास शब्द ना चल्लया विच स्वास सरगुण निरगुण भेव ना पाया। लेखे लग्गा ना हड्ड चम्म नाड़ी मास, हरि शब्द ना होए दासी दास, मिल्या मेल ना हरि सर्ब गुणतास, तृष्ना आस ना मात बुझाया। रसन विकारा लग्गी प्यास, गुर शब्द वस्त ना रही पास, जोती जोत सरूप, गुरसिख पुच्छे तेरा इक्क घर, कवण दुआरे आसण लाया। सच घर आसण ला, वेख तमाशया। की जगत कोलों पुच्छे राह, जीआं जन्तां कलिजुग माया फास फास्सया। गुर शब्दी अन्दर मलाह, फड़ फड़ बाहों राहे रिहा पा, नेत्र तीजा दए खुल्हा, साची जोत करे प्रकाशया। आपे पुरख अगम्मड़ा बेपरवाह अथाह, होए

सहाई सभनी थाँ, इक्क जपाए साचा नां, निझ घर आत्म रक्खे वास्सया। आपे पिता आपे माँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा पुच्छे इक्क घर, कवण चले पवण सुवास्सया। महिंमा अगाध बोध शब्द भण्डार भरपूर है। देवणहार दातार, जो आए चल हज़ूर है। सहिंसा रोग दए निवार, शब्द उपजाए साची तूर है। निर्मल जोत कर आकार, जिस जाणो दूरन दूर है। सद रक्खे विच पसार, जगत नाता कूड़ो कूड़ है। सच मेला पुरख भतार, जन लाहे मस्तक धूढ़ है। खेले बन्द किवाड़, काया चाढ़े रंग गूढ़ है। लक्ख चुरासी उतरे पार, मनमुख ना जाणे मूढ़ है। निहकलंक ल्या अवतार, लक्ख चुरासी पीड़े वेलणे बूड़ है। शब्द डंक अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई वेख वखाए, लक्ख चुरासी आत्म अन्दर मन्दिर काया पावे सार है। आए दर द्वार, बण सवालीआ। प्रभ देवे पैज संवार, आत्म जोत जगे अकालीआ। मेल मिलाए मीत मुरार, मिटे रैण अन्धेरी कालीआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, दिवस रैण करे रखवालीआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, दो जहानां वालीआ। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे जाहिर, दोवें हथ्थां रखे खालीआ। शब्द कराए इक्क जैकार, गुरमुख साचे कर प्यार, घर आत्म वज्जे तालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, फल लगाए काया डालीआ। काया डाली फल लगाउँणा, प्रभ दर्शन नेत्र पाया। आप आपणा मन समझाउँणा, गुर चरन चित्त लाया। भाण्डा भरम भन्न वखाउँणा, गुर शब्द हथौड़ा हथ्थ फड़ाया। आपणा बेड़ा बन्न वखाउँणा, साचा राग कन्न सुणाया। शब्द सिँघासण इक्क विछाउँणा, सुरत सुवाणी आसण लाउँणा, शब्द मिलावा कन्त कराउँणा, दोवां सांझा प्यार कराउँणा, एका रंग रंगाया। पवण उनन्जा छत्र झुलाउँणा, शब्द बवन्जा धार रखाउँणा, गुर भगत अकवंजा नाल रलाउँणा, सवेर सञ्झ इक्क वखाउँणा, सूरज चन्द कोई दिस ना आउँणा, रसना गन्द ना रस वखाउँणा, परमानंद विच समाउँणा, बत्ती दन्द लेख मिटाउँणा, एका शब्द सुहागी छन्द पुरख अबिनाशी आपणा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, खुशी खुशी बन्द बन्द कराया। जगत निशानी नाम है, भगत वणजारया। जगत वणज ना आए काम है, कूड़ो कूड़ पसारया। एका एक सच्चा दाम है, दो जहानी पार वखावे इक्क किनारया। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम है, ना देवे कोई सहारया। अमृत आत्म एका जाम है, मदि ममता पीवण हारया। निशअक्खर वक्खर एका नाम है, प्रभ आपणा आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, धुर संजोग संजोगी मेल मिला रिहा। सतिजुग तेरी साची धार, सति पुरख मात चलाईआ। जुग जुग जाणे आपणी कार, साचा धाम सुहाईआ। जुग जुग होवे पहरेदार, शब्द पहरा इक्क लगाईआ।

७६५
०५

जुग जुग होवे लहिणेदार, लक्ख चुरासी हिसाब मुकाईआ। जुग जुग होवे कहणेहार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। जुग जुग वरते विच संसार, जुग जुग भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। सतिजुग तेरा साचा रंग, हरि साचा मात चढ़ांयदा। धरत मात दर मंगी मंग, सोया पूत आप उठांयदा। शब्द सरोवर देवे गंग, जन भगतां तन वहांयदा। आपे होए अंग संग, गहर गम्भीर सागर अख्वांयदा। माया ममता करे भंग, सांतक सांतक सांत वरतांयदा। हरि शब्द डोरी बन्न पतंग, राज राजाना शाह सुल्ताना वेख वखांयदा। सोहँ वजाए इक्क मृदंग, सतिजुग साची चोट नगारे लांयदा। भरमां ढाहे दूजी कंध, बरन अठारां वरन चार एका रंग रंगांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शंद, जुग जुग धर्म चलांयदा। जन भगतां खुशी करे बन्द बन्द, रसना गोबिन्द गीत सुणांयदा। सतिजुग साचा चढ़या चन्द, भारत खण्ड अन्धेर मिटांयदा। संत सुहेला गाए बत्ती दन्द, सञ्झ सवेर इक्क वखांयदा। जो जन तजाए मदिरा मास गन्द, हरि साचे घर वसांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, गुरमुख नारी काज रचांयदा। मेटणहारा भेख पखण्ड, शब्द चण्ड हथ्थ उठांयदा। सच वस्त प्रभ देवे वंड, हरिभगतां झोली पांयदा। जोत निरँजण देवे गंढु, पल्लू किसे दिस ना आंयदा। अन्दर मन्दिर रक्खे ठण्ढ, धारा अमृत सीर पिआंयदा। सुरत सुवाणी ना होए रंड, संत सुहागी कन्त मिलांयदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड आप समांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। चले चाल इक्क बेहंग, अचरज आपणी रीत रखांयदा। नौ दुआरे आपे लँघ, काया मन्दिर मसीत गुरूद्वार सच सुहांयदा। सुखमन तेरा डूंघा पन्ध, शब्द घोड़े आप दुड़ांयदा। मेट मिटाए धुँदूकार अन्ध, ज्ञान प्रकाश इक्क करांयदा। आत्म उपजे परमानंद, ब्रह्म ब्रह्म रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा राह, शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात चलांयदा। सतिजुग तेरी मति, सच सुच्च रिहा वरता। प्रभ एका रक्खे तत्त, मिटे लोभ हंकारया। नाम बंधाए धीरज यति, सति संतोखी शब्द सुहा रिहा। दुरमति मैल देवे कट, तन निर्मल जोत कर अकारया। चौदां लोकां इक्क वखाए साचा हट्ट, गुर शब्दी भरे भण्डारया। वेखे खेल काया मट, बाज़ीगर नट भरम भुला रिहा। कलिजुग अन्तिम जीआं जन्तां दूई द्वैती लग्गा फट्ट, ना कोई मेट मिटा रिहा। पुरख अबिनाशी वसे घट घट, घट अन्तर सर्ब जणा रिहा। लक्ख चुरासी फिर फिर थक्की तीर्थ तट्ट, तट्ट किनारा दिस ना आ रिहा। जगी जोत ना आत्म लट, उच्चे टिल्ले मन्दिर फिरा रिहा। कोटन बहि बहि थक्के जटा जूट धार जट्ट, आत्म नूर ना कोए उपा रिहा। तन लंगोटी बन्नीं बैठे कोटन पट, मनसा पूर ना कोए अख्वा रिहा। सूरज देवता पाणी कोटन रहे झट, आत्म तृष्ना ना कोए बुझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, सतिजुग तेरा साचा राह एका एक वखा रिहा। सतिजुग तेरा सति सतिवाद, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। वेखे खेल विच ब्रह्माद, आदि जुगादि बणत बणाईआ। धुन आत्मक वज्जे साचा नाद, वजावणहार आप अख्वाईआ। सोहँ शब्द देवे साची दाद, पतित पावन हरि रघुराईआ। दिवस रैण सद रक्खणा याद, अन्तिम वेले होए सहाईआ। वेखणहारा कर्म कांड, कुकर्म ां मेट मिटाईआ। साचा धर्म विच ब्रह्मांड, लोआं पूरीआं आप चलाईआ। रचन रचाए हरि नौ खांड, नौ खण्डां शब्द जणाईआ। सत्तां दीपां देवे वांड, आपणी हथ्थीं वंडां पाईआ। लक्ख चुरासी वेखे काया भाण्ड, आत्म वस्तू कवण टिकाईआ। कवण दुआरे वरते ठांढ, अमृत आत्म मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा दर, आपे आप रिहा खुल्हाईआ। सतिजुग तेरा साचा मति, प्रभ साचा मात धराए। संतां भगतां रक्खे पति, पति पतिवन्ता आप अख्वाए। सर्ब जीआं जाणे मित गत, घट घट में रिहा समाए। इक्क चलाए साचा रथ, रथवाही आप अख्वाए। सतिजुग तेरी साची गथ, सोहँ नाम रखाए। मस्तक टिक्का लाए मथ्था, कौस्तक मनी डगमगाए। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, समरथ दया कमाए। एका जाप अकथना अकथ, कोई कथ ना सके राए। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो हरिजन हरि हरि दर्शन पाए। जगत विकारा देवे मथ, शब्द मधाणा तन टिकाए। छाछ विरोल उप्पर करे इक्ठ, अग्नी जोती डाहे मट्ठ, उलटे गेड़े गेड़ लट्ठ, गुरमुख सच विरोल वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे साचा वर, एका सोहँ ढोल मृदंग वजाए। सतिजुग वज्जे ढोल मृदंग, चारों कुन्ट जै जैकारया। जीआं जन्तां साधां संतां इक्क चढ़ाए नाम रंग, साचा वणज कराए हरि वापारया। शब्द घोड़े कस तंग, आपे वेखे वारो वारया। शब्द रंगीला सच पलँघ, आत्म सेजा इक्क सुहा रिहा। आपे अन्दर जाए लँघ, आपणी हथ्थीं कुण्डा ला रिहा। मान सरोवर साचा गंग, साचा तीर्थ नुहावण नुहा रिहा। अनाद अनादा वज्जे मृदंग, सुन्न समाधी आप तुड़ा रिहा। आपे होए अंग संग, बोध अगाधी शब्द जणा रिहा। एका चाल चले बेहंग, साचे पौड़े आप चढ़ा रिहा। वड दाता सूरा सरबंग, मिट्ठा कौड़ा वेख वखा रिहा। मानस देही ना होए भंग, जो जन गुर चरनी चित ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी देवे वर, सतिजुग तेरी बणत बणा रिहा। सतिजुग बणत बणाए, सखी सुल्तानया। वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई गाए, एका नाम जपे जपाए श्री भगवानया। आपे वरते हरि हरि थांए, खाणी बाणी वेख वखाए, शब्द जणाए साची बाणीआ। पृथ्वी आकाश वास रखाए, परम आत्मा परमात्मा विच समाए, ब्रह्म ब्रह्म रूप प्रकाशीआ। पूरन आस सर्ब कराए, शब्द धरवास इक्क धराए, ना कोई दीसे मदिरा मासीआ। पंडत काशी ज्ञान गंवाए, इक्क ध्यान चरन हरि रघुराए, दूसर कोए ना आए,

घर मेला सच निवासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, दे मति मात समझासीआ। सतिजुग मति जगत जोग, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कदे हिरख ना कदे सोग, हरिभगत सदा वड्याईआ। प्रभ देवणहारा दरस अमोघ, एका शब्द चोग चुगाईआ। एका मेला धुर संजोग, जुग जुग विछड़े आप मिलाईआ। आपे कट्टणहारा रोग, रसना भोग इक्क कराईआ। जगत विछोड़ा चुक्के विजोग, प्रभ दर दरस दुआरे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, आप आपणी दया कमाईआ। सतिजुग तेरा साचा यति, प्रभ जीवण जुगत बताईआ। गऊ गरीबां रक्खणी पति, दे मति रिहा समझाईआ। राजा राणा कोई ना पीवे किसे रत, मदिरा मास ना कोई रसना लाईआ। इक्क चढ़ाउँणा साचे रथ, ऊँचां नीचां भेव मिटाईआ। शब्द चलाउँणी साची गत्थ, सोहँ सो दए वड्याईआ। चरन दुआरे इक्क इक्ठ, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी दए दुहाईआ। कलिजुग विकारा चारों कुन्ट रिहा नठ्ठ, जूठ झूठ फिरे हलकाईआ। ना कोई दीसे शिवदवाला मठ्ठ, मन्दिर अन्दर पंडत पांधा माया तृष्न वधाईआ। हरि चरन सरन इक्क इक्ठ, गुर मन्त्र शब्द गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, सति संतोखी धार बनाईआ। सतिजुग तेरा साचा हठ्ठ, घर साचे आप निभावणा। पल्ले बन्ने नाम गठ्ठ, लोकमाती गंढु खुल्लावणा। गुर

७६७
चरन दुआरे जो जन जाए ढठ्ठ, फड़ बाहों पार करावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा

०५
देवे वर, सभ थाँईं होए सहारना। सतिजुग साचे वर घर पाया, तन मन वज्जी वधाई। पुरख अबिनाशी दया कमाया, धरत मात सोई आप उठाई। साचा मार्ग इक्क वखाया, साची गोदी दए टिकाई। शब्द हुलरा इक्क कराया, आलस निन्दरा मगरों लाही। पार किनारा इक्क वखाया, दो जहानां फड़ फड़ बाहीं। वरन गोत कोई रहण ना पाया, ऊँचां नीचां एका रंग समाई। सच सरनाई जो जन आया, आप आपणी गोद उठाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे दित्ता वर, वड दाता जोधा जोध सूर होए सभनी थाँईं। कलिजुग उठ निधान, सोया जागया। हरि दरस कर मेहरवान, निर्मल जोत जगी चिरागया। शब्द मिल्या इक्क बलवान, लोकमात आवे भागया। मेट मिटाए जीव शैतान, कलिजुग धोवे काला दाग़या। इक्क झुलाए धर्म निशान, गुरमुख हँस बणाए कागया। गुणवन्ता हरि गुण निधान, जगत बुझाए तृष्ना आग्ना। पंचम मीता पंच प्रधान, पंच सुणाए साचा रागया। पंचम जोती इक्क महान, पंचम फिरे विच वैरागया। पंचम गोली इक्क मकान, पंचम सच सरन सरनाई लागया। पंचम मीता इक्क ध्यान, पंचम उपजाए इक्क वैरागया। पंचम अतीत हरि भगवान, हथ्थ पकड़े आपणे वागया। मन्दिर मसीत कोई ना दीसे विच जहान, कलिजुग ढाए हरि शब्द फेर सुहागया। एका गुण

जीव जन्त सभ गान, सोहँ प्रभ सुरत लगाए जागया। एका राग उपजे कान, काशी अयुध्या जगत प्रागया। ना कोई खाए पूजा धान, ग्रंथी पन्थी पंडत पांधा कोई ना फिरे दर दर भागया। एका एक श्री भगवान, जोत जगाए मात महान, शब्द झुलाए इक्क निशान, सतिजुग सोया मात जागया। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, आत्म सुखा मिटे दुःखा दर घर साचे मिले माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे साचा वर, साचा राह वखानया। सतिजुग तेरा साचा रथ, प्रभ साचे आप चलावणा। सर्बकला आप समरथ, सभ घट में डेरा लावणा। आपे लेखा लिखणहारा मथ, मस्तक रेखा फोल वखावणा। गुरमुख साचे लए रक्ख, फड़ बाहों उप्पर चढ़ावणा। सृष्ट सबाई पाए नत्थ, मनमुखां जीवां राए धर्म दर फिरावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकावणा। हर घट वस्सया आप, जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, शब्द जणाईआ। आपे जाणे आपणा आप, दिस किसे ना आईआ। जुग जुग वड प्रताप, लोकमात बणत बणाईआ। आप जपाए साचा जाप, अजपा जाप भेव ना राईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, गुरमुखां हउमे रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग जुग धारे भेख, दया कमांयदा। सृष्ट सबाई वेख, नौ दुआरे फोल फुलांयदा। हरिभगत सुहेला नेत्र नैण लोचण साचे वेख, दरस दरस वखांयदा। आपे परखणहारा मस्तक साची रेख, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, संग मुहम्मद चार यार दर फिरांयदा। जोत निरँजण अवल्लड़ा भेख, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे रेख, भेख पखण्डा नष्ट करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मेल साचे संत दुलार, निर्मल जोती कर अकार, एका भरया शब्द भण्डार, दर दुआरे बंक सुहांयदा। सोहे बंक द्वार, गुरमुख चतुर सुघड़ स्याणयां। साचा मेला मीत मुरार, चले चलाए आपणे भाणया। कल्गी तोड़ा नाम दस्तार, शब्द बाज जगत उडारया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, नीली छत्तों आए बाहरया। सति पुरख निरँजण साचा हरि, सति सतिवादी साची बणत बणा रिहा। अगम्म अगम्मा वेख विचार, नाड़ी चम्मा भाग लगा रिहा। शब्द डंक अपर अपार, कलिजुग अन्तिम पार उतारया। राउ रंकां करे ख़बरदार, राज राजानां शाह सुल्तानां भेव चुका रिहा। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां रंग रंगा रिहा। दर घर बैठ सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण डेरा ला रिहा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा शिव आप उलटा रिहा। करोड़ तेतीसा दर भिखार, सुरपति राजा इन्द दर पुकारया। प्रगट होए हरि दाता जोधा सूरा मृगिन्द, निहकलंका नाउँ रखा रिहा। भाग लगाए भारत खण्डी विच हिन्द नौवां खण्डां खण्ड करा रिहा। सत्तां दीपां इक्क बणाए साची बिन्द, भेख पखण्डा जगत मिटा रिहा। जन

७६८ ०५

भगतां मिटाए सगली चिन्द, दरस अमोघा धुर संजोगा आपणा मेल मिला रिहा। अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्ध, बजर कपाटी पर्दा ला रिहा। वड दाता गुणी गहिंद, काया मन्दिर साचे अन्दर शब्द सिँघासण जोत बिराजे, दिस किसे ना आ रिहा। ना कोई जाणे गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिल्ले बहि बहि रो रो धांही मार रिहा। कोई ना तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, पंचम पंचां हथ्थ फड़ा रिहा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी भाग लगाए काया डूंघी कन्दर, जिस जन आपणा दरस दिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म वेख घर, घर साचे आप सुहा रिहा। साचा घर अटल हरि सुहांयदा। निर्मल जोती कर आकार, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। धुन आत्मक सच्ची धुन्कार, नाद अनादा ताल वजांयदा। सुन अगम्मो सुण पुकार, सुन्न समाधी खेल वखांयदा। ओंकार एका धार, आपणा रंग वटांयदा। शब्द इष्ट गुरदेव, मस्तक चरन धूढ़। पारब्रह्म ब्रह्म साची सेव, लेखे लावे मूर्ख मूढ़। अमृत आत्म रस साची जिहव, जीव जगत रस नाता कूड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, एका रंग चढ़ाए गूढ़। गुरमति साची धार, जगत अतीतया। पंचम नाता तुटे जूठे झूठे यार, आपे बख्शे चरन प्रीतया। आत्म सेजा साचा मेला कन्त भतार, काया सुरती सुरत सवाणी सीतल सीतया। उपजाए धुन शब्द सच्ची धुन्कार, पंचम पंचां रिहा जीतया। राग अनादा इक्क सुणाए सुणनहार, बोध अगाधा शब्द जणाए गीतया। साचा करना वणज वपार, पुरख अबिनाशी घट घट वास आपे परखणहार नीतया। आदि अन्ता जुगा जुगन्ता पूरन भगवन्ता एका देवे नाम अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, एका एक इक्क वखाए, तन मन्दिर अन्दर गुरदुआरा सच मसीतया। चरन कँवल प्रभ लाग, आत्म जोत जगांयदा। दुरमति मैल धोए दाग़, एका अमृत जाम पिआंयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा मेला कन्त सुहाग, दो जहानी विछड़ ना जांयदा। जगत तृष्ना बुझाए आग, एका साची चोग चुगांयदा। माया डस्सणी ना डस्से नाग, चरन कँवल उप्पर धवल साँवल सँवल, शब्द बन्न्हे तन साचा ताग, उलटी करे नाभ कँवल, बूंद स्वांती मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दर दुआरा इक्क वखांयदा। इक्क दुआरा धुर दरगाह, हरि साचा धाम सुहांयदा। शब्द बणाए जगत मलाह, गुरमखां बेड़ा बन्न वखांयदा। होए सहाई सभनी थाँ, भेव अभेदा अछल अछेदा, दिस ना आए चारे वेदा, आप आपणे अंग समांयदा। जन भगतां देवे ठंडी छाँ, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर दहि दिशा वेख वखांयदा। आपे बणे पिता माँ, आप आपणी गोद उठांयदा। इक्क जपाए साचा नां, जुग जुग बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, आपणा पलू

मात फड़ांयदा। शब्द लड़ साचा फड़, गुरमति रीत चलाईआ। पंच विकारा उखड़े जड़, साचा मार्ग रिहा वखाईआ। साचे पौड़े जाणा चढ़, शब्द घोड़े तंग कसाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अबिनाशी आपे रिहा जगाईआ। काया मन्दिर आपे वड़, दीपक जोती आप जगाईआ। निशअक्खर वक्खर आपे पढ़, हरि अन्तर शब्द जणाईआ। आदि अन्त ना जाए सड़, घर साचे सहिज समाध समाईआ। आप बणाया आपणा गढ़, नौ द्वार दर रखाईआ। आपे बैठा अन्दर वड़, शब्द महल्ल रचन रचाईआ। जन भगतां घाड़न रिहा घड़, उच्च अटल्ला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, लक्ख चुरासी धर्म राए दी कटे फाँसी, साचा मेला शाहो शाबाशी, घर साचे धाम बहाईआ। हरि शब्द कुड़माई, काज रचाया। जन भगतां मन वधाई, प्रभ सोहँ साचा दाज बणाया। दरगाह साची जाणा चांईं चांईं, लहिणा देणा हिसाब मुकाया। चतुर्भुज आपे पकड़े आपणी बाहीं, आपणी गोदी लए बिठाया। भेव चुकाए एका दूज, एक एका रंग समाया। सच दुआरा जाए बूझ, जो जन दर सच सरनाई आया। आपे जाणे भेव गूझ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। दर दरवाज़ा एक, चार वरन उपदेशया। नर निरँकारा एक, सृष्ट सबाई विच प्रवेशया। शब्द जैकारा एक, जुगो जुग करे आदेशया। नाम भण्डारा एक, दर मंगण ब्रह्म शिव महेष गणेशया। जन भगतां बख्शे चरन टेक, जगत मिटाए लिखी रेख्या। जोती जामा धारे भेख, गुरमुख विरले नेत्र पेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख घर, सतिजुग लाए साची मेख्या।

★ ★ ★ ★ ★